बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इसलाहे अकाइद व आमाल और मरासिमे अहले सुन्नत पर मालूमात अफ़ज़ा अज़ीम मज्मूआ

फ़ैज़ाने आला हज़रत

इफ़ादात

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी

मुहद्दिस बरेलवी कुद्देसा सिर्रहू

हस्बे फ़रमाइश

नबीर-ए-आला हज़रत

मुहम्मद तस्लीम रज़ा खां नूरी

तर्जमा व तरतीब

मुहम्मद ईसा रज़वी कादरी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-110006

Phone.: 011-23264524 Mob.: 9350505879

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तसानीफ़े आला हज़रत से माख़ूज़

इसलाहे अक़ाइद व आमाल और मरासिमे अह्ले सुन्नत पर मालूमात अफ़्ज़ा अज़ीम मज्मूआ

फ़ैज़ाने आला हज़रत

इफ़ादात

शैखुल इस्लाम वल मुस्लेमीन

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरैलवी कुद्देसा सिर्रहु

हस्बे फ़रमाईश

नबीरए आला हज़रत शहज़ादए रैहाने मिल्लत

मुहम्मद तसलीम रज़ा खां नूरी

जमअ व तरतीब

मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी

ख़लीफ़ा हुज़ूर ताजुश्शरीआ व शैखुल हदीस अल-जामियतुल रज़विया मज़हरुल उलूम गुरसहाए गंज, ज़िला कन्नौज (यू.पी.)

ब-एहतेमाम

हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

Phone : 011 - 23264524

© कम्पोज़िंग रज़वी किताब घर, दिल्ली-6 ISBN 81-89201-15-8

नाम किताब	:	फ़ैज़ाने आला हज़रत
इफ़ादात	:	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी
हस्बे फ़रमाईश	:	मुहम्मद तसलीम रज़ा ख़ां साहब नूरी
जमअ व तरतीब	:	मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी
ब-एहतेमाम	:	हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
प्रूफ़-रीडिंग	:	मंज़ूरुल-हक़ जलाल निज़ामी
हिन्दी एडीशन	:	पहली बार 2011
प्रकाशक	:	रज़वी किताब घर, दिल्ली
पेज	:	656
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	350/-

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

महाराष्ट्र में मिलने के पते

रज़वी किताब घर
114, ग़ैबी नगर, भिवंडी, ज़िला थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोन नं० : 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर रोड, भिवंडी (महाराष्ट्र)
मोबाईल नं० : 09823625741

अर्ज़े नाशिर

रज़वी किताब घर दिल्ली को मुख़्तलिफ़ मज़हबी मौज़ूआत, इस्लामी अफ़कार व अक़ायद और मामूलाते अहले सुन्नत से मुताल्लिक़ मुस्तनद, मोतबर मारूफ़ और मालूमात अफज़ा किताबों की मुसलसल इशाअत का शर्फ़ हासिल है। इन किताबों में मुस्तक़िल तसानीफ़, तालीफ़ात, मर्तबात और शरह व तराजिम भी हैं और इल्मी व तहक़ीक़ी मक़ालात व मज़ामीन के मजमूए भी ख़्वास की इल्मी व फ़िकरी ज़रूरियात को पूरी करने वाली मअरकतुल आरा तसानीफ़ फ़तावा और फ़ेक़ह हनफ़ी, मालिकी, हंबली और शाफ़ई की तर्जमान इल्मी किताबें भी हैं और अवामी इस्लाह व फ़लाह के तक़ाज़ों को पूरी करने वाली उर्दू व हिंदी छोटी बड़ी किताबें भी, यही वजह है कि रज़वी किताब घर को जमाअत अहले सुन्नत का क़दीम और मारूफ़ मर्कज़ी कुतुबख़ाना तसलीम किया जाता है।

ख़ुदा का फ़ज़्ल व करम है कि रज़वी किताब घर अपने क़याम (1986) से ताहाल अकाबिर उलेमाए अहले सुन्नत की बेशुमार किताबें हिन्दी में शाया की हैं उनमें कुरआन पाक कंज़ुल ईमान हिन्दी, तज़किरतुल अंबिया, तज़किरतुल औलिया, सच्ची हिकायात, मुकाशफ़तुल कुलुब, जाअल हक़, क़ानूने शरीअत, सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, जन्नती ज़ेवर, निज़ामे शरीअत, तारीख़े करबला, शामे करबला, दास्ताने करबला, ख़ाके करबला, करबला का मुसाफ़िर, ख़ून के आंसू, देवबंद का नया दीन, इस्लामी जिन्दगी, औरतों की हिकायात, क़रीनए ज़िन्दगी, मज़ारात पर औरतों की हाज़िरी, तमहीदे ईमान किताबें क़ाबिले ज़िक्र हैं इनके अलावा उलेमाए अहले सुन्नत की और बहुत सी किताबें हिन्दी ज़ुबान में भी शाया हो रही हैं और बड़ी मक़बूल हो रही हैं इस लिहाज़ से रज़वी किताब घर देहली को दीगर कुतुबख़ानों में इम्तेयाज़ी हैसियत हासिल है।

अब रज़वी किताब घर "फ़ैज़ाने आला हज़रत" का हिन्दी एडीशन शाये करने का शर्फ़ हासिल कर रहा हैं यह किताब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी मुहद्दिस बरैलवी की कई छोटी बड़ी किताबों से खुलासा की गयी उन अहम बहसों का मजमूआ है जो अक़ीदा ईमान और अमल की इस्लाह और अहले सुन्नत के मरासिम से ताल्लुक़ रखती है। इस लिहाज़ से यह किताब मुआशरे के सभी लोगों के लिये फ़ायदेमंद है।

हाफ़िज़ क़मरुद्दीन रज़वी

चन्द जुमले

अज़ क़लम : अल्लामा क़ारी अब्दुर्रहमान ख़ान क़ादरी बरैलवी
मुदर्रिस जामिया मंज़रे इस्लाम व मुदीर माहनामा आला हज़रत बरैली शरीफ़।

तक़रीबन पन्द्रह सौ सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" ज़ख़ीर–ए–इल्म व अदब में एक ज़बरदस्त इज़ाफ़ा है। किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" सैयदी इमाम अहमद रज़ा क़ुद्देस सिर्रहू की तसानीफ़े जलीला से माख़ूज़ है जो ज़िन्दगी के तमाम शोअ़बों में रहनुमाई करती है। अक़ाइदे हक्क़ा से लेकर मरासिमे अह्ले सुन्नत तक हर मरहले पर यह किताब दस्तगीरी करती नज़र आती है।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी साहब ने आला हज़रत अज़ीमुल–बरकत की सदहा किताबों की मालूमात अफ़्ज़ा, तहक़ीक़ी, नफ़ा बख़्श और हवालों से मुज़ैय्यन इबारतों से इस किताब को तर्तीब दिया है। जो अह्ले सुन्नत के लिए एक अज़ीम बुलन्द पाया इल्मी और ला क़ीमत सरमाया है। इस किताब के मुताला से आला हज़रत क़ुद्देस सिर्रहू की सैंकड़ों किताबों का इल्मी फ़ैज़ान और बातिनी नूर, क़ारी के ज़ह्न व फ़िक्र में हुस्न व सदाक़त के दीप रौशन कर देता है। इस से क़ब्ल हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी साहब की कई नादिर और मालूमाती किताबें मसलन "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" (5 जिल्दें) "सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत" (4 जिल्दें) "फरमूदाते आला हज़रत" "तआरुफ़ तसानीफ़े इमाम अहमद रज़ा" (2 जिल्दें) मंज़रे आम पर आकर अह्ले इल्म व फ़ज़्ल से ख़िराजे तहसीन हासिल कर चुकी हैं।

अब नबीर–ए–आला हज़रत, हज़रत मौलाना अल्हाज क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ान नूरी अतालल्लाहु उमरहू बानी व मुहतमिम इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी बरैली शरीफ़ की कोशिशों से आला हज़रत का ख़ुसूसी फ़ैज़ान यानी "फ़ैज़ाने आला हज़रत" आपके हाथों में है।

नबीर–ए–आला हज़रत, हज़रत मौलाना अल्हाज क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब क़ादरी नूरी ने चन्द सालों क़ब्ल बरैली शरीफ़ में "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" क़ाइम की, जिसके ज़ेरे एहतमाम ताहुनूज़ 50 से ज़ाइद किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं। किताबें शाए करना, फ़रोगे मसलके आला हज़रत के लिए जलसे जुलूस कराना, ग़ुरबा व फ़ुक़रा की इम्दाद करना, उलमा व मुसन्नेफ़ीन से ख़ुसूसी राब्ता रखना, गुस्ताख़ाने रसूल के ख़िलाफ़ हमा वक़्त महाज़ आरा रहना, आपकी हयाते मुबारका के हसीन तरीन मशाग़िल हैं। माज़ी क़रीब में हज़रत ने नज्दियों, वहाबियों की सरकूबी के लिए एक तंज़ीम बनाम "लश्करे आला हज़रत" क़ाइम की जो हज़रत के जज़्ब–ए–अहक़ाक़े हक़ व इब्ताले बातिल की ज़िन्दा मिसाल है।

ख़ुदाए वहदहू क़ुद्दूस बतुफ़ैल रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम "फ़ज़ाने आला हज़रत" के मुरत्तिब, नाशिर, मुआवनीन और जुम्ला क़ारेईन को आला हज़रत क़ुद्देसा सिर्रहू का इल्मी व रूहानी फ़ैज़ान मरहमत फरमाए और दारैन की अज़ीम सआदतों से नवाज़े। नीज़ किताब को मक़्बूल फरमा कर नजाते उख़रवी का ज़रिया बनाए। आमीन

विषय सूची

सलाम के अहकाम व आदाब

मुसाफ़हा व मुआनक़ा

लिबास और ज़ीनत

अमामा की फ़ज़ीलत

हया व बेहयाई

शराब और इसकी बुराईयाँ

तौबा के फ़वाइद

ताज़ियादारी

औलिया–ए–किराम की नफ़अ़ बख़्श हिकायात व वाक़ेआ़त

उनवानात	सफ़ा

इमामे आज़म का मक़ाम व मरतबा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा की ईमान अफ़रोज़ हिकायात

उनवानात	सफ़ा

बैअत व इरशाद के अहकाम व मसाइल

उनवानात — सफ़ा

तिलावते कुरआन के फ़ज़ाइल व आदाब

रसूले मोहतरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तौक़ीर

मुहम्मद नाम रखने के फ़ज़ाइल व बरकात

नाम पाक सुनकर अंगूठे चूमना

आसार व तबर्रुकाते शरीफ़ा

अह्ले बैत व सादात के फ़ज़ाइल

मदीना मुनव्वरह की फ़ज़ीलत

फ़िरक़ा बातिला और उनका रद्द व इब्ताल

वुज़ू के फ़ज़ाइल व मसाइल

तयम्मुम के अहकाम

ग़ुस्ल के अहकाम

नमाज़ के फ़ज़ाइल व मसाइल

अज़ान व इक़ामत के अहकाम

तज्हीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा

रोज़ा के फ़ज़ाइल व मसाइल

ज़कात की अहमीयत व हैसियत

सदक़ा व ख़ैरात की फ़ज़ीलत

सूद की हुर्मत व वईद

हज व उमरा के अहकाम व आदाब

कुरबानी के अहकाम व मसाइल

औराद व वज़ाइफ़

तजावीज़ व तदाबीर

इंतिसाब

मरकज़े अह्ले सुन्नत बरैली शरीफ़ के नाम जिसकी आग़ोशे आफ़ियत में आलमे इस्लाम की अब्क़री शख़्सियत इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी और ताजदारे अह्ले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती आज़मे हिन्द मौलाना अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब नूरी बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा।

आसूद–ए–ख़्वाब हैं

मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी

मोमिनो इतमामे हुज्जत कीजिए

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिए
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिए

ज़िक्र उनका छेड़िए हर बात में
छेड़ना शैतां का आदत कीजिए

मिस्ल फारस ज़लज़ले हों नज्द में
ज़िक्र आयाते विलादत कीजिए

गैज़ में जल जाएं बेदीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिए

कीजिए चर्चा उन्हीं का सुबह व शाम
जान काफिर पर क़यामत कीजिए

आप दर्गाहे ख़ुदा में हैं वजीह
हाँ शफ़ाअत बिल वजाहत कीजिए

हक़ तुम्हें फरमा चुका अपना हबीब
अब शफ़ाअत बिल–मुहब्बत कीजिए

इज़्न कब का मिल चुका अब तो हुज़ूर
हम ग़रीबों की शफ़ाअत कीजिए

नुल्हिदों का शक निकल जाए हुज़ूर
जानिबे मह फिर इशारत कीजिए

शिर्क ठहरे जिसमें ताज़ीमे हबीब
इस बुरे मज़्हब पे लानत कीजिए

ज़ालिमो! महबूब का हक़ था यही
इश्क़ के बदले अदावत कीजिए

वज़्ज़ुहा हुजरात अलम नश्रह से फिर
मोमिनो! इतमामे हुज्जत कीजिए

बैठते उठते हुज़ूरे पाक से
इल्तिजा व इस्तिआनत कीजिए

या रसूलल्लाह दुहाई आपकी
गोशमाल अह्ले बिदअत कीजिए

ग़ौसे आज़म आपसे फरियाद है
ज़िन्दा फिर यह पाक मिल्लत कीजिए

या खुदा तुझ तक है सबका मुंतही
औलिया को हुक्मे नुसरत कीजिए

मेरे आक़ा हज़रत अच्छे मियाँ
हो रज़ा अच्छा वह सूरत कीजिए

—आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी

मक्की मदीने वाले

लब पे रहे तराना मक्की मदीने वाले
मिले इश्क़ का क़रीना मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
क़ुरआँ के हर वरक़ में तौसीफ़े मुस्तफ़ा है
वासिफ़ ख़ुदा तुम्हारा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
मेरी रूह काश निकले क़दमाने मुस्तफ़ा में
जन्नत बने ठिकाना मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
महकी हुई हैं गलियाँ अब तक तेरे शहर की
खोले थे ज़ुल्फ़े दोता मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
क़ल्ब व नज़र के इस्याँ अश्कों से धो रहा हूँ
तेरा मिले सहारा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
तेरे नक़्श पा पे मरना तेरा नाम लेके जीना
इश्क़े बिलाल देना मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
आंगन बनेगा मेरा ख़ुल्दे बरीं का नक़्शा
रख दो क़दम ख़ुदा रा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
हर्फ़े दुआ ज़ुबां पे लब पे रहा तबस्सुम
पैग़ाम थे सरापा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
नअ्लैन मुस्तफ़ा की मेरे सर को आरज़ू है
कब यह इंआम होगा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
गुंबद पे दूर से जब मेरी नज़र पड़ेगी
क्या क्या दुआ करूंगा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
दस्ते तलब न खाली बाबे करम से होगा
अहमद रज़ा का सदक़ा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
मुझ से हज़ार बेहतर सूर व हिरा के पत्थर
तेरे नक़्श पा को चूमा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
असरा तेरा सफर है कौनैन की ख़बर है
तुम सा कोई न आया मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
माहौल शहर तैबा जन्नत निशान होगा
आशिक़ तेरा कहेगा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
काबा बना है क़िब्ला तेरी रज़ा की ख़ातिर
तुमको ख़ुदा ने चाहा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
पढ़ता रहेगा नैय्यर जब तक हैं माह व अख़्तर
तेरे नाम का वज़ीफ़ा मक्की मदीने वाले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तक़रीज़ाते जलीला

दुआइया कलिमात

अज़ : नबीर–ए–आला हज़रत ज़ानशीने मुफ़्ती आज़मे हिन्द ताजुश्शरीआ
हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब अज़हरी
आस्ताना आलिया रज़्वीया रज़ा नगर सौदागरान बरैली शरीफ़

नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलेहिल–करीम व आलेही व सहबेही अज्मईन!

मुझे दौराने सफर मौलाना मौलवी मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी की ताज़ा तस्नीफ़ "फ़ैज़ाने आला हज़रत" के कुछ कलिमात सुनाए, मैं आजकल कुछ देखकर पढ़ने से माज़ूर हूँ जो कुछ मैंने सुना वह बहुत ख़ूब है, उम्मीद करता हूँ कि उनकी यह किताब अवामे अह्ले सुन्नत व उलमा में यक्सां तौर पर मक़बूल होगी।

अल्लाह तबारक व तआला मौसूफ़ को जज़ाए ख़ैर दे और उनकी इस ख़िदमत को क़बूल फरमाए और फ़ैज़ाने आला हज़रत को आम फरमाए।

व सल्लल्लाहु तआला अला नबीयेना सैय्यदना मुहम्मद व आलेही व सहबेही अज्मईन।

अल–फ़क़ीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा अल–क़ादरी अल–अज़हरी

29 मुहर्रमुल–हराम 1430 हिजरी

नोट : हज़रत ताजुश्शरीआ के यह दुआइया कलिमात शहज़ाद–ए–ताजुश्शरीआ हज़रत मौलाना मुहम्मद अस्जद रज़ा ख़ाँ साहब क़िब्ला की कोशिशों से हासिल हुए इसके लिए मैं उनका बेहद मम्नून व मशकूर हूँ।

(मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी)

तक़्रीज़े जलील

अज़ : बक़ियतुस सल्फ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सैय्यद मुहम्मद आरिफ साहब रज़वी साबिक़ शैख़ुल–हदीस मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़।

नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलेहिल–करीम।

अम्मा बाद! हज़रत मौलाना मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी शैख़ुल–हदीस जामिया रज़्वीया मज़्हरुल–उलूम गुरसहाए गंज ज़िला क़न्नौज दौरे हाज़िर के मुसन्नेफ़ीन में एक बुलन्द पाया मक़ाम पर फाइज़ हैं, तद्रीसी मसरूफ़ियात के बावजूद तालीफात में आपका क़लम कमाले सुरअत के साथ रवाँ दवाँ है, कई किताबें काफी ज़ख़ीम आपकी ज़ेवर तबअ से आरास्ता होकर मुल्क व बैरूनी मुल्क के उलमा व दानिशवरों से दादे तहसीन हासिल कर चुकी हैं।

सबसे अहम कारनामा आपका यह है कि "सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत" के नाम से सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर चार जिल्दें काफी ज़खीम तक़रीबन चार हज़ार सफ़्हात पर बिखरे हुए सीरत के मुस्तनद जवाहर पारों से मालो माल हैं जो हिन्द व पाक में अह्ले इल्म की बासरा नवाज़ी कर रही है। यह किताब यक़ीनन अह्ले सुन्नत के लिए बाइसे फ़ख़्र और क़ाबिले रश्क सरमाया है, यही वजह है कि मारेहरा मुक़द्दसा के साहिबे सज्जादा हज़रत अमीने मिल्लत अल्लामा अल्हाज सैय्यद अमीन हैदर साहब बरकाती और इस किताब के नाशिर हज़रत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हम्दानी साहब ने उसकी रस्मे इजरा फरमाते हुए मौलाना मुहम्मद ईसा साहब को ज़रे नक़्द की शक्ल में इम्तियाज़ी इंआम अता फरमा कर उनकी हौसला अफ़्ज़ाई फरमाई।

अभी इस वाक़ेया को चन्द ही दिन गुज़रे थे कि हज़रत अमीने मिल्लत की दुआयें मज़ीद कामयाबियों का ज़रिया बनीं कि ज़ेरे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" जल्द ही मंस–ए–शुहूद पर आ रही है, इस मुबारक किताब का मैंने मुताला किया जहाँ जहाँ हज़फ़ व इज़ाफ़ा और अल्फ़ाज़ व तरतीब में तग़ैय्युर व तबद्दुल के मशवरे दिए उन्हें मौसूफ़ ने सराहा और उन पर अमल भी किया, मैंने इस किताब को मुफ़ीद और अवाम व ख़्वास के लिए मालूमात का एक अहम ज़ख़ीरा पाया, रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी के आदाब व मसाइल, अक़ाइद में तौहीद व रिसालत के तअल्लुक़ से ज़रूरी अहकाम, झूठ, बद अह्दी, ग़ीबत, ज़िना, शराब, सूद वग़ैरह की क़बाहतें, मुआशरती आदाब व उसूल और अंबिया व औलिया किराम के नादिर व सबक़ आमोज़ वाक़ेआत व हिकायात वग़ैरह पर मुश्तमिल यह किताब आयाते क़ुरआनिया

व अहादीसे करीमा और फ़ेक़्ही जुज़्इयात की ताईद से माला माल है, मुझे उम्मीद है कि इस किताब से दुनिया को हिदायत व इरशाद की रौशनी मिलेगी इस किताब को मसाजिद व मजालिस में पढ़ कर सुनाने के लिए तरतीब दिया गया है अगर इसकी पाबन्दी की गई तो हम यक़ीन व ऐतमाद से कह सकते हैं कि हमारा मुआशरा ज़ेहनी आवारगी और बद अमली की ख़ुराफ़ात से पाक हो कर सालेह व नेक मुआशरा बन सकता है।

मेरी मालूमात के मुताबिक़ सबसे अहम बात मौसूफ़ की जुमला किताबों में यह है कि सैय्यदना आला हज़रत अज़ीमुल–बरकत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह की तसानीफ़ के इक़्तिबासात आप इस हुस्ने सलीक़ा मन्दी से आलिमाना अंदाज़ में जमा फरमाते हैं कि क़ारेईन झूम झूम जाते हैं और वह यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि इल्म व मालूमात का कोई गोशा इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू ने तिशन–ए–तक्मील नहीं छोड़ा है।

मौलाना मुहम्मद ईसा साहब की इन काविशों से अलग अलग मौज़ूआत पर कई किताबें मंज़रे आम पर आकर दावते मुताला दे रही हैं। मेरी दुआ है कि मौला तबारक व तआला "फ़ैज़ाने आला हज़रत" और आपकी जुमला किताबों को मक़्बूले आम बनाए और मौलाना मौसूफ़ को उम्रे ख़िज़्र अता फरमाए। आमीन!

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहे अलैहि तवक्कलतु व इलैहि उनीब।

सैय्यद मुहम्मद आरिफ़ रज़वी

बानी व सरबराह जामिया हुसैनिया रज़्वीया नानपारा ज़िला बहराइच, (यू0पी0)

28 सफ़रुल–मुज़फ़्फ़र 1449 हिजरी

तक़्रीज़े जलील

अज़ : हज़रत मौलाना मुहम्मद सालेह साहब क़ादरी बरैलवी

शैख़ुल–हदीस मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़

आज का दौर तरक़्क़ी याफ़्ता और साइंसी दौर कहलाता है इस अहद के जदीद व नौअ़ बनौअ़ ईजादात ने दुनिया की अक़्लों को हैरान कर दिया है जिनकी बदौलत यह ज़ईफ़ुल–बनियान इंसान ख़ुद को आज़ाद और मुख़्तार समझने लगा है इसके पस मंज़र में इंसानी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शोअ़बों में जितनी तरक़्क़ियाँ हुई हैं उनमें नजात व सलामती का रास्ता कोई नहीं, क्योंकि दुनिया की माद्दी तरक़्क़ियों ने इंसान को ग़ाफ़िल और दीन व मज़्हब से दूर कर दिया है, पुर ख़ार राहों की तारीकियाँ रोज़ बरोज़ बढ़ती जा रही हैं, नित नए मसाइल में दुनिया उलझी हुई है अह्ले इल्म के साथ अवामी तब्क़ा भी ज़ेहनी इंतिशार और माद्दी नशेब व फ़राज़ का शिकार है। इन कर्ब अंगेज़ हालात में दुनिया को निशाने मंज़िल तलाश करना होगा वरना आने वाला वक़्त ऐसा पुर आशोब होगा कि खुली फ़िज़ा में सुकून की सांस भी मयस्सर न होगी। इस सूरत में उख़रवी भलाई साइंसी ईजादात में नहीं बल्कि शरई उसूलों में मुज़मिर व पिंहां है। मुझे यक़ीन है कि दुनिया को सिर्फ़ इस्लाम के दामने रहमत में पनाह मिल सकती है, इस्लाम ही दर्द मन्दों का मदावा बन कर आया है, इस्लामी उसूलों पर अमली इस्तिक़ामत ही से नजाते आख़िरत की ज़मानत मिल सकती है।

ज़ेरे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" मेरे तिल्मीज़ रशीद मौलाना मुहम्मद ईसा साहब रज़वी क़ादरी शैख़ुल–हदीस अल–जामिअतुर्रज़्वीया मज़्हरुल–उलूम गुरसहाए गंज ज़िला क़न्नौज यूपी की ताज़ा तरीन तालीफ़ है इसमें उन्होंने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तसानीफ़ ख़ुसूसन फ़तावा रज़्वीया से चुन चुन कर ऐसे मसाइल व मवाद को यक्जा किया है जिनका तअल्लुक़ इस्लाहे फ़िक्र व अमल से है और इसे ऐसी सलीक़ा मन्दी से तरतीब दिया है कि हर बात दिल की गहराई में उतरती चली जाती है मुझे उम्मीद है कि इसके ज़रिया से दुनिया को इल्म व अमल की रौशनी और सलामती–ए–फ़िक्र का रास्ता मिलेगा।

मौलाना मुहम्मद ईसा साहब एक मुतहर्रिक व फ़अ़आल शख़्स और दर्से निज़ामी के लाइक़ व फाइक़ मुदर्रिस होने के साथ तस्नीफ़ व तालीफ़ के जज़्बा व शौक़ से सरशार हैं, इनकी तालीफ़ात में कई किताबें ज़ख़ीम और कई कई जिल्दों पर मुश्तमिल हैं जो हिन्द व पाक के अह्ले इल्म हज़रात से ख़िराजे तहसीन वसूल कर चुकी हैं। आज के पुरआशोब और माद्दी दौर में लौह व क़लम से तअल्लुक़ और दीनी शग़फ़ एक बड़ी बात है, मौला तआला उनकी फ़िक्र व नज़र को सलामत रखे।

मेरे तल्मीज़ रशीद मौलाना मुहम्मद ईसा साहब ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की हयात व ख़िदमात और उनकी इल्मी तहक़ीक़ात को मह्वरे फ़िक्र व क़लम बनाया है चूंकि अह्दे हाज़िर में मसलके आला हज़रत की तरवीज व इशाअत सुन्नियत की अज़ीम ख़िदमत और बेमिस्ल कारनामा है। क्योंकि बर्रे सग़ीर की मुस्लिम अक्सरीयत ताजदारे बरैली शैख़ुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैली कुद्देसा सिर्रहू को अपना दीनी क़ाइद व रहनुमा मानती है उन्होंने अक़ाइद व आमाल की इस्लाह के लिए जो अफ़्कार व नज़्रियात पेश फरमाए वह फरोगे दीन व मज़्हब की राह में चिरागे मंज़िल और मीनार–ए–हिदायत हैं इसके तनाज़ुर में उनकी इल्मी तहक़ीक़ात व यादगारों से दुनिया को आगाह व आशना करना ही वक़्त का ऐन तक़ाज़ा और दीने मतीन की सर बुलन्दी का सबब है।

"फ़ैज़ाने आला हज़रत" मेरी नज़र में अवाम व ख़्वास की इस्लाह व मालूमात के लिए एक मुफ़ीद व बाबरकत किताब है मैंने इसे देखा है मेरा ख़्याल यह है कि इस किताब से अहले सुन्नत व जमाअत में अमली बेदारी आएगी। मसलके आला हज़रत के फरोग़ व इस्तेहकाम में इसका किरदार नुमायाँ हो सकता है क्योंकि इस मौज़ू पर रज़्वीयात में आज तक ऐसी किताब नहीं लिखी गई इसे मसाजिद व मजालिस में भी सुनाया जा सकता है।

मौसूफ़ ने इसकी तरतीब व तदवीन में बड़ी मेहनत व जांफ़िशानी से काम लिया है मौला तआला उनकी इस काविश व ख़िदमत को क़बूल फरमाए उन्हें मज़ीद दीनी काम करते रहने की तौफ़ीक़ दे और इस किताब को उनके लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाए। आमीन!

कलिमाते तअस्सुर

अज़ : उम्दतुल–मुहक़्क़ेक़ीन हज़रत अल्लामा मुहम्मद अब्दुल–मुबीन
साहब नोमानी क़ादरी बरकाती मिस्बाही
अल–मजमउल–इस्लामी, मिल्लत नगर, मुबारकपुर, आज़मगढ़ (यू0पी0)

नहमदुहू वनुसल्ली व नुसल्लिम अला रसूलेहिल–करीम व आलेही व सहबेही अज्मईन!

यह हक़ है कि आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत सैय्यदना इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू अल–अज़ीज़ की तालीमात व इरशादात मब्नी बरहक़ और कुरआन व हदीस से माख़ूज़ और अक़्वाले अइम्मा किराम व बुज़ुर्गाने दीन से मुस्तफ़ाद हैं, दीने हक़ इस्लाम और मसलके अह्ले सुन्नत व जमाअत को जिस सुत्थरे अंदाज़ से इमाम अहमद रज़ा ने पेश किया है, गुज़िश्ता चौदहवीं और मौजूदा पन्द्रहवीं, में उसकी मिसाल नहीं पेश की जा सकी, जिसका समरा है कि आज पूरी दुनिया में इस इमामे इश्क़ व मुहब्बत और तरजमाने सुन्नत व शरीअत का डंका बज रहा है और आपका नामे नामी इस्मे गिरामी सुन्नियत की पहचान बन गया है।

अल्हम्दुलिल्लाह एक अरसे के जुमूद के बाद अब अह्ले सुन्नत व जमाअत के बेदार मग़ज़ और फ़िक्रमन्द हज़रात मैदाने अमल में आ गए हैं, तसानीफ़े रज़ा की इशाअत का काम भी बड़े पैमाने पर हो रहा है, हिन्द व पाक के अह्ले क़लम हज़रात भी नए नए उनवानात को ज़ीनते क़िरतास बना रहे हैं, तसानीफ़े आला हज़रत के तराजिम भी मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों में हो रहे हैं और हयात व अफ़्कारे रज़ा पर रिसर्च (तहक़ीक़) का काम तो पूरे तसलसुल से हो रहा है, कई एक तहक़ीक़ी मक़ाला ज़ेवरे तबअ् से आरास्ता होकर मुताले की मेज़ पर हैं, रिसाइल व मैगज़ीन और अख़्बारात ने तो ख़ुसूसी नम्बरात की एक लम्बी लाइन लगा दी है, जहाँ माहे सफ़रुल–मुज़फ़्फ़र की आमद होती है किसी न किसी रिसाले या अख़बार का ख़ुसूसी नम्बर मंज़रे आम पर आ ही जाता है, जिसके ख़ुशगवार नताइज भी देखने को मिल रहे हैं, कि बहुत सारे दानिशवर और बाशुऊर मुहक़्क़ेक़ीन ने दिल से ऐतराफ़ किया कि वाक़ई इमाम अहमद रज़ा एक अज़ीम मुफ़क्किर ज़बरदस्त मुहक़्क़िक़ और माया नाज़ दाई व मुसलेह थे जिन्होंने एक तरफ इल्म व तहक़ीक़ के दरिया बहाए तो दूसरी तरफ उम्मत में पैदा होने वाले नित नए फित्नों का भी डट कर मुक़ाबला किया और इस्लाह व तज्दीद के मैदान में आपने सिर्फ़ ग़ैरों ही को मुतनब्बह नहीं किया अपनों के अन्दर फ़ैली हुई ग़लत रस्मों और ख़ुराफ़ात व बिदआत का भी पूरी जवांमर्दी और दिलेरी से क़िलअ् क़ुमअ् फरमाया, गोया आपकी शख़्सियत इस शेअ्र का मिस्दाक़ है।

अपने भी ख़फ़ा मुझ से हैं बेगाने भी नाख़ुश
मैं ज़हरे हलाहल को कभी कह न सका क़न्द

दूसरों ने अल्लाह व रसूल की शान में जो गुस्ताख़ियाँ की उनका सख़्त नोटिस लिया उन पर क़रार वाक़ई शरई हुक्म सादिर फरमाया जो एक मुजद्दिद व मुसलेह आलिम व मुफ़्ती का दीनी फरीज़ा है ताकि उम्मत को उनके ग़लत अफ़्कार व नज़्रियात से बचाया जा सके, तो दूसरी तरफ अवाम अह्ले सुन्नत में जो बिदआत राह पा गई थीं उनके ख़िलाफ़ भी तीशए–ए–क़लम चलाने में आपने दरेग़ न किया, जिसका नतीजा यह निकला कि बहुत से ख़ानक़ाही हज़रात जिनकी रोज़ी रोटी यही ख़ानक़ाही मरासिम थे या वह महज़ क़दीम रस्म व रिवाज के परिस्तार थे शरीअत क्या कहती है उसकी उनको कुछ परवाह न थी, वह भी सख़्त दुश्मनी पर आमादा हो गए लेकिन उस मर्दे हक़ आगाह और मुजाहिदे बेबाक ने किसी की परवाह न की और सुन्नत व शरीअत के तक़ाज़ों को पूरा करते रहे, ऐलान हक़ से कहीं मुँह नहीं मोड़ा, यूं ही बाज़ मत्रूक सुन्नतों के इहया में भी जान तोड़ कोशिश की उसमें भी बाज़ अपने आड़े आए, और रस्मे क़दीम को साफ व सरीह हुक्मे शरअ पर फ़ौक़ियत देने की सई की, और इमाम मौसूफ़ के ख़िलाफ़े सफ़ आरा हुए, किसी ने मुख़ालिफ़त की तो किसी ने जलन व हसद को शेवा बनाया मगर हुआ वह जो होना था कि –

सब उन से जलने वालों के गुल हो गए चिराग़
अहमद रज़ा की शमअ फरोज़ां है आज भी

और फरोज़ाँ ही नहीं है बल्कि उसकी लौ तेज़ तर होती जा रही है, और हज़ार मुख़ालिफ़तों के बावजूद आपकी अज़मतों का सूरज है जो बढ़ता ही जा रहा है "जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे" आप पर ख़ूब सादिक़ आता है, हक़ व सदाक़त और इख़्लास पेशा मरदाने हक़ के साथ, हमेशा ही ऐसा हुआ है, इमाम ग़ज़ाली और मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अलैहिमुर्रहमा वर्रिज़वान के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ, लेकिन उन दोनों मुस्लेहीने उम्मत के नाम और काम की भी पूरे आलम में धूम मची हुई है।

ज़रूरत थी कि इमाम अहमद रज़ा जैसे मुसलेह व मुजद्दिद के अफ़्कार व नज़्रियात और उनके साफ सुत्थरे मसलक को और इस्लाही, तज्दीदी ख़िदमात को आलमे आशकारा किया जाए, इमाम अहमद रज़ा की तसानीफ़ चूंकि हर मौज़ू और हर फन पर हैं और ज़्यादा तर ख़ालिस इल्मी व तहक़ीक़ी अंदाज़ लिए हुए हैं जिनका पढ़ना और समझना आम आदमियों के बस की बात नहीं और अह्ले इल्म हज़रात के लिए भी जुमला तसानीफ़ का हुसूल और उनका मुताला आसान नहीं इसलिए सख़्त ज़रूरत थी कि आला हज़रत कुद्देस सिर्रहू की तालीमात व इरशादात को इंतिख़ाब व इख़्तिसार के साथ यक्जा कर दिया जाए, सबसे पहले राक़िमुल–हुरूफ़ ने इरशादाते आला हज़रत, तरतीब देकर यह ख़िदमत अंजाम दी लेकिन यह बिल्कुल इब्तिदाई कोशिश थी और अब जब इस सिलसिले को आगे बढ़ाने ढंग से कुछ

करने की ज़रूरत महसूस हुई तो हुजूमकार और मुख़्तलिफ़ुन्नौअ़ मसरूफ़ियात ने आगे बढ़ने नहीं दिया जबकि मज़ीद एक हिस्से का मवाद जमा है, इंशाअल्लाह फ़ुर्सत निकाल कर उसको भी मंज़रे आम पर लाना है, दूसरी कोशिश मौलाना मुहम्मद मीकाईल ज़्याई की है जिन्होंने इरशादाते आला हज़रत से अच्छे अंदाज़ पर तालीमाते आला हज़रत, तरतीब दी उसके भी मुतअद्दिद एडीशन छप चुके हैं लेकिन यह किताब भी हुस्ने तरतीब के बावजूद मुख़्तसर है, अब इस सिलसिले की तीसरी कड़ी "फ़ैज़ाने आला हज़रत" है जिसके मुअल्लिफ़ व मुरत्तिब फ़ाज़िले नौजवान हज़रत मौलाना मुहम्मद ईसा रज़वी ज़ैदा मज्दहू हैं जिन्होंने कई बड़े काम पहले भी किए यानी "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" और "सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत" पहली किताब पाँच जिल्दों में है और दूसरी चार जिल्दों में और अब यह फ़ैज़ाने आला हज़रत" "फ़ाज़िले मौसूफ़ की तीसरी बड़ी कोशिश है, और बहुत मुफ़ीद है मुझे इस किताब को देख कर इसलिए भी ज़्यादा ख़ुशी है कि यह असलन मेरे ख़्वाबों की ताबीर है, किताब और इसके उनवानात देख कर दिल बाग़ बाग़ हो गया, और क़ल्ब की अथाह गहराईयों से यह दुआ निकली अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा हो यह किताब क्या है वाक़ई फ़ैज़ाने आला हज़रत है, जो दरिया की तरह बह रहा है, फ़तावा रज़्वीया और दीगर तसानीफ़े आला हज़रत से ग़वासी करके ऐसे मोती लाए हैं कि आँखें ख़ीरा हुई जाती हैं, और गुलिस्ताने रज़ा से ऐसे ऐसे फूल चुन कर सफ़्हाते क़िरतास पर सजा दिए हैं कि बस सूंघा कीजिए, और मशामे जान व ईमान को मुअत्तर कीजिए, तौहीद, रिसालत, अक़ाइद व कलाम, फ़ज़ाइल व मसाइल और नसाइह व मवाइज़, नीज़ ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआत और औराद व वज़ाइफ़ से लेकर हुक़ूक़ व फ़राइज़ और उसूले ज़िन्दगी वग़ैरह जुमला मक़ासिद और ज़रूरी मौज़ूआत को इस किताब ने घेर रखा है, गोया चौदह सौ सफ़्हात में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू के अफ़्कार व मोअ़तक़ेदात का इत्र, कशीद करके मुअल्लिफ़ ने रख दिया है, यक़ीनन इस किताब के फ़वाइद बड़े दूर रस और देरपा होंगे, ज़रूरत है कि इसको घर घर पहुँचाया जाए, अरबाबे इल्म व दानिश की मेज़ों पर सजाया जा सके, सभी लाइब्रेरियों को इससे ज़ीनत दी जाए, और कुल्लियात की अहम लाइब्रेरियों में इसके नुस्ख़े भेजे जाएं, मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं उसके जामे व मुअल्लिफ़ और मुबारकबाद के लाइक़ हैं इसके नाशिर शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब नूरी बानी इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी इस किताब के ज़रिया अल्लाह तबारक व तआला मुसलमानों को सिराते मुस्तक़ीम पर इस्तिक़ामत अता फ़रमाए। और मुअल्लिफ़ को मज़ीद ख़िदमात की तौफ़ीक़ दे, आमीन! बेजाहे सैय्यदुल–मुरसलीन अलैहे व आलेही व सहबेहिस्सलातु वत्तस्लीम।

मुहम्मद अब्दुल–मुबीन नोमानी क़ादरी बरकाती मिस्बाही
अल–मजमउल–इस्लामी, मिल्लत नगर,
मुबारक पुर, आज़मगढ़ (यू०पी०)

तज़्किरा किताब और साहिबे किताब का

अज़ : डॉ0 ग़ुलाम जाबिर शम्स मिस्बाही (एम.ए.पी.एच.डी. गोल्ड मेडलिस्ट)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बूंद बूंद से दरिया बनता है और दरिया बूंद बूंद, ज़रा सा ग़ौर करें। यह हक़ीक़त ख़ुद बख़ुद खुल जाएगी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नूर अल्लाह तआला के नूरे मुतलक़ की एक बूंद था, उसी बूंद से यह काइनाते अर्ज़ व समा और यह ठाठें मारता हुआ समुन्द्र वजूद में आया। इल्मे इलाही जो बेकराँ है, ला मुतनाही है, जिसकी तहदीद नामुम्किन है, उसकी एक–एक बूंद ही से जो सैले रवाँ आगे बढ़ा वह मेरे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का क़ल्बे अतहर है। इसी सैले रवाँ की बूंद बूंद से मुफ़स्सेरीन, मुहद्देसीन, फ़ुक़्हा, अतिब्बा, फलासफ़ा, उसूलीन, मुहन्देसीन, मुफ़क्केरीन, मुस्लेहीन पैदा हुए जिन्होंने इस्लाम की चमन बन्दी की, दीने मतीन की मुशातगी की, शजरे इल्म को हरा रखा, उम्मत की इस्लाह फरमाई, हयात के असरार बताए। काइनात के राज़ खोले, बन्दा व बन्दगी के भेद को तश्त अज़ किया।

चौदहवीं सदी हिजरी में इल्मे नबुव्वत की एक बूंद को मोजज़न दरिया की शक्ल में मुजस्सम देखना हो तो इमाम अहमद रज़ा को देखें, जिनका इल्म लदुन्नी था, रब्बानी था, कहने वाले उनको नादिर–ए–दहर, नाबग़ए, अस्र, अबक़रीयुश्शान, मुजद्दिदे इस्लाम, क़ुतुबुल–इरशाद, इमाम अह्ले सुन्नत कहते हैं, मोजज़ा मिन मोजज़ाते रसूलुल्लाह और आयत मिन आयातिल्लाह कहते हैं, सौ साल होने को आए तब से अह्ले इल्म व अह्ले क़लम उनके इल्म व फन की शरह व तफ़्सीर में डटे जुटे रहे और अब तो इसमें सौ सौ का इज़ाफ़ा रोज़ अफ़्ज़ूं है। ताहम उनको वह मंज़िल नज़र नहीं आती जिसकी वह तलाश में हैं बल्कि यह कहते सुनाई देते हैं।

बिस्यार ख़ूबां दीदा अम लेकिन तू चीज़े दीगरी

इमाम अहमद रज़ा के अफ़्कारे आलिया के शारेहीन में एक उभरता और मोतबर नाम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब रज़वी क़ादरी शैख़ुल–हदीस अल–जामिअतुर्रज़्वीया मज़्हरुल–उलूम, गुरसहाय गंज, ज़िला क़न्नौज (यू0पी0) का है। वह फ़ाज़िल उस्ताद हैं, मुस्तनद मुफ़्ती हैं, नुक्ता शनास मुक़र्रिर हैं, हक़ीक़त बीं साहबे क़लम हैं, बंगाल में पैदा हुए, बिहार उबूर करके यू0पी0 में तालीम पाई, अपनी इल्मी सरगर्मियों की जौलानगाह भी यू0पी0 ही को बनाया, चूंकि वह बरैली में पले बढ़े, पढ़े लिखे, परवान चढ़े, इसलिए उनकी ज़बान व क़लम का ख़ास मौज़ूअ़ फ़िक्रे रज़ा है, यही उनकी पहचान है, इसी से उनकी शान है, इसी में वह रतबुल्लेसान हैं, अफ़्कारे रज़ा ही के वह एक कामयाब शारेह व तरजुमान हैं।

क़द न नाटा बौना, न लांबा तड़ंगा, दरम्यानी, गठा हुआ दोहरा जिस्म, गोल नारंगी नुमा चेहरा, सीधी ऊंची नाक, अनाबी अक़ाबी आँखें, न सुर्ख़ सुर्ख़, न ज़र्द ज़र्द, दोनों का आमेज़ा रंग, उस पर तैरती हुई मुस्कुराहट, चूंकि वह गोश्त ख़ोर भी हैं इसलिए सारे आज़ा गोश्त से पुर, यह है उनका

हुलिया, ख़ुश ख़ोर, ख़ुश पोश, ख़ुश गुफ़्तार, ख़ुश फ़िक्र, ख़ुश नवेस मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी की पैदाइश 4 जुलाई 1967 ई0 को मग़रेबी बंगाल दीनाजपुर में हुई, तालीम सब बरैली की है इसलिए ज़ेहन व फ़िक्र, दिल व दिमाग़, तहज़ीब व वज़ा और ज़ुबान व क़लम पर जो रंग चढ़ा है वह ख़ालिस रोहेल खंडी है, अह्दे तहसील में कामयाब तालिबे इल्म रहे, अब अह्दे तद्रीस में कामयाब फाज़िल उस्ताद हैं। नाम का जो साबेक़ा है वह दारुल–इफ़्ता से जुड़े रहने का खुला इशारा है और नाम का जो लाहिक़ा है वह उनके मशरब का वाज़ेह इस्तेआरा है, तक़रीर तो मैंने नहीं सुनी मगर कलाम और क़लम से अंदाज़ा होता है उम्दगी, शुस्तगी, शगुफ़्तगी से करते होंगे। उन से जो मेरा तआर्रुफ़ है वह कोई पन्द्रह साल पुराना है, इन बरसों में जो मैंने उनको समझा और परखा है वह यह कि उनके अन्दर पेशावाराना ज़ेहनीयत नहीं है, इल्म उनका ज़ेवर ~~है~~ और इख़्लास उनका जौहर, जभी उनकी मुझसे निभ रही है, बन छन रही है, वरना कब के अन बन हो चुकी होती।

उलूमे आलिया और उलूमे आलिया तो पढ़ाते ही हैं मगर हदीस व फ़िक़्ह उनका ख़ास मैदान है, शैख़ुल–हदीस जो ठहरे, कोई वक़्त था वह जुमा का ख़ुतबा देते थे, ख़ुतबा से पहले ख़िताब भी करते थे, यह ख़िताब हदीस, तफ़्सीर, फ़िक़्ह की रौशनी में होता और अख़्लाक़ियात, आदाब, मसाइल और समाजी इस्लाहियात पर होता, बरैली के परवरदा थे, बरैली की बहारे हदीस का झोंका आया, ज़ेहन का दरीचा खुलता चला गया, अब वह हर जुमा का ख़िताब मौज़ूई लिहाज़ से फतावा रज़्वीया से तैयार करने लगे यूं उनके दिल में तदवीने हदीस का दाइया पैदा हुआ और अब वह ख़िताब से ज़्यादा किताब तैयार करने में जुट गए, यह थी तक़रीब "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" की तालीफ़ की जो पांच जिल्दों पर मुश्तमिल है।

एक दफ़ा दौराने सफ़र से मेरी मुलाक़ात हुई। किताब का मसव्वदा मेरे सामने रख दिया, देखता गया हैरत व मुसर्रत में डूबता गया। इल्मी मवाद इकट्ठा कर लेना अलग बात है फिर उसे तदवीन व तकनीकी मराहिल से गुज़ारना चीज़े दीगर हैं। पहला मरहला जज़्बा और जोश का होता है दूसरा मरहला होश व हुनरमंदी चाहता है। मुफ़्ती साहब ने अपनी पहली कविश में इन मराहिल को ख़ुश उस्लूबी से तय किया है। फिर "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" मुरत्तब हुई, मतबूअ हुई, हिन्द व पाक से पंद्रह बरस पहले गुज़रा और आज का दिन, रब्त व तअल्लुक़ और मुहब्बत व उख़ुव्वत में कोई कमी नहीं। यह रस्मे मुहब्बत खानदानी क़राबतदारी या इलाक़ाइयत पर मब्नी नहीं ख़ालिस इल्मी व इमानी हैं।

मुफ़्ती साहब की दर्सगाह बदली मेरा क़याम बदला मगर बाहम राब्ता रहा। वह मेरी और मैं उनकी क़लमी सरगर्मियों से आगाह रहा। इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस के बाद जो वह सीरतुर्रसूल पर काम कर रहे थे, एक दफ़ा उहोंने ख़ुशख़बरी सुनाई सीरतुर्रसूल का काम पाए तक़मील को पहुंच चुका है। फुल स्केप साइज़ के सोला सौ सफ़हात पर मुश्तमिल है चार जिल्द का तख़मीना है, इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस की तर्ज़ पर यह भी तसानीफ़े रज़ा से माख़ूज़ व मुस्तफ़ाद है, तबाअत का क्या होगा? मैंने उनका राब्ता पोरबन्दर, गुजरात के मुजाहिदे सुन्नियत हज़रत मौलाना अब्दुस्सतार हम्दानी साहब से करा दिया, किताब "सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमंत" के

नाम से चार जिल्दों में छपी और शायाने शान छपी जिसकी ज़्यारत मुझे कराची में हुई, हिन्दुस्ता में देखना अब तक नसीब न हुआ। साइज़ और ज़ख़ामत में उसकी हर जिल्द मिस्बाहुल्लुगात जैसी है। "हयाते आला हज़रत" कामिल जब छपी तो बम्बई लाहौर और पोरबन्दर से पै दर पै छपी, लाहौर एडीशन तो मेरे पास बरवक़्त आ गया मगर हिन्दुस्तानी हुनूज़ देखने से रहा, हैरत है, यह जुमला मोअ्तरेज़ा है।

मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी ने जो काम किया अनोखा किया निराला किया, मगर हदीस सीरत दोनों मौज़ूआत की बुनियाद मेअ्मारे रज़्वीयात मलिकुल-उलमा बहरुल उलूम हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन रज़वी अज़ीमाबादी ने डाली थी इस बुनियाद पर मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी ने दो अलग अलग फलक बोस इमारतें खड़ी कर दीं। जज़ाहुल्लाहु ख़ैरल-जज़ा।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब रज़वी की इल्मी मुहिम जोई और फ़ुतूहात देख कर अंदाज़ा होता है बरैली के अमन मियाँ ने उनको अपने अमान में ले लिया है, अपने दरबार में क़बूल कर लिया है। मुफ़्ती मुहम्मद ईसा रज़वी ने "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" पाँच जिल्द लिखी, सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत, चार जिल्द लिखी, तआर्रुफ़ तसानीफ़ इमाम अहमद रज़ा, दो जिल्द लिखी, इमाम अहमद रज़ा पर दुनिया भर में लिखी गई किताबों की फ़ेहरिस्त, क़िरतास व क़लम, लिखी, फरमूदाते आला हज़रत लिखी, इमाम अहमद रज़ा और मसाइले निकाह लिखी, इमाम अहमद रज़ा और मसअला ख़िज़ाब लिखी, फ़ैज़ाने आला हज़रत लिखी इमाम अहमद रज़ा और उलूमे तसव्वुफ़ लिखी, तम्हीदे ईमान की तख़्रीज की, अल-मल्फ़ूज़ की तख़्रीज व तहज़ीबे नौ की, अंबा-उल-हसन अन कलामुहुस्सूने तिब्बयानु लेकुल्ले शैइन, हाशिया अद्दौलतुल-मक्कीया का तरजमा किया, उलूमुल-कुरआन नाम रखा, अनवारुल-मन्नान फ़ी तौहीदुल-कुरआन का तरजमा किया, अज़ा कुरआन उनवान दिया, और अभी क़लम जारी है बल्कि शबाब पर है।

मुफ़्ती साहब की उम्र होगी कोई यही लग भग चालीस साल, जब चेहल साल के इधर का जल्वा है तो चेहल साल के उधर का आलम क्या होगा, क्योंकि इल्मी काम जिस इल्मी रुसूख़, अक़्ली इरफ़ान, पुख़्ता तजरबा व मुशाहिदा की गहराई का तालिब है वह चेहल साल के बाद हासिल होती है। चुनांचे कहा जा सकता है मौजूदा काम ही उनके रौशन मुस्तक़्बिल की ख़ु इशारत भी है और बशारत भी, ख़ुदा मुफ़्ती साहब को हसद व नज़रे बद से बचाए, उनका यह स काम हैरत का है हसद का नहीं, रश्क का है तअस्सुब का नहीं, हैरत, मुसर्रत, रश्के महमूद नहीं, जबकि तअस्सुब तंग नज़री सरापा मज़्मूम है, हासिद और मुतअस्सिब दिल की त आग में सुलगता रहता है, उसकी हरारत व तपिश में जलता रहता है और महसूद का कुछ न बिगड़ता है, बल्कि उसके दरजात बुलन्द होते हैं, तअस्सुब की तारीकी लियाक़त की ताबिन्दगी सामने मांद पड़ जाती है, वह जो इरशादे हदीस है, महसूदुल-इल्म, वह उसे और फ़ाइक़ुल-अक़्रान कर देता है।

मुफ़्ती साहब की "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" मेरे पास है, क़िरतास व क़लम फरमूदाते आला हज़रत भी हैं और अब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" का मुसव्वदा नहीं फ़ेहरिस्त आई

और हुक्म हुआ है कि यह ख़ाम ख़्याल इस पर कुछ इज़्हारे ख़्याल करे किताब प्रेस जाने को है और बिना आपकी तहरीर के किताब का छपना मुझे गवारा नहीं लिहाज़ा फौरन से पेश्तर अपनी तहरीर इरसाल करें, बताया जाए क्या लिखूं? दुआइया कलिमात लिखूं, इसका मैं अह्ल नहीं, तक़्दीम व तक़रीज़ लिखूं, यह मेरा मंसब नहीं, एक अरब नाक़िद ने लिखा है तक़्दीम निगारी और तक़रीज़ निगारी साहिबे किताब और क़ारेईन के बीच दलाली करना है, इस दलाली के दाग़ से मैं अपना दामन जो पहले ही से आलूदए इस्याँ है इसे मज़ीद आलूदा होने नहीं देना चाहता, अल्बत्ता मुसन्निफ़ की क़द्र व क़ीमत और मक़ाम व मरतबा का तअय्युन न कल बुरा था न आज बुरा है। बल्कि यह अह्ले इल्म का हक़ है फ़र्ज़ मंसबी है और अख़्लाक़ी फ़रीज़ा भी, इसलिए न कोई दस्त कश हो सकता है, न कोई किसी को दस्त बरदार कर सकता है।

हमारे यहाँ हर काम पचास बरस ताख़ीर से होता है मगर, देर आयद दुरुस्त आयद, होता है बल्कि एक सुनार की सौ लोहार की वाला होता है, जिस मौज़ू पर मुफ़्ती साहब ने "फ़ैज़ाने आला हज़रत" लिखी है इस मौज़ू पर मेरी दानिस्त में सदरुश्शरीआ हज़रत मौलाना अमजद अली रज़वी अलैहिर्रहमा की "इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब" है मगर उस किताब को वह मक़्बूलियत हासिल न हो सकी जो उनकी "बहारे शरीअत" को मिली, एक अरसा बाद "फ़ैज़ाने सुन्नत" सामने आई, फ़ैज़ाने शरीअत रूनुमा हुई बरकाते शरीअत वजूद में आई। इन तमाम किताबों के बावजूद ज़रूरत थी दावत व तबलीग़ और इस्लाह व तज़्कीर के मौज़ू पर एक ऐसी किताब की जो महद से लहद तक के मसाइल को मुहीत हो, जामे मुफ़स्सल, मुस्तनद और आम फहम ज़ुबान में हो, मुफ़्ती साहब ने "फ़ैज़ाने आला हज़रत" लिखी और जमाअत की एक बड़ी ज़रूरत को पूरा किया, किताब का नाम अगरचे शख़्सियाती है मगर मौज़ू आम है चूंकि यह किताब इमाम अहमद रज़ा की तस्नीफ़ाते आलिया और तहक़ीक़ाते ग़ालिया से माख़ूज़ व मुस्तफ़ाद है इसलिए इसकी इस्तिनादी हैसियत मुसल्लम है, मुफ़्ती साहब अमली आदमी हैं अमल पर यक़ीन रखते हैं, अपने अमल से अपनों का भला करते हैं ग़ैरों का मुँह काला करते हैं, किताब की फेहरिस्त बताती है कि इस्लाही व अख़्लाक़ी और दीनी व समाजी मौज़ूआत के बाब में इमाम अहमद रज़ा ने किस क़द्र बलीग़ कोशिशें की हैं।

किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" सामने नहीं फ़ेहरिस्त जो कभी आई थी नज़र से गुज़री थी अब वह भी पेशे नज़र नहीं इसलिए किताब पर इजमाली गुफ़्तगू की गई और साहिबे किताब की शख़्सी तस्वीर जो मेरे नज़्दीक ज़्यादा वाज़ेह है इस पर क़दरे तफ़्सील से रौशनी डाली गई इस तरह उनके उस हुक्म की तामील हो गई जो कई महीनों से मेरे कानों में बांग जरस बन कर गूंज रहा था।

ई व आँ से बालातर हो कर इस बात की सिफारिश ज़रूर की जा सकती है कि "फ़ैज़ाने आला हज़रत" शरई अहकाम व मसाइल पर मुश्तमिल एक मौज़ूई किताब है इसका हदफ़ अवामे अह्ले सुन्नत की इस्लाह है और दौरे हाज़िर में हमें अपनी इस्लाह की सख़्त ज़रूरत है इसका बेहतर तरीक़ा यह है कि मसाजिदे अह्ले सुन्नत के अइम्मा किराम अपनी मस्जिदों में इस किताब से दर्स दें, मदारिस अह्ले सुन्नत के तलबा अपने मुताले में शामिल करें, ख़ुतबाए अह्ले सुन्नत इससे अपना ख़िताब तैयार करें, अवामे अह्ले सुन्नत अपने घरों दफ़्तरों, दुकानों, महफ़िलों मज्लिसों जहाँ मौक़ा

मिले वहाँ हल्क़ा बना कर इसको पढ़ें पढ़ायें, ख़्वातीने अह्ले सुन्नत अपने घरों या किसी मुनासिब मक़ाम पर बा परदा जमा हो कर सुनें सुनायें. नाशेरीने कुतुब अह्ले सुन्नत इसको मुल्क के गोशे गोशे तक पहुँचाने में मदद करें. जराइद अह्ले सुन्नत मुदीराने मोहतरम इस पर तब्सरे और इज़्हारे ख़्याल करें क्योंकि यह सब की मुश्तरका ज़िम्मेदारी है ख़ुदा हम में ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा कराए और इस एहसासे ज़िम्मेदारी से सुबुकदोश होने की तौफ़ीक़ अरज़ानी फरमाए, आमीन!

अख़ीर में हम नबीर–ए–आला हज़रत शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत अल्हाज हज़रत क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा साहब नूरी मद्दा ज़िल्लहुल–आली बानी व सरबराह "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" की ख़िदमत में ख़िराजे तशक्कुर पेश करते हैं कि उनके हुक्म व ईमा पर "फ़ैज़ाने आला हज़रत" की तरतीब व तदवीन अमल में आई फिर अपनी क़ाइम करदा लाइब्रेरी से इसकी तबाअत व इशाअत फरमा कर उन्होंने इसका बारेगिरां उठाया।

दयारे आला हज़रत बरैली शरीफ़ में मुद्दतों से जिस चीज़ की ज़रूरत का शिद्दत से एहसास था मेरे ख़्याल में शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत ने उसे "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" क़ाइम करके पूरा कर दिया. बरैली शरीफ़ इश्क़ व अक़ीदत और इरफ़ान व वफ़ा की सर ज़मीन है उसकी नकहत व नूर से मशामे जाँ को ख़ुशबुओं की सौग़ात मिला करती है, जिसकी मसनदे इरशाद व हिदायत पर बैठ कर आला हज़रत ने क़ौम को सैंकड़ों किताबें दीं आज उनकी ज़्यारत, उनका तहफ़्फ़ुज़, उन से इस्तिफ़ादा के लिए जो सामान "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" के नाम पर फराहम किया गया है उसका सहरा शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा साहब नूरी के सर है। बरसों के जुमूद व तअत्तुल के बाद उनका यह इक़्दाम क़ाबिले क़द्र और लाइक़े सताइश है. खानदाने आला हज़रत का एक–एक फ़र्द हमारे लिए क़ाबिले ताज़ीम व एहतराम है, वह सरों का ताज हैं, नेअ्मते उज़्मा हैं, उनकी इज़्ज़त व तक्रीम हमारे इश्क़ व अक़ीदत का हिस्सा है, ख़ालिक़े काइनात आला हज़रत के अफ़रादे खानदान को तादेर सलामत रखे।

मुझे उम्मीद है कि "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" की तामीर व तरक़्क़ी से माफ़ात की तलाफ़ी हो जाएगी, अपनों और ग़ैरों के शिकवों का जवाब होगा। "फ़ैज़ाने आला हज़रत" और इसके मुरत्तिब मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब रज़वी के साथ शहज़ाद–ए–गिरामी हज़रत क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा साहब का नाम और काम भी जरीद–ए–आलम पर नक़्श रहेगा।

दुआगो व दुआ जो

ग़ुलाम जाबिर शम्स मिसबाही पुरनवी

बानी व सरबराह, मरकज़ बरकाते रज़ा,

मीरा रोड़ मुम्बई

25 जून 2008 ई०

किताब और शख़्सियत

अज़ : रफ़ीअ् अहमद मन्नानी, (एम.ए. एल.एल.बी.)
बिहार युनिवर्सिटी मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार)

उक़ाबी रूह, शाहीन मिज़ाज, सिराजे अज़मत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब नूरी क़ादरी, शैख़ुल–हदीस अल–जामिअतुर्रज़वीया मज़्हरुल–उलूम गुरसहाए गंज ज़िला क़न्नौज ने तस्नीफ़ व तालीफ की दुनिया का पहला सफर नौखे़ज़ी की उम्र में 1990 ई0 से शुरू किया इस पुरख़्वार रास्ते की दुशवारियों का अंदाज़ा उन लोगों को बख़ूबी है जो इस राह के मुसाफ़िर रह चुके हैं। उन्होंने "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस" पाँच ज़ख़ीम जिल्दों से तस्नीफ़ी और तालीफ़ी सफर का आग़ाज़ किया जो अपनी जिद्दत तराज़ियों के साथ सहीह सिम्त की तरफ लौह व क़लम की दहलीज़ पर हौसला मन्दी का मुस्तहसन इक़्दाम था।

अह्ले इल्म के दरम्यान यह किताब हिन्द व पाक में मक़्बूल हुई, इस सफर का इख़्तिताम हुआ ही था कि दूसरा सफर शुरू हो गया, सफरे ज़िन्दगी के साथ हज़रत मुफ़्ती साहब मौसूफ़ ने क़ल्मी व तस्नीफ़ी सफ़र जारी रखा है क्योंकि "मंज़िल से ज़्यादा कैफ़े जिहादे सफर में है।"

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला चूंकि यक़ीने मुहकम, अमले पैहम सोचने वाले ज़हन, महसूस करने वाले दिल और मेहनत करने वाले हाथों के मालिक हैं, दीने मतीन की ख़िदमत, मज़्हबे अह्ले सुन्नत का फरोग़ व इस्तेहकाम और मसलके आला हज़रत की तरवीज व इशाअत उनका मताअ् ज़िन्दगी है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू के हवाले से "सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत" के नाम से उन्होंने क़ौम को अज़ीम इंसाइकिलूपीडिया अता किया, सीरतुर्रसूल का यह जामेअ् व मुस्तनद ज़ख़ीरा चार ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल है। यह किताब भी हिन्द व पाक में शाए हुई उसे उलमा और दानिशवरों ने बहुत सराहा, इनके अलावा आपने मुतअद्दद इल्मी व इस्लाही किताबें तालीफ़ कीं। मसलन फरमूदाते आला हज़रत, उलूमुल–क़ुरआन, अज़मते क़ुरआन, तआर्रुफ़ तसानीफ़े इमाम अहमद रज़ा, क़िरतास व क़लम, इमाम अहमद रज़ा और मसाइले निकाह, इमाम अहमद रज़ा और मसला ख़िज़ाब, इमाम अहमद रज़ा और उलूमे तसव्वुफ़, और फ़ैज़ाने आला हज़रत वग़ैरह इन किताबों को देख कर अंदाज़ा होता है कि मुफ़्ती साहब मौसूफ़ ने अब तक अपनी उम्र से ज़्यादा इल्मी काम किया है।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला "काम ही ज़िन्दगी है" के बैनुल–अक़्वामी फारमूले पर मुकम्मल अमल करते हैं, क़ुदरत ने हज़रत अल्लामा मुफ़्ती साहब में बहुत सी ख़ूबियाँ वदीअत की हैं। तकल्लुफ़ व तसन्नुअ् से कोसों दूर, संजीदा तबीअत, वसीअ् अख़्लाक़ ख़ुश तबई व ख़ुश मिज़ाजी के सिफ़ात से आरास्ता, नफासत व लताफत तहम्मुल व बुर्दबारी दीनी हमीयत व हरारत और आलिमाना वक़ार व तमकनत के अज्ज़ा व अनासिर आपकी तबीअत में रचे बसे हैं। हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला अह्ले सुन्नत व जमाअत के ऐसे फ़अ्आल व मुतहर्रिक आलिम हैं जो लाइक़े तक़्लीद और क़ाबिले एहतराम शख़्सियत हैं। हज़रत मुफ़्ती साहब

मौसूफ़ का हाल यह है कि दिन के उजाले में तलबा किराम को हदीसे मुबारक का दर्स देते हैं और रात के सन्नाटे में जब लोग अपने बिस्तरों पर सुकून व चैन से सोते हैं ऐसे नाज़ुक लम्हे में क़ौम व मिल्लत का दर्द लिए हुए नुस्ख़ा–ए–शिफ़ा की तलाश में ख़ुसूसन सैय्यदना आला हज़रत की तसानीफ़ व फ़तावा के समुन्द्र में ग़ोता लगा कर लअ्ल व गौहर निकालते और गुलाब व नर्गिस और हिना की शक्ल में इल्मी गुलदस्ता तैयार करते हैं। मौला तआला उनकी उंगलियों और जज़्बात को सलामत रखे।

ज़ेरे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला की ताज़ा तरीन तालीफ़ है। मुद्दत से इसकी ज़रूरत महसूस की जा रही थी। इसी मिल्ली ज़रूरत का एहसास व ख़्याल करते हुए हज़रत मुफ़्ती साहब मौसूफ़ ने इस मैदान में क़दम बढ़ाया और चन्द माह के क़लील अरसे में तक़रीबन 1400 चौदह सौ सफ़हात का मुंफरिद मज्मूआ तैयार करके क़ौम व मिल्लत पर एहसाने अज़ीम फ़रमाया। यह वह तारीख़ी कारनामा है कि कोई भी हस्सास फ़र्द इस पर दाद व तहसीन का ख़िराज पेश किए बग़ैर नहीं रह सकता।

सैय्यदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि इल्मी गहराई व गीराई पर कुरबान जाइए। जहाँ आपका क़लम नामूसे रिसालत की हिफ़ाज़त व सियानत के लिए हमेशा तैयार रहता था वहीं आपने क़ौम व मिल्लत और उम्मते मुस्लेमा को यह बताया कि उम्मते मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ताजदारे अरब व अजम पैग़म्बरे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कितने हुकूक़ वाजिब हैं। हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह इन हुकूक़े वाजिबा से वाक़िफ़ व आगाह हो। और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर उनकी बजा आवरी करता रहे और यह कि आपकी उक़ाबी निगाह मुस्लिम मुआशरा और उसके बीच फैली हुई बिदआत व ख़ुराफात और मफासिदात पर भी थी। आला हज़रत ने मुआशरा की सलाह व फलाह, उसे इस्लामी मुआशरा बनाने और बिदआत व ख़ुराफ़ात के सद्दे बाब के लिए जो नुस्ख़ाहाए कीमिया फतावा व तसानीफ़ की शक्ल में अता फ़रमाए वह अज़ीम भी हैं और क़ाबिले अमल भी मगर वह हर एक की दस्तरस में नहीं उनकी इफादीयत आम व ताम करने के लिए उनमें इस्लाह फ़िक्र व ऐतक़ाद के जो मोती बिखरे हुए हैं उन्हें जगह जगह से यक्जा करके एक लड़ी में पिरोने का काम क़ौम का दर्द रखने वाले मुसलेह क़ौम व मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला ने "फ़ैज़ाने आला हज़रत" के नाम से अंजाम दिया इस किताब की तालीफ़ फ़रमा कर उन्होंने क़ौम के लिए एक नया चिराग़ रौशन किया। मेरा विजदान और एहसास कहता है कि इसकी रौशनी शर्क़ व ग़र्ब में पहुँचेगी इंशाअल्लाह तआला।

मेरी नज़र में यह किताब वअ्ज़ व नसीहत और मैदाने तक़रीर में एक बुलन्द पाया और मोतबर किताब है जो वाएज़ीन व मुक़र्रेरीन और ख़ुतबा व अइम्मा मसाजिद के लिए अज़ीम व गिराँ क़द्र तोहफ़ा और आम लोगों के लिए हुसूले इल्म का ज़रिया और मसाइले शरईया का मुस्तनद ज़ख़ीरा है। मुअल्लिफ़ ने अपनी इस तालीफ़ को एक मुसलेह की हैसियत से समाज में फैली हुई बुराइयों के इज़ाले और उनके इंसिदाद के लिए कई अबवाब पर तरतीब दिया है। मसलन अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात से मुतअल्लिक़ अक़ीदा क्या हो? नबुव्वत व रिसालत से मुतअल्लिक़ क्या हो?

ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल, रसूलुल्लाह की सुन्नतें, औलिया–ए–उम्मत के सबक़ आमोज़ वाक़ेआत व हिकायात, तवक्कुल व क़नाअत, सब्र व शुक्र, झूठ और ग़ीबत की शुनाअत, शराब और उसकी बुराईयाँ, हलाल कमाई और तिजारत व हिरफ़त, हुकूक़े वालिदैन, नमाज़ रोज़ा, हज, ज़कात, और दीगर ज़िन्दगी के मुआमलात। आपसी मुआशरती तअल्लुक़ात पर ऐसी सैर हासिल रौशनी डाली गई है कि आप पढ़ते जाइए और झूमते जाइए।

मुअल्लिफ़ मौसूफ़ ने इसमें निहायत हज़्म व एहतियात और इंतिहाई मुहक़्क़ेक़ाना अंदाज़ में अहादीस की तशरीह की है। नीज़ अक़ाइद, फ़िक़ह, तसव्वुफ़ व तरीक़त के ख़ास ख़ास पहलुओं पर भी बहस की गई है और फ़िरक़ा बातिला के रद्द व इब्ताल को भी शामिल किया है। यह किताब तक़रीबन 80 मज्लिसों पर मुंक़सिम है और हर मज्लिस का एक मुस्तक़िल मौज़ूअ् है।

इस्लाम के इसी बुनियादी उनवानात पर क़दरे सैर हासिल और तफ़्सीली गुफ़्तगू की गई है। अक्सर उनवान की बुनियाद आयात व अहादीस पर रखी गई है, फिर ज़ैली सुर्ख़ियों के ज़िम्न में मसाइले शरीआ ब्यान किए गए हैं। तशरीहे मतालिब में क़ुरआने करीम की आयात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशादात और शरीअत के अहकाम व मसाइल, तसव्वुफ़ व सुलूक और बुज़ुर्गों के दिलनशीं वाक़ेआत इस पैराए में जमा किए गए हैं कि हर बात दिल में उतरती चली जाती है, इत्तिबा–ए–सुन्नत व आमाले सालेहा की तरग़ीब और अफ़्आले बद से बचने की ताकीद अछूते और मुअस्सिर अंदाज़ में की गई है। ग़र्ज़ेकि इस किताब से इंसानी ज़िन्दगी के हर पहलू को रौशनी मिलेगी, हर फ़र्दे बशर् किसी न किसी जेहत से इससे इस्तिफ़ादा कर सकेगा।

अल्लाह तआला फ़ैज़े रज़ा से हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब क़िब्ला को इताना सैराब करे इतना शादाब करे कि वह जल थल हो जाऐं और इल्म व फ़ज़्ल के कोहे हिमाला दीने मतीन के अज़ीम मुजद्दिद के सफ़र–ए–इल्म से मज़ीद ख़ोशा चीनी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, और किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" मक़्बूल से मक़्बूल तर हो मुझे उम्मीद है कि इफ़ादा और इस्तेफ़ादा में "फ़ैज़ाने आला हज़रत" का वही मक़ाम होगा जो सूरज का सितारों की अंजुमन में है।

अख़ीर में हज़रत मुअल्लिफ़ की मेहनत व जांफशानी और फ़िक्र व शुऊर की जौलानियत पर दाद देते हुए मैं यह कहूँगा कि –

जब मेहर नुमायां हुआ सब छुप गए तारे
तू मुझको भरी बज़्म में तन्हा नज़र आया

रफ़ीअ् अहमद मन्नानी, (एम.ए. एल.एल.बी.)
बिहार युनिवर्सिटी मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार)
18 मुहर्रमुल–हराम 1429 हिजरी, 28 जनवरी 2008

इज़हारे हक़ीक़त

अज़ : मौलाना मुहम्मद शम्सुद्दीन रज़वी (एम.ए.)
ख़तीब व इमाम जामा मस्जिद कम्मू ख़ाँ अर्दली बाज़ार बनारस

शैख़ुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बर्रे सग़ीर में मुसलमानाने अह्ले सुन्नत व जमाअत के एक अज़ीम क़ाइद व रहनुमा की हैसियत से जाने पहचाने जाते है। इस ऐतबार से उनकी ज़ाते आलिया मुहताजे तआर्रुफ़ नहीं। दुनिया आज उनकी दीनी व मिल्ली ख़िदमात और इल्मी तहक़ीक़ात की मोअ़तरिफ़ व मद्दाह है उलमा व मुहक़्क़ेक़ीन उनकी तसानीफ़ व बाक़ियात पर कई दहाइयों से रिसर्च व तहक़ीक़ कर रहे हैं, मेरा ख़्याल है कि अब तक उनके फ़िक्र व नज़र पर कमाहक़्क़ुहू काम नहीं हो सका है मालूम नहीं उनकी इल्मी तहक़ीक़ात व यादगारों को समेटने में मुहक़्क़ेक़ीन को और कितना अरसा लगेगा। रब्बे काइनात ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी को इल्मे कसबी के साथ इल्मे वहबी भी अता फ़रमाया था। उन्होंने तज्दीदे दीन, इस्लाहे मुआशरा और लौह व क़लम की बिसात पर ऐसे हैरत अंगेज़ कारनामे अंजाम दिए कि दुनिया की मुस्लिम अक्सरीयत उनकी तरफ राग़िब व मुतवज्जेह हो गई। उनके वेसाले अक़्दस को एक सदी पूरी होने वाली है मगर उनकी ख़ुदा दाद मक़्बूलियत व शोहरत का सिलसिला रोज़ अफ़्ज़ूं और तेज़ी से बढ़ रहा है मेरा विजदान कहता है कि यह उनके ख़ुलूस व लिल्लाहियत और दीनी दर्द का नतीजा है कि उनकी हयाते अक़्दस के ताबिन्दा नुकूश और उनके दीनी कारनामों से आज तक सवादे आज़म अह्ले सुन्नत इस्तिफ़ादा कर रहे हैं। *ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहे यूतीहे मन यशाओ।*

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून पर तक़रीबन एक हज़ार तसानीफ़ यादगार छोड़ीं ख़ुसूसन इस्लाहे फ़िक्र व ऐतक़ाद और फ़िरक़ा बातिला के रद्द व इब्ताल में अपने क़लम की तवानाई और अपनी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा सर्फ़ फ़रमाया। यह हक़ीक़त है कि उनकी अक्सर तसानीफ़ इल्मी व वक़ीअ़ और बुलन्द पाया हैं उन से ज़्यादा तर उलमा व ख़्वास ही इस्तिफ़ादा करते हैं अवाम की दस्तरस रसाई से बाहर हैं वह उन से कमा हक़्क़ुहू फाइदा हासिल नहीं कर सकते जबकि उनकी तसानीफ़ में इल्मी तहक़ीक़ात और आला इस्तिदलाल की जल्वा तराज़ियों के साथ रंगा रंग मालूमात की एक वसीअ़ काइनात आबाद है उन से इक्तिसाब और उनकी इफ़ादियत को आम से आम तर और अवामी ज़ेहन व फ़िक्र से क़रीब तर करने के लिए हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब रज़वी क़ादरी शैख़ुल–हदीस अल–जामिअतुर्रज़्वीया मज़्हरुल–उलूम गुरसहाए गंज ज़िला

क़न्नौज यू0पी0, ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की तसानीफ़ व फतावा से चुन–चुन कर ऐसे मज़ामीन व मबाहिस को यक्जा कर दिया है जिनका तअल्लुक़ अक़ीदा व अमल शरई अहकाम व मसाइल, मुआशरती सलाह व फलाह, इश्क़ व इरफ़ां, पन्द व नसीहत, सुलूक व तरीक़त फौज़ व कामरानी, हुक़ूक़े इंसानी वग़ैरह मौज़ूआत से है। इन चीज़ो को ज़ेरे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" में हुस्ने सलीक़ा मन्दी से इस तरह तरतीब दिया गया है कि यह मरासिम अह्ले सुन्नत व जमाअत पर एक इंसाइकिलोपीडिया मालूम हो रहा है।

"फ़ैज़ाने आला हज़रत" अपने वजूद में निहायत मुफीद व जामेअ् और मालूमात अफ़्ज़ा किताब है मुझे उम्मीद है कि इस से दुनिया को इल्म व हिदायत की रौशनी मिलेगी, इसे देखने के बाद मुझे एहसास हो रहा है कि हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब ने इसकी जमा व तरतीब में बड़ी मेहनत व अर्क़ रेज़ी की है। मौसूफ़ इंतिहाई मुतहर्रिक व फ़अ्आल और मेहनती शख़्स हैं। इनके शब व रोज़ के मअ्मूलात और मशाग़िले दीनीया देख कर हैरत होती है, वह दर्स व तदरीस और फ़तवा नवेसी की मश्ग़ूलियत के बावजूद तस्नीफ़ व तालीफ़ के ज़ौक़े सादिक़ और जज़्ब–ए–फ़रावां से माला माल हैं। यही वजह है कि इन्होंने इल्मी बिसात पर अपना सिक्का मनवा लिया है, उनकी तसानीफ़ व तालीफात को उलमा व दानिशवरान क़द्र की निगाहों से देखते और सराहते हैं, उनकी तालीफात हिन्द व पाक में मक़्बूले अनाम हो चुकी हैं। हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब रज़वी क़ादरी ने तस्नीफ़ व तालीफ़ की दुनिया में अब तक इन मनाज़िल का सफर पूरा किया है।

1. इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस (पाँच जिल्दें, 3 जिल्दें मत्बूअ्, 2 जिल्द ज़ेरे तबअ्) (तसानीफ़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से माख़ूज़ अहादीस का मुस्तनद व बाहवाला मज्मूआ।)
2. सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत। (4 जिल्दें मत्बूअ्) (तसानीफ़े आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से माख़ूज़। सीरतुर्रसूल का अज़ीम मज्मूआ)।
3. तआर्रुफ़ तसानीफ़ इमाम अहमद रज़ा। (2 जिल्दें, जिल्द अव्वल मत्बूअ्, जिल्द दोम ज़ेरे तबअ्) (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के तक़रीबन डेढ़ सौ रसाइल का मुख़्तसर तआर्रुफ़ व तजज़िया)
4. क़िरतास व क़लम। (मत्बूअ्) (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी पर लिखी जाने वाली मत्बूआ व ग़ैर मत्बूआ 726/किताबों की फेहरिस्त)।
5. फरमूदाते आला हज़रत। (मत्बूअ्) (तसानीफ़े आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से माख़ूज़ अक़ाइद व आमाल की इस्लाह पर एक फ़िक्र अंगेज़ शाहकार)।
6. उलूमुल क़ुरआन। (ज़ेरे तबअ्) (अंबाउल–हैय्ये हाशिया अद्दौलतुल–मक्कीया का सलीस व बामुहावरा उर्दू तरजमा)

7. अज़मते कुरआन। (ग़ैर मत्बूअ़) अनवारुल–मन्नान फ़ी तौहीदिल–कुरआन, मुसन्नेफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी का सलीस उर्दू तरजमा।)

8. इमाम अहमद रज़ा और मसाइले निकाह। (मत्बूअ़) (क़दीम व जदीद मसाइले निकाह ख़ुसूसन बद मज़्हबों से रिश्त–ए–निकाह की मुमानेअत पर एक जामेअ तहरीर)।

9. इमाम अहमद रज़ा और मसलए ख़िज़ाब, (मत्बूअ़) (जाइज़ व नाजाइज़ ख़िज़ाब का मुदल्लल ब्यान)

10. इमाम अहमद रज़ा और उलूमे तसव्वुफ़, (ज़ेरे तरतीब) (तसानीफ़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से माख़ूज़ सुलूक व तसव्वुफ़ और तरीक़त के असरार व मसाइल।)

11. पेशे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत"।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ईसा साहब के इन इल्मी कारनामों को देख कर अंदाज़ा होता है कि उन्होंने अब तक अपनी उम्र से ज़्यादा इल्मी काम किया है। आज दुनिया में ऐसी हस्तियाँ नायाब नहीं तो कामयाब ज़रूर हैं। हम उनके शब व रोज़ को सलामे शौक़ पेश करते हैं कि वह अपने औक़ात का बेशतर हिस्सा तस्नीफ़ व तालीफ और दीनी ख़िदमात में सर्फ़ करते हैं कौम को ऐसे बाहौसला अफ़राद की ज़रूरत है मौसूफ़ हमारी मिल्लत के एक अज़ीम सरमाया और गिराँ क़द्र अमानत हैं। रब तआला उनके अज़्मे जवाँ को सलामत रखे।

"फ़ैज़ाने आला हज़रत" की इशाअत एक दीनी व मिल्ली ज़रूरत और "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी बरैली शरीफ़" की क़ाबिले फ़ख़्र पेशकश है, उसकी क़द्र व मंज़िलत का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि इसकी तबाअत से पहले ही यह अवाम व ख़्वास के बाज़ तबक़े में शोहरत पा चुकी है। मौला तआला इसकी मक़्बूलियत में मज़ीद इज़ाफ़ा और इसकी इफ़ादियत को आम से आम तर फरमाए। आमीन।

(मौलाना) मुहम्मद शम्सुद्दीन रज़वी (एम.ए.)
ख़तीब व इमाम जामा मस्जिद कम्मू खाँ अर्दली बाज़ार बनारस
6 सफर 1429 हिजरी, 15 फरवरी 2008 ई०

आला हज़रत और फ़ैज़ाने आला हज़रत

शैख़ुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत अज़ीमुल–बरकत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू की ज़ाते मुक़द्दसा आज मोहताजे तआर्रुफ़ नहीं अरब व अजम, एशिया व अफ़्रीक़ा, बर्रे आज़म व बर्रे सग़ीर बल्कि आलमे इस्लाम में वह अह्ले सुन्नत व जमाअत के एक इमाम व मुक़्तदा की हैसियत से जाने पहचाने जाते हैं। वह मुसलमानाने आलम के दिलों की धड़कन और वज्हे इफ़्तिख़ार हैं, दुनिया की मुस्लिम अक्सरीयत उन्हें मज़्हब व मिल्लत का मुहाफ़िज़ व पासबान जानती है। उन्होंने जो अफ़्कार व नज़्रियात पेश किए उन्हें गले लगाया जा रहा है। उनकी बसीरत व दानाई पर ज़माना हैरान है। उन्होंने दीन व सुन्नत की तरवीज व तशहीर में नुमायाँ हिस्सा लिया, मज़्हबे हक़ और मसलके सही पर लोगों को गामज़न रहने की ताकीद व तल्क़ीन फरमाई। फ़रज़न्दाने इस्लाम के दिलों में इश्क़े रिसालत की शमअ़ रौशन व फरोज़ाँ की, उन्हें ईमान व इस्लाम के पाकीज़ा रास्ते पर चलने की दावते फ़िक्र दी, इंसानों को नजात व सलामती के उसूल व ज़ाब्ते बताए, वह आशिक़े रसूल और दीने हक़ के सच्चे अलम बरदार थे, उन्होंने ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों की इस्लाही व अमली मैदान में क़यादत व रहनुमाई की, एक अच्छे और मुख़्लिस क़ाइद व रहनुमा का फरीज़ा अंजाम दिया। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू हमारे असलाफ़ व अकाबिर की सच्चे यादगार और अमली तस्वीर थे उनके नुक़ूशे क़दम से भटके हुए इंसानों को हिदायत व इरफान की मंज़िल मिली वह इल्म व ईक़ान के चिराग़े राह और मीनार–ए–नूर थे जिनकी पुर नूर शुआओं से दिल व दिमाग़ के ज़ुल्मत कदे रौशन व ताबनाक हो गए और क़ुलूब व अज़्हान में सुबहे उम्मीद का उजाला फैला।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने क़ौमे मुस्लिम को इंतिहाई नाज़ुक और कर्ब अंगेज़ हालात में संभाला दिया। ज़लालत व गुम्राही के अमीक़ ग़ार में उन्हें गिरने से बचाया, मुसलमानों के इश्क़ व अक़ीदे की हिफ़ाज़त फरमाई बद मज़्हबी व बद अक़ीदगी की तूफ़ानी हवाओं की ज़द से उन्हें महफ़ूज़ व मामून रखा, शिर्क व गुम्राही और बिदआत व ख़ुराफात के बादे सुमूम से ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों के दीन व ईमान को झुलसने न दिया, उनके वजूदे मसऊद के फ़ैज़ व बरकत से कुफ़्र व तुग़यान के तारीक व सियाह बादल छट गए, अय्याराने ज़माना के चेहरों का नक़ाब उलट दिया, मक्र व फ़रेब के दबीज़ पर्दे तार तार हो गए, अपने ख़ूने जिगर से उन्होंने मज़्हब व मिल्लत की आबयारी की,दीन व सुन्नत के रहज़नों का मुक़ाबला किया, शरीअते इस्लामिया की आहनी दीवार को गिरने न दिया, वह इस्लाम के मर्दे मुजाहिद और दीने हक़ के बतले जलील थे उन्होंने आदा–ए–दीन की सरकूबी फरमाई, ज़ुल्म व तअद्दी के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की, वक़्त के जालिम व जाबिर का पंजा मोड़ दिया हक़ के ख़िलाफ़ हर उठने वाली आवाज़ का गला घूंट दिया वह दीने हक़ के पैरू और सच्चे अलमबरदार थे, दीने इस्लाम का अलम बुलन्द किया उन्होंने फ़रज़न्दाने तौहीद को हक़ व सदाक़त का दर्से मुहब्बत और पैग़ामे अमन व अमान दिया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने तज्दीदी ज़िम्मेदारियों की बुनियाद पर इंसानों को ख़्वाबे ग़फ़्लत से जगाया उन्हें मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ होने की दावत व आवाज़ दी उनकी आवाज़ में दर्द व ख़ुलूस था, यही वजह है कि उनकी आवाज़ सदा बसहरा व बाज़गश्त साबित न हुई बल्कि वह अन्फ़ास व आफ़ाक़ में सुनाई दी इस से ज़ेहन व दिमाग़ के दरीचे खुल गए चारों तरफ से लब्बैक व सअ़दैक की सदाएं बुलन्द हुईं, उनके क़दमों में सालेह और नेक रूहों का जमघटा हो गया उन्होंने आपस में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ का जो दर्से मुहब्बत दिया वह रंग लाया,

मुसलमानों में इस्लामी उख़वत मसावात का जज़्बा बेदार हुआ। दीन व सुन्नत के तअल्लुक़ से अमली बेदारी आई, फराइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तहिब्बात और अवामिर व नवाही पर अमल का जज़्ब–ए–शौक़ जागा, जुमूद व तग़ाफ़ुल की बदनुमा चादर उतार दी गई, उनके क़दमों की बरकत से मिल्लत की कराहती हुई रूह मुस्कुरा उठी, उसका पज़्मुरदा चेहरा खिल उठा अह्ले सुन्नत व जमाअत के चमने ज़ार में यक़ीन व अमल के गुलाब लहलहाने लगे, मुआशरती ज़िन्दगी में सुधार व तब्दीली आई, तहज़ीब व सक़ाफ़त की फ़िज़ा शादाब व ख़ुशगवार हो गई। इन कारनामों से उन्होंने नयाबते रसूल का हक़ व फरीज़ा अदा किया उनके वजूदे मुक़द्दस से मिल्लते इस्लामिया की रूहानियत ज़िन्दा हो गई, मुर्दा दिलों को अबदी ज़िन्दगी का हसीन व दिलनवाज़ पैग़ाम मिला, वह इहयाए दीन व सुन्नत और तजदीदी कारनामों की बिना पर हमारी जमाअत में मुम्ताज़ व मुंफरिद हुए अरब व अजम में उनकी अज़मत व बुज़ुर्गी का ख़ुतबा पढ़ा जाने लगा।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने मसलके हक़ की तरवीज व इशाअत की, दीने हक़ की दावत व इरशाद का ख़ुशगवार फ़रीज़ा अंजाम दिया मज़हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत पर होने वाले हमलों का दन्दान शिकन और मुदल्लल जवाब दिया, बातिल ताक़तों के परखचे उड़ा दिए। ताग़ूती क़ुव्वतों के सरनिगूं कर दिए। उनकी मसाई जमीला से हक़ व सदाक़त का बोल बाला हुआ ईमान व ईक़ान की मंज़िल में सच्चाईयों का सूरज तुलूअ़ हुआ उसकी ज़िया बार किरनों से इल्म व अमल के मैदान में सुबहे यक़ीन का सवेरा हुआ राहे हक़ से भटके हुए मुसाफिर को अपनी मंज़िल का सुराग़ व निशान मिला। उन्होंने मरासिमे अह्ले सुन्नत व जमाअत की हिफ़ाज़त व सियानत की और घर घर में इत्तिबाए सुन्नत का माहौल बरपा कर दिया, उनकी इल्मी व दीनी ख़िदमात के तज़्किरों से तारीख़ के सफ़्हात रौशन व फरोज़ां हैं ऐसी ही शख़्सियात के ज़िक्र से तारीख़ की ज़ुल्फ़ें संवारी जाती हैं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने जिस दौर में बरैली शरीफ़ की सर ज़मीन पर होश व ख़िरद की आँखें खोलीं वह इंतिहाई भयानक व पुर आशोब दौर था, आसमाने हिन्द पर कुफ़्र व शिर्क और बिदआत व ख़ुराफ़ात के बादल मंडला रहे थे ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों को सिराते मुस्तक़ीम व राहे हिदायत से हटाने की नापाक कोशिश की जा रही थी फरज़न्दाने तौहीद के इश्क़ व अक़ीदे पर शब ख़ून और डाका डाला जा रहा था सईद व नेक रूहें मुसलमानों के अंजाम से घबरा रही थीं इंसानियत ख़ौफ़ज़दा थी जब्र व इस्तिब्दाद के हाथों ख़ुश अक़ीदगी का गला घूंटा जा रहा था, दीनी पामर्दी व इस्तिक़ामत मुतज़लज़ल हो रही थी। ऐसे भयानक दौर में क़ुदरत ने मुजद्दिदे इस्लाम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू को तज्दीदे दीन व सुन्नत के लिए मुक़र्रर फरमाया उन्होंने ताईदे ग़ैबी से अपना फ़र्ज़े मंसबी को पूरा किया और बेमिसाल तज्दीदी कारनामे अंजाम दिए, बद अक़ीदों व बद मज़हबों का खुले आम रद्द व इब्ताल फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में नाज़ैबा कलिमात कहने वालों को उनके कैफ़रे किरदार तक पहुँचा दिया, बातिल ताक़तों की सरकूबी व बीख़ कुनी की, बनामे इस्लाम बाद के ज़माने में जितने फिरक़े वजूद में आए हर एक का रद्दे बलीग़ फरमाया उनके अन्दरूनी राज़ और मक्कारियों को तश्त अज़बाम व आशकारा किया, गोया कि फ़िरक़ा बातिला के रद्द व इब्ताल को उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का अहम उन्सुर और जुज़्व ला यन्फ़क क़रार दिया उन्हीं की बदौलत दीन के भेड़ियों की पहचान व शिनाख़्त हुई। इस ख़ौफ़नाक दौर में अगर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की मसाई जमीला और उनके तज्दीदी कारनामे न होते तो दीन के डाकू

मुसलमानों को भी अंग्रेज़ी इस्तेअ्मार के हाथों अरज़ाँ क़ीमत पर फरोख़्त कर देते, जिस तरह मुल्क हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ का नाजाइज़ क़ब्ज़ा व इक़्तिदार हो गया था उसी तरह वह मुसलमानों को भी असीर व क़ैद कर लेते, आला हज़रत की ज़ाते सतूदा सिफ़ात ने मुसलमानों को बिकने और असीरे क़िस्मत होने से बचा लिया। यह वह तारीख़ी हक़ाइक़ हैं जिन्हें ठुकराया नहीं जा सकता तारीख़ के औराक़ इन सच्चाईयों के शाहिद व गवाह हैं।

इमामे इश्क़ व मुहब्बत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक सच्चे आशिक़े रसूल थे उनका इश्क़ व अक़ीदत मशहूरे ज़माना और ख़्वास व अवाम के नज़्दीक मुसल्लम है इश्क़े रिसालत ही उनकी ज़िन्दगी का अज़ीम सरमाया और असल मेअ्यार था, जिसके अन्दर इश्क़े रिसालत की जल्वा फरमाई जितनी ज़्यादा होगी उसका ईमान उतना ही कामिल व क़वी होगा उन्होंने इश्क़े रिसालत की बुलन्दी को तक्मीले ईमान की अलामत व पहचान क़रार दिया, दुनिया को उन्होंने अपने इश्क़ भरे पैग़ाम व दर्से मुहब्बत से सरशार व सरमस्त कर दिया, उनकी रफ़्तार व गुफ़्तार में इश्क़े बिलाल व उवैस की झलक मौजूद थी, उनके किरदार व अमल में सिद्दीक़े अक्बर का इश्क़ व इख़्लास जल्वा फरमा था, उनकी फ़िक्र व नज़र में उमर फारूक़ का जोश व जज़्बा मोजज़न था, उनके आदात व अतवार में सलमान व बूज़र का सोज़ था, उनके अक़्वाल व अफ़आल में इश्क़े रिसालत की रंग आमेज़ियाँ थीं, उन्होंने जो लिखा इश्क़े रिसालत के आईने में लिखा, उन्होंने जो कहा इश्क़े रसूल के सांचे में ढाल कर कहा उनकी तसानीफ़ का एक एक वर्क़ उनके आशिक़ सादिक़ होने का शाहिद व गवाह है, उनकी सतर सतर से इश्क़े रसूल फूटा पड़ता है उनका सीना इश्क़े रसूल का मदीना और वह बज़ाते ख़ुद इश्क़ व वफ़ा के पैकर मुजस्सम थे, आज के दौर में बर्रे सग़ीर के अन्दर जब आशिक़े रसूल बोला जाता है तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के सिवा कोई और मुरांद नहीं होता वह आशिक़े अलल–इतलाक़ हैं, यह उनके आशिक़े पाकबाज़ होने की रौशन व वाज़ेह दलील है।

मसलके आला हज़रत की सदाक़त व हैसियत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने जब आँखें खोलीं उस वक़्त आलमे इस्लाम ख़ास तौर से हिन्दुस्तान के अन्दर हर तरफ फित्नों का दौर दौरा था, बदअक़ीदगी व बद मज़्हबी और बिदआत व ख़ुराफ़ात की बीख़कुनी की बजाए उन्हें फरोग़ व रिवाज दिया जा रहा था, ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों को राहे रास्त पर लाने के नाम पर शिर्क व बिदअत की सनद दी जा रही थी, सहीहुल–अक़ीदा लोगों को ईमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त के नाम पर दीन व सुन्नत से दूर किया जा रहा था, दीन व शरीअत में रख़्ना अंदाज़ी करने वाले कोई ग़ैर नहीं बल्कि वह ईमान फरोश मौलवी थे, मौलवियत के लिबादे में वह मज़्हब व मिल्लत के दुश्मन व बदख़्वाह थे वह दुश्मन के लिबास में नहीं बल्कि दोस्त बन कर साथी व हमनवा के लिबास में सामने आए, दोस्तों की शक्ल में अदावत व दुश्मनी का जाल बिछाया, अँग्रेज़ की ग़ुलामी और उन्हें ख़ुश करने के लिए मुसलमानों में तफरक़ा पैदा किया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ियाँ कीं और नाज़ेबा कलिमात कहे जिसके नतीजे में मुसलमान दो फिरक़ों में बट गए और मिल्लते इस्लामिया का शीराज़ा मुंतशिर हो गया मगर वह बज़ुअ्म ख़्वेश अह्ले सुन्नत के ख़ैर ख़्वाह व हमनवा ही बने रहे और अपने को अह्ले सुन्नत का क़ाइद व पेशवा ही कहा। किरदार व गुफ़्तार और क़ौल व अमल के इस तज़ाद व तख़ालुफ़ से मिल्लते इस्लामिया को वह नुक़्सान व ज़रर पहुँचा जिसकी तलाफ़ी मुम्किन नहीं।

हासिल यह कि जो लोग गुस्ताख़े रसूल थे, जिन्होंने फ़ितने पैदा किए, गरोह बन्दियाँ कीं, जिनकी रेशा दवानियों से मिल्लते इस्लामिया बेचैन व मुज़तरिब हो गई वह अज़राहे फ़रेब यही दावे करते रहे कि हम ही अह्ले सुन्नत के ठेकेदार व क़ाइद हैं हमारा मज़हबे अह्ले सुन्नत से जो रिश्ता है वह अटूट व पाइदार है, उन्होंने अपने आपको सुन्नी भी कहलाया और हन्फ़ी भी, चूंकि बर्रे सग़ीर की मुस्लिम अक्सरीयत सुन्नी हन्फ़ी की थी और आज भी दुनिया की मुस्लिम आबादी का बेशतर हिस्सा सुन्नी हन्फ़ी है, इसी सुन्नी व हन्फ़ी की आवाज़ व लेबल से उन्होंने सहीहुल–अक़ीदा मुसलमानों को अपने दामे तज़्वीर में फंसाया, इसी नाम से मुसलमानों को धोखा और फ़रेब में डाला, ऐसी सूरत में अह्ले सुन्नत के तशख़्ख़ुस व बक़ा के लिए किसी ऐसे इम्तियाज़ी नाम व शिनाख़्त की ज़रूरत थी जिस से फ़िरक़ाहाए बातिला और हक़ीक़ी सुन्नी व हन्फ़ी में फ़र्क़े इम्तियाज़ पैदा हो जाता।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने इन अय्याराने ज़माना का दाग़दार व बदनुमा चेहरा बेनक़ाब किया उनकी नापाक कोशिशों को तश्त अज़ बाम व वाशिगाफ़ किया, उनके मक्र व फ़रेब से दुनिया को आगाह व आशना कराया और बताया कि यह रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने रफ़ीअ् में गुस्ताख़ियों के सबब से काफ़िर व मुरतद और इस्लाम से ख़ारिज हैं, मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यबा के उलमा–ए–किराम व मुफ़्तियाने इज़ाम ने उन पर कुफ़्र व इर्तिदाद का हुक्म सादिर फ़रमाया है इसलिए यह हक़ीक़ी सुन्नी या हन्फ़ी नहीं हैं यह अपने दावे में सरासर झूठे और काज़िब हैं उन्होंने बद अक़ीदगी व बद मज़हबी को फ़रोग़ दिया बिदआत व ख़ुराफ़ात की आब्यारी की यह कुफ़्र व शिर्क के अलमबरदार हैं, इन्होंने काफ़िरों की हमनवाई की और उनकी ख़ुशी को अपनी ख़ुशी जाना, शैतान की शागिर्दी की और अल्लाह व रसूल को नाराज़ व नाख़ुश किया, हाँ हक़ीक़ी सुन्नी व हन्फ़ी वह है जो आशिक़े रसूल हो, बारगाहे रिसालत का गुस्ताख़ व मुज्रिम न हो सहाबा व ताबईन और असलाफ़ व अक़ाबिर का अदब दाँ हो, औलिया–ए–उम्मत के तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात का क़ाइल व मोअ्तक़िद हो।

इस नुक़्त–ए–नज़र से जब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की तालीमात व तज्दीदी कारनामों का जाइज़ा लिया जाता है तो अंदाज़ा होता है कि उन्होंने ज़ाते रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इश्क़ व एहतराम और उन से वालिहाना वारफ़्तगी व शैफ़्तगी का दर्से मुहब्बत दिया है, सहाबा व ताबईन की बारगाहों का अदब बताया, औलिया–ए–उम्मत और असलाफ़ व अकाबिरे मिल्लत के मक़ाम व मंसब से आगाह व आशना कराया और बताया कि हक़ीक़ी सुन्नी हन्फ़ी वही है जो इन औसाफ़े मज़्कूरा का हामिल व अमीन हो वरना फ़िक्र व ऐतक़ाद की दुरुस्तगी के बग़ैर आदमी सच्चा पक्का मुसलमान नहीं हो सकता बल्कि उसके बग़ैर वह कुफ़्र व शिर्क के दलदल से ही निकल नहीं सकता। चूंकि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की मसाई जमीला और कोशिशों से दीन व सुन्नत को फ़रोग़ मिला आईने सुन्नत को रिवाज दिया गया, ख़ास तौर से अह्ले सुन्नत व जमाअत, बद अक़ीदों और बद मज़्हबों से मुम्ताज़ व नुमायाँ हो गए इसलिए वक़्त के मशहूर व मुक़्तदिर उलमा ने तशख़्ख़ुस व तफ़्रीक़ के लिए "मसलके आला हज़रत" कहना शुरू किया, मसलके आला हज़रत कहने से सहीहुल–अक़ीदा व बदअक़ीदा सुन्नी हन्फ़ी के दरम्यान तफ़्रीक़ व तमीज़ पैदा हो गई। दूध का दूध और पानी का पानी हो गया, लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि मसलके आला हज़रत वही है जो दीने हक़ और सहाबा व ताबईन का मज़्हब व मसलक है, मसलके आला हज़रत वही है जो असलाफ़ व अकाबिर और औलियाए उम्मत व मशाइख़े मिल्लत का मज़्हब है, मसलके आला हज़रत कोई नया व जदीद मसलक नहीं बल्कि अह्ले सुन्नत व जमाअत ही का दूसरा नाम आज "मसलके आला हज़रत" है। जिस तरह मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत में इस्लाम

के तमाम मबादियात व मोअ़्तके़दात दाखि़ल हैं उसी तरह मसल्के आला हज़रत भी इस्लाम के तमाम ऐतक़दियात व मुबादियात से सरे मू मुनह या जुदा नहीं है।

बाज़ लोग यह कहते हैं कि इमाम आज़म अबू हनीफ़ा और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का मक़ाम व मरतबा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से बढ़ कर है अगर कहना ही था तो "मसलके इमाम आज़म" या "मसलक ग़ौसे आज़म" कहा जाता?

इसका जवाब यही दिया जाता है कि अगर ऐसी सूरत में "मसलके इमाम आज़म" कहा जाता तो गुमराह व बद दीन फ़िर्क़े और ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों के दरम्यान फ़र्क़ व इम्तियाज़ दुश्वार हो जाता।

यही वजह है कि मसलके इमाम आज़म नहीं कहा जाता क्योंकि बद अक़ीदा और देवबन्दी लोग भी अपने को हन्फ़ी और मसलके इमाम आज़म के पैरू कहलाते हैं। इसी तरह मसलके ग़ौसे आज़म भी नहीं कहा जाता क्योंकि बाज़ गुम्राह मुल्हिद और ख़ुराफ़ाती लोग भी मशरबी ऐतबार से अपने को क़ादरी वग़ैरह कहलाते हैं। अगर मसलके इमाम आज़म, या मसलके ग़ौसे आज़म वग़ैरह कहा जाता तो बैनन्नास हमारा मज़्हबी व ऐतक़ादी तशख़्ख़ुस ज़ाहिर न होता और न हम इन इब्नुल–वक़्तों से मुम्ताज़ होते। लिहाज़ा यह बावर व तस्लीम करना पड़ेगा कि मसलके आला हज़रत कहने से फ़िरक़ाहाए बातिला और हक़ीक़ी अह्ले सुन्नत के दरम्यान फ़र्क़ व इम्तियाज़ पैदा हो गया। आज के दौर में नजात व सलामती का ज़ामिन यही है कि मसलके आला हज़रत कहा जाए वरना अपने आपकी शिनाख़्त व पहचान मुश्किल होगी, अह्ले हक़ और अह्ले बातिल के दरम्यान फ़र्क़ और इम्तियाज़ी निशान का होना लाज़िम व ज़रूरी है। इन हक़ाइक़ व सच्चाईयों के बावजूद अगर कोई मसलके आला हज़रत के जवाज़ पर क़दग़न व रोक लगाए वह अपने मसलक की शाने इम्तियाज़ बताए। मसलके आला हज़रत की सदाक़त व हक़ीक़त और उसकी शरई हैसियत यही है इस पर बेजा कलाम की कोई गुंजाइश नहीं है, इस पर ऐतराज़ व अंगुश्त नुमाई करना मसलके हक़ से बग़ावत करना है।

फ़ैज़ाने आला हज़रत

इमाम अह्ले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने पचास से ज़ाइद बल्कि जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक़ सौ से ज़ाइद उलूम व फ़ुनून पर तक़रीबन एक हज़ार किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं अक्सर फ़ुनून पर आपकी तसानीफ़ व यादगार मौजूद हैं उलूमे अक़्लीया व नक़्लीया का शायद ही कोई फ़न ऐसा है जिस पर आपकी तहरीर व तस्नीफ़ न हो। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के अन्दर हमागीरियत व हमादानी थी तस्नीफ़ ख़्वाह किसी इल्म व फ़न की हो उसमें मुतअद्दद मौज़ूआत पर बहस व तम्हीस की जाती है और मसला दाइरा को दलाइल व बराहीन से वाज़ेह व मबरहन करके पेश किया जाता है पेश आमदा मस्अले पर इस शान से कलाम व गुफ़्तगू करते हैं कि उसका कोई गोशा तिशन–ए–तक्मील नहीं रहता, हर ज़ाविया निगाह से उसे मुकम्मल व आरास्ता करते हैं यह आपकी शाने तज्दीद और उलूम व फ़ुनून पर महारत व दस्तरस की अदना मिसाल है।

अह्या–ए–दीन व सुन्नत में तहरीर व तस्नीफ़ का एक अहम मक़ाम है तहरीरी व तस्नीफ़ी सलाहियत व इस्तेअ़्दाद के बग़ैर कमा हक़्क़ुहू दीने मतीन की ख़िदमत और उलूमे इस्लामिया की इशाअत व तश्हीर मुम्किन नहीं। ख़ालिके़ काइनात ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू को दीनी जज़्बा व शौक़ का ख़ास हिस्सा अता फ़रमाया था जिसकी बदौलत वह

उलूम व फुनून के बहरे बेकराँ हो गए उन्होंने जिस मौज़ू पर क़लम उठाया इल्म व फन का दरिया बहा दिया उनकी तहरीर सिक्क–ए–राइजुल–वक़्त हो गई उनके नाम से किसी तहरीर व इक़्तिबास का हवाला उसके मुस्तनद व मोतबर होने की ज़मानत हो गई। उन्होंने जो लिखा कुरआन व हदीस, इरशादाते सहाबा व ताबईन, कुतुबे शरीआ की इबारात व नुसूस और अक़्वाले अइम्मा व असलाफ़ के हवाले से लिखा कोई भी बात बेसनद व गैर मोतबर न लिखी वह हर बात में हज़्म व एहतियात का दामन थामे रहे, सिराते मुस्तक़ीम व राहे ऐतदाल से सरे मू इंहिराफ़ न किया गोया कि तक़्सीमे अज़ल ने उन्हें साबित क़दमी का वाफ़िर हिस्सा अता फरमाया था जिसकी बुनियाद पर वह किसी भी लग़्ज़िश व बेराह रवी से हमेशा महफूज़ व मामून रहे कुदरत ने उनके क़लम को अपने ज़िम्म–ए–करम पर ले लिया इसलिए वह ग़लतियों से पाक रहे।

ज़ेरे नज़र किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" के मज़ामीन व मवाद तसानीफ़े आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू से माख़ूज़ व मुस्तख़रज हैं। उनकी जुमला तसानीफ़ अगरचे इल्म व फ़न्नी होती हैं ज़्यादा तर उन्हें उलमा व दानिशवर ही समझ सकते हैं मगर इस किताब में जो मज़ामीन माख़ूज़ हैं उन्हें आसान व सहल अंदाज़ में पेश करने की कोशिश की गयी है और यह ख़्याल रखा गया है कि अवाम व ख़वास दोनों के लिये यकसां मुफ़ीद व कार आमद हो लेकिन तस्हील की हज़ार कोशिशों के बावजूद आला हज़रत की इल्मीयत की झलक इसमें ज़रूर ज़ाहिर व हुवैदा हैं। ऐसा होना भी चाहिये था क्योंकि जो सरापा इल्म व फ़न हो उसके किसी भी हाल में इल्म की बस्ती से दूर नहीं किया जा सकता न उसकी इल्मीयत उससे ख़ारिज हो सकती है। हां मैंने इस किताब के मज़ामीन व मवाद को इल्मीयत से ख़ारिज व जुदा नहीं किया है बल्कि उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा आसान व सहल अंदाज़ में सामने लाने की कोशिश की है मगर इस तरह कि उसकी असल रूह मुतअस्सिर नहीं हुई न उस से अंदाज़े ब्यान व मआनी में कोई तब्दीली पैदा हुई न मफ़ाहीम की अदाइगी में कोई फ़र्क़ पड़ा और न उसकी बरजस्तगी व सलामत व रवानी में कोई झोल वाक़ेअ् हुआ।

पेशे नज़र किताब में जो कुछ लिखा गया है वह तसानीफ़े आला हज़रत के हवाले से लिखा गया है हर मज़्मून के आख़िर में उस किताब का नाम और सफ़ः नम्बर वग़ैरह दर्ज कर दिया गया है जिससे वह मज़्मून माख़ूज़ है गोया कि हमने तसानीफ़े आला हज़रत को माख़ज़ व मरजा क़रार दिया है और इसी हैसियत से उनका हवाला भी दिया है अगरचे तसानीफ़े आला हज़रत का माख़ज़ भी दीगर कुतुबे शरीआ हैं। ख़्याल यह है कि आज हमें तसानीफ़े आला हज़रत को इसी तरह माख़ज़ व मराजे क़रार देने का हक़ है जिस तरह दूसरे अइम्मा व उलमा की तसानीफ़ को माख़ज़ समझा जाता है जबकि सबका मंबअ् व सर चश्मा आयात व अहादीस ही हैं फिर क्या वजह है कि हम तसानीफ़े आला हज़रत को माख़ज़ की हैसियत से पेश न करें। ज़माना माज़ी में यह हवाला दिया जाता था कि "इमाम ग़ज़ाली फरमाते हैं या इमाम राज़ी व इमाम जलालुद्दीन सुयूती फरमाते हैं" इसके बाद फिर किसी हवाले की ज़रूरत नहीं रहती थी न इसके सुबूत में किसी किताब का नाम लिखा जाता था जबकि उन अइम्मा किराम की जुमला बातें भी ख़ुद उनकी ज़ेहनी काविश या दिमाग़ी पैदावार की न होती थीं बल्कि वह भी शरई दलाइल के हवाले से कहते थे इसी तरह आज ज़माना हाल में अगर यह कहा जाए कि "आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं" तो इसके बाद फिर दीगर हवालों की ज़रूरत क्यों है? जबकि यह भी हवाले और शरई दलाइल के बग़ैर

कोई बात नहीं कहते। आलम यह है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू जब किसी मसअले के सुबूत में दलाइल व शवाहिद पेश करने पर आते हैं तो वक़्त के राज़ी व ग़ज़ाली से कम दिखाई नहीं देते, अहादीस व आसार पेश करने पर आते हैं तो इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम के हम्सर व हमपाया मालूम होते हैं।

इस सबके बावजूद दौरे हाज़िर के तक़ाज़ों का लिहाज़ा करते हुए मैंने आयाते कुरआनिया में सूरत व आयत नम्बर और अहादीस में उनकी असल किताबों के हवाले भी दर्ज कर दिए हैं जिनसे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू ने हदीसों का इस्तिख़राज फरमाया है और कहीं कहीं दीगर कुतुब के हवालों का इन्दराज भी अमल में आया है।

किताब "फ़ैज़ाने आला हज़रत" अहादीसे नब्वीया, आसारे सहाबा व ताबईन, इरशादात असलाफ़ व अकाबिर, अक्वाले अइम्मा व उलमा, इस्लाह अक़ाइद व आमाल, रद्द व इब्ताल, पन्द्र व नसाइह, इबरत व मौएज़त, औलिया–ए–किराम के सबक़ आमोज़ हिकायात व वाक़ेआत, फराइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तहिब्बात, दीनी अहकाम व मसाइल वग़ैरह मरासिमे अह्ले सुन्नत पर एक अज़ीम व मालूमात अफ़्ज़ा मुफ़ीद किताब है इसे मसाजिद व मजालिस वग़ैरह में सुनाया जा सकता है इसी ग़रज़ से इसकी तरतीब व तश्कील भी अमल में आई है। इस किताब की तदवीन व तरतीब से किसी नई जमाअत व गरोह की तशकील व बिना या किसी की मुख़ालिफ़त व मुक़ाबला मक़्सूद नहीं बल्कि इससे सिर्फ़ और सिर्फ़ मसलके आला हज़रत का फरोग़ व इस्तेहकाम और इस्लाह फ़िक्र व अमल मक़्सूद व मद्दे नज़र है।

सबबे तालीफ़

नबीर–ए–आला हज़रत शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत हज़रत अल्हाज क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब नूरी मद्दा ज़िल्लहुल–आली से एक मुलाक़ात के मौक़ा पर मेरी बाज़ तालीफ़ात मसलन "इमाम अहमद रज़ा और इल्मे हदीस (पाँच जिल्द)" सीरते मुस्तफ़ा जाने रहमत, (चार जिल्द) फरमूदाते आला हज़रत और उलूमुल–कुरआन वग़ैरह का ज़िक्र हुआ तो उन्होंने उन्हें ख़ूब सराहा और दुआयें दीं। नीज़ फरमाया कि "फ़ैज़ाने आला हज़रत" के नाम से एक किताब की ज़रूरत महसूस की जा रही है अगर आप उसे मुरत्तब करें तो बहुत बेहतर होगा आप उसकी तबाअत व इशाअत की फ़िक्र न करें मैं इसे "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" की तरफ से छपवा दूँगा। उनके हुक्म पर मैंने अस्बात में जवाब तो दे दिया मगर कम माइगी और बेबज़ाअती का एहसास बशिद्दत दामनगीर हुआ और मैं सोचता रहा कि निशाने मंज़िल के बग़ैर अज़्मे सफर कैसे करूँ। बात तो समझ में आ गई थी कि "फ़ैज़ाने आला हज़रत" के नाम से किताब की वाक़ई ज़रूरत है जो मसाजिद व मजालिस वग़ैरह में अवामुन्नास को पढ़ कर सुनाया जा सके और जिसमें मसलके आला हज़रत के मुताबिक़ अक़ाइद व ईमानियात और मरासिम अह्ले सुन्नत वग़ैरह का जामेअ ब्यान हो। मैं इसी ग़ौर व फ़िक्र में मुस्तग़रक़ व महव था कि शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब नूरी से फिर दोबारा फोन पर बात हुई तो आपने मज़ीद ताकीद के साथ फरमाया कि आप ज़रूर "फ़ैज़ाने आला हज़रत" की तरतीब शुरू कर दें और यह कि इस बात का भर पूर ख़्याल रखा जाए कि इसके तमाम मज़ामीन व मवाद तसानीफ़ आला हज़रत ही से माख़ूज़ व मुस्तख़रज हों क्योंकि मेरे रज़ा ने अपनी तसानीफ़े आलिया में कुछ भी नहीं छोड़ा सब कुछ ब्यान फरमा दिया है,

उनकी तसानीफ़ में दुनिया–ए–इल्म व तहक़ीक़ के क़ीमती व अनमोल ख़ज़ाने मौजूद हैं बस उन से गौहर हाए आबदार निकालने की ज़रूरत है अगर ऐसा हो गया तो उन से दुनिया की आँखें चका चौंध और ख़ीरा हो जाएँगी और दुनिया पुकार उठेगी कि वाक़ई इमाम अहमद रज़ा बरैलवी अपनी ज़ात व सिफ़ात में एक जहाने हैरत और इल्म व फन की आमाजगाह हैं।

फिर कुछ दिनों के बाद शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत के हुक्म व ईमा के मुताबिक़ ज़ाते वाजिबुल–वजूद पर वसूक़ व तवक्कल करते हुए इस अज़ीम काम का आग़ज़ा कर दिया कि इसे अंजाम व इख़्तिताम तक पहुँचाने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ वही ख़ालिक़ व मालिक है मैं इब्तिदा व इंतिहा में उसी रहमत व बरकात का उम्मीदवार व मुतलाशी हूँ। मैं क़दम आगे बढ़ाता रहा मंज़िलें ख़ुद बख़ुद सिमटती चली गईं और यके बाद दीगर निशाने राह की तलाश जारी रही मेरी जुस्तजू और मेरा कारवाने शौक़ बढ़ता चला गया इधर शहज़ाद–ए–रैहाने मिल्लत मद्दा ज़िल्लहुल–आली के पैहम इसरार व तक़ाज़े होते रहे जिसके नतीजे में आज अह्ले सुन्नत की मेज़ पर इस अज़ीम सौग़ात व अरमुग़ाने ख़ुलूस को पेश करते हुए मैं ज़ेहनी फ़ख़्र व इंबिसात और दिली फरहत व शादमानी महसूस कर रहा हूँ। अगर यह काविश बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त व बारगाहे रिसालत में मक़बूल हो जाए तो मेरी उम्मीदों और आरज़ुओं की इंतिहा हो जाएगी और इस किताब के ज़रिए अगर एक शख़्स भी राहे हिदायत व सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न व आमिल हो गया तो यह मेरे लिए सुर्ख़ ऊँट से बेहतर और दारैन की सआदत व फीरोज़ बख़्ती होगी और उसे सरमाय–ए–आख़िरत समझने में हक़ बजानिब हूँगा।

तशक्कुर व इम्तिनान

नबीर–ए–आला हज़रत शहज़ाद–ए–रेहाने मिल्लत हज़रत अल्हाज क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब नूरी मद्दा ज़िल्लहुल–आली की बारगाह में हम तशक्कुर व इम्तिनान का ख़िराजे तहसीन पेश करते हैं कि उन्हीं के ईमा व इशारे पर "फ़ैज़ाने आला हज़रत" तरतीब दी गई और उनके मुसलसल इसरार व तक़ाज़े की बुनियाद पर सिर्फ़ पाँच महीने की क़लील मुद्दत में इसकी तकमील अमल में आई फिर उन्होंने अपना क़ाइम करदा इदारा "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी रज़ा नगर सौदाग्रान बरैली शरीफ़" की जानिब से इसकी तबाअत व इशाअत का बारेगिराँ उठाया इसके लिए हम मज़ीद उनकी बारगाहे रफ़ी में हदिय–ए–तशक्कुर पेश करते हैं।

बरैली शरीफ़ की सरज़मीन पर "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" का क़याम वक़्त की अहम ज़रूरत और वक़्त का ऐन तक़ाज़ा था। बरैली शरीफ़ अह्ले सुन्नत व जमाअत का अज़ीम मरकज़ है जहाँ पर हमा औक़ात तिशनगाने उलूमे नब्वीया का हुजूम व मेला लगा रहता है और कुछ लोग तो सिर्फ़ तसानीफ़े रज़ा की ज़्यारत व दीदार ही करना चाहते हैं, इस लाइब्रेरी का एक फाइदा यही होगा कि मुतमन्नी और शाइक़ लोग तसानीफ़े रज़ा की नज़र भर ज़्यारत कर सकेंगे और इल्मी इस्तिफ़ादा करने वाले उनसे बआसानी इस्तिफ़ादा करके अपनी इल्मी प्यास बुझायेंगे। और यह कि आला हज़रत के शहर में अगर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तसानीफ़ से तिशनगी ज़ाइल व दूर न होगी तो कहाँ दूर होगी। मुझे यक़ीन है कि "इमाम अहमद रज़ा लाइब्रेरी" अह्ले ज़ौक़ को सामाने तस्कीन व तसल्ली फराहम करेगी और उसकी हरकत व बरकत से अह्ले शौक़ की तलाश व जुस्तजू को मंज़िले मक़सूद मिलेगी। आज अगरचे यह इब्तिदाई मरहले में है मगर

इसके उरूज व तरक़्क़ी से अंदाज़ा होता है कि एक दिन वह आएगा कि यह एक तनावर दरख़्त की तरह पूरे मुल्क बल्कि पूरी दुनियाए सुन्नियत में छा जाएगी। काम अगरचे देर से शुरू हुआ मगर दुरुस्त और मुनासिब हुआ।

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा

अख़ीर में हम अपने शफ़ीक़ उस्ताज़े मुकर्रम हज़रत मौलाना मुहम्मद सालेह साहब क़ादरी बरैलवी शैख़ुल–हदीस मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़ की बारगाहे मुक़द्दसा में बसद इज्ज़ व नियाज़ और ब–हज़ार अदब व ख़ुलूस ख़िराजे तशक्कुर पेश करने की सआदतें हासिल कर रहे हैं कि उन्होंने इस किताब पर नज़रे सानी की और अपना क़ीमती वक़्त सर्फ़ करके इसकी इस्लाह फरमाई।

हम फरामोश नहीं कर सकते उस्ताज़ियुल–करीम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सैय्यद मुहम्मद आरिफ़ साहब रज़वी साबिक़ शैख़ुल–हदीस मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़ व बानी जामिया हुसैनिया रज़्वीया नानपारा को कि उन्होंने मुझे मुश्किल मोड़ पर महमीज़ की, अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ा और किताब पर नज़रे सानी फरमाई।

रब्बे काइनात से दुआ है कि मेरे जुमला असातिज़ा किराम का साय–ए–आतिफ़त मेरे सर पर क़ाइम व दाइम रहे उनके फ़ुयूज़ व हसनात अगर मेरे सर पर साया फगन रहें तो यही मेरी कामयाबी की दलील व ज़मानत होगी।

अपनी कम माइगी और बेबज़ाअती का ऐतराफ़ व इक़रार करने में मुझे ज़रा भी झिझक नहीं इसलिए मैं तस्लीम करता हूँ कि इस राह में लग़्ज़िशे पा ज़रूर हुई होगी मैं ठोकरों से महफ़ूज़ नहीं हूँगा क़ारेईन किराम को इसमें अगर कोई कमी या ख़ामी नज़र आए तो उसकी निशानदेही करने पर मैं दिल की गहराईयों से मम्नून व मशकूर हूँगा क्योंकि मैं इस राह में इस नए मुसाफ़िर की मानिन्द हूँ जो किसी नए शहर की गलियों में खो गया हो।

मुहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी
ख़ादिमुल–हदीस वल–इफ़्ता अल–जामिअतुर्रज़्वीया मज़हरुल–उलूम
गुरसहाए गंज, ज़िला क़न्नौज, (यू0पी0)
मुतवत्तिन – कटम पोसा, डाकखाना, डुमरौला, वाया इस्लामपुर,
ज़िला उत्तर दीनाजपुर, (बंगाल)
5 ज़िलहिज्जा 1426 हिजरी / 6 जनवरी 2006 ई0
मोबाइल नम्बर : 09956027182

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात से मुतअल्लिक़ अक़ीदा

अल्लाह तआला तमाम कमालात व हसनात का जामेअ और जुमला उयूब व नक़ाइस से पाक व मुबर्रा है। हर मख़्लूक़ उसके हुक्म की ताबेअ है उसके हुक्म से सरताबी नहीं कर सकता। उसकी ज़ात वाजिबुल–वजूद अज़ली और अबदी है सब उसके मुहताज हैं उसे किसी की एहतियाज नहीं। वह क़ादिरे मुतलक़ और फाइले मुख़्तार है, वह यक्ता व बेमिस्ल है। उसकी ज़ात और जुमला सिफ़ात पर ईमान व ऐतक़ाद रखना लाज़िम व फर्ज़ है। उस पर किसी तरह का कोई ऐब लगाना या उसे ऐब से पाक न समझना कुफ़्र है। (मुरत्तिब)

फ़ाइले मुख़्तार व मुअस्सिरे हक़ीक़ी :

ईमान है कि अल्लाह तआला फाइले मुख़्तार है जो कुछ होता है उसी के इरादा से होता है और उसके इरादा के सिवा आलम में कोई शय' मुअस्सिरे हक़ीक़ी नहीं, न आग जलाती है न पानी बुझाता है बल्कि उसी के इरादा से जलना बुझना पैदा होता है। उसने अपनी हिक्मते बालेग़ा के मुताबिक़ असबाब व मुसब्बबात में रब्त फरमा दिया है कि वह भी उसी के इरादा का हर वक़्त मुहताज है वह चाहे तो चीज़ पानी से जल जाए, आग से बुझ जाए, आँखें सुनें, कान देखें, वग़ैरह ज़ालिक, चाहे तो असबाब को मुअत्तल कर दे लाख सबब मौजूद हों और मुसब्बब न हो सके, चाहे तो असबाब को मअ्ज़ूल फरमा दे कोई सबब न हो और मुसब्बब मौजूद हो जाए। याद रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।

हर कुफ़्र मुस्तल्ज़िम है जेहल बिल्लाह को :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को जानना बेहम्देही तआला मुसलमानों के साथ ख़ास है कोई काफिर किसी क़िस्म का हो हरगिज़ उसे नहीं जानता, कुफ़्र कहते ही जेहल बिल्लाह को हैं, यानी मुसलमानों के सिवा अल्लाह तआला को कोई नहीं जानता कलिमा गो मुरतद अगरचे नमाज़ें पढ़ें, क़ालल्लाह, क़ालर्रसूल कहें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को हरगिज़ नहीं जानते।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 735)

वह हर ऐब व नुक़्स से पाक है :

जमीअ् सिफ़ाते कमाल, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए लाज़िम ज़ात हैं और जुम्ला उयूब व नक़ाइसे किज़्ब, जेहल वग़ैरह वग़ैरह सब उस पर मुहाल बिज़्ज़ात हैं कि असलन किसी तरह इम्कान नहीं रखते। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 736)

रब तआला से सच्चा हुस्ने ज़न रखना :

हज़रत हक़ अज़्ज़ा व जल्ल अपने बन्दा के साथ उसके गुमान पर मुआमला फरमाता है। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने रब जल्ला व उला से रिवायत फरमाते हैं कि मौला सुब्हानुहू व तआला फरमाता है, मैं अपने बन्दा के साथ वह करता हूँ जो, बन्दा मुझ से गुमान रखता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में यह इरशाद ज़ाइद है, अब जैसा चाहे मुझ पर गुमान करे।

(तबरानी, हाकिम)

तीसरी हदीस में यूं ज़्यादत है, अगर भला गुमान करेगा तो उसके लिए भलाई है और बुरा गुमान करेगा तो उसके लिए। (मुसनद अहमद, तबरानी, हुलिया,)

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 457, 458)

आख़िरत में दीदारे इलाही :

अह्ले सुन्नत का ईमान है कि क़्यामत व जन्नत में मुसलमानों को दीदारे इलाही बेकैफ़, व बेजेहत, व बेमुहाज़ात होगा। अल्लाह तआला फरमाता है :

कुछ मुँह तर व ताज़ा होंगे अपने रब को देखते हुए। (अल–क़्यामते, 23)

कुफ़्फ़ार के हक़ में फरमाता है बेशक वह उस दिन अपने रब से हिजाब में रहेंगे, यह काफिरों पर अज़ाबे ब्यान फरमाया गया है, तो ज़रूर मुसलमान उस से महफ़ूज़ हैं।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 57)

अल्लाह के लिए लफ़्ज़ मुअन्नस का इस्तेमाल :

रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू की तरफ़ मुअन्नस का सेग़ा या मुअन्नस की ज़मीर इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं, यहाँ तक कि अगर यह नमाज़ में ज़ुबान से निकल जाए तो नमाज़ बातिल हो जाएगी।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अचानक सोते सोते उठ बैठे और बहुत रोए लोगों ने सबब दरयाफ़्त किया, फरमाया मैंने देखा रब्बुल–इज़्ज़त को कि फरमाता है तू अश्आर लैला व सलमा को मुझ पर महमूल करता है, अगर मैं न जानता कि तू मुझ से मुहब्बत रखता है तो वह अज़ाब करता जो किसी पर न किया हो।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 98)

अल्लाह तआला पर अल्लाह मियाँ का इतलाक़ :

ज़ुबान उर्दू में लफ़्ज़ मियाँ के तीन मानी हैं, उनमें से दो ऐसे हैं जिन से शाने उलूहियत पाक व मुनज़्ज़ह है और एक का सिद्क़ हो सकता है तो जब लफ़्ज़ दो ख़बीस मानों और एक अच्छे मानी में मुश्तरक ठहरा, और शरअ् में वारिद नहीं तो ज़ाते बारी पर उसका इतलाक़ मम्नूअ् होगा।

- इसके एक मानी मौला, अल्लाह तआला बेशक मौला है।
- दूसरे मानी शौहर।
- तीसरे मानी ज़िना का दलाल कि ज़ानी और ज़ानिया में मुतवस्सित हो।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 116)

अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात में ग़ौर व ख़ोज़ :

हम न उसकी ज़ात से बहस कर सकते हैं न उसकी किसी सिफ़त से।

हदीस में इरशाद फरमाया अल्लाह की नेअ्मतों में फ़िक्र करो और उसकी ज़ात में फ़िक्र न करो हलाक हो जाओगे।

उसकी सिफ़ात में फ़िक्र ज़ात ही में फ़िक्र है, और इदराक कुनह सिफ़ात, बेइदराक कुनह ज़ात मुम्किन नहीं कि उसकी सिफ़ात को किसी मोतिन में ज़ात से जुदाई मुहाल इसी लिए उन्हें ला ऐन व ला गैर कहा जाता है और कुनह ज़ात का इदराक मख़्लूक़ को मुहाल, कि वह हर शय को मुहीत है, कोई उसे मुहीत नहीं कर सकता, ला जरम कुनह सिफ़ात का भी इदराक मुहाल।

अल्लाह तआला को साहब कहना कैसा है? :

जाइज़ है, हदीस में है :

और सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए तो कुरआने अज़ीम में साहब फरमाया गया :

लेकिन "अल्लाह साहब" कहना इस्माईल देहलवी का मुहावरा है। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यक़ीनन हमारे साहब हैं, मगर नाम पाक के साथ साहब कहना आरिया व पादरियों का मुहावरा है, इसलिए न चाहिए। आरिया, पादरी, वहाबिया सब एक से हैं।

(अल–मलफ़ूज़ सोम, सफ़ा 4)

हुज़ूर ने रब को देखा :

इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा ख़लवत में लेटे हुए थे एक साहब ने पूछा क्या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने रब को देखा, यह सुनते ही उठ कर बैठ गए और फरमाने लगे हुज़ूर ने अपने रब को देखा देखा, फरमाते रहे यहाँ तक कि साँस ख़त्म हो गई। (अल मल्फ़ूज़ सोम सफ़ा 37)

अल्लाह तआला का ज़माना से पाक होना :

रब्बुल–इज़्ज़त ज़माने से पाक है, मगर बोलते हैं वह अज़ल में भी ऐसा ही था जैसा अब है और अबद तक वैसा ही रहेगा। था और है और रहेगा यह सब ज़माने पर दलालत करते हैं और वह ज़माने से पाक, और हवादिस जो हैं फ़िल–हक़ीक़ह वह भी ज़माना से जुदा हैं, मगर उनका ज़माने से जुदा होना अक़्ल बताएगी और किसी ज़रिया से न मालूम होगा। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स० 65)

वह बेहद ज़ाहिर भी है और बेहद बातिन भी

वह तो आरफ़ुल–मआरिफ़ है हर शय को तअय्युन तो वहीं से अता होती है। वह तो इस क़दर ज़ाहिर है कि उसका बेग़ायत ज़ुहूर, वही सबब हो गया बेग़ायत बुतून का।

क़ाइदा है कि शय जब तक एक हद मोअ्ताद तक ज़ाहिर रहती है मरई होती है और जब उस हद से गुज़रती है नज़र नहीं आती। आफताब, तुलूअ् के बाद कुछ बुख़ारात, सहाबात वग़ैरह में होता है पूरी तरह नज़र आता है, ख़ूब अच्छी तरह उस पर निगाह जम सकती है, और जितना बुलन्द होता जाता है निगाह में ख़ैरगी आती जाती है यहाँ तक कि जब बिल्कुल निस्फ़ुन्नहार पर आ जाता है, निगाह की मजाल नहीं कि उस पर जम सके, मगर फिर भी उसका ज़ुहूर एक हद ही तक़ है इसलिए अगरचे हम उसको देख नहीं सकते फिर भी उसकी रौशनी से मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

चौदहवीं शब को जब आफ़ताब हम से बिल्कुल पोशीदा हो जाता है किसी की ताक़त नहीं कि आफताब से रौशनी ले सके, उस वक़्त माहताब, आफताब और अहले ज़मीन के दरम्यान मुतवस्सित हो कर आफताब से नूर लेता है और अहले ज़मीन को नूर पहुँचाता है, जो चाहे कि उस माहताब से नूर न लूँगा बल्कि आफताब ही से लूँगा हरगिज़ नहीं ले सकता।

माहताबे नबुव्वत का तवस्सुत व वसीला

बिला तश्बीह ज़ाते बारी तआला, बेहद ज़ाहिर थी और इसी सबब से बेहद बातिन थी, तमाम मौजूदात में इससे मुस्तफ़ीद होने की इस्तेअ्दाद भी न थी, इसलिए अल्लाह तआला ने एक माहताबे नबुव्वत बनाया कि आफताबे उलूहियत से मुनव्वर हो कर तमाम मख़्लूक़ात को मुनव्वर कर दे।

अर्श तक फैली है ताबे आरिज़
यूं चमकते हैं चमकने वाले

जो चाहे कि बग़ैर वसीले उस माहताबे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के, कुछ हासिल कर लूँ वह ख़ुदा के घर में नकब लगाना चाहता है, बग़ैर उस तवस्सुल के कोई नेअमत, कोई

दौलत किसी को कभी नहीं मिल सकती, कौन है जिससे तमाम आलम मुनव्वर व मौजूद है वह न हो तो तमाम आलम पर तारीकी अदम छा जाए, वह क़मरे बुरुजे रिसालत सैय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स० 70)

अल्लाह को आशिक़ कहने की मुमानेअत क्यों?

अल्लाह तआला को आशिक़ और हुज़ूर पुर नूर सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को उसका मअ्शूक़ कहना जाइज़ नहीं कि इश्क़ के मानी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के हक़ में मुहाल क़तई हैं और ऐसा लफ़्ज़ हज़रते इज़्ज़त की शान में बोलना मम्नूअ् क़तई है जिसके लिए कोई दलीले शरई वारिद नहीं। फ़ुक़हाए किराम फरमाते हैं कि सिर्फ़ मआनी मुहाल का ईहाम ही माना के लिए काफी है।

हमारे उलमा–ए–हन्फ़ीया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से मन्कूल है कि अगर कोई कहे कि मैं अल्लाह से इश्क़ करता हूँ या वह मुझ से इश्क़ करता है तो वह बिदअती है, हाँ यह कहा जा सकता है कि वह मुझ से मुहब्बत फरमाता है मैं उस से मुहब्बत करता हूँ।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द ९, स० ६१)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तंज़ीह में अह्ले सुन्नत के अक़ीदे

जो बात अल्लाह तआला की शान के लाइक़ है उसका इतलाक़ उस पर दुरुस्त है और जो बात उसकी शान व सिफ़त के लाइक़ नहीं उसके लिए उसका इस्तेमाल जाइज़ नहीं, इस सिलसिले में अह्ले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदे यह हैं। (मुरत्तिब)

1. अल्लाह तआला हर ऐब व नुक़्सान से पाक है।

2. सब उसके मुहताज हैं वह किसी चीज़ की तरफ किसी बात में बिल्कुल एहतियाज नहीं रखता।

3. मख़्लूक़ की मुशाबेहत से मुनज़्ज़ह है।

4. इसमें तग़ैय्युर नहीं आ सकता, अज़ल में जैसा था वैसा ही अब है और वैसा ही हमेशा हमेशा रहेगा यह कभी नहीं हो सकता कि पहले एक तौर पर हो फिर बदल कर और हालत पर हो जाए।

5. वह जिस्म नहीं, जिस्म वाली किसी चीज़ को उस से लगाव नहीं।

6. उसे मिक़्दारे आरिज नहीं कि इतना या उतना कह सकें, लम्बा या चौड़ा, या दिल्दार मोटा, या पतला, या बहुत थोड़ा या नाप या गिनती या तौल में बड़ा या छोटा, या भारी या हल्का नहीं।

7. वह शक्ल से मुनज़्ज़ह है फैला या सिम्टा गोल या लम्बा तिकोना या चौखटा, सीधा या तिरछा या और किसी सूरत का नहीं।

8. हद व तरफ व निहायत से पाक है, और इस मानी पर लामहदूद भी नहीं कि बेनिहायत फैला हुआ हो बल्कि यह मानी कि वह मिक़्दार वग़ैरह तमाम ऐराज़ से मुनज़्ज़ह है, ग़रज़ नामहदूद कहना नफी हद के लिए है न अस्बाते मिक़्दार बेनिहायत के लिए।

9. वह किसी चीज़ से बना नहीं।

10. उसमें अज्ज़ा या हिस्से फर्ज़ नहीं कर सकते।

11. जेहत और तरफ से पाक है जिस तरह उसे दहने बायें या नीचे नहीं कह सकते यूं हैं जेहत के मानी पर आगे पीछे या ऊपर भी हरगिज़ नहीं।

12. वह किसी मख़्लूक़ से मिल नहीं सकता कि उस से लगा हुआ हो।

13. किसी मख़्लूक़ से जुदा नहीं कि उसमें और मख़्लूक़ में मुसाफ़त का फ़ासला हो।

14. उसके लिए मकान और जगह नहीं।

15. उठने, बैठने, उतरने, चढ़ने, चलने, ठहरने वग़ैरह तमाम अवारिज़े जिस्म जिस्मानियात से मुनज़्ज़ा है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 220)

और बाज़ अक़ाइदे मज़्कूरा बाला एक और मक़ाम पर दूसरे अंदाज़ में इमाम अह्ले सुन्नत सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान यूं ब्यान फरमाते हैं :

वह मकान व तमक्कुन से पाक है, न अर्श उसका मकान है, न दूसरी जगह, अर्श व फ़र्श सब हादिस हैं और वह क़दीम अज़ली अबदी सरमदी जब तक यह कुछ न थे कहाँ था जैसा जब था वैसा ही अब है, और जैसा अब है वैसा ही अबदल–आबाद तक रहेगा। अर्श व फ़र्श सब मुतग़ैय्यर हैं। हादिस हैं, फानी हैं, वह और उसकी सिफ़ात तग़ैय्युर व हुदूस व फना सब से पाक है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 49)

अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर कहना कैसा है ?

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को हाज़िर व नाज़िर कहना नहीं चाहिए क्योंकि हाज़िर व नाज़िर होना जिस्म व जिस्मानियात को मुस्तल्ज़िम है और वह उस से पाक है चुनांचे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को हाज़िर व नाज़िर कहने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल शहीद व बसीर है, उसे हाज़िर व नाज़िर न कहना चाहिए। यहाँ तक कि बाज़ उलमा ने इस पर तक्फ़ीर का ख़्याल फरमाया, मगर हमारे अकाबिर यह फरमाते हैं कि जो ऐसा कहता है ख़ता करता है, बचना चाहिए। (फतावा रज़्वीया ज़िल्द 6, स0 157)

अल्लाह के नज़दीक किस बन्दे का मरतबा कितना ?

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने मुक़द्दस में फरमाता है कि तुम मुझे याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूँगा और मेरा शुक्र करो नाशुक्री न करो। (अल–बक़रह, 152)

बन्दा जब अल्लाह तआला को किसी मज्लिस में याद करता है तो अल्लाह तआला उसे उस से बेहतर मज्लिस में याद फरमाता है गोया कि अगर बन्दा अल्लाह तआला को याद करेगा तो अल्लाह तआला उसकी तरफ नज़रे रहमत फरमाएगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो यह जानना पसन्द करे कि अल्लाह के नज़्दीक उसका मरतबा कितना है, वह यह देखे कि उसके दिल में अल्लाह की क़द्र कैसी है कि बन्दे के दिल में जितनी अज़मत अल्लाह की होती है, अल्लाह उसी के लाइक़ अपने यहाँ उसे मरतबा देता है। (हाकिम, दारु क़ुतनी, अबू नईम) फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 457)

नबुव्वत व रिसालत से मुतअल्लिक़ ईमानी बातें

हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रसूले बरहक़ और सैय्यदुल–अंबिया हैं, उन पर और जो वह ख़ुदा की तरफ़ से लेकर आए सब पर ईमान रखना फ़र्ज़ है, उन पर ऐब लगाना, उनकी तंक़ीस व तौहीन करना या उनकी शाने अक़्दस में नाज़ेबा कलिमात कहना कुफ़्र है, इसी तरह जितने अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए सबको बरहक़ मानना फ़र्ज़ है, एक नबी की तौहीन व तक्ज़ीब जुमला अंबिया व मुरसलीन सलवातुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन की तक्ज़ीब व तौहीन को मुस्तल्ज़िम है। यह ईमान रखना भी लाज़िम है बाज़ अंबिया को अल्लाह तआला ने बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है उनमें सैय्यदुल–मुरसलीन जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सबसे अफ़ज़ल व आला बनाया है। (मुरत्तिब)

मसला हयाते अंबिया

अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हाले हयात व हाले वफ़ात में हमेशा हर वक़्त तैय्यिब व ताहिर हैं। अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की मौत यानी उनके अज्सामे तैय्यबा से अरवाहे ताहिरा का जुदा होना सिर्फ़ एक आन के लिए होता है फिर वैसे ही ज़िन्दा हो जाते हैं जैसे हाले हयाते ज़ाहिरी में थे जिस्म व रूह से मअन व लिहाज़ा उनका तरका नहीं बटता न उनके बाद उनकी अज़्वाज से निकाह जाइज़।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को मुर्दा कहना हराम, बल्कि मआज़ल्लाह बतौर तौहीन हो तो सरीह कुफ़्र है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने शोहदा को मुर्दा कहने से मना फरमाया, अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयात उन से बदरजहा ज़ाइद है शहीद की हयात अहकामे दुनिया में नहीं उसका तरका बटेगा, उसकी बीबी इद्दत के बाद निकाह कर सकेगी, बख़िलाफ़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम। (हाशिया फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 611)

हुज़ूर जान व माल के मालिक हैं

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुसलमानों के जान व माल के मालिक हैं, अगर वह किसी मुसलमान से कुछ तलब फरमायें वह मआज़ल्लाह सवाल नहीं बल्कि यक़ीनन ऐसा है जैसे मौला अपने ग़ुलाम से उसकी कमाई का कुछ ले कि ग़ुलाम और उसकी कमाई सब मौला की मिल्क है, इसी लिए सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की :

"मैं और मेरा माल किसके हैं हुज़ूर ही के हैं या रसूलुल्लाह।"

(हाशिया फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 755)

अल्लाह की अता से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अपनी उम्मत पर उनके जान व माल में तसर्रुफ़ का पूरा इख़्तियार हासिल है कि जिस तरह चाहें सर्फ़ में लायें किसी उम्मती को चूं चरा की गुंजाइश नहीं चुनांचे क़ुरआने करीम की रौशनी में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि :

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुसलमानों पर उनकी जानों से ज़्यादा इख़्तियार रखते हैं।" (हाशिया फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 755)

मुंइम हक़ीक़ी अल्लाह, क़ासिम हुज़ूरे वाला

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तमाम जहान के लिए नेअ्मते इलाहिया हैं, हर ख़ैर, हर नेअ्मत, हर मुराद, हर दौलत, दीन में, दुनिया में, आख़िरत में, रोज़े अव्वल से आज तक, आज से अबदुल–आबाद तक जिसे मिली या मिलनी है हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़्दस से मिली और मिलती है, मोअ्ती हक़ीक़ी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल है और उसकी नेअ्मतों के बांटने वाले सिर्फ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, दूसरे से कोई नेअ्मत, कोई मुराद किसी को कभी न मिले।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स० 535)

क़ल्बे रसूल की बेदारी

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि मेरी आँखें सोती हैं मेरा दिल नहीं सोता। (बुख़ारी, मुस्लिम)

इसी तरह अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की आँखें सोती हैं दिल कभी नहीं सोता, यही वजह है कि अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का वज़ू सोने से नहीं जाता।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का क़ल्बे मुबारक अफ़्कारे सालेहा मुतवातिर वह्य व इल्हाम और मआरिफ़े इलाहिया में मुस्तग़रक़ रहने के सबब से नहीं सोता है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 91)

हालते जनाबत में हुज़ूर का मस्जिद में आना

जनाबत की हालत में किसी शख़्स को मस्जिद में आने की इजाज़त नहीं मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मस्जिद में तशरीफ़ लाना और मस्जिद में क़याम फरमाना जाइज़ व मुबाह था।

एक मरतबा इक़ामत होने के बाद सफ़ों को दुरुस्त किया गया फिर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए जब हुज़ूर मुसल्ला पर खड़े हुए तो हुज़ूर को ख़्याल आया कि हुज़ूर जुनुब हैं यानी ग़ुस्ल की हाजत है, हुज़ूर ने सहाबा किराम से फरमाया कि तुम लोग अपनी जगह पर खड़े रहो हुज़ूर वापस गए ग़ुस्ल फरमाया फिर जब तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर के सरे मुबारक से पानी के क़तरे टपक रहे थे। (त) (बुख़ारी, मुस्लिम) (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 638)

किसी नबी की तरफ निस्बते मअ्सियत हमें हलाल नहीं

ग़ैर तिलावत में अपनी तरफ से सैय्यदना आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ नाफरमानी व गुनाह की निस्बत हराम है, अइम्म–ए–दीन ने इसकी तसरीह फरमाई बल्कि एक जमाअत उलमा–ए–किराम ने इसे कुफ़्र बताया। मौला को शायाँ है कि अपने महबूब बन्दों को जिस इबारत से ताबीर फरमाए, दूसरा कहे तो उसकी ज़बान गुद्दी के पीछे से खींची जाए।

यानी तिलावते कुरआन या क़िरात हदीस के सिवा अपनी तरफ से आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ख़्वाह किसी नबी को मअ्सियत की तरफ मंसूब करना सख़्त हराम है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 233)

हुज़ूर का ग़ुसाला

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वुज़ू बल्कि ग़ुस्ले जनाबत का भी पानी हमारे हक़ में ताहिर मुतह्हिर है इसी तरह तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम।

यानी जिनके वज़ू व ग़ुस्ल का ग़ुसाला हमारे हक़ में पाक व साफ़ है तो उनकी तरफ किसी मअ्सियत व गुनाह की निसबत क्योंकर जाइज़ हो सकती है उनके नाम पाक से दिलों का मैल धुल जाता है।

(हाशिया फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 254)

जिस तरह हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक़्दस का

ग़ुसाला शरीफ़ पाक है उसी तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आसारे शरीफ़ा मिस्ल जुब्ब–ए–अक़्दस व नअ्ल मुबारक का ग़ुसाला शिफ़ा व बरकत और क़ाबिले वुज़ू व मोअ्ती तहारत है मगर पाँव पर न डाला जाए।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल स0 456)

हुज़ूर का फ़ज़्ल व शरफ़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने किसी चीज़ से शरफ़ न पाया बल्कि जो चीज़ हुज़ूर की तरफ मंसूब हो गई उसे शरफ़ मिल गया।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ग़ैर अफ़्ज़ल अशिया को भी अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ फरमाता है ताकि उन अशिया को फ़ज़्ल हासिल हो, लिहाज़ा विलादते अक़्दस माह रबीउल–अव्वल शरीफ़ में हुई न माह मुबारक रमज़ान में, और रोज़ जाँ अफरोज़ दोशंबा हुई, न रोज़े मुबारक जुमा, और मकान मूलिदे अक़्दस में हुई न काबा मुअज़्ज़मा में।

(हाशिया फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 552)

नवाक़िज़े वुज़ू

बाज़ नवाक़िज़े वज़ू अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के लिए यूं नाक़िज़ नहीं कि उनका वक़ूअ् ही उन से मुहाल है, जैसे जुनून या नमाज़ में क़हक़हा।

नींद के सिवा बाक़ी और नवाक़िज़ से भी अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का वुज़ू जाता या नहीं, इसमें इख़्तिलाफ़ है।

★ अल्लामा क़हिस्तानी वग़ैरह ने फरमाया अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का वुज़ू नहीं जाता।

★ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तहक़ीक़ यह है कि नवाक़िज़े हुक्मीया मिस्ल ख़्वाब व ग़शी से नहीं जाता, और नवाक़िज़े हक़ीक़ीया मिस्ल बोल वग़ैरह से उनकी अज़मते शान के सबब से जाता रहता है।

★ नींद के मिस्ल ग़शी भी अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के जिस्मे ज़ाहिर पर तारी हो सकती दिल मुबारक इस हालत में भी बेदार व ख़बरदार रहता।

फ़ुज़्लाते शरीफ़ा

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ुज़्लाते शरीफ़ा मिस्ल पेशाब वग़ैरह सब तैय्यिब ताहिर थे जिनका खाना पीना हमें हलाल व बाइसे शिफ़ा व सआदत, मगर हुज़ूर की अज़मते शान के सबब हुज़ूर के हक़ में हुक्मे नजासत रखते।

(हाशिया फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 92, 93)

इंसान का नुत्फ़ा जिस से आदमी की पैदाइश होती है उसके पाक व नापाक होने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं :

मनी मुतलक़ नापाक है सिवा उन पाक नुत्फ़ों के जिन से तख़्लीक़ हज़रत अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हुई, और ख़ुद अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के नुत्फ़े, कि उनका पेशाब भी पाक है यूंही तमाम फ़ुज़्लात।

(फतावा रज़्वीया जिल्द दोम, स0 138)

एक और मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू इरशाद फरमाते हैं :

अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के फ़ुज़्लाते शरीफ़ा पाक हैं और उनके वालिदैन करीमैन के वह नुत्फ़े भी पाक हैं जिन से यह हज़रात पैदा हुए।

हज़रत जाबिर की ख़्वाहिश

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हमराह था हुज़ूर को क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हुई, दो मुतफ़र्रिक़ पेड़ अलग अलग खड़े थे और कुछ पत्थर इधर उधर पड़े थे, हुज़ूर ने इरशाद फरमाया ऐ जाबिर इन पेड़ों और पत्थरों से जाकर कह दो कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) का हुक्म है कि तुम आपस में मिल जाओ, हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जाकर फरमाया दोनों पेड़ों ने जुंबिश की और अपने तमाम रग व रेशा ज़मीन से निकाले, एक इधर से चला और दूसरा उधर से, और दोनों मिल गए, और पत्थरों ने एक दीवार की मिस्ल हो कर उड़ना शुरू किया और दरख़्तों के पास आकर खड़े हो गए। फिर हुज़ूर वहाँ तशरीफ़ ले गए और क़ज़ाए हाजत फरमाई, जब फारिग़ हो कर तशरीफ़ लाए मैं गया इस क़स्द से कि जो कुछ ख़ारिज हुआ हो उसको खाऊं वहाँ कुछ न था अल्बत्ता उस जगह मुश्क की ख़ुशबू आ रही थी फरमाया इन पेड़ों और पत्थरों से कहो अपनी अपनी जगह चले जाओ वह अपनी अपनी जगह चले गए। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं इस नीयत से गया था कि जो कुछ मिले उसको तबर्रुकन खाऊं, वहाँ सिवाए मुश्क की ख़ुश्बू के और कुछ न पाया, फरमाया तुमको मालूम नहीं कि ज़मीन निगल लेती है जो अंबिया से ख़ारिज होता है (फिर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने मुस्कुरा कर फरमाया) जो अच्छी चीज़ होती है उसको ज़मीन ही नहीं छोड़ती। (मिश्कात, अल–ख़साइसुल कुबरा)

(फिर फरमाया) सब अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ताहिर महज़ हैं और जो शय उन से इलाक़ा रखने वाली है सब ताहिर, हाँ उनके फ़ुज़्लात ख़ुद उनके हक़ में ऐसे ही नजिस हैं जैसे हमारे नज़्दीक हमारे फ़ुज़्लात नजिस हैं और अगर उन से कोई फ़ुज़्ला ख़ारिज हो जो हमारे लिए नाक़िज़े वुज़ू है तो बेशक उनका वुज़ू भी टूट जाएगा।

फिर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी इश्क़ भरे अंदाज़ में फरमाते हैं कि :

मेरी नज़र में इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी शारेह सहीह बुख़ारी की वक़्अत इब्तिदाअन इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी शारेह सहीह बुख़ारी से ज़्यादा थी, फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत की बहस इन दोनों साहिबों ने की है, इमाम इब्ने हजर ने इब्हासे मुहद्देसाना लिखी हैं कि यूं कहा जाता है, और इस पर यह ऐतराज़ है, यूं कहा जाता है और उस पर यह ऐतराज़ है, अख़ीर में लिखा है कि फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत उनके नज़्दीक साबित नहीं। इमाम ऐनी ने भी शरह बुख़ारी में इस बहस को बहुत बस्त से लिख़ा है आख़िर में लिखते हैं कि यह सब कुछ इब्हास हैं, जो शख़्स तहारत का क़ाइल हो उसको मैं जानता हूँ और जो उसके ख़िलाफ़ कहे उसके लिए मेरे कान बहरे हैं, मैं सुनता नहीं, यह लफ़्ज़ उनकी कमाले मुहब्बत को साबित करता है और मेरे दिल में ऐसा असर कर गया कि उनकी वक़्अत बहुत हो गई।

आज़ा–ए–शरीफ़ा

अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के आज़ाए शरीफ़ मसलन मूए मुबारक और दन्दाने शरीफ़ और नाख़ुन शरीफ़ का खाना नाजाइज़ व हराम है, इब्तिज़ाल व तौहीन है, जो चीज़ हराम की गई उसकी हिल्लत की कोई वजह नहीं वह मुबाह नहीं हो सकती अगर तबर्रुक चाहता है पानी में धो कर पिए। (अज–मल्फ़ूज़ हिस्सा चहारुम, स0 23, 24)

अंबिया किराम की हयात बादे वफ़ात

तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयात, हक़ीक़ी हिस्सी दुनियवी है।
सही हदीस में है बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के

अज्साम का खाना हराम फरमा दिया है, तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिए जाते हैं।

(निसाई)

दूसरी सही हदीस में है अंबिया सब ज़िन्दा हैं अपनी क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं। (मिश्कात)

फिर क़ादयानियों का रद करते हुए इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं कि :

अगर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की वफात मान भी ली जाए तो उनकी मौत बल्कि तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के लिए सिर्फ़ आनी है, एक आन को मौत तारी होती है।

यह मसअला क़तईया यक़ीनीया ज़रूरियाते मज़हब अह्ले सुन्नत से है, इसका मुंकिर न होगा मगर बद मज़हब गुमराह, तो फिर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़िन्दा ही हैं उनका नुज़ूल मुम्तनेअ् क्यों कर होगा।

चार अंबिया किराम को अभी वाद–ए–इलाहिया नहीं आया

चार अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम वह हैं जिन पर अभी एक आन के लिए भी मौत तारी नहीं हुई।

★ दो आसमान पर।

1. सैय्यदना इद्रीस अलैहिस्सलातु वस्सलाम।
2. और सैय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

★ दो ज़मीन पर

1. सैय्यना इल्यास अलैहिस्सलातु वस्सलाम।
2. और सैय्यदना ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

हर साल हज में यह दोनों हज़रात जमा होते हैं, हज करते हैं, ख़त्मे हज पर ज़मज़म शरीफ़ का पानी पीते हैं कि वह पानी उनको किफायत करता है साल भर के तआम व शराब से।

(अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा चहारुम, स0 45)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर इस तरह है, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

जम्हूर का मज़्हब यही है और सही भी यही है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम नबी हैं, ज़िन्दा हैं ख़िदमते बहर उन्हीं से मुतअल्लिक़ है और इल्यास अलैहिस्सलातु वस्सलाम ख़ुश्की में हैं।

फिर फरमाया, चार नबी ज़िन्दा हैं कि उनको वाद–ए–इलाहिया अभी आया ही नहीं, यूं तो हर नबी ज़िन्दा है बेशक अल्लाह ने हराम किया है ज़मीन पर कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के जिस्मों को ख़राब करे, तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिए जाते हैं, अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पर एक आन को महज़ तस्दीक़े वाद–ए–इलाहिया के लिए मौत तारी होती है, बाद इसके फिर उनको हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियवी अता होती है। ख़ैर इन चारों में से दो आसमान पर हैं और दो ज़मी पर।

★ ख़िज्र व इल्यास अलैहिमस्सलातु वस्सलाम ज़मीन पर हैं।

★ और इदरीस व ईसा अलैहिमस्सलाम आसमान पर हैं।

इदरीस अलैहिस्सलाम के आसमान पर जाने का वाक़ेया

आपके वाक़ेया में उलमा को इख़्तिलाफ़ है, इतना तो ईमान है कि आप आसमान पर तशरीफ़ फरमा हैं कुरआने अज़ीम में है :

हमने उनको बुलन्द मक़ाम पर उठा लिया।

बाज़ रिवायात में यह भी है कि बाद मौत आप आसमान पर तशरीफ़ ले गए।

एक रिवायत में यह है, एक बार आप धूप की शिद्दत में तशरीफ़ लिए जा रहे थे दोपहर का वक़्त था, आपको सख़्त तक्लीफ़ हुई ख़्याल फरमाया कि जो फ़रिश्ता आसमान पर मुवक्किल है उसको किस क़द्र तक्लीफ़ होती होगी, अर्ज़ कि ऐ अल्लाह उस फ़रिश्ता पर तख़्फ़ीफ़ फरमा, फौरन दुआ क़बूल हुई और उस पर तख़्फ़ीफ़ हो गई, उस फ़रिश्ता ने अर्ज़ किया या अल्लाह! मुझ पर तख़्फ़ीफ़ किस तरफ से आई, इरशाद हुआ मेरे बन्दे इद्रीस ने तेरी तख़्फ़ीफ़ के वास्ते दुआ की, मैंने उसकी दुआ क़बूल की, अर्ज़ की मुझे इजाज़त दे कि मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ, इजाज़त मिलने पर हाज़िर हुआ, तमाम वाक़ेया ब्यान किया और अर्ज़ किया कि हज़रत का कोई मतलब हो तो इरशाद फरमायें, फरमाया एक मरतबा जन्नत में ले चलो, अर्ज़ की यह तो मेरे क़ब्ज़ा से बाहर है लेकिन इज़राईल मलिकुल–मौत से मेरा दोस्ताना है उनको लाता हूँ, शायद कोई तदबीर चल जाए। ग़रज़ इज़राईल अलैहिस्सलाम आए आपने उन से फरमाया, उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर बग़ैर मौत के तो जन्नत में जाना नहीं हो सकता, फरमाया रूह क़ब्ज़ कर लो, उन्होंने बहुक्मे ख़ुदा एक आन के लिए रूह क़ब्ज़ की और फौरन जिस्म में डाल दी, आपने फरमाया कि मुझको जन्नत व दोज़ख़ की सैर कराओ, हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम दोज़ख़ पर लाए, तब्क़ाते जहन्नम खुलवाए, आप देखते ही बेहोश हो कर गिर पड़े? इज़राईल अलैहिस्सलाम वहाँ से ले आए जब होश हुआ तो अर्ज़ किया यह तक्लीफ़ आपने अपने हाथों से उठाई फिर जन्नत में ले गए वहाँ की सैर करने के बाद इज़राईल अलैहिस्सलाम ने चलने के वास्ते अर्ज़ किया आपने इल्तिफ़ात न फरमाया, फिर दोबारा अर्ज़ किया आपने जवाब न दिया, जब फिर उन्होंने अर्ज़ किया तो फरमाया अब चलना कैसा? जन्नत में आ कर भी कोई वापस जाता है?

अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता को उन दोनों में फ़ैसला करने के वास्ते भेजा उसने आकर पहले हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम से सारा वाक़िया सुना फिर आपसे दरयाफ़्त किया कि आप क्यों नहीं तशरीफ़ ले जाते इरशाद फरमाया :-

★ अल्लाह तआला फरमाता है :

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल–मौत।

तरजमा : हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है। (त) (आले इमरान, 185)

और मैं मौत का मज़ा चख चुका हूँ।

★ और फरमाता है :

व इन कुन्तुम इल्ला वारिदुहा। (मरयम, 71)

तरजमा : तुम में से हर एक जहन्नम की सैर करेगा।

और मैं जहन्नम की भी सैर कर आया।

वमा हुम मिन्हा बेख़ारेजीना। (अल–बक़रा, 167)

तरजमा : और वह लोग जन्नत से कभी न निकलेंगे।

अब मैं जन्नत में आ गया क्यों जाऊं हुक्म हुआ मेरा बन्दा इद्रीस सच्चा है उसको छोड़ दो।

हर नबी की हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई, सब अव्वलीन व आख़िरीन व अंबिया व मुरसलीन ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पीछे बैतुल–मक़्दिस में नमाज़ पढ़ी।

हज़रत जामी रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं :

नमाज़े अक़्सा में था यही सर अयाँ हों मानी अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सलतनत आगे कर गए थे

बैतुल–मअ्मूर में इमामत

बैतुल-मक़्दिस में तमाम अंबिया और मुरसलीन के साथ नमाज़ पढ़ी और बैतुल-मअ्मूर में सब अंबिया और उम्मते मरहूमा ने भी। कुछ लोग पहली सफ़ में थे, कुछ दूसरी, कुछ तीसरी और कुछ उन सफों में थे जो बैतुल-मअ्मूर के बाहर थीं, फ़र्क़ मरातिब में था, उनमें कुछ के कपड़े सफेद थे और कुछ के मैले, सफेद वाले सालेहीन हैं और मैले हम जैसे गुनहगार, पढ़ी सबने बैतुल-मअ्मूर में।
(अल मल्फ़ूज़ हिस्सा चहारुम स 46)

हदीस शबे मेअ्राज में तसरीह है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब मस्जिदे अक़्सा में तशरीफ़ फरमा हुए अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को मुलाहिज़ा फरमाया कोई क़याम में है, कोई रुकूअ् में, कोई सुजूद में। (अबू नईम) (फतावा रज़्वीया जिल्द दोम, स0 184)

हुज़ूर के चन्द मुतफर्रिक़ इज्माली फ़ज़ाइल व कमालात

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूब जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बेशुमार फ़ज़ाइल व कमालात अता फरमाए हर एक का तफ़्सीली ज़िक्र तो रब तआला ही फरमा सकता है वह किसी इंसान के बस की बात नहीं, इंसान तो बस एक आजिज़ है, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू ने बाज़ मक़ाम पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुतअद्दिद कमालात व इख़्तियारात तहरीर फरमाए हैं मगर यहाँ पर इजमाली तौर पर चन्द ख़ुसूसियात व इख़्तियारात यह हैं। (मुरत्तिब)

क़ुरआन व हदीस नातिक़ हैं कि :

★ अल्लाह व रसूल ने दौलतमन्द कर दिया।
★ अल्लाह व रसूल निगहबान हैं।
★ अल्लाह व रसूल बेवालियों के वाली हैं।
★ अल्लाह व रसूल मालों के मालिक हैं।
★ अल्लाह व रसूल ज़मीन के मालिक हैं।
★ अल्लाह व रसूल की तरफ तौबा लाओ।
★ अल्लाह व रसूल की दुहाई दो।
★ अल्लाह व रसूल देने वाले हैं।
★ अल्लाह व रसूल से देने की तवक़्क़ोअ् रखो।
★ अल्लाह व रसूल ने नेअ्मत दी।
★ अल्लाह व रसूल ने इज़्ज़त बख़्शी।
★ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के हाफ़िज़ व निगहबान हैं।
★ हुज़ूर की तरफ सबके हाथ फैले हैं।
★ हुज़ूर के आगे सब गिड़गिड़ा रहे हैं।
★ हुज़ूर सारी ज़मीन के मालिक हैं।
★ हुज़ूर सब आदमियों के मालिक हैं।
★ हुज़ूर तमाम उम्मतों के मालिक हैं।
★ सारी दुनिया की मख़्लूक़ हुज़ूर के क़ब्ज़ा में है।
★ मदद की कुंजियाँ हुज़ूर के हाथ हैं।
★ नफ़ा की कुंजियाँ हुज़ूर के हाथ में।
★ जन्नत की कुंजियाँ हुज़ूर के हाथ में।
★ दोज़ख़ की कुंजियाँ हुज़ूर के हाथ में।
★ आख़िरत में इज़्ज़त देना हुज़ूर के हाथ है।

★ क़्यामत में कुल इख़्तियार हुज़ूर के हाथ है।
★ हुज़ूर मुसीबतों के दूर फ़रमाने वाले।
★ हुज़ूर सख़्तियों के टालने वाले।

ताज़ीमे हुज़ूर ऐन ईमान व जाने ईमान

बिहम्दुलिल्लाह तआला मुसलमानों के ईमान में ताज़ीमे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ऐने ईमान, ईमान की जान है, और अलल–इतलाक़ मत्लूबे शरअ्, तो जो कुछ भी, जिस तरह भी, जिस वक़्त भी, जिस जगह भी ताज़ीमे अक़्दस के लिए बजा लाए ख़्वाह वह बेऐनेही मन्कूल हो या न हो, सब जाइज़ व मन्दूब व मुस्तहब व मरग़ूब व मतलूब व पसन्दीदा व ख़ूब है, जब तक उस ख़ास से नहीं न आई हो, जब तक इस ख़ास में कोई हरजे शरई न हो, वह सब इस इतलाक़ इरशादे इलाही "वतुअज़्ज़ेरूहु व तुवक़्क़ेरूहू" में दाख़िल और इम्साल हुक्मे इलाही का फ़ज़्ले जलील उसे शामिल है। इसलिए अइम्म–ए–दीन तसरीह फरमाते हैं कि जो कुछ जिस क़दर अदब व ताज़ीम हबीबे रब्बुल–आलमीन जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में ज़्यादा मुदाख़लत रखे उसी क़दर ज़्यादा ख़ूब है।

इमाम इब्ने हजर मक्की जौहरे मुनज़्ज़म में फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तकरीम में अनवा–ए–ताज़ीम की हर वह बात जाइज़ व दुरुस्त है जिस से अल्लाह तआला की उलूहीयत व वहदानियत में शिर्कत लाज़िम न आए, यह बात उसके नज़्दीक मुस्तहसन व बेहतर है जिसे अल्लाह तआला ने नूरे बसीरत अता फरमाया है।

हुज़ूर का ज़िक्र और नुज़ूले रहमत

ज़िक्रे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बाइसे नुज़ूले रहमत है। क्योंकि हुज़ूर का ज़िक्र, ऐन ज़िक्रे ख़ुदा है।

अइम्म–ए–किराम "वरफ़अ्ना लका ज़िकरक" की तफ़्सीर में फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है मैंने तुम्हें अपनी याद में से एक याद किया जो तुम्हारा ज़िक्र करे वह मेरा ज़िक्र करता है और ज़िक्रे इलाही बिला शुबह रहमत उतरने का बाइस है। (अशिफ़ा)

हर महबूब का ज़िक्र महल्ले नुज़ूले रहमत है, नेकियों के ज़िक्र के वक़्त रहमते इलाही उतरती है, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो सब सालेहीन के सरदार हैं, फिर हुज़ूर के ज़िक्र के वक़्त रहमते इलाही क्यों नहीं उतरेगी। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 552)

ख़्वाब में हुज़ूर की ज़्यारत हक़ है

हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ होना बिला शुबह हक़ है यह ख़्वाब कभी अज़्ग़ासे अहलाम (शैतानी वसाविस) से नहीं होती।

हुज़ूर पुर नूर सलावातुल्लाहे तआला व सलमुहु अलैह फरमाते हैं जिसने मुझे ख़्वाब में देखा उसने मुझी को देखा कि शैतान मेरी मिसाल बन कर नहीं आ सकता। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिसने मुझे देखा उसने हक़ देखा कि शैतान मेरी वज़ा न बनाएगा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़्वाब में हुज़ूर के फरमान पर अमल का हुक्म व ज़ाब्ता

आलमे ख़्वाब में होश व हवास आलमे बेदारी की तरह क़ाबू में नहीं होते लिहाज़ा ख़्वाब में जो इरशाद सुने, मिस्ल बेदारी मूरिसे यक़ीन नहीं होता उसका ज़ाब्ता यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जो इरशादात, बेदारी में साबित हो चुके उन पर अर्ज़ करें, अगर उन से मुख़ालिफ़ नहीं तो ठीक है ख़्वाह हुक्मे सरीह के मुताबिक़ हो या न हो, ऐसी हालत में इस इरशाद का

मानना चाहिए और मुख़ालिफ़ है तो यक़ीन करेंगे कि साहिबे ख़्वाब के सुनने में फ़र्क़ हुआ. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हक़ फरमाया और ख़्वाब के असर से हवास बिगड़ने के बाइस उसके सुनने में ग़लत आया।

जैसे एक शख़्स ने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसे मैकशी का हुक्म देते हैं, इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया हुज़ूर ने मैकशी से नही फरमाई तेरे सुनने में उलटी आई।

इस अम्र में फासिक़ व मुत्तक़ी बराबर हैं, न मुत्तक़ी का समाअ् वाजिबुस्सेहा, न फासिक़ का ब्यान यक़ीनीयुल–किज़्ब, बल्कि ज़ाब्ता मुतलक़न यही है जो मज़्कूर हुआ।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 187)

हुज़ूर के अस्मा–ए–गिरामी

हुज़ूर के इस्मे ज़ात दो हैं :

★ कुतुबे साबेक़ा में अहमद है।

★ और कुरआने करीम में मुहम्मद है, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। और हुज़ूर के अस्माए सिफ़ात बेगिनती हैं।

★ अल्लामा अहमद ख़तीब क़स्तलानी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने पाँच सौ जमा फरमाए।

★ सीरते शामी में तीन सौ और इज़ाफ़ा किए।

★ और मैं (इमाम अहमद रज़ा बरैलवी) ने छे: सौ और मिलाए, कुल चौदा सौ हुए।

और हुज़ूर के अस्मा हर तब्क़ा में मुख़्तलिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं। दरिया में और नाम हैं, पहाड़ों में और हर तब्क़ा और हर जिन्स में जुदा जुदा नाम होना इसलिए कि हर जगह हुज़ूर की एक ख़ास तजल्ली है जिस जगह सिफ़त का ज़ुहूर है, उसी के मुनासिब नाम भी है।

इंजील शरीफ़ की बहुत सी आयात हैं जो हुज़ूर के औसाफ़ ब्यान कर रही हैं अगरचे नसारा ने बहुत तहरीफ की है और अपनी चलती वह कुल आयतें जो हुज़ूर के औसाफ़ में थीं निकाल डालीं, मगर जिस अम्र को अल्लाह तआला पूरा करना चाहे उसको कौन नाक़िस कर सकता है, बहुत सी आयतें अब भी रह गई मगर उन्हें सूझती नहीं, इसी तरह तौरेत व ज़बूर में भी बहुत सी आयात मौजूद हैं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 39)

हुज़ूर के अख़्लाक़े करीमाना और एक काफ़िर का मुसलमान होना

एक मरतबा नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के काशान–ए–अक़्दस में एक काफिर मेहमान हुआ और इस ख़्याल से कि अह्ले बैते अत्हार भूखे रहें सब खाना खा गया, हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुजरा शरीफ़ में ठहराया, पिछली रात के वक़्त पेट में गिरानी मालूम हुई और थोड़ी थोड़ी देर बाद इजाबत की ज़रूरत हुई, शर्मिन्दगी की वजह से कि कहीं कोई देख न ले हुजरा शरीफ़ में ग़लाज़त फैलाई और तमाम बिस्तर वग़ैरह ख़राब कर दिया और सुबह होते ही वहाँ से चल दिया, जब हुज़ूर हुजरा शरीफ़ में मेहमान की ख़ैरियत मालूम करने की ग़रज़ से तशरीफ़ लाए तो यह कैफ़ियत मुलाहिज़ा फ़रमाई, आपने ख़ुद नजासत को साफ़ किया, सहाब–ए–किराम को उसकी इस नाशाइस्ता हरकत पर सख़्त ग़ुस्सा आया। इत्तिफ़ाक़न उज्लत में वह अपनी तलवार भूल गया और तलवार बहुत अच्छी थी जिसके लिए उसे मजबूरन फिर लौटना पड़ा, यहाँ आकर देखा कि हुज़ूर अपने दस्ते अक़्दस से बिस्तर धो रहे हैं, अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने सज़ा देने का इरादा किया, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया कि यह मेरा मेहमान है, और उस से फ़रमाया तुम अपनी तलवार भूल गए थे

जहाँ रखी थी वहाँ से उठा लो, वह हुज़ूर के इस ख़ुल्क़े अज़ीम को देख कर फ़ौरन मुशर्रफ़ बइस्लाम हो गया।

इसके क़रीब रिवायत मसनवी शरीफ़ में मज़कूर है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन्हीं से ख़ुल्क़ फरमाते जो रुजूअ् लाने वाले होते जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर है। और कुफ़्फ़ार व मुरतदीन के साथ हमेशा सख़्ती फरमाते, उनकी आँखों में नील की सलाइयाँ फिरवाई हाथ काटे, पाँव काटे, पानी माँगा तो पानी तक न दिया। यह सुलूक किसके साथ वह जो रुजूअ् लाने वाले न थे। (मसनवी) (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 110)

अल्लाह व रसूल की मुहब्बत पैदा होने का ज़रिया

तिलावते कुरआन मजीद और दरूद शरीफ़ की कसरत और नअत शरीफ़ के सही अश्आर ख़ुश इल्हानों से बकसरत सुने और अल्लाह व रसूल की नेअ्मतों और रहमतों में जो उस पर हैं ग़ौर करे तो इन चीज़ों से दिल में ख़ुदा व रसूल (अज़्ज़ा जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) की मुहब्बत पैदा होगी। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 115)

आयाते कुरआनिया से हुज़ूर के इल्मे ग़ैब का सुबूत

कुरआने अज़ीम फरमाता है :

★ ऐ आम लोगो! अल्लाह इसलिए नहीं कि तुम्हें ग़ैब पर मुत्तला फरमा दे हाँ अपने रसूलों से चुन लेता है जिसे चाहे।

★ अल्लाह तआला आलेमुल–ग़ुयूब है तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं फरमाता मगर अपने पसन्दीदा रसूलों को।

सिर्फ़ इज़्हार ही नहीं बल्कि रसूलों को इल्मे ग़ैब पर मुसल्लत फ़रमा दिया।

और कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

यानी मेरा महबूब ग़ैब पर बख़ील नहीं। (अल–तकवीर, 24)

जिसमें इस्तेअ्दाद पाते हैं उसे बताते भी हैं, और ज़ाहिर है कि बख़ील वह कि जिसके पास माल हो और सर्फ़ न करे, वह कि जिसके पास माल ही नहीं क्या बख़ील कहा जाएगा। और यहाँ बख़ील की नफ़ी की गई तो जब तक कोई चीज़ सर्फ़ की न हो क्या मफ़ाद हुआ, लिहाज़ा मालूम हुआ कि हुज़ूर ग़ैब पर मुत्तला हैं और अपने ग़ुलामों को उस पर इत्तिला बख़्शते हैं।

★ और फरमाता है :

हमने तुम पर यह किताब हर शय का रौशन ब्यान कर देने के लिए उतारी। (अल–वहल 89)

तिब्यानन इरशाद फरमाया, बयानन न फरमाया कि मालूम हो जाए कि इसमें ब्याने अशिया इस तरह पर है कि असलन ख़फ़ा नहीं।

हुज़ूर पर हर चीज़ रौशन हो गई

हदीस में है जिसे इमाम तिर्मिज़ी वग़ैरह ने दस सहाबा से रिवायत किया कि सहाबा किराम फरमाते हैं कि एक रोज़ हम सुबह को नमाज़े फ़ज्र के लिए मस्जिदे नब्वी में हाज़िर हुए और हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी में देर हुई, यानी क़रीब था कि आफताब तुलूअ् कर आए इतने में हुज़ूर तशरीफ़ फरमा हुए और नमाज़ पढ़ाई, फिर सहाबा से मुख़ातिब होकर फरमाया कि तुम जानते हो क्यों देर हुई? सबने अर्ज़ की अल्लाह व रसूल ख़ूब जानते हैं, इरशाद फरमाया मेरा रब सबसे अच्छी तजल्ली में मेरे पास तशरीफ़ लाया। यानी मैं एक दूसरी नमाज़ में मशग़ूल था इस नमाज़ में अब्द दरगाहे माबूद में हाज़िर होता है और वहाँ ख़ुद ही माबूद की अब्द पर तजल्ली हुई, उसने फरमाया ऐ मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यह फरिश्ते किस बात में मुख़ासमा और मुबाहात करते हैं, मैंने अर्ज़ की कि मैं बे तेरे बताए क्या जानूँ?

तो रब्बुल–इज़्ज़त ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे शानों के दरम्यान रखा और उसकी ठंडक मैंने अपने सीने में पाई और मेरे सामने हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने पहचान ली। (तिर्मिज़ी)

सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा न फरमाया कि किसी वहाबी साहब को यह कहने की गुंजाइश न रहे कि "कुल्लु शैइन" से मुराद हर शय मुतअल्लिक़ ब–शराए है, बल्कि एक रिवायत में फरमाया :

मैंने जान लिया जो कुछ आसमान और ज़मीन में है।

और दूसरी रिवायत में फ़रमाया : और मैंने जान लिया जो कुछ मश्रिक़ व मग़्रिब तक है।

यह तीनों रिवायतें सही हैं तो तीनों लफ़्ज़ इरशादे अक़्दस से साबित हैं, यानी मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और जो कुछ मश्रिक़ से मग़्रिब तक है हर चीज़ मुझ पर रौशन हो गई और मैंने पहचान लिया।

और रौशन होने के साथ पहचान लेना इसलिए फरमाया कि कभी शय मारूफ़ होती है, पेशे नज़र नहीं, और कभी शय पेश नज़र होती है और मारूफ़ नहीं, जैसे हज़ार आदमियों की मज्लिस को छत पर से देखो वह सब तुम्हारे पेशे नज़र होंगे, मगर उनमें बहुत को पहचानते न होगे, इसलिए इरशाद फरमाया कि तमाम अश्याए आलम हमारे पेशे नज़र भी हो गईं और हमने पहचान भी लिया कि उनमें न कोई हमारी निगाह से बाहर रही न इल्म से ख़ारिज।

मुसलमान देखें नुसूस में बिला ज़रूरत तावील व तख़्सीस बातिल व ना मस्मूअ् है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया हर चीज़ का रौशन ब्यान कर देने को यह किताब हमने तुम पर उतारी, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर चीज़ मुझ पर रौशन हो गई और मैंने पहचान ली।

तो बिलाशुबह यह रुयत व मारिफ़त जमीअ् मक्नूनाते क़लम व मक्तूबाते लौह को शामिल है जिसमें सब माकाना वमायकून रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िरत तक व जुमला ख़्वातिर व ज़माइर सब कुछ दाख़िल।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक अल्लाह ने मेरे सामने दुनिया उठा ली है तो मैं इसे और इसमें जो कुछ क़्यामत तक होने वाला है सबको ऐसा देख रहा हूँ जैसे अपनी इस हथेली को। (कंज़ुल–उम्माल)

और हुज़ूर के सदक़ा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर के ग़ुलामों को यह मरतबा इनायत फरमायाः

अ एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं वह मर्द नहीं जो तमाम दुनिया को मिस्ल हथेली के न देखे, उन्होंने सच फरमाया अपने मरतबा का इज़्हार किया।

★ उनके बाद हज़रत बहाउल–मिल्लते वालिदैन नक़्श बन्द कुद्देसा सिर्रहू ने फरमाया मैं कहता हूँ मर्द वह नहीं जो तमाम आलम को अंगूठे के नाख़ुन की मिस्ल न देखे।

★ और वह जो नसब में हुज़ूर के साहबज़ादे और निस्बत में हुज़ूर के एक आला जाह कफ़श बरदार हैं यानी हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़सीद–ए–ग़ौसिया शरीफ़ में इरशाद फरमाते हैं :

यानी मैंने अल्लाह के तमाम शहरों को मिस्ल राई के दाने के मुलाहिज़ा किया और यह देखना किसी ख़ास वक़्त से ख़ास न था बल्कि अलल–इत्तिसाल यही हुक्म है।

★ और फरमाते हैं कि मेरी आँख की पुतली लौहे महफ़ूज़ में लगी है।

★ लौहे महफ़ूज़ क्या है, इसके बारे में अल्लाह तआला फरमाता है :

हर बड़ी छोटी चीज़ लिखी हुई है। (अल–क़मर, 53)

★ और फरमाता है, हमने किताब में कोई शय उठा न रखी। (अल–अन्आम, 38)

★ और फरमाता है, कोई तर व ख़ुश्क ऐसा नहीं जो किताबे मुबीन में न हो। (अल– अन्आम,59)

तो जब लौहे महफ़ूज़ की यह हालत कि उसमें तमाम काइनात रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक महफ़ूज़ हैं तो जिसको उसका इल्म हो बेशक उसे सारी काइनात का इल्म होगा।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 25 ता 29)

मरतब–ए–वजूद व मरतब–ए–ईजाद

ख़ुलास–ए–ऐतक़ाद शाने रिसालत में यह है कि मरतब–ए–वजूद में सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल है बाक़ी सब ज़िलाल, और मरतब–ए–ईजाद में सिर्फ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं बाक़ी सब अक्स व परतौ।

तौहीदें दो हैं

★ एक तौहीदे इलाही कि अल्लाह एक है ज़ात व सिफ़ात व असमा व अफ़आल व अहकाम व सलतनत किसी बात में उसका कोई शरीक नहीं।

★ और दूसरी तौहीद रसूल कि हुज़ूर अपने जमीअ् सिफ़ाते कमालिया में तमाम आलम से मुंफरिद हैं।

हुज़ूर अपने महासिन व ख़ूबी में शरीक से पाक हैं, हुज़ूर में जो जौहरे हुस्न है वह ग़ैर मुंक़सिम है।

ख़ुलास–ए–ईमान यह है जो मुहक़्क़िक़ देहलवी फरमाते हैं :

शरीअत की हिफ़ाज़त और दीन के लिहाज़ व पास के वास्ते से हुज़ूर को ख़ुदा मत कहो, दूसरा जो वस्फ़ चाहो हुज़ूर की मदह व सताइश में लिखो। (त)

और इन से पहले हज़रत इमाम मुहम्मद बुसेरी कुद्देसा सिर्रहू अश्शरीफ़ फरमा गए, (तरजमा यह है)

इतनी बात तू छोड़ दे जो नसारा ने अपने नबी के बारे में इद्देआ किया (यानी ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा) इसे छोड़ बाक़ी हुज़ूर की मदह में जो कुछ तेरे जी में आए कह और मज़्बूती से हुक्म लगा, तो उनकी ज़ाते पाक की तरफ जितना शरफ़ चाहे मंसूब कर और उनके मरतब–ए–करीमा की तरफ जितनी अज़मत चाहे साबित कर, इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ज़्ल की कोई इंतिहा ही नहीं, कि ब्यान करने वाला कैसा ही गोया हो उसे ब्यान कर सके।

(क़सीदा बुरदा)

बफ़र्ज़े मुहाल अगर आलमे नासूत में कोई सूरते उलूहीयत फर्ज़ की जाती तो वह न होती मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

आंचा ख़ूबां हमा दारन्द तू तन्हादारी

उलमा–ए–अह्ले सुन्नत का इत्तिफ़ाक़ है कि जो फ़ज़ाइल और अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को इनायत फरमाए गए वह सब ब–अकमले वजूह और उन से बदरजहा ज़ाइद हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मरहमत हुए, और अह्ले बातिन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जो कुछ फ़ज़ाइल और अंबिया (सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अला सैय्यदेहिम व अलैहिम) को मिले वह सब हुज़ूर के दिए से और हुज़ूर के तुफ़ैल में।

(अल–मल्फ़ूज़े अव्वल, स0 25)

मुंकेरीने इल्मे ग़ैब का हुक्म

मुतलक़न इल्मे ग़ैब का मुंकिर काफिर है कि वह सरे ही से नबुव्वत का मुंकिर है, नबुव्वत कहते ही इल्मे ग़ैब देने को।

इमाम क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाह तआला अलैह शिफ़ा शरीफ़ में फरमाते हैं: नबुव्वत

ग़ैब पर मुत्तला होने का नाम है। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 8)

हुक्मे शरअ् का निफ़ाज़

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को इख़्तियार था ख़्वाह हक़ीक़त पर हुक्म फरमाएं या ज़ाहिर पर, लेकिन अक्सर अहकाम ज़ाहिर ही पर फ़रमाते और बाज़ दफा बातिन पर भी हुक्म फरमाया।

एक शख़्स हाज़िर लाया गया जिसने चोरी की थी फरमाया इसको क़त्ल कर दो। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह उसने तो चोरी की है, फरमाया अच्छा हाथ काटा जाए, दाहिना हाथ काट लिया गया। उसने फिर चोरी की, बायाँ पैर काट लिया, उसने फिर चोरी की, बायाँ हाथ काट लिया, चौथी बार फिर चोरी की और दाहिना पैर काट लिया गया, पाँचवीं मरतबा उसने मुँह में कोई शय छुपा कर रखी, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया और फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सच फरमाया कि इसे क़त्ल कर दो, यह उसी का नतीजा था।

(ख़साइसे कुबरा, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 49)

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और बैतुल–मक़्दिस की तामीर

सैय्यदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिन्नों से बैतुल–मक़्दिस बनवा रहे थे और आपका क़ाइदा यह था कि खुद खड़े हो कर काम लेते थे, अगर आप वहाँ तशरीफ़ फरमा न होते तो वह मेअ्मार शरारत करते थे अभी एक साल का काम बाक़ी था कि आपके इंतिक़ाल का वक़्त आ गया, आपने ग़ुस्ल फरमाया, नए कपड़े पहने, ख़ुशबू लगाई और इसी तरह तशरीफ़ लाए और असा पर तकिया फरमा कर खड़े हो गए, इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली, आप इसी तरह असा पर टेक लगाए रहे, पहले तो जिन्नों को रात को फ़ुर्सत मिल भी जाती थी, अब दिन रात बराबर काम करना पड़ता था, हज़रत हर वक़्त खड़े ही रहते थे और इजाज़त माँगने की किसी में हिम्मत न थी, नाचार साल भर तक यकलख़्त रात दिन बराबर काम किया।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अज्साम बेऐनिहा वैसे ही रहते हैं, उनमें कोई तग़ैय्युर नहीं आता उनकी हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियावी है उन पर तस्दीक़ वाद–ए–इलाहिया के लिए महज़ एक आन को मौत तारी होती है फिर फौरन उनको वैसे ही हयात अता फरमा दी जाती है इस हयात पर वही अहकामे दुनियवीया हैं, उनका तरका बांटा न जाएगा। उनकी अज़्वाज को निकाह हराम, नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात पर इद्दत नहीं, वह अपनी क़ुबूर में खाते पीते नमाज़ें पढ़ते हैं।

अंबिया किराम के अज्साम को मिट्टी नहीं खाती, उनमें कोई तग़ैय्युर नहीं आता, सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जिस्मे मुबारक भी इसी तरह रहा। जब काम पूरा हो चुका दीमक को हुक्म हुआ उसने आपके असा को खाना शुरू किया जब असा कमज़ोर हुआ आप नीचे तशरीफ़ ले आए, जिन्न पहले ग़ैब के इल्म का इद्दआ रखते थे। खुल गया जिन्नों का हाल कि अगर ग़ैब जानते क्यों रहते एक साल सख़्त अज़ाब में। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 76, 77)

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अपने आपको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मम्लूक जाने तमाम आलम ही उनके रब अज़्ज़ा व जल्ल की अता से उनकी मिल्क है।

★ तौरेत मुक़द्दस में है कि रब अज़्ज़ा व जल्ल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की निस्बत फरमाता है, अहमद मालिक हैं तमाम ज़मीन और मालिक हैं सब उम्मतों की गर्दनों के।

(तोहफ़ा असना अशरीया)

★ अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने सहाबा किराम को जमा फरमा कर उस मज्मा के सामने ख़ुतबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़िक्र शरीफ़ करके फरमाया, मैं हुज़ूर का अब्द था, बन्दा था, ख़ादिम था और हुज़ूर के सामने तेगे बरहना की तरह था। (इज़ालतुल ख़फ़ा)

★ हज़रत आशी माज़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की "ऐ तमाम आदमियों के मालिक और अरब के जज़ा व सज़ा देने वाले। (शरह मआनीयुल–आसार)

★ हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं जो अपने आपको नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मम्लूक न जाने उसने उनकी निस्बत का मज़ा न चखा। (अश्शिफ़ा, मवाहिबुल्लदुनिया) (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 416)

जुमला अंबिया पर ईमान लाज़िम

अल्लाह तबारक व तआला ने जितने अंबिया किराम भेजे उन सब पर ईमान रखना लाज़िम है अगर बाज़ पर ईमान रखे और बाज़ के साथ कुफ़्र करे तो उसका ईमान मोतबर नहीं वह काफ़िर है, जैसा कि यहूद व नसारा ने किया। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दुनिया व आख़िरत में सबसे ज़्यादा ईसा इब्ने मरयम का वली मैं हूँ, मुझ में और उनमें कोई नबी नहीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है कि मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हूँ और सब में पिछले मेरी बशारत देने वाले ईसा थे, अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम।

इसलिए अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम में एहतियात यह है कि हम तमाम अंबिया पर ईमान लाते उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते कि बाज़ पर ईमान लायें और मआज़ल्लाह बाज़ पर नहीं जैसा कि यहूद व नसारा ने किया, ख़ज़ लहुमुल्लाहु तआला। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 37)

हुज़ूर नबीयुल–अंबिया हैं

जिस नबी को भी अल्लाह तआला ने नुबुव्वत अता फरमाई वह नुबुव्वत उन से कभी जुदा न हुई, न उसे सल्ब किया गया, न किसी नबी व रसूल को मअ़ज़ूल किया गया, न कभी मअ़ज़ूल किया जाएगा। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

न कोई रसूल रिसालत से माज़ूल किया जाता है, न सैय्यदना मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम रिसालत से माज़ूल होंगे, न हुज़ूर का उम्मती होना रिसालत के ख़िलाफ़, वह क़ब्ल नुज़ूल अपने अहद में भी हमारे हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के उम्मती थे और उठाए जाने के बाद भी उम्मती होकर उतरेंगे, तमाम अंबिया व मुरसलीन अपने अहद में भी हुज़ूर के उम्मती थे और अब भी उम्मती हैं, जब भी रसूल थे और अब भी रसूल हैं कि हमारे हुज़ूर नबीयुल–अंबिया हैं, हाँ उस वक़्त वह अपनी शरीअत पर हुक्म फरमाते थे अब कि शरीअते मुहम्मदीया अला साहिबहा अफ़ज़लुस्सलाते वत्तहीया ने अगली शरीअतें मन्सूख़ फरमा दीं। एक हज़रत मसीह नहीं जो कोई रसूल भी अब ज़ाहिर हो शरीअते मुहम्मदीया पर ही हुक्म करेगा कि मन्सूख़ पर हुक्म बातिल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अगर मूसा मेरा ज़माना पाते तो मेरे इत्तिबा के सिवा उन्हें कुछ गुंजाइश न होती। (मिश्कात, सुनन दारमी)

(फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 46)

हुज़ूर दाफ़े–उल–बला हैं

हर वह बात जिस से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इख़्तियार साबित हो या नब्वी कमालात पर दलालत करे वहाबिया इसका इंकार करते हैं और हुज़ूर की तंक़ीस व तौहीन के दरपे हो जाते हैं हालांकि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को उलूहीयत के सिवा हर वस्फ़े कमाल अता फरमाया है, अह्ले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है कि हुज़ूर दाफ़े–उल–बला हैं अपनी उम्मत से बलाओं को टालते हैं बल्कि हुज़ूर के गुलामों में भी हुज़ूर के वसीले से यह वस्फ़ है कि वह मुमिनीन से बलाओं को दूर करते हैं। वहाबिया के हसद व जलन का आलम यह है कि वह कहते हैं कि दरूदे ताज पढ़ना जाइज़ नहीं क्योंकि इसमें हुज़ूर के लिए दाफ़े–उल–बला वल–वबा के जुमले वारिद हुए हैं। (मुरत्तिब)

इस मज़्मून के मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेशक दाफ़े–उल–बला हैं। उनकी शाने अज़ीम तो अरफ़ा व आला है उनके ग़ुलाम दफ़अ् बला फरमाते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मेरा नाम उहीद इसलिए हुआ कि मैं अपनी उम्मत से आतिशे दोज़ख़ को दफ़अ् फरमाता हूँ। (इब्ने अदी, इब्ने असाकिर)

दोज़ख़ से बदतर और क्या बला होगी जिसके दाफ़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं।

★ शर्फ़ुल–मुस्तफ़ा में है, ख़िफ़ाफ़ बिन नज़्ला रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरे बारगाह हो कर अर्ज़ की मैं कोशिश करता हुआ मदीना में हाज़िर हुआ कि ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हूँ तो हुज़ूर मेरी सब मुश्किलें खोल दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनकी अर्ज़ पसन्द की और तारीफ़ फरमाई।

★ मन्हुल–मदह में है, हरब बिन रीता सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की, ख़ुदा की क़सम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हक़ और क़तई दलील हिदायत के साथ ऐसा भेजा कि हुज़ूर दफ़अ् बला फरमाते हैं।

★ असवद बिन मस्ऊद सक़फ़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हुज़ूर वह रसूल हैं जिनके फ़ज़्ल की उम्मीद की जाती है क़हत के वक़्त जब मेंह ख़ता करे। (उमर बिन शब्बा)

★ अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के जनाज़े पर फरमाया, ऐ हम्ज़ा, ऐ दाफ़ेअ्–उल–बला, ऐ हम्ज़ा, ऐ चेहर–ए–रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दुश्मनों के दफ़अ् करने वाले। (इब्ने शाज़ान)

★ कुतुबे साबेक़ा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़िक्र शरीफ़ में है, उनके दो नाइब होंगे एक सिन रसीदा यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे जवान यानी फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु। वह जो जवान हैं वह सख़्तियों में घुस पड़ने वाले और बड़े दाफ़े–उल–बला, बड़े मुश्किल–कुशा होंगे।

★ हुज़ूर फरमाते हैं मैं जिनका मददगार हूं अली मुर्तज़ा उनके मददगार हैं कि हर मक्रूह को उस से दफ़ा करते हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 81)

शाने रिसालत में गुस्ताख़ी के अहकाम

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू मुतअद्दद कुतुब के हवाले से शाने रिसालत में गुस्ताख़ी करने वालों से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं :

★ उलमा का इज्मा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में

गुस्ताख़ी करने वाला काफ़िर है और उस पर अज़ाबे इलाही की वईद जारी है और जो उसके काफ़िर व मुस्तहिक़े अज़ाब होने में शक करे वह भी काफ़िर है। (शिफ़ा शरीफ़)

★ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे दुनिया में बादे तौबा भी उसे सज़ा दी जाएगी। यहाँ तक कि अगर नशा की बेहोशी में कलिमा गुस्ताखी बका जब भी माफी न देंगे और तमाम उलमा–ए–उम्मत का इज्मा है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी करने वाला काफिर है और काफिर भी ऐसा कि जो उसके कुफ़्र में शक करे वह भी काफिर है।

★ जिसके दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कीना हो वह मुरतद है तो गुस्ताख़ी करने वाला बदरजा औला काफिर है और अगर नशा बिला इकराह और ज़बरदस्ती पिया और इस हालत में कलिमा गुस्ताख़ी बका जब भी माफ़ न किया जाएगा।

★ किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे यही हुक्म है कि उसे माफी न देंगे और बाद सुबूत उसका इंकार फाइदा न देगा कि मुरतद का इरतेदाद से मुकरना तो दफ़अ् सज़ा के लिए वहाँ तौबा क़रार पाता है जहाँ तौबा सुनी जाए और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़्वाह किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी और कुफ़्रों की तरह नहीं इससे यहाँ असलन माफी न देंगे।

★ अगर कोई शख़्स मुसलमान कहला कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे उसे हरगिज़ माफ़ी न देंगे और तमाम उलमा–ए–उम्मत मरहूमा का इज्मा है इस पर कि वह काफिर है और जो उसके कुफ़्र में शक करे वह भी काफिर है।

★ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी और कुफ़्रों की तरह नहीं, हर तरह के मुरतद को बादे तौबा माफी देने का हुक्म है मगर उस काफिर मुरतद के लिए इसकी इजाज़त नहीं।

★ नशा की बेहोशी में अगर किसी से कुफ़्र की कोई बात निकल जाए उसे बवज्हे बेहोशी काफिर न कहेंगे, न सज़ाए कुफ़्र देंगे मगर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी वह कुफ़्र है कि नशा की बेहोशी से भी सादिर हुआ तो उसे माफी न देंगे।

इर्तिदाद का हुक्म यह है कि उसकी औरत फौरन उसके निकाह से निकल जाती है अगर यह बाद को फिर इस्लाम लाए जब भी औरत निकाह में वापस न जाएगी और जब वह उसी इर्तिदाद पर मर जाए तो उसे मुसलमानों के मक़ाबिर में दफन करने की इजाज़त नहीं, न किसी मिल्लत वाले मसलन यहूदी या नसरानी के गोरिस्तान में दफन किया जाए वह तो कुत्ते की तरह किसी गड्ढे में फेंक दिया जाए, मुर्तद का कुफ़्र असली काफिर के कुफ़्र से बदतर है।

★ जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने करीम में गुस्ताख़ी करे वह मुरतद है उसका हुक्म वही है जो मुर्तदों का है, उस से वही बर्ताव किया जाएगा जो मुर्तदों से करने का हुक्म है और उसे दुनिया में किसी तरह माफ़ी न देंगे। (फ़तावा ख़ैरिया)

★ तमाम उम्मते मरहूमा का इज्मा है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़्वाह किसी नबी की तन्क़ीसे शान करने वाला काफिर है ख़्वाह उसे हलाल जान कर उसका मुर्तकिब हुआ हो या हराम जान कर, बहरहाल जमीअ् उलमा के नज़्दीक काफिर है और जो उसके कुफ़्र में शक करे वह भी काफिर। (ज़ख़ीरतुल–उक़्बा)

वह गुस्ताख़ी करने वाला जब मर जाए तो न उन्हें ग़ुस्ल दें, न कफन दें, न उस पर नमाज़ पढ़ें, हाँ अगर तौबा करे और अपने इस कुफ़्र से बरअत करे और दीने इस्लाम में दाख़िल हो उसके बाद मर जाए तो ग़ुस्ल, कफन, नमाज़, मक़ाबिर मुस्लेमीन में दफन सब कुछ होगा। (ज़ख़ीरतुल–उक़्बा)

★ हर मुर्तद की तौबा क़बूल है मगर किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करने वाला ऐसा काफिर है

तो दुनिया में सज़ा से बचाने के लिए उसकी तौबा भी क़बूल नहीं। (तनवीरुल–अबसार)

★ जो शख़्स कलिमा गो हो कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बुरा कहे या तक्ज़ीब करे, या कोई ऐब लगाए, या शान घटाए वह बिला शुबह काफ़िर हो गया और उसकी औरत निकाह से निकल गई। (किताबुल–ख़िराज इमाम अबू यूसुफ़)

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 39, 40, 41)

शाने रिसालत में गुस्ताख़ी के हुक्म से मुतअल्लिक़ एक और सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू तहरीर फ़रमाते हैं :

जो शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन करे यक़ीनन काफ़िर है उसकी औरत उसके निकाह से निकल गई, और जो उसकी तौहीन पर मुत्तला होकर उसे मुसलमान जाने वह भी काफ़िर है ऐसे जितने लोग हों ख़्वाह तौहीन करने वालों के अज़ीज़ क़रीब हों, या ग़ैर उन सबकी औरतें उनके निकाह से निकल गईं औरतों को अख़्तियार है कि इद्दत के बाद जिस मुसलमान से चाहें निकाह कर लें। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 45)

हुज़ूर को ऐल्ची कहना कुफ़्र को मुस्तल्ज़िम

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क़ासिद या ऐल्ची कहने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू तहरीर फ़रमाते हैं :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के रसूले आज़म व नाइबे अकबर व ख़लीफ़–ए–आज़म हैं, ऐल्ची वह होता है जिसको प्याम या ख़त पहुँचाने के सिवा कोई सरदारी और हुकूमत नहीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अकरम में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल करना बेशक तन्क़ीस व तौहीन है और उसका वही हुक्म है जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन करने वाले का। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 155)

ईमान और ईमान की बातें

अल्लाह तबारक व तआला ने आलमे अरवाह ही में रूहों से अपनी रुबूबियत पर ईमान का इक़रार व अह्द व पैमान ले लिया था जो पाकीज़ा रूहें उसी इक़रार पर गामज़न रहीं वह मोमिना हुईं और जिनको दुनिया में आने के बाद ईमान की तौफ़ीक़ न मिली वह काफ़िरा हुईं फिर ईमान व कुफ़्र का मारका गर्म हुआ और हमेशा यह दोनों कुव्वतें बरसरे पैकार रहीं, रब अज़्ज़ा व जल्ल ने ईमान वालों के लिए जन्नत और उसकी नेअ्मतों का वादा फरमाया है और काफिरों के लिए जहन्नम और उसकी भयानक सज़ाओं की वईदें वारिद हुईं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ुदा की तरफ से जो लेकर आए उन सबकी तस्दीक़ करने का नाम ईमान है, ईमान एक बड़ी दौलत है जिसे यह मिल जाए वह बड़ा ख़ुश नसीब है और उसकी हलावत व लज़्ज़त से जो आशना हो जाए वह दुनिया से बेनियाज़ व लातअल्लुक़ हो जाता है। (मुरत्तिब)

रसूलों, किताबों और मलाइका पर ईमान

जितने मलाइका हैं सब पर ईमान लाना ज़रूरी है, कोई तादाद मुक़र्रर न फरमाई, तमाम फरिश्तों पर ईमान लाना ज़रूरी है। तमाम किताबों पर ईमान ज़रूरी है, किताबों में चार के नाम मालूम हैं और उनके सेवा और मुसहिफ़ नाज़िल हुए यही कहना चाहिए कि हम तमाम किताबों पर ईमान लाए, तमाम रसूलों पर ईमान लाना ज़रूरी है, इसी तरह जितने मलाइका हैं सब पर ईमान लाज़मी है। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 9)

ईमान ख़ौफ़ व रजा का नाम है

नजात मुंहसिर है इस बात पर कि एक एक अक़ीदा अह्ले सुन्नत व जमाअत का ऐसा पुख़्ता हो कि आसमान व ज़मीन टल जायें और वह न टले फिर उसके साथ हर वक़्त ख़ौफ़ लगा हो।

उलमा–ए–किराम फरमाते हैं जिसको सलबे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उसका ईमान सल्ब हो जाएगा।

सैय्यदना उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं अगर आसमान से निदा की जाए कि तमाम रूए ज़मीन के आदमी बख़्श दिए गए मगर एक शख़्स तो मैं ख़ौफ़ करूंगा कि वह शख़्स मैं ही हूँ। और अगर निदा की जाए रूए ज़मीन के तमाम आदमी दोज़ख़ी है सिवाए एक शख़्स के, तो मैं उम्मीद करूँगा कि वह शख़्स मैं ही न हूँ।

ख़ौफ़ व रजा का मरतबा ऐसा मोअ्तदिल होना चाहिए, यह तो उमर का हिस्सा था। (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) लेकिन कम से कम हर मुसलमान को इतना तो होना ही चाहिए कि सेहत व तन्दुरुस्ती के वक़्त ख़ौफ़ ग़ालिब हो और मरते वक़्त रजा।

हदीस में है हर झटका मौत का हज़ार ज़र्ब तल्वार से सख़्त तर है, मलाइका दबोचे बैठे रहते हैं वरना आदमी तड़प कर न मालूम कहाँ जाए, उस वक़्त अगर मआज़ल्लाह कुछ इस तरफ से नागवारी आई तो सल्बे ईमान हो गया इसलिए उस वक़्त बताया जाए कि किस के पास जा रहा है।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 54)

हुज्जते इस्लाम ग़ालिब है मग़्लूब नहीं

इस्लाम कभी मग़्लूब न होगा। मुसलमान मग़्लूब हो जायें, मुसलमानों के मग़्लूब होने से इस्लाम की मग़्लूबियत नहीं, इस्लाम जब मग़्लूब होता कि कुफ़्फ़ार की हुज्जत मुसलमानों की हुज्जत पर ग़ालिब आ जाती, उनकी हुज्जत मग़्लूब है। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 28)

ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत मदारे ईमान

अह्ले सुन्नत व जमाअत का मदार ईमान हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत है, जब तक अपने माँ बाप औलाद तमाम जहान से ज़्यादा हुज़ूर की मुहब्बत न रखे मुसलमान नहीं।

ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम में कोई मुसलमान नहीं होता जब तक मैं उसे उसके माँ बाप और औलाद और सब लोगों से ज़्यादा प्यारा न हूं।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

और महबूब को मुहिब्ब की हर शय अज़ीज़ होती है यहाँ तक कि उसकी गली का कुत्ता भी।

हज़रत मौलाना रूमी कुद्देसा सिर्रहू ने मसनवी शरीफ़ में हज़रत मज्नू रहमतुल्लाह तआला अलैह की हिकायत तहरीर फरमाई कि किसी ने उनको देखा कमाले मुहब्बत के तौर पर एक कुत्ते के बोसे ले रहे हैं, ऐतराज़ किया कि कुत्ता नजिस है, चुनीं है, चुनां है, फरमाया तू नहीं जानता यह कुत्ता लैला की गली का है। (मसनवी)

मुहिब्बाने सादिक़ का जब दुनिया के महबूबों के साथ यह हाल है जिनमें एक हुस्न फानी का कमाल सही हज़ारों ऐब व नुक़्स भी होते हैं तो क्या कहना हमारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का जिन्हें तमाम औसाफ़े हमीदा में आला कमाल और जिन का हर कमाल अबदी और ला ज़वाल और जो हर ऐब व नुक़्स से मुनज़्ज़ह बेमिसाल, उनका हर इलाक़ा वाला सुन्नी के सर का ताज है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 402)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू ने फतावा रज़्वीया जिल्द शशुम स0 210 पर फरमाया है कि हज़रत मज्नूं औलिया अल्लाह से थे इश्क़े लैला को पर्दा कर रखा था। (मुरत्तिब)

हुर्मते मोमिन ज़्यादा है या हुर्मते काबा

बैतुल्लाह शरीफ़ का मरतबा ज़्यादा है या औलिया–ए–किराम का इसकी वज़ाहत करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

बिला शुबह हर वली काबा मुअज़्ज़मा से अफ़्ज़ल है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं मैंने हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि काबा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ करते और फरमाते:

ऐ काबा तू कितना पाकीज़ा है और तेरी ख़ुशबू कितनी पाकीज़ा है तू कैसा अज़ीम है और तेरी हुर्मत कितनी बड़ी है, क़सम उसकी जिसके क़ब्ज़–ए–क़ुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) की जान है बेशक अल्लाह तआला के नज़्दीक मुसलमान की हुर्मत तेरी हुर्मत से बहुत ज़्यादा है। (इब्ने माजा)

रद्दुल–मुहतार में है एक मुसलमान की हुर्मत क़िब्ला की हुर्मत से ज़्यादा है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 11, स0 30)

दुनिया के लिए साहिबे ईमान का वजूद

मोमिन मुस्तहिक़े सवाब व रहमत है और काफिर मुस्तहिक़े अज़ाब व लानत; कुफ़्र से ज़्यादा अल्लाह तआला के नज़्दीक कोई चीज़ नापसन्दीदा नहीं इसी लिए अगर दुनिया मुसलमान के वजूद से ख़ाली हो जाती तो ज़मीन वाले हलाक व बरबाद हो जाते अह्ले ईमान की बरकत से यह दुनिया हलाक न हुई।

हदीस में है रू–ए–ज़मीन पर हर ज़माने में कम से कम सात मुसलमान ज़रूर रहे हैं ऐसा न होता

तो ज़मीन व अह्ले ज़मीन सब हलाक हो जाते। (बुख़ारी)

दूसरी हदीस में है नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद ज़मीन कभी सात बन्दगाने ख़ुदा से ख़ाली न हुई जिनके सबब अल्लाह तआला अह्ले ज़मीन से अज़ाब दफ़अ् फरमाता है।

(मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़) (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 155)

ईमाने कामिल

ईमाने कामिल यह है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सच्चा जाने, हुज़ूर की हक्क़ानियत को सिद्क़ दिल से मानना ईमान है जो उसका मक़र हो उसे मुसलमान जानेंगे जबकि उसके किसी क़ौल या फ़ेअ्ल या हाल में अल्लाह व रसूल का इंकार या तक्ज़ीब या तौहीन न पाई जाए, और जिसके दिल में अल्लाह व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इलाक़ा तमाम इलाक़ों पर ग़ालिब हो, अल्लाह व रसूल के महबूबों से मुहब्बत रखे, अगरचे अपने दुश्मन हों और अल्लाह व रसूल के मुख़ालिफ़ों, बद गोयों से अदावत रखे अगरचे अपने जिगर के टुकड़े हों, जो कुछ दे अल्लाह के लिए दे। जो कुछ रोके अल्लाह के लिए रोके तो उसका ईमान कामिल है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 80)

दीने रहमत आसान है

ऐ अज़ीज़! यह दीने मुहम्मद अल्लाह तआला की तरफ से आसानी व समाहत के साथ आया, जो इसे इसके तौर पर लेगा, उसके लिए हमेशा रफ़क़ व नर्मी है और जो तअम्मुक़ व तशद्दुद को राह देगा यह दीन उसके लिए सख़्त होता जाएगा यहाँ तक कि वही थक रहेगा और अपनी सख़्त गीरी की आप निदामत उठायेगा।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं, बेशक दीन सहल है और दीन पर कोई ग़लबा न कर सकेगा तो तुम रास्ती व म्याना रवी इख़्तियार करो और ख़ुशख़बरी दो।

(त) (बुख़ारी, निसाई)

दूसरी हदीस में है कि दीन सहल है और दीन पर हरगिज़ कोई ग़लबा न पाएगा।

(त) (शाअ्बुल–ईमान)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दीन में ग़ुलू करने से इज्तिनाब करो क्योंकि तुम्हारे अगले, दीन में ग़ुलू के सबब से हलाक हो गए। (त) (निसाई, इब्ने माजा)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हरगिज़ तुम इस अम्र को ग़लबा से नहीं पा सकोगे। (त) (शाअ्बुल–ईमान)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला के नज़्दीक महबूब तर वह दीन है जो हर बातिल से जुदा और नर्म व सहल है, यानी दीने इस्लाम।

(त) (मुसनद अहमद, तबरानी)

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि तुम्हारी दीनी चीज़ों में बेहतर वह है जो सहल तर हो। (त) (तबरानी, इब्ने अदी)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि दीन की गहराई में जाने से बचो। (यानी ग़ुलू न करो) क्योंकि अल्लाह तआला ने इसे दीने सहल बनाया है। (त) (अमाली अबुल–क़ासिम बिन बुशरान) (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 102)

दीन में तशद्दुद व नफ़रत अंगेज़ी नहीं

नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आसानी करो और दिक़्क़त में न

डालो और ख़ुशख़बरी दो और नफ़रत न दिलाओ। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब किसी सहाबी को किसी मुआमले के लिए भेजते तो उन से यही फरमाते कि आसानी लाओ, दिक़्क़त में न डालो, ख़ुशख़बरी दो और नफ़रत न दिलाओ। (त) (मुस्लिम, अबू दाऊद)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तुम आसानी करने वाले भेजे गए हो न दुशवारी में डालने वाले।

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हलाक हुए ग़ुलू व तशद्दुद वाले।

(मुस्लिम, अबू दाऊद)

और वारिद हुआ फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैं नर्म शरीअत हर बातिल से किनारा करने वाली लेकर भेजा गया हूँ जो मेरे तरीक़े के ख़िलाफ़ करे मेरे गरोह से नहीं।

(तारीख़े ख़तीब) (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 124, 125)

अपने मज़्हब पर यक़ीन ज़रूरी है

एक हदीस पाक में इरशाद हुआ कि बूढ़ियों का दीन इख़्तियार करो, यानी बूढ़ियाँ अपने दीन व मज़्हब पर सख़्ती से क़ाइम होती है उसके ख़िलाफ़ कोई बात सुनना पसन्द नहीं करतीं, इसी तरह हर मुसलमान को अपने मज़्हब पर यक़ीन व ऐतमाद ज़रूरी है, सलीमुत्तबा सहीहुल–अक़ीदा अवाम भी अपने अक़ीदे में पक्के होते हैं। (मुरत्तिब)

इमाम राज़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह के यहाँ उनका एक शागिर्द आया वहाँ एक जाहिल अनपढ़ बैठा था, उस से कहा तुम्हारा क्या मज़्हब है, कहा सुन्नी, पूछा अपने दिल में इस मज़्हब की तरफ से कुछ ख़दशा पाते हो हाशा लिल्लाह (हरगिज़ नहीं) जैसा मुझे दोपहर के आफ़ताब पर यक़ीन है ऐसा ही मुझे अपने मज़्हब पर है, इमाम का शागिर्द यह सुन कर इतना रोया कि कपड़े भीग गए और कहा कि मैं इस वक़्त तक नहीं जानता कि कौन सा मज़्हब हक़ है।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 4)

नजात मुंहसिर है इस बात पर कि एक एक अक़ीदा अह्ले सुन्नत व जमाअत का ऐसा पुख़्ता हो कि आसमान व ज़मीन टल जाएं और वह न टले फिर उसके साथ हर वक़्त ख़ौफ़ लगा हो।

(अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा चहारुम, स0 54)

तज्दीदे ईमान की ताकीद बेवजह हो या बा वजह

बाज़ लोगों को देखा गया है कि अगर कोई बात उन से ख़िलाफ़े इस्लाम निकल गई जिससे तौबा व तज्दीदे ईमान लाज़िम होती है इसके बावजूद वह तौबा व तज्दीदे ईमान नहीं करते बल्कि वह शर्म व आर महसूस करते हैं और आर पर नार को तरजीह देते हैं हालांकि बेवजह भी तज्दीदे ईमान अमरे महमूद व पसन्दीदा है।

हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक ईमान तुममें किसी के बातिन में पुराना पड़ जाता है। जैसे कपड़ा कुहना हो जाता है तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से मांगो कि तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा फरमाए।

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने ईमान ताज़ा करो लाइलाहा इल्लल्लाह बकसरत कहो। (तबरानी, हाकिम, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 5, स0 138)

ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व बरकात

जो बन्द-ए-ख़ुदा हमा औक़ात ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल व मसरूफ़ रहता है अल्लाह तआला उसके सब काम बना देता है और अल्लाह तआला मलाए आला और फ़रिश्तों में उसका तज़्किरा फ़रमाता है ज़िक्रे इलाही की फ़ज़ीलत से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की तहरीर मुलाहिज़ा फ़रमायें :

शरअ़ मुतह्हर ने लिहाज़ फ़रमाया कि मुसलमान हर वक़्त, हर हाल में अपने रब्बे जल्ला व उला के ज़िक्र व सना और उस से सवाल व दुआ का मुहताज रहे और सनाए इलाही वही अतम्म व अक्मल है जो ख़ुद उसने अपने नफ़्से करीम पर की।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अर्ज़ करते हैं इलाही मैं तेरी तारीफ़ नहीं कर सकता तू वैसा है जैसी तूने ख़ुद अपनी सना की। (तिर्मिज़ी)

यूंही जो दुआयें कुरआने अज़ीम ने तालीम फ़रमाईं बन्दा उनकी मिस्ल कहाँ से ला सकता है।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 230)

हदीस में है उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर वक़्त और हर हाल में ज़िक्रे इलाही किया करते थे। (त) (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द दोम, स० 34)

ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का नतीजा

कोई जानवर ज़िबह नहीं किया जाता, कोई पेड़ काटा नहीं जाता, कोई पत्ता नहीं गिरता मगर जबकि तस्बीहे इलाही में ग़फ़्लत करता है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 612)

लाइलाहा इल्लल्लाह का सवाब और एक जवान का कश्फ़

सैय्यदी शैख़ अकबर इमाम मुहीयुद्दीन बिन अरबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हदीस पहुँची थी कि जो शख़्स सत्तर हज़ार बार *ला इलाहा इल्लल्लाह* कहे उसकी मग़्फ़िरत हो, और जिसके लिए पढ़ा जाए उसकी मग़्फ़िरत हो, मैंने *ला इलाहाइल्लल्लाह* इतनी बार पढ़ा था, उसमें किसी के लिए ख़ास नीयत न की थी, अपने बाज़ रफ़ीक़ों के साथ एक दावत में गया, उनमें एक जवान के कश्फ़ का शोहरा था, खाना खाते खाते वह रोने लगा, मैंने सबब पूछा कहा अपनी माँ को अज़ाब में देखता हूँ, मैंने अपने दिल में कलिमा का सवाब उसकी माँ को बख़्श दिया फ़ौरन वह जवान हंसने लगा और कहा अब मैं उसे अच्छी जगह देखता हूँ।

इमाम मुहीयुद्दीन कुद्देसा सिर्रहू फ़रमाते हैं तो मैंने हदीस की सेहत उस जवान के कश्फ़ की सेहत से पहचानी और उसके कश्फ़ की सेहत, हदीस की सेहत से जानी।

(फ़ुतूहाते मक्कीया, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 450)

सादाते सूफ़िया किराम में सत्तर हज़ार बार लाइलाहा इल्लल्लाह का रिवाज है और ब्यान करते हैं, कि जो ऐसा कहेगा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे आज़ाद फ़रमाएगा, उसने अपनी जान दोज़ख़ से बचा ली और उस पर अपनी और अपने अमवात अक़ारिब व अहबाब के लिए मुहाफ़िज़त फ़रमाते हैं।

अल्लामा नजमुद्दीन ग़ैती फ़रमाते हैं कि आदमी को चाहिए इस अमल को बजा लाए कि औलिया-ए-किराम की पैरवी और उसके वसीयत फ़रमाने वालों का हुक्म मानना और उसके अफ़आल से बरकत लेना हासिल हो। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 498)

ज़िक्रे इलाही नुज़ूले रहमत का सबब

ज़िक्रे इलाही बिला शुबह रहमत उतरने का बाइस है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सही हदीस में ज़िक्र करने वालों की निस्बत फरमाते हैं, उन्हें मलाइका घेर लेते हैं और रहमते इलाही ढाँप लेती है और उन पर सकीना और चैन उतरता है।

(मुस्लिम, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 552)

ज़िक्रे इलाही की कोई हद मुक़र्रर नहीं

अल्लाह तआला फरमाता है : ऐ ईमान वालो अल्लाह का ज़िक्र बकसरत करो।

(अल–अहज़ाब, 41)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अल्लाह का ज़िक्र इस दरजा बकसरत कर कि लोग मज्नून बतायें। (मुसनद अहमद, अबू याला, इब्ने हिब्बान, हाकिम)

और फरमाते हैं : सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर संग व शजर के पास अल्लाह का ज़िक्र कर। (तबरानी)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर कोई फर्ज़ मुक़र्रर न फरमाया मगर यह कि उसके लिए एक हद मुअय्यन कर दी, फिर उज़्र की हालत में लोगों को इससे माज़ूर रखा, सिवा ज़िक्र करके कि अल्लाह तआला ने उसके लिए कोई हद न रखी, जिस पर इंतिहा हो, और न किसी को उसके तर्क में माज़ूर रखा मगर वह जिसकी अक़्ल सलामत न रहे, और बन्दों को तमाम अहवाल में ज़िक्र का हुक्म दिया। (मुआलिमुत्तन्ज़ील)

इब्ने अब्बास के शागिर्द इमाम मुजाहिद फरमाते हैं ज़िक्रे कसीर यह है कि कभी ख़त्म न हो।

(मआलिमुत्तन्ज़ील)

तो ज़िक्रे इलाही हमेशा हर जगह महबूब व मरग़ूब व मतलूब व मन्दूब है जिस से हरगिज़ मुमानेअत नहीं हो सकती, जब तक किसी ख़ुसूसियते ख़ास्सा में कोई नह्य शरई न आई हो।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 554)

पहाड़ वग़ैरह ज़िक्रुल्लाह के गवाह हैं

एक साहब का मामूल था जब मस्जिद तशरीफ़ लाते तो सात ढेलों को जो बाहर मस्जिद के ताक़ में रखे थे अपने कलिमा शहादत का गवाह कर लिया करते, इसी तरह जब वापस होते तो गवाह बना लेते, बाद इंतिक़ाल मलाइका उनको जहन्नम की तरफ ले चले, उन सातों ढेलों ने सात पहाड़ बन कर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिए और और कहा हम इसके कलिम–ए–शहादत के गवाह हैं, उन्होंने नजात पाई।

हदीस में है शाम को एक पहाड़ दूसरे से पूछता है क्या तेरे पास आज कोई ऐसा गुज़रा जिसने ज़िक्रे इलाही किया हो वह कहता है न, यह कहता है मेरे पास तो ऐसा शख़्स गुज़रा जिसने ज़िक्रे इलाही किया वह समझता है कि आज मुझ पर फ़ज़ीलत है। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 115)

हर शय का ज़िक्र व तस्बीह करना

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने इस मज़मून को कुछ शरह व बस्त के साथ इल्मी अंदाज़ में ब्यान फरमाया है, हम यहाँ पर इसका इक़्तिबास बिल–मानी आसान अंदाज़ में पेश कर रहे हैं, आप फरमाते हैं :

हर शय नातिक़ है शजर, हजर, दीवार व दर सब नातिक़ हैं।

* कुरआने अज़ीम फरमाता है, आज़ा कहेंगे कि हम को उस अल्लाह ने नातिक़ किया जिसने हर शय को नातिक़ कर दिया।

★ और फरमाता है, कोई शय ऐसी नहीं कि अल्लाह की तस्बीह व तहमीद व करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। (अल–असरा–44)

हर शय मुकल्लफ़ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने और ख़ुदा की तस्बीह के साथ।

★ कुरआने करीम में है : क्या नहीं जो लोग ज़मीन व आसमान में हैं और परिन्दे सफ़ बांधे हुए अल्लाह की तस्बीह करते हैं हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को पहचान लिया। (अन्नूर, 41)

आसमान व ज़मीन में रहने वालों ने अपनी नमाज़ को जान लिया और परिन्दों ने अपनी तस्बीह को जमादात नबातात की नमाज़ वही उनका ईमान व तस्बीह है। उनमें माद्द–ए–मअ़सियत भी है उनके लाइक़ जो सज़ा होती है वह उनको दी जाती है।

अह्ले कश्फ़ फरमाते हैं : तमाम जानवर तस्बीह करते हैं जब तस्बीह छोड़ देते हैं उसी वक़्त उनको मौत आती है, हर पत्ता तस्बीह करता है जिस वक़्त तस्बीह से ग़फ़लत करता है उसी वक़्त दरख़्त से जुदा हो कर गिर पड़ता है।

जब मजमा हुआ कुफ़्फ़ार का मदीना तैय्यबा पर कि इस्लाम का क़लअ़ क़मअ़ कर दें, ग़ज़्व–ए–अहज़ाब का वाक़ेया है रब अज़्ज़ा व जल्ल ने मदद फरमाना चाही अपने हबीब की शुमाली हवा को हुक्म हुआ जा और काफिरों को नेस्त व नाबूद कर दे, उसने कहा बीबियाँ रात को बाहर नहीं निकलतीं तो अल्लाह ने उसको बांझ कर दिया। इसी वजह से शुमाली हवा से कभी पानी नहीं बरसता। फिर सबा (यानी पुरवाई) से फरमाया तो उसने अर्ज़ की हमने सुना और इताअत की, वह गई और कुफ़्फ़ार को बरबाद करना शुरू किया सिर्फ़ एक ख़न्दक़ दरम्यान थी, उस पार मुसलमान थे, उस पार कुफ़्फ़ार, उधर सुबह तक चिराग़ जलते रहे और दूसरी तरफ ऊंट बारा बारा कोस पर गिरे, तो पुरवाई को यह नेअ़मत दी कि बारिश उसी के साथ होती है।

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

एक एक रूहानियत तो हर हर नबात, हर हर जमाद से मुतअल्लिक़ है उसे ख़्वाह उसकी रूह कहा जाए या और कुछ वही मुकल्लफ़ है ईमान व तस्बीह के साथ।

हदीस में है कोई शय ऐसी नहीं जो मुझको ख़ुदा का रसूल न जानती हो सिवा सरकश जिन्न और इंसानों के। (कंज़ुल–उम्माल)

उलमा फरमाते हैं जो उनके समअ़ व इद्राक पर ईमान न लाए उसके ईमान में नुक़्स है, यह सब ईमान लाए हैं हुज़ूर पर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कोई चीज़ ऐसी नहीं यहाँ तक कि मस्नूआते इंसानिया जैसे (अपनी घड़ी और डिबिया की तरफ इशारा करके फरमाया) यह घड़ी और डिबिया कि उनको इंसान ने बनाया है मगर रोज़े अज़ल से अहद लिया गया था कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान लाओ। तो फ़हम व इद्राक न था तो यह अहद कैसा?

जिस तरह तुम्हारा बदन नहीं समझता वह रूह समझती है जो इस बदन से मुतअल्लिक़ है इसी तरह वह अज्साम भी सुनने समझने वाले नहीं, बल्कि वह रूहानियतें जो इनसे मुतअल्लिक़ हैं।

इब्तिदाए इस्लाम में कुफ़्फ़ार सख़्त दुश्मन थे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में एक पहाड़ पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा फरमाया, पहाड़ से आवाज़ आई हुज़ूर मुझ पर तशरीफ़ न लाएं कि मुझ पर कोई जगह अमन की नहीं मुझे ख़ौफ़ है कि अगर कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर को मुझ पर पा लिया और ईज़ा दी तो अल्लाह मुझ पर वह सख़्त अज़ाब नाज़िल करेगा कि कभी न नाज़िल किया होगा। सामने दूसरा पहाड़ था उसने आवाज़ दी या रसूलुल्लाह हुज़ूर मेरी तरफ तशरीफ़ लाएं, सरकार उस पर तशरीफ़ ले गए।

तो अगर इल्म व इद्राक व नुत्क़ न था तो क्यों कर ऐसा हुआ?

जब आयते करीमा नाज़िल हुई, जहन्नम का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, पहाड़ों ने रोना शुरू किया, यह आँसू हैं दरिया जो बह गए। रुजूअ़ व ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ आम है तमाम हैवानात व नबातात व जमादात को।

दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए लोहे का नर्म हो जाना उसी के हुक्म से था, महज़ इरादतुल्लाह से मोम हो जाता था जैसे ठंडा हो जाना आग का इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलमा पर। (अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 77 ता 79)

मज़्कूरा दलाइल व शवाहिद से मालूम हुआ कि जमादात हों या नबातात, शजर व हजर हों या हैवान वग़ैरह हर चीज़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का ज़िक्र व सना करती है कोई चीज़ उसकी तस्बीह व तहमीद से ग़ाफ़िल नहीं जब ग़फ़लत तारी होती है तो उसे मौत आ जाती है।

अवाम व ख़्वास में लाइलाहा इल्लल्लाह के मआनी

★ ला इलाहा इल्लल्लाह के मानी अवाम के नज़्दीक ला मअ़बूदा इल्लल्लाह।

★ ख़्वास के नज़्दीक ला मक़्सूदा इल्लल्लाह।

★ अह्ले बिदायत के नज़दीक ला मश्हूदा इल्लल्लाह।

★ अख़स्सुल-ख़्वास अरबाबे निहायत के नज़्दीक ला मौजूदुन इल्लल्लाह।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 52)

दुनिया मुस्तौजिबे लानत है

ज़िक्रुल्लाह की ख़ैर व बरकत वह्म व गुमान से ज़्यादा है आदमी को चाहिए कि वह अल्लाह के ज़िक्र को अपनी ज़िन्दगी का जुज़्वे लाज़िम बना ले और दुनिया व माफीहा से ऐराज़ करते हुए अल्लाह तआला के ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल रहे क्योंकि ज़िक्रुल्लाह और दीनी उमूर के अलावा जो दुनिया है उसे मल्ऊन कहा गया है। (मुरत्तिब)

हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : दुनिया मल्ऊन है, दुनिया में जो है वह मल्ऊन है, हाँ जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए है वह मल्ऊन नहीं। (त) (अबू नईम, ज़िया मुक़द्दसी)

दूसरी हदीस में है दुनिया और जो दुनिया में है वह मल्ऊन है मगर जिस चीज़ से अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की रज़ा व ख़ुशनूदी मक़्सूद है वह मल्ऊन नहीं। (त, तबरानी)

एक और हदीस में है दुनिया मल्ऊन है और जो कुछ इसमें है मल्ऊन है, बजुज़ अल्लाह तआला के ज़िक्र के और उस चीज़ के कि जिसे वह दोस्त रखे और आलिम व मुतअल्लिम। (त, इब्ने माजा)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दुनिया व माफीहा मल्ऊन है मगर अम्र बिल-मारूफ़ व नही अनिल-मुंकिर और अल्लाह का ज़िक्र। (त, तबरानी, मुसनद बज़्ज़ार)

बेहतरीन गरोह में ज़ाकिर का तज़्किरा

अल्लाह तआला कुरआने अज़ीम में फरमाता है : तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हें याद करूँगा, इससे ज़्यादा मुसलमान की ख़ुश नसीबी क्या हो सकती है कि अगर वह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का ज़िक्र करे तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की बारगाहे रहमत में याद किया जाए, फ़रिश्तों की मजालिस में उसका तज़्किरा हो। (मुरत्तिब)

हदीस में है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है बन्दा अगर मेरा ज़िक्र किसी जमाअत में करे तो मैं उससे बेहतर जमाअत में उसका चरचा करता हूँ। (त, सहाहे सित्ता)

दूसरी हदीसे कुदसी में है जब कोई मेरा ज़िक्र एक जमाअत में करता है तो मैं उसका चरचा मलाए आला में करता हूँ। (त, मुसनद अहमद, तबरानी)

हल्क़-ए-ज़िक्र

ज़िक्रे इलाही का मक़ाम यह है कि हल्क़-ए-ज़िक्र और ज़िक्र की मज्लिसों को जन्नत की क्यारी कहा गया है गोया कि जब आदमी मजालिस वग़ैरह में ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल व मुंहमिक रहता है तो वह जन्नत के सब्ज़ा ज़ारों में सैर व तफ़रीह करता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो चरो यानी उनके फल वग़ैरह से फाइदा हासिल करो, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह जन्नत की क्यारियाँ क्या हैं? फरमाया हल्क़-ए-ज़िक्र। (त, तिर्मिज़ी)

हदीस : ऐ लोगो अल्लाह के फ़रिश्तों की कुछ जमाअतें हैं जो ज़मीन में मज्लिसे ज़िक्र के पास आती जाती हैं, तो तुम जन्नत की क्यारी में चरो यानी उस से फाइदा उठाओ। सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ की रियाज़े जन्नत कहाँ हैं? फरमाया ज़िक्र की मजलिसें। (त, तबरानी, हाकिम, बैहक़ी)

हदीस : जो लोग अल्लाह का ज़िक्र करते हैं उन्हें मलाइका घेर लेते हैं और रहमते इलाही उन्हें ढाँप लेती है, उन पर सकीना और चैन उतरता है, अल्लाह तआला उन फरिश्तों के पास उस ज़ाकिर का ज़िक्र करता है जो उसके पास होते हैं। (त, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हदीस : अह्ले ज़िक्र की मज्लिसों की ग़नीमत जन्नत है। (त, तबरानी, मुसनद अहमद)

हदीस : अल्लाह तआला रोज़े क़यामत फरमाएगा कि अंक़रीब अह्ले जमा अह्ले करम को पहचान लेंगे अर्ज़ की गई या रसूलुल्लाह अह्ले करम कौन लोग हैं? फरमाया मस्जिदों में ज़िक्र व अज़्कार करने वाले। (त, मुसनद अहमद, अबू याला)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक गरोहे सहाबा के पास तशरीफ़ लाए फरमाया कि यहाँ तुम्हें किस चीज़ ने बिठाया है सहाबा ने अर्ज़ की हम यहाँ अल्लाह का ज़िक्र करने बैठे हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्राईल ने आ कर मुझे ख़बर दी कि अल्लाह तआला तुम से फरिश्तों में मुबाहात फरमाता है।

(त, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसई)

हदीस : अल्लाह तआला इब्ने रवाहा पर रहम फरमाए कि वह इन मज्लिसों को पसन्द करता है जिन पर फरिश्ते फ़ख़्र व मुबाहात करते हैं। (त, मुसनद अहमद)

हदीस : जो मजलिस अल्लाह का ज़िक्र करती है मलाइका उसे घेर लेते हैं और कहते हैं कि और ज़िक्र करो, अल्लाह तआला तुम पर रहमत और ख़ैर व बरकत ज़्यादा करेगा और ज़िक्र उनके माबैन बुलन्द होता है और फरिश्ते अपने परों को फैलाए होते हैं। (त, इब्ने हिब्बान)

हदीस : जो लोग एक जगह जमा हो कर रज़ाए इलाही के लिए अल्लाह का ज़िक्र करते हैं एक मुनादी आसमान से निदा करता है कि खड़े हो जाओ तुम बख़्श दिए गए, बेशक तुम्हारी बुराईयों को नेकियों से बदल दिया गया है। (त, अहमद, तबरानी)

हदीस : रहमान के दस्ते रास्त पर (जो उसकी शान के लाइक़ है) कुछ लोग हैं जो नबी व शहीद नहीं हैं उनके चेहरों की चमक देखने वालों की निगाहें ख़ीरा करती हैं, उनके बैठने की जगह और अल्लाह की कुर्बत व नज़्दीकी से अंबिया व शोहदा रश्क करते हैं। अर्ज़ की गई या रसूलुल्लाह वह कौन लोग हैं फरमाया क़बीलों के वारिद लोगों की जमाअतें कि अल्लाह के ज़िक्र पर जमा होती हैं, फिर वह लोग कलाम की अच्छाईयाँ चुनते हैं जैसा कि खुजूर खाने वाला ख़ुश ज़ाइक़ा खुजूरों को चुनता है। (त, तबरानी)

कसरते ज़िक्र का मिज़ाज क्या है?

मुतअद्दद अहादीस में बकसरत ज़िक्रे इलाही करने का हुक्म आया है हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर वक़्त, हर लम्हा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का ज़िक्र करते थे। ज़िक्र इस तरह करे कि ज़बाने ज़िक्रे इलाही से हमेशा तर रहे और देखने वाले पागल कहने लगें। (मुरत्तिब)

हदीस में है : अल्लाह तआला का ज़िक्र इस दरजा कसरत से करो कि लोग कहें कि यह तो पागल हो गया है। (त, अहमद, बैहक़ी)

दूसरी हदीस में है : अल्लाह का ज़िक्र इस कसरत से करो कि मुनाफ़ेक़ीन कहने लगें कि तुम रिया करते हो। (त, बैहक़ी)

एक रिवायत में है कि अल्लाह का ज़िक्र ख़ूब-ख़ूब करो कि मुनाफ़ेक़ीन कहें कि तुम दिखावा करते हो। (त, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 109 ता 111)

ज़िक्रे इलाही दाफ़ेअ् अज़ाब है

अल्लाह का अज़ाब हक़ है गुनहगार को गुनाह की सज़ा मिलेगी लेकिन अगर अल्लाह तआला की रहमत हो जाए तो वह गुनाहों को माफ़ फरमा कर जन्नत में भेज देगा। जिस तरह तौबा व इस्तिग़फ़ार से गुनाहों के माफ़ होने की उम्मीद है यूं ही बकसरत ज़िक्रे इलाही करने से अज़ाबे इलाही दफ़अ् होता है यह बन्दों पर उसकी रहमत है वरना वह चाहे अज़ाब दे या सवाब दे उसे इख़्तियार है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आदमी का कोई अमल अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा अल्लाह के अज़ाब से नजात दहिन्दा नहीं, अर्ज़ की गई क्या अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं? फरमाया जिहाद भी नहीं मगर यह कि आदमी इस क़द्र तलवार चलाए कि वह टूट जाए या कट जाए। (त, तबरानी)

दूसरी हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर चीज़ के लिए सैक़ल है और दिलों का सैक़ल अल्लाह का ज़िक्र है और अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा कोई चीज़ अज़ाबे अल्लाह से नजात देने वाली नहीं, अर्ज़ किया जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं? फरमाया हाँ मगर यह कि आदमी इस क़द्र तल्वार चलाए कि वह ख़त्म हो जाए। (त, बैहक़ी, इब्ने अबी अद्दुनिया)

एक और हदीस में है कि आदमी का कोई अमल अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा अज़ाबुल्लाह से नजात दहिन्दा नहीं सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह जिहाद भी नहीं? फरमाया जिहाद भी नहीं मगर यह कि तुम तल्वार इस क़द्र चलाओ कि वह ख़त्म हो जाए, फिर चलाओ फिर ख़त्म हो जाए, फिर चलाओ फिर ख़त्म हो जाए। (त, मुसनद अहमद, तबरानी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 175)

ज़िक्रे नबी ज़िक्रे ख़ुदा

ज़िक्रे हुज़ूर सैय्यदुल-महबूबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नूरे ईमान व सुरूरे जान है उनका ज़िक्र बेऐनेही ज़िक्रे रहमान है।

अल्लाह तआला फरमाता है :

ऐ महबूब हमने आपके लिए आपका ज़िक्र बुलन्द किया। (त, अलम नशरह, 4)

हदीस में है इस आयते करीमा के नुज़ूल के बाद सैय्यदना जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाज़िरे बारगाहे अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हुए और अर्ज़ की हुज़ूर का रब फरमाता है :

क्या तुम जानते हो मैंने कैसे बुलन्द किया तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अर्ज़ की अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ख़ूब जानता है।

इरशाद हुआ ऐ महबूब मैंने तुम्हें अपनी याद में से एक याद किया कि जिसने तुम्हारा ज़िक्र किया बेशक उसने मेरा ज़िक्र किया। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 409)

कुरआन व हदीस में ज़िक्रुल्लाह की ताकीद

अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन पाक की मुतअद्दद आयात में यह ब्यान फरमाया है कि तुम बकसरत ख़ुदा को याद करो, हर हाल में ख़ुदा का ज़िक्र करो, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने भी कसीर हदीसों में ज़िक्रुल्लाह की ताकीद व तरग़ीब फरमाई है। (मुरत्तिब)

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल कुरआने अज़ीम में फरमाता है :

अल्लाह का ज़िक्र करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर। (निसा 103)

उलमा–ए–किराम इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : कि जमीअ् अहवाल में ज़िक्रे इलाही व दुआ की मुदावमत करो।

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

ऐ ईमान वालो अल्लाह का ज़िक्र बकसरत करो। (अल–अहज़ाब, 41)

यह आयत तमाम अहवाल व औक़ात को आम है।

★ और फरमाता है :

अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा को याद करते हो बल्कि उससे भी ज़्यादा। (अल–बक़रा, 200)

इस आयत से यह मुराद है कि ज़िक्रे इलाही जमीअ् औक़ात में करो।

★ और फरमाता है रब अज़्ज़ा व जल्ल :

और बकसरत ख़ुदा का ज़िक्र करो। (अल–जुमा, 10)

इस से मुराद यह है कि तमाम मवाज़े में, ख़ुशी व तक्लीफ़ में ज़िक्रे इलाही करो।

★ अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है :

ख़ुदा को बकसरत याद करने वाले मर्द और बकसरत याद करने वाली औरतों के लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। (हूद, 114)

ज़िक्रुल्लाह के बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि हमेशा ज़िक्रे इलाही में तर ज़बान रह। (तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है। अल्लाह का ज़िक्र बकसरत कर कि तू कोई ऐसी चीज़ न लाए जो ख़ुदा को अपनी कसरते ज़िक्र से ज़्यादा प्यारी हो। (तबरानी)

तीसरी हदीस में है, जो ज़िक्रे इलाही की कसरत न करे वह ईमान से बेज़ार हो गया। (तबरानी)

और एक हदीस में आया है कि हुज़ूर पुर नूर सैय्युदल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर वक़्त ज़िक्रे ख़ुदा फरमाया करते। (मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 786, 787)

ला इलाहा इल्लल्लाह की अज़मत

अमीरुल–मुमिनीन अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि मेरे प्यारे मेरी आखों की ठंडक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से हदीस ब्यान फरमाई कि उन से जिब्रील ने अर्ज़ की कि मैंने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को फरमाते सुना कि ला इलाहा इल्लल्लाह मेरा क़िला है तो जिसने इसे कहा वह मेरे क़िला में दाख़िल हुआ और जो मेरे

क़िला में दाख़िल हुआ मेरा अज़ाब से अमान में रहा।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 137)

रसूलुल्लाह की सुन्नतें और उन पर अमल की ताकीद व तरग़ीब

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने अमले मुबारक से अहकामे शरीआ की वज़ाहत फरमाई अगर हुज़ूर की तालीम न होती तो उम्मत को तरीक़ा इबादत व अमल मालूम न होता इसी लिए कहा जाता है कि सुन्नतें फर्ज़ की तक्मील के लिए हैं, सुन्नतों में बाज़ मुअक्किदा हैं और बाज़ ग़ैर मुअक्किदा, सुन्नतों से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की तहरीर मुलाहिज़ा फरमायें :

सुन्नते हुदा सुन्नते मुअक्किदा का नाम है और सुन्नते ज़ाइद सुन्नते ग़ैर मुअक्किदा का।

मुतअद्दद अहादीस में सुन्नतों पर अमल करने की ताकीद आई है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो मेरी सुन्नत से ऐराज़ व रूगरदानी करे वह हम में से नहीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है कि जो मेरी सुन्नत पर अमल न करे वह मुझ से नहीं।

(इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 174)

सुन्नत छोड़ने का हुक्म क्या है ?

सुन्नते मुअक्किदा का तर्क एक आध बार मूरिसे अताब है मगर गुनाह नहीं हाँ तर्क की आदत करे तो गुनहगार होगा। जैसे तक्बीरे तहरीमा के वक़्त रफ़–ए–यदैन सुन्नते मुअक्किदा है तर्क की आदत से गुनहगार होगा वरना मक्रूह ज़रूर है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 176)

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक हदीस मरवी है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि मैं नर्म और आसान शरीअत के साथ भेजा गया हूँ जो मेरी सुन्नत की मुख़ालिफ़त करे वह मुझ से नहीं। (त, तारीख़ ख़तीब, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 125)

एक हदीस में है सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से फरमाया गया कि तुम ऐसे ज़माने में हो कि जिस बात का तुम्हें हुक्म दिया गया है अगर उसका दसवाँ हिस्सा छोड़ दो तो तुम हलाक हो जाओ, फिर एक ज़माना ऐसा आएगा कि जो उस वक़्त हुक्मे इलाही के दसवें हिस्सा पर अमल कर लेगा वह नजात पा जाएगा। (त, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 123)

हुज़ूर की सुन्नतों के साथ सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नतों पर भी अमल करना ज़रूरी है, क्योंकि उनकी ज़िन्दगी लाइक़े तक़्लीद और ज़रिय–ए–नजात है। हदीस में है।

(मुरत्तिब)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि तुम पर मेरी और मेरे बाद के ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन की सुन्नतों की पैरवी लाज़िम है।

(त, अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 101)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो हमारे ग़ैर की सुन्नत पर अमल करे वह हमारे गरोह से नहीं।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मेरी सुन्नत इख़्तियार

करे वह मेरा और मेरी सुन्नत से मुंह फेरे वह मेरा नहीं (इब्ने असाकिर)

हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं यानी हर काम का एक जोश होता है और हर जोश को एक फुतूर, तो जो फुतूर के वक़्त भी मेरी सुन्नत ही की तरफ रहे हिदायत पाए और जो दूसरी जानिब हो हलाक हो जाए। (शाअ़बुल–ईमान, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 135)

सुन्नतें क्यों हैं?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू शरीअत में सुन्नतों का मक़ाम व मरतबा बताते हुए तहरीर फ़रमाते हैं कि :

मुस्तहब, सुन्नत की तक्मील है, सुन्नत, वाजिब की, वाजिब फ़र्ज़ की। फ़र्ज़ ईमान की। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 187)

दस सुन्नतें

हदीस में है कि दस बातें क़दीम से अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत हैं।

(1) लबें कतरना (2) दाढ़ी बढ़ाना (3) मिसवाक करना (4) वुज़ू व ग़ुस्ल में पानी सूंघ कर ऊपर चढ़ाना (5) नाख़ुन तराशना (6) उंगलियों के जोड़ (यानी जहाँ जहाँ मैल जमा होने का महल है उसे) धोना (7) बग़ल के बाल साफ करना (8) ज़ेरे नाफ बालों से साफ करना (9) शर्मगाह पर पानी डालना। रावी ने कहा दसवीं मैं भूल गया शायद कुल्ली हो। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

दूसरी हदीस में आया है कि पाँच चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सुन्नते क़दीमा से हैं, ख़तना और उस्तरा लेना और लबें और नाख़ुन तराशना और बग़ल के बाल दूर करना। (बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 213)

मन्कूश अंगूठी का अदब

जिस अंगुश्तरी पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल या नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक या कोई मुतबर्रक लफ़्ज़ लिखा हो इस्तिंजा के वक़्त उसका उतार लेना सिर्फ़ मुस्तहब ही नहीं क़तअन सुन्नत और उसका तर्क ज़रूर मक्रूह बल्कि असाअत है, बल्कि मुतलक़न कुछ लिखा हो हुरूफ़ ही का अदब चाहिए, बल्कि ऐसी अंगूठी पहन कर बैतुल–ख़ला मे जाना ही मक्रूह है।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब बैतुल–ख़ला तशरीफ़ ले जाते तो अंगुश्तरी मुबारक को उतार लेते कि उसमें "मुहम्मद रसूलुल्लाह" नक़्श था। (मुरत्तिब बुख़ारी)

तावीज़ अगर ग़िलाफ़ में हो तो उसे पहन कर बैतुल–ख़ला में जाना मक्रूह नहीं फिर भी इससे बचना अफ़्ज़ल है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 171, 172)

ग़ैर ज़रूरी बाल

कलाइयों पर बाल हों तो तरशवा दें कि उनका होना वुज़ू या ग़ुस्ल में पानी ज़्यादा चाहता है, और मूंडने से सख़्त हो जाते हैं इसलिए मशीन से तराशना बहेतर कि ख़ूब साफ कर देती है और सबसे अहसन व अफ़्ज़ल नूरह (चूना वग़ैरह) है कि इन आज़ा में यही सुन्नत से साबित है।

यानी हाथ, पाँव, सीना, पुश्त, पर बाल हों तो नूरह से दूर करना बेहतर है और मूए ज़ेरे नाफ पर भी इस्तेमाल नूरह आया है।

उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब नूरा का इस्तेमाल फरमाते तो सतर मुक़द्दस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाक़ी बदन पर अज़्वाजे मुतह्हरात लगा देतीं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलैहिन्ना

व बारिक व सल्लिम। (इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 210)

हाथी दाँत का कंघा

सुरमा दानी या कंघा वग़ैरह हाथी के दाँत का बना हुआ हो तो उसका इस्तेमाल करना जाइज़ है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आज (हाथी के दाँत) का कंघा करते। (बैहक़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 47)

खड़े हो कर जूता पहनना

इस्लाम ने हर चीज़ के आदाब व उसूल सिखाए और इंसान को हर तरह का सलीक़–ए–ज़िन्दगी अता फरमाया यहाँ तक कि जूता पहनने, कंघा करने, सर पे तेल डालने वग़ैरह का हुक्म भी ब्यान फरमाया। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने खड़े हो कर जूता पहनने से मना फरमाया है। (त, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 431)

सुन्नत ज़िन्दा करने का सवाब

बेशक अहादीस में सुन्नत ज़िन्दा करने का हुक्म और उस पर बड़े सवाबों के वादे हैं।

अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसने मेरी सुन्नत ज़िन्दा की बेशक उसे मुझ से मुहब्बत है और जिसे मुझ से मुहब्बत है वह जन्नत में मेरे साथ होगा। (किताबुल–एबाना)

बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मेरी कोई सुन्नत ज़िन्दा करे कि लोगों ने मेरे बाद छोड़ दी हो, जितने उस पर अमल करें सबके बराबर सवाब मिले और उनके सवाबों में कुछ कमी न हो। (तिर्मिज़ी)

इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो फसाद के वक़्त मेरी सुन्नत मज़्बूत थामे उसे सौ शहीदों का सवाब मिले। (इब्ने माजा)

ज़ाहिर है कि ज़िन्दा वही सुन्नत की जाएगी जो मुर्दा हो गई और सुन्नत मुर्दा जभी होगी कि उसके ख़िलाफ़ रिवाज पड़ जाए।

अह्या–ए–सुन्नत उलमा का तो ख़ास फर्ज़े मंसबी है और जिस मुसलमान से मुम्किन हो उसके लिए हुक्म आम है हर शहर के मुसलमानों को चाहिए कि रसूलुल्लाह की सुन्नतों को ज़िन्दा करें और सौ सौ शहीदों का सवाब लें।

इस पर यह ऐतराज़ नहीं हो सकता कि क्या तुम से पहले आलिम न थे, यूं हो तो कोई सुन्नत ज़िन्दा ही न कर सके, अमीरुल–मुमिनीन उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कितनी सुन्नतें ज़िन्दा फरमाईं, इस पर उनकी मदह हुई न कि उलटा ऐतराज़, कि तुम से पहले तो सहाबा व ताबईन थे, रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 407, 408)

मुंकिरे सुन्नत पर हुज़ूर की लानत

हदीस से साबित कि मुंकिरे सुन्नत पर लानत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं, कुछ लोग हैं जिन पर मैंने लानत की, अल्लाह उन पर लानत करे और हर नबी की दुआ क़बूल है, अज़ां जुमला एक वह कि मेरी सुन्नत का मुंकर हो। (तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 537)

छींक, जमाही और डकार के बाज़ अहकाम

★ मस्जिद में अगर छींक आए तो कोशिश करो कि आहिस्ता आवाज़ निकले उसी तरह खाँसी।

★ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में ज़ोर की छींक को नापसन्द फरमाते।

(कंज़ुल–उम्माल)

★ इसी तरह डकार को ज़ब्त करना चाहिए और न हो तो हत्तल–इम्कान आवाज़ दबाई जाए, अगरचे ग़ैर मस्जिद में हो ख़ुसूसन मज्लिस में या किसी मुअज़्ज़म के सामने कि बेतहज़ीबी है।

हदीस में है एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस में डकार ली फरमाया हम से अपनी डकार दूर रख कि दुनिया में जो ज़्यादा मुद्दत तक पेट भरे थे वह क़यामत के दिन ज़्यादा मुद्दत तक भूखे रहेंगे।

(कंज़ुल–उम्माल)

★ और जमाही में आवाज़ निकलना तो कहीं न चाहिए अगरचे ग़ैर मस्जिद में तन्हा हो कि वह शैतान का क़हक़हा है। जमाही जब आए हत्तल–इम्कान मुँह बन्द रखो, मुँह खोलने से शैतान मुँह में थूक देता है, यूं न रुके तो ऊपर के दाँतों से नीचे का होंठ दबा लो और यूं भी न रुके तो हत्तल–इम्कान कम खोलो और उलटा हाथ उलटी तरफ से मुँह पर रख लो, यूंही नमाज़ में भी मगर हालते क़याम में सीधा हाथ उलटी तरफ से रखो कि उलटा हाथ रखने में दोनों हाथ अपनी मस्नून जगह से बदलेंगे और सीधा रखने में सिर्फ़ यह ही बज़रूरत बदला, उलटा अपने महल सुन्नत पर साबित रहा।

★ जमाही रोकने का एक मुजर्रब तरीक़ा यह है जब जमाही आने को हो फौरन तसव्वुर करे कि हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को कभी न आई कि यह मिस्ले एहतलाम, शैतान की तरफ से है और वह दख़्ले शैतान से मासूम।

★ छींक अच्छी चीज़ है इसे बदशगूनी जानना मुश्रेकीने हिन्द का नापाक अक़ीदा है।

हदीस में तो यह इरशाद फरमाया कि बात के वक़्त छींक आदिल गवाह है। यानी कुछ ब्यान किया जाता हो जिसका सिद्क़ व किज़्ब मालूम नहीं और उस वक़्त किसी को छींक आए तो वह उस बात के सिद्क़ पर दलील है। और हदीस में यह भी आया कि दुआ के वक़्त छींक होना दलीले क़बूल है लिहाज़ा छींक पर हम्दे इलाही बजा लाना मस्नून हुआ। बहुत लोग सिर्फ़ अल्हम्दुलिल्लाह कहते हैं पूरा कलिमा कहना चाहिए। अल्हम्दुलिल्लाहे रब्बिल–आलमीन।

हदीस में है जो छींक पर अल्हम्दुलिल्लाह कहे फरिश्ता कहता है रब्बिल–आलमीन, यानी इस कलिमा को पूरा कर देता है, और जो कहता है अल्हम्दुलिल्लाहे रब्बिल–आलमीन फरिश्ता कहता है यरहमकल्लाहु अल्लाह तुझ पर रहम करे। तो कितनी बड़ी दौलत है कि मासूम फरिश्ते की ज़ुबान से दुआ रहमत, यह मलाइका के लिए है, आदमी पर वाजिब है कि जब छींकने वाला मुसलमान हम्दे इलाही बजा लाए अगरचे सिर्फ़ अल्हम्दुलिल्लाह कहे, यह यरहमकल्लाह कहे। फिर उसे मुस्तहब कि उस से कहे यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम। अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत करे।

यहाँ एक हदीस ज़ुबान ज़द है, दो जगह मेरा ज़िक्र न किया जाए यानी छींक और ज़िबह।

अजिल्ला उलमा ने इस पर ऐतमाद करके उन दोनों मक़ामों को ज़िक्रे अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुस्तस्ना फरमा दिया। मगर तहक़ीक़ यह है कि वह हदीस साबित नहीं, छींक के वक़्त ज़िक्र शरीफ़ का सेग़ा यह है और ज़िबह में भी मआज़ल्लाह बतौर शिर्कत नाम लेना जाइज़ नहीं। बतौर बरकत में असलन मुज़ाइक़ा नहीं। मसलन।

★ बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अक्बर व सल्लल्लाहु अला सैय्यिदना मुहम्मदिन व आलेही।

बल्कि फतावा इमाम क़ाज़ी खान में इसका जवाज़ भी मुसरह कि –

★ बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अक्बर, मुहम्मदुर रसूलुल्लाहे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक दुंबे के ज़िबह में फरमाया :

★ बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अक्बर अल्लाहुम्मा अन मुहम्मदिन व अहले बैतेही।

(अबू दाऊद, अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 119, 120)

मरज़ का इलाज सुन्नत है या नहीं

इलाज करना और न करना दोनों सुन्नत हैं, इरशाद हुआ इलाज करो ऐ अल्लाह के बन्दो कि जिसने मरज़ उतारा है उसने हर मरज़ की दवा भी उतारी है।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की आदते करीमा अक्सर यही (इलाज) रही है कि उनकी उम्मत के लिए सुन्नत हो और अकाबिरे सिद्दीक़ीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत इलाज न करना रही है। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 132)

ख़ुशबू लगाना

ख़ुशबू लगाना सुन्नत है और ख़ुशबू की चीज़ें फूल पत्ती वग़ैरह पसन्द बारगाहे रिसालत हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम्हारी दुनिया में से दो चीज़ों की मुहब्बत मेरे दिल में डाली गई निकाह, ख़ुशबू और मेरी आँख की ठंडक नमाज़ में रखी गई।

(मुसनद अहमद, निसाई)

जिसके सामने ख़ुशबू, नबात, फूल पत्ती वग़ैरह पेश की जाए तो रद न करे कि उसका बोझ हल्का और बू अच्छी है। बोझ हल्का यह कि पेश करने वाले पर मशक़्क़त नहीं, कोई भारी एहसान नहीं।

चार बातें अंबिया मुरसलीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतों से हैं ख़तना करना, ख़ुशबू लगाना, निकाह और मिसवाक। (मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, बैहक़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ुशबू की चीज़ रद न फरमाते थे।

(मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, निसाई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 225)

बालों में कंघा करना

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नत पूरे सर पर बाल रखना है और अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की सुन्नत पूरे सर का मुंडाना है, हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने मूए मुबारक में तेल डालते कंघा करते और दूसरों को भी बालों में तेल डालने और कंघा करने का हुक्म फरमाते थे। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कंघी करने से मना फरमाया मगर नाग़ा करके। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में बाज़ सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से है कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया कि हम में से कोई शख़्स रोज़ कंघी करे।

(अबू दाऊद, निसई)

मक़्सूद यह है कि हर वक़्त बदन की ज़ेब व ज़ीनत से इंहमाक से मना फरमाया यानी मर्द को ज़नाना तौर पर सिंगार और कंघी चोटी में मश्ग़ूल न चाहिए और जहाँ पर यह नीयते ज़मीमा न हो बल्कि बनीयते सालेहा जैसे इलाज वग़ैरह के तौर पर दिन में कई बार कंघी करे तो कोई हरज व कराहत नहीं।

हज़रत अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की मेरे बाल शानों तक हैं क्या मैं इन्हें कंघी करूं फरमाया हाँ और इनकी इज़्ज़त करो।

इसके बाद हज़रत अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अक्सर दिन में दो बार बालों में तेल डालते कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमा दिया था कि हाँ बालों की इज़्ज़त करो। (मुअत्ता इमाम मालिक, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 139)

हुज़ूर को दाहिना महबूब है

हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी कि हर काम को दाहिने हाथ से करते और दाहिने तरफ से शुरू फरमाते और सहाबा को भी दाहिनी तरफ से इब्तिदा की ताकीद फरमाते। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर बात में दाहिनी तरफ से इब्तिदा को पसन्द फरमाते यहाँ तक कि जूता पहनने में। (बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 543)

इल्म और उलमा

कुरआने अज़ीम फरमाता है कि "जानने वाले और अंजान बराबर नहीं" इल्म नूर है और जिहालत ज़ुल्मत व तारीकी" इल्म व अक्ल ही से इंसान हैवानात से मुम्ताज़ व जुदा हैं इमाम ग़ज़ाली नक़्ल फरमाते हैं कि जिस इंसान के अन्दर इल्म नहीं वह हैवान के मुतरादिफ़ है। खाना पीना, सोना, जागना, चलना फिरना वग़ैरह इंसान करता है तो जानवर भी यह चीज़ें करते हैं दोनों के दरम्यान फर्क़ करने वाली चीज़ सिर्फ़ इल्म है, अहादीस व आसार में इल्म और उलमा की काफी फ़ज़ीलतें इरशाद हुई हैं, जहाँ हुसूले इल्म की ताकीद की गई है, वहीं उलमा का एहतराम व अदब भी बताया गया है। (मुरत्तिब)

आलिम की तारीफ़

आलिम की तारीफ़ यह है कि अक़ाइद से पूरे तौर पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरियात को किताब से निकाल सके बग़ैर किसी की मदद के।

सिर्फ़ कुतुब बीनी से ही इल्म हासिल नहीं होता बल्कि इल्म अफ़्वाहे रिजाल से भी हासिल होता है।

इल्म की तारीफ़

इल्म वह नूर है कि जो शय उसके दाइरे में आ गई मुंकशिफ़ हो गई और जिससे मुतअल्लिक़ हो गया उसकी सूरत हमारे ज़ेहन में मुरतसिम हो गई।

इल्मे बातिन का दरजा

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि :

★ मैंने एक बार सफर किया और वह इल्म लाया जिसे ख़्वास व अवाम सबने क़बूल किया।

★ दोबारा सफर किया और वह इल्म लाया जिसे ख़्वास ने क़बूल किया, अवाम ने न माना।

★ तीसरी बार सफर किया और वह इल्म लाया जो ख़्वास व अवाम किसी की समझ में न आया।

यहाँ सफर से सैर इक़्दाम मुराद नहीं बल्कि सैरे क़ल्ब है, उनके उलूम की हालत तो यह है, और अदना दरजा उन से ऐतक़ाद, उन पर ऐतमाद व तस्लीम इरशाद, जो समझ में आया ठीक है वरना हज़रत शैख़ अकबर और अकाबिरे फन ने फरमाया है कि अदना दरजा इल्मे बातिन का यह है कि उसके आलिमों की तस्दीक़ करे कि अगर न जानता तो उनकी तस्दीक़ न करता।

नीज़ हदीस में फरमाया है सुबह कर इस हालत में कि तू ख़ुद आलिम है, या इल्म सीखता है, या

आलिम की बातें सुनता है, या अदना दरजा यह कि आलिम से मुहब्बत रखता है और पाँचवां न होना कि हलाक हो जाएगा। (कंज़ुल–उम्माल, अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 6, 7)

उलमा की शफ़ाअत

उलमा बेगिनती लोगों की शफ़ाअत करेंगे यहाँ तक कि आलिम के साथ जिन लोगों को भी कुछ तअल्लुक़ होगा उसकी शफ़ाअत करेंगे। कोई कहेगा मैंने वुज़ू के लिए पानी दिया था, कोई कहेगा मैंने फलां काम कर दिया था। लोगों का हिसाब होता जाएगा और वह जन्नत को भेजे जायेंगे। उलमा का हिसाब कब का हो चुका होगा और वह रोके जाएंगे, अर्ज़ करेंगे इलाही लोग जा रहे हैं हम क्यों रोके गए हैं। फरमाया जाएगा तुम आज मेरे नज़्दीक फ़रिश्तों की मानिन्द हो, शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत से लोग बख़्शे जाएं, हर सुन्नी आलिम से फरमाया जाएगा, अपने शागिर्दों की शफ़ाअत कर अगरचे आसमान के सितारों के बराबर हों।

हाफ़िज़े कुरआन अपने अक़रबा से दस शख़्सों की शफ़ाअत करेगा और उसके माँ बाप को क़यामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिससे मश्रिक़ से मग़्रिब तक रौशन हो जाए। और शहीद पचास शख़्सों की और हाजी सत्तर की शफ़ाअत करेगा। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 38)

हज़रत इब्ने अब्बास का अदब

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : जब मैं बग़र्ज़ तहसीले इल्म हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दरे दौलत पर जाता और वह बाहर तशरीफ़ न रखते होते तो बराहे अदब उनको आवाज़ न देता, उनकी चौखट पर सर रख कर लेट रहता, हवा खाक और रेता उड़ा कर मुझ पर डालती, फिर जब हज़रत ज़ैद काशानए अक़्दस से तशरीफ़ लाते, फरमाते ऐ इब्ने अम्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आपने मुझे इत्तिला क्यों न करा दी, मैं अर्ज़ करता मुझे लाइक़ न था कि मैं आपको इत्तिला कराता।

यह वह अदब है जिसकी तालीम कुरआने अज़ीमी ने फरमाई :

"वह जो हुजरों के बाहर से तुम्हें आवाज़ देते हैं उन में से बहुत को अक़्ल नहीं और अगर वह सब्र करते यहाँ तक कि तुम बाहर तशरीफ़ लाओ तो उनके लिए बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।" (अल–हुजरात, 4)

हज़रत ज़ैद का अदब

एक मरतबा हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु घोड़े पर सवार हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने रकाब थामी हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लहु तआला अन्हु ने फरमाया कि यह क्या है ऐ इब्ने अम्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन्होंने कहा हमें यही तालीम दी गई है कि उलमा के साथ अदब करें, उस पर हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु घोड़े से उतरे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के हाथ पर बोसा दिया और फरमाया : हमें यही हुक्म है कि अह्ले बैते अतहार के साथ ऐसा ही करें।

मामून रशीद को हारून रशीद की तंबीह

हारून रशीद जैसे जब्बार बादशाह ने मामून रशीद की तालीम के लिए हज़रत इमाम कसाई (जो इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अलैह के खाला ज़ाद भाई और अजिल्ला उलमा व क़ुर्रा सबआ में से हैं) से अर्ज़ किया : फरमाया मैं यहाँ पढ़ाने न आऊंगा, शहज़ादा मेरे ही मकान पर आ जाया करे, हारून रशीद ने अर्ज़ की वह वहीं हाज़िर हो जाया करेगा मगर उसका सबक़ पहले हो, फरमाया यह भी न होगा बल्कि जो पहले आएगा उसका सबक़ पहले होगा। ग़रज़ मामून रशीद ने

पढ़ना शुरू किया। इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ हारून रशीद का गुज़र हुआ देखा कि इमाम कराई अपने पाँव धो रहे हैं और मामून रशीद पानी डालता है, बादशाह ग़ज़बनाक हो कर उतरा और मामून रशीद के कोड़ा मारा और कहा ओ बे अदब ख़ुदा ने दो हाथ किस लिए दिए हैं? एक हाथ से पानी डाल और दूसरे हाथ से उनका पाँव धो।

हारून रशीद ने हाथ धुलाए

एक मरतबा हारून रशीद ने अबू मुआविया ख़ुज़ैर की दावत की वह आँखों से माज़ूर थे जब आफताबा और चिलमची हाथ धोने के लिए लाई गई तो चिलमची ख़िदमतगार को दी और आफ़ताबा ख़ुद लेकर उनके हाथ धुलाए और कहा आपने जाना कौन आपके हाथों पर पानी डाल रहा है कहा नहीं, कहा हारून, कहा जैसी आपने इल्म की इज़्ज़त की ऐसी अल्लाह आपकी इज़्ज़त करे हारून रशीद ने कहा इसी दुआ को हासिल करने के लिए यह किया था।

उलमा की ताज़ीम और हारून रशीद का रुअब

हारून रशीद के दरबार में जब कोई आलिम तशरीफ़ लाते बादशाह उनकी ताज़ीम के लिए सरोक़द खड़ा होता। एक बार दरबारियों ने अर्ज़ किया या अमीरुल–मुमिनीन रुअबे सलतनत जाता है, जवाब दिया अगर उलमा–ए–दीन की ताज़ीम से रुअबे सलतनत जाता है तो जाने ही के क़ाबिल है। यही वजह थी कि उनका रुअब रू–ए–ज़मीन के बादशाहों पर बदरज–ए–अतम्म था, सलातीने नसारा उनका नाम लेते थर्राते थे।

तख़्ते कुस्तुनतुनिया पर एक ईसाई औरत हुक्मरां थी और वह हर साल ख़िराज अदा करती, जब वह मर गई तो उसका बेटा तख़्त पर बैठा और ख़िराज हाज़िर न किया, इधर से ख़िराज का मुतालबा हुआ तो उसने हज़रत हारून रशीद की ख़िदमत में एक ऐल्ची के हाथ इस मज़्मून की तहरीर भेजी कि वह मर गई जो ख़ुद प्यादा बनी थी और आपको रुख़ बनाया था।

यह तहरीर लेकर जब ऐल्ची हाज़िरे दरबार हुआ वज़ीर को हुक्म हुआ सुनाओ, वज़ीर ने उसे देख कर अर्ज़ की हुज़ूर मुझ में ताब नहीं जो इसे सुना सकूं, फरमाया ला मुझे दे और उस तहरीर को पढ़ा, बादशाह को देखते ही ऐसा जलाल आया जिसे देख कर तमाम दरबार भाग गया, सिर्फ़ वज़ीर और वह ऐल्ची रह गए वज़ीर को हुक्म हुआ कि जवाब लिख, उसने इरादा लिखने का किया मगर रुअब शाही इस क़द्र ग़ालिब था कि हाथ थर थराने लगा और क़लम न चला, फिर फरमाया ला मुझे दे और यूं लिखा :

"यह ख़त है ख़ुदा के बन्दे अमीरुल–मुमिनीन हारून रशीद की तरफ से रूम के कुत्ते फलां को कि ओ काफिरा के जने! जवाब वह नहीं जो तू सुने, जवाब वह है जो तू देखेगा।"

यह फ़रमान ऐल्ची को दिया और फौरन लश्कर को तैयारी का हुक्म दिया, ऐल्ची के साथ लश्कर लेकर पहुँचे और जाते ही क़ुस्तुनतुनिया को फतह करके उस बादशाह ईसाई को गिरफ़्तार कर लिया। उसने बहुत गिरया व ज़ारी की, हाथ पाँव जोड़े, ख़िराज देने का वादा किया, छोड़ दिया और ताज बख़्शी करके वापस आए, अभी एक मंज़िल आए थे कि ख़बर पाई उसने फिर सरताबी की, फौरन वापस गए और फिर फतह किया और फिर उसे गिरफ़्तार किया, फिर उसने हाथ जोड़े और ख़ुशामद की फिर छोड़ दिया।

ऐसे जब्बार बादशाह की उलमा के साथ यह तर्ज़े ताज़ीम थी। रहमतुल्लाह तआला अलैह।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 87 ता 89)

बेइल्म सूफ़ी मस्ख़र–ए–शैतान

सूफ़िया–ए–किराम फरमाते हैं बेइल्म सूफ़ी शैतान का मस्ख़रा है वह जानता ही नहीं शैतान

अपनी बाग डोर पर लगा लेता है।

हदीस में इरशाद हुआ, बग़ैर फ़िक़ह के आबिद बनने वाला (आबिद न फरमाया बल्कि आबिद बनने वाला फरमाया यानी बग़ैर फ़िक़ह के इबादत हो ही नहीं सकती जो आबिद बनता है वह) ऐसा है जैसे चक्की में गधा कि मेहनते शाक़्क़ा करे और हासिल कुछ नहीं।

एक साहब औलिया किराम में से थे उन्होंने एक साहिबे रियाज़त व मुजाहिदा का शोहरा सुना, उनके बड़े बड़े दावे सुनने में आए उनको बुलाया और फरमाया यह क्या दावे हैं जो मैंने सुने, अर्ज़ की मुझे दीदारे इलाही रोज़ होता है इन आँखों से, समुन्द्र पर ख़ुदा का अर्श बिछता है। और उस पर ख़ुदा जल्वा फरमा होता है।

अब अगर उनको इल्म होता तो पहले ही समझ लेते कि दीदारे इलाही दुनिया में बहालते बेदारी इन आँखों से मुहाल है सिवाए सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के, और हुज़ूर को भी आसमानों और अर्श के ऊपर दीदार हुआ, दुनिया नाम है समावात वलअर्ज़ का, उन बुज़ुर्ग ने एक आलिम साहब को बुलाया उन से फरमाया कि वह हदीस पढ़ो जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर बिछाता है, उन्होंने अर्ज़ की बेशक सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर बिछाता है, उन्होंने जब यह सुना तो समझे कि अब तक मैं शैतान को ख़ुदा समझता रहा, उसी की इबादत करता रहा, उसी को सज्दे करता रहा, कपड़े फाड़े और जंगल को चले गए फिर उनका पता न चला।

शैतान का धोखा

सैय्यदी अबुल–हसन जौसक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु, ख़लीफ़ा हैं हज़रत सैय्यदी अबुल–हसन अली बिन हेती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के और आप ख़लीफ़ा हैं हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के। आपने अपने एक मुरीद को रमज़ान में चिल्ले में बिठाया एक दिन उन्होंने रोना शुरू किया, आप तशरीफ़ लाए और फरमाया क्यों रोते हो? अर्ज़ किया हज़रत शबे क़द्र मेरी नज़रों में है शजर व हजर और दीवार व दर सज्दा में हैं, नूर फैला हुआ है, मैं सज्दा करना चाहता हूँ, एक लोहे की सलाख़ हलक़ से सीना तक है जिस से मैं सज्दा नहीं कर सकता इस वजह से रोता हूँ। फरमाया ऐ फरज़न्द वह सलाख़ नहीं वह तीर है जो मैंने तेरे सीने में रखा है और यह सब शैतान का करिशमा है, शबे क़द्र वग़ैरह कुछ नहीं, अर्ज़ की हुज़ूर मेरी तशफ़्फ़ी के लिए कोई दलील इरशाद हो, फरमाया अच्छा दोनों हाथ फैला कर तदरीजन समेटो समेटना शुरू किया, जितना समेटते थे उतनी ही रौशनी ज़ुल्मत व तारीकी से बदल जाती थी यहाँ तक कि दोनों हाथ मिल गए, बिल्कुल अंधेरा हो गया, आपके हाथों में से शोर व ग़ुल होने लगा हज़रत मुझे छोड़िए मैं जाता हूँ, तब उन मुरीदों की तशफ़्फ़ी हुई। बग़ैर इल्म के सूफ़ी को शैतान कच्चे धागे की लगाम डालता है।

शयातीन की कारगुज़ारियाँ

एक हदीस में है बाद नमाज़ अस्र शयातीन समुन्द्र पर जमा होते हैं, इब्लीस का तख़्त बिछता है, शयातीन की कारगुज़ारी पेश होती है, कोई कहता है इसने इतनी शराबें पिलाई, कोई कहता है उसने इतने ज़िना कराए, सबकी सुनी, किसी ने कहा उसने आज फलां तालिबे इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा, सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उसको गले से लगाया और कहा तूने काम किया, तूने काम किया, और शयातीन यह कैफ़ियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े बड़े काम किए उनको कुछ न कहा और इसको इतनी शाबाशी दी, इब्लीस बोला तुम्हें नहीं मालूम जो कुछ तुमने किया सब उसी का सदक़ा है। अगर इल्म होता तो वह गुनाह न करते।

एक आलिम और आबिद के पास, मअ ज़ुर्रियत इब्लीस का जाना

बताओ वह कौन सी जगह है जहाँ सबसे बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहीं एक आलिम भी रहता हो, उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया सुबह को क़ब्ल तुलूअ़ आफ़ताब शयातीन को लिए हुए उस मक़ाम पर पहुँचा और शयातीन मख़फ़ी रहे और यह इंसानी शक्ल बन कर रस्ता पर खड़ा हो गया। आबिद साहब तहज्जुद की नमाज़ के बाद नमाज़े फज्र के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ़ लाए, रास्ता में इब्लीस खड़ा ही था, सलाम अलैकुम व अलैकुमुस्सलाम, हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहब ने फरमाया जल्द पूछो मुझे नमाज़ को जाना है, उसने अपनी जेब से एक छोटी सी शीशी निकाल कर पूछा अल्लाह तआला क़ादिर है कि इन समावात व अर्ज़ को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे, आबिद साहब ने सोचा और कहा कहाँ आसमान व ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी, बोला बस यही पूछना था तशरीफ़ ले जाइए और शयातीन से कहा देखो मैंने इसकी राह मार दी, उसको अल्लाह की कुदरत ही पर ईमान नहीं इबादत किस काम की।

तुलू–ए–आफ़ताब के क़रीब आलिम साहब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए उसने कहा अस्सलामु अलैकुम व अलैकुमुस्सलाम, मुझे एक मसला पूछना है उन्होंने फरमाया पूछो जल्दी पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने वही सवाल किया फ़रमाया मल्ऊन तू इब्लीस मालूम होता है अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाख़िल कर दे।

आलिम साहब के तशरीफ़ ले जाने के बाद शयातीन से बोला देखा यह इल्म ही की बरकत है।

आलिम की ज़्यारत मूजिबे तक़र्रुब

सही हदीस में वारिद हुआ आलिम के चेहरा को देखना इबादत है, काबा मुअज़्ज़मा को देखना इबादत है, कुरआने अज़ीम को देखना इबादत है। (कंज़ुल–उम्माल, अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 71)

दीनदार आलिम वग़ैरह के बदन को मिट्टी नहीं खाती

जिन लोगों के बदन को ज़मीन नहीं खाती वह ख़ुश नसीब हज़रात यह हैं। (मुरत्तिब)

(1) हाफ़िज़, बशर्तेकि अमल करता हो कुरआन पर, बहुतेरे कुरआन की तिलावत करते हैं और कुरआन उन्हें लानत करता है। (2) आलिमे दीन और (3) शहीद फ़ी सबीलिल्लाह, (4) वली (5) और वह कि दरूद शरीफ़ बकसरत पढ़ा करता हो। (6) वह जिस्म जिसने कभी अल्लाह की नाफरमानी न की (7) और वह मुअज़्ज़िन जो बिला उजरत अज़ान दिया करता हो।

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो बिला उजरत सात बरस महज अल्लाह की रज़ा के लिए अज़ान दे उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स० 60)

कितना इल्मे दीन हासिल करना लाज़िम है

हर मुसलमान के लिए कम अज़ कम इतना दीनी इल्म हासिल करना फर्ज़ है जिससे वह ज़रूरी मसाइल जान ले मसलन तहारत व पाकी, वुज़ू व ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़े वग़ैरह बय व शरा, ख़रीद व फ़रोख़्त और दीगर ज़रूरियाते ज़िन्दगी के मसाइल का जानना मुसलमान पर फ़र्ज़ है। (मुरत्तिब)

हदीस में है "इल्मे दीन का हुसूल फर्ज़ है।" (त, तअक़्क़ुबात)

एक हदीस में है कि "इल्म हासिल करो अगरचे चीन जाना पड़े।"

(त, तअक़्क़ुबात, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 445, 446)

एक आलिमे कुरैश का मकाम

यूं तो हर आलिमे दीन से इल्म की रौशनी फैलती है और लोग उससे इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं मगर ख़ास तौर से आलिमे कुरैश के बारे में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि :

"कुरैश का एक आलिम रू–ए–ज़मीन को इल्म से भर देगा।"

(त, शरह मवाहिब, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 445)

आलिमे दीन की तौहीन कुफ़्र है

आलिमे दीन की उसके दीनी इल्म की बिना पर तौहीन व तहकीर करना कुफ़्र है, इसी लिए आलिमे दीन की ताज़ीम व तक्रीम का हुक्म है।

सुन्नी सहीहुल–अकीदा आलिमे दीन की तौहीन कुफ़्र है, अइम्म–ए–किराम ने उसकी एहानत को कुफ़्र लिखा है :

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 570)

कौन कौन इल्म सीखना फर्ज़ है

हदीस में है कि हर मुसलमान पर इल्म हासिल करना फर्ज़ है, इसका सरीह मफाद हर मुसलमान मर्द व औरत पर तलबे इल्म की फ़र्ज़ियत है, तो यह सादिक न आएगा मगर उस इल्म पर जिसका तअल्लुम फर्ज़ ऐन हो, और फर्ज़ ऐन नहीं मगर उन उलूम का सीखना जिनकी तरफ इंसान बिल–फ़ेअ्ल अपने दीन में मुहताज हो।

इनमें सबसे अहम इल्म उसूले अकाइद है जिनके ऐतकाद से आदमी मुसलमान सुन्नियुल–मज़्हब होता है और इंकार व मुख़ालिफ़त से काफिर या बिदअती, सबमें पहला फ़र्ज़ आदमी पर उसी का तअल्लुम है और उसकी एहतियाज में सब यक्सां।

★ फिर इल्म मसाइले नमाज़, यानी उसके फराइज़ व शराइत व मुफ़्सिदात जिनके जानने से नमाज़ सही तौर पर अदा कर सके।

★ फिर जब रमज़ान आए तो मसाइले सौम।

★ मालिके निसाब नामी हो तो मसाइले ज़कात।

★ साहिबे इस्तेताअत हो तो मसाइले हज।

★ निकाह किया जाए तो उसके मुतअल्लिक ज़रूरी मसले।

★ ताजिर हो तो मसाइले बैअ व शरा।

★ मज़ारेअ् पर मसाइले ज़राअत।

★ मूजिर व मुस्ताजिर पर मसाइल का इजारा।

इसी तरह हर शख़्स पर उसकी हाजते मौजूदा के मसअले सीखना फर्ज़े ऐन है और उन्हीं में से है मसाइले हलाल व हराम कि हर फर्द बशर उनका मुहताज है और मसाइले इल्म कल्ब यानी फ़राइज़े कल्बीया जैसे तवाज़ु व इख़्लास व तवक्कुल वग़ैरह और उनके तुरुक़े तहसील और महरमाते बातनीया तकब्बुर व रिया व उजुब व हसद वग़ैरह और उनके मुआलिजात कि उनका तअल्लुम भी हर मुसलमान पर अहम फराइज़ से है, जिस तरह बेनमाज़ फासिक व फाजिर मुर्तकिब कबाइर है यूं ही बेऐनेही रिया से नमाज़ पढ़ने वाला उन्हीं मुसीबतों में गिरफ़्तार है।

हाँ आयात व अहादीस दीगर कि फ़ज़ीलते उलमा व तरग़ीबे इल्म में वारिद, वहाँ उनके सिवा और उलूमे कसीरा भी मुराद हैं जिनका तअल्लुम फ़र्ज़े किफ़ाया या वाजिब या मस्नून या मुस्तहब, इसके आगे कोई दरज–ए–फ़ज़ीलत व तरग़ीब और जो उन से ख़ारिज हो, हरगिज़ आयात व

अहादीस में मुराद नहीं हो सकता, और उनका ज़ाब्ता यह है कि यह उलूम जो आदमी को उसके दीन में नाफ़े हों ख़्वाह इरालतन जैसे फ़िक़्ह व हदीस व तसव्वुफ़ बेतख़्लीत व तफ़्सीरे कुरआन बेइफ़्रात व तफ़्रीत, ख़्वाह वसातातन जैसे नहव व सर्फ़ व मआनी व ब्यान कि यह उलूम फी नफ़्सेहा अम्र दीनी नहीं मगर फ़हमे कुरआन व हदीस के लिए वसीला हैं।

इल्मे महमूद या मज़्मूम जानने का उम्दा मेअ्यार

और फ़क़ीर ग़ुफ़ेरल्लाहु तआला इसके लिए उम्दा मेअ्यार अर्ज़ करता है। मुराद मुतकल्लिम जैसे खुद उसके कलाम से ज़ाहिर होती है दूसरे के ब्यान से नहीं हो सकती।

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिन्होंने इल्म व उलमा के फ़ज़ाइले आलिया इरशाद फरमाए उन्हीं की हदीस में वारिद है कि उलमा वारिस अंबिया के हैं अंबिया ने दिरहम व दीनार तरका में न छोड़े, इल्म अपना वरसा छोड़ा है जिसने इल्म पाया उसने बड़ा हिस्सा पाया।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

बस हर इल्म में इसी क़द्र देख लेना काफी कि आया यह वही अज़ीम दौलत, नफ़ीस माल है जो अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने अपने तरका में छोड़ा, जब तो बेशक महमूद और फज़ाइले जलीला मौऊदा का मिस्दाक़, और उसके जानने वाले को लक़ब आलिम व मौलवी का इस्तेहक़ाक़, वरना मज़्मूम व बद है।

जैसे फ़लसफ़ा व नुजूम या लग्व व फ़ुज़ूल जैसे क़ाफ़िया व उरूज या कोई दुनिया का काम जैसे नक़्शा व मसाहत, बहरहाल इन फ़ज़ाइल का मूरिद नहीं न उसके साहब को आलिम कह सकें।

अइम्म–ए–दीन फरमाते हैं जो इल्मे कलाम में मशग़ूल रहे उसका नाम दफ़्तरे उलमा से महव हो जाए।

हुक्मे शरई है कि अगर कोई शख़्स उलमा–ए–शहर के लिए वसीयत कर जाए तो इन फ़ुनून का जानने वाला हरगिज़ इसमें दाख़िल न होगा।

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : इल्म तीन हैं, कुरआन, या हदीस या वह चीज़ जो वजूबे अमल में उनकी हम्सर है (गोया इज्मा व क़यास की तरफ इशारा फरमाते हैं) और उनके सिवा जो कुछ है सब फ़ुज़ूल।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 16,17)

उस्ताज़ की इज़्ज़त व तौक़ीर

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जिसने किसी बन्द–ए–मोमिन को कुरआन की एक बात सिखाई तो वह उसका आक़ा हो गया। (त, तबरानी)

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं कि जिसने मुझे एक हरफ़ सिखाया उसने मुझे अपना ग़ुलाम बना लिया अब चाहे बेच दे या आज़ाद करे। (त, तबरानी)

शाअ्बा बिन अल–हुज्जाज रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि जिस से मैंने चार या पाँच हदीसें लिखीं मैं मरते दम तक उसका ग़ुलाम हो गया। (त, मक़ासिदे हसना)

और फरमाते हैं, मैंने जिससे भी हदीस लिखी ज़िन्दगी भर उसका ग़ुलाम रहा।

(त, मक़ासिदे हसना)

हदीस में है हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस्ताज़ के लिए अदब व तवाज़ु करने से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं कि इल्म सीखो और इल्म के लिए सुकून व वक़ार सीखो और जिससे इल्म सीखते हो उसके लिए तवाज़ु व इंकिसारी करो। (त, तबरानी)

इन अहादीस व रिवायात से मालूम हुआ कि उस्ताज़ की हैसियत एक आक़ा की होती है और शागिर्द की हैसियत ग़ुलाम की, और यह कि उस्ताज़ के सामने बेअदबी से पेश न आए, किसी बात में उन से मुक़ाबला का ख़्याल न करे, हर हाल में उनकी इज़्ज़त व तक्रीम का ख़्याल रखे वरना वह इल्म की बरकत से महरूम रहेगा।

साहिबे इल्म का मरतबा तो बहुत अज़ीम है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तो हर बड़े की इज़्ज़त व एहतराम का दर्स दिया है। (मुरत्तिब)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वह हम से नहीं जो छोटे पर रहम न करे और बड़े की शराफ़त न पहचाने। (त, तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है कि वह हमारे तरीक़े पर नहीं जो छोटे पर रहम और बड़े की तौक़ीर न करे। (त, तिर्मिज़ी)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : वह मेरी उम्मत में से नहीं जो बड़े की ताज़ीम न करे और छोटे पर रहम न करे और हमारे आलिम का हक़ न पहचाने। (त, मुसनद अहमद, तबरानी, हाकिम)

इल्मे दीन को हुसूले दुनिया का ज़रिया बनाने की मज़म्मत

हदीस में है मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो इल्म को ख़ुर्दनी का ज़रिया बनाए अल्लाह तआला उसके चेहरा को मसख़ फरमा देगा और उसके दोनों पैरों को पीछे फेर देगा और आतिशे दोज़ख़ उसको ज़्यादा सज़ावार होगी। (त, किताबुल-अल्क़ाब शीराज़ी)

दूसरी हदीस में है जो इल्म में आगे बढ़े और उसकी दुनिया से बेरग़बती में इज़ाफ़ा न हो तो अल्लाह तआला से उसकी दूरी ही बढ़ेगी। (त, दैलमी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 20, 21, 22)

शागिर्द पर उस्ताज़ के हुक़ूक़

आलमगीरी में है कि आलिम का हक़ जाहिल और उस्ताज़ का शागिर्द पर यक्सां है और वह यह कि उस से पहले बात न करे और उसके बैठने की जगह उसकी ग़ीबत में भी न बैठे, और चलने में उससे आगे न बढ़े।

आलमगीरी में ग़राइब से है, आदमी को चाहिए कि अपने उस्ताज़ के हुक़ूक़े वाजिबा का लिहाज़ रखे, अपने माल में किसी चीज़ से उसके साथ बुख़्ल न करे यानी जो कुछ उसे दरकार हो बख़ुशी ख़ातिर हाज़िर करे और उसके क़बूल कर लेने में उसका एहसान और अपनी सआदत जाने।

नीज़ उसी में है, उस्ताज़ के हक़ को अपने माँ-बाप और तमाम मुसलमानों के हक़ से मुक़द्दम रखे और जिसने उसे अच्छा इल्म सिखाया अगरचे एक ही हरफ पढ़ाया हो उसके लिए तवाज़ु करे और लाइक़ नहीं कि किसी वक़्त उसकी मदद से बाज़ रहे, अपने उस्ताज़ पर किसी को तरजीह न दे, अगर ऐसा करेगा तो उसने इस्लाम के रिश्तों से एक रस्सी खोल दी, उस्ताज़ की ताज़ीम से है कि

वह अन्दर हो और यह हाज़िर हुआ तो उसके दरवाज़ा पर हाथ न मारे बल्कि उसके बाहर आने का इंतिज़ार करे।

आलिमे दीन हर मुसलमान के हक़ में उमूमन और उस्ताज़ इल्मे दीन अपने शागिर्द के हक़ में ख़ुसूसन नाइब हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम है। हाँ अगर किसी ख़िलाफ़े शरअ़ बात का हुक्म दे हरगिज़ न करे कि अल्लाह की मासियत में किसी की इताअत जाइज़ नहीं। मगर इस न मानने में गुस्ताख़ी व बेअदबी से पेश न आए, बकमाल आजिज़ी व ज़ारी माज़रत करे और बचे और अगर उसका हुक्म मुबाहात में है तो हत्तल–वसअ उसकी बजाआवरी में उसकी सआदत जाने।

उलमा फरमाते हैं : जिस से उसके उस्ताज़ को किसी तरह की ईज़ा पहुँचे वह इल्म की बरकत से महरूम रहेगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 67)

उलमा व सादात का इम्तियाज़ी इकराम

उलमा व सादात को रब्बुल–इज़्ज़त जल्ल व उला ने ऐज़ाज़ व इम्तियाज़ बख़्शा तो उनका आम मुसलमानों से ज़्यादा इकराम हुक्मे शरई की बजा आवरी और साहिबे हक़ को उसके हक़ का ईफ़ा है।

अल्लाह तआला फरमाता है, तुम फरमाओ क्या बराबर हो जाएंगे आलिम और जाहिल। (अज़्ज़ुमर, 9)

जब अल्लाह जल्ल व उला ही ने उलमा और जुहला को बराबर न रखा तो मुसलमानों पर भी उनका इम्तियाज़ लाज़िम, इसीलिए उमलाए दीन को मजालिस में सदर मक़ाम व मसनदे इकराम पर जगह देना मन्दूब व मतलूब हैं।

इम्तियाज़ी बर्ताव की नज़ीर

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमते अक़्दस में एक साइल का गुज़र हुआ उसे एक टुकड़ा अता फरमा दिया, एक शख़्स ख़ुश लिबास शानदार गुज़रा उसे बिठा कर खाना खिलाया।

इस बारे में उम्मुल–मुमिनीन से इस्तिफ़्सार हुआ फरमाया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया है कि हर शख़्स से उसके मरतबा के लाइक़ बर्ताव करो। (अबू दाऊद)

इम्तियाज़ी सुलूक की ख़्वाहिश मज़्मूम है

देखो आलिम व जाहिल और सैय्यद व ग़ैर सैय्यद का इम्तियाज़ साइल व ख़ुश लिबास से इम्तियाज़ से कहीं बढ़ कर है। हाँ उलमा व सादात को यह नाजाइज़ व मम्नूअ़ है कि आप अपने लिए सबसे इम्तियाज़ चाहें और अपने नफ़्स को और मुसलमानों से बड़ा जानें कि यह तकब्बुर है और तकब्बुर मालिके जब्बार के सिवा किसी को लाइक़ नहीं, बन्दा के हक़ में गुनाहे अकबर है।

अल्लाह तआला फरमाता है : क्या जहन्नम में नहीं है ठिकाना तकब्बुर वालों का। (अज़्ज़ुमर, 60)

इम्तियाज़ी बर्ताव क़बूल करना मम्नूअ़ नहीं

जब सब उलमा के आक़ा, सब सादात के बाप हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इंतिहा दरजा की तवाज़ु फरमाते और मक़ाम व मज्लिस व ख़ोरिश व रविश किसी अम्र में अपने बन्दगाने बारगाह पर इम्तियाज़ न चाहते तो दूसरे की क्या हक़ीक़त है,

मगर मुसलमानों को यही हुक्म है कि सबसे ज़ाइद उलमा व सादात का ऐज़ाज़ व इम्तियाज़ करें। यह ऐसा है कि किसी शख़्स को लोगों से अपने लिए तालिबे क़याम होना मकरूह, और लोगों का मुअज़्ज़म दीनी के लिए क़याम मन्दूब। फिर जब अहले इस्लाम उनके साथ इम्तियाज़े ख़ास का बर्ताव करें तो उसका क़बूल उन्हें मम्नूअ् नहीं।

अमीरुल–मुमिनीन सैय्यदना मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहुल–असनी कहीं तशरीफ़ फ़रमा हुए साहिबे ख़ाना ने हज़रत के लिए मसनद हाज़िर की, अमीरुल–मुमिनीन उस पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमाया कोई गधा ही इज़्ज़त की बात क़बूल न करेगा।

(सुनन सईद बिन मन्सूर, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 73)

औरतों को लिखना न सिखाना ही सलामत रवी

औरतों को लिखना सिखाना शरअन मम्नूअ् व तरीक़–ए–नसारा और हज़ारों फ़ित्नों का दरवाज़ा खोलना और मस्तान सरशार के हाथ में तल्वार देना है जिसके मफ़ासिदे शदीदा पर तजर्बात शाहिदे अद्ल हैं, मुतअद्दद हदीसें उस से मुमानेअत में वारिद हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया औरतों को बाला खानों पर न रखो और उन्हें लिखना न सिखाओ उन्हें कातना और सूरः नूर तालीम करो। (इब्ने हिब्बान बैहक़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अपनी औरतों को बालाखानों पर न बसाओ और उन्हें लिखना न सिखाओ। (नवादिरुल–उसूल)

एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपनी औरतों को लिखना न सिखाओ और दो मंज़िलों पर न बसाओ। (इब्ने अदी, इब्ने हिब्बान)

मर्द हर ज़माने में लाखों कातिब हुए और औरतें तेरा सौ बरस में मअ्दूद, ज़ाहिर है कि किताबत एक अज़ीम नाफ़े चीज़ है अगर किताबते निसा में हरज न होता, जम्हूर उम्मत सल्फ़ से आज तक उसके तर्क पर क्यों इत्तिफ़ाक़ करती।

बिल–जुमला सलामती का रास्ता इसी में है कि औरतों को लिखना न सिखाया जाए इसलिए बड़े–बड़े अइम्मा व उलमा–ए–किराम ने इसी तरफ मेल फरमाया, वह हर तरह हम से अलम थे। अब जो इजाज़त की तरफ जाए या हाले ज़माना से ग़ाफ़िल है या उम्मते मरहूमा की ख़ैर ख़्वाही से आतिल।

एक रिवायत में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि लुक़्मान ने एक लड़की को देखा कि मक्तब में सिखाई जा रही है फरमाया यह तल्वार किस के लिए सैक़ल की जाती है। (नवादिरुल–उसूल, हकीम तिर्मिज़ी)

इमाम इब्ने हजर फरमाते हैं इस हदीस में इल्लते नह्य किताबत की तरफ इशारा है कि औरत लिखना सीख कर ख़ुद भी फासिद ग़र्ज़ों की तरफ राह पाएगी और फासिक़ों को भी उस तक रसाई का बड़ा मौक़ा मिल जाएगा जो लिखना न जानने की हालत में न मिलता, कि आदमी वह बात लिख सकता है जो किसी की ज़ुबानी न कहला भेजेगा, नीज़ ख़त ऐल्ची से ज़्यादा पोशीदा है तो इसमें हीला व मकर की बहुत जल्द राह मिलेगी लिहाज़ा औरत लिखना सीख कर सैक़ल की हुई तल्वार हो जाती है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 154, 155, 158)

औरतों को कुछ मुफ़ीद मुफ़ीद बातों की तालीम

★ लड़कियों और औरतों को अक़ाइदे अहले सुन्नत व मसाइले अहले सुन्नत की किताबें पढ़ाई जाएं।

★ अक़ाइद व मसाइले ज़रूरीया की तालीम फ़र्ज़ है।

★ हिसाब वग़ैरह बाज़ मुफ़ीद बातें भी सिखाने में हरज नहीं।

★ उसूल हिफ़ज़ाने सेहत जहाँ तक मसाइले इस्लामिया के ख़िलाफ़ न हों उनकी तालीम में मुज़ाइक़ा नहीं।

★ और जो मुख़ालिफ़ हैं जैसे बीमारी उड़ कर लगने के वसवसे उनकी तालीम जाइज़ नहीं।

★ तदबीर मंज़िल बर–वजहे मुताबिक़ शरई व हुक़ूक़े शौहर व हुक़ूक़े औलाद, झूठ व ग़ीबत की मज़म्मत और पर्दा व हिजाब की ज़रूरत की भी तालीम हो।

★ मगर औरतों को लिखना सिखाना मना है इससे फ़ितना का चोर दरवाज़ा खुलता है।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 352)

इबादत पर इल्म का तक़द्दुम व फ़ौक़ियत

मुतअद्दद हदीसों में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :

★ इल्म, इबादत से अफ़ज़ल है। (ख़तीब इब्ने अब्दुल्लाह किताबुल–इल्म)

★ इल्म, इबादत से बेहतर है। (इब्ने अब्दुल्लाह किताबुल–इल्म)

★ इल्म, अमल से अफ़ज़ल है। (शाअ़बुल–ईमान)

★ इल्म, अमल से बेहतर है। (इब्ने हिब्बान, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 185)

जाहिल पर आलिम की फ़ज़ीलत

जाहिल, आलिम की फ़ज़ीलत को किसी तरह नहीं पहुँच सकता जबकि वह आलिम आलिमे दीन हो।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे इल्म वाले और बेइल्म।

जाहिल बवज्ह जेहल अपनी इबादत में सौ गुनाह कर लेता है और मुसीबत यह कि उन्हें गुनाह भी नहीं जानता, और आलिमे दीन अपने गुनाह में भी वह हिस्सा ख़ौफ़ व नदामत का रखता है कि उसे जल्द नजात बख़्शता है।

हदीस में इरशाद हुआ कि आलिम का हाथ रब्बुल–इज़्ज़त के दस्ते कुदरत में है अगर वह लग़्ज़िश भी करे तो अल्लाह तआला जब चाहे उसे उठा लेगा। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 336)

दुनियावी उमूर की तालीम का हुक्म

ग़ैर दीन की ऐसी तालीम कि तालीम ज़रूरी दीन को रोके मुतलक़न हराम है, फ़ार्सी हो या अंग्रेज़ी, या हिन्दी, नीज़ इन बातों की तालीम जो अक़ाइदे इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं, जैसे वजूद आसमान का इंकार, या वजूद जिन्न व शैतान का इंकार, या ज़मीन की गर्दिश से लैल व नहार, या आसमान का ख़िर्क़ वत्तियाम मुहाल होना, या ऐआद–ए–मअ़दूम ना मुम्किन होना व ग़ैरा जालिका अक़ाइदे बातिला कि फ़लसफ़ा क़दीमा जदीदा में हैं उनका पढ़ना पढ़ाना हराम है किसी ज़बान में हो, नीज़ ऐसी तालीम जिसमें नेचरियों, दहरियों की सोहबत रहे, उनका असर पड़े, दीन की गिरह सुस्त हो या खुल जाए।

और अगर जुमला मफासिद से पाक हो तो उलूमे आलिया गिरस्त रियाज़ी व हिन्दसा व हिसाब व जब्र व मुक़ाबला व जुग़राफ़िया व इम्साल ज़ालिका ज़रूरियाते दीनिया सीखने के बाद सीखने की कोई मुमानेअत नहीं किसी ज़बान में हो, और नफ़्स ज़बान का सीखना कोई हरज रखता ही नहीं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 423)

अइम्मा व उलमा किबार के लिए भी "रज़ि अल्लाहु अन्हु" कह सकते हैं

"रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम" सहाबा किराम को तो कहा ही जाएगा, अइम्मा व औलिया और उलमा–ए–दीन को भी कह सकते हैं। सलात व सलाम यानी अलैहिस्सलातु वस्सलाम, बिल–इस्तिक़लाल अंबिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के सिवा किसी के लिए नहीं हां बतबयीयत जाइज़ है।

सहाबा कि लिए रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कहा जाए। औलिया व उलमा को रहमतुल्लाह तआला अलैहिम, या क़ुद्देसत असरारहुम और अगर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम कहे जब भी मुज़ाइक़ा नहीं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 453)

लोगों को जन्नत में भी उलमा की तरफ एहतियाज

जिस तरह दीनी मसाइल के लिए दुनिया में लोगों को उलमा किराम की हाजत होती है यूंहीं जन्नत में भी लोग उलमा के मुहताज होंगे। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक अहले जन्नत, जन्नत में उलमा के मुहताज होंगे यूं कि हर जुमा को उन्हें अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा मौला सुब्हानुहू व ताअला फरमाएगा जो जी में आए मुझ से मांगो (अब जन्नत जैसे मकान में जाकर कौन सी हाजत बाक़ी है कुछ समझ में न आएगा कि क्या मांगें) उलमा की तरफ मुँह करके कहेंगे हम क्या तमन्ना करें वह फरमाएंगे अपने रब से यह मांगो तो लोग जन्नत में भी उलमा के मुहताज होंगे जिस तरह दुनिया में उनके मुहताज हैं। (इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 575)

बाअमल और बेअमल आलिम की एक अच्छी मिसाल

आलिमे शरीअत अगर अपने इल्म पर आमिल भी हो चाँद है कि आप ठंडा और तुम्हें रौशनी दे, वरना शमअ़ है कि ख़ुद जले मगर तुम्हें नफ़ा दे।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर की तालीम देता और अपने आपको भूल जाता है उस फतीला की तरह है कि लोगों को रौशनी देता है और ख़ुद जलता है। (त. बज़्ज़ार, तबरानी, "मक़ाले उरफ़ा")

अंबिया किराम की वरासत व नियाबत

उलमा–ए–किराम अंबिया इज़ाम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के वारिस व जानशीन हैं, यह उलूमे अंबिया के वारिस व अमीन हैं। उनकी वरासत दिरहम व दीनार में नहीं बल्कि उलूम मुआरिफ़ में जारी हुई इसी वजह से उलमा–ए–किराम नाइबीन अंबिया हैं अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम।(मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब आदमी कुरआन मजीद पढ़ ले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीसें जी भर के हासिल करे और उसके साथ तबीअते सलीक़ा दार रखता हो तो वह अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के नाइबों में से एक है। (तारीख़े राफ़ई, कंज़ुल–उम्माल)

रब्बानी आलिम

जो उलमा दर हक़ीक़त नाइबीने अंबिया हैं वही उलमा-ए-रब्बानी हैं, नाइबीन तीन गरोह हैं :

(1) मुहद्देसीन (2) फ़ुक़हा सूफ़िया

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : रब्बानी हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इसलिए कि तुम पढ़ते हो। (आले इमरान, 79)

और फरमाता है : बेशक हमने उतारी तौरेत उसमें हिदायत व नूर है, इससे हमारे फरमांबरदार नबी और रब्बानी और दानिशमन्द लोग यहूदियों पर हुक्म करते थे यूं कि वह किताबुल्लाह के निगहबान ठहराए गए और वह उस से ख़बरदार थे। (अल-माइदा, 44)

इन आयात में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने रब्बानी होने की वजह और रब्बानी होने की सिफ़ात इस क़दर ब्यान फरमाई कि किताब पढ़ना, पढ़ाना, उसके अहकाम से ख़बरदार होना, उसकी निगहदाश्त रखना, उसके साथ हुक्म करना, ज़ाहिर है कि यह सब औसाफ़ उलमा-ए-शरीअत में हैं तो वह ज़रूर रब्बानी हैं।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं, रब्बानी के मानी हैं फ़क़ीह मुदर्रिस। (इब्ने अबी हातिम)

नीज़ वह और उनके तलामिज़ा इमाम मुजाहिद व इमाम सईद बिन जुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम फ़रमाते हैं : रब्बानी आलिम फ़क़ीह को कहते हैं। (इब्ने अबी हातिम)

साहिबे इल्म ही दरअसल इंसान है

इमाम हुज्जतुल-इस्लाम मुहम्मद ग़ज़ाली क़ुद्देसा सिर्रहुल-आली अहया-उल-उलूम में फरमाते हैं:

हमारे इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के तिल्मीज़ रशीद अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि हदीस व फ़िक़ह व मारिफ़त व विलायत सब में इमाम अजल हैं उन से किसी ने पूछा नास यानी आदमी कौन हैं? फरमाया उलमा, इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं : जो आलिम न हो इब्नुल-मुबारक ने उसे आदमी न गिना इसलिए कि इंसान और चौपाए में इल्म ही का फ़र्क़ है, इंसान इसी सबब से इंसान है।

★ न जिस्म के बाइस कि इसका शरफ़ जिस्मानी ताक़त से नहीं कि ऊंट उससे ज़्यादा ताक़तवर है।

★ न बड़े जुस्सा के सबब कि हाथी का जुस्सा उससे बड़ा है।

★ न बहादुरी के बाइस कि शेर उस से ज़्यादा बहादुर है।

★ न ख़ुराक की वजह से कि बैल का पेट उस से बड़ा है।

★ न जिमाअ् की ग़रज़ से कि चिड़ौटा जो सब में ज़लील चिड़िया है उस से ज़्यादा जुफ़्ती की क़ुव्वत रखता है।

आदमी तो सिर्फ़ इल्म के लिए बनाया गया और इसी से उसका शरफ़ है।

आलिम से जाहिल का गुनाह दो चन्द

बाज़ लोग यह कहते हैं कि आलिम अगर एक गुनाह करे तो उसे दो गुनाहों की सज़ा मिलेगी और

जाहिल अगर एक गुनाह करे तो उसे एक ही गुनाह की सज़ा मिलेगी, मगर हदीस में इस तरह है। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : आलिम का गुनाह एक गुनाह और जाहिल का गुनाह दो गुनाह, किसी ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह किस लिए? फरमाया आलिम पर वबाल उसी का है कि गुनाह क्यों किया और जाहिल पर एक अज़ाब गुनाह का और दूसरा न सीखने का। (मुफ़ीदुल–फिरदौस, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 37)

लग़्ज़िशे आलिम की पैरवी मम्नूअ्

किसी आलिम से अगर लग़्ज़िश हो जाए तो उस से उसके रुजूअ् का इंतिज़ार किया जाए और उस लग़्ज़िश की पैरवी न की जाए। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आलिम की लग़्ज़िश से बचो और उसके रुजूअ् का इंतिज़ार रखो। (इब्ने अदी, बैहक़ी)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : आलिम से लग़्ज़िश होती है वह तो उस से रुजू कर लेता है, और उसकी ख़बर शहरों–शहरों पहुँच कर लग़्ज़िश इससे मन्कूल रह जाती है। (मुनादी फ़ैज़ुल–क़दीर, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 76)

अल्लाह के यहाँ आलिमे बाअमल की तकरीम

बा अमल आलिम की फ़ज़ीलत यह है कि मरने के बाद उसके जिस्म को मिट्टी नहीं खाएगी। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब हामिले कुरआन यानी कुरआन पर अमल करने वाले आलिम का इंतिक़ाल होता है तो अल्लाह तआला ज़मीन से फरमाता है कि तुम इसका गोश्त न खाना, ज़मीन अर्ज़ करती है ऐ रब मेरे मैं इसका गोश्त कैसे खाऊं जिसके दिल में तेरा कलाम मौजूद है। (त, इब्ने मन्दा)

एक और हदीस में है कि ज़मीन उसके जिस्म को नहीं खा सकती जिसने कोई गुनाह न किया। (त, मरूज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 135)

आलिम का चेहरा देखना मूजिबे सवाब है

कुरआने अज़ीम को देखना, काबा मुअज़्ज़मा पर नज़र करना, आलिम को ब–निगाहे ताज़ीम देखना, माँ बाप को बनज़रे मुहब्बत देखना आलिम से मुसाफ़हा करना यह सब इबादात हैं।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : पाँच चीज़ें इबादत से हैं। कम खाना, मस्जिद में बैठना, काबा को देखना, मुसहिफ़ को देखना और आलिम का चेहरा देखना। (मसनदुल–फिरदौस)

दूसरी रिवायत में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पाँच चीज़ें इबादत से हैं, मुसहिफ़ को देखना, काबा को देखना, माँ–बाप को देखना, ज़मज़म के अन्दर नज़र करना कि इससे गुनाह उतरते हैं और आलिम का चेहरा देखना। (दारुक़ुतनी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 616)

आलिमे दीन की तौहीन का असर

किसी ख़ास आलिम को किसी दुनियवी वजह से गाली देना बुरा ज़रूर है मगर कुफ़्र नहीं हो

मुतलक़न उलमा को, या ख़ास किसी आलिम को इल्मे दीन के सबब बुरा कहने से आदमी काफ़िर हो जाता है, औरत फ़ौरन निकाह से निकल जाती है, तौबा और इस्लाम लाने के बाद अगर औरत राज़ी हो तो उस से निकाह कर सकता है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 154)

हर किताब की हर बात लाइक़े ऐतबार नहीं

हर किताब की हर बात दुरुस्त व सही नहीं होती जो किताब कुरआन व हदीस और इरशादाते उलमा के मुताबिक़ हो वह लाइक़े ऐतबार है वरना उस पर अमल जाइज़ नहीं। (मुरत्तिब)

अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : जब तुममें कोई एक किताब पाए जिसमें इल्म की बात है और उसे किसी आलिम से न सुना तो बर्तन में पानी मंगा कर वह किताब उसमें डुबो दे कि सियाही सफेदी सब एक हो जाए।

(ख़तीब बग़दादी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 308)

उस्ताज़ व शागिर्द सबके लिए ख़सलते हमीदा

तवाज़ु व इंकिसारी अख़्लाक़े हसना की सबसे बड़ी मंज़िल है, अल्लाह तआला को आजिज़ी और तवाज़ु महबूब है जो उसके लिए तवाज़ु करता है उसे वह बुलन्द फरमा देता है, जो तकब्बुर करता है फ़रिश्ते उसका सर कुचल देते हैं। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मालिके कौनैन हैं मगर हुज़ूर ने तवाज़ु इख़्तियार फ़रमाई और अपनी उम्मते मरहूमा को भी इंकिसारी और तवाज़ु की तालीम दी। (मुरत्तिब)

बल्कि ख़ुद हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को रब अज़्ज़ा व जल्ल ने सहाबा की तवाज़ु फरमाने का हुक्म दिया है।

★ अल्लाह तआला फरमाता है : "मोमिनों के लिए अपना पहलू झुकाइए" (अल–हुजरात 88)

और फरमाता है : "अपने पैरु व ईमान वालों के लिए अपना बाज़ू नर्म फरमाइए।" (अश्शोरा 215)

माँ–बाप के लिए भी कुरआने अज़ीम में तवाज़ु का हुक्म है।

★ अल्लाह तआला फरमाता है : "माँ–बाप के लिए नर्म दिली से ज़िल्लत का बाज़ू बिछा"

(अल–असरा, 24)

अपने उस्ताद बल्कि शागिर्दों के लिए भी तवाज़ु का हदीस में हुक्म है।

फरमाया जाता है कि जिससे इल्म सीखते हो उसके लिए तवाज़ु करो और जिसे सिखाते हो उसके लिए तवाज़ु करो और गर्दन कश आलिम न बनो।

(ख़तीबे बग़दादी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 312)

तवक्कुल व क़नाअत

सिद्क़ व सफ़ा और अह्ले तवक्कुल व इस्तिग़ना की शान बहुत ही बुलन्द व अज़ीम है हर कस व नाकस को यह मक़ाम हासिल नहीं होता जिसे हक़ीक़ी तवक्कुल की दौलत हासिल हो वह अल्लाह तआला का मुक़र्रब हो जाता है तवक्कुल व क़नाअत अह्लुल्लाह का हिस्सा और ईमान वालों का ख़ास्सा है। (मुरत्तिब)

बिलाल से हुज़ूर का फरमान

हदीस पाक में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सैय्यदना बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया : ऐ बिलाल ख़र्च कर और अर्श के मालिक से कमी का अन्देशा न कर। (तबरानी, बैहक़ी)

इस हदीस का मूरिद यूं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास एक मन ख़ुरमा मुलाहिज़ा फरमाया, इरशाद हुआ बिलाल यह क्या है? अर्ज़ की हुज़ूर के मेहमानों के लिए रख छोड़ा है, फरमाया क्या डरता नहीं कि इसके सबब आतिशे दोज़ख़ में तेरे लिए धुवां हो, ख़र्च कर ऐ बिलाल! और अर्श के मालिक से कमी का ख़ौफ़ न कर। (बज़्ज़ार, तबरानी, बैहक़ी)

बल्कि ख़ुद उन ही बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से फरमाया, ऐ बिलाल फ़क़ीर मरना और ग़नी न मरना, अर्ज़ की इसके लिए क्या तरीक़ा बरतूं, फरमाया जो तुझे मिले उसे न छुपा और जो कुछ तुझ से मांगा जाए उसको मना न कर, अर्ज़ की या रसूलुल्लाह यह मैं क्योंकर कर सकूं फ़रमाया या यह या नार।(तबरानी, हाकिम)

हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को इस बात की ताकीद इसलिए है कि वह असहाबे सुफ़्फ़ा से थे, और उन हज़राते किराम का अह्द था कि कुछ पास न रखेंगे।

सबका हुक्म यक्सां नहीं

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि हाँ और हम भी नहीं कहते कि ऐसा करना हर एक पर लाज़िम है मगर उन हज़रात पर उसके लाज़िम फरमाने ही से साबित होता है कि यह काम फ़ी नफ़्सेही महमूद है और सादिकुत्तवक्कुल को इसकी इजाज़त, वरना उनको भी मना किया जाए।

- ★ जैसे एक साहब ने उम्र भर रात को न सोने का अहद किया।
- ★ एक ने उम्र भर रोज़े रखने का।
- ★ एक ने कभी निकाह न करने का।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस पर नाराज़ी फरमाई और इरशाद हुआ मैं रोज़ा भी रखता हूँ और इफ़्तार भी करता हूँ, और शब को नमाज़ भी पढ़ता हूँ और आराम भी फरमाता हूँ, और निकाह करता हूँ तो जो मेरी सुन्नत से बेरग़बती करे वह मुझ से नहीं।

(तबरानी, हाकिम)

एक शख़्स ने प्यादा हज की मिन्नत मानी, ज़ुअफ़ से दो आदमियों पर तकिया दिए चल रहा था, उसे सवार होने का हुक्म दिया और फरमाया अल्लाह तआला इससे बेनियाज़ है कि यह अपनी जान को अज़ाब में डाले। (तबरानी, हाकिम, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 181)

हुज़ूर और अह्ले बैत का तवक्कुल

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुतवक्केलीन के सरदार हैं, दोनों जहान में

हुज़ूर से बढ़ कर मुतवक्किल कोई नहीं, आलम यह है कि काशान–ए–नुबुव्वत में दो–दो महीने आग रौशन न होती, सिर्फ़ ख़ुर्मे और पानी पर अह्ले बैते अतहार की गुज़र रहती। (मुरत्तिब)

उम्मुल–मुमिनीन सिदीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से फरमाया, ऐ मेरे भांजे ख़ुदा की क़सम! हम एक हलाल देखते, फिर दूसरा, फिर तीसरा, दो महीनों में चाँद, और काशानहाए नबुव्वत में आग रौशन न होती, उरवा ने अर्ज़ की ऐ ख़ाला फिर अह्ले बैते किराम महीनों क्या खाते थे फरमाया बस दो सियाह चीज़ें छोहारे और पानी।

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 550)

"कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी गिज़ा"

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बादशाहे दो आलम हैं तमाम जहान मिल्क है मगर कमल ओढ़ते और मताअ् दुनिया से ख़ाली हाथ रखते हैं।

एक बार नमाज़ की इक़ामत हो गई तक्बीर तहरीमा फरमाना चाहते हैं कि दफ़अतन सहाबा को इरशाद हुआ अपनी जगह ठहरे रहो काशान–ए–अक़्दस में तशरीफ़ ले गए फिर बरामद हुए और इरशाद फरमाया मुझे याद आया कि आज तीन दीनार बाक़ी हैं, मैं डरा कि रात गुज़रे और वह बाक़ी रहें लिहाज़ा जाकर उन्हें तसद्दुक़ फरमा आया। (बुख़ारी)

बन्द–ए–बारगाह अर्ज़ करता है।

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी गिज़ा

अस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

नीज़ अर्ज़ रसा है –

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं

दो जहाँ की नेअ्मतें हैं उनके खाली हाथ में

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 66)

तवक्कुल और तदबीर

इंसान अल्लाह तआला की रहमते कामिला और उसके फ़ज़्ल व एहसान पर तकव्वुल करे और तदबीर का भी सहारा ले, न बग़ैर तदबीर के तवक्कुल हो, न बग़ैर तवक्कुल के तदबीर, बल्कि दोनों पर नज़र व ऐतमाद ज़रूरी है। (मुरत्तिब)

हदीस में है एक सहाबी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की अपनी ऊंटनी यूंहीं छोड़ दूँ और ख़ुदा पर भरोसा रखूं या उसे बांधूं और ख़ुदा पर तवक्कुल करूं, हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया बांध दे और तकिया ख़ुदा पर रख। (शाअ्बुल–ईमान)

साफ़ इरशाद है कि तदबीर करो मगर उस पर एतमाद न कर लो, दिल की नज़र तक़्दीर पर रहे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 182)

तवक्कुल और दुनिया की हक़ीक़त

दुनिया की मुहब्बत में पड़ कर एक–एक पैसा जोड़ना और आज की चीज़ कल के लिए उठा रखना यह तवक्कुल व क़नाअत के मनाफ़ी और अह्लुल्लाह के तरीक़े के ख़िलाफ़ है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : दुनिया में यूं रह गोया तू मुसाफिर बल्कि राह चलता है और अपने आपको क़ब्र में समझ, सुबह करे तो दिल में यह ख़्याल न ला कि शाम होगी और शाम हो यह न समझ की सुबह होगी।

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ लोगो क्या तुम्हें

शर्म नहीं आती, हाज़िरीन ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह किस बात से? फरमाया जमा करते हो जो न खाओगे और इमारत बनाते हो जिसमें न रहोगे और वह आरज़ूएं बाँधते हो जिन तक न पहुँचोगे, इस से शरमाते नहीं। (तबरानी)

एक हदीस में है उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक महीने के वादे पर एक कनीज़ सौ दीनार को ख़रीदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या उसामा से तअज्जुब नहीं करते जिसने एक महीने के वादे पर ख़रीदी बेशक उसामा की उम्मीद लम्बी है क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है मैं तो जब आँख खोलता हूँ यह गुमान होता है कि पलक झपकने से पहले मौत आ जाएगी और जब प्याला मुँह तक ले जाता हूँ कभी यह गुमान नहीं करता कि इसके रखने तक ज़िन्दा रहूँगा और जब कोई लुक़्मा लेता हूँ गुमान होता है कि इसे हलक़ से उतारने न पाऊंगा कि मौत उसे गले में रोक देगी। क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है बेशक जिस बात का तुम्हें वादा दिया जाता है ज़रूर आने वाली है और तुम थका न सकोगे। (बैहक़ी, अबू नईम)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को दीवार पर कहगल और टट्टी दुरुस्त करते देखा फरमाया ऐ अब्दुल्लाह क्या है अर्ज़ की इसे दुरुस्त करता हूँ फरमाया मुआमला उस से क़रीब तर है। (अबू दाऊद व तिर्मिज़ी)

एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गर्दन मुबारक पर दस्ते अक़्दस रख कर फरमाया यह इब्ने आदम है और यह उसकी मौत है फिर दस्ते अनवर फैला कर फरमाया और वह इतनी दूर उसकी उम्मीद है, इतनी दूर उसकी उम्मीद है। (तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा)

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दुनिया बेघरों का घर है, और इसके लिए वह जमा करता है जो बेअक़्ल है। (शअ्बुल–ईमान)

एक हदीस में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो दुनिया जोड़कर रखे कि बक़ा–ए–ज़िन्दगी चाहता हो तो ज़िन्दगी तो अल्लाह के हाथ है सुन लो मैं न अशरफ़ी जोड़ कर रखता हूँ न रुपया न कल के लिए खाना उठा कर रखूं। (अबू अश्शैख़, किताबुस्सवाब)

हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुतवक्केलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने नफ़्से करीम के लिए कल का ख़ाना बचा रखना पसन्द न फरमाते।

एक बार ख़ादिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने परिन्द का गोश्त कि आज तनावल तो फरमाया था बचा हुआ दूसरे दिन हाज़िर किया फरमाया क्या हमने मना न फरमाया कि कल के लिए कुछ उठा कर न रखना कल की रोज़ी अल्लाह कल देगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दुनिया बेघरों का घर है और इसके लिए अहमक़ ही जमा करेगा। (अबू याला, बैहक़ी)

हक़ीक़ी तवक्कुल तो यही है कि कल के लिए कुछ उठा कर न रखा जाए, लेकिन अगर साहिबे जाइदाद है और उसकी आमदनी ख़र्च से ज़ाइद है तो उसकी आमदनी से बक़द्र ख़र्च रख कर बाक़ी का तसद्दुक़ मुतलक़न अफ़्ज़ल है, अगर दख़्ल माहाना है तो एक महीना का ख़र्च रख कर और सालाना है तो एक साल का, इससे ज़ाइद का जमा रखना हिर्स व हुब्बे दुनिया बताता है और दुनिया की मुहब्बत ही ख़ता की जड़ है।

हदीस में अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बनू नुज़ैर के माले ग़नीमत से एक साल का ख़र्च अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए निकाल लेते और जो बचता उसे फ़ुक़रा व मसाकीन में सर्फ़ फरमा देते थे। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

और अगर जाइदाद नहीं रखता अयाल के लिए इतना पस अंदाज़ करना कि अगरचे मर जाए तो वह इस बकिया से नफ़ा उठाएं और उन्हें भीख माँगनी न पड़े अफ़ज़ल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि तुम्हारा अपनी औलाद को मुहताज व दस्त नगर छोड़ने से मालदार व साहिबे सरवत छोड़ना बेहतर है क्योंकि उन्हें मुहताज व मुफ़्लिस छोड़ने की सूरत में वह लोगों के सामने हाथ फैलायेंगे। (त. बुखारी व मुस्लिम)

सिद्दीक़ व फ़ारूक़ का तवक्कुल

जिसकी सब अयाल साबिर व मुतवक्किल हों उसे रवा होगा कि सब राहे ख़ुदा में खर्च कर दे और जिसकी औलाद ऐसी नहीं वह बक़द्र हाजत जमा रखे। इसकी मिसाल सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की ज़िन्दगी में यह है। (मुरत्तिब)

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक बार सदक़ा का हुक्म फरमाया अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं ख़ुश हुआ कि अगर सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर सबक़त ले जाऊंगा, तो इस बार कि मेरे पास माल बहुत है और उनके पास कम। फारूक़े आज़म ने अपने तमाम माल का निस्फ़ हाज़िर लाए इरशाद हुआ अयाल के लिए क्या छोड़ा अर्ज़ की इतना ही। सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तमाम व कमाल इतना अपना सारा माल हाज़िर लाए इरशाद हुआ अयाल के लिए क्या छोड़ा अर्ज़ की अल्लाह और उसका रसूल, जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यह सुनकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम दोनों में वही फ़र्क़ है जो तुम दोनों के जवाबों में। (बुख़ारी व मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 506 ता 508)

इस्तिग़ना और परसाई

अल्लाह तआला बन्दों के साथ वैसा ही मुआमला फरमाता है जैसा उसके दिल में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के तअल्लुक़ से अक़ीदा व अज़मत होती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के भरोसा पर ख़ल्क़ से बेपरवाही करेगा अल्लाह तआला उसे ग़नी कर देगा और जो सच्चे दिल से पारसा बनना चाहेगा अल्लाह तआला उसे पारसा बना देगा।

(मुसनद अहमद, निसाई, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 315)

इब्ने आदम का लालच

इन्सान के अन्दर लालच एक ऐसी बात है कि वह किसी एक मक़ाम पर रुकेगी नहीं एक चीज़ के बाद दूसरी चीज़ की आरज़ू होती जाएगी तमन्ना और आरज़ू का सिलसिला किसी एक हद पर ख़त्म नहीं होगा। लालच, तवक्कुल व क़नाअत के मनाफ़ी है लालची इंसान मुतवक्किल नहीं हो सकता जब तक दिल को ख़्याले ग़ैर से पाक करके ज़ाते बारी तआला की तरफ लौ न लगाई जाए उस वक़्त तक अल्लाह पर वसूक़ व तवक्कुल की मंज़िल हासिल न होगी क्योंकि अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे आमाल और तुम्हारे ख़ुलूस को देखता है।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अगर इब्ने आदम के लिए एक जंगल भर सोना हो तो दूसरा जंगल और मांगे और दो जंगल हों तो तीसरा और चाहे और इब्ने आदम का पेट नहीं भरती मगर खाक और ताइब की तौबा अल्लाह क़बूल फ़रमाता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया, जिल्द 6, स0 371)

सब्र व शुक्र

सब्र व शुक्र इंसान का एक अज़ीम वस्फ़ है वह शख़्स क़ानेअ् और मुतवक्किल कहलाता है जो सब्र व शुक्र करने को अपनी ज़िन्दगी का मामूल बना लेता है शुक्र गुज़ार बन्दों को अल्लाह तआला महबूब व पसन्दीदा रखता है अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ होता है, मसाइब पर सब्र करना और इंआमात के मिलने पर शुक्र करना अहलुल्लाह का क़दीम तरीक़ा है, क़ुरआने अज़ीम में मुतअद्दिद मक़ामात पर सब्र व शुक्र की तल्क़ीन की गई है और अहादीसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में भी साबिर व शाकिर के फज़ाइल इरशाद हुए हैं। (मुरत्तिब)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सब्र व शुक्र

सैय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक मरतबा लोगों के साथ तशरीफ़ लिए जा रहे थे रास्ता में निहायत लतीफ़ ख़ुशबू आई तमाम लोगों ने क़सदन उसे सूंघा और आपने नाक बन्द कर ली, आगे चल कर एक निहायत तेज़ बदबू आई सबने नाक बन्द कर ली मगर आप खोले रहे, लोगों ने सबब पूछा इरशाद फरमाया वह नेअ्मत थी मैंने ख़ौफ़ किया कि शायद मैं उसका शुक्रिया अदा न कर सकूं और यह बला थी उस पर मैंने सब्र किया। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 40)

एक औरत को सब्र की तल्क़ीन

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में मुलाहिज़ा फ़रमाया कि एक औरत अपने लड़के की मौत पर नौहा कर रही है हुज़ूर ने मना फरमाया और इरशाद फरमाया सब्र कर, वह अपने हाल में ऐसी बेख़बर थी कि उसको न मालूम हुआ कि कौन फरमा रहे हैं, जवाब बेहूदा दिया कि आप तशरीफ़ ले जाएं मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें, हुज़ूर तशरीफ़ ले गए बाद को लोगों ने उस से कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया था वह घबराई और फौरन दरबार में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे मालूम न हुआ कि हुज़ूर मना फरमा रहे हैं अब मैं सब्र करती हूँ, इरशाद फरमाया सब्र पहली ही बार करती तो सवाब मिलता फिर तो सब्र आ ही जाता है। (बुख़ारी, अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 62)

बिला रहमते इलाही कोई भी मुस्तहिक़े जन्नत नहीं

हदीस में इरशाद हुआ कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रहमत के अपने आमाल से जन्नत में नहीं जा सकता सहाबा ने अर्ज़ की, आप भी नहीं या रसूलुल्लाह। इरशाद फरमाया और मैं भी जब तक कि मेरा रब रहमत न फरमाए। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

गुनाह न सही इस्तेहक़ाक़ किस बात का है, दुनिया ही का क़ाइदा देखिए अगर अजीर है मज़्दूरी करेगा उजरत पाएगा और अगर अब्द है मम्लूक है कितनी ही ख़िदमत करे कुछ न पाएगा हम सब तो उसी की मख़्लूक़ व मम्लूक हैं उसकी रहमत ही रहमत है। आप ही बन्दों को तौफ़ीक़ दी, आप ही उनको असबाब दिए, आप ही आसान फरमाया, और फरमाता है बदला है उनके नेक अमलों का।

सब्रे अय्यूब अलैहिस्सलाम

क्या अच्छा बन्दा है अय्यूब अलैहिस्सलातु वस्सलाम कितने अरसा तक बला में मुब्तला रहे और सब्र भी कैसा जमील फरमाया जब उससे नजात मिली अर्ज़ किया इलाही मैंने कैसा सब्र किया इरशाद हुआ और तौफ़ीक़ किस घर से लाया, अय्यूब अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने सर पर खाक उड़ाई अर्ज़ किया बेशक अगर तौफ़ीक़ न अता फरमाता तो मैं सब्र कहाँ से करता।

(अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 74)

शुक्र व नाशुक्री

हदीस में है हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी पर कोई एहसान करे और उसके बदले में वह अच्छी तारीफ़ करे तो उसने मुनइम का शुक्रिया अदा

किया और जिस ने उसे छुपाया उसने उसकी नाशुक्री की।

एक रिवायत में है कि जिसने सनाए हुस्न की उसने शुक्र किया और जिसने उसे छुपाया उसने नाशुक्री की। (त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है कि जो क़लील का शुक्र नहीं करता वह कसीर का भी शुक्र नहीं करेगा। (त, बैहक़ी)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अल्लाह का शुक्र नहीं करता वह लोगों का शुक्रगुज़ार नहीं। (त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो लोगों का शुक्र नहीं करता वह अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार नहीं। (त, तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआला कुरआने अज़ीम में फरमाता है : अगर तुम शुक्र करोगे तो हम तुम पर नेमतें ज़्यादा करेंगे और अगर नाशुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है।

(त, इब्राहीम, 7, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 19)

बच्चे की मौत पर सब्र का अज्र

अगर किसी मुसलमान के एक या दो तीन बच्चे कम उम्री में फौत हो जाएँ और वह उनकी मौत पर गिरिया व ज़ारी न करे बल्कि सब्र व शुक्र करे कि अल्लाह के हुक्म से पैदा हुए और अल्लाह के हुक्म से वफात पा गए तो वह रोज़े क़यामत अज्र अज़ीम का मुस्तहिक़ होगा और यह कि वही बच्चे अपने वालिदैन की शफ़ाअत करेंगे और उनके हाथ पकड़ कर जन्नत में ले जाएंगे। (मुरत्तिब)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : यूंही है कि सब्र करने वालों को उनका अज्र पूरा पूरा दिया जाएगा बेशुमार। (अज़्ज़ुमर, 10)

और फ़रमाता है : ऐसे ही लोगों पर दरूदें हैं उनके रब की तरफ से और मेहरबानी और यही लोग राह पाने वाले हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जिसके तीन बच्चे नाबालिग़ी में मरेंगे अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फरमाएगा उस रहमत की ज़्यादत से जो उन बच्चों पर फरमाएगा। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई, इब्ने माजा)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिस मुसलमान के तीन बच्चे नाबालिग़ मरेंगे वह जन्नत के आठों दरवाज़े से उसका इस्तिक़्बाल करेंगे कि जिससे चाहे दाख़िल हो।

(इब्ने माजा)

एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यही हदीसे मज़्कूर ब्यान फरमाई सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह, या दो फरमाया, या दो अर्ज़ की या एक फरमाया, या एक। फिर फरमाया क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है कि कच्चा बच्चा जो गिर जाता है अगर सवाबे इलाही की उम्मीद में उसकी मां सब्र करे तो वह अपने नाल से अपनी माँ को जन्नत में खींच ले जाएगा। (मुसनद अहमद, तबरानी)

एक हदीस में है जब मुसलमान का बच्चा मरता है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरिश्तों से फरमाता है तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ कर ली, अर्ज़ करते हैं हाँ, फरमाता है तुमने उसके दिल का फल तोड़ लिया, अर्ज़ करते हैं हाँ, फरमाता है फिर मेरे बन्दे ने क्या कहा, अर्ज़ करते हैं तेरा शुक्र किया और इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन, कहा फरमाता है मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम हम्द का मकान रखो।

(मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 141)

मुजाहिदा और नफ़्स कुशी

इंसानी क़ल्ब व निगाह की तत्हीर व सफ़ाई के लिए मुजाहिदा और नफ़्स को मारना ज़रूरी है। इबादत व रियाज़त के साथ आदमी इंसानी ख़्वाहिशात और हिर्स व लालच से दूर हो कर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ मुतवज्जेह हो जाए तो उस पर बारगाहे इज़्ज़त से फ़ैज़ान जारी होगा मुजाहिदा और नफ़्स को क़ाबू में रखने के लिए उसका रास्ता आसान हो जाएगा। (मुरत्तिब)

मुजाहिदा की मुद्दत

मुजाहिदे के लिए कम अज़ कम 80 बरस दरकार होते हैं बाक़ी तलब ज़रूर की जाए।

यहाँ एक शुबह यह पैदा होता है कि एक शख़्स 80 बरस की उम्र से मुजाहिदात करे या 80 बरस मुजाहिदा करे, तो इसका इज़ाला करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

मक़्सूद यह है कि जिस तरह इस आलम में मुसबबात को असबाब से मरबूत फ़रमाया गया है इसी तरीक़ा पर अगर छोड़ें और जज़्ब व इनायते रब्बानी, बईद को क़रीब न कर दे तो उस राह की क़तअ़ को 80 बरस दरकार हैं और रहमत तवज्जह फ़रमाए तो एक आन में नसरानी से अब्दाल कर दिया जाता है। और सिद्क़े नीयत के साथ यह मश्ग़ूले मुजाहिदा हो तो इम्दादे इलाही ज़रूर कार फ़रमा होती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : वह जो हमारी राह में मुजाहिदा करें हम ज़रूर उन्हें अपने रास्ते दिखाएंगे। (अल–अंकबूत, 69)

दीनी ख़िदमात और मुजाहिदा

जो आलिमे दीन मज़्हब अह्ले सुन्नत की हिमायत व हिफ़ाज़त और बद मज़्हबों के रद्द व इब्ताल में रहे तो उसके लिए यह दीनी ख़िदमत बेहतर है या मुजाहिदा? इस बात की वज़ाहत करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं कि:

आलिमे दीन के लिए यही ख़िदमात मुजाहिदात हैं बल्कि अगर नीयते सालेहा है तो इन मुजाहिदों से आला।

इमाम अबू इसहाक़ असफराईनी जब उन्हें मुब्तदेईन की बिदआत की इत्तिला हुई, पहाड़ों पर उन अकाबिर उलमा के पास तशरीफ़ ले गए जो तर्के दुनिया व माफ़ीहा करके मुजाहिदात में मसरूफ़ थे, उनसे फ़रमाया :

उसे सूखी घास खाने वालो तुम यहाँ हो और उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़ित्नों में हैं उन्होंने जवाब दिया कि इमाम यह आप ही का काम है हम से हो नहीं सकता। वहाँ से वापस आए और मुब्तदेईन के रद्द में नहरें बहाएं।

दुनियावी तफ़क्कुरात और क़ल्ब जारी

दुनियवी तफ़क्कुरात का क़ल्ब जारी पर असर होता है। दुनिया की फ़िक्रें जारी क़ल्ब की हालत में ज़रूर फ़र्क डालती हैं।

क़ल्ब जारी वह क़ल्ब है जो ख़ुदा व रसूल जल्ल व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़िक्र शरीफ़ में जागता रहे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 7,8)

जिहादे अकबर क्या है?

सारा मुजाहिदा इस आयते करीमा में जमा फ़रमा दिया गया है, अल्लाह तआला फ़रमाता है जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे और नफ़्स को ख़्वाहिशों से रोके बेशक तो जन्नत ही ठिकाना है। यही जिहादे अकबर है।

हदीस में है जिहादे कुफ़्फ़ार से वापस आते हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हम अपने छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ फिरे।

एक साहब की ख़्वाहिश

एक साहब को अनार की ख़्वाहिश में तीस बरस गुज़र गए और न खाया, उसके बाद ख़्वाब में ज़यारते अक़्दस हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ हुए, कि फरमाते हैं तेरे नफ़्स का भी कुछ तुझ पर हक़ है। सुबह उठे अनार खाया। अब नफ़्स ने दूध की ख़्वाहिश की। फरमाया तीस बरस ख़्वाहिश कर शायद हुज़ूर तशरीफ़ लाएं और फरमाएं इस से यही बेहतर है कि सब्र कर, फौरन ख़लिश दूर हो गई।

नफ़सानी और शैतानी ख़्वाहिश में इम्तियाज़ का तरीक़ा

इस क़िस्म की ख़्वाहिश या तो नफ़्सानी हुआ करती है या शैतानी, जिसके दो इम्तियाज़ सहल हैं।

★ एक यह कि शैतानी ख़्वाहिश में बहुत जल्द का तक़ाज़ा होता है कि अभी कर लो क्योंकि उजलत शैतान की तरफ से हुआ करती है और नफ़्स को ऐसी जल्दी नहीं होती।

★ दूसरी यह कि नफ़्स अपनी ख़्वाहिश पर जमा रहता है, जब तक पूरी न हो उसे बदलता नहीं, उसे वाक़ई उसी शय की ख़्वाहिश होती है, अगर शैतानी हुई तो एक चीज़ की ख़्वाहिश हुई वह न मिली, दूसरी चीज़ की हुई, वह न मिली तीसरी की हो गई, इस वास्ते कि उसका मक़्सद गुमराह करना है ख़्वाह किसी तौर पर न हो।

एक बुज़ुर्ग का घड़ा

एक साहब एक बुज़ुर्ग के यहाँ आए देखा कि पानी पीने का घड़ा धूप में रखा है, उन्होंने कहा पानी धूप में रखा रह गया गर्म हो गया, फ़रमाया सुबह तो साया ही था फिर धूप आ गई, मैंने अल्लाह से शर्म की कि नफ़्स की ख़ातिर क़दम उठाऊं।

हज़रत सिर्री सिक़ती का कूज़ा

हज़रत सिर्री सिक़ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का रोज़ा था ताक़ में पानी ठंडा होने के लिए आबख़ोरा में रख दिया था, अस्र के मुराक़बा में थे हूराने बहिश्ती ने यके बाद दीगरे सामने से गुज़रना शुरू किया, जो सामने आती उससे दरयाफ़्त फरमाते तू किसके लिए है, वह एक बन्द-ए-ख़ुदा का नाम लेती, एक आई उस से पूछा उसने कहा मैं उसके लिए हूँ जो रोज़ा में पानी ठंडा होने को न रखे, फरमाया अगर तू सच कहती है तो उस कूज़ा को गिरा दे, उसने गिरा दिया, उसकी आवाज़ से आँख खुल गई देखा तो वह आबख़ोरा टूटा पड़ा है। (जामे करामाते औलिया)

एक आबिद और फासिक़

दो फरिश्ते आपस में मिले एक ने पूछा कहाँ जाते हो, दूसरे ने कहा फलां आबिद के हाथ में दूध का प्याला है और वह पीना चाहता है मुझे हुक्म है कि जाकर पर मारूं और गिरा दूँ, और तुम कहाँ जाते हो कहा एक फासिक़ देर से दरिया में बंछी डाले बैठा है और मछलियाँ नहीं फंसतीं मुझे हुक्म है जाऊं और फांस दूँ।

अगर चालीस दिन गुज़र जाएं कि कोई इल्लत या क़िल्लत या ज़िल्लत न हो तो ख़ौफ़ करे कि कहीं छोड़ न दिया गया।

हदीस में है जब कोई मक़्बूल बन्दा रब अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ अपनी किसी हाजत के लिए हाथ उठाता है और गिड़ गिड़ाता है, जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इरशाद होता है ऐ जिब्रील इसकी हाजत रहने दे कि मुझे इसका गिड़गिड़ाना और मेरी तरफ़ मुँह उठाना अच्छा मालूम होता है। और जब कोई फासिक़ अपनी हाजत के लिए हाथ उठाता है इरशाद होता है ऐ जिब्रील इसकी हाजत जल्द रवा कर दे कि मुझे अपनी तरफ इसका मुँह उठाना अच्छा नहीं मालूम होता।

फ़ाइदा

इस हदीस पाक में एक बड़ा फाइदा यह भी है कि जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाजत रवा हैं फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हाजत रवा व मुश्किल कुशा व दाफ़ेउल-बला मानने में किस मुसलमान को तअम्मुल हो सकता है, वह तो जिब्रील के भी हाजत रवा हैं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 100 ता 102)

झूठ और ग़ीबत

मुसलमानों को रास्तबाज़ी और अमन आम्मा की तालीम दी गई है। झूठ, ग़ीबत, चुग़ली और बदी से मना किया गया है इस्लाम चूंकि एक मुहज़्ज़ब मज़हब है वह अपने मानने वालों को सालेह और नेक देखना चाहता है उसने क़दम–क़दम पर इंसान की रहनुमाई की अच्छाईयों का हुक्म दिया और बुराईयों से रोका। झूठ और ग़ीबत जो बुरी बातें हैं शरीअते इस्लामिया ने उन से रोका और उनके मुर्तकिब के लिए ज़िल्लत व अज़ाब की वईदें सुनाई। (मुरत्तिब)

झूठ और ग़ीबत की नजासत

झूठ और ग़ीबत मानवी नजासत हैं इसलिए झूठे के मुँह से ऐसी बदबू निकलती है कि हिफ़ाज़त के फ़रिश्ते उस वक़्त उसके पास से दूर हट जाते हैं जैसा कि हदीस में वारिद हुआ है, और इसी तरह एक बदबू की निस्बत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी कि यह उनके मुँह की सड़ान्द (तेज़ बदबू) है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं।

(निहायतुल– मुराद, सैय्यदी अब्दुल–ग़नी, नावलुसी)

और हमें जो झूठ या ग़ीबत की बदबू महसूस नहीं होती उसकी वजह यह है कि हम उस से मानूस हो गए, हमारी नाकें, उससे भरी हुई हैं, जैसे चमड़ा पकाने वालों के मुहल्ला में जो रहता है उसे उसकी बदबू से ईज़ा नहीं होती, दूसरा आए तो उससे नाक न रखी जाए।

एक नफ़ीस फाइदा

मुसलमान इस नफ़ीस फाइदे को याद रखें और अपने रब से डरें, झूठ और ग़ीबत तर्क करें, क्या मआज़ल्लाह मुँह से पाखाना निकलना किसी को पसन्द होगा, बांतिन की नाक खुले तो मालूम हो कि झूठ और ग़ीबत में पाखाने से बदतर बदबू है।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब कोई शख़्स झूठ बोलता है उसकी बदबू के बाइस फरिश्ता एक मील मुसाफ़त तक उससे दूर हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर थे कि एक बदबू उठी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जानते हो कि यह बदबू क्या है? यह उनकी बदबू है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 192)

बद मज़हब व फासिक़ की ग़ीबत

बिला वजह शरई वह बात करनी मक्रूह है जिस से उसकी ग़ीबत का दरवाज़ा खुले मगर जबकि जिसकी बुराई ब्यान की वह गुमराह या बद मज़हब या फासिक़ व फाजिर है तो उसकी शुनाअत व बुराई से मुसलमानों को मुत्तला करना वाजिबाते दीनीया से है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं क्या फाजिर की बुराई ब्यान करने से परहेज़ रखते हो, लोग उसे कब पहचानेंगे, फाजिर में जो बुराईयाँ हैं उन्हें ब्यान करो कि लोग उससे परहेज़ करें।

(तबरानी, बैहक़ी, इब्ने अबी अद्दुनिया, तारीख़ ख़तीब)

फ़ुज़ूल गोई अच्छे मुसलमान की शान नहीं

फ़ुज़ूल व ला यानी बात करने की हदीस में मुमानेअत आई है मुसलमान को ला यानी बात में पड़ना मुनासिब नहीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि इंसान के इस्लाम की ख़ूबी से है यह बात कि ग़ैर मुहिम काम में मश्ग़ूल न हो, ला यानी बात तर्क करे। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बैहक़ी)

जितनी बात आदमी के दीन में नाफ़े और सवाबे इलाही की बाइस हो, या दुनिया में ज़रूरत के लाइक़ हो, जैसे भूख प्यास का इज़ाला, बदन ढांकना, पारसाई हासिल करना, इसी क़द्र अम्रे मुहिम है।

और इससे ज़ाइद जो कुछ हो जैसे दुनिया की लज़्ज़तें, नेमतें, मंसब, रियासतें, ग़रज़ जुमला अफ़आल व अक़्वाल व अहवाल, जिनके बग़ैर ज़िन्दगानी मुम्किन हो, और उनके तर्क में न सवाब का फ़ौत, न अब या आइंदा किसी ज़रर का ख़ौफ़, वह सब ला यानी व क़ाबिले तर्क हैं।

मसलन लोगों के सामने अपने सफर की हिकायतें कि इतने–इतने शहर और पहाड़ और दरिया देखे (मगर जबकि उनके ज़िक्र में अपनी या सामईन की मंफ़ेअत दीनी हो और ख़ालिस उसी का क़स्द करे) यह मुआमलात पेश आए (मगर जबकि उस से मक़्सूद अपने ऊपर एहसानाते इलाही का ब्यान हो कि ऐसी जगह ऐसी बेसरो सामानी में मुझ से नाचीज़ को अपने करम से ऐसा–ऐसा अता फरमाया) फलां फलां खाने और लिबास उम्दा पाए। (मगर जबकि उलमा–ए–सुन्नत व सुलहाए उम्मत के फ़ज़ाइल का नश्र और सामईन को उन से इस्तिफ़ादा की तरफ तरग़ीब मक़्सूद हो) ऐसे ऐसे मशाइख़ से मिलना हुआ, यह सब बातें अगर तू न ब्यान करता तो न गुनाह था न ज़रर होता, और अगर तू कामिल कोशिश करे कि तेरे कलाम में वाक़ईयत से कुछ कमी बेशी न होने पाए, न इस तफ़ाख़ुर से नफ़्स की तारीफ़ निकले कि हमने ऐसे ऐसे अज़ीम हाल देखे, न उसमें किसी शख़्स की ग़ीबत हो, न अल्लाह तआला की पैदा की हुई किसी चीज़ की मज़म्मत हो, तो इतनी एहतियातों के बाद भी इस कलाम का हासिल यह होगा कि तूने इतनी देर अपना वक़्त ज़ाए किया, और तेरी ज़बान से इसका हिसाब होगा, तो ख़ैर के एवज़ अदना बात इख़्तियार कर रहा है, इसलिए कि जितनी देर तूने यह बातें कीं अगर इतना वक़्त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की याद और उसकी नेमतों, सनअतों की फ़िक्र में सर्फ़ करता, तो ग़ालिबन रहमते इलाही के फ़्यूज़ से तुझ पर वह खुलता जो बड़ा नफा देता, और तस्बीहे इलाही करता तो तेरे लिए जन्नत में महल चुना जाता।

इमाम ग़ज़ाली फरमाते हैं कि जो कुछ आख़िरत में नाफ़े हो वह ला–यानी नहीं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 205 ता 207)

ग़ीबत की शुनाअत

ज़िना व ग़ीबत दोनों यक़ीनन सख़्त गुनाह हैं। ज़िना का गुनाह तौबा या सज़ा के बाद माफ़ हो जाएगा। जबकि ज़ानिया राज़ी हो और ग़ीबत का गुनाह उस वक़्त तक माफ़ नहीं होगा जब तक वह न माफ़ करे जिसकी ग़ीबत की है कुरआने अज़ीम में उसे मरे हुए भाई का गोश्त खाना फरमाया है।

(मुरत्तिब)

और हदीस में आया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : ग़ीबत से बचो कि ग़ीबत ज़िना से भी ज़्यादा सख़्त है। कभी ऐसा होता है कि ज़ानी तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फरमा लेता है और ग़ीबत करने वाले की बख़्शिश ही न होगी जब तक वह न

नख़्शे जिसकी ग़ीबत की थी।

(अबू अश्शैख़, इब्ने अबी अदुनिया फ़ी ज़िम्मुल–ग़ीबते, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 140)

पहलू दार बात कहना

अपना हक़ मुर्दा, ज़िन्दा करने के लिए पहलूदार बात कहना जिसका ज़ाहिर दरोग़ व झूठ हो और वाक़ई में उसके सच्चे मानी मुराद हों अगरचे सुनने वाला कुछ समझे। बिला शुबह बइत्तिफ़ाक़ उलमा–ए–दीन जाइज़ और अहादीसे सहीहा से उसका जवाज़ साबित है जबकि वह हक़ बे इस तरीक़े के मिलना मयस्सर न हो वरना यह भी जाइज़ नहीं।

मिसाल के साथ मसला की तफ़्हीम

★ पहलूदार बात यूं कि मसलन ज़ालिम ने ज़ुलमन उसकी किसी चीज़ पर क़ब्ज़ा मुख़ालिफ़ाना इस मुद्दत तक रखा जिसके बाइस अंग्रेज़ी क़ानून में तमादी आरिज़ हो कर यानी मुद्दत दराज़ होने के बाद हक़, नाहक़ हो जाता है मगर मुख़ालिफ़ के पास अपने क़ब्ज़ा का काग़ज़ी सुबूत नहीं, इसके ब्यान पर रखा गया है अगर यह इक़रार किए देता है कि वाक़ई मसलन बारा बरस से मेरा क़ब्ज़ा नहीं तो हक़ जाता और ज़ालिम फ़तह पाता है लिहाज़ा यूं कहने की इजाज़त है कि हाँ मेरा क़ब्ज़ा रहा है यानी ज़माना गुज़िश्ता में। और ज़्यादा तसरीह चाही जाए तो यूं कह सकता है कि आज तक मेरा क़ब्ज़ा चला आया। और लफ़्ज़ आया को नीयत में कलिम–ए–इस्तिफ़्हाम ले। जैसे कहते हैं, आया यह बात हक़ है यानी क्या यह बात हक़ है? तो इस्तिफ़्हामे इंकारी के तौर पर इस कलिमे का यह मतलब हुआ कि क्या आज तक मेरा क़ब्ज़ा चला? यानी ऐसा न हुआ बल्कि मेरा क़ब्ज़ा मुन्क़ते हो कर मुख़ालिफ़ का क़ब्ज़ा चला, यानी ऐसा न हुआ बल्कि मेरा क़ब्ज़ा मुन्क़ते हो कर मुख़ालिफ़ का क़ब्ज़ा हो गया।

★ या यूं कहे कल तक बराबर मेरा क़ब्ज़ा रहा आज का हाल नहीं मालूम कि कचेहरी क्या हुक्म दे, और लफ़्ज़ कल से ज़माना क़रीब मुराद ले। जैसे नौजवान लड़के को कहते हैं। कल का बच्चा है। हालांकि उसकी उम्र बीस बाईस साल की है। इस माना पर क़यामत को रोज़े फ़रदा कहते हैं, कल आने वाली है। यानी बहुत नज़्दीक है।

★ या मुख़ालिफ़ के क़ब्ज़े की निस्बत सवाल हो तो कहे इसका क़ब्ज़ा कभी न था, या कभी न हुआ और मुराद वह ले कि कभी वह वक़्त भी था कि उसका क़ब्ज़ा न था ज़्यादा तस्रीह दरकार हो तो कहे उसका क़ब्ज़ा असलन किसी वक़्त एक आन को न हुआ न है। और मानी यह ले हक़ीक़ी क़ब्ज़ा हर शय पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का है, दूसरे का क़ब्ज़ा हो नहीं सकता।

ग़रज़ जो शख़्स तसर्रुफ़ात अल्फ़ाज़ व मआनी से आगाह है सो पहलू निकाल सकता है, मगर उनका जवाज़ भी सिर्फ़ इसी हालत में है जब यह वाक़ई मज़्लूम है और बग़ैर ऐसी पहलूदार बात के ज़ुल्म से नजात नहीं मिल सकती वरना ऊपर मज़्कूर हुआ कि यह भी जाइज़ नहीं।

अब रही यह सूरत कि जहाँ पहलूदार बात से भी काम न चले वहाँ सरीह किज़्ब भी दफ़ा ज़ुल्म व अहया–ए–हक़ के लिए जाइज़ है या नहीं?

इस बारे में कलिमाते उलमा मुख़्तलिफ़ हैं बहुत रिवायात से इजाज़त निकलती है और बहुत अकाबिर ने मना की तसरीह फ़रमाई है हत्तल–वसा एहतियात उससे इज्तिनाब में है।

और शायद क़ौले फ़ैसल यह हो कि इस ज़ुल्म की शिद्दत और किज़्ब की मुसीबत को अक़्ले

सलीम व दीने क़वीम की मीज़ान में तौले जिधर का पलड़ा ग़ालिब पाए उस से एहतराज़ करे। मसलन उसका ज़रिय–ए–रिज़्क़ तमाम व कमाल किसी ज़ालिम ने छीन लिया अब अगर न ले तो यह उसके अहल व अयाल सब फाक़े मरें और वह सरीह झूठ के बग़ैर नहीं मिल सकता, तो इस नाक़ाबिले बर्दाश्त सख़्त ज़ुल्म के दफा को उम्मीद है कि ग़लत बात कह देने की इजाज़त हो। और किसी मालदार शख़्स के सौ दो सौ रुपए किसी ने दबा लिए तो उसके लिए सरीह झूठ की इजाज़त उसे न होनी चाहिए, कि झूठ का फसाद ज़्यादा है और इतने ज़ुल्म का बर्दाश्त करना इस मालदार पर गिराँ नहीं।

अक़्ल व नक़्ल का एक ज़ाब्ता

हदीस से साबित और फ़िक़्ह का क़ायदा मुक़र्ररह बल्कि अक़्ल व नक़्ल का ज़ाब्ता कुल्लीया है कि जो शख़्स दो बलाओं में गिरफ़्तार हो उनमें जो आसान है उसे इख़्तियार करे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 177)

झूठी गवाही की क़बाहत

आजकल के हालात यह हैं कि अगर किसी दो आदमीयों के दरम्यान नज़अ और झगड़ा हो तो वह तरह–तरह के हीले बहाने तराश कर क़ानून का सहारा लेता है और मुक़द्दमा दायर कर देता है फिर अपनी बात को मज़बूत करने के लिए उस पर गवाही गुज़ार देता है, मुक़द्दमात चूंकि ज़्यादा तर झूठ और किज़्ब पर चलाए जाते हैं, जिसके लिए बाज़ लोग झूठी गवाही दे देते हैं उसमें ज़रा भी अफसोस नहीं करते, हालांकि झूठी गवाही के लिए वईद आई है और उसे गुनाहे कबीरा कहा गया है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : झूठी गवाही देने वाला अपने पाँव हटाने नहीं पाता कि अल्लाह तआला उसके लिए जहन्नम वाजिब कर देता है।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 5, स0 134)

मज़ाक़ में भी झूठ जाइज़ नहीं

हंसी मज़ाक में झूठ बोलना जाइज़ नहीं बाज़ लोग तफ़रीह और मज़ाक़ में झूठ बोलते और उसकी परवाह नहीं करते, सच्चाई यही है कि आदमी हर हाल में सदाक़त व रास्तबाज़ी का दामन थामे रहे, और बाज़ लोग छोटे बच्चों से झूठा वादा करते हैं कि कल फलां चीज़ लाकर देंगे हालांकि इस तरह झूठे बच्चों को बहलाने फुसलाने के लिए भी झूठ बोलना मना है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के उसव–ए–हसना को अपनाना ही हमारी नजात व सलामती का ज़ामिन है।

(मुरत्तिब)

हदीस में इरशाद हुआ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि मैं अगरचे कभी मज़ाह भी करता हूँ तो हक़ ही कहता हूँ।

(त, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 230)

शैतानी वसवसे और उनका इलाज

शैतान, इंसान को गुमराह करने में लगा हुआ है उसका काम ही इंसान से अदावत व दुश्मनी करना और उसे राहे रास्त से बहका देना है शैतानी वसाविस से बचना ही एक मुसलमान की कामयाबी और नजात का ज़ामिन है शरीअत ने शैतान से बचने की जो तदाबीर वताई उन्हें बजा लाने से आदमी उसके मक्र व फ़रेब से बच सकता है। (मुरत्तिब)

दफ़ा वसवसा के लिए बेहतरीन तदबीर इन बातों का इल्तिज़ाम है।

पहला इलाज

रुजूअ़ इलल्लाह।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ रुजूअ़ व तवज्जोह के लिए यह बातें मुअस्सिर हैं।

★ अऊज़ुबिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम। की कसरत।

★ ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल–अलीइल–अज़ीम। की तक्रार।

★ सूरः नास, पढ़ना।

★ आमन्तु बिल्लाहे व रसूलेही, कहना।

★ हुवल–अव्वलु वल–आख़िरू वज़्ज़ाहिरू वल–बातिनु वहुवा बेकुल्ले शैइन अलीम।

★ सुब्हानल–मलिकिल–ख़ल्लाके अंय्यशा युज़्हिबकुम व याते बेख़ल्किन जदीद।

की कसरत उसे जड़ से क़तअ़ कर देती है, उन से फौरन वसवसा दफ़ा हो जाता है।

एक तदबीरे मासूर

हदीस में है एक साहब ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर वसवसा की शिकायत की कि नमाज़ में पता नहीं चलता किं दो पढ़ी या तीन, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तू ऐसा पाए तो अपनी दाहिनी अंगुश्त शहादत उठा कर अपनी बाई रान में मार और बिस्मिल्लाह कह कि वह शैतान के हक़ में छुरी है। (बज़्ज़ार, तबरानी)

दूसरा इलाज

वसवसा की न सुनना, उस पर अमल न करना, उसके ख़िलाफ़ करना।

इस बलाए अज़ीम की आदत है कि जिस क़द्र उस पर अ़मल हो, उसी क़द्र बढ़े और जब क़सदन उसका ख़िलाफ़ किया जाए तो बेइज़्नेही तआला थोड़ी मुद्दत में बिल्कुल दफा हो जाए।

अब्दुल्लाह बिन मुर्रा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं शैतान जिसे देखता है कि मेरा वसवसा उसमें कारगर होता है सबसे ज़्यादा उसी के पीछे पड़ता है। (इब्ने अबी शैबा)

दो वहमियों की हिकायत

इमाम इब्ने हजर मक्की अपने फतावा में फरमाते हैं : मुझ से बाज़ सिक़ह लोगों ने ब्यान किया कि दो वसवसा वालों को नहाने की ज़रूरत हुई, दरिया–ए–नील पर गए, तुलूअ़–ए–सुबह के बाद पहुँचे, एक ने दूसरे से कहा तू उतर कर ग़ोते लगा, मैं गिनता जाऊंगा और तुझे बताऊंगा कि पानी तेरे सारे सर को पहुँचा या नहीं, वह उतरा और ग़ोते लगाना शुरू किए और यह क़ह रहा है कि थोड़ी सी जगह तेरे सर में बाक़ी है, वहाँ पानी न पहुँचा, एक सुबह से दोपहर हो गया, आख़िर थक कर बाहर आया और दिल में शक रहा कि ग़ुस्ल उतरा या नहीं।

फिर उसने उस दूसरे से कहा अब तू उतर मैं गिनूंगा, उसने डुबकियाँ लगाई और यह कहता जाता है कि अभी सारे सर को पानी न पहुँचा, यहाँ तक कि दोपहर से शाम हो गई, मज्बूर वह भी

दरिया से निकल आया और दिल में शुबह ही रहा। दिन भर की नमाज़ें खोईं और ग़ुस्ल उतरने पर यक़ीन न होना था न हुआ। यह वसवसा मानने का नतीजा था।
(फतावा इब्ने हजर मक्की, अल-हदीक़ा, अन्नदीया)

मुख़ालिफ़ते वसवसा की बरकत

सालेहीन में से एक साहब फरमाते हैं मुझे दरबार-ए-तहारत वसवसा था, रास्ता की कीचड़ अगर कपड़े में लग जाती, उसे धोता (हालांकि शरअन जब तक ख़ास इस जगह नजासत का होना साबित व मुतहक़्क़िक़ न हो हुक्मे तहारत है) एक दिन नमाज़े सुबह के लिए जाता था, राह की कीचड़ लग गई, मैंने धोना चाहा और ख़्याल आया कि धोता हूँ तो जमाअत जाती है। नागाह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझे हिदायत फरमाई, मेरे दिल में डाला कि उस कीचड़ में लोट और सब कपड़े सान ले और यूं ही नमाज़ में शरीक हो जा, मैंने ऐसा ही किया फिर वसवसा न हुआ। यह उसकी मुख़ालिफ़त की बरकत थी। (अत्तरीक़तुल-हम्दीया)

शैतानी वसवसे का असर

अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब तुम में कोई मस्जिद में होता है शैतान आ कर उसके बदन पर हाथ फेरता है, जैसे तुम में कोई अपने घोड़े को राम करने के लिए उस पर हाथ फेरता है, पस अगर वह शख़्स ठहरा रहा यानी उसके वसवसा से फौरन अलग न हो गया तो उसे बांध लेता या लगाम देता है।

अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इस हदीस को रिवायत करके फरमाया कि हदीस की तस्दीक़ तुम आँखों देख रहे हो, वह जो बंधा हुआ है उसे तू देखेगा यूं झुका हुआ कि ज़िक्रे इलाही नहीं करता और वह जो लगाम दिया हुआ है वह मुँह खोले है अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करता।
(मुसनद अहमद)

वसवसा शैतान से शुब्हा हो तो क्या करे

शैतान के थूक और फूंक से नमाज़ में क़तरे और रीह का शुबह जाता है, हुक्म है कि जब तक ऐसा यक़ीन न हो जिस पर क़सम खा सके उस पर लिहाज़ न करे, शैतान कहे कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले कि ख़बीस तो झूठा है और अपनी नमाज़ में मश्ग़ूल रहे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तुम में कोई शख़्स अपने पेट में कुछ पाए और उसे शक में डाल दे कि कुछ निकला या नहीं तो मस्जिद से हरगिज़ न निकले यहाँ तक कि आवाज़ सुने या बू पाए। (त, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है कि आवाज़ या बू के बग़ैर वुज़ू नहीं टूटता यानी शक व शुबह नाक़िज़े वुज़ू नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक आदमी ने शिकायत की कि उसको नमाज़ में कुछ (यानी रीह का) ख़्याल होता है, हुज़ूर ने फरमाया आवाज़ या रीह के बग़ैर नमाज़ मत तोड़। (त, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान नमाज़ के वक़्त तुम्हारे पास आकर दुबुर का एक बाल खींचता है तो तुम समझते हो कि वुज़ू टूट गया, तो कोई शख़्स आवाज़ या बू के बग़ैर नमाज़ न तोड़े। (त, मुसनद अहमद)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि शैतान तुम्हारे पास नमाज़ में आकर मक़अद में फूंक मारता है तो तुमको ख़्याल होता है कि वुज़ू टूट गया, हालांकि वुज़ू नहीं टूटा तो जब ऐसा महसूस हो तो बग़ैर आवाज़ व बू के नमाज़ न तोड़े। (त, बज़्ज़ार)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि शैतान तुम्हारी नमाज़ तोड़ने के लिए घूमता रहता है जब वह तुम्हारी नमाज़ तोड़ने से आजिज़ व हैरान हो जाता है तो दुबुर में फूंक मारता है जिस से ऐसा महसूस होता है कि वुज़ू टूट गया, हालांकि दर हक़ीक़त वुज़ू नहीं टूटता, तो तुम में कोई आवाज़ या बू पाए बग़ैर नमाज़ न छोड़े।

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि शैतान तुम्हारे पास नमाज़ के वक़्त आ कर दुबुर में फूंक मारता है और अहलील को तर करके कहता है कि तुम्हारा वुज़ू टूट गया, तो कोई नमाज़ न छोड़े यहाँ तक कि बू पाए या आवाज़ सुने और तरी पाए।

(त, मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, इब्ने अबी अद्दुनिया)

इमाम नख़ई फरमाते हैं कि शैतान अहलील व दुबुर में दाख़िल हो जाता है तो आदमी महसूस करता है कि वुज़ू टूट गया, लिहाज़ा कोई नमाज़ न छोड़े यहाँ तक कि आवाज़ सुन ले या बू और तरी पाए। (त, इब्ने अबी दाऊद, किताबुल–वसवसा)

इन हदीसों का हासिल यह है कि शैतान नमाज़ में धोखा देने के लिए कभी इंसान की शर्मगाह पर आगे से थूक देता है कि उसे क़तरा आने का गुमान होता है, कभी पीछे फूंकता या बाल खींचता है कि रीह खारिज होने का ख़्याल गुज़रता है, इस पर हुक्म हुआ कि नमाज़ से न फिरो जब तक तरी या आवाज़ या बू न पाओ यानी जब तक वक़ूअ् हदस पर यक़ीन न हो ले नमाज़ न तोड़े।

हमारे इमाम आज़म के शागिर्दे जलील सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मुबारक फरमाते हैं यानी यक़ीन ऐसा दरकार है जिस पर क़सम खा सके कि ज़रूर हदस हुआ और जब क़सम खाते हिचकिचाए तो मालूम हुआ कि मालूम नहीं, मश्कूक है और शक का ऐतबार नहीं कि तहारत पर यक़ीन था और यक़ीन शक से नहीं जाता।

तीसरा इलाज

अगर शैतान हीला से भी न माने और वसवसा डाले ही जाए कि तेरे वुज़ू में ग़लती रही, या तेरी नमाज़ ठीक न हुई तो सीधा जवाब यह है कि ख़बीस तू झूठा है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब तुम में किसी के पास शैतान आकर वसवसा डाले कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो फौरन उसे जवाब दे कि तू झूठा है (और अगर मसलन नमाज़ में है तो) दिल में यही कह ले, मतलब वही है कि वसवसा की तरफ इल्तिफ़ात न करे। (इब्ने हिब्बान हाकिम,)

वसवसे की तीन हालतें

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू मज़ीद इसकी तफ़्सील व वज़ाहत करते हुए फरमाते हैं कि हालतें तीन होती हैं :

★ एक तो यह कि अदू का वसवसा मान लिया, उस पर अमल किया, यह तो उस मल्ऊन की ऐन मुराद है और जब न मानने लगा तो वह क्या एक ही बार वसवसा डाल कर थक रहेगा? हाशा वह मल्ऊन आठ पहर उसकी ताक में है जितना–जितना यह मानता जाएगा वह उसका सिलसिला बढ़ाता रहेगा, यहाँ तक कि नतीजा वही होगा कि दो दो पहर कामिल दरिया में ग़ोते लगाए और सर न धुला।

★ दूसरे यह कि माने तो नहीं मगर उसके साथ नज़अ व बहस में मसरूफ़ हो जाए, यह भी उसके मक़सदे नापाक का हुसूल है कि उसकी ग़रज़ तो यही थी कि यह अपनी इबादत से ग़ाफ़िल हो कर किसी दूसरे झगड़े में पड़ जाए और फिर इस तक्रार में मुम्किन है वही ख़बीस ग़ालिब आए और सूरते सानिया, सूरते ऊला की तरफ औद कर जाए।

★ लिहाज़ा नजात इस तीसरी सूरत में है जो हमारे नबी करीम हकीम अलीम रऊफ़ रहीम अलैह व अला आलेही अफ़ज़लुस्सलात वत्तस्लीम ने तालीम फरमाई कि फौरन इतना कह कर अलग हो जाए कि तू झूठा है।

शैतान दो क़िस्म हैं

1. श्यातीनुल जिन्न कि इब्लीसे लईन और उसकी औलाद मलाईन हैं।
2. श्यातीनुल–इन्स कि कुफ़्फ़ार व मुब्तदेईन के दाई व मुनादी हैं।

हमारा रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

यूंही हमने हर नबी का दुश्मन किया शैतान आदमीयों और शैतान जिन्नों को कि आपस में एक दूसरे के दिल में बनावट की बात डालते हैं धोका देने के लिए। (अल–अन्आम, 112)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया : अल्लाह की पनाह मांग शैतान आदमियों और शैतान जिन्नों के शर से, अर्ज़ किया आदमियों में भी शैतान हैं? फरमाया हाँ। (मुस्नद, अहमद)

अइम्म–ए–दीन फरमाया करते कि शैतान आदमी, शैतान जिन्न से सख़्त तर होता है।

दफ़ा वसवसा की मुअस्सिर तरकीब

इमाम अबू हाज़िम कि अजिल्ल–ए–ताबईन से हैं, उनके पास एक शख़्स आकर शाकी हुआ कि शैतान मुझे वसवसे में डालता है और सबसे ज़्यादा सख़्त मुझ पर यह गुज़रता है कि आकर कहता है तूने अपनी औरत को तलाक़ दे दी, इमाम ने फौरन फरमाया क्या तूने मेरे पास आकर मेरे सामने अपनी औरत को तलाक़ न दी, वह घबरा कर बोला ख़ुदा की क़सम मैंने कभी आपके पास उसे तलाक़ न दी, फरमाया जिस तरह तुमने मेरे आगे क़सम खाई, शैतान से क्यों नहीं क़सम खा कर कहता कि वह तेरा पीछा छोड़े। (किताबुल–वसवसा, अबू बकर बिन अबी दाऊद)

चौथा इलाज

वसवसा का इत्तिबा अपने हौल व क़ुव्वत (यानी ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह न कहना) पर नज़र से होता है, इब्लीस ख़्याल डालता है कि तूने यह अमल कामिल न किया, उसमें फलां नुक़्स रह गया, यह उसकी तक्मील के ख़्याल में पड़ता है, हालांकि जितना रुख़्सते शरईया के मुताबिक़ हो गया वह भी कामिल व काफी है। अक्मलीयत के दरजात अक्मलों के लाइक़ हैं, दुश्मन से कह कि अपनी दिलसोज़ी उठा रखे, मुझसे तो इतना ही हो सकता है, नाक़िस है तो मैं ख़ुद नाक़िस हूं, अपने लाइक़ मैं बजा लाया, मेरा मौला करीम है मेरे इज्ज़ व ज़ुअफ़ पर रहम फरमा कर इतना ही क़बूल फरमा लेगा, उसकी अज़मत के लाइक़ कौन बजा ला सकता है।

शैख़ मुहक़्क़िक़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह शरह सफरुस–सआदह में फरमाते हैं कि शैतान का वसवसा दफ़ा करने में तकल्लुफ़ न करे, उसके पीछे न पड़े और रुख़्सते शरईया पर अमल कर ले, अगर शैताने लईन ज़्यादा मुज़ाहमत करे और कहे कि तूने जो अमल किया वह नाक़िस, ना दुरुस्त है वह ख़ुदा की बारगाह में मक़्बूल नहीं है तू उसे धुतकार दे और कहे कि तू जा, मुझसे उस से ज़्यादा नहीं होगा मेरा मौला तआला करीम व रहीम है मुझ से यही क़बूल फरमा लेगा उसकी रहमत वसीअ़ व अज़ीम है।

पाँचवाँ इलाज

यूं भी न गुज़रे तो कहे फर्ज़ करदम कि मेरा वुज़ू न हुआ, मेरी नमाज़ न सही, मगर मुझे तेरे ज़ुअम के मुताबिक़ बेवुज़ू या ज़ुहर की तीन रकाअत पढ़नी गवारा है और ऐ मल्ऊन तेरी इताअत क़बूल

नहीं। जब यूं दिल में ठान ली वसवसा की जड़ कट जाएगी और बेऔनेही तआला दुश्मन ज़लील व ख़्वार पसपा होगा।

सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के शागिर्द इमाम मुजाहिद फरमाते हैं : मुझे बेवुज़ू पढ़ लेनी इससे ज़्यादा पसन्द है कि शैतान की इताअत करूं।

(अल–हदीक़तुन्नदीया)

इमाम अजल क़ासिम बिन अबी बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से एक शख़्स ने शिकायत की कि नमाज़ में मुझे बहुत सह्व होता है, सख़्त परेशान होता हूँ, फरमाया अपनी नमाज़ पढ़े जा कि यह शुब्हे दफ़ा न होंगे जब तक तू यह न कहे कि हाँ मैंने नमाज़ पूरी न की यानी यूंही सही मगर मैं तेरी नहीं सुनता।

(मुअत्ता इमाम मालिक, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 211 ता 219, 214, 218, 219)

शैतान की गिरह

हदीस शरीफ़ में है जब इंसान सोता है शैतान तीन गिरह लगा देता है, जब उठते ही वह रब अज़्ज़ा व जल्ल का नाम लेता है एक गिरह खुल जाती है, और वुज़ू के बाद दूसरी और जब सुन्नतों की नीयत बांधी तीसरी भी खुल जाती है। लिहाज़ा अव्वल वक़्त फज्र की सुन्नतें पढ़ना औला है।

(बुख़ारी, अल–मल्फ़ूज़, सोम, स0 20)

शैतान की ख़ुशी

हदीस में फरमाया गया अगर काफिर का जनाज़ा आता हो तो हट कर चलना चाहिए कि शैतान आगे–आगे आग का शोअ्ला हाथ में लिए उछलता, कूदता, ख़ुश होता हुआ चलता है कि मेरी मेहनत एक आदमी पर वसूल हुई, यानी उसकी मौत कुफ़्र पर हुई, इसलिए काफिर के जनाज़ा में शरीक होना जाइज़ नहीं, अगर इस ऐतक़ाद से जाएगा कि उसका जनाज़ा शिर्कत के लाइक़ है तो काफिर हो जाएगा और अगर यह नहीं तो हराम है। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 25)

ग़ुरूबे आफ़्ताब के बाद श्यातीन का ख़ुरूज व इंतिशार

आफ़्ताब के ग़ुरूब होने के बाद चाँद जब रौशन होता है उस वक़्त सरकश व मुतमर्रद जिन्न ज़मीन पर मुंतशिर होते हैं। इसी वास्ते हदीस में आया अपने बच्चों को रोके रहो मग़्रिब से इशा तक।

बहुत लोग इस बात को बहादुरी समझते हैं कि जब लोगों की पहचल मौकूफ़ हो उस वक़्त चलें फिरें यह जिहालत है।

हदीस में है जब पहचल मौकूफ़ हो बाहर न निकलो। और अकेले मकान में तन्हा सोने को भी लोग फ़ख़्र समझते हैं हालांकि इसको भी मना फरमाया है। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 35)

इंसान के दिल पे शैतान का असर

शैतान इंसान के दिल पर असरे बद डालता है जिससे उसको भूली बिसरी बातें याद आ जाती हैं, शैतान इतना शरीर है कि वह इंसान के ख़ून में दौड़ता है और इंसान के दिल पर अपनी चोंच रख देता है। (मुरत्तिब)

अल्लाह तआला फरमाता है : शैतान जिन्न और लोग, लोगों के दिलों में वसवसा डालते हैं।

(अन्नास स0 5, 6)

और फरमाता है : शैतान आदमी और जिन्न एक दूसरे के दिल में डालते हैं बनावट की बात धोखे की। (अंआम, 112)

(और एक हदीस में शैतान की तेज़ी हरकत के बारे में है कि।) (मुरत्तिब)

बेशक शैतान, इंसान की रग रग में ख़ून की तरह सारी व जारी है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जब अज़ान होती है शैतान गोज़ ज़िनाँ भाग जाता है कि अज़ान की आवाज़ न सुने, जब अज़ान हो चुकती है फिर आता है, जब तक्बीर होती है फिर भाग जाता है, जब तक्बीर हो चुकती है फिर आता है यहाँ तक कि आदमी और उसके दिल के अन्दर हाइल हो कर ख़तरे डालता है, कहता है कि यह बात याद कर, वह बात याद कर, इन बातों के लिए जो आदमी के ख़्याल में भी न थीं यहाँ तक कि इंसान को यह भी ख़बर नहीं रहती कि कितनी नमाज़ पढ़ी। (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक और हदीस में है हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि शैतान अपनी चोंच आदमी के दिल पर रखे हुए है, जब आदमी ख़ुदाए तआला को याद करता है शैतान दुबक जाता है और जब आदमी ज़िक्र से ग़फ़लत करता है, भूल जाता है तो शैतान उसका दिल अपने मुँह में ले लेता है तो यह है शैतान ख़न्नास वसवसा डालने वाला, दुबक जाने वाला।

(बैहक़ी, नवादेरुल–उसूल, मुसनद अबुल–याला, रिसाला फ़िक़्ह शहंशाह)

दुआ के फवाइद

दुआ मोमिन का हथियार है, दुआ से तक़्दीर बदल जाया करती है, हदीस पाक में दुआ को इबादत का मग्ज़ कहा गया है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़िन्दगी के हर मोड़ पर दुआएँ फरमाईं और अपनी उम्मत को भी दुआओं की तरग़ीब दी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़िन्दगी के हर शोअ्बे के लिए अलग अलग दुआएँ इरशाद फरमाईं कोई काम कोई अमल ऐसा नहीं जिसके लिए दुआ नब्वी मौजूद न हो, इबादात व मुआमलात हो या मुआशरती ज़िन्दगी हर बाबे हयात के लिए दुआ की कुंजियाँ मौजूद हैं, हमारे लिए हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हयाते तैय्यबा बेहतरीन नमूना अमल है हुज़ूर की पैरवी से इंशाअल्लाह तआला हमें भी दुआ के फ़वाइद हासिल होंगे। (मुरत्तिब)

बला रसीदा को देख कर पढ़ने की दुआ

हर बला में मुब्तला को देख कर यह दुआ पढ़ सकता है ख़्वाह वह बला इंसानी हो या आसमानी। (तिर्मिज़ी)

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी आफ़ानी मिम्मब तला क बिही व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क़ तफ़ज़ीला (तिर्मिज़ी)

(यहाँ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :)

मैं तो काफिर का मुर्दा भी देख कर पढ़ता हूँ कि जिस बला में वह मुब्तला हुआ यानी मौत अलल–कुफ़्र, उससे ख़ुदा ने हमको नजात दी कि उस पर शुक्र करना चाहिए।

हदीस में है काफिर के जनाज़ा के आगे शैतान आग के शोअ्ले उड़ाता हुआ शोर मचाता, नाचता हुआ चलता है कि आदमी कुफ़्र पर मरा। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 64)

जलसा ख़त्म होने पर यह दुआ पढ़े

हदीस में है जो शख़्स जलसा से उठते वक़्त इस दुआ को पढ़ेगा जिस क़द्र नेक बातें उस जलसा में की होंगी उन पर मुहर लगा दी जाएगी कि साबित रहें और जितनी बुरी बातें की होंगी वह महव कर दी जाएंगी।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 21)

सुब्हा न क अल्लाहुम्मा व बिहम्दि क अशहद अल्ला इलाह इल्ला अन त अस्तग़ फ़िरुक व अतूबु एलैक

दुआ के लिए हाथ उठाना

दुआ करते वक़्त हाथों को कुछ ऊपर उठा कर आसमान की तरफ़ फैलाना हदीस पाक और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मरवी है। यह दस्तूरे दुनिया भी है कि जब किसी से कोई चीज़ मांगी जाती है तो फ़ितरी तौर पर हाथ फैलते हैं, दुआ चूंकि अहकमुल-हाकेमीन की बारगाहे इज़्ज़त में होती है ऐसे मौक़ा पर अपने को मुहताज व आजिज़ समझ कर हाथों को फैलाना बेहतर व मुनासिब है बल्कि यह सुन्नत से भी साबित है। लिहाज़ा दुआ के वक़्त सिर्फ़ एक हाथ नहीं बल्कि दोनों हाथ फैलाना चाहिए। (मुरत्तिब)

एक बुज़ुर्ग शायद हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैह ने दुआ में सर्दी के सबब सिर्फ़ एक हाथ बाहर निकाला था, इल्हाम हुआ एक हाथ उठाया हमने उसमें रख दिया जो रखना था, दूसरा उठाता तो उसे भी भर देते।

हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला हया वाला करम वाला है इस से शर्म फरमाता है कि उसका बन्दा उसकी तरफ हाथ उठाए और उन्हें खाली फेर दे। और फरमाया जो दुआ न मांगे अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब फरमाता है। (तिर्मिज़ी, अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 99)

बन्द-ए-महबूब और फासिक़ की दुआ

हदीस में है जब कोई मक़्बूल बन्दा रब अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ अपनी किसी हाजत के लिए हाथ उठाता है और गिड़गिड़ाता है जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इरशाद होता है ऐ जिब्रील इसकी हाजत रहने दे कि मुझे इसका गिड़ गिड़ाना और मेरी तरफ मुँह उठाना अच्छा मालूम होता है।

और जब कोई फासिक़ अपनी हाजत के लिए हाथ उठाता है इरशाद होता है ऐ जिब्रील इसकी हाजत जल्द रवा कर दे कि मुझे अपनी तरफ इसका मुँह उठाना अच्छा नहीं मालूम होता।

फाइदा

इस हदीस में एक बड़ा फाइदा यह भी है कि जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाजत रवा हैं फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हाजत रवा व मुश्किल कुशा व दाफ़े बला मानने में किस मुसलमान को तअम्मुल हो सकता है वह तो जिब्रील के भी हाजत रवा हैं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 102)

दुआ बहालते सज्दा

अल्लाह तआला बन्द-ए-मोमिन की जाइज़ दुआएँ क़ुबूल फरमाता है और बन्दे को सबसे ज़्यादा क़ुर्बत हालते सज्दा में होती है लिहाज़ा इस हालते क़ुर्बत में जो दुआ की जाए वह क़बूल होगी। (मुरत्तिब)

सज्दा सबसे ज़्यादा ख़ास हाज़िरी दरबार मलिकुल-मलूक अज़्ज़ा जलालुहू है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं सब हालतों से ज़्यादा सज्दा में बन्दा अपने रब से क़रीब होता है तो उसमें दुआ बकसरत करो।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, निसई, फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स० 188)

आधी रात की दुआ

यूं तो हर दुआ के लिए उम्मीद क़बूल है मगर वक़्त और हालत का भी क़बूलियत में दख़ल होता है। अहादीस में जिन औक़ात के लिए आया है कि उनमें दुआएँ क़बूल होती हैं अगर बन्दा मोमिन ख़ुलूस दिल और यक़ीन व ऐतमाद के साथ उनमें दुआ करे तो रब तआला की रहमते कामिला से उम्मीद है कि वह ज़रूर क़बूल फरमाएगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आधी रात को आसमान के दरवाज़े खोले जाते हैं और मुनादी निदा करता है कोई दुआ करने वाला है कि उसकी दुआ क़बूल फरमाई जाए, है कोई मांगने वाला कि उसे अता करें, है कोई मुसीबत ज़दा कि उसकी मुश्किल कुशाई हो, उस वक़्त जो मुसलमान अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से कोई दुआ करता है मौला सुब्हानुहू व तआला क़बूल फरमाता है मगर ज़ानिया कि अपनी फरज की कमाई खाती है या लोगों से बेजा मुहासिल तहसीलने वाला। (मुसनद अहमद, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 182)

तीन मुसाफ़िरों की दुआएँ

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया है कि तीन मुसाफिर रात को एक ग़ार में ठहरे पहाड़ से एक चट्टान गिर कर ग़ार के मुँह पर ढक गई यह बन्द हो गए। आपस में बोले ख़ुदा की क़सम यहाँ से नजात न पाओगे मगर यह कि अपने नेक आमाल को वसीला करके हज़रत अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ करो, हर एक ने अपना–अपना एक आला दरजा का अमल ब्यान किया और उसके तवस्सुल से दुआ की चट्टान थोड़ी–थोड़ी खुलती गई। तीसरे की दुआ पर बिल्कुल हट गई और उन्होंने नजात पाई।

★ उनमें एक की दुआ यह थी कि मेरे चचा की बेटी मुझे सबसे ज़्यादा प्यारी थी मैंने उस से बदकारी चाही वह बाज़ रही यहाँ तक कि एक साल क़हत में मुब्तला हो कर मेरे पास आई मैंने उसे एक सौ बीस अशर्फ़ियाँ दीं इस शर्त पर कि मुझे अपने ऊपर क़ुदरत दे उसने क़ुबूल किया जब मैंने उस पर दस्तरस पाई और क़रीब हुआ कि ज़िना वाक़े हो वह रोई और कहा मैंने यह काम कभी न किया एहतियाज ने मुझे मजबूर कर दिया अल्लाह से डर और नाहक़ तौर पर मुहर को न तोड़, मैं तुझ से डरा और उस फ़ेअ़ल से बाज़ रहा और वह अशर्फ़ियाँ भी उसी को छोड़ दीं। इलाही अगर मैंने यह काम तेरी रज़ा चाहने के लिए किया हो तो हमें इस बला से नजात दे, उस पर चट्टान सरकी।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 187)

★ दूसरे शख़्स की दुआ यह थी कि मेरे वालिदैन बहुत ज़ईफ़ और बूढ़े थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे भी थे, मैं बकरियाँ चराया करता था जब शाम को घर आता तो सबसे पहले अपने वालिदैन को दूध पिलाता। एक दिन यह हुआ कि मैं बकरियों के चारे की तलाश में दूर निकल गया घर आने में ताख़ीर हुई जब घर पहुँचा तो देखा कि मेरे वालिदैन सो गए हैं, मैं दूध लेकर उनके सरहाने खड़ा हो गया और उन्हें जगाने को मक्रूह व ख़िलाफ़े अदब जाना और यह भी नगवार हुआ कि वालिदैन से पहले अपने बच्चों को दूध पिलाऊं हालांकि छोटे छोटे बच्चे मेरे क़दमों से लिपट कर रो रहे थे मगर मैंने उन्हें दूध नहीं दिया क्योंकि मेरा मामूल यही था कि पहले वालिदैन को पिलाता फिर बच्चों को, मैं दूध के प्याले लेकर सुबह तक उनके सरहाने खड़ा रहा।

ऐ परवरदिगार तू जानता है अगर मैंने वालिदैन के साथ यह सुलूक तेरी रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए किया है तो इस चट्टान को ग़ार के मुँह से हटा दे और हम आसमान को देख सकें, उस पर चट्टान सरकी।

★ तीसरे शख़्स की दुआ यह थी कि मैंने काम करने के लिए एक मज़्दूर को उजरत पर लिया काम पूरा होने के बाद मैंने उसे उसकी उजरत देना चाही मगर वह छोड़ कर चला गया। मैं उसकी उजरत को बढ़ाता रहा यहाँ तक कि उस से काफी माल मवेशी हो गए, एक दिन नागहाँ वही मज़्दूर आया और कहा अल्लाह से डरो और मेरी उजरत मेरे हवाले करो और मुझ पर ज़ुल्म न करो, मैंने कहा यह जो जानवर वग़ैरह देख रहे हो यह सब तुम्हारा है मज़्दूर ने कहा भई अल्लाह से डरो मेरा मज़ाक़ न उड़ाओ मैंने कहा मैं तुम्हारा मज़ाक़ नहीं उड़ा रहा हूँ, यह सब तुम्हारे ही हैं इन्हें ले लो वह

मज़दूर अपना वह माल गाय वगैरह लिया और चला गया।

ऐ ख़ालिके काइनात तू ख़ूब जानता है अगर मैंने उस मज़दूर के लिए यह काम तेरी रज़ा व ख़ुशी के लिए किया है तो इस चट्टान को हटा दे, इस पर मुकम्मल तौर पर वह चट्टान ग़ार के मुँह से सरक गई और वह लोग बसलामत निकल आए।

(मुरत्तिब बुख़ारी अव्वल, बाब हदीसुल—ग़ार, स0 493, बुख़ारी दोम, बाब इजाबते दुआ मिन बिर्रे वालिदैहे, स0 883)

नया कपड़ा पहनने की दुआ

नया कपड़ा बिस्मिल्लाह कह कर पहने और पहन कर पढ़े ।

(तिर्मिज़ी, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 330)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़नीहे मिन ग़ैरे हौलिन मिन्नी वला क़ुव्वतिन।

रफ़ा हाजत की दुआ

पाखाना जाने से पहले यह दुआ पढ़े।

अऊज़ुबिल्लाहे मिनल—ख़ुब्से वल—ख़बाइस। (तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 473)

अंबिया किराम की ख़ास ख़ास दुआएँ

अल्लाह तआला बन्द—ए—मोमिन की दुआ क़बूल फरमाता है। ख़ुसूसन अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की दुआएँ रद्द नहीं होतीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की अगरचे हज़ारों दुआएँ क़बूल होती हैं मगर एक दुआ उन्हें ख़ास जनाबे बारी तबारक व ताअला से मिलती है कि जो चाहो माँग लो, बेशक दिया जाएगा। तमाम अंबिया आदम से ईसा तक अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम सब अपनी—अपनी वह दुआ दुनिया में कर चुके, और मैंने आख़िरत के लिए उठा रखी, वह मेरी शफ़ाअत है मेरी उम्मत के लिए, क़यामत के दिन मैंने उसे अपनी सारी उम्मत के लिए रखा है जो ईमान पर दुनिया से उठी।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद)

अल्लाहु अकबर! ऐ गुनहगाराने उम्मत! क्या तुमने अपने मालिक व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह कमाल राफ़त व रहमत अपने हाल पर न देखी? कि बारगाहे इलाही अज़्ज़ा जलालुहू से तीन सवाल हुज़ूर को मिले कि जो चाहो मांग लो अता होगा, हुज़ूर ने कोई सवाल अपनी ज़ात के लिए न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फरमा दिए। दो सवाल दुनिया में किए वह भी तुम्हारे ही वास्ते। तीसरा आख़िरत को उठा रखा वह तुम्हारी उस अज़ीम हाजत के वास्ते। जब उस मेहरबान मौला रऊफ़ुर्रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सेवा कोई काम आने वाला, बिगड़ी बनाने वाला न होगा। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

वल्लाहुल—अज़ीम! क़सम उसकी जिसने उन्हें हम पर मेहरबान किया कि हरगिज़ हरगिज़ कोई माँ अपने अज़ीज़ प्यारे इक्लौते बेटे पर ज़ंहार इतनी मेहरबान नहीं जिस क़द्र वह अपने एक उम्मती पर मेहरबान हैं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

इलाही तू हमारा इज्ज़ व ज़ुअफ़ और उनके हुक़ूक़े अज़ीम की अज़्मत जानता है। ऐ क़ादिर, ऐ वाजिद, ऐ माजिद, हमारी तरफ़ से उन पर और उनकी आल पर वह बरकत वाली दरूदें नाज़िल फरमा जो उनके हुक़ूक़ को वाफी हों और उनकी रहमतों को काफी।

सुब्हानल्लाह! उम्मतियों ने उनकी रहमतों का यह मुआवज़ा रखा कि कोई अफ़्ज़लीयत में तश्कीकें निकालता है, कोई उनकी शफ़ाअत में शुबह डालता है, कोई उनकी तारीफ़ अपनी सी

जानता है। कोई उनकी ताज़ीम पर बिगड़ कर ग़ुर्राता है। अफ़आले मुहब्बत का बिदअत नाम, इज्लाल व अदब पर शिर्क के अहकाम। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(फतावा रज़वीया जिल्द 11, स0 138)

दुआ और तक़्दीर

बाज़ तक़्दीर जो अटल नहीं होती वह दुआ से टल जाती है और बाज़ नहीं टलती, और दुआ बलाओं को उतरने नहीं देती। (मुरत्तिब)

हदीस में है तक़्दीर किसी चीज़ से नहीं टलती मगर दुआ से, यानी क़ज़ा मुअल्लक़।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है, तक़्दीर के आगे एहतियात की कुछ नहीं चलती और दुआ इस बला से जो उतर आई और जो अभी नहीं उतरी दोनों से नफ़ा देती है, और बेशक बला उतरती है दुआ उससे जा मिलती है दोनों क़यामत तक कुश्ती लड़ती रहती हैं। यानी बला कितना ही उतरना चाहे दुआ उसे उतरने नहीं देती। (हाकिम, तबरानी, बज़्ज़ार)

दवा और तक़्दीर

मरज़ लाहिक़ होने पर इलाज करना भी सुन्नत है और न करना भी, और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इस्तेमाल दवा फरमाना और उम्मते मरहूमा को सदहा अमराज़ के इलाज बताना बकसरत अहादीस में मज़्कूर और तिब्बे नब्वी व सैर वग़ैरह किताबों में मौजूद है।

हदीस में है, ख़ुदा के बन्दो दवा करो कि अल्लाह तआला ने कोई बीमारी ऐसी न रखी जिसकी दवा न बनाई हो, मगर एक मरज़ यानी बुढ़ापा।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, निसाई, मुसनद अहमद, फतावा रज़वीया जिल्द जिल्द 11, स0 178)

दूसरी हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की गई दवा तक़्दीर से क्या नाफ़े होगी फरमाया, दवा ख़ुद भी तक़्दीर से है अल्लाह तआला जिसे चाहे जिस दवा से चाहे नफ़ा पहुँचा देता है।

(मुसनद अल–फिरदौस, अबू नईम, तबरानी, फतावा रज़वीया जिल्द 11, स0 183)

नमाज़ के बाद की दुआएँ

नमाज़ के बाद दुआ माँगना सुन्नत है और हाथ उठा कर दुआ माँगना और बाद दुआ मुँह पर हाथों को फेर लेना यह भी सुन्नत से साबित है यानी जब नमाज़ से फारिग़ हो जाए तो बारगाहे रब्बे ज़ुल–जलाल में गिरिया व ज़ारी करते हुए दुआ करे, वह दुआ बारगाहे इलाही में क़बूल होती है। जिस में आंसू निकल आए या अगर आंसू न निकलें तो कम अज़ कम रोती सूरत ही बना ले कि यह भी क़बूल की दलील है। नमाज़ से फारिग़ होने के बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़रूर दुआ फरमाते थे मगर यह कि यह दुआएं मुख़्तलिफ़ हैं वक़्त और हालात के हिसाब से हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुआ के अल्फ़ाज़ में तब्दील फरमाते या यह कि जिस तरह हुज़ूर को हुक्मे इलाही होता या जो अल्फ़ाज़े करीमा इल्क़ा होते उन्हीं से दुआ फरमाते थे। (मुरत्तिब)

1. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ से फारिग़ होने के बाद तीन बार इस्तिग़फार फरमाते और यह कहते।

अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्ता या ज़ल–जलाले वल–इक्राम।

(सहाहे सित्ता)

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल–मुल्कु वलहुल–हम्दु वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर।

अल्लाहुम्मा ला मानेआ लेमा आतैता वला मुअ्ती लेमा मनअता वला यंफ़ओ ज़ल–जदे मिन्कल–जदे। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

3. कअब अहबार फरमाते हैं उसकी क़सम जिसने मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए दरिया को फाड़ दिया हम तौरेत में पाते हैं कि अल्लाह के नबी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब नमाज़ से फारिग़ होते।

सुहैब कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी नमाज़ से फारिग़ होने के बाद दुआ पढ़ते थे।

4. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हम जब हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते तो हम हुज़ूर के दाहिनी जानिब होने को पसन्द करते थे क्योंकि हुज़ूर इस तरफ चेहर–ए–अनवर से मुतवज्जेह होते।

5. जब हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ से फराग़त फरमाते।

6. हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो बन्दा नमाज़ के बाद हाथों को फैला कर यह दुआ माँगे तो अल्लाह तआला उसके हाथों को खाली नहीं लौटाएगा यानी उसकी दुआ क़बूल हो जाएगी।

7. हदीस में है कि जो नमाज़े फज्र के बाद किसी से बात करने से पहले अल्लाहुम्मा अजिरनी मिनन्नारे, सात बार कहे और वह उसी दिन मर जाए तो अल्लाह तआला उसे आतिशे दोज़ख़ से आज़ादी लिख देगा, और जो नमाज़े मग़रिब के बाद किसी से बात करने से पहले उसे सात बार पढ़े और वह उसी रात को मर जाए तो वह जहन्नम से आज़ाद हो जाएगा।

(त. मुसनद अहमद, निसाई, अबू दाऊद, फतावा रज़वीया, जिल्द 3, स0 83 ता 85)

8. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब नमाज़ का सलाम फेरते तो बुलन्द आवाज़ से कहते।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम गाहे बगाहे इन दुआओं को भी पढ़ा करते थे। (मुरत्तिब)

अबू उमामा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हमने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह कौन सी दुआ ज़्यादा सुनी जाती है फरमाया रात के निस्फ़ अख़ीर में और फर्ज़ नमाज़ों के बाद।

(तिर्मिज़ी, निसाई)

फर्ज़ नमाज़ों के बाद की तख़्सीस इसलिए फरमाई कि वह सब हालतों से अफ़ज़ल हैं तो उनमें उम्मीदे इजाबत ज़्यादा है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 779)

रोज़े जुमा एक साअते इजाबत

जुमा के दिन एक मख़्सूस साअत होती है उस वक़्त अगर कोई दुआ करे तो उसकी दुआ क़बूल होगी उस साअत की तअय्युन में बहुत इख़्तिलाफ़ है कि आख़िर वह वक़्त है कौन सा? उनमें से बाज़ अक़्वाल मुलाहिज़ा फरमाएं, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं:

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दरबारह साअते जुमा फरमाया वह इमाम के दो ख़ुतबों के दरम्यान जुलूस से नमाज़ ख़त्म होने तक है। (मुस्लिम)

बल्कि सही हदीस हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व मुतअद्दद अक़्वाले सहाबा व ताबईन की रू से यह जलसा इन औक़ात में है जिनमें साअते इजाबत जुमा की उम्मीद है।

2. शुरू ख़ुत्बा से ख़त्म तक है। (इब्ने अब्दुल–बर्र)

ख़ुद हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ऐन ख़ुतबा में दस्ते मुबारक बुलन्द फरमा कर एक जुमा को पानी बरसने, दूसरे को मदीना तैय्यबा पर से खुल जाने की दुआ माँगना सही हदीस से साबित है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ुतबा इरशाद फरमा रहे थे एक आराबी ने दौराने ख़ुतबा खड़े हो कर अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हम हलाक हो गए, हमारे अह्लो अयाल ज़ाए हो गए, हमारे माल मवेशी तबाह हो गए सफर के रास्ते मुन्क़ता हो गए, आप बारिश के लिए ख़ुदा से दुआ फरमा दीजिए, यह सुनकर हुज़ूरे रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने हाथों को बुलन्द किया और दुआ की फौरन बादल उमंड आए और बारिश होने लगी मुसलसल दूसरे जुमा तक पानी बरसता रहा, फिर वही आराबी खड़ा हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह कसरते बाराँ से सब कुछ हलाक हो गया वादियाँ भर गईं, बारिश बन्द होने की दुआ फरमा दीजिए हुज़ूर ने हाथ उठा कर फरमाया ऐ अल्लाह हम पर न बरसे मदीना के इर्द गिर्द बरसे, उसके बाद फौरन ही मदीना के ऊपर से बादल खुल गए।

(मुरत्तिब, बुख़ारी अव्वल, स0 137, बाबुल–इस्तिस्क़ा फिल–मस्जिदिल–जामे)

3. वह साअते इजाबत इमाम के निकलने से ख़त्म नमाज़ तक है। (इब्ने अब्दुलबर्र)

4. ख़ुरूजे इमाम से ख़त्म ख़ुतबा तक है। (इब्ने जरैर तबरी)

5. इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने अज़ान से नमाज़ तक रखा।

(हमीद बिन ज़ंजवीया, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 763)

नमाज़े ईद के बाद दुआ

जिस तरह फर्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ क़बूल होती है उसी तरह नमाज़े ईद के बाद भी क़बूल होने की उम्मीद है क्योंकि इसमें भी इज्तिमाईयत होती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे यौमुन्नुशूर अलैहि अफ़्ज़लुस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जब ईद की सुबह होती है मौला सुब्हानुहू तआला हर शहर में फरिश्ते भेजता है (उसके बाद हदीस में उन फरिश्तों का शहर के हर नाका पर खड़ा होना और मुसलमानों को ईदगाह की तरफ बुलाना ब्यान फरमाया, और यह कि जब मुसलमान ईदगाह की तरफ मैदान में आते हैं मौला सुब्हानुहू तआला फरिश्तों से यूं फरमाता है और मलाइका उस से यूं अर्ज़ करते हैं) फिर फरमाया रब तबारक व तआला मुसलमानों से इरशाद फरमाता है ऐ मेरे बन्दो मांगो कि मुझे क़सम अपनी इज़्ज़त व जलाल की आज इस मज्मा में जो चीज़ अपनी आख़िरत के लिए मांगोगे मैं तुम्हें अता फरमाऊंगा, और जो कुछ दुनिया का सवाल करोगे उसमें तुम्हारे लिए नज़र करूंगा (यानी दुनिया की चीज़ें ख़ैर व शर दोनों को मुतहम्मिल हैं और आदमी अक्सर अपनी नादानी से ख़ैर को शर, शर को ख़ैर समझ लेता है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते लिहाज़ा दुनिया के लिए जो कुछ मांगोगे उसमें बकमाले रहमत नज़र फरमाई जाएगी अगर वह चीज़ तुम्हारे हक़ में बेहतर अता होगी वरना उसकी बराबर बला दफा करेंगे या वह दुआ रोज़े क़यामत के लिए ज़ख़ीरा रखेंगे और यह बन्दा के लिए हर सूरत से बेहतर है) मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है जब तक तुम मेरा मुराक़बा रखोगे मैं तुम्हारी लग़्ज़िशों की सत्तारी फरमाऊंगा, मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं तुम्हें अह्ले कबाइर में फज़ीहत व रुसवा न करूंगा, पलट जाओ मग़्फ़िरत पाए हुए, बेशक तुमने मुझे राज़ी किया और मैं तुम से ख़ुशनूद हुआ। (बैहक़ी, इब्ने हिब्बान)

मज्मा ईद में दुआ पर निहायत तरग़ीब आई है, यहाँ तक हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस ज़माना ख़ैर व सलाह में कि फित्ना व फसाद से यक्सर

पाक व मुनज़्ज़ह था हुक्म देते कि ईदैन में कुंवारियाँ नौजवानें और पर्दा नशीन ख़ातूनें बाहर निकलें कि मुसलमानों की दुआ में शरीक हों हत्ता कि हाइज़ औरतों को हुक्म होता मुसल्ले से अलग बैठें और उस दिन की दुआ में शरीक हो जाएं। (बुख़ारी)

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : नौजवान कुंवारियाँ और पर्दा वालियाँ और हाइज़ औरतें सब ईदगाह को जाएं और हैज़ वालियाँ ईदगाह से अलग बैठें और इस भलाई और मुसलमानों की दुआ में हाज़िर हों। (मुसनद अहमद)

दूसरी रिवायत में है उम्मे अतीया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं : हम औरतों को हुक्म दिया जाता था कि ईद के दिन बाहर जाएं यहाँ तक कि कुंवारी अपने पर्दे से निकले यहाँ तक कि हैज़ वालियाँ बाहर आयें सफ़ों के पीछे बैठें, मुसलमानों की तक्बीर पर तक्बीर कहें और उनकी दुआ के साथ दुआ मांगें उस दिन की बरकत व पाकीज़गी की उम्मीद करें।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स० 782)

इज्तिमाई दुआ

अल्हम्दुलिल्लाह कुरआन व हदीस और अक़्वाले उलमा की शहादत से साबित है कि नमाज़े पंजगाना व ईदैन व तहज्जुद वग़ैरह हर गूना नमाज़ के बाद दुआ माँगना शरअन जाइज़ बल्कि मन्दूब व मरग़ूब है, उलमा ने मज्मा मुसलमान को औक़ाते इजाबत से शुमार किया, जिस क़दर मज्मा कसीर होगा जैसे जुमा व ईदैन व अरफात में उसी क़दर उम्मीदे इजाबत ज़ाहिर तर होगी।

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक तुम्हारे रब के लिए तुम्हारे ज़माने के दिनों में कुछ वक़्त अता व बख़्शिश व तजल्ली व करम व जूद के हैं तो उन्हें पानें की तदबीर करो शायद उन में से कोई वक़्त तुम्हें मिल जाए तो फिर कभी बदबख़्ती तुम्हारे पास न आए। (तबरानी)

और ख़ुद हदीस ने उन औक़ात से एक वक़्त इज्तिमाअ मुस्लेमीन का निशान दिया कि एक गरोहे मुसलमानां जमा हो कर दुआ मांगे कुछ अर्ज़ करें। कुछ आमीन कहें।

हबीब बिन मुस्लेमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि मुस्तजाबुद्दावात थे, फरमाते हैं : मैंने हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना कि कोई गरोह जमा न होगा कि उनके बाज़ दुआ करें, बाज़ आमीन कहें मगर यह कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उनकी दुआ मक़्बूल फरमाएगा। (किताबुल–मुस्तदरक अलल–बुख़ारी व मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स० 780)

ख़त्मे कुरआन के बाद की दुआ

असल यह है कि आमाले सालेहा वज्हे रज़ाए मौला जल्ला व उला होते हैं और रज़ाए मौला तबारक व तआला क़बूलीयते दुआ का सबब और उसका महल अमले सालेह से फराग़त पा कर है।

हदीस में है क्या तूने न देखा कि मज़्दूर काम करते हैं जब अपने अमल से फारिग़ होते हैं उस वक़्त पूरी मज़्दूरी पाते हैं। (बैहक़ी)

दूसरी हदीस में है आमिल को उसी वक़्त अज्रे कामिल दिया जाता है जब अमल तमाम कर लेता है। (मुसनद अहमद, बज़्ज़ार)

तो साइल के लिए बेशक बहुत बड़ा मौक़ा दुआ है कि मौला की ख़िदमत व इताअत के बाद अपनी हाजात अर्ज़ करे इसलिए वारिद हुआ कि हर ख़त्मे कुरआन पर एक दुआ क़बूल होती है।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हर खत्म के साथ एक दुआ मक़्बूल है। (बैहक़ी, ख़तीब)

और फरमाते हैं : सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो कुरआन ख़त्म करे उसके लिए एक दुआ मक़्बूला है। (तबरानी)

रोज़ादार की दुआ

इसलिए रोज़ादार के हक़ में इरशाद हुआ कि इफ़्तार के वक़्त उसकी एक दुआ रद्द नहीं होती। हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : तीन शख़्सों की दुआ रद्द नहीं होती एक उनमें रोज़ादार जब इफ़्तार करे। (मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है बेशक रोज़ादार के लिए वक़्ते अफ़्तार बिल–यक़ीन एक दुआ है कि रद्द न होगी। (इब्ने माजा)

एक और हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हर रोज़ादार बन्दे के लिए इफ़्तार के वक़्त एक दुआ मक़बूल है ख़्वाह दुनिया में दे दी जाए या आख़िरत में उसके लिए ज़ख़ीरा रखी जाए।

(नवादिरुल–उसूल, इमाम हकीम, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 778)

इख़्तितामे मज्लिस पर दुआ

आदमी जब किसी मज्लिस में बैठता है तो वहाँ पर अच्छी बुरी दोनों तरह की बातें होती हैं अगर बातें अच्छी हों तो उनका फाइदा तो होता ही है और अगर बातें बुरी हैं तो कुछ दुआओं के इख़्तितामे मज्लिस पर पढ़ने से वह बातें मह्व हो जाती हैं उनका गुनाह नहीं होता। (मुरत्तिब)

हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तुम में कोई किसी जल्से में बैठे तो हरगिज़ वहाँ से न हटे जब तक तीन बार यह दुआ न कर ले। कि अगर उसने इस जल्से में कोई नेक बात कही है तो यह दुआ उस पर मुहर हो जाएगी और अगर वह जल्सा लग़्व का था तो जो कुछ उसमें गुज़रा यह दुआ उसका कफ़्फ़ारा हो जाएगी। दुआ यह है :

सुब्हानका अल्लाहुम्मा रब्बना व बेहम्देका ला इलाहा इल्ला अन्ता इग़्फ़िरली व तुब अलैय्या।

तरजमा : पाकी है तुझे ऐ रब हमारे और तेरी तारीफ़ बजा लाता हूँ तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं मेरे गुनाह बख़्श और मुझे तौबा दे। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, निसाई)

एक हदीस में यूं है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब कोई जल्सा फरमाते तो उसके ख़त्म में उठते वक़्त यह दुआ करते।

तरजमा : तेरी पाकी बोलता और तेरी हम्द में मश्ग़ूल होता हूँ ऐ अल्लाह मैं गवाही देता हूँ तेरे सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं मैं तेरी मग़्फ़िरत माँगता और तेरी तरफ तौबा करता हूँ।

(इब्ने अबी अद्दुनिया)

(तबरानी)

एक रिवायत में है कि जब हुज़ूर उठना चाहते तो यह दुआ फरमाते।

बाज़ रिवायत में यह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं :

तरजमा : मैंने बुरा किया और अपनी ही जान को आज़ार पहुँचाया अब मेरी मग़्फ़िरत फरमा दे बेशक तेरे सिवा कोई गुनाह माफ करने वाला नहीं। (तबरानी)

एक रिवायत में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम खड़े होने से पहले यह दुआ पढ़ते।

(अबू दाऊद)

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं : हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब किसी मज्लिस में बैठते या नमाज़ पढ़ते कुछ कलिमात फरमाते, उम्मुल–मुमिनीन ने वह कलिमात पूछे फरमाया वह ऐसे हैं कि अगर इस जलसा में कोई नेक बात कही है तो यह क़यामत तक उस पर मुहर हो जाएंगे और बुरी कही है तो कफ़्फ़ारा।

तरजमा : इलाही मैं तेरी तस्बीह व हम्द बजा लाता और तुझ से इस्तिग़फ़ार व तौबा करता हूँ।

(निसाई, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 783, 784)

वक़्त अज़ान की दुआ

अज़ान के वक़्त जो दुआ की जाती है वह बारगाहे इलाही में क़बूल होती है। (मुरत्तिब)
हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं दो दुआएं रद्द नहीं होतीं।
★ एक अज़ान के वक़्त।
★ और एक जिहाद में जब कफ़्फ़ार से लड़ाई शुरू हो। (अबू दाऊद, इब्ने हिब्बान)
दूसरी हदीस में है कि जब अज़ान देने वाला अज़ान देता है आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दुआ क़बूल होती है। (अबू याला, हाकिम)
इन हदीसों से मालूम हुआ कि अज़ान इजाबते दुआ के असबाब से है।
(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 551)

नया चाँद देख कर पढ़ने की दुआएँ

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब नया चाँद देखते अपना चेहर-ए-मुबारक उसकी तरफ से फेरे लेते। (अबू दाऊद)
शायद इसकी वजह यह हो कि शर की चीज़ है या यह कि कुफ़्फ़ार ने उसकी इबादत की, और शरअ् में उसे देख कर अल्लाह अज़्ज़ा व जलालुहू से दुआ करनी आई तो पसन्दीदा हुआ कि मुँह फेर कर की जाए ताकि कुफ़्फ़ार से मुशाबेहत लाज़िम न आए।
हदीस में रूयते हिलाल की बहुत दुआएँ आई हैं बाज़ यह हैं :

1. अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर अल्हम्दु लिल्लाह ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह। (दारमी)
2. अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका मिन ख़ैरे हाज़श्शहरे व अऊज़ुबिका मिन शर्रिल-क़द्रे व मिन शर्रे यौमिल-महशरे। (दारमी)
3. हिलालु ख़ैरे व रुश्दिन आमन्तु बिल्लज़ी ख़लक़का। (अबू दाऊद)
4. अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका मिन ख़ैरे हाज़ा।
5. अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका मिन् ख़ैरे हाज़श्शहरे व ख़ैरिल-क़द्रे व अऊज़ुबिका मिन शर्रेही। (अबू दाऊद)
6. अल्लाहुम्मा अहिल्लहू अलैना बिलयम्ने वल-ईमाने वस्सलामते वल-इस्लाम। (अबू दाऊद)
7. अस्अलुका मिन ख़ैरे हाज़श्शहरे व नूरेही व बरकतेही व हदाहु व तुहूरेही व मुआफ़ातेही।
8. अल्लाहुम्मरज़ुक़्ना ख़ैरेही वंसुरहु व बरकतहू व फ़त्हहू व नूरहू व नऊज़ुबिका मिन शर्रेही व शर्रेमा बअ्दहू। (तिर्मिज़ी)

"नया चाँद देखने के बाद इन तमाम दुआओं का पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि उनमें से कोई एक पढ़ ले तो काफी है।" (मुरत्तिब)
हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने चाँद देख कर फ़रमाया ऐ आइशा अल्लाह तआला की पनाह माँग इस शर से कि यही है वह अंधेरी डालने वाला जब डूबे या गहनाए। (निसाई)
यानी क़ुरआने अज़ीम में (व मिन शर्रे ग़ासेक़िन) जिस ग़ासिक़ का ज़िक्र फ़रमाया और उसके शर से पनाह माँगने का हुक्म आया उस से यही चाँद मुराद है। यह जो जाहिलों में मशहूर है कि फ़लां चाँद तल्वार पर देखे, फ़लां आईना पर यह सब जिहालत व हिमाक़त है बल्कि हदीस में जो दुआएं आई हैं वह पढ़नी काफी हैं। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 573, 574)

सुब्हानल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर

हदीस में हुक्म आया है कि 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह, 34 बार अल्लाहु

अकबर, कहा जाए तो बहुत बड़ी फ़ज़ीलत हासिल होगी, इसे तस्बीह फातिमा भी कहते हैं अगर कोई रात को सोते वक़्त इस तस्बीह की मज़कूरा तादाद पढ़ ले तो उसके दिन भर की थकावट ख़त्म हो जाएगी और महसूस होगा कि रात भर किसी ख़ादिम ने ख़िदमत की है। (मुरत्तिब)

बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त अल्लाहु अकबर और नीचे उतरते वक़्त सुब्हानल्लाह कहने का हुक्म आया है। (मुरत्तिब)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की हदीस में है कि हम जब बुलन्दी पर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते और नीचे को उतरते तो सुब्हानल्लाह कहते थे।

अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : कि हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ एक सफर में थे जब बुलन्दी पर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ लोगो! अपनी जानों पर नर्मी करो तुम किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकारते हो बल्कि तुम तो उसे पुकारते हो जो सुनता देखता है। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

बेहतरीन दुआएँ

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि : बेहतरीन दुआ अरफा की दुआ है, और वह दुआ बेहतर है जो मैंने और मुझ से पहले के अंबिया ने कही है।

एक हदीस में है कि ज़िक्र में अफ़्ज़ल है ला इलाहा इल्लल्लाह, और दुआ में अफ़्ज़ल है, अल्हम्दुलिल्लाह। (त, तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 655)

मोमिन भाई से दुआ की दरख़्वास्त

अगर कोई मोमिन दूसरे मोमिन भाई से दुआ कराए और वह दुआ करे तो उसकी दुआ क़बूल होगी क्योंकि मोमिन के लिए उसके ग़ाइबाना में दुआ करने से क़बूल होती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है ख़ुद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दुआ चाही, जब वह मक्का मुअज़्ज़मा जाते थे इरशाद फरमाया ऐ भाई अपनी दुआ में हमें भूल न जाना। (अबू दाऊद)

दूसरी रिवायत में है भाई अपनी नेक दुआ में हमें भी शरीक कर लेना और भूल न जाना। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

ओवैस क़रनी से तलबे दुआ का हुक्म

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ओवैस क़रनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र करके सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को हुक्म दिया तुम में जो उसे पाए अपने लिए उस से दुआए बख़्शिश कराए। (मुस्लिम, बैहक़ी)

एक रिवायत में है हज़रत फारूक़ को बित्तख़सीस भी हुक्म हुआ उन से दुआ कराना कि वह अल्लाह के हुज़ूर इज़्ज़त वाला है। हस्बुल–हुक्म अमीरुल–मुमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन से दुआ चाही। (ख़तीब, इब्ने असाकिर, हाकिम)

एक रिवायत में है अमीरुल–मुमिनीन फारूक़ व अमीरुल–मुमिनीन मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों को हज़रत ओवैस से तलबे दुआ का हुक्म था, दोनों साहिबों ने अपने लिए दुआ कराई। (इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 246, 247)

सफर की दुआ

घर से चलते वक़्त जो यह दुआ पढ़े वापसी तक उसके माल और अह्ल व अयाल महफ़ूज़ रहेंगे और तरजमा : इलाही हम तेरी पनाह माँगते हैं सफर की मशक़्क़त और वापसी की बदहाली और

माल या औलाद में कोई बुरी हालत नज़र आने से।

सवार हो कर पढ़ने की दुआ

बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर, अल्हम्दुलिल्लाह, सुब्हानल्लाह, तीन तीन बार, ला इलाहा इल्लल्लाह, एक बार, फिर कहे सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रा लना हाज़ा वमाकुन्ना लहू मुक़रेनीना व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लेबून।

मंज़िल की दुआ

मुसाफ़िर जिस मंज़िल में उतरे तो यह दुआ कहे हर नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा।

अऊज़ुबे कलिमातिल्लाहित्ताम्माते मिन शर्रे मा ख़लक़ा।

जब वह बस्ती नज़र पड़े जिस में ठहरना या जाना चाहता है तो यह कहे हर बला से महफ़ूज़ रहेगा।

दरिया में सवार होने की दुआ

जब दरिया में सवार हो तो कहे डूबने से महफ़ूज़ रहेगा।

गुमशुदा चीज़ के लिए दुआ

अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो यह कहे इंशाअल्लाह तआला वह चीज़ मिल जाएगी।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 692, 693)

दुआ की मंफ़अत पर अहादीस

दुआ अल्लाह तआला से सवाल व इल्तिजा का एक ज़रिया है बन्द–ए–मोमिन जब परवरदिगारे आलम से दुआ करता है तो वह ख़ुश होता है वरना ग़ज़ब फ़रमाता है और यह कि दुआ बकसरत करे क्योंकि उसकी बारगाह में किसी चीज़ की कमी नहीं और यह ख़्याल करे कि रब तआला से दुआ कर रहा है जिसके दस्ते क़ुदरत में भलाईयाँ ही भलाईयाँ हैं, दुआ की तासीर तो यह है कि वह क़ज़ाए मुबरम को रद्द कर देती है, दुआ के मनाफ़े पर अहादीस मुलाहिज़ा हों। (मुरत्तिब)

अल्लाह तआला फ़रमाता है : तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा।

(ग़ाफ़िर, 60)

★ और फ़रमाता है : क़बूल करता हूँ दुआ करने वाले की दुआ जब मुझे पुकारे।

(अल–बक़रा, 186)

हदीसे क़ुदसी : अल्लाह तआला फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के पास हूँ और मैं उसके साथ हूँ जब मुझ से दुआ करे। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हदीसे क़ुदसी : और फ़रमाता है : ऐ फ़रज़न्दे आदम तो जब तक मुझ से दुआ माँगे जाएगा और उम्मीद रखेगा तेरे कैसे ही गुनाह हों बख़्शता रहूँगा और मुझे कुछ परवाह नहीं। (तिर्मिज़ी)

हदीसे क़ुदसी : रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है जो मुझ से दुआ न करे मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा। (किताबुल–मवाइज़, असकरी)

बाज़ वह अहादीस जिन में दुआ की ख़ास ताकीद या उसके तर्क पर तहदीद या उसकी तक़्सीर का ताकीदी हुक्म आया है। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : ख़ुदा के बन्दो दुआ को लाज़िम पकड़ो। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

हदीस 2 : मुझ पर दरूद भेजो और दुआ में कोशिश करो। (मुसनद अहमद, निसाई)

हदीस 3 : दुआ में तक़्सीर न करो कि जो दुआ करता रहेगा हरगिज़ हलाक न होगा।

(इब्ने हिब्बान, हाकिम)

हदीस 4 : रात दिन ख़ुदा से दुआ माँगो कि दुआ मुसलमान का हथियार है। (अबू याला)

हदीस 5 : आफ़ियत की दुआ अक्सर माँग। (हाकिम)

हदीस 6 : दुआ की कसरत करो कि दुआ क़ज़ाए मुबरम को रद्द करती है।

(किताबुस्सवाब, अबुश्शैख़)

हदीस 7 : एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुआ की फ़ज़ीलत इरशाद फरमाई सहाबा ने अर्ज़ की ऐसा है तो हम दुआ की कसरत करेंगे फरमाया अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का करम बहुत कसीर है। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

हदीस 8 : जिसे ख़ुश आए कि अल्लाह तआला सख़्तियों में उसकी दुआ क़बूल फरमाए वह नर्मी में दुआ की कसरत रखे। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

हदीस 9 : जो अल्लाह तआला से दुआ न करेगा अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब फरमाएगा।

(मुसनद अहमद, इब्ने अबी शैबा, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 784, 785)

हदीस 10 : दुआ की कसरत करे। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

हदीस 11 : दुआ में कसल व कमी न करो कि दुआ के साथ कोई हलाक न होगा।

(हाकिम, इब्ने हिब्बान)

हदीस 12 : बेशक अल्लाह तआला बकसरत व बार बार दुआ करने वालों को दोस्त रखता है।

(तबरानी, इब्ने अदी)

हदीस 13 : तुम्हारे रब के लिए ज़माने के दिनों में कुछ अताएँ, रहमतें, तजल्लियाँ हैं तो उनकी तलाश रखो (यानी खड़े, बैठे लेटे हर वक़्त दुआ माँगते रहो, तुम्हें क्या मालूम किस वक़्त रहमते इलाही के ख़ज़ाने खोले जाएं) शायद उनमें कोई तजल्ली तुम्हें भी पहुँच जाए कि कमी फिर बदबख़्ती न आए। (तबरानी)

हदीस 14 : जब तुम में कोई शख़्स दुआ माँगे तो कसरत करे कि अपने रब ही से सवाल कर रहा है। (इब्ने हिब्बान, तबरानी)

यानी सवाल की कसरत हो और जो माँगा जाए ज़्यादा और बड़ी चीज़ माँगी जाए कि आख़िर रब्बे क़दीर से सवाल करता है, रब्बे करीम सवाल की कसरत से ख़ुश होता है बख़िलाफ़ इब्ने आदम कि बार–बार माँगने से झुंझला जाता है। और दुआ न करने से रब तआला ग़ज़ब फरमाता है।

(मुरत्तिब)

हदीस 15 : बेशक अल्लाह तआला ने बरकत रखी आदमी की उस हाजत में जिसमें वह दुआ की कसरत करे। (बैहक़ी)

कसरते दुआ से घबरा कर दुआ छोड़ देने वाले को फरमाया ऐसे की दुआ क़बूल नहीं होती।

हदीस 16 : जब तक बन्दा गुनाह या क़ता रहम की दुआ न करे और उज्लत न करे तो उसकी दुआ मक़्बूल होती है, वह कहता है मैंने बार–बार दुआ की और क़बूलियत न देखी फिर वह उस वक़्त हैरत से दुआ छोड़ देता है। ऐसे शख़्स की दुआ क़बूल नहीं होती।

(त, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 19, 24)

दरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दरूद पाक की सबसे अहम फ़ज़ीलत यह है कि अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजते हैं, बन्दा ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस से इल्तिजा व सवाल करता है कि ऐ परवरदिगार मैं इस लाइक़ नहीं कि मैं बारगाहे रिसालत में दरूद मुबारक की डालियाँ पेश कर सकूं यह तुझी को ज़ेबा है तू ही भेज सकता है लिहाज़ा तू अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेज, रहमतें नाज़िल फरमा। दरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल बेशुमार हैं, दरूद पाक की कसरत से दीन व दुनिया की भलाइयाँ मयस्सर होती हैं, अल्लाह तआला उसके बिगड़े काम बना देता है। उसे माँगने से सिवा देता है लिहाज़ा ऐ ईमान वालो तुम भी दरूद भेजो। (मुरत्तिब)

दरूद की बरकत

हुज़ूर पुर नूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ज़ो मुझ पर दरूद भेजे उसका दिल निफ़ाक़ से ऐसा पाक हो जाए जैसे कपड़ा पानी से।

(कशफ़ुल–ग़म्मा अन जमी–उल–उम्मा)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : जो कहे सल्लल्लाहु अला मुहम्मद, उसने सत्तर दरवाज़े रहमत के अपने ऊपर खोल लिए। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसकी मुहब्बत लोगों के दिलों में डालेगा कि उस से बुग़्ज़ न रखेगा मगर वह जिसके दिल में निफ़ाक़ होगा।

(कशफ़ुल–ग़म्मा, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 459)

ख़ुशबू सूँघते वक़्त दरूद पढ़ना

ख़ुशबू लेते या सूँघते वक़्त मुतनब्बेह हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसे दोस्त रखते और बकसरत इस्तेमाल फरमाते थे इस ख़ुल्क़े अज़ीम को याद करके हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे कि हुज़ूर की अज़मत और तमाम उम्मत पर हुज़ूर का यह हक़ होना उसके दिल में जमा कि हुज़ूर के आसारे शरीफ़ा या उन पर दलालत करने वाली कोई चीज़ देखें तो निहायत ताज़ीम की आँख से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तसव्वुर करें, कि ज़्यारत आसारे शरीफ़ा के वक़्त दरूद पढ़ना उलमा ने मुस्तहब रखा है और शक नहीं कि जिसने ख़ुशबू सूँघते वक़्त यह तसव्वुर किया वह गोया मानन बाज़ आसार शरीफ़ा की ज़्यारत कर रहा है तो उसे उस वक़्त हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद व सलाम की कसरत सुन्नत है। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 498)

ज़्यारते अक़्दस मयस्सर हो

हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारते शरीफ़ा हासिल होने के लिए दरूद शरीफ़ की कसरत शब में और सोते वक़्त के अलावा हर वक़्त तक्सीर रखे बिल–ख़ुसूस इस दरूद शरीफ़ की बाद इशा सौ बार या जितनी बार पढ़ सके पढ़े।

हुसूले ज़्यारते अक़्दस के लिए उस से बेहतर सेग़ा नहीं मगर ख़ालिस ताज़ीम शाने अक़्दस के लिए पढ़े इस नीयत को भी जगह न दे कि मुझे ज़्यारत अता हो आगे उनका करम बेहद व बेइंतिहा।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल स0 61)

कसरते दरूद के मनाफ़े

दरूद शरीफ़ की जितनी कसरत कर सके इतने मनाफ़े व फवाइद मिलेंगे। वुज़ू, बेवुज़ू हर हाल में दरूद पाक का विर्द किया जा सकता है ख़्वाह मिक़्दार मुतअय्यन हो या न हो, दोनों सूरतें दुरुस्त हैं। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं:

सब दरूदों से अफ़ज़ल दरूद वह है जो सब आमाल से अफ़ज़ल यानी नमाज़ में मुक़र्रर किया गया है, दरूद शरीफ़ राह चलते भी पढ़ने की इजाज़त है, जहाँ नजासात पड़ी है वहाँ रुक जाए, और बेहतर यह है कि एक वक़्त मुअय्यन करके एक अदद मुक़र्रर कर ले कि इस क़दर बावुज़ू दो ज़ानू अदब के साथ मदीना तैय्यबा की तरफ मुँह करके रोज़ाना अर्ज़ किया करे जिसकी मिक़्दार सौ बार से कम न हो, ज़्यादा जिस क़दर निबाह सके बेहतर है। अलावा इसके चलते फिरते, उठते बैठते वुज़ू बेवुज़ू हर हाल में दरूद जारी रखे और उसके लिए बेहतर यह है कि एक सेगा ख़ास का पाबन्द न हो बल्कि वक़्तन फ़वक़्तन मुख़्तलिफ़ सेग़ों से अर्ज़ करता रहे ताकि हुज़ूरे क़ल्ब में फ़र्क़ न हो।

दरूद शरीफ़, कलिमा तैय्यबा और इस्तिग़फ़ार उन सबकी कसरत निहायत महबूब व मतलूब है कलिमा तैय्यबा को अफ़ज़लुज़्ज़िक्र फरमाया और यह कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल तक उसके पहुँचने में कोई रोक नहीं और इस्तिग़फ़ार के लिए फरमाया शादमानी है उसे जो अपने नाम–ए–आमाल में इस्तिग़फ़ार बकसरत पाए।

और अपने तमाम औक़ात को दरूद शरीफ़ में सर्फ़ कर देने को फरमाया कि ऐसा करेगा तो अल्लाह तेरे सब काम बना देगा, और तेरे गुनाह माफ़ फरमा देगा।

(फतावा रज़वीया जिल्द 3, स0 62)

दरूद पाक के फवाइद व बरकात

★ हदाइकुल–अनवार में है :

वह फाइदे जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेज कर हासिल करते हैं उनमें अजल व आज़म फाइदों से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सूरते करीमा का दिल में नक़्श होना है।

★ इमाम अबू अब्दुल्लाह साहिली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

वह अज़ीम व जलील समरात व फवाइद जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेज कर हासिल किए जाते हैं यह हैं कि हुज़ुर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सूरते करीमा का पाइदार व मुस्तहकम व दाइमी नक़्श दिल में हो जाए यह यूं हासिल होता है कि नीयत ख़ालिस व रिआयत शराइत आदाब और मआनी पर ग़ौर व फ़िक्र के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजने की मुदावमत करे। यहाँ तक कि हुज़ूर की मुहब्बत ऐसे सच्चे ख़ालिस तौर पर दिल में जम जाए जिसके सबब नफ़्से ज़ाकिर को, नफ़्से अक़्दस हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इत्तिसाल और महल्ले तक़र्रुब व सफ़ा में बाहम उल्फ़त हासिल हो।

शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर दरूद पाक के फवाइद में से यह है कि आँख में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़्याली सूरत क़ाइम हो जाती है जिसके लिए हुज़ूर की नअ़त शरीफ़ के साथ दरूद शरीफ़ की कसरत लाज़िम है, तवज्जोह और हुज़ूर दिल से पढ़े, अल्लाहुम्मा सल्ले व सल्लिम अलैहे। (त, अल–याक़ुतुल–वास्तते फ़ी क़ल्बे अक़्दुर्राबेतते)

दरूद में तख़्फ़ीफ़ की मुमानेअत

अल्लाह तआला ने ईमान वालों को अपने महबूब जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद पाक भेजने का हुक्म फरमाया, नामे अक़्दस लिखने, पढ़ने, बोलने या सुनने में हर हाल में दरूद शरीफ़ अदा करे लिखने में आए तो पूरी दरूद लिखे उसमें कुछ तख़्फ़ीफ़ व कमी न करे जिस तरह ज़बान से अदा करने में पूरी दरूद अदा करते हैं इसमें किसी मुख़्तसर

लफ़्ज़ से दरूद की तरफ इशारा नहीं करते यूं ही लिखने में भी किसी मुख़्तसर लफ़्ज़ से दरूद की तरफ इशारा करना जाइज़ व दुरुस्त नहीं।

इस सिलसिला में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू की तहरीर मुलाहिज़ा फ़रमायें। (मुरत्तिब)

हरफ़ (स0) लिखना जाइज़ नहीं, न लोगों के नाम पर न हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इस्मे करीम पर, लोगों के नाम पर तो यूं नहीं कि वह इशारा दरूद का है और ग़ैर अंबिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पर बिल–इस्तिक़लाल दरूद जाइज़ नहीं और नामे अक़्दस पर यूं नहीं कि वहाँ पूरे दरूद शरीफ़ का हुक्म है सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लिखे, फ़क़त स0 या अम या सलअम जो लोग लिखते हैं सख़्त शुनीअ् व मम्नूअ् है यहाँ तक कि तातार खानिया में उसको तख़्फ़ीफ़ शाने अक़्दस ठहराया। वल–अयाज़ बिल्लाह तआला।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 441)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर इस तरह है :

नाम पाक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ बजाए सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सलअम लिखना जिहालत है आजकल बहुत जल्द बाज़ों में यह राइज है, कोई सलअम लिखता है, कोई अम, कोई और स0 और यह सब बेहूदा व मक्रूह व सख़्त नापसन्द व मूजिब महरूमी शदीद है उस से बहुत सख़्त एहतराज़ चाहिए, अगर तहरीर में हज़ार जगह नाम पाक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आए हर जगह पूरा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लिखा जाए। हरगिज़ हरगिज़ कहीं सलअम वग़ैरह न हो। उलमा ने उस से सख़्त मुमानेअत फरमाई है यहाँ तक कि बाज़ किताबों में तो बहुत अशद हुक्म लिख दिया है।

नाम पाक सुन कर दरूद पढ़ने का हुक्म

नाम पाक हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुख़्तलिफ़ जल्सों में जितनी बार ले या सुने हर बार दरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है, अगर न पढ़ेगा गुनहगार होगा और सख़्त सख़्त वईदों में गिरफ़्तार।

हाँ इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अगर एक ही जलसा में चन्द बार नाम पाक लिया या सुना तो हर बार वाजिब है या एक बार काफी और हर बार मुस्तहब है।

बहुत उलमा क़ौले अव्वल की तरफ गए हैं उनके नज़्दीक तो एक जल्सा में हज़ार बार कलिमा शरीफ़ पढ़े तो हर बार दरूद शरीफ़ भी पढ़ता जाए, अगर एक बार भी छोड़ा गुनहगार हुआ।

दीगर उलमा ने बनज़र आसानी उम्मत क़ौले दोम इख़्तियार किया, उनके नज़्दीक एक जल्सा में एक बार दरूद अदाए वाजिब के लिए किफ़ायत करेगा, ज़्यादा के तर्क से गुनहगार न होगा मगर सवाब अज़ीम व फ़ज़्ल जसीम से बेशक महरूम रहा।

बहरहाल मुनासिब यही है कि हर बार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कहता जाए कि ऐसी चीज़ जिसके करने में बिल–इत्तिफ़ाक़ बड़ी–बड़ी रहमतें, बरकतें हैं और न करने में बिला शुबह बड़े फ़ज़्ल से महरूमी, और एक मज़्हबे क़वी पर गुनाह व मासियत, आक़िल का काम नहीं कि इसे तर्क करे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 81, 82)

नामे अक़्दस सुन कर दरूद पढ़ने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू एक और मक़ाम पर फरमाते हैं :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का नाम पाक सुन कर हुक्म है कि अज़्ज़ा व जल्ल जलालुहू या उसके मिस्ल कलिमाते ताज़ीमी कहे, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक सुन कर वाजिब है कि "सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या अलैहे अफ़्ज़लुस्सलातु वस्सलाम" या उसके मिस्ल कलिमाते दरूद कहे।

मगर यह दोनों वजूब बैरूने नमाज़ हैं, नमाज़ में सिवा इन कलिमात के जो शारेअ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुक़र्रर फरमा दिए हैं और की इजाज़त नहीं, ख़ुरूरान जहरीया नमाज़ में वक़्ते क़िराअत इमाम, मुक़्तदी का सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है, यूंही इमाम के ख़ुत्बा पढ़ते में जब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अस्मा तैय्याब आयें सामईन दिल में कलिमाते तक़्दीस व दरूद कहें, ज़बान से कहने की वहाँ भी इजाज़त नहीं, नमाज़ में नामे इलाही सुन कर जल्ला व उला, या नाम पाक सुन कर "सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम" कहना अगर बक़स्द जवाब है नमाज़ जाती रहेगी सह्वन हो या क़स्दन और अगर बिला क़सद जवाब हो तो क़स्दन मम्नूअ़ और सह्वन पर मुआख़ज़ा नहीं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 449)

अम्र बिल-मारूफ़ व नही अनिल-मुंकिर

अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला शानुहू ने इस उम्मते मरहूमा को भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने के लिए पैदा फरमाया, इस उम्मत के उलमा को बनी इसराईल के अंबियां (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) के मिस्ल क़रार दिया गया, यानी उममे साबेक़ा में जो काम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अंजाम देते थे वह काम इस उम्मत के उलमा रब्बानी अंजाम देंगे। अम्र बिल–मारूफ़ व नही अनिल–मुंकिर एक दीनी फ़रीज़ा है जो इस काम पर मामूर हो अल्लाह तआला पर्दा–ए–ग़ैब से उसकी मदद फरमाता है और उसके दुनिया व आख़िरत के काम बआसानी संवर जाते हैं, जिस आदमी के अन्दर जैसी इस्तिताअत व क़ुदरत हो वह उसी के मुताबिक़ अम्र व नही का फरीज़ा अंजाम दे।

हदीस पाक में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि तुम में जो शख़्स कोई मुंकिर व बुराई देखे तो वह उसे अपने हाथ से बदल दे, अगर उसके अन्दर उसे हाथ से रोकने की इस्तिताअत व क़ुदरत न हो तो वह उसे अपनी ज़बान से रोकने की कोशिश करे, अगर ज़बान से भी रोकने की ताक़त न हो तो उसे अपने दिल से ज़रूर बुरा जाने, और यह ईमान का सबसे अदना दरजा है। (त, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 411)

जो लोग किसी नेक बात का इरादा करें और वह उसे न कर सकें तो उनकी नीयत नेक पर ही अज्रे अज़ीम है।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला एक शख़्स को तेरे ज़रीया से हिदायत फ़रमा दे तो यह तेरे लिए तमाम रू–ए–ज़मीन की सलतनत से बेहतर है। हिदायत को जाने के लिए आते जाते जितने क़दम उनके पड़ें हर क़दम पर दस नेकियाँ हैं।

अम्र बिल–मारूफ़ व नही अनिल मुंकिर फर्ज़ है। अगर कोई इस फर्ज़ से रोके तो यह उसका शैतानी काम है, बनी इस्राईल में जिन्होंने मछली का शिकार क़िया था वह भी बन्द कर दिए गए और जिन्होंने उन्हें नसीहत करने को मना किया था (कि क्यों ऐसों को नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करेगा या सख़्त अज़ाब देगा) यह भी तबाह हुए और नसीहत करने वालों ने नजात पाई। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 199)

मुज़बज़ब अक़ीदे वालों से नर्मी का फाइदा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की बारगाह में एक वहाबी ख़्याल शख़्स आया और इल्मे ग़ैब से मुतअल्लिक़ मसला दरियाफ़्त किया, आपने इंतिहाई नर्मी से उसे समझाया

जिसका उस शख़्स पर बहुत अच्छा असर पड़ा जब वह शख़्स यहाँ से गया तो रास्ता ही में कहने लगा कि आला हज़रत की बातें मेरे दिल ने क़बूल कीं और अब मैं इंशाअल्लाह तआला उनका मुरीद हूँगा। इस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

देखो नर्मी के जो फवाइद हैं वह सख़्ती में हरगिज़ हासिल नहीं हो सकते, अगर उस शख़्स से सख़्ती बरती जाती तो हरगिज़ यह बात न होती, जिन लोगों के अक़ाइद मुज़बज़ब हों उन से नर्मी बरती जाए कि वह ठीक हो जाएं।

यह जो वहाबिया में बड़े बड़े हैं उन से भी इब्तिदाअन बहुत नर्मी की गई मगर चूंकि उनके दिलों में वहाबियत रासिख़ हो गई थी, जब उन्होंने हक़ न माना उस वक़्त सख़्ती की गई, कि रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है :

ऐ नबी जिहाद फरमाओ काफिरों और मुनाफ़िक़ों पर और उन पर सख़्ती करो। (अत्तहरीम, 9)

और मुसलमानों को इरशाद फरमाता है :

लाज़िम है कि वह तुम में दुरुश्ती पाएँ। (अत्तौबा, 123)

एक जवान को हुज़ूर की नसीहत

एक शख़्स ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे लिए ज़िना हलाल फरमा दीजिए, सहाबा किराम ने उन्हें क़त्ल करना चाहा कि ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर यह गुस्ताख़ी के अल्फ़ाज़ कहे, हुज़ूर ने मना फ़रमाया और उन से फरमाया, क़रीब आओ, वह क़रीब हाज़िर हुए, और क़रीब फरमाया यहाँ तक कि उनके ज़ानू, ज़ानूए अक़्दस से मिल गए, उस वक़्त इरशाद फरमाया :

★ क्या तू चाहता है कि कोई शख़्स तेरी माँ से ज़िना करे।

अर्ज़ की न।

★ फरमाया तेरी बेटी से।

अर्ज़ की न।

★ फरमाया तेरी बहन से।

अर्ज़ की न।

★ फरमाया तेरी फूफ़ी से।

अर्ज़ की न।

★ फरमाया तेरी खाला से।

अर्ज़ की न।

★ फरमाया कि जिससे तू ज़िना करेगा आख़िर वह किसी की माँ, या बेटी, या बहन या फूफ़ी, या खाला होगी, यानी जो बात अपने लिए नहीं पसन्द करता दूसरे के लिए क्यों पसन्द करता है, दस्ते अक़्दस उनके सीना पर मार कर दुआ फरमाई कि इलाही ज़िना की मुहब्बत उसके दिल से निकाल दे।

वह साहब कहते हैं जब मैं हाज़िर हुआ था तो ज़िना से ज़्यादा महबूब मेरे नज़्दीक कोई चीज़ न थी, और अब इससे ज़्यादा कोई चीज़ मुझे मबग़ुज़ नहीं।

इसके बाद हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी का ऊंट भाग गया, लोग उसे पकड़ने को उसके पीछे दौड़ते हैं, जितना दौड़ते हैं वह ज़्यादा भागता है, उसके मालिक ने कहा तुम लोग ठहर जाओ उसकी राह मैं जानता हूँ, सब्ज़ घास का एक मुठा लेकर चुम्कारता हुआ ऊंट के क़रीब गया और उसे पकड़ लिया और बिठा कर उस पर सवार हो लिया, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने

फरमाया उस वक़्त अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो वह जहन्नम में जाता।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 37)

बक़द्र कुदरत बुराई से न रोकना सबबे हलाकत है

इस्लामी तरीक़ा यह है कि अगर कोई मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को गुनाह करते हुए देखे तो उसे अपनी कुदरत व इस्तिताअत के हिसाब से ज़रूर रोके वरना अगर उस गुनहगार पर कोई वबाल आया तो उस पर भी आ सकता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि बनी इसराईल में पहली ख़राबी जो आई वह यह थी कि उनमें एक शख़्स दूसरे से मिलता उस से कहता ऐ शख़्स अल्लाह से डर और अपने काम से बाज़ आ कि यह हलाल नहीं, फिर दूसरे दिन उस से मिलता और वह अपने उसी हाल पर होता तो यह अम्र उसको उसके साथ खाने पीने, पास बैठने से न रोकता, जब उन्होंने यह हरकत की अल्लाह तआला ने उनके दिल बाहम एक दूसरे पर मारे कि मना करने वालों का हाल भी उन्हीं ख़ता वालों के मिस्ल हो गया, फिर फरमाया बनी इस्राईल के काफ़िर लानत किए गए दाऊद व ईसा बिन मरयम की ज़बान पर यह बदला है उनकी नाफरमानियों और हद से बढ़ने का वह आपस में एक दूसरे को बुरे काम से न रोकते थे अल्बत्ता यह सख़्त बुरी हरकत थी कि वह करते थे। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

बुरों के साथ अच्छों की हलाकत

मरवी हुआ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने यूशा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वही भेजी मैं तेरी बस्ती से चालीस हज़ार अच्छे और साठ हज़ार बुरे लोग हलाक करूंगा, अर्ज़ की इलाही बुरे तो बुरे हैं अच्छे क्यों हलाक होंगे फरमाया इसलिए कि जिन पर मेरा ग़ज़ब था उन्होंने उन पर ग़ज़ब न किया और उनके साथ खाने पीने में शरीक रहे। (इब्ने अबी अद्दुनिया, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 182, 183)

वअ़ज़ व नसीहत करना आलिम का फ़र्ज़े मंसबी

आलिमे दीन का अम्र बिल–मारूफ़ व नही अनिल–मुंकिर करना, बन्दगाने ख़ुदा को दीनी नसीहतें देना जिसे वअ़ज़ कहते हैं ज़रूर आला फराइज़े दीन से है।

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

तुम सब उम्मतों से बेहतर हो जो लोगों में ज़ाहिर हुई हुक्म देते हो भलाई का और मना करते हो बुराई से और ईमान लाते हो अल्लाह पर। (आले इमरान, 110)

★ और फरमाता है :

लाज़िम है कि तुम में एक गरोह ऐसा रहे कि नेकी की तरफ बुलाए और भलाई का हुक्म दे और बुराई से मना करे और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। (आले इमरान, 104)

★ कुरआने अज़ीम में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और फ़रमाता है :

वअ़ज़ कहता रह कि वअ़ज़ मुसलमानों को फाइदा देता है। (अज़्ज़ारियात, 55)

हाज़िरीन का अदब व ख़ामोशी व रुजूअ़–ए–क़ल्ब के साथ उसे सुनते रहना भी मज़्हबी इबादत और दीनी फरीज़ा है।

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

ख़ुशख़बरी दे मेरे उन बन्दों को जो मुतवज्जेह हो कर बात सुनते फिर उसके बेहतर पर अमल करते हैं। (अज़्ज़ुमर, 18)

वअ़ज़ व नसीहत की मज्लिस में शोर व गुल मचाना, गालियाँ बकना, उसमें दस्त अंदाज़ी करना मज़्हबी तौहीन और ख़ास आदते कुफ़्फ़ार बेदीन है।

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

काफिर बोले इस कुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने में ग़ुल शोर करो शायद यूं ही तुम ग़ालिब आओ। (फ़सलत, 26)

और फरमाता है :

इन्हें क्या हुआ वअ्ज़ से मुँह फेरते हैं गोया वह भड़के हुए गधे हैं कि शेर से भागे हैं।

(अल–मुद्दस्सिर, 49)

वअ्ज़ तो वअ्ज़ कि वह बनस्से सरीह कुरआन मजीद फर्ज़े मज़्हबी है, कुतुबे दीनीया में तस्रीह है कि हर खुतबे हत्ता कि ख़ुत्ब–ए–निकाह व ख़ुत्ब–ए–ख़त्मे क़ुरआन का सुनना भी फर्ज़ है और उन में ग़ुल करना हराम। हालांकि ख़ुत्ब–ए–निकाह सिर्फ़ सुन्नत है और ख़ुत्ब–ए–ख़त्म निरा मुस्तहब।

आयाते कुरआनिया में असल मुख़ातिब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं, यह काम उलमा–ए–दीन हुज़ूर की विरासत से करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक उलमा अंबिया के वारिस हैं।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 207)

अम्र व नही न करने का वबाल

वअ्ज़ व नसीहत से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

अम्र बिल–मारूफ़ व नही अनिल–मुंकिर कुरआने करीम के हुक्म से अहम फराइज़े दीनीया से है और वजूब की हालत में उसका छोड़ने वाला नाफरमान व गुनहगार और उन नाफरमानों की तरह ख़ुद भी दुनिया व आख़िरत में अज़ाब का मुस्तहिक़ है।

अल्लाह तआला फरमाता है :

बनी इस्राईल के काफिरों पर लानत पड़ी दाऊद व ईसा बिन मरयम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की ज़बान से यह बदला था उनकी नाफरमानियों और हद से बढ़ने का, बुरे काम से एक दूसरे को मना न करते थे ज़रूर उनका यह फ़ेअल सख़्त बुरा था। (अल–माइदा, 87)

★ असहाबे सब्त (जिन्हें सनीचर के दिन मछली के शिकार से मना किया गया था) पर दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दुआ की इलाही इन्हें लानत कर और लोगों के लिए निशानी बना दे, लिहाज़ा वह बन्दर हो गए।

अह्ले माइदा पर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यही दुआ की वह सुअर हो गए।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं यूं नहीं ख़ुदा की क़सम या तो तुम ज़रूर अम्र बिल–मारूफ़ करोगे और ज़रूर नही अनिल–मुंकिर करोगे या ज़रूर अल्लाह तआला तुम्हारे दिल आपस में एक दूसरे पर मारेगा फिर तुम सब पर अपनी लानत उतारेगा। जैसी उन बनी इस्राईल पर उतारी। (अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 216)

वाइज़ के लिए इस्लामी शराइत

★ वाइज़ के लिए पहली शर्त यह है कि मुसलमान हो, देवबन्दी अक़ीदे वाले मुसलमान ही नहीं, उनका वअ्ज़ सुनना हराम, और दानिस्ता उन्हें वाइज़ बनाना कुफ़्र है, उलमा–ए–हरमैन शरीफ़ैन ने फरमाया है कि उसके कुफ़्र व अज़ाब में जो शक करे वह भी काफिर है, इसी तरह तमाम वहाबिया व ग़ैर मुक़ल्लेदीन का हुक्म है।

★ दूसरी शर्त सुन्नी होना, ग़ैर सुन्नी को वाइज़ बनाना हराम है अगरचे बिलफर्ज़ वह बात ठीक ही कहे।

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसने किसी बद मज़्हब की तौक़ीर की उसने दीने इस्लाम को ढा देने पर मदद दी। (मिश्कात)

एक और हदीस में है कि लोगों ने जाहिलों को सरदार बना लिया है उन्होंने बेइल्म अहकामे शरई ब्यान करने शुरू किए तो आप भी गुमराह हुए और औरों को भी गुमराह किया। (बुख़ारी)

अ तीसरी शर्त फ़ासिक़ मोअ्लिन न होना।

जब यह सब शराइत गुज़्रा हों सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा आलिमे दीन मुत्तक़ी वअ्ज़ फ़रमाए तो कोई हरज नहीं। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 211)

बाबरकत सबक़ आमोज़ नसीहतें

शरीअते मुतह्हरा क़दम–क़दम पर अपने मानने वालों की हिदायत व रहनुमाई करती है। और उन्हें हलाकतों की राह से नजात देने की कोशिश करती है, शरीअते इस्लामिया पर अमल करना ही हमारी नजात व बख़्शिश का ज़ामिन है, मुख़्तलिफ़ उमूर व अहकाम से मुतअल्लिक़ क़ीमती बातें मुलाहिज़ा फरमाएँ। (मुरत्तिब)

नफ़रत दिलाने वाली बात न करे

बकसरत हदीसें इस बारे में हैं कि बिला वजहे शरई वह बात न की जाए जो सुनने से बुरी मालूम हो, इससे उज़्र की हाजत पड़े और मुसलमानों को नफ़रत दिलाए।

मुतअद्दद हदीसों में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि इस बात से बच जो कान को बुरी लगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी तबक़ाते इब्ने सअद)

नीज़ बहुत हदीसों में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं हर उस बात से बच जिसमें उज़्र करना पड़े। (दैलमी, तबरानी, ज़िया, मुक़द्दसी)

और फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बशारत दो और वह काम न करो जिस से लोगों को नफ़रत पैदा हो। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 333)

बिला वजह समुन्द्र का सफर

किसी सही व जाइज़ हाजते शरई के बग़ैर समुन्द्र में सवार होना न चाहिए कि उसके नीचे आग है। (मुरत्तिब)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि समुन्द्र के नीचे आग है और आग के नीचे दरिया और दरिया के नीचे आग। (त, अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 49)

क़ुरआन पाक में "वल–बहरिल–मस्जूर" आया है मुम्किन है इससे उसी की तरफ इशारा किया गया है। यानी क़यामत के दिन समुन्द्र को आग कर दिया जाएगा जिससे जहन्नम की आग में और भी ज़्यादती हो जाएगी। (मुरत्तिब)

धूप का गर्म पानी

गर्म मुल्क, गर्म मौसम में जो पानी सोने चाँदी के सिवा किसी और धात के बर्तन में धूप से गर्म हो जाए वह जब तक ठंडा न हो ले बदन को किसी तरह पहुँचाना न चाहिए वुज़ू से, न गुस्ल से, न पीने से, यहाँ तक कि जो कपड़ा उस से भीगा हो जब तक सर्द न हो जाए पहनना मुनासिब नहीं, कि उस पानी के बदन को पहुँचने से मआज़ल्लाह एहतमाल बरस है।

अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि धूप से गर्म

शुदा पानी से ग़ुस्ल न करो क्योंकि उस से बरस होता है। (त, दारे कुतनी, अक़ील)

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए धूप में पानी गर्म किया, उस पर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ हुमैरा ऐसा न करो क्योंकि इससे बरस पैदा होता है।

(त, दारे कुतनी, अबू नईम, फतावा रज़्वीया अव्वल, स0 412)

अज़ाब वाली जगह का पानी

मौला करीम रऊफ़ुर्रहीम, अज़्ज़ा जलालुहू अपने हबीबे अकरम रहमते आलाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वजाहते करीमा के सदक़े में अपने ग़ज़ब से दोनों जहान में बचाए।

जिस बस्ती पर (अयाज़न बिल्लाह) अज़ाब उतरा उसके कुओं, तालाबों के पानी का इस्तेमाल खाने, पीने तहारत, हर शय में मक्रूह है, यूं हीं उसकी मिट्टी से तयम्मुम मक्रूह है, हाँ ज़मीन समूद का वह कुआँ जिससे नाक़ा सालेह अलैहिस्सलातु वस्सलाम पानी पीता, उसका पानी इस हुक्म से मुस्तसना व ख़ारिज है।

सहाह में है, सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम हमराह रेकाबे अक़्दस हुज़ूरे सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़मीने समूद पर उतरे, वहाँ के कुओं से पानी भरा, उस से आटे गूंधे, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुक्म फरमाया कि पानी फेंक दें और आटा ऊंटों को खिला दें, चाह नाक़ा से पानी लें।

निस्बत का फाइदा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

महबूबाने ख़ुदा से निस्बत का फाइदा देखिए, समूद की ज़मीन पर कैसा सख़्त अज़ाब व ग़ज़ब उतरा मगर वह कुआँ जिस से नाक़ा सालेह अलैहिस्सलातु वस्सलाम पानी पीता वह ज़ेरे नज़र रहमत ही रहा। (उस पर अज़ाब का असर न हुआ। म) (फतावा रज़्वीया अव्वल, स0 416)

निगाहे शरअ् में काफ़िर की बे वक़अती

अइम्मा फरमाते हैं अगर जंगल में एक कुत्ता और एक हरबी प्यास से मरे जाते हों, और मुसलमान के पास एक की प्यास के क़ाबिल पानी है, इस सूरत में वह कुत्ते को पानी पिलाए और हरबी काफिर को न दे।

(एक हदीस में है कि एक शख़्स कुत्ते को पानी पिलाने के सबब से जन्नत में गया यानी एक जगह एक कुत्ता शिद्दते प्यास से कुएँ के पास कीचड़ चाट रहा था, उस शख़्स ने अपने मोज़ा के ज़रिया कुएँ से पानी निकाल कर उसको पिलाया जिसके सबब से वह जन्नत में गया। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि हर तर जिगर वाले को खिलाने पिलाने में सवाब है, मगर शायद काफिर इससे मुस्तसना है।

(मुरत्तिब, बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 421)

साथियों के मालों का ख़लत मलत

सफर या हज़र में रफ़ीक़ आपस में अपना माल मिला लें और मिल कर खाएँ तो उसमें हरज नहीं, अगरचे एक ज़्यादा खाएगा और दूसरा कम। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 430)

मेज़बान के माल में मेहमान का तसर्रुफ़

माल का मालिक जिसमें किसी शख़्स या जमाअत के लिए तसर्रुफ़े मुबाह कर दे, जैसे सबील का पानी, या दावत का खाना, या जिसने कह दिया हो कि मेरे बाग़ के फल जो चाहे खाए, वह माल तसर्रुफ़ के वक़्त भी मालिक ही की मिल्क होता है, लेने वालों की मिल्क नहीं हो जाता, इसलिए

मेहमान को जाइज़ नहीं कि जो खाना उसके सामने रखा गया, या उसके खाने से बच रहा, उसमें से बे इजाज़त मालिक किसी फक़ीर को कोई टुकड़ा दे, हाँ इजाजत दलालतन भी काफी है जब यक़ीन से मालूम हो कि इतना तसर्रुफ़ वह रवा रखेगा, उसे नागवार न होगा।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 435)

वर्ज़िश करना कैसा है ?

फ़ी नफ़्सेही वर्ज़िश करना जाइज़ है जबकि इसके लिए लोगों के सामने सतर खोलना न पड़े क्योंकि लोगों के सामने सतर खोलना हराम है, वर्ज़िश के सबब जमाअत खोना हराम है, नमाज़ का वक़्त तंग व मकरूह कर देना मना है ऐसी वर्ज़िश नाजाइज़ है, यानी किसी मम्नूअ़ बात का इर्तिकाब किए बग़ैर वर्ज़िश की जा सकती है। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 583)

ना जायज़ चीज़ से इलाज

बिच्छू की खाक कि संग गुर्दा व मसाना वग़ैरह या पेशाब बन्द होने पर खिलाई जाती है, शरअ़न हराम है और ऐसा इलाज नाजाइज़।

(हदीस पाक में है कि हराम शय में शिफ़ा नहीं है। मुरत्तिब)

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 678)

ख़ाके शिफ़ा चख लेना जाइज़, मिट्टी खानी हराम

इतनी मिक़्दार में मिट्टी खाना हराम है जिससे ज़रर का अन्देशा हो, मगर ख़ाके शिफ़ा से तबर्रुकन क़द्रे चख लेना जाइज़ है जैसे पान में चूना। (फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 696)

सीप का चूना

सीप का चूना हराम है जिस पान पर वह चूना लगा हो उसका खाना हराम है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 701)

सूरत बिगाड़ने की मुमानेअत

बिला ज़रूरत दवा, मुँह पर कोई ऐसी चीज़ मलना जिस से सूरत बिगड़ जाए नाजाइज़ है।

बाज़ नौजवान जो आपस में कीचड़ से खेलते हैं, एक दूसरे के मुँह पर कीचड़ मलते हैं, हँसी से किसी के सोते में उसके मुँह पर कालक या सियाही लगाते हैं यह सब हराम है और उस से परहेज़ फर्ज़।

यही वजह है कि जिहाद में हरबी काफिरों के साथ भी मसला करना यानी क़त्ल के बाद नाक, कान काटना हराम है, हाँ ऐन क़िताल में जहाँ भी ज़र्ब हो, जो कुछ क़तअ किया जाए कमाले अज्र है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 704)

गोबर वग़ैरह की राख

गोबर वग़ैरह नजासत जब जल कर बिल्कुल राख हो जाएं जिसमें असलन जान न रहे तो वह राख पाक है, जब तक आग है राख न हुई ज़रूर उसमें जान बाक़ी है उस वक़्त तक वह हरगिज़ पाक नहीं।

बाज़ लोग उपले की आग पर लोबान डाल कर फातिहा के वक़्त या क़ब्र पर रखते हैं यह दुरुस्त नहीं है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 707)

ग़ैर मुस्लिम की नौकरी

काफिर की ऐसी नौकरी जाइज़ नहीं जिस से मुसलमान की ज़िल्लत व रुसवाई हो, जैसे काफिर की ख़िदमतगारी पर नौकर रहना।

हदीस पाक में है कि मुसलमान को जाइज़ नहीं कि अपने इख़्तियार व ख़ुशी से अपने नफ़्स को ज़िल्लत में डाले। (तबरानी)

हाँ ऐसी नौकरी जिसमें ज़िल्लत भी नहीं और शरई बात से रुकावट भी नहीं तो वह मुबाह है।
(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 755)

तक़्लीदे अइम्मा क्यों फ़र्ज़ है?

जब तक दलीले क़तई बाआसानी मिले, दलील ज़न्नी पर अमल जाइज़ नहीं, इसी लिए ग़ैर मुज्तहिद पर अइम्म-ए-मुज्तहेदीन की तक़्लीद फ़र्ज़ और उसे छोड़ कर हदीस पर अमल करना हराम है कि यह हदीस को न समझेगा न उसके राजेह, मरजूह, नासिख़, मन्सूख़, सेहते इस्नाद, सेहते मतन, सेहते फ़ेक़्ही पर मुत्तला हो सकेगा तो उसे हुक्मे इलाही पर ज़न भी नहीं मिल सकता। अपने वहम को ज़न समझ लेना दूसरी बात है, और इमाम के क़ौल पर अमल किया तो क़तअन हुक्मे इलाही बजा लाया, अल्लाह तआला का हुक्म है, इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो, तो क़ता व यक़ीन को छोड़ कर शक व वहम में फंसना हराम है। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 786)

तक्रारे मसाइल की इफादियत

इफ़ादाते उलमा में तक्रारे मसाइल मअ्यूब नहीं इमाम मुहम्मद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपनी कुतुब में मसाइल मुकर्रर ज़िक्र फरमाते कि लोगों को ख़्वाही न ख़्वाही हिफ़्ज़ हो जाएँ।
(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 820)

हाइज़ा औरत के हाथ का पका हुआ खाना

हैज़ वाली औरत के हाथ का पका हुआ खाना भी जाइज़ और उसे अपने साथ खिलाना भी जाइज़ है इन बातों से एहतराज़ यहूद व मजूस का मसला है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने सर मुबारक को धोने के लिए हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के क़रीब कर देते जबकि हुज़ूर मस्जिद में ऐतकाफ़ से होते और हज़रत आइशा घर में होतीं, आइशा अर्ज़ करतीं कि मैं तो हाइज़ा हूँ, उस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते कि तुम्हारा हैज़ तुम्हारे हाथ में नहीं है।
(त, बुख़ारी, फतावा रज़्वीया, जिल्द दोम, स0 36)

साँपों का क़त्ल

तक्लीफ देने वाले जानवरों को उनके तक्लीफ़ देने से पहले भी मार डालना जाइज़ है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सब साँपों को क़त्ल करो और जो उनके बदला लेने से डरे वह हमारे गरोह से नहीं, यानी मुसलमान की शान नहीं कि बदला के ख़ौफ़ से साँप को छोड़ दे। (त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, निसाई)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि मार डाला करो साँपों को, मार डालो तुम उस साँप को जिसकी पीठ पर दो सफ़ेद धारियाँ होती हैं और उस साँप को भी जो कबूद रंग और कोताह दुम होता है। (त, अबू दाऊद, निसाई)

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : दो काली चीज़ों को नमाज़ में भी क़त्ल करो यानी साँप और बिच्छू। (त, तबरानी)

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते हैं : जिसने साँप को क़त्ल किया उसने गोया एक मुश्रिक हलालुद्दम को क़त्ल किया, यानी साँपों का क़त्ल अज्रे अज़ीम का सबब है।
(त, मुसनद अहमद)

गिरगिट या छिपकली को मारना

हदीस पाक में जिस तरह साँपों को मार डालने का हुक्म आया है उसी तरह गिरगिट या छिपकली को भी मार डालना सवाब की बात है। (मुरत्तिब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : गिरगिट या छिपकली को क़त्ल कर दो अगरचे काबा के अन्दर हो। (त, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो साँप को मारे उस के लिए सात नेकियाँ हैं और जो छिपकली या गिरगिट को मारे उसके लिए एक नेकी।

(त, मुसनद अहमद, इब्ने हिब्बान, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 75)

अफ़्वाह या सुनी सुनाई बात नाक़ाबिले इल्तिफ़ात

हदीस में है कि जो आदमी हर सुनी हुई बात को ब्यान करे उसके झूठा होने के लिए यही काफ़ी है। इसलिए अफ़्वाह या सुनी हुई बात क़ाबिले ऐतबार नहीं, न ऐसी बात से कोई मसला साबित हो सकता है। (मुरत्तिब)

एक हदीस मौक़ूफ़ में है शैतान आदमी की शक्ल बन कर लोगों में झूठी बात मशहूर कर देता है, सुनने वाला औरों से ब्यान करता और कहता है मुझ से एक शख़्स ने ज़िक्र किया जिसकी सूरत पहचानता हूँ, नाम नहीं जानता। (मुस्लिम, मुक़द्दमा सही)

उलमा फरमाते हैं अफ़्वाही ख़बर अगरचे तमाम शहर ब्यान करे सुनने के क़ाबिल नहीं न कि उस से कोई हुक्म साबित किया जाए।

बाज़ारी अफ़्वाह क़ाबिले ऐतबार और अहकाम की मनात व मदार नहीं हो सकती, बहुत ख़बरें है सरोपा ऐसी मुश्तहिर हो जाती हैं जिनकी कुछ असल नहीं, या है तो बहज़ार तफावुत, अक्सर देखा गया है एक ख़बर ने शहर में शोहरत पाई और क़ाइलों से तहक़ीक़ किया तो यही जवाब मिला कि सुना है, न कोई अपना देखा ब्यान करे, न उसकी सनद का पता चले कि असल क़ाइल कौन था जिससे सुन कर शुदा शुदा इस इश्तिहार की नौबत् आई, या साबित हुआ तो यह कि फ़लां काफ़िर या फासिक़ मुन्तहाए सनद था, फिर मालूम व मुशाहिद कि ज़िस क़दर सिलसिला बढ़ता जाता है ख़बर में नए नए शगूफ़े निकलते आते हैं। जैद से एक वाक़या सुनिए कि मुझ से अमर ने कहा था, अमर से पूछिए तो वह कुछ और ब्यान करेगा और बकर का नाम लेगा, बकर से दरियाफ़्त हुआ तो और तफावुत निकला, व अला हाज़ल–क़्यास।

आज कल से बेहतर

यह वही बात है जिसकी सादिक़ मस्दूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी है कि ज़मान–ए–ख़ैर के बाद झूठ फैल जाएगा ख़ुसूसन इस ज़माने में, मगर बाद का आख़िरी ज़माना वह होगा जिसमें मुसलमान एक दिल होंगे किसी के ख़िलाफ़ कोई बुग़्ज़ व अदावत न होगी, लोग झूठ से गुरेज़ करेंगे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि तुम पर जो भी ज़माना आता है उसका बाद वाला उस से ज़्यादा शर अंगेज़ होता है, इसी तरह होता रहेगा यहाँ तक कि तुम अपने रब से मिलो। (त, बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि गुज़रा हुआ कल आज से बेहतर है, और आज का दिन आने वाले कल से बेहतर है, क़्यामत तक मुआमला इसी तरह रहेगा।

(त, तबरानी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 90,91)

साबुन का मसअला

मुसलमान का बनाया हुआ साबुन इस्तेमाल करना जाइज़ है और हिन्दू या मजूसी या नसरानी का बनाया हुआ साबुन जिसमें चर्बी पड़ती हो अगरचे गाय या बकरी की नापाक व हराम है, देसी हो या विलायती, और जिस में चर्बी न हो वह जाइज़ है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 140)

उम्रों के तफावुत से मरातिब का तफावुत

मौज़ूआत अबुल–फरज में यह हदीस है कि जब मुसलमान की उम्र चालीस बरस की होती है, अल्लाह तआला जुनून व जज़ाम व बरस को उस से फेर देता है, और पचास साल वाले पर हिसाब में नर्मी और साठ बरस वाले को तौबा व इबादत नसीब होती है, सत्तर साला को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और उसके फ़रिश्ते दोस्त रखते हैं, 80 बरस वाले की नेकियाँ क़बूल और बुराईयाँ माफ़, नव्वे बरस वाले के सब अगले पिछले गुनाह मग़फ़ूर होते हैं वह ज़मीन में अल्लाह का क़ैदी कहलाता है और अपने घर वालों का शफ़ीअ़ किया जाता है।

(मौज़ूआत अबुल–फ़रज, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 441)

हदीस ज़ईफ़ पर अमल की सेहत क्यों ?

हदीस ज़ईफ़ बाब फ़ज़ाइल में मक़बूल है, यानी हदीस ज़ईफ़ पर फ़ज़ाइले आमाल में अमल इसलिए ठीक है कि अगर वाक़े में सही हुई जब तो जो उसका हक़ था कि उस पर अमल किया जाए अदा हो गया, और अगर सही न भी हो तो उस पर अमल करने में किसी तहलील, या तहरीम, या किसी की हक़ तल्फ़ी का मुफ़्सिदा तो नहीं।

एक हदीस ज़ईफ़ में आया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसे मुझ से किसी अमल पर सवाब की ख़बर पहुँची वह उस पर अमल कर ले, उसका अज्र उसे हासिल हो, अगरचे वह बात वाक़े में मैंने न फरमाई हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 452)

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सैय्युदल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलैहिम अजमईन, फरमाते हैं : जिसे अल्लाह तबारक व तआला से किसी बात में कुछ फ़ज़ीलत की ख़बर पहुँचे वह अपने यक़ीन और इस सवाब की उम्मीद से इस बात पर अमल करे, अल्लाह तआला उसे वह फ़ज़ीलत अता फरमाए अगरचे ख़बर ठीक न हो।

(इब्ने हिब्बान, इब्ने अब्दुल–बर्र)

दारे क़ुतनी की हदीस में यूं है, अल्लाह तआला उसे वह सवाब अता करे अगरचे जो हदीस उसे पहुँची हक़ न हो। (दारे क़ुतनी)

इब्ने हिब्बान की हदीस में यह लफ़्ज़ हैं चाहे वह हदीस मुझ से हो या न हो। (इब्ने हिब्बान)

इब्ने अब्दुल्लाह के लफ़्ज़ यूं हैं अगरचे उस हदीस का रावी झूठा है। (मकारिमुल–अख़्लाक़)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : तुम्हें जिस भलाई की मुझ से ख़बर पहुँचे ख़्वाह वह मैंने फरमाई हो या न फरमाई हो, मैं उसे फरमाता हूँ। और जिस बुरी बात की ख़बर पहुँचे तो मैं बुरी बात नहीं फरमाता। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

इब्ने माजा के लफ़्ज़ यह हैं : जो नेक बात मेरी तरफ़ से पहुँचाई जाए वह मैंने फरमाई हो या नहीं, उस पर अमल किया जाए। (इब्ने माजा)

हमज़ा बिन अब्दुल–मजीद रहमतुल्लाह तआला अलैह कहते हैं कि मैंने हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में हतीमे काबा मुअज़्ज़मा में देखा, अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हुज़ूर पर मेरे माँ बाप क़ुरबान, हमें हुज़ूर से हदीस पहुँची है कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया

है जो शख़्स कोई हदीस ऐसी सुने जिसमें किसी सवाब का ज़िक्र हो, वह उस हदीस पर बा-उम्मीद सवाब अमल करे, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे वह सवाब अता फरमाए अगरचे हदीस बातिल हो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ क़सम इस शहर के रब की बेशक यह हदीस मुझ से है और मैंने फरमाई है, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

(ख़लई किताबुल-फ़वाइद)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व वसल्लम फरमाते हैं जिसे अल्लाह तआला से किसी फ़ज़ीलत की ख़बर पहुँचे वह उसे न माने इस फ़ज़्ल से महरूम रहे। (तबरानी, अबू याला, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 456, 457)

शुबह की बात से बचना दानिशमन्दी

जिस बात में शक व शुबह हो आदमी उसे न करे वरना उस से और बड़े गुनाह में पड़ने का अन्देशा है, जो शुब्हात से भी बचने की कोशिश करे वह गुनाहों से महफ़ूज़ रहेगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है फरमाते हैं : सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जो शुब्हात से बचे उसने अपने दीन व आबरू की हिफ़ाज़त कर ली और जो शुब्हात में पड़े, हराम में पड़ जाएगा, जैसे रमने की गर्द चुराने वाला नज़्दीक है कि रमने के अन्दर चुराए, सुन लो हर बादशाह का एक रमना होता है, सुन लो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का रमना वह चीज़ें हैं जो उसने हराम फरमाईं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस में शुबह पड़ता हो वह काम छोड़ दे और ऐसे की तरफ आ जिसमें कुछ दग़दग़ा नहीं।

(मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, निसाई, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 461, 462)

बुध और सनीचर के दिन पछना लगाने की मुमानेअत

एक हदीस ज़ईफ़ में बुध के दिन पछने लगाने से मुमानेअत आई है, कि जो बुध या हफ़्ता के रोज़ पछने लगाए फिर उसके बदन पर सफेद दाग़ हो जाए तो अपने ही आपको मलामत करे।

(लाली व तअक़्क़ुबात)

एक साहब मुहम्मद बिन जाफर बिन मतर नीशापूरी को फस्द की ज़रूरत थी, बुध का दिन था, ख़्याल किया कि हदीस मज़्कूर तो सही नहीं (बल्कि ज़ईफ़ है) फस्द (रगों से ख़ून निकलना) ले ली फ़ौरन बरस हो गई, ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुए, हुज़ूर से फरयाद की, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया ख़बरदार मेरी हदीस को हल्का न समझना। उन्होंने तौबा की आँख खुली तो अच्छे थे।

(लाली व तअक़्क़ुबात)

इमाम इब्ने असाकिर रिवायत फरमाते हैं अबू मुईन हुसैन बिन हसन तबरी ने पछने लगाने चाहे हफ़्ता का दिन था, ग़ुलाम से कहा हज्जाम को बुला ला, जब वह हदीस याद आई, फिर कुछ सोच कर कहा हदीस में तो ज़ुअफ़ है। ग़रज़ लगा लिए बरस हो गई, ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से फरियाद की, फरमाया देख मेरी हदीस का मुआमला आसान न जानना, उन्होंने मिन्नत मानी अल्लाह तआला इस मरज़ से नजात दे अब कभी हदीस के मुआमला में सहल अंगारी न करूंगा, सही हो या ज़ईफ़, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने शिफ़ा बख़्शी।

(लाली, इब्ने असाकिर)

बुध के दिन नाखुन तराशना

यूं ही एक हदीस ज़ईफ़ में बुध के दिन नाखुन कतरवाने को आया कि मूरिसे बरस होता है बाज़ उलमा ने कतरवाए किसी ने बर बनाए हदीस मना किया, फरमाया हदीस सही नहीं (बल्कि ज़ईफ़

है) फौरन मुब्तला हो गए, ख़्वाब में ज़्यारत जमाल बेगिराल हुज़ूर पुर नूर महबूब ज़िल–जलाल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ हुए, शाफ़ी काफी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुज़ूर अपने हाल की शिकायत अर्ज़ की, हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुमने न सुना था कि हमने उस से नही फरमाई है, अर्ज़ की हदीस मेरे नज़्दीक सेहत को न पहुँची थी इरशाद हुआ तुम्हें इतना काफी था कि हदीस हमारे नाम पाक से तुम्हारे कान तक पहुँची यह फरमा कर हुज़ूर मबरेयुल–अक्महु वल–अबरसु मुहियुल–मौता सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपना दस्ते अक़्दस कि पनाह दो जहाँ व दस्तगीर बेकसां है, उनके बदन पर लगा दिया फौरन अच्छे हो गए और उसी वक़्त तौबा की कि अब कभी हदीस सुन कर मुख़ालिफ़त न करूंगा। (नसीमुर्रियाज़, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 463, 464)

मुर्ग़ सफ़ेद

हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इक़्तिदा के पेशे नज़र मुर्ग़ सपेद को अपनी ख़्वाबगाह में अपने साथ रखना मुस्तहब है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मुर्ग़ सफेद मेरा ख़ैर ख़्वाह, और मेरे दोस्त का ख़ैर ख़्वाह, अल्लाह तआला के दुश्मन का दुश्मन है। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसे शब को मकान ख़्वाबगाह अक़्दस में अपने साथ रखते थे।

(अबू बकर बर्क़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 478)

(एक हदीस में है कि मुर्ग़ को गाली न दो क्योंकि वह नमाज़ के लिए जगाता है। मुरत्तिब)

अमल में नीयत के फ़वाइद

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मुसलमान की नीयत उसके अमल से बेहतर है। (बैहक़ी, तबरानी)

और बेशक जो इल्मे नीयत जानता है एक–एक फ़ेअ्ल को अपने लिए कई–कई नेकियाँ कर सकता है मसलन जब नमाज़ के लिए मस्जिद को चला और सिर्फ़ यही क़स्द है कि नमाज़ पढ़ूँगा तो बेशक उसका यह चलना महमूद, हर क़दम पर एक नेकी लिखेंगे। और दूसरे पर गुनाह महव करेंगे मगर नीयत जानने वाला इस एक ही फ़ेअ्ल में इतनी नीयतें कर सकता है।

1. असल मक़्सूद यानी नमाज़ को जाता हूँ।
2. खान–ए–ख़ुदा की ज़्यारत करूंगा।
3. शआइरे इस्लाम ज़ाहिर करता हूँ।
4. दाई इलल्लाह की इजाबत करता हूँ।
5. तह्यतुल–मस्जिद पढ़ने जाता हूँ।
6. मस्जिद से खस व खाशाक वग़ैरह दूर करूंगा।
7. ऐतकाफ़ करने जाता हूँ कि मज़हब मुफ़्ता बेह पर ऐतकाफ़ के लिए रोज़ा शर्त नहीं और एक साअत का भी हो सकता है, जब से दाख़िल हो बाहर आने तक ऐतकाफ़ की नीयत कर ले। इंतिज़ार नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ऐतकाफ़ का भी सवाब पाएगा।
8. अम्रे इलाही (ख़ुज़ू ज़ीनतकुम इन्दा कुल्ले मस्जेदिन) के इम्तिसाल को जाता हूँ।
9. जो वहाँ इल्म वाला मिलेगा उस से मसाइल पूछूंगा, दीन की बातें सीखूंगा।
10. जाहिलों को मसअला बताऊंगा, दीन सिखाऊंगा।
11. जो इल्म में मेरे बराबर होगा उससे इल्म की तक्रार करूंगा।
12. उलमा की ज़्यारत।
13. नेक मुसलमानों का दीदार।

14. दोस्तों से मुलाक़ात।
15. मुसलमानों से मेल।
16. जो रिश्तादार मिलेंगे उन से बकुशादा पेशानी मिल कर सिला रहम।
17. अह्‌ले इस्लाम को सलाम।
18. मुसलमानों से मुसाफहा करूंगा।
19. उनके सलाम के जवाब दूँगा।
20. नमाज़ जमाअत में मुसलमानों की बरकतें हासिल करूंगा।

21–22. मस्जिद में जाते निकलते हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर सलाम अर्ज़ करूंगा।

23–24. दुख़ूल व ख़ुरूज में हुज़ूर व आले हुज़ूर व अज़्वाज हुज़ूर पर दरूद भेजूंगा कि –

25. बीमार की मिज़ाज पुर्सी करूंगा।
26. अगर कोई ग़मी वाला मिला ताज़ियत करूंगा।
27. जिस मुसलमान को छींक आई और उसने अल्हम्दुलिल्लाह कहा, उसे यरहमुकल्लाह कहूँगा।

28–29. अम्र बिल–मारूफ़े व नही अनिल मुंकिर करूंगा।

30. नमाज़ियों के वुज़ू को पानी दूँगा।

31–32. ख़ुद मुअज़्ज़िन है या मस्जिद में कोई मुक़र्रिर नहीं तो नीयत करे कि अज़ान व इक़ामत कहूँगा।

अब अगर यह कहने न पाया या दूसरे ने कह दी, ताहम अपनी नीयत पर अज़ान व इक़ामत का सवाब पा चुका, बारगाहे इलाही में उसका अज्र साबित हो गया।

33. जो राह भूला होगा रास्ता बताऊंगा।
34. अन्धे की दस्तगीरी करूंगा।
35. जनाज़ा मिला तो नमाज़ पढूंगा।
36. मौक़ा पाया तो साथ दफन तक जाऊंगा।
37. दो मुसलमानों में निज़ा हुई तो हत्तल–वसा सुलह करवाऊंगा।

38–39. मस्जिद में जाते वक़्त दहने और निकलते वक़्त बाएं पाँव की तक़्दीम से इत्तिबा सुन्नत करूंगा।

40. राह में जो लिखा हुआ कागज़ पाँऊंगा उठा कर अदब से रख दूँगा।

देखिए कि जो इन इरादों के साथ घर से मस्जिद को चला वह सिर्फ़ हसना नमाज़ के लिए नहीं जाता बल्कि उन चालीस हसनात के लिए जाता है तो गोया उसका यह चलना, चालीस तरफ चलना है। और हर क़दम चालीस क़दम, पहले अगर हर क़दम एक नेकी था, अब चालीस नेकियाँ होगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 557)

मुबाह खेल और मुबाह बात

इबादत व मेहनते दीनीया के बाद दफा कलाल व मलाल व हुसूल ताज़गी व राहत के लिए। अहयानन किसी उमूर मुबाह में मश्ग़ूली, जैसे जाइज़ अशआरे आशिक़ाना का पढ़ना, सुनना शरअन मुबाह बल्कि मतलूब है।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे अकरम रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि लह्‌व व लइब करो क्योंकि मैं दीन में शिद्दत व सख़्ती को नापसन्द करता हूँ। (शुअ़बुल–ईमान)

रिश्तादारों से नेक सुलूक

सिला रहम और अपने अक़रबा की मवासात उम्दा हसनात से है, लेकिन अगर नीयत लेवज्हिल्लाह न हो बल्कि मसलन ख़ून की शिर्कत और तबई मुहब्बत का तक़ाज़ा हो तो उस से इन्दल्लाह कुछ फ़ाइदा नहीं।

रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

जो फ़ज़ूनी तुम दो कि लोगों के माल में ज़्यादत हो वह ख़ुदा के नज़दीक न बढ़ेगी और जो सदक़ा दो ख़ुदा की रज़ा चाहते तो उन्हीं लोगों के दूने हैं। (अर्रूम, 39)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा इस आयते करीमा की तफ़्सीर में फरमाते हैं :

क्या तूने न देखा कि एक शख़्स दूसरे से कहता है मैं तुझे मालदार कर दूँगा, फिर उसे देना है तो यह देना ख़ुदा के यहाँ न बढ़ेगा कि उसने ग़ैरुल्लाह के लिए सिर्फ़ इस नीयत से दिया कि उसका माल बढ़ा दूँ।

इमाम इब्राहीम नख़ई फरमाते हैं, यह ज़मान-ए-जाहलियत में था अपने अज़ीज़ का माल बढ़ाने को उसे माल दिया करते। (इब्ने जुरैर, फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 201)

अजनबी औरत को देखने और छूने का मसअला

अजनबी आज़ाद औरत के मुँह की सिर्फ़ टिकली जिसमें कान या गले या बालों का कोई ज़र्रा दाख़िल नहीं और हथेलियाँ और तल्वे देखना अगरचे हराम नहीं कि तर्क फर्ज़ नहीं, मक्रूहे तहरीमी ज़रूर है कि तर्क वाजिब है, मगर उसके उन मवाज़े का भी छूना मुतलक़न हराम है। इसलिए शैख़ को हराम है कि अजनबी औरत का हाथ पकड़ कर बैअत ले।

आज़ाद औरत को हराम है कि किसी नामहरम मर्द के बदन को हाथ लगाए अगरचे हाथ या पाँव को, और मर्द पर हराम है कि औरत को छूने की इजाज़त दे।

यहाँ से मशाइख़े ज़माना सबक़ लें कि अजनबी जवान मुरीदात और वह ख़ुद भी ज़ईफ़ नहीं, फिर यह उनके क़दम लेतीं, उनके हाथों को बोसा देतीं, आँखों से लगाती हैं, उन पर फर्ज़ है कि उन्हें इन हरकात से बशिद्दत रोकें।

यूं ही बाज़ लोग नहाने में नाइन या असील से हाथ पाँव या पीठ मलवाते हैं यह भी हराम है। और एहतराज़ फर्ज़।

अल्बत्ता अगर औरत बहुत ज़ईफ़ा बुढ़िया है कि महल फ़ित्ना नहीं, या यह बहुत ज़ईफ़ बूढ़ा है और तरफ़ैन से किसी जानिब एहतमाले फ़साद नहीं, तो मुसाफ़हा की इजाज़त है, यूं ही उसके पाँव छूने से उस औरत की मुमानेअत न की जाएगी और इसी क़यास पर पीठ मलना जबकि हर तरह फ़ित्ना से अमन हो।

दूसरे की कनीज़ शरई का हुक्म अपनी महरम औरत के मिस्ल है कि पेट, पीठ और नाफ़ से ज़ानू के नीचे तक देखना, जाइज़ नहीं उसके मासिवा में जाइज़ है बल्कि ख़ौफ़ फ़ित्ना न हो या हाजते शरईया हो तो छूना भी जाइज़ है।

दूसरे की कनीज़ शरई अगर उसके सर में तेल डाले, या हाथ पाँव दबाए, या नहलाने में उसका पीठ, पेट मले, जाइज़ है जबकि नीयत बद न हो। (फ़तावा रज़्वीया अव्वल, स0 658)

तावीज़ जाइज़ है

तावीज़ मोम जामा वग़ैरह करके ग़िलाफ़ जुदागाना में रख कर बच्चों के गले में डालना जाइज़ है अगरचे उसमें बाज़ आयाते क़ुरआनिया हों। और इस एहतियात के साथ पाख़ाने में ले जाना भी

जाइज़ है, हाँ अफ़्ज़ल एहतराज़ है, बे अदबियों की एहतियात की जाए फिर भी यह अम्र माने इंतिफ़ा नहीं कि पहनाने वालों की नीयत तबर्रुक है।

कुरआन को छोटा बना कर तावीज़ बनाने की मुमानेअत

तावीज़ पर कुरआने अज़ीम व मुसहफ़ करीम का क़्यास नहीं हो सकता।

अव्वलन : कुरआन मजीद अगरचे दस ग़िलाफ़ों में हो पाखाने में ले जाना बिला शुबह मुसलमानों की निगाह में शुनीअ् और उनके उर्फ़ में बेअदबी ठहरेगा और अदब व तौहीन का मदार उर्फ़ पर है, तावीज़ कि बाज़ आयात पर मुश्तमिल हो वह आयात ज़रूर कुरआने अज़ीम हैं मगर इसे तावीज़ कहेंगे, न कुरआन, जैसे किताबे नह्व कि क़वाइद की मिसालों में आयाते कुरआनिया पर मुश्तमिल उसके लिए किताबे नह्व ही का हुक्म होगा न कि मुसहफ़ शरीफ़ का, मुसहफ़ शरीफ़ दारुल हरब में ले जाना मना है और किताब ले जाने से किसी ने मना न किया। मुसहफ़ के पुट्ठे को बेवुज़ू छूना हराम, और उस किताब के वर्क़ को भी छूना जाइज़।

सानियन : उसका टीन में रख कर बन्द कर देना या मोम जामे या कपड़े ही के ग़िलाफ़ में सी देना यह ख़ुद ख़िलाफ़े शरअ् है कि उसकी तिलावत से मना है। अइम्मा सल्फ़ तो ग़िलाफ़ मुसहफ़ शरीफ़ में बन्द लगाने को मक्रूह जानते थे कि बन्द बांधना बज़ाहिर मना की सूरत होगा तो यूं टीन वग़ैरह में रख कर हमेशा के लिए सी देना कि हक़ीक़तन मना है किस दरजा मक्रूह मूरदे शनीअ् है।

सालिसन : कुरआने अज़ीम छोटी तक़्तीअ् पर लिखना, हमाइल बनाना शरअन मक्रूह व नापसन्द है।

★ अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक शख़्स के पास कुरआने अज़ीम बारीक लिखा हुआ देखा उसे मक्रूह रखा और उस शख़्स को मारा और फ़रमाया, किताबुल्लाह की अज़मत करो। (अबू उबैद फ़ज़ाइलुल–कुरआन)

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम मुसहफ़ को छोटा बनाना मक्रूह रखते। (मुसहफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

★ इसी तरह इब्राहीम नख़ई ने उसे मक्रूह फ़रमाया : (अबू दाऊद किताबुल–मसाहिफ़)

तो कुरआने अज़ीम को इस क़द्र छोटा बनाना कि मआज़ल्लाह एक खिलौना और तमाशा हो किस तरह मक्बूल हो सकता है।

और वह जरी लोग यह फ़ेअ्ले मरदूद इन्हीं तावीज़ों की ख़ातिर करते हैं, अगर मुसलमान उनको तावीज़ न बनाएं तो क्यों ख़रीदें और न ख़रीदें तो वह क्यों उसे छुपाएं, तो उनका तावीज़ बनाना उनके इस फ़ेअ्ल का बाइस है और उसके तर्क में उसका इंसिदाद, तो उसका तावीज़ बनाना ज़रूर मुस्तहिक़े तर्क है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 160, 161)

सफ़र के लिए मुनासिब दिन

पंजशंबा, शंबा, दोशंबा, सफर के लिए मुनासिब दिन हैं।

हदीस शरीफ़ में है बरोज़ शंबा क़ब्ल तुलूअ् आफ़ताब जो किसी हाजत की तलब में निकले उसका ज़ामिन मैं हूँ।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू ख़ुद अपने बारे में फ़रमाते हैं:

बेहम्दुलिल्लाह दूसरे बार की हाज़िरी हरमैन तैय्यबैन में यहाँ से जाने और वहाँ से वापस आने में उन्हीं तीन दिन में से एक दिन में रवानगी हुई थी, और बफ़ज़्लेही तआला फ़क़ीर का यौमे विलादत भी शंबा है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 8)

एक परी का क़बूले इस्लाम और इब्लीस की नमाज़

इंसानों की तरह जिन्न व परी भी मुसलमान होते हैं।

एक परी मुशर्रफ़ बइस्लाम हुई और अक्सर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ करती थी, एक बार अरसा तक हाज़िर न हुई, जब हाज़िर हुई सबब दरियाफ़्त फ़रमाया अर्ज़ की हुज़ूर मेरे एक अज़ीज़ का हिन्दुस्तान में इंतिक़ाल हो गया था वहाँ गई थी, राह में मैंने देखा कि इब्लीस एक पहाड़ पर नमाज़ पढ़ रहा है मैंने उसकी यह नई बात देख कर कहा कि तेरा तो काम नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देना है तू ख़ुद कैसे नमाज़ पढ़ता है, उसने कहा कि शायद रब्बुल–इज़्ज़त तबारक व तआला मेरी नमाज़ क़बूल फ़रमाए और मुझे बख़्श दे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 12)

तारीख़ की इब्तिदा व इंतिहा के तरीक़े

तारीख़ की इब्तिदा व इंतिहा में चार तरीक़े हैं :

★ एक तरीक़ा नसारा का कि उनके यहाँ निस्फ़ शब से निस्फ़ शब तक तारीख़ का शुमार है।

★ दूसरा हुनूद का कि तुलूअ़ आफ़्ताब से तुलूअ़े आफ़्ताब तक।

★ तीसरा तरीक़ा फ़लासफ़ा यूनान का है कि निस्फ़ुन्नहार से निस्फ़ुन्नहार तक, इल्मे हैअत में यही माख़ूज़ है।

चौथा तरीक़ा मुसलमानों का कि ग़ुरूब आफ़्ताब से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक, और यही अक़्ले सलीम पसन्द करती है कि ज़ुल्मत नूर से पहले है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 15)

औरत के लिए पर्दा की हद

आज़ाद औरतों को सर से पाँव तक तमाम बदन का छुपाना फ़र्ज़ है मगर चेहरा यानी पेशानी से ठोढ़ी और एक कंपटी से दूसरी कंपटी तक (जिसमें सर के बालों या कान का कोई हिस्सा दाख़िल नहीं न ठोढ़ी के नीचे का) यह तो बिल–इत्तिफ़ाक़ नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ नहीं, और गट्टों तक दोनों हाथ, टखनों तक दोनों पाँव, इनमें इख़्तिलाफ़े रिवायात है। अगर इनके सिवा किसी अज़्व का चौथाई हिस्सा नमाज़ में क़सदन खोले अगरचे एक आन को या बिला क़स्द अदाए–रुक्न यानी तीन बार सुब्हानल्लाह कहने की देर तक खुला रहे तो नमाज़ न होगी और बारीक कपड़े जिन से बदन नज़र आए या रंगत दिखाई दे या सर के बालों की सियाही चमके तो नमाज़ न होगी।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 24)

क़र्ज़े हसन का फाइदा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

इस ज़माने में क़र्ज़ देना और यह ख़्याल करना कि वसूल हो जाएगा एक मुश्किल ख़्याल है, मेरे पन्द्रह सौ रुपए लोगों पर क़र्ज़ हैं, जब क़र्ज़ दिया यह ख़्याल कर लिया कि दे दे तो ख़ैर वरना तलब न करूंगा, जिन साहिबों ने क़र्ज़ लिया देने का नाम न लिया। जब यूं क़र्ज़ देता हूँ तो हिबा क्यों नहीं कर देता उसकी वजह यह है कि हदीस शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया जब किसी का दूसरे पर देन हो और उसकी मीआद गुज़र जाए तो हर रोज़ उसी क़दर रुपया की ख़ैरात का सवाब मिलता है जितना देन है, इस सवाबे अज़ीम के लिए मैंने क़र्ज़ दिए हिबा न किए कि पन्द्रह सौ रुपए रोज़ मैं कहाँ से ख़ैरात करता। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 38)

फूलों का सहरा मुबाह है और बाजा हराम

नौशा का वक़्ते निकाह ख़ाली फूलों का सहरा बांधना जाइज़ है और यह बाजे जो शादियों में राइज व मामूल हैं सब नाजाइज़ व हराम हैं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 43)

ज़िन्दगी में अपने लिए क़ब्र तैयार कर रखना

आदमी को अपनी ज़िन्दगी में क़ब्र तैयार रखने का शरअन हुक्म नहीं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : कोई नहीं जानता कि वह कहाँ मरेगा, अल्बत्ता कफ़न सिलवा कर रख सकता है कि जहाँ कहीं जाए अपने साथ ले जाए और क़ब्र हमराह नहीं रह सकती।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 63)

तूफ़ाने नूह और मिस्र के गुंबद व मीनार की बिना

मिस्र के मीनारों की तामीर हज़रत आदम अला नबीय्याना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम से चौदह हज़ार बरस पहले हुई, नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्मत पर जिस रोज़ अज़ाबे तूफ़ान नाज़िल हुआ है पहली रजब थी, बारिश भी हो रही थी और ज़मीन से भी पानी उबल रहा था, बहुक्म रब्बुल–आलमीन नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक कश्ती तैयार फ़रमाई, जो 10 रजब को तैरने लगी, उस कश्ती पर अस्सी 80 आदमी सवार थे, जिसमें दो नबी थे (हज़रत आदम व हज़रत नूह अलैहिमस्सलातु वस्सलाम) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उस कश्ती पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ताबूत रख लिया था, और उसके एक जानिब मर्द और दूसरी जानिब औरतों को बिठाया था, पानी उस पहाड़ से जो सबसे बुलन्द था 30 हाथ ऊंचा हो गया था।

दसवीं मुहर्रम को छः माह के बाद सफ़ीना मुबारका जूदी पहाड़ पर ठेहरा सब लोग पहाड़ से उतरे और पहला शहर जो बसाया उसका सुकूश्शमानीन नाम रखा, यह बस्ती जबले नहावन्द के क़रीब मुत्तसिल मूसल वाक़े है।

पस्मांदगाने तूफ़ान से किसी की नस्ल न बढ़ी सिर्फ़ नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल तमाम दुनिया में है।

कुरआने अज़ीम फरमाता है, हमने नूह की ज़ुर्रियत को बाक़ी रखा है। (अस्साफ़्फ़ात, 77)

इसी लिए नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को आदम सानी कहते हैं। और नूह अलैहिस्सलाम दुनिया में तक़रीबन सोला सौ बरस तशरीफ़ फ़रमा रहे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 73, 74)

ग़ैर मुस्लिम को मुसलमान करने का तरीक़ा

ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अल्लाह एक है आसमान से पानी उतारने वाला, एक अल्लाह है ज़मीन से खेती उगाने वाला, एक अल्लाह है जिलाने वाला, एक अल्लाह है मारने वाला, एक अल्लाह है रोज़ी देने वाला एक अल्लाह है। एक अल्लाह की पूजा है, अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं, लोग अल्लाह के सिवा जिन जिन को पूजते हैं वह सब झूठे हैं, अल्लाह ने अपने बन्दों को सच्चा रास्ता दिखाने के लिए अपने नेक बन्दे भेजे जिन्हें नबी और रसूल कहते हैं, वह जो ख़ुदा के पास से लाए वह सब हक़ हैं, उन नबियों और किताबों पर ईमान लाया उन में सबसे बड़े और सबके सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं, वह जो कुछ अल्लाह के पास से लाए सब सच है, मेरा दीन मुसलमानों का दीन है, मुसलमानों का दीन सच्चा है, मुसलमानों के दीन के सिवा और दीन जितने हैं वह सब झूठे हैं।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 80)

रूह का मक़ाम और कुव्वते इदराक

अगर मुसलमान है तो उसकी रूह इल्लीयीन में और काफ़िर है तो उसकी रूह सिज्जीन में रहती है, जो शख़्स क़ब्र पर जाता है उसको बख़ूबी देखती है, उसकी बात सुनती समझती है, मरने के बाद रूह का इदराक बेशुमार बढ़ जाता है ख़्वाह मुसलमान की हो या काफ़िर की।

शाह अब्दुल–अज़ीज़ साहब फरमाते है रूह को कुर्ब व बोअदे मकान यक्सां है, रूह बसर को

देखो कुएँ के अन्दर से सितारों को देखती है यानी निगाह उठते ही ज़मीन से फलके सवाबित तक पहुँचती है जो यहाँ से आठ हज़ार बरस की राह पर है।

हदीस में रूह ज़िन्दा मुर्दा की मिसाल परिन्द की फरमाई कि जब तक पिंजरे में बन्द है उसी के लाइक़ पर खोल सकता है जब क़फ़स से निकाला फिर उसकी उड़ान देखो।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 83)

मुहब्बत के बग़ैर सब इबादत व रियाज़त बेकार

हदीस शरीफ़ में है क़्यामत के दिन एक शख़्स हिसाब के लिए बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में लाया जाएगा उस से सवाल होगा क्या लाया वह कहेगा मैंने इतनी नमाज़ें पढ़ीं अलावा फर्ज़ के, इतने रोज़े रखे अलावा रमज़ान के, इस क़दर ख़ैरात की अलावा ज़कात के और इस क़दर हज किए अलावा हज फर्ज़ के, वग़ैरा ज़ालिक, इरशाद बारी होगा। कभी मेरे महबूबों से मुहब्बत और मेरे दुशमनों से अदावत भी रखी।

तो उम्र भर की इबादत एक तरफ और ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत एक तरफ़, अगर मुहब्बत नहीं सब इबादत व रियाज़त बेकार। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 107)

"क़ुतुब" की तरफ पाँव करना

क़िब्ले के अलावा हर तरफ पाँव फैला कर सोना बैठना जाइज़ है। (मुरत्तिब)

यह मसअला जुहला में बहुत मशहूर है, क़ुतुबे अवाम में एक सितारे का नाम है कि क़ुतुबे शुमाली के क़रीब है, तो तारे तो चारों तरफ़ हैं किसी तरफ पाँव न करे।

इसी तज़्किरा में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया :

हज़रत सैय्यदी इब्राहीम बिन अदहम मस्जिद में पाँव फैलाए बैठे थे ग़ैब से निदा आई, इब्राहीम क्या बादशाहों के हुज़ूर यूं ही बैठते हैं, उस वक़्त से जो पाँव समेटे तो तख़्ते ही पर फैले कभी सोते में भी न फैलाए। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 52)

बन्दर का नाच और दीगर तमाशे की हुर्मत

नाजाइज़ काम में जिस तरह जान माल से मदद करेगा यूंही सवाद बढ़ा कर भी मददगार होगा, नाजाइज़ बात का तमाशा देखना भी नाजाइज़ है, बन्दर नचाना हराम है, उसका तमाशा देखना हराम है। आज कल लोग इनसे ग़ाफ़िल हैं मुत्तक़ी लोग जिनको शरीअत की एहतियात है नावाक़्फ़ी से रीछ या बन्दर का तमाशा या मुर्ग़ों की पाली देखते हैं और नहीं जानते कि इससे गुनहगार होते हैं।

हदीस में इरशाद है कि अगर कोई मज्मा ख़ैर का हो और वह न जाने पाया और ख़बर मिलने पर उसने अफ़सोस किया तो उतना ही सवाब मिलेगा जितना हाज़िरीन को, और अगर मज्मा शर का हो उसने अपने न जाने पर अफ़सोस किया तो जो गुनाह उन हाज़िरीन पर होगा वह उस पर भी।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 96)

मुहर्रम की मजालिस में मर्सिया ख़्वानी वग़ैरह सुनने का हुक्म

मुहर्रम की मज्लिसों में मर्सिया वग़ैरह सुनने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

मौलाना शाह अब्दुल–अज़ीज़ साहब की किताब जो अरबी में है वह या हसन मियाँ मरहूम मेरे भाई की किताब "आईन–ए–क़्यामत" में सही रिवायात हैं उन्हें सुनना चाहिए बाक़ी ग़लत रिवायात के पढ़ने से न पढ़ना और न सुनना बेहतर है।

इन मजालिस में अगर रिक़्क़त आए तो कोई हरज नहीं बाक़ी रफ़ज़ा की सी हालत बनाना जाइज़ नहीं कि जो जिस क़ौम से मुशाबेहत इख़्तियार करता है वह उन्हीं में से होता है, नीज़ हक़ सुब्हानहू तआला ने नेमतों के ऐलान को फरमाया और मुसीबत पर सब्र का हुक्म दिया है।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की विलादत बारा रबीउल–अव्वल शरीफ़ यौमे दोशंबा को है और उसी में वफ़ात शरीफ़ है तो अइम्मा ने ख़ुशी व मुसर्रत का इज़्हार किया, ग़म परवरी का हुक्म शरीअत नहीं देती।

बद गुमानी हराम है

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है, ऐ ईमान वालो बहुत से गुमानों से बचो बेशक बाज़ गुमान गुनाह हैं। (अल–हुजरात, 12)

और हदीस सहीह में फ़रमाया, गुमान से दूर रहो कि गुमान सबसे बढ़ कर झूठी बात है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक मरतबा इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तन्हा एक गुदड़ी पहने मदीना तैय्यबा से काबा मुअज़्ज़मा को तशरीफ़ लिए जाते थे और हाथ में सिर्फ़ एक तामलोट, शक़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने देखा दिल में ख़्याल किया कि यह फ़क़ीर औरों पर अपना बार डालना चाहता है। यह वसवसा शैतानी आना था कि इमाम ने फरमाया शक़ीक़ बचो गुमानों से बाज़ गुमान गुनाह होते हैं।

नाम बताने और वसवसा दिली पर आगाही से निहायत अक़ीदत हो गई और इमाम के साथ हो लिए रास्ता में एक टीला पर पहुँच कर इमाम ने उस से थोड़ा रेत लेकर तामलोट में घोलकर पिया और शक़ीक़ रहमतुल्लाह तआला अलैह से भी पीने को फरमाया, उन्हें इंकार का चारा न हुआ जब पिया तो ऐसे नफ़ीस लज़ीज़ ख़ुशबूदार सत्तू थे कि उम्र भर में न देखे न सुने।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 102)

मर्द को चोटी रखना हराम है

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बकसरत अहादीसे सहीहा में उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों से मुशाबेहत पैदा करें और उन औरतों पर जो मर्दों से।

और तशब्बुह के लिए हर बात में पूरी वज़ा बनाना ज़रूरी नहीं एक ही बात में मुशाबेहत काफ़ी है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक औरत को मुलाहिज़ा फरमाया कि मर्दों की तरह कन्धे पर कमान लटकाए जा रही है उस पर भी यही फरमाया कि उन औरतों पर लानत जो मर्दों से तशब्बुह करें।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने एक औरत को मर्दाना जूता पहने देखा उस पर भी यही हदीस रिवायत फरमाई कि मर्दों से तशब्बुह करने वालियाँ मल्ऊन हैं। (अबू दाऊद)

जब सिर्फ़ जूते या कमान लटकाने में मुशाबेहत मूजिबे लानत है तो औरतों के से बाल बढ़ाना उस से सख़्त तर मूजिबे लानत होगा कि वह एक ख़ार्जी चीज़ हैं और यह ख़ास जुज़्व बदन, तो शानों से नीचे गेसू रखना, बहुक्म अहादीस ज़रूर मूजिबे लानत है और चोटी गुंधवाना और ज़्यादा और उसमें मुबाफ़ डालना और उस से सख़्त तर।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 104)

दो औरतों के बीच से निकलने की मुमानेअत

दो औरतों के बीच से निकलने को मना फरमाया, औरतों के पीछे चलने से मना फरमाया।

★ एक औरत तीन मर्दों की नमाज़ फासिद करती है, एक वह जो दाहिनी तरफ हो, एक वह जो बाईं तरफ हो और एक वह जो पीछे हो।

★ और दो औरतें कम से कम चार की, दो दाहिने बाएं और दो वह जो उनके पीछे हैं।

★ और तीन औरतें दो दाहिने बाएं मर्दों की नमाज़ फासिद करती हैं और अपने पीछे हर सफ़ में तीन तीन आदमियों की जो उनके महाज़ात में हों।

और अगर चार औरतें हैं तो दो मर्दों की तो दाहिने बायें नमाज़ फ़ासिद करेंगे और उनके पीछे अगर लाख सफ़ें हों तो सबकी नमाज़ फासिद, अगरचे महाज़ात न हो।

आख़िर कुछ तो असर है जो इतनी नमाज़ें फासिद होती हैं इसी वजह से दो औरतों के दरम्यान निकलने से मना फरमाया। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 27)

नफ़्स और रूह में फ़र्क़

असल में तीन चीज़ें इलाहिदा इलाहिदा हैं। नफ़्स, रूह,क़ल्ब।

रूह बमंज़िला बादशाह के है और नफ़्स व क़ल्ब उसके दो वज़ीर हैं। नफ़्स उसको हमेशा शर की तरफ ले जाता है और क़ल्ब जब तक साफ़ है ख़ैर की तरफ बुलाता है और मआज़ल्लाह कसरत मआसी और ख़ुसूसन कसरत बिदआत से अन्धा कर दिया जाता है, अब इसमें हक़ के देखने, समझने, ग़ौर करने की क़ाबलियत नहीं रहती, मगर अभी हक़ सुनने की इस्तिदाद बाक़ी रहती है और फिर मआज़ल्लाह औंधा कर दिया जाता है, अब वह न हक़ सुन सकता है और न देख सकता है बिल्कुल चौपट हो कर रह जाता है।

क़ल्ब हक़ीक़तन उस मज़्ग़ा गोश्त का नाम नहीं बल्कि वह एक लतीफ़–ए–ग़ैबिया है जिसका मरकज़ यह मज़्ग़ा गोश्त है सीने के बाई जानिब, और नफ़्स का मरकज़ ज़ेरे नाफ़ है, इसी वास्ते शाफ़ईया सीने पर हाथ बाँधते हैं कि नफ़्स से जो वसाविस उठें वह क़ल्ब तक न पहुँचने पाएं, और हन्फ़ीया ज़ेरे नाफ बाँधते हैं कि गरबा कुशतन रोज़ अव्वल बायद, इसी वास्ते यह तहरीर किया गया है कि अगर हाथ सख़्ती से बाँधे जाएं तो वसाविस न पैदा हों। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 63)

नसब बदलना हराम है

बाज़ लोग फख़्र व बड़ाई के लिए अपना नसब बदल कर शरीफ़ और अच्छे लोगों में शुमार कराना पसन्द करते हैं यहाँ तक कि जो लोग सैय्यद नहीं होते वह अपनी ताज़ीम व तक्रीम के लिए अपने को सैय्यद कहलवाते हैं, नसब का बदलना सख़्त मना और हराम है अहादीसे मुबारका में उसके लिए वईदें वारिद हुई हैं। (मुरत्तिब)

जो अपने बाप के सिवा दूसरे को बाप बताए या अपने मौला के होते ग़ैर को मौला बनाए उस पर ख़ुदा व मलाइका और सब लोगों की लानत, अल्लाह तआला न उसका फर्ज़ क़बूल करे न नफ़्ल।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो शख़्स अपने बाप के सिवा दूसरे की तरफ इद्दआ करे यानी किसी दूसरे को बाप बनाए या अपने मौला के सिवा दूसरे को अपना मौला बनाए तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है न उसका फर्ज़ क़बूल और न नफ़्ल। (बुख़ारी, मुस्लिम, नक़ाउस्सफ़ाला)

एक और हदीस में है जो शख़्स अपना बाप छोड़ कर दूसरे को बाप बनाए उस पर अल्लाह और तमाम फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत, अल्लाह न उसका फर्ज़ क़बूल करेगा न नफ़्ल। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

दूसरी हदीस में इरशाद हुआ कि जन्नत उस पर हराम है।

तीसरी हदीस में फरमाया उस पर अल्लाह की पै दर पै क़यामत तक लानत है। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 73)

तफ़रीहन झूला झूलना

शारे आम पर न हो, मकान में हो कुछ हरज नहीं, यह तो बदन की रियाज़त है बाज़ अमराज़ में अतिब्बा मुफ़ीद बताते हैं।

और औरतों के लिए यह है कि कोई ना महरम न हो और घर के अन्दर हों और गाना न गाएं तो उनके वास्ते भी जाइज़।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं, मुझे अपने निकाह की कोई ख़बर न थी मैं अपने मकान में झूला झूल रही थी कि मेरी माँ मुझको उठा कर ले गई।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 25)

अल्लाह के नज़्दीक दुनिया की हक़ीक़त

हदीस में है अगर दुनिया की क़द्र अल्लाह के नज़्दीक एक मच्छर के पर के बराबर होती तो एक घूंट इसमें से काफ़िर को न देता। ज़लील है ज़लीलों को दी गई जब से इसे बनाया है कभी इसकी तरफ़ नज़र न फ़रमाई। (तिर्मिज़ी)

दुनिया की रूहानियत आसमान व ज़मीन के दरम्यान फ़िज़ा में मुअल्लक़ है फ़रियाद व ज़ारी करती है और कहती है ऐ मेरे रब तू मुझसे क्यों नाराज़ है, मुद्दतों के बाद इरशाद होता है, "चुप ख़बीसा"। (तिर्मिज़ी)

सूरः ज़ुख़रफ़ शरीफ़ में तो यह इरशाद होता है कि अन्धे कहेंगे यह कुफ़्र ही हक़ है वरना हम काफ़िरों के वास्ते उनके घरों की छतें और सीढ़ियाँ चाँदी की बना देते और उनके घरों के दरवाज़े और तख़्त सोने के। (ज़ुख़रफ़, स0 33, 34)

फिर साइल की तरफ़ इशारा करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

सिर्फ़ इस बात पर कि कुफ़्फ़ार को दुनिया बहुत दी है और हम को थोड़ी, उस पर तो आप जैसे आलिम यह कह रहे हैं, अगर सब दुनिया उन्हें दे दी जाती और हमको बिल्कुल न मिलती तो न मालूम क्या हाल होता।

सोना चाँदी ख़ुदा के दुशमन हैं वह लोग जो दुनिया में सोने चाँदी से मुहब्बत रखते हैं क़यामत के दिन पुकारे जाएंगे कहाँ हैं वह लोग जो ख़ुदा के दुशमन से मुहब्बत रखते थे, अल्लाह तआला दुनिया को अपने महबूब से ऐसा दूर फ़रमाता है जैसे बिला तशबीह बीमार बच्चे को उसकी मुज़िर चीज़ों से उसकी माँ दूर रखती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है, तुमको धोखे में न डाल दे काफ़िरों का अहले गहले शहरों में फिरना यह थोड़ी पूंजी है फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और बुरा ठिकाना है।

(आले इमरान, 196, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 28, 29)

गुनाहे सग़ीरा को हल्का जानना कबीरा है

बाज़ वक़्त सग़ीरा को हल्का जानना कुफ़्र हो जाएगा जबकि उसका गुनाह ज़रूरियाते दीन से हो। बहुत सग़ाइर ऐसे हैं जिनका मासियत होना ज़रूरियाते दीन से है मसलन अजनबिया से मस व तक़्बील सग़ीरा है, अगर हलाल जाने काफ़िर है, यानी जिसको समझा कि यह हल्का गुनाह है फ़ौरन सग़ीरा से कबीरा हो गया।

औलिया–ए–किराम फ़रमाते हैं : इस गुनाह को दूसरे गुनाह से निस्बत देता है कि यह उस से छोटा है यह नहीं देखता कि गुनाह किसका कर रहा है अगर देखता तो यह फ़र्क़ न करता।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 35)

माल व औलाद आज़माइश का ज़रीआ हैं

अल्लाह तआला फ़रमाता है : ऐ ईमान वालो तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से तुम्हारे दुशमन हैं तुम उन से बचो और तुम्हारे माल व औलाद फ़ित्ना हैं। और ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करे तो वही लोग ख़सारे में हैं।

(अत्तग़ाबुन, 14, 15, अल–मुनाफ़िक़ून 9)

चूंकि अज़्वाज व औलाद को दुश्मन बताया गया था मुम्किन था कोई समझ लेता इनको तक्लीफ़ देना चाहिए। लिहाज़ा उसी जगह फ़रमा दिया, और अगर तुम माफ़ कर दो और दर गुज़र कर दो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है। (अतग़ाबुन, 14)

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू अपने बारे में फ़रमाते हैं कि अल्हम्दुलिल्लाह कि मैंने माल मिन हैसु माल से कभी मुहब्बत न रखी सिर्फ़ इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के लिए उस से मुहब्बत है इसी तरह औलाद मिन हैस हो औलाद से भी मुहब्बत नहीं, सिर्फ़ इस सबब से कि सिला रहम अमले नेक है इसका सबब औलाद है और यह मेरी इख़्तियारी बात नहीं मेरी तबीअत का तक़ाज़ा है। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 56)

खेल, गंजफ़ा, चौसर और शतरंज की शुनाआत

यह सब खेल मम्नूअ् व नाजाइज़ हैं, इनमें चौसर और गंजफ़ा बदतर हैं, गंजफ़ा में तसावीर हैं उन्हें अज़मत के साथ रखते और वक़अत व इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं, यह अम्र उसके सख़्त गुनाह का मूजिब है।

चौसर की निसबत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने चौसर खेली उसने गोया अपना हाथ सुअर के गोश्त व ख़ून में रंगा। (मुस्लिम)

दूसरी हदीस में फ़रमाया जिसने चौसर खेली उसने ख़ुदा और रसूल की नाफ़रमानी की। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

चौसर बिल–इज्मा हराम व मूजिबे फ़िस्क़ विर्द शहादत है, यही हाल गंजफ़ा का समझना चाहिए।

शतरंज को बाज़ उलमा ने बाज़ रिवायात में चन्द शर्तों के साथ जाइज़ बताया है।

1. बद कर न हो यानी कोई शर्त मुक़र्रर न हो।
2. नादिरन कभी–कभी हो आदत न डालें।
3. इसके सबब नमाज़ बाजमाअत ख़्वाह किसी वाजिबे शरई में ख़लल न आए।
4. उस पर क़समें न खाया करें।
5. फ़हश न बकें।

मगर तहक़ीक़ यह कि मुतलक़न मना है और हक़ यह कि इन शर्तों का निबाह हरगिज़ नहीं होता, ख़ुसूसन शर्त दोम, व सोम कि जब इसका चसका पड़ जाता है ज़रूर मदावमत करते हैं और कम से कम वक़्त नमाज़ में तंगी या जमाअत में सुस्ती बेशक होती है। जैसा कि तजरबा इस पर शाहिद और बिल–फ़र्ज़ हज़ार में एक आध आदमी ऐसा निकले कि उन शराइत का पूरा लिहाज़ रखे तो नादिर पर हुक्म नहीं होता। तो ठीक यही है कि इस से मुतलक़न मुमानेअत की जाए।

हाँ इतना है कि अगर बद कर न हो तो एक आध बार खेल लेना गुनाहे सग़ीरा है। और बद कर हो या आदत की जाए या उसके सबब नमाज़ खोएं, या जमाअतें फौत करें तो आप ही गुनाहे कबीरा हो जाएगी।

इसी तरह हर खेल और अबस व बेकार फ़ेअ्ल जिसमें न कोई ग़रज़े दीन, न कोई मंफ़अत जाइज़ा दुनियवी हो सब मक्रूह व बेजा हैं, कोई कम कोई ज़्यादा। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 44)

जानवर पालना, लड़ाना, शिकार करना

शुकरा बाज़ पालना दुरुस्त है और उन से शिकार कराना और उसका खाना भी दुरुस्त है। मगर यह ज़रूर है कि शिकार ग़िज़ा व दवा, या किसी नफ़ा सही की ग़रज़ से हो, महज़ तफ़रीह व लह्व व लइब न हो, वरना हराम है यह गुनहगार होगा अगरचे उनका मारा हुआ जानवर जबकि वह तालीम पा गए हों और बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा हो हलाल हो जाएगा।

बटेर बाज़ी, मुर्ग़ बाज़ी और इसी तरह हर जानवर का लड़ाना, जैसे लोग मेंढ़े लड़ाते हैं, लाल लड़ाते हैं, यहाँ तक कि हराम जानवरों मसलन हाथियों, रीछों का लड़ाना भी सब मुतलक़न हराम है कि बिला वजह बेज़बानों को ईज़ा है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जानवरों के लड़ाने से मना फरमाया।

कबूतर पालना, जबकि ख़ाली दिल बहलाने के लिए हो और किसी अम्र नाजाइज़ की तरफ पहुँचाने वाला न हो, और अगर छतों पर चढ़ कर उड़ाए कि मुसलमानों की औरतों पर निगाह पड़े, या उनके उड़ाने को कंकरियाँ फेंके, जो किसी का शीशा तोड़ें, या किसी की आँख फोड़ें, या किसी का दम बढ़ाए, और तमाशा होने के लिए दिन भर उन्हें भूखा उड़ाए, जब उतरना चाहें न उतरने दें ऐसा पालना हराम है।

पालतू जानवरों का हक़

एक हदीस में हुक्म है कि जो जानवर पालो दिन में 70 बार उसे दाना पानी दिखाओ, न कि घन्टों, पहरों भूखा प्यासा रखो और नीचे आना चाहे तो न आने दो।

उलमा फरमाते हैं जानवर पर ज़ुल्म, काफिर ज़िम्मी पर ज़ुल्म से सख़्त तर है और काफिर ज़िम्मी पर, मुसलमान पर ज़ुल्म से अशद है।

बिल्ली के सबब दोज़ख़

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं एक औरत दोज़ख़ में गई एक बिल्ली के सबब कि उसे बांध रखा था न उसे खाना दिया न छोड़ा कि ज़मीन के चूहे वग़ैरह खा लेती। (बुख़ारी)

एक रिवायत में है कि वह बिल्ली दोज़ख़ में उस औरत पर मुसल्लत की गई है कि उसका आगा, पीछा दाँतों से नोच रही है। (इब्ने हिब्बान)

शौक़िया कुत्ता पालना

कुत्ता पालना हराम है जिस घर में कुत्ता हो उस घर में रहमत का फरिश्ता नहीं आता, रोज़ उस शख़्स की नेकियाँ घटती हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जो कुत्ता पाले मगर गले का कुत्ता या शिकारी, रोज़ उसकी नेकियों से दो क़ीरात कम हों, उन क़ीरातों की मिक़्दार अल्लाह व रसूल जाने। जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है कि जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।

तो सिर्फ़ दो क़िस्म के कुत्ते इजाज़त में रहे।

★ एक शिकारी जिसे खाने या दवा वग़ैरह मुनाफ़े सहीहा के लिए शिकार की हाजत हो, न शिकार तफ़रीह कि वह ख़ुद हराम है।

★ दूसरा वह कुत्ता जो गले या खेती या घर की हिफ़ाज़त के लिए पाला जाए।

और हिफ़ाज़त की सच्ची हाजत हो वरना अगर मकान में कुछ नहीं कि चोर लें, या मकान महफ़ूज़ जगह है कि चोर का अन्देशा नहीं, ग़रज़ जहाँ यह अपने दिल से ख़ूब जानता हो कि हिफ़ाज़त का बहाना है असल में कुत्ते का शौक़ है वहाँ जाइज़ नहीं, आख़िर आस पास के घर वाले भी अपनी हिफ़ाज़त ज़रूरी समझते हैं अगर बेकुत्ते के हिफ़ाज़त न होती तो वह भी पालते। ख़ुलासा यह कि अल्लाह तआला के हुक्म में हीला न निकाले कि वह दिलों की बात जानने वाला है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 195, 196)

बेइजाज़त दूसरे का ख़त पढ़ना या उस पर नज़र डालना

बग़ैर इजाज़त के दूसरे का ख़त पढ़ना, या सरसरी निगाह से देखना जाइज़ नहीं।

उलमा फरमाते हैं ख़त कातिब की मिल्क है, यहाँ तक कि अगर वह लिखे कि उस पर जवाब लिख दे तो ख़ुद मक्तूब इलैह को उसमें तसर्रुफ़ जाइज़ नहीं, मालिक को वापस देना लाज़िम, वापस न चाहे तो बहुक्म उर्फ़ मक्तूब इलैह मालिक हो जाएगा।

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अपने भाई का ख़त बे उसकी इजाज़त के देखे वह बिला शुबह आग देख रहा है।

(अबू दाऊद, हाकिम)

किसी का ख़त बग़ैर इजाज़त के देखना ऐसा है जैसे किसी के दरवाज़ा में से झांके, इसी पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि इस हालत में उसकी आँख फोड़ दें तो कुछ इल्ज़ाम नहीं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है जो शख़्स कोई पर्दा खोल कर क़ब्ल इजाज़त निगाह करे वह ऐसी मम्नूअ् बात का मुर्तकिब है जो उसे जाइज़ न थी और अगर कोई उसकी आँख फोड़ दे तो क़सास नहीं।

(मुसनद अहमद)

इंसाफ़ से देखिए तो लिफ़ाफ़ा चाक करके खत पढ़ना भी एक क़िस्म का पर्दा खोल कर निगाह करना है। लिहाज़ा ख़त खुला हुआ हो या लिफ़ाफ़ा में बन्द हो दोनों सूरत में बग़ैर इजाज़त पढ़ना मना है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 76)

फ़ासिक़ जानवर और साँप को क़त्ल करना

क़त्ल साँप का मुस्तहब है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसके क़त्ल का हुक्म किया है यहाँ तक कि उसके क़त्ल की हरम में और मुहर्रम को भी इजाज़त है और जो ख़ौफ़ से छोड़ दे उसके लिए हदीस में वारिद हुआ है कि वह हम में से नहीं है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़ाटने वाला कुत्ता, चूहा, बिच्छू, चील, कव्वा और साँप को मार डालने का हुक्म फरमाते। (मुस्लिम)

और फरमाते हैं : सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कि पाँच जानवरों को हालते अहराम में भी क़त्ल किया जा सकता है साँप, चूहा, चील, कव्वा और काटने वाला कुत्ता। (त, निसाई)

लेकिन क़त्ल उस साँप का कि सफेद रंग है और सीधा चलता है यानी चलने में बल नहीं खाता, क़ब्ल अंदाज़ व तहज़ीर के मम्नूअ् है।

हदीस में है कि तमाम साँपों को क़त्ल करो मगर वह साँप जो सफेद चाँदी के धागा की तरह बारीक होता है उसे क़त्ल न किया जाए। (त, अबू दाऊद)

दूसरी हदीस में है ज़ुल तफ़ीतैन और अब्तर को क़त्ल करो और सफेद साँप के क़त्ल से बचो कि वह जिन्न है। (त, ज़ैलई)

यानी वह साँप जो मदीना के घरों में रहते हैं बेअंदाज़ व तहज़ीर के न क़त्ल किए जाएं मगर ज़ुल तफ़ीतैन। कि उसकी पीठ पर दो ख़त (सपेद) सफेद होते हैं, और अबतर कि एक क़िस्म है साँप की कबूदरंग, कोताह दुम, और इन दोनों क़िस्मों के साँपों का ख़ास्सा है कि जिसकी आँख पर उनकी निगाह पड़े अंधा हो जाए, ज़न हामिला अगर उन्हें देख ले हमल साक़ित हो, कि इस तरह के साँप अगर मदीना के घरों में भी रहते हों तो उनका मारना बेअंदाज़ के जाइज़ है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि मदीना मुनव्वरह के कुछ जिन्न इस्लाम ले आए हैं जिन्हें उनमें से कुछ नज़र आए तो उन्हें तीन दिन की मोहलत दे अगर उसके बाद भी निकले तो उसे क़त्ल करे दे कि वह शैतान है। (त, मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि उन घरों में कुछ साँप रहते हैं अगर वह तुम्हें नज़र आएं तो उन्हें तीन दिन निकालो अगर चले जाएं तो ठीक है वरना उन्हें क़त्ल कर दो कि वह काफिर है। (त, मुस्लिम)

लेकिन बाज़ उलमा ने क़त्ल उन साँपों का कि घरों में रहते हैं मुतलक़न बेअंदाज़ के मम्नूअ् ठहराया, कि हदीस में घरों में रहने वाले साँपों को क़त्ल करने से मना फरमाया गया।

मगर यहाँ पर घरों से मुराद मदीना के घर हैं मुतलक़न घर मुराद नहीं हैं। (मुरत्तिब)

साँपों को अंदाज़ के तरीक़े

अंदाज़ व तहज़ीर के तरीक़े मुख़्तलिफ़ हैं।

★ एक यह कि यूं कहा जाए मैं तुमको क़सम दिलाता हूँ उस अहद की जो तुम से सुलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम ने लिया कि हमें ईज़ा मत दो और हमारे सामने ज़ाहिर मत हो।

★ दूसरे यह कि इस तरह कहा जाए हम तुझ से सवाल करते हैं ब–वसील–ए–अह्दे नूह व अह्दे सुलेमान बिन दाऊद अलैहिमुस्सलाम के कि हमें ईज़ा मत दे।

★ तीसरे यह कि मैं तुम्हें क़सम दिलाता हूँ इस अहद की जो तुमसे नूह अलैहिस्सलाम ने लिया, मैं तुम्हें क़सम दिलाता हूँ उस अहद की जो तुम से सुलेमान अलैहिस्सलाम ने लिया कि ईज़ा मत दो।

★ चौथे यह कि लौट जा ख़ुदा के हुक्म से।

★ पाँचवें यह कि मुसलमान की राह छोड़ दे।

हासिल यह कि क़त्ल साँप का मुस्तहब है, सपेद (सफेद) और मदीना के घरों में रहने वालों का क़त्ल बेअंदाज़ व तहज़ीर के मम्नूअ् है हाँ ज़ुल तफ़ीतैन और अब्तर को कहीं भी क़त्ल करना जाइज़ है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 100, 101)

ख़ुश तबई दोस्ताना मज़ाह, और गुठलियाँ मारना

अक्सर लोग जब आम की फसल आती है तो बाग़ों को जा कर आम खाते हैं और आपस में एक दूसरे के आमों की गुठलियाँ मारते हैं और लह्व व लइब में मशग़ूल होते हैं, यह नाजाइज़ व मम्नूअ् है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ग़ल्ला या गुठली, कंकरी फेंक कर मारने से मना किया और फरमाया उस से न दुशमन पर वार हो सके, न जानवर का शिकार, उसका नतीजा यही है कि आँख फोड़ दे या दाँत तोड़ दे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हाँ सिर्फ़ छिल्कों से हम उम्र, हम मरतबा लोग कभी सिर्फ़ दिल ख़ुश करने के तौर पर बाहम दोस्ताना मज़ाह करें जिसमें किसी हुर्मत या हशमत दीनी का बिल्कुल ज़रर कभी न हो तो मुबाह है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 165)

औरत किस से पर्दा करे किस से न करे ?

पर्दा सिर्फ़ उन से ना दुरुस्त है जो बसबबे नसब के औरत पर हमेशा हमेशा को हराम हों और कभी किसी हालत में उन से निकाह ना मुम्किन हो, जैसे बाप, दादा, नाना, भाई, भतीजा, भांजा, चचा, मामूं, बेटा, पोता, नवासा।

इनके सिवा जिन से निकाह कभी दुरुस्त है अगरचे फिलहाल नाजाइज़ हो। जैसे बहनोई जब तक बहन ज़िन्दा है, या चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी के बेटे या जेठ, देवर, इन से पर्दा वाजिब है।

और जिन से हमेशा को हराम है कभी हलाल नहीं हो सकता मगर वजह हुर्मत इलाक़ा नसब नहीं बल्कि इलाक़ा रज़ाअत है जैसे दूध के रिश्ते बाप, दादा, नाना, भांई, भतीजा, भांजा, मामूं, बेटा, पोता, नवासा या इलाक़ा सहर हो जैसे ख़ुसर, सास, दामाद, बहू, इन सबसे न पर्दा वाजिब है न ना दुरुस्त है करना न करना दोनों जाइज़, और बहालते जवानी या एहतमाल फ़ित्ना पर्दा करना ही मुनासिब। ख़ुसूसन दूध के रिश्ते में कि अवाम के ख़्याल में इसकी हैबत बहुत कम होती है। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 237)

औरत के पर्दा ही से मुतअल्लिक़ एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

जेठ, देवर, बहनोई, फूफा, ख़ालू, चचाज़ाद, मामू ज़ाद, फूफी ज़ाद, ख़ाला ज़ाद भाई यह सब लोग औरत के लिए महज़ अजनबी हैं बल्कि उनका ज़रर निरे बेगाने शख़्स के ज़रर से ज़ाइद है कि महज़ ग़ैर आदमी घर में आते हुए डरेगा और यह आपस के मेल जोल के बाइस ख़ौफ़ नहीं रखते, औरत निरे अजनबी शख़्स से दफ़अतन मेल नहीं खा सकती, और उन से लिहाज़ टूटा होता है, इसलिए जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ग़ैर औरतों के पास जाने को मना फ़रमाया, एक सहाबी अंसारी ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह जेठ देवर के लिए क्या हुक्म है फ़रमाया जेठ देवर तो मौत हैं। (बुख़ारी, मुसनद अहमद)

ख़ुसूसन जो लिबास की वज़ा और पहनावे का तरीक़ा अब औरत में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाज़ू या कलाई या पेट या पिंडली का कोई हिस्सा खुला हो यूं तो ख़ास महारिम कि जिन से निकाह हमेशा को हराम है किसी के सामने होना सख़्त हराम क़तई है, और अगर बफ़र्ज़ ग़लत कोई औरत ऐसी हो भी कि इन उमूर की पूरी एहतियात हमेशा रखे कपड़े मोटे सर से पाँव तक पहने रहे कि मुँह की टिकली और हथेली, तलवों के सिवा जिस्म का कोई बाल कभी न ज़ाहिर हो, तो इस सूरत में भी जब कि शौहर उन लोगों के सामने आने को मना करता और नाराज़ होता है तो अब यूं सामने आना भी हराम हो गया, औरत अगर न मानेगी अल्लाह वाहिद क़हहार के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होगी। जब तक शौहर नाराज़ रहेगा औरत की कोई नमाज़ क़बूल न होगी, अल्लाह के फ़रिश्ते औरत पर लानत करेंगे, अगर तलाक़ मांगेगी मुनाफ़िक़ा होगी। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 196)

औरत का बदन औरत है

औरत का जिस्म तो औरत है ही उसका छुपाना फ़र्ज़ है यहाँ तक कि औरत के गट्टे सतरे औरत में दाख़िल हैं, ग़ैर महरम को उनका देखना हराम है, औरत को हुक्म है उसके पाइचे ख़ूब नीचे हों कि चलने में पिंडली या गट्टे खुलने का एहतमाल न रहे।

औरत की आवाज़ औरत है

इसी तरह औरत की आवाज़ भी औरत है ग़ैर मर्द को सुनाना जाइज़ नहीं, यहाँ तक कि औरत का ख़ुश अल्हानी से बआवाज़ ऐसा पढ़ना कि नामहरमों को उसके नग़मा की आवाज़ जाए हराम है। अगर सिर्फ़ औरतों का मज्मा हो और आवाज़ किसी ना महरम के कान तक न पहुँचे तो उसका पढ़ना जाइज़ है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 411)

कुफ़्फ़ार का मेला देखने जाना

कुफ़्फ़ार का मेला देखने जाना मुतलक़न नाजाइज़ है, अगर उनका मज़हबी मेला है जिसमें वह अपना कुफ़्र व शिर्क करेंगे, कुफ़्र की आवाज़ों से चलाएंगे जब तो ज़ाहिर है और यह सूरत सख़्त हराम गुनाहे कबाइर में से है, अगर कुफ़्री बातों से मुतनफ़्फ़िर है तो कुफ़्र नहीं, हाँ मआज़ल्लाह उन में से किसी बात को पसन्द करे या हल्का जाने तो आप ही काफ़िर हैं, इस सूरत में औरत निकाह से निकल जाएगी और यह इस्लाम से, वरना फ़ासिक़ है, फ़िस्क़ से अगरचे निकाह नहीं टूटता फिर भी वईद शदीद है और कुफ़्रियात को तमाशा बनाना ज़लाले बईद है।

हदीस में है जो किसी क़ौम का जत्था बढ़ाए वह उन्हीं में से है और जो किसी क़ौम का कोई काम पसन्द करे वह उस काम के करने वालों का शरीक है। (मुसनद, अबू याला)

और अगर मज़हबी मेला नहीं, लह्व व लइब का है जब भी नामुम्किन कि मुंकिरात व क़बाइह से ख़ाली हो और मुंकिरात का तमाशा बनाना जाइज़ नहीं।

फ़िक़ह की बाज़ किताब में है, शोअ्बदा बाज़, भानमती, बाज़ीगर के अफ़आल हराम हैं और उसका तमाशा देखना भी हराम है कि हराम को तमाशा बनाना हराम है।

ख़ुसूसन अगर काफ़िरों की किसी शैतानी ख़ुराफ़ात को अच्छा जाना तो आफ़त अशद है, और उस वक़्त तज्दीदे इस्लाम व तज्दीदे निकाह का हुक्म किया जाएगा।

और अगर तिजारत के लिए जाए तो अगर मेला उनके कुफ़्र व शिर्क का है जाना नाजाइज़ व मम्नूअ् है कि अब वह जगह उनका मअ्बद है और मअ्बद कुफ़्फ़ार में जाना गुनाह।

और अगर मेला लह्व व लइब का है और ख़ुद उस से बचे, न उसमें शरीक हो, न उसे देखे न वह चीज़ें बेचे जो उनके लह्व व लइब मम्नूअ् की हों तो जाइज़ है फिर भी मुनासिब नहीं कि उनका मज्मा हर वक़्त महले लानत है तो उस से दूरी ही में ख़ैर व सलामत है। इसलिए उलमा ने फ़रमाया कि उनके मुहल्ला में हो कर निकले तो जल्द लपकता हुआ गुज़र जाए।

जवाज़ की एक सूरत

और अगर ख़ुद शरीक हो, या तमाशा देखे, या उनके लह्व मम्नूअ् की चीज़ें बेचे तो आप ही गुनाह व नाजाइज़ है। हाँ कुफ़्फ़ार के मेले में जाने की एक सूरत जवाज़ मुतलक़ की है वह यह कि आलिम उन्हें हिदायत और इस्लाम की तरफ दावत के लिए जाए जबकि उस पर क़ादिर हो यह जाना हसन व महमूद है अगरचे उनका मज़्हबी मेला हो ऐसा तशरीफ़ ले जाना ख़ुद हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बारहा साबित है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 363)

औरतों को सोने चाँदी का ज़ेवर जाइज़

औरतों को सोने चाँदी का ज़ेवर पहनना जाइज़ है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : सोना और रेशम मेरी उम्मत की औरतों को हलाल और मर्दों पर हराम हैं। (अबू बकर बिन अबी शैबा, तबरानी)

बल्कि औरत का अपने शौहर के लिए गहना पहनना, बनाव सिंगार करना बाइसे अज्रे अज़ीम और उसके हक़ में नमाज़ नफ़्ल से अफ़ज़ल है।

बाज़ सालेहात कि ख़ुद और उनके शौहर दोनों साहबे औलिया किराम से थे हर शब बाद नमाज़ इशा पूरा सिंगार करके दुल्हन बन कर अपने शौहर के पास आतीं अगर उन्हें अपनी तरफ हाजत पातीं हाज़िर रहतीं वरना ज़ेवर व लिबास उतार कर मुसल्ला बिछातीं और नमाज़ में मशग़ूल हो जातीं।

बिला वजह तर्के ज़ेवर की कराहत

और दुल्हन को सजाना तो सुन्नते क़दीमा और बहुत अहादीस से साबित है बल्कि कुंवारी लड़कियों को ज़ेवर व लिबास से आरास्ता रखना कि उनकी मंगनियाँ आएं यह भी सुन्नत है। बल्कि औरत का बावस्फ़ क़ुदरत बिल्कुल बेज़ेवर रहना मक्रूह है कि मर्दों से तशब्बुह है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से फरमाया ऐ अली अपने महज़रात को हुक्म दो कि बेगहने नमाज़ न पढ़ें। (निहायह इब्ने असीर)

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा औरत का बेज़ेवर नमाज़ पढ़ना मक्रूह जानतीं और फरमातीं और कुछ न पाए तो एक डोरा ही गले में बांध ले। (मजम–उल–बहार)

बजने वाला ज़ेवर कब मुबाह, कब नाजाइज़

बजने वाला ज़ेवर औरत के लिए उस हालत में जाइज़ है कि नामहरमों मसलन ख़ाला, मामू, फूफी के बेटों, जेठ देवर, बहनोई के सामने न आती हो न उसके ज़ेवर की झंकार नामहरम तक पहुँचे।

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

औरतें अपने सिंगार शौहर या महरम के सिवा किसी पर ज़ाहिर न करें। (अन्नूर, 31)

★ और फरमाता है :

औरतें पाँव धमक कर न रखें कि उनका छुपा हुआ सिंगार ज़ाहिर हो। (अन्नूर, 31)

यह आयते करीमा जिस तरह नामहरम को गहने की आवाज़ पहुँचना मना फरमाती है यूं ही जब आवाज़ न पहुँचे उसका पहनना औरतों के लिए जाइज़ बताती है कि धमक कर पाँव रखने को मना फरमाया न कि पहनने को। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 364)

रात को आईना देखना मना नहीं

रात को आईना देखने की कोई मुमानेअत नहीं बाज़ अवाम का ख़्याल है कि उससे मुँह पर झाइयाँ पड़ती हैं और इसका भी कोई सुबूत न शरअन है न तबअन व तजुर्बतन, और औरत कि अपने शौहर के सिंगार के वास्ते आईना देखे सवाबे अज़ीम की मुस्तहिक़ है, सवाब की बात बेअसल ख़्यालात की बिना पर मना नहीं हो सकती। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 383)

बेज़रूरत शिकार करना ज़ुल्म व बेदर्दी

जिसे खाने या दवा के लिए किसी जानवर की हाजत है वह अगर बक़द्र हाजत दो एक जानवर मार लाए तो यह किसी खेल या तफ़रीह का फ़ेअ्ल न होगा। मगर बेहाजत मज़्कूरा तफ़रीहे तबअ् के लिए जो शिकार किया जाता है वह ख़ुद नाजाइज़ है कि एक लहव व लइब है, लोग ख़ुद उसे शिकार खेलना कहते हैं और खेल के लिए बे ज़बानों की जान हलाक करना ज़ुल्म व बेदर्दी है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 402)

काबा की तरफ पाँव करना बेअदबी है

काबा मुअज़्ज़मा की तरफ पाँव करके सोना बल्कि उस तरफ पाँव फैलाना सोने में हो, ख़्वाह जागने में, लेटे में हो, ख़्वाह बैठे में हर तरह मम्नूअ् व बेअदबी है। सोने में सुन्नत यूं है कि कुतुब की तरफ सर करे और सीधे करवट पर सोए कि सोने में भी मुँह काबा ही को रहे। हाँ वह मरीज़ जिसमें उठने बैठने की ताक़त नहीं उसकी नमाज़ के लिए एक तरीक़ा यह रखा गया है कि पाइंती क़िब्ला की तरफ हो और सर के नीचे ऊंचा तकिया रख दें कि मुँह काबा मुअज़्ज़मा को हो, फिर यह ज़रूरत के वास्ते है। ग़ैर मरीज़ अपने आपको उस पर क़यास नहीं कर सकता है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 422)

क़र्ज़ की अदाइगी

वह क़र्ज़दार जिसने बहाजते शरईया किसी नेक जाइज़ काम के लिए देन लिया और अपनी चलती अदा में कमी न की, न कभी ताख़ीर नारवा, रवा रखी, बल्कि हमेशा सच्चे दिल से अदा पर आमादा और ता–हद्दे क़ुदरत उसकी फ़िक्र करता रहा फिर बमज्बूरी अदा न हो सका और मौत आ गई तो मौला अज़्ज़ा व जल्ल उसके लिए उस दीन से दर गुज़र फरमाएगा और रोज़े क़यामत अपने ख़ज़ाना क़ुदरत से अदा फरमा कर दाइन को राज़ी कर देगा। उसके लिए यह वादे ख़ास उसी देन के वास्ते है न तमाम हुक़ूक़ुल–इबाद के लिए, यानी क़र्ज़ का बोझ हुक़ूक़ुल–इबाद में से है, हुक़ूक़ुल–इबाद को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल माफ़ नहीं फरमाएगा बल्कि आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ माफ़ कर देने का हुक्म होगा। मगर वह क़र्ज़दार जो ज़रूरते शरईया से क़र्ज़ लिया और चाहते हुए भी अदा न कर सका तो अगरचे यह हुक़ूक़ुल–इबाद में से है मगर अल्लाह तआला उसे अपनी रहमते कामिला से अता फरमा देगा।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो किसी देन का

मुआमला करे कि उसके अदा की नीयत रखता हो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल रोज़े क़यामत उसकी तरफ़ से अदा फ़रमा देगा। (बुख़ारी, इब्ने माजा, तबरानी)

दूसरी हदीस में है कि जिसने कोई मामला देन किया और दिल में अदा की नीयत रखता था फिर मौत आ गयी अल्ला अज़्ज़ा व जल्ल उस से दरगुज़र फरमाएगा और दाइन को जिस तरह चाहे राज़ी कर देगा। (मुस्तदरक, हाकिम)

तीसरी हदीस में है बेशक अल्लाह तआला क़र्ज़दार के साथ है यहाँ तक कि अपना क़र्ज़ अदा करे जब तक उसका देन अल्लाह तआला के नापसन्द काम में न हो। (इब्ने माजा, हाकिम)

एक और हदीस में है रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला व अला रोज़े क़यामत मदयून से पूछेगा तूने काहे में यह दीन लिया और लोगों का हक़ ज़ाए किया अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे तू जानता है मेरे अपने खाने पीने, पहनने ज़ाए कर देने के सबब वह देन रह गया बल्कि आग लग गई या चोरी हो गई या तिजारत में टूटा पड़ा यूं रह गया, मौला अज़्ज़ा व जल्ल फरमाएगा मेरा बन्दा सच कहता है सबसे ज़्यादा मैं मुस्तहिक़ हूँ कि तेरी तरफ से अदा फरमा दूँ फिर मौला सुब्हानहू व तआला कोई चीज़ मंगा कर उसके पल्ला मीज़ान में रख देगा कि नेकियाँ बुराईयों पर ग़ालिब आ जाएंगी और वह बन्दा रहमते इलाही के फ़ज़्ल से दाख़िले जन्नत होगा। (कंज़ुल-उम्माल, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 51,52)

बुध के दिन किसी काम का इफ़्तिताह मूजिबे तकमील है

अहादीस वग़ैरह में बाज़ साअतों के बारे में आया है कि उनमें दुआयें क़बूल होती हैं यूंहीं दिनों के बारे में भी आया है कि फलां दिन फलां काम के लिए मुबारक व मुफ़ीद है। (मुरत्तिब)

बुध के दिन के बारे में हदीस में है नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो चीज़ बुध के दिन शुरू की जाती है वह अतमाम को पहुँचती है। (मुसनद अहमद)

उसके लिए ज़ुहर व अस्र के दरम्यान मुनासिब है कि बुध के दिन यह वक़्त साअते इजाबत है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 160)

आसमानी बिजली क्या चीज़ है ?

अल्लाह तआला ने बादलों के चलाने पर एक फरिश्ता मुक़र्रर फरमाया है जिसका नाम रअद है, उसका क़द बहुत छोटा है और उसके हाथ में एक बहुत बड़ा कोड़ा है, जब वह कोड़ा बादल को मारता है उसकी तर्री से आग झड़ती है उस आग का नाम बिजली है।

ज़लज़ला का सबब क्या है ?

ज़लज़ला आने का असली बाइस आदमियों के गुनाह हैं और पैदा यूं होता है कि एक पहाड़ तमाम ज़मीन को मुहीत है और उसके रेशे ज़मीन के अन्दर अन्दर सब जगह फैले हुए हैं जैसे बड़े दरख़्त की जड़ें दूर तक अन्दर अन्दर फैलती हैं। जिस ज़मीन में मआज़ल्लाह ज़लज़ला का हुक्म होता है वह पहाड़ अपने उस जगह के रेशे को जुंबिश देता है ज़मीन हिलने लगती है।

यही मज़्मून तफ़्सीली तौर पर दूसरी जगह इस तरह है।

मुतअद्दद कुतुबे अहादीस में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने उन मख़्लूक़ात में सबसे पहले क़लम पैदा किया और उस से क़यामत तक के तमाम मक़ादीर लिखवाए और अर्श इलाही पानी पर था, पानी के बुख़ारात उठे, उन से आसमान जुदा जुदा बनाए गए, फिर मौला अज़्ज़ा व जल्ल ने मछली पैदा की उस पर ज़मीन बिछाई, ज़मीन पुश्त माही पर है, मछली तड़पी ज़मीन झोंके लेने लगी उस पर पहाड़ को जमा कर बोझल कर दी गई। (अबूशैख़ किताबुल-अज़मत, बैहक़ी किताबुल-असमा, हाकिम)

मगर यह ज़लज़ला सारी ज़मीन को था। ख़ास ख़ास मवाज़े में ज़लज़ला आना, दूसरी जगह न होना, और जहाँ होना वहाँ भी शिद्दत व ख़िफ़्फ़त में मुख़्तलिफ़ होना, इसका सबब वह नहीं जो अवाम

बताते हैं (कि ज़मीन एक शाख़ गाव पर है कि वह मछली पर खड़ी रहती है, जब उसका सींग थक जाता है तो दूसरे सींग पर बदल कर रख लेती है उस से जो जुंबिश व हरकत ज़मीन को होती उसको ज़लज़ला कहते हैं। मुरत्तिब) सबबे हक़ीक़ी तो वही इरादतन अल्लाह है, और आलमे असबाब में बाइस असली बन्दों के मआसी हैं।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"तुम्हें जो मुसीबत पहुँचती है तुम्हारे हाथों की कमाईयों का बदला है और बहुत कुछ माफ़ फरमा देता है।" (अश्शूरा, 30)

और ज़लज़ला वाक़े होने की वजह कोहे क़ाफ़ के रेशा की हरकत है।

हक़ सुब्हानुहू व तआला ने ज़मीन को मुहीत एक पहाड़ पैदा किया है जिसका नाम क़ाफ़ है, कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ उसके रेशे ज़मीन में फैले हों, जिस तरह पेड़ की ज़ड़ बालाए ज़मीन थोड़ी सी जगह में होती है और उसके रेशे ज़मीन के अन्दर अन्दर बहुत दूर तक फैले हारते हैं कि उसके लिए वजह क़रार हों और आँधियों में गिरने से रोकें, फिर पेड़ जिस क़दर बड़ा होगा उतनी ही दूर तक उसके रेशे घेरेंगे।

कोहे क़ाफ़ जिसका दूर तमाम कुर-ए-ज़मीन को अपने पेट में लिए है उसके रेशे ज़मीन में जाल न अपना जाल बिछाए हैं। कहीं ऊपर ज़ाहिर पहाड़ियाँ हो गए कहीं सतह तक आ कर थम रहे, जिसे ज़मीन संगलाख़ कहते हैं, कहीं ज़मीन के अन्दर है क़रीब या बईद ऐसे कि पानी की चवान से बहुत नीचे उन मक़ामात में ज़मीन का बालाई हिस्सा दूर तक नर्म मिट्टी रहता है जिसे अरबी में सहल कहते हैं, हमारे क़ुर्ब के आम शहर ऐसे ही हैं मगर अन्दर अन्दर क़ाफ़ के रग व रेशे से कोई जगह ख़ाली नहीं।

जिस जगह ज़लज़ला के लिए इराद-ए-इलाही अज़्ज़ा व जल्ल होता है क़ाफ़ को हुक्म होता है कि वह अपने वहाँ के रेशे को जुंबिश देता है सिर्फ़ वहीं ज़लज़ला आएगा जहाँ के रेशे को हरकत दी गई, फिर जहाँ ख़फ़ीफ़ का हुक्म है उसके महाज़ी रेशे को आहिस्ता हिलाता है, और जहाँ शदीद का अम्र है वहाँ बक़ुव्वत, यहाँ तक कि बाज़ जगह सिर्फ़ एक धक्का सा लग कर ख़त्म हो जाता है और उसी वक़्त दूसरे क़रीब मक़ाम के दर व दीवार झोंके लेते और तीसरी जगह ज़मीन फट कर पानी निकल आता है, या हरकत की शिद्दत व सख़्ती से माद-ए-किब्रीती मुश्तइल हो कर शोले निकलते हैं, चीख़ों की आवाज़ होती है।

ज़मीन के नीचे रतूबतों में हरारते शम्स के अमल से बुख़ारात सब जगह फैले हुए हैं और बहुत जगह दख़ानी माद्दा है जुंबिश के मुनाफ़िज़ ज़मीन वसी हो कर वह बुख़ारा व दुख़ान (यानी धुवाँ) निकलते हैं।

एक हदीस में है अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने एक पहाड़ पैदा किया जिसका नाम क़ाफ़ है वह तमाम ज़मीन को मुहीत है और उसके रेशे उस चट्टान तक फैले हैं जिस पर ज़मीन है, जब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल किसी जगह ज़लज़ला लाना चाहता है उस पहाड़ को हुक्म देता है वह अपने उस जगह के मुत्तसिल रेशे को लर्ज़िश व जुंबिश देता है यही बाइस है कि ज़लज़ला एक बस्ती में आता है, दूसरी में नहीं।

(इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल-अक़ूबात, अबुश्शैख़ किताबुल-अज़मत, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 189, 190)

हवा क्या चीज़ है ?

हवा रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला की एक पुरानी मख़्लूक़ है कि पानी से बनाई गई और उसके लिए इल्मे इलाही में एक ख़ज़ाना है जिस पर दरवाज़ा लगा हुआ है और वह बन्द है और

फ़रिश्ता उस पर मुवक्किल है, जितनी हवा उसमें रब्बुल–इज़्ज़त भेजना चाहता है फरिश्ता को हुक्म देता है कि उसमें से बमिक़्दार एक बहुत ख़फ़ीफ़ हिस्सा रवाना करता है।

जब कौम पर अल्लाह तआला ने हवा का तूफ़ान भेजना चाहा तो जो सात रातें और आठ दिन मुतवातिर उन पर रहा उन सब को हलाक कर दिया, उस वक़्त उस फ़रिश्ता को हुक्म हुआ था कि आद पर हवा भेज, उसने अर्ज़ की इतना सूराख़ खोलूं जितना बैल का नथुना, फरमाया तू चाहता है कि सारी ज़मीन को उलट दे बल्कि छल्ले बराबर खोल।

और यूं हवा हर वक़्त ज़मीन और आसमानों सब में भरी है और इंसान और अक्सर हैवानात की उस पर ज़िन्दगी है। और बादल बुख़ारात से बनते हैं, जब रतूबत में हरारत अमल करती है, भाप पैदा होती है हक़ सुब्हानुहू व तआला हवा [illegible]ता है कि वह उसको जमा करती है फिर तह–ब–तह उसके बादल बनाती है, फिर जहाँ हुक्म होता है उसे ले जाती है और बहुक्मे इलाही हरारत के अमल से वह पिघल कर पानी हो [illegible]कर गिरती है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 192)

[illegible] बदन का सुल्तान

उसके [illegible] क़ल्ब [illegible] है कि अक़्लीमे बदन का सुल्तान और अक़्ल व फहम, मंशा क़स्द व इख़्तियार इलाही [illegible] और र[illegible] दर का महल है। सुल्तान अगर ठीक है तो मुल्क व सलतनत के इंतिज़ामात दुरुस्त व सही रहते हैं वरना उनमें रख़ना व ख़लल पड़ता है यूं ही इंसान के बदन में जब क़ल्ब दुरुस्त रहता है तो बदन भी दुरुस्त रहता है वरना उसके साथ बदन भी बिगड़ जाता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : सुनते हो बदन में एक गोश्त का टुक्ड़ा है वह ठीक है तो सारा बदन ठीक रहता है और वह बिगड़ जाए तो सारा बदन बिगड़ जाता है सुनते हो वह दिल है। (बुख़ारी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 12, स0 194)

ज़मीन व आसमान साकिन हैं

इस्लामी मसअला यह है कि ज़मीन व आसमान दोनों साकिन हैं कवाकिब चल रहे हैं, हर एक फलक में तैरता है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल इरशाद फरमाता है :

बेशक अल्लाह आसमान व ज़मीन को रोके हुए है कि सरकने न पाएं और अगर वह सरकें तो अल्लाह के सिवा उन्हें कौन रोके। बेशक वह हिल्म वाला बख़्शने वाला है। (अल–फ़ातिर, 41)

सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में है। "एक साहब हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर हाज़िर हुए फरमाया कहाँ से आए अर्ज़ की शाम से, फरमाया वहाँ किस से मिले अर्ज़ की कअब से, फरमाया कअब ने तुम से क्या बात की अर्ज़ की यह कहा कि आसमान एक फ़रिश्ते के शाने पर घूमते हैं। फरमाया तुमने उसमें कअब की तस्दीक़ की या तक्ज़ीब, अर्ज़ की कुछ नहीं (यानी जिस तरह हुक्म है कि जब तक अपनी किताब करीम का हुक्म न मालूम हो अह्ले किताब की बातों को न सच जानो न झूठ) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया काश तुम अपना ऊंट और उसका कजावा सब अपने उस सफर से छुटकारे को दे देते, कअब ने झूठ कहा, अल्लाह तआला फरमाता है बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को रोके हुए है कि सरकने न पाएँ अगर वह हटें तो अल्लाह के सिवा उन्हें कौन थामे, घूमना उनके सरक जाने को बहुत है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

तबरी ने इब्राहीम नख़ई से रिवायत की, "जुन्दुब बिजली" कअब अहबार के पास जा कर वापस आए हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कहो कअब ने तुम से क्या कहा, अर्ज़ किया यह कहा कि आसमान चक्की की तरह एक कीली में है, हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया मुझे तमन्ना हुई कि तुम अपने नाक़ा के बराबर माल देकर उस सफर से छट गए होते यहूदियत की ख़राश

जिस दिल में लगती है फिर मुश्किल ही से छूटती है, अल्लाह तो फरमा रहा है बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि न सरकें उनके सरकने को घूमना ही काफी है।" (तबरी)

अब्द बिन-हुमैद ने क़तादा शागिर्द हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कअब कहा करते कि आसमान एक कीली पर दौरा करता है जैसे चक्की की कीली, उस पर हुज़ैफ़ा बिन अलीमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कअब ने झूठ कहा बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को रोके हुए कि जुंबिश न करें।

(मुसनद अब्द बिन हुमैद, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 275, 282)

तक़्वा मदारे नजात व फ़ज़ीलत है

तक़्वा व परहेज़गारी इंसान का ऐसा वस्फ़ है जिससे वह दुनिया व आख़िरत दोनों में इज़्ज़त व करामत वाला है अल्लाह तआला के नज़्दीक भी वह मुकर्रम है यहाँ तक कि हसब व नसब से ज़्यादा मरतबा तक़्वा का है क़्यामत के दिन नसब के बारे में नहीं पूछा जाएगा बल्कि तक़्वा व तहारत के बारे में सवाल होगा मदारे नजात यही तक़्वा है, तक़्वा में जो बढ़ कर अल्लाह के नज़्दीक उसका मरतबा ज़्यादा है। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि अल्लाह तआला तुम से तुम्हारे हसब व नसब के बारे में क़्यामत के दिन सवाल न करेगा वहाँ आमाल का सवाल होगा कि अल्लाह तआला के नज़्दीक बुज़ुर्ग वह है जो परहेज़गार है।

(इब्ने जुरैर)

दूसरी हदीस में है कि सुन रखो तुम अहमर या असवद से अफ़्ज़ल नहीं हो मगर यह कि तक़्वा में आगे बढ़ जाओ। (मुसनद अहमद)

एक खुत्बा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम सबका रब एक ही है और बाप भी एक है, अरबी को अज्मी पर और असवद पर अहमर को तक़्वा के सिवा कोई फ़ज़ीलत नहीं अल्लाह के हुज़ूर वही बेहतर है जो ज़्यादा परहेज़गार है।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया, जिल्द 11, स० 25)

ग़ौस पाक का बकरा

वहाबिया ने जिस तरह रसूले कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन व तन्क़ीस की और शाने अक़्दस में नाज़ेबा कलिमात कहे इसी तरह उन्होंने औलिया-ए-किराम को भी न बख़्शा, हर वह बात जिस से औलिया-ए-किराम की ताज़ीम व तक्रीम निकलती है उसका इंकार किया बल्कि ज़ुल्म यह है कि उस पर शिर्क व कुफ़्र का हुक्म लगाया वहाबिया के नापाक मज़हब की बुनियाद ही महबूबाने ख़ुदा से नफ़रत व अदावत पर है :

अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा यह है कि अगर ग़ौसे पाक या दीगर औलिया-ए-किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के नाम से कोई जानवर रख छोड़ा जाए और उसे अल्लाह के नाम से ज़िबह किया जाए तो यह बिला शुबह जाइज़ व दुरुस्त है इसमें किसी तरह की कोई कराहत व हुर्मत नहीं है, हाँ अगर ग़ौस के नाम से ज़िबह किया जाए तो वह यक़ीनन हराम होगा।

वहाबिया व देवबन्दिया वग़ैरह गुम्राहाने ज़माना कहते हैं कि "ऐसा करना शिर्क है उसका गोश्त खाना हलाल नहीं ख़्वाह ज़िबह के वक़्त अल्लाह का नाम ही क्यों न लिया जाए क्योंकि उस जानवर में ग़ैरुल्लाह के नाम का तम्ग़ा शामिल हो गया है इसलिए यह शिर्क व बिदअत है। और ऐसे जानवर का गोश्त खाना जाइज़ नहीं।"

हालांकि शरई हुक्म यह है कि वक़्त ज़िबह का ऐतबार है उस वक़्त अगर ग़ैरुल्लाह का नाम लिया जाए तो वह जानवर हलाल नहीं और अगर ज़िबह के वक़्त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का नाम पाक लिया जाए तो वह हलाल है। (मुरत्तिब)

ज़बीहा की हिल्लत व हुर्मत

ज़बीहा की हुर्मत व हिल्लत से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू की तहरीर मुलाहिज़ा फरमायें:

"हक़ इस मसअला में यह है कि ज़बीहा की हिल्लत व हुर्मत में ज़िबह करने वाले की हालत व क़ौल का ऐतबार है, न मालिक का, मसलन मुसलमान का जानवर कोई मजूसी ज़िबह करे तो हराम हो गया अगरचे मालिक मुस्लिम था, और मजूसी का जानवर मुसलमान ज़िबह करे तो हलाल अगरचे मालिक मुश्रिक था, या ज़ैद का जानवर अम्र ज़िबह करे और क़स्दन तक्बीर न कहे हराम हो गया अगरचे मालिक बराबर खड़ा सौ बार बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहता रहे। और ज़िबह करने वाला तक्बीर से ज़िबह करे तो हलाल अगरचे मालिक एक बार भी न कहे। ज़ाबेह कलिमा गो ने ग़ैर ख़ुदा की इबादत व ताज़ीम मख़्सूस की नीयत से ज़िबह किया तो हराम हो गया अगरचे मालिक की नीयते ख़ास अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए ज़िबह की थी। यूं ही ज़ाबेह न ख़ास अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए ज़िबह किया तो हलाल अगरचे मालिक की नीयत किसी के वास्ते थी।

तमाम सूरतों में ज़िबह करने वाले की हालत का ऐतबार मानना और इस ख़ास शक्ल में इंकार कर जाना महज़ तहुक्मे बातिल है जिस पर शरअ मुत्तहर से असलन दलील नहीं।

फ़ुक़्हाए किराम ख़ास इस जुज़्ईया की तस्रीह फरमाते हैं कि मसलन मजूसी ने अपने आतिशकदे या मुश्रिक ने अपने बुतों के लिए मुसलमान से बकरी ज़िबह कराई और उसने तक्बीर कह कर ज़िबह की, हलाल है खाई जाए, अगरचे यह बात मुस्लिम के हक़ में मक्रूह है।

फिर मुसलमान ज़िबह करने वाले की नीयत भी वक़्त ज़िबह क़ी मोतबर है उस से क़ब्ल व बअद का ऐतबार नहीं। ज़िबह से एक आन पहले तक ख़ास अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए नीयत थी ज़िबह करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा के लिए उसकी जान दी ज़बीहा हराम हो गया वह पहली नीयत कुछ नफ़ा न देगी। यूंही अगर ज़िबह से पहले ग़ैरे ख़ुदा के लिए इरादा था ज़िबह के वक़्त उस से ताइब हो कर मौला तबारक व तआला के लिए ख़ून बहाया तो हलाल हो गया यहाँ वह पहली नीयत कुछ नुक़्सान न देगी।

हदीस में है, ख़ुदा की लानत है उस पर जो ग़ैरे ख़ुदा के लिए ज़िबह करे।

(मुस्मिल, निसाई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 12, स0 93, 94)

मरज़ से हुसूले शिफ़ा का मुफ़ीद नुस्ख़ा

अल्लाह तआला ने मरज़ के साथ दवा भी नाज़िल फरमाई है जैसा मरज़ हो वैसी उसकी दवा होती है मगर एक नुस्ख़ा ऐसा मुफीद व जामे है कि वह हर मरज़ के लिए नुस्ख़ा-ए-शिफ़ा और असर में कीमीया है। (मुरत्तिब)

उलमा-ए-किराम बग़रज़े हुसूले शिफ़ा व दफ़ा बला मुतफ़र्रिक़ अशिया जमा फरमाते हैं कि अपनी ज़ौजा को उसका महर कुल या बाज़ दे वह उसमें से कुछ बख़ुशी उसे हिबा कर दे, उन दामों का शहद व रौग़न ज़ैतून ख़रीदे, बाज़ आयाते कुरआनिया ख़ुसूसन सूरः फातिहा और आयाते शिफ़ा रेकाबी में लिख कर आबे बारां, और वह न मिले तो आबे दरिया से धोए, क़दरे वह रौग़न व शहद मिला कर पिए बऔनेही तआला हर मरज़ से शिफ़ा पाए।

अमीरुल-मुमिनीन मौला अली शेरे ख़ुदा मुश्किलकुशा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं: जब तुम में कोई बीमार हो तो उसे चाहिए अपनी औरत से उसके महर में से एक दृहम हिबा कराए, उसका शहद मोल ले, फिर आसमान का पानी ले कि रचता पचता बरकत वाला जमा करेगा। (तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम)

मौला अली ने एक बार फ़रमाया :

जब तुम में से कोई शख़्स शिफ़ा चाहे तो कुरआने अज़ीम की कोई आयत रेकाबी में लिखे और आबे बाराँ से धोए और अपनी औरत से एक दृहम उसकी ख़ुशी से ले उसका शहद ख़रीद कर पिए कि बेशक शिफ़ा है। (मवाहिबुल–लदुनिया)

औफ़ बिन मालिक अश्जई सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अलील हुए फरमाया कि पानी लाओ कि अल्लाह तआला फरमाता है हमने उतारा आसमान से बरकत वाला पानी, फिर फरमाया शहद लाओ और आयत पढ़ी कि उसमें शिफ़ा है लोगों के लिए, फिर फरमाया रौग़न ज़ैतून लाओ, और आयत पढ़ी कि बरकत वाले पेड़े से, फिर उन सबको मिला कर नोश फरमाया शिफ़ा पाई।

(ज़रक़ानी शरह मवाहिब)

पानी एक मुजर्रब नुस्ख़ा

अली बिन हुसैन बिन शक़ीक़ कहते हैं मेरे सामने एक शख़्स ने इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाह तआला अलैह से अर्ज़ की, ऐ अबा अब्दुर्रहमान! सात सात बरस से मेरे एक ज़ानू में फोड़ा है, क़िस्म क़िस्म के इलाज किए, तबीबों से रुजूअ़ की कुछ नफा न हुआ। फरमाया जा ऐसी जगह देख जहाँ लोगों को पानी की हाजत हो वहाँ एक कुवाँ खोद और (बराहे करामत यह भी) इरशाद फरमाया कि मैं उम्मीद करता हूँ कि वहाँ तेरे लिए एक चशमा निकलेगा और तेरा यह ख़ून बहना थम जाएगा उस शख़्स ने ऐसा ही किया और अच्छा हो गया। (बैहक़ी)

इमाम बैहक़ी फरमाते हैं : इसी क़बील से हमारे उस्ताद अबू अब्दुल्लाह हाकिम की हिकायत है कि उनके मुँह पर फोड़े निकले तरह–तरह के इलाह किए, न गए, क़रीब एक साल के इसी हाल में गुज़रा उन्होंने एक जुमा को इमाम उस्ताज़ अबू उसमान साबूनी रहमतुल्लाह तआला अलैह से उनकी मज्लिस में दुआ की दरख़्वास्त की, इमाम ने दुआ फरमाई हाज़िरीन ने बकसरत आमीन कही, दूसरा जुमा हुआ किसी बी बी ने एक रुक़आ मस्जिद में डाल दिया उसमें लिखा था कि मैं अपने घर पलट कर गई और शब को अबू अब्दुल्लाह हाकिम के लिए दुआ में कोशिश की मैं ख़्वाब में जमाल जहाँ आराए हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत से मुशरफ़ हुई, गोया मुझे इरशाद फरमाते हैं, अबू अब्दुल्लाह से कह कर मुसलमानों पर पानी की वुसअत करे।

इमाम बैहक़ी फरमाते हैं मैं वह रुक़आ अपने उस्ताद हाकिम के पास ले गया उन्होंने अपने दरवाज़े पर एक सक़ाया बनाने का हुक्म दिया, जब बन चुका उसमें पानी भरवा दिया और बर्फ़ डाली और लोगों ने पीना शुरू किया, एक हफ़्ता न गुज़रा कि शिफ़ा ज़ाहिर हुई, फोड़े जाते रहे, चेहरा उस अच्छे से अच्छे हाल पर हो गया जैसा कभी न था, उसके बाद बरसों ज़िन्दा रहे।

(रादुल–क़हत, वबा)

फूलों का सेहरा मुबाह है

बाज़ बातें शरीअत में मुबाह हैं जिनके लिए शरीअत में कोई मुमानेअत नहीं वरना जवाज़ पर कोई नस व दलील वारिद तो ऐसी बातें जाइज़ व मुबाह रहेंगी उनके करने में कोई हरज नहीं।

(मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू सेहरा बांधने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

फूलों का सेहरा रुसूमे दुनयाविया से एक रस्म है जिसकी मुमानेअत शरअ़ मुत्तहर से साबित नहीं, न शरअ़ में इसके करने का हुक्म आया, तो मिस्ल और तमाम आदात व रुसूम मुबाह के मुबाह रहेगा।

एक वाजिबुल–हिफ़्ज़ क़ाइदा शरईया

शरअ् शरीफ़ का क़ाइदा कुल्लीया यह है कि जिस चीज़ को ख़ुदा और रसूल अच्छा बताएं वह अच्छी है और जिसे बुरा फरमाएं वह बुरी, और जिस से सुकूत फरमाएं यानी शरअ से न उसकी ख़ूबी निकले न बुराई, वह इबाहते असलीया पर रहती है कि उसके फ़ेअ्ल व तर्क में सवाब न अक़ाब।

यह क़ाइदा हमेशा याद रखने का है कि अक्सर जगह काम आएगा, आज कल मुख़ालेफ़ीन अह्ले सुन्नत ने यह रविश इख़्तियार कर ली है कि जिस चीज़ को चाहा शिर्क, हराम, बिदअत, ज़लालत कहना शुरू कर दिया अगरचे वह फ़ेअ्ल सहाबा किराम या ताबईने इज़ाम या अइम्मा आलाम से साबित हो, अगरचे वह फ़ेअ्ल इस नेक बात के उमूम व इतलाक़ में दाख़िल हो जिसकी ख़ूबियाँ सरीह क़ुरआन मजीद व हदीस शरीफ़ में मज़्कूर हैं, फिर सेहरे वग़ैरह रस्मी बातों की तो क्या हक़ीक़त है, और उस पर तुर्रा यह होता है कि अह्ले सुन्नत से पूछते हैं तुम जो इन चीज़ों को जाइज़ बताते हो क़ुरआन व हदीस में कहाँ जाइज़ लिखा है, हालांकि उनको अपनी ख़ुश फ़हमी से इतनी ख़बर नहीं कि जाइज़ कहने वाला दलीले ख़ास का मुहताज नहीं, जो नाजाइज़ कहे वह क़ुरआन व हदीस में दिखाए कि इन अफ़आल को कहाँ नाजाइज़ कहा है, क्या अह्ले सुन्नत पर लाज़िम है कि वह जिस जिस चीज़ को जाइज़ व मुबाह बताएं उसकी ख़ास सूरत का हुक्मे सरीह क़ुरआन मजीद व अहादीस शरीफ़ में दिखाएं और तुम पर कुछ ज़रूरी नहीं कि जिस चीज़ को हराम, बिदअत, गुम्राही कहो ख़ास उसकी निस्बत उन हुक्मों की तस्रीह किताब व सुन्नत में दिखा दो।

जब यह क़ाइदा शरईया मालूम हो लिया तो सहरे का हुक्म ख़ुद ही खुल गया अब जो नाजाइज़, हराम, बिदअत, ज़लालत बताए वह ख़ुद क़ुरआन मजीद व अहादीस शरीफ़ से साबित कर दिखाए, वरना जाने बिरादर! शरअ् तुम्हारी ज़बान का नाम नहीं कि जिसे चाहो बेदलील हराम व मम्नूअ् कह दो। (हादियुन्नास)

इसराफ़ व फ़ुज़ूल ख़र्ची

अल्लाह तबारक व तआला ने इंसान को अपनी रहमते कामिला से बेशुमार नेमतें अता फरमाईं, उनमें एक दुनियावी नेमत माल व दौलत है जिसे अल्लाह तआला ने माल अता फरमाया उस से उसका हिसाब लिया जाएगा कि उसने उसे कहाँ पर ख़र्च किया और कहाँ उठाया एक–एक ज़र्रा का हिसाब होगा और अगर माल को बेजा तौर पर ख़र्च किया तो उसका और सख़्त व शदीद हिसाब होगा। क़ुरआने अज़ीम में फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को श्यातीन का भाई कहा गया है, मालूम हुआ कि फ़ुज़ूल ख़र्ची करना शैतानी फ़ेअ्ल है। और अहादीसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में भी इसकी मुमानेअत व वईद आई है, बातिल व अबस में ख़र्च करना असराफ़ कहलाता है, राहे हक़ में कितना ही ख़र्च किया जाए वह इसराफ़ नहीं। (मुरत्तिब)

ख़ैर में इसराफ़ नहीं

सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : कि अगर तू पहाड़ बराबर सोना ताअते इलाही में ख़र्च कर दे तो इसराफ़ नहीं और अगर एक साअ् जौ गुनाह में ख़र्च करे तो इसराफ़ है। (इब्ने अबी हातिम)

किसी ने हातिम की कसरत दाद व देहिश पर कहा, इसराफ में ख़ैर नहीं, उसने जवाब दिया, ख़ैर में इसराफ़ नहीं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

हदीस में ब्यान किया गया है कि "हातिम का मक़्सूद तो ख़ुदा न था, नाम था, तो उसकी सारी दाद व देहिश इसराफ़ ही थी।

इसराफ़ व तब्ज़ीर की वज़ाहत

★ अयास बिन मऊविया फ़रमाते हैं कि जो अल्लाह के हुक्म से तजावुज़ करे वह इसराफ़ है। (त, इब्ने जुरैर)

★ तरीक़ा मुहम्मदीया में है कि जहाँ पर हुक्मे शरअ़ या मुरव्वत के तौर पर माल को रोकना वाजिब व ज़रूरी है वहाँ पर माल का ख़र्च करना इसराफ़ है।

★ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि बातिल में ख़र्च न करो कि बातिल में ख़र्च करने वाला ही इसराफ़ करने वाला है।

(त, इब्ने जुरैर, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 180, 183)

जिस तरह इसराफ़ की मुमानेअत है उसी तरह तब्ज़ीर भी मम्नूअ़ है बल्कि दर हक़ीक़त दोनों का हुक्म एक है। (मुरत्तिब)

अ नाहक़ सर्फ़ करना तब्ज़ीर है।

एक रिवायत में है कि सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम आपस में बात किया करते थे कि ग़ैर हक़ में ख़र्च करना तब्ज़ीर है। (त, इब्ने जुरैर)

अ इमाम मुजाहिद फरमाते हैं कि अगर आदमी अपना पूरा माल हक़ में सर्फ़ करे तो तब्ज़ीर नहीं है, और अगर एक क़लील मिक़्दार बातिल में ख़र्च करे तो वह तब्ज़ीर है। (त, इब्ने जुरैर)

अ हासिल यह है कि इसराफ़ की नाजायज़ व गुनाह है सिर्फ़ दो सूरतों में होता है। एक यह किसी गुनाह में सर्फ़ व इस्तेमाल करें।

अ दूसरे बेकार महज़ माल ज़ाए करें। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 183, 184, मुल्तक़ेतन)

कबूतर उड़ाना फ़िस्क़ और ज़ालिमाना शौक़ है

बिला ज़रूरत कबूतर उड़ाना या इस बहाने दूसरों के कबूतर पकड़ना जाइज़ नहीं है, इसमें कई तरह की बुराईयाँ हैं इसकी वज़ाहत करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

पराया कबूतर पकड़ना हराम है, पकड़ने वाला फ़ासिक़ व ग़ासिब और ज़ालिम है, बल्कि ख़ाली क़बूतर उड़ाने वाला कि औरों के कबूतर नहीं पकड़ता मगर अपने कबूतर उड़ाने को ऐसी बुलन्द छतों पर चढ़ता है जिससे मुसलमानों की बेपर्दगी होती है, या उनके उड़ाने को कंकरियाँ फेंकता है जिन से लोगों को माली या जिस्मानी ज़रर पहुँचता है, उसके लिए भी शरअ़ मुतह्हर में हुक्म है कि उसे निहायत सख़्ती से मना किया जाए, ताज़ीर व सज़ा दी जाए, उस पर भी न माने तो एहतसाबे शरई का ओहदादार उसके कबूतर ज़िबह करके उसके सामने फेंक दे।

बल्कि उनका खाली उड़ाना कि न किसी की बेपर्दगी हो, न कंकरियों से नुक़्सान, ख़ुद कब ज़ुल्म शदीद से ख़ाली है, जब कि रिवाजे ज़माना के तौर पर हो, कि कबूतरों को उड़ाते हैं और उनका दम बढ़ाने के लिए महज़ बेफाइदा अपने बेहूदा, बेमानी शौक़ के वास्ते उन्हें उतरने नहीं देते, वह थक-थक कर नीचे गिरते हैं, यह मार मार कर फिर उड़ा देते हैं सुबह का दाना देर तक की मेहनते शाक़्क़ा परवाज़ से हज़म हो गया। भूख से बेताब हैं और यह ग़ुल मचा कर, बांस दिखा कर आने नहीं देते, ख़ाली गेअदे, शहपर थके और किसी तरह नीचे उतरने, दम लेने, दाना पानी से औसान ठिकाने करने का हुक्म नहीं, यहाँ तक घन्टों और घन्टों से पहरों उन्हें इसी अज़ाबे शदीद में रखते हैं, यह सख़्त ज़ुल्म है और ज़ुल्म भी बेज़ुबान, बेगुनाह जानवर पर कि आदमियों की ज़रर रसानी से कहीं सख़्त तर है। बेदर्द को पराई मुसीबत नहीं मालूम होती, अपने ऊपर क़्यास करके

देखें अगर किसी ज़ालिम के पाले पड़ें कि वह मैदान में एक दाइरा खींच कर घन्टों उन से कावा काटने को कहे, यह जब थकें, पस्त हो कर रुकें, कोड़े से ख़बर ले, उनका दम चढ़ जाए, थक जाए, भूख प्यास बेहद सताए, मगर वह कोड़ा लिए तैयार है कि रुकने नहीं देता, उस वक़्त उनको ख़बर हो कि हम बेज़ुबान जानवर पर कैसा ज़ुल्म करते थे।

अंदाज़े हकीमाना

दुनिया गुज़िश्तनी है यहाँ अहकामे शरअ् जारी न होने से ख़ुश न हों, एक दिन इंसाफ़ का आने वाला है जिसमें शाख़दार बकरी से मुंडी बकरी का हिसाब लिया जाएगा, हालांकि जानवर ग़ैर मुकल्लफ़ है, तुम तो मुकल्लेफ़ीन में हो, तुम्हारे ही लिए सवाब व अज़ाब, जन्नत व जहन्नम तैयार हुए हैं किस घमण्ड में हो वहाँ अगर नारे जहन्नम में कावा काटना पड़ा कि वहाँ जज़ा बक़द्र आमाल होना है तो उस वक़्त के लिए ताक़त मुहैय्या कर रखो।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं एक औरत जहन्नम में गई एक बिल्ली के सबब, कि उसे बांध रखा था न खाना दिया, न छोड़ा कि ज़मीन का गिरा पड़ा या जो जानवर मिलता खाती इस वजह से उस औरत के लिए जहन्नम वाजिब हो गई।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 401, 402)

मज़दूर का काम और उजरत

बाज़ मज़दूर ऐसे होते हैं जो निहायत ख़ुलूस और ख़ुशरूई से ईमानदारी के साथ काम करते हैं और बाज़ सुस्ती और काहिली का मुज़ाहरा करते और मामूल के मुताबिक़ नहीं करते, ऐसे काम और मज़दूर के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू एक मक़ाम पर तहरीर फरमाते हैं :

काम की तीन हालतें हैं : सुस्त, मोअ्तदिल, निहायत तेज़।

अगर मज़दूरी में सुस्ती के साथ काम करता है गुनहगार है और उस पर पूरी मज़दूरी लेनी हराम इतने काम के लाइक़ जितनी उजरत है ले, उस से जो कुछ ज़्यादा मिला मुस्ताजर को वापस दे, वह न रहा हो उसके वारिसों को दे, उनका भी पता न चले मुसलमान पर तसद्दुक़ करे, अपने सर्फ़ में लाना, ग़ैर सदक़ा में उसे सर्फ़ करना हराम है, अगरचे ठेके के काम में काहिली से सुस्ती करता हो। और अगर मज़दूरी में मोअ्तदिल काम करता है मज़दूरी हलाल है अगरचे ठेके के काम में हद से ज़्यादा मुशक़्क़त उठा कर ज़्यादा काम करता हो। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 8, स0 128)

शरीअते इस्लामिया ने जहाँ मज़दूर के लिए दाइरा ऐतदाल खींचा है कि अगर वह मोअ्तदिल काम करे तो मज़दूरी का मुस्तहिक़ है और वह उसके लिए हलाल है वहीं मुस्ताजर को भी तंबीह की गई है कि मज़दूर को उसकी मेहनत के हिसाब से मज़दूरी दी जाए वरना वह शरई मवाख़ज़े में गिरफ़्तार रहेगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है :

क़यामत के दिन तीन शख़्सों का मैं मुद्दई हूँगा और जिसका मैं मुद्दई हूँगा मैं ही उस पर ग़ालिब आऊंगा।

★ एक वह जिसने मेरा अहद दिया फिर अहद शिकनी की।

★ दूसरा वह जिसने किसी आज़ाद को ग़ुलाम बना कर बेच डाला और उसकी क़ीमत खाई।

★ तीसरा वह जिसने किसी शख़्स को मज़्दूरी में लेकर अपना काम तो उस से पूरा करा लिया और मज़्दूरी उसे पूरी न दी।

(बुख़ारी, इब्ने माजा, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स० 147)

नाहक़ किसी की ज़मीन दबा लेना

ज़ुल्म बहरहाल ज़ुल्म है रोज़े हिसाब उसका बदला होना है जो अह्ले ज़मीन पर ज़ुल्म व ज़्यादती करता है अल्लाह तआला उसे दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला फरमाएगा। किसी की ज़मीन नाहक़ दबाने से मुतअल्लिक़ हदीस में है। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो शख़्स एक बालिश्त भर ज़मीन नाहक़ लेगा अल्लाह तआला वह ज़मीन, ज़मीन के सातों तब्क़ों तक उसके गले में क़्यामत के दिन तौक़ बना कर डालेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो शख़्स किसी क़दर ज़मीन नाहक़ दबा लेगा क़्यामत के दिन सातवें तबक़ तक धंसा दिया जाए। (बुख़ारी)

और फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन नाहक़ ले ले अल्लाह तआला उसे तक्लीफ़ दे कि उस ज़मीन को खोदे यहाँ तक कि सातवें तब्क़े के ख़त्म तक पहुँचे, फिर क़्यामत के दिन उसका तौक़ बना कर उसके गले में डाले यहाँ तक कि तमाम मख़्लूक़ का हिसाब ख़त्म हो कर फ़ैसला फरमा दिया जाए। (तबरानी, अहमद)

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो किसी क़दर ज़मीन ना जाइज़ तौर पर ले अल्लाह तआला सातों ज़मीनों से उसके गले में तौक़ डाले न उसका फ़र्ज़ क़बूल हो न नफ़्ल। (मुसनद अहमद, तबरानी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 8, स० 239)

बीमारी का उड़ कर लगना

बाज़ लोग बीमार आदमी के साथ खाने से परहेज़ करते हैं और उस मरीज़ का कपड़ा नहीं पहनते, और कहते हैं कि एक की बीमारी दूसरे को उड़ कर लग जाती है। बीमारी उड़ कर लगती है या नहीं, इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू एक मक़ाम पर तहरीर फरमाते हैं :

यह झूठ है कि एक की बीमारी दूसरे को उड़ कर लगती है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बीमारी उड़ कर नहीं लगती। (बुख़ारी, मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस दूसरे को तो पहले की उड़ कर लगी उस पहले को किस की लगी? (बुख़ारी व मुस्लिम)

हाँ जिस मरीज़ के बदन से नजासत निकलती और कपड़ों को लगती हो, जैसे तर ख़ारिश या जुज़ाम में होता है, उसका कपड़ा न पहना जाए, न इस ख़्याल से कि बीमारी लग जाएगी बल्कि नजासत से एहतियात के लिए और जहाँ यह न हो कपड़ा पहनने में हरज नहीं।

यूँही साथ खाने में भी हरज नहीं जब कि ईमान क़वी हो कि अगर मआज़ल्लाह बतक़्दीरे इलाही

उसे वही मरज़ हो जाए तो यह न समझे कि खाने या उसका कपड़ा पहनने से हो गया, ऐसा न करता तो न होता।

और अगर ज़ईफ़ुल–ईमान है तो वह इन मरज़ वालों से बचे जिनकी निस्बत मुतअदी होना यानी उड़ कर लगना अवाम के ज़हन में जमा हुआ है जैसे जुज़ाम, यह बचना इस ख़्याल से न हो कि बीमारी लग जाएगी कि यह तो मरदूद व बातिल है बल्कि इस ख़्याल से कि अगर तक़्दीरे इलाही कुछ वाके़ हुआ तो ईमान ऐसा क़वी नहीं कि शैतानी वसवसा की मुदाफ़िअत करे और जब मुदाफ़िअत न हो सकी तो फ़ासिद अक़ीदा में मुब्तला होना होगा, लिहाज़ा एहतराज़ करे ऐसों को हदीस में इरशाद हुआ।

मज्ज़ूम से भाग जैसा कि शेर से भागता है। (बुख़ारी, अहकामे शरीअत अव्वल, स0 116)

हदाया और तहाइफ़

इंसानियत का तक़ाज़ा यह है कि वह आपस में मिल जुल कर रहे आपस में बिला वजह शरई बुग़्ज़ व हसद अदावत व कीना, दुशमनी व मुख़ालिफ़त न करे बल्कि वह एक दूसरे की मदारात व दिलजूई करे यह हुस्ने सुलूक ख़्वाह बात चीत से हो या हदाया व तहाइफ़ देने लेने से हो क्योंकि हदिया या तोहफ़ा के लेने देने से आपस में मुहब्बत बढ़ती है अगर मुआशरे में शरई अंदाज़ से उस चीज़ का रिवाज हो जाए तो यक़ीनन वह मुआशरा इस्लामी हो जाएगा। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसां सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं:

बेशक तोहफ़ों का मुहब्बत व रग़बत पैदा करने में बड़ा असर होता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हदिया दो, हदिया लो और मुहब्बत बढ़ाओ। (मुसनद अबू याला)

दूसरी रिवायात में है हदिया के रिवाज से आपस में मुहब्बत बढ़ाओ। (इब्ने असाकिर)

एक हदीस में है कि हदिया आदमी को अंधा बहरा दीवाना कर देता है। (तबरानी)

एक और हदीस में है कि हदिया हकीम की आँख अंधी कर देता है।

(दैलमी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 94)

हदिया देकर वापस लेने की मज़म्मत

कोई शख़्स जब किसी को कोई चीज़ हिबा या हदिया के तौर पर दे तो उसे वापस लेना मअ़यूब और नापसन्दीदा काम है। (मुरत्तिब)

हदीस में है सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हमारे लिए बुरी मिस्ल नहीं, अपनी दी हुई चीज़ फेर लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता क़ै करके उसे फिर खा लेता है। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अतीया देकर वापस लेने वाले आदमी की मिसाल उस कुत्ते की तरह है जो आसूदा हो कर खाने के बाद क़ै कर देता है फिर उसे चाट लेता है। (त, सुनने अरबा, फतावा रज़्वीया, जिल्द 8, स0 45)

बन्दों के हुकूक़

जिस तरह अरकाने इस्लाम की अदाएगी और पाबन्दी ज़रूरी है इसी तरह बन्दों के हुकूक़ की रिआयत भी लाज़मी है बन्दों के हुकूक़ अगर एक दूसरे पर हों तो जब तक बन्दे आपस में माफ़ न करें वह माफ़ नहीं होंगे। (मुरत्तिब)

दफ़्तर यानी नाम–ए–आमाल तीन क़िस्म हैं

हदीस में है हुज़ूरे अकरम सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : दफ़्तर तीन हैं :

★ एक दफ़्तर में से अल्लाह तआला कुछ न बख़्शेगा।

★ और एक दफ़्तर की अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को कुछ परवाह नहीं।

★ और एक दफ़्तर में से अल्लाह तबारक व तआला कुछ न छोड़ेगा।

★ वह दफ़्तर जिसमें से अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल कुछ न बख़्शेगा वह दफ़्तर कुफ़्र है।

★ और वह जिसकी अल्लाह सुब्हानहू व तआला को कुछ परवाह नहीं, वह बन्दे का अपनी जान पर ज़ुल्म करना है; अपने और और अपने रब के मुआमला में, मसलन किसी दिन का रोज़ा तर्क किया, या कोई नमाज़ छोड़ दी कि अल्लाह तआला चाहे तो उसे माफ़ कर देगा और दर गुज़र फ़रमाएगा।

★ और वह दफ़्तर जिसमें से कुछ न छोड़ेगा वह हुकूक़ुल–इबाद हैं, उसका हुक्म यह है ज़रूर बदला होना है। (मुसनद अहमद, हाकिम, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 191)

रोज़े जज़ा अल्लाह की रहमत व बख़्शिश, बाहमी माफ़ी पर मौक़ूफ़

एक हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अर्ज़ की ऐ रब मेरी उम्मत का हिसाब मुझे दे दे इरशाद फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) तेरी उम्मत मेरे बन्दे हैं ख़ुद हिसाब लूँगा और ख़ुद ही बख़्श दूँगा।

रोज़े क़यामत दामने रहमत में तमाम उम्मत को जमा फ़रमाया जाएगा और इरशाद फ़रमाया जाएगा मैंने अपने हुकूक़ माफ़ किए तुम आपस में एक दूसरे के हुकूक़ माफ़ करो और जन्नत को चले जाओ। यह सब सदक़ा है सरकार का सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। बन्दगी होना चाहिए मरते वक़्त मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पढ़ कर जान निकल जाए, फिर तो सब आसान है यही एक पहली ही मंज़िल है जो तमाम मंज़िलों से सख़्त तर है, अल्लाह आसान फ़रमाए।

क़यामत के दिन बावजूद इन रहमतों और मेहरबानियों के हम में बाज़ वह लोग होंगे जो उस वक़्त भी बुख़्ल करेंगे।

तीन पैसों के बदले 70 नमाज़ें

हदीस में है एक शख़्स को जन्नत का हुक्म होगा वह जाना चाहेगा कि उसका हक़दार खड़ा होगा अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरा हक़ मेरे इस भाई से दिला, हुक्म होगा कि उसकी नेकियाँ उसे देकर हक़ पूरा करो, नेकियाँ ख़त्म हो जाएंगी और उसका हक़ बाक़ी रहेगा। तीन पैसे जो किसी के ऊपर आते होंगे उनके बदले में 700 बा जमाअत नमाज़ें ली जाएंगी।

हक़दार फिर खड़ा होगा अर्ज़ करेगा। ऐ रब मेरा हक़ मेरे इस भाई से दिलवा। हुक्म होगा उसकी बदियाँ उस पर रख कर हक़ पूरा करो, उसकी बदियाँ भी ख़त्म हो जाएंगी और अभी हक़ बाक़ी है, फिर वह खड़ा होगा और अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरा हक़ मेरे इस भाई से दिलवा, इरशाद होगा उसकी तमाम नेकियाँ तुझे मिल गईं, तेरी तमाम बुराईयाँ उस पर रख दी गईं, अब उसके पास क्या है जो तू लेगा अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे मेरा हक़ अभी बाक़ी है वह उससे दिलवा, तब फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि जन्नत से एक मकान ख़ूब आरास्ता करके अरसात में लाया जाए, सब लोग उसको निहायत शौक़ से देखने लगेंगे।

दामने रहमत की वुस्अत

रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू इरशाद फ़रमाएगा मैं इस मकान को बेचता हूँ कोई है जो उसको ख़रीदे हक़्दार अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे इसकी क़ीमत किस के पास होगी, इरशाद फ़रमाएगा लेकिन तेरे पास इसकी क़ीमत है, अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे वह क्या चीज़ है, इरशाद फ़रमाएगा अपने भाई का हक़ माफ़ फ़रमा दे और उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में चला जा।

ख़ुदा ने वादा फ़रमा लिया है कि हक़्क़ुल–अब्द को मैं माफ़ न करूंगा, वरना बन्दे का भी वही मालिक, बन्दों के हुक़ूक़ का भी वही मालिक, वह चाहे तो तमाम बन्दों के तमाम हुक़ूक़ माफ़ कर दे मगर चूंकि उसने वादा फ़रमा लिया है इसलिए इस तौर पर अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ग़ुलामों से हुक़ूक़ुल–इबाद माफ़ कराएगा।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 65)

रहमते हक़ की बन्दा नवाज़ी

इसी मज़्मून को दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू इस अंदाज़ में तहरीर फ़रमाते हैं :

करीम व रहीम मौला तबारक व तआला जिस पर रहम फ़रमाना चाहेगा तो यूं करेगा कि हक़ वाले को बेबहा क़ुसूर जन्नत मुआवज़ा में अता फ़रमा कर उफ़्वे हक़ पर राज़ी कर देगा। एक एक करिश्म–ए–करम में दोनों का भला होगा, न उसकी नेकियाँ उसे दी गईं, न उसकी बुराईयाँ उसके सर रखी गईं, न उसका हक़ ज़ाए होने पाया बल्कि हक़ से हज़ारों दर्जे बेहतर अफ़्ज़ल पाया, रहमते हक़ की बन्दा नवाज़ी ज़ालिम नाजी, मज़्लूम राज़ी।

एक दिन हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे नागाह ख़न्दां फ़रमाया कि अगले दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हुए अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे माँ–बाप हुज़ूर पर क़ुरबान, किस बात पर हुज़ूर को हँसी आई इरशाद फ़रमाया :

दो मर्द मेरी उम्मत से रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के हुज़ूर ज़ानुओं पर खड़े हुए एक ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे, मेरे इस भाई ने जो मुझ पर ज़ुल्म किया है उसका ऐवज़ मेरे लिए ले, रब तबारक व तआला ने फ़रमाया अपने भाई के साथ क्या करेगा उसकी नेकियाँ तो सब हो चुकीं। मुद्दई ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे तो मेरे गुनाह वह उठा ले, यह फ़रमा कर हुज़ूरे रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आँखें गिरिया से बह निकलीं, फ़िर फ़रमाया बेशक वह दिन बड़ा सख़्त है लोग उसके मुहताज होंगे कि उनके गुनाहों का कुछ बोझ और लोग उठायें, मौला अज़्ज़ा व जल्ल ने मुद्दई

से फरमाया नज़र उठा कर देख उसने निगाह उठाई कहा ऐ रब मेरे मैं कुछ शहर देखता हूँ सोने के और महल के महल सोने के सरापा मोतियों से जड़े हुए, यह किस नबी के हैं, या किस सिद्दीक़ के, या किस शहीद के, मौला तबारक व तआला ने फरमाया उसके हैं जो क़ीमत दे कहा ऐ रब मेरे भला इनकी क़ीमत कौन दे सकता है फरमाया तू। अर्ज़ की क्यों कर, फरमाया कि यूं कि अपने भाई को माफ कर दे, कहा ऐ रब मेरे यह बात है तो मैंने माफ़ किया, मौला जल्ला मज्दहू ने फरमाया अपने भाई का हाथ पकड़ ले और जन्नत में ले जा।

इस्लाहे ज़ातुल–बय्यन

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसे ब्यान करके फरमाया कि अल्लाह तआला से डरो और आपस में सुलह करो कि मौला अज़्ज़ा व जल्ल क़यामत के दिन मुसलमानों में सुलह कराएगा। (हाकिम, बैहक़ी, अबू याला)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब मख़्लूक़ रोज़े क़यामत बहम होगी एक मुनादी रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला व उला की तरफ से निदा करेगा ऐ मज्मा वालो आपस के मज़्लूमों का तदारुक कर लो और तुम्हारा सवाब मेरे ज़िम्मा है। (तबरानी)

एक और हदीस में है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल रोज़े क़यामत सब अगलों पिछलों को एक ज़मीन में जमा फरमाएगा फिर ज़ेरे अर्श से मुनादी निदा करेगा ऐ तौहीद वालो मौला तआला ने तुम्हें अपने हुक़ूक़ माफ़ फरमाए लोग खड़े होकर आपस के मज़्लूमों में एक दूसरे से लिपटेंगे मुनादी पुकारेगा ऐ तौहीद वालो एक दूसरे को माफ़ कर दो और सवाब देना मेरे ज़िम्मा है।

(तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 49, 50)

हुक़ूक़ुल्लाह की मआफ़ी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू इसी मज़्मून को एक और मक़ाम पर इख़्तिसार के साथ यूं ब्यान फरमाते हैं :

हुक़ूक़ुल्लाह माफ़ होने की दो सूरतें हैं।

अव्वल : तौबा।

अल्लाह तआला फरमाता है : वही अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों को माफ़ फ़रमाता है। (अश्शूरा, 25)

दोम : उफ़्वे इलाही।

अल्लाह तआला फरमाता है : वह जिसे चाहे बख़्श देगा और जिसे चाहे अज़ाब देगा।

(अल–बक़रा, 284)

हुक़ूक़ुल–इबाद की मआफ़ी

हुक़ूक़ुल–इबाद माफ़ होने की भी दो सूरतें हैं :

★ जो क़ाबिले अदा है अदा करना।

★ वरना उन से माफ़ी चाहना।

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जिसके ज़िम्मा अपने भाई का आबरू वग़ैरह किसी बात का मुज़्लेमा हो उसे लाज़िम है कि यहीं उस से माफ़ी चाह ले क़ब्ल उस वक़्त के आने के कि वहाँ न रुपया होगा न अशरफ़ी, अगर उसके पास कुछ नेकियाँ होंगी तो बक़द्र

उसके हक़ के उस से लेकर उसे दी जाएगी वरना उसके गुनाह उस पर रखे जाएंगे।

(बुख़ारी, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 43)

जानवरों को बदला दिलाया जाएगा

हक़्क़ुल–अब्द हर वह मुतालब–ए–माली है कि शरअन उसका ज़िम्मा किसी के लिए साबित है और हर वह नुक़्सान व आज़ार जो बेइजाज़ते शरईया किसी क़ौल फ़ेअ्ल तर्क से किसी के दीन, आबरू, जान, माल या सर्फ़ क़ल्ब को पहुँचाए, क़्यामत के दिन हर एक का बदला होगा।

यहाँ तक कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : बेशक रोज़े क़्यामत तुम्हें अह्ले हुक़ूक़ को उनके हक़ अदा करने होंगे यहाँ तक कि मुंडी बकरी का बदला सींग वाली बकरी से लिया जाएगा कि उसे सींग मारे। (मुस्लिम, अहमद)

एक रिवायत में फ़रमाया यहाँ तक कि च्यूंटी का एवज़ लिया जाएगा। (मुसनद अहमद)

असल मुफ़लिस कौन है?

क़्यामत के दिन रुपए अशर्फ़ियाँ नहीं होंगी कि मुआवज़–ए–हक़ में दी जाएं, बन्दों के हुक़ूक़ का तरीक़–ए–अदा यह होगा कि उसकी नेकियाँ साहिबे हक़ को दी जाएंगी अगर अदा हो गया ग़नीमत वरना उसके गुनाह उस पर रखे जाएंगे यहाँ तक कि तराज़ुए अदल में वज़न पूरा हो।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जानते हो मुफ़लिस कौन है सहाबा ने अर्ज़ की हमारे यहाँ तो मुफ़लिस वह है जिसके पास ज़र व माल न हो, फ़रमाया मेरी उम्मत में मुफ़लिस वह है जो क़्यामत के दिन नमाज़ रोज़े ज़कात लेकर आए और यूं आए कि उसे गाली दी, उसे ज़िना की तोहमत लगाई, उसका माल खाया, उसका ख़ून गिराया उसे मारा तो उसकी नेकियाँ उसे दी गईं फिर अगर नेकियाँ हो चुकीं और हक़ बाक़ी हैं तो उनके गुनाह लेकर उस पर डाले गए फिर जहन्नम में फेंक दिया गया। (मुस्लिम)

ख़ुलास–ए–कलाम

ग़रज़ हुक़ूक़ुल–इबाद बे उनकी माफ़ी के माफ़ न होंगे।

इसलिए मरवी हुआ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है, किसी ने अर्ज़ की यह क्योंकर? फ़रमाया ज़ानी तौबा करे तो अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए और ग़ीबत वाले की मग़्फ़िरत न होगी जब तक वह न बख़्शे जिसकी ग़ीबत की है।

(इब्ने अबिद्दुनिया, तबरानी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 48, 49)

उख़ुव्वत व भाई चारगी

अल्लाह तआला ने इंसान के अन्दर इंसियत व मुहब्बत का एक अज़ीम उन्सुर व जज़्बा रखा है, यह आपस में मेल जोल के साथ जिन्दगी बसर करते हैं इंसान की जिंदगी में सन्जीदगी व सादगी उसी वक़्त कार फरमा होती है जब कि वह इस्लामी आदाब व उसूल पर अमल करे वरना उसके बग़ैर इंसान कभी फिरऔन व नम्रूद होता है और कभी शैतान व हैवान, इंसानी सलाह व फलाह, और आपस की हम्दर्दियों से ही सालेह मुआशरा तशकील पाता है, इंसान जब एक दूसरे की मुसीबत व मुश्किल में काम आता है तो यही उसके भाईचारे की वाज़ेह दलील होती है और इंसान जब अपने माहौल में एक दूसरे की मदद करता है तो अल्लाह तआला ख़ुश होता है। इंसानी उख़ुव्वत व मवासात का पैग़ाम अहादीस की रौशनी में मुलाहिज़ा फरमाएं।
(मुरत्तिब)

मुसलमान की एआनत

मुसलमान की एआनत हज़रत हक़ अज़्ज़ा व जल्ल को निहायत पसन्द है।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला बन्दे की मदद में है जब तक बन्दा अपने भाई मुसलमानों की मदद में है।

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो अपने भाई मुसलमान के काम में हो अल्लाह तआला उसकी हाजत रवाई में हो और जो किसी मुसलमान की तक्लीफ़ दूर करे अल्लाह तआला उसके एवज़ क़यामत की मुसीबतों से एक मुसीबत उस पर से दूर फरमाए।

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

मुसलमान का दिल ख़ुश करना

मुसलमान का दिल ख़ुश करने की बराबर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को फ़राइज़ के बाद कोई अमल महबूब नहीं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक अल्लाह तआला के नज़्दीक फ़र्ज़ों के बाद सब आमाल से ज़्यादा मुसलमान का दिल ख़ुश करना है। (तबरानी)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक मूजिबात मग़्फ़िरत से है तेरा अपने भाई मुसलमान को ख़ुश करना। (तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 553, 554)

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया है कि तुम में जिस से हो सके कि अपने भाई मुसलमान को नफ़ा पहुँचाए तो लाज़िम व मुनासिब है कि पहुँचाए।

(मुस्लिम, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द, स० 556)

मुसलमान की तरफ गुनाह की निस्बत करनी

आजकल लोग ज़रा सी बात पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ ग़लत अफ़्वाहें फैलाते और उसकी तरफ घिनौनी बातें मंसूब करते हैं इस्लाम ने बिला वजह शरई क़बीह बातों की दूसरे की तरफ निस्बत करने से सख़्ती से मना फरमाया है। अल्लाह व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ऐसी बातें नापसन्द हैं। (मुरत्तिब)

इमाम ग़ज़ाली अहया–उल–उलूम शरीफ़ में फरमाते हैं :

किसी मुसलमान को किसी कबीरा की तरफ बे तहक़ीक़ निस्बत करना हराम है, हां यह कहना जाइज़ है कि इब्ने मल्जम शक़ी ख़ार्जी ने अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू

को शहीद किया कि यह बतवातुर साबित है। (फतावा, रज़्वीया जिल्द 2, स0 511)

बिला वजह मुसलमान की तह्क़ीर हराम है

बाज़ अपनी बड़ाई व नामवरी साबित करने के लिए दूसरे की तह्क़ीर व तौहीन करते हैं शरअ़न ऐसा करना हराम है क्योंकि अल्लाह तआला ने मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू को महफ़ूज़ फरमा दिया है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हर मुसलमान के जान व माल, इज़्ज़त व आबरू दूसरे मुसलमान पर हराम हैं, आदमी की बुराई से यही काफी है कि वह अपने भाई मुसलमान की तह्क़ीर व तज़्लील करे।

(त, अबू दाऊद, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 124)

एक बड़ी आक़िलाना ख़सलत

ऐ अज़ीज़ मदाराते ख़ुल्क़ व उल्फ़त व मवानिसत अहम उमूर से है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि मैं लोगों से मुहब्बत व दिल्जोई के लिए भेजा गया हूँ (त, तबरानी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल पर ईमान लाने के बाद सबसे बड़ी अक़्लमन्दी यह है कि लोगों से मुहब्बत की जाए।

(त, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 112)

बावजूद इस्तेताअत मोमिन की मदद न करना मूजिब रुसवाई

मोमिन आपस में एक दूसरे के भाई हैं वक़्त ज़रूरत मुसलमान की मदद करना फर्ज़ है क़ुदरत के बावजूद अगर कोई मुसलमान की मदद न करे तो क़्यामत के दिन उसकी रुसवाई होगी। (मुरत्तिब)

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसके पास किसी मोमिन की तज़्लील व तौहीन की जाए और वह क़ुदरत के बावजूद उसकी मदद न करे तो अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसे बरसरे मज्लिस रुसवा करेगा। (त, मुसनद अहमद)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो किसी मुसलमान को धोखा दे या उसे तक्लीफ़ पहुँचाए या उसके साथ मक्र व हीला से पेश आएं वह हमारे गरोह से नहीं। (त, तबरानी, इमाम राफई, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 21)

बेवजह, मुसलमान की तह्क़ीर व ईज़ा हराम

बिला वजह शरई किसी मुसलमान जाहिल की भी तह्क़ीर हराम क़तई है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आदमी के बद होने को यह बहुत है कि अपने भाई मुसलमान की तह्क़ीर करे मुसलमान की हर चीज़ मुसलमान पर हराम है ख़ून, आबरू, माल। (मुस्लिम)

इसी तरह किसी मुसलमान जाहिल को भी बेइज़्ने शरअ़ गाली देना हराम क़तई है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मुसलमान को गाली देना गुनाहे कबीरा है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुसलमान को गाली देने वाला उसकी

मानिन्द है जो अन्क़रीब हलाकत में पड़ना चाहता है। (मुसनद अहमद, बज़्ज़ार)

बे सबब शरई ईज़ाए मुस्लिम हराम है। (मुरत्तिब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह तआला को ईज़ा दी। (तबरानी)

जब आम मुसलमानों के बाब में यह अहकाम हैं तो उलमा–ए–किराम की शान तो अरफ़ा व आला है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : उलमा के हक़ को हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़। (किताबुत्तौबीख़)

दूसरी हदीस में है जो हमारे आलिम का हक़ न पहचाने वह मेरी उम्मत से नहीं।

(अहमद, हाकिम, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 140)

मुसलमान से क़तअ् तअल्लुक़ की शुनाअत

मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई हैं आपस में इफ़्तराक़ व इख़्तिलाफ़ मुनासिब नहीं बल्कि बिला वजहे शरई तीन दिन से ज़्यादा मुसलमानों से क़तअ् तअल्लुक़ हराम है। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आदमी को हलाल नहीं कि अपने मुसलमान भाई को तीन रात से ज़्यादा छोड़े राह में मिलें तो यह इधर मुंह फेर ले, वह उधर मुंह फेर ले और उनमें बेहतर वह है जो पहले सलाम करे यानी मिलने की पहल करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है किसी मुसलमान को हलाल नहीं कि किसी मुसलमान से तीन रात से ज़्यादा तअल्लुक़ क़तअ् करे जब तीन रातें गुज़र जाएं तो लाज़िम है कि उस से मिले और उस से सलाम करे अगर सलाम का जवाब दे तो दोनों सवाब में शरीक होंगे और वह जवाब न देगा तो सारा गुनाह उसके सर रहा यह सलाम करने वाला क़तअ् के वबाल से निकलेगा। (अबू दाऊद)

तीसरी हदीस में है मुसलमान को हराम है कि मुसलमान भाई को तीन रात से ज़्यादा छोड़े जो तीन रात से ज़्यादा छोड़े और उसी हालत में मरे वह जहन्नम में जाएगा।

(अहमद, अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 252)

अहादीस से सिला रहमी व हुस्ने सुलूक की बरकात

मुसलमान से हुस्ने सुलूक और रिश्तादारों से सिलह रहमी बेहतरीन नेकी है नेक सुलूक करने वाले की अल्लाह तआला मग़्फ़िरत फरमा देता है और उसे बुरी मौत से नजात देता है। मुतअद्दद अहादीस में हुस्ने सुलूक व सिलह रहमी की फज़ीलत वारिद हुई है। (मुरत्तिब)

हदीस : जो चाहता है कि उसके रिज़्क़ में वुस्अत, माल में बरकत हो, वह अपने रिश्तादारों से नेक सुलूक करे। (बुख़ारी)

हदीस 2 : जिसे ख़ुश आए कि उसकी उम्र दराज़, रिज़्क़ वसीअ् और बुरी मौत दफ़अ् हो वह अल्लाह से डरे और अपने रिश्तादारों से नेक सुलूक करे। (हाकिम, बज़्ज़ार)

हदीस 3 : क़रीबी रिश्तादारों से नेक सुलूक, माल का बहुत बढ़ाने वाला, आपस में बहुत मुहब्बत दिलाने वाला, उम्र का ज़्यादा करने वाला है। (तबरानी)

हदीस 4 : मुसलमान और ईमान की कहावत ऐसी है जैसे चरागाह में घोड़ा अपनी रस्सी से बंधा हुआ, कि चारों तरफ चर कर फिर अपनी बन्दिश की तरफ पलट आता है, यूं ही मुसलमान से भूल हो जाती है फिर ईमान की तरफ रुजूअ लाता है तो अपना खाना परहेज़गारों को खिलाओ और अपना नेक सुलूक सब मुसलमानों को दो। (बैहक़ी, अबू नईम)

हदीस 5 : सिला रहम से उम्र बढ़ती है। (क़ज़ाई, कंज़ुल–उम्माल)

हदीस 6 : बेशक सब नेकियों में जल्द तर सवाब में सिला रहम है यहाँ तक कि घर वाले फ़ासिक़ भी हों तो उनके माल ज़्यादा होते हैं और उनके शुमार बढ़ते हैं जब आपस में सिला रहम करें। (तबरानी)

हदीस 7 : कोई घर वाले ऐसे नहीं कि आपस में सिला रहम करें फिर मुहताज हो जाएं। (इब्ने हिब्यान)

हदीस 8 : सिला रहम और नेक ख़ूई और हम्साया से नेक सुलूक शहरों को आबाद और उम्रों को ज़्यादा करते हैं। (अहमद)

हदीस 9 : नेक सुलूक के काम, बुरी मौतों, आफ़तों, हलाकतों से बचाते हैं और दुनिया में एहसान वाले वही आख़िरत में एहसान वाले होंगे। (मुस्तदरक हाकिम, कंज़ुल–उम्माल)

हदीस 10 : भलाई के काम बुरी मौतों से बचाते हैं और पोशीदा ख़ैरात रब का ग़ज़ब बुझाती है और रिश्तादारों से अच्छा सुलूक उम्र में बरकत है और हर नेक सुलूक (कुछ हो, किसी के साथ हो) सब सदक़ा है और दुनिया में एहसान वाले वही आख़िरत में एहसान पाएंगे, और दुनिया में बदी वाले वही उक़्बा में बदी देखेंगे और सब में पहले जो बहिश्त में जायेंगे वह नेक बरताव वाले हैं। (तबरानी)

हदीस 11 : बेशक मग़्फ़िरत वाजिब कर देने वाली चीज़ों में है तेरा अपने भाई मुसलमान का जी ख़ुश करना। (तबरानी)

हदीस 12 : अल्लाह तआला के फर्ज़ों के बाद सब आमाल से ज़्यादा प्यारा अमल मुसलमान का जी ख़ुश करना है। (तबरानी, रिसाला रादुल–क़हत वल–वबा)

बिला वजह शरई अगर कोई मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को सताए या ज़ुल्म व ज़्यादती करे क़्यामत के दिन उसका बदला ज़रूर होगा, सच्चा पक्का मुसलमान वह है जिसकी तरफ हदीस इशारा फरमाती है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मुसलमान वह है कि दूसरे मुसलमान उसकी ज़ुबान और हाथ से अमान में रहें। यानी न ज़ुबान से गाली गलोज वग़ैरह से तक्लीफ दी जाए न हाथ वग़ैरह से। (बुख़ारी, रिसाला सफ़ाइहुल–हजीन)

भाई का उज़्र क़बूल न करना, हिरमां नसीबी है

अगर किसी मुसलमान से कोई ग़लती और कोताही हो जाए और वह अपनी ख़ामियों पर नादिम व शर्मसार हो कर अपने मुसलमान भाईयों से माफी मांगे और उज़्र ख़्वाही करे तो मुसलमानों पर उसका उज़्र क़बूल करना लाज़िम है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिला में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू एक मक़ाम पर फरमाते हैं :

मुसलमान भाई की तौबा कबूल करनी वाजिब है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ख़ुद अपने बन्दों की तौबा क़बूल फरमाता है। कुरआने अज़ीम में है, अल्लाह है कि अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और गुनाहों से दर गुज़र फरमाता। (अश्शूरा, 25)

और फरमाता है :

क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़बूल फरमाता है। (अत्तौबा, 104)

हदीस शरीफ़ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसके पास उसका मुसलमान भाई माज़रत करता हुआ आए उस पर लाज़िम है कि उसका उज़्र क़बूल करे चाहे वह हक़ पर हो या नाहक़ पर, अगर उज़्र क़बूल न करेगा तो रोज़े क़्यामत हौज़े कौसर पर मेरे हुज़ूर हाज़िर होना नसीब न होगा। (हाकिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 117)

पड़ोसी के हुकूक़ की रिआयत लाज़िम

मुसलमान पड़ोसी के बहुत हक़ हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जिब्रील मुझ से पड़ोसी के हक़ की ताकीदें ब्यान करते रहे यहाँ तक कि मुझे गुमान हुआ कि उसे तरका का वारिस कर देंगे। (बैहक़ी)

दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हमसाए का हमसाए पर हक़ यह है कि –

1. बीमार पड़े तो तू उसके पूछने को जाए।
2. मरे तो उसके जनाज़ा के साथ जाए।
3. वह तुझ से क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दे।
4. उसका कोई ऐब मालूम हो जाए तो उसे छुपाए।
5. उसे कोई भलाई पहुँचे तो उसे मुबारकबाद दे।
6. कोई मुसीबत पड़े तो उसे दिलासा दे।
7. अपनी दीवार उसकी दीवार से इतनी ऊंची न कर कि उसके मकान की हवा रुके।
8. अपनी देगची की ख़ुशबू से उसे ईज़ा न दे मगर यह कि उस खाने में से उसे भी हिस्सा दे। (तबरानी)

(यानी तू अमीर है और वह ग़रीब और तेरे यहाँ उम्दा खाने पकते पकाते हैं, ख़ुशबू उसे पहुँचेगी, वह उन पर क़ादिर नहीं, इससे ईज़ा पाएगा लिहाज़ा उस में से उसे भी दे कि वह ईज़ा ख़ुशी से बदल जाए।

इंतिबाह : राफ़ज़ी वहाबी अगर पड़ोस में हों उनका कोई हक़ नहीं कि वह मुरतद हैं, न किसी काफिर ग़ैर ज़िम्मी का, और यहाँ के सब काफिर ऐसे ही हैं, उनके बारे में सिर्फ़ इतना ही है कि उन से ग़दर व बद उहदी जाइज़ नहीं। (अहकामे शरीअत अव्वल, स0 120)

बुग़्ज़ व हसद की बुराइयाँ

बुग़्ज़ व हसद इंसान के अन्दर ऐसा बुरा वस्फ़ है जिस से दोनों जहान की भलाईयाँ रुक जाती है, और वह दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़्वार हो जाता है, मोमिन आपस में एक दूसरे के भाई है इसलिए आपस में मिल जुल कर रहना चाहिए। बुग़्ज़ व हसद से दूसरे का नुक़्सान तो कुछ न होगा अल्बत्ता वह ख़ुद नुक़्सान व गुनाह में मुब्तला होगा। (मुरत्तिब)

हसद जहन्नम में ले जाता है रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला ने हज़रत आदम अला नबीयेना अलैहिस्सलातु वस्सलाम को यह रुतबा दिया कि तमाम मलाइका से सज्दा कराया शैतान ने हसद किया वह जहन्नम में गया, दुनिया में अगर किसी को अपने से ज़्यादा देखे शुक्र बजा लाए कि मुझे इतना मुब्तला न किया और दीन में देखे तो उसकी दस्त बोसी करे, उसे माने, किसी पर हसद करना रब्बुल-इज़्ज़त पर एतराज़ है कि उसे क्यों ज़्यादा दिया और मुझे क्यों कम रखा।

(अल-मल्फ़ूज़ दोम, स0 95)

ईमान और हसद

नेकियों से ईमान मज़्बूत व क़वी होता है और हसद ईमान को कमज़ोर व तबाह कर देता है यह दोनों मुतज़ाद वस्फ़ हैं इसलिए यह दोनों एक साथ बन्द-ए-मोमिन में जमा नहीं होते। (मुरत्तिब)

हदीस में है मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बन्द-ए-मोमिन के दिल में ईमान व हसद दोनों एक साथ जमा नहीं होंगे। (त, इब्ने हिब्बान, बैहक़ी)

हसद की आग में नेकियों का जलना

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हसद से बचो क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खाता है जिस तरह आग लकड़ी को या घास को खाती है।

(त, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

एक रिवायत में है कि हसद नेकियों को खा जाता है जैसे आग लकड़ी को।

(त, इब्ने हिब्बान, बैहक़ी)

एक और हदीस में है कि हसद ईमान को तबाह व बरबाद कर देता है जिस तरह इल्वा शहद को। इल्वा एक दरख़्त का रस है जो सख़्त कड़वा होता है।

(त, मुसनदुल-फिरदौस, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 21)

★ हसद यह है कि आदमी दूसरे की नेमत के ज़वाल का ख़्वाहां हो कि यह नेमत उस से छिन जाए और मुझे मिल जाए।

★ रश्क यह है कि आदमी दूसरे की नेमत व तरक़्क़ी देख कर यह ख़्वाहिश करे कि यह नेमत उसके पास भी रहे और मुझे भी मिले।

उलमा फरमाते हैं कि रश्क करना जाइज़ है और हसद करना हराम है बल्कि हसद करने में अपना ही नुक़्सान है। (मुरत्तिब)

मुसलमान से बुग़्ज़ रखना हराम है

मुसलमान से बिला वजहे शरई कीना व बुग़्ज़ रखना हराम है और बिला मस्लेहते शरईया तीन दिन से ज़्यादा सलाम व कलाम का तर्क भी हराम है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आपस में बुग़्ज़ व हसद न करो, एक दूसरे को पीठ न दो तुम तो अल्लाह के बन्दे हो भाई भाई हो जाओ। (त, बुख़ारी)

दूसरी हदीस में है मुसलमान का अपने भाई को तीन दिन से ज़्यादा तक छोड़े रहना, उन से सलाम व कलाम न करना हलाल नहीं है। (त, अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 211)

आला हज़रत का हसद से गुरेज़

मोमिन की शान यह है कि किसी दूसरे मोमिन को उसकी ज़बान और हाथ से कोई तक्लीफ़ व ईज़ा न पहुँचे बल्कि उसकी ज़िन्दगी अच्छाईयों का मज्मूआ और दूसरों के लिए एक पाकीज़ा नमूना न मुआशरा का हर फर्द अगर इन बातों का आमिल व पाबन्द हो जाए तो वह मुआशरा इस्लामी और अस्लाफ़ की यादगार हो जाए। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ख़ुद अपने मुतअल्लिक़ एक मक़ाम पर बतौर तशक्कुर व तहदीसे नेमत के तहरीर फरमाते हैं :

फ़क़ीर में लाखों उयूब हैं मगर बिहम्दिलिल्लाह तआला मेरे रब ने मुझे हसद से बिल्कुल पाक रखा है। अपने से जिसे ज़्यादा पाया अगर दुनिया के माल व मनाल में ज़्यादा है, क़ल्ब ने उसे अन्दर से हक़ीर जाना, फिर हसद किया हिक़ारत पर? और अगर दीनी शरफ़ व अफ़्ज़ाल में ज़्यादा है, उसकी दस्त बोसी व क़दमबोसी को अपना फख़्र जाना, फिर हसद किया अपने मुअज़्ज़म बा बरकत पर? अपने में जिसे हिमायते दीन में देखा उसके नश्र फज़ाइल और खुल्क़ को उसकी तरफ माइल करने में तहरीर व तक़्रीर से कोशां रहा। उसके लिए उम्दा अल्क़ाब वज़अ़ करके शाए किए, जिस पर मेरी किताब "अल–मोअ़तमद अल–मुस्तनद" वग़ैरह शाहिद हैं। हसद शोहरत तलबी से पैदा होता है और मेरे रब्बे करीम के वज्हे करीम के लिए हम्द है कि मैंने कभी उसके लिए ख़्वाहिश न की बल्कि हमेशा उस से नफ़ूर व गोशा नशीनी का दिल्दादा रहा।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 133)

सलाम के अहकाम व आदाब

सलाम एक मुफीद दुआ और आपस में मेल मुहब्बत पैदा होने का ज़रीआ है सलाम की पाबन्दी से आपस के इख़्तिलाफ़ और बुग़्ज़ व हसद दूर हो सकते हैं, सलाम के आदाब व अहकाम से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तहरीर मुलाहिज़ा फरमायें।

बेवुज़ू या बेग़ुस्ल सलाम का जवाब देना

सलाम शुरू मुलाक़ात के वक़्त है, देर के बाद या कुछ कलाम करके, सलाम करना खिलाफ़े सुन्नत है।

बेवुज़ू खुसूसन जुनुब है और किसी ने सलाम किया, या कोई सामने आया और ख़ुद उसे सलाम करना है और सलाम नामे इलाही अज़्ज़ा व जल्ल है, बेतहारत लेना न चाहा और वुज़ू करे तो सलाम फौत होता है कि जवाब में इतनी ताख़ीर की इजाज़त नहीं, और सलाम भी शुरू मुलाक़ात पर है, देर के बाद नहीं, लिहाज़ा इजाज़त है कि तयम्मुम करके जवाब दे, या सलाम करे।

मसला का जवाब ख़ुद फेअ़्ले अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से साबित कि एक साहब गुज़रे हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सलाम किया, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जवाब न दिया यहाँ तक कि क़रीब हुआ कि वह गली से गुज़र जायें हुज़ूर ने तयम्मुम फरमा कर जवाब दिया और इरशाद फरमाया, हमको जवाब देने से माने न हुआ मगर यह कि उस वक़्त वुज़ू न था।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 619)

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम चाहे जमल की तरफ़ तशरीफ़ ला रहे थे एक शख़्स ने सलाम किया हुज़ूर ने दीवार से तयम्मुम फरमा कर उनके सलाम का जवाब दिया। (त, बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 668)

बहालते इस्तिंजा सलाम मम्नूअ़ है

इस्तिंजा करने वाले को सलाम न किया जाए, न वह किसी को सलाम करे और न सलाम का जवाब दे। (फतावा रज़्वीया 2, स0 152)

सलाम की जगह गाली

मुसलमानों को फहश व मुंकिरात और बुरी बातों से एहतराज़ व इज्तिनाब करना लाज़िम है, गाली गलोच वग़ैरह से ज़बान को रोकना ज़रूरी है हदीस पाक में है कि मुसलमान को गाली देना गुनाहे कबीरा है, मगर आजकल लोग आम बोल चाल में गालियाँ बकते और उन्हें बुरा नहीं समझते हैं गाली तो किसी का सुख़ने तकिया और किसी के मुहावरे में आ चुकी है ख़ुदा रा इन बुराइयों से ज़बान को आलूदा करने से बचना चाहिए, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी इरशाद फरमाते हैं :

हदीस में है एक वह ज़माना आने वाला है कि लोगों में उनकी तहीयत की जगह गाली होगी, मैंने ख़ुद अपनी आंखों से देखा और कानों से सुना, सलाम की जगह गाली बकते हुए।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 17)

ग़ैर मुस्लिम को सलाम करे या नहीं?

सलाम एक अज़ीम दुआ है मुसलमान जब किसी मुसलमान को सलाम करता है। तो उसके यह मानी होते हैं कि तुम पर सलामती हो, सलामती वग़ैरह की दुआ मुसलमान के लिए जाइज़ है काफिर के लिए नहीं इसलिए।

काफिर को बे ज़रूरत सलाम की इब्तिदा नाजायज़ है इस पर हदीस व फ़िक़्ह के शवाहिद

मौजूद हैं और हिंदुस्तान में तहीयत के वह तरीक़े जारी हैं कि बज़रूरत भी उन्हें सलामे शरई करने की हाजत नहीं मसलन यही काफी कि लाला साहब, बाबू साहब, मुंशी साहब, या बेसर झुकाए सर पर हाथ रख लेना वग़ैरा ज़ालिक।

काफिर अगर बेलफ़्ज़ सलाम, सलाम करे तो ऐसे ही अल्फ़ाज़ राइजा जवाब में बस हैं और बलफ़्ज़ सलाम इब्तिदा करे तो उलमा फरमाते हैं जवाब में व अलैका कहे, मगर यह लफ़्ज़ यहाँ अह्ले इस्लाम से मख़सूस ठहरा हुआ है और वह काफिर भी उसे जवाब सलाम न समझेगा बल्कि अपने साथ इस्तेहज़ा ख़्याल करेगा तो जिस लफ़्ज़ से मुनासिब जाने जवाब दे अगरचे सलाम के जवाब में सलाम ही कह कर। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 65)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर इस तरह है।

काफिर या मुब्तदेअ़ या फासिक़ को सलाम करने की सही ज़रूरत पेश आए तो लफ़्ज़ सलाम न कहे बल्कि हाथ उठाने या और कोई लफ़्ज़ कि न सलाम हो न ताज़ीम, कहने पर क़नाअत करे, या मजबूर हो तो आदाब कहे यानी आ मेरे पाँव दाब, या आदाबे शरीअत को तूने अपने फ़िस्क़ से तर्क करे दिए हैं बजाला। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 303)

घर में दाख़िल होने के बाद सलाम करना

सलाम चूंकि एक अच्छी दुआ है इसलिए जब आदमी बाहर से अपने घर के अन्दर आए तो घर वालों को सलाम करे उससे बरकत व रहमत नाज़िल होगी और उस घर में शैतान का दाख़िला नहीं होगा। (मुरत्तिब)

अल्लाह तआला कुरआने अज़ीम में फरमाता है :

जब तुम घरों में जाओ तो सलाम करो अपनी जानों पर मिलते वक़्त की अच्छी दुआ अल्लाह की तरफ से बरकत वाली पाकीज़ा। (अन्नूर, 61)

यानी बाज़ आदमी बाज़ को सलाम करे यह उस वक़्त है कि जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपनी बीवी और जो लोग घर के अन्दर हों उन्हें सलाम करे। (त, मआलिमुत्तंज़ील)

क़तादा कहते हैं कि जब तुम अपने घर में आओ घर वालों को सलाम करो यह लोग दूसरे लोगों के एतबार से सलाम के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। (त, मआलिमुत्तंज़ील)

हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया ऐ मेरे बेटे जब तुम अपने अह्ल पर दाख़िल हो तो सलाम करो वह बरकत होगा तुझ पर और तेरे अह्ले खाना पर। (तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है जब तुम अपने घरों में जाओ तो अह्ले खाना पर सलाम करो कि जब तुम में कोई घर में जाते सलाम करता है तो शैतान उस घर में दाख़िल नहीं होता।

(ख़राइती मकारिमुल–अख़्लाक़)

अल्लामा मुजदुद्दीन फीरोज़ाबादी सिराते मुस्तक़ीम में फरमाते हैं :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब रात को मकान में तशरीफ़ फरमा होते ऐसी आवाज़ से सलाम फ़रमाते कि जागते सुन लेते और सोते न जागते।

शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी शरह सफरुस्सआदा में फरमाते हैं :

घर में दाख़िल होते वक़्त अह्ले ख़ाना पर सलाम करना सुन्नत है।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब काशान–ए–अक़्दस में तशरीफ़ फरमा होते पहले मिस्वाक फरमाते।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, निसाई, इब्ने माजा)

शरह जामे सग़ीर में है, यह मिस्वाक अपने अह्ले पाक पर सलाम फरमाने के लिए थी कि सलामे

मोअ़ज़म नाम है तो उसके अदा को मिस्वाक फरमाते। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी अज़्वाजे मुतहहरात पर गुज़रना शुरू करते उन में हर एक पर सलाम फरमाते और सलाम अलैकुम के बाद मिज़ाज पुर्सी करते। (मुस्लिम)

हज़रत अनस से दूसरी रिवायत में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और मैं सायादार हमराह था अज़्वाजे मुतहहरात के हुजरों पर तशरीफ़ ले जाते और उन्हें सलाम फ़रमाते। (मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 89, 90)

किस किस को सलाम करना मना है

★ बद मज़हब को सलाम करना हराम है।

★ फासिक़ को सलाम करना ना जाइज़ है।

★ जो बरहना हो, या इस्तिंजा करे, उसे सलाम न करे।

★ जो खाना खा रहा हो उसे सलाम न करे।

★ जो अज़ान, या तिलावत, या किसी तरह ज़िक्र में मशग़ूल हो उसे सलाम न करे।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 303)

एक और मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू तिलावते कुरआन करने वाले को सलाम करने से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं :

कुरआन शरीफ़ पढ़ने वाले पर सलाम करना नाजाइज़ है और उसे इख़्तियार है कि जवाब न दे और कुरआन पढ़ने वाले को दूसरे पर सलाम करने की इजाज़त है जबकि वह मोअ़ज़्ज़म दीनी हो या उसे सलाम न करने में अन्देशा मुज़र्रत हो।

यूं ही यह मसला है कि कुरआन शरीफ़ पढ़ने में किसी की ताज़ीम को क़याम जाइज़ नहीं मगर बाप या इल्मे दीन का उस्ताद, या पीर व मुर्शिद, या आलिमे दीन, या बादशाह इस्लाम या बमजबूरी उसके लिए अगर क़याम न करे तो उस से ज़रर पहुँचने का ज़न ग़ालिब हो।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 330)

सलाम और जवाबे सलाम का इस्लामी तरीक़ा

सलाम करने और जवाब देने का जो इस्लामी तरीक़ा है वही महबूब है इसके अलावा दौरे जदीद में जो मुख़्तलिफ़ तरीक़े राइज हैं वह पसन्दीदा व जाइज़ नहीं, शरीअते इस्लामिया ने क़दम क़दम पर हमारी रहनुमाई फरमाई हमें उसी के मुताबिक़ अमल करना होगा। (मुरत्तिब)

सलाम से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

अस्सलामु अलैकुम के जवाब में अस्सलामु अलैकुम कहने से जवाब अदा हो जाएगा अगरचे सुन्नत यह है कि व अलैकुम अस्सलाम कहे, आदाब, तस्लीमात, बन्दगी, कहना एक मुहमल बात और ख़िलाफ़े सुन्नत है उसका जवाब कुछ ज़रूरी नहीं, वहाँ मसलेहत पर नज़र करे अगर सूरत यह है कि उसके जवाब न देने से वह मुतनब्बह होगा और आइंदा ख़िलाफ़े सुन्नत से बाज़ रहेगा तो कुछ जवाब न दे और अगर वह दुनिया के एतबार से बड़ा शख़्स है और उसे जवाब न देने में ज़रूर ईज़ा का अन्देशा है तो वैसा ही कोई मोहमल जवाब दे दे, इसी तरह अगर उसे जवाब न देने से कीना पैदा होगा या अपनी नावाक़ेफ़ी के बाइस उसकी दिल शिक्नी होगी जब भी जवाब देना औला है।

और सलाम जब मस्नून तरीक़ा से किया गया हो और सलाम करने वाला सुन्नी मुसलमान सहीहुल–अक़ीदा हो तो जवाब देना वाजिब है और उसका तर्क गुनाह, मगर अजनबी जवान औरत अगर सलाम करे तो दिल में जवाब देना चाहिए।

सलाम करने में कम अज़ कम अस्सलामु अलैकुम और उस से बेहतर व रहमतुल्लाह मिलाना और सबसे बेहतर व बरकातुहू शामिल करना और उस पर ज़्यादत नहीं। फिर सलाम करने वाले ने जितने अल्फ़ाज़ में सलाम किया है जवाब में इतने का एआदा तो ज़रूर है और अफ़ज़ल यह है कि जवाब में ज़्यादा कहे उसने अस्सलामु अलैकुम कहा तो यह व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाह कहे। और अगर उसने अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहा तो यह व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू कहे, और अगर उसने व बरकातुहू तक कहा तो यह भी इतना ही कहे कि इससे ज़्यादत नहीं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 354)

मर्दों का औरतों को सलाम करना

महारिम व अज़्वाज पर सलाम मुतलक़न (जाइज़) है और अज्नबीयात में जवानों को सलाम न किया जाए, बूढ़ियों को किया कहा जाए बल्कि जवान औरतें अगर सलाम करें तो जवाब दिल में दिया जाए उन्हें न सुनाए हालांकि जवाब देना वाजिब है और एक दूसरे के साथ मुतलक़न अस्सलामु अलैकुम है यानी मर्द औरत दोनों के सलाम का तरीक़ा यही है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 456)

बद मज़हबों को सलाम करने की मुमानेअत

सलाम एक क़िस्म की ताज़ीम है और बद मज़्हब क़ाबिले ताज़ीम नहीं बल्कि वह लाइक़े तौहीन व तज़्लील हैं एक हदीस में है कि जब फासिक़ की मदह की जाती है रब तआला ग़ज़ब फरमाता है और अर्श इलाही हिल जाता है जब फ़ासिक़ की तारीफ़ का यह हाल है तो बद मज़्हब या बिदअती की तारीफ़ और उसकी ताज़ीम का क्या हाल होगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी बद मज़्हब को सलाम करे या उस से बकुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उससे पेश आए जिसमें उसका दिल ख़ुश हो उसने उस चीज़ की तहक़ीर की जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई। (ख़तीब)

दूसरी हदीस में है : जिसने किसी बद मज़्हब की तौक़ीर की उसने दीने इस्लाम के ढा देने पर मदद दी। (तबरानी)

(अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की ख़िदमत में किसी ने एक शख़्स का सलाम पहुँचाया फरमाया उसे मेरा सलाम न कहना कि मैंने सुना है उसने बद मज़्हबी निकाली है। (मुरत्तिब) (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 457)

हाथ के इशारा से सलाम करना

हाथ के इशारा से सलाम करना उस वक़्त जाइज़ है जब कि इशारा के साथ ज़बान से भी कहे वरना सिर्फ़ इशारा करना या उंगली उठाना, या हाथ को सर पर रखना वग़ैरह यह सब सलाम नहीं, बल्कि उंगली या हथेली के इशारे से सलाम करना, यहूद व नसारा का तरीक़ा है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हमारे गरोह से नहीं जो हमारे ग़ैरों की शक्ल बने, न यहूद से मुशाबेहत पैदा करो न नसारा से कि यहूद का सलाम उंगली से इशारा करना है और नसारा का सलाम हथेली से इशारा।

(तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 198)

मुसाफ़हा व मुआनक़ा

मुसलमानों के आपस में मिलने पर मुसाफ़हा या मुआनक़ा करना ख़ुलूस व मुहब्बत की दलील है जब मोमिन एक दूसरे से मुसाफ़हा करते हैं तो दोनों के गुनाह झड़ जाते हैं इसमें जो पहल करेगा, उसको सवाब ज़्यादा मिलेगा। (मुरत्तिब)

मुआनक़ा के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं: कपड़ों के ऊपर मुआनक़ा जहाँ ख़ौफ़े फ़ित्न–ए–शहवत न हो बिला शुबह मशरू है इसके जवाज़ पर तमाम अइम्मा मुज्तहेदीन का इज्मा, और सफर व ग़ैर सफर में बशराइत मज़्कूरा मुतलक़न जाइज़ तख़सीस सफ़र की हदीस व फ़िक़ह से साबित नहीं।

अबू जाफर अक़ीली हज़रत तमीम दारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुआनक़ा का मसअला दरियाफ़्त किया इरशाद फरमाया तहीयत है उम्मतों की और अच्छी दोस्ती है उनकी और बेशक़ पहले जिसने मुआनक़ा किया अल्लाह के ख़लील इब्राहीम हैं। अलैहिस्सलातु वस्सलाम। (अबू जाफर अक़ीली)

इस हदीस में तसरीह है कि मुआनक़ा मुहब्बत की ज़्यादती पर एक क़वी दलील है।

अगर दोनों नंगे बदन हों तो इस सूरत को बाज़ रिवायात में मक्रूह कहा है और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआला अलैह के नज़्दीक यूं भी कुछ हरज नहीं। बेशक़ जहाँ ख़ौफ़े फ़ित्ना हो मसलन औरत या मर्द ख़ूबसूरत से मुआनक़ा करना ख़ुसूसन जबकि बनज़रे शहवत हो तो इस सूरत की कराहत व अदमे जवाज़ में किसी को कलाम नहीं।

मुतअद्दद सहाबा को हुज़ूर ने गले लगाया

अहादीसे कसीरा में वारिद हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने असहाबे किराम से बारहा बहालते सफर और बिला सफर मुआनक़ा फरमाया और उसे जाइज़ रखा।

जब ज़ैद बिन हारसा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मदीना शरीफ़ में आए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से मुआनक़ा किया और बोसा दिया। (तिर्मिज़ी)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गले लगाया और बोसा दिया। (अबू दाऊद, बैहक़ी)

तबरानी जनाब हाला बिन अबी हाला फरज़न्दे अरजुमन्द हज़रत उम्मुल–मुमिनीन ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रावी वह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए हुज़ूर आराम फरमाते थे उनकी आवाज़ सुन कर जागे और उन्हें सीन–ए–अक़्दस से लगाया और बफ़ायत मुहब्बत फरमाया हाला हाला हाला। (तबरानी)

एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मआ अपने असहाब के एक ग़दीर में तशरीफ़ ले गए फिर फरमाया हर शख़्स अपने अपने यार की तरफ पैरे और ख़ुद हुज़ूर अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ पैर गये और उन्हें गले लगा कर फरमाया यह मेरा यार है। (तबरानी, इब्ने शाहीन किताबुस–सुन्नह)

एक बार हसन व हसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा दौड़ते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास आए हुज़ूर ने अपने बदन अक़्दस से चिपटा लिया। (अहमद, अबू याला)

हज़रत अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मिलता हुज़ूर मुझ से मुसाफ़हा फरमाते, एक दिन मेरे बुलाने को आदमी भेजा मैं घर में न था जब आया ख़बर पाई हाज़िर हुआ हुज़ूर ने मुझे अपने बदन से लिपटा लिया। (अबू दाऊद)

बाज़ सहाबा का हुज़ूर से मुआनक़ा

सैय्या रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के वालिद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इज़्न लेकर क़मीस मुबारक के अन्दर अपना सर ले गए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को गले लगा कर बोसा देना शुरू किया और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह क्या चीज़ रोकना जाइज़ नहीं, फरमाया पानी। (मुसनद अहमद, अबू दाऊद, निसाई)

एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कुर्ता उठाने को अर्ज़ किया हुज़ूर ने अपने बदन अक़्दस से कुर्ता उठा दिया वह हुज़ूर को लिपट गए और तहीगाह अक़्दस पर बोसा दिया और हुज़ूर ने मना न फरमाया। (अबू दाऊद, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 10,11)

हुज़ूर ने हसन व हुसैन को गले लगाया

एक बार सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत बतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के मकान पर तशरीफ़ ले गए और सैय्यदना इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया हज़रत ज़हरा ने भेजने में कुछ देर की मैं समझा उन्हें हार पहनाती होंगी या नहला रही हों इतने में दौड़ते हुए हाज़िर आए गले में हार पड़ा था सैय्यद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दस्ते अक़्दस बढ़ाए हुज़ूर को देख कर इमाम हसन ने भी हाथ फैलाए यहाँ तक कि एक दूसरे को लिपट गए, हुज़ूर ने गले लगा कर दुआ की इलाही मैं इसे दोस्त रखता हूँ तो इसे दोस्त रख, जो इसे दोस्त रखे उसे दोस्त रख। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला हुब्बेही व बारिक व सल्लम। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई)

इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मेरा हाथ पकड़ कर एक रान पर मुझे बिठा लेते और दूसरी पर इमाम हुसैन को और हमें लिपटा लेते फिर दुआ फरमाते, इलाही मैं उन पर महर करता हूँ तू इन पर रहम फरमा। (बुख़ारी)

एक बार दोनों साहबज़ादे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास आपस में दौड़ करते हुए आए हुज़ूर ने दोनों को लिपटा लिया। (मुसनद अहमद)

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा गया हुज़ूर को अपने अह्ले बैत में से ज़्यादा प्यारा कौन है फरमाया हसन व हुसैन और हुज़ूर दोनों साहबज़ादों को हज़रत ज़हरा से बुलवा कर सीने से लगाते और उनकी ख़ुशबू सूँघते। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलैहिम व बारिक व सल्लिम। (तिर्मिज़ी)

हुज़ूर ने अबू बकर को गले लगाया

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर थे इरशाद फरमाया इस वक़्त तुम पर वह शख़्स चमकेगा कि अल्लाह ने मेरे बाद उस से बुज़ुर्ग तर व बेहतर किसी को न बनाया और उसकी शफ़ाअत अंबिया की मानिन्द होगी। हम हाज़िर ही थे कि अबू बकर सिद्दीक़ नज़र आए सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क़याम किया और सिद्दीक़ को प्यार किया और गले लगाया। (ख़तीब बग़दादी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं मैंने हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अमीरुल-मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू के साथ खड़े देखा, इतने में अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से मुसाफ़हा फरमाया और गले लगाया और

उनके दहन पर बोसा दिया, मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने अर्ज़ की क्या हुज़ूर अबू बकर का मुँह चूमते हैं फरमाया ऐ अबुल हसन अबू बकर का मरतबा मेरे यहाँ ऐसा है जैसा मेरा मरतबा अपने रब के हुज़ूर। (सीरत हाफ़िज़ उमर बिन मुहम्मद मुल्ला)

रियाज़े नज़रा में उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से मुतव्वेलन सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इब्तिदाए इस्लाम में इज़हारे इस्लाम और कुफ़्फ़ार से जंग व क़िताल फरमाना और उनके चेहर–ए–मुबारक पर ज़र्ब शदीद आना, उस सख़्त सदमा में भी हुज़ूर अक़्दस सैय्यदुल महबूबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़्याल रहना, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दारे अरक़म में तशरीफ़ फरमा थे अपनी मां से ख़िदमते अक़्दस में ले चलने की दरख़्वास्त करना मुफ़स्सेलन मरवी, उसके आख़िर में है :

यानी जब पहचल मौक़ूफ़ हुई और लोग सो रहे उनकी वालिदा उम्मुल–ख़ैर और हज़रत फ़ारूक़े आज़म की बहन उम्मे जमील रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा उन्हें लेकर चलीं, बवज्हे ज़ुअफ़ दोनों पर तकिया लगाए थे यहाँ तक कि ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर किया देखते ही परवाना वार शमा रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर गिर पड़े और बोसा देने लगे और सहाबा ग़ायते मुहब्बत से उन पर गिरे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनके लिए रिक़्क़त फरमाई। (इब्ने अहदे रिब्बा बहजतुल–मजालिस, रियाज़े नुज़रा)

हुज़ूर ने उसमान को गले लगाया

अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ फरमा हुए फिर फरमाया उसमान कहाँ हैं? उसमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बेताबाना उठे और अर्ज़ की हुज़ूर मैं यह हाज़िर हूँ या रसूलुल्लाह फरमाया पास आओ, पास हाज़िर हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सीना से लगाया और आँखों के बीच में बोसा दिया। (शर्फुल–मुस्तफ़ा)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं हम चन्द मुहाजेरीन के साथ ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर थे, हाज़िरीन में ख़ुलफ़ाए अरबा व तलहा व ज़ुबैर व अब्दुर्रहमान बिन औफ व सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम थे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में हर शख़्स अपने जोड़ की तरफ उठ कर जाए और ख़ुद हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ उठ कर तशरीफ़ लाए उन से मुआनक़ा किया और फरमाया तू मेरा दोस्त है दुनिया व आख़िरत में। (हाकिम, अबू याला)

अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू रिवायत करते हैं हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मुआनक़ा किया और फरमाया मैंने अपने भाई उसमान से मुआनक़ा किया जिसके कोई भाई हो उसे चाहिए अपने भाई से मुआनक़ा करे। (तारीख़ इब्ने असाकिर)

हुज़ूर ने अली को गले लगाया

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मैंने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा हुज़ूर ने मौला अली को लगे लगाया और प्यार किया और फरमाते थे मेरा बाप निसार इस वहीद शहीद पर। (अबू याला)

हुज़ूर ने फातिमा को गले लगाया

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बतूल ज़हरा से फरमाया औरत के हक़ में सबसे बेहतर क्या है अर्ज़ की कि ना–महरम शख़्स उसे न देखे हुज़ूर ने गले से लगाया। (फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 27, 28)

नमाज़ों के बाद मुसाफ़हा की इबाहत

शुरू मुलाक़ात या नमाज़ों के बाद मुसाफ़हा करने में कोई हरज नहीं बल्कि यह जाइज़ व मुबाह है इससे मुसलमानों में उंसियत व मुहब्बत बढ़ती है, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं :

जो लोग बादे क़्याम जमाअत या शुरू तक्बीर आ कर नमाज़ में शामिल हुए कि इमाम व दीगर मुक़्तदीन से क़ब्ल नमाज़ मुलाक़ात न करने पाए उन्हें तो उन से बाद सलाम मुसाफ़हा करना क़तअन सुन्नत, और वह जो बलिहाज़ इस तख़्सीस के बाद फज्र व अस्र या बाद अस्र व मग़्रिब मुतलक़न सदहा साल से मुस्लेमीन में जारी व राइज है इस बारे में असह यही है कि जाइज़ व मुबाह है, हाँ जहाँ मुदावमत से ख़ौफ़ हो कि जुहहाल इस ख़ुसूसियते ख़ास्सा को वाजिब या सुन्नत न समझने लगें वहाँ अह्ले इल्म को मुनासिब कि इन औक़ात में कभी कभी तर्क भी कर दें।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 40)

मुसाफ़हा से गुनाहों का झड़ना

जब दो मुसलमान आपस में एक दूसरे से मिलते और मुसाफ़हा करते हैं तो अल्लाह तआला उनके गुनाहों को माफ़ फरमा देता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब मुसलमान से मुसलमान मिल कर सलाम करता और हाथ पकड़ कर मुसाफ़ा करता है उनके गुनाह झड़ पड़ते हैं जैसे पेड़ों के पत्ते। (तबरानी, बैहक़ी)

दूसरी हदीस में है मुसलमान जब अपने भाई से मिल कर उसका हाथ पकड़ता है उनके गुनाह मिट जाते हैं। (तबरानी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे का हाथ पकड़ें अल्लाह तआला पर हक़ है कि उनकी दुआ क़बूल फरमाये और उनके हाथ जुदा न होने पायें कि उनके गुनाह बख़्श दे। (बज़्ज़ार)

एक और हदीस में है जब दो मुसलमान आपस में मिल कर एक दूसरे का हाथ पकड़ें और दोनों हम्दे इलाही बजा लाएं बेगुनाह हो कर जुदा हों। (मुसनद अहमद, ज़िया, मुख़्तारा)

एक हदीस में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो मुसलमान, मुसलमान से मिल कर मरहबा कहे और हाथ मिलाए उनके गुनाह दरख़्त के पत्तों की तरह झड़ जायें। (बैहक़ी) "रिसाला सफ़ाइहुल–हजीन"

हुज़ूर और फातिमा का मुसाफ़हा

तमाम शहज़ादियों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत फातिमा बतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से सबसे ज़्यादा मुहब्बत फरमाया करते जब बतूल ज़हरा हुज़ूर की ख़िदमत में तशरीफ़ लातीं तो हुज़ूर खड़े हो जाते और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बतूल ज़हरा के यहाँ तशरीफ़ फरमा होते तो वह सरोक़द खड़ी हो जातीं और हुज़ूर के दस्ते अनवर को पकड़ कर बोसा देतीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है जब हज़रत ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ख़िदमते हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर होतीं हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़्याम

फरमाते और उनका हाथ पकड़ कर बोसा देते और अपनी जगह बिठाते और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के यहाँ तशरीफ़ ले जाते वह हुज़ूर के लिए क़्याम करतीं और दस्ते अक़्दस लेकर बोसा देतीं और हुज़ूरे वाला को अपनी जगह बिठातीं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलैहा व बारिक व सल्लिम। (अबू दाऊद) "रिसाला सफाइहुल–हजीन"

एक सहाबी का मुसाफ़हा

सहाबा किराम जब आपस में एक दूसरे से मिलते तो सलाम करते और मुसाफ़हा करते थे। (मुरत्तिब)

अबू दाऊद आमी ने कहा हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुझे मिले मेरा हाथ पकड़ा और मुसाफहा किया और मेरे सामने हंसे फिर फरमाया, तू जानता है मैंने क्यों तेरा हाथ पकड़ा? मैंने अर्ज़ की नहीं मगर इतना जानता हूँ कि आपने कुछ बेहतर ही के लिए ऐसा किया, फरमाया बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुझ से मिले तो हुज़ूर ने मेरे साथ ऐसा ही मुआमला फरमाया। (तबरानी, मोजमे कबीर) "सफ़ाएहुल–हजीन"।

मुसाफ़हा के वक़्त झुकना

सलाम या मुसाफ़हा के वक़्त झुकना न चाहिए, आपस में मिलने के बाद सलाम व मुसाफ़हा कर लिया जाए तो तहीयत व ताज़ीम पूरी हो जाती है।

एक हदीस में है नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाथ पकड़ना कामिले इस्लाम में से है। (तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है कि तुम्हारे आपस में तहीयत की तमामी मुसाफ़हा है। (तिर्मिज़ी)

(आपस में मिलते वक़्त झुकने से मुतअल्लिक़ है कि।)

एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हम में कोई आदमी अपने भाई या दोस्त से मिले तो क्या उसके लिए झुके? फरमाया नहीं, अर्ज़ की क्या, उसे गले लगाए और प्यार करे? फरमाया नहीं। अर्ज़ की, उसका हाथ पकड़े और मुसाफ़हा करे? फ़रमाया हाँ। (तिर्मिज़ी) "सफ़ाएहुल–हजीन"

मुसाफ़हा दोनों हाथों से सुन्नत है

बाज़ लोग यह कहते हैं कि मुसाफ़हा में दोनों हाथ मिलाना ज़रूरी नहीं अगर एक हाथ मिला लिया जाए तो काफी है बल्कि उसी को यह लोग सुन्नत कहते हैं हालांकि मुसाफ़हा दोनों हाथ से करना सुन्नत है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं:

दोनों हाथ से मुसाफ़हा मुसलमानों में सदहा साल से मुतवारिस, अइम्मा दीन के अक़्वाल से साबित और उसका ज़माना तबअ् ताबईन में होना मालूम, ख़ुद अइम्मा तबअ् ताबईन ने दोनों हाथ से मुसाफ़हा किया तमाम बिलादे इस्लाम मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना तैय्यबा से हिन्द व सिंध तक उलमा व अवाम अह्ले इस्लाम दोनों हाथ से मुसाफ़हा करते हैं और जो बात मुसलमानों में मुतवारिस हो बेअसल नहीं हो सकती।

फ़िक़ह व फतावा की किताबों में है कि मुसाफ़हा दोनों हाथ से सुन्नत है।

★ हिन्दीया में है, मुसाफ़हा जाइज़ है सुन्नत इसमें यह है कि अपने दोनों हाथों को इस तौर पर रखे कि दरम्यान में कोई कपड़ा और कोई चीज़ हाइल न हो।

★ क़नीया में है कि मुसाफ़हा दोनों हाथ से सुन्नत है।

★ रद्दुल–मुहतार में है : सुन्नत यह है कि अपने दोनों हाथों से मुसाफ़हा करे।

★ जामे–उर्रुमूज़ में है मुसाफ़हा में सुन्नत यह है कि अपने दोनों हाथों से करे।

★ शरह अल्लामा शैख़ ज़ादा है : मुसाफ़हा में सुन्नत यह है कि दोनों हाथों से करे।

★ शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी शरह मिश्कात में फरमाते हैं कि मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़हा सुन्नत है और यह कि दोनों हाथ से होना चाहिए।

मुसाफ़हा से कीने ख़त्म हो जाते हैं

मुसाफ़हा उमूरे मुआशरत से एक अम्र है जिस से मक़्सूदे शरअ् बाहम मुसलमानों में अज़ दयारे उल्फत और मिलते वक़्त इज़्हारे उन्स व मुहब्बत है।

हदीस में हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हदिया दो और हदिया लो और आपस में मुहब्बत बढ़ाओ, आपस में मुसाफहा करो तुम्हारे सीनों से कीने निकल जायेंगे। (त, मुअत्ता इमाम मालिक)

दूसरी हदीस में है जो मुसलमान, मुसलमान से, मिल कर मरहबा कहे और हाथ मिलाए उनके गुनाह झड़ जाते हैं। (नसबुर्रायह)

हुज्जतुल लाहिल बालेग़ा में है मुसाफ़हा और मरहबा फलां को, और आने वाले से मुआनक़ा वग़ैरह उमूर में मुहब्बत और ख़ुशी ज़्यादा होती है और उन से वहशत और अजनबीयत ख़त्म होती है।

उसी में है, लोगों में मुहब्बत वह ख़सलत है जो अल्लाह तआला की रज़ा का बाइस है और सलाम की आदत मुहब्बत पैदा करने का ज़रीआ है यूंही मुसाफ़हा और दस्त बोसी वग़ैरह भी। (त) "रिसाला सफाइहुल–हजीन"।

लिबास और ज़ीनत

अल्लाह तआला ने इंसान को लिबास से ज़ेब व ज़ीनत करने और सतर पोशी का हुक्म दिया, जानवरों की तरह नंगा रहना इंसान की ख़सलत नहीं, शरीअते मुतह्हरा ने लिबास वग़ैरह की हद बन्दी की है इस हद को तोड़ना या उस से आगे बढ़ना जुर्म क़रार दिया जैसे मर्द के लिए रेशमी कपड़ा हराम और औरत के लिए हलाल है। (मुरत्तिब)

कपड़े में बाना असल है

कपड़े में बाने का एतबार होता है, ताने का लिहाज़ नहीं, बाना अगर रेशम हो मर्द को जायज़ नहीं अगरचे ताना सूत हो, और बाना सूत है तो जायज़ है अगरचे ताना रेशम हो।

(फतावा रज़्वीया अव्वल, स0 679)

सिर्फ़ पाजामा पहन कर निकलना कैसा है?

तन्हा पाजामा पहने राह में निकलने वाला साक़ितुल–अदाला, मरदूदुश्शहादा, ख़फ़ीफ़ुल–हरकात है। यह मसला ख़ूब याद रखने का है कि आजकल अक्सर लोगों में इसकी बेपरवाही फैली है खुसूसन वह जिनके मकान सरे राह हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 158)

मर्द के लिए सुर्ख़ लिबास

सुर्ख़ लिबास मर्द के लिए नामुनासिब व नापसन्दीदा है। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि शैतान सुर्ख़ी को पसन्द करता है लिहाज़ा तुम सुर्ख़ लिबास से बचो और हर वह लिबास जिसमें शोहरत व नामवरी हो उस से भी बचना लाज़िम है।

(त, अबू दाऊद, वल–इसाबा, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 444)

मर्द के लिए अंगूठी कैसी जाइज़ है

एक साहब अंगुश्तरी तलाई पहने हाज़िर हुए उस पर (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने) इरशाद फरमाया :

मर्द को सोना पहनना हराम है। सिर्फ़ एक नग की चाँदी की अंगूठी साढ़े चार माशा से कम की, उसकी इजाज़त है जो सोने या तांबे या लोहे या पीतल की अंगूठी या चाँदी की साढ़े चार माशा से ज़्यादा वज़न की, या कई अंगूठियाँ अगरचे सब मिल कर साढ़े चार माशे से कम हों पहने उसकी नमाज़ मक्रूहे तहरीमी वाजिबुल–एआदा है। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 112)

तांबे या लोहे की अंगूठी जाइज़ नहीं

मर्द व औरत दोनों के लिए तांबे या लोहे की अंगूठी मक्रूह है, चाँदी की अंगूठी तज़्कीरे आख़िरत के लिए जाइज़ रखी गई है कि सोना चाँदी जन्नतियों का ज़ेवर है तांबे वग़ैरह का वहाँ क्या काम।

एक साहब ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए उनके हाथ में पीतल की अंगूठी थी इरशाद फरमाया क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ में बुतों का ज़ेवर देखता हूँ, उन्होंने उतार कर फेंक दी दूसरे दिन लोहे की अंगूठी पहन कर हाज़िर हुए इरशाद फरमाया क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ दोज़ख़ियों का ज़ेवर देखता हूँ उन्होंने उतार कर फेंक दी और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) किस चीज़ की अंगूठी बनाऊं, इरशाद फरमाया चाँदी की बनाओ और एक मिस्क़ाल (यानी साढ़े चार माशे) पूरी न करो।

अंगूठी से मुतअल्लिक़ चन्द मसाइल

★ अंगूठी पहनने का हुक्म बायें हाथ में भी आया है और दहने में भी लेकिन बेहतर यह है कि

दाहिने हाथ की बनसर (वह उंगली जो छंगुलियाँ के पास है) में पहने।

★ अंगूठी में अगर अपना नाम कन्दा हो तो उसे पहन कर बैतुल-ख़ला में जाना मना है, नाम अगर ऐसा ज़्यादा मुअज़्ज़म न हो जब भी हरफ़ों की ताज़ीम तो चाहिए और अगर कोई मुतबर्रक नाम हो तो पहन कर जाना नाजाइज़ है हाँ जेब में रख ले तो हरज नहीं।

★ नगीना पर कलिमा तैय्यबा तबर्रुकन कन्दा करना जाइज़ है और मुहर की हैसियत से हराम।

(अल-मल्फ़ूज़ सोम, स0 2,3)

टोपी या कपड़े में सच्चे काम का हुक्म

सच्चा काम अगर चार अंगुल तक है तो हरज नहीं और अगर चन्द बूटियाँ हैं और हर एक चार अंगुल से ज़्यादा नहीं और दूर से देखने में फ़स्ल मालूम होता हो जब भी कोई हरज नहीं, अगरचे जमा करने से चार अंगुल से ज़्यादा हो जाएं हाँ अगर कोई बूटी चार अंगुल से ज़्यादा है या मुग़रक़ है कि दूर से फ़स्ल न मालूम होता हो तो नाजाइज़।

रेशम का भी यही हुक्म है कि अगर तबअ् मुस्तक़िल हो तो चार अंगुल तक जाइज़ है, मसलन टोपी की गोट जाइज़ है लेकिन रामपूरी जैसी टोपी कि बाज़ चार अंगुल की भी नहीं होती, अगर रेशम की हों तो नाजाइज़ है कि वह ख़ुद मुस्तक़िल हैं, तबअ् मुस्तक़िल नहीं, ऐसे ही तावीज़ कि बाज़ एक अंगुल के भी नहीं होते हैं लेकिन चूंकि मुस्तक़िल हैं इसलिए अगर रेशम के हों तो नाजाइज़।

तांबे पीतल के तावीज़

मर्द व औरत दोनों को तांबे पीतल के तावीज़ मक्रूह, और सोने चाँदी के मर्द को हराम औरत को जाइज़।

सोने चाँदी की घड़ी का हुक्म

चाँदी और सोने की घड़ी रख सकता है अल्बत्ता उसमें वक़्त नहीं देख सकता कि हराम है। इसी तरह आर्सी पहनने में औरत के लिए कोई हरज नहीं और उसमें मुँह देखना हराम।

चाँदी सोना औरत के लिए हलाल है। बाक़ी तुर्क़ इस्तेमाल उसके लिए भी हराम हैं। हाँ खाना दोनों के लिए जाइज़ है, वर्क़ चाँदी सोने के खायें या रेज़ा रेज़ा करके या किश्ता बना कर।

(अल-मल्फ़ूज़ सोम, स0 3,4)

पैराहने अक़्दस में कपड़े

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पैराहन मुक़द्दस में रिदा, तहबन्द, अमामा, यह तो आम तौर से होता था और कभी क़मीस और टोपी, पाजामा एक बार ख़रीदना लिखा है पहनने की रिवायत नहीं।

औरतें भी तहबन्द ही बांधती थीं, एक बार हुज़ूर तशरीफ़ लिए जाते थे राह में एक बीवी का पाँव फिस्ला, रूए मुबारक उस तरफ से फेर लिया, सहाबा ने अर्ज़ किया हुज़ूर वह पाजामा पहने हुए है, इरशाद फरमाया ऐ अल्लाह बख़्श दे उन औरतों को जो पाजामा पहनती हैं। (कंज़ुल-उम्माल)

गले में खिलाल लटकाना कैसा है?

तांबे पीतल का ख़िलाल गले में लटकाना ना जाइज़ है क्योंकि यह तअलीक़ के हुक्म में है, वैसे जाइज़ है और सोने चाँदी का हराम, बल्कि औरतों को भी, ऐसे सोने चाँदी के ज़रूफ़ में खाना नाजाइज़ है और घड़ी की चैन भी। आम अर्ज़ी कि चाँदी की हो या पीतल की, हाँ डोरा बांध सकता है।

(अल-मल्फ़ूज़ सोम, स0 20)

मुहर के लिए अंगूठी का हुक्म

मुहर के लिए चाँदी की अंगूठी एक मिस्क़ाल यानी साढ़े चार माशा से कम की जिसे मुहर की

मुहर के लिए चाँदी की अंगूठी एक मिस्क़ाल यानी साढ़े चार माशा से कम की जिसे मुहर की ज़रूरत होती हो बेशुबह मस्नून है और सोने की या एक मिस्क़ाल से ज़्यादा चाँदी की हराम, और पूरे मिस्क़ाल भर में रिवायतें मुख़्तलिफ़, और हदीस से सरीह गुमानेअदम साबित, तो उसी पर अमल चाहिए और बेज़रूरत मुहर ऐसी अंगुशतरी पहनना मकरूहे तंज़ीही यानी बेहतर यह है कि बचे और यह इस सूरत में है जबकि उसकी हैयते अंगुशतरी ज़नाना से जुदा हो वरना महज़ नाजाइज़ जैसे एक से ज़्यादा नग होना कि यह सूरत औरतों के साथ मख़्सूस है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 14)

सोने चाँदी के बटन का हुक्म

चाँदी के सिर्फ़ बोताम टांकने में हरज नहीं कि कुतुबे फ़िक़ह में सोने की घुंडियों की इजाज़त मिसरह है। घुंडी और बोताम एक चीज़ है सिर्फ़ सूरत का फ़र्क़ है और जब सोना जाइज़ तो चाँदी बदरजहा औला जाइज़ मगर यह चाँदी की ज़ंजीरें कि बोतामों के साथ लगाई जाती हैं वह मम्नूअ़ हैं कि चाँदी सोने के इस्तेमाल में असल हुर्मत है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 34)

मर्दों के लिए बालों में दो तरीक़े हैं

बालों की निस्बत शरअ़ मुतह्हर में सिर्फ़ दो तरीक़े आए हैं।

एक यह कि सारे सर पर रखें और माँग निकालें यह ख़ास सुन्नत हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की है, हज व हजामत यानी पछनों की ज़रूरत के सिवा हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हलक़े शेअर (सर मुंडाना) साबित नहीं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दस साल मदीना में क़्याम फरमाया इस मुद्दत में सिर्फ़ तीन बार यानी साल हुदैबिया व उमरतुल–क़ज़ा व हज्जतुल–विदा में हलक़ फरमाया।

दूसरे यह कि सारा सर मुंडायें यह हज़रत सैय्यदना मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम की आदत थी, वह जनाब बख़ौफ़े जनाबत कि मबादा नहाने में कोई बाल पानी बहने से बाक़ी न रह जाए हलक़ फरमाया करते।

इनके सिवा जितने तरीक़े हैं सब ख़िलाफ़े सुन्नत, और यह नई नई तराशें मसलन एक एक अंगुल के बाल रखना, जब उस से बढ़ें कतरवा देना, या आगे से बड़े पीछे से कतरे हुए, या वस्त सर तालू से पेशानी तक खुलवा देना, या गदी के बाल मुंडाना, या पेशानी से गुद्दी तक सड़क निकालना, या मुंडे सर ख़्वाह बालों की हालत में यानी चौड़ी क़लमें बढ़ा कर रुख़सारों पर झुकाना, या दाढ़ी में मिला देना, यह बातें मुख़ालिफ़ सुन्नत व ख़िलाफ़े वज़अ़ सुलहा–ए–मुस्लेमीन होने के अलावा उनमें अक्सर अक़्वाम कुफ़्फ़ार की ईजाद हैं जिनकी मुशाबेहत से मुसलमानों को बचना चाहिए।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 39)

ख़ालिस रेशम मर्द को हराम है

रेशमीन कपड़ा मर्द को पहनना हराम है हदीस में इस पर सख़्त वईदें वारिद हुई हैं। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं, रेशम न पहनो कि जो उसे दुनिया में पहनेगा आख़िरत में न पहनेगा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो दुनिया में रेशम पहनेगा जन्नत में न जाएगा। (निसाई)

फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, रेशम वह पहनेगा जिसके लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं। (बुख़ारी)

एक हदीस में है हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो रेशम पहनेगा

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे क़यामत के दिन आग का कपड़ा पहनायेगा। (मुसनद अहमद, तबरानी)

हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : जो रेशम पहने अल्लाह तआला उसे एक दिन कामिल आग पहनाएगा, वह दिन तुम्हारे दिनों में से नहीं बल्कि अल्लाह तआला के उन लम्बे दिनों से यानी हज़ार बरस का एक दिन। (तबरानी)

सैय्यदना मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू की हदीस में है मैंने हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि हुज़ूर ने अपने दहने हाथ में रेशम और बाएं हाथ में सोना लिया फिर फरमाया, बेशक यह दोनों मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम हैं।

(अबू दाऊद, निसाई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 64, 65)

तहबन्द और पाजामा पहनना

असल सुन्नत मुस्तमेरा फेअ्लीया हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व अलैहिम अज्मईन एज़ार यानी तहबन्द है। अगरचे एक हदीस में मरवी हुआ है कि अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर पुर नूर सलातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह से अर्ज़ की क्या हुज़ूर पाजामा पहनते हैं फरमाया हाँ सफर व हज़र में शब व रोज़ पहनता हूँ इसलिए कि मुझे सतर का हुक्म हुआ मैंने इससे ज़्यादा सातिर किसी शय को न पाया। मगर यह हदीस बशिद्दत ज़ईफ़ है, हाँ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इसे ख़रीदना बसनद सही साबित है। और ज़ाहिर यही है कि ख़रीदना पहनने ही के लिए होगा। बहरहाल इसमें शक नहीं कि सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ज़मान–ए–अक़्दस में बेइज़्ने अक़्दस पाजामा पहनते।

(अबू याला, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, अल–मवाहिब)

अमीरुल–मुमिनीन उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रोज़े शहादत पाजामा पहने थे।

(अत्तहज़ीब)

एक हदीस में है कि सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम रोज़े मुकालमा तूर ऊन का पाजामा पहने थे। (तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है कि सब में पहले जिसने पाजामा पहना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह हैं। (अबू नईम)

तीसरी हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत से पाजामा पहनने वाली औरतों के लिए दुआए मग़्फ़िरत की और मर्दों को ताकीद फरमाई कि ख़ुद भी पहनें और अपनी औरतों को पहनायें कि इसमें सतर ज़्यादा है। (तिर्मिज़ी)

बिल–जुमला पाजामा पहनना बिला शुबह मुस्तहब बल्कि सुन्नत है, और यह सुन्नते क़ौलीया है। फतावा आलमगीरीया में फरमाया पाजामा पहनना सुन्नत है क्योंकि यह मर्दों और औरतों के लिए तमाम कपड़ों में सबसे ज़्यादा सातिर है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 83)

टख़नों से नीचे कपड़ा निकालना

पाइचों का काबैन से नीचा होना जिसे अरबी में इस्बाल कहते हैं अगर बराहे उजुब व तकब्बुर है तो क़तअन मम्नूअ् व हराम है और उस पर वईद शदीद वारिद हुई है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा जो एज़ार को अज़राहे तकब्बुर लटकाए। (त, बुख़ारी)

दूसरी हदीस में है जो तकब्बुर की नीयत से एज़ार लटकाए अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ नज़र न फरमाए। (त, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

एक और हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला उसकी तरफ नज़रे रहमत न फरमाए जो तकब्बुर से अपना कपड़ा लटकाये। (त, मुस्लिम)

और अगर बवजहे तकब्बुर नहीं तो बहुक्म ज़ाहिर अहादीस मर्दों को भी जाइज़ है।
हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरी एज़ार एक जानिब से लटक जाती है फ़रमाया तू उनमें से नहीं है जो ऐसा बराहे तकब्बुर करता हो।(बुख़ारी)
एक हदीस में है अल्लाह तआला क़यामत के दिन तीन शख़्सों से कलाम नहीं फ़रमायेगा न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमायेगा और न उन्हें सुत्थरा करेगा, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। एज़ार लटकाने वाला, एहसान जतलाने वाला, और झूठी क़सम से सामान बेचने वाला।
(त, मुस्लिम, अबू दाऊद)
इस हदीस से भी यही सूरत मुराद है कि बतकब्बुर इसबाल करता हो वरना हरगिज़ यह वईद शदीद उस पर वारिद नहीं, मगर उलमा अदमे तकब्बुर की सूरत में कराहते तंज़ीही का हुक्म देते हैं।
बिल–जुमला इसबाल अगर बराहे उजुब व तकब्बुर है हराम वरना मकरूह और ख़िलाफ़े औला, न हराम व मुस्तहिक़े वईद, और यह भी उसी सूरत में है कि पाइचा टखनों की जानिब से नीचे हों और अगर इस तरफ़ काबैन से बुलन्द हैं गो पंजा की जानिब पुश्त पा पर हों हरगिज़ कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, इस तरह का लटकाना हज़रत इब्ने अब्बास बल्कि ख़ुद हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से साबित है।
(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 99)

हुज़ूर की क़मीस मुबारक की लम्बाई वग़ैरह

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की क़मीस मुबारक नीम साक़ तक थी।
मवाहिब शरीफ़ में है हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की क़मीसे मुबारक और चादरे अतहर का दामन निस्फ़ साक़ तक था।
एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक क़मीस पहनी जो टखनों के ऊपर तक थी। (त, अबू अश्शैख़)
और कम तूल की क़मीस भी वारिद है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक सूती क़मीस थी जिसकी आस्तीनें छोटी थीं। (त, बैहक़ी, शोअ़बुल–ईमान)
गरेबान मुबारक सीन–ए–अक़्दस पर था, दामन के चाक खुले होना साबित है कि उन पर रेशमी कपड़े की गोट थी और गोट खुले हुए चाकों पर लगाते हैं।
अस्मा बिन्ते अबी बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है उन्होंने एक कसरवानी साख़्त का जुब्बा निकाला जिसकी गोट रेशमी थी और उसके चाक खुले हुए थे। (त, मुस्लिम, अबू दाऊद)
उस ज़माना में घुंडी, तुकमे होते जिनको ज़र व ग़रवह कहते, बटन साबित नहीं, न उनमें कोई हरज है, रंग सब्ज़ व सुर्ख़ भी साबित है और महबूब तर सफ़ेद।
हदीस में है सफ़ेद कपड़े पहनो कि वह ज़्यादा पाकीज़ा और ख़ूब हैं और अपने अम्वात को सफ़ेद कफ़न दो। (मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 104)

मर्द व औरत के लिए मुनासिब रंग

औरत को हर क़िस्म का रंग जाइज़ है जब तक उसमें कोई नजासत न हो और मर्द के लिए दो रंगों का इस्तिसना है मुअसफर और मुज़अफर यानी कसम और केसर, यह दोनों मर्द को ना जाइज़ हैं और ख़ालिस शोख़ रंग भी उसे मुनासिब नहीं।
हदीस में है सुर्ख़ रंग से बचो कि वह शैतान का लिबास है। (त, अबू दाऊद, अल–एसाबा)

बाज़ अय्याम में बाज़ रंग की मुमानेअत

बाक़ी रंग फ़ी नफ़्सेही जाइज़ हैं कच्चे हों या पक्के, हाँ अगर कोई किसी आरिज़ की वजह से मुमानेअत हो जाए तो वह दूसरी बात है जैसे मातम की वजह से सियाह लिबास पहनना हराम है

बल्कि मातम के लिए किसी क़िस्म की तग़ैय्युर वज़अ़ हराम है। इसलिए अय्यामे मुहर्रम शरीफ़ में सब्ज़ लिबास जिस तरह जाहिलों में मुरव्वज है ना जाइज़ व गुनाह है। और ओदा या नीला या आबी या सियाह और बदतर व अख़बस है कि रवाफ़िज़ का शिआर और उनकी तशब्बुह है, इसी तरह इन अय्याम में सुर्ख़ भी नासबी ख़बीस ब नीयत ख़ुशी व शादी पहनते हैं, यूं ही होली के दिनों में चुवरयां और बसन्त के दिनों में बसन्ती कि कुफ़्फार हुनूद की रस्म है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 340)

नाख़ुन और बग़ल वग़ैरह के बालों का हुक्म

चालीस रोज़ से ज़्यादा नाख़ुन, मूए बग़ल, मूए ज़ेरे नाफ रखने की इजाज़त नहीं,बाद चालीस रोज़ के गुनहगार होंगे, एक आध बार में गुनाहे सग़ीरा होगा आदत डालने से कबीरा हो जाएगा, फ़िस्क़ होगा।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मोंछों को पस्त करने, नाख़ुन तराशने, बग़ल के बाल उखेड़ने और ज़ेरे नाफ के बाल मूंडने में वक़्त मुक़र्रर फरमाया है कि उन्हें चालीस दिन से ज़्यादा न छोड़ा जाए। (त, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 392)

कपड़ा तह करके रखना चाहिए

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क़दम–क़दम पर अपनी उम्मत की रहनुमाई फरमाई जहाँ अहकामे शरईया और क़वानीने इलाहीया से आगाह फरमाया वहीं आपने ज़िन्दगी के आदाब व उसूल, रहन सहन के तरीक़े, तर्ज़े मुआशरत और जल्वत व ख़ल्वत के मसाइल भी बताए, कपड़ों को तह करके रखना चाहिए अगर कपड़ा तह किया हुआ रखा हो तो उसको शैतान इस्तेमाल नहीं कर सकता वरना वह अपने तसर्रुफ़ में लाता है इसी तरह बिछौना भी समेट देने का हुक्म है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं शैतान तुम्हारे कपड़े अपने इस्तेमाल में लाता है तो कपड़ा उतार कर तह कर दिया करो कि उसका दम रास्त हो जाए कि शैतान तह किए कपड़े को नहीं पहनता। (इब्ने असाकिर)

दूसरी हदीस में है कि कपड़े लपेट दिया करो कि उनकी जान में जान आए इसलिए कि शैतान जिस कपड़े को लिपटा हुआ देखता है उसे नहीं पहनता और जिसे फैला हुआ पाता है उसे पहनता है। (तबरानी)

एक रिवायत में है जहाँ कोई बिछौना बिछा हो जिस पर कोई सोता न हो उस पर शैतान सोता है। (इब्ने अबी अदुनिया, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 75)

शोहरत का लिबास

शोहरत व नामवरी का लिबास वह है जिसकी तरफ लोगों की उंगलियाँ उठें यानी इस क़दर चमकीला नादिर हो या बिल–क़स्द इतना नाक़िस व ख़सीस कि जिस पर निगाहें पड़ें, या वह लिबास जिसका वह अह्ल नहीं मसलन कोई जाहिल, आलिम का लिबास पहन ले और ख़्याल यह हो कि लोग मुझे आलिम कहें, या सूफ़ियों का लिबास पहनना ताकि लोग उसे सूफ़ी समझें, इस क़िस्म का बेवज़ा लिबास शोहरत वाला कहलाता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसने शोहरत का लिबास पहना उसको अल्लाह तआला भी क़्यामत के दिन ऐसा ही लिबास पहनायेगा।

(त, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

एक रिवायत में है कि जो शोहरत का लिबास पहने क़्यामत के दिन उसे ज़िल्लत का लिबास पहनाया जाएगा। (त, इब्ने माजा)

और एक रिवायत में है फिर जहन्नम की आग में जलाया जाएगा।

अमामा की फ़ज़ीलत

अमामा हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नते मुतवातिरा है जिसका तवातुर यक़ीनन सरहद ज़रूरियाते दीन तक पहुँचा है। आजकल अमामा पाबन्दी के साथ बांधना एक मुर्दा सुन्नत को ज़िन्दा करने के बराबर है मुसलमानों में जब तक अमामा का आम रिवाज रहा उस वक़्त तक वह साहिबे वक़ार रहे जब से अमामा उतार दिया गया मुसलमान दूसरों के मुहताज व दस्त निगर हो गए क्योंकि अमामा से इज़्ज़त व वक़ार बढ़ता है, अमामा हमारा मिल्ली तशख़्ख़ुस है जब तक यह हमारे सरों पर रहा हमारा तशख़्ख़ुस मजरूह न हुआ, अमामा के तअल्लुक़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जो इरशादाते गिरामी हैं वह हर्फ़ बहर्फ़ दुरुस्त व सही हैं। (मुरत्तिब)

अमामा और अहादीस

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

अमामा की फ़ज़ीलत में अहादीसे कसीरा वारिद हैं उनमें से बाज़ कि इस वक़्त पेशे नज़र हैं मज़्कूर होती हैं।

हदीस 1 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हम में और मुश्रिकों में फ़र्क़ टोपियों पर अमामे हैं। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

शरह जामे सग़ीर में है

मुसलमान टोपियाँ पहन कर ऊपर अमामा बांधते हैं तन्हा टोपी काफिरों की वज़अ् है तो अमामा सुन्नत है।

हदीस 2 : टोपी पर अमामा हमारा और मुश्रेकीन का फ़र्क़ है हर पेच कि मुसलमान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़यामत एक नूर अता किया जाएगा। (बावर्दी)

हदीस 3 : अमामे अरब के ताज हैं। (दैलमी मुसनदुल–फिरदौस)

हदीस 4 : अमामे अरब के ताज हैं जब वह अमामा छोड़ दें तो अपनी इज़्ज़त उतार देंगे। (मुसनदुल–फिरदौस)

हदीस 5 : मस्जिदों में हाज़िर हो सर बरहना और अमामे बांधे इसलिए कि अमामे मुसलमानों के ताज हैं। (इब्ने अदी)

हदीस 6 : अमामा बांधो तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा। (तबरानी मोजमे कबीर, हाकिम मुस्तदरक)

हदीस 7 : अमामा बांधो वक़ार ज़्यादा होगा और अमामे अरब के ताज हैं। (इब्ने अदी, बैहक़ी)

हदीस 8 : अमामे मुसलमान के वक़ार और अरब की इज़्ज़त हैं तो जब अरब अमामे उतार दें अपनी इज़्ज़त उतार देंगे। (दैलमी)

हदीस 9 : मेरी उम्मत हमेशा दीने हक़ पर रहेगी जब तक वह टोपियों पर अमामे बांधें। (दैलमी)

हदीस 10 : बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने बद्र व हुनैन के दिन ऐसे मलाइका से मेरी मदद फरमाई जो इस तरज़ का अमामा बांधते हैं, बेशक अमामा कुफ़्र व ईमान में फ़र्क़ है। (सुनने बैहक़ी)

हदीस 11 : इसी तरह अमामे बांधो कि अमामा इस्लाम की निशानी है और वह मुसलमानों और मुश्रिकों में फ़ारिक़ है। (दैलमी)

हदीस 12 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अमामा की तरफ इशारा करके फरमाया फरिश्तों के ताज ऐसे ही होते हैं। (मशीखत इब्ने शाज़ान)

हदीस 13 : अमामे इख़्तियार करो कि वह फ़रिश्तों के शिआर हैं और उनके शिमले अपने पसे

पुश्त छोड़ो। (तबरानी)

हदीस 14 : बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने इस उम्मत को अमामों से मुकर्रम किया। (फ़ज़्ल लिबासुल–अमाइम)

हदीस 15 : अमामे बांधो अगली उम्मतों यानी यहूद व नसारा की मुख़ालिफ़त करो कि वह अमामे नहीं बांधते। (बैहक़ी)

हदीस 16 : बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं जुमा के दिन अमामा वालों पर। (तबरानी कबीर)

हदीस 17 : अमामा के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकी के बराबर है। (दैलमी)

हदीस 18 : अमामे अरब के ताज हैं तो अमामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो अमामा बांधे उसके लिए हर पेच पर एक नेकी है और जब (बिला ज़रूरत या तर्क के क़स्द पर) उतार ले तो हर उतारने पर एक ख़ता है या जब (बज़रूरत बिला क़स्द तर्क बल्कि बइरादए–मआवत) उतारे तो हर पेच उतारने पर एक गुनाह उतरे। दोनों मानी मुहतमिल हैं। (रामहरमज़ी किताबुल–अम्साल)

हदीस 19 : अमामा के साथ दो रकाअतें बेअमामा की सत्तर रकाअतों से अफ़ज़ल हैं।

(मुसनदुल–फ़िरदौस)

हदीस 20 : सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम फरमाते हैं मैं अपने वालिद माजिद अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के हुज़ूर हाज़िर हुआ और वह अमामा बांध रहे थे जब बांध चुके मेरी तरफ इल्तिफ़ात करके फरमाया कि तुम अमामा को दोस्त रखते हो? मैंने अर्ज़ की क्यों नहीं, फरमाया उसे दोस्त रखो इज़्ज़त पाओगे और जब शैतान तुम्हें देखेगा तुम से पीठ फेर लेगा। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना कि अमामा के साथ एक नमाज़ नफ़्ल ख़्वाह फर्ज़ बेअमामा की पचीस नमाज़ों के बराबर है और अमामा के साथ एक जुमा बे अमामा के सत्तर जुमओं के बराबर है। फिर इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया ऐ फरज़न्द अमामा बांध कि फ़रिश्ते जुमा के दिन अमामा बांधे आते हैं और सूरज डूबने तक अमामा वालों पर सलाम भेजते रहते हैं।

(मुसनदुल–फ़िरदौस, इब्ने असाकिर, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 77, 78)

एक और हदीस में है कि एक नमाज़ नफ़्ल हो या फ़र्ज़ अमामा के साथ पचीस नमाज़ बेअमामा की बराबर है और एक जुमा अमामा के साथ सत्तर जुमा बेअमामा के हम्सर।

(इब्ने असाकिर, दैलमी, इब्नुन्नज्जार, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 73)

अमामा की लम्बाई

अमामा में सुन्नत यह है कि ढाई गज़ से कम न हो न छेः गज़ से ज़्यादा। उसकी बन्दिश गुंबद नुमा हो जिस तरह फ़क़ीर (आला हज़रत) बांधता है, अरब शरीफ़ के लोग जैसा अब बांधते हैं तरीक़ा सुन्नत नहीं इसे ऐतजार कहते हैं कि बीच में सर खुला होता है और ऐतजार को उलमा ने मक्रूह लिखा है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 73)

अमामा की लम्बाई के बारे में एक जगह आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू लिखते हैं।

अमाम–ए–अक़्दस के तूल में कुछ साबित नहीं।

★ इमाम इब्नुल–हाज मक्की सात हाथ या उसके क़रीब कहते हैं।

★ और हिफ़्ज़ फ़क़ीर में कलिमात उलमा से है कि कम अज़ कम पाँच हाथ हो और ज़्यादा से ज़्यादा बारा हाथ।

★ और शैख़ अब्दुल–हक़ के रिसाल–ए–लिबास में इक्तीस हाथ तक लिखा है।

और बात यह है कि यह अम्र आदत पर है जहाँ उलमा व अवाम की जैसी आदत हो और उसमें भी कोई महज़ूर शरई न हो इस क़दर इख़्तियार करे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 104)

शिमले की मिक़्दार

शिम्ले की मिक़्दार चार अंगुश्त है और ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ, और बाज़ ने नशिस्तगाह तक रुख़सत दी यानी इस क़दर कि बैठने से मौज़ा जुलूस तक पहुँचे। और ज़्यादा राजेह यही है कि निस्फ़ पुश्त से ज़्यादा न हो जिसकी मिक़्दार तक़रीबन वही एक हाथ है हद से ज़्यादा दाख़िले असराफ़ है और बनीयते तकब्बुर हो तो हराम। यूंही नशिस्तगाह से भी नीचा मसलन रानों या ज़ानू तक, यह सख़्त बुरा व मम्नूअ् और बाज़ इंसान बद वज़अ्, आवारा रिन्दों की वज़अ् है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 184)

शिम्ला के मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू दूसरी जगह फरमाते हैं :

हदीस से मेरे ख़्याल में है कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दो शिम्ले छोड़े हैं, ख़्याल में है कि मआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सर पर दस्ते अक़्दस से अमामा बांधा और दो शिम्ले छोड़े।

और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सर पर अपने दस्ते अनवर से अमामा बांधना और आगे पीछे दो शिम्ले छोड़ना सुनने अबी दाऊद में है तो यह सुन्नत हुआ।

(सुनन अबू दाऊद)

फ़क़ीर इसी सुन्नत के इत्तिबा से बारहा अपने अमामे के दो शिम्ले रखता है। मगर शिम्ला एक बालिश्त से कम न होना चाहिए। यह जो बाज़ लोग तुर्रा के तौर पर चन्द अंगुल ऊंचा सर पर छोड़ते हैं इसका सुबूत मेरी नज़र में नहीं, न कहीं मुमानेअत, तो इबाहते अस्लीया पर है। मगर इस हालत में कि यह किसी शहर में आवारा व फ़ुस्साक़ लोगों की वज़अ् हो तो इस आरिज़ के सबब उस से एहतराज़ होगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 571)

हया व बेहयाई

हया इंसान का ज़ेवर है, जिसकी हया सलामत है उसका ईमान सलामत है, हया की मौजूदगी में गुनाह का सुदूर कम होगा, बेहयाई गुनाहों की जड़ है। जब किसी क़ौम में बेहयाई आम हो जाए तो उसकी हलाकत यक़ीनी है।

अगली उम्मतों में जिन क़ौमों को हलाक कर दिया गया उनमें हया का फ़ुक़्दान था, मुसलमानों को उन क़ौमों की हलाकत ख़ेज़ियों से इबरत हासिल करनी चाहिए। हया ईमान की शाख़ है बेहयाई फहश और बुराई का दरवाज़ा है। शैतान मल्ऊन बेहया है और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल कमाल हया वाला, बेहयाई की बात से हया वाला नाराज़ होता और ग़ज़ब फरमाता है और बेहया यानी शैताने लईन ख़ुश होता है। (मुरत्तिब)

हया ईमान का जुज़ अहम है

हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हया ईमान से है और ईमान जन्नत में है और फहश बकना बे अदबी है और बेअदबी दोज़ख़ में है। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

एक हदीस में है शर्म और कम सुख़नी ईमान की दो शाख़ें हैं और फहश बकना और ज़बान का तर्रार होना निफ़ाक़ के दो शोअ़बे हैं। (मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है कि फहश जब किसी चीज़ में दख़ल पाए उसे ऐबदार कर देगा और हया जब किसी चीज़ में शामिल होगी उसका सिंगार कर देगी। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

बेहयाई व फहश गोई का ज़रर

फहश व बेहयाई की बातें बक्ने के बारे में हदीस इरशाद फरमाती है कि जन्नत हर फ़हश बक्ने वाले पर हराम है।

एक हदीस में है कि फहश बक्ना मंहूस है। (तबरानी)

यहिया बिन ख़ालिद फरमाते हैं जब तू किसी को देखे कि फहश बक्ने वाला है बेहया है तो जान ले कि उसकी असल में ख़ता है। (मुनादी अत्तैसीर, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 183)

वह आदत नेक है जो कमाले हया पर मबनी है और हया जितनी ज़ाइद हो उसी क़दर बेहतर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि हया सरासर बेहतर है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 615)

शराब और उसकी बुराइयाँ

रब तआला ने कुरआन पाक में इरशाद फरमाया है। "कुलू वशरबू" खाओ और पियो, इस इरशादे मुबारक से ज़ाहिर हुआ कि उसने खाने वाली चीज़ के खाने और पीने वाली चीज़ के पीने का हुक्म फरमाया है, मगर जहाँ अल्लाह तआला ने खाने पीने का हुक्म दिया है वहीं उसके लिए हद बन्दी भी फरमाई है और बाज़ चीज़ें हलाल फरमाई हैं और बाज़ चीज़ों को हराम किया है, इंसान को हुदूदे खुदावन्दी का पाबन्द बनाया गया है अगर वह हुदूदुल्लाह को न तोड़े तो वह अज़ाबे आख़िरत से बच सकता है और अगर वह मम्नूआते शरईया से बाज़ न रहे बल्कि उनका इर्तिकाब करे तो जहन्नम की सज़ा और दीगर वईदात से डराया गया है, नेक इंसान वह है जो अहकामे इलाहिया का पाबन्द हो, अहादीस वगैरह में शराब पीने, पिलाने वगैरह के बारे में क्या क्या वईदें आई हैं उन्हें मुलाहिज़ा फरमाएं। (मुरत्तिब)

चालीस दिन की नमाज़ क़बूल न हो

हदीस में है साइब बिन यज़ीद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो कोई नशा की चीज़ पिए चालीस दिन उसकी नमाज़ क़बूल न हो। (तबरानी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 192)

शराबी के पास फरिश्ते नहीं आते

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि फरिश्ते तीन शख़्सों के क़रीब नहीं आते।

★ जनाबत से नापाक रहने वाला यानी जिसे ग़ुस्ल की हाजत हो।

★ मस्त नशा वाला।

★ कपड़ा या बदन में ज़ाफरान का रंग लगाने वाला।

(त, मुसनद बज़्ज़ार, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 75)

शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त

हदीस पाक में है, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह व रसूल (जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) ने शराब, मुरदार, ख़िंज़ीर, और बुतों की बैय हराम फरमाई है। (त, सहाहे सित्ता, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 73)

अंग्रेज़ी दवाओं का हुक्म

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू अंग्रेज़ी रक़ीक़ दवाओं के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं :

अंग्रेज़ी दवाओं में जितनी दवायें रक़ीक़ होती हैं। जिन्हें टिंकचर कहते हैं उन सब में यक़ीनन शराब होती है, वह सब हराम भी हैं और नापाक भी, न उनका खाना हलाल, न बदन पर लगाना जाइज़, क्योंकि स्प्रिट ही रूह शराब होती है, बल्कि वह तमाम शराबों में अख़बस है और वह हराम व गन्दी और पेशाब की तरह नजासते ग़लीज़ा है।

तंबीह मुसन्निफ़

मुसलमान इसे ख़ूब समझ लें और डॉक्टरी इलाज में उन नापाकियों, नजासतों से बचें ख़ुसूसन सख़्त आफत उस वक़्त है कि इन इलाजों में क़ज़ा आ जाए और मुसलमान इस हालत में मरे कि

मालूम हो कि दौरे हाज़िर के हमारे बाज़ उलमा ने बक़द्रे ज़रूरत और मुक़य्यद बक़ुयूद जवाज़ का फ़तवा दिया है कि जिन दवाओं में अल–कोहल की आमेज़िश होती है वह अब जाइज़ हैं क्योंकि इस दौर में बलाए अज़ीम में इब्तिला आम है लेकिन अह्ले एहतियात व अह्ले तहक़ीक़ बदस्तूर अदमे जवाज़ के क़ाइल और इसी पर आमिल हैं। (मुरत्तिब)

पेशावर शराब फरोश के हाथ कोई चीज़ बेचना

अगर शराब बेचने वाला मुसलमान है और उसके पास सिवाए शराब की आमदनी के और कुछ नहीं तो उससे कोई चीज़ बेचना हराम है। यानी जबकि वह क़ीमत उसी माले हराम से दे और अगर उसने किसी से माल हलाल क़र्ज़ लिया है और माल हलाल के एवज़ उस से कुछ ख़रीदता है तो बेचने में हरज न होगा। और अगर काफिर है या उसके पास सिवाए उसके और भी आमदनी है तो जाइज़ है। कुफ़्फ़ार के लिए शराब और ख़िंज़ीर ऐसे हैं जैसे हमारे लिए सिर्का और बकरी।

(अल–मल्फ़ूज़ सोम, 23)

शराब से मुतअल्लिक़ कामों का हुक्म

शराब का बनाना, बनवाना, छूना, उठाना, रखना, रखवाना, बेचना, बिकवाना, मोल लेना, लेवाना, सब हराम हराम हराम है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने शराब और शराब पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले, बिकवाने वाले, निचोड़ने वाले, निचोड़वाने वाले, उठाने वाले, जिसके लिए उठाया जाए और उसकी क़ीमत खाने वाले पर लानत फरमाई है।

(त, अबू दाऊद, हाकिम)

और जिस नौकरी में यह काम या शराब की निगहदाश्त, उसके दामों का हिसाब किताब करना हो सब शरअन नाजाइज़ है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 392)

अफ़्यून का हुक्म

अफ़्यून नशा की हद तक खाना हराम है और इसे बैरूनी इलाज मसलन लेप व तला में इस्तेमाल करना, या ख़ुर्दनी माजूनों में इतना क़लील हिस्सा दाख़िल करना कि रोज़ की क़द्र शर्बत नशे की हद तक न पहुँचे तो जाइज़ है। और जब वह मासियत के लिए मुतअय्यन नहीं तो उसके बेचने में हरज नहीं मगर उसके हाथ बेचना जाइज़ नहीं जिसकी निस्बत मालूम हो कि नशा की ग़रज़ से खाने या पीने को लेता है। और जब उसकी तिजारत मुतलक़न हराम न हुई, बल्कि जाइज़ सूरतों पर भी मुश्तमिल हुई तो ज़्यादा मिक़्दार ताजिरों के हाथ बेचना और हल्का हो गया कि यहाँ गुनाह का तअय्युन बिल्कुल नहीं और ताजिरों का नशादारों के हाथ बेचना उनका फ़ेअल है। यह सूरतें अफ़्यून के जवाज़ की निकलती हैं और अह्ले तक़्वा को इससे एहतराज़ ज़्यादा मुनासिब।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 453)

ताड़ी का हुक्म

ताड़ी फ़ी नफ़्सेही एक दरख़्त का अर्क़ है जब तक उसमें जोश व नशा न आए तैय्यिब व हलाल है जैसे शीर–ए–अंगूर, लोगों का ब्यान है कि अगर कोरा घड़ा वक़्त मग़्रिब बांधें और वक़्ते तुलूअ़ उतार कर उसी वक़्त इस्तेमाल करें तो उसमें जोश नहीं आता। अगर यह अम्र साबित हो तो उस वक़्त तक वह हलाल व ताहिर होती है, जब जोश लाए नापाक व हराम हुई।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 226)

हासिल यह कि अगर ताड़ी में नशा पैदा हो जाए तो जाइज़ नहीं वरना जाइज़ है उसमें जब हरारत व गर्मी पैदा होती है तो उसमें नशा आ जाता है इसलिए रात की निकली हुई को अगर

तुलू–ए–आफ़ताब से पहले पहले इस्तेमाल किया जाए तो जाइज़ है, मगर उससे एहतराज़ ही में सलामती है। (मुस्लिम)

शराब की हुर्मत व वईद

शराब नोशी पर वईदें, शराबी का हुक्म, उसका इस्तेहक़ाक़े अज़ाब और शराब की हुर्मत व नजासत ब्यान करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

शराब हराम और पेशाब की तरह नापाक और उसका पीना सख़्त गुनाहे कबीरा और पीने वाला सख़्त फासिक़, फाजिर, मरदूद, मल्ऊन मुस्तहिक़ अज़ाब शदीद व एक़ाबे अलीम है, अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उस पर सख़्त सख़्त वईदें, हौलनाक तहदीदें फरमाईं।

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं शराब पीते वक़्त शराबी का ईमान ठीक नहीं रहता। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस : जो ज़िना करे या शराब पिए अल्लाह तआला उस से ईमान खींच लेता है जैसे आदमी अपने सर से कुरता खींच ले। (हाकिम)

हदीस : तीन शख़्स जन्नत में न जायेंगे।

1. शराबी
2. अपने क़रीब रिश्तादारों से बद–सुलूकी करने वाला।
3. जादू की तस्दीक़ करने वाला।

जो शराबी बेतौबा मर जाए अल्लाह तआला उसे वह ख़ून और पीप पिलाएगा जो दोज़ख़ में फाहिशा औरतों की बुरी जगह से इस क़दर बहेगा कि एक नहर हो जाएगा दोज़ख़ियों को उनकी फुर्ज की बदबू अज़ाब पर अज़ाब होगी। वह सख़्त बदबू गन्दी पीप जो बदकार औरतों की फ़र्ज से बहेगी उस शराबी को पीनी पड़ेगी। (अहमद, हाकिम)

मुसलमान ज़रा आंख़ बन्द करके ग़ौर करे कि शराब छोड़ना क़बूल है या उस पीप के घूंट निगलना।

हदीस : शराबी अगर बेतौबा मरे तो अल्लाह तआला के हुज़ूर इस तरह हाज़िर होगा जैसे कोई बुत पूजने वाला।

हदीस : जो शख़्स शराब की एक बूंद पिये चालीस रोज़ तक उसकी कोई नमाज़ क़बूल न हो और जो मर जाए और उसके पेट में शराब का एक ज़र्रा भी हो तो जन्नत उस पर हराम कर दी जाएगी और जो शराब पीने से चालीस दिन के अन्दर मरेगा, वह ज़माना कुफ़्र की मौत मरेगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

हदीस : मेरे रब ने अपनी इज़्ज़त की क़सम याद फरमाई है कि मेरा जो बन्दा एक घूंट शराब का पियेगा मैं उसे उसके बदले जहन्नम का वह खौलता हुआ पानी पिलाऊंगा अगरचे वह बख़्शा ही गया हो और जो किसी छोटे को पिलाएगा जब भी उसकी सज़ा में वह पानी पिलाऊंगा अगरचे मग़फूर ही हो और मेरा जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से शराब छोड़ेगा उसे अपने पाक दरबार में पिलाऊंगा।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 10, स0 47, 48)

अफ़्यूनी का हुक्म व इस्तेहक़ाक़े अज़ाब

अफ़्यून खाने वाले से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

अफ़्यूनी ज़रूर फासिक़ व मुस्तहिक़े अज़ाब है।

सही हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हर चीज़ कि नशा लाए और हर चीज़ कि अक़्ल में फ़ुतूर डाले हराम फरमाई। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद)

अफ़्यूनी को ख़ैरात देनी

अफ़्यूनी अगर खाने पीने का सवाल करे तो अगर मालूम है कि यह पैसा अफ़्यून खाने में सर्फ़ करेगा तो देना जाइज़ नहीं कि गुनाह पर मदद होगी और अगर अफ़्यूनी भूखा मुहताज हो तो उसके भूखे होने की नीयत से खाना देने में हरज नहीं बल्कि सवाब है कि भूखे कुत्ते का भी पेट भरना बाइसे अज्र है आदमी तो आदमी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हर गर्म तर जिगर वाले में सवाब है।
(त, फतावा रज़्वीया जिल्द 10, स0 49)

मुरक्कब दवा में अफ़्यून, भंग या चरस का इस्तेमाल?

नशा बज़ातेही हराम है, नशा की चीज़ें पीना जिस से नशा बाज़ों की मुशाबेहत हो, अगरचे वह नशा तक न पहुँचे यह भी गुनाह है, यहाँ तक कि उलमा ने तस्रीह फरमाई है कि ख़ालिस पानी, दौरे शराब की तरह पीना भी हराम है, हाँ अगर दवा के लिए किसी मुरक्कब में अफ़्यून या भंग या चरस का इतना जुज़ डाला जाए जिसका अक़्ल पर बिल्कुल असर न हो हरज नहीं बल्कि अफ़्यून में इससे भी बचना चाहिए कि इस ख़बीस का असर है कि मेअ़्दे में सूराख़ कर देती है जो अफ़्यून के सिवा किसी बला से नहीं भरते तो ख़्वाही नख़्वाही बढ़ानी पड़ती है। (अहकामे शरीअत दोम, स0 166)

तौबा के फ़वाइद

इंसान के अन्दर जहाँ ताअत व बन्दगी और इबादते इलाही का मलिका व सलाहीयत है यूं ही इंसान से इस्यान व गुनाह भी सरज़द हो सकता है आम्मतुन्नास चूंकि गुनाहों से मासूम व महफ़ूज़ नहीं इसलिए उन से गुनाहों का सुदूर हो जाता है और वह हुदूदे इलाहीया तोड़ने का इर्तिकाब कर बैठते हैं, मगर इंसान के अन्दर एक जज़्बा यह भी है कि वह गुनाह के बाद नादिम व पशेमान होते हैं जो तौबा व रुजूअ़ इलल्लाह की एक क़िस्म है हदीस फरमाती है कि सुदूरे गुनाह के बाद नादिम होना ही तौबा है और एक हदीस में है कि गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उससे गुनाह सादिर हुआ ही नहीं, अल्लाह तआला अपने बन्दों में तौबा करने वालों को महबूब रखता है और उसके गुनाहों को माफ़ फरमा देता है। (मुरत्तिब)

सच्ची तौबा का मतलब और उसकी बरकत

सच्ची तौबा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने वह नफीस शय बनाई है कि हर गुनाह के एज़ाला को काफी व वाफी है, कोई गुनाह ऐसा नहीं कि सच्ची तौबा के बाद बाक़ी रहे यहाँ तक कि शिर्क व कुफ़्र भी सच्ची तौबा से ज़ाइल हो जाते हैं, सच्ची तौबा के यह मायने हैं कि गुनाह पर इसलिए कि वह उसके रब अज़्ज़ा व जल्ल की नाफरमानी थी नादिम व पशेमान हो कर फौरन छोड़ दे और आइंदा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा अज़्म करे, जो चार–ए–कार उसकी तलाफ़ी का अपने हाथ में हो बजा लाये, मसलन नमाज़ रोज़े के तर्क या ग़सब, सरक़ा, रिश्वत, रिबा से तौबा की तो सिर्फ आइंदा के लिए इन जराइम का छोड़ देना ही काफ़ी नहीं बल्कि उसके साथ यह भी

ज़रूरी है कि जो नमाज़, रोज़े नाग़ा किए उनकी क़ज़ा करे, जो माल जिस जिस से छीना, चुराया, रिशवत, सूद में लिया उन्हें और वह न रहे हों तो उनके वारिसों को वापस कर दे, या माफ़ कराए। पता न चले तो उतना माल तसद्दुक़ कर दे और दिल में नीयत रखे कि वह लोग जब मिले अगर इस तसद्दुक़ पर राज़ी न हुए, अपने पास से उन्हें फिर दूंगा। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 97)

एलानिया गुनाह दोहरा गुनाह

असल यह है कि गुनाह एलानिया दोहरा गुनाह है कि एलाने गुनाह दूसरा गुनाह बल्कि उससे भी बदतर गुनाह है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मेरी सब उम्मत आफ़ियत में है सिवा उनके जो गुनाहे आशकारा करते हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

गुनाह पोशीदा की तौबा पोशीदा और आशकारा की आंशकारा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जहाँ तक हो सके अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से तक़्वा लाज़िम रख और हर पत्थर और हर पेड़ के पास अल्लाह की याद और जब कोई गुनाह करे उस वक़्त तौबा ला, ख़ुफ़िया की ख़ुफ़िया और आशकारा की आशकारा।

दूसरी हदीस में है कि जब तुझ से नया गुनाह हो फौरन नई तौबा कर, निहां की निहां अयां की अयां।

नीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि बन्दों से अज़ाब हमेशा उठा हुआ रहेगा। जब तक वह गुनाहों को छुपाते रहेंगे, फिर जब वह गुनाहों को आशकारा करेंगे तो उन पर दोज़ख़ का अज़ाब लाज़िम हो जाएगा। (त, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 255)

यानी अगर गुनाह एलानिया तौर पर हो तो उसकी तौबा भी एलानिया होगी और अगर गुनाह ख़ुफ़िया तौर पर हो तो उसकी तौबा भी ख़ुफ़िया होगी, गुनाह करने के बाद उसे ज़ाहिर करना और ज़्यादा गुनाह है बन्दा जब तक गुनाह को छुपायेगा तो हो सकता है अल्लाह तआला उसे बख़्श दे और अगर वह गुनाह को ज़ाहिर कर दे तो अब वह अज़ाब का लाज़मी तौर पर मुस्तहिक़ हो जायेगा। परवरदिगार की बारगाह में तौबा करने से मग़्फ़िरत की क़वी उम्मीद है। (मुरत्तिब)

तौबा अब्द से रब तआला का ख़ुश होना

अल्लाह का बन्दा जब तौबा लाता है रब के हुज़ूर तो वह उस से ज़्यादा ख़ुश होता है जितना वह शख़्स जिसकी ऊंटनी मअ ज़ादेराह के गुम हो गई उसके मिल जाने पर ख़ुश हो।

बरैली के एक शख़्स की अजीब शान से तौबा

जिस गुनाह में सिर्फ़ हक्कुल्लाह हो हक़्क़ुल-अब्द न हो वह तौबा से माफ़ हो जाएगा और बाज़ वह हैं जिनमें हक़्क़ुल-अब्द भी शामिल होता है तो जब तक उस से माफ़ न कराए सिर्फ़ तौबा से माफ़ न होंगे।

बरैली में ग़दर से पहले एक साहब ने अजीब शान से तौबा की कि न ऐसा कहीं देखा न सुना, किसी औरत के साथ उन से गुनाह सरज़द हुआ बाद को नादिम हुए एक गढ़ा क़द्दे आदम अकेले मकान में आ कर खोदा और उस औरत के शौहर को वहाँ ला कर उस गढ़े में कूदे तल्वार उसको दी उस वक़्त कहा यह ख़ता मुझ से सरज़द हुई है ख़्वाह क़त्ल करके मुझ को इस गढ़े में दफन कर दे किसी को ख़बर न होगी या अल्लाह के वास्ते माफ़ कर दे उसकी ज़बान से कुछ न निकला और माफ़ ही करना पड़ा। (अल-मल्फ़ूज़ सोम, स0 44, 45)

एक सहाबी और एक सहाबिया की तौबा के वाक़ेआत

अह्दे रिसालते [illegible] में [illegible] ... यह हुआ कि

मुज्रिमों ने ख़ुद इक़रार कर लिया।

★ पहला वाक़िया हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का।

★ दूसरा एक सहाबिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का।

दोनों मुजिरम बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और शरई सज़ा के ख़्वास्तगार हुए कि हम पाक हो जाएं दोनों को संगसार किया गया, जिस वक़्त हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को संगसार किया आप भागे लेकिन संगसारियों ने पकड़ कर क़त्ल कर दिया और ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर कुल वाक़िया ब्यान किया। फरमाया तुमने छोड़ क्यों नहीं दिया जब वह भाग था और फरमाया उसने ऐसी तौबा की कि अगर तमाम शहर पर तक़्सीम की जाए सबको काफ़ी हो।

सहाबा किराम में से एक साहब ने हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की निस्बत कुछ बुरे अल्फ़ाज़ फरमाए उस पर इरशाद हुआ बुरा न कहो मैं देखता हूँ कि वह जन्नत की नहरों में ग़ोता लगा रहा है। (अबू दाऊद)

इसी तरह सहाबिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने अपने जुर्म का ख़िदमते अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर इक़रार किया और सज़ा की ख़्वास्तगार हुई इरशाद फरमाया तेरे पेट में हमल है बाद वज़ा हमल आना, बाद फराग़ हमल बच्चा को लेकर हाज़िर हुईं और अर्ज़ की कि इस बच्चा को अब क्या करूं फरमाया उसको दूध पिलाओ। यह इरशादे आली सुन कर वह बी बी वापस गईं और बाद दो बरस बच्चा को लेकर हाज़िर हुईं बच्चा के हाथ में रोटी का टुकड़ा था, अर्ज़ की हुज़ूर अब यह रोटी खुद खाता है, बच्चा लेकर रज्म फरमाया।

(अबू दाऊद, अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 75, 76)

गुनाह की सियाही

गुनाह के मैल तौबा से धुल जाते हैं और वह ऐसा हो जाता है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही नहीं और गुनाह से दिल पर सियाह दाग़ पड़ जाता है अगर तौबा करके गुनाह से बाज़ रहे तो वह दाग़ ख़त्म हो जाता और दिल साफ़ हो जाता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है, जब बन्दा कोई गुनाह करता है उसके दिल में एक सियाह धब्बा पड़ जाता है पस अगर वह उस से जुदा हो गया और तौबा इस्तिग़फार की तो उसका दिल साफ हो जाता है और अगर दोबारा किया तो और सियाही बढ़ती है यहाँ तक कि उसके दिल पर छा जाती है। और यही वह ज़ंग जिसका अल्लाह तआला ने ज़िक्र फरमाया कि यूं नहीं बल्कि ज़ंग चढ़ा दिया है उनके दिलों पर उन गुनाहों ने जो वह करते थे।

(तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 308)

ताइब को आर दिलाना जाइज़ नहीं

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल बन्दों की तौबा क़बूल फरमाता है और सच्ची तौबा के बाद गुनाह बिल्कुल बाक़ी नहीं रहते।

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं गुनाह से तौबा करने वाला बेगुनाह के मिस्ल है। (इब्ने माजा)

इसलिए किसी को इस गुनाह पर आर दिलाना जाइज़ नहीं जिससे वह सच्ची तौबा कर चुका है ऐसे शख़्स के लिए वईद वारिद हुई। (मुरत्तिब)

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी अपने भाई को ऐसे गुनाह से ऐब लगाए जिससे तौबा कर चुका है तो यह ऐब लगाने वाला न मरेगा जब तक ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला न हो जाए। (तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 225)

तौबा के लिये बुलन्दी पर जाने का हुक्म और उसकी हिकमत

अल्लाह तआला इंसान की शहे रग से भी ज़्यादा उसके क़रीब है और वह अपने बन्दों के तमाम अहवाल की ख़बर रखता है। बन्दा जिस जगह भी तौबा करे वह मक़्बूल है लेकिन अगर बुलन्द जगह पर जाकर तौबा व रुजूअ़ लाये तो वह क़बूलीयत की ज़्यादा दलील है जब वह बुलन्दी पर जायेगा तो गुनाह की जगह से ज़्यादा दूर हो जायेगा यही उसके क़बूल होने की दलील है, एक हदीस में है बन्दा से जहाँ पर गुनाह सरज़द हो तौबा उस जगह से हट कर करे।

(मुरत्तिब)

हदीस में है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी का हर बोल उस पर लिखा जाता है तो जो गुनाह करे फिर अल्लाह तआला की तरफ़ तौबा करना चाहे उसे चाहिए बुलन्द जगह पर जाए और अल्लाह तआला की तरफ हाथ फैला कर कहे इलाही मैं इस गुनाह से तेरी तरफ रुजूअ़ लाता हूँ अब कभी इधर औद न करूंगा अल्लाह तआला उसके लिए मग़्फ़िरत फरमा देगा जब तक उस गुनाह को फिर न करे। (हाकिम, तबरानी कबीर)

तौबा के लिए बुलन्द पर जाने की यही हिक्मत है कि हत्तल–वसा मौज़ा मासियत से दूरी और महले ताअत व मंज़िले रहमत यानी आसमान से कुर्ब हासिल हो।

जब सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का ज़माना इंतिक़ाल क़रीब आया। बन में तशरीफ़ रखते थे और अर्ज़े मुक़द्दसा पर जब्बारैन का क़ब्ज़ा था, वहाँ तशरीफ़ ले जाना मयस्सर न हुआ दुआ फरमाई कि उस पाक ज़मीन से मुझे एक संग पर्ताब क़रीब कर दे। यानी एक पत्थर फेंकने की मिक़्दार क़रीब कर दे ताकि अर्ज़े मुक़द्दसा की बरकत हासिल रहे।

(बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 542)

हराम माल, ज़बानी तौबा से पाक नहीं होता

बाज़ लोग ज़रिया हराम से माल व दौलत जमा करते हैं फिर तौबा करते हैं तो क्या तौबा करने से हराम माल, हलाल हो जाएगा? इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फ़ैसला कुन अंदाज़ में फरमाते हैं :

ज़बानी तौबा से हराम माल पाक नहीं हो सकता, बल्कि तौबा के लिए शर्त है कि जिस जिस से माल लिया है वापस दे वह न रहे हों तो उनके वारिसों को दे। पता न चले तो इतना माल तसद्दुक़ कर दे। उसके बग़ैर गुनाह से बराअत नहीं। (अहकामे शरीअत सोम, स0 233)

हलाल कमाई और तिजारत व हिरफत

अल्लाह तबारक व तआला ने बन्दों पर जहाँ अहकामे शरईया व दीनीया फर्ज़ फरमाए और उनका बन्दों को पाबन्द बनाया वहीं उसने हमारी रोज़ी और कमाई के रास्ते भी मुतअय्यन किए ज़रिया मआश में इंसान को आज़ाद नहीं छोड़ा गया बल्कि उसकी भी हद बन्दी की गई और बताया गया कि यह हलाल है और वह हराम है, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने भी हलाल कमाई की ताकीद फरमाई और रिज़्क़े हराम से मना फरमाया और अपने हाथ की कमाई को सबसे बेहतर खाना क़रार दिया गया, अपने दस्त व बाज़ू की कुव्वत से रोज़ी हासिल करना हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की भी सुन्नते करीमा है और दीगर अंबिया किराम की भी अलैहिस्सलातु वस्सलाम। (मुरत्तिब)

हज़राते अंबिया व मुरसलीन सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैहिम से ज़्यादा किस का तवक्कुल, और उन से बढ़ कर तक़्दीरे इलाही पर किसका ईमान, फिर भी वह हमेशा तदबीर फरमाते और उसकी राहें बताते और ख़ुद कसबे हलाल में सई करके रिज़्क़े तैय्यिब खाते।

★ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़िरहें बनाते।

अल्लाह तआला फरमाता है :

और हमने दाऊद को तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें (दुश्मन के वार की) आंच से बचाए। (अल–अंबिया स० 80)

और फरमाता है :

और हमने उसके लिए लोहा नर्म किया कि वसीअ़ ज़िरहें बना और बनाने में अंदाज़े का लिहाज़ रख। (सबा, 10)

★ हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दस बरस हज़रत शुऐब अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बकरियां उजरत पर चराईं। यानी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी बेटी का निकाह हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इस महर पर कर दिया कि वह आठ या दस साल उनकी बकरियाँ चरायें हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह मुद्दत पूरी की और अपनी बीवी को लेकर चले गए।

★ ख़ुद हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत उम्मुल–मुमिनीन ख़दीजा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का माल बतौर मज़ारिबत (यह तिजारत में एक क़िस्म की शिरकत है कि एक जानिब से माल हो और एक जानिब से काम) लेकर शाम को तशरीफ़ फरमा हुए।

★ हज़रत अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु व हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बड़े नामी गिरामी ताजिर थे।

★ हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कपड़े का कारोबार करते थे।

कसबे हलाल और अहादीस

हलाल मआश की सई व तलाश जिस से अपने और अपने मुतअल्लेक़ीन के तन बदन की परवरिश ज़रूरी है। अहादीस में इसकी बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं। (मुरत्तिब)

हदीस : आदमी पर फर्ज़ के बाद दूसरा फर्ज़ यह है कि कसबे हलाल की तलाश करे। (तबरानी कबीर, बैहक़ी)

हदीस 2 : तलबे हलाल आदमी पर वाजिब है। (दैलमी)

हदीस 3 : कभी किसी शख़्स ने कोई खाना अपने हाथ की कमाई से बेहतर न खाया और बेशक

अल्लाह के नबी दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपनी दस्तकारी की उजरत से खाते।

(बुख़ारी, मुसनद अहमद)

हदीस 4 : सबसे ज़्यादा पाकीज़ा खाना वह है जो अपनी कमाई से खाओ। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

हदीस 5 : किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सबसे बेहतर कसब कौन सा है फरमाया अपने हाथ की मज़दूरी और हर मक़बूल तिजारत कि मफ़ासिदे शरईया से ख़ाली हो।

(तबरानी औसत, अहमद बज़्ज़ार)

हदीस 6 : बेशक अल्लाह तआला मुसलमान पेशावर को दोस्त रखता है। (तबरानी, बैहक़ी)

हदीस 7 : जिसे मज़दूरी से थक कर शाम आए उसकी वह शाम मग़फ़िरत हो। (तबरानी औसत)

हदीस 8 : पाक कमाई वाले के लिए जन्नत है। (तबरानी कबीर, सुनने बैहक़ी)

हदीस 9 : दुनिया देखने में हरी चखने में मीठी है यानी बज़ाहिर बहुत ख़ुशनुमा व ख़ुश ज़ाइक़ा मालूम होती है।

जो उसे हलाल वजह से कमाए और हक़ जगह पर उठाए अल्लाह तआला उसे सवाब दे और अपनी जन्नत में ले जाए। (बैहक़ी)

हदीस 10 : यह माल हरा भरा और मीठा है जो उसे हक़ तरीक़े पर हासिल करे उसके लिए उसमें बरकत होगी। (त, तिर्मिज़ी)

हदीस 11 : कुछ गुनाह ऐसे हैं जिनका कफ़्फ़ारा न नमाज़ हो, न रोज़े, न हज, न उमरा, उनका कफ़्फ़ारा वह परेशानियाँ होती हैं जो आदमी को तलाशे मआश की हालत में पहुँचती हैं।

(इब्ने असाकिर, अबू नईम)

सहाबा रिज़्वानुल्लाह तआला अलैहिम ने एक शख़्स को देखा कि तेज़ व चुस्त किसी काम को जा रहा है। अर्ज़ की या रसूलुल्लाह क्या ख़ूब होता अगर उसकी यह तेज़ी व चुस्ती ख़ुदा की राह में होती।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर यह शख़्स अपने लिए कमाई को निकला है कि सवाल वग़ैरह की ज़िल्लत से बचे तो उसकी यह कोशिश अल्लाह ही की राह में है, और अगर अपने छोटे छोटे बच्चों के ख़्याल से निकला है जब भी ख़ुदा की राह में है, और अगर अपने बूढ़े माँ–बाप के लिए निकला है जब भी ख़ुदा की राह में है। हाँ अगर रिया व तफ़ाख़ुर के लिए निकला है तो शैतान की राह में है। (तबरानी)

इसी लिए तर्के कसब से साफ मुमानेअत आई है।

हदीस में है हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम्हारा बेहतर वह नहीं है जो अपनी दुनिया, आख़िरत के लिए छोड़ दे, और न वह जो अपनी आख़िरत, दुनिया के लिए तर्क करे, बेहतर वह है जो दोनों से हिस्सा ले कि दुनिया व आख़िरत का वसीला है, अपना बोझ औरों पर डाल कर न बैठ रहो। (इब्ने असाकिर)

इन अहादीस से साबित हुआ कि तलाशे हलाल व फ़िक्रे मआश व तआती असबाब हरगिज़ मनाफी तवक्कुल नहीं बल्कि ऐन मर्ज़ी–ए–इलाही है कि आदमी तदबीर करे और भरोसा तक़्दीर पर रखे।

इसी लिए जब एक सहाबी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की अपनी ऊंटनी यूं हीं छोड़ दूँ और ख़ुदा पर भरोसा रखूं या उसे बांधूं और ख़ुदा पर तवक्कुल करूं? इरशाद फरमाया बांध दे और तकिया ख़ुदा पर रख। (तिर्मिज़ी, शअ़बुल–ईमान)

रोज़ी में अच्छी तलब इख़्तियार करना

आजकल लोग रोज़ी की तलाश या रोज़ी कमाने में हलाल व हराम की तमीज़ नहीं करते बस यह ख़्याल होता है कि पैसा आना चाहिए चाहे वह कैसा ही क्यों न हो, इस्लामी तक़ाज़ा यह है कि अच्छे ज़रिया से रोज़ी तलाश करे जो जाइज़ व नेक हो क्योंकि इंसान को वही मिलता है जो उसके मुक़द्दर में होता है न उस से कम मिलेगा न उस से ज़्यादा इसलिए अच्छी रविश और जाद–ए–ऐतदाल से क़दम न हटाए। (मुरत्तिब)

इसलिए हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दुनिया की तलब में अच्छी रविश से उदूल न करो कि जिसके मुक़द्दर में जितनी लिखी है ज़रूर उसके सामान मुहैया पायेगा। (इब्ने माजा, हाकिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ऐ लोगो! अल्लाह से डरो और तलबे रिज़्क़ नेक तौर पर करो कि कोई जान दुनिया से न जाएगी जब तक अपना रिज़्क़ पूरा न ले ले तो अगर रोज़ी में देर देखो तो ख़ुदा से डरो और रविश महमूद पर तलाश करो, हलाल को लो और हराम को छोड़ो। (इब्ने माजा, हाकिम)

एक और हदीस में है बेशक रूहुल–क़ुदस जिब्रील ने मेरे दिल में डाला कि कोई जान न मरेगी जब तक अपनी उम्र और अपना रिज़्क़ पूरा न कर ले, तो ख़ुदा से डरो और नेक तरीक़े से तलाश करो और ख़बरदार रिज़्क़ की ताख़ीर तुम में किसी को उस पर न लाये कि नाफ़रमानी ख़ुदा से उसे तलब करे कि अल्लाह का फ़ज़्ल तो उसकी ताअत ही से मिलता है। (अबू नईम)

दूसरी हदीस में है हाजतें इज़्ज़ते नफ़्स के साथ तलब करो कि सब काम तक़्दीर से चलते हैं।

(इब्ने असाकिर, तमाम किताबुल–फवाइद, फतावा रज़्वीया 11, स0 173, 179, 185)

ज़रिया जिहाद से माल हासिल करना

अल्लाह की राह में जिहाद के ज़रिया जो माल हासिल होता है वह बेहतरीन रिज़्क़ है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया मुझे क़यामत से आगे तल्वार देकर भेजा गया। ताकि लोग अल्लाह की इबादत करें और मेरा रिज़्क़ नेज़ों के साए में है। (त, मुसनद अहमद, अबू याला, तबरानी)

ख़ुदा की राह में जिहाद बरपा रखने से सेहत व दौलत हासिल होती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिहाद को लाज़िम कर लो ताकि तुम सेहतमन्द और ग़नी हो जाओ। (त, इब्ने अदी)

राहे ख़ुदा में जिहाद के लिए हथियार या तीर वग़ैरह बनाने से जो रोज़ी मयस्सर हो वह पाक और बाबरकत है।

हुज़ूर सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मुसलमान का पाक कसब उसका फी सबिलिल्लाह तीर बनाना है। (त, शीराज़ी, किताबुल–अल्क़ाब, अल–जामेउस्सग़ीर)

यह इसलिए कि जो चीज़ अल्लाह तआला के दीन में हिर्स के तौर पर हो उस से बढ़ कर कोई चीज़ पाकीज़ा नहीं। और यह कि यह अमले तिजारत वग़ैरह से अफ़्ज़ल है, क्योंकि यह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का कसब व अमल है। (त, ख़ैरुल–अमाले फ़ी हुक्मिल–कसबे वस्सुवाले)

फ़ुज़ूल ख़र्ची की मज़म्मत

इंसान माल कमा कर अच्छी रविश में ख़र्च करे क्योंकि क़यामत के दिन उस से सवाल होगा कि तुमने माल कमा कर कहाँ पर ख़र्च किया अगर ख़ुदा की राह में उठाया है तो बेहतर है वरना अगर असराफ़ और फ़ुज़ूल खर्ची या गुनाह की बातों में उठाया है तो उसका जवाब देना होगा और उसका

जवाब बहुत ही सख़्त है, याद रखो एक एक ज़र्रा का हिसाब लिया जाएगा, कुरआन व हदीस में फुज़ूल खर्ची को शैतान का भाई कहा गया है। (मुरत्तिब)

अल्लाह तआला फरमाता है :

बेजा ख़र्च न किया करो क्योंकि बेजा फुज़ूल ख़र्ची करने वाले श्यातीन के भाई होते हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। (त, अल–असरा, 26, 27)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

बेशक अल्लाह तआला ने तुम पर माओं की नाफरमानी हराम कर दी और बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर करना और बुख़्ल करना और गदागरी करना और इधर उधर की फुज़ूल बातें करना तुम पर हराम कर दिया है। और फरमाया ज़्यादा सवाल करना और माल को ज़ाए करना भी हराम कर दिया गया है। (बुख़ारी व मुस्लिम, हादीयुन्नास फी रुसूम अल–आरास)

अपने हाथ की कमाई

इंसान की सबसे बेहतर रोज़ी और उसका उम्दा खाना उसके अपने दस्त व बाज़ू की कुव्वत की कमाई है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि आदमी का सब से बेहतर व उम्दा खाना उसके अपने हाथ की कमाई है।

(त, बुख़ारी, मुसनद अहमद)

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम भी अपनी मेहनत की रोज़ी खाते थे।

एक हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह के नबी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने हाथ के अमल से खाते थे। (त, बुख़ारी)

(सैय्यदना अबू दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अमल कुरआन अज़ीम से मालूम है कि वह ज़िरहें बनाते थे अल्लाह तआला ने उन्हें यह मोजज़ा अता फरमाया था कि लोहा उनके हाथ में मोम की तरह नर्म हो जाता था। मुरत्तिब) (रिसाला सफ़ाएहुल–हजीन)

तन्दुरुस्त का भीख माँगना

आदमी अगर तवाना व तन्दुरुस्त है तो उसे भीख माँगनी जाइज़ नहीं और न उसे कुछ देना जाइज़, तन्दुरुस्ती एक अज़ीम नेमत है, अगर वह कुछ मेहनत के ज़रिया करे तो वह इस भीख से बदरज–ए–औला बेहतर है। (मुरत्तिब)

उलमा फरमाते हैं हट्टे कट्टे, जवान, तन्दुरुस्त जो भीख माँगने के आदी होते और उसी को अपना पेशा कर लेते हैं उन्हें देना जाइज़ नहीं है कि इसमें गुनाह पर शह देनी है। लोग न दें तो झक मारें और मेहनत मज़दूरी करें। (फतावा रज़्विया जिल्द 1, स0 217)

मजबूरी में सवाल करना

तन्दुरुस्त व तवाना शख़्स को सवाल करना या भीख माँगनी जाइज़ नहीं लेकिन अगर कोई मजबूरी दर पेश हो तो ऐसी सूरत में उसके लिए सवाल करना जाइज़ होगा बल्कि मजबूरी व इज़्तिरार के वक़्त नाजाइज़ व मम्नूअ् चीज़ भी मुबाह व जाइज़ हो जाती है। (मुरत्तिब)

अगर कोई मुसलमान भूख या प्यास से मरता हो, उसकी एआनत मुसलमानों पर फर्ज़ है, ऐसी हालत में अगर वह दूसरे के पास खाना पानी पाए उस पर माँगना फर्ज़ है, और यह ख़ुद मज्बूराना मुहताज न हो तो उस पर देना फर्ज़ है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 755)

बेवजह शरई सवाल की मज़म्मत

बेज़रूरते शरई सवाल करने से मुतअल्लिक़ एक इस्तिफ़्ता के जवाब में आला हज़रत इमाम

अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

"बेज़रूरत शरई सवाल करना हराम है और जिन लोगों ने बावजूद कुदरत कसब बिला ज़रूरत सवाल करना अपना पेशा कर लिया वह जो कुछ उस से जमा करते हैं सब नापाक व ख़बीस है और उनका यह हाल जान कर उनके सवाल पर कुछ देना दाख़िले सवाब नहीं बल्कि नाजाइज़ व गुनाह और गुनाह में मददगार है।

लेकिन अगर बेसवाल कुछ दे जैसे लोग उलमा व मशाइख़ की ख़िदमत करते हैं तो उसके लिए लेने में कोई हरज नहीं, बल्कि नीयत नेक हो तो देने और लेने वाले दोनों दाख़िले सवाब हैं ख़ुसूसन जबकि लेने वाला हाजत रखता हो।

हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अमीरुल-मुमिनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को कुछ अता भेजी उन्होंने वापस हाज़िर की कि हुज़ूर ने हमें हुक्म दिया था कि किसी से कुछ न लेने में भलाई है फरमाया यह बहालत सवाल है और जो बे-सवाल आए वह तो एक रिज़्क़ है कि मौला तआला ने तुझे भेजा अमीरुल-मुमिनीन ने अर्ज़ की वल्लाह अब किसी से कुछ सवाल न करूंगा और बेसवाल जो चीज़ आएगी ले लूंगा।

(मुअत्ता मालिक, शैख़ैन)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तवनगरी से देने वाला कुछ लेने वाले से अफ़ज़ल नहीं जबकि वह हाजत रखता हो। (तबरानी कबीर)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक और सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

जो अपनी ज़रूरियाते शरईया के लाइक़ माल रखता है या उसके कसब पर क़ादिर है उसे सवाल हराम है और जो उस माल से आगह हो उसे देना हराम और लेने वाला और देने वाला दोनों गुनहगार व मुब्तलाए गुनाह हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं सदक़ा हलाल नहीं है किसी ग़नी के लिए न किसी क़वी तन्दुरुस्त के लिए। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दारमी)

नीज़ फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो लोगों से सवाल करे और उसके पास वह शय हो जो उसे बेनियाज़ करती हो रोज़े क़यामत उस हाल पर आएगा कि उसका वह सवाल उसके चेहरा पर ख़राश व ज़ख़्म हो। (तिर्मिज़ी, दारमी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो अपना माल बढ़ाने को लोगों से उनके माल का सवाल करता है वह जहन्नम की आग का टुक्ड़ा मांगता है अब चाहिए थोड़ी ले या बहुत।

(अहमद, मुस्लिम, इब्ने माजा)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो बे हाजत व ज़रूरते शरईया सवाल करे वह जहन्नम की आग खाता है। (मुसनद अहमद, इब्ने ख़ुज़ैमा, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 499, 501)

ख़ुदा का वास्ता देकर मांगना

बाज़ लोग ख़ुदा का वास्ता देकर मांगते हैं यानी यह कहते हैं कि ख़ुदा के वास्ते कुछ दे दो व बाज़ फ़क़ीर भी इसी तरह सवाल करते हैं हालांकि इस तरह से मांगना जाइज़ नहीं लेकिन अगर इस तरह मांग ही ले तो ज़रूर देना चाहिए, हदीस में ऐसे शख़्स को मल्ऊन कहा गया है जो ख़ुदा का वास्ता देकर मांगे और उसे भी मल्ऊन कहा गया है जिससे ख़ुदा का वास्ता देकर मांगा जाए और वह न दे।

(मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मल्ऊन है जो अल्लाह का वास्ता देकर कुछ मांगे और मल्ऊन है जिससे ख़ुदा का वास्ता देकर मांगा जाए फिर वह उस साइल को न दे जबकि उसने कोई बेजा सवाल न किया हो। (तबरानी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिस से ख़ुदा का वास्ता देकर कुछ मांगा जाए और वह दे दे तो उसके लिए सत्तर नेकियाँ लिखी जाएं। (बैहक़ी शअ़बुल–ईमान)

और मरवी कि फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो तुम से ख़ुदा का वास्ता देकर मांगे उसे दो और न देना चाहो तो उसका भी इख़्तियार है। (हकीम तिर्मिज़ी, नवादिरुल–उसूल)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अल्लाह के वास्ते से सिवा जन्नत के कुछ न मांगा जाए। (अबू दाऊद)

उलमा–ए–किराम फरमाते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का वास्ता देकर सिवा उख़रवी दीनी शय के कुछ न मांगा जाए और मांगने वाला अगर ख़ुदा का वास्ता देकर मांगे और देने वाले का उस शय के देने में कोई दीनी व दुनियवी हरज न हो तो मुस्तहब व मुअक्कद देना है वरना न दे।

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जो ख़ुदा का वास्ता देकर मांगे मुझे यह ख़ुश आता है कि उसे कुछ न दिया जाए यानी ताकि यह आदत छोड़ दे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 10, स० 91)

तिलावत व इबादात पर उजरत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू क़ुरआने अज़ीम की तिलावत और इबादात व ईसाले सवाब और मीलाद ख़्वानी पर उजरत व नक़्दी लेने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

ताअत व इबादात पर उजरत लेना देना मुतलक़न हराम है, हाँ क़ुरआने अज़ीम की तालीम व उलूमे दीन व अज़ान व इक़ामत वग़ैरहा चन्द अशिया कि जिन पर एजारा करना मुतअख़्ख़ेरीन ने नाचारी व मज्बूरी की बिना पर हाले ज़माना को देखते हुए जाइज़ रखा है। तिलावते क़ुरआन अज़ीम ईसाले सवाब की ग़रज़ से और हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मीलाद पाक का ज़िक्र शरीफ़ ज़रूर मिनजुमला इबादात व ताअत हैं तो उन पर इजारा भी ज़रूर हराम व मम्नूअ़ है।

इजारा जिस तरह सरीह अक़्द ज़बान से होता है उरफन मारूफ व मअ़हूदे शर्त से भी हो जाता है मसलन पढ़ने पढ़वाने वालों ने ज़बान से कुछ न कहा मगर जानते हैं कि देना होगा, वह समझ रहे हैं कि कुछ मिलेगा। उन्होंने इस तौर पर पढ़ा, उन्होंने इस नीयत से पढ़वाया, इजारा हो गया।

और अब दो वजह से हराम हुआ।

★ एक तो ताअत पर इजारा यह ख़ुद हराम।

★ दूसरे उजरत अगर अरफन मुअय्यन नहीं तो उसकी जिहालत से इजारा फासिद, यह दूसरा हराम।

पस अगर क़रार दाद कुछ न हो, न वहाँ लेन देन मअ़हूद व मुक़र्रर होता हो। तो बाद को बतौर सिला व हुस्न सुलूक कुछ देना जाइज़ बल्कि हसन होता, मगर जबकि इस तरीक़ा का वहाँ आम रिवाज हो तो सूरते सानिया में दाख़िल हो कर हराम महज़ है।

जवाज़ का हीला व तदबीर

अब उसके हलाल होने के दो तरीक़े हैं।

अव्वल : यह कि पढ़ने से पहले पढ़ने वाले सराहतन कह दें कि हम कुछ न लेंगे, पढ़वाने वाले साफ इंकार कर दें कि तुम्हें कुछ न दिया जाएगा, इस शर्त के बाद वह पढ़ें। और फिर पढ़वाने वाले बतौर सिला जो चाहें दे दें, यह लेना देना हलाल होगा।

दोम : पढ़वाने वाले पढ़ने वालों से वक़्त व उजरत की तअय्युन से उन से मुतलक़ कारे ख़िदमत पर पढ़ने वालों को इजारा में ले लें, मसलन यह उन से कहें हमने कल सुबह सात बजे से बारा बजे

तक एक रुपया के एवज अपने काम काज के लिए इजारा में लिया वह कहें हमने क़बूल किया, अब यह पढ़ने वाले इतने घंटों के लिए उनके नौकर हो गए, वह जो काम चाहें लें, इस इजारा के बाद वह उन से कहें, इतने पारे कलामुल्लाह शरीफ़ के पढ़ कर सवाब फलां व फलां को बख़्श दो, या मज्लिसे मीलाद व मुबारक पढ़ दो, यह जाइज़ होगा। और लेना देना हलाल।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स० 159)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर यूं है :

उजरत पर कलामुल्लाह शरीफ़ बग़र्ज़े ईसाले सवाब पढ़ना, पढ़वाना, दोनों नाजाइज़, और पढ़ने वाला और पढ़वाने वाला दोनों गुनहगार, और उसमें मैयत के लिए कोई नफ़ा नहीं, बल्कि उसकी मर्ज़ी वसीयत से हो तो वह भी वबाल में गिरफ़्तार, और यह कहना कि हम अल्लाह के लिए पढ़ते हैं और देने वाले भी हमें अल्लाह के लिए देते हैं महज़ झूठ है। अगर यह न पढ़ें तो वह एक दाना उनको न दें, और अगर वह न दें तो यह एक सफ़ः न पढ़ें।

और शरअ् मुतह्हर का क़ाइदा कुल्लिया है कि जो मारूफ़ व मशहूर हो वह मशरूत व मुक़र्रर की तरह है। बल्कि इस ज़ाहिरी शर्त न करने से एक और ख़बासत बढ़ जाती है, इजारा जो जाइज़ अम्र पर हो अगर तअय्यन उजरत के बग़ैर हो तो जिहालत के सबब से इजारा फ़ासिदा और अक़्दे हराम है न कि वह इजारा जो ख़ुद नाजाइज़ था वह तो हराम दर हराम हो गया।

तरीक़—ए—हिल्लत

हां अगर उसकी हिल्लत चाहें तो उसका तरीक़ा यह है कि पढ़वाने वाले वक़्ते मुअय्यन के साथ मसलन रोज़ाना सुबह के 7 बजे से 10 बजे तक और शाम के 2 बजे से 4 बजे तक, या जो वक़्त मुक़र्रर करें, एक उजरते मुअय्यना पर मसलन 4 रुपया या जो क़रार पाए उन हाफ़िज़ों को अपने कारे ख़िदमत के लिए नौकर रखें, उस वक़्त मुअय्यन के लिए यह उनके मुलाज़िम हो गए उन्हें इख़्तियार है जो काम चाहें लें, उनमें से एक काम यह है कि फलां मैयत के लिए कुरआने अज़ीम पढ़ो, अब यह हलाल है, देना वाजिब और लेना रवा, कि अब यह इजारा कुरआन ख़्वानी पर नहीं बल्कि उन हाफ़िज़ों के मुनाफ़े नफ़्स पर है, यहाँ तक कि अगर यह उस वक़्त मुक़र्रर पा पाबन्दी के साथ हाज़िर रहें और मुस्ताजेरीन उनसे कुछ काम न लें, जब भी तन्ख़्वाह वाजिब होगी।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 8, स० 181)

मोमिन की नाख़ुशी में उसका माल लेना

माल का मुआमला यह है कि साहिबे माल की ख़्वाहिश किसी एक चीज़ पर ख़त्म नहीं होती बल्कि एक के बाद दूसरे और ज़्यादा की आरज़ू होती है यहाँ तक कि दूसरे के माल की तरफ निगाह ग़लत से देखा जाता और उसे हड़पने की नापाक कोशिश की जाती है जिसके लिए अहादीस में ख़ौफनाक वईदें आई हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है जनाब सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : किसी मुसलमान का माल हलाल नहीं मगर उसकी जी की ख़ुशी से। (दारे कुतनी)

दूसरी हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मुसलमान हो हलाल नहीं कि अपने मुसलमान भाई की छड़ी बे उसकी मर्ज़ी के ले और यह इस सबब से है कि अल्लाह तआला ने मुसलमान का माल मुसलमान पर सख़्त हराम किया है।

(इब्ने हिब्बान, फतावा रज़्वीया जिल्द 7, स० 28)

दाढ़ी के मसाइल व अहकाम

अल्लाह तआला ने इंसान को अच्छी शक्ल व सूरत अता फरमाई, औरत व मर्द के दरम्यान वाज़ेह फ़र्क़ व इम्तियाज़ रखा, यह जिन्सी तफ़रीक़ शक्ल व सूरत, वज़अ् क़तअ्, रहन सन, आदात व अतवार वग़ैरह हर चीज़ में रखी गई यहाँ तक कि शरीअत के अहकाम भी दोनों के लिए बाज़ मसाइल में अलग अलग हैं, मर्दों को दाढ़ियों से ज़ीनत बख़्शी गई और औरतों को सर के बाल बढ़े रखने का हुक्म दिया गया ताकि दोनों अपने अपने दाइर–ए–एतदाल पर रहें, हद से तजावुज़ न करें, वरना मर्द व औरत में से कोई किसी से मुशाबेहत इख़्तियार करे तो इसकी सख़्त मुमानेअत व वईद वारिद हुई है। (मुरत्तिब)

दाढ़ी सुन्नते अंबिया है

दाढ़ी शरीअत की मुक़र्रर हद से कम न कराना वाजिब और हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सुन्नते दाइमी और अह्ले इस्लाम के लिए शआइर से है और इसका ख़िलाफ़ मम्नूअ् व हराम और कुफ़्फ़ार का शिआर।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : दस चीज़ें अंबिया–ए–इज़ाम अलैहिमुस्सलात वस्सलाम की सुन्नत क़दीम हैं उन में से मोंछें कम कराना और दाढ़ी हदे शरअ् से छोड़ देना। (मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं : मुश्रेकीन से मुख़ालिफ़त करो दाढ़ियाँ पूरी और मोंछें कम करो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

बाज़ अहादीस में वारिद है कि मोंछें कम कराओ, दाढ़ियाँ छोड़ दो और मजूस की सी शक्ल न बनाओ।

सुन्नते सुन्नीया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को तर्क और मुशरेकीन व मजूस की रस्म इख़्तियार करना मुसलमान कामिल का काम नहीं, इसके अलावा इसमें ख़ुदावन्दा तआला की ख़िल्क़त को बदलना है जो मम्नूअ् है और बहुक्मे हदीस मूजिबे लानते इलाही है।

दाढ़ी चढ़ाना, हुज़ूर की बेज़ारी का मूजिब

इसी तरह दाढ़ी ग़ैर जिहाद में चढ़ाना नाजाइज़ व मम्नूअ् है, ऐसे शख़्सों की निस्बत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि लोगों को ख़बर दे दो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन से बेज़ार हैं। (तिर्मिज़ी)

दाढ़ी मुंडानी हुज़ूर की बेज़ारी का सबब

और ज़ाहिर है कि दाढ़ी कतरवाना, या मुंडवाना, चढ़ाने से सख़्त तर है कि इसमें फ़क़त सिफ़त सुन्नत का बदलना है और उन में बदलना या असल का ख़त्म कर देना, इसके बावजूद अगर तौबा नसीब हो तो यह सरीअ्–उज़्ज़वाल और उनका इज़ाला न होगा मगर एक ज़माना के बाद, जब चढ़ाने की ऐसी वईद शदीद वारिद और हुज़ूर उसके मुर्तकिब से बेज़ारी ज़ाहिर फरमाएं तो कतरने और मुंडाने से किस क़दर नाराज़ व बेज़ार होंगे, रसूले मुज्तबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नाराज़ी पर दुनिया व आख़िरत में जो समराते बद मुरत्तब हैं दिल मोमिन उन से ख़ूब वाक़िफ़ है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 29)

दाढ़ी की शरई हद और उसकी पैमाइश

रेश एक मुश्त यानी चार अंगुल तक रखना वाजिब है इससे कमी नाजाइज़, और जब तक इस

हद से आगे न बढ़े उसे किसी क़दर भी तराशना जाइज़ नहीं, ग़रज़ लेहया से कुछ लेना भी उसी हालत से मशरूत है जबकि तूल में हदे शरई तक पहुँच जाए। मिक़दार ठोढ़ी के नीचे से ली जाएगी यानी छूटे हुए बाल एक मुश्त हों, वह जो बाज़ बेबाक जुह्हाल लबे ज़ीरीं के नीचे से हाथ रख कर चार अंगुल नापते हैं कि ठोढ़ी से नीचे एक ही अंगुल रहे। यह महज़ जिहालत और शरअ् मुतह्हर में बेबाकी है, इससे ज़ाइद अगर तूले फाहिश, हदे ऐतदाल से ख़ारिज, बेमौक़ा बदनुमा हो तो बिला शुबह ख़िलाफ़े सुन्नत व मकरूह, कि सूरत बदनुमा बनाना, अपने मुँह पर दरवाज़–ए–तअन सख़रिया खोलना, मुसलमानों को इस्तेहज़ा व ग़ीबत की आफत में डालना हरगिज़ शरअ् मुतह्हर की मर्ज़ी नहीं।

बेजा दराज़ी रेश मतलूबे शरअ् नहीं

हदीस में आया है हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी की सआदत से है दाढ़ी का हल्का होना यानी यह कि बेहद दराज़ न हो। (तबरानी, इब्ने अदी कामिल)

सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अमर अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अपनी रेश मुबारक मुट्ठी में लेकर जिस क़दर ज़्यादती होती कम फरमा देते। (अबू दाऊद, निसाई)

बल्कि यह कम फरमाना ख़ुद पुर नूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैहि से मासूर व मरवी है। हमारे अइम्म–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने उसी को इख़्तियार फरमाया और आम्मा कुतुब मज़्हब में तस्रीह फरमाई कि दाढ़ी में सुन्नत यही है कि जब एक मुश्त से ज़ाइद हो कम कर दी जाए बल्कि बाज़ अकाबिरे उलमा ने उसे वाजिब फरमाया अगरचे ज़ाहिर यही है कि यहाँ वजूब से मुराद सुबूत है इस्तेलाही वजूब नहीं।

लिहाज़ा हमारे उलमा के नज़्दीक एक मुश्त से ज़ाइद की सुन्नत हरगिज़ साबित नहीं बल्कि वह ज़ाइद के तराशने को सुन्नत फरमाते हैं तो उसका ज़्यादा बढ़ाना ख़िलाफ़े सुन्नत मक्रूहे तंज़ीही होगा।

दाढ़ी में मसलके हन्फ़ी का हासिल

बिल–जुम्ला हमारे उलमा रहमहुमुल्लाहु तआला का हासिल मसलक यह है कि एक मुश्त तक बढ़ाना वाजिब और उस से ज़ाइद रखना ख़िलाफ़े अफ़्ज़ल और उसका तरशवाना सुन्नत, हाँ थोड़ी ज़्यादत जो ख़त से ख़त हो जाती है इस ख़िलाफ़े औला से बिज़्ज़रूरा मुस्तस्ना होना चाहिए वरना किस चीज़ का तराशना सुन्नत होगा।

एक हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी रेश मुबारक के बाल अर्ज़ व तूल से लेते थे। (तिर्मिज़ी)

उलमा फरमाते हैं यह उस वक़्त होता था जब रेशे अक़्दस एक मुश्त से तजावुज़ फरमाती। एक रिवायत में है कि रेशे मुबारक तबअ़न चार अंगुल थी उस से कम या ज़्यादा नहीं होती थी। एक क़ौल यह है कि उलमा व मशाइख़ को एक मुश्त से ज़्यादा रखना भी दुरुस्त है।

(मदारिजुन्नबुव्वह)

उमर, उस्मान और अली की दाढ़ी

अमीरुल–मोमिनीन उमर फारूक़ व हज़रत उस्मान ग़नी, व हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि. अल्लाहु तआला अन्हुम की रेशे मुक़द्दस सीना को भी भर देती थी। (मदारिजुन्नबुव्वह)

ग़ौसे आज़म की दाढ़ी

हमारे मुर्शिद हुज़ूर शैख़ुल–इस्लाम मुहीयुद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल–क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का बदन मुबारक दुबला था और क़ामत शरीफ़ म्याना, सीना मुक़द्दस चौड़ा रेश मुनव्वर पहन व दराज़। (बहजतुल–असरार, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 68 ता 70)

दाढ़ी कहाँ से कहाँ तक होती है?

दाढ़ी क़ल्मों के नीचे से कंपटियों, जबड़ों, ठोढ़ी पर जमती है और अरज़न उसका बालाई हिस्सा कानों और गालों के बीच में होता है, जिस तरह बाज़ लोगों के कानों पर रोंगटे होते हैं वह दाढ़ी से ख़ारिज हैं, यूहीं गालों पर जो ख़फ़ीफ़ बाल किसी के कम, किसी के आंखों तक निकलते हैं वह भी दाढ़ी में दाख़िल नहीं, यह बाल क़ुदरती तौर पर मूए–रेश से जुदा व मुम्ताज़ होते हैं, इसका मुसलसल रास्ता जो क़ल्मों के नीचे से एक मख़रूती शक्ल पर ठोढ़ी की जानिब जाता है यह बाल इस राह से जुदा होते हैं, उनके साफ़ करने में कोई हरज नहीं बल्कि कभी उनका बाक़ी रखना बदनुमाई का सबब होता है जो शरअन हरगिज़ पसन्दीदा नहीं।

दाढ़ी का जुज़ है

नीचे के होंठ के नीचे वस्त में जो ज़रा से बाल होते हैं यह सिलसिला रेश में वाक़े हैं कि उस से किसी तरह इम्तियाज़ नहीं रखते तो उन्हें दाढ़ी से जुदा ठहराने की कोई वजह नहीं, वस्त में जो बाल ज़रा से छोड़े जाते हैं जिन्हें अरबी में उनक़ा और हिन्दी में बुच्ची कहते हैं वह दाख़िल रेश हैं।

अमीरुल–मुमिनीन फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी हुआ कि जो कोई उन्हें मुंडाता उसकी गवाही रद्द फरमा देते हैं। (मदारिजुन्नबुव्वह)

तो बीच में यह दोनों तरफ के बाल जिन्हें अरबी में फ़नीकीन, हिन्दी में कोठे कहते हैं क्योंकर दाढ़ी से ख़ारिज हो सकते हैं, दाढ़ी के बाब में यही हुक्म है कि उसके किसी जुज़ का मुंडाना जाइज़ नहीं।

उलमा ने तस्रीह फरमाई कि कोठों का उखेड़ना बिदअत है, अमीरुल–मुमिनीन उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ ने ऐसे शख़्स की गवाही रद्द फरमाई।

हाँ अगर यहाँ बाल इस क़दर तवील व अंबोह हों कि खाना खाने, पानी पीने, कुल्ली करने में मुज़ाहिमत करें तो उनका कैंची से बक़द्रे हाजत कम कर देना रवा है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 86, 87)

हुज़ूर की रेश मुबारक किस अंदाज़ की थी

दाढ़ी का हुक्मे शरई मुलाहिज़ा करने के बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रेश मुतह्हर से मुतअल्लिक़ चन्द अहादीसे करीमा से अपने दिलों को मुनव्वर व मुजल्ला करें जिन से मालूम हो जाएगा कि हुज़ूर की रेशे मुक़द्दस किस अंदाज़ की थी। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रेश मुबारक में बाल कसीर व अंबोह थे। (मुस्लिम)

हदीस 2 : हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अज़मत वाले निगाहों में अज़ीम दिलों में मुअज़्ज़म थे चेहर–ए–मुबारक माह दो हफ़्ता की तरह चमकता, जगमगाती रंगत, कुशादा पेशानी, घनी दाढ़ी। (शमाइले तिर्मिज़ी, तबरानी)

हदीस 3 : अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं मेरे मां–बाप उन पर क़ुरबान म्याना क़द थे, गोरा रंग जिसमें सुर्ख़ी झलकती, घनी दाढ़ी। (इब्ने असाकिर)

हदीस 4 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सर मुबारक बुज़ुर्ग और रेशे मुतह्हर बड़ी थी। (बैहक़ी)

हदीस 5 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का रंग गोरा सुर्ख़ी आमेज़, आंखें बड़ी ख़ूब सियाह, दाढ़ी घनी। (इब्ने असाकिर)

हदीस 6 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्म पाक की बनावट तमाम

जहाँ से बेहतर, चेहरा तमाम आलम से ख़ूबतर, महक सारे ज़माना से ख़ुशबूतर, हथेलियाँ सब लोगों से नर्म तर, बाल कानों की लौ तक (फिर अपने रुख़सारों की तरफ़ इशारा करके बताया कि) रेशे मुबारक यहाँ से यहाँ तक भरी हुई थी। (इब्ने असाकिर)

हदीस 7 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मुँह गोरा, दाढ़ी घनी, आंखों के कौवों में सुर्ख़ी, पल्कें दराज़। (इब्ने असाकिर)

इमाम क़ाज़ी अयाज़ शिफ़ा शरीफ़ में फरमाते हैं रेशे मुतह्हर घनी सीना मुनव्वर को भरे हुए। यहाँ सीना से मुराद उसका बालाई किनारा है कि गले की इंतिहा है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 123)

अहादीस में दाढ़ी रखने की ताकीद

दाढ़ी रखना हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नते जमीला है हुज़ूर ने उसके लिए मुतअद्दद अहादीस में ताकीदी हुक्म फरमाया है, चन्द अहादीस मुलाहिज़ा फरमायें।

(मुरत्तिब)

1. मुश्रिकों का ख़िलाफ़ करो मूंछें ख़ूब पस्त और दाढ़ियाँ कसीर व वाफ़िर रखो।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

2. मूंछें मिटाओ और दाढ़ियां बढ़ाओ। (बुख़ारी)
3. ख़ूब पस्त करो मूंछें और छोड़ रखो दाढ़ियाँ। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)
4. बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुक्म फरमाया मूंछें ख़ूब पस्त करने और दाढ़ियाँ माफ़ रखने का। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)
5. मूंछें कतरवाओ और दाढ़ियाँ बढ़ने दो, आतिश परस्तों का ख़िलाफ़ करो। (अहमद, मुस्लिम)
6. मूंछें तरशवाओ और दाढ़ियाँ बढ़ाओ। (मुसनद अहमद)
7. कसीर करो दाढ़ियाँ और मूंछों में से लो। (तबरानी)
8. मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को माफ़ी दो, यहूदियों की सी सूरत न बनो।

(शरह मआनी अल–आसार)

9. मूंछें कतरवाओ और दाढ़ियों को कसरत दो, यहूद व नसारा का ख़िलाफ़ करो।

(अहमद, तबरानी, बैहक़ी)

10. पूरी करो दाढ़ियाँ और तराशो मूंछें। (तबरानी कबीर)

111 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मजूस का ज़िक्र किया फरमाया वह अपनी लबें बढ़ाते और दाढ़ियाँ मूंडते हैं तुम उनका ख़िलाफ़ करो। (इब्ने हिब्बान, तबरानी, बैहक़ी)

12. मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियां ख़ूब बढ़ाओ। (शअ्बुल–ईमान, इब्ने अदी)
13. दाढ़ियों के अर्ज़ से लो और उनके तूल को माफ रखो।

(अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन मुख़ल्लद जुज़ हदीसी)

14. हरगिज़ कोई शख़्स अपनी दाढ़ी के तूल से कम न करे। (ख़तीब बग़दादी)
15. मुझे मेरे रब ने हुक्म फरमाया कि अपनी लबें पस्त करूं और दाढ़ी बढ़ाऊं।

इस हदीस का वाक़िया यह है कि जब हुज़ूर पुर नूर सैय्यद यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हिदायते इस्लाम के फरामीन बनाम सलातीने जहाँ नाफ़िज़ फरमाए। क़ैसर मुल्क रूम ने तस्दीक़े नबुव्वत की मगर बजहत दुनिया इस्लाम न लाया। मक़ूक़स बादशाहे मिस्र ने शिक्क़–ए–वाला की कमाल ताज़ीम की और हदाया हाज़िर बारगाहे रिसालत किए।

सगे इरान ख़ुस्रू परवेज़ (अल्लाह उसे क़त्ल करे) ने फरमाने अक़्दस चाक कर दिया और

बाज़ान सूब–ए–यमन को लिखा, दो मज़बूत आदमी भेज कर उन्हें यहाँ बुलाए। बाज़ान ने अपने दारोग़ा बाबविया और एक पार्सी ख़र ख़ुसरा नामी को मदीना तय्यबा रवाना किया, यह दोनों जब बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए दाढ़ियाँ मुंडाए और मूंछें बढ़ाए हुए थे। सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को उनकी तरफ नज़र फरमाते कराहत आई, और फरमाया ख़राबी हो तुम्हारे लिए। किस ने तुम्हें इसका हुक्म दिया, वह बोले हमारे रब यानी ख़ुस्रू परवेज़ ख़बीस ने। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मगर मुझे तो मेरे रब ने दाढ़ी बढ़ाने और लबें तराशने का हुक्म फरमाया है। (तब्क़ात इब्ने सअद, किताबुल–ख़मीस फ़ी अहवाल, नफ़्से नफ़ीस)

दाढ़ी मुंडे की हिरमां नसीबी

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू इंतिहाई कर्बनाक अंदाज़ में फरमाते हैं :

मुसलमान इस हदीस को याद रखें कि बाबविया ख़र ख़ुसरा उस वक़्त तक इस्लाम न लाए थे, न अहकामे इस्लाम से आगाह थे, उनकी यह वज़ा देख कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनकी सूरत देखने से कराहत की, तो जो मुसलमान अहकामे हुज़ूर जान बूझ कर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ मजूसियों के मुवाफ़िक़ ऐसी गन्दी सूरत बनाए वह किस क़दर हुज़ूरे आला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की कराहत व बेज़ारी का बाइस होगा।

आदमी जिस हाल पर मरता है उसी हाल पर उठता है अगर रोज़े क़्यामत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह मजूस की सूरत देख कर निगाह फरमाने से कराहत फरमाई तो यक़ीन जान कि तेरा ठिकाना कहीं न रहा।

मुसलमान की पनाह, अमान, नजात, रुस्तगारी जो कुछ है उनकी नज़रे रहमत में है। अल्लाह की पनाह उस बुरी घड़ी से कि वह नज़र फरमाने से कराहियत लायें।

दाढ़ी बांधना हुज़ूर की बेज़ारी का सबब है

16. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत रवैफ़ा बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया, ऐ रवैफ़ा मैं उम्मीद करता हूँ कि तू मेरे बाद उम्र दराज़ पाए तो लोगों को ख़बर देना कि जो अपनी दाढ़ी बांधे, या कमान का चिल्ला गले में लटकाए, या किसी जानवर की लीद, गोबर, या हड्डी से इस्तिंजा करे तो बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से बेज़ार हैं। (निसाई)

दाढ़ी बांधने से मुराद उसको गुच्छादार बनाना है कि यह काफिरों का फ़ेअल है और उसमें उन से तशब्बुह है, दाढ़ी चढ़ाने वाले हज़रात कि ढाटे बांध बांध कर दाढ़ी को गुच्छादार करते और मुतकब्बिर ठाकुरों, जाटों की सूरत बनते हैं वह याद रखें कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बेज़ारी व बेइलाक़गी को हल्का न जानें और दाढ़ी मुंडने कतरने वाले ज़्यादा सख़्त अज़ाब व आफत के मुंतज़िर रहें, जब दाढ़ी बाक़ी रख कर उसकी सिफ़त व हैयत में काफिरों से तशब्बुह इस दरजा बाइसे बेज़ारी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हुआ तो सिरे से दाढ़ी क़तअ् या हलक़ कर देना और पूरे पूरे मजूसियों, मछन्दरों की सूरत बनना जिस क़दर मूजिबे ग़ज़ब व नाराज़ी वाहिदे क़हहार व रसूल किर्दगार हो बजा है, जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

17. आख़िर ज़माना में कुछ लोग होंगे कि दाढ़ियां कतरेंगे वह निरे बेनसीब हैं यानी उनके लिए दीन में हिस्सा नहीं, आख़िरत में बहरा नहीं।

(दक़ाइक़ुत्तरीक़ा, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 125 ता 129)

दाढ़ी रखने की ताकीद पर नुसूस अइम्मा

★अहादीस व आसार के बाद दाढ़ी रखने, बढ़ाने की ताकीद व तरग़ीब और न रखने या कांटने की तहदीद व वईद पर उलमा व अइम्मा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के चन्द अक़्वाल व नुसूस का ख़ुलासा मुलाहिज़ा फरमाएं।" (मुरत्तिब)

★ जब दाढ़ी एक मुश्त से कम हो तो उसमें से कुछ लेना जिस तरह बाज़ मग़रेबी और ज़नाने ज़न्खे़ करते हैं यह किसी के नज़्दीक हलाल नहीं और सबसे लेना ईरानी मजूसियों, यहूदियों, हिन्दुओं और बाज़ फ़िरंगियों का फ़ेअल है। (फत्हुल–क़दीर, बहरुर्राइक़)

★ दाढ़ी मूंडने वाले को सज़ा दी जाए कि वह फ़ेअल हराम का मुर्तकिब हुआ।

(हिदाया, तबईनुल–हकाइक़)

★ दाढ़ी तराशना पार्सियों का काम था और अब तो बहुत काफिरों का शिआर है, जैसे फिरंगी और हिन्दू और वह फिरक़ा जिसका दीन में कुछ हिस्सा नहीं जो क़लन्दरिया कहलाते हैं अल्लाह तआला इस्लामी हुदूद को उन से पाक करे। (शरह मसाबीह, मज्मउल–बहहार)

★ किस क़दर पोच अक़्ल है उन लोगों की जिन्होंने मूंछें बढ़ाईं और दाढ़ियाँ पस्त कीं, बरअक्स इस ख़सलत के जिस पर तमाम उमम अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की फ़ितरत है, उन्होंने अपनी असल ख़िल्क़त ही बदल दी, ख़ुदा की पनाह। (कवाकिबुद्दारी)

★ मुँह के बाल दूर करना हराम है मगर जब किसी औरत के दाढ़ी या मूंछ निकल आए तो उसे हराम नहीं बल्कि मुस्तहब है। (तबईनुल–महारिम, रद्दुल–मुहतार)

★ दाढ़ी का न मूंडना जाइज़, न चुनना, न ज़्यादा कतरना। (इत्हाफ़ुस्सादतुल–मुत्तक़ीन)

★ औरत अपने सर के बाल काटे तो गुनहगार व मल्ऊना हो जाए, अगरचे शौहर की इजाज़त से कि ख़ुदा की नाफरमानी में किसी की इताअत नहीं, इसी लिए मर्द पर दाढ़ी काटना हराम है। यानी औरत को मूए सर तराशने की हुर्मत में यह इल्लत है कि यह मरदानी वज़ा है। जिस तरह मर्द को रेश तराशनी हराम होने की इल्लत यह कि औरतों से तशब्बुह है और वह दोनों नाजाइज़।

(दुर्रे मुख़्तार, महबती)

★ दाढ़ी मूंडना मम्नूअ् है कि यह काफिरों की आदत है।

(नसीमुर्रियाज़, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 129, 130)

दाढ़ी न रखने का रिवाज कैसे पड़ा

मुसलमानों में अंधी तक़्लीद और दाढ़ी न रखने का जो नासूर पैदा हुआ उसकी असल वजह की तरफ इशारा करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू फरमाते हैं :

असल में यह ख़सलते मल्ऊना मजूसे मुलाइना की थी, उन से और कुफ़्फ़ार ने सीखी, जब अह्दे मअ्दिलत मह्दे अमीरुल–मुमिनीन ग़ैज़ुल–मुनाफ़िक़ीन सैय्यदना उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में अजम फतह हुआ और किसरा ख़बीस का तख़्त हमेशा के लिए उलट दिया गया। मजूस मंहूस कुछ इस्लाम लाए, कुछ बक़बूल जिज़्या रहे, कुछ परेशान व सरगरदां दारुल–कुफ़्र हिन्दुस्तान में आ निकले, यहाँ के राजा ने उन से ताज़ीम गाव व तहरीमे मादर व दुख़्तर व ख़्वाहर का अह्द लेकर जगह दी, हुनूद बेबहबूद ने दाढ़ी मुंडाना, नौ रोज़ व महरगान बनाम होली व दीवाली मनाना, उन में आग फैलाना वग़ैरह उनसे उड़ाया।

मजूसे ईरान कि मुसलमान हुए थे उनमें बहुत बद बातिन अपनी तबाही मुल्क व अफ़सर व ताराज माल व दुख़्तर के बाइस दिलों में हज़रत अमीरुल–मुमिनीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से

कीना रखते थे। मगर मुसलमान कहला कर इस्लाम की इज़्ज़त व शौकत, इस्लाम की कुव्वत व दौलत, इस्लाम के ताज व मेअ्राज यानी अमीरुल–मुमिनीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शान में गुस्ताख़ी की क्या मजाल थी।

जब इब्ने सबा यहूदी ख़बीस ने मज़हबे रफ़्ज़ ईजाद किया और शुदा शुदा यह नाशुदनी मज़हब ईरानियों तक पहुँचा इन आतिश परस्तों की दबी आग ने मौक़ा पाया कि आहा इस्लाम में भी ऐसा मज़हब निकला कि अमीरुल–मुमिनीन पर तबर्रा कहिए और ख़ासे मुमिनीन बने रहिए, उन्होंने बहज़ार जान लब्बैक की और नए दीन को फरोग़ होने लगा, बाप दादा की क़दीम सुन्नतें अपना रंग लाई, नव रोज़ मनाए, दाढ़ियाँ कतरवाई (हराम रिश्तों, हराम चीज़ों को हलाल किया) महारिम तक निकाह मंज़ूर रहा मगर यह सब परदए हरीर में मस्तूर रहा।

इधर इस्लामी फातिहों की शीराना ताख़्त ने सियाहाने हिन्द के मुँह सपेद कर दिए, हज़ारों मारे, लाखों क़ैद किए यहाँ तक कि हिन्दू के मानी ही ग़ुलाम ठहर गये। यहाँ के नव मुस्लिम, मुस्लिम तो हो गये मगर हज़ारों अपने आबाई ख़स्लतों के पाबन्द रहे, दाढ़ियाँ मुंडाई, बसन्त मनायें, सावनी करें, चीज़ियां रंगायें, औरतें बद लिहाज़ी के कपड़े पहनें, कुंबे भर सब ग़ैरें सामने आने के वास्ते बहनें, शादियों में फहश गीत, साली बहनोई में हंसी की रीत, यहाँ तक कि बहुत पूर्वी इज़्ला में छूत और चौका तक मशहूर और अक्सर देहात में होली या दीवाली बल्कि उस से ज़ाइद शैतनत मौजूद, फिर इस अमलदारी में नेचरीयत के फैलने, शर और बुराई की बेक़ैदी और नफ़्स की आज़ादी के लिए सोने में सुहागा हुआ, कुछ इत्तिबा फिरंग. कुछ ज़नानी उमंग सफाई रुख़्सार का नसीब जागा।

ला मुहाला इस हरकत के आदियों को चन्द हाल से ख़ाली न पाइएगा। नस्लन मजूसी, या मज़्हबन राफज़ी, या पूर्वी तहज़ीब का दिल्दाद–ए–नेचरी, या झूठे मुतसव्विफ़ा, या मुब्तलाए रफ़्ज़ ख़फ़ी, या बाप दादा हिन्दू नव मुस्लिम ग़ाफ़िल, या इन सोहबतों का बिगड़ा आवारा जाहिल, बहरहाल उसका मब्दा व मंबा व मरजा वही ख़सलते कुफ़्फ़ार, जिस से ख़ुदा नाराज़, रसूल बेज़ार, जिस पर कुरआने अज़ीम में वह सख़्त वईद व क़ाहिरमार, आइंदा मानने न मानने का हर शख़्स मुख़्तार। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 126, 127)

तमन्ना कि काश दाढ़ी मिल जाती

★ अहनफ़ बिन क़ैस कि अकाबिर सिक़ात ताबईन व उलमा व हुक्माए कामिलीन से थे ज़मान–ए–रिसालत में पैदा हुए 67 या 72 हिजरी में वफात पाई आक़िल व हलीम थे, पाँव में कज था, एक आंख जाती रही थी दाढ़ी पैदाइशी तौर पर न निकली थी, उनके असहाब न उस कज पर अफसोस करते, न यक चशमी पर, बल्कि दाढ़ी न होने की कराहियत ज़िक्र करते और कहते हमें तमन्ना है काश! अगर बीस हज़ार को मिलती तो अहनफ़ के लिए दाढ़ी ख़रीदते। (अहया–उल–उलूम)

★ शुरैह क़ाज़ी कि अजिल्ल–ए–अइम्मा व अकाबिर ताबईन से हैं ज़मान–ए–रिसालत में विलादत पाई, बल्कि कहा गया सहाबी हैं, अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़ फिर अमीरुल–मुमिनीन मौला अली की सरकार में क़ाज़ी थे, अमीरुल–मुमिनीन अली फतावे में उन से राय लेते 80 हिजरी से कुछ पहले या बाद इंतिक़ाल हुआ, दाढ़ी पैदाइशी तौर पर न थी वह फरमाते थे कि मुझे आरज़ू है कि काश! दस हज़ार देकर दाढ़ी मिल जाती।

(अहया–उल–उलूम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 125)

दाढ़ी मुंडाना मुस्ला है

"मुस्ला" सूरत बिगाड़ने को कहते हैं ख़्वाह वह नाक कान वग़ैरह काट कर हो या मर्द का दाढ़ी

मुंडा कर, या औरत का सर के बाल मुंडा कर, मुस्ला की सब सूरतें हराम हैं इसी लिए फ़ुक़हा–ए–किराम फरमाते हैं कि मर्द को दाढ़ी मुंडाना, कतरवाना मुस्ला है जैसे औरत को सर मुंडाना, अहादीस में भी मुस्ला की मुमानेअत आई है, सरे दस्त चन्द अहादीसे करीमा मुलाहिज़ा फरमायें।" (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो बालों के साथ मुस्ला करे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के यहाँ उसका कुछ हिस्सा नहीं। (तबरानी)

यह हदीस ख़ास बालों के मुस्ला करने के बारे में है, बालों का मुस्ला यही कि औरत सर के बाल मुंडा ले या मर्द दाढ़ी, या मर्द ख़्वाह औरत भवें साफ कर ले, या सियाह ख़िज़ाब करे, यह सब सूरतें बालों के मुस्ला में दाख़िल हैं और सब हराम।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह की लानत उस पर जो किसी जानदार के साथ मुस्ला करे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है जो किसी जानदार के साथ मुस्ला करे उस पर अल्लाह व मलाइका व बनी आदम सबकी लानत। (तबरानी)

जब कोई लशकर कुफ़्फ़ार पर भेजते फरमाते मुस्ला न करो न किसी आदमी को न चौपाए को। (सुनने बैहक़ी)

ख़ल्कुल्लाह में से किसी ज़ी रूह को मुस्ला न करो। (तबरानी, इब्ने मन्दा)

अल्लाह के बन्दों को मुस्ला न करो। (तबरानी कबीर)

अल्लाहु अकबर! जब चौपायों से मुस्ला हराम, चौपाए दरकनार कटखन्ने कुत्ते से नाजाइज़, कुत्ते से भी गुज़रिए हरबी काफिर से भी मना तो मुसलमान का ख़ुद अपने मुँह के साथ मुस्ला करना किस दरजा अशद हराम व मूजिबे लानत व इंतिक़ाम है।

दाढ़ी मुंडाना औरतों से तशब्बुह है

दाढ़ी मुंडाना ज़नानी सूरत बनना और औरतों से तशब्बुह पैदा करना है और मर्द को औरत, औरत को मर्द से किसी लिबास, वज़अ़, चाल, ढाल में तशब्बुह हराम, न कि ख़ास सूरत व बदन में, ज़ाहिर है कि औरत व मर्द का जिस्म ज़ाहिर में माबेहिल–इम्तियाज़ यही चोटी, दाढ़ी है। बल्कि दाढ़ी चोटी से भी ज़्यादा वज्हे इम्तियाज़ है कि मर्द चोटी बना सकता है और औरत दाढ़ी नहीं निकाल सकती।

इमाम ग़ज़ाली कीमिया–ए–सआदत में ज़िक्र करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के कुछ फरिश्ते हैं जिनकी तस्बीह यह है पाकी है उसे जिसने मर्दों को ज़ीनत दी दाढ़ियों से और औरतों को गैसुओं से। (कीमिया–ए–सआदत)

अइम्मा किराम फरमाते हैं :

★ दाढ़ी आफ़रिनश मर्द की तमामी से है और इसी से मुतमैयज़ होते हैं मर्द, औरतों से ज़ाहिरी सूरत में।

★ औरत को सर के बाल, मर्द को दाढ़ी का क़तअ़ करना हराम है कि इसमें एक का दूसरे से तशब्बुह है।

★ मर्द औरत का बाहम तशब्बुह हराम होने की हिक्मत यह है कि वह दोनों उसमें ख़ुदा की बनाई चीज़ बदलते हैं।

★ मर्द व औरत में एक का दूसरे से तशब्बुह की हुर्मत व मुमानेअत पर चन्द अहादीसे करीमा मुलाहिज़ा हों।" (मुरत्तिब)

★ अल्लाह की लानत उन मर्दों पर जो औरतों की वज़ा बनायें और उन औरतों पर जो मर्दों की। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

★ हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक औरत शाने पर कमान लटकाए गुज़री फरमाया अल्लाह की लानत उन औरतों पर जो मरदानी वज़ा बनायें और उन मर्दों पर जो ज़नानी। (तबरानी)

★ हमारे गरोह से नहीं वह औरत कि मर्दों से तशब्बुह करे और वह मर्द कि औरतों से। (मुसनद अहमद)

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और फ़रिश्तों ने लानत की उस मर्द पर जो औरत बने और उस औरत पर जो मर्द बने। (त, इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 131 ता 134)

दाढ़ी मुंडाने या कतरने पर वईदें तहदीदें

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने दाढ़ी के मसअले में जो आयात व अहादीस और नुसूसे अइम्मा पेश फरमाई उन में जो वईदें, मज़म्मतें, और तहदीदें वारिद हैं उनका ख़ुलासा यह है। (मुरत्तिब)

1. अल्लाह व रसूल के नाफरमान हैं। जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।
2. शैताने लईन के महकूम हैं।
3. सख़्त अहमक़ हैं।
4. अल्लाह उन से बेज़ार है।
5. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेज़ार हैं।
6. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ऐसी सूरत देखने से कराहत आती है।
7. यहूदी सूरत हैं।
8. नसरानी वज़ा हैं, फिरंगियों से मुशाबेह हैं।
9. मजूस के पैरू हैं।
10. हिन्दुओं की सूरत, मुश्रेकीन की सीरत हैं।
11. मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के गरोह से नहीं।
12. उन्हें हम सूरतों नसारा व यहूद व मजूस व हुनूद के गरोह से हैं।
13. वाजिबुत्ताज़ीर हैं, शहरे बदर करने के क़ाबिल हैं।
14. मुबद्देलीने फितरत हैं मुग़ीरीने ख़ल्कुल्लाह हैं, यानी फितरत और ख़ल्क़ुल्लाह को बदलने वाले हैं।
15. ज़नाने मुख़न्नस हैं।
16. ख़ुदा के अह्द शिकन हैं।
17. ज़लील व ख़्वार हैं।
18. घिनौने क़ाबिले नफ़रत हैं।
19. मरदूदुश्शहादह हैं।
20. पूरे इस्लाम में दाख़िल न हुए।
21. हलाकत में हैं, मुस्तहिक़ बरबादी हैं।
22. दीन में बेबहरा आख़िरत में बेनसीब हैं।
23. अज़ाबे इलाही के मुंतज़िर।

24. अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को सख़्त दुश्मन व मबग़ूज़।
25. सुबह हैं तो अल्लाह के ग़ज़ब में, शाम हैं तो अल्लाह के ग़ज़ब में।
26. क़यामत के दिन उनकी सूरतें बिगाड़ी जायेंगी।
27. अल्लाह व रसूल के मल्ऊन हैं, दुनिया व आख़िरत में मल्ऊन हैं, अल्लाह व मलाइका व बशर सबकी उन पर लानत है, फ़रिश्तों ने उनके लानती होने पर आमीन कही।
28. अल्लाह तआला उन पर नज़रे रहमत न फ़रमायेगा।
29. वह बहिश्त में न जायेंगे।
30. अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उन्हें जहन्नम में डालेगा। वल–अयाज़ु बिल्लाहे तआला।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 136, 137)

सियाह ख़िज़ाब की हुर्मत व मुमानेअत

शरीअते इस्लामिया में इंसान को कुछ चीज़ों के करने का हुक्म दिया गया है और कुछ चीज़ों से रोका गया है, मुसलमान का ईमानी तक़ाज़ा यह है कि वह इन बातों पर अमल करे, अहकामे शरअ् पर अमल करना ईमाने कामिल की निशानी है, आज इंसानी ज़ेब व ज़ीनत के लिए मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ें, वजूद में आई हैं उनमें कोई मबाह है और कोई मक्रूह व हराम। सफ़ेद बालों को सियाह करने के लिए जो दवाइयाँ या जड़ी बूटियाँ दस्तियाब हैं शरीअते मुतह्हरा ने उनका इस्तेमाल मम्नूअ् क़रार दिया है। (मुरत्तिब)

सियाह ख़िज़ाब हराम, सुर्ख़ ख़िज़ाब मुस्तहब

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू सियाह ख़िज़ाब की हुर्मत व मुमानेअत वाज़ेह करते हुए फ़रमाते हैं :

सियाह ख़िज़ाब ख़्वाह माज़ू व हलीला व नील का हो, ख़्वाह नील व हिना मख़्लूत हो, ख़्वाह किसी चीज़ का हो सिवा मुजाहेदीन के सबको मुतलक़न हराम है और सिर्फ़ मेंहदी का सुर्ख़ ख़िज़ाब, या उसमें नील की कुछ पत्तियाँ इतनी मिला कर जिससे सुर्ख़ी में पुख़्तगी आ जाए और रंग सियाह होने न पाये सुन्नते मुस्तहिब्बा है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 107)

सियाह ख़िज़ाब की मुमानेअत पर अहादीस

अहादीस में सियाह ख़िज़ाब पर सख़्त वईदें और मेंहदी के ख़िज़ाब की तरग़ीबें बकसरत वारिद हैं।

1. हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के वालिद माजिद हज़रत अबू क़ुहाफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की दाढ़ी सपेद देख कर इरशाद फ़रमाया इस सपेदी को किसी चीज़ से बदल दो और सियाह रंग से बचो।

(मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

2. पीरी तब्दील करो और सियाह रंग के पास न जाओ। (मुसनद अहमद)

3. आख़िर ज़माने में कुछ लोग सियाह ख़िज़ाब करेंगे, जैसे कबूतरों के पोटे वह जन्नत की ख़ुशबू न सूंघेंगे। जंगली कबूतरों के सीने अक्सर सियाह व नीलगूं होते हैं नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनके बालों और दाढ़ियों को उन से तशबीह दी। (अबू दाऊद, निसाई, मुसनद अहमद)

4. जो सियाह ख़िज़ाब करे अल्लाह तआला रोज़े क़यामत उसकी तरफ नज़रे रहमत न फरमायेगा।
(तबक़ात इब्ने सअद)

5. बेशक अल्लाह तआला दुश्मन रखता है बूढ़े कव्वे को। (इब्ने अदी, मुसनदुल–फिरदौस)

6. ज़र्द ख़िज़ाब ईमान वालों का है और सुर्ख़ इस्लाम वालों का और सियाह ख़िज़ाब काफ़िर का।
(तबरानी, हाकिम)

7. सपेदी नूर है जिसने उसे छुपाया उसने इस्लाम का नूर ज़ाइल किया।
(अक़ीली, इब्ने हिब्बान)

8. जिसे इस्लाम में सपेदी आए वह उसके लिए नूर होगी जब तक उसे बदल न डाले।
(हाकिम, किताबुल–कुनी)

9. सब में पहले हिना व कुतुम से ख़िज़ाब करने वाले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं और सबमें पहले सियाह ख़िज़ाब करने वाला फिरऔन। (दैलमी, इब्ने नज्जार)

10. जो सियाह ख़िज़ाब करेगा अल्लाह तआला रोज़े क़यामत उसका मुंह काला करेगा।
(तबरानी कबीर)

11. जो बालों की हैयत बिगाड़े अल्लाह के यहाँ उसका कुछ हिस्सा नहीं। (तबरानी कबीर)
उलमा फरमाते हैं हैयत बिगाड़ना यह कि दाढ़ी मूंडे या सियाह ख़िज़ाब करे।

12. तुम्हारे अधेड़ों में सबसे बदतर वह है जो जवानों की सी सूरत बनाए।
(मुसनद अबू याला, तबरानी)

शक नहीं कि अहादीस व रिवायात में मुतलक़ सियाह रंग से मुमानेअत फरमाई तो जो चीज़ बालों को सियाह करे ख़्वाह निरानील या मेंहदी का मेल, या कोई और तेल ग़रज़ कुछ हो सब नाजाइज़ व हराम और उन वईदों में दाख़िल है।
(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 30, 31, अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 103)

ज़र्द ख़िज़ाब

तन्हा मेंहदी मुस्तहब है और उसमें कुतुम की पत्तियाँ मिला कर (कि कुतुम) एक घास मुशाबेह बर्ग ज़ैतून है जिसका रंग गहरा सुर्ख़ माइल बसियाही होता है उससे बेहतर, और ज़र्द रंग सबसे बेहतर, और सियाह वसमे का हो ख़्वाह किसी चीज़ का मुतलक़न हराम है मगर मुजाहेदीन को जाइज़ है।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक साहब मेंहदी का ख़िज़ाब किए गुज़रे फरमाया यह क्या ख़ूब है। फिर दूसरे गुज़रे उन्होंने मेंहदी और कुतुम मिला कर ख़िज़ाब किया था, फरमाया यह उससे बेहतर है। फिर तीसरे ज़र्द ख़िज़ाब किए गुज़रे फरमाया यह उन सबसे बेहतर है। (अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 166)

पीने की दवा का इस्तेमाल

अगर अदवियात पी कर बाल सियाह हो जायें तो उसमें कोई हरज नहीं, मगर दवा खाने से सपेद बाल, सियाह न हो जायेंगे बल्कि वह क़ुव्वत पैदा होगी कि आइंदा सियाह निकलेंगे तो उसमें कोई धोखा न दिया गया न ख़ल्क़ुल्लाह की तब्दील की गई इसलिए ऐसा करना जाइज़ है।
(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 113)

हुज़ूर के मू–ए–मुबारक

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक और रेशे मुक़द्दस में जो मू–ए–मुतह्हर सपेद हुए थे उनको हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम मेंहदी वग़ैरह से रंगीन कर देते थे। (मुरत्तिब)

उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं हज़रत उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्होंने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मू–ए–मुबारक (जो उनके पास तबर्रुकाते शरीफ़ा में रखे थे जिस बीमार को उसका पानी धोखा कर पिलातीं फौरन शिफ़ा पाता था) निकाले मेंहदी और कुतुम से रंगे हुए थे। (बुख़ारी, इब्ने माजा, मुसनद अहमद)

उन ही उस्मान बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने उन्हें नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मू–ए–मुबारक सुर्ख़ रंग दिखाए। (बुख़ारी)

एक रिवायत में यूं है उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने मू–ए–मुबारक सुर्ख़ रंग दिखाए जिन पर हिना व कुतुम का ख़िज़ाब था। (मुसनद अहमद)

फाइदा

★ कुतुम एक पत्ती है कि रंग में सुर्ख़ी रखती है शक्ल में बर्ग ज़ैतून के मुशाबेह होती है जिसे लोग हिना या नील से मिला कर ख़िज़ाब बनाते हैं।

★ वस्मा, अरब की ज़बान में एक दरख़्त का नाम है जिसकी पत्ती सुखा कर पीस कर मेंहदी में मिलाते हैं जिस से उसकी सुर्ख़ी ख़ूब शोख़ हो जाती है वरना फीकी ज़र्दी माइल होती है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 32)

बेजा मुशाबेहत की मुमानेअत व वईद

आज के दौरे जदीद व तरक़्क़ी याफ़्ता अहद में फ़ैशन के नाम पर लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं बल्कि फ़ैशन की जाइज़ व नाजाइज़ हर बात को दिल व जान से क़बूल कर लेते हैं। ख़ुसूसन औरतों और लड़कियों में जो फहहाशी व बेहयाइयाँ आजकल पैदा हुई हैं उन से क़ौन वाक़िफ़ नहीं शक्ल व सूरत, लिबास, वज़अ् क़तअ्, जूता चप्पल वग़ैरह में मर्द व औरत ख़ुसूसन नौजवान लड़के लड़कियाँ एक दूसरे की मुशाबेहत इख़्तियार करते हैं मसलन बाज़ लड़कियाँ बाल मर्दाना वज़अ् पर कटवाती हैं, लिबास लड़कों की तरह पहनती हैं यहाँ तक कि मर्दाना जूता चप्पल भी इस्तेमाल करने में फ़ख़्र महसूस करती हैं, लड़कों ने अगरचे लड़कियों की तरह बाल नहीं बढ़ाए, ज़नाना लिबास नहीं पहना मगर दाढ़ियों को साफ करा कर क्रीम पाउडर वग़ैरह का इस्तेमाल ज़रूर करते हैं। यही चीज़ें मुआशरे में बुराई व बेहयाई फैलने की जड़ हैं, मर्द व ज़न के इख़्तिलात व मेल जोल पर अताब व ऐतराज़ तो अब पुरानी बात हो गई है। ग़रज़ कि मुसलमानों में ग़ैरों की तहज़ीब आ गई उन्होंने उसे सीने से लगाया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मर्द को औरत से और औरत को मर्द से मुशाबेहत इख़्तियार करने की सख़्त मुमानेअत फरमाई है, अहादीस में उसके लिए सख़्त वईदें वारिद हुई हैं। (मुरत्तिब)

मर्दों के लिए बाल बढ़ाने की हद

मर्द के बाल बढ़ाने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

बाल निस्फ़ कान से कन्धों तक बढ़ाना जाइज़ है और इससे ज़्यादा बढ़ाना मर्द को हराम है ख़्वाह फ़ुक़रा हों ख़्वाह दुनियादार, अहकामे शरअ् सब पर यक्सां है ज़्यादा में औरतों से तशब्बुह है और सही हदीस में लानत फरमाई है उस मर्द पर जो औरत की वज़अ् बनाये और उस औरत पर जो

मर्द की वज़अ् बनाये अगरचे वह वज़अ् बनाना एक ही बात में हो। जो लोग चोली गुंधवाते या जूड़ा बांधते या कमर या सीना के क़रीब तक बाल बढ़ाते हैं वह शरअन फ़ासिक़े मोलिन हैं।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 296)

ज़नानी वज़अ् की मुमानेअत

ज़नानी वज़अ् बनाने से मुतअल्लिक़ एक और सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

दाढ़ी मुंडाना हराम है, भवें मुंडाना हराम है, मर्द हो कर कानों में मुन्दरे पहनना हराम है, शानों से नीचे ढलके हुए औरतों के से बाल रखना हराम है। मर्द को ज़नानी वज़अ् की कोई बात इख़्तियार करना हराम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उस पर लानत फ़रमाई है।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 362)

तशब्बुह की मुमानेअत व वईद और अहादीस

हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं अल्लाह की लानत उन मर्दों पर जो औरतों की वज़अ् बनायें और उन औरतों पर जो मर्दों की।

(बुख़ारी, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा)

हदीस : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक औरत शाने पर कमान लटकाए गुज़री फ़रमाया अल्लाह की लानत उन औरतों पर जो मरदानी वज़अ् बनायें और उन मर्दों पर जो ज़नानी।

(यहाँ पर सिर्फ़ मर्दों की तरह कन्धे पर कमान लटकाने के सबब लानत फ़रमाई गई हालांकि कमान लटकाना एक ख़ार्जी फ़ेअ्ल है। इससे मालूम हुआ कि मर्द व औरत का एक दूसरे से तशब्बुह ख़्वाह शक्ल व सूरत व लिबास और बाल वग़ैरह में हो या किसी काम काज में, हर तरह के तशब्बुह की मुमानेअत है। (मुरत्तिब)

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई ज़नाना मर्दों और मर्दानी औरतों पर और फ़रमाया उन्हें अपने घरों से निकाल बाहर कर दो।

(बुख़ारी, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई उस मर्द पर कि औरत का पहनावा पहने और उस औरत पर कि मर्द का। (अबू दाऊद, निसाई, इब्ने माजा)

हदीस : उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से अर्ज़ की गई कि एक औरत मर्दाना जूता पहनती है फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मर्दानी औरतों पर लानत फ़रमाई। (अबू दाऊद)

हदीस : एक ताबई हज़ली रिवायत करते हैं कि मैं अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर था एक औरत कमान लटकाए मर्दानी चाल चलती सामने से गुज़री, अब्दुल्लाह ने पूछा यह कौन है मैंने कहा उम्मे सईद दुख़्तर अबू जहल, फ़रमाया मैंने सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना हमारे गरोह से नहीं वह औरत कि मर्दों से तशब्बुह करे और न वह मर्द कि औरतों से। (मुसनद अहमद, तबरानी)

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औरतों की सूरत बनें और मर्दानी औरतों पर जो मर्दों की शक्ल बनें और जंगल के अकेले सवार पर यानी जो ख़तरा की हालत में तन्हा सफ़र को जाए।

(मुसनद अहमद, मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हदीस : तीन शख़्स जन्नत में कभी न जायेंगे दय्यूस और मर्दानी औरत और शराब का आदी। (तबरानी)

हदीस : तीन शख़्सों पर अल्लाह तआला रोज़े क़यामत नज़रे रहमत न फरमायेगा माँ–बाप का नाफरमान, मर्दानी औरत यानी मर्दों की वज़अ् बनाने वाली और दय्यूस। (मुसनद अहमद, निसाई)

हदीस : तीन शख़्स जन्नत में न जायेंगे माँ–बाप से आक़, दय्यूस और मरदानी औरत। (निसाई, वज़्ज़ार)

हदीस : चार शख़्स सुबह करें तो अल्लाह के ग़ज़ब में, शाम करें तो अल्लाह के ग़ज़ब में।

1. ज़नानी वज़अ् वाले मर्द।
2. मर्दानी वज़अ् वाली औरतें।
3. जो चौपाये से जिमा करे।
4. जो लेवातत करे। (शअ़बुल–ईमान, बैहक़ी)

हदीस : चार शख़्सों पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने बाला–ए–अर्श से दुनिया व आख़िरत में लानत भेजी और उनकी मल्ऊनी पर फरिश्तों ने आमीन कही।

1. वह मर्द जिसे ख़ुदा ने नर बनाया और वह माद्दा बने, औरतों की वज़अ् बनाये।
2. वह औरत जिसे ख़ुदा ने माद्दा बनाया और नर बने, मर्दानी वज़अ् इख़्तियार करे।
3. अन्धे को बहकाने या मिस्कीन को रास्ता भुलाने वाला।
4. वह जो औलाद होने के ख़ौफ़ से न निकाह करे न कनीज़ हलाल रखे, राहिबाने नसारा की तरह बने। (तबरानी, कबीर, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 133, 134)

जाहिलयत का काम करने वालियों पर लानत

★ अल्लाह तआला फ़रमाता है : रसूल के फरमाने पर चला उसने अल्लाह का हुक्म माना। (अन्निसा, 80)

★ और फरमाता है : जो कुछ यह रसूले क़रीम तुम्हें दे इख़्तियार करो और जिस से मना फरमाए बाज़ रहो। (अल–हश्र, 7)

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : ऐ नबी मुमिनीन से फरमा दे कि इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो उसके रसूल की और अपने उलमा की। (अन्निसा, 89)

रब तबारक व तआला इन आयात और उनके अम्साल में नबी का हुक्म बेऐनेही अपना हुक्म और नबी की इताअत बेऐनेही अपनी इताअत बताता है। तो तमाम अहकाम कि अहादीस में इरशाद हुए सब क़ुरआने अज़ीम से साबित हैं। जो अख़्लाक़ी हुक्म हदीस में है किताबुल्लाह उस से हरगिज़ खाली नहीं अगरचे बज़ाहिर तस्रीह जुज़्ईया हमारी नज़र में न हो।

हदीस में है, अल्लाह की लानत बदन गोदने वालियों और गोदवाने वालियों और मुँह के बाल नोचने वालियों और ख़ूबसूरती के लिए दांतों में खिड़कियाँ बनाने वालियों, अल्लाह की बनाई चीज़ बिगाड़ने वालियों पर।

यह सुन कर एक बी बी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते मुबारक में हाज़िर हुई और अर्ज़ की मैंने सुना है आपने ऐसी ऐसी औरतों पर लानत फरमाई, फरमाया मुझे क्यास हुआ कि मैं उस पर लानत न करूं जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फरमाई। और जिसका ब्यान कुरआने अज़ीम में है, उन बीबी ने कहा मैंने कुरआन अव्वल से आख़िर तक पढ़ा उसमें कहीं उसका ज़िक्र न पाया। इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया अगर तुमने कुरआन पढ़ा होता यह ब्यान उसमें ज़रूर पातीं क्या तुमने यह आयत (मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु वमा नहाकुम अन्हु फंतहू।) पढ़ी कि जो रसूल तुम्हें दे वह लो

और जिस से मना फ़रमाए बाज़ रहो। उन्होंने अर्ज़ की हां, फ़रमाया तो बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इन हरकात से मना फ़रमाया।

(सहाहे सित्ता, मुसनद अहमद, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 122)

ग़ैर मुस्लिमों से तशब्बुह की हुर्मत व मुमानेअत

जहाँ मर्द व औरत का एक दूसरे से तशब्बुह करना हराम है वहीं मुसलमानों को काफ़िरों से मुशाबेहत इख़्तियार करना हराम है यह मुशाबेहत ख़्वाह लिबास और वज़अ् क़तअ् में हो या चाल चलन वग़ैरह में हर सूरत में ग़ैरों से तशब्बुह मम्नूअ् व नाजाइज़ है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं रखी गई ज़िल्लत और ख़्वारी उस पर जो मेरे हुक्म का ख़िलाफ़ करे और जो किसी क़ौम से तशब्बुह करे वह उन्हीं में से है।

(मुसनद अहमद, अबू याला, तबरानी)

यानी जो काफिरों से लिबास वग़ैरह में मुशाबेहत करे वह उन्हीं काफिरों में से है।

दूसरी हदीस में है हम में से नहीं जो हमारे ग़ैर से तशब्बुह करे न यहूद से तशब्बुह करो न नसरानियों से कि यहूद का सलाम उंगलियों से इशारा है और नसारा का हथेलियों से।

(तिर्मिज़ी, तबरानी)

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो हमारे ग़ैर की सुन्नत पर अमल करे वह हमारे गरोह से नहीं। (मुसनदुल–फिरदौस)

अबू उस्मान रिवायत करते हैं हमारे पास पेशगाह ख़िलाफ़ते फारूक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाने वाला शर्फ़ सुदूर लाया जिसमें इरशाद है, पार्सियों की वज़अ् से दूर रहो।

(इब्ने हिब्बान)

दाढ़ी न रखना यहूद व हुनूद का काम है। दाढ़ी मुंडानी नसारा की सूरत बनानी है।

(फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 135)

ग़ैर क़ौम से दोस्ती में वबाल उख़रवी

जिस तरह ग़ैर क़ौम से मुशाबेहत करना मम्नूअ् व हराम है इसी तरह उन से दोस्ती व मुहब्बत करना भी मम्नूअ् व ना दुरुस्त है मुसलमान का ईमानी तक़ाज़ा तो यह होना चाहिए कि अल्लाह व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दुश्मनों को दिल व जान से दुश्मन जाने न कि उन से दोस्ती व मुहब्बत करे जो जिस से दोस्ती करेगा रोज़े क़यामत वह उसी के साथ उठेगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो जिस क़ौम से मुहब्बत रखेगा अल्लाह तआला उसे उन्हीं के साथ कर देगा। (निसाई)

हदीस : जो जिस क़ौम से दोस्ती करेगा अल्लाह तआला उन्हीं के गरोह में उठायेगा।

(तबरानी कबीर)

हदीस : आदमी अपने दोस्त के साथ होगा।

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 182)

ग़ैर मुस्लिमों से बे-वजह इख़्तिलात व इत्तिहाद की मुमानेअत व ज़रर

जो भी ख़ुदा व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दुशमन हैं उन से इख़्तिलात व इत्तिहाद न चाहिए ख़ुसूसन कुफ़्फ़ार कि यह खुले हुए ख़ुदा व रसूल और दीन व मुसलमानों के दुशमन हैं, मुसलमानों को तक्लीफ व ज़रर पहुँचाने का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते उनकी नज़र में मुसलमानों के जान व माल और इज़्ज़त व आबरू महफ़ूज़ नहीं इसलिए उन से भी इत्तिहाद व इख़्तिलात से बचना चाहिए हाँ दुनियावी मुआमलात, लेन देन, ख़रीद व फरोख़्त वग़ैरह की शरीअत ने इजाज़त दी है मगर इस तरह कि उनकी तरफ दिल का मैलान व झुकाव न हो। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तहरीरं मुलाहिज़ा फरमायें, आप कुफ़्फ़ार के साथ मुसलमानों के खाने पीने वग़ैरह से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में फ़रमाते हैं :

बेशक कुफ़्फ़ार से ऐसी मुख़ालतत और उनके साथ हम प्याला व हम नेवाला होने से बहुत ज़रूर एहतराज़ करना चाहिए ख़ुसूसन जहाँ इस्लाम ज़ईफ़ हो। शरअ मुतह्हर से बहुत दलाइल इस पर क़ाइम हैं जिनके बाज़ यह हैं।

अ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

और अगर शैतान तुझे भुला दे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठो और काफिर से बढ़ कर ज़ालिम कौन। (अल–अआम, 68)

अ और फरमाता है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल :

उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसने ख़ुदा पर झूठ बांधा और सच को झुठलाया जब वह उसके पास आया क्या नहीं है दोज़ख़ में काफिरों का ठिकाना। (अज़्ज़ुमर, 32)

जब काफिर हद दरजा का ज़ालिम हो और ज़ालिम के पास बैठने से मना फरमाया तो शीर व शकर व हम कासा होना तो और बदतर है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मुश्रिक से यक्जा हो और उसके साथ रहे वह उसी मुश्रिक की मानिन्द है। (अबू दाऊद)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैं बेज़ार हूँ उस मुसलमान से जो मुश्रिकों के साथ हो और काफिर की आग आमने सामने न होना चाहिए यानी दूरी लाज़िम है।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सोहबत न रख मगर ईमान वालों से और तेरा खाना न खायें मगर परहेज़गार। (तिर्मिज़ी)

(इन अहादीस से मालूम हुआ कि काफिरों के साथ घाल मेल और उनके साथ खाना पीना मुसलमान की शान नहीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। अल्लाह तआला की तरफ तक़र्रुब करो अह्ले मआसी के बुग़्ज़ से और उन से तुर्श रूई के साथ मिलो और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी उनकी ख़फ़्गी में ढूंढो और अल्लाह की नज़्दीकी उनकी दूरी से चाहो। (इब्ने शाहीन किताबुल–उमरा)

काफिरों से बढ़ कर अहले मआसी कौन है जो सरापा मअसियत हैं और उनके पास हसना का नाम होना मुहाल।

तजरबा शाहिद कि साथ खाना मूरिसे मुहब्बत व विदाद होता है और कुफ़्फ़ार की मवालात सुम्मे क़ातिल है।

★ अल्लाह तआला फरमाता है :

जो तुम में उन से दोस्ती रखेगा उन्हीं में से शुमार किया जायेगा। (अल–माइदा, 51)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं आदमी अपने दोस्त के साथ है यानी हश्र में। (सहाहे सित्ता)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैं क़सम खा कर फरमाता हूँ कि जो शख़्स किसी क़ौम से दोस्ती करेगा, अल्लाह तआला उसे उन्हीं का साथ बनायेगा।

(मुसनद अहमद, निसाई)

अबू क़रसाफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हर क़ौम के दोस्तों को अल्लाह तआला उन्हीं के गरोह में उठायेगा। (तबरानी कबीर, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 12, 13)

नेक व बद की हम नशीनी का असर

इंसान पर एक दूसरे की सोहबतों का असर होता है हदीस पाक में है कि सोहबत असर करने वाली होती है। इसलिए नेक व बद दोनें सोहबतों का असर होता है यही वजह है कि बुरे हमनशीं के पास उठने बैठने से रोका गया है दुशमने ख़ुदा और कुफ़्फ़ार की सोहबत ज़हर क़ातिल है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : नेक हम नशीं और बद जलीस की मिसाल यूं है। जैसे एक के पास मुश्क है और दूसरा धोंकनी धौक रहा है मुश्क वाला या तो तुझे मुश्क वैसे ही देगा या तो उस से मोल लेगा और कुछ न सही तो ख़ुशबू तो आएगी और वह दूसरा या तेरे कपड़े जला देगा या तो उस से बदबू पायेगा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं यानी बदों की सोहबत ऐसी है जैसे लोहार की भट्टी कि कपड़े काले न हुए तो धुवां जब भी पहुँचेगा। (अबू दाऊद, निसाई)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बुरे मसाहिब से बच कि तू उसी के साथ पहचाना जायेगा। (इब्ने असाकिर)

यानी जैसे लोगों के पास आदमी की नशिस्त व बर्ख़्वास्त होती है लोग उसे वैसा ही जानते हैं।

हदीस में है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं आदमी को उसके हमनशीं पर क़्यास करो। (इब्ने अदी)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुंकिराने तक़्दीर के पास न बैठो न उन्हें अपने पास बिठाओ न उनसे सलाम व कलाम की इब्तिदा करो। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद)

वहाबिया वग़ैरह मुब्तदईन की हम नशीनी से हुक्मे एहतराज़

एक हदीस में है सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं बेशक अल्लाह तआला ने मुझे पसन्द फरमाया और मेरे लिए असहाब व असहार पसन्द किए और क़रीब एक क़ौम आएगी कि उन्हें बुरा कहेगी और उनकी शान घटायेगी तुम उनके पास मत बैठना, न उनके साथ पानी पीना, न खाना खाना, न शादी ब्याह करना। (इब्ने हिब्बान अक़ीली)

जब अह्ले बिदअत और सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के बुरा कहने वालों के लिए यह हुक्म हैं तो अह्ले कुफ़्र और अयाज़ बिल्लाह ख़ुदा व रसूल की जनाब में सरीह गुस्ताख़ियां करने वालों की निस्बत किस क़दर सख़्त हुक्म चाहिए।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द 9, स0 12,13)

मुशरेकीन से इत्तिहाद व विदाद की हुर्मत पर कुरआनी फतवे

मुशरेकीन से इत्तिहाद विदाद से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

मुशरेकीन से इत्तिहाद दर किनार विदाद हरामे क़तई है।

★ अल्लाह तआला फरमाता है :

तू न पायेगा उन लोगों को जिन्हें अल्लाह और क़यामत पर ईमान है कि अल्लाह व रसूल के किसी मुख़ालिफ़ से दोस्ती करें अगरचे उनके बाप या बेटे, या भाई या अज़ीज़ हों, यह हैं वह लोग जिनके दिलों में ईमान अल्लाह ने लिख दिया है और अपनी तरफ की रूह से उसकी मदद फरमाई।

(अल–मुजादिला, 22)

★ और फरमाता है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल :

तुम में जो उन से दोस्ती करेगा वह बेशक उन्हीं में से है। (अल–माइदा, 51)

यह हैं कुरआने अज़ीम की शहादतें कि उन से विदाद व इत्तिहाद कुफ़्र है और यह कि उसके मुर्तकिब न होंगे मगर काफिर। मुसलमानो! कुरआन से बढ़ कर किसका फतवा है। अल्लाह से बढ़ कर किस की बात सच्ची है। (फ़तावा रज़वीया जिल्द 6, स0 91)

जानदार की तस्वीर की हुर्मत व मुमानेअत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जानदार की तस्वीर बनाने, बनवाने से मना फरमाया और उस पर शदीद व सख़्त वईद वारिद हुई। तस्वीर ख़्वाह पूरे जिस्म की हो या आधे जिस्म की या सिर्फ़ चेहरे की हो हर सूरत में नाजाइज़ है। (मुरत्तिब)

तस्वीर बनाने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

जानदार की तस्वीर बनाना मुतलक़न हराम है जो इसे जाइज़ कहे शरीअत पर इफ़्तरा करता है गुमराह है, मुस्तहिक़ ताज़ीर व सज़ाए नार है।

और तस्वीर का रखना तीन सूरतों में जाइज़ है।

★ एक यह कि चेहरा काट दिया या बिगाड़ दिया हो, क्योंकि तस्वीर चेहरा ही को कहा जाता है।

★ दूसरे यह कि इतनी छोटी हो कि ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आज़ा की तफ़्सील नज़र न आए।

★ तीसरे यह कि ख़्वारी व ज़िल्लत की जगह पड़ी हो जैसे फर्श पा अंदाज़ में, वरना रखना भी हराम। हाँ ग़ैर जानदार मिस्ल दरख़्त व मकान की तस्वीर खींचना, रखना सब जाइज़ है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द 9, स0 511)

तस्वीर कशी पर वईद और अहादीस

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़ी रूह की तस्वीर बनाना, बनवाना, ऐज़ाज़न अपने पास रखना सब हराम फरमाया और उस पर सख़्त वईदें इरशाद कीं और उनके दूर करने, मिटाने का हुक्म दिया।

हदीस 1 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हर मुसव्विर जहन्नम में है अल्लाह तआला हर तस्वीर के बदले जो उसने बनाई थी एक मख़्लूक़ पैदा करेगा कि वह जहन्नम में उसे अज़ाब करेगी। (बुख़ारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद)

हदीस 2 : बेशक निहायत सख़्त अज़ाब रोज़े क़यामत तस्वीर बनाने वालों पर है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 3 : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो मेरे बनाये हुए की तरह बनाने चले भला कोई च्यूंटी या गेहूं या जौ का दाना तो बना दें! (बुख़ारी, मुस्लिम, मुसनद)

हदीस 4 : बेशक यह जो तस्वीरें बनाते हैं क़यामत के दिन अज़ाब किए जायेंगे उन से कहा जायेगा यह सूरतें जो तुमने बनाई थीं उन में जान डालो। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई)

हदीस 5 : जो कोई तस्वीर बनाये तो बेशक अल्लाह तआला उसे अज़ाब करेगा यहाँ तक कि उसमें रूह फूंके और न फूंक सकेगा। (बुख़ारी, मुस्लिम, निसाई, अहमद)

हदीस 6 : क़यामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिसके दो आंखें होंगी देखने वाली और दो कान सुनने वाले और एक ज़बान कलाम करती वह कहेगी मैं तीन फ़िरक़ों पर मुसल्लत की गई हूँ।

★ जो अल्लाह का शरीक बताये।
★ और हर ज़ालिम हट धर्म।
★ और तस्वीर बनाने वाले। (मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी)

हदीस 7 : बेशक रोज़े क़यामत सब दोज़ख़ियों में ज़्यादा सख़्त अज़ाब उस पर है जिसने किसी नबी को शहीद किया, या किसी नबी ने जिहाद में उसे क़त्ल फ़रमाया, या बादशाह ज़ालिम, या जो शख़्स बेइल्म हासिल किए लोगों को बहकाने लगे और इन तस्वीर बनाने वालों पर। (मुसनद अहमद, तबरानी, अबू नईम)

हदीस 8 : बेशक रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब में वह है जो किसी नबी को शहीद करे। या कोई नबी जिहाद में उसे क़त्ल फरमाए, या जो अपने मां या बाप को क़त्ल करे और तस्वीर बनाने वाले और वह आलिम जो इल्म पढ़ कर गुम्राह हो। (बैहक़ी, शअबुल-ईमान)

तस्वीरदार पर्दा हुज़ूर की नागवारी का बाइस हुआ

उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सफर से तशरीफ़ फ़रमा हुए थे मैंने एक दरवाज़े पर तस्वीरदार पर्दा लटकाया हुआ था जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वापस तशरीफ लाए उसे मुलाहिज़ा फरमा कर रंग चेहर-ए-अनवर का बदल गया अन्दर तशरीफ़ न लाए। उम्मुल-मुमिनीन फरमाती हैं मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं अल्लाह की तरफ और अल्लाह के रसूल की तरफ तौबा करती हूँ मुझ से क्या ख़ता हुई हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वह पर्दा उतार कर फेंक दिया और फरमाया ऐ आइशा अल्लाह तआला के यहाँ सख़्त तर अज़ाब रोज़े क़यामत उन मुसव्विरों पर है जो ख़ुदा के बनाए हुए की नक़्ल करते हैं उन पर रोज़े क़यामत अज़ाब होगा।

उन से कहा जायेगा यह जो तुमने बनाया है उस में जान डालो जिस घर में यह तस्वीरें होती हैं उसमें रहमत के फरिशते नहीं आते। (बुख़ारी, मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मेरे पास जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की हुज़ूर मूर्तों को हुक्म दें कि उनके सर काट दिये जायें कि पेड़ की तरह रह जायें और तस्वीरदार पर्दे के लिए हुक्म फरमायें कि काट कर दो मसनदें बनाई जायें कि ज़मीन पर डाल कर पाँव से रौंदी जायें। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फरमाते हैं मैंने हुज़ूर पुर नूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह की दावत की हुज़ूर तशरीफ़ फरमा हुए पर्दे पर कुछ तस्वीरें बनी देखीं, वापस तशरीफ़ ले गये मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे मां–बाप हुज़ूर पर निसार किस सबब से हुज़ूर वापस हुए फरमाया घर में एक पर्दे पर तस्वीरें थीं और मलाइका रहमत उस घर में नहीं जाते जिसमें तस्वीरें हों। (निसाई, इब्ने माजा)

मदीने की तस्वीरों को मिटा दिया गया

जहाँ तस्वीरें होतीं उन्हें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने दस्ते अक़्दस से मिटा देते या दूसरे को मिटाने का हुक्म फरमाते। (मुरत्तिब)

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिस चीज़ में तस्वीर मुलाहिज़ा फरमाते उसे बे तोड़े न छोड़ते। (बुख़ारी, अबू दाऊद)

हिब्बान बिन हिसीन रिवायत करते हैं कि मुझ से अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने फरमाया कि मैं तुम्हें उस काम पर न भेजूं जिस पर मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मामूर फरमा कर भेजा कि जो तस्वीर देखो उसे मिटा दो और जो क़ब्र हद्दे शरअ् से ज़्यादा ऊंची पाओ उसे हद्दे शरअ् के बराबर करो। बुलन्दी क़ब्र में हद्दे शरअ् एक बालिश्त है। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक जनाज़े में थे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया तुम में कौन ऐसा है जो मदीने जा कर हर बुत को तोड़ दे और हर क़ब्र बराबर कर दे और हर तस्वीर मिटा दे। एक साहब ने अर्ज़ की मैं या रसूलुल्लाह फरमाया तो जाओ। वह जा कर वापस आए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैंने सब बुत तोड़ दिए और सब क़ब्रें बराबर कर दीं और सब तस्वीरें मिटा दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अब जो यह सब चीज़ें बनायेगा वह कुफ़्र व इंकार करेगा उस चीज़ के साथ जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई। (मुसनद अहमद)

इंतिबाह

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बुतों के साथ ऊंची क़ब्रों को भी तोड़ने का हुक्म फरमाया था उसकी वजह यह थी कि इस्लाम का शुरू ज़माना था लोग नये नये मुसलमान हुए थे। मुसलमान होने वालों में ज़्यादा तर कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन थे जो इससे क़ब्ल कुफ़्र व शिर्क और बुत परस्ती की नजासतों से आलूदा थे जो क़ब्रें बुलन्द थीं वह अक्सर मुशरेकीन ही की क़ब्रें थीं। ऐसा मुम्किन था कि उन क़ब्रों को देख कर उन्हें फिर से बुत परस्ती का ख़्याल आता, उन्हें औहाम व शुब्हात से बचने के लिए साहिबे शरीअत जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन क़ब्रों को मिस्मार व ज़मीन बोस कर देने का हुक्म फरमाया यही वजह थी कि शुरू ज़माने–ए–इस्लाम में मुसलमानों को ज़्यारते क़ुबूर से मना किया गया था फिर जब यह ख़दशात न रहे तो ज़्यारते क़ब्र वग़ैरह का हुक्म फरमाया।

मगर वहाबिया ने उस से यह समझा कि बिला इम्तियाज़ क़ब्रों को मिस्मार कर देना चाहिए जो दीन की बड़ी ख़िदमत होगी जिसके नतीजे में उन्होंने जन्नतुल–मुअल्ला व जन्नतुल–बक़ी में आराम फ़रमा सहाबा व सहाबियात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की क़ब्रों को नीस्त व नाबूद कर दिया, उन पर बुल्डोज़र चला दिया, उनके निशानात मिटा दिए, वहाबिया की इन नाज़ेबा हरकतों से आलमे इस्लाम में कोहराम बरपा हो गया अक़ीदतमन्द मुसलमानों के दिल पाश पाश हो गये लेकिन दौलत व हुकूमत के नशे में उन्होंने किसी बात की परवाह न की। दुनिया चीख़ती रही मगर उन्होंने अपने नापाक इरादों और प्रोग्राम के तहत हरमैन मोहतरमैन की क़ुबूर व क़ुब्बों को मिस्मार व तबाह कर दिया। (मुरत्तिब)

काबे की तसावीर मिटा दी गई

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रोज़े फ़त्हे मक्का काबा मुअज़्ज़मा के अन्दर तशरीफ़ फरमा हुए उसमें हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल व हज़रत मरयम व मलाइका किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तस्वीरें नज़र पड़ीं, कुछ पैकरदार, कुछ नक़्श दीवार, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वैसे ही पलट आए और फरमाया ख़बरदार हो बेशक इन बनाने वालों के कान तक भी यह बात पहुँची हुई थी कि जिस घर में कोई तस्वीर हो उसमें मलाइका रहमत नहीं जाते, फिर हुक्म फरमाया कि जितनी तस्वीरें मंक़ूश थीं सब मिटा दी गईं और जितनी मुजस्सम थीं सब बाहर निकाल दी गईं। उन्हीं में हज़रत सैय्यदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह व हज़रत सैय्यदना इस्माईल ज़बीहुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अला इब्नहुमा अल–अकरम व अलैहिमा व बारिक व सल्लम की तस्वीरें भी बाहर लाई गईं, जब तक काबा मुअज़्ज़मा सब तसावीर से पाक न हो गया हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने क़दमे अकरम से उसे शर्फ़ न बख़्शा। (बुख़ारी)

"दूसरी रिवायतों में है" कि काबा में जो तस्वीरें थीं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म फरमाया कि उन्हें मिटा दो। उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हु और दीगर सहाब–ए–किराम चादरें उतार–उतार कर इम्तिसाल हुक्मे अक़्दस में सरगरम हुए। ज़मज़म शरीफ़ से डोल के डोल भर कर आते और काबा को अन्दर बाहर से धोया जाता, कपड़े भिगो भिगो कर तस्वीरें मिटाई जातीं यहाँ तक कि वह मुश्रिकों के आसार सब धो कर मिटा दिए, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़बर पाई कि अब कोई निशान बाक़ी न रहा उस वक़्त अन्दर रौनक़ अफरोज़ हुए। इत्तिफ़ाक़ से बाज़ तसावीर मिस्ल तस्वीर इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम का निशान रह गया था, फिर नज़र फरमाई तो हज़रत मरयम की तस्वीर भी साफ न धुली थी, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक डोल पानी मंगा कर बनफ़्से नफीस कपड़ा तर करके उनके मिटाने में शिरकत फरमाई और इरशाद फरमाया अल्लाह की मार उन तस्वीर बनाने वालों पर। (मुसनद अहमद, उमर बिन शुबह, इब्ने अबी शैबा)

रहमत के फरिश्ते नहीं आते हैं

रहमत के फ़रिश्ते रहमत की जगह आते हैं मावाये श्यातीन या मासियत व गुनाह की जगह पे नहीं आते। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की हम मलाइका रहमत उस घर में नहीं जाते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो। (मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिब्रीले अमीन ने अर्ज़ की तीन चीज़ें हैं कि जब तक उन में से एक भी घर में होगी कोई फरिश्ता रहमत व बरकत का उस घर में दाख़िल न होगा। कुत्ता, या जुनुब, या जानदार की तस्वीर। (मुसनद अहमद, निसाई, इब्ने माजा)

एक और हदीस में है कि रहमत के फरिश्ते उस घर में नहीं जाते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो।

(सहाहे सित्ता, मुसनद अहमद)

हब्शा का गिर्जा

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मरज़ में बाज़ अज़्वाजे मुतह्हरात ने एक गिर्जा का ज़िक्र किया जिसका नाम मारिया था और हज़रत उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा व उम्मुल–मुमिनीन उम्मे हबीबा मुल्क हब्शा हो आई थीं, उन दोनों बीबियों ने मारिया की ख़ूबसूरती और उसकी तस्वीरों का ज़िक्र किया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सर उठा कर फरमाया, यह लोग जब उन में कोई नेक बन्दा नबी या वली इंतिक़ाल करता है उसकी क़ब्र पर मस्जिद बना कर उसमें तबर्रुकन उसकी तस्वीर लगाते हैं, यह लोग बदतरीन ख़ल्क़ हैं।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ुदा के महबूब बन्दों की तसावीर बनाने के सबब से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनके लिए फरमाया कि यह लोग बदतरीन ख़ल्क़ हैं, और दूसरी हदीस में फरमाया गया है कि उन पर अल्लाह की लानत है। (मुरत्तिब)

हज़रत उमर गिर्जा पर नहीं गये

जब अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुल्के शाम को तशरीफ़ ले गये एक ज़मींदार ने आकर अर्ज़ की मैंने हुज़ूर के लिए खाना तैयार कराया है, मैं चाहता हूँ हुज़ूर क़दम रंजा फरमायें कि हम चशमों में मेरी इज़्ज़त हो अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया हम उन कनीसों में नहीं जाते जिनमें यह तस्वीरें होती हैं।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 143 ता 146)

तसावीर से बुत परस्ती का आग़ाज़

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल इब्लीस के मक्र से पनाह दे दुनिया में बुत परस्ती यूं ही हुई कि सालेहीन की मुहब्बत में उनकी तस्वीरें बना कर घरों और मस्जिदों में तबर्रुकन रखें और उन से लज़्ज़ते इबादत की ताईद समझी शुदा शुदा वही माबूद हो गईं।

(वद, सुवा, यग़ूस, यऊक़ और नस्र) क़ौमे नूह के सालेहीन के नाम थे जब यह लोग इंतिक़ाल कर गये तो शैतान ने लोगों को वर्ग़लाया कि उन लोगों की जाये नशिस्त में कुछ तसावीर और मुजस्समे नसब किये जायें और इन सालेहीन के नाम पर इन तसवीर और मुजस्समों के नाम रखे जायें ताकि उनकी याद बाक़ी रहे, तो लोगों ने ऐसा ही किया लेकिन उनकी अभी परस्तिश नहीं हुई मगर जब यह लोग मर गये और बाद के लोगों को हक़ीक़ते हाल का इल्म न रहा तो उन मुजस्समों की पूजा होने लगी। (त, बुख़ारी)

बुत परस्ती की शुरूआत

फाकही, अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से रावी, बुत परस्ती की इब्तिदा हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माना में हुई चूंकि बेटे बाप के पैरू होते हैं, उन में से एक आदमी मर गया उसके बेटे ने उस पर आह व फ़ुग़ां किया और उस पर सब्र नहीं कर पाया तो उसने अपने बाप का एक मुजस्समा बना लिया। जब उसके देखने का शौक़ होता तो उसे देख लेता, फिर वह जब मर गया तो उसके बेटे ने भी वैसा ही किया कि अपने बाप का मुजस्समा बना लिया यहाँ तक कि लोग इसी पर क़ाइम रहे

उनके बाप दादा मर गये तो उनके बेटों ने कहा कि हमारे बाप दादा ने यह पूजने के लिए बनाया था लिहाज़ा उनके बेटे उन तसावीर और मुजस्समों की पूजा करने लगे।

(त, फाकही, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 64)

अब्द बिन हुमैद अपनी तफ़्सीर में अबू जाफर बिन अल–मुहलिब से रिवायत करते हैं:

वद, एक मुसलमान शख़्स का नाम था वह अपनी क़ौम में महबूब व हर दिल अज़ीज़ था जब उसकी वफात हो गई तो सरज़मीने बाबुल में उसकी क़ब्र के इर्द गिर्द लोग जमा हो गये और उस पर गिरिया व ज़ारी करने लगे जब इब्लीसे लईन ने उस पर लोगों का रोना चिल्लाना देखा तो उसने उसी के मिस्ल एक इंसान की तस्वीर बनाई और कहा कि मैंने उस शख़्स पर तुम्हारा रोना चिल्लाना देखा क्या मैं तुम्हारे लिए उसी के मिस्ल एक तस्वीर बना दूँ, वह तुम्हारी मज्लिस में रहेगी उस से तुम उस शख़्स को याद करते रहोगे सबने कहा कि हाँ ठीक है ऐसा कर दो तो इब्लीसे लईन ने उसी के मिस्ल एक तस्वीर बनाई जिसे लोगों ने अपनी मज्लिस में रख लिया और उसकी याद मनाने लगे फिर जब इब्लीस ने देखा कि लोग उसे बड़ी दिलचस्पी व रग़बत से याद कर रहे हैं तो इब्लीस ने कहा क्या मैं ऐसा करूं कि तुम में से हर एक के घर में इस मोहतरम शख़्स का एक–एक मुजस्समा बना दूं वह हर एक के घर में रहेगा और तुम इसे याद करोगे सबने कहा हाँ ठीक है ऐसा मुजस्समा बना दो उसके बाद इब्लीसे लईन ने हर घर के लिए उसी शख़्स के मिस्ल एक मुजस्समा बनाया जिसे लोगों ने बख़ुशी क़बूल कर लिया और उसको याद करने लगे। फिर यही मंज़र उनके बेटों ने देखा तो वह भी अपने बाप दादाओं की तरह उसकी यादगार मनाते रहे, कुछ पुश्तों तक यह बात रही फिर उस यादगार का मुआमला ख़त्म हो गया, यहाँ तक कि लोगों ने उसे माबूद बना लिया और उसकी पूजा करने लगे। सबसे पहले ग़ैरुल्लाह की परस्तिश का यही वाक़िया है और सबसे पहले जिस बुत की पूजा हुई उसका नाम "वद" था।

(त, तफ़्सीर अब्द बिन हुमैद, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 311)

इन रिवायात से मालूम हुआ कि बुत परस्ती की इब्तिदा तस्वीर की शक्ल में हुई फिर मुजस्समा तैयार हुआ और पूजा होने लगी, इसलिए तस्वीर बनाने वालों पर लानत की गई है।

(मुरत्तिब)

तस्वीरदार कपड़े में नमाज़ की कराहत

किसी जानदार की तस्वीर जिसमें उसका चेहरा मौजूद हो और इतनी बड़ी हो कि ज़मीन पर रख कर खड़े से देखें तो आज़ा की तफ़्सील ज़ाहिर हो, इस तरह की तस्वीर जिस कपड़े पर हो उसका पहनना, पहनाना, बेचना, ख़ैरात करना सब नाजाइज़ है और इसे पहन कर नमाज़ मक्रूहे तहरीमी है जिसका दोबारा पढ़ना वाजिब है। ऐसे कपड़े पर से तस्वीर मिटा दी जाये या उसका सर या चेहरा बिल्कुल मह्व कर दिया जाये उसके बाद उसका पहनना, पहनाना, बेचना, ख़ैरात करना उस से नमाज़ सब जाइज़ हो जायेगा। अगर वह ऐसे पक्के रंग की हो कि मिट न सके, धुल न सके तो ऐसे ही पक्के रंग की सियाही उसके सर या चेहरे पर इस तरह लगा दी जाये कि तस्वीर का उतना अज़्व मह्व हो जाये सिर्फ़ यह न हो कि उतने अज़्व का रंग सियाह मालूम हो कि यह मह्व व मनाफ़ी सूरत न होगा।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 18)

सेमाअ व क़व्वाली

मज़ामीर और बाजा वग़ैरा के साथ क़व्वाली सुनने सुनाने के बारे में सिलसिल-ए-चिश्तीया और सिलसिल-ए-क़ादरीया वालों के दरम्यान कुछ इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, अह्ले चिश्त कहते हैं कि मुरव्वजा क़व्वाली या समाअ जाइज़ है अकाबिर सिलसिल-ए-चिश्त उसे सुनते थे उनके मज़ारों पे आजकल भी यह बातें हो रही हैं। सिलसिल-ए-क़ादरीया के उलमा ख़ुसूसन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने मुरव्वजा क़व्वाली या समाअ के नाजाइज़ होने का फतवा दिया है और सादाते चिश्त के अक़्वाल से साबित फरमाया है कि यह मम्नूअ़ व हराम है मज़ीद हदीस के हवाले से भी यह वाज़ेह व आशकारा फरमाया है कि बाजा गाजा सब हराम व नाजाइज़ हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू ने इस मसअला को अपनी तसानीफ़ में जाबजा ब्यान फरमाया है मैं यहाँ पर उनके कुछ इक़्तिबासात पेश कर रहा हूँ मुलाहिज़ा फ़रमायें। (मुरत्तिब)

मज़ामीर और बाजा हराम हैं

समाअ मआ मज़ामीर और आलाते लह्व से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद बरैलवी रज़ा फरमाते हैं :

मज़ामीर यानी आलात लह्व व लइब बर-वजहे लह्व व लइब बिला शुबह हराम हैं, जिनकी हुर्मत औलिया व उलमा दोनों फ़रीक़ के कलिमाते आलिया में मिसरह है, उनके सुनने सुनाने के गुनाह होने में शक नहीं कि बाद इसरार कबीरा है और सिलसिल-ए-चिश्त के सादात की तरफ उस की निस्बत महज़ बातिल व इफ़्तिरा है।

हज़रत सैय्यदी फ़ख़रुद्दीन ज़रादी हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुल मिल्लह वदीन के अजिल्ला ख़ुल्फ़ा से हैं उन्होंने हज़रत सय्यदना महबूबे इलाही के ज़माने में उन्हीं के हुक्म से मसला समाअ में एक रिसाला "कश्फ़ुल-क़िना अन उसूलिस्समा" तालीफ़ फरमाया, अपने उसी रिसाला में फरमाते हैं।

बाज़ मग़लूबुल-हाल लोगों ने अपने ग़लब-ए-हाल व शौक़ में समाअ मअ मज़ामीर सुना और हमारे पीराने तरीक़त रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का सुनना इस तोहमत से बरी है वह तो सिर्फ़ क़व्वाल की आवाज़ है उन अश्आर के साथ जो कमाल सनअते इलाही जल्ला व उला से ख़बर देते हैं।

बल्कि ख़ुद हज़रत महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा फ़वाइदुल-फ़ुवाद वग़ैरहा में जाबजा हुर्मते मज़ामीर की तस्रीह फरमाई, बल्कि हुज़ूरे वाला सिर्फ़ ताली को भी मना फरमाते कि मुशाबेह लह्व है, बल्कि ऐसे अफ़आल में उज़्र ग़लबा हाल को भी पसन्द न फरमाते कि मुद्दय्याने बातिल को राह न मिले।

फवाइदुल-फवाद शरीफ़ में साफ तस्रीह फरमाई कि मज़ामीर हराम है।

हुज़ूर मम्दूह के यह इरशादाते आलिया हमारे लिए सनद काफी, और अह्ले हवा व हवस, मुद्दय्याने चिश्तीयत पर हुज्जत वाफी।

हाँ जिहाद का तबल, सहरी का नक़्क़ारा, हम्माम का बूक़, एलाने निकाह का बे जलाजल दफ जाइज़ हैं कि यह आलात लह्व व लइब नहीं।

समाअ बिला मज़ामीर की चन्द सूरतें

बग़ैर मज़ामीर के सिर्फ़ समाअ हो तो उसकी चन्द सूरतें हैं।

अव्वल : रंडियों, डोमनियों, महल्ले फ़ितना, अमरदों का गाना।
दोम : जो चीज़ गाई जाये, मासियत पर मुश्तमिल हो मसलन फहश या किज़्ब या किसी मुसलमान या ज़िम्मी की हिज्व, या शराब व ज़िना वग़ैरा फ़िस्क़ियात की तरग़ीब, या किसी ज़िन्दा औरत ख़्वाह मर्द की बित्ताईन तारीफ़ हुस्न या किसी मुऐय्यन औरत का अगरचे मुर्दा हो ऐसा ज़िक्र जिससे उसके अक़ारिब, अहिब्बा को हया व आरे आए।
सोम : बतौर लह्व व लइब सुना जाए अगरचे उसमें कोई ज़िक्र मज़्मूम न हो।
तीनों सूरतें मम्नूअ् हैं, ऐसा ही गाना लह्वल–हदीस है (यानी बात का खेल, क़ुरआने करीम में बात का खेल ख़रीदने वाले पर वईद आई है मुरत्तिब) उसकी तहरीम में और कुछ न हो तो सिर्फ़ यह हदीस काफी है कि –
तीन खेलों के सिवा इब्ने आदम का हर खेल हराम है। (त)
इनके अलावा वह गाना जिसमें न मज़ामीर हों, न गाने वाले महले फ़ित्ना, न लह्व व लइब मक़्सूद, न कोई नाजाइज़ कलाम गायें, बल्कि सादे आशिक़ाना गीत, ग़ज़लें, ज़िक्र बाग़ व बहार व ख़त व ख़ाल व रुख़ व ज़ुल्फ़ व हुस्न व इश्क़ व हिज्र व वेसाल व वफ़ाए उश्शाक़ व जफ़ाए माशूक़ वग़ैरहा उमूर इश्क़ व तग़ज़्ज़ुल पर मुश्तमिल सुने जायें तो फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार व अह्ले शहवाते दुनिया को उससे भी रोका जायेगा, इस हदीस का इशारा इसी तरफ़ है कि –
गाना दिल में निफ़ाक़ पैदा करता है जिस तरह पानी सब्ज़ा उगाता है।
(त, बैहक़ी शअ्बुल–ईमान)

और अह्लुल्लाह के हक़ में यक़ीनन जाइज़ बल्कि मुस्तहब कहिए तो दूर नहीं।
गाना कोई नई चीज़ पैदा नहीं करता दबी बात को उभारता है, जब दिल में बुरी ख़्वाहिश, बेहूदा आलाइशें हों तो उन्हीं को तरक़्क़ी देगा। और जो पाक मुबारक सुथरे दिल शहवात से ख़ाली और मुहब्बते ख़ुदा और रसूल से मम्लू हैं उनके इस शौक़े महमूद व इश्क़े मस्ऊद को अफ़्ज़ाइश देगा। इन बन्दगाने ख़ुदा के हक़ में उसे एक अज़ीम दीनी काम ठहराना कुछ बेजा नहीं।

जाइज़ अश्आर पढ़ना

यह उस चीज़ का बयान था जिसे उर्फ़ में गाना कहते हैं और अगर अशआर हम्द व नअ्त व मंक़बत व वअ्ज़ व पन्द व ज़िक्रे आख़िरत, बूढ़े या जवान मर्द, ख़ुश इल्हानी से पढ़ें और बनीयते नेक सुने जायें कि उसे उर्फ़ में गाना नहीं बल्कि पढ़ना कहते हैं तो उसके मना पर तो शरअ् से असलन दलील नहीं।
हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के लिए ख़ास मस्जिदे अक़्दस में मिंबर रखना और उनका उस पर खड़े हो कर नअ्ते अक़्दस सुनाना और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व सहाब–ए–किराम का इस्तेमा फरमाना हदीस सही बुख़ारी शरीफ़ से वाज़ेह है, और अरब के रस्म हदी ज़माना सहाबा व ताबईन बल्कि अह्दे अक़्दस ख़ुद रिसालत में राइज रहना मर्दों की ख़ुश इल्हानी के जवाज़ पर दलील ज़ाहिर है।
इंजश्शा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हदी पर हुज़ूरे वाला सवलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह ने इंकार न फरमाया, बल्कि बलिहाज़े औरात इरशाद हुआ कि ऐ इंजश्शा नर्मी करो, नाज़ुक शीशियों को न तोड़ो। उनकी आवाज़ चूंकि दिलकश व दिलनवाज़ थी, औरतें नर्म व नाज़ुक शीशियाँ हैं जिन्हें थोड़ी ठेस बहुत होती है। (बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 54, 55)
हदी, वह अश्आर जो सफर के मौक़ा पर राह चलते हुए पढ़ते हैं जिन से ऊंट गरमा जाते और तेज़ चलते हैं। (मुरत्तिब)

मुरव्वजा क़ौव्वाली का हुक्म

आजकल के उर्स वग़ैरह में राइज क़व्वाली के हुक्म से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फ़रमाते हैं।

ढोल, सारंगी, बाजा वग़ैरह के साथ क़व्वाली हराम है हाज़िरीन सब गुनहगार हैं और उन सबका गुनाह ऐसा उर्स करने वालों और क़व्वालों पर है और क़व्वालों का भी गुनाह उस उर्स करने वालों पर, बग़ैर इसके कि उर्स करने वाले के माथे क़व्वालों का गुनाह जाने से क़व्वालों पर से गुनाह की कुछ कमी आए या इसके क़व्वालों के ज़िम्मा, हाज़ेरीन का वबाल पड़ने से हाज़िरीन के गुनाह में कुछ तख़फ़ीफ़ हो नहीं बल्कि हाज़िरीन में हर एक पर अपना पूरा गुनाह, और क़व्वालों पर अपना गुनाह अलग और सब हाज़िरीन के बराबर जुदा और सब हाज़िरीन के बराबर अलाहिदा।

वजह यह कि हाज़िरीन को उर्स करने वालों ने बुलाया, या उनके लिए इस गुनाह का सामान फ़ैलाया और क़व्वालों ने उन्हें सुनाया, अगर वह सामान न करता, यह ढोल सारंगी न सुनाते तो हाज़िरीन इस गुनाह में क्यों पड़ते, इसलिए उन सबका गुनाह इन दोनों पर हुआ। फिर क़व्वालों के इस गुनाह का बाइस वह उर्स करने वाला हुआ, वह न करता, न बुलाता तो यह क्यों कर आते, बजाते, लिहाज़ा क़व्वालों का गुनाह भी उस बुलाने वाले पर हुआ।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी अम्रे हिदायत की तरफ बुलाए जितने उसका इत्तिबा करें उन सबकी बराबर सवाब पाये और उस से उनके सवाबों में कुछ कमी न आए। और जो किसी अम्रे ज़लालत की तरफ बुलाए जितने उसके बुलाने पर चलें उन सबके बराबर उस पर गुनाह हो और उससे उनके गुनाहों में कुछ तख़फ़ीफ़ न हो।

(मुसनद अहमद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

मज़ामीर की हुर्मत में अहादीसे कसीरा हद्दे तवातुर तक पहुँची हुई हैं, उन में से एक आला हदीस सही बुख़ारी शरीफ़ में है।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ज़रूर मेरी उम्मत में वह लोग होने वाले हैं जो हलाल ठहरायेंगे। औरतों की शर्मगाह यानी ज़िना और रेशमी कपड़ों और शराब और बाजों को। (बुख़ारी)

इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद है :

तमाम खेल हराम हैं और ढोल बजा कर गाना भी हराम है।

ग़र्ज़ कि हदीस व फ़िक़्ह का हुक्म तो यह है कि ढोल बाजा ताशा सब हराम है, हाँ अगर किसी को क़स्दन हवस परस्ती मुतसव्विर हो तो उसका इलाज किस के पास है, काश आदमी गुनाह करे और गुनाह जाने, इक़रार लाए, इसरार से बाज़ आए लेकिन यह तो और भी सख़्त है कि हवस भी पाले और इल्ज़ाम भी टाले, अपने लिए हराम को हलाल बना ले, फिर उसी पर बस नहीं बल्कि मआज़ल्लाह उसकी तोहमत महबूबाने ख़ुदा अकाबिरे सिलसिला आलिया चिश्त क़ुद्देसत असरारहुम के सर धरते हैं, न ख़ुदा से ख़ौफ़, न बन्दों से शर्म करते हैं हालांकि ख़ुद महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन सुल्तानुल–औलिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मज़ामीर हराम है।

कशफ़ुल–क़िना में है कि हमारे मशाइख़े किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का समाअ इस मज़ामीर के बुहतान से बरी है वह सिर्फ़ क़व्वाल की आवाज़ है उन अशआर के साथ जो कमाल सनअते इलाही की ख़बर देते हैं।

ख़ुदा रा इंसाफ़ कीजिए कि इस इमाम जलील खानदान आली चिश्त का यह इरशाद मक़बूल होगा या आजकल मुद्दय्याने ख़ामकार की तोहमत बेबुनियाद, जिसका फसाद ज़ाहिर है। वला हौला व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल–अलीयिल–अज़ीम।

उज़्र इस्तिग़राक़ कोई चीज़ नहीं

सैरुल–औलिया शरीफ़ में है, एक शख़्स ने हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की आज आस्ताना बाज फ़क़ीरों ने ऐसे मजमा में रक़्स किया है जिसमें चंग व रुबाब और मज़ामीर थे फरमाया कि उन्होंने ठीक नहीं किया जो नाजाइज़ है वह नापसन्दीदा है। उसके बाद एक शख़्स ने कहा कि जब यह लोग उस जगह से बाहर आए उन से कहा गया कि आप लोगों ने क्या किया उस मज्मा में मज़ामीर था तो फिर आप लोगों ने कैसे समअ सुना और रक़्स किया? उन्होंने जवाब दिया कि हम सिमा में ऐसे मुस्तग़रक़ व महव थे कि यह मालूम ही न हुआ कि मज़ामीर है या नहीं। यह सुन कर हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ ने फरमाया कि यह जवाब कोई चीज़ नहीं है यह बात तो तमाम गुनाहों में कही जा सकती है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

मुसलमानो! कैसा साफ इरशाद है कि मज़ामीर नाजाइज़ है और इस उज़्र का कि हमें इस्तेग़राक़ के बाइस ख़बर न हुई क्या मसकत जवाब अता फरमाया कि ऐसा हीला हर गुनाह में चल सकता है, शराब पिए और कह दे शिद्दते इस्तिग़राक़ के बाइस हमें ख़बर न हुई कि शराब है या पानी, ज़िना करे और कह दे ग़लब–ए–हाल के सबब तमीज़ न हुई कि जुरआ या बेगानी।

इंतिबाह

इसी सैरुल–औलिया शरीफ़ में है हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने मना किया है कि मज़ामीर और दीगर मुहर्रिमात व मम्नूअ़ चीज़ें समाअ में न हों और इस बारे में बहुत ज़्यादा ग़ुलू किया गया और यहाँ तक कहा गया है कि अगर इमाम को सह्व हो जाए तो मर्द तस्बीह के ज़रिया बताए यानी सुब्हानल्लाह कहे लेकिन औरत सुब्हानल्लाह ने कहे क्योंकि औरत की आवाज़ भी औरत है दूसरे उसकी आवाज़ भी न सुनें बल्कि औरत अगर लुक़्मा देना चाहे तो दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की पुश्त पर मारे और ताली न बजाए कि ताली लह्व व लइब में बजाई जाती है। खेलों और इस क़िस्म की बातों में इस हद तक परहेज़ का हुक्म आया है लिहाज़ा समाअ में बदरजहा औला ऐसा नहीं होना चाहिए यानी हाथ मारने के मना में इस तरह की एहतियात का हुक्म हुआ है लिहाज़ा समाअ में मज़ामीर बतरीक़ औला मना है।

मुसलमानो! जो अइम्म–ए–तरीक़त इस दरजा एहतियात फरमायें कि ताली की सूरत को मम्नूअ़ बतायें वह और मआज़ल्लाह मज़ामीर की तोहमत? ख़ुदा रा इंसाफ़! कैसा ज़ब्त बेरब्त है, अल्लाह तआला इत्तिबा–ए–सुन्नत शैतान से बचाए और उन सच्चे महबूबाने ख़ुदा का सच्चा इत्तिबा अता फरमाए। आमीन!

जवाज़े समाअ की शराइत

मौलाना मुहम्मद बिन मुबारक बिन अल्वी किरमानी मुरीद हुज़ूर शैख़ुल–आलम फरीदुद्दीन गंज शकर व ख़लीफ़–ए–हुज़ूर सैय्यदना महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु किताब सैरुल–औलिया में फरमाते हैं :

हज़रत सुल्तानुल–मशाइख़ क़ुद्देसा सिर्रहुल–अज़ीज़ फरमाते हैं कि समाअ में यह चन्द चीज़ें हों तो समाअ जाइज़ व मबाह होगा।

1. सुनाने वाले सब मर्द हों बच्चे और औरतें न हों।
2. सुनने वाले यादे हक़ से ख़ाली न हों, अह्लुल्लाह हों।
3. जो सुनाया जाये वह फहश व बेहयाई और मज़ाक़ न हो।
4. मज़ामीर, ढोल, बाजा और इस क़िस्म की चीज़ें दरम्यान में न हों। इन शराइत के साथ समाअ हलाल है वरना नहीं।

मुसलमानो! यह फतवा है सुरूर व सरदार सिलसिला आलिया चिश्त हज़रत सुल्तानुल–औलिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का, क्या इसके बाद भी गुमराहियों को मुँह दिखाने की गुंजाइश है?

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 199, 200)

एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

उलमा ने इबाहते समाअ के शराइत में यह भी शुमार फरमाया कि उनमें कोई अमरद न हो। क्योंकि अमरद अपनी ख़ूबसूरती या ख़ुश आवाज़ी के सबब अन्देशा–ए–महल्ले फित्ना है।

मन्कूल है कि औरत के साथ दो शैतान होते हैं और अमरद के साथ सत्तर।

उलमा फरमाते हैं ख़ूबसूरत अमरद का हुक्म मिस्ल औरत के है।(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 64)

एक शुबह का इज़ाला

बाज़ लोग यह कहते हैं कि बग़दाद शरीफ़ व अजमेर शरीफ़ वग़ैरह दर्गाहों और आस्तानों पर मज़ामीर वग़ैरह के साथ समाअ और क़व्वालियाँ होती हैं लिहाज़ा क़व्वाली जाइज़ होनी चाहिए, इसी शुबह का इज़ाला करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं।

हारमूनियम ज़रूर हराम है बग़दाद शरीफ़ में तो उसका निशान भी नहीं, न अजमेर शरीफ़ में देखने में आया न फासिक़ों का फ़ेअ़्ल हुज्जत हो सकता है, न किसी आलिम ने उसे हलाल कहा, अगर किसी ने हलाल कहा हो तो वह आलिम न होगा ज़ालिम होगा।

ग्रामोफ़ोन से क़ुरआन वग़ैरह सुनने का मसअला

ग्रामफून से क़ुरआन मजीद का सुनना मम्नूअ़ है कि उसे लह्व व लइब में लाना बेअदबी है, और नाच बाजे या नाजाइज़ गाने की आवाज़ भी सुनना मम्नूअ़ है और अगर कोई जाइज़ आवाज़ हो न उसमें कोई मुंकिर शरई न वह कुछ महल्ले अदब तो उसके सुनने में फ़ी नफ़्सेही हरज नहीं हाँ लह्व का जलसा हो तो उसमें शिर्कत की मुमानेअत है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 398)

क़ब्र शरीफ़ में हज़रत बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह की परेशानी

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह तआला अलैह के मज़ार शरीफ़ पर मज्लिसे समाअ में क़व्वाली हो रही थी। आजकल तो लोगों ने बहुत इख़्तिराअ़ कर लिए हैं नाच वग़ैरह भी कराते हैं हालांकि उस वक़्त बारगाहों में मज़ामीर भी न थे, हज़रत सैय्यदना इब्राहीम इयरजी रहमतुल्लाह तआला अलैह जो हमारे पीराने सिलसिला में से हैं बाहर मज्लिसे समाअ के तशरीफ़ फरमा थे। एक साहब सालेहीन से आपके पास आए और गुज़ारिश की मज्लिस में तशरीफ़ ले चलिए, हज़रत सैय्यदना इब्राहीम इयरजी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फरमाया तुम जानने वाले हो मवाजहे अक़्दस में हाज़िर हो अगर हज़रत राज़ी हों, मैं अभी चलता हूँ। उन्होंने मज़ारे अक़्दस पर मुराक़बा किया देखा कि हुज़ूर क़ब्र शरीफ़ में परेशान ख़ातिर हैं और उन क़व्वालों की तरफ इशारा करके फरमाते हैं, इन बदबख़्तों ने इस वक़्त मुझे परेशान कर रखा है। वह वापस आए और क़ब्ल इसके कि अर्ज़ करें फरमाया आपने देखा। (अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा अव्वल, स0 93)

हाल और वज्द का हुक्म

आजकल जहाँ क़व्वालियाँ होती हैं वहाँ पर तरह–तरह की ख़ुराफ़ात भी होती हैं कि वज्द व हाल के नाम पर मर्द व औरत मिल कर नाचते हैं और कुछ मक़ामात पर तो बाज़ पीर अपने मुरीद और मुरीदा औरतों के हाथ में हाथ डाल कर रक़्स करते हैं और मशहूर यह किया जाता है कि समाअ के दौरान में वज्द आ गया हालांकि इस क़िस्म के अफ़आल व हरकात शरअन नाजाइज़ व हराम हैं।

(मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू एक इस्तिफ़सार के जवाब में फरमाते हैं :

अगर वज्द सादिक़ है और हाल ग़ालिब और अक़्ल मस्तूर और इस आलम से दूर तो उस पर तो क़लम ही जारी नहीं और अगर ब–तकल्लुफ़ वज्द करता है। तो लचके तोड़े के साथ हराम है और बग़ैर उसके अगर रिया व इज़्हार के लिए है तो जहन्नम का मुस्तहिक़ है, और अगर सादिक़ीन के साथ तशब्बुह बनीयत ख़ालेसा मक़्सूद है कि बनते बनते भी हक़ीक़त बन जाती है तो हसन व महमूद है।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी क़ौम का मुशाबेह बने वह उन्हीं में से है।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 49)

ताज़ियादारी

मुसलमानों में बहुत सारी बिदआत व ख़ुराफात रिवाज पा चुकी हैं उलमा–ए–किराम ने उनके सद्दे बाब के लिए सई बलीग़ फरमाई मगर मुआशरा इन जरासीम से मुकम्मल पाक न हो सका ख़ुसूसन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू ने अपने ख़ून जिगर से इस्लामी इक़्दार की आबयारी की और माहौल में फैली हुई बुराई व बेराह रवी के इलाज व नुस्ख़े बताए, अगर मुसलमान आला हज़रत के फरमूदात पर अमल करें और उनकी पुकार पर लब्बैक कहें तो हमारा मुआशरा बुराईयों और बिदआत व ख़ुराफ़ात के तअफ़्फ़ुन से पाक व साफ हो सकता है। इसकी ज़िन्दा मिसाल मुहर्रम शरीफ़ की ताज़ियादारी है, ताज़िया दर हक़ीक़त रौज़ा शहीदे आज़म इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शबीह व तिम्साल था मगर लोगों ने मुख़्तलिफ़ ख़ुराफ़ात जोड़ दिए जिससे ताज़िया की असल हक़ीक़त रूपोश हो गई और नई तराश ख़राश का नाम ताज़िया पड़ गया, उसकी हक़ीक़त को जानने के लिए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू की दर्द अंगेज़ तहरीर मुलाहिज़ा फरमायें।

ताज़िया की हक़ीक़त और उसमें ख़ुराफात

★ ताज़िया की असल इस क़दर थी कि रौज़–ए–पुर नूर हुज़ूर शहज़ाद–ए–गुलगूं क़ुबा हुसैन शहीद ज़ुल्म व जफा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की सही नुक़्ल बना कर बनीयते तबर्रुक मकान में रखना, उसमें शरअन कोई हरज न था कि तस्वीरे मकानात वग़ैरह ग़ैर जानदार की बनाना, रखना सब जाइज़, और ऐसी चीज़ें कि मुअज़्ज़माने दीन की तरफ मंसूब हो कर अज़मत पैदा करें उनकी तिम्साल बनीयत तबर्रुक पास रखना क़तअन जाइज़, जैसे सदहा साल से तबक़तन फ़तबक़तन अइम्म–ए–दीन व उलमा मोतमदीन नअ़लैन शरीफ़ैन हुज़ूर सैय्यदुल–कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नक़्शे बनाते, और उनके फवाइदे जलीला व मनाफ़े जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तस्नीफ़ फरमाते हैं। मगर जुह्हाल बेख़ुर्द ने इस असल जाइज़ को बिल्कुल नीस्त व नाबूद करके सदहा ख़ुराफात वह तराशें कि शरीअते मुतह्हरा से अल–अमान अल–अमान की सदाएँ आईं।

★ अव्वल तो नफ़्से ताज़िया में रौज़–ए–मुबारक की नक़ल मल्हूज़ न रही, हर जगह नई तराश, नई गढ़त, जिसे इस नक़ल से कुछ इलाक़ा न निस्बत, फिर किसी में परियाँ, किसी में बुराक़, किसी में और बेहूदा तुम्तराक़, फिर कूचा बकूचा व दश्त बदश्त इशाअते ग़म के लिए उनका गश्त, और

उनके गिर्द सीना ज़नी, और मातम साज़शी की शोर अफ़गनी कोई उन तस्वीरों को झुक–झुक कर सलाम कर रहा है। कोई मश्गूल तवाफ़, कोई सज्दा में गिरा है, कोई इन माया बिदआत को मआज़ल्लाह जलवागाहे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु समझ कर उस अबरक पन्नी से मुरादें, माँगता, मिन्नतें मानता है, हाजत रवा जानता है, फिर बाक़ी तमाशे, बाजे, ताशे, मर्दों, औरतों का रातों को मेल, और तरह तरह के बेहूदा खेल, इन सब पर तुर्रा हैं।

★ ग़रज़ अशर–ए–मुहर्रमुल–हराम कि अगली शरीअतों से इस शरीअत पाक तक निहायत बा बरकत व महल्ले इबादत ठहरा हुआ था, इन बेहूदा रुसूम ने जाहिलाना और फ़ासिक़ाना मेलों का ज़माना कर दिया। फिर वबाले बिदआत का वह जोश हुआ कि ख़ैरात को भी बतौर ख़ैरात न रखा, रिया व तफ़ाख़ुरे एलानिया होता है, फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मुहताजों को दें, बल्कि छतों पर बैठ कर फेकेंगे। रोटियाँ ज़मीन पर गिर रही हैं, रिज़्क़े इलाही के बेअदबी होती है, पैसे देते हैं गिर कर ग़ायब होते हैं, माल की इज़ाअत हो रही है, मगर नाम तो हो गया कि फलां साहब लंगर लुटा रहे हैं।

★ अब बहारे अशरह के फूल खिले, ताशे, बाजे, बजते चले, तरह–तरह खेलों की धूम, बाज़ारी औरतों का हर तरफ़ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रुसूम, जशन यह कुछ, और उसके साथ ख़्याल वह कुछ, कि गोया यह साख़्ता तस्वीरें बऐनिहा हज़रात शोहदा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम के जनाज़े हैं। कुछ नोच उतार बाक़ी तोड़ता दफन कर दिए, यह हर साल इज़ाअते माल के वबाल व जुर्म जुदागाना रहे। अल्लाह तआला सदक़ा हज़रात शुहदाए करबला अलैहिमुर्रिज़वान वस्सना का, हमारे भाईयों को नेकियों की तौफ़ीक़ बख़्शे और बुरी बातों से तौबा अता फरमाए। आमीन

★ अब कि ताज़ियादारी इस तरीक़ा नामर्ज़िया का नाम है क़तअन बिदअत व नाजाइज़ व हराम है। हाँ अगर अह्ले इस्लाम सिर्फ़ जाइज़ तौर पर हज़रात शुहदाए किराम अलैहिमुर्रिज़वान की अरवाहे तैय्यबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इक्तिसार करते तो किस क़दर ख़ूब व महबूब था, और अगर नज़रे शौक़ व मुहब्बत में नक़्ल रौज़–ए–अनवर की भी हाजत थी तो इसी क़दर जाइज़ पर क़नाअत करते कि सही नक़ल बग़र्ज़े तबर्रुक व ज़्यारत अपने मकानों में रखते और ग़म व अलम व मातम व नौहा ज़नी वग़ैरह बिदआत से बचते, इस क़दर में भी कोई हरज न था, मगर अब ऐसी नक़्ल में भी अह्ले बिदअत से एक मुशाबेहत और ताज़ियादारी की तोहमत का ख़दशा और आइंदा अपनी औलाद या अह्ले एतक़ाद के लिए बिदआत में मुब्तला होने का अन्देशा है।

★ लिहाज़ा रौज़–ए–अक़्दस हुज़ूर सैय्यदुश्शोहदा की ऐसी तस्वीर भी न बनाए बल्कि सिर्फ़ काग़ज़ के सही नक़्शे पर क़नाअत करे और उसे बक़स्दे तबर्रुक मम्नूअ़ चीज़ें मिलाए बग़ैर अपने पास रखे, जिस तरह हरमैन मोहतरमैन से काबा मुअज़्ज़मा और रौज़–ए–आलिया के नक़्शे आते हैं। या दलाइलुल–ख़ैरात शरीफ़ में क़ुबूर पुर नूर के नक़्शे लिखे हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 35, 36)

मुरव्वजा ताज़ियादारी बिदअते शनीआ

ताज़िया जिस तरह राइज है ज़रूर बिदअते शनीआ है जिस क़दर बात सुल्तान तैमूर ने की कि रौज़–ए–मुबारक हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की सही नक़ल तस्कीने शौक़ को रखी वह ऐसी थी जैसे रौज़–ए–मुनव्वरा व काबा मुअज़्ज़मा के नक़्शे, उस वक़्त तक इस क़दर में हरज न था, अब बवज्हे शीई व शबीह इसकी भी इजाज़त नहीं, यह जो बाजे, ताशे, मरसिए, मातम, बुराक़, परी की तस्वीरें, ताज़िए से मुरादें मांगना, उसकी मिन्नतें मांगना, उसे झुक झुक कर सलाम करना, सज्दा करना वग़ैरह वग़ैरह बिदआते कसीरा उसमें हो गई हैं और अब उसी का नाम ताज़ियादारी है यह ज़रूर हराम है।

अलम, ताज़िए, तख़्त में जो कुछ सर्फ़ होता है सब इसराफ़ व हराम, और ताज़िए की नियाज़, लंगर का लुटाना, रोटियों का ज़मीन पर फेंकना, पाँव के नीचे आना सब बेहूदा है। हाँ नियाज़ के तौर पर सब बिदआत से बच कर हज़रात शुहदाए किराम की नियाज़ करें तो ऐन बरकत व सआदत है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 458)

शहादतनामा पढ़ने का हुक्म

शहादत नामे नज़्म या नस्र जो आजकल अवाम में राइज हैं अक्सर रिवायते बातिला, बेसरोपा हिकायत, झूठी और मौज़ू बातों पर मुश्तमिल हैं। ऐसे बयान का पढ़ना, सुनना, वह शहादत नामा हो ख़्वाह कुछ और मज्लिसे मीलाद मुबारक में हो ख़्वाह कहीं और मुतलक़न हराम व नाजाइज़ है, ख़ुसूसन जबकि वह बयान ऐसे ख़ुराफ़ात को मुतज़म्मिन हो जिससे अवाम के अक़ाइद में ख़लल व ख़लल आए कि फिर तो और भी ज़्यादा ज़हरे क़ातिल है। ऐसे वजूह पर नज़र फरमा कर हुज्जतुल–इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली कुद्देसा सिर्रहू वग़ैरह अइम्मा किराम ने हुक्म फरमाया कि शहादत नामा पढ़ना हराम है।

तज्दीदे ग़म व हुज़्न नाजाइज़ है

यूंहीं जबकि उस से मक़सूद ग़म परवरी और बनावटी हुज़्न व मलाल हो तो यह नीयत भी शरअन ना महमूद, शरअ् मुतह्हर ने ग़म में सब्र व तस्लीम और मौजूदा ग़म को हत्तल–मक़्दूर दिल से दूर करने का हुक्म दिया है।

इसमें कोई ख़ूबी होती तो हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ाते अक़्दस की ग़म परवरी सब से अहम व ज़रूरी होती। देखो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का माहे विलादत व माहे वफ़ात वही माहे मुबारक रबीउल–अव्वल शरीफ़ है फिर उलमा–ए–उम्मत व हामियाने सुन्नत ने उसे मातम वफात न ठहराया बल्कि मौसम शादी विलादते अक़्दस बनाया।

यानी माहे मुबारक रबीउल–अव्वल ख़ुशी व शादमानी और सर चशम–ए–अनवार व रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़माने ज़ुहूर है हमें हुक्म है कि हर साल इसमें ख़ुशी ज़ाहिर करें, तो हम उसे वफ़ात के नाम से मुक़द्दर न क़रेंगे कि यह तज्दीदे मातम के मुशाबेह है।

मातम व ग़म परवरी मज़्मूम है

बेशक उलमा ने तस्रीह की कि हर साल जो सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मातम किया जाता है मक्रूह है, और ख़ास इस्लामी शहरों में इसकी असल नहीं और औलिया–ए–किराम के उर्सों में नामे मातम से एहतराज़ करते हैं तो हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुआमला में उसे क्यों कर पसन्द कर सकते हैं।

ख़ुलास–ए–कलाम

हासिल यह कि मज्लिसे मीलाद मुबारक में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफाते अक़्दस का ज़िक्र पसन्दीदा नहीं हालांकि हुज़ूर की हयात भी हमारे लिए ख़ैर और हुज़ूर की वफ़ात भी हमारे लिये ख़ैर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। इसी तरह शहीदे करबला इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़िक्रे शहादत वग़ैरह के बयान से ग़म परवरी और हुज़्न व मलाल मक़्सूद हो वह भी जाइज़ व दुरुस्त नहीं।

हां अह्ले बैते अतहार के फज़ाइल व मनाक़िब रिवायते सहीहा से सही तौर पर ब्यान किए जायें उनके सब्रे जमील का इज़्हार किया जाये, ग़म परवरी और मातम अंगेज़ी से कामिल एहतराज़ किया जांये तो उसमें कोई हरज नहीं। मुहर्रम शरीफ़ में शहादत नामा ही पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि उनके दीगर फज़ाइले जमीला व औसाफ़े हमीदा भी सही रिवायात के हवाले से बयान हो सकते हैं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 62, 63)

औलिया-ए-किराम की नफ़अ् बख़्श हिकायात व वाक़ेआत

औलिया–ए–किराम अल्लाह तआला के महबूब बन्दे होते हैं, बन्दगाने ख़ुदा में जो मुत्तक़ी व परहेज़गार हैं वही अल्लाह के वली हैं। औलिया–ए–इज़ाम को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का कुर्ब नसीब होता है, हदीस में इरशाद फरमाया गया है औलिया अल्लाह वह लोग हैं जिनको देखने से ख़ुदा याद आए। (मुरत्तिब)

ग़ौस और उसके वज़ीर

ग़ौस हर ज़माना में होता है बग़ैर ग़ौस के ज़मीन व आसमान क़ाइम नहीं रह सकते।

हर ग़ौस के दो वज़ीर होते हैं, ग़ौस का लक़ब अब्दुल्लाह होता है और वज़ीर दस्त रास्त अब्दुर्रब और वज़ीर दस्त चप अब्दुल–मलिक, इस सलतनत में वज़ीर दस्त चप वज़ीरे रास्त से आला होता है, बख़िलाफ़े सलतनत दुनिया। इसलिए कि यह सलतनते क़ल्ब है और दिल जानिबे चप।

ग़ौसे अकबर व ग़ौस हर ग़ौस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं सिद्दीक़े अकबर हुज़ूर के वज़ीर दस्त चप थे और फारूक़े आज़म वज़ीर दस्त रास्त, फिर उम्मत में सबसे पहले दरज–ए–ग़ौसियत पर अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुम्ताज़ हुए और वज़ारत अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म व उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को अता हुई। उसके बाद अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ग़ौसियत मरहमत हुई और उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु व मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम वज़ीर हुए, फिर अमीरुल–मुमिनीन हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ग़ौसियत इनायत हुई और मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम व इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु वज़ीर हुए फिर मौला अली को और इमामैन व मोहतरमैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा वज़ीर हुए।

फिर इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दरजा बदरजा इमाम हसन असकरी तक यह सब हज़रात मुस्तक़िल ग़ौस हुए इमाम हसन असकरी के बाद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तक जितने हज़रात हुए सब उनके नाइब हुए, उनके बाद सैय्यदना ग़ौसे आज़म मुस्तक़िल ग़ौस हुज़ूर तन्हा ग़ौसियते कुबरा के दर्जे पर फाइज़ हुए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म भी हैं और सैय्यदुल–अफराद भी। हुज़ूर के बाद जितने हुए और जितने अब होंगे हज़रत इमाम मेहदी तक सब नाइब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु होंगे फिर इमाम मेंहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ग़ौसियते कुबरा अता होगी।

ग़ौस के इंतिक़ाल के बाद ग़ौस की जगह इमामैन से ग़ौस कर दिया जाता है और इमामैन की जगह औतादे अरबा से और औताद की जगह बदला से, बदला की जगह पर अब्दाल सबईन से और उनकी जगह तीन सौ नुक़बा से, फिर औलिया से और औलिया की जगह आम्म–ए–मुमिनीन से कर दिया जाता है। कभी बिला लिहाज़ तरतीब काफिर को मुसलमान करके बदल कर देते हैं उनका मरतबा अब्दाल से ज़्यादा है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 120, 122)

ग़ौसे आज़म के कश्फ़ का एक वाक़ेया

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना में एक बुज़ुर्ग सैय्यदी अब्दुर्रहमान तफ्सोंजी ने एक रोज़ मिंबर पर फरमाया "मैं औलिया में ऐसा हूँ जैसे कलंग सबमें ऊंची गर्दन, वहीं

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक मुरीद हज़रत सैय्यदी अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी तशरीफ़ फरमा थे उन्हें नागवार हुआ कि हुज़ूर पर अपने आपको तफ़्ज़ील दी, गुदड़ी फेंक कर खड़े हो गये और फरमाया मैं आपसे कुश्ती लड़ना चाहता हूँ, हज़रत सैय्यदी अब्दुर्रहमान ने उनको सर से पैर तक देखा, फिर पैर से सर तक देखा, फिर सर से पैर तक देखा, ग़रज़ इसी तरह कई बार नज़र डाली और ख़ामोश हो गये, लोगों ने हज़रत से सबब पूछा फरमाया मैंने देखा उसके जिस्म को कि कोई रोंगटा रहमते इलाही से ख़ाली नहीं है और उन से फरमाया गुदड़ी पहन लो। उन्होंने कहा फ़क़ीर जिस कपड़े को उतार कर फेंक देता है दोबारा नहीं पहनता, बारा रोज़ के रास्ता पर उनका मकान था अपनी ज़ौजा मुक़द्दसा को आवाज़ दी, फातिमा मेरे कपड़े दो, उन्होंने वहीं से हाथ बढ़ा कर कपड़े दिए और उन्होंने हाथ बढ़ा कर पहन लिए, हज़रत सैय्यदी अब्दुर्रहमान ने दरयाफ़्त किया कि किस के मुरीद हो फरमाया मैं ग़ुलाम हूँ सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का।

उन्होंने अपने मुरीदों को बग़दाद भेजा कि हुज़ूर से जा कर अर्ज़ करो बारा बरस से क़ुर्बे इलाही में हाज़िर होता हूँ आपको न जाते देखा न आते, इधर से यह दोनों मुरीद चले हैं कि उधर से ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दो मुरीदों से इरशाद फरमाया, तश्रीफ़ ले जाओ रास्ता में शैख़ अब्दुर्रहमान के दो आदमी मिलेंगे उनको वापस ले जाओ और शैख़ अब्दुर्रहमान को जवाब दो कि वह जो सेहन में है क्योंकर देख सकता है उसको जो ढालान में है और जो दालान में है उसे क्योंकर देख सकता है जो कोठरी में है और वह जो कोठरी में है उसे क्योंकर देख सकता है जो निहां खाना ख़ास में हो, मैं निहां खाना ख़ास में हूँ और अलामत यह है कि फलां शब बारह हज़ार औलिया को ख़िल्अत अता हुए थे याद करो कि तुमको जो ख़िल्अत मिला था वह सब्ज़ था और उस पर सोने से क़ुल हुवल्लाहु शरीफ़ लिखी थी, यह सुन कर शैख़ अब्दुर्रहमान ने सर झुका लिया और फरमाया कि शैख़ अब्दुल क़ादिर ने सच फरमाया वह वक़्त के सुल्तान हैं।

(अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 76)

अफराद कौन हज़रत

अफ़राद अजिल्ला औलिया–ए–किराम से होते हैं, विलायत के दरज़ात हैं ग़ौसियत के बाद फ़र्दियत। अफराद सिवाए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और किसी के मातेहत नहीं इसी वास्ते फर्द कहलाते हैं : सिलसिले में किसी के नहीं लेकिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ रुजूअ़ से चारा नहीं।

एक साहिबे अजिल्ला औलिया–ए–किराम से किसी ने पूछा हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं? फरमाया अभी अभी मुझ से मुलाक़ात हुई थी फरमाते थे मैंने जंगल में टीले पर एक नूर देखा जब मैं क़रीब गया तो मालूम हुआ कि वह कम्बल का नूर है एक साहब उसे ओढ़े सो रहे हैं, मैंने पाँव पकड़ कर हिलाया और जगा कर कहा उठो मशग़ूल बख़ुदा हो कहा आप अपने काम में मशग़ूल रहें मुझे मेरी हालत पर रहने दीजिए मैंने कहा कि मैं मशहूर किये देता हूँ यह वलीवुल्लाह है कहा मैं मशहूर कर दूँगा कि यह हज़रत ख़िज़्र हैं, मैंने कहा मेरे लिए दुआ करो कहा दुआ तो आप ही का हक़ है मैंने कहा तुम्हें दुआ करनी होगी क़हा अल्लाह तआला अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़ाइद करे और कहा मैं अगर ग़ायब हो जाऊं तो मलामत न फरमाइएगा और फौरन नज़र से ग़ायब हो गये, हालांकि किसी वली की ताक़त न थी कि मेरी निगाह से ग़ायब हो सके।

वहाँ से आगे बढ़ा एक और इसी तरह का नूर देखा कि निगाह को ख़ीरा करता है क़रीब गया तो देखा टीले पर एक औरत कम्बल ओढ़े सो रही है वह उसके कम्बल का नूर है मैंने पाँव हिला कर होशियार करना चाहा ग़ैब से निदा आई "ऐ ख़िज़्र एहतियात कीजिए" उस बीबी ने आंख खोली और

कहा न रुके यहाँ तक कि रोके गये मैंने कहा उठ मश्गूल बख़ुदा हो कहा हज़रत अपने काम में मश्गूल रहें मुझे अपनी हालत में रहने दें, मैंने कहा तो मैं मशहूर किए देता हूँ, यह वलीयुल्लाह है कहा मैं मशहूर कर दूँगा कि यह हज़रत ख़िज़्र हैं, मैंने कहा मेरे लिए दुआ करो कहा दुआ तो आपका हक़ है मैंने कहा तुम्हें दुआ करनी होगी कहा अल्लाह अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़ाइद करे, फिर कहा अगर मैं ग़ायब हो जाऊं तो मलामत न फरमाइयेगा, मैंने कहा यह भी जाती है कहा यह तो बताए जा क्या तू उस मर्द की बीबी है कहा हाँ, यहाँ एक वलीया का इंतिक़ाल हो गया था उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन का हमें हुक्म था यह कहा और मेरी निगाह से ग़ायब हो गई।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से पूछा गया यह कौन लोग हैं फरमाया यह लोग "अफ़राद" हैं मैंने कहा वह भी कोई है जिसकी तरफ यह रुजूअ़ लाते हैं फरमाया हाँ शैख़ अब्दुल–क़ादिर जीलानी।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 121, 122)

वबा का मुख़्तलिफ़ शक्लों में मुतशक्किल होना

शैख़ मुहक़्क़िक़ औलक़ी मदनी मुझ से कहते थे कि हज़रत सैय्यद मुहम्मद यमनी रहमतुल्लाह तआला अलैह नमाज़े फज्र के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए देखा कि मिंबर पर एक बच्चा बैठा है सिवा हज़रत के किसी ने न देखा आपने कुछ तअर्रुज़ न फरमाया नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ ले आए। फिर ज़ुहर के लिए आए तो देखा कि एक जवान बैठा है नमाज़ पढ़ कर चले आए और उस से कुछ न कहा फिर अस्र के लिए गये तो वहीं मिंबर पर एक बूढ़े को पाया अब भी कुछ न पूछा और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर वापस आए, फिर मग़्रिब के लिए गये तो एक बैल को वहाँ देखा, अब फरमाया तो क्या है कि इतनी मुख़्तलिफ़ हालतों में मैंने तुझे देखा है। उसने कहा मैं वबा हूँ, अगर आप उस वक़्त मुझ से कलाम करते जब मैं बच्चा था तो यमन में कोई बच्चा बाक़ी न रहता, और अगर उस वक़्त दरयाफ़्त फरमाते जब जवान था तो यहाँ कोई जवान न रहता, यूंहीं अगर उस वक़्त बात करते जब मैं बुड्ढा था तो उस शहर में कोई बूढ़ा न रहता, अब आपने इस हाल में कि मुझे बैल देखा कलाम फरमाया यमन में कोई बैल न रहेगा यह कह कर ग़ायब हो गया।

यह अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत थी कि आपने पहली तीन हालतों में उस से सवाल न फरमाया, बैलों में मर्ग आम हो गई अगर उस वक़्त कोई बैल अच्छा भी ज़िबह किया जाता तो उसका गोश्त ऐसा ख़राब होता कि कोई खा न सकता उसमें गन्धक की बू आती।

तू आग में है

उन ही सैय्यद मुहम्मद यमनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक साहबज़ादे मादरज़ाद वली थे, एक मरतबा जब उम्र शरीफ़ चन्द साल की थी बाहर तशरीफ़ लाए और अपने वालिद माजिद की जगह तशरीफ़ रखी एक शख़्स से कहा लिख, फलां शख़्स जन्नत में है, यूंहीं नाम बनाम बहुत से अश्ख़ास को लिखवाया, फिर फरमाया फलां शख़्स दोज़ख़ में है उन्होंने लिखने से हाथ रोक लिया, आपने फिर फरमाया उन्होंने न लिखा, आपने सेह बारा इरशाद किया उन्होंने लिखने से इंकार कर दिया उस पर आपने फिर फरमाया "तू आग में है" वह घबराए उनके वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए हज़रत ने फरमाया "तू आग में है" कहा या यह कहा कि "तू जहन्नम में है" अर्ज़ की फरमाया कि "तू आग में है" हज़रत ने इरशाद फरमाया मैं उसके कहे को बदल नहीं सकता अब तुझे इख़्तियार है दुनिया की आग पसन्द कर या आख़िरत की, अर्ज़ की दुनिया की आग पसन्द है। उनका जल कर इंतिक़ाल हुआ। हदीस में आग के जले हुए को भी शहीद फरमाया है।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 20)

हज़रत शिबली का हिफ्ज़ क़ल्ब और तवक्कुल

सैय्यदना अबू बकर शिबली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को सौ अशर्फ़ियाँ मिलीं किनार-ए-दजला पर एक साहब ख़त बनवा रहे थे उनको दीं क़बूल न कीं हज्जाम को दीं कहा मैंने उनका ख़त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए बनाना चाहा है उस पर एवज़ न लूंगा। शिबली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उस माल से फरमाया कि तू ऐसी ही चीज़ है जिसे कोई क़बूल नहीं करता और दरिया में फेंक दीं।

जाहिल गुमान करेगा कि तज़ीअ माल हुई हरगिज़ नहीं बल्कि हिफ्ज़े क़ल्ब, कि उस वक़्त यही उसका ज़रिया था दो साहब सामने थे किसी ने क़बूल न कीं अब उनको पास रखते और ऐसे फ़क़ीर की तलाश में निकलते जो क़बूल कर लेता और मासियत में न उठाता, इतनी देर तक की ज़िन्दगी पर तुम लोगों को इत्मीनान होता है वहाँ हर आन मौत पेशे नज़र है और डरते हैं कि उस वक़्त आ जाए और इस ग़ैरे ख़ुदा का ख़तरा क़ल्ब में हो, जंगल में फेंक देते तो नफ़्स का तअल्लुक़ क़तअ् न होता कि अभी दस्तरस रहती। अब बताइए सिवाए उनके पास क्या चारा था कि उस से फ़ौरन फ़ौरन इस तरह हाथ ख़ाली कर लें कि नफ़्स को मायूसी हो जाये और उसके ख़्याल से बाज़ आए।

यह सफ़ाए क़ल्ब व दफ़ा ख़तर-ए-ग़ैर की दौलत, करोड़ों अशर्फ़ियों बल्कि तमाम हफ़्ते अक़्लीम की सलतनत से करोड़ों दरजा आला व अफ़ज़ल है, क्या अगर सौ अशर्फ़ियाँ ख़र्च करके सलतनत यह मिली कोई उसे तज़ीअ माल कह सकता है? बल्कि बड़ी दौलत का बहुत अरज़ां हासिल करना, यही यहाँ है। (अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 54)

एक वली का दर्दे सर

दर्दे सर और बुख़ार वह मुबारक अमराज़ हैं जो अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को होते थे।

एक वली रहमतुल्लाहे तआला अलैह के दर्दे सर हुआ आपने उस शक्रिया में तमाम रात नवाफ़िल में गुज़ार दी कि रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला ने मुझे वह मरज़ दिया जो अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को होता था।

अल्लाहु अकबर! यहाँ यह हालत कि अगर बराय नाम दर्द मालूम हुआ तो यह ख़्याल होता है कि जल्द नमाज़ पढ़ लें।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

हर एक मरज़ या तक्लीफ़ जिस्म के जिस मौज़ा पर होती है वह ज़्यादा कफ़्फ़ारा उसी मौक़ा का है कि जिसका तअल्लुक़ ख़ास उस से है लेकिन बुख़ार वह मरज़ है कि तमाम जिस्म में सरायत कर जाता है जिस से बेइज़्नेही तआला तमाम रग रग के गुनाह निकाल लेता है, अल्हम्दुलिल्लाह कि मुझे अक्सर हरारत व दर्दे सर रहता है। (अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 63)

क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह की बिस्मिल्लाह ख़्वानी

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुल-हक़ वद्दीन बख़्तियार काकी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की उम्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई तो तक़रीबे बिस्मिल्लाह मुक़र्रर हुई लोग बुलाए गये हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ भी तशरीफ़ फ़रमा हुए बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुआ कि ठहरो व हमीदुद्दीन नागोरी आता है वह पढ़ाएगा इधर नागोर में क़ाज़ी हमीदुद्दीन साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह को इल्हाम हुआ कि जल्द जा मेरे एक बन्दे को बिस्मिल्लाह पढ़ा क़ाज़ी साहब फ़ौरन तशरीफ़ लाए, और आपसे फरमाया साहबज़ादे पढ़िए, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, आपने पढ़ा अऊज़ुबिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और शुरू से लेकर पन्द्रह पारे हिफ़्ज़ सुना दिए। हज़रत क़ाज़ी साहब और ख़्वाजा साहब ने फरमाया साहबज़ादे आगे पढ़िए फरमाया मैंने

अपनी माँ के शिकम में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उनको याद थे वह मुझे भी याद हो गये।

काकी होने की वजह

काक कुल्वे को कहते हैं हज़रत को एक मरतबा चन्द फ़ाक़े हुए थे और घर भर में किसी के पास कुछ खाने को न था उस वक़्त आसमान से आपके वास्ते काकी आई थीं यूं काकी मशहूर हुए।
(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 43)

या जुनैद या जुनैद

हदीक़ा नदिया में है कि एक मरतबा हज़रत सैय्यदी जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह तआला अलैह दजला पर तशरीफ़ लाए और या अल्लाह कहते हुए उस पर ज़मीन की मिस्ल चलने लगे बाद को एक शख़्स आया उसे भी पार जाने की ज़रूरत थी कोई कशती उस वक़्त मौजूद न थी जब उसने हज़रत को जाते देखा अर्ज़ की मैं किस तरह आऊं फरमाया : या जुनैद या जुनैद कहता चला आ उसने यही कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा जब बीच दरिया में पहुंचा शैताने लईन ने दिल में वसवसा डाला कि हज़रत ख़ुद तो या अल्लाह कहें और मुझ से या जुनैद कहलवाते हैं मैं भी या अल्लाह क्यों न कहूं, उसने या अल्लाह कहा और साथ ही ग़ोता खाया पुकारा हज़रत मैं चला फ़रमाया वही कह या जुनैद या जुनैद जब कहा दरिया से पार हुआ अर्ज़ की हज़रत यह क्या बात थी आप अल्लाह कहें तो पार हों और मैं कहूं तो ग़ोता खाऊं फ़रमाया अरे नादान! अभी तू जुनैद तक तो पहुंचा नहीं अल्लाह तआला तक रसाई की हवस है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 108)

जुनैद बग़दादी का क़ारूरह हिदायत का ज़रिया बन गया

बरकाते औलिया–ए–कराम के ज़िक्र में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू इरशाद फरमाते हैं :

सैय्यदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह तआला अलैह बीमार हुए आपका क़ारूरह (पेशाब) एक तबीब नसरानी के पास गया बग़ौर देखता रहा फिर दफ़्अतन कहा अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू। (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) लोगों ने सबब पूछा कहा मैं देखता हूँ यह क़ारूरह ऐसे शख़्स का है जिसका जिगर इश्क़े इलाही ने कबाब कर दिया, अल्लाहु अकबर, इन बुज़ुर्गों का बोल वह हिदायत करता है जो दूसरों का क़ौल नहीं करता।

एक नसरानी का क़बूले इस्लाम : यमन के एक नसरानी ने यह सही हदीस सुनी कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : इत्तक़ू फिरासतल–मुमिने फ़इन्नहू यंज़ुरू बेनूरिल्लाहे। (तिर्मिज़ी)

मुसलमान की फिरासत से डरो कि वह अल्लाह के नूर से देखता है।

उस नसरानी ने चाहा कि इम्तेहान करे, इधर के नसारा ज़ुन्नार बांधते हैं उसने ज़ुन्नार नीचे छुपाया और ऊपर मुसलमानी लिबास पहना अमामा बांधा और मुसलमान बन कर मशाइख़े किराम की मज्लिसों पर दौरा शुरू किया हर एक के पास जाता और हदीस के मानी पूछता वह कुछ फरमा देते यह दूसरे के पास हाज़िर होता यूं ही बग़दाद शरीफ़ आया और हज़रत सैय्यदुत्ताइफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिसे वअज़ में हाज़िर हुआ अर्ज़ की या सैय्यदी इस हदीस के मानी क्या हैं, फरमाया इसके यह मानी हैं कि ज़ुन्नार तोड़ और नसरानियत छोड़ इस्लाम ला, वह यह सुनते ही बेताब हुआ और कलिमा शहादत पढ़ा और कहा या सैय्यदी मैं इतने मशाइख़े किराम के पास गया और किसी ने मुझे न पहचाना फरमाया सबने पहचाना मगर तुझ से तअर्रुज़ न किया कि तेरा इस्लाम मेरे हाथ पर लिखा हुआ है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 99, 100)

दो ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग

दो साहिबे औलिया–ए–किराम से एक दरिया के इस किनारे और दूसरे उस पार रहते थे, उन में से एक साहब ने अपने यहाँ खीर पकवाई और ख़ादिम से कहा थोड़ी हमारे दोस्त को भी दे आओ ख़ादिम ने अर्ज़ की हुज़ूर रास्ते में तो दरिया पड़ता है क्योंकि पार उतरूंगा कश्ती वग़ैरह का कोई सामान नहीं फरमाया दरिया के किनारे जा और कह कि मैं उसके पास से आया हूँ जो आज तक अपनी औरत के पास नहीं गया, ख़ादिम हैरान था कि यह क्या मुअम्मा है इस वास्ते कि हज़रत साहिबे औलाद थे बहरहाल तामीले हुक्म ज़रूरी थी दरिया पर गया और वह पैग़ाम जो इरशाद फरमाया था कहा दरिया ने फौरन रास्ता दे दिया उसने पार पहुँच कर उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में खीर पेश की उन्होंने नोश जान फरमाई और फरमाया हमारा सलाम अपने आक़ा से कह देना ख़ादिम ने अर्ज़ की कि सलाम तो जभी कहूंगा कि जब दरिया से पार उतर जाऊं, फरमाया दरिया पर जा कर कह मैं उसके पास से आता हूँ जिसने तीस बरस से आज तक कुछ नहीं खाया, ख़ादिम शश व पंज में था यह अजीब बात है अभी तो मेरे सामने खीर तनावुल फरमाई और फरमाते हैं इतनी मुद्दत से कुछ नहीं खाया मगर बलिहाज़ अदब ख़ामोश दरिया पर आ कर जैसा फरमाया था कह दिया दरिया ने फिर रास्ता दिया, जब अपने आक़ा की ख़िदमत में पहुँचा तो उस से न रहा गया और अर्ज़ की हुज़ूर यह क्या मुआमला था फरमाया हमारा कोई फ़ेअल अपने नफ़्स के लिए नहीं होता।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 108)

अल्लाह के वली का वक़्ते वाहिद में मुतअद्दद जगह मौजूद होना

सबअ् सनाबिल शरीफ़ में हज़रत सैय्यदी फतह मुहम्मद कुद्देसा सिर्रहू अश्शरीफ़ का वक़्ते वाहिद में दस मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाना तहरीर फरमाया और यह कि उस पर किसी ने अर्ज़ की हज़रत ने वक़्ते वाहिद में दस जगह तशरीफ़ ले जाने का वादा फरमा लिया है यह क्योंकर हो सकेगा। शैख़ ने फरमाया कृष्ण कनहैया काफिर था और एक वक़्त में कई सौ जगह मौजूद हो गया, फतह मुहम्मद अगर एक वक़्त में चन्द जगह हो क्या तअज्जुब है, यह ज़िक्र करके फरमाया क्या यह गुमान करते हो कि शैख़ एक जगह मौजूद थे बाक़ी जगह मिसालें। हरगिज़ नहीं शैख़ बज़ाते ख़ुद हर जगह मौजूद थे। असरारे बातिन फ़हम ज़ाहिर से वरा हैं ख़ौज़ व फ़िक्र बेजा है।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 119)

सैय्यदी अबुल–हुसैन अहमद नूरी का वज्द

सच्चे वज्द की पहचान यह है कि फराइज़ व वाजिबात में मुख़ल न हो।

हज़रत सैय्यदी अबुल–हुसैन अहमद नूरी पर वज्द तारी हुआ तीन शबाना रोज़ गुज़र गये हज़रत सैय्यदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हमअस्र थे, किसी ने हज़रत सैय्यदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से यह हालत अर्ज़ की फरमाया नमाज़ का क्या हाल है अर्ज़ की नमाज़ों के वक़्त होशियार हो जाते हैं और फिर वही कैफ़ियत तारी हो जाती है फरमाया अल्हम्दु लिल्लाह उनका वज्द सच्चा है।

नमाज़ से आज़ादी

एक साहब सालेहीन से थे बहुत ज़ईफ़ हुए पंजगाना मस्जिद की हाज़िरी न छोड़ते एक शब इशा की हाज़िरी में गिर पड़े चोट आई बाद नमाज़ अर्ज़ की इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ़ हुआ बादशाह अपने बूढ़े गुलामों को ख़िदमत से आज़ाद कर देते हैं मुझे आज़ाद फरमा उनकी दुआ क़बूल हुई मगर यूं कि सुबह उठे तो मजनूं थे। यानी जब तक अक़्ल तक्लीफ़ी बाक़ी है नमाज़ माफ़ नहीं।

सच्चे मजाज़ीब भी नमाज़ नहीं छोड़ते अगरचे लोग उन्हें पढ़ते न देखें, किसी ने हुज़ूर सैय्यदना

ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत सैय्यदी क़ज़ीबुल–बान मूसली क़ुद्देसा सिर्रहू की शिकायत की कि उनको कभी नमाज़ पढ़ते न देखा इरशाद फरमाया उस से कुछ न कहो उसका सर हर वक़्त खान–ए–काबा में सुजूद में है। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 89 ता 90)

हज़रत गेसू दराज़ के गेसू का राज़

अक्सर बाल बढ़ाने वाले लोग हज़रत गेसू दराज़ को दलील लाते हैं हालांकि यह जिहालत है। हज़रत सैय्यदी मुहम्मद गेसू दराज़ क़ुद्देसा सिर्रहू ने तशब्बुह न किया था एक गेसू महफ़ूज़ रखा था और उसके लिए एक वजह ख़ास थी कि अकाबिर उलमा अजिल्ला सादात से थे जवानी की उम्र थी, सादात की तरह शानों तक दो गेसू रखते थे कि इस क़दर शरअन जाइज़ बल्कि सुन्नत से साबित है।

एक बार सरे राह बैठे थे हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ देहलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह की सवारी निकली उन्होंने उठ कर ज़ानू–ए–मुबारक पर बोसा दिया हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया : सैय्यद और नीचे बोसा दो, उन्होंने पाए मुबारक पर बोसा लिया। फरमाया सैय्यद और नीचे उन्होंने घोड़े के सुम पर बोसा दिया, एक गैसू का रुकाब मुबारक में उलझ गया था वहीं उल्झा रहा और रकाब से सुम तक बढ़ गया, हज़रत ने फरमाया सैय्यद और नीचे उन्होंने हट कर ज़मीन पर बोसा दिया, गेसू कि रकाब मुबारक से जुदा करके हज़रत तशरीफ़ ले गये, लोगों को तअज्जुब हुआ कि ऐसे जलील सैय्यद, इतने बड़े आलिम ने ज़ानू पर बोसा दिया और हज़रत राज़ी न हुए और नीचे बोसा देने को हुक्म फरमाया, उन्होंने पाए मुबारक को बोसा दिया और नीचे को हुक्म फरमाया, यहाँ तक कि ज़मीन पर बोसा दिया, यह एतराज़ हज़रत सैय्यद गेसू दराज़ ने सुना फरमाया लोग जानते कि मेरे शैख़ ने उन चार बोसों में क्या अता फरमा दिया।

- ★ जब मैंने ज़ानूए मुबारक पर बोसा दिया आलमे नासूत मुंकशिफ हो गया।
- ★ जब पाए अक़्दस पर बोसा दिया आलमे मलकूत मुंकशिफ़ हुआ।
- ★ जब घोड़े के सुम पर बोसा दिया आलमे जबरूत मुंकशिफ़ हुआ।
- ★ जब ज़मीन पर बोसा दिया लाहूत का इंकिशाफ़ हो गया।

उस गेसू को कि ऐसी जलील नेअ्मत की यादगार था और उसे ऐसी तजल्ली रहमत ने बढ़ाया था न तरशवाया, उसे तशब्बुह से क्या इलाक़ा, औरतों का एक गेसू बड़ा नहीं होता न इतना दराज़ और उसके महफ़ूज़ रखने में यह राज़।

इसकी सनद अबू महज़ूरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का फ़ेअ्ल है जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ताइफ़ शरीफ़ फतह फरमाया अजान हुई बच्चों ने उसकी नक़ल की, उनमें अबू महज़ूरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे उनकी आवाज़ बहुत अच्छी थी हुज़ूर ने आपको बुलाया और सर पर दस्ते मुबारक रखा और उनको मुअज़्ज़िन मुक़र्रर फरमा दिया, माँ ने बरकत के लिए पेशानी के उन बालों को जिन पर दस्ते अक़्दस रखा गया था महफ़ूज़ रखा जिस वक़्त बाल खोले जाते तो ज़मीन पर आ जाते थे, उसे भी तशब्बुह से कुछ इलाक़ा नहीं, औरतें फ़क़त पेशानी के बाल नहीं बढ़ातीं और उनका महफ़ूज़ रखना इस बरकत के लिए था।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 104 ता 105)

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ की गुदड़ी

एक मरतबा इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तन्हा एक गुदड़ी पहने मदीना तैय्यबा से काबा मुअज़्ज़मा को तशरीफ़ लिए जाते थे और हाथ में सिर्फ़ एक तामलोट। शक़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने देखा दिल में ख़्याल किया कि यह फ़क़ीर औरों पर अपना बार डालना चाहता है यह वसवसा शैतानी आना था कि इमाम ने फरमाया शक़ीक़ बचो गुमानों से कि

बाज़ गुमान गुनाह होते हैं, नाम बताने और वसवसा दिली पर आगाही से निहायत अक़ीदत हो गई और इमाम के साथ हो लिए, रास्ता में एक टीला पर पहुँच कर इमाम ने उस से थोड़ा रेत लेकर तामलोट में घोल कर पिया और शक़ीक़ रहमतुल्लाह तआला अलैह से भी पीने को फरमाया, उन्हें इंकार का चारा न हुआ जब पिया तो ऐसे नफ़ीस लज़ीज़ ख़ुशबूदार सत्तू थे कि उम्र भर में न देखे न सुने।

एक रोज़ शक़ीक़ रहमतुल्लाह तआला अलैह ने मस्जिदे हराम में देखा कि वही साहब मस्जिदे हराम में बेश बहा लिबास पहने दर्स दे रहे हैं लोगों से पूछा यह कौन बुज़ुर्ग हैं किसी ने कहा इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जाफर सादिक़, जब तख़्लिया हुआ उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत यह क्या बात है कि राह में आपको एक गुदड़ी पहने देखा था और इस वक़्त यह लिबास देख रहा हूँ आपने दामने मुबारक उठाया कि वही गुदड़ी नीचे ज़ेब तन है और फरमाया कि वह तुम्हारे दिखाने को है और यह गुदड़ी अल्लाह के लिए। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 102)

हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर और एक बहरूपिया

हज़रत आलमगीर रहमतुल्लाह तआला अलैह को एक बहरुपिए ने धोखा देना चाहा बादशाह ने फरमाया अगर धोखा दे दिया तो जो मांगेगा पाएगा उसने बहुत कोशिश की लेकिन हज़रत आलमगीर ने जब देखा पहचान लिया आख़िर मुद्दते मदीद का भुलावा देकर सूफ़ी ज़ाहिद आबिद बन कर एक पहाड़ की खो में जा बैठा रात दिन इबादते इलाही में मशग़ूल रहता पहले देहातियों का हुजूम हुआ। फिर शहरियों, फिर उमरा वुज़रा सब आते और यह किसी की तरफ इल्तिफ़ात न करता शुदा शुदा बादशाह तक ख़बर पहुँची, सुल्तान को अह्लुल्लाह से ख़ास मुहब्बत थी ख़ुद तशरीफ़ ले गये, बहरुपिए ने दूर से देखा कि बादशाह की सवारी आ रही है गर्दन झुका ली और मुराक़बा में मशग़ूल हो गया, सुल्तान मुंतज़िर रहे देर के बाद नज़र उठाई और बैठने का इशारा किया सुल्तान मुअद्दब बैठ गये उनका मुअद्दब बैठना था कि बहरूपिया उठा और झुक कर सलाम किया कि जहाँ पनाह मैं फलां बहरूपिया हूँ, बादशाह खजिल हुए और फरमाया वाक़ई इस बार मैंने न पहचाना अब मांग जो मांगता है उसने कहा अब मैं आपसे क्या मांगूं, मैंने उसका नाम झूठे तौर पर लिया उसका तो यह असर हुआ कि आप जैसा जलीलु–क़द्र बादशाह मेरे दरवाज़े पर बा–अदब हाज़िर हुआ, अब सच्चे तौर पर उसका नाम ले देखूं यह कहा और कपड़े फाड़े जंगल को चला गया।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 68)

एक ख़ातून का तक़्वा

एक बीबी इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास तशरीफ़ लाईं और फरमाया मैं अपनी छत पर सोती हूँ रौशनी इतनी नहीं कि सूई में से अगर डोरा निकल जाये तो डाल सकूं, बादशाह की सवारी निकलती है उसकी रौशनी में डोरा डाल सकती हूँ या नहीं कि वह रौशनी ज़ालिम की है उसके रुपए में हलाल व हराम सब है, आपने उन से दरयाफ़्त फरमाया तुम कौन हो फरमाया मैं बहन हूँ बिश्र हाफ़ी (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) की इमाम ने फरमाया वरअ़ तुम्हारे घर से हुवैदा हुआ तुम्हारे लिए इस रौशनी में डोरा डालना जाइज़ नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 5)

हज़रत अहमद बदवी का ग़ाइबाना मदद करना

हज़रत सैय्यदी अहमद बिदवी कबीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिन की मज्लिसे मीलाद, मिस्र में होती है मज़ार मुबारक पर आपकी विलादत के दिन हर साल मज्मा होता है और आपका मीलाद पढ़ा जाता है।

इमाम अब्दुल–वहाब शेअ़रानी क़ुद्देसल्लाहु सिर्रहू अर्रब्बानी इल्तिज़ाम के साथ हर साल हाज़िर होते, अपनी किताब में भी बहुत तारीफ़ लिखी है, कई वरक़ों में उस मज्लिस के हालात बयान किए

हैं। मज्लिस तीन दिन होती है एक दफ़ा आपको ताख़ीर हो गई यह हमेशा मज़ार एक दिन पहले ही हाज़िर हो जाते थे इस दफ़ा आख़िर दिन पहुंचे, जो औलिया–ए–किराम मज़ारे मुबारक पर मराक़िब थे उन्होंने फ़रमाया कहाँ थे दो रोज़ से हज़रत मज़ार मुबारक से पर्दा उठा उठा कर फ़रमाते हैं : अब्दुल–वहाब आया, अब्दुल–वहाब आया, उन्होंने फ़रमाया क्या हुज़ूर को मेरे आने की इत्तिला होती है उन्होंने फ़रमाया इत्तिला कैसी हुज़ूर तो फ़रमाते हैं कि कितनी ही मंज़िल पर कोई शख़्स मज़ार पर आने का इरादा करे मैं उसके साथ होता हूँ, उसकी हिफ़ाज़त करता हूँ, अगर उसका एक टुकड़ा रस्सी का जाता रहेगा अल्लाह तआला मुझ से सवाल करेगा।

इमाम अब्दुल–वहाब शअ्रानी पर हज़रत सैय्यदी अहमद बिदवी कबीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़ास तवज्जोह थी और इमाम शअ्रानी को भी ख़ास नियाज़मन्दी थी, इसी वजह से हज़रत को उन से ख़ास मुहब्बत थी।

हदीस में है जो कोई दरयाफ़्त करना चाहे कि अल्लाह के यहाँ उसकी किस क़दर क़द्र व मंज़िलत है वह यह देखे कि उसके दिल में अल्लाह की किस क़दर क़द्र व मंज़िलत है उतनी ही उसकी अल्लाह के यहाँ है। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 28)

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का फ़ैज़ व तसर्रुफ़

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह तआला अलैह के मज़ार से बहुत कुछ फ़्यूज़ व बरकात हासिल होते हैं, मौलाना बरकात अहमद साहब मरहूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाह तआला अलैह के शागिर्द थे उन्होंने मुझ से बयान किया कि मैंने अपनी आंखों से देखा कि एक हिन्दू जिसके सर से पैर तक फोड़े थे अल्लाह ही जानता है कि किस क़दर थे ठीक दोपहर को आता और दर्गाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरियों और पत्थरों पर लोटता और कहता कि खाजा अगन लगी है तीसरे रोज़ मैंने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया।

ख़्वाजा तोरे बल्हारी जाऊं

भागलपुर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ करते एक वहाबी रईस से मुलाक़ात थी उसने कहा मियाँ हर साल कहाँ जाया करते हो, बेकार इतना रुपया सर्फ़ करते हो उन्होंने कहा चलो और इंसाफ़ की आंख से देखो, फिर तुमको इख़्तियार है। ख़ैर एक साल वह साथ में आया, देखा कि एक फ़क़ीर सोंटा लिए रौज़ा शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा है और यह सदा लगा रहा है ख़्वाजा पाँच रुपया लूंगा और एक घंटा के अन्दर लूंगा और एक ही शख़्स से लूंगा, जब उस वहाबी को ख़्याल हुआ कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया, एक घन्टा हो गया होगा और अब उसे किसी ने कुछ न दिया जेब से पाँच रुपया निकाल कर उनके हाथ पर रखे और कहा लो मियाँ तुम ख़्वाजा से मांग रहे थे भला ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं फ़क़ीर ने वह रुपए तो जेब में रखे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहा, ख़्वाजा तोरे बल्हारी जाऊं दिलवाए भी तो कैसे ख़बीस मुंकिर से।

यमन में हज़रत सैय्यदी अहमद बिन अलवान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मज़ार शरीफ़ भी ऐसा ही मशहूर है। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 47, 48)

हज़रत अहमद कबीर रिफ़ाई की ज़्यारत की तमन्ना

हज़रत सैय्यदी अहमद कबीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अजिल्ल–ए–अकाबिर औलिया से हैं, हज़रत के एक मुरीद बारगाहे ग़ौसियत में हाज़िर थे अर्ज़ की मुझे अपने शैख़ की ज़्यारत का शौक़ है हुज़ूर ने एक शीशा सामने रख दिया उसमें शैख़ की शक्ल नज़र आई कि दांतों में उंगली दबाए फ़रमा रहे हैं जो बहर के पास हो वह जदूल को चाहे? (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 75)

करामत न देखिए इस्तिक़ामत देखिए

औलिया–ए–किराम फरमाते हैं कश्फ़ व करामत न देख इस्तिक़ामत देख कि शरीअत के साथ कैसी है। हज़रत ख़्वाजा शैख़ बहाउल–हक़ वद्दीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि सिलसिल–ए–आलिया नक़्शबन्दीया के इमाम हैं आपसे किसी ने अर्ज़ की हज़रत तमाम औलिया से करामतें ज़ाहिर होती हैं हुज़ूर से भी कोई करामत देखीं फरमाया इससे बड़ी और क्या करामत है कि इतना बड़ा भारी बोझ गुनाहों का सर पर है और ज़मीन में धंस नहीं जाता।

एक वली की रौशन ज़मीरी

एक साहब औलिया–ए–किराम में से थे आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दमबोसी के लिए हाज़िर हुआ हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे हुज़ूर ने एक सेब दिया और कहा खाओ अर्ज़ किया हुज़ूर भी नोश फरमायें आपने भी खाए और बादशाह ने भी, उस वक़्त बादशाह के दिल में ख़तरा आया कि यह जो सब में बड़ा अच्छा ख़ुश रंग सेब है अगर अपने हाथ से उठा कर मुझको दे देंगे तो जान लूँगा कि यह वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फरमाया हम मिस्र गये थे वहाँ एक जलसा बड़ा भारी था देखा कि एक शख़्स है उसके पास एक गधा है उसकी आंखों पर पट्टी बंधी है, एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है उस गधे से पूछा जाता है, गधा सारी मज्लिस में दौरा करता है जिसके पास होती है सामने जा कर सर टेक देता है। यह हिक़ायत हम ने इसलिए ब्यान की कि अगर यह सेब हम न दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो उस गधे से बढ़ कर क्या कमाल किया। यह फरमा कर सेब बादशाह की तरफ फेंक दिया, बस यह समझ लीजिए कि वह सिफ़त जो ग़ैर इंसान के लिए हो सकती है इंसान के लिए कमाल नहीं और वह जो ग़ैर मुस्लिम के लिए हो सकती है मुस्लिम के लिए कमाल नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 10)

ख़्वाब में अबू बकर हव्वार का बैअत होना और कुलाहे सिद्दीक़ी पाना

सिलसिल–ए–हवारीया के इमाम हज़रत सैय्यदी अबू बकर हव्वार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु थे, आपके मुरीद हज़रत अबू मुहम्मद शबनकी और आपके मुरीद हज़रत ताजुल–आरेफ़ीन अबुल–वफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु थे।

अल्लाह को हिदायत फरमाते देर नहीं लगती यह हज़रत अबू बकर हवार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पहले रहज़न थे क़ाफ़िले के क़ाफ़िले तन्हा लूटा करते थे, एक बार एक क़ाफ़िला उतरा आप वहाँ तशरीफ़ ले गये एक ख़ेमा की तरफ गये उस ख़ेमा में औरत अपने शौहर से कह रही थी शाम क़रीब है और इस जंगल में अबू बकर हवार का दख़ल है ऐसा न हो कि वह आ जायें बस यह कहना उनका हादी हो गया ख़ुद फरमाया अबू बकर तेरी हालत यह हो गई कि ख़ेमों में औरतें तक तुझ से ख़ौफ़ करती हैं और तू ख़ुदा से नहीं डरता उसी वक़्त ताइब हुए और घर को लौट आए, शब को सोए ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे आपने अर्ज़ किया बैअत लीजिए इरशाद फरमाया तुझ से तेरा हम नाम बैअत लेगा अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत ली और अपनी कुलाह मुबारक उनके सर पर रखी आंख खुली तो कुलाहे अक़्दस मौजूद थी, यह सिलसिला हवारीया आपसे शुरू हुआ। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 13)

मरा हुआ हाथी ज़िन्दा हो गया

हज़रत सैय्यदी अहमद जाम ज़िन्दा पीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा तशरीफ़ लिए जाते राह में एक हाथी मरा पड़ा था लोगों का मज्मा था आप तशरीफ़ ले गये फरमाया क्या है अर्ज़ किया हाथी मर गया है फरमाया इसकी सूंड वैसी ही है, आंखें भी वैसी ही हैं, हाथ भी वैसे ही, पैर भी

वैसे ही हैं ग़र्ज़ सब चीज़ों को फरमाया कि वैसे ही हैं फिर मर कैसे गया यह फ़रमाना था कि फ़ौरन ज़िन्दा हो गया। जब से आपका लक़ब ज़िन्दा पीर हो गया। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 16)

अह्लुल्लाह के दरजात व अल्क़ाब

सुलहा, सालेकीन, क़ानेईन, वासेलीन, अब इन वासिलों के मरातिब हैं। नुजबा, नुक़बा, अब्दाल, बदला, औताद, अमामीन, ग़ौस, सिद्दीक़, नबी, रसूल।

तीन पहले सैर इलल्लाह के हैं बाक़ी सैर फिल्लाह के और वली उन सबको शामिल।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 22)

हज़रत अमीर कलाल की कुश्ती

कुश्ती आजकल जिस तौर पर लड़ी जाती है महमूद नहीं उसमें तन परवरी होती है, मज्मा आम होता है और अगर उसके सबब नमाज़ की पाबन्दी न करे या सतर खोले तो हराम है हाँ अगर ख़ास मज्मा है अपने ही लोग हैं बन्द मकान में नमाज़ की पाबन्दी के साथ बग़ैर सतर खोले हुए लड़ें तो मुज़ाइक़ा नहीं।

हज़रत बहाउल–हक़ वद्दीन ख़्वाजा नक़्शबन्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बुख़ारा में हज़रत अमीर कलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का शुहरा सुन कर ख़िदमत में हाज़िर हुए आपको देखा कि मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मज्मा है अखाड़े में कुश्ती हो रही है, हज़रत भी तशरीफ़ फरमा हैं और कुश्ती में शरीक हैं, हज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्द आलिमे जलील पाबन्दे शरीअत उनके क़ल्ब ने कुछ पसन्द नहीं किया हालांकि कोई नाजाइज़ बात न थी, यह ख़तरा आते ही ग़ुनूदगी आ गई देखा कि मारक–ए–हश्र बपा है उनके और जन्नत के दरम्यान एक दलदल का दरिया हाइल है यह उसके पार जाना चाहते थे दरिया में उतरे जितना ज़ोर करते धंसते जाते, यहाँ तक कि बग़लों तक धंस गये अब निहायत परेशान कि क्या किया जाये इतने में देखा कि हज़रत अमीर कलाल तशरीफ़ लाए और एक हाथ से निकाल कर दरिया के उस पार कर दिया आपकी आंख खुल गई क़ब्ल इसके कि यह कुछ अर्ज़ करें हज़रत अमीर कलाल ने फरमाया हम हरगिज़ कुश्ती न लड़ें तो यह ताक़त कहाँ से आए, यह सुन कर फ़ौरन क़दमों पर गिर पड़े और बैअत की।

इमाम दाऊद ताई का ज़ुहद व मुजाहिदा

इमाम दाऊद ताई, इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्दों में से थे इमाम ने जब देखा कि उनकी दुनिया की तरफ तवज्जोह नहीं उनको सब से अलग करके पढ़ाना शुरू किया एक दिन तनहाई में फरमाया ऐ दाऊद आला तैयार कर लिया मक़्सूद किस दिन हासिल करोगे? एक साल दर्स में हाज़िर रहे यह रियाज़त की कि तलबा आपस में मुज़ाकरा करते उनको आफ़ताब से ज़्यादा वज्हें रौशन मालूम होतीं नफ़्स बोलना चाहता मगर यह चुप रहते, ग़रज़ एक साल कामिल सुकूत फरमाया जब उनके वालिद माजिद का इंतिक़ाल हुआ अस्सी दिरहम और एक मकान वरसा में मिला वह दिरहम उम्र भर के लिए काफी हुए और मकान के एक दर्जे में बैठा करते जब वह गिर गया दूसरे में बैठना शुरू किया जब वह इस क़ाबिल न रहा तो और दर्जे में, इधर उनकी रूह ने परवाज़ किया उध्धर बाज़ सालेहीन ने ख़्वाब में देखा कि दाऊद ताई निहायत ख़ुशी के साथ हश्शाश बश्शाश दौड़े हुए चले जा रहे हैं उन्होंने कभी आपको इस हालत में न देखा था पूछा क्या है क्यों दौड़े जाते हो फरमाया अभी जेलखाना से छूटा हूँ ख़बर पाई कि वही वक़्त इंतिक़ाल का था। दुनिया मोमिन के लिए जेल खाना और काफिर के लिए जन्नत है।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 30, 31)

हज़रत इब्ने मस्ऊद के शेर, पालतू कुत्तों के मिस्ल

हज़रत सैय्यदी इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अकाबिरे औलिया से हैं आप जंगल में रहते थे एक शख़्स ने एक बैल नज़्र माना जब वह ख़ूब मोटा ताज़ा हो गया तो उसको लेकर हज़रत की ख़िदमत में चला तैयार बहुत था रास्ता में छूट गया हर चन्द तलाश किया न मिला। ख़ैर मायूस हो कर लौट आया। एक और शख़्स कि उसके पास एक ही बैल था तमाम खेती वग़ैरह का काम उसी से लेता निहायत लाग़र व नहीफ़ हो गया था लेकर हाज़िर हुआ अर्ज़ किया हज़रत मेरे रिज़्क़ का जरिया यही बैल है दुआ फरमाइए यह दुबला बहुत है इसमें ताक़त आ जाए, आपके पास चन्द शेर बैठे थे एक को इशारा फरमाया वह गया और उस बैल का शिकार किया और कुछ खाया, फिर दूसरे को इशारा फरमाया वह गया और कुछ खाया इस तरह सबने खाया और वह बैल ख़त्म हो गया, यह शख़्स अपने दिल में कहने लगा मैं अच्छी दुआ कराने आया था कि मेरा दुबला बैल भी हाथ से गया थोड़ी देर में एक अच्छा मोटा ताज़ा बैल आया जो उस आदमी से छूट गया था और सामने आकर मुअद्दब खड़ा हो गया फरमाया इसे उसके बदले में ले ले, उसने ले तो लिया लेकिन दिल में यह ख़तरा गुज़रा कि यह शेर हज़रत की ख़िदमत में बैठे हैं हज़रत के सामने तो कुछ नहीं बोलते यहाँ से फिर मुझे और बैल को खा लेंगे, आपको फौरन उसके ख़तरा पर इत्तिला हो गई और क्यों न हो जो उसको जानता है उस से कोई शय पोशीदा नहीं फरमाया शेरों से डरते हो, अब उनके दिल में यह ख़तरा आया कि मालूम नहीं किस का बैल है कोई पूछे तो क्या कहूंगा ख़ुद ही फरमाया तुम से कोई न बोलेगा, एक शेर को इशारा फरमाया वह उनके साथ कुत्ते की तरह हो लिया और उनकी और उनके बैल की हिफ़ाज़त की, आबादी के क़रीब आ कर वह शेर वापस चला गया।

एक वली और दो आलिम

एक साहब औलिया–ए–किराम में से थे उनकी ख़िदमत में दो आलिम हाज़िर हुए आपके पीछे नमाज़ पढ़ी तज्वीद के बाज़ क़वाइद्दे मुस्तहब्बा अदा न हुए उनके दिल में ख़तरा गुज़रा कि अच्छे वली हैं इनकी तजवीद भी नहीं आती, उस वक़्त तो हज़रत ने कुछ न फरमाया मकान के सामने एक नहर जारी थी यह दोनों साहब नहाने के वास्ते वहाँ गये कपड़े उतार कर किनारे पर रख दिए और नहाने लगे इतने में एक निहायत मुहीब शेर आया और सब कपड़े जमा करके उन पर बैठ गया, यह दोनों साहब ज़रा–ज़रा सी लंगोटियां बांधे हुए, अब निकलें तो कैसे उलमा की शान के बिल्कुल ख़िलाफ़, जब बहुत देर हो गई हज़रत ने फरमाया भाईयो हमारे दो मेहमान सवेरे आए थे वह कहाँ गये किसी ने कहा हुज़ूर वह तो इस शक्ल में हैं, तशरीफ़ ले गये और शेर का कान पकड़ कर एक तमांचा मारा उसने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया आपने उस तरफ मारा उसने उस तरफ मुँह फेर लिया फरमाया हमने नहीं कहा था कि हमारे मेहमानों को न सताना, जा चला जा। शेर उठ कर चला गया। फिर उन साहिबों से फरमाया तुमने ज़बानें सीधी की हैं और हमने क़ल्ब सीधा किया, यह उनके ख़तरा का जवाब था। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 41, 42)

शैख़ फरीदुद्दीन का लक़ब गंज शकर क्यों?

हज़रत शैख़ फरीदुल हक़ वद्दीन गंज शकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को एक मरतबा 80 फ़ाके हो चुके थे नफ़्स भूखा था, अल्जूअ् अल्जूअ् पुकार रहा था उसके बहलाने के लिए कुछ संग्रेज़े उठा कर मुंह में डाले डालते ही शकर हो गये जो कंकर मुँह में डालते शकर हो जाता, इसी वजह से आप गंज शकर मशहूर हैं।

महबूबे इलाही का मक़ामे तबत्तुल व इंक़िता

हज़रत महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब ज़र बख़्श है हज़रत की बख़्शिश की

यह हालत थी कि बादशाह के यहाँ से ख़्वान बड़े-बड़े क़ीमती जवाहरात के लाकर रखे गये एक साहब हाज़िर थे उन्होंने अर्ज़ की कि "हदाया मुश्तरक हैं" इरशाद फरमाया लेकिन तन्हा लेना बेहतर है यह फरमा कर सब उनको दे दिये।

इमाम अबू यूसुफ़ की फ़क़ाहत व मक़ामे तशरीअ़

हज़रत सैय्यदना इमाम अबू यूसुफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास हारून रशीद ने रुपए अशरफ़ियों के ख़्वान भेजे एक साहब ने अर्ज़ की "हदाया मुश्तरक हैं" इरशाद फरमाया यह इम्साल फवाकेह के लिए है कि जो हदिया पेश किया जाये वह तमाम हाज़ेरीन में मुश्तरक हो जाता है उनके सिवा और चीज़ों का यह हुक्म नहीं।

इन दोनों वाक़ियों को लिख कर मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने यह एतराज़ किया कि दोनों का जवाब आपस में मुवाफ़िक़ नहीं।

नफ़ीस मुहाकमा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

और मैंने इसके हाशिया पर यह जवाब लिखा कि इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआला अलैह मक़ामे तशरीअ़ में थे उनके अफ़्आल व अक़्वाल व अहवाल यहाँ तक कि उनकी एक एक वज़ा से इस्तिदलाल किया जाता है और यह थे मक़ामे तबत्तुल में, उनका मरतबा उनके मरतबा से अलाहिदा है, यहाँ ग़ैर से बिल्कुल इंक़िता है बख़िलाफ़ इसके कि उनका एक-एक फ़ेअ़ल बल्कि उनकी पोशिश तक हुज्जत होती है, उनके तमाम हालात मन्क़ूल होते हैं। (अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 44)

इमाम राज़ी की वक़्त रहलत पीर की ग़ाइबाना इम्दाद

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह के नज़अ का जब वक़्त आया शैतान आया कि उस वक़्त शैतान पूरी जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह उसका ईमान सल्ब हो जाये अगर उस वक़्त फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा उसने उन से पूछा कि तुमने उम्र भर मुनाज़िरों, मुबाहिसों में गुज़ारी, ख़ुदा को भी पहचाना? आपने फरमाया बेशक ख़ुदा एक है। उसने कहा इसपर क्या दलील, आपने एक दलील क़ाइम फरमाई वह ख़बीस मुअल्लिमुल-मलकूत रह चुका है उसने वह दलील तोड़ दी, उन्होंने दूसरी दलील क़ाइम की उसने वह भी तोड़ दी यहाँ तक कि 360 दलीलें हज़रत ने क़ायम कीं और उसने सब तोड़ दीं, अब यह सख़्त परेशानी में और निहायत मायूस, आपके पीर हज़रत नज्मुद्दीन कुबरा रज़ि अल्लाहु तआला कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फरमा रहे थे वहाँ से आपने आवाज़ दी कह क्यों नहीं देता कि मैंने ख़ुदा को बेदलील एक माना है।

(अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 53)

एक सहाबी का कश्फ़ व इरफान

औलिया-किराम के पेशे नज़र, अर्श से तहतुस्सुरा तक होता है जो सहाबा के ग़ुलाम हैं फिर सहाबा की शान का क्या पूछना।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से दरयाफ़्त फरमाया तुमने क्योंकर सुबह की अर्ज़ की मैंने सुबह की इस हाल में कि मैं सच्चा मोमिन था इरशाद फरमाया हर दावा की एक दलील होती है जिससे उस दावा की सच्चाई साबित होती है तुम्हारे दावे की क्या दलील है। अर्ज़ की मैंने सुबह की इस हाल में कि अर्श से तहतुस्सुरा तक तमाम मौजूदाते आलम मेरे पेशे नज़र है। जन्नतियों को जन्नत में ऐश करते देख रहा हूँ और जहन्नमियों को जहन्नम में चीख़ते चिल्लाते, अज़ाब पाते देख रहा हूँ इरशाद फरमाया तुम पहुँच लिए हो इत्मीनान रखो। माज़ी तो माज़ी मुस्तक़्बिल भी उनके पेशे नज़र होता है, औलिया-ए-किराम फरमाते हैं कोई पत्ता

सब्ज़ नहीं मगर आरिफ़ की निगाह में। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 65)

औलिया के साथ अल्लाह तआला की कमाले राफ़्त

औलिया–ए–किराम, सूफ़िया–ए–सदाक़त, अरबाबे मारिफ़त क़द्दे अस्त असरारहुम बहुक्मे कुरआन रोज़े क़्यामत हर ख़ौफ़ से महफ़ूज़ व सलामत हैं।

फ़रमाते हैं :

बेशक अल्लाह के औलिया को न कोई ख़ौफ़ है न हिज़्न व मलाल। (यूनुस, 22)

तो उन में बाज़ से अगर बराहे तक़ाज़ाए बशरीयत बाज़ हुक़ूक़े इलाहिया में अपने मंसब व मक़ाम के लिहाज़ से कोई तक़्सीर व कमी वाक़े हो तो मौला अज़्ज़ा व जल्ल उसे वक़ूअ़ से पहले माफ़ फ़रमा चुका।

हदीस में है रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है मैं तुम्हारे सवाल करने से पहले तुमको अता करता हूँ। तुम्हारे दुआ करने से पहले उसे क़बूल कर लेता हूँ और गुनाह से पहले बख़्श देता हूँ। (त)

यूंही अगर बाहम किसी तरह की शकर रंजी या किसी बन्दा के हक़ में कुछ कमी हो तो मौला तआला व हुकूक़ अपने ज़िम्मा करम पर लेकर अरबाबे हुकूक़ को हुक्म तजावुज़ फ़रमायेगा और बाहम सफ़ाई करा कर आमने सामने जन्नत के आलीशान तख़्तों पर बिठाएगा।

महबूबाने ख़ुदा अव्वल तो गुनाह करते ही नहीं और अगर कभी कोई तक़्सीर वाक़े हो तो वाइज़ व ज़ाजिरे इलाही उन्हें मुतनब्बेह करता और रुजूअ़ व तौबा की तौफ़ीक़ देता है।

हदीस में है कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं। (त, इब्ने माजा)

इसी मुबारक क़ौम के सुरूर व सरदार हज़रात अह्ले बद्र हैं रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम, जिन्हें इरशाद होता है, जो चाहो करो मैं तुम्हें बख़्श चुका। (बुख़ारी)

उन्हीं के अकाबिर सादात से हज़रत अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हैं जिनके लिए बारहा फ़रमाया गया आज से उस्मान कुछ करे उस पर मुवाख़ज़ा नहीं, आज से उस्मान कुछ करे उस पर मुवाख़ज़ा नहीं। (बुख़ारी)

हदीस में है कि अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को महबूब रखता है तो उसे गुनाहे ज़रर नहीं देता। (त, दैलमी)

शहीद का एजाज़, उस से हुक़ूक़ुल–इबाद की माफ़ी

शोहदा–ए–किराम का मक़ाम व मरतबा भी बहुत बुलन्द व बाला है, अंबिया व औलिया के मिस्ल शुहदा भी शहादत के बाद ज़िन्दा रहते हैं और रब तआला के क़ुर्बे ख़ास में उनको जगह मिलती है, शहीद की जब शहादत होती है तो उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। अल्लाह तआला अपने हुक़ूक़ को माफ़ फ़रमा देता है यहाँ तक कि बाज़ शहीद वह हैं कि हुक़ूक़ुल–इबाद भी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसके ज़िम्मा से अपनी रहमते कामिला से साक़ित कर देता है, वरना हुक़ूक़ुल–इबाद बग़ैर अपने आपस क़ी माफ़ी के माफ़ नहीं होते। (मुरत्तिब)

शहीदे बहर

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फ़रमाते हैं :

शहीदे बहर कि ख़ास अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की रज़ा चाहने और उसका बोल बाला होने के लिए समुन्द्र में जिहाद करे और वहाँ डूब कर शहीद हो। हदीसों में आया कि मौला अज़्ज़ा व जल्ल ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत से उसकी रूह क़ब्ज़ करता और अपने तमाम हुक़ूक़ उसे माफ़ फ़रमाता और बन्दों के सब मुतालबे जो उस पर थे अपने ज़िम्मा करम पर लेता है।

शहीदे बर

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो ख़ुशकी में शहीद हो उसके सब गुनाह बख़्शे जाते हैं मगर हुकूकुल–इबाद, और जो दरिया में शहादत पाए उसके तमाम गुनाह व हुकूकुल–इबाद सब माफ़ हो जाते हैं। (इब्ने माजा व तबरानी)

शहीदे सब्र

शहीदे सब्र यानी वह मुसलमान सुन्नीयुल–मज़हब सहीहुल–अक़ीदा जिसे ज़ालिम ने गिरफ़्तार करके बहालत बेकसी मज्बूरी क़त्ल किया, सूली दी, फांसी दी, कि यह बवज्हे असीरी क़ेताल व मुदाफ़ेअत पर क़ादिर न था, बख़िलाफ़ शहीदे जिहाद कि मारता मरता है। शहीद सब्र की बेकसी व बेदस्त पाई ज़्यादा बाइस रहमते इलाही होती है कि हक़्कुल्लाह व हक़्कुल–अब्द कुछ नहीं रहता।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : क़त्ल सब्र किसी गुनाह पर नहीं गुज़रता मगर यह कि उसे मिटा देता है। (मुसनद बज़्ज़ार)

नीज़ हदीस में है आदमी का बर–वजहे सब्र मारा जाना तमाम गुज़िश्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। (मुसनद बज़्ज़ार)

बिदअती मक़्तूल का अंजामे बद

यहाँ पर सुन्नीयुल–मज़हब व सहीहुल–अक़ीदा की तख़्सीस इसलिए की गई कि हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

अगर कोई बद मज़हब हर ख़ैर व शर की तक़्दीर का मुंकिर ख़ास हजरे असवद व मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दरम्यान महज़ मज़्लूम व साबिर मारा जाए और वह अपने इस क़त्ल में सवाबे इलाही मिलने की उम्मीद भी रखे ताहम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसकी किसी बात पर नज़र न फरमाए यहाँ तक कि उसे जहन्नम में दाख़िल करे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 51,52)

अना अल्हक़ की हक़ीक़त

हज़रत सैय्यदी हुसैन बिन मंसूर हल्लाज क़ुद्देसा सिर्रहू जिनको अवाम मंसूर कहते हैं, मंसूर उनके वालिद का नाम था और उनका इस्मे गिरामी हुसैन, अकाबिर अह्ले हाल से थे। उनकी एक बहन उन से बदरजहा मरतबा विलायत व मारिफ़त में ज़ाइद थीं, वह आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही में मस्रूफ़ होतीं, एक दिन उनकी आंख खुली बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया पता न चला, उनको वसवसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डालकर जागते रहे, वह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, यह आहिस्ता पीछे हो लिए देखते रहे, आसमान से सोने की ज़ंजीर में याक़ूत का जाम उतरा और उनके दहने मुबारक के बराबर आ लगा उन्होंने पीना शुरू किया, उन से सब्र न हो सका कि यह जन्नत की नेमत न मिले बेइख़्तियार कह उठे कि बहन तुम्हें अल्लाह की क़सम कि थोड़ा मेरे लिए छोड़ दो, उन्होंने एक घूंट छोड़ दिया, उन्होंने पिया उसके पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दर व दीवार से उनको यह आवाज़ आने लगी कि कौन इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाये, उन्होंने कहना शुरू किया "अनल–हक़्क़ु" बेशक मैं सबसे ज़्यादा उसका सज़ावार हूँ, लोगों के सुनने में आया "अनल–हक़्क़ु" वह दावा ख़ुदाई समझे और यह कुफ़्र है, और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुरतद है और मुरतद की सज़ा क़त्ल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो।

(सहाहे सित्ता, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 21)

सुब्हानी मा आज़म शानी

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह तआला अलैह कभी हालते जज़्ब और बेइख़्तियारी में "सुब्हानी मा आज़म शानी" (मुझे पाकी है, मेरी शान क्या ही बड़ी है) कहा करते थे हालांकि यह कलिमा मख़्लूक़ को अपने लिए कहना जाइज़ नहीं, उस पर उनके मुरीदीन व मोतक़ेदीन ने कहा कि हुज़ूर आप तो ऐसा कहते हैं क्या ऐसा कहना जाइज़ है?

सैय्यदी बायज़ीद बुस्तामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया मैं नहीं कहता बल्कि वह फरमाता है जिसे फरमाना ज़ेबा है, साइलों ने उस पर दलील चाही फरमाया तुम सब एक-एक खंजर हाथ में लेकर बैठ जाओ और जिस वक़्त मुझे ऐसा कहते सुनो बेतअम्मुल खंजर मारो कि ऐसे क़ाइल की सज़ा क़त्ल है, उन्होंने ऐसा ही किया, जब हज़रत पर हालत वारिद हुई और वही कलिमा निकला उन सबने बेमुहाबा खंजर मारे जिस ने जिस जगह के क़स्द पर खंजर मारा था ख़ुद उसके उसी जगह लगा। जब हज़रत को इफ़ाक़ा हुआ मुलाहिज़ा फरमाया कि वह सब घायल पड़े हैं फरमाया : मैं न कहता था कि मैं नहीं कहता वह कहता है जिसका कहना बजा है।

सैय्यदना मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने कोहे तूर पर उस दरख़्त में से निदा सुनी कि या मूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल-आलमीन।

ऐ मूसा मैं अल्लाह दोनों जहाँ का रब हूँ। (अल-क़िसस, 30)

क्या यह दरख़्त ने कहा था हरगिज़ नहीं बल्कि रब्बुल-आलमीन ने दरख़्त पर तजल्ली फरमाई और हज़रत कलीम को उस से निदा मस्मूअ् हुई, क्या वह एक दरख़्त पर तजल्ली फरमा सकता है। और बायज़ीद पर नहीं? क्या मुहाल है कि बायज़ीद पर तजल्ली करे और सुब्हानी मा आज़म शानी दूसरे लोगों को उन में से निदा आए?

हज़रत मोलवी मानवी क़ुद्देसा सिर्रहू अश्शरीफ़ फरमाते हैं एक जिन्न जिस पर तसल्लुत करता है उसकी ज़बान से कलाम करता है, उसके जवारेह से काम करता है, क्या तुम्हारे नज़्दीक रब अज़्ज़ा व जल्ल ऐसा नहीं कर सकता कलाम उसका है और ज़बान बायज़ीद की? बायज़ीद शजर-ए-मूसा हैं और मुतकल्लिम वह जिसने फरमाया : अनल्लाहु रब्बुल-आलमीन।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 197)

औलिया की गर्दन पर ग़ौसे आज़म का क़दम

इसमें शक नहीं कि हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मरतबा बहुत आला व अफ़्ज़ल है, ग़ौस अपने दौर में तमाम औलिया-ए-आलम का सरदार होता है। और हमारे हुज़ूरे इमाम हसन असकरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बाद से सैय्यदना इमाम महदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तशरीफ़ आवरी तक तमाम आलम के ग़ौस और सब ग़ौसों के ग़ौस और सब औलिया अल्लाह के सरदार हैं और उन सबकी गर्दन पर उनका क़दम पाक है।

बहजतुल-असरार शरीफ़ में है : ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला ने हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मानिन्द न कोई वली आलम में ज़ाहिर किया न ज़ाहिर करे।

नीज़ उसी में है : अल्लाह तआला ने जिस वली को किसी मक़ाम तक पहुँचाया, शैख़ अब्दुल-क़ादिर का मक़ाम उस से आला है। और जिस प्यारे को अपनी मुहब्बत का जाम पिलाया, शैख़ अब्दुल-क़ादिर के लिए उस से बढ़ कर ख़ुशगवार जाम है। और जिस मुक़र्रब को कोई हाल अता फरमाया, शैख़ अब्दुल-क़ादिर का हाल उस से आज़म है। अल्लाह तआला ने अपने असरार से वह राज़ उन में रखा है जिसके सबब उनको जम्हूरे औलिया पर सबक़त है और अल्लाह तआला के जितने वली हो गये या होंगे क़यामत तक सब शैख़ अब्दुल-क़ादिर का अदब करेंगे।

बक़स्म कहते हैं शाहान सरीफ़ैन व हरीम
कि हुआ है न वली हो कोई हमता तेरा
जो वली क़ब्ल थे या बाद हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 150, 151)

अहमद कबीर रिफ़ाई की गदर्न पर

बहजतुल–असरार में है : हज़रत सैय्यदी अहमद रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दो भांजे हज़रत अबुल–फरह अब्दुर्रहीम व अबुल–हसन अली फरमाते हैं कि हम अपने शैख़ हज़रत रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास उनकी ख़ानक़ाह मुबारक में कि उम्मे उबैदा में है हाज़िर थे हज़रत रिफ़ाई ने अपनी गर्दन मुबारक बढ़ाई और फरमाया "अला रक़बती" मेरी गर्दन पर हम ने उसका सबब पूछा फरमाया उस वक़्त हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर ने बग़दाद में फरमाया है कि "मेरा यह पाँव तमाम औलिया अल्लाह की गदर्न पर।"

रू–ए–ज़मीन के औलिया ने गर्दनें झुका दीं

★ बहजतुल–असरार में है : सैय्यद शरीफ़ शैख़ इमाम अबू सईद क़ैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर ने फरमाया "मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर" उस वक़्त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने उनके क़ल्बे मुबारक पर तजल्ली फरमाई और हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक गरोहे मलाइका मुक़र्रेबीन के हाथ उनके लिए ख़िल्अत भेजा और तमाम औलिया–ए–अव्वलीन व आख़िरीन का मज्मा हुआ, जो ज़िन्दा थे वह बदन के साथ हाज़िर हुए और जो इंतिक़ाल फरमा गये थे उनकी अरवाहे तैय्यबा आईं, उन सबके सामने वह ख़िल्अत हज़रत ग़ौसियत को पहनाया गया। मलाइका और रिजालुल–ग़ैब का उस वक़्त हुजूम था, हवा में परे बांधे खड़े थे तमाम उफ़ुक़ उन से भर गया था और रू–ए–ज़मीन पर कोई वली ऐसा न था जिसने गर्दन न झुका दी हो।

(आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं)

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वह है तलवा तेरा
ताज फ़र्क़े उरफ़ा किसके क़दम को कहिए
सर जिसे बाज दें वह पाँव है किस का तेरा
गर्दनें झुक गईं सर बिछ गये दिल टूट गये
कश्फ़ साक़ आज कहाँ यह तो क़दम था तेरा

★ इसी में है : शैख़ ख़लीफ़ा अकबर मलकी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दीदारे मुबारक से बकसरत मुशर्रफ़ हुआ करते थे, उन्होंने फरमाया ख़ुदा की क़सम बेशक मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा अर्ज़ की या रसूलुल्लाह शैख़ अब्दुल–क़ादिर ने फरमाया कि "मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया शैख़ अब्दुल–क़ादिर ने सच कहा और क्यों न हो कि वही क़ुतुब हैं और मैं उनका निगहबान।

कल्ब बाब अली (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू) अर्ज़ करता है।

★ अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाह ने हमारे आक़ा को उस कहने का हुक्म दिया कहते वक़्त उनके

क़ल्बे मुबारक पर तजल्ली फरमाई, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़िल्अत भेजा, तमाम औलिया अव्वलीन व आख़िरीन जमा किए गये सबके सामने पहनाया गया, मलाइका का जमघट हुआ, रिजालुल-ग़ैब ने सलामी दी, तमाम जहान के औलिया ने गर्दनें झुका दीं अब जो चाहे राज़ी हो जो चाहे नाराज, जो राजी हो उसके लिए रज़ा, जो नाराज़ हो उसके लिए नाराज़ी। जिसका जी जले उससे कहो, मर जाओ अपनी जलन में बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 237, 238)

★हज़रत हम्माद बिन हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मशाइख़ से हैं एक रोज़ उन्होंने सरकारे ग़ौसियत की ग़ैबत में फरमाया उन जवान सैय्यद का क़दम तमाम औलिया की गर्दन पर होगा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला उन्हें हुक्म देगा कि फरमायें मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर। और उनके ज़माने में जमी औलिया अल्लाह उनके लिए सर झुकायेंगे और उनके ज़ुहूरे मरतबा के सबब उनकी ताज़ीम बजा लायेंगे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 243)

इमाम इब्ने हजर मक्की शाफई अपने फतावा हदीसीया में फरमाते हैं :

★ कभी औलिया-ए-किराम को कलिमात बुलन्द कहने का हुक्म दिया जाता है कि जो उनके मक़ामाते आलिया से नावाक़िफ़ है उसे इत्तिला हो या शुक्रे इलाही और उसकी नेमत का इज़्हार करने के लिए, जैसा कि हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के लिए हुआ कि उन्होंने अपनी मज्लिसे वअ्ज़ में दफ़अतन फरमाया : मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर, फौरन तमाम दुनिया के औलिया ने क़बूल किया।

★ और एक जमाअत की रिवायत है कि जुमला औलिया जिन्न ने भी उसे क़बूल किया और सबने अपने सर झुका दिए और सरकारे ग़ौसियत के हुज़ूर झुक गये और उनके इस इरशाद का इक़रार किया, मगर अस्फ़हान में एक शख़्स मुंकिर हुआ फौरन उसका हाल सल्ब हो गया।

उसी फतावा हदीसीया में है :

★हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इरशाद पर जिन्होंने अपने सर झुकाए उन में से हज़रत सैय्यदी अब्दुल-क़ाहिर अबुल-नजीब सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हैं, उन्होंने अपना सर मुबारक झुकाया और कहा गर्दन कैसी, मेरे सर पर, मेरे सर पर।

★ और उन में से हज़रत सैय्यदी अहमद कबीर रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हैं उन्होंने अपना सर मुबारक झुकाया और कहा यह छोटा सा अहमद भी उन्हीं में है जिनकी गर्दन पर हज़रत का पाँव है। इस कहने और गर्दन झुकाने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया कि इस वक़्त हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर ने बग़दाद मुक़द्दस में इरशाद फरमाया है कि मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर, लिहाज़ा मैंने भी सर झुकाया और अर्ज़ की कि यह छोटा सा अहमद भी उन्हीं में है।

और उन्हीं में से हज़रत सैय्यदी अबू मदयन शुऐब मग़रेबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हैं उन्होंने सर मुबारक झुकाया और कहा मैं भी उन्हीं में हूँ, इलाही मैं तुझे और तेरे फरिश्तों को गवाह करता हूँ कि मैंने क़दमी, का इरशाद सुना और हुक्म माना।

★ इसी तरह हज़रत सैय्यदी शैख़ अब्दुर्रहीम क़नावी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी गर्दन मुबारक बिछाई और कहा सच फरमाया सच्चे माने हुए सच्चे ने। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन।

★ उनके सिवा और बहुत से आरेफ़ीन किराम ने तस्रीह फरमाई कि हुज़ूर सैय्यदना शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी तरफ से ऐसा न फरमाया बल्कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने उनकी कुतबीयते कुबरा ज़ाहिर फरमाने के लिए उन्हें इस फरमाने का

हुक्म दिया, लिहाज़ा किसी वली को गुंजाइश न हुई कि गर्दन न बिछाता और क़दम मुबारक अपनी गर्दन पर न लेता।

और मुतअद्दद सनदों से बहुत औलिया-ए-किराम मुक़द्देमीन से मरवी हुआ कि उन्होंने सरकारे गौसियत की विलादते मुबारका से तक़रीबन सौ बरस पहले ख़बर दी थी कि अंक़रीब अजम में एक साहब अज़ीम मज़हर वाले पैदा होंगे और यह फरमायेंगे कि "मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर" इस फरमाने पर उस वक़्त के तमाम औलिया उनके क़दम के नीचे सर रखेंगे और उस क़दम के साया में दाख़िल होंगे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 246, 247)

अदब और बेअदबी का फल

बहजतुल-असरार में है, इमाम अब्दुल्लाह अली बिन अस्रून तमीमी शाफ़ई से रिवायत है मैं जवानी में तलबे इल्म के लिए बग़दाद गया उस ज़माने में इब्नुस्सक़ा मदरसा निज़ामिया में मेरे साथ पढ़ा करता था, हम इबादत और सालेहीन की ज़्यारत करते थे। बग़दाद में एक साहब को ग़ौस कहते और उनकी यह करामत मशहूर थी कि जब चाहें ज़ाहिर हों, जब चाहें नज़रों से छुप जायें।

एक दिन मैं और इब्नुस्सक़ा और अपनी नौ उमरी की हालत में हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी, उन ग़ौस की ज़्यारत को गये रास्ता में इब्नुस्सक़ा ने कहा आज उन से वह मसअला पूछूंगा, जिसका जवाब उन्हें न आएगा। मैंने कहा मैं भी एक मसअला पूछूंगा देखूं क्या जवाब देते हैं, हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर कुद्देसा सिर्रहुल-आला ने फरमाया मआज़ल्लाह कि मैं उनके सामने उन से कुछ पूछूं, मैं तो उनके दीदार की बरकतों का मुंतज़िर रहूंगा।

जब हम उन ग़ौस के यहाँ हाज़िर हुए उनको अपनी जगह न देखा, थोड़ी देर में देखा तशरीफ़ फरमा हैं।

★ इब्नुस्सक़ा की तरफ निगाह ग़ज़ब की और फरमाया तेरी ख़राबी ऐ इब्नुस्सक़ा तू मुझ से दो मसअला पूछेगा जिसका मुझे जवाब न आए, तेरा मसअला यह है और इसका जवाब यह। बेशक मैं कुफ़्र की आग तुझ में भड़कती देख रहा हूँ।

★ फिर मेरी तरफ नज़र की और फरमाया ऐ अब्दुल्लाह तुम मुझ से मसअला पूछोगे कि देखो मैं क्या जवाब देता हूँ, तुम्हारा मसअला यह है और इसका जवाब यह, ज़रूर तुम पर दुनिया इतना गोबर करेगी कि कान की लौ तक उसमें ग़र्क़ होगे बदला तुम्हारी बेअदबी।

★ फिर हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर की तरफ नज़र की और हज़रत को अपने नज़्दीक किया और उनका एज़ाज़ किया और फरमाया ऐ अब्दुल-क़ादिर बेशक आपने अपने हुस्न अदब से अल्लाह व रसूल को राज़ी किया गोया मैं इस वक़्त देख रहा हूँ कि आप मज्मा बग़दाद में कुर्सी वअ़्ज़ पर तशरीफ़ ले गये और फरमा रहे हैं कि मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर। और तमाम औलिया-ए-वक़्त ने आपकी ताज़ीम के लिए गर्दनें झुकाई हैं।

वह ग़ौस यह फरमा कर हमारी निगाहों से ग़ायब हो गये कि फिर हमने उन्हें न देखा।

★ हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर तो निशाने कुर्ब ज़ाहिर हुए कि वह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के क़ुर्ब में हैं, ख़ास व आम उन पर जमा हुए और उन्होंने फरमाया मेरा यह पाँव हर वली अल्लाह की गर्दन पर, और औलियाए वक़्त ने इसका उनके लिए इक़रार किया।

★ और इब्नुस्सक़ा एक नसरानी बादशाह की ख़ूबसूरत बेटी पर आशिक़ हुआ उस से निकाह की दरख़्वास्त की उसने न माना मगर यह कि यह नसरानी हो जाए उसने क़बूल कर लिया। वल-अयाज़ बिल्लाह तआला।

★ रहा मैं (अब्दुल्लाह) तो मेरा दमिश्क़ जाना हुआ वहाँ सुल्तान नूरुद्दीन शहीद ने मुझे अफसरे

औक़ाफ़ किया और दुनिया बकसरत मेरी तरफ़ आई।

ग़ौस का इरशाद हम सबके बारे में जो कुछ था सादिक़ आया।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 244, 245)

फतावा हदीसीया ने इब्नुस्सक़ा की बद अंजामी में यह और ज़ाइद किया कि जब वह बदबख़्त कि बहुत बड़ा आलिमे जैय्यद और उलूमे शरईया में अपने अक्सर अह्ले ज़माना पर फाइक़ और हाफ़िज़े क़ुरआन और इल्मे मुनाज़रा में कमाले सर बरआवरदा था। जिससे जिस इल्म में मुनाज़रा करता उसे बन्द कर देता, ऐसा शख़्स जब शाने ग़ौस में गुस्ताख़ी की शामत से मआज़ल्लाह नसरानी हो गया, बादशाह नसारा ने उसे बेटी तो दे दी मगर जब बीमार पड़ा उसे बाज़ार में फेंकवा दिया। भीख मांगता और कोई न देता। एक शख़्स कि उसे पहचानता था गुज़रा उस से पूछा तू तो हाफ़िज़ था अब भी क़ुरआने करीम में से कुछ याद है कहा सब महव हो गया सिर्फ़ एक आयत याद रह गई है।

रुबमा यवद्दुल्लज़ीना कफरू लौ कानू मुस्लेमैने। (अल–हज्र, 2)

कितनी तमन्नाएं करेंगे वह जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया कि किसी तरह मुसलमान होते।

तरजमा : इमाम अब्दुल्लाह बिन अबी इसरून फरमाते हैं : फिर एक दिन मैं उसे देखने गया उसे पाया कि गोया उसका सारा बदन आग से जला हुआ है वह नज़अ् में था मैंने उसे क़िब्ला की तरफ़ किया, वह पूरब को फिर गया, मैंने फिर क़िब्ला को किया वह फिर फिर गया, इसी तरह मैं उसे जितनी बार क़िब्ला रुख़ करता वह पूरब को फिर जाता यहाँ तक कि पूरब ही की तरफ मुँह किए उसका दम निकल गया। वह उन ग़ौस का इरशाद याद किया करता और जानता था कि उसी गुस्ताख़ी ने इस बला में डाला, वल–अयाज़ बिल्लाह तआला।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 244, 247)

लौहे महफ़ूज़ में आंख की पुतली

हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया मुझे इज़्ज़त परवरदिगार की क़सम बेशक सईद व शक़ी सब मुझ पर पेश किये जाते हूं, बेशक मेरी आंख की पुतली लौहे महफ़ूज़ में है मैं तुम सब पर अल्लाह की हुज्जत हों, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाइब और तमाम ज़मीन में उनका वारिस हूं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 245)

ग़ौसे आज़म, दस्तगीर हैं

बहजतुल–असरार में है : हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल–क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मेरे असहाब और मेरे मुरीदों और मुझ से मुहब्बत रखने वालों में क़यामत तक जिस से लग़्ज़िश होगी मैं उसका दस्तगीर हूँ, मेरे भाई हुसैन हल्लाज का पाँव फिसला उनके वक़्त में कोई ऐसा न था कि उनकी दस्तगीरी करता, उस वक़्त मैं होता तो उनकी दस्तगीरी फरमाता।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 43)

एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू तहरीर फरमाते हैं :

★ हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म क़ुतुबे आलम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फरमाते हैं : मेरा हाथ मेरे मुरीद पर ऐसा है जैसे ज़मीन पर आसमान।

★ और फरमाते हैं :

अगर मेरे मुरीद का पाँव फिसलेगा मैं हाथ पकड़ लूंगा।

इसलिए हुज़ूर ग़ौसे आज़म को पीर दस्तगीर कहते हैं (हाथ पकड़ने वाले)

★ और फरमाते हैं :

अगर मेरा मुरीद मश्रिक़ में हो और मैं मग़्रिब में हूँ और उसका पर्दा खुले तो मैं ढांक दूँगा।

★ और फरमाते हैं :

मुझे एक दफ़्तर दिया गया हद्दे निगाह तक कि उसमें मेरे मुरीदों के नाम थे क़यामत तक, और मुझ से फरमाया गया यह सब हमने तुम्हें दे डाले। (रिसाला नक़ाउस्सलाफ़ा)

एक हन्फीयुल–मज़हब अज़ीमुश्शान वली

उसी में है हज़रत अबुस्सक़ी मुहम्मद बिन अज़हर सरीफीनी फरमाते हैं : मुझे रिजालुल–ग़ैब के देखने की तमन्ना थी, मज़ारे मुबारक इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर एक मर्द को देखा दिल में आया कि मर्दाने ग़ैब से हैं वह ज़्यारत से फारिग़ हो कर चले यह पीछे हुए उनके लिए दरिया–ए–दजला का पाट सिमट कर एक क़दम भर का रह गया कि वह पाँव रख कर उस पार हो गये उन्होंने क़सम देकर रोका और उनका मज़्हब पूछा फरमाया :

हनीफन मुस्लेमन वमा अना मिनल–मुश्रेकीन।

यह समझे कि हन्फी हैं, हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में अर्ज़ के लिए हाज़िर हुए हज़रत अन्दर हैं दरवाज़ा बन्द है, उनके पहुँचते ही हज़रत ने अन्दर से इरशाद फरमाया ऐ मुहम्मद आज रू–ए–ज़मीन पर इस शान का कोई वली हन्फीयुल–मज़्हब नहीं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 62)

डूबी हुई बारात निकल गई

एक बुढ़िया दरिया के किनारे बैठी रोती थी इत्तिफ़ाक़न हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का उस तरफ से गुज़र हुआ हज़रत ने दरयाफ़्त फरमाया कि इस क़दर क्यों रोती हो? बुढ़िया ने अर्ज़ किया हज़रत बारह बरस हुए कि यहाँ दरिया में मेरे लड़के की बारात मअ सामान के डूब गई है मैं यहाँ आकर रोज़ाना रोती हूँ, आपने दुआ फरमाई आपकी दुआ की बरकत से बारह बरस की डूबी हुई बारात मअ कुल सामान के सही व सालिम निकल आई और बुढ़िया ख़ुश व ख़ुर्रम अपने मकान को चली गई। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 198)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम से ग़ौसे पाक का मुसाफ़हा

"तफ़्रीहुल–ख़ातिर फ़ी मनाक़िब अश्शैख़ अब्दुल–क़ादिर" में है कि हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक बार हाज़िर सरकार मदीना नूर बार हो कर रौज़–ए–अनवर के क़रीब यह दोनों शेअर पढ़े।

फ़ी हालतिल–बुअ्दे रूही कुन्तु उरसेलुहा
तुक़ब्बिलुल–अर्ज़ा अन्नी वहिया नाइबती
व हाज़ेही नौबतुल–अश्बाहे क़द हज़रत
फम्दुद यमीनुका कय तहज़ी बेहा शफती

यानी ज़माना दूरी में मैं अपनी रूह को हाज़िर करता था वह मेरी तरफ से ज़मीन बोसी करती, अब जिस्म की नौबत है कि हाज़िरे बारगाह है हुज़ूर दस्ते मुबारक बढ़ायें कि मेरे लब सआदत पायें। इस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दस्ते अनवर ज़ाहिर हुआ हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने मुसाफ़हा किया और बोसा लिया और अपने सरे मुबारक पर रखा।

ग़ौसे आज़म ने कुतबीयत अता की

बहजतुल—असरार शरीफ़ में है : एक रोज़ आरिफ़ बिल्लाह अबुल—खै़र मुहम्मद बिन महफ़ूज़ और दस हज़रात और तालिबाने आख़िरत और तीन शख़्स तालिबाने वज़ारत वग़ैरहा मनासिबे दुनिया हाज़िरे बारगाहे आलम पनाह सरकारे ग़ौसियत थे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया हर एक अपनी हाजत अर्ज़ करे मैं उसे अता फरमाऊं, सबने अपनी—अपनी दीनी व दुनियवी मुरादें अर्ज़ कीं। उनमें शैख़ ख़लील सरसरी की अर्ज़ यह थी कि मैं अपनी ज़िन्दगी में मरतब—ए—कुतबीयत पाऊं, हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फरमाया हम इनकी और उनकी सबकी मदद करते हैं तेरे रब की अता से, और तेरे रब की अता पर रोक नहीं, आरिफ़ मौसूफ़ फरमाते हैं ख़ुदा की क़सम जिसने जो मांगा था पाया। हज़रत ख़लील सरसरी अपनी मौत से सात दिन पहले कुतुब किए गये।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 230, 231)

मुर्ग़ी ज़िन्दा हो गई

बहजतुल—असरार शरीफ में है : कि एक बीबी अपना बेटा ख़िदमते अक़्दस सरकारे ग़ौसियत में छोड़ गई कि उसका दिल हुज़ूर से गरवीदा है मैं अल्लाह के लिए और हुज़ूर के लिए उस पर अपने हुकूक़ से दर गुज़री, हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उसे क़बूल फरमा कर मुजाहिदे पर लगा दिया। एक रोज़ उनकी माँ आईं देखा लड़का भूख और शब बेदारी से बहुत ज़ईफ़ व कमज़ोर और ज़र्द रंग हो गया है और उसे जौ की रोटी खाते देखा, जब बारगाहे ग़ौसियत में हाज़िर हुई देखा हज़रत के सामने एक बर्तन में मुर्ग़ी की हड्डियाँ रखी हैं जिसे हज़रत ने तनावुल फ़रमाया है। अर्ज़ की ऐ मेरे आक़ा हज़रत तो मुर्ग़ खायें और मेरा बच्चा जौ की रोटी, यह सुन कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपना दस्ते अक़्दस उन हड्डियों पर रखा और फरमाया :

क़ूमी बेइज़्निल्लाहिल्लज़ी युहयिल—इज़ामा वहिया रमीमुन

जी उठ अल्लाह के हुक्म से जो बोसीदा हड्डियों को जिलायेगा।

यह फरमाना था कि मुर्ग़ी फौरन ज़िन्दा सही सालिम खड़ी हो कर आवाज़ करने लगी। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फरमाया जब तेरा बेटा ऐसा हो जाये तो जो चाहे खाये।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 233)

चील का मरना जीना

बहजतुल—असरार शरीफ़ में है : अइम्मा आरेफ़ीन ने फरमाया कि एक बार हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिसे वअ्ज़ पर एक चील चिल्लाती हुई गुज़री उसकी आवाज़ से हाज़िरीन के दिल परागन्दा हुए हज़रत ने हवा को हुक्म दिया उस चील का सर ले, फौरन चील एक तरफ गिरी और उसका सर दूसरी तरफ, फिर ग़ौसे आज़म ने कुर्सी वअ्ज़ से उतर कर उस चील को उठा कर उस पर दस्ते अक़्दस फेरा और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहा फौरन वह चील ज़िन्दा हो कर सबके सामने उड़ती चली गई। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 234)

पीरों के पीर

वली जलील हज़रत अली बिन इद्रीस याकूबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैंने हज़रत सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को सुना कि फरमाते थे आदमियों के लिए पीर हैं, क़ौम जिन्न के लिए पीर हैं, फरिश्तों के लिए पीर हैं, और मैं सबका पीर हूँ।

और मैंने हज़रत को इस मरज़े मुबारक में जिसमें वेसाले अक़्दस हुआ सुना कि अपने शाहज़ादगाने किराम से फरमाते थे मुझ में और तुम में और तमाम मख़्लूक़ाते ज़माना में वह फ़र्क़ है जो आसमान व

ज़मीन में मुझ से किसी को निस्बत न दो और मुझे किसी पर क़्यास न करो।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 239)

शरीअत व हक़ीक़त का दरिया

बहजतुल–असरार में है : शैख़ आरिफ़ बिल्लाह अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन महमूद बअ्लबकी मुक़री फरमाते हैं कि मैंने अपने मुर्शिद इमाम अब्दुल्लाह बताइही को सुना कि फरमाते थे मैं हुज़ूर सरकारे गौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में उम्मे उबैदा गया और हज़रत सैय्यदी अहमद रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़ानक़ाह में चन्द रोज़ मुक़ीम रहा। एक रोज़ हज़रत रिफ़ाई ने मुझ से फरमाया हमें हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर के कुछ मनाक़िब व औसाफ़ सुनाओ मैंने कुछ मनाक़िबे शरीफ़ा उनके सामने ब्यान किए, मेरे अस्नाए बयान में एक शख़्स आया और उसने मुझ से कहा क्या है और हज़रत सैय्यद रिफ़ाई की तरफ से इशारा करके कहा हमारे सामने उनके सिवा किसी के मनाक़िब न ज़िक्र करो, यह सुनते ही हज़रत रिफाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स को एक ग़ज़ब की निगाह से देखा कि फौरन उसका दम निकल गया, लोग उसकी लाश उठा कर ले गये।

फिर हज़रत सैय्यद रिफाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, शैख़ अब्दुल–क़ादिर के मनाक़िब कौन बयान कर सकता है, शैख़ अब्दुल–क़ादिर के मरतबा को कौन पहुँच सकता है। शरीअत का दरिया उनके दाहिने हाथ पर है और हक़ीक़त का दरिया उनके बाएं हाथ पर जिसमें से चाहें पानी लें, हमारे इस ज़माने में शैख़ अब्दुल–क़ादिर का कोई सानी नहीं।

ज़्यारत न करने पर हाल का सल्ब होना

इमाम अबू अब्दुल्लाह फरमाते हैं एक दिन मैंने हज़रत रिफ़ाई को सुना कि अपने भांजों और अकाबिर मुरीदीन को वसीयत फरमाते थे, एक शख़्स बग़दादे मुक़द्दस के इरादे से उन से रुख़्सत होने आया था फरमाया जब बग़दाद पहुंचो तो हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर अगर दुनिया में तशरीफ़ फरमा हों तो उनकी ज़्यारत और अगर पर्दा फरमा जायें तो उनके मज़ारे मुबारक की ज़्यारत से पहले कोई काम न करना कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने उन से अहद फरमा रखा है कि जो कोई साहिबे हाल बग़दाद आए और उनकी ज़्यारत को न हाज़िर हो उसका हाल सल्ब हो जाये, अगरचे उसके मरते वक़्त।

फिर हज़रत रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया शैख़ अब्दुल–क़ादिर हसरत हैं उस पर जिसे उनका दीदार न मिला। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 241, 242)

ग़ौसे पाक की तालीम और निगाह का असर

नुज़्हतुल–ख़ातिर अल–फातिर में है : शैख़ जलील सालेह मग़रेबी फरमाते हैं कि मुझको मेरे शैख़ हज़रत अबू मदयन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया : ऐ सालेह सफर करके हज़रत शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल–क़ादिर के हुज़ूर हाज़िर हो कि वह तुझको फ़िक्र की तालीम फरमायें। मैं बग़दाद गया जब हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ मैंने इस हैबत व जलाल का कोई बन्द–ए–ख़ुदा न देखा था, हज़रत ने मुझको एक सौ बीस दिन यानी तीन चिल्ले ख़ल्वत में बिठाया फिर मेरे पास तशरीफ़ लाए और क़िब्ला की तरफ इशारा करके फरमाया, ऐ सालेह इधर को देख तुझको क्या नज़र आता है, मैंने अर्ज़ की काबा मुअज़्ज़मा, फिर मग़रिब की तरफ इशारा करके फरमाया इधर को देख तुझे क्या नज़र आता है मैंने अर्ज़ की मेरे पीर अबू मदयन, फरमाया किधर जाना चाहता है काबा को या अपने पीर के पास? मैंने कहा अपने पीर

के पास, फरमाया एक क़दम में जाना चाहता है या जिस तरह आया था? मैंने अर्ज़ की बल्कि जिस तरह आया था, फरमाया यह अफ़ज़ल है।

फिर फरमाया ऐ सालेह अगर तू फ़िक्र चाहे तो हरगिज़ बेज़ीना उस तक न पहुँचेगा और उसका ज़ीना तौहीद है और तौहीद का मदार यह है कि ऐनुस्सिर के साथ दिल से हर ख़तरा मिटा दे और दिल बिल्कुल पाक व साफ कर ले, मैंने अर्ज़ की ऐ मेरे आक़ा मैं चाहता हूँ कि हुज़ूर अपनी मदद से यह सिफ़त मुझको अता फरमायें, यह सुन कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक निगाहे करम मुझ पर फरमाई कि इरादों की तमाम कशिशें मेरे दिल से ऐसी काफूर हो गईं जैसे दिन के आने से रात की अंधेरी, और मैं आज तक हुज़ूर की उसी एक निगाह से काम चला रहा हूँ।

हज़रत सालेह रिवायत फरमा चुके तो हज़रत सैय्यद उमर बज़्ज़ार क़ुद्देसा सिर्रहू ने फरमाया यूंहीं मैं भी एक रोज़ हुज़ूर पुर नूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सामने हुज़ूरे ख़ल्वत में हाज़िर था हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक को मेरे सीने पर मारा फौरन एक नूर क़ुर्से आफ़ताब के बराबर मेरे दिल में चमक उठा और उसी वक़्त से मैंने हक़ को पाया और आज तक वह नूर तरक़्क़ी कर रहा है।

ग़ौसे आज़म की मदद

शैख़ आरिफ़ बिल्लाह अबुल–ख़ैर बिश्र बिन महफ़ूज़ बग़दादी फरमाते हैं कि : एक रोज़ मैं और बारह साहब और ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में हाज़िर थे कि हज़रत ने फरमाया तुम में से हर एक, एक–एक मुराद मांगे कि हम अता फरमायें, उस पर दस साहिबों ने दीनी हाजतें मुतअल्लिक़ इल्म व मारिफ़त और तीन शख़्सों ने दुनियवी ओहदा व मंसब की मुरादें मांगीं, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया हम उन अह्ले दीन और उन अह्ले दुनिया सबकी मदद करते हैं तेरे रब की अता से और तेरे रब की अता पर रोक नहीं।

ख़ुदा की क़सम जिसने जो मांगा था पाया, शैख़ अबुल–ख़ैर फरमाते हैं : कि मैंने यह मुराद चाही थी कि ऐसी मारिफ़त मिल जाए कि वारिदाते क़ल्बी में मुझे तमीज़ हो जाए कि यह वारिद अल्लाह तआला की तरफ से है और यह नहीं।

और मेरी कैफ़ियत यह हुई कि मैं हुज़ूर के सामने हाज़िर था हुज़ूर ने उसी मज्लिस में अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर रखा फौरन एक नूर मेरे सीने में चमका कि आज तक मैं उसी नूर से तमीज़ कर लेता हूँ कि यह वारिदे हक़ है और यह बातिल, यह हाले हिदायत है, और यह गुमराही, और उस से पहले मुझे तमीज़ न हो सकने के बाइस सख़्त क़लक़ रहा करता था।

शोहरत व नामवरी में आगे

हज़रत शैख़श्शुयूख़ शहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सरदार सिलसिला सुहरवरदिया फरमाते हैं कि मुझे इल्मे का कलाम का बहुत शौक़ था मैंने उसकी किताबें अज़बर हिफ़्ज़ कर ली थीं और उसमें ख़ूब माहिर हो गया था, मेरे अम्मे मुकर्रम पीरे मुआज़्ज़म हज़रत सैय्यदी नजीबुद्दीन अब्दुल–क़ाहिर सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुझको को मना फरमाते थे और मैं बाज़ न आता था, एक रोज़ मुझे साथ लेकर बारगाहे ग़ौसियत पनाह में हाज़िर हुए राह में मुझ से फरमाया ऐ उमर! हम इस वक़्त उसके हुज़ूर हाज़िर होने को हैं जिसका दिल अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़बर देता है देखो उनके सामने ब इहितयात हाज़िर होना कि उनके दीदार से बरकत पाओ।

जब जब हाज़िरे बारगाह हुए मेरे पीर ने हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ की कि ऐ मेरे आक़ा! यह मेरा भतीजा इल्मे कलाम में आलूदा है मैं मना करता हूं नहीं मानता,

हज़रत ने मुझसे फ़रमाया ऐ उमर! तुमने इल्मे कलाम में कौन सी किताब हिफ़्ज़ की है मैंने अर्ज़ की फलां फलां किताबें, यह सुनकर हज़रत ने दस्ते मुबारक मेरे सीने पर फेरा, ख़ुदाए तआला की क़सम हाथ हटाने न पाए थे कि मुझे उन किताबों से एक लफ़्ज़ भी याद न रहा और उनके तमाम मतालिब अल्लाह तआला ने मुझे भुला दिए, हाँ अल्लाह तआला ने मेरे सीने में फ़ौरन इल्मे लदुन्नी भर दिया तो मैं हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पास से इल्मे इलाही का गोया हो कर उठा और हज़रत ने मुझ से फ़रमाया, मुल्क इराक़ में सबसे पहले नामवर तुम होगे यानी तुम्हारे बाद इराक़ भर में कोई इस दरजा शोहरत को न पहुंचेगा।

इसके बाद इमाम शैख़श्शुयूख़ सुहरवरदी फ़रमाते हैं : हज़रत शैख़ अब्दुल–क़ादिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बादशाह तरीक़ हैं और तमाम आलम में यक़ीनन तसर्रुफ़ फ़रमाने वाले। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु।

सौ फ़क़ीहों का हाल

शैख़ आरिफ़ अबू मुहम्मद मुफ़रिज फ़रमाते हैं : कि जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का शोहरा हुआ फ़ुक़हाए बग़दाद से सौ फ़क़ीह कि फ़क़ाहत में सबसे आला और ज़हीन थे, इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुए कि अनवाए उलूम से सौ मुख़्तलिफ़ मसअले हज़रत से पूछें, हर फ़क़ीह अपना जुदा मसअला पेश करे ताकि उन्हें जवाब से बन्द कर दें, यह मशवरा गांठ कर सौ मसअले अलग–अलग छांट कर ग़ौसे आज़म की मज्लिसे वअ़ज़ में आए।

हज़रत शैख़ मुफ़रिज फ़रमाते हैं : मैं उस वक़्त मज्लिसे वअ़ज़ में हाज़िर था जब वह फ़ुक़हा आ कर बैठ लिए, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने सरे मुबारक झुकाया और सीना अनवर से नूर की एक बिजली चमकी जो किसी को नज़र न आई मगर जिसे ख़ुदा ने चाहा उस बिजली ने उन सब फ़क़ीहों के सीनों पर दौरा किया, जिस जिस के सीने पर गुज़रती है वह हैरतज़दा हो कर तड़पने लगता है, फिर वह सब फ़ुक़हा एक साथ सब चिल्लाने लगे और अपने कपड़े फाड़ डाले और सर नंगे हो कर मिंबरे अक़्दस पर गये और अपने सर हुज़ूर ग़ौसे आज़म के क़दमों पर रखे, तमाम मज्लिस से एक शोर उठा जिससे मैंने समझा कि बग़दाद फिर हिल गया, हुज़ूर ग़ौसे आज़म उन फ़क़ीहों को एक–एक करके अपने सीना मुबारक से लगाते और फ़रमाते तेरा सवाल यह है और इसका जवाब यह है, यूंही उन सबके मसाइल और उनके जवाब इरशाद फ़रमा दिये।

जब मज्लिसे मुबारक ख़त्म हुई तो मैं उन फ़क़ीहों के पास गया और उन से कहा यह तुम्हारा हाल क्या हुआ था? बोले जब हम वहाँ बैठे जितना आता था दफ़अतन सब हम से गुम हो गया, ऐसा मिट गया कि कभी हमारे पास हो कर न गुज़रा था। जब हज़रत ने हमें अपने सीन–ए–मुबारक से लगाया हर एक के पास उसका छना हुआ इल्म पलट आया, हमें वह मसअले भी याद न रहे थे जो हज़रत के लिए तैयार करके ले गये थे, हज़रत ने वह मसाइल भी हमें याद दिला दिये और उनके वह जवाब इरशाद फ़रमाए जो हमारे ख़्याल में भी न थे।

दिलों पर ग़ौसे आज़म का क़ब्ज़ा

हज़रत शैख़श्शुयूख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी फ़रमाते हैं कि : मैं 560 हिजरी में अपने शैख़ मुअज़्ज़म व अम्मे मुकर्रम सैय्यदी नजीबुद्दीन अब्दुल–क़ाहिर सुहरवर्दी के हम्राह हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर हाज़िर हुआ, मेरे शैख़ ने हज़रत के साथ अज़ीम अदब बरता और उनके साथ हमातन गोश बेज़ुबां हो कर बैठे, जब हम मदरसा निज़ामिया को वापस आए मैंने इस अदब का हाल पूछा, फ़रमाया :

मैं क्योंकर उनका अदब न करूं जिनको मेरे मालिक ने दिल और मेरे हाल और तमाम औलिया के क़ुलूब व अहवाल पर तसर्रुफ़ बख़्शा है चाहें रोक लें चाहें छोड़ दें।

इमामे अजल आरिफ़े अकमल सैय्यदी उमर बज़्ज़ार फरमाते हैं कि मैं 15 जिमादिल-आख़िरा 556 हिजरी रोज़े जुमा को हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हम्राह जामे मस्जिद को जाता था, राह में किसी शख़्स ने हुज़ूर को सलाम न किया, मैंने अपने जी में कहा सख़्त तअज्जुब है, हर जुमा को तो ख़लाइक़ का हज़रत पर वह इज़्दहाम होता था कि हम मस्जिद तक बमुश्किल पहुँच पाते थे आज क्या वाक़या है कि कोई सलाम तक नहीं करता, यह बात अभी मेरे दिल में पूरी आने भी न पाई थी कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने तबस्सुम फरमाते हुए मेरी तरफ देखा और मअन लोग तस्लीम व मुजरा के लिए चारों तरफ से दौड़ पड़े यहाँ तक कि मेरे और हज़रत के बीच में हाइल हो गये, मैं उस हुजूम में हज़रत से दूर रह गया, मैंने अपने जी में कहा कि इस हालत से तो वही पहला हाल अच्छा था यानी दौलते क़ुर्ब तो नसीब थी, यह ख़तरा मेरे दिल में आते ही मअन हज़रत ने मेरी तरफ फिर कर देखा और तबस्सुम फरमाया और इरशाद किया ऐ उमर! तुम ही ने इसकी ख़्वाहिश की थी, क्या तुमहें मालूम नहीं कि लोगों के दिल मेरे हाथ में हैं चाहूं तो अपनी तरफ से फेर दूँ और चाहूं तो अपनी तरफ मुतवज्जेह कर लूं।

बन्दा मज्बूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा (रिसाला फ़िक़ह शहनशाह)

बारगाहे रिसालत में मीर अब्दुल-वाहिद बिलगिरामी की मक़्बूलियत

हज़रत मीर सैयद अब्दुल-वाहिद बिलगिरामी क़ुद्देसा सिर्रहू कि अजिल्ला औलिया-ए-खानदान आलीशान चिश्त से हैं और सिर्फ़ एक वास्ता से हज़रत मख़्दूम शाह सफ़ी क़ुद्देसा सिर्रहू के मुरीद हैं जो सिर्फ़ एक वास्ता से हज़रत मख़्दूम शाह मीना रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद हैं, हज़रत शाह कलीमुल्लाह चिश्ती जहानाबादी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं :

मैं मदीना मुनव्वरा में एक शब बिस्तरे ख़्वाब पर लेटा था कि मैंने आलमे वाक़ेया में देखा कि मैं और सैय्यद सिब्ग़तुल्लाह बुरूजी दोनों हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हैं, और सहाबा किराम और औलिया-ए-इज़ाम की एक जमाअत भी मौजूद है, उन्हीं में एक साहब ऐसे हैं जिन से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लबे शीरीं से तबस्सुम आमेज़ गुफ़्तगू फरमा रहे और उनकी जानिब तवज्जोह ख़ास रखते हैं, जब यह मज्लिस बरख़्वास्त हुई तो मैंने सैय्यद सिब्ग़तुल्लाह साहब से दरयाफ़्त किया कि यह कौन साहब थे जिनकी जानिब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को इस दरजा इल्तिफ़ात है, उन्होंने फरमाया यह मीर अब्दुल-वाहिद बिलगिरामी हैं और इस इज़्ज़त व करामत का बाइस यह है कि उनकी तस्नीफ़ करदा किताब "सबअ़् सनाबिल शरीफ़" बारगाहे नब्वी में शर्फ़े क़बूल पा चुकी है। (रिसाला मक़ालुल-उरफ़ा)

मौत के बाद औलिया-ए-किराम की ज़िन्दगी

उलमा ने फरमाया मौत के यह मानी नहीं कि आदमी महज़ नीस्त व नाबूद हो जाए बल्कि वह तो यही रूह व बदन के तअल्लुक़ छूटने और उन में हिजाब व जुदाई हो जाने और एक तरह की हालत बदलने और एक घर से दूसरे घर चले जाने का नाम है।

शरह मिश्कात में है : औलिया की दोनों हालत हयात व ममात में बिल्कुल फ़र्क़ नहीं, इसी लिए कहा गया कि वह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।

★ इमाम आरिफ़ बिल्लाह अबुल–क़ासिम कुशैरी कुद्देस सिर्रहू के रिसाला में है : सैय्यदना अबू सईद ख़राज़ कुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि : मैं मक्का मुअज़्ज़मा में था बाब बनी शैबा पर एक जवान मुर्दा पड़ा पाया, जब मैंने उसकी तरफ नज़र की मुझे देख कर मुस्कुराया और कहा ऐ अबू सईद क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह के प्यारे ज़िन्दा हैं अगरचे मर जाएं, वह तो यही एक घर से दूसरे घर में बुलाए जाते हैं।

★ इसी रिसाला कुशैरिया में है : सैय्यदी अबू अली कुद्देसा सिर्रहू रिवायत करते हैं, मैंने एक फ़क़ीर को क़ब्र में उतारा जब कफन खोला और उनका सर खाक पर रख दिया कि अल्लाह उनकी गुर्बत पर रहम करे फकीर ने आंखें खोल दीं और मुझ से फरमाया ऐ अबू अली तुम मुझे उसके सामने ज़लील करते हो, जो मेरे नाज़ उठाता है, मैंने अर्ज़ की ऐ सरदार मेरे! क्या मौत के बाद ज़िन्दगी? फरमाया मैं ज़िन्दा हूँ और ख़ुदा का हर प्यारा ज़िन्दा है, बेशक वह वजाहत व इज़्ज़त जो मुझे रोज़े क़यामत मिलेगी उससे मैं तेरी मदद कर दूँगा।

★ इसी रिसाला में है : हज़रत इब्राहीम बिन शैबान कुद्देसा सिर्रहू रिवायत करते हैं, मेरा एक मुरीद जवान मर गया मुझे सख़्त सदमा हुआ नहलाने बैठा, घबराहट में बाएं तरफ से इब्तिदा की जवान ने वह करवट हटा कर अपनी दाहिनी करवट मेरी तरफ की मैंने कहा जाने पिदर तू सच्चा है मुझी से ग़लती हुई।

★ इसी में है : हज़रत अबू याकूब मूसा नहरी जौरी कुद्देसा सिर्रहू रिवायत करते हैं, मैंने एक मुरीद को नहलाने के लिए तख़्ता पर लिटाया उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया, मैंने कहा जाने पिदर मैं जानता हूँ कि तू मुर्दा नहीं, यह तो सिर्फ़ मकान बदलना है मेरा हाथ छोड़ दे।

★ जनाब मम्दूह उन्हीं आरिफ़ मौसूफ़ से रावी :

मक्का मुअज़्ज़मा में एक मुरीद ने मुझ से कहा पीर व मुर्शिद मैं कल ज़ुहर के वक़्त मर जाऊंगा, हज़रत यह अशर्फ़ियाँ लें, आधी में मेरा दफन, आधी में मेरा कफन करें, जब दूसरा दिन हुआ और ज़ुहर का वक़्त आया मुरीद मज़्कूर नें आकर तवाफ़ किया फिर काबा से हट कर लेटा तो रूह न थी, मैंने क़ब्र में उतारा आंखें खोल दीं मैंने कहा मौत के बाद ज़िन्दगी? कहा मैं ज़िन्दा हूँ और अल्लाह का हर दोस्त ज़िन्दा है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 278, 279)

इमामे आज़म का मक़ाम व मरतबा

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक अज़ीम मुज्तहिद और बेमिसाल फ़क़ीह हैं उनके मदारिके आलिया तक रसाई बहुत मुश्किल है अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने उन्हें जुमला उलूम व फ़ुनून और हर तरह की ख़ूबियों से आरास्ता व पैरास्ता फरमाया था उनकी कुछ ख़ुसूसियात आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की तहरीर में मुलाहिज़ा फरमायें:

एतराफ़े अज़मत पर अक़्वाले अइम्मा

अजिल्ल-ए-अकाबिर अइम्म-ए-दीन मुआसिराने इमामे आज़म वग़ैरेहुम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की तस्रीहात कि इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के इल्म व अक़्ल को औरों का इल्म व अक़्ल नहीं पहुँचता, जिसने उनका ख़िलाफ़ किया उनके मदारिक तक नारसाई से किया।

★ इमामे अजल सुफ़्यान सूरी ने हमारे इमाम से कहा, आपको वह इल्म खुलता है जिससे हम सब ग़ाफ़िल होते हैं।

★ और फरमाया अबू हनीफ़ा का ख़िलाफ़ करने वाला उसका मुहताज है कि उन से मरतबा में बड़ा और इल्म में ज़्यादा हो और ऐसा होना दूर है।

★ इमाम शाफ़ई ने फरमाया तमाम जहान में किसी की अक़्ल, अबू हनीफ़ा के मिस्ल नहीं।

★ इमाम अली बिन आसिम ने कहा अगर अबू हनीफ़ा की अक़्ल तमाम रू-ए-ज़मीन के निस्फ़ आदमियों की अक़्लों से तौली जाए, अबू हनीफ़ा की अक़्ल ग़ालिब आए।

★ इमाम बकर बिन जैश ने कहा, अगर उनके तमाम अह्ले ज़माना की मज्मूअ़ अक़्लों के साथ वज़न करें तो एक अबू हनीफ़ा की अक़्ल उन तमाम अइम्मा अकाबिर व मुज्तहेदीन व मुहद्देसीन व आरेफ़ीन सब की अक़्ल पर ग़ालिब आए।

★ इमाम अब्दुल-वहाब शअ़रानी शाफ़ई अपने पीर व मुर्शिद हज़रत सैय्यदी अली ख़्वास शाफ़ई से रावी कि इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के मदारिक इतने दक़ीक़ हैं कि अकाबिरे औलिया के कश्फ़ के सिवा किसी के इल्म की वहाँ तक रसाई मालूम नहीं होती।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 389, 390)

अ अइम्मा शाफ़ईया फरमाते हैं कि मज़्हब इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मदारिक ऐसे दक़ीक़ हैं जिनको अकाबिरे औलिया ही पहचानते हैं।

इमामे आज़म का कश्फ़ व मुशाहिदा

सच्चे मुशाहिदे वाले आबे वुज़ू को देखते हैं कि लोगों के आज़ा से गुनाहों में सना हुआ, गुनाहों की सख़्त बद नुमा रंगतों से रंगा हुआ निकलता है, इसीलिए इमाम अह्ले मुशाहिदा अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हुक्म फरमाया कि माए मुस्तामल नजासते ग़लीज़ा है क्योंकि इमाम आज़म उसे गन्दगियों से लुथड़ा हुआ देखते थे तो उन्हें इस हुक्म के सिवा और क्या गुंजाइश होती, आदमी आंखों देखी बात कैसे रद्द कर दे।

आबे मुस्तामल का हुक्मे हकीमाना

सैय्यदी अली ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा जब वुज़ू का पानी देखते लोगों के वुज़ू करने में गुनाहे कबीरा व सग़ीरा और मक्रूह जो जो कुछ हासिल कर उसमें गिरा सब पहचान लेते। इसीलिए इमाम ने माए मुस्तामल के तीन हुक्म रखे।

★ एक यह कि नजासते ग़लीज़ा है, यह इस सूरत में कि इस्तेमाल करने वाले ने कोई गुनाहे कबीरा किया हो।

★ दोम नजासते ख़फ़ीफ़ा है, यह इस सूरत में कि गुनाहे सग़ीरा का धोवन हो।

★ सोम पाक है मगर पाक नहीं कर सकता, यह इस सूरत में कि मकरूह का ग़साला हो।

इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ल्लेदीन ने इसी से यह समझा कि यह तीनों हुक्म हर हाल में हैं, हालांकि वह मुख़्तालिफ़ अहवाल पर हैं।

मीज़ान अश्शरीअतुल–कुबरा में है अल्लाह तआला इमामे आज़म और उनके मानने वालों से राज़ी हो और उन पर अपनी रहमत नाज़िल फरमाए। कि उन्होंने नजासत की दो क़िस्में कीं। (1) ग़लीज़ा और (2) ख़फ़ीफ़ा।

क्योंकि गुनाह दो ही क़िस्म के हैं। (1) कबीरा और (2) सग़ीरा।

इमाम अब्दुल–वहाब शअ्रानी मीज़ान में फरमाते हैं कि मैंने अपने सरदार अली ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को फरमाते हुए सुना है, आदमी को कश्फ़ हासिल हो तो लोगों के वुज़ू व ग़ुस्ल के पानी को निहायत घिनौना और बदबूदार पाए तो कभी उस से तहारत हासिल करने को उसका दिल न चाहे। जैसे थोड़े पानी में कुत्ता या बिल्ली मर जाए तो इंसान का दिल हरगिज़ उससे तहारत करने को न चाहे।

इमाम शअ्रानी फरमाते हैं इस पर मैंने उन से अर्ज़ की कि इससे तो मालूम होता है कि इमाम अबू हनीफ़ा व अबू यूसुफ़ माए मुस्तामल को नजिस व नापाक मानते हैं क्योंकि वह कश्फ़ वाले थे, फरमाया हाँ दोनों आज़म अह्ले कश्फ़ से थे। इमामे आज़म जब लोगों का आबे वुज़ू देखते, बेऐनेही उन गुनाहों को पहचान लेते जो धुल कर पानी में गिरे और जुदा–जुदा जान लेते कि यह धोवन गुनाहे कबीरा का है, यह सग़ीरा का, यह मक्रूह का है यह ख़िलाफ़े औला का, बिला तफावुत इसी तरह जैसे कोई अज्साम का मुशाहिदा करे।

★ एक रिवायत में है कि इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे जामा कूफ़ा के हौज़ पर तशरीफ़ ले गये, एक जवान वुज़ू कर रहा था, उसका पानी जो टपका, इमाम ने उस पर नज़र फरमाई, जवान से फ़रमाया ऐ मेरे बेटे! माँ बाप को ईज़ा देने से तौबा कर, उसने फौरन अर्ज़ की मैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ उस से तौबा करता हूँ।

★ एक और शख़्स का ग़साला देख कर आपने फरमाया, शराब पीने और मज़ामीर सुनने से तौबा कर उसने कहा मैंने तौबा की।

★ एक और शख़्स का ग़साला देख कर आपने फरमाया, शराब पीने और मज़ामीर सुनने से तौबा कर उसने कहा मैं ताइब हुआ।

मीज़ान ही में है कि अल्लाह तआला इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ल्लिदों पर रहमत नाज़िल करे कि उन्होंने छोटे–छोटे हौज़ों से तहारत को मना फरमाया कि वुज़ू वालों के गुनाह उन में धुले होते हैं और अपने मानने वालों को हुक्म दिया कि वुज़ू या तो नहर से करें, या कुएँ या बड़े हौज़ से।

सैय्यदी अली ख़्वास रहमतुल्लाह तआला अलैह, शाफ़ई होने के बावजूद अक्सर औक़ात उन मस्जिदों के छोटे हौज़ों से वुज़ू न करते और फरमाते कि उनका पानी हम जैसों के बदन को चुस्ती व ताज़गी नहीं बख़्शता क्योंकि यह गुनाहों के धुलने से गन्दा हो गया है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 245)

इमामे आज़म के तक़्वा की झलक

हमारे इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तिजारत करते थे हज़ारों रुपए लोगों पर क़र्ज़ थे तक़ाज़े के वास्ते दोपहर को तशरीफ़ ले जाया करते और मक़रूज़ की दीवार के साए से अलाहिदा खड़े होते कि यह क़र्ज़ से नफ़ा हासिल करने में दाख़िल न हो जाए।

अपने मदयून के साथ इमामे आज़म की खै़र ख़्वाही

एक शख़्स पर हुज़ूर के दस हज़ार आते थे वादा गुज़रे मुद्दत हो चुकी थी, एक मरतबा आप तशरीफ लिए जाते थे सामने से वह आता था आपको देख कर डर के मारे एक गली में हो गया, क़िस्मत की बात कि वह दूसरी तरफ से सर बस्ता थी इमाम वहीं तशरीफ़ ले गये फरमाया क्यों तुम इधर कैसे आ गये सबब बताया कि मैं हुज़ूर का मक़रूज़ हूँ वादा गुज़र गया मैं डरा कि हुज़ूर तक़ाज़ा फरमायेंगे और मेरे पास इस वक़्त मौजूद नहीं इसलिए मैं इस तरफ आ गया। फरमाया दस हज़ार भी ऐसी चीज़ है कि किसी मुसलमान का क़ल्ब परेशान किया जाए, मैंने माफ़ किए।

(अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 5)

इमामे आज़म के बच्चे

सैय्यदना इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु औलाद व सलातीने कियान से हैं, और उनका मरतबा उस से अजल व आज़म है कि नसब से उन्हें फ़ख़्र हो, उनका यह शर्फ़ नहीं कि वह दुनियवी बादशाहों की औलाद हैं, उनका यह फ़ज़्ल है कि वह हज़ारहा दीनी बादशाहों के बाप हैं।

सैय्यदना इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं, तमाम मुज्तहेदीन इमामे आज़म अबू हनीफ़ा के बाल बच्चों की तरह हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 22)

इमाम शाफ़ई का अदब

इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक नमाज़े सुबह में क़ुनूत पढ़ी जाती है, बिस्मिल्लाह व आमीन जेहर से कहते हैं और रफ़ा यदैन करते हैं मगर इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का अदब व एहतराम यह है कि – (मुरत्तिब)

इमाम मुज्तहिद मुतलक़ आलिमे क़ुरैश सैय्यदना इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जब मज़ारे मुबारक इमामुल–अइम्मा सैय्यदना इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर नमाज़ सुबह पढ़ाई दुआए क़ुनूत न पढ़ी, न बिस्मिल्लाह व आमीन जेहर से कहे न ग़ैर तहरीमा में रफ़ा यदैन फरमाया, उन्होंने ख़ुद अपना मज़्हब तर्क किया और उज़्र भी बयान फरमाया कि मुझे इन इमामे अजल से शर्म आई कि इनके सामने इनका ख़िलाफ़ करूं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 369)

इमाम आमश की हैरत

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को हदीस व फ़िक़ह पर इंतिहाई उबूर व महारत हासिल थी वह अहादीस से मसाइल के इस्तिंबात व इस्तिख़राज में दरक रखते थे।

(मुरत्तिब)

इमाम इब्ने हजर मक्की शाफ़ई किताब ख़ैरातुल–हिसान में फरमाते हैं :

किसी ने इमाम आमश से कुछ मसाइल पूछे हमारे इमामे आज़म इमामुल–अइम्मा मालिकुल अज़िम्मा सिराजुल–उम्मह सैय्यदना अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (कि उस ज़माने में इन ही इमाम आमश से हदीस पढ़ते थे) हाज़िरे मज्लिस थे, इमाम आमश ने वह मसाइल हमारे इमामे आज़म से पूछे, इमाम ने फौरन जवाब दिए। इमाम आमश ने कहा यह जवाब आपने कहाँ से पैदा किए फरमाया उन हदीसों से जो मैंने ख़ुद आप ही से सुनी हैं और वह हदीसें मआ सनद रिवायत फरमाईं, इमाम आमश ने कहा बस कीजिए जो हदीसें मैंने सौ दिन में आपको सुनाईं आप एक घड़ी में मुझे सुनाए देते हैं, मुझे मालूम न था कि आप इन हदीसों में यूं अमल करते हैं, ऐ फ़िक़्ह वालो तुम तबीब हो और हम मुहद्दिस लोग अत्तार हैं और ऐ अबू हनीफ़ा तुमने फ़िक़्ह व हदीस दोनों किनारे लिए। (सफाइहुल–ल जीन)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा की ईमान अफरोज़ हिकायात

आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत शैखुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू अह्ले सुन्नत व जमाअत के इमाम व पेशवा और इल्मी व दीनी क़ाइद व रहनुमा हैं अल्लाह तआला ने उन्हें बेशुमार फ़ज़ाइल व ख़साइस अता फ़रमाए मुहक़्क़ेक़ीन और दानिशवराने मिल्लत उनके हयात व कारनामे पर एक तवील अरसे से रिसर्च व तहक़ीक़ कर रहे हैं मगर आज तक उनकी ज़िन्दगी के तमाम गोशों पर काम न हो सका, उनकी दीनी व इल्मी ख़िदमात पर काम करने के लिए न जाने मुहक़्क़ेक़ीन व उलमा को और कितना अरसा लगेगा वह एक बहर नापैदा किनार हैं, हर सिन्फ़े सुख़न पर उनकी तहक़ीक़ात व ख़िदमात मौजूद हैं, उनका सवानेही ख़ाका "हयाते आला हज़रत" व "सवानेह आला हज़रत" वग़ैरह किताबों से मालूम हो सकता है यहाँ पर मैं तसानीफ़े आला हज़रत से उनकी ज़िन्दगी, इल्म व यक़ीन, इस्तिक़ामत फ़िद्दीन, हिमायते दीन व मज़हब वग़ैरह से मुतअल्लिक़ इबरत अंगेज़ रिवायात व हिकायात पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ।

(मुरत्तिब)

आला हज़रत का पहला फतवा

आला हज़रत से सवाल हुआ कि अगर बच्चे की नाक में किसी तरह दूध चढ़ कर हलक़ में पहुँच गया हो तो क्या हुक्म है?

इसके जवाब में आप इरशाद फ़रमाते हैं कि :

मुँह या नाक से औरत का दूध जो बच्चे के जौफ में पहुँचेगा हुर्मत लाएगा।

यह वही फतवा है जो 14 शाबान 1286 हिजरी को सबसे पहले इस फ़क़ीर ने लिखा और इसी 14 शाबान 1286 हिजरी को मन्सबे इफ़्ता अता हुआ और उसी तारीख़ से बिहम्दिल्लाह नमाज़ फर्ज़ हुई, और विलादत 10 शव्वालुल–मुकर्रम 1272 हिजरी रोज़ शंबा वक़्ते ज़ुहर, मुताबिक़ 14 जून 1856 ई0 11 जेठ सदी 1913 सम्बत को हुई, तो मन्सबे इफ़्ता मिलने के वक़्त फ़क़ीर की उम्र 14 बरस दस महीना चार दिन की थी, जब से अब तक बराबर यह ही ख़िदमते दीन ली जा रही है। वलहम्दुलिल्लाह।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 11)

इरशादे हदीस पर आला हज़रत का यक़ीन व एतमाद

आला हज़रत की मज्लिस में गाय का गोश्त खाने का ज़िक्र हुआ उस पर आपने इरशाद फ़रमाया :

वह क़तअ़न हलाल और निहायत ग़रीब परवर गोश्त और बाज़ मिज़ाजों में गोश्त बुज़ से नाफ़े तर है, बहुतेरे गोश्त के शौक़ीन उसे पसन्द करते और बकरी के गोश्त को बीमार की ख़ूराक कहते हैं और उसकी कुरबानी का तो कुरआने अज़ीम में इरशाद है और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसकी कुरबानी अज़्वाजे मुतह्हरात की तरफ से फरमाई, हिन्दुस्तान में बिल–ख़ुसूस शआइरे इस्लाम से है और उसका बाक़ी रखना वाजिब, हाँ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उसका गोश्त तनावुल फ़रमाना साबित नहीं, और मुझे तो सख़्त ज़रर करता है।

एक साहब ने मेरी दावत की बइसरार ले गये उन दिनों जनाब सैय्यद हबीबुल्लाह साहब दमिश्क़ी जीलानी फ़क़ीर के यहाँ मुक़ीम थे उनकी भी दावत थी मेरे साथ तशरीफ़ ले गये, वहाँ

दावत का यह सामान था कि चन्द लोग गाय के कबाब बना रहे थे और हलवाई पूरियाँ, यह ही खाना था सैय्यद साहब ने मुझ से फ़रमाया आप तो गाय के गोश्त के आदी नहीं और यहाँ कोई और चीज़ मौजूद नहीं बेहतर कि साहिबे ख़ाना से कह दिया जाए, मैंने कहा कि यह मेरी आदत नहीं, वही पूरियाँ, कबाब खाये, उसी दिन मसूढ़ों में वर्म हो गया और इतना बढ़ा कि हलक़ और मुँह बिल्कुल बन्द हो गया, मुश्किल से थोड़ा दूध हलक़ से उतरता और उसी पर इक्तिफा करता, बात बिल्कुल न कर सकता था यहाँ तक कि क़िराअत सिर्रीया भी मयस्सर न थी, सुन्नतों में भी किसी की इक़्तिदा करता, उस वक़्त मज़हबे हन्फ़ी में इमाम के पीछे क़िराअत जाइज़ न होने का यह नफ़ीस फाइदा मुशाहिदा हुआ। जो कुछ किसी से कहना होता लिख देता, बुख़ार बहुत शदीद था और कान के पीछे गिल्टी, मेरे मंझले भाई मरहूम एक तबीब को लाए, उन दिनों बरैली में मरज़े ताऊन बशिद्दत था, उन साहब ने बग़ौर देख कर सात आठ मरतबा कहा यह वही है, वही है, वही है यानी ताऊन, मैं बिल्कुल कलाम न कर सकता था इसलिए उन्हें जवाब न दे सका हालांकि मैं ख़ूब जानता था कि यह ग़लत कह रहे हैं न मुझे ताऊन है न इन्शाअल्लाहुल–अज़ीज़ कभी होगा इसलिए कि मैंने ताऊनज़दा को देख कर बारहा वह दुआ पढ़ ली है जिसे हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स किसी बला रसीदा को देख कर यह दुआ पढ़ लेगा उस बला से महफ़ूज़ रहेगा वह दुआ यह है।

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफानी मिम्मब्तलाका बेही व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिन मिम्मन ख़लक़ा तफ़्ज़ीला। (तिर्मिज़ी)

आशोबे चश्म का इज़ाला

जिन–जिन अमराज़ के मरीज़ों, जिन–जिन बलाओं के मुब्तलाओं को देख कर मैंने इसे पढ़ा बहम्देही तआला आज तक उन सबसे महफ़ूज़ हूं और बेऔनेही तआला हमेशा महफ़ूज़ रहूँगा। अल्बत्ता एक बार उसे पढ़ने का मुझे अफसोस है मुझे नौ उमरी में आशोबे चश्म अक्सर हो जाता और बेवज्हे हिद्दत मिज़ाज, बहुत तक्लीफ़ देता था, 19 साल की उम्र होगी कि रामपुर जाते हुए एक शख़्स को रम्दे चश्म में मुब्तला देख कर यह दुआ पढ़ी, जब से अब तक आशोबे चश्म फिर न हुआ, उसी ज़माना में सिर्फ़ दो मरतबा ऐसा हुआ कि एक आंख कुछ दबती मालूम हुई दो चार दिन बाद वह साफ हो गई, दूसरी दबी फिर वह भी साफ हो गई मगर दर्द, खटक, सुर्ख़ी कोई तक्लीफ़ असलन किसी क़िस्म की नहीं, अफसोस इसलिए कि –

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हदीस है कि तीन बीमारियों को मक्रूह न रखो।

1. ज़ुकाम कि इसकी वजह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है।
2. खुजली कि इस अमराजे जिल्दीया जुज़ाम वग़ैरह का इंसिदाद हो जाता है।
3. आशोबे चश्म नाबीनाई को दफ़ा करता है।

नुज़ूले आब से इफ़ाक़ा

इस दुआ की बरकत से यह तो जाता रहा एक और मरज़ पेश आया जमादिल–ऊला 1300 हिजरी में बाज़ मुहिम तसानीफ़ के सबब एक महीना कामिल बारीक ख़त की किताबें शबाना रोज़ अलल–इत्तिसाल देखना हुआ, गर्मी का मौसम था दिन को अन्दर के दालान में किताब देखता और लिखता, अट्ठाईसवाँ साल था आंखों ने अंधेरे का ख़्याल न किया, एक रोज़ शिद्दते गर्मी के बाइस दोपहर को लिखते–लिखते नहाया सर पर पानी पड़ते ही मालूम हुआ कि कोई चीज़ दिमाग़ से दाहिनी आंख में उतर आई बाईं आंख बन्द करके दहनी से देखा तो वस्त शय मरई में एक सियाह

हल्का नज़र आया उसके नीचे शय का जितना हिस्सा हुआ वह ना साफ़ और दबा हुआ मालूम होता। यहाँ उस ज़माना में एक डॉक्टर इलाजे चश्म में बहुत सरबर आवुरदा था, सैंडर्सन या अंडर्सन कुछ ऐसा ही नाम था मेरे उस्ताज़ जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह ने इसरार फरमाया कि उसे आंख दिखाई जाए इलाज करने न करने का इख़्तियार है। डॉक्टर ने अंधेरे कमरे में सिर्फ़ आंख पर रौशनी डाल कर आलात से बहुत देर तक बग़ौर देखा और कहा कसरत किताब बीनी से कुछ यबूसत आ गई है पन्द्रह दिन किताब न देखो मुझ से पन्द्रह घड़ी भी किताब न छूट सकी।

हकीम सैय्यद मौलवी अशफ़ाक़ हुसैन साहब मरहूम सहसवानी डिप्टी कलक्टर, तिबाबत भी करते थे और फ़क़ीर के मेहरबान थे फरमाया मुक़द्दमा नुज़ूले आब है, बीस बरस बाद (ख़ुदा नाकरदा) पानी उतर आएगा मैंने इल्तिफ़ात न किया और नुज़ूले आब वाले को देख कर वही दुआ पढ़ ली और अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशादे पाक पर मुत्मइन हो गया।

1316 हिजरी में एक और हाज़िक़ तबीब के सामने ज़िक्र हुआ बग़ौर देख कर कहा चार बरस बाद (ख़ुदा नख़्वास्ता) पानी उतर आएगा उनका हिसाब डिप्टी साहब के हिसाब से बिल्कुल मुवाफ़िक़ आया, उन्होंने बीस बरस कहे थे, उन्होंने सोला बरस बाद चार कहे, मुझे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशाद पर वह एतमाद न था कि तबीबों के कहने से मआज़ल्लाह मुतज़लज़ल होता।

अल्हम्दुलिल्लाह कि बीस दर किनार तीस बरस से ज़ाइद गुज़र चुके हैं और वह हलक़ा ज़र्रा भर न बढ़ा न बेऔनेही तआला बढ़े, न मैंने किताब बीनी में कमी की, न इन्शाअल्लाह तआला कमी करूं।

यह मैंने इसलिए ब्यान किया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दाइम व बाक़ी मोजज़ात हैं जो आज तक आंखों देखे जा रहे हैं और क़यामत तक अह्ले ईमान मुशाहिदा करेंगे। मैं अगर इन ही वाक़ेआत को बयान करूं जो इरशादात के मुनाफ़े मैंने ख़ुद अपनी ज़ात में मुशाहिदा किए तो एक दफ़्तर हो।

दुआ की बरकत से शिफ़ायाबी

मुझे इरशादे हदीस पर इत्मीनान था कि मुझे ताऊन कभी न होगा, आख़िर शब में कर्ब बढ़ा मेरे दिल ने दर्गाहे इलाही में अर्ज़ की, इलाही हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सच्चे हैं और तबीब झूठा है।" किसी ने मेरे दाहिने कान पर मुँह रख कर कहा कि मिस्वाक और सियाह मिर्ची, लोग बारी बारी से मेरे लिए जागते, उस वक़्त जो शख़्स जाग रहा था मैंने इशारे से उसे बुलाया और उसे मिस्वाक और सियाह मिर्च का इशारा किया वह मिस्वाक तो समझ गये गोल मिर्च किस तरह समझें ग़रज़ बमुश्किल समझे, जब यह दोनों चीज़ें आईं बदिक़्क़त मैंने मिस्वाक के सहारे पर थोड़ा-थोड़ा मुँह खोला और दाँतों में मिस्वाक रख कर छोड़ दी कि दाँतों ने बन्द हो कर दबा ली, पिसी हुई मिर्चें उसी राह से दाढ़ों तक पहुँचाई, थोड़ी ही देर हुई थी कि एक कली ख़ालिस ख़ून की आई मगर कोई तक्लीफ़ व अज़ीयत महसूस न हुई। उसके बाद एक कली ख़ून की और आई और बिहम्दिलिल्लाहि तआला वह गिल्टें जाती रहीं मुँह खुल गया, मैंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और तबीब साहब से कहला भेजा कि आपका वह ताऊन बफ़ज़्लेही तआला दफ़ा हो गया, दो तीन रोज़ में बेऔनेही तआला बुख़ार भी जाता रहा।

(अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 15 ता 19)

रिजालुल–ग़ैब से आला हज़रत की मुलाक़ात

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू की मज्लिसे मुबारक में तज़्किरा हुआ कि सलतनत बुख़ारा शरीफ़ रूसियों से मुन्तक़िल हो कर सुल्तानुल–मुअज़्ज़म के ज़ेरे असर आ गई, उस पर आपने इरशाद फ़रमाया कि :

यह एक क़दीमी इस्लामी सल्तनत है यहाँ बड़े–बड़े अइम्मा व मुज्तहेदीन गुज़रे हैं और जिनके बरकात उस वक़्त तक यह मौजूद हैं कि एक वक़्त में सब जगह अज़ान होती है और एक ही वक़्त में नमाज़, दुकानदार और कारोबारी लोग अपना–अपना काम फ़ौरन छोड़ कर शामिले जमाअत हो जाते हैं।

फिर उसी तज़्किर–ए–सलतनत बुख़ारा में फ़रमाया कि मैं एक रोज़ हकीम वज़ीरे अली साहब के यहाँ क़रीब दस बजे दिन के जा रहा था मेरी उम्र उस वक़्त दस साल की थी कि सामने से एक बुज़ुर्ग सफेद रेश निहायत शकील व वजीह तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : सुनता है बच्चे! आजकल अब्दुल–अज़ीज़ है। उसके बाद अब्दुल–हमीद और उसके बाद अब्दुर्रशीद होगा, और फ़ौरन नज़र से ग़ायब हो गये, चुनांचे उस वक़्त उन बुज़ुर्ग का क़ौल मुताबिक़ हुआ।

ऐसे ही एक साहब मस्जिद के क़रीब मिले मेरे बचपन का ज़माना था, मुझे बहुत देर तक ग़ौर से देखते रहे फिर फ़रमाया कि रज़ा अली का कौन है मैंने कहा पोता, फ़रमाया जमी और फ़ौरन तशरीफ़ ले गये। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 60)

एक सैय्यद साहब को तसल्ली हो गई

एक साहब सादाते किराम से अक्सर मेरे पास तशरीफ़ लाते और ग़ुर्बत व इफ़्लास के शाकी रहते एक मरतबा बहुत परेशान आए मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि जिस औरत को बाप ने तलाक़ दे दी हो क्या वह बेटे को हलाल हो सकती है फ़रमाया नहीं, मैंने कहा हज़रत अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम ने जिनकी आप औलाद में हैं तन्हाई में अपने चहर–ए–मुबारक पर हाथ फेर कर इरशाद फ़रमाया ऐ दुनिया किसी और को धोखा दे। मैंने तुझे वह तलाक़ दी जिसमें कभी रजअत नहीं, फिर सादाते किराम का इफ़्लास क्या तअज्जुब की बात है? सैय्यद साहब ने फ़रमाया वल्लाह मेरी तस्कीन हो गई, वह अब ज़िन्दा मौजूद हैं उस रोज़ से कभी शाकी न हुए। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 71)

फन्ने इफ़्ता और रद्दे फ़िर्क़ाहाए बातिला

एक रोज़ हज़रत मौलाना शाह सैय्यद अहमद अशरफ़ साहब किछौछवी तशरीफ़ लाए हुए थे रुख़्सत के वक़्त उन्होंने अर्ज़ किया कि मौलवी सैय्यद मुहम्मद साहब अशरफ़ी अपने भांजे को मैं चाहता हूँ कि हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर कर दूँ हुज़ूर जो मुनासिब ख़्याल फ़रमायें उन से काम लें।

इस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू ने इरशाद फ़रमाया :

ज़रूर तशरीफ़ लायें यहाँ फतवे और मदरसा में दर्स दें, रद्दे वहाबिया और इफ़्ता यह दोनों ऐसे फन हैं कि तिब की तरह यह भी सिर्फ़ पढ़ने से नहीं आते, उन में भी तबीब हाज़िक़ के मतब में बैठने की ज़रूरत है। मैं भी एक हाज़िक़ तबीब के मतब में सात बरस बैठा, मुझे वह वक़्त, वह दिन, वह जगह, वह मसाइल और जहाँ से वह आए थे अच्छी तरह याद हैं।

मैंने एक बार एक निहायत पेचीदा हुक्म बड़ी कोशिश व जांफशानी से निकाला और उसकी ताईदात मअ तन्क़ीह आठ वर्क़ में जमा कीं मगर जब हज़रत वालिद माजिद कुद्देसा सिर्रहू के हुज़ूर में पेश किया तो उन्होंने एक जुमला ऐसा फ़रमाया कि उस से यह सब वर्क़ रद्द हो गये, वही जुमले अब तक दिल में पड़े हुए हैं और क़ल्ब में अब तक उनका असर बाक़ी है, ख़ुद सताई जाइज़ नहीं मगर

वक़्त इज़्हारे हक़ीक़त तहदीसे नेमत है।

सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बादशाहे मिस्र से फरमाया, ज़मीन के ख़ज़ाने मेरे हाथ में दे दे बेशक मैं हिफ़्ज़ वाला हूँ और इल्म वाला हूँ। (यूसुफ़ : 55)

बफ़ज़्ल व रहमते इलाही फिर बेऔन व इनायत रिसालत पनाही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इफ़्ता व रद्दे वहाबिया के दोनों कामिले फन, दोनों निहायत आली फन उन्हें यहाँ से अच्छा इंशा अल्लाह तआला हिन्दुस्तान में कहीं नहीं पाइयेगा ग़ैर ममालिक की बाबत नहीं कहता। मैं तो हर शख़्स को बतैयब ख़ातिर सिखाने को तैयार हूँ, सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ी साहब तो मेरे शाहज़ादे हैं मेरे पास जो कुछ है वह उन्हीं के जद्दे अम्जद (यानी हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) का सदक़ा व अतीया है। आपके यहाँ मौजूदीन में तफ़क़्क़ुह जिसका नाम है वह मौलवी अमजद अली साहब में ज़्यादा पाइयेगा इसकी वजह यही है कि वह इस्तिफ़्ता सुनाया करते हैं और जो मैं जवाब देता हूँ लिखते हैं, तबीअत अख़ाज़ है तरज़ से वाक़्फ़ीयत हो चली है।

इसी तरह इल्म तौक़ियत भी एक ऐसा फन है कि उसके जानने वाले भी मादूम हैं, हालांकि अइम्म–ए–दीन ने इसे फ़र्ज़े किफ़ाया बताया है। उलमा–ए–मौजूदीन में तो कोई इतना भी नहीं जानता कि फलां दिन आफताब कब तुलूअ् होगा और कब ग़ुरूब, बहुत सी उम्र गुज़र गई थोड़ी बाक़ी है जिन साहब को जो कुछ लेना हो वह हासिल कर लें, हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम का इरशाद है :

मुझ से पूछो मुझे गुम करने से पहले, यानी जब तक मैं ज़िन्दा हूँ मुझ से मालूमात हासिल कर लो।

और शैख़ सअ्दी अलैहिर्रहमा का क़ौल बिल्कुल सही है –

क़द्रे नेमत पस अज़ ज़वाले बुवद

फिर लेने वाले को यह चाहिए कि जब किसी चीज़ के हासिल करने का इरादा करे तो अगरचे कमालात से भरा हुआ हो अपने तमाम कमालात को दरवाज़ा ही पर छोड़े और यह जाने कि मैं कुछ जानता ही नहीं, ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पायेगा और जो अपने आपको भरा समझेगा तो –

अना कि पर शवद गर चूं परद

भरे बर्तन में और कोई चीज़ नहीं डाली जा सकती। (त)

हिदाया अख़ीरीन का सबक़ कोई सरेक़ा नहीं

और आजकल तो हासिल करने वाले ऐसे हैं कि जब मैं हसन मियाँ मरहूम के मकान में रहता था उसमें एक ज़ीना है जो बाहर से छत पर गया है उस ज़माना में एक मुदर्रिस साहब के हिदाया अख़ीरीन सिपुर्द हुआ यह कोई आसान किताब नहीं, जब उन्होंने काम चलता न देखा तो मुझ से पढ़ना चाहा मगर शर्त यह कि उस बाहर के ज़ीना से छत पर मुझे बुला लिया कीजिए और वहाँ तन्हाई में पढ़ा दिया कीजिए किसी को मालूम न हो, मैंने कहा मौलाना हिदाया अख़ीरीन का सबक़ कोई सरेक़ा नहीं जो लोगों से छुप कर हो मुझ से यह न होगा।

इस्लाह फ़तावा से मुतअल्लिक़ एक शख़्स का तर्ज़े अमल

एक साहब यहीं की फतवा नवेसी करते थे वह इस तरह लिखते कि बाहर से जवाब लिख कर भेज दिया मैंने इस्लाह देकर भेज दिया, एक रोज़ उन से कहा गया मौलाना यूं जवाब तो ठीक हो जायेगा मगर आपको यह न मालूम होगा कि आपकी लिखी हुई इबारत क्यों काटी गई और दूसरी इबारतें किसी मस्लेहत से बढ़ाई गईं मुनासिब यह है कि आप बाद नमाज़े अस्र अपने लिख हुए फतवों पर इस्लाह कर लिया करें, उन्होंने कहा कि उस वक़्त आपके पास बहुत से लोग जमा होते हैं उस

मज्मा में आप फरमायेंगे कि तुमने यह ग़लत लिखा, वह ग़लत लिखा और मुझे इस में निदामत होगी, उस बन्द–ए–ख़ुदा के नाम अफ़्रीक़ा व अमरीका तक से इस्तिफ़्ते आते थे उसकी वजह यह है कि यहाँ से उनके नाम से जवाब जाता तो लोग उन्हीं के नाम से इस्तिफ़्ता भेजते।

उस ज़माने में मक्का मुअज़्ज़मा के एक आलिम जलील हज़रत मौलाना सैय्यद इस्माईल हाफ़िज़ कुतुबे हरम रहमतुल्लाह तआला अलैह फ़क़ीर के यहाँ तशरीफ़ लाए हुए थे मक्का मुअज़्ज़मा से सिर्फ़ मुलाक़ात फ़क़ीर के लिए करम फरमाया था उनके सामने उसका तज़्किरा हुआ फरमाया ऐसा शख़्स बरकते इल्म से महरूम रहता है। यही हुआ कि वह साहब छोड़ कर बैठ रहे। अब वी.ए. पास करने की फ़िक्र में हैं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 84 ता 86)

हुज़ूर की ज़्यारत और इल्मे ज़ायरजा की इजाज़त

एक रोज़ नवाब वज़ीर अहमद खाँ साहब एक किताब जिसमें उन्होंने तारीफ़ाते अशिया लिखी थीं आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू को बग़र्ज़े इस्लाह बाद ज़ुहर सुना रहे थे, इल्मे जफर की तारीफ़ सुनाते वक़्त आला हज़रत ने इरशाद फरमाया आपने इल्मे ज़ायरजा की तारीफ़ न लिखी यह इल्मे जफर ही का एक शोअ्बा है उसमें जवाब मन्ज़ूम अरबी ज़ुबान बहर तवील और हर्फ़े ल की रवी से आता है और जब तक जवाब पूरा नहीं होता मक़्ता नहीं आता जिसको साहिबे इल्म की इजाज़त नहीं होती नहीं आता। मैंने इजाज़त हासिल करना चाही उसमें कुछ पढ़ा जाता है जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाते हैं अगर इजाज़त अता हुई हुक्म मिल गया वरना नहीं, मैंने तीन रोज़ पढ़ा तीसरे रोज़ ख़्वाब में देखा कि एक वसीअ् मैदान है और उसमें एक बड़ा पुख़्ता कुवाँ है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा हैं और चन्द सहाबा किराम भी हाज़िर हैं जिनमें से मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को पहचाना उस कुएँ में से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम पानी भर रहे हैं उसमें से एक बड़ा तख़्ता निकला कि अर्ज़ में डेढ़ गज़ और तूल में दो गज़ होगा और उस पर सब्ज़ कपड़ा चढ़ा हुआ था जिसके वस्त में सफेद रौशन बहुत जली क़लम से अलिफ़, ह, ज़ाल, इसी शक्ल में लिखे हुए थे जिससे मैंने यह मतलब निकाला कि उसका हासिल करना हिज़्यान फरमाया जाता है उससे बाक़ायदा जफर इज़्न निकल सकता था ह को बतौर सद्र मुअख़्ख़र आख़िर में रखा, उसके अदद पाँच हैं अब वह अपनी पहली जगह से तरक़्क़ी करके दूसरे मरतबा में आ गई और पाँच का दूसरा मरतबा पाँच दहाई है यानी पचास जिसका हरफ नून है यूं इज़्न समझा जाता मगर मैंने इस तरफ इल्तिफ़ात न किया और लफ़्ज़ को ज़ाहिर पर रख कर इस फन को छोड़ दिया अहज़ के मानी हैं फ़ुज़ूल बक। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 96)

आला हज़रत की ईमानी फरासत

रब्बुल–इज़्ज़त की शान है कि बद मज़हब कैसा ही जाम–ए–अय्यारी पहन कर मेरे सामने आए ख़ुद बख़ुद दिल नफ़रत करने लगता है।

हज़रत वालिद माजिद क़ुद्देसा सिर्रहू के ज़मान–ए–हयात में दिल्ली का एक वाइज़ हाज़िर हुआ और उस वक़्त मौलाना अब्दुल–क़ादिर साहब बदायूनी रहमतुल्लाह तआला अलैह भी तशरीफ़ रखते थे, इस्माईल देहलवी और वहाबिया पर बड़े शद्द व मद से देर तक लअन तअन की और उसने अपने सुन्नी होने का पूरा–पूरा सुबूत दिया, मेरे बचपन का ज़माना था जब वह चला गया तो मैंने अपना ख़्याल हज़रत की ख़िदमत में ज़ाहिर किया कि मुझे तो यह पक्का वहाबी मालूम होता है और मौलाना बदायूनी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फरमाया अभी तो वह तुम्हारे सामने वहाबियों और इस्माईल पर तबर्ररा कह गया है मैंने अर्ज़ की मेरा क़ल्ब गवाही देता है कि यह सब तक़य्या था, उसे

जामा मस्जिद में वअ़ज़ कहने की इजाज़त हमारे हज़रत से लेनी है कि बे हज़रत की इजाज़त के यहाँ कोई वअ़ज़ नहीं कह सकता इसलिए उसने यह तम्हीद डाली, दूसरे दिन शाम को फिर हाज़िर हुआ मैंने उसे मसाइले वहाबियत में छेड़ा, साबित हुआ कि पक्का वहाबी है दफ़ा कर दिया गया अपना सा मुँह लेकर चला गया।

★ हज़रत वालिद माजिद क़ुद्देसा सिर्रहुल अज़ीज़ के विसाल शरीफ़ के कुछ दिनों बाद जबकि अपने मंझले भाई मरहूम के मकान में रहता था बाहर तन्हा बैठा था सामने गली में से एक अरबी साहब आते नज़र आए जब क़रीब आए मैंने चाहा उनके लिए क़याम करना कि अह्ले अरब के लिए क़याम मेरी आदत थी मगर इस बार दिल कराहत करता है मैं उठना चाहता हूँ और दिल अन्दर से दामन खींचता है, आख़िर मैंने कहा कि यह तेरा तकब्बुर है जबरन क़हरन क़याम किया, वह आकर बैठे मैंने नाम पूछा कहा अब्दुल–वहाब, मक़ाम पूछा कहा नज्द, अब तो मैं खटका और मैंने उस से मसाइले मुतअल्लेक़ा वहाबीयत पूछे इतना अशद वहाबी निकला कि यहाँ के वहाबिया उसकी शागिर्दी करें, बार–बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक लेता न अव्वल में कलिमा ताज़ीम न आख़िर में दरूद, मैं उसे हर बार रोकता और कलिमाते ताज़ीम और दरूद शरीफ़ की हिदायत करता और व न मानता, आख़िर मैंने सख़्ती के साथ उससे कहा तो मज्बूर हो कर बोला, मैं तुम्हारे कहने से कहता हूँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, मैंने उसे दफ़ा किया अख़ीर फ़िक़्रा यह था कि हमारा रुख़्सताना दो, मैंने शहर के दो एक वहाबियों का पता बता दिया कि उनके पास जा यहाँ तेरे लिए कुछ नहीं, बिल–आख़िर वह ख़ायब व ख़ासिर दफ़ा हुआ। मैंने अपने दिल को शाबाशी दी कि तूने ठीक कहा था, बेशक उस शैतान के लिए क़याम नाजाइज़ था।

★ एक बार अलीगढ़ से एक शख़्स अपना बैग वग़ैरह लिए आया उसकी सूरत देख कर मेरे क़ल्ब ने कहा यह राफज़ी है दरयाफ़्त किए से मालूम हुआ कि वाक़ई राफज़ी है, कहा मैं अपने मकान को लखनऊ जाता था, रास्ते में सिर्फ़ आपकी ज़्यारत के लिए उतर पड़ा हूँ, क्या आप अह्ले सुन्नत में ऐसे ही हैं जैसे हमारे यहाँ मुज्तहेदीन, मैंने इल्तिफ़ात न किया, ग़रज़ वह राफ़ज़ी अपनी तरफ़ मुझे मुख़ातिब करता था और मैं दूसरी तरफ मुँह फेर लेता था, आख़िर उठ कर चला गया उसके जाने के बाद एक साहब शाकी हुए कि वह इतनी मसाफ़त तय करके आया और आपने क़तई इल्तिफ़ात न फरमाया मैंने उन से यह रिवायत बयान की कि :

अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़माना ख़िलाफ़त है आप मस्जिदे नब्वी से नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ ले जाते हैं, एक मुसाफिर ने खाना मांगा अमीरुल–मुमिनीन उसे हमराह ले आए ख़ादिम बहुक्मे अमीरुल–मुमिनीनन खाना हाज़िर करता है इत्तिफ़ाक़न खाते खाते उसकी ज़ुबान से एक बद मज़हबी का फ़िक़्रा निकल जाता है जिस पर हुज़ूर फौरन उसके सामने से खाना उठवा लेते हैं और ख़ादिम को हुक्म देते हैं कि उसे निकाल दे।

हमारे अइम्मा ने उन लोगों के साथ हमें यह तहज़ीब बताई है अब भला वह क्या कह सकते थे ख़ामोश हो गये।

मुसलमानों को आला हज़रत की नासेहाना तंबीह

मुसलमानो! ज़रा इधर ख़ुदा व रसूल की तरफ मुतवज्जेह हो कर ईमान के दिल पर हाथ रख कर देखो अगर कुछ लोग तुम्हारे मां बाप को रात दिन बिला वजह महज़ फहश मुग़ल्लेज़ा गालियाँ देना अपना शेवा करें लें बल्कि अपना दीन ठेहरा लें क्या तुम उन से बकुशादा पेशानी मिलोगे हाशा हरगिज़ नहीं, अगर तुम में नाम को ग़ैरत बाक़ी है, अगर तुम में इंसानियत है, अगर तुम अपनी मां को मां समझते हो, अगर तुम अपने बाप से पैदा हो तो उन्हें देख कर तुम्हारे दिल भर

जायेंगे, तुम्हारी आंखों में ख़ून उतर आयेगा, तुम उनकी तरफ निगाह उठाना गवारा न करोगे, लिल्लाह! इंसाफ?

सिद्दीक़े अकबर व फारूक़े आज़म ज़ाइद या तुम्हारे मां बाप, उम्मुल–मुमिनीन आइशा सिद्दीक़ा ज़ाइद या तुम्हारी मां, हम सिद्दीक़ व फ़ारूक़ के अदना ग़ुलाम हैं और अल्हम्दुलिल्लाह कि उम्मुल–मुमिनीन के बेटे कहलाते हैं, उनको गालियाँ देने वालों से अगर यह बर्ताव न बरतें जो तुम अपनी मां बल्कि अपने आपको गालियाँ देने वालों से बरतते हो तो हम निहायत नमक हराम ग़ुलाम और हद भर के बुरे ना ख़ल्फ़ बेटे हैं, ईमान का तक़ाज़ा यह है। आगे तुम जानो और तुम्हारा काम।

नेचरी तहज़ीब के मुद्दइयों को हमने देखा है कि ज़रा कोई कलिमा उनकी शान के ख़िलाफ़ कहा उनका थूक उड़ने लगता है, आंखें लाल हो जाती हैं, गर्दन की रगें फूल जाती हैं, उस वक़्त वह मजनून तहज़ीब बिखरी फिरती है, वजह क्या है कि अल्लाह व रसूल व मुअज़्ज़ेमाने दीन से अपनी वक़अत दिल में ज़्यादा है, ऐसी नापाक तहज़ीब उन्हीं को मुबारक, फरज़न्दाने इस्लाम उन पर लानत भेजते हैं ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नब्वी से बद मज़्हबों को नाम ले लेकर उठा दिया।

एक मरतबा फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़े जुमा में देर हो गई रास्ते में देखा कि चन्द लोग मस्जिद से लौटे हुए आ रहे हैं आप इस नदामत की वजह से कि अभी मैंने नमाज़ नहीं पढ़ी है छुप गये और वह इस ज़िल्लत की वजह से जो मस्जिद शरीफ़ से निकाल देने में हुई थी अलग छुप कर निकल गये।

★ रब्बुल–इज़्ज़त तबारक व तआला इरशाद फरमाता है :

ऐ नबी जिहाद फरमा और सख़्ती फरमा काफिरों और मुनाफ़िक़ों पर। (अत्तहरीम : 9)

★ और फरमाता है रब अज़्ज़ा व जल्ल :

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और जो उनके साथी हैं कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल। (अल–फत्ह : 29)

★ और फरमाता है रब जल्ला व उला :

लाज़िम कि कुफ़्फ़ार तुम में सख़्ती पायें। (अत्तौबा : 123)

तो साबित हुआ कि काफिरों पर हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सख़्ती फरमाते थे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 111 ता 114)

इस्मे जलालत और नाम मुबारक का अदब

एक रोज़ मौलाना हसनैन रज़ा ख़ाँ साहब बराय जवाब कुछ इस्तिफ़्ते सुना रहे थे और जवाब लिख रहे थे एक कार्ड पर इस्मे जलालत लिखा गया उस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने इरशाद फरमाया :

याद रखो कि मैं कभी तीन चीज़ें कार्ड पर नहीं लिखता :

★ इस्मे जलालतुल्लाह।

★ और मुहम्मद और अहमद।

★ और न कोई आयते करीमा।

मसलन अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लिखना है तो यूं लिखता हूँ हुज़ूर अक़्दस अलैहि अफ़्ज़लुस्सलातु वस्सलाम या इस्मे जलालत की जगह मौला तआला।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 115)

बद मज़हबों की बे तहज़ीबी और आला हज़रत का जज़्ब–ए–ईमानी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू ने दीन व सुन्नत की हिमायत व पासदारी में फ़िर्क़ाहाए बातिला का रद्दो इब्ताल फरमाया और अहक़ाके हक़ का अहम फरीज़ा अंजाम दिया। मगर बद मज़हबों ने आला हज़रत को गालियाँ दीं उन्हें बुरा भला कहा उनके ख़िलाफ़ महाज़ आराई की, इसी बात को आला हज़रत ने अपनी ज़बान से बयान फरमाया जिसे जामे मल्फ़ूज़ात हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द रहमतुल्लाह तआला अलैह यूं क़लम बन्द फरमाते हैं। (मुरत्तिब)

बरमला फहश गालियाँ देते हैं, बाज़ ख़ुबसा तो मुग़ल्लज़ात से भरे हुए बैरंग ख़ुतूत भेजते हैं फिर एक नहीं अल्लाहु आलम कितने आते हैं मुझे इसकी परवाह नहीं इससे ज़्यादा मेरी ज़ात पर हमले करें मैं तो शुक्र करता हूँ कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझे दीने हक़ की सेपर बनाया कि जितनी देर वह मुझे कोस्ते, गालियाँ देते, बुरा भला कहते हैं उतनी देर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन व तन्क़ीस से बाज़ रहते हैं, इधर से कभी उसके जवाब का वहम भी नहीं होता और न कुछ बुरा मालूम होता है कि हमारी इज़्ज़त उनकी इज़्ज़त पर निसार ही होने के लिए है बल्कि उन पर निसार होना ही इज़्ज़त है।

कुरआने अज़ीम में इरशाद फरमाया : अल्बत्ता तुम मुश्रिकों और अगले किताबियों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे। (आले इमरान : 186)

बड़े–बड़े अइम्मा व मुज्तहेदीन व सहाबा व ताबईन तो मुख़ालेफ़ीन के सब्बो शतम से बचे नहीं। यह दरकनार जब अल्लाह वाहिद क़हहार और उसके प्यारे हबीब व महबूब अहमद मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान घटाना चाही, उन्हें ऐब लगाये और कोई किस गिनती में?

★ एक साहिबे विलायत ने हज़रत महबूबे इलाही कुद्देसा सिर्रहुल–अज़ीज़ की बारगाह में हाज़िरी का मंज़िल दूर दराज़ से क़स्द फरमाया राह में जिससे महबूबे इलाही साहब का हाल दरयाफ़्त फरमाते लोग तारीफ ही करते उन्होंने अपने दिल में कहा मेरी मेहनत ज़ाए हुई, कि यह अगर हक़ गो होते लोग ज़रूर उनके बदगो होते। जब दिल्ली क़रीब रही उन्होंने लोगों से पूछा अब मज़म्मतें सुनीं कोई कहता वह दिल्ली का मक्कार है, कोई कुछ कहता, कोई कुछ कहता, उन्होंने कहा अल्हम्दुलिल्लाह मेरी मेहनत वसूल हुई।

★ हज़रत यहिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में अर्ज़ की इलाही मुझे ऐसा कर कि मुझे कोई बुरा न कहे इरशादे बारी तआला हुआ ऐ यहिया यह मैंने अपने लिए तो किया नहीं, कोई मेरा शरीक बनाता है, कोई फरिश्तों को मेरी बेटियाँ बताता है कोई मेरे लिए बेटे ठहराता है, लेकिन नबी की दुआ खाली नहीं जाती आज आप देखते हैं कि हज़रत मूसा अलैहस्सलाम व ईसा अलैहिस्सलाम को अक्सर बुरा कहने वाले मौजूद हैं लेकिन हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम का एक भी बुरा कहने वाला नहीं।

★ क़ादयानी से बद ज़बान को देखो सैय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कैसी तौहीनें करता है यहाँ तक कि उन्हें और उनकी माँ सिद्दीक़ा बतूल ताहिरा को फहश गालियाँ तक देता है, चार सौ अंबिया को साफ झूठा लिखा, हत्ता कि दरबार–ए–हुदैबिया ख़ुद शाने अक़्दस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर नापाक हमला किया मगर यहिया अलहिस्सलातु वस्सलाम की तारीफ़ ही की।

इन इरशादात के बाद आला हज़रत फरमाते हैं :

इस पर बाज़ अहमक़ सख़्ती का इल्ज़ाम देते हैं अल्लाह व रसूल को गालियाँ देना तो कोई बात ही न हुआ, न वह सख़्ती है, न बेतहज़ीबी, न कोई बुरी बात, उधर से उनकी इस नापाक हरकत पर काफिर कहा और बस सख़्ती व बेतहज़ीबी सब कुछ हो गई। हाँ हाँ अल्लाह व रसूल की शान में जो

गुस्ताख़ी करेगा उसे ज़रूर काफिर कहा जायेगा। कसे बाशद, और वल्लाह कि यह मैं अपनी तरफ से नहीं कहता बल्कि अल्लाह व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लन के अहकाम बयान करता हूँ, मैं तो उनका चपरासी हूँ, चपरासी का काम ही सरकारी हुक्मनामा पेहुँचाना है न कि अपनी तरफ से कोई हुक्म लगाना, अल्लाह के करम से उम्मीद कि वह क़बूल फ़रमाए। आमीन! (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 56, 57)

दुश्मने दीन से आला हज़रत की नफ़रत

अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम फरमाते हैं : दुश्मन तीन हैं।

★ एक तेरा दुश्मन।

★ एक तेरे दोस्त का दुश्मन।

★ एक तेरे दुश्मन का दोस्त।

यूं ही अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के दुश्मन तीनों क़िस्म हैं।

★ एक तो इब्तिदाअन उसके दुश्मन, वह काफिरान असली हैं।

दूसरे वह कि महबूबाने ख़ुदा के दुशमन हैं, जैसे देवबन्दीया, मिर्ज़ाइया, वहाबिया, रवाफ़िज़।

★ तीसरे वह कि उन दुश्मनों में किसी के दोस्त हैं, यह सब आदा अल्लाह हैं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि :

हर मुसलमान पर फर्ज़ आज़म है कि अल्लाह के सब दोस्तों से मुहब्बत रखे और उसके सब दुश्मनों से अदावत रखे, यह हमारा ऐने ईमान है।

बिहम्दिल्लाह तआला मैंने जब से होश संभाला अल्लाह के सब दुश्मनों से दिल में सख़्त नफरत ही पाई।

एक बार अपने देहात को गया था कोई देही मुक़द्दमा पेश आया जिसमें चौपाल के तमाम मुलाज़िमों को बदायूं जाना पड़ा मैं तन्हा रहा उस ज़माना में मआज़ल्लाह दर्द क़ौलंज के दौरे हुआ करते थे, उस दिन ज़ुहर के वक़्त से दर्द शुरू हुआ इसी हालत में जिस तरह बिना वुज़ू किया अब नमाज़ को नहीं खड़ा हुआ जाता, रब अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ कि और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मदद मांगी मौला अज़्ज़ा व जल्ल मुज़्तर की पुकार सुनता है मैंने सुन्नतों की नीयत बांधी दर्द बिल्कुल न था जब सलाम फेरा उसी शिद्दत से था फौरन उठ कर फ़र्ज़ों की नीयत बांधी दर्द जाता रहा, जब सलाम फेरा वही हालत थी बाद की सुन्नतें पढ़ीं दर्द मौक़ूफ़ और सलाम के बाद फिर बदस्तूर, मैंने कहा अब अस्र तक होता रह पलंग पर लेटा करवटें ले रहा था कि दर्द से किसी पहलू क़रार न था इतने में सामने से उसी गाँव का एक बरहमन (कि ख़बीस बज़अमे ख़ुद क़रीब क़रीब तौहीद का क़ाइल और बराहे मक्र व फरेब मेरे ख़ुश करने के लिए मुसलमानों की तरफ माइल बनता था) गुज़रा फाटक खुला हुआ था मुझे देख कर अन्दर आया और मेरे पेट पर हाथ रख कर पूछा क्या यहाँ दर्द है? मुझे उसका नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफरत पैदा हुई कि दर्द को भूल गया और यह तक्लीफ़ इससे बढ़ कर मालूम हुई कि एक काफिर का हाथ मेरे पेट पर है, ऐसी अदावत रखना चाहिए। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 87)

आला हज़रत के साथ दुश्मने दीन का बर्ताव

आदमी तीन क़िस्म के हैं। (1) मुफ़ीद। (2) मुस्तफ़ीद। (3) मुंफरिद।

★ मुंफ़ीद वह कि दूसरों को फाइदा पहुँचाए।

★ मुस्तफ़ीद वह कि ख़ुद दूसरे से फाइदा हासिल करे।

★ मुंफरिद वह कि दूसरे से फाइदा लेने की उसे हाजत न हो और न दूसरे को फाइदा पहुँचा सकता हो।

मुफ़ीद और मुस्तफ़ीद को उज़्लत गज़ीनी हराम है और मुंफ़रिद को जाइज़ बल्कि वाजिब।

इमाम इब्ने सीरीन का वाक़िया बयान फ़रमा कर आला हज़रत ने इरशाद फ़रमाया :

वह लोग जो पहाड़ पर गोशा नशीं हो कर बैठ गये थे वह ख़ुद फ़ाइदा हासिल किए हुए थे और दूसरों को फ़ाइदा पहुँचाने की उनमें क़ाबलीयत न थी, उनको गोशा नशीनी जाइज़ थी और इमाम इब्ने सीरीन पर उज़्लत हराम थी।

इमाम इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह तआला अलैह ने लिखा है, एक आलिम साहब की वफ़ात हुई उनको किसी ने ख़्वाब में देखा पूछा आपके साथ क्या मुआमला हुआ फ़रमाया जन्नत अता की गई न इल्म के सबब बल्कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ उस निस्बत के सबब जो कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक़्त भोंक भोंक कर भेड़ों को भेड़िए से होशियार करता रहता है मानें न मानें यह उनका काम, सरकार ने फ़रमाया कि भोंके जाओ बस इस क़दर निस्बत काफ़ी है, लाख रियाज़तें, लाख मुजाहिदे, इस निस्बत पर क़ुरबान, जिसको यह निस्बत हासिल है उसको किसी मुजाहिदे, किसी रियाज़त की ज़रूरत नहीं, और इसी में रियाज़त क्या थोड़ी है। जो शख़्स उज़्लत नशीं हो गया न उसके क़ल्ब को कोई तक्लीफ़ पहुँच सकती है न उसकी आंखों को, न उसके कानों को, उससे कहिए जिसने ओखली में सर दिया है और चारों तरफ़ से मूसल की मार पड़ रही है, कई हज़ार की तादाद में वह लोग होंगे जिन्होंने न मुझको कभी देखा, न मैंने कभी उनको देखा और रोज़ाना सुबह उठकर पहले मुझे कोस्ते होंगे फिर और काम करते होंगे, बिहम्दिलिल्लाह तआला लाखों की तादाद में वह लोग भी निकलेंगे जिन्होंने मुझको देखा और न मैंने उनको देखा और रोज़ाना सुबह उठ कर नमाज़ के बाद मेरे लिए दुआ करते होंगे।

गालियाँ जो छापते हैं अख़्बारों और इश्तेहारों में वह अख़्बार व इश्तेहार तो रद्दी में जल कर ख़ाकिस्तर हो जाते हैं। लेकिन वह चुटकियाँ जो उनके दिलों में ली गई हैं वह क़बरों में साथ जायेंगी और इन्शाअल्लाह हश्र में रुसवा करेंगी।

सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के वेसाल को तेरा सौ बरस से ज़ाइद हुए उस वक़्त तक तबर्रे से उन्हें नजात नहीं, यह क्यों इसिलए कि ग़ाशिया उठाया हक़ का अपने कन्धों पर और दौर मिटाया अह्ले बातिल का। अल्लाह रहमत करे उमर पर कि हक़ गोई ने उन्हें ऐसा कर दिया कि उनका कोई दोस्त न रहा। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 38, 39)

ग़ौस पाक से आला हज़रत की इस्तेआनत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की मज्लिसे मुबारक में यह तज़्किरा हुआ कि हज़रत सैय्यदी अहमद ज़रूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है जब किसी को कोई तक्लीफ़ पहुँचे या ज़रूक़ कह कर निदा करे मैं फ़ौरन उसकी मदद करूंगा, उस पर आपने फ़रमाया :

मगर मैंने कभी इस क़िस्म की मदद तलब न की, जब कभी मैंने इस्तेआनत की या ग़ौस ही कहा यक दर गीर महकम गीर।

मेरी उम्र का तीसवां साल था कि हज़रत महबूबे इलाही की दर्गाह में हाज़िर हुआ एहाता में मज़ामीर वग़ैरह का शोर मचा था तबीअत मुंतशिर होती थी, मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं आपके दरबार में हाज़िर हुआ हूँ इस शोर व शग़ब से मुझे नजात मिले जैसे ही पहला क़दम रौज़ा मुबारक में रखा है कि मालूम हुआ सब एक दम चुप हो गये, मैंने समझा कि वाक़ई सब लोग ख़ामोश हो गये क़दम दर्गाह शरीफ़ से बाहर निकला फिर वही शोर व ग़ुल था, फिर अन्दर क़दम रखा, फिर वही ख़ामोशी, मालूम हुआ कि यह सब हज़रत का तसर्रुफ़ है यह बय्यन करामत देख कर मदद मांगनी चाही बजाए हज़रत महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नाम मुबारक के या ग़ौसाहु ज़ुबान से निकला, वहीं मैंने अक्सीरे आज़म क़सीदा भी तस्नीफ़ किया। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 59, 60)

आयते करीमा से अपनी तारीख़े विलादत का इस्तिख़राज

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिसे मुक़द्दस में विलादत की तारीख़ों का ज़िक्र था उस पर आपने इरशाद फरमाया :

बिहम्दिल्लाह तआला मेरी विलादत की तारीख़ (1272 हिजरी) इस आयते करीमा में है।

ऊलाइका क त ब फ़ी क़ुलूबेहिमुल–ईमा–न व अय्यदहुम बरूहिन मिन्हु।

(अल–मुजादिलता : 22)

जिसका तरजमा यह है यह वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फरमा दिया है। और अपनी तरफ से रूहुल–क़ुदस के ज़रिया से उनकी मदद फरमाई है।

इस आयते करीमा का शुरू यह है :

तरजमा : न पायेंगे आप उन लोगों को जो अल्लाह व रसूल और यौमे आख़िर पर ईमान रखते हैं कि वह अल्लाह व रसूल के मुख़ालिफ़ों से दोस्ती रखें अगरचे वह उनके बाप या उनकी औलाद या उनके भाई या उनके कुंबे क़बीले ही के क्यों न हों। उसी के मुत्तसिल फरमाया : ऊलाइका क त ब फ़ी क़ुलूबेहिमुल–ईमान।

बिहम्दिल्लाह तआला बचपन से मुझे नफरत है आदा अल्लाह से और मेरे बच्चों के बच्चों को भी बफ़ज़िलल्लाहे तआला अदावत आदा अल्लाह घुट्टी में पिला दी गई है। और बफ़ज़्लेही तआला यह वादा भी पूरा हुआ। ऊलाइका क त ब फ़ी क़ुलूबेहिमुल–ईमान।

बिहम्दिल्लाहि तआला अगर क़ल्ब के दो टुकड़े किए जायें तो ख़ुदा की क़सम एक पर लिखा होगा ला इलाहा इल्लल्लाह, दूसरे पर लिखा होगा मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम)।

और बिहम्दिल्लाहि तआला हर बद मज़्हब पर हमेशा फतह व ज़फ़र हासिल हुई, रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने रूहुल–क़ुदस से ताईद फरमाई। यह सब बरकात हैं। हज़रत जद्दे अम्जद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की।

क़ुरआने अज़ीम में ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वाक़िया में है कि दो यतीम एक मकान में रहते थे उसकी दीवार गिरने वाली थी और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस दीवार को सीधा कर दिया।

इस वाक़िया को फरमाया जाता है, उनका बाप सालेह था उसकी बरकत से यह रहमत की गई। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : वह उनकी चौदहवीं पुश्त में था, सालेह बाप की यह बरकात होती हैं। तो यहाँ तो अभी तीसरी ही पुश्त है देखिए कब तक बरकात इस सिलसिले में रहें। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 67)

आला हज़रत की नसीहत मुफ़ीद हुई

मेरे वालिद माजिद क़ुद्देसा सिर्रहुल–अज़ीज़ के ख़ालाज़ाद भाई अलिफ़ के नाम ब न जानते थे, यहाँ एक शख़्स सूफ़ी बने हुए थे उनके पास अमाद व रफ़्त ज़्यादा थी उन्होंने तफ़ज़ीलिया कर लिया, मेरा पन्द्रह सोला बरस का सिन था मैं उन्हें हदीसें सुनाता और समझाता कि अह्ले सुन्नत का मज़्हब यह है कि तफ़्ज़ील बातिल है वह न मानते, अफ़्यून के आदी थे जब हज को गये और तीन मंज़िल मदीना तैय्यबा रह गया, अफ़यून की डिबिया निकाली खाना चाही फौरन बदन में एक झुरझुरी पैदा हुई और कहा क्या हुज़ूर के सामने भी खाऊंगा और हाथ से फेंक दी वहाँ से वापस आने पर चन्द रोज़ ज़िन्दा रहे, राह में अफ़्यून खाना छोड़ दिया था यह (यानी अफ़्यून का खाना) थी बद आमाली मगर वह थी अक़ीदे की बुराई और अक़ीदे की बुराई बदतर है बद आमाली से। मरते वक़्त

बीवी को बुला कर कहा मेरा भतीजा मुझे समझाया करता था और मेरी समझ में न आता था अब मैं समझा कि वही हक़ था, तुम शाहिद रहो कि मेरा वही अक़ीदा है जो अहमद रज़ा का है।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 31, 32)

क़दमबोसी से नागवारी

आला हज़रत एक साहब की तरफ मुतवज्जेह होकर हुक्म मसला इरशाद फरमा रहे थे एक और साहब ने यह मौक़ा क़दमबोसी से फ़ैज़याब होने का अच्छा समझा, क़दमबोस हुए फौरन चेहरा–ए–मुबारक का रंग मुतग़ैयर हो गया और इरशाद फरमाया इस तरह मेरे क़ल्ब को सख़्त अज़ीयत होती है यूं तो हर वक़्त क़दमबोसी नागवार होती है मगर दो सूरतों में सख़्त तक्लीफ़ होती है।

★ एक तो उस वक़्त कि मैं वज़ीफ़ा में हूँ।

★ दूसरे जब मैं मशग़ूल हूँ और ग़फ़लत में कोई क़दम बोस हो कि उस वक़्त मैं बोल नहीं सकता।

मैं डरता हूँ ख़ुदा वह दिन न लाए कि लोगों की क़दमबोसी से मुझे राहत हो और जो क़दमबोस न हो तो तक्लीफ़ हो कि यह हलाकत है।

ताज़ीम इसी में है कि जिस बात को मना किया जाए वह फिर न क़ी जाए अगरचे दिल न माने, कौन मुसलमान है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक सुने तो सज्दा करने और सर झुकाने को उसका दिल न चाहे, वल्लाहुल–अज़ीम अगर सज्दा किया जाए तो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नाराज़ होंगे, राज़ी न होंगे वरना हम से तो सज्दा भी उनकी अज़मत के लाइक़ नहीं हो सकता, उनको फरिश्तों ने सज्दा किया, उनको जिब्रील ने सज्दा किया। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 36)

आला हज़रत की ग़ैबी मदद

आला हज़रत बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रहू की मज्लिसे अक़्दस में दीन के आदा और मिल्लत के हासिदीन का ज़िक्र था उस पर आपने इरशाद फरमाया :

मेरी उम्र इतनी गुज़री लोग मेरी मुख़ालिफ़त ही करते रहे, एक तरफ कुफ़्फ़ार का नरग़ा, दूसरी तरफ हासिदीन का मज्मा, मुझ से बाज़ लोगों ने कहा कि मज्मूअ–ए–आमाल भरा हुआ है, सैफ़ियाँ भरी पड़ी हैं, कोई अमल कर लीजिए, मैंने कहा जिन्होंने यह तल्वारें मुझे दी हैं उन्हीं का यह हुक्म है कि तल्वार कभी हाथ में न लेना, हमेशा ढाल ही से काम लेना, चुनांचे कभी किसी पर हरबा न किया। सिवाए एक दफ़ा के कि मैंने करना चाहा और न हुआ, जिस से साबित कर दिया गया कि तेरे किए कुछ नहीं हो सकता हम करते हैं। वह ख़ुद ऐसी मदद करता है कि अपने आप इंतिज़ाम करने की ज़रूरत नहीं।

मेरी उम्र 19/ साल की थी उस वक़्त रामपुर की रेल न थी, बैल गाड़ी पर सवार हो कर गया साथ में औरतें भी थीं, रास्ता में दरिया पड़ा गाड़ी वाले ने ग़लती से बैलों को उसमें हांक दिया उसमें दलदल थी बैल पहुँचते ही घुटनों तक धंस गये और निस्फ़ पहिया गाड़ी का, जितना बैल ज़ोर करते अन्दर धंसते चले जाते थे अब मैं निहायत हैरान कि साथ में औरतें हैं उतर सकता नहीं कि दलदल में ख़ुद धंस जाने का अन्देशा, इसी परेशानी में था कि एक बूढ़े आदमी जिनकी सूरते नूरानी और सफेद दाढ़ी थी न इस से पहले उन्हें देखा था, न जब से अब तक देखा तशरीफ़ लाए और फरमाया क्या है? मैंने तमाम वाक़िया अर्ज़ किया फरमाया यह तो कोई बात नहीं, गाड़ी वाले से फरमाया हांक उसने कहा किधर हांकू आप देखते हैं दलदल में गाड़ी फ़ंसी है फरमाया अरे तुझे हांकना नहीं आता उधर को हांक यह कह कर पहिया को हाथ लगाया फौरन गाड़ी दलदल से निकल गई। ऐसी मऊनतें तो बिहम्दिल्लाह तआला बहुत ज़ाइद हुईं।

एक बुज़ुर्ग की आला हज़रत के लिए दुआए मग़्फ़िरत

पहली बार की हाज़िरी में मिना शरीफ़ की मस्जिद में मग़्रिब के वक़्त हाज़िर था उस वक़्त मैं वज़ीफ़ा बहुत पढ़ा करता था अब तो बहुत कम कर दिया है। बिहम्दिल्लाह तआला मैं अपनी हालत वह पाता हूँ जिसमें फ़ुक़हाए किराम ने लिखा है कि सुन्नतें भी ऐसे शख़्स को माफ़ हैं लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह सुन्नतें कभी न छोड़ीं, नफ़्ल अल्बत्ता उसी रोज़ से छोड़ दिए हैं। ख़ैर जब लोग मस्जिद से चले गये तो मस्जिद के अन्दरूनी हिस्सा में एक साहब को देखा कि क़िब्ला रू वज़ीफ़ा में मसरूफ़ हैं मैं सेहने मस्जिद में दरवाज़ा के पास था और कोई तीसरा मस्जिद में न था, यकायक एक आवाज़ गंगनाहट की सी अन्दर मस्जिद के मालूम हुई जैसे शहद की मक्खी बोलती है फ़ौरन मेरे क़ल्ब में यह हदीस आई कि –

"अह्लुल्लाह के क़ल्ब से ऐसी आवाज़ निकलती है जैसे शहद की मक्खी बोलती है।"

मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उनकी तरफ चला कि उन से दुआए मग़्फ़िरत कराऊं, कभी मैं किसी बुज़ुर्ग के पास बिहम्दिल्लाह तआला दुनियावी हाजत लेकर न गया जब गया तो इसी ख़्याल से कि उन से दुआए मग़्फ़िरत कराऊंगा, ग़रज़ दो ही क़दम उनकी तरफ चला था कि उन बुज़ुर्ग ने मेरी तरफ मुँह करके आसमान की तरफ हाथ उठा कर तीन मरतबा फरमाया :

ऐ अल्लाह मेरे इस भाई की मग़्फ़िरत फरमा।

इलाही मेरे इस भाई को बख़्श दे।

परवरदिगार मेरे इस भाई के गुनाहों को माफ़ फरमा।

मैं समझ गया कि फरमाते हैं हमने तेरा काम कर दिया अब तू हमारे काम में मुख़ल न हो मैं वैसे ही लौट आया।

बरैली के एक मज्ज़ूब से मुलाक़ात

बरैली में एक मज्ज़ूब बशीरुद्दीन साहब अख़ून्द ज़ादा की मस्जिद में रहा करते थे जो कोई उनके पास जाता कम से कम पचास गालियाँ सुनाते थे मुझे उनकी ख़िदमत में हाज़िर होने का शौक़ हुआ मेरे वालिद माजिद क़ुद्देसा सिर्रहू की मुमानेअत कि कहीं बाहर बग़ैर आदमी के साथ लिए न जाना, एक रोज़ रात के ग्यारह बजे अकेला उनके पास पहुंचा और फ़र्श पर जा कर बैठ गया वह हुजरा में चारपाई पर बैठे थे मुझको बग़ौर पन्द्रह बीस मिनट तक देखते रहे, आख़िर मुझ से पूछा साहबज़ादा तुम मौलवी रज़ा अली ख़ाँ साहब के कौन हो मैंने कहा मैं उनका पोता हूँ फौरन वहाँ से झपटे और मुझको उठा कर ले गये और चारपाई की तरफ इशारा करके फरमाया : आप यहाँ तशरीफ़ रखिए पूछा, क्या मुक़द्दमा के लिए आए हो? मैंने कहा मुक़द्दमा तो है लेकिन मैं इसलिए नहीं आया हूँ मैं तो सिर्फ़ दुआए मग़्फ़िरत के वास्ते हाज़िर हुआ हूँ क़रीब आधे घन्टे तक बराबर कहते रहे, अल्लाह करम करे, अल्लाह रहम करे, अल्लाह करम करे, अल्लाह रहम करे।

उसके बाद मेरे मंझले भाई (मौलवी हसन रज़ा ख़ाँ साहब मरहूम) उनके पास मुक़द्दमा की ग़रज़ से हाज़िर हुए उन से ख़ुद ही पूछा क्या मुक़द्दमा के लिए आए हो? उन्होंने अर्ज़ की जी हाँ फरमाया मौलवी साहब से कहना क़ुरआन शरीफ़ में यह भी तो है : नसरुम मिनल्लाहे व फ़त्हुन क़रीब। बस दूसरे ही दिन मुक़द्दमा फ़तह हो गया। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 49 ता 51)

बैअ़त व इरशाद के अहकाम व मसाइल

जामेअ़ शराइत पीर व मुरीद होना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अपनी निस्बत व तअल्लुक़ का उस्तवार करना है इसलिए बैअ़त के लिए पीर का जामे शराइत होना लाज़िम है तो सही पीर वही शख़्स हो सकता है जिसके अन्दर कम अज़ कम मुन्दरजा ज़ैल शराइत मौजूद हों। (मुरत्तिब)

बैअ़त के शराइत

बैअ़त उस शख़्स से करना चाहिए जिस में यह चार बातें हों वरना बैअ़त जाइज़ न होगी।

1. सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा हो।

2. कम अज़ कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बिला किसी की इम्दाद के अपनी ज़रूरत के मसाइल किताब से निकाल सके।

3. उसका सिलसिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुन्क़ता न हो।

4. फ़ासिक़ मुअ़लिन न हो।

हक़ीक़ी बैअ़त का मतलब

बैअ़त के मा़नी पूरे तौर से बकना, लोग बैअ़त बतौर रस्म होते हैं बैअ़त के मानी नहीं जानते।

बैअ़त उसे कहते हैं कि हज़रत यहया मनेरी के एक मुरीद दरिया में डूब रहे थे, हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़ाहिर हुए और फरमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूं, उन मुरीद ने अर्ज़ की यह हाथ हज़रत यहया मनेरी के हाथ में दे चुका हूँ अब दूसरे को न दूँगा, हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ग़ायब हो गये और हज़रत यहया मनेरी ज़ाहिर हुए और उनको निकाल लिया।

तज्दीदे बैअ़त

हुज़ूर के ज़माना में भी तज्दीदे बैअ़त होती थी, ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सलमा बिन अकूअ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक जल्सा में तीन बार बैअ़त ली, जिहाद को जा रहे थे पहली बार फरमाया सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने बैअ़त की, थोड़ी देर बाद हुज़ूर ने फरमाया सलमा तुम बैअ़त न करोगे अर्ज़ की हुज़ूर अभी कर चुका हूँ, फरमाया फिर भी उन्होंने फिर बैअ़त की,अख़ीर में जब सब हज़रात बैअ़त से फारिग़ हुए फिर इरशाद हुआ सलमा तुम बैअ़त न करोगे अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं दोबार बैअ़त कर चुका, फरमाया फिर भी, ग़रज़ एक जल्सा में सलमा से तीन बार बैअत ली। (बुख़ारी, अल्मल्फ़ूज़ दोम, स0 46, 47)

दूसरे पीर की तरफ रुजूअ़

किसी शैख़ से बैअ़त करके दूसरे की तरफ रुजूअ़ कर सकता है या नहीं? इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि –

अगर पहले में कुछ नुक़्सान हो तो बैअ़त हो सकती है वरना नहीं अल्बत्ता तज्दीद कर सकता है।

अदी बिन मुसाफिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैं किसी सिलसिले का आए उस से बैअ़त ले लेता हूँ सिवा ग़ुलामाने क़ादरी के कि बह्र को छोड़ कर नहर की तरफ कोई नहीं आता। यानी जो सिलसिल–ए–क़ादरीया में मुरीद हुआ वह किसी दूसरे सिलसिला में मुरीद नहीं हो सकता। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 73)

तसव्वुरे शैख़ और उसका फ़ाइदा

यह ख़्याल रखे कि मेरा शैख़ मेरे सामने है और अपने क़ल्ब को उसके क़ल्ब के नीचे तसव्वुर करके इस तरह समझे कि सरकारे रिसालत से फ़्यूज़ व अनवारे क़ल्ब शैख़ पर फाइज़ होते और उस से छलक कर मेरे दिल में आ रहे हैं फिर कुछ अरसा के बाद यह हालत हो जाएगी कि शजर व हजर व दरो दीवार पर शैख़ की सूरत साफ़ नज़र आएगी यहाँ तक कि नमाज़ में भी जुदा न होगी और फिर हर हाल में अपने साथ में पाओगे। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 51)

हक़ीक़ी व सच्ची इरादत

सबअ् सनाबिल शरीफ़ में है एक साहब को सज़ाए मौत का हुक्म बादशाह ने दिया, जल्लाद ने तल्वार खींची यह अपने शैख़ के मज़ार की तरफ़ रुख़ करके खड़े हो गये। जल्लाद ने कहा इस वक़्त क़िब्ला को मुँह करते हैं फरमाया "तू अपना काम कर मैंने क़िब्ला को मुँह कर लिया है" और है भी यही बात कि काबा क़िब्ला है जिस्म का और शैख़ क़िब्ला है रूह का। इसका नाम इरादत है अगर इस तरह सिद्क़ अक़ीदत के साथ एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उसको फ़ैज़ ज़रूर आएगा। अगर उसका शैख़ ख़ाली है तो शैख़ का शैख़ तो ख़ाली न होगा और बिल–फ़र्ज़ वह भी न सही तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तो मअ्दने फ़ैज़ व मंबअ् अनवार हैं उन से फ़ैज़ आएगा, सिलसिला सही व मुत्तसिल होना चाहिए।

अइम्म–ए–दीन फरमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दफ़्तर में क़यामत तक के मुरीदीन के नाम दर्ज हैं जिस क़द्र ग़ुलामी में हैं या आने वाले हैं।

हुज़ूरे ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : रब अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझे एक दफ़्तर अता फरमाया कि मुन्तहाए नज़र तक वसीअ् था और उसमें क़यामत तक के मेरे मुरीदीन के नाम थे और मुझ से फरमाया मैंने यह सब तुम्हें बख़्श दिए।

एक फ़क़ीर भीख मांगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था एक रुपया दे, वह न देता था, फ़क़ीर ने कहा रुपया देता है तो दे वरना तेरी सारी दुकान उलट दूंगा, इस थोड़ी देर में बहुत लोग जमा हो गये इत्तिफ़ाक़न एक साहबे दिल का गुज़र हुआ जिनके सब लोग मोतक़िद थे उन्होंने दुकानदार से फरमाया जल्द रुपया इसे दे वरना दुकान लुट जाएगी। लोगों ने अर्ज़ की हज़रत यह बे–शरअ् जाहिल क्या कर सकता है, फरमाया मैंने इस फ़क़ीर के बातिन पर नज़र डाली कि कुछ है भी? मालूम हुआ बिल्कुल ख़ाली है, फिर इसके शैख़ को देखा उसे भी खाली पाया उसके शैख़ के शैख़ को देखा उन्हें अह्लुल्लाह से पाया और देखा कि वह मुंतज़िर खड़े हैं कि कब इसकी ज़बान से निकले और मैं दुकान उलट दूँ। तो बात क्या थी कि शैख़ का दामन कुव्वत के साथ पकड़े हुए थे। यही सच्ची इरादत है।

इज़ाल–ए–शुबह

यहाँ पर एक शुबह यह पैदा होता है कि फ़क़ीर को जबरन रुपया दिलाना हुआ हालांकि जबरन किसी का माल लेना जाइज़ नहीं, इस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि –

शरीअ़ते मुतह्हरा के दो हुक्म हैं ज़ाहिर व बातिन, क़ाज़ी व आम्मा नास की रसाई ज़ाहिर अहवाल ही तक है उन पर उसकी पाबन्दी लाज़िम, अगरचे वाक़िफ़ हक़ीक़ते हाल के नज़्दीक हुक्म बिल–अक्स हो।

हज़रत दाऊद का अजीब व ग़रीब फ़ैसला

इसकी नज़ीर ज़माना सैय्यदना दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम में वाक़े हो चुकी, एक फ़क़ीर

मुफ़्लिस बेनवा नान शबीना को मुहताज दुआ किया करता कि इलाही रिज़्क़े हलाल अता फरमा, इत्तिफ़ाक़न किसी शब एक गाय उसके घर में घुस आई यह समझा कि मेरी दुआ क़बूल हुई यह रिज़्क़े हलाल ग़ैब से मुझे अता हुआ है, गाय पछाड़ कर ज़िबह की उसका गोश्त पकाया और खाया, सुबह मालिक को ख़बर हुई वह सरकारे नबुव्वत में नालशी हुआ सैय्यदना दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जाने दे तू मालदार है इस मोहताज ने एक गाय ज़िबह कर ली तो क्या हुआ वह बिगड़ा और कहा या नबी अल्लाह मैं हक़ चाहता हूँ, फरमाया अगर हक़ चाहता है तो गाय उसी की थी वह और बरहम हुआ फरमाया न सिर्फ़ गाय जितना माल तेरे पास है सब उसी का है वह और ज़्यादा फरयादी हुआ फरमाया तू भी इसी की मिल्क और इसी का ग़ुलाम है।

अब तो उसकी बेताबी की हद न थी फरमाया अगर तस्दीक़ चाहता है अभी हमारे साथ चल, उस फ़क़ीर और गाय वाले को हम्राह रकाब लेकर जंगल को तशरीफ़ ले गये, वाक़ेया अजीब था ख़ल्क़ का हुजूम साथ हो लिया एक दरख़्त के नीचे हुक्म दिया कि यहाँ खोदो, खोदने से इंसान का सर और एक खंज़र जिस पर मक़्तूल का नाम कन्दा था बरामद हुआ, नबी अल्लाह ने उस दरख़्त से इरशाद फरमाया शहादत अदा कर तूने क्या देखा, पेड़ ने अर्ज़ या नबी अल्लाह इस फ़क़ीर के बाप का सर है यह गाय वाला उसका ग़ुलाम था उसने मौक़ा पा कर मेरे नीचे अपने आक़ा को उसी के ख़ंजर से ज़िबह किया और ज़मीन में मअ़ ख़ंजर दबा दिया और उसके तमाम अम्वाल पर क़ाबिज़ हो गया, उसका यह बेटा बहुत सग़ीर सिन था उसने होश संभाला तो अपने आपको बेकस व बेज़र ही पाया और यह भी न जाना कि उसका बाप कौन था और उसका कुछ माल भी था या नहीं, हुक्म बातिन साबित हुआ ग़ुलाम गर्दन मारा गया और वह तमाम अम्वाल वेरासतन फ़क़ीर को मिले, वही यहाँ भी मुम्किन कि दुकानदार उस फ़क़ीर के मूरिस का मदयून हो अगरचे वह फ़क़ीर भी उस से वाक़िफ़ न हो न यह दुकानदार उसे पहचानता हो, तो यह जबरन दिलाना जब्र नहीं बल्कि हक़ बहक़्दार सानीदन। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, सं0 71ए 72)

सच्ची इरादत से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू मजीद इरशाद फरमाते हैं :

इरादत शर्त अहम है बैअ़त में बस मुर्शद की ज़रा सी तवज्जुह दरकार है और दूसरी तरफ अगर इरादत नहीं तो कुछ नहीं हो सकता।

इरादत हो तो ऐसी हो

★ एक साहब हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ग़ुलामों में से थे उन्होंने वाक़ेया में यानी सोते जागते में देखा कि एक टीला पर याक़ूत की कुर्सी बिछी है उस पर हज़रत सैय्यदना जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ फरमा हैं और नीचे एक मख़्लूक़ जमा है हर एक अपनी–अपनी चिट्ठी देता है हज़रत उसको बारगाह रब्बुल–इज़्ज़त में पेश करते हैं, यह चुपके खड़े रहे जब हज़रत ने बहुत देर तक उन्हें देखा और उन्होंने कुछ न कहा तो ख़ुद फरमाया : लाओ कि मैं तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं, उन्होंने अर्ज़ किया क्या मेरे शैख़ को माज़ूल कर दिया गया? फरमाया ख़ुदा की क़सम उनको माज़ूल नहीं किया और न कभी उनको माज़ूल करेंगे उन्होंने अर्ज़ की तो बस मेरा शैख़ काफी है आंख खुली हाज़िर हुए दरबार में सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के वाक़ेया अर्ज़ करें, क़ब्ल इसके कि कुछ अर्ज़ करें हुज़ूर ने इरशाद फरमाया लाओ कि तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं। इरादत यह है।

जब तक कि मुरीद यह ऐतक़ाद न रखे कि मेरा शैख़ तमाम औलिया–ए–ज़माना से मेरे लिए बेहतर है नफ़ा न पाएगा।

★ अली बिन हैती ने जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास ख़लीफ़ा हैं एक

बार हुज़ूर की दावत की उनके ख़ास मुरीद थे हज़रत अली जौसक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु। यह खाना लाए ख़्याल करते हैं कि रोटियाँ किसके सामने पहले रखूं अपने शैख़ के सामने रखता हूँ तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शान के ख़िलाफ़ है और अगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सामने रखता हूँ तो इरादत तक़ाज़ा नहीं करती, उन्होंने इस तरह रोटियाँ घुमाई कि दोनों के हुज़ूर एक साथ जाकर गिरीं, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यह मुरीद तुम्हारा बहुत बा अदब है, अली बिन हैती ने अर्ज़ किया बहुत तरक़्क़ियाँ कर चुका है अब इसको हुज़ूर अपनी ख़िदमत में लें अली जोसक़ी यह सुनते ही एक कोना में गये और रोना शुरू किया, हुज़ूर ने फरमाया इसको अपने ही पास रहने दो जिस पिस्तान का हिला हुआ हो उसी से दूध पिएगा दूसरे को नहीं चाहता। अपने तमाम हवाइज में अपने शैख़ ही की तरफ रुजूअ़ करे।

शैख़ के हुज़ूर ख़ामोश रहना

बेकार बातों से तो हर वक़्त परहेज़ चाहिए और शैख़ के हुज़ूर ख़ामोश रहना अफ़ज़ल है, ज़रूरी मसाइल पूछने में हरज नहीं।

औलिया–ए–किराम फरमाते हैं शैख़ के हुज़ूर बैठ कर ज़िक्र भी न करे कि ज़िक्र में दूसरी तरफ मश्ग़ूल होगा और यह हक़ीक़तन मुमानेअत ज़िक्र नहीं बल्कि तक्मीले ज़िक्र है कि वह जो करेगा बिला तवस्सुल होगा और शैख़ की तवज्जोह से जो ज़िक्र होगा वह बतवस्सुत होगा, यह इससे बदरजा अफ़ज़ल है। असल कार हुस्ने अक़ीदत है यह नहीं तो कुछ नफ़ा नहीं और सिर्फ़ हुस्ने अक़ीदत है तो ख़ैर इत्तिसाल तो है। परनाला की मिस्ल तुमको फ़ैज़ पहुँचेगा हुस्ने अक़ीदत होना चाहिए। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 60, 61)

बैअ़त की तब्दील मम्नूअ़ और तज्दीद मुस्तहब

तब्दीले बैअ़त बिला वजह शरई मम्नूअ़ है और तज्दीद जाइज़ बल्कि मुस्तहब है, सिलसिल–ए–आलिया क़ादरीया में न हुआ हो और अपने शैख़ से बग़ैर इंहिराफ़ किए इस सिलसिल–ए–आलिया में बैअ़त करे यह तब्दीले बैअ़त नहीं बल्कि तज्दीद है कि जमीअ़ सलासिल इस सिलसिल–ए–आलिया की तरफ राजे हैं।

तीन क़लन्दर बारगाहे निज़ामी में

तीन क़लन्दर निज़ामुल–हक़ वद्दीन महबूबे इलाही क़ुद्देसा सिर्रुहुल–अज़ीज़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और खाना मांगा ख़ुद्दाम को लाने को हुक्म फरमाया ख़ादिम ने जो कुछ उस वक़्त मौजूद था उनके सामने रखा उनमें से एक ने वह खाना उठा कर फेंक दिया और कहा अच्छा खाना लाओ, हज़रत ने इस नाशइस्ता हरकत का कुछ ख़्याल न फरमाया, ख़ुद्दाम को उससे अच्छा लाने का हुक्म फरमाया, ख़ादिम पहले से अच्छा लाया, उन्होंने फिर फेंक दिया और उससे भी अच्छा मांगा हज़रत ने और अच्छे का हुक्म दिया ग़रज़ उन्होंने इस बार भी फेंक दिया और उस से भी अच्छा मांगा इस पर उस क़लन्दर को अपने पास बुलाया और कान में इरशाद फरमाया कि यह खाना उस मुरदार बैल से तो अच्छा था जो तुमने रास्ता में खाया, यह सुनते ही क़लन्दर का हाल मुतग़ैय्यर हुआ। राह में तीन फाक़ों के बाद एक मरा हुआ बैल जिसमें कीड़े पड़ गये थे मिला था उसका गोश्त खा कर आए थे, क़लन्दर हुज़ूर के क़दमों पर गिरा हुज़ूर ने उसका सर उठा कर अपने सीने से लगाया और जो कुछ अता फरमाना था अता फरमा दिया, उस वक़्त वह वज्द में रक़्स करता और यह कहता था कि मेरे मुर्शिद ने मुझे नेमत अता फरमाई। हाज़िरीन ने कहा बेवक़ूफ़ जो कुछ तुझे मिला वह हज़रत का अता किया हुआ है यहाँ तक कि तू बिल्कुल ख़ाली आया था, कहा बेवक़ूफ़ तुम हो अगर मेरे

मुर्शिद ने मुझ पर नज़र न की होती तो हुज़ूर क्यों नज़र फरमाते, यह उसी नज़र का ज़रिया है। उस पर हज़रत ने कहा यह सच कहता है और फरमाया भाइयो! मुरीद होना इससे सीखो।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 12, 13)

मुराक़बा ज़िक्र व शग़्ल

बाज़ औलिया–ए–किराम जिन्होंने ज़िक्र व शग़्ल से तर्बियत मुरीदीन की कैफ़ियत इरशाद की ब्यान फरमाते हैं कि जब ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह को मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कामिल कर ले तो चाहिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तसव्वुर अपने पेशे नज़र जमाए, बशरी सूरत, नूर की तल्अत, नूर के लिबास में, ताकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सूरते करीमा उसके आईन–ए–दिल में जम जाए और उस से वह उल्फ़त पैदा हो जिसके सबब हुज़ूर के असरार से फ़ाइदा ले, हुज़ूर के अनवार के फूल चुनें और जिसे यह तसव्वुर मयस्सर न हो वह यही ख़्याल जमाए कि गोया मज़ारे मुबारक के सामने हाज़िर है, और हर बार जब ज़िक्र में नाम पाक आए तसव्वुर में मज़ारे अक़्दस की तरफ़ इशारा करता जाए कि दिल जब एक चीज़ से मश्गूल हो जाता है फिर उस वक़्त दूसरी चीज़ क़बूल नहीं करता।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 149)

पीर पर मुरीद का हक़

मुरीद का पीर पर हक़ यह है कि –

★ उसे मिस्ल अपनी औलाद के जाने।

★ जो बात बुरी देखे उस से मना करे, रोके।

★ नेकियों की तरग़ीब दे।

★ हाज़िर व ग़ायब उसकी ख़ैर ख़्वाही करे।

★ अपनी दुआ में उसे शरीक करे।

★ उसकी तरफ़ से बराहे नादानी जो गुस्ताख़ी, बेअदबी वाके़ हो उस से दर गुज़रे।

★ उस पर अपने नफ़्स के लिए नाराज़ न हो।

★ उसकी हिदायत के लिए ग़ुस्सा ज़ाहिर करे और दिल में उसकी भलाई का ख़्वास्तगार रहे।

★ उसके माल से कुछ तलब न करे।

★ हत्तल–मक़्दूर उसकी हर मुश्किल में मददगार रहे वग़ैरह वग़ैरह।

मुरीद पर पीर का हक़

पीर के हुक़ूक़ मुरीद पर शुमार से ज़्यादा हैं ख़ुलासा यह है

★ उसके हाथ में मुर्दा बदस्त ज़िन्दा हो कर रहे।

★ उसकी रज़ा को अल्लाह की रज़ा उसकी नाख़ुशी को अल्लाह की नाख़ुशी जाने।

★ उसे अपने हक़ में तमाम औलियाए ज़माना से बेहतर समझे।

★ अगर कोई नेमत बज़ाहिर दूसरे से मिले तो उसे भी पीर ही की अता और उसी की नज़रे तवज्जोह का सदक़ा जाने।

★ माल, औलाद, जान सब उस पर तसद्दुक़ करने को तैयार रहे।

★ उसकी जो बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शिरा बल्कि मआज़ल्लाह कबीरा मालूम हो उस पर भी न एतराज़ करे न दिल में बदगुमानी को जगह दे बल्कि यक़ीन जाने कि मेरी समझ की ग़लती है।

★ दूसरे को अगर आसमान पर उड़ता देखे जब भी पीर के सिवा दूसरे के हाथ में हाथ देने को सख़्त आग जाने।

★ एक बाप से दूसरा बाप न बनाए।

★ उसके हुज़ूर बात न करे हंसना तो बड़ी चीज़ है।

★ उसके सामने आंख कान दिल हमा तन उसी की तरफ मसरूफ़ रखे।

★ जो वह पूछे निहायत नर्म आवाज़ से बकमाले अदब बता कर जल्द ख़ामोश हो जाए।

★ उसके कपड़ों, उसके बैठने की जगह, उसकी औलाद, उसके मकान, उसके मुहल्ला, उसके शहर की ताज़ीम करे।

★ जो वह हुक्म दे क्यों न कहे, देर न करे, सब कामों पर उसे तक़्दीम दे।

★ उसकी ग़ीबत में भी उसके बैठने की जगह न बैठे।

★ उसकी मौत के बाद भी उसकी जौजा से निकाह न करे।

★ रोज़ाना अगर वह ज़िन्दा है उसकी सलामत व आफ़ियत की दुआ बकसरत करता रहे और अगर इंतिक़ाल हो गया हो तो रोज़ाना उसके नाम पर फातिहा व दरूद का सवाब पहुंचाए।

★ उसके दोस्त का दोस्त, उसके दुश्मन का दुश्मन रहे।

★ ग़रज़ अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद उसके इलाक़ा को तमाम जहान के इलाक़ा पर दिल से तरजीह दे और उसी पर कारबन्द रहे, वग़ैरह वग़ैरह।

जब यह ऐसा होगा तो हर वक़्त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल व सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व हज़रात मशाइख़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की मदद ज़िन्दगी में, नज़अ में, क़ब्र में, हश्र में, मीज़ान पर, सिरात पर, हौज़ पर, हर जगह उसके साथ रहेगी।

उसका पीर अगर ख़ुद कुछ नहीं, तो उसका पीर तो कुछ है, या पीर का पीर यहाँ तक कि साहिबे सिलसिला हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु, फिर यह सिलसिला मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू और उन से सैय्युदल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन से अल्लाह रब्बुल–आलमीन तक मुसलसल चला गया है। हाँ यह ज़रूर है कि पीर चारों शराइत बैअ़त का जामे हो फिर उसका हुस्ने एतक़ाद सब कुछ फल ला सकता है, इंशाअल्लाह तआला।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 302)

बुज़ुर्गों के हाथ पाँव चूमना

उलमा व सुलहा और अपने पीर के हाथ पाँव अक़ीदत व मुहब्बत में चूमना जाइज़ है मगर औरतों को उलमा या अपने पीर के हाथ पाँव चूमना मना है हाँ अगर औरत ज़ईफ़ है जिस से अन्देशा फ़साद नहीं तो वह चूम सकती है, लेकिन बेहिजाबाना नहीं बल्कि पर्दा के साथ हो। आजकल जुह्हाल में बाज़ जुह्हाल पीर बने फिरते हैं अजनबी औरत से ख़िदमत लेते, उन से बेहिजाब बात चीत करते और औरतों को ख़्वाह वह जवान हों या ज़ईफ़ा मुसाफ़हा और दस्त बोसी वग़ैरह का मौक़ा देते हैं, यह सख़्त हराम व नाजाइज़ है, और बाज़ पीर ऐसे भी हैं जिनको उनके मुरीदीन सज्दा करते हैं हालांकि शरीअते मुहम्मदी अली साहिबहा अत्तहीयतु वस्सना में ग़ैरुल्लाह को सज्दा हराम है, अगर ताज़ीम व तक्रीम और तहीयत के लिए सज्दा किया जाए तो यह हराम है और अगर इबादत के तौर पर सज्दा हो तो यह कुफ़्र है। (मुरत्तिब)

बुज़ुर्गाने दीन की क़दम बोसी और सज्द–ए–तहीयत से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

बुज़ुर्गाने दीन की क़दम बोसी बिला शुबह जाइज़ बल्कि सुन्नत है, बकसरत अहादीस से साबित है कि सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूरे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पाए मुबारक चूमे और हुज़ूर ने मना न फरमाया।

रहा सज्द–ए–तहीयत तो वह अगली शरीअतों में जाइज़ था।

★ मलाइका ने बहुक्मे इलाही हज़रत सैय्यदना आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सज्दा किया।

★ हज़रत सैय्यदना याकूब अलैहिस्सलातु वस्लाम और उनकी ज़ौजा मुक़द्दसा और ग्यारा साहबज़ादों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सज्दा किया।

★ सय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जो हज़रत मरयम के शिकम मुबारक में थे और सैय्यदना यहया अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनकी बहन के शिकमे मुक़द्दस में, जब हज़रत मरयम अपनी बहन के पास तशरीफ़ लाई उनकी बहन अर्ज़ करतीं मैं देखती हूँ कि वह जो मेरे पेट में है उसके लिए सज्दा करता है जो तुम्हारे पेट में है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 396)

सज्द–ए–तहीयत की तहरीम

ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा बिला शुबह हराम है फिर अगर इबादत के तौर पर हो तो क़तअन बिल–इज्मा कुफ़्र है और अगर बर–वहजे तहीयत हो तो कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ है, उसके हराम हाने में इख़्तिलाफ़ नहीं और हक़ यही है कि बनीयत इबादत हराम है, कबीरा है मगर कुफ़्र नहीं। यानी सज्दा किसी क़िस्म का शरीअत मुहम्मदीया अला साहिबहा अत्तहीयात वस्सना में ग़ैरे ख़ुदा के लिए मुतलक़न जाइज़ नहीं। ख़ुलासा यह है कि –

सज्द–ए–इबादत

अपना रब हक़ीक़ी व मालिक बिज़्ज़ात जान कर उसके हुज़ूर ग़ायते तज़ल्लुल के लिए ज़मीं पर पेशानी रखना सज्दा इबादत है।

अनवा–ए–सुजूद और उनके अहकाम

★ माबूद न जान कर सिर्फ़ उसकी अज़मत के लिए रूबख़ाक होना सज्दा ताज़ीम है।

★ और मुलाक़ात के वक़्त बाहमी मुवानेसत के लिए सज्दा–ए–तहीयत।

★ और हक़ शनासी नेमत के इज़्हार को सज्द–ए–शुक्र।

★ सज्द–ए–इबादत मौला अज़्ज़ा व जल्ल के लिए है, फ़र्ज़ है।

★ सज्द–ए–शुक्र भी ख़ुदाए तआला के लिए है। मुस्तहब है।

सज्द–ए–ताज़ीम व सज्द–ए–तहीयत दोनों ग़ैरे ख़ुदा के लिए हराम हैं कुफ़्र नहीं। इसी तरह सज्द–ए–शुक्र भी ग़ैरे ख़ुदा के लिए हराम है और सज्द–ए–इबादत ग़ैरुल्लाह के लिए कुफ़्र क़तई। और ग़ैरे ख़ुदा के लिए ज़मीन चूमना भी हराम है और जो चूमे और जिसके लिए चूमा जाए और वह राज़ी हो दोनों मुर्तकिब कबीरा, और बनीयते इबादत हो तो यह भी कुफ़्र, कि इबादत ग़ैर की नीयत ख़ुद ही कुफ़्र है अगरचे उसके साथ कोई फ़ेअ़ल न हो।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 377, 378)

उस्मान ग़नी की बैअत ग़ाइबाना

सुल्हे हुदैबिया के मौक़ा पर सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु अन्हु तआला अन्हुम से जो बैअ़त ली गई उसे बैअ़ते रिज़वान कहते हैं। इस बैअ़त में अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर नहीं थे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म से मक्का मुकर्रमा के हालात का जाइज़ा लेने गये थे उनकी ग़ैर मौजूदगी में हुज़ूर ने उनकी बैअ़त ली, इससे मालूम हुआ कि अगर कोई पीर ग़ाइबाना तौर पर किसी से बैअ़त ले तो वह दाख़िल सिलसिला हो जाएगा और वह उसका मुरीद कहलाएगा। बैअ़ते रिज़वान का तज़्किरा कुरआन में भी है और हदीस मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में भी। (मुरत्तिब)

★ कुरआन पाक में है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है :

वह जो तुम से बैअ़त करते हैं तो वह अल्लाह से बैअ़त करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथ पर है। (अल–फ़त्हु 10)

★ और फरमाता है।

बेशक अल्लाह राज़ी हुआ मुसलमानों से जब वह तुम से बैअ़त करते हैं दरख़्त के नीचे। (अल–फ़तह, 18)

★ सहीह बुख़ारी शरीफ़ में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है :

जब यह बैअ़त हुई अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ग़ायब थे, बैअ़त हुदैबिया में हुई और वह मक्का मुअज़्ज़मा गये हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने दाहिने हाथ को फरमाया यह उस्मान का हाथ है, फिर उसे अपने दूसरे दस्ते मुबारक पर मार कर उनकी तरफ से बैअ़त फरमाई और फरमाया यह उस्मान की बैअ़त है।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 154)

मुरीद होने के फवाइद

मुरीद होना सुन्नत है और उस से फाइदा हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इत्तिसाल मुसलसल, यहाँ तक फरमाया गया कि "जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर शैतान है सेहते अक़ीदत के साथ सिलसिला सहीहा मुत्तसेला में अगर इंतिसाब बाक़ी रहा तो नज़र वाले तो उसके बरकात अभी देखते हैं जिन्हें नज़र नहीं वह नज़अ में, क़ब्र में, हशर में, इसके फवाइद देखेंगे। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 12, स़0 199)

बद–मज़्हब का पीर शैतान है

जिसका कोई पीर नहीं, शैतान उसका पीर है, उसके पूरे मिस्दाक़ वह लोग हैं कि मशाइख़े किराम के क़ाइल ही नहीं जैसे रवाफ़िज़ व वहाबिया व ग़ैर मुक़ल्लेदीन, और महबूब ज़ुल–जलाल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से शर्फ़ व बरकत इत्तिसाल के लिए जामे शराइते शैख़ के हाथ पर बैअ़त होना मुसलमानों की सुन्नते मुतवारेसा है और उसमें बेशुमार मनाफ़े व बरकत दीन व दुनिया व आख़िरत हैं बल्कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ वसीला हैं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 207)

पीर कामिल न मिले तो क्या करे

पीर कामिल के लिए चार शराइत हैं (जो ऊपर मज़्कूर हैं) अगर इन शराइत का जामे पीर मिल जाए तो उसके हाथ पर बैअ़त कर ले अगर पीर कामिल न मिले तो उसके लिए दरूद शरीफ़ की कसरत का हुक्म आया है यह तो मज्बूरी की हालत में है वरना अगर जामे शराइत पीर मिलने के बावजूद मुरीद न हो या मुरीद होना ज़रूरी न समझे या इंकार करे ऐसे ही शख़्स के लिए आया है कि जिसका कोई पीर नहीं शैतान उसका पीर है, वह कभी राह याब न होगा।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू से सवाल हुआ कि जिसे पीर कामिल मयस्सर न हो तो तालिब ख़ुदा किया करे, आपने इसके जवाब में इरशाद फरमाया कि

वह दरूद शरीफ़ की कसरत करे यहाँ तक कि दरूद के रंग में रंग जाए।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 202)

पीर का सैय्यद होना ज़रूरी नहीं

पीर होने के लिए वही चार शर्तें दरकार हैं, सादाते किराम से होना कुछ ज़रूर नहीं हाँ इन शर्तों के साथ सैय्यद भी हो तो नूरुन अला नूरुन, बाक़ी इसे शर्त ज़रूरी ठहराना तमाम सलासिल तरीक़त

का बातिल करना है। सिलसिला आलिया क़ादरीया सिलसिलतुज़्ज़हबे में सैय्यदना इमाम अली रज़ा और हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दर्मियान जितने हज़रात हैं कोई सादाते किराम से नहीं, और सिलसिला आलिया चिश्तीया में तो अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम के बाद ही से इमाम हसन बसरी हैं कि न सैय्यद न कुरैशी न अरबी, और सिलसिला आलिया नक़्शबन्दीया का ख़ास आग़ाज़ ही हुज़ूर सैय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है, इसी तरह दीगर सलासिल।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 212)

बैअ़त एक वसीला है

बैअ़त से अपना सिलसिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक उस्तवार व मुसलसल हो जाता है औलिया–ए–किराम व पीराने इज़ाम जो जामे शराइत हैं बारगाहे रिसालत तक रसाई का एक ज़रीआ व वास्ता हैं इसलिए राहे सुलूक में किसी कामिल को मुर्शिद बनाना ज़रूरी है। (मुरत्तिब)

अइम्मा किराम फरमाते हैं : आदमी अगरचे कितना ही बड़ा आलिम ज़ाहिद कामिल हो उस पर वाजिब है कि वली आरिफ़ को अपना मुर्शिद बनाए, बग़ैर इसके हरगिज़ चारा नहीं।

वसीला के लिए तो क़ुरआने अज़ीम फरमाता है कि अल्लाह की तरफ वसीला ढूंढो।

(अल–माइदा, 35)

★ अल्लाह की तरफ वसीला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं।

★ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ वसीला मशाइख़ किराम।

सिलसिला–ब–सिलसिला जिस तरह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल तक बेवसीला रसाई मुहाल क़तई है यूंहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक रसाई बेवसीला दुश्वार आदी है।

दीन व दुनिया हर जगह पीर कामिल की मदद

अहादीस से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम साहिबे शफ़ाअत हैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर वह शफ़ीअ़ होंगे और उनके हुज़ूर उलमा व औलिया अपने मुतवस्सेलों की शफ़ाअत करेंगे।

मशाइख़े किराम दुनिया व दीन व नज़अ व क़ब्र व हश्र सब हालतों में अपने मुरीदीन की इम्दाद फरमाते हैं।

इमाम अब्दुल–वहाब शअ़रानी फरमाते हैं कि फ़ुक़हा और सूफ़िया सब के सब अपने मुत्तबईन की शफ़ाअत करेंगे और वह अपने मुत्तबईन और मुरीदीन के नज़अ की हालत में रूह के निकलने और मुन्कर नकीर के सवालात, नश्र और हश्र हिसाब और मीज़ाने अद्ल पर आमाल तुलने और पुल सिरात से गुज़रने के वक़्त मुलाहिज़ा फरमाते हैं और तमाम मुवाक़िफ़ में से किसी ठहरने की जगह से ग़ाफ़िल नहीं होते। (त)

इस मुहताज बेदस्त व पा से बढ़ कर अहमक अपनी आफ़ियत का दुश्मन कौन जो अपनी सख़्तियों के वक़्त अपने मददगार न बनाए?

लोगों से तअल्लुक़ात बढ़ाना मुफ़ीद है

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह के बकसरत नेक बन्दों से रिश्ता व इलाक़ा मुहब्बत पैदा करो कि क़यामत में हर मुसलमान कामिल को शफ़ाअत दी जाएगी कि अपने इलाक़ा वालों की सिफ़ारिश करे। (तारीख़ इब्ने अन्नज्जार)

कौन बे–पैरा कौन शैतान का मुरीद ?

बाज़ औलिया का क़ौल है कि "जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर शैतान है" इसके पेशे नज़र मालूम होता है कि बैअ़त लाज़मी चीज़ है वरना शैतान उसका पेशवा होगा। और यह बात मशहूर भी है कि बे पीरा इब्लीस का मुरीद है। लिहाज़ा वह कौन है जो शैतान का मुरीद है। और वह कौन सी बैअ़त है जो हर मुसलमान के लिए लाज़मी है और किस हालत में यह बात है कि अगर बैअ़त का पट्टा गले में नहीं है तो नजात मिल सकती है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

शैख़ यानी मुर्शिद व राहनुमा व हादी राहे ख़ुदा दो तौर पर है।

1. आम हादी : कलामुल्लाह व कलामे अइम्मा शरीअत व तरीक़त, कलाम उलमाए अह्ले ज़ाहिर व बातिन है।

★ इसी सिलसिला सहीहा पर कि अवाम का हादी कलामे उलमा।

★ उलमा का रहनुमा कलामे अइम्मा।

★ अइम्मा का मुर्शिद कलामे रसूल।

★ रसूल का पेशवा कलामुल्लाह।

2. ख़ास : यह कि किसी ख़ास बन्द–ए–ख़ुदा हादी, हिदायत याफ़्ता, पेशवाई और हिदायत के क़ाबिल जो जामे शराइत बैअ़त हो उसके हाथ पर बैअ़त करे और अपने अक़्वाल व अफ़्आल व हरकात व सकनात में, शरीअत व तरीक़त के मुताबिक़ हिदायात का पाबन्द रहे।

शैख़ व मुर्शिद बमानी अव्वल हर शख़्स को ज़रूर है। और ऐसा शख़्स बेपीर, क़तअ़न राहे इस्लाम से दूर है, उसकी इबादत तबाह व बरबाद, उस से सलाम की इब्तिदा मम्नूअ़ व बुरा है और वह रोज़े क़्यामत गरोहे शैतान में उठाया जाएगा।

जिस शख़्स ने अइम्मा हुदा को अपना मुर्शिद व इमाम न माना तो वह इमाम ज़लालत यानी शैताने लईन का मुरीद हुआ, ला मुहाला वह रोज़े क़्यामत उसी के गरोह में उठेगा।

मगर कलिमा गोयों में इस तरह के बे पीरे चार गरोह हो सकते हैं।

अव्वल : वह काफ़िर जो सिरे से कुरआन व हदीस ही को न माने, जैसे नेचरी कि सराहतन मरदूद व बेसूद बताते हैं और कुरआन के यक़ीनी क़तई मआनी हक़ को रद्द करके अपने दिल से गढ़ कर कहानी, पहेली बनाते हैं।

दोम : ग़ैर मुक़ल्लिद कि बज़ाहिर कुरआन व हदीस को मानते और इरशादाते अइम्मा दीन व हामिलाने शरअ् मतीन को बातिल व ना मोतबर जानते हैं, यह सिलसिला बैअ़त तोड़ कर बराहे रास्त ख़ुदा और रसूल से हाथ मिलाना चाहते हैं।

सोम : वहाबिया मुक़ल्लेदीन कि अगरचे बज़ाहिर फ़ुरूअ् फ़िक़हया में तक़्लीदे अइम्मा का नाम लेते हैं मगर उसूल व अक़ाइद में सराहतन सवादे आज़म के ख़िलाफ़ चलते हैं और औलिया–ए–किराम के मक़ामात व मनासिब और तसर्रुफ़ात व मरातिब के नाम से जलते हैं।

चहारुम : इसी तरह तमाम गुमराह बद मज़्हब फ़िर्क़े जैसे राफ़्ज़ी, ख़ार्जी, मोतज़ली, क़दरी, जबरी वग़ैरहुम कि उन सबने राहे हुदा छोड़ कर अपनी हवा को इमाम बनाया और अपना सिलसिला बैअ़त शैताने लईन से जा कर मिलाया।

हासिल यह कि कलिमा जामिया यही है कि जो अह्ले बिदअत व हवा हैं यानी मुख़ालिफ़ाने अह्ले सुन्नत व जमाअत वही इस मानी पर बेपीर सादिक़ और इन तमाम अहकाम के ठीक मुस्तहिक़ हैं।

कोई सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा बे–पीरा नहीं

सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा कि अइम्मा हुदा को मानता, तक़्लीद अइम्मा ज़रूरी जानता, औलिया–ए–किराम का सच्चा मोतक़िद, तमाम अक़ाइद पर राहे हक़ पर मुस्तक़ीम, वह हरगिज़ बे–पीरा नहीं, वह चारों मुर्शिदाने पाक यानी कलामे ख़ुदा और रसूल व अइम्मा व उलमाए ज़ाहिर व बातिन उसके पीर हैं बल्कि अगर इसी हालत पर है तो मिस्ल और लाखों मुसलमानाने अह्ले सुन्नत के उसका हाथ शरीअते मुतह्हरा के हाथ में है अगरचे बज़ाहिर किसी ख़ास बन्द–ए–ख़ुदा के दस्ते मुबारक पर शर्फ़ बैअ़त से मुशर्रफ़ न हुआ हो।

हाँ बैअ़त व इमामते कुबरा के लिए सही हदीस में इरशाद हुआ।

जिसने इताअत से हाथ खींचा अल्लाह तआला से वह इस हाल में मिलेगा कि उसके पास क़यामत के दिन कोई दलील न होगी और जो इस हाल में मर जाए कि उसकी गर्दन में बैअ़त का पटका न हो तो वह जाहलीयत की मौत मरेगा। (त)

क्या औरत पीर बन सकती है?

अस्लाफ़े किराम के ज़माने से अब तक कोई औरत पीर नहीं बनी न उसने किसी से बैअ़त ली क्योंकि औरत का पीर बनना जाइज़ नहीं न वह किसी से बैअ़ते इरादत ले सकती है हाँ औरत आबिदा ज़ाहिदा वलीया हो सकती है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू एक मक़ाम पर तहरीर फ़रमाते हैं :

औलिया–ए–किराम का इज्मा है कि दाई इलल्लाह का मर्द होना ज़रूरी है लिहाज़ा सल्फ़े सालेहीन से आज तक कोई औरत न पीर बनी न बैअ़त किया।

हदीस में है : हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं हरगिज़ वह क़ौम फ़लाह न पाएगी जिसने किसी औरत को वाली बनाया।

(त, बुख़ारी, तिर्मिज़ी, निसाई)

इमाम आरिफ़ बिल्लाह अब्दुल–वहाब शअ़रानी फ़रमाते हैं :

बेशक अह्ले कश्फ़ ने इस बात पर इज्मा किया है कि अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाने वाले का मर्द होना शर्त है और सल्फ़े सालेहीन से यह मरवी नहीं कि कोई औरत मुरीदीन की तर्बियत करने के दरपै हुई हो, यह औरत के नाक़िसुल–अक़्ल होने के सबब से है यानी औरत चूंकि नाक़िसुल–अक़्ल होती है इसलिए उसमें तर्बियत व इस्लाह की सलाहियत कम होती है, अगरचे उनके बाज़ में कमाल वारिद है जैसे कि मरयम बिन इमरान और आसिया फ़िरऔन की बीवी, यह कमाले तक़्वा और दीन के लिहाज़ से है लोगों के दरम्यान हुकूमत करने की निस्बत से नहीं, मर्दों में यह बात मक़ामाते विलायत में सुलूक के सबब से है, औरत की ग़ायते अम्र यही है कि वह आबिदा व ज़ाहिदा हो जैसा कि राबेआ अदवीया बसरीया वग़ैरहा।

हज़रत तल्हा की बैअ़त बिल–वास्ता

जब हज़रत तल्हा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने (जंगे सिफ़्फ़ीन में) अपनी ख़ताए इज्तिहादी से रुजूअ़ फ़रमा कर दस्ते हक़ परस्त हज़रत अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू पर तज्दीदे बैअ़त चाही, ज़ालिम के हाथ से ज़ख़्मी हो चुके थे, अमीरुल–मुमिनीन अली तक वसूल की ताक़त न थी, अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू के लश्कर का एक सिपाही गुज़रा, उसे बुला कर हज़रत तल्हा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसके हाथ पर तज्दीदे बैअ़त फ़रमाई और रूहे अक़्दस रहमते इलाही में पहुँची।

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने यह हाल सुन कर फ़रमाया अल्लाह

अज़्ज़ा व जल्ल ने तल्हा का जन्नत में जाना न माना जब तक मेरी बैअ़त उनकी गर्दन में न हो।

इससे मालूम हुआ कि शैख़ की वफ़ात के बाद उनके नाइब व जानशीन से इरादत व बैअ़त हासिल करना अगरचे तज्दीदे बैअ़त है मगर वह अपने शैख़ का ही मुरीद कहलाएगा नाइब का नहीं, इस लिहाज़ से अपने शैख़ के जानशीन से तज्दीदे बैअ़त व तज्दीदे अहद में कोई हरज नहीं, जैसे यहाँ पर कि अमीरुल–मुमिनीन ने हज़रत तल्हा की बैअ़त को अपनी ही बैअ़त क़रार दिया न कि लश्करी की, और हज़रत तल्हा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरुल–मुमिनीन ही को अमीरुल–मुमिनीन व मुस्तहिक़ बैअ़त समझा न कि मआज़ल्लाह लश्करी को।

(नक़ाउस्सलाफ़ा फ़िल–बैअ़ते वल–ख़लाफ़ा)

मुर्शिदे ख़ास की दो क़िस्म

अव्वल : शैख़ इत्तिसाल, यानी जिसके हाथ पर बैअ़त करने से इंसान का सिलसिला हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक मुत्तसिल हो जाए, उसके लिए चार शर्तें हैं।

1. शैख़ का सिलसिला बइत्तिसाल सहीह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक पहुंचा हो, बीच में मुन्क़ता न हो कि मुन्क़ता के ज़रिआ से इत्तिसाल ना मुम्किन।

बाज़ लोग बिला बैअ़त महज़ ब–ज़ुअमे विरासत अपने बाप दादा के सज्जादे पर बैठ जाते हैं या बैअत तो की थी मगर ख़िलाफ़त न मिली थी, बिला इज़्न मुरीद करना शुरू कर देते हैं, या सिलसिला ही वह हो कि क़तअ़ कर दिया गया उसमें फ़ैज़ न रखा गया लोग बराहे हवस इसमें इज़्न व ख़िलाफ़त देते चले आते हैं, या सिलसिला फ़ी नफ़्सेही अच्छा था मगर बीच में कोई ऐसा शख़्स वाक़े हुआ जो बाज़ शराइत न होने के सबब क़ाबिले बैअ़त न था, इससे जो शाख़ चली वह बीच में से मुन्क़ता है। इन सूरतों में इस बैअ़त से हरगिज़ इत्तिसाल हासिल न होगा, बैल से दूध या बांझ से बच्चा मांगने की मत जुदा है।

2. शैख़ सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा हो, बद मज़्हब गुमराह का सिलसिला शैतान तक पहुंचेगा न कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक।

आजकल बहुत खुले बद दीनों बल्कि बे दीनों यहाँ तक कि वहाबिया ने कि सिरे से मुंकिर व दुश्मन औलिया हैं मक्कारी के लिए पीरी मुरीदी का जाल फैला रखा है, होशियार! ख़बरदार! एहतियात, एहतियात!

ऐ बसा इब्लीस आदम रूए हस्त
पस बहर दस्ते नबायद दाद दस्त

बहुत से इब्लीस इंसानी शक्ल में हैं, पस हर हाथ में हाथ देना नहीं चाहिए।

3. आलिम हो, इल्मे फ़ेक़ह उसी की अपनी ज़रूरत के क़ाबिल काफी और लाज़िम कि अक़ाइद अह्ले सुन्नत से पूरा वाक़िफ़, कुफ़्र व इस्लाम व ज़लालत व हिदायत के फ़र्क़ का ख़ूब आरिफ़ हो, वरना आज बद मज़्हब नहीं कल हो जाएगा।

सदहा कलिमात व हरकात हैं जिनसे कुफ़्र लाज़िम आता है और जाहिल बराहे जिहालत इनमें पड़ जाते हैं, अव्वल तो ख़बर ही नहीं होती कि उनके क़ौल या फ़ेअ़ल से कुफ़्र सरज़द हुआ, और बेइत्तिला, तौबा ना मुम्किन, तो मुब्तला के मुब्तला ही रहे, और अगर कोई ख़बर दे तो एक सलीमुत्तबा जाहिल डर भी जाए, तौबा भी कर ले, मगर वह जो सज्जादा मशीख़त पर हादी व मुर्शिद बने बैठे हैं उनकी अज़्मत ख़ुद उनके क़ुलूब में है कब क़बूल करने दे।

4. फासिक़े मोलिन न हो, इस शर्त पर हुसूले इत्तिसाल का तवक़्क़ुफ़ नहीं कि सिर्फ़ फ़िस्क़ बाइस फ़स्ख़ नहीं, मगर पीर की ताज़ीम लाज़िम है और फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब, दोनों का इज्तिमा बातिल।

दोम : शैख़ इत्तिसाल, कि शराइत मज़्कूरा के साथ मफ़ारिद नफ़्स अन्फ़स के फ़सादात, शैतान की मक्कारियों, ख़्वाहिशात का शिकार होने से आगाह हो, दूसरे की तर्बियत जानता और अपने मुतवस्सिल पर शफ़्क़ते ताम्मा रखता हो कि उसके उयूब पर उसे मुत्तला करे, उनका इलाज बताए जो मुश्किलात इस राह में पेश आएं हल फ़रमाए, न महज़ सालिक हो, न निरा मज्ज़ूब।

★वारिफ़ शरीफ़ में फ़रमाया यह दोनों क़ाबिले पीरी नहीं।

★ अव्वल इसलिए नहीं कि अभी वह राह में है।

★ और दूसरा तरीक़ तर्बियत से ग़ाफ़िल है, बल्कि मज्ज़ूब सालिक हो, या सालिक मज्ज़ूब, और अव्वल औला है।

बैअ़त की दो क़िस्म

अव्वल : बैअ़त बरकत, कि सिर्फ़ तबर्रुक के लिए दाख़िले सिलसिला हो जाना, आजकल आम बैअ़तें यही हैं। वह भी नेक नीयतों की, वरना बहुतों की बैअ़त दुनियावी अग़राज़े फ़ासिदा के लिए होती है, इस बैअ़त के लिए शैख़ इत्तिसाल कि शराइते अरबा का जामे हो, बस है।

यह बैअ़त भी बेकार नहीं है बल्कि मुफ़ीद और बहुत मुफ़ीद है और दुनिया व आख़िरत में कार आमद है, महबूबाने ख़ुदा के ग़ुलामों के दफ़्तर में नाम लिखा जाना, उन से सिलसिला मुत्तसिल हो जाना फ़ी नफ़्सेही सआदत है।

ख़िरक़ा इरादत व तबर्रुक

सैय्यदना शैख़श्शुयूख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आवारिफ़ुल–मआरिफ़ शरीफ़ में फ़रमाते हैं वाज़ेह हो कि ख़िरक़े दो हैं :

1. ख़िरक़ा इरादत।
2. ख़िरक़ा तबर्रुक।

मशाइख़ का मुरीदों से असली मुतालबा ख़िरक़ा इरादत है और ख़िरक़ा तबर्रुक को उस से मुशाबेहत है तो हक़ीक़ी मुरीद के लिए ख़िरक़ा इरादत है और मुशाबेहत चाहने वालों के लिए ख़िरक़ा तबर्रुक और जो किसी क़ौम से मुशाबेहत चाहे वह उन्हीं में है। (त)

महबूबाने ख़ुदा रहमत की निशानियाँ हैं वह अपना नाम लेने वाले को अपना लेते हैं और उस पर नज़रे रहमत रखते हैं।

ग़ौस पाक से निस्बत का फ़ाइदा

हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ की गई अगर कोई शख़्स हुज़ूर का नाम लेवा हो और उसने न हज़रत के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की हो, न हज़रत का ख़िरक़ा पहना हो क्या वह आपके मुरीदों में शुमार होगा? फ़रमाया :

जो अपने आपको मेरी तरफ़ निस्बत करे और अपना नाम मेरे ग़ुलामों के दफ़्तर में शामिल करे अल्लाह उसे क़बूल फ़रमाएगा और अगर वह किसी नापसन्दीदा राह पर हो तो उसे तौबा देगा, और वह मेरे मुरीदों के ज़ुमरे में है और मेरे रब अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और हम मज़्हबों और मेरे हर चाहने वाले को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

दोम : बैअ़ते इरादत, कि अपने इरादा व इख़्तियार से यक्सर बाहर हो कर अपने आप को शैख़ मुर्शिद हादी बरहक़ वासिल बहक़ के हाथ में बिल्कुल सुपुर्द कर दे, उसे मुतलक़न अपना हाकिम व मालिक व मुतसर्रिफ़ जाने उसके चलाने पर राहे सुलूक चले कोई क़दम बे उसकी मर्ज़ी के न रखे, उसके लिए बाज़ अहकाम या अपनी ज़ात में ख़ुद उसके कुछ काम अगर उसके सही न मालूम हों, उन्हें अफ़्आले ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मिस्ल समझे, अपनी अक़्ल का क़ुसूर जाने, उसकी

किसी बात पर दिल में भी एतराज़ न लाए, अपनी हर मुश्किल उस पर पेश करे, ग़रज़ उसके हाथ में मुर्दा बदस्त ज़िन्दा हो कर रहे, यह बैअ़ते सालिकीन है, और यही मक़्सूद मशाइख़ मुर्शिदीन है, यही अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल तक पहुंचाती है, यही हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से ली है, जिसे सैय्यदना उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि :

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उस पर बैअ़त की कि हर आसानी व दुशवारी, हर ख़ुशी व नागवारी में हुक्म सुनेंगे और इताअत करेंगे और साहिबे हुक्म के किसी हुक्म में चून व चरा न करेंगे।

शैख़ हादी का हुक्म, रसूल का हुक्म है और रसूल का हुक्म, अल्लाह का हुक्म है और अल्लाह के हुक्म में मजाल दम ज़दन नहीं।

अवारिफ़ शरीफ़ में है कि शैख़ के ज़ेरे हुक्म होना अल्लाह व रसूल के ज़ेरे हुक्म होना है और उस बैअ़त की सुन्नत का ज़िन्दा करना है।

यह उस मुरीद के लिए होता है जिसने अपनी जान को शैख़ की क़ैद में कर दिया और अपने इरादे से बिल्कुल बाहर आया, अपना इख़्तियार छोड़ कर शैख़ में फना हो गया।

मुरीद की बद–बख़्ती कब

इसी अवारिफ़ शरीफ़ में है :

पीरों पर एतराज़ से बचे कि यह मुरीदों के लिए ज़हर क़ातिल है, कम कोई मुरीद होगा जो अपने दिल में शैख़ पर कोई एतराज़ करे फिर फलाह पाए, शैख़ के तसर्रुफ़ात से जो कुछ उसे सही न मालूम होते हों उनमें ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वाक़ेआत याद कर ले क्योंकि उन से वह बातें सादिर होती थीं बज़ाहिर जिन पर सख़्त एतराज़ था (जैसे मिस्कीनों की कश्ती में सूराख़ कर देना, बेगुनाह बच्चे को क़त्ल कर देना, गिरती दीवार को सीधा कर देना) फिर जब वह उसकी वजह बताते थे ज़ाहिर हो जाता था कि हक़ यही था जो उन्होंने कहा, यूं ही मुरीद को यक़ीन रखना चाहिए कि शैख़ का जो फ़ेअ़्ल मुझे सही मालूम नहीं होता, शैख़ के पास उसकी सेहत पर दलील क़तई है।

रिसाला क़ुशैरिया में है जो अपने पीर से किसी बात में क्यों? कहे कभी फलाह न पाएगा।

(फतावा अफ़्रीक़ा)

बाज़ शराइते बैअ़त की तौज़ीह

हज़रत मीर सैय्यद अब्दुल–वाहिद बिल–गिरामी क़ुद्देसा सिर्रुहू अपनी किताब सबअ़् सनाबिल शरीफ़ में फरमाते हैं। पीरी मुरीदी चन्द शराइत पर मब्नी है जिनके बग़ैर पीरी मुरीदी सही नहीं।

★ पहली शर्त यह है कि पीर मसलक सही रखता हो।

★ दूसरी शर्त यह है कि पीर हुक़ूक़े शरईया अदा करे।

★ तीसरी शर्त यह है कि पीर के अक़ाइदे मज़हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत के मुताबिक़ हों।

(मुरत्तिब)

★ चौथी शर्त यह है कि सिलसिला मुत्तसिल हो। (मुरत्तिब)

यह वह शर्तें हैं जिनके बग़ैर पीरी व मुरीदी हरगिज़ सही नहीं हो सकती (यानी इत्तिबा अहकामे शरीअत में सुस्त और काहिल न हो)

फिर अव्वल की तफ़्सील इरशाद फरमा कर शर्ते दोम के मुतअल्लिक़ फरमाया :

पीरी मुरीदी की दूसरी शर्त की तौज़ीह यह है कि पीर को आलिमे बा-अमल होना ज़रूरी है, शरीअत की मुक़र्ररह फरमूदा इबादात व अहकाम में कोताही और सुस्ती को दख़ल न दे, अब अगर कोई शख़्स इबादात (फराइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तहिब्यात, महरमात व मक्रूहात) से वाक़िफ़ नहीं तो ज़ाहिर है कि वह उन पर अमल न कर सकेगा जिसका नतीजा यह होगा कि वह हद्दे शरीअत से गिर जाएगा और अब पीर बनने का अह्ल न रहेगा, इसलिए जो शख़्स मक़ामे हक़ीक़त से गिरता हैं वह तरीक़त पर रुक जाता है, और जो तरीक़त से गिरता है शरीअत पर ठहर जाता हे, और जो शख़्स शरीअत से गिरता है वह गुमराही में पड़ जाता है, और गुमराह आदमी पीरी के क़ाबिल नहीं, फिर जो दुर्वेश कि मरजा ख़लाइक़ हो, उस पर शरीअत के अहकामे जुज़ईया की एहतियात फर्ज़ व लाज़िम हो जाती है, लिहाज़ा उस पर फर्ज़ है कि शरीअत के आदाब व मुस्तहिब्बात से भी किसी अदब व मुस्तहब से ग़ाफ़िल न रहे और उसे फौत न होने दे कि यह चीज़ मुरीदों की गुमराही की सनद हो जाती है और मुरीदीन उसे हुज्जत बना कर कहते हैं कि हमारे पीर साहब ने तो यह किया है और इसका नतीजा यह होता है कि वह गुमराह व गुमराह कुन बन जाते हैं।

फिर तमाम शराइत बयान करके फरमाया :

ग़रज़ यह कि मुरीद जब पीर को इन तीनों शर्तों का जामेअ् पाए तो अब उसके हाथ पर बैअत करे कि जाइज़ व मुस्तहसन है, और अगर पीर में इन शर्तों में से कोई शर्त भी न पाई जाए तो उससे बैअ़त जाइज़ नहीं, बल्कि अगर किसी ने नादानिस्ता ऐसे पीर से बैअ़त कर ली तो उस पर उस बैअ़त का तोड़ देना वाजिब है। (रिसाला मक़ालुल-उरफ़ा)

मुराक़बा और तसव्वुरे शैख़

मुरीद को पीर से गहरा रब्त और मज़्बूत तअल्लुक़ होता है पीर कामिल के ज़रिया से मुरीद पर फ़ैज़ाने इलाहिया का ज़ुहूर होता है, मुरीद को पीर से जितनी अक़ीदत व मुहब्बत होगी फ़ैज़ान के रास्ते उतने ही वसीअ् व कुशादा होंगे मुरीद अपने शैख़ का तसव्वुर करे और समझे कि मुझ पर शैख़ की सूरत मिस्ल चादर के है और दिल को दीगर ख़्यालात से पाक करे, दिल के आईने में सिर्फ़ अपने शैख़ की सूरत का अक्से जमील हो और ख़्याल यह हो कि बारगाहे इलाही से फ़ैज़ान का नुज़ूल होता है, बारगाहे रिसालत से हो कर मेरे शैख़ के वासते से मुझ पर नाज़िल हो रहा है तो उसे बरकत व सआदत मिलने की उम्मीद है। (मुरत्तिब)

तसव्वुरे शैख़ और राब्ता क़ल्बी से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू मुतअद्दद कुतुब व रसाइल के हवाले से तहरीर फरमाते हैं :

ख़ुदा तक पहुँचने की तीसरी राह शैख़ के साथ राबता का तरीक़ा है चाहिए कि उसकी सूरत अपने ख़्याल में महफ़ूज़ रख कर क़ल्बे सनूबरी की तरफ मुतवज्जेह हो यहाँ तक कि अपने नफ़्स से ग़ैबत व फना हाथ आए। (इंतिबाह फ़ी सलासिल औलिया अल्लाह)

★ अगर तू तरक़्क़ी से रुक रहे तो यूं चाहिए कि सूरत शैख़ को अपने दाहिने शाने पर और शाने से दिल तक एक अम्र कशीदा फर्ज़ कर ले और उस पर सूरते शैख़ को ला कर अपने दिल में रखे कि उस से तेरे लिए ग़ैबत व फ़ना मिलने की उम्मीद है। (इंतिबाह)

★ मुर्शिद की सूरत को पेशे ख़ातिर रखे और ज़िक्र के बाद कहे अर्रफ़ीक़, और फिर अत्तरीक़, मुर्शिद के हक़ में है, यह तरीक़ा नफ़्सानी ख़्वाहिशात और शैतानी वसवसों की नफ़ी में मुअस्सिर है।
(त, इंतिबाह, रिसाला अज़ीज़िया)

★ मौजूदा तरीक़ों के मुराक़बात जो आख़िर ज़माना में मुरव्वज हुए किताब व सुन्नत से माख़ूज़ नहीं हैं बल्कि मशाइख़ हज़रात ने बतौर इल्हाम अल्लाह तआला से पाए हैं, जबकि शरीअत उनकी तफ़्सील से साकित है मगर वह इबाहत के दरजा में हैं। (त, मक्तूबात मिर्ज़ा मज़्हर जाने जानां)

★ हर वक़्त के मुनासिब इश्ग़ाल और रियाज़ात हर ज़माना के मुनासिब, जुदा जुदा हैं इसीलिए वक़्त के मुहक़्क़िक़ लोग अपने तरीक़ा व सिलसिला के अकाबिर से अश्ग़ाल की तज्दीद में कोशिश करते रहे हैं। (त)

★ अल्लाह तआला को हर वक़्त और हर शग़्ल में याद रख दिल, रूह, सिर्री, ख़फ़ी, सांस यक ज़र्बी या दो ज़र्बी हो, या सांस बन्द करके हो, या बग़ैर बन्द किए हो, बरज़ख़ के ज़रिया या बेबरज़ख़ वग़ैरहा ख़ुसूसियात जिनको अह्ले तरीक़त माहिरीन ने अख़्ज़ किया है, उनमें से किसी मख़्सूस तरीक़ा को मुतऐयन करना मुर्शिद की सवाबदीद पर मौक़ूफ़ है कि वह हाल के मुताबिक़ जिसको मुनासिब समझे उसकी तल्क़ीन करे। (त, तफ़्सीर अज़ीज़ी)

★ वसूल के तरीक़ों में अक़रब तरीन तरीक़ा राबता है कि बहुत से अबदी दौलत वाले इससे बहरावर हुए हैं। (त, मक्तूबात शैख़ मुजदिद, जिल्द अव्वल)

★ सबसे बड़ा और आला मक़सद अल्लाह जल्ला शांनुहू तक रसाई है लेकिन कोई तालिब इब्तिदाई मरहला में दुनियावी मशाग़िल की वजह से इंतिहाई कसाफ़त और कहतरी में होता है जबकि अल्लाह तआला इंतिहाई पाक और बुलन्द ज़ात है इस वजह से तालिब और मतलूब के दरम्यान फ़ैज़ के हुसूल व अता के लिए कोई मुनासिबत नहीं है लिहाज़ा ज़रूरी है रास्ता जानने और देखने वाला मुर्शिद वास्ता बने। इब्तिदाई और दरम्यानी मरहला में पीर के आईना के बग़ैर मतलूब को नहीं देख सकता। (त, मक्तूबात शैख़ मुजदिद, जिल्द अव्वल)

★ तुम्हारे राबता की निस्बत साहिबे राबता के साथ हम्वार हो जाए और फ़्यूज़ का वास्ता अक्स डाले तो इस अज़ीम नेमत का शुक्र बजा लाना चाहिए। (त, मक्तूबाते शैख़ मुजदिद, जिल्द 2)

जमाले हुज़ूर का तसव्वुर, तसव्वुरे शैख़ की असल है

तसव्वुरे शैख़ की असल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तसव्वुरे जमाल व कमाल है, उलमा फरमाते हैं कि जिसे मज़ारे मुतह्हर की ज़्यारत नसीब नहीं वह हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़िक्र शरीफ़ के वक़्त और हर वक़्त अपने दिल में यह तसव्वुर जमाए रहे कि मैं हुज़ूरे रिसालत में हाज़िर हूँ तो उसे क़ुर्बत व उल्फ़त हासिल होगी।

तरीक़ा तसव्वुर

मतालेउल–मुसिर्रात शरह दलाइलुल–ख़ैरात में है :

बाज़ उलमा जिन्होंने अज़्कार और उन से तर्बीयते मुरीद की कैफ़ियत बयान की, फरमाते हैं : कि जब ज़िक्र ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, को कामिल करे तो चाहिए कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तसव्वुर अपने पेशे नज़र जमाए बशरी सूरत, नूर की तलअत, नूर के कपड़ों में, इस ग़रज़ से कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सूरत उसके आईना रूह में नक़्श हो जाए और वह उल्फ़त पैदा हो जिसके सबब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के असरार से इस्तिफ़ादा और अनवार से इक़्तिबास कर सके।

जिसे हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सूरते करीमा का तसव्वुर रोज़ी न हो वह यही ख़्याल जमाए कि गोया मज़ार मुबारक के सामने हाज़िर है और हर बार ज़िक्र शरीफ़ के साथ मज़ारे अक़्दस की तरफ़ इशारा करता रहे, यह इसलिए कि दिल को जब एक चीज़ मश्ग़ूल कर लेती है तो उस वक़्त दूसरी किसी शय को क़बूल नहीं करता।

★ इमाम इब्ने अल्हाज मदख़ल में फरमाते हैं :

जिसे मज़ारे अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत जिस्म से नसीब न हुई हो वह हर वक़्त दिल से उसकी नीयत रखे और दिल में यह तसव्वुर जमाए कि मैं हुज़ूर पुर नूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह के हुज़ूर हाज़िर हूं, हुज़ूर से उसकी बारगाह में अपने लिए शफ़ाअत माँगता हूँ, जिसने हुज़ूर की उम्मत में दाख़िल फरमा कर मुझ पर एहसान किया।

★ फ़ाज़िल रफ़ीउद्दीन खान मुरादाबादी तारीख़ुल–हरमैन में लिखते हैं :

एक रात मैं तवाफ़ कर रहा था हुजूम कसीर था, मैंने अपने ख़्याल में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को याद किया और तसव्वुर किया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम तवाफ़ फरमा रहे हैं और सहाबा किराम की जमाअत भी हुज़ूर के साथ तवाफ़ कर रही है और मैं भी आपके तुफ़ैल वहाँ मज्मा में हाज़िर हूं।

और एक रोज़ मैं बैतुल्लाह शरीफ़ के आगे खड़ा दुआ कर रहा था कि मुझे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फतहे मक्का वाला मंज़र याद आया और तसव्वुर किया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फतह के रोज़ बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े पर तशरीफ़ फरमा हैं और सहाबा अपने मरातिब के लिहाज़ से अपनी जगह पर ख़िदमत में हाज़िर हैं और कुफ़्फ़ारे मक्का डरते हुए परेशान आपके सामने आ रहे हैं और आप उनको माफ़ फरमा रहे हैं, इस तसव्वुर की बरकत से हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वसीले और अल्लाह तआला के दरबार में दुआ के सबब तमाम अक़ारिब व अहबाब की मग़्फ़िरत और हाजतें तमाम दुनियावी और दीनी क़बूल होने की उम्मीद हुई। इन्शाअल्लाह तआला। (त)

दोस्तां रा कजा कुनी महरूम
तू कि बादुशमनां नज़र दारी

दोस्तों को आप क्या महरूम करेंगे आप दुशमनों पर भी नज़र रखते हैं। (त) (रिसाला अल–याकूततुल–वासेततु फ़ी क़ल्बे अक़्दुर्राबिता)

तवस्सुल व इस्तिम्दाद

अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त ने वसीला लेने का हुक्म फरमाया और अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए फरमाया : कि जब कोई मुसलमान गुनाह से अपनी जान पर ज़ुल्म करे तो वह मेरे महबूब जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को वसीला बना ले और मुझ से मग़्फ़िरत की दुआ करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमाएगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, औलिया–ए–किराम व बुज़ुर्गाने दीन को वसीला बनाना बिला शुबह जाइज़ व दुरुस्त है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर बारगाहे इज़्ज़त में वसीला हैं

ख़लीफ़ा मन्सूर अब्बासी जब रौज़–ए–अक़्दस की ज़्यारत के लिए पहुँचा तो उसके लिए यह तय करना मुश्किल हो गया कि क़िब्ला की तरफ मुँह किया जाए या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ? इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन से इरशाद फरमाया कि अपना मुँह हुज़ूर पुर नूर शाफ़े यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से क्यों फेरता है, वह तेरा और तेरे बाप आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की बारगाह में वसीला हैं, उनकी तरफ़ मुँह कर और उन से शफ़ाअत माँग कि अल्लाह तआला उनकी शफ़ाअत क़बूल फरमायेगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 445 मफ़्हूमन)

हर वासिल के लिए "साहिबुल–वसीला"

बे नबी के वास्ते के कभी वसूल मुम्किन नहीं यह दूसरी बात है कि अज़ाब हो या न हो, यह मुख़्तलिफ़ फ़ीह है क़स बिन साअदा वासिलीन और अह्ले फ़तरत से हैं लेकिन यह भी बिला ज़रिया नहीं।

नसरानियत मह्व हो चुकी थी और इस्लाम अभी आया न था वह जो मुश्रेकीन थे उनके सामने वअ्ज कहते, उसमें तौहीद बयान करते और हश्र वग़ैरह का बयान करते, आख़िर में कहते अगर तुम मेरी नहीं मानते तो अंक़रीब हुज़ूर तशरीफ़ लाते हैं जो ला इलाहा इल्लल्लाह रौशन फरमायेंगे।

तो बेवास्ता अल्लाह तआला तक पहुँचने वाले सिर्फ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, यह ही सबब है कि रोज़े क़्यामत तमाम अंबिया, औलिया व उलमा अलैहिमुस्सलात वस्सना कि शफ़ाअत फरमायेंगे, उनकी शफ़ाअत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में होगी, बारगाहे इज़्ज़त में शफ़ाअत फरमाने वाले सिर्फ़ हुज़ूर हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

जामे तिर्मिज़ी की हदीस में इरशाद हुआ, शफ़ाअत अंबिया का साहब मैं हूं और यह कुछ बराहे फख़्र नहीं फरमाता :

सिराते मुस्तक़ीम दो तरह की होती है।

★ एक तो यह कि सीधी चली गई है जिसमें पेच व ख़म नहीं मगर वास्ता की ज़रूरत है कि बग़ैर वास्ता नहीं पहुँच सकता।

★ और दूसरी यह कि उठा और सीधा मक़्सूद तक पहुँचा।

पहली, और अंबिया दूसरी सिर्फ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए है।

मतलब यह कि ऐ महबूब बस उठो और मुझ तक चले आओ, तुम्हें किसी तवस्सुल की हाजत नहीं सबके लिए वसीला तुम हो, तुम्हारे लिए कौन वसीला हो, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस के असमा तैय्यबा से है "साहिबुल–वसीला" सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 64)

हुज़ूर के वसीले से नेमतों का मिलना

जो चाहे कि बग़ैर वसीले उस माहताबे रिसालत के कुछ हासिल कर लूँ वह ख़ुदा के घर में नक़ब लगाना चाहता है, बग़ैर इस तवस्सुल के कोई नेमत, कोई दौलत किसी को कभी नहीं मिल सकती, कौन है जिस से तमाम आलम मुनव्वर व मौजूद है वह न हो तो आलम पर तारीकी अदम छा जाए वह क़मर बुर्जे रिसालत सैय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं।

उलमा–ए–किराम फरमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ज़ाना सिर्रे इलाही और जाए निफ़ाज़ हुक्मे ख़ुदा हैं रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने अपने करम के ख़ज़ाने अपनी नेमतों के ख़्वान हुज़ूर के क़ब्ज़े में कर दिए जिसको चाहें दें और जिसको चाहें न दें कोई हुक्म नाफ़िज़ नहीं होता मगर हुज़ूर के दरबार से कोई नेमत, कोई दौलत किसी को कभी नहीं मिलती मगर हुज़ूर की सरकार से। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, यही मानी हैं इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु युअ्ती कि मैं बांटने वाला हूँ और अल्लाह देता है।

वह न था तो बाग़ में कुछ न था वह न हो तो बाग़ हो सब फना
वह है जान जान से है बक़ा वही बन है बन से ही बार है

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 70)

इमाम आज़म से तवस्सुल

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक अज़ीम मुज्तहिद और ख़ुदा के नेक बन्दे थे उलूम व फ़ुनून में तो यक्ताए रोज़गार थे ही तक़्वा व तहारत में भी अदीमुन्नज़ीर थे एक रकाअत में एक कुरआने अज़ीम ख़त्म करते तीस साल तक उनका यह मामूल रहा, इसके अलावा वह बेशुमार औसाफ़े हमीदा और फज़ाइले हसना के मालकि थे, उनकी ज़िन्दगी में लोग उन से इल्म की प्यास बुझाते रहे और उनकी वफ़ात के बाद उनके तवस्सुल से बारगाहे इलाही में जिस हाजत का सवाल करते वह पूरी हो जाती। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू इमाम आज़म से तवस्सुल और मुरादें पाने के सिलसिले में तहरीर फरमाते हैं कि :

हमेशा से उलमा व अह्ले हाजत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे मुबारक की ज़्यारत और अपनी हाजत रवाइयों को बारगाहे इलाही में उन से तवस्सुल करते और इस सबब से फ़ौरन मुरादें पाते हैं।

उन में से हैं इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि फरमाते हैं मैं अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से तबर्रुक करता और उनकी क़ब्र पर जाता हूँ और जब मुझे कोई हाजत पेश आती है, दो रकाअत नमाज़ पढ़ता और उनकी क़ब्र की तरफ आकर ख़ुदा से सवाल करता हूँ कुछ देर नहीं लगती कि हाजत रवा होती है।

मन्सूर अब्बासी का तवस्सुल

रब्बुल–इज़्ज़त तबारक व तआला की तरफ़ उसके महबूबों से तवस्सुल महमूद व मक़सूद और सुन्नते मासूरा व तरीक़ा पसन्दीदा है और तवस्सुल के वक़्त उनकी जानिब तवज्जोह दरकार।

यहाँ तक कि जब ख़लीफ़ा अबू जाफर मन्सूर अब्बासी ने सैय्यदना इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से पूछा दुआ में क़िब्ला की तरफ मुँह करूं या मज़ारे मुबारक हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ फरमाया क्यों अपना मुँह उन से फेरता है वह क़यामत को तेरा और तेरे बाप आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अल्लाह तआला की तरफ वसीला हैं, बल्कि उन्हीं की तरफ मुँह कर और शफ़ाअत माँग कि अल्लाह तआला तेरी दरख़्वास्त क़बूल फरमाए।

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :

और अगर वह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तेरे हुज़ूर हाज़िर हो कर ख़ुदा से बख़्शिश चाहें और रसूल उनके लिए इस्तिग़फ़ार करे तो बेशक अल्लाह तआला को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पायें। (सूरः निसा : 64)

सुब्हानल्लाह! ख़ुदा हर जगह सुनता है और बेसबब मग़्फ़िरत फरमाता है मगर इरशाद यूं होता है कि गुनहगार बन्दे तेरी ख़िदमत में हाज़िर हो कर हम से दुआए बख़्शिश करें। और जब से अब तक उलमा व सुलहा इस आयते करीमा को ज़मान–ए–हयात व वफ़ात सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में आम और हाज़िरी मज़ारे मुबारक को हाज़िरी मज्लिसे अक़्दस के मिस्ल समझा दिये और औक़ाते ज़्यारत में यही आयते करीमा तिलावत करके अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करते रहे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 537, 538)

ग़ैरुल्लाह से इस्तेआनत का जवाज़

वहाबिया कहते हैं कि ग़ैरुल्लाह से मदद चाहना शिर्क है ख़्वाह अंबिया से हो या औलिया से, हालांकि आयात व अहादीस और अक़्वाले अइम्मा से साबित है कि ग़ैरुल्लाह से इस्तेआनत (मदद चाहना) जाइज़ है। मगर यह दलीलें वहाबिया को नज़र नहीं आतीं बात वही है कि जिस बात से अंबिया व औलिया की ताज़ीम व तक्रीम और उनकी क़ुव्वत व इख़्तियार साबित हो उसमें उन्हें शिर्क के सिवा कुछ नज़र नहीं आता। (मुरत्तिब)

वहाबिया पर दलाइल के ताज़ियाने बरसाते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

ख़ुदा रा इंसाफ़! अगर आयते करीमा इय्याका नस्तईन में मुतलक़ इस्तिआनत का ज़ाते इलाही जल्ला व उला में हस्र मक़्सूद हो तो क्या सिर्फ़ अंबिया अलैहिमुस्सलात वस्सलाम ही से इस्तिआनत शिर्क होगी, क्या यही ग़ैरे ख़ुदा हैं और सब अश्ख़ास व अशिया वहाबिया के नज़्दीक ख़ुदा हैं, या आयत में ख़ास उन्हीं का नाम ले दिया है कि उन से शिर्क, औरों से रवा है, नहीं, नहीं, जब मुतलक़न ज़ाते अहदियत से तख़्सीस और ग़ैर से शिर्क मानने की ठहरी तो कैसी ही इस्तिआनत किसी ग़ैरे ख़ुदा से की जाए हमेशा हर तरह शिर्क ही होगी कि इंसान हों या जमादात, अहया हों या अम्वात, ज़वात हों या सिफ़ात, अफ़्आल हों या हालात, ग़ैरे ख़ुदा होने में सब दाख़िल हैं।

अब क्या जवाब है आयते करीमा का कि रब जल्ला व उला फरमाता है।

इस्तिआनत करो सब्र व नमाज़ से। (सूरः बक़रा : 45)

क्या सब्र ख़ुदा है? जिससे इस्तिआनत का हुक्म हुआ है, क्या नमाज़ ख़ुदा है? जिससे इस्तिआनत को इरशाद किया है।

दूसरी आयत में फरमाता है :

आपस में एक दूसरे की मदद करो भलाई और परहेज़गारी पर। (सूरः अल–माइदा : 2)

क्यों साहब! अगर ग़ैरे ख़ुदा से मदद लेनी मुतलक़न मुहाल है तो इस हुक्मे इलाही का हासिल क्या? और अगर मुम्किन हो तो जिससे मदद मिल सकती है उससे मदद माँगने में क्या ज़हर घुल गया। हदीसों की तो गिनती ही नहीं बकसरत अहादीस में साफ़–साफ़ हुक्म है कि –

★ सुबह की इबादत से इस्तिआनत करो।

★ शाम की इबादत से इस्तिआनत करो।

★ कुछ रात रहे की इबादत से इस्तिआनत करो।

★ इल्म के लिखने से इस्तिआनत करो।

★ सहरी के खाने से इस्तिआनत करो।

★ दोपहर के सोने से और सदक़ा से इस्तिआनत करो।
★ औरतों की ख़ाना नशीनी में उन्हें नंगा रखने से इस्तिआनत करो।
★ हाजत रवाइयों में हाजतें छुपाने से इस्तिआनत करो।

क्या यह सब चीज़ें वहाबिया की ख़ुदा हैं कि उन से इस्तिआनत का हुक्म आया, यह हदीसें ख़्याल में न हों तो मुझ से सुनिए।

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया सुबह व शाम और रात के कुछ हिस्सा में इबादत से इस्तिआनत करो। (त, बुख़ारी, निसई)

हदीस : अपनी हिफ़ाज़त की इम्दाद करो अपने हाथ से। (त, नवादिरुल–उसूल)

हदीस : दिन के रोज़े रखने पर सहरी खाने से इस्तिआनत करो और रात के क़्याम के लिए क़ैलूला से इस्तिआनत करो। (त, इब्ने माजा, तबरानी, हाकिम)

हदीस : रिज़्क़ पर सदक़ा से इस्तिआनत करो। (त, मुसनदुल–फ़िरदौस)

हदीस : औरतों के ख़िलाफ़ इस्तिआनत हासिल करो तंगी लिबास से क्योंकि जब उनके जोड़े ज़्यादा होंगे और उनकी ज़ीनत अच्छी बनेगी वह बाहर निकलना पसन्द करेंगी। (त, इब्ने अदी)

हदीस : हाजत रवाइयों में हाजतें छुपाने से इस्तिआनत करो। (त, तबरानी, बैहक़ी)

तख़्सीसे मुमानेअत मुफ़ीद जवाज़ है

बाज़ अहादीस में मुश्रेकीन से इस्तिआनत की मुमानेअत व नही आई है जिससे मालूम होता है कि अगर मुसलमान से इस्तिआनत मम्नूअ़ व नाजाइज़ होती तो काफिर की तख़्सीस न होती।

(मुरत्तिब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हम किसी मुश्रिक से इस्तिआनत नहीं करते। (इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : हम मुश्रिकों से मुश्रिकों पर इस्तिआनत नहीं करते। (त, तारीख़ बुख़ारी)

अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने एक नसरानी ग़ुलाम वसीक़ नामी से कि दुनियावी तौर का अमानतदार था इरशाद फरमाते हैं :

मुसलमान हो जा कि मैं मुसलमानों की अमानत पर तुझ से इस्तिआनत करूं।

वह न मानता तो फरमाते हम काफिर से इस्तिआनत न करेंगे।

अगर मुसलमान से भी इस्तिआनत नाजाइज़ होती तो मुश्रिक की तख़्सीस क्यों फरमाई जाती।

(मुरत्तिब)

चन्द क़बाइले अरब ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इस्तिआनत की। हुज़ूरे वाला ने मदद अता फरमाई। (बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास रअल, ज़कवान, असीया और बनू लहयान क़बाइल से लोग आए और उन्होंने यह ख़्याल ज़ाहिर किया कि वह इस्लाम क़बूल कर चुके हैं और अपनी क़ौम के लिए आपसे मदद तलब की, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनकी मदद की।

(त, मुस्लिम, बुख़ारी, रिसाला बरकातुल–इम्दाद)

रबीआ को मुज़्दा जन्नत और उन से तलबे इस्तिआनत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम साहिबे शरअ व साहिबे इख़्तियार हैं दुनिया व दीन में जिसे जो चाहें अता फरमाते हैं, हज़रत रबीआ बिन कअब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को

जन्नत का मुज़्दा दिया और फ़रमाया कि इस राह में मेरी इस्तिआनत करो कसरते सुजूद से, गो कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन्हें जन्नत अता फ़रमाई। (मुरत्तिब)

एक मरतबा हुज़ूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने रबीआ से फ़रमाया : मांग क्या माँगता है कि हम तुझे अता फ़रमायें, अर्ज़ की मैं हुज़ूर से सवाल करता हूँ कि जन्नत में हुज़ूर की रिफ़ाक़त अता हो फ़रमाया भला और कुछ, अर्ज़ की बस मेरी मुराद तो यही है, फ़रमाया तू मेरी एआनत कर अपने नफ़्स पर कसरते सुजूद से।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

अल्हम्दु–लिल्लाह यह हदीस सही अपने हर फ़िक़्रा से वहाबियत कुश है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी एआनत कर, इसी को एआनत कहते हैं।

हुज़ूर को वसीअ् इख़्तियारात हासिल हैं

यह दरकनार हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मुतलक़ तौर पर फ़रमाना कि मांग क्या मांगता है, जाने वहाबियत पर कैसा पहाड़ है, जिस से साफ ज़ाहिर है कि हुज़ूर हर किस्म की हाजत रवा फरमा सकते हैं, दुनिया व आख़िरत की सब मुरादें हुज़ूर के इख़्तियार में हैं जब तो बिला तक़ैइद व तख़्सीस फ़रमाया कि मांग क्या मांगता है।

हज़रत शैख़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू इस हदीस की शरह में फ़रमाते हैं कि "सवाल कर" जिसमें किसी मतलूब की तख़्सीस न फ़रमाई तो मालूम हुआ कि तमाम इख़्तियारात हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते करामत में हैं, जो चाहें जिसको चाहें अल्लाह तआला के इज़्न से अता करें, आपकी अता का एक हिस्सा दुनिया व आख़िरत है और आपके उलूम का एक हिस्सा लौह व क़लम का इल्म। (त, शरह मिश्कात)

इमाम इब्ने सबअ् वग़ैरह उलमा फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जागीर कर दी है जिसे चाहें बख़्श दें। (त, मिर्क़ात)

मुल्ला अली क़ारी फ़रमाते हैं कि : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जो मांगने का हुक्म रबीआ को मुतलक़ दिया उस से मुस्तफ़ाद होता है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने हुज़ूर को क़ुदरत बख़्शी है कि अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से जो कुछ चाहें अता फ़रमायें।

(त, मिर्क़ात)

इमाम इब्ने हजर मक्की फ़रमाते हैं कि बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के ख़लीफ़ा हैं, अल्लाह तआला ने अपने करम के ख़ज़ाने और अपनी नेमतों के ख़्वान हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते क़ुदरत के फ़रमांबरदार और हुज़ूर के ज़ेरे हुक्म व इरादा व इख़्तियार कर दिए हैं कि जिसे चाहें अता फ़रमाते हैं और जिसे चाहें नहीं देते।

(त, रिसाला बरकातुल–इम्दाद, जौहरे मुनज़्ज़म)

हाजत और ख़ैर की चीज़ किस से माँगें

अहादीस में हुक्म हुआ है कि अपनी हाजात और ख़ैर, नेक चेहरे वालों से तलब करो, अच्छे अख़्लाक़ वालों से मांगो, अगर ग़ैरुल्लाह से इस्तिम्दाद व इस्तिआनत शिर्क होती तो अहादीस में ग़ैरुल्लाह से तलबे हाजात का हुक्म न होता जिससे मालूम हुआ कि ग़ैरे ख़ुदा से मदद मांगनी जाइज़ है।

तलबे हाजात व ख़ैर से मुतअल्लिक़ बाज़ अहादीस यह हैं। (गुरत्तिब)

हदीस : हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ख़ैर तलब करो नेक रूयों के पास। (तारीख़ कबीर)

हदीस : नेकी और हाजतें ख़ूबसूरतों से मांगो। (मोजमे कबीर)

हदीस : जब नेकी चाहो तो ख़ूबरुयों के पास तलब करो। (इब्ने अदी)

हदीस : जब हाजतें तलब करो ख़ुश चेहरों के पास तलब करो। (इतहाफ़ुस्सादते)

हदीस : ख़ुश जमाल आदमी अगर तेरी हाजत रवा करेगा तो ब-कुशादा रोई। और तुझे फेरेगा तो बकुशादा पेशानी। (तारीख़ बुख़ारी, मुसनद अबू याला)

हदीस : फ़ज़्ल मेरे रहम दिल उम्मतियों के पास तलब करो कि उनके साए में चैन करोगे कि उनमें मेरी रहमत है। (कंज़ुल-उम्माल)

हदीस : अपनी हाजतें मेरे रहम दिल उम्मतियों से मांगो रिज़्क़ पाओगे मुरादें पाओगे। (कंज़ुल-उम्माल)

हदीस : अल्लाह तआला फरमाता है : फ़ज़्ल मेरे रहम दिल बन्दों से मांगो उनके दामन में ऐश करोगे कि मैंने अपनी रहमत उनमें रखी है। (ज़ुअ़फ़ा कबीर)

हदीस : मेरे नर्म दिल उम्मतियों से नेकी व एहसान मांगो उनके ज़िल्ले इनायत में आराम करोगे। (हाकिम)

एक रिवायत में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा या हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा अपने बाज़ कलाम में इरशाद फरमाते हैं :

बेशक हमने अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को एक बात फरमाते सुना कि वह हाजत मांगने वालों के लिए आसाइश है, इरशाद फरमाते हैं कि सुबह करो और हाजतें उससे मांगो जिसका चेहरा अल्लाह तआला ने गोरे रंग से आरास्ता किया है। (अल-अस्करी, अद्दुररुल-मुंतशेरा)

इन अहादीस व रिवायात को पेश करने के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहू इंतिहाई दर्द व कर्ब के लहजे में फरमाते हैं :

इंसाफ़ की आंखें कहाँ हैं ज़रा ईमान की निगाह से देखें यह हदीसें कैसा साफ़-साफ़ वा-शिगाफ़ फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने नेक उम्मतियों से इस्तिआनत करने, उनसे हाजतें मांगने, उन से ख़ैर व एहसान तलब करने का हुक्म दिया कि वह तुम्हारी हाजतें बकुशादा पेशानी रवा करेंगे, उन से मांगो तो रिज़्क़ पाओगे, मुरादें पाओगे, उनके दामने हिमायत में चैन करोगे, उनके साया इनायत में ऐश उठाओगे।

या रब! मगर इस्तिआनत और किस चीज़ का नाम है, इससे बढ़ कर और क्या सूरते इस्तिआनत होगी, फिर हज़राते औलिया से ज़्यादा कौन सा उम्मती नेक व रहमदिल होगा कि उन से इस्तिआनत शिर्क ठहरा कर उस से हाजतें मांगने का हुक्म दिया जाए।

अल्हम्दु-लिल्लाह! हक़ का आफताब बेपर्दा व हिजाब रौशन हुआ, मगर वहाबिया का मुँह ख़ुदा ने मारा है उन्हें इस ऐश, चैन, आराम, ख़ैर, बरकत, साय-ए-रहमत, दामने राफ़त में हिस्सा कहाँ, जिसकी तरफ मेहरबान ख़ुदा, मेहरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने उम्मतियों को बुला रहा है। (रिसाला बरकातुल-इम्दाद लेअह्लुल-इस्तिम्दाद)

एक अजीब व ग़रीब हकीमाना नुक्ता

हज़रत अल्लामा सल्जमासी रहमतुल्लाह तआला अलैह किताब इब्रीज़ में अपने शैख़ हज़रत सैय्यदी अब्दुल–अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं, कि अवाम जो अपने हाजात में औलिया–ए–किराम से इस्तिआनत करते हैं न कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से, हज़राते औलिया ने उनको क़स्दन इधर लगा लिया है कि दुआ में मुराद मिलनी न मिलनी दोनों पहलू हैं, अवाम मुराद न मिलने की हिक्मतों पर मुत्तला नहीं किए जाते तो अगर बिल–कुल्लीया ख़ालिस अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ही से मांगते फिर मुराद मिलती न देखते तो एहतमाल था कि ख़ुदा के वजूद ही से मुंकर हो जाते, इसलिए औलिया ने उनके दिलों को अपनी तरफ फेर लिया कि अब अगर मुराद न मिलने पर बेएतक़ादी का वसवसा आया भी तो उस वली की निस्बत आएगा जिससे मदद चाही थी, इसमें ईमान तो सलामत रहेगा। (फ़िक़्ह शहनशाह)

रौज़–ए–अक़्दस पर हाज़िर हो कर बारिश की दरख़्वास्त

अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के अह्दे ख़िलाफ़त में एक बार क़हत पड़ा, एक साहब यानी बिलाल बिन हारिस मुज़्नी सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने मज़ारे अक़्दस हुज़ूर मलजाए बेकसां सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह अपनी उम्मत के लिए अल्लाह तआला से पानी मांगिये कि वह हलाक हुए जाते हैं रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन सहाबी के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और इरशाद फरमाया उमर के पास जा कर उसे सलाम पहुँचा और लोगों को ख़बर दे कि अब पानी आया चाहता है। (बैहक़ी दलाइलुन्नुबुव्वह, इब्ने अबी शैबा, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 247)

"या" के ज़रिया पुकारना

अह्ले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक "या रसूलल्लाह" या नबी अल्लाह, या हबीबल्लाह, इसी तरह या ग़ौस, या ख़्वाजा, या शैख़ वग़ैरह कह कर पुकारना जाइज़ व दुरुस्त है इसके जवाज़ पर मुतअद्दद दलाइल व शवाहिद मौजूद हैं। मगर वहाबिया व देवबन्दीया इस तरह ग़ैरुल्लाह के पुकारने को नाजाइज़ व हराम बल्कि शिर्क व बिदअत कहते हैं, बात यह है कि वहाबिया को महबूबाने ख़ुदा से जो नफ़रत व अदावत है यह उसी की दैन है वरना इसमें किसी तरह की कोई कराहत व क़बाहत नहीं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने इस मसअला को अहादीस व आसार और अक़्वाले अइम्मा वग़ैरह से हसीन अंदाज़ में साबित व वाज़ेह फ़रमाया है, हम इस मज़मून को अलग-अलग उनवान के तहत पेश कर रहे हैं मुलाहिज़ा कीजिए। (मुरत्तिब)

दुआ से आंखें रौशन हो गईं

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक नाबीना को दुआ तालीम फ़रमाई कि बाद नमाज़ यूं कहे, इलाही मैं तुझ से मांगता और तेरी तरफ़ तवज्जोह करता हूँ बवसीला तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कि मेहरबानी के नबी हैं "या रसूलल्लाह" में हुज़ूर के वसीला से अपने रब की तरफ़ इस हाजत में तवज्जोह करता हूँ कि मेरी हाजत रवा हो, इलाही उनकी शफ़ाअत मेरे हक़ में क़बूल फ़रमा।

एक रिवायत में है कि इस दुआ के ख़त्म होते ही नाबीना की आंखें रौशन हो गईं।

(निसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बैहक़ी, तबरानी)

एक शख़्स की हाजत बर आरी

एह हाजतमन्द अपनी हाजत के लिए अमीरुल-मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में आता जाता, अमीरुल-मुमिनीन न उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात करते, न उसकी हाजत पर नज़र फ़रमाते। उसने उस्मान बिन हनीफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इस अम्र की शिकायत की, उन्होंने फ़रमाया वुज़ू करके मस्जिद में दो रकअत नमाज़ पढ़ फिर दुआ मांग। इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वसीले से तवज्जोह करता हूँ या रसूलल्लाह, मैं हुज़ूर के तवस्सुल से अपने रब की तरफ़ मुतवज्जेह होता हूँ कि मेरी हाजत रवा फ़रमाए। और अपनी हाजत ज़िक्र कर, फिर शाम को मेरे पास आना कि मैं भी तेरे साथ चलूं।

हाजतमन्द ने (कि वह भी सहाबी या कम से कम किबारे ताबईन में से थे) यूंहीं किया फिर आस्ताने ख़िलाफ़त पर हाज़िर हुए, दरबान आया और हाथ पकड़ कर अमीरुल-मुमिनीन के हुज़ूर ले गया, अमीरुल-मुमिनीन ने अपने साथ मसनद पर बैठा लिया, मतलब पूछा अर्ज़ किया, फ़ौरन रवा फ़रमाया और इरशाद किया इतने दिनों में उस वक़्त तुमने अपना मतलब बयान किया। फिर फ़रमाया जो हाजत तुम्हें पेश आया करे हमारे पास चले आया करो।

यह साहब वहाँ से निकल कर उस्मान बिन हनीफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मिले और कहा अल्लाह तआला तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे, अमीरुल-मुमिनीन मेरी हाजत पर नज़र और मेरी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाते थे यहाँ तक कि आपने उन से मेरी सिफ़ारिश की, उस्मान बिन हनीफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मैंने तुम्हारे मुआमला में अमीरुल-मुमिनीन से कुछ भी न कहा। मगर हुआ यह कि मैंने सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को

देखा हुज़ूर की ख़िदमते अक़्दस में एक नाबीना हाज़िर हुआ और बीनाई की शिकायत की, हुज़ूर ने यूं ही उससे इरशाद फरमाया कि वुज़ू करके दो रकअत पढ़े फिर यह दुआ करे, ख़ुदा की क़सम हम उठने भी न पाये थे, बातें ही कर रहे थे कि वह हमारे पास आया गोया कभी अंधा न था।

(मोजम तबरानी)

पाँव खुल गया

★ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का पाँव सो गया, किसी ने कहा उन्हें याद कीजिए जो आपको सबसे ज़्यादा महबूब हैं हज़रत ने बआवाज़ बुलन्द कहा या मुहम्मदाह! फौरन पाँव खुल गया। (तबरानी, मुन्ज़री)

★ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के पास किसी आदमी का पाँव सो गया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया तू उस शख़्स को याद कर जो तुम्हें सबसे ज़्यादा महबूब है तो उसने या मुहम्मदाह! कहा अच्छा हो गया। (नुर्वी किताबुल–अज़्कार)

यह अम्र उन दो सहाबियों के सिवा औरों से भी मरवी हुआ, अह्ले मदीना में क़दीम से इस या मुहम्मदाह! कहने की आदत चली आती है।

क़हत दूर होने की बशारत

हज़रत बिलाल बिन अल–हारिस मुज़्नी ने क़हत आमुर्रमादा में कि बाद ख़िलाफ़ते फ़ारूकी 18 हिजरी में वाक़े हुआ। उनकी क़ौम बनी मुज़ीना ने दरख़्वास्त की कि हम मरे जाते हैं, कोई बकरी ज़िबह कीजिए, फरमाया बकरियों में कुछ नहीं रहा है, उन्होंने इसरार किया, आख़िर ज़िबह की, खाल खींची तो निरी सुर्ख़ हड्डी निकली, यह देख कर बिलाल रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने निदा की या मुहम्मदाह! फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर (क़हत दूर होने की) बशारत दी। (कामिल इब्ने अदी, नसीमुर्रियाज़)

ग़ाइबाना निदा के जवाज़ पर फतावे

★ इमाम शैख़ुल–इस्लमा शहाबुद्दीन रमली अंसारी के फतावे में है :

यानी उन से इस्तिफ़्ता हुआ कि आम लोग जो सख़्तियों के वक़्त अंबिया व मुरसलीन व औलिया व सालेहीन से फरियाद करते, और या रसूलल्लाह, या अली, या शैख़ अब्दुल–क़ादिर जीलानी और उनके मिस्ल कलिमात कहते हैं यह जाइज़ है या नहीं और औलिया इंतिक़ाल के बाद भी मदद फरमाते हैं या नहीं?

उन्होंने जवाब दिया कि बेशक अंबिया व मुरसलीन व औलिया व उलमा से मदद मांगनी जाइज़ है और वह बाद इंतिक़ाल भी इम्दाद फरमाते हैं।

★ अल्लामा ख़ैरुद्दीन रमली फरमाते हैं :

लोग जो या शैख़ अब्दुल–क़ादिर कहते हैं तो यह एक निदा है फिर उसकी हुर्मत का सबब क्या है?

★ सैय्यद जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की अपने फतावा में फरमाते हैं :

यानी मुझ से सवाल हुआ उस शख़्स के बारे में जो मुसीबत के वक़्त में कहता हो या रसूलल्लाह, या अली, या शैख़ अब्दुल–क़ादिर मसलन आया यह शरअन जाइज़ है या नहीं?

मैंने जवाब दिया हाँ, औलिया से मदद मांगनी और उन्हें पुकारना और उनके साथ तवस्सुल करना शरअ़ में जाइज़ और पसन्दीदा चीज़ है जिसका इंकार न करेगा मगर हटधर्म या साहिबे इनाद और बेशक वह औलिया–ए–किराम की बरकत से महरूम है।

तीन औलिया की हिकायत

इमाम इब्ने जौज़ी किताब उयूनुल–हिकायत में तीन औलिया–ए–इज़ाम का अज़ीमुश्शान वाक़ेया बसनद मुसलसल रिवायत किया कि वह तीन भाई सवारान दिलावर साकिनाने शाम थे कि हमेशा राहे ख़ुदा में जिहाद करते।

यानी एक बार नसाराए रोम उन्हें क़ैद करके ले गये, बादशाह ने कहा मैं तुम्हें सलतनत दूँगा और अपनी बेटियाँ तुम्हें ब्याह दूँगा, तुम नसरानी हो जाओ, उन्होंने न माना और निदा की या मुहम्मदाह!

बादशाह ने देगों में तेल गर्म करा कर दो साहिबों को उसमें डाल दिया तीसरे को अल्लाह तआला ने एक सबब पैदा फरमा कर बचा लिया, वह दोनों छेः महीने के बाद मअ एक जमाअत मलाइका के बेदारी में उनके पास आए और फरमाया : अल्लाह तआला ने हमें तुम्हारी शादी में शरीक होने को भेजा है उन्होंने हाल पूछा फरमाया बस वही तेल का एक ग़ोता था जो तुमने देखा, उसके बाद हम जन्नते आला में थे।

इमाम इब्ने जौज़ी फरमाते हैं :

यह हज़रात ज़माना सल्फ़ में मशहूर थे और उनका यह वाक़ेया मारूफ़ है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

वह मरदाने ख़ुदा भी सल्फ़ सालेह में थे कि वाक़ेया शहर तरतूस की आबादी से पहले का है और तरतूस एक दारुल–इस्लाम की सरहद का शहर है जिसे ख़लीफ़ा हारून रशीद ने आबाद किया, हारून रशीद का ज़माना ज़मान–ए–ताबईन व तबअ् ताबईन था तो यह तीनों शोहदाए किराम अगर ताबई न थे कम अज़ कम तबअ् ताबईन से थे।

ग़ौसे आज़म की शाने फरियाद रसी और तरीक़ा नमाज़े ग़ौसिया

हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फरमाते हैं :

जो किसी तकलीफ़ में मुझ से फरियाद करे वह तकलीफ़ दफ़अ् हो, और जो किसी सख़्ती में मेरा नाम लेकर निदा करे वह सख़्ती दूर हो, और जो किसी हाजत में अल्लाह तआला की तरफ मुझ से तवस्सुल करे वह हाजत बर आए, और जो दो रकअत नमाज़ अदा करे, हर रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद, सूरः इख़्लास ग्यारह बार पढ़े फिर सलाम फेर कर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजे और मुझे याद करे, फिर इराक़ शरीफ़ की तरफ ग्यारह क़दम चले, उनमें मेरा नाम लेता जाए और अपनी हाजत याद करे उसकी वह हाजत रवा हो अल्लाह के इज़्न से।

अपने फ़रियादी की बर वक़्त इम्दाद

इमाम आरिफ़ बिल्लाह सैय्यदी अब्दुल–वहाब शोअ्रानी तब्क़ातुल–अख़्यार में फरमाते हैं :

सैय्यदी मुहम्मद ग़मरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक मुरीद बाज़ार में तशरीफ़ लिए जाते थे उनके जानवर का पाँव फिसला बआवाज़ पुकारा। या सैय्यदी मुहम्मद या ग़मरी।

उधर इब्ने उमर हाकिम सईद को बहुक्म सुल्तान चक़मक़ क़ैद किये लिए जाते थे, इब्ने उमर ने फ़क़ीर का निदा करना सुना, पूछा यह सैय्यदी मुहम्मद कौन हैं? कहा मेरे शैख़, कहा मैं ज़लील भी कहता हूँ, या सैय्यदी या ग़मरी ला हिज़्ज़नी। ऐ मेरे सरदार ऐ मुहम्मद ग़मरी मुझ पर नज़रे इनायत करो, उनका यह कहना था कि सैय्यदी मुहम्मद ग़मरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ लाए और मदद फरमाई कि बादशाह और उसके लशकरियों की जान पर बन गई, मज्बूरन इब्ने उमर को ख़िलअत देकर रुख़्सत किया।

फ़रियादे क़ल्बी सुन कर मदद को खड़ाऊं भेजी

तबक़ातुल–अख़्यार में है :

सैय्यदी शम्सुद्दीन मुहम्मद हन्फ़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने हुजर-ए-ख़ल्वत में वुज़ू फरमा रहे थे नागाह एक खड़ाऊं हवा पर फेंकी कि ग़ायब हो गई हालांकि हुजरे में कोई राह हवा पर जाने की न थी, दूसरी खड़ाऊं अपने ख़ादिम को अता फरमाई कि इसे अपने पास रहने दे जब तक वह पहली वापस आए।

एक मुद्दत के बाद मुल्क शाम से एक शख़्स वह खड़ाऊं मअ और हदाया के हाज़िर लाया और अर्ज़ की कि अल्लाह तआला हज़रत को जज़ाए ख़ैर दे, जब चोर मेरे सीना पर मुझे ज़िबह करने बैठा मैंने अपने दिल में कहा या सैय्यदी मुहम्मद या हन्फ़ी, उसी वक़्त यह खड़ाऊं ग़ैब से आकर उसके सीना पर लगी कि ग़श खा कर उल्टा हो गया और मुझे बबरकत हज़रत, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने नजात बख़्शी।

मरीज़ा का ख़्वाब में फ़रियादी होना और शिफ़ा पाना

इसी किताब तब्क़ातुल-अख़्यार में है :

सैय्यदी शम्सुद्दीन मुहम्मद हन्फ़ी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की ज़ौजा मुक़द्दसा बीमारी से क़रीब मर्ग हुईं तो वह यूं निदा करती थीं या सैय्यदी अहमद या बदवी ख़ातिरुका मई, ऐ मेरे सरदार, ऐ अहमद बदवी हज़रत की तवज्जोह मेरे साथ है।

एक दिन हज़रत सैय्यद अहमद कबीर बदवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में देखा कि फरमाते कब तक मुझे पुकारेगी और मुझ से फरियाद करेगी, तू जानती नहीं कि तू एक बड़े साहबे तम्कीन (यानी अपने शौहर) की हिमायत में है और जो किसी वली कबीर की दर्गाह में होता है हम उसकी निदा पर इजाबत नहीं करते, यूं कह या सैय्यदी मुहम्मद या हन्फ़ी! कि यह कहेगी तो अल्लाह तआला तुझे आफ़ियत बख़्शेगा, उन बीबी ने यूंही कहा सुबह को ख़ासी तन्दुरुस्त उठीं गोया कभी मरज़ न था।

खड़ाऊं फेंक कर दुख़्तर मुरीद की आबरू बचाई

इसी किताब में है :

मरवी हुआ एक बार हज़रत सैय्यदी मदयन बिन अहमद अश्मूनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने वुज़ू फरमाते में एक खड़ाऊं बिलादे मश्रिक़ की तरफ़ फेंकी, साल भर के बाद एक शख़्स हाज़िर हुए और वह खड़ाऊं उनके पास थी, उन्होंने हाल अर्ज़ किया कि जंगल में एक बद वज़अ़ ने उनकी साहबज़ादी पर दस्त दराज़ी चाही, लड़की को उस वक़्त अपने बाप के पीर व मुर्शिद हज़रत सैय्यदी मदयन का नाम मालूम न था, यूं निदा की या शैख़ अबी ला हिज़्नी, ऐ मेरे बाप के पीर मुझे बचाइए। यह निदा करते ही वह खड़ाऊं आई, लड़की ने नजात पाई, वह खड़ाऊं उनकी औलाद में अब तक मौजूद है।

गुमशुदा चीज़ के हुसूल के लिए निदा

अल्लामा शामी साहबे रद्दुल-मुह्तार हाशिया दुर्रे मुख़्तार, गुम्शुदा चीज़ मिलने के लिए फरमाते हैं : कि बुलन्दी पर जा कर हज़रत सैय्यदी अहमद बिन अल्वान यमनी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के लिए फातिहा पढ़े फिर उन्हें निदा करे कि या सैय्यदी अहमद या इब्ना अल्वान।

अत्तहीयात से जवाज़े निदा का सुबूत

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को निदा करने के उम्दा दलाइल से, अत्तहीयात, है जिसे हर नमाज़ी हर नमाज़ की दो रकअत पर पढ़ता है और अपने नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से अर्ज़ करता है।

अस्सलामु अलैका ऐयुहन्नबीयु व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू!

सलाम हुज़ूर पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।

अत्तहीयातु लिल्लाहे वस्सलवातु से हम्दे इलाही का क़स्द रखे। और अस्सलामु अलैका ऐयुहन्नबीयु व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू से यह इरादा करे कि इस वक़्त मैं अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सलाम करता और हुज़ूर से बिल–क़स्द अर्ज़ कर रहा हूँ कि सलाम हुज़ूर पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।

इसी तरह बहुत उलमा ने तस्रीह फ़रमाई, इस पर बाज़ सुफ़हाए मुन्केरीन यह उज़्र गढ़ते हैं कि सलात व सलाम पहुँचाने पर मलाइका मुक़र्रर हैं तो उनमें निदा जाइज़ और उनके मावरा में नाजाइज़ हालांकि यह सख़्त जिहालते बेमज़ा है। क़तअ्–ए–नज़र बहुत एतराज़ों से जो इस पर वारिद होते हैं, उन होशमन्दों ने इतना भी न देखा कि सिर्फ़ दरूद व सलाम ही नहीं बल्कि उम्मत के तमाम अक़्वाल व अफ़आल व आमाल रोज़ाना दो वक़्त सरकार अर्शे वक़ार सैय्यदुल–अबरार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में अर्ज़ किए जाते हैं।

अहादीसे कसीरा में तस्रीह है कि मुतलक़न आमाले हसना व सैय्यआ सब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में पेश होते हैं, और यूं ही तमाम अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और वालिदैन व अइज़्ज़ा व अक़ारिब सब पर अर्ज़ आमाल होती है।

हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं :

यानी कोई दिन ऐसा नहीं जिसमें सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर आमाले उम्मत हर सुबह व शाम पेश न किए जाते हों तो हुज़ूर का अपने उम्मतियों को पहचानना उनकी अलामत और उनके आमाल दोनों वजह से है।

(इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 100 ता 112)

मरदाने ग़ैब को निदा और मफ़रूर जानवर पकड़ पाने का अमल

ख़ुदा के कुछ बन्दे वह हैं जो वीरानों और जंगलों में रहते हैं वह किसी को नज़र नहीं आते उन्हें मरदाने ग़ैब या रिजालुल–ग़ैब कहते हैं वह भटके हुए इंसानों वग़ैरह की मदद करते हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तुम में किसी का जानवर जंगल में छूट जाए तो चाहिए यूं निदा करे ऐ ख़ुदा के बन्दे रोक लो कि अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ज़मीन में हैं जो उसे रोक लेंगे। (इब्नुस्सुन्नी, बज़्ज़ार)

एक रिवायत में है कि यूं कहे मदद करो ऐ ख़ुदा के बन्दो। (बज़्ज़ार)

इमाम नौवी रहमतुल्लाह तआला अलैह अज़्कार में फरमाते हैं हमारे बाज़ असातिज़ा ने कि आलिम कबीर थे ऐसा ही किया छूटा हुआ जानवर फौरन रुक गया।

और फरमाते हैं : एक बार हमारा एक जानवर छूट गया लोग आजिज़ आए हाथ न लगा मैंने यही कलिमा कहा फौरन रुक गया जिसका उसके कहने कि सिवा कोई सबब न था।

रिजालुल–ग़ैब से इस्तिम्दाद

एक हदीस में है : जब तुम में कोई शख़्स सुनसान जगह में बहके भूले या कोई चीज़ गुम करे और मदद मांगनी चाहे तो यूं कहे ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो, ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो, ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो, अल्लाह के कुछ बन्दे हैं जिन्हें यह नहीं देखता। (तबरानी)

उत्बान बिन ग़ज़वान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं यह बात आज़माई हुई है।

इन अहादीस में जिन बन्दगाने ख़ुदा को वक़्ते हाजत पुकारने और उन से मदद मांगने का साफ हुक्म है वह अब्दाल हैं कि एक क़िस्म है औलिया–ए–किराम से, यही क़ौल ज़्यादा मशहूर है। और मुम्किन कि मलाइका या मुसलमान सालेह जिन्न मुराद हों। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 531)

या रसूलल्लाह या वली अल्लाह कहना बे शुबह जाइज़

अंबिया औलिया को या के ज़रिया पुकारना मसलन या रसूलल्लाह, या वली अल्लाह, या अली मुश्किल कुशा, या ग़ौसुल–मदद वग़ैरह कहना बिला शुबह जाइज़ है, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी इसी क़िस्म के एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

या हर्फ़ निदा के ज़रिया से अंबिया व औलिया वग़ैरह को पुकारना, निदा करना जाइज़ है जब कि उन्हें बन्द–ए–ख़ुदा और उसकी बारगाह में वसीला जाने और और उन्हें बेइज़्ने इलाही उमूर की तदबीर करने वालों से माने और एतक़ाद करे कि बे हुक्म ख़ुदा ज़र्रा नहीं हिल सकता और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के दिए बग़ैर कोई एक दाना नहीं दे सकता, एक हर्फ़ नहीं सुन सकता, पलक नहीं हिला सकता। और बेशक सब मुसलमानों का यही एतक़ाद है इसके ख़िलाफ़ का उन पर गुमान महज़ बदगुमानी व हराम है और ऐसे सच्चे एतक़ाद के साथ निदा करना बिला शुबह जाइज़ है।

(अहकामे शरीअत अव्वल, स0 16)

हुक़ूके वालिदैन

इंसान पर जहाँ अपने ख़ालिक़ व माबूद की इताअत व फरमांबरदारी वाजिब व लाज़िम है वहाँ वालिदैन की इताअत भी जाइज़ बातों में औलाद पर लाज़िम की गई है। अल्लाह तआला ने हुक़ूक़े वालिदैन को अपने हक़ के साथ बयान फरमाया और अपने बन्दों को वालिदैन के साथ एहसान व हुस्ने सुलूक करने का हुक्म फरमाया, वालिदैन की रज़ा व ख़ुशनूदी से अल्लाह तआला ख़ुश होता है और उनकी ईज़ा रसानी से नाख़ुश व नाराज़ होता है, ग़र्ज़कि औलाद पर वालिदैन के हुक़ूक़ इतने हैं कि औलाद दुनिया में उन से बरीयुज़्ज़िम्मा नहीं हो सकती। (मुरत्तिब)

बाप का हक़ अज़ीम है या माँ का?

कुछ हुक़ूक़ की तफ़्सील व वज़ाहत अहादीस की रौशनी में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की तहरीर में मुलाहिज़ा फरमाएं, आप फरमाते हैं।

औलाद पर बाप का हक़ निहायत अज़ीम है और माँ का हक़ उस से अज़ीम।

अल्लाह तआला फरमाता है :

और हमने ताकीद की आदमी को अपने माँ–बाप के साथ नेक बर्ताव की उसे पेट में रखे रही उसकी माँ तक्लीफ से और उसे जना तक्लीफ़ से और उसका पेट में रहना और दूध छुटना तीस महीने में है। (अल–अहक़ाफ़ : 15)

इस आयते करीमा में रब्बुल–इज़्ज़त ने माँ–बाप दोनों के हक़ में ताकीद फरमा कर माँ को फिर ख़ास अलग करके गिना और उसकी सख़्तियों और तक्लीफ़ों को जो उसे हमल व विलादत और दो बरस तक अपने ख़ून का इत्र पिलाने में पेश आईं जिनके बाइस उसका हक़ बहुत अशद व आज़म हो गया शुमार फरमाया।

दूसरी आयत में इरशाद करता है :

ताकीद की हमने आदमी को उसके माँ–बाप के हक़ में पेट में रखा उसे उसकी माँ ने सख़्ती पर सख़्ती उठा कर और उसका दूध छुटना दो बरस में है यह कि हक़ मान मेरा और अपने माँ–बाप का।

(लुक़्मान : 14)

यहाँ माँ–बाप के हक़ में कोई निहायत न रखी कि उन्हें अपने हक़्क़ जलील के साथ शुमार किया, फरमाता है शुक्र बजा ला मेरा और अपने माँ–बाप का।

यह दोनों आयतें और इसी तरह बहुत हदीसें दलील हैं कि माँ का हक़्क़े बाप के हक़ से ज़ाइद है।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मैंने हुज़ूरे अक़्दस सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की औरत पर सबसे बड़ा हक़ किसका है फरमाया शौहर का, मैंने अर्ज़ की और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ किसका है फरमाया उसकी माँ का।

(मुसनद बज़्ज़ार, हाकिम)

अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर पुर नूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह सबसे ज़्यादा कौन उसका मुस्तहिक़ है कि मैं उसके साथ नेक रिफ़ाक़त करूं? फरमाया तेरी माँ, अर्ज़ की फिर। फरमाया तेरी माँ, अर्ज़ की फिर। फरमाया तेरी माँ, अर्ज़ की फिर फरमाया तेरा बाप।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

तीसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मैं आदमी को वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक़ में, वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक़ में, वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक़ में, वसीयत करता हूँ उसके बाप के हक़ में।(मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

बाप से माँ का हक़ ज़ाइद होने का मतलब

मगर इस ज़्यादत के यह मानी हैं कि ख़िदमत के देने में बाप पर माँ को तरजीह दे मसलन सौ रुपया हैं और कोई वजह ख़ास माँ की तफ़ज़ील में माने नहीं तो बाप को 25 दे माँ को 75। या माँ–बाप दोनों ने एक साथ पानी मांगा तो पहले माँ को पिलाए फिर बाप को। या दोनों सफर से आए हैं पहले माँ के पाँव दबाए फिर बाप के। व अला हाज़ल–क़्यास।

न यह कि अगर वालिदैन में बाहम तनाज़ु हो तो माँ का साथ देकर मआज़ल्लाह बाप के दर पे ईज़ा हो, या उस पर किसी तरह सख़्ती करे, या उसे जवाब दे, या बेअदबाना आंख मिला कर बात करे, यह सब बातें हराम और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की मासियत हैं और अल्लाह तआला की मासियत में न माँ की इताअत न बाप की, तो उसे माँ–बाप में किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं। वह दोनों उसकी जन्नत व नार हैं जिसे ईज़ा देगा दोज़ख़ का मुस्तहिक़ होगा। वल–अयाज़ बिल्लाहे तआला।

ख़िलाफ़े शरअ़ बात में किसी की इताअत नहीं

मासियत ख़ालिक़ में किसी की इताअत नहीं मसलन अगर माँ चाहती है कि यह माँ बाप को किसी तरह का आज़ार पहुँचाए और यह नहीं मानता तो वह नाराज़ होती है, होने दे और हरगिज़ न माने। ऐसे ही बाप की तरफ से माँ के मुआमला में उनकी ऐसी नाराज़ियाँ कुछ क़ाबिले लिहाज़ न होंगी कि यह उनकी निरी ज़्यादती है कि उस से अल्लाह तआला की नाफरमानी चाहते हैं।

बल्कि हमारे उलमा–ए–किराम ने यूं तक़्सीम फरमाई है कि ख़िदमत में माँ को तरजीह है और ताज़ीम बाप की ज़ाइद है कि वह उसकी माँ का भी हाकिम व आक़ा है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 59)

रब तआला की ख़ुशी नाख़ुशी वालिदैन की ख़ुशी व नाख़ुशी में

जो लड़का अपने बाप को या वालिदैन को सताए वह फ़ासिक़ व फाजिर गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब और आक़ व नाफरमान और अल्लाह तआला के अज़ाब व ग़ज़ब का मुस्तहिक़ है। बाप की नाफरमानी अल्लाह क़ह्हार व जब्बार की नाफरमानी है और बाप की नाराज़ी अल्लाह क़ह्हार व

जब्बार की नाराज़ी है। आदमी माँ–बाप को राज़ी करे तो वह उसकी जन्नत हैं और नाराज़ करे तो वही उसके दोज़ख़ हैं। जब तक माँ–बाप को राज़ी न करेगा उसका कोई फर्ज़, कोई नफ़्ल, कोई अमल नेक बिल्कुल क़बूल न होगा, अज़ाबे आख़िरत के अलावा दुनिया ही में जीते जी सख़्त बला नाज़िल होगी मरते वक़्त मआज़ल्लाह कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ; अल्लाह की इताअत है वालिद की इताअत और अल्लाह की मासियत है वालिद की मासियत। (तबरानी)

★ अल्लाह की रज़ा वालिद की रज़ा में है और अल्लाह की नाराज़ी वालिद की नाराज़ी में है। (तिर्मिज़ी, इब्ने हिब्बान)

★ मा–बाप तेरी जन्नत और तेरी दोज़ख़ हैं। (इब्ने माजा)

★ वालिद जन्नत के सब दरवाज़ों में बीच का दरवाज़ा है अब तू चाहे तो उस दरवाज़ा को अपने हाथ से खो दे ख़्वाह निगाह रख। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

औलाद के लिए तरहीब व तहदीद

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तीन शख़्स जन्नत में न जाएंगे।

1. माँ–बाप की नाफरमानी करने वाला।
2. और दैयूस।
3. और वह औरत कि मर्दानी वज़अ् बनाए। (निसई, बज़्ज़ार, हाकिम)

तीन शख़्सों का कोई फर्ज़ व नफ़्ल अल्लाह तआला क़बूल नहीं फरमाता।

1. आक़ यानी माँ–बाप का नाफरमान।
2. सदक़ा देकर एहसान जताने वाला।
3. और हर नेकी व बदी को तक़्दीरे इलाही से न मानने वाला। (इब्ने आसिम किताबुस्सुन्नः)

और एक हदीस में है सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिए उठा रखता है मगर माँ–बाप की नाफरमानी कि उसकी सज़ा जीते जी पहुँचाता है। (हाकिम, तबरानी)

एक जवान का इबरतनाक वाक़ेया

हदीस में है एक जवान नज़अ् में था उसे कलिमा तल्क़ीन करते थे न कहा जाता था यहाँ तक कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गये और फरमाया कह ला इलाहा इल्लल्लाह अर्ज़ की नहीं कहा जाता, मालूम हुआ कि माँ नाराज़ है उसे राज़ी किया तो कलिमा ज़बान से निकला। (मुसनद अहमद, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 58)

सौतेली माँ का हक़ व हुरमत

सौतेली माँ एक अज़ीम व ख़ास इलाक़ा उसके बाप से रखती है जिसके बाइस उसकी ताज़ीम व हुरमत उस पर बिला शुबह लाज़िम। इसी हुरमत के बाइस रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला व उला ने उसे हक़ीक़ी माँ के मिस्ले हराम अबदी किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक सब नेकों कारियों से बढ़ कर नेकोंकारी यह है, कि फरज़न्द अपने बाप के दोस्तों से अच्छा सुलूक करे। (मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने माँ–बाप के साथ नेकोंकारी के तरीक़ों में यह भी शुमार फरमाया कि उनके दोस्त की इज़्ज़त की जाए। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

जब बाप के दोस्तों की निस्बत यह अहकाम, तो उसकी मन्कूहा, उसकी नामूस की ताज़ीम व

तक्रीम क्यों न अहक़ व अकद होगी ख़ुसूसन जबकि उसकी नाराज़गी में बाप की नाराज़ी हो कि बाप की नाराज़ी अल्लाह तआला की नाराज़ी है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 58)

औलाद के लिए वालिद की शरई ज़िम्मेदारियाँ

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अगरचे वालिद का हक़ वल्द पर निहायत अज़ीम बताया मगर वल्द का हक़ भी वालिद पर अज़ीम रखा है।

1. दीनदार लोगों में शादी करे कि बच्चा पर नाना व मामूं की आदात व अफ़आल का भी असर पड़ता है।

2. जिमाअ़ की इब्तिदा बिस्मिल्लाह से करे वरना बच्चा में शैतान शरीक हो जाता है।

3. उस वक़्त शर्मगाह ज़न पर नज़र न करे कि बच्चा के अन्धे होने का अन्देशा है।

4. ज़्यादा बातें न करे कि गूंगे या तोतले होने का ख़तरा है।

5. मर्द व ज़न कपड़ा ओढ़ लें जानवरों की तरह बरहना न हों कि बच्चा के बेहया होने का ख़दशा है।

6. जब पैदा हो फौरन सीधे कान में अज़ान, बाएं में तक्बीर कहे कि ख़लल शैतान व उम्मुस्सिबयान से बचे।

7. छोहारा वग़ैरह कोई मीठी चीज़ चबा कर उसके मुँह में डाले कि हलावते अख़्लाक़ की फाल हसन है।

8. सातवें और न हो सके तो चौदहवें वरना इक्कीसवें दिन अक़ीक़ा करे, दुख़्तर के लिए एक, पिसर के लिए दो बकरे, कि इसमें बच्चा को गोया रहन से छुड़ाना है।

9. एक रान दाई को दे कि बच्चा की तरफ से शुक्राना है।

10. सर के बाल उतरवाए।

11. बालों के बराबर चाँदी तौल कर ख़ैरात करे।

12. सर पर ज़ाफ़रान लगाए।

13. नाम रखे यहाँ तक कि कच्चे बच्चे का जो कम दिनों का गिर जाए, वरना अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के यहाँ शाकी होगा।

14. बुरा नाम न रखे कि बद, फाले बद है।

15. अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अहमद, हामिद वग़ैरहा इबादत व हम्द के नाम, या अंबिया औलिया, या अपने बुज़ुर्गों में जो नेक लोग गुज़रे हों उनके नाम पर नाम रखे कि मौजिबे बरकत है ख़ुसूसन नाम पाक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कि इस मुबारक नाम की बेपायाँ बरकत बच्चा के दुनिया व आख़िरत में काम आती है।

16. जब मुहम्मद नाम रखे तो उसकी ताज़ीम व तक्रीम करे।

17. मज्लिस में उसके लिए जगह छोड़े।

18. मारने बुरा कहने में एहतियात रखे।

19. जो मांगे बर वजह मुनासिब दे।

20. प्यार में छोटे लक़ब बे-क़द्र नाम न रखे कि पड़ा हुआ नाम मुश्किल से छूटता है।

21. माँ, ख़्वाह नेक दाया नमाज़ी सालेहा शरीफुल-क़ौम से दो साल तक दूध पिलवाए।

22. रज़ील या बद अफ़आल औरत के दूध से बचाए कि दूध तबीअत को बदल देता है।

23. बच्चा का नफ़क़ा उसकी हाजत के सब सामान मुहैया करना ख़ुद वाजिब है जिनमें हिफ़ाज़त भी दाख़िल।

24. अपने हवाइज व अदाए वाजिबाते शरीअत से जो कुछ बचे उसमें अज़ीज़ों, क़रीबों, मुहताजों,

ग़रीबों सब से पहले हक़ अयाल व अतफ़ाल का है जो उन से बचे वह औरों को पहुँचे।

25. बच्चा को पाक कमाई से पाक रोज़ी दे कि नापाक माल नापाक ही आदतें लाता है।

26. औलाद के साथ तन्हा ख़ोरी न बरते बल्कि अपनी ख़्वाहिश को उनकी ख़्वाहिश का ताबे रखे जिस अच्छी चीज़ को उनका जी चाहे उन्हें देकर उनके तुफ़ैल में आप भी खाए। ज़्यादा न हो तो उन्हीं को खिलाए।

27. ख़ुदा की इन अमानतों के साथ महर व लुत्फ़ का बर्ताव रखे।

28. उन्हें प्यार करे, बदन से लिपटाए, कन्धे पर चढ़ाए, उनके हंसने खेलने, बहलने की बातें करे, उनकी दिलजोई दिलदारी, रिआयत व मुहाफ़िज़त हर वक़्त हत्ता कि नमाज़ व ख़ुतबा में मल्हूज़ रखे।

29. नया मेवा, नया फल पहले उन्हीं को दे कि वह भी ताज़े फल हैं नये को नया मुनासिब है।

30. कभी–कभी हस्बे मक़्दूर उन्हें शीरनी खाने, पहनने, खेलने की अच्छी चीज़ कि शरअन जाइज़ है देता रहे।

31. बहलाने के लिए झूठा वादा न करे बल्कि बच्चा से भी वादा वही जाइज़ है जिसको पूरा करने का क़स्द रखता हो।

32. अपने चन्द बच्चे हों तो जो चीज़ दे सबको बराबर व यक्सां दे एक को दूसरे पर बेफ़ज़ीलते दीनी तरजीह न दे।

33. सफर से आए तो उनके लिए कुछ तोहफ़ा ज़रूर लाए।

34. बीमार हों तो इलाज करे।

35. हत्तल–इम्कान सख़्त व मूज़ी इलाज से बचाए।

36. ज़बान खुलते ही अल्लाह अल्लाह फिर कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह फिर पूरा कलिमा तैयबा सिखाए।

37. जब तमीज़ आए अदब सिखाए, खाने, पीने, हंसने, बोलने, उठने, बैठने, चलने, फिरने, हया लिहाज़, बुज़ुर्गों की ताज़ीम, माँ–बाप, उस्ताद और दुख़्तर को शौहर के भी इताअत के तुर्क़ व आदाब बताए।

38. क़ुरआन मजीद पढ़ाए।

39. उस्ताद नेक सालेह मुत्तक़ी सहीहुल–अक़ीदा सिन रसीदा के सुपुर्द करे, और दुख़्तर को नेक पारसा औरत से पढ़वाए।

40. बाद ख़त्मे क़ुरआन हमेशा तिलावत की ताकीद रखे।

41. अक़ाइदे इस्लाम व सुन्नत सिखाए कि लौह सादा, फ़ितरते इस्लामी व क़बूले हक़ पर मख़्लूक़ है उस वक़्त का बताया पत्थर की लकीर होगा।

42. हुज़ूरे अक़्दस रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत व ताज़ीम उनके दिल में डाले कि असल ईमान व ऐने ईमान है।

43. हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आल व असहाब व औलिया व उलमा की मुहब्बत व अज़मत तालीम करे कि असल सुन्नत व ज़ेवरे ईमान बल्कि बाइसे बक़ाए ईमान है।

44. सात बरस की उम्र से नमाज़ की ज़बानी ताकीद शुरू करे।

45. इल्मे दीन ख़ुसूसन वुज़ू ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअत, ज़ुहद, इख़्लास, तवाज़ु, अमानत, सिद्क़, अद्ल, हया, सलामत, सद्र व लिसान वग़ैरहा ख़ूबियों के फ़ज़ाइल। हिर्स व तमअ़, हुब्बे दुनिया, हुब्बे जाह, रिया, उजुब, तकब्बुर, ख़्यानत, किज़्ब, ज़ुल्म, फ़हश, ग़ीबत, हसद, कीना वग़ैरहा बुराईयों के रज़ाइल पढ़ाए।

46. पढ़ाने, सिखाने में रफ़क़ व नर्मी मल्हूज़ रखे।

47. मौक़ा पर चश्म नुमाई, तंबीह, तहदीद करे मगर कोसना न दे कि उसका कोसना उनके लिए सबबे इस्लाह न होगा। बल्कि और ज़्यादा फ़साद का अन्देशा है।

48. मारे तो मुँह पर न मारे।

49. अक्सर औक़ात तहदीद व तख़्वीफ़ पर क़ानेअ रहे, कूड़ा क़म्ची उसके पेशे नज़र रखे कि दिल में रुअब रहे।

50. ज़माना तालीम में एक वक़्त खेलने का भी दे कि तबीअत निशात पर बाक़ी रहे।

51. मगर ज़न्हार ज़न्हार बुरी सोहबत में न बैठने दे कि यारे बद मारे बद से बदतर है।

52. न हरगिज़ हरगिज़ बहारे दानिश, मीनाबाज़ार, मस्नवी ग़नीमत वग़ैरहा कुतुब इश्क़ीया व ग़ज़्लियाते फ़िस्क़ीया देखने दे कि नर्म लकड़ी जिधर झुकाए झुक जाती है।

53. जब दस बरस का हो नमाज़ मार कर पढ़ाए।

54. इस उम्र से अपने, ख़्वाह किसी के साथ न सुलाए, जुदा बिछौने, जुदा पलंग पर अपने पास रखे।

55. जब जवान हो शादी कर दे, शादी में वही रिआयत क़ौम व दीन व सूरत व सीरत मल्हूज़ रखे।

56. अब जो ऐसा काम कहना हो जिसमें नाफ़रमानी का एहतमाल हो उसे अम्र व हुक्म के सेग़ा से न कहे बल्कि बरफ़क़ व नर्मी बतौर मशवरा कहे कि वह बलाए उक़ूक़ न पड़े।

57. उसे मीरास से महरूम न करे, जैसे बाज़ लोग अपने किसी वारिस को न पहुँचने की ग़रज़ से कुल जाइदाद दूसरे वारिस या किसी ग़ैर के नाम लिख देते हैं।

58. अपने बादे मर्ग भी उनकी फ़िक्र रखे यानी कम से कम दो तिहाई तरेका छोड़ जाए, सुल्स से ज़्यादा ख़ैरात न करे।

पिसर के ख़ुसूसी हुक़ूक़

यह अट्ठावन हक़ तो पिसर व दुख़्तर सबके हैं बल्कि दो हक़ अख़ीर में सब वारिस शरीक। और ख़ास पिसर के हुक़ूक़ से है कि –

★ उसे लिखना, पैरना, सिपहगीरी सिखाए।

★ सूरः माइदा की तालीम दे।

★ एलान के साथ उसका ख़त्ना करे।

दुख़्तर के ख़ुसूसी हुक़ूक़

1. उसके पैदा होने पर नाख़ुशी न करे बल्कि नेमते इलाहिया जाने।
2. उसे सीना, पिरोना, कातना, खाना पकाना सिखाए।
3. सूरः नूर की तालीम दे।
4. लिखना हरगिज़ न सिखाए कि एहतमाले फ़ित्ना है।
5. बेटों से ज़्यादा दिलजोई व ख़ातिरदारी रखे कि उनका दिल बहुत थोड़ा होता है।
6. देने में उन्हें और बेटों को, कांटे की तौल बराबर रखे।
7. जो चीज़ दे पहले उन्हें देकर बेटों को दे।
8. नौ बरस की उम्र से न अपने पास सुलाए न भाई वग़ैरह के पास सोने दे।
9. इस उम्र से ख़ास निगहदाश्त शुरू कर दे।

10. शादी बरात में जहाँ गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे अगरचे ख़ास अपने भाई के यहाँ हो कि गाना सख़्त संगीन जादू है और उन नाज़ुक शीशों को थोड़ी ठेस बहुत है, बल्कि हंगामों में जाने की मुतलक़ बन्दिश करे।

11. घर को उन पर ज़िन्दां कर दे, बाला खानों पर न रहने दे। यानी सख़्ती के साथ पर्दे का एहतमाम करे।

12. घर में लिबास व ज़ेवर से आरास्ता करे कि प्याम रग़बत के साथ आएं।

13. जब कुफ़्व मिले निकाह में देर न करे।

14. हत्तल–इम्कान बारा बरस की उम्र में ब्याह दे।

15. ज़न्हार ज़न्हार किसी फासिक़ फाजिर ख़ुसूसन बद मज़हब के निकाह में न दे।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, सफ़हा 46, 47)

औलाद पर वालिदैन के हुक़ूक़

हुक़ूक़े इंसानी की हिफ़ाज़त व सियानत इंसान की अज़ीम शराफ़त व नेकी है हर इंसान पर उसकी हैसियत के मुताबिक़ हुक़ूक़ आइद होते हैं जिस तरह वालिदैन पर यह लाज़िम है कि वह अपनी औलाद की परवरिश और सहीह तर्बियत करे उन्हें हर क़िस्म की ख़ुराफात व बुराईयों से रोके और दीनी बातों पर उन्हें आमिल व पाबन्द बनाए और दोनों जहाँ की मुज़रत व नुक़्सान से बचाने की तदबीर करे। इसी तरह वालिदैन के औलाद पर कुछ हुक़ूक़ होते हैं ज़िन्दगी में वालिदैन के साथ तो हुस्ने सुलूक करना ही होगा उनकी वफ़ात के बाद भी उनके हुक़ूक़ की रिआयत करनी होगी।

(मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने अहादीस व आसार की रौशनी में औलाद पर वालिदैन के जो हुक़ूक़ मुरत्तिब फरमाए हैं वह यह हैं।

1. सबसे पहला हक़ बाद मौत उनके जनाज़े की तज्हीज़, ग़ुस्ल व कफ़न व नमाज़ व दफ़न है और उन कामों में सुनन व मुस्तहब्बात की रिआयत, जिससे उनके लिए हर ख़ूबी व बरकत व रहमत व वुस्अत की उम्मीद हो।

2. उनके लिए दुआ व इस्तिग़फ़ार हमेशा करते रहना, उस से कभी ग़फ़्लत न करना।

3. सदक़ा व ख़ैरात व आमाले सालेहात का सवाब उन्हें पहुंचाते रहना, हस्बे ताक़त उसमें कमी न करना, अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ना। अपने रोज़ों के साथ उनके वास्ते भी रोज़ा रखना बल्कि जो नेक काम करे सबका सवाब उन्हें और सब मुसलमानों को बख़्श देना कि उन सबको सवाब पहुँच जाएगा और उसके सवाब में कमी न होगी बल्कि बहुत तरक़्क़ियाँ पाएगा।

4. उन पर कोई क़र्ज़ किसी का हो तो उसके अदा में हद दर्जे की जल्दी व कोशिश करना और अपने माल से उनका क़र्ज़ अदा होने को दोनों जहाँ की सआदत समझना आप कुदरत न हो तो और अज़ीज़ों क़रीबों फिर बाक़ी अह्ले ख़ैर से उसके अदा में इम्दाद लेना।

5. उन पर कोई क़र्ज़ रह गया तो बक़द्र कुदरत उसके अदा में सई बजा लाना, हज न किया हो तो ख़ुद उनकी तरफ से हज करना, या हज्जे बदल कराना, ज़कात या उश्र का मुतालबा उन पर रहा तो उसे अदा करना, नमाज़ या रोज़ा बाक़ी हो तो उसका कफ़्फ़ारा देना, हर तरह उनकी बराअत ज़िम्मा में जद्दो जहद करना।

6. उन्होंने जो वसीयते जाइज़ा शरईया की हो हत्तल—इम्कान उसके निफाज़ में सई करना, अगरचे शरअन अपने ऊपर लाज़िम न हो, अगरचे अपने पर बार हो मसलन वह निस्फ़ जाइदाद की वसीयत अपने किसी अज़ीज़ गै़र वारिस या अजनबी महज़ के लिए कर गये तो शरअन तिहाई माल से ज़्यादा में बेइजाज़त वारिसान नाफ़िज़ नहीं। मगर औलाद को मुनासिब है कि उनकी वसीयत मानें और उनकी ख़ुशी पूरी करने को अपनी ख़्वाहिश पर मुक़द्दम जानें।

7. उनकी क़सम बाद मर्ग भी सच्ची ही रखना मसलन माँ—बाप ने क़सम खाई थी कि मेरा बेटा फ़लां जगह न जाएगा, या फलां से न मिलेगा, या फलां काम करेगा तो उनके बाद यह ख़्याल न करना कि अब वह तो हैं नहीं उनकी क़सम का क्या ख़्याल, नहीं बल्कि उसका वैसा ही पाबन्द रहना जैसा उनकी हयात में रहता जब तक कोई हरजे शरई माने न हो। और कुछ क़सम ही पर मौक़ूफ़ नहीं हर तरह उमूरे जाइज़ा में बाद मर्ग भी उनकी मर्ज़ी का पाबन्द रहना।

8. हर जुमा को उनकी ज़्यारत क़ब्र के लिए जाना वहाँ यासीन शरीफ़ ऐसी आवाज़ से कि वह सुनें पढ़ना और उसका सवाब उसकी रूह को पहुंचाना, राह में जब कभी उनकी क़ब्र आए बे सलाम व फातिहा न गुज़रना।

9. उनके रिश्तादारों के साथ उम्र भर नेक सुलूक किए जाना।

10. उनके दोस्तों से दोस्ती निभाना, हमेशा उनका एज़ाज़ व इकराम रखना।

11. कभी किसी के माँ—बाप को बुरा कह कर जवाब में उन्हें बुरा न कहलवाना।

12. सब में सख़्त तर यह हक़ है कि कभी कोई गुनाह करके उन्हें क़ब्र में रंज न पहुंचाना, उसके सब आमाल की ख़बर माँ—बाप को पहुंचती है। नेकियाँ देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और उनका चेहरा फरहत से चमकता और दमकता रहता है और गुनाह देखते हैं तो रंजीदा होते हैं और उनके क़ल्ब पर सदमा होता। माँ—बाप का यह हक़ नहीं कि क़ब्र में भी उन्हें रंज पहुँचाए।

हुक़ूक़े औलाद और अहादीस

हदीस 1 : एक अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह माँ—बाप के इंतिक़ाल के बाद कोई तरीक़ा उनके साथ निकोई का बाक़ी है जिसे मैं बजा लाऊं फरमाया हाँ चार बातें हैं।

(1) उन पर नमाज़ और उनके लिए दुआए मग़्फ़िरत।

(2) और उनकी वसीयत नाफ़िज़ करना।

(3) और उनके दोस्तों की बुज़ुर गुदाश्त।

(4) और जो रिश्ता सिर्फ़ उन्हीं की जानिब से हो नेक बर्ताव से उसका क़ाइम रखना। यह वह निकोई है कि उनकी मौत के बाद उनके साथ करनी बाक़ी है। (इब्नुनज्जार)

हदीस 2 : बाप के साथ नेक सुलूक से यह बात है कि औलाद उनके बाद उनके लिए दुआए मग़्फ़िरत करे। (इब्नुनज्जार)

हदीस 3 : आदमी जब माँ—बाप के लिए दुआ छोड़ देता है उसका रिज़्क़ क़तअ़ हो जाता है। (तारीख़ तबरानी)

हदीस 4 : जब तुम में कोई शख़्स कुछ नफ्ल ख़ैरात करे तो चाहिए कि उसे अपने माँ—बाप की तरफ से करे कि उसका सवाब उन्हें मिलेगा और उसके सवाब से कुछ न घटेगा। (तबरानी औसत, इब्ने असाकिर)

हदीस 5 : एक सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह मैं अपने माँ—बाप के साथ ज़िन्दगी में उनके साथ नेक सुलूक करता था अब वह मर गये, उनके साथ नेक सुलूक की क्या राह है फरमाया : बाद मर्ग नेक सुलूक से यह है कि तू अपनी नमाज़ के साथ

उनके लिए नमाज़ पढ़े, और अपने रोज़ों के साथ उनके लिए रोज़े रखे। यानी जब अपने सवाब मिलने के लिए कुछ नमाज़ नफ़्ल पढ़े, या रोज़े रखे तो कुछ नमाज़ नफ़्ल उनकी तरफ़ से पढ़ कर उन्हें सवाब पहुंचाए। या नमाज़ रोज़ा जो अमल नेक करे साथ ही उन्हें सवाब पहुंचने की भी नीयत कर ले कि उन्हें भी मिलेगा और तेरा भी कम न होगा। (दारे क़ुतनी)

हदीस 6 : जो अपने माँ–बाप की तरफ़ से हज करे या उनका क़र्ज़ अदा करे रोज़े क़्यामत नेकों के साथ उठे। (तबरानी, दारे क़ुतनी)

हदीस 7 : अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर अस्सी हज़ार क़र्ज़ थे वक़्ते वफ़ात अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को बुला कर फरमाया मेरे दैन में अव्वल तो मेरा माल बेचना अगर काफी हो जाए तो ठीक है वरना मेरी क़ौम बनी अदी से मांग कर पूरा करना, अगर यूं भी पूरा न हो तो क़ुरैश से मांगना और उनके सिवा औरों से सवाल न करना, फिर साहबज़ाद–ए–मौसूफ़ से फरमाया तुम मेरे क़र्ज़ की ज़मानत कर लो वह ज़ामिन हो गये और अमीरुल–मुमिनीन के दफन से पहले अकाबिर मुहाजेरीन व अंसार को गवाह कर लिया कि वह अस्सी हज़ार मुझ पर हैं, एक हफ़्ता न गुज़रा था कि अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने वह सारा क़र्ज़ अदा कर दिया। (तब्क़ाते इब्ने सअद)

हदीस 8 : क़बीला जहनीया से एक बीबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह! मेरी माँ ने हज करने की मन्नत मानी थी वह अदा न कर सकीं और उनका इंतिक़ाल हो गया क्या मैं उनकी तरफ से हज कर लूं? फरमाया : हाँ उसकी तरफ से हज कर भला तू देख तो तेरी माँ पर अगर दैन होता तो अदा करती या नहीं यूं ही ख़ुदा का दैन अदा करो कि वह ज़्यादा हक़ अदा का रखता है।

हदीस 9 : इंसान जब अपने वालिदैन की तरफ से हज करता है वह हज उसकी और उनकी सबकी तरफ से क़बूल किया जाता है और उनकी रूहें आसमान में उस से शाद होती हैं और यह शख़्स अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के नज़्दीक माँ–बाप के साथ नेक सुलूक करने वालों में लिखा जाता है। (दारे क़ुतनी)

हदीस 10 : जो अपने माँ–बाप की तरफ से हज करे उनकी तरफ से हज अदा हो जाए और उसे दस हज का सवाब ज़्यादा मिले। (दारे क़ुतनी)

हदीस 11 : जो अपने वालिदैन के बाद उनकी तरफ से हज करे अल्लाह तआला उसके लिए दोज़ख़ से आज़ादी लिखे और उन दोनों के वास्ते पूरे हज का सवाब हो जिसमें बिल्कुल कभी न हो। (शअबुल–ईमान)

हदीस 12 : जो शख़्स अपने माँ–बाप के बाद उनकी क़सम सच्ची करे और उनका क़र्ज़ अदा करे और किसी के माँ–बाप को बुरा कह कर उन्हें बुरा न कहलवाए वह वालिदैन के साथ नेकोंकार लिखा जाता है अगरचे उनकी ज़िन्दगी में नाफरमान था और जो उनकी क़सम पूरी न करे और उनका क़र्ज़ न उतारे और औरों के वालिदैन को बुरा कह कर उन्हें बुरा कहलवाए वह आक़ लिखा जाए-अगरचे उनकी हयात में नेकोंकार था। (तबरानी औसत)

हदीस 13 : जो अपने माँ–बाप की क़ब्र की ज़्यारत करे हर जुमा को, अपने मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला लिखा जाए। (नवादिरुल उसूल, हकीम तिर्मिज़ी) और उसके पास यासीन पढ़े बख़्श दिया जावे। (इब्ने अदी)

हदीस 14 : जो शख़्स रोज़े जुमा अपने वालिदैन या एक की ज़्यारते क़ब्र करे।

हदीस 15 : जो हर जुमा वालिदैन या एक की ज़्यारते क़ब्र करे वहाँ यासीन पढ़े, यासीन शरीफ़ में जितने हुरूफ़ हैं उन सबकी गिनती के बराबर अल्लाह तआला उसके लिए मग़्फ़िरत फरमाए।
(इब्ने अदी, दैलमी)

हदीस 16 : जो बनीयते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की ज़्यारते क़ब्र करे हज्जे मक़्बूल के बराबर सवाब पाए। और जो बकसरत उनकी ज़्यारते क़ब्र करता हो फ़रिश्ते उसकी क़ब्र को ज़्यारत को आवें। (नवादिरुल–उसूल)

इमाम इब्नुल–जौज़ी मुहद्दिस किताब "उयूनुल–हिकायत" में बसनद ख़ुद मुहम्मद इब्नुल–अब्बास वराक़ से रिवायत फरमाते हैं :

एक शख़्स अपने बेटे के साथ सफर को गया राह में बाप का इंतिक़ाल हो गया वह जंगल गूगल के पेड़ों का था उनके नीचे दफन करके बेटा जहाँ जाता था चला गया जब पलट कर आया उस मंज़िल में रात को पहुंचा बाप की क़ब्र पर न गया, नागाह सुना कि कोई कहने वाला कहता है।

मैंने तुझे देखा कि तू रात में उस जंगल को तय करता है और वह जो उन पेड़ों में है उससे कलाम करना अपने ऊपर लाज़िम नहीं जानता, हालांकि उन दरख़्तों में वह मुक़ीम है अगर तू उसकी जगह होता और वह यहाँ गुज़रता तो वह राह से फिर कर आता और तेरी क़ब्र पर सलाम करता।
(उयूनुल–हिकायत)

हदीस 17 : जो चाहे कि बाप की क़ब्र में उसके साथ हुस्ने सुलूक करे वह बाप के बाद उसके अज़ीज़ों, दोस्तों से नेक बर्ताव रखे। (अबू यअ़ला, इब्ने हिब्बान)

हदीस 18 : बाप के साथ नेकोंकारी से है यह कि तू उसके दोस्त से नेक बर्ताव रखे।
(तबरानी औसत)

हदीस 19 : बेशक बाप के साथ सब नेकोंकारियों से बढ़ कर यह नेकोंकारी है कि आदमी बाप के मरने के बाद उसके दोस्तों से अच्छी रविश पर रहे। (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

हदीस 20 : अपने माँ–बाप की दोस्ती निगाह में रख उसे क़तअ़ न करना कि अल्लाह तआला तेरा नूर बुझा देगा। (शअ़बुल–ईमान)

हदीस 21 : हर दो शंबा व पंजशंबा को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर आमाल पेश होते हैं और अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और माँ–बाप के सामने हर जुमा को, वह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उनके चेहरों की सफ़ाई व ताबिश बढ़ जाती है तो अल्लाह से डरो और अपने मुर्दों को अपने गुनाहों से रंज न पहुंचाओ। (नवादिरुल–उसूल)

बिल–जुम्ला वालिदैन का हक़ वह नहीं कि इंसान उस से कभी ओहदा बर आ हो, वह उसके हयात व वजूद के सबब हैं तो जो कुछ नेमतें दीनी व दुनियवी पाएगा सब उन्हीं के तुफ़ैल में हुईं कि हर नेमत व कमाल वजूद पर मौक़ूफ़ है और वजूद के सबब वह हुए तो सिर्फ़ माँ–बाप होना ही ऐसे अज़ीम हक़ का मौजिब है जिससे बरियुज़्ज़िम्मा कभी नहीं हो सकता न कि उसके साथ उसकी परवरिश में उनकी कोशिशें और उसके आराम के लिए उनकी तक्लीफ़ें ख़ुसूसन पेट में रखने, पैदा होने, दूध पिलाने में माँ की अज़ीयतें, उनका शुक्र कहाँ तक अदा हो सकता है।

ख़ुलासा यह कि वह उसके लिए अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साए और उनकी रबूबियत व रहमत के मज़हर हैं। इसलिए कुरआने अज़ीम में अल्लाह जल्ला जलालुहू ने अपने हक़ के साथ उनका हक़ ज़िक्र फरमाया कि हक़ मान मेरा और अपने माँ–बाप का।

एक सहाबी की ख़िदमते मादर

हदीस में है एक सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की एक राह में ऐसे

पत्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब हो जाते, मैं 6 मील तक अपनी माँ को अपनी गर्दन पर सवार करके ले गया हूँ क्या मैं उसके हक़ से अदा हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तेरे पैदा होने में जिस क़द्र दर्दों के झटके उसने उठाए हैं शायद उन में एक झटके का बदला हो सके। (तबरानी औसत, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 192 ता 195)

बेटे का माल बाप का माल

औलाद को हुकूक़े पिदरी का ख़्याल न करना उसके साथ सरकशी व मुख़ालिफ़त से पेश आना अपने लिए दोज़ख़ का अज़ाबे शदीद और रब्बे क़ह्हार का ग़ज़ब वाजिब करता है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने कुरआने अज़ीम में फर्ज़ किया कि –

★ वालिदैन के साथ एहसान करो। (सूरः निसा : 36)

★ उन्हें हूँ न कहो। (सूरः असरा : 23)

★ उन से एज़ाज़ व इकराम का कलाम करो। (सूरः असरा : 23)

★ उनके लिए ख़ास मुहब्बत से तज़ल्लुल का बाज़ू बिछाओ। (सूरः असरा : 24)

★ उनके लिए दुआ करो कि इलाही उन पर रहम फरमा जैसा उन्होंने मुझे बचपन में पाला। (सूरः असरा : 28)

माल के लिए माँ–बाप से मुख़ासिमत व झगड़ा बेहयाई व बेबाकी और नेमत की नाशुक्री है।

हदीस में है रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ख़बरदार माँ–बाप की नाफरमानी न कर अगरचे वह तुझे हुक्म दें कि अपने जोरु, बच्चों, माले मताअ़ सबसे निकल जा। (मुसनद अहमद, तबरानी कबीर)

दूसरी रिवायत में है अपने माँ–बाप का हुक्म मान अगरचे वह तुझे तेरे माल और तेरी सब चीज़ों से तुझे बाहर कर दें। (तबरानी औसत)

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू बेटे को तंबीह करते हुए फरमाते हैं।

ओ नाशुक्र, ख़ुदा नातरस, माल लाया कहाँ से, तेरा गोश्त, पोस्त, इस्तिख़्वां सब तेरे माँ–बाप का है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तू और तेरा माल सब तेरे बाप का। यह उस वक़्त इरशाद हुआ कि एक साहब हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलल्लाह माल व अयाल रखता हूँ और मेरे बाप मेरा सब माल ले लेना चाहते हैं यानी फिर मैं और मेरे बाल बच्चे क्या खायेंगे फरमाया तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है तुझे उससे इंकार नहीं पहुँचता। (तबरानी कबीर)

इससे मालूम हुआ कि बाप अगर बेटे के माल से कुछ ले ले तो उसे रवा है और बेटे को एतराज़ का हक़ हासिल नहीं।

एक बूढ़े बाप के कुछ दर्द अंगेज़ अश्आर

हदीस में है एक शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हो कर अर्ज़ रसां हुए या रसूलल्लाह मेरे बाप मेरा माल ले लेना चाहते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया उन्हें हमारे हुज़ूर में हाज़िर लाओ जब हाज़िर हुए उन से इरशाद हुआ तुम्हारा बेटा कहता है तुम उसका माल ले लेना चाहते हो, अर्ज़ की हुज़ूर इससे पूछ देखें कि मैं वह माल लेकर क्या करता हूँ यही उसकी मेहमानी और उसकी क़राबती में या मेरा और मेरे बाल बच्चों का ख़र्च।

इतने में जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस मर्द पीर ने अपने दिल में कुछ अश्आर तस्नीफ़ किए हैं जो अभी ख़ुद उसके कान ने नहीं सुने हैं यानी अभी ज़बान तक न लाया। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुमने अपने दिल में कुछ अश्आर तस्नीफ़ किए हैं जो अभी तुम्हारे कान भी न सुने, वह सुनाओ। उन साहब ने अर्ज़ की हमेशा हुज़ूर के मोजज़ात से हमारे दिल की निगाह हमारा यक़ीन बढ़ाती है।

ख़ुलासा मतलब

उन्होंने जो अश्आर अर्ज़ किए उनका ख़ुलासा यह है।

मैंने तुझे ग़िज़ा पहुंचाई जब से तू पैदा हुआ और तेरा बार उठाया जब से तू नन्हा हुआ। मेरी कमाई से तू बार-बार मुकर्रर सैराब किया जाता। जब कोई रात बीमारी का ग़म लेकर तुझ पर उतरती मैं तेरी नासाज़ी के बाइस जाग कर लोट कर सुबह करता, मेरा जी तेरे मरने से डरता हालांकि उसे ख़ूब मालूम था कि मौत यक़ीनी है और सब मुसल्लत की गई है। मेरी आँखें यूं बहतीं गोया कि वह मरज़ जो शब को तुझे हुआ था न मुझे, मुझे हुआ था न तुझे, मैंने तुझे यूं पाला और जब तू परवान चढ़ा और इस हद को पहुंचा जिसमें मुझे उम्मीद लगी हुई थी कि इस उम्र का हो कर तू मेरे काम आएगा तो तूने मेरा बदला सख़्ती व दुरुश्त ख़ोई किया गोया तेरा ही मुझ पर फ़ज़्ल व एहसान है, ऐ काश जब तूने हक़्क़े पिदरी का लिहाज़ न किया था तो ऐसा ही करता जैसा पास का हमसाया करता है, हमसाया में का हक़ तो मुझे दिया होता, और मुझ पर उस माल से कि असल में तेरा नहीं मेरा ही था बुख़्ल न करता।

इन अशआर को समाअत फरमा कर हुज़ूर पुर नूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गिरिया किया और बेटे का गरेबान पकड़ कर इरशाद फरमया :

जा तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है। (तबरानी सग़ीर, बैहक़ी दलाइलुन्नुबुव्वह)

और हुक्मे क़ज़ा उस से जुदा

हुक्मे सआदत तो यह है मगर क़ज़ा के एतबार से बाप बेटे की मिल्क जुदा है। बाप अगर मुहताज हो तो बक़द्र हाजत बेटे के फ़ाज़िल माल से उसकी इजाज़त व रज़ा के बग़ैर ले सकता है ज़्यादा नहीं। और यह लेना भी खाने पीने, पहनने रहने के लिए है और हाजत हो तो ख़ादिम के वास्ते भी ले सकता है। (फतावा रज़वीया जिल्द 7, स0 393ए 394ए 395)

महबूब अमल

अल्लाह तआला के नज़्दीक जिस तरह महबूब तरीन आमाल इबादात का बजा लाना है। उसी तरह वालिदैन के साथ नेक बर्ताव और हुस्ने सुलूक करना भी महबूब अमल है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा कि अल्लाह तआला के नज़्दीक कौन सा अमल ज़्यादा महबूब है फरमाया वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, मैंने अर्ज़ की फिर कौन सा, फरमाया वालिदैन के साथ नेकी करना। मैंने अर्ज़ की फिर फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद करना।

(त. बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद)

वालिदैन की ख़िदमत और जिहाद

दीन की सर बलन्दी के लिए ख़ुदा की राह में जिहाद करना यक़ीनन बड़ी नेकी और महबूब अमल है मगर वालिदैन या माँ-बाप में से जो मौजूद हो उसकी ख़िदमत करना उनके साथ नेक बर्ताव और अच्छा सुलूक करना जिहाद के बराबर नेकी है। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि एक आदमी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आ कर जिहाद की इजाज़त मांगी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तुम्हारे वालिदैन ज़िन्दा हैं उसने अर्ज़ की हाँ ज़िन्दा हैं तो हुज़ूर ने फरमाया कि जाओ और उन्हीं के हुकूक़ अदा करने की कोशिश करो। (त, बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं आपसे हिजरत व जिहाद पर बैअत करता हूँ कि अल्लाह तआला से सवाब का तालिब हूँ हुज़ूर ने फरमाया तुम्हारे वालिदैन में से कोई एक ज़िन्दा है? उस शख़्स ने अर्ज़ किया हाँ बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तुम अल्लाह तआला से अज्र व सवाब चाहते हो? उसने कहा हाँ मैं सवाब का तालिब हूँ हुज़ूर ने फरमाया अपने वालिदैन के पास वापस जाओ और उन से हुस्ने सुलूक करो। (त, मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में अर्ज़ की मैं इसलिए आया हूँ कि आप से हिजरत पर बैअत करूं और मैं वालिदैन को रोते हुए छोड़ आया हूं, हुज़ूर ने फरमाया उनके पास वापस जाओ फिर उन्हें उस तरह हंसाओ जिस तरह तुम ने उन्हें रुलाया है। (त, अबू दाऊद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि यमन का एक आदमी हिजरत करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते शरीफ़ा में आया हुज़ूर ने फरमाया क्या यमन में तुम्हारा कोई है उसने कहा कि मेरे वालिदैन हैं। हुज़ूर ने फरमाया उन दोनों ने तुमको इजाज़त दे दी है उसने अर्ज़ किया नहीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम वालिदैन के पास जा कर इजाज़त मांगो अगर वह इजाज़त दे दें तो जिहाद करो वरना उनके साथ नेकी और भलाई करो। (त, अबू दाऊद)

एक रिवायत में है कि जाहिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुक़द्दसा में आ कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं जिहाद का इरादा रखता हूँ और आपके हुज़ूर मशवरा के लिए हाज़िर हुआ हूँ तो हुज़ूर ने फरमाया क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है उन्होंने अर्ज़ किया हाँ मेरी माँ मौजूद है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उनकी ख़िदमत लाज़िम कर लो क्योंकि जन्नत उनके क़दमों के नीचे है।

(त, निसई, इब्ने माजा, हाकिम)

वालिदैन के क़दमों की बरकत

ख़िदमते वालिदैन का सवाब जिहाद के बराबर और ख़ुदा के नज़्दीक उम्दा अमल है। रब तआला ने जन्नत पाने के लिए बेशुमार ज़राए मुक़र्रर फरमाए हैं कि आदमी अगर इन बातों पर अमल करे तो जन्नत का हक़्दार होगा, वालिदैन की ख़िदमत और उनके साथ हुस्ने सुलूक ऐसी नेकी है कि आदमी इसके एवज भी जन्नत का मुस्तहिक़ क़रार पाता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है जाहिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इसलिए आया कि जिहाद के बारे में मशवरा करूं तो हुज़ूर

ने फरमाया क्या तुम्हारे वालिदैन हैं? मैंने अर्ज़ की हाँ वह ज़िन्दा हैं, फरमाया : कि दोनों की ख़िदमत लाज़िम कर लो कि जन्नत दोनों के क़दमों के नीचे है। (त, तबरानी)

हज़रत तलहा बिन माविया सलमी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में अर्ज़ की या रसूलल्लाह! मैं अल्लाह की राह में जिहाद का अज़्म रखता हूँ फरमाया : तुम्हारी माँ ज़िन्दा हैं मैंने कहा हाँ, हुज़ूर ने फरमाया : उनके क़दमों को लाज़िम कर लो यानी उनकी ख़िदमत करो कि जन्नत वहीं है। (त, तबरानी)

माँ की पुकार का जवाब न देने की सज़ा

बनी इसराईल में एक इबादत गुज़ार राहिब था जिसका नाम जुरैज था यह अपने इबादत खाना में हमा वक़्त इबादते इलाही में मसरूफ़ रहता था, एक दिन उसकी माँ आई और उसे आवाज़ दी उस वक़्त जुरैज इबादत में मशग़ूल था सोचता रहा कि ख़ुदा की इबादत तर्क कर दूँ और माँ की पुकार का जवाब दूँ या इबादत तर्क न करूं इसी कशमकश में रहा मगर माँ को जवाब न दे सका, उसकी माँ झुंझलाती हुई यह कह कर चली गई कि ऐ परवरदिगार जुरैज को आज़माइश में मुब्तला कर।

माँ की इस बद्दुआ का नतीजा यह हुआ कि एक बद किरदार औरत ने उस पर इल्ज़ाम लगा दिया कि मेरा यह बच्चा जुरैज का है हालांकि वह बच्चा एक चरवाहे का था जिसने उस औरत के साथ बदकारी की थी, यह सुन कर लोग जमा हो गये और जुरैज का इबादत घर तोड़ दिया और उसे मलामत की, फिर हुआ यह कि जुरैज ने उस बच्चे की तरफ इशारा करके कहा कि ऐ बच्चा बता तू किस का बच्चा है, बच्चा ने साफ और वाज़ेह लफ़्ज़ों में जवाब दिया कि मैं फलां चरवाहे का बच्चा हूँ हालांकि बच्चा की उम्र उस वक़्त सिर्फ़ एक महीना की थी। (मुरत्तिब)

इसी वाक़ेया की तरफ इशारा करते हुए हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जुरैज राहिब अगर फ़क़ीह आलिम होता तो जान लेता कि माँ की पुकार का जवाब देना अपने रब की नफ़्ल इबादत से ज़्यादा बेहतर है। (त, मुसनद हसन बिन सुफ़ियान)

यही वजह है कि फ़क़ीह आलिम राहे रास्त से नहीं बहक सकता बख़िलाफ़ जाहिल आबिद के कि उसका बहकना मुम्किन है।

हदीस में है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक फ़क़ीह शैतान पर एक हज़ार आबिद से ज़्यादा भारी है।

(त, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फतावा रज़वीया जिल्द 4, स0 673ए 674ए 675)

हुकूक़े ज़ौजेन

रिश्त–ए–इज़्दवाज से मर्द व औरत के दर्मियान अजनबीयत के फ़ासिले मिट जाते हैं, जिस की तरफ नज़र भर कर देखना नाजाइज़ व गुनाह, मगर रिश्त–ए–निकाह के बाद उस से ख़ल्वत व इख़्तिलात वग़ैरह सब जाइज़ व दुरुस्त हो जाता है इंसान पर अल्लाह तआला की यह बे–पायाँ रहमत है। मर्द व औरत एक दूसरे के लिबास होते हैं, लिबास इंसानी जिस्म को छुपाता है उसे सर्दी व गर्मी की कुल्फ़तों से महफ़ूज़ रखता है इसी तरह मर्द व औरत एक दूसरे की इस्मत व इफ़्फ़त के मुहाफ़िज़ व अमीन होते हैं हर कोई दूसरे को गुनाह से बचाता है। इन ख़ूबियों के साथ शरीअते इस्लामिया ने दोनों पर एक दूसरे के हुकूक़ की अदाइगी को लाज़िम क़रार दिया है यानी औरत पर शौहर के हुकूक़ की रिआयत लाज़िम है और शौहर पर औरत के हुकूक़ की निगहदाश्त ज़रूरी है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

ज़न व शौहर में एक के दूसरे पर हुकूक़े कसीरा वाजिब हैं उन में जो बजा न लायेगा अपने गुनाह में गिरफ़्तार होगा। एक अगर अदा–ए–हक़ न करे तो दूसरा उसे दस्तावेज़ बना कर उसके हक़ साक़ित नहीं कर सकता, मगर वह हुकूक़ कि दूसरे के किसी हक़ पर मब्नी हों, अगर यह उसका ऐसा हक़ तर्क करे वह दूसरा उसके यह हुकूक़ कि उस पर मब्नी थे तर्क कर सकता है। जैसे औरत का नान व नफ़्क़ा कि शौहर के यहाँ पाबन्द रहने का बदला है अगर नाहक़ उसके यहाँ से चली जाएगी जब तक वापस न आएगी कुछ न पाएगी। ग़रज़ वाजिब होने, मुतालबा होने, बेवजह शरई अदा न करने से गुनहगार होने में तो हुकूक़े ज़न व शौहर बराबर हैं। हाँ शौहर के हुकूक़ औरत पर बकसरत हैं और उस पर वजूब भी बशिद्दत है। और पर सबसे बड़ा हक़ शौहर का है यानी माँ–बाप से भी ज़्यादा और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ माँ का है, यानी ज़ौजा का माँ से बल्कि बाप से भी कम है।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मैंने हुज़ूरे अक़्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की औरत पर सब से बड़ा हक़ किस का है फरमाया शौहर का, मैंने अर्ज़ की और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ किस का है फरमाया उसकी माँ का। (मुसनद बज़्ज़ार, हाकिम, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 59.60)

तीन शख़्सों की नमाज़ मक़्बूल नहीं

हदीसे अव्वल : तीन शख़्सों की नमाज़ उन के कानों से ऊपर नहीं उठती।

1. आक़ा से भागा हुआ ग़ुलाम जब तक पलट कर आए।
2. औरत कि सोए और उसका शौहर उस से नाराज़ हो।
3. जो किसी क़ौम की इमामत करे और वह उसके ऐब के बाइस उसकी इमामत पर राज़ी न हों। (तिर्मिज़ी)

हदीस दोम : तीन आदमियों की नमाज़ उनके सरों से बालिश्त भर ऊपर बुलन्द नहीं होती।

1. एक वही इमाम।
2. औरत कि सोए और शौहर नाराज़ है।
3. दो भाई कि आपस में इलाक़–ए–मुहब्बत क़तअ़ किए हों। (इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान)

हदीस सोम : तीन शख़्सों की कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती न कोई नेकी आसमान को चढ़े।

1. भागा हुआ ग़ुलाम जब तक अपने आक़ाओं की तरफ पलट कर अपने आपको उनके क़ाबू में दे।
2. औरत जिस से उसका ख़ाविन्द नाराज़ हो यहाँ तक कि राज़ी हो जाए।
3. नशे वाला जब तक होश में आए। (तबरानी, इब्ने ख़ुज़ैमा)

औरत पर लानत होती है

मर्द व ज़न के हुकूक़ में से यह भी है कि शौहर अगर औरत को अपने पास बुलाए और वह इंकार करे या शौहर किसी और बात पर औरत से नाराज़ हो तो औरत को चाहिए कि उसे राज़ी करे वरना उस पर लानत की बारिश होगी। (मुरत्तिब)

हदीस में है जब औरत अपने शौहर का बिछौना छोड़ कर सोए तो सुबह तक फरिश्ते उस पर लानत करें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है जो औरत अपने घर से बाहर जाए और उसके शौहर को नागवार हो जब तक पलट कर आए आसमान में हर फ़रिश्ता उस पर लानत करे और जिन्न व आदमी के सिवा जिस–जिस चीज़ पर गुज़रे सब उस पर लानत करें। (तबरानी औसत)

बेवजह शरई औरत तलाक़ न मांगे

मर्द को औरत पर हाकिम बनाया गया है अब मर्द चाहे औरत को अपने निकाह में रखे या अलग कर दे इसका उसे पूरा इख़्तियार है मगर औरत को बिला वजह शरई शौहर से तलाक़ का मुतालबा करना दुरुस्त नहीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो औरत बेज़रूरते शरई ख़ाविन्द से तलाक़ मांगे उस पर जन्नत की बू हराम है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

एक और हदीस में है ख़ाविन्द से तलाक़ मोल लेने वालियाँ वही मुनाफ़िक़ा हैं।

(तबरानी कबीर, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 197)

क्या! औरत शौहर को सजदा कर सकती है?

शरीअ़ते मुहम्मदिया अला साहिबहा अत्तहीयतु वस्सना में ग़ैरुल्लाह को सज्दा करना हराम है, तहीयत व ताज़ीम के तौर पर ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा करना हराम और इबादत व बन्दगी के तौर पर कुफ़्र हैं। औरत पर शौहर का हक़ इतना ज़्यादा है कि अगर ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा जाइज़ होता तो औरत को सज्दा शौहर का हुक्म होता इसके बावजूद हक़ यह है कि शौहर का हक़ अदा न होता। इस बात को हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुतअद्दद अहादीस में बयान फरमाया है कि अगर ग़ैरुल्लाह को सज्दा जाइज़ होता तो मैं हुक्म फरमाता कि औरत अपने शौहर को सज्दा करे।

सज्द–ए–तहीयत की तहरीम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने चालीस हदीसें पेश फरमाई हैं मैं उन में से उन अहादीस को इख़्तिसार के साथ पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ जिन में औरत के लिए सज्दा शौहर का नाजाइज़ होना मज़्कूर है। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : एक औरत ने बारगाहे रिसालत अलैहि अफ़ज़लुस्सलाते वत्तहीयत में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह शौहर का औरत पर क्या हक़ है फरमाया अगर बशर को लाइक़ होता कि दूसरे बशर को सज्दा करे तो मैं औरत को फरमाता कि जब शौहर घर में आए उसे सज्दा करे इस फ़ज़ीलत के सबब जो अल्लाह ने उसे उस पर रखी है। (तिर्मिज़ी, सुनने बैहक़ी)

हदीस 2 : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बाग़ में तशरीफ़ ले गये एक ऊंट ने हाज़िर हो कर हुज़ूर को सज्दा किया सहाबा ने अर्ज़ की यह बेअक़्ल चौपाया है इसने हुज़ूर को सज्दा किया हम तो अक़्ल रखते हैं हमें ज़्यादा लाइक़ है कि हुज़ूर को सज्दा करें, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी को लाइक़ नहीं कि आदमी को सज्दा करे ऐसा मुनासिब होता तो मैं औरतों को फ़रमाता कि शौहर को सज्दा करे उसके हक़ के सबब जो उसका उस पर है।

हदीस 3 : अंसार में एक घर का आबकुशी ऊँट बिगड़ गया किसी को पास न आने देता खेती और खुजूरें प्यासी हुईं सरकार में शिकायत अर्ज़ की सहाबा से इरशाद हुआ चलो बाग़ में तशरीफ़ फरमा हों ऊँट उस किनारे था हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसकी तरफ़ चले अंसार ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! वह बौराने कुत्ते की तरह हो गया है मबादा हमला करे फरमाया हमें उसका अन्देशा नहीं ऊँट हुज़ूर को देख कर चला और क़रीब आकर हुज़ूर के लिए सज्दा में गिरा हुज़ूर ने उसके माथे के बाल पकड़ कर काम में दे दिया बकरी की तरह हो गया। फिर सहाबा ने अर्ज़ की हम तो ज़ी अक़्ल हैं हम ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि हुज़ूर को सज्दा करें फरमाया आदमी के लाइक़ नहीं कि किसी बशर को सज्दा करे वरना मैं औरत को मर्द के सज्दे का हुक्म फरमाता।
(मुसनद अहमद, निसाई, अबू नईम,

हदीस 4 : हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अंसार के एक बाग़ में तशरीफ़ फरमा हुए सिद्दीक़ व फ़ारूक़ और कुछ अंसार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम हमराहे रकाब थे बाग़ में बकरियाँ थीं उन्होंने हुज़ूर को सज्दा किया सिद्दीक़ ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! इन बकरियों से हम ज़्यादा हक़दार हैं उसके कि हुज़ूर को सज्दा करें, फरमाया बेशक मेरी उम्मत में न चाहिए कि कोई किसी को सज्दा करे और ऐसा मुनासिब होता तो मैं औरत को शौहर के सज्दे का हुक्म फरमाता।
(मुसनद अहमद, बज़्ज़ार, अबू नईम)

हदीस 5 : हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर थे किसी ने अर्ज़ की फलां घर का शतुर आबकश बेक़ाबू हो गया हुज़ूर उठे और हम हमराहे रकाब उठे और हम ने अर्ज़ की हुज़ूर उसके पास न जाएं हुज़ूर तशरीफ़ ले गये ऊंट की नज़र जमाले अनवर पर पड़ी और वह सज्दा में गिर गया, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! एक चौपाया तो हुज़ूर की ताज़ीमे हक़ के लिए हुज़ूर को सज्दा करे हम ज़्यादा उसके लाइक़ हैं कि हुज़ूर को सज्दा करें फरमाया नहीं, अगर मैं अपनी उम्मत में एक दूसरे को सज्दा का हुक्म देता तो औरतों को फरमाता कि शौहरों को सज्दा करे। (अबू नईम, दलाइलुन्नुबूवते)

हदीस 6 : एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लिए जाते थे एक ऊंट बोलता हुआ आया क़रीब आकर हुज़ूर को सज्दा किया मुसलमानों ने कहा हमें तो ज़्यादा लाइक़ है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सज्दा करें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं किसी को ग़ैरे ख़ुदा के सज्दे का हुक्म देता तो औरत को फरमाता कि शौहर को सज्दा करे। (मुसनद अहमद)

हदीस 7 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक जमाअत अंसार व मुहाजेरीन में तशरीफ़ फरमा थे कि एक ऊंट ने आकर हुज़ूर को सज्दा किया सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! चौपाए और दरख़्त हुज़ूर को सज्दा करते हैं तो हम तो ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि हुज़ूर को सज्दा करें फरमाया अल्लाह की इबादत करो और हमारी ताज़ीम, अगर मैं किसी को किसी के सज्दे का हुक्म करता तो औरत को हुक्म देता कि शौहर को सज्दा करे। (मुसनद अहमद)

हदीस 8 : एक आराबी ने ख़िदमते हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह मैं इस्लाम लाया मुझे कुछ ऐसी चीज़ दिखाइए कि मेरा यक़ीन बढ़े फ़रमाया क्या चाहता है अर्ज़ की हुज़ूर इस दरख़्त को बुलाएं कि हुज़ूर में हाज़िर हो फ़रमाया, जा बुला, वह आराबी दरख़्त के पास गये और कहा तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम याद फरमाते हैं वह फौरन एक तरफ़ को इतना झुका कि इधर के रेशे टूट गये, फिर उधर इतना झुका कि उधर के रेशे टूट गए, फिर चला और हुज़ूरे अनवर में हाज़िर हो कर साफ़ ज़बान में कहा सलाम हुज़ूर पर ऐ अल्लाह के रसूल, आराबी ने कहा मुझे काफी, मुझे काफी,

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दरख़्त से फरमाया पलट जा फौरन वापस हुआ और उन्हीं रेशों में मअ़ शाख़ों के बदस्तूर जम गया। आराबी ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त अता हो कि सरे अक़्दस और दोनों पाए मुबारक को बोसा दूँ, हुज़ूर ने इजाज़त दी। फिर अर्ज़ की इजाज़त अता हो कि हुज़ूर को सज्दा करूं फरमाया मुझे सज्दा न करना मख़्लूक़ में कोई किसी को सज्दा न करे, मैं किसी के लिए इसका हुक्म करता तो औरत को हुक्म फरमाता कि हक़ शौहर की ताज़ीम के लिए उसे सज्दा करे। (मुसनद बज़्ज़ार, अबू नईम दलाइलुल नुबुव्वह)

हदीस 9 : जब मआज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शाम से आए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सज्दा किया हुज़ूर ने फरमाया मआज़ यह क्या? अर्ज़ की मैं मुल्के शाम को गया वहाँ नसारा को देखा कि अपने पाद्रियों और सरदारों को सज्दा करते हैं मेरा दिल चाहा कि हम हुज़ूर को सज्दा करें, फरमाया न करो। मैं अगर सज्दा का हुक्म देता तो औरत को सज्दा शौहर का। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

हदीस 10 : मआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शाम को गये देखा नसारा अपने पाद्रियों और फ़क़ीरों को सज्दा करते हैं और यहूद अपने आलिमों और आबिदों को। उन से पूछा यह क्यों करते हो बोले कि यह अंबिया की तहीयत है। मआज़ फरमाते हैं मैंने कहा तो हमें ज़्यादा सज़ावार है कि हम अपने नबी को करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह अपने अंबिया पर बुहतान करते हैं जैसे उन्होंने अपनी किताब बदल दी है मैं किसी को किसी के सज्दा का हुक्म फरमाता तो शौहर के अज़ीम हक़ के सबब औरत को। (हाकिम मुस्तदरक)

हदीस 11 : क़ैस बिन सअद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं शहर हीरा में (कि क़रीब कूफ़ा है) गया वहाँ के लोगों को देखा अपने शहर यार को सज्दा करते हैं। मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़्यादा मुस्तहिक़ सज्दा हैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर यह हाल व ख़्याल अर्ज़ किया फरमाया भला अगर तुम हमारे मज़ारे करीम पर गुज़रो तो क्या मज़ार को सज्दा करोगे? मैंने अर्ज़ की न, फरमाया तो न करो। मैं किसी को किसी के सज्दे का हुक्म देता तो औरतों को शौहरों के सज्दे का हुक्म फरमाता इस हक़ के सबब जो अल्लाह तआला ने उन का उन पर रखा है। (अबू दाऊद, तबरानी कबीर, बैहक़ी, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 480 ता 485)

ज़ौजैन में उल्फ़त हो गई

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से एक औरत ने अपने शौहर की शिकायत की हुज़ूर ने फरमाया क्या तुम उसको बुरा जानती हो अर्ज़ की हाँ मैं उसे बुरा जानती हूँ, यह सुन कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया दोनों अपने अपने सर मेरे क़रीब लाओ फिर हुज़ूर ने औरत की पेशानी को उसके शौहर की पेशानी पर रखा और फरमाया ऐ अल्लाह! इन दोनों के दर्मियान मुहब्बत व उल्फ़त उस्तवार फरमा दे। फिर कुछ दिनों के बाद औरत ने हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात की और क़दमाने मुबारक को बोसा दिया हुज़ूर ने फरमाया तुम और तुम्हारे शौहर दोनों कैसे हो अर्ज़ की कोई नया और पुराना और कोई लड़का मुझे उन से ज़्यादा महबूब नहीं, सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ, हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कहा और मैं भी गवाही देता हूँ कि आप यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं। (त, बैहक़ी, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 66)

शौहर की इताअत और जिहाद का सवाब

औरतों को अपने शौहर की इताअत और उनके हुक़ूक़ की मारिफ़त सवाब में जिहाद के बराबर है। (मुरत्तिब)

हदीस में है एक बीबी ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह! मैं औरतों की फरस्तादा हूँ हुज़ूर की बारगाह में, जिन औरतों को ख़बर है और जिन्हें ख़बर नहीं सब मेरी इस हाज़िरी की ख़्वाहाँ हैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल मर्दों औरतों सबका परवरदिगार व ख़ुदा है और हुज़ूर मर्दों और औरतों सबकी तरफ उसके रसूल, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने मर्दों पर जिहाद फ़र्ज़ किया कि फतह पाएं तो दौलतमन्द हो जाएँ और शहीद हों तो अपने रब के पास ज़िन्दा रहें, रिज़्क़ पाएं और हम औरतें उनके कामों का इंतिज़ाम करने वालियाँ हैं तो हमारे लिए यह कौन सी ताअत है जो सवाब में जिहाद के बराबर हो, फरमाया शौहरों की इताअत और उनके हक़ पहचानना और उसकी करने वालियाँ तुम में थोड़ी हैं। (मुसनद बज़्ज़ार, तबरानी)

हुक़ूक़ शौहर और बाज़ औरतों का निकाह से एराज़

शौहर के हुक़ूक़ की रिआयत निहायत दुशवार व सख़्त है उन से ओहदा बर आ व सुबुकदोश होना हर औरत के बस की बात नहीं हाँ जिसे अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे वह बहुस्न व ख़ूबी शौहर के हुक़ूक़ अदा कर सकती है मगर हुक़ूक़ इतने सख़्त हैं कि उनकी अदाइगी की शिद्दत व सख़्ती को देख कर बाज़ औरतों ने उम्र भर निकाह न करने का अहद किया। (मुरत्तिब)

★ हदीस में है, एक ज़न ख़सीमा ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलल्लाह! हुज़ूर मुझे सुनाएं कि शौहर का हक़ औरत पर क्या है कि मैं ज़न बेशौहर हूँ उसके अदा की अपने में ताक़त देखूं तो निकाह करूं वरना यूं ही बैठी रहूँ, फरमाया शौहर का हक़ ज़ौजा पर यह है कि औरत कजावा पर बैठी हो और मर्द उसी सवारी पर उस से नज़्दीकी चाहे तो इंकार न करे।

और मर्द का हक़ औरत पर यह है कि उसकी बेइजाज़त के नफ़्ल रोज़ा न रखे अगर रखेगी तो बेकार भूखी प्यासी रही रोज़ा क़बूल न होगा। और घर से शौहर की इजाज़त के बग़ैर कहीं न जाए अगर जाएगी तो आसमान के फ़रिश्ते, ज़मीन के फ़रिश्ते, रहमत के फ़रिश्ते, अज़ाब के फ़रिश्ते सब उस पर लानत करेंगे जब तक पलट कर आए।

यह इरशाद सुन कर उन बीबी ने अर्ज़ की ठीक–ठीक यह है कि मैं कभी निकाह न करूंगी। (तबरानी)

★ इसी तरह का एक दूसरा वाक़ेया यह है कि एक बीबी ने दरबार–दरबार सैय्यदुल–अबरार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की मैं फलां दुख़्तर फलां हूँ, फरमाया मैं ने तुझे पहचाना अपना काम बता, अर्ज़ की मुझे अपने चचा के बेटे फलां आबिद से काम है, फरमाया मैंने उसे भी पहचाना यानी मतलब कह, अर्ज़ की उसने मुझे प्याम दिया है तो हुज़ूर इरशाद फरमाएं कि शौहर का हक़ औरत पर क्या है अगर वह कोई चीज़ मेरे क़ाबू की हो तो मैं उस से निकाह कर लूँ, फरमाया : मर्द के हक़ का एक टुकड़ा यह है कि अगर उसके दोनों नथुने ख़ून या पीप से बहते हों और औरत उसे अपनी ज़बान से चाटे तो शौहर के हक़ से अदा न हुई, अगर आदमी का आदमी को सज्दा रवा होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि मर्द जब बाहर से उसके सामने आए उसे सज्दा करे कि ख़ुदा ने मर्द को फ़ज़ीलत ही ऐसी दी है।

यह इरशाद सुन कर वह बीबी बोलीं क़सम उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा मैं रहती दुनिया तक निकाह का नाम न लूँगी। (मुसनद बज़्ज़ार, हाकिम)

★ एक साहब अपनी साहबज़ादी को लेकर दरगाह आलम पनाह हुज़ूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अर्ज़ की मेरी यह बेटी निकाह करने से इंकार रखती है, हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपने बाप का हुक्म मान। उस लड़की ने अर्ज़ की क़सम उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा मैं निकाह न करूंगी

जब तक हुज़ूर यह न बताएं कि ख़ाविन्द का हक़ औरत पर क्या है, फरमाया :

शौहर का हक़ औरत पर यह है कि अगर उसके कोई फोड़ा हो औरत उसे चाट कर साफ करे या उसके नथुनों से पीप या ख़ून निकले औरत उसे निगल ले तो मर्द के हक़ से अदा न हुई।

उस लड़की ने अर्ज़ की क़सम उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा मैं कभी शादी न करूंगी।

हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया औरतों का निकाह न करो जब तक उनकी मर्ज़ी न हो। (बज़्ज़ार, इब्ने हिब्बान, फतावा रज़वीया जिल्द 5, स0 584.585)

उम्मे हानी को हुज़ूर का पैग़ामे निकाह और उनका जवाब

सही हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब ख़्वाहर अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू को पयामे निकाह दिया अर्ज़ की या रसूलल्लाह! कुछ हुज़ूर से मुझे बेरग़बती तो है नहीं मगर मुझे यह नहीं भाता कि मैं निकाह करूं और मेरे बच्चे छोटे–छोटे हैं।

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अरब की तमाम औरतों में बेहतर ज़नान कुरैश हैं अपने बच्चे पर उसके छोटपन में सबसे ज़्यादा मेहरबान और ख़ाविन्द के माल की सबसे ज़्यादा निगाह रखने वालियाँ। (तबरानी)

दूसरी हदीस में है जब हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हें प्याम दिया यूं अर्ज़ की या रसूलल्लाह! बेशक हुज़ूर मुझे अपने कानों और अपनी आंखों से ज़्यादा प्यारे हैं और शौहर का हक़ बड़ा है मैं डरती हूँ कि हक़ शौहर मुझ से फौत न हो। (तबक़ात इब्ने सअद)

उम्मे सलमा के लिए हुज़ूर की दुआ और उन से निकाह फरमाना

उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा अपने शौहरे अव्वल हज़रत अबू सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से बेवा हुईं। अमीरुल–मुमिनीन सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें प्यामे निकाह दिया इंकार कर दिया, फिर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने प्याम दिया इंकार कर दिया। फिर हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने प्याम दिया।

अर्ज़ की मैं रश्क नाक औरत हूँ (यानी अज़्वाजे मुतह्हरात से शकर रंजी का ख़याल है) और अयालदार हूँ और मेरा कोई वली हाज़िर नहीं।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनके उज़्रों पर कुछ अताब न फरमाया, न इरशाद हुआ कि तुम सुन्नत से मुंकिर होती हो, तुम पर शरई इल्ज़ाम है। बल्कि उज़्र सुनकर उनके इलाज व जवाब इरशाद फरमा दिए कि –

तुम्हारे रश्क के लिए हम दुआ करेंगे कि अल्लाह तआला उसे दूर कर दे। (चुनांचे ऐसा ही हुआ उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा बाक़ी अज़्वाजे मुतह्हरात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुन्ना के साथ इस तरह रहती थीं गोया यह अज़्वाज ही में नहीं) और तुम्हारे बच्चे अल्लाह व रसूल के सुपुर्द हैं और तुम्हारा कोई वली हाज़िर व ग़ायब मेरे साथ निकाह को नापसन्द न करेगा। (अहमद, निसई)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आख़िर शव्वाल 4 हिजरी में उन से निकाह फरमाया। (ज़ुर्क़ानी, फतावा रज़वीया जिल्द 5, स0 587)

औरत की नाशुक्री

औरत नाक़िसुल–अक़्ल और कमफ़हम है मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात बर्दाश्त नहीं करती इसलिए वह ज़रा–ज़रा सी बात में शौहर की नाशुक्री का एलान करती है। (मुरत्तिब)

हदीस सही में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि मैंने दोज़ख़ मुलाहिज़ा फरमाई तो आज के बराबर कोई चीज़ सख़्त व शुनीअ् न देखी और मैंने अह्ले दोज़ख़ में औरतें ज़्यादा देखीं, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! यानी हुज़ूर इसका क्या सबब है, फरमाया उनके कुफ़्र के बाइस, अर्ज़ की गई क्या अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से कुफ़्र करती हैं, फरमाया शौहर की नाशुक्री करती हैं और एहसान नहीं मानती हैं, अगर तू उनमें किसी के साथ उम्र भर एहसान करे फिर ज़रा सी बात ख़िलाफ़े मिज़ाज तुम से देखे तो कहे मैंने कभी तुम से भलाई न देखी। (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक हदीस में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम औरत टेढ़ी पसली से बनी है हरगिज़ किसी राह पर तेरे लिए सीधी न होगी अगर तू उससे नफ़ा ले तो उसकी कजी के साथ नफ़ा ले और सीधा करने चले तो तोड़ दे और उसका तोड़ना तलाक़ देना है।

(मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हासिल यह कि पसली टूट जाएगी मगर सीधी न होगी औरत भी बाएं पसली से बनी है न निभे तो तलाक़ दे दे मगर हर तरह मुवाफ़िक़ आए यह मुश्किल है।

औरतें अगर शौहरों की नाफरमानी न करें और नमाज़ पढ़ें तो सीधी जन्नत को चली जाएं।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हमल की सख़्तियाँ उठाने वालियाँ, जनने की तक्लीफ़ झेलने वालियाँ, दूध पिलाने वालियाँ, अपने बच्चों पर मेहरबानी, अगर न होती वह कमी जो अपने शौहरों के साथ करती हैं तो उनकी नमाज़ पढ़ने वालियाँ सीधी जन्नत में जातीं। (मुसनद अहमद इब्ने माजा, फतावा रज़वीया जिल्द 5, स0 583ए 584)

शौहर का बर्ताव

जिस तरह औरतों पर मर्दों के हुक़ूक़ हैं यूं ही मर्दों पर औरतों के भी हुक़ूक़ हैं। (मुरत्तिब)

क़ुरआने अज़ीम फरमाता है कि

बीवियों से भलाई के साथ मुआशरत करो। (अन्निसा : 19)

इसलिए औरतों को बेवजहे शरई ईज़ा देना जाइज़ नहीं बल्कि उनके साथ नर्मी और ख़ुश ख़ुल्क़ी और उनकी बदख़ोई पर सब्र और उनकी दिलजोई और जिन बातों में मुख़ालिफ़ते शरअ् नहीं उनकी रिआयत शारेअ् को पसन्द है।

जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अज़्वाजे मुतह्हरात की दिलजोई करते और फरमाते जो सब से ज़ाइद ख़ुश ख़ुल्क़ हो अपने अह्ल के साथ अच्छे बर्ताव वाला हो वह सब से ज़ाइद ईमान में कामिल होगा। (तिर्मिज़ी)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने अह्ल के साथ अच्छे बर्ताव में सबसे बेहतर है और मैं तुम सबसे अपने अह्ल के साथ बेहतर हूँ। (इब्ने माजा)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं :

औरत के साथ हुस्ने ख़ुल्क़ सिर्फ़ उसे ख़ुद ईज़ा न देना नहीं बल्कि उसकी तरफ से जो अज़ीयतें हों उन्हें बर्दाश्त करना और उसके तैश व ग़ज़ब के वक़्त तहम्मुल करना।

चन्द बीवियों के दर्मियान अद्ल व मसावात

जिसकी चन्द बीवियाँ हों उनके दर्मियान अद्ल व मसावात और हर चीज़ में बराबरी करना उस पर लाज़िम है। शरीअते मुतह्हरा का यही हुक्म है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात के दर्मियान बराबरी और बारी का निहायत एहतमाम के साथ ख़्याल फरमाते और हर बात में हर एक की मसावात का भी लिहाज़ रखते थे। हुज़ूरे अक़्दस

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरह बीवियों के दर्मियान अद्ल व मसावात का मुज़ाहरा करने वाला आज तक दुनिया में कोई पैदा न हुआ, हुज़ूर ने तो आम इंसानों में अद्ल व इंसाफ़ की फ़िज़ा पैदा की और उन्हें अमानत व दयानत का ख़ूगर व आदी बना दिया हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नक़्शे क़दम उम्मते मुस्लेमा के लिए मशअ़ले राह और नक़्शे हिदायत है। (मुरत्तिब)

बीवियों के दर्मियान बराबरी और बारी करने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक मक़ाम पर तहरीर फरमाते हैं :

जिस तरह अल्लाह तआला ने मर्दों के हक़ औरतों पर मुक़र्रर फरमाए उनके हक़ भी मर्दों पर मुक़र्रर किए अज़ां जुमला खिलाने पहनाने और पास रखने वग़ैरहा उमूरे इख़्तियारिया में उन्हें बराबर रखना वाजिब है यहाँ तक कि अगर फ़र्क़ करेगा क़यामत को एक तरफ झुका उठेगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसकी दो औरतें हों और उन में अद्ल न करे क़यामत के दिन इस तरह उठेगा कि एक जानिब झुकी होगी।

(अबू दाऊद, फतावा रज़वीया 5, स0 571)

जन्नत में ज़ौजैन का जमा होना

औरत ने अगर शौहर की वफ़ात के बाद निकाह न किया और वह दोनों जन्नती हों तो दोनों को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल जन्नत में जमा फरमायेगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है जिस औरत का शौहर मर जाए और वह दोनों जन्नती हों फिर औरत उसके बाद निकाह न करे तो अल्लाह तआला उन दोनों को जन्नत में जमा फरमाए।

(तबक़ाते इब्ने सअद)

इसी बिना पर उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने हज़रत अबू सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से कहा था कि आओ हम तुम अहद करें कि जो पहले मर जाए दूसरा उसके बाद निकाह न करे मगर यह इल्मे इलाही में उम्महातुल–मुमिनीन में दाख़िल होने वाली थीं हज़रत अबू सलमा ने क़बूल न फरमाया। (तबक़ाते इब्ने सअद)

हज़रत सलमा बिन्ते जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के शौहर शहीद हुए वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास आईं और कहा मेरे शौहर ने शहादत पाई और लोग मुझे प्याम दे रहे हैं मैं निकाह से इंकार रखती हूं क्या आप उम्मीद करते हैं कि मैं और वह जमा हुए तो मैं आख़िरत में उनकी ज़ौजा हूं फरमाया हाँ। (मुसनद अहमद)

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ौजा मुतह्हरा रबाब बिन्ते इमरउल–क़ैस को इमाम मज़लूम की शहादत के बाद बहुत शुरफ़ाए क़ुरैश ने प्यामे निकाह दिया, फरमाया मैं वह नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद किसी को अपना ख़ुस्र बनाऊं। जब तक ज़िन्दा रहीं निकाह न किया। (कामिल इब्ने असीर)

हज़रत इमाम अनाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मर्सिया में फरमाती हैं।

"ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे रिश्ता के बाद किसी से रिश्ता न चाहूँगी यहाँ तक कि रेत और मिट्टी में दफन कर दी जाऊं।" (हिशाम इब्नुल–कलबी)

तर्के मुआ़हदा पर शौहर का शिकवह

एक साहाबिया बीबी रुबाब नामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा हैं वह एक शख़्स अम्र नामी की ज़ौजा थीं उनके आपस में अह्द हो लिया था कि जो पहले मरे दूसरा तादमे मर्ग निकाह न करे, अम्र का इंतिक़ाल हुआ, रुबाब एक मुद्दत तक बेवह रहीं फिर उनके बाप ने उनका निकाह कर दिया उसी रात अपने पहले शौहर को ख़्वाब में देखा उन्होंने कुछ शेअ़र इस मुआमले की शिकायत में पढ़े, यह

सुबह को ख़ाइफ़ व तरसां उठीं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हाल अर्ज़ किया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि मरते दम तक तन्हाई से जी बहलाएं और उस शौहर को हुक्म दिया कि उन्हें छोड़ दे उन्होंने छोड़ दिया।

(अल–इसाबा, फतावा रज़्वीया जिल्द 5, स0 588.589)

साबिरा शाकिरा बेवह का मक़ाम

अहादीस में है ख़ुद हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उस बेवह की निहायत तारीफ़ फरमाई जो अपने यतीम बच्चों के लिए बैठी रहे और उन के ख़्याल से निकाह सानी न करे।

हदीस : हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं और चेहरा का रंग बदली हुई औरत रोज़े क़्यामत इन दो उंगलियों के मिस्ल होंगे। (रावी ने अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली की तरफ़ इशारा करके बताया यानी जैसे दो उंगलियाँ पास–पास हैं यूं ही उसे रोज़े क़्यामत मेरा कुर्ब नसीब होगा) वह औरत कि अपने शौहर से बेवह हुई, इज़्ज़त वाली, सूरत वाली, इसके बावजूद उस ने अपने यतीम बच्चों पर अपनी जान को रोक कर रखा यहाँ तक कि वह उस से जुदा हुए या मर गये। (अबू दाऊद)

चेहरा की रंगत बदली हुई सियाही माइल होना यह कि बे शौहरी के सबब बनाव सिंगार की हाजत नहीं।

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो औरत अपनी औलाद पर बैठी रहेगी वह जन्नत में मेरे साथ होगी। (इब्ने बुशरान)

हदीस : हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं सबसे पहले जो दरवाज़ा जन्नत खोलेगा वह मैं हूँ मगर मैं एक औरत को देखूंगा कि मुझ से आगे जल्दी करेगी मैं फरमाऊंगा तुझे क्या है और तू कौन है अर्ज़ करेगी मैं वह औरत हूँ कि अपने यतीमों पर बैठी रही। (मुसनद अबी यअ्ला)

तंबीह

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का बहिशत में तशरीफ़ ले जाना बारहा होगा, दख़ूले जन्नत में अव्वलीयत मुतलक़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए ख़ास है, दरवाज़ा खुलना हुज़ूरे वाला ही के लिए होगा, रिज़वान दारोग़–ए–जन्नत अर्ज़ करेगा मुझे यही हुक्म था कि हुज़ूर से पहले किसी के लिए न खोलूं, हुज़ूर पर कोई नबी मुरसल भी तक़्दीम नहीं पा सकता, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। हुज़ूर के बाद और बन्दगाने ख़ुदा जाएंगे दरवाज़ा खुला पाएंगे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पहले से फतह बाब फरमा चुके होंगे।

यहाँ जो उस औरत का आगे होना वारिद हुआ यह और बार के तशरीफ़ ले जाने में है जब कारे उम्मत के एहतमाम में आमद व रफ़्त फरमाते होंगे न कि ख़ास बारे अव्वल में।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 5, स0 589.590)

कुरआने करीम की अज़मत व फ़ज़ीलत

कुरआन मुक़द्दस ख़ुदा का कलाम है जो अल्लाह तआला ने अपने महबूब जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फरमाया। इसकी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी के लिए यही काफ़ी है कि यह ख़ुदा की किताब है हर क़िस्म की तहरीफ़ व तरमीम से पाक है। अगली आसमानी किताबों को बदल दिया गया उनमें तहरीफ़ व तब्दील कर दी गई मगर कुरआने करीम की हिफ़ाज़त ख़ुद परवरदिगारे आलम ने अपने ज़िम्मा करम पर ली है इसके कुछ फ़ज़ाइल व मसाइल आला हज़रत के अल्फाज़ में मुलाहिज़ा फरमाइए। (मुरत्तिब)

सूरः फ़ातिहा की फ़ज़ीलत

जो कुछ तीस पारों में है वह सिर्फ़ अल्हदुलिल्लाह शरीफ़ में है। उसकी बाबत हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"मैंने सूरः फातिहा को अपने और अपने बन्दे के दर्मियान निस्फ़–निस्फ़ तक़सीम फरमाया, निस्फ़ अव्वल मेरे लिए और निस्फ़ आख़िर मेरे बन्दे के लिए है" जब बन्दा पहली तीन आयतों को पढ़ता है तो इरशाद फरमाता है कि "मेरे बन्दे ने मेरी तम्जीद की" और जब बीच की आयत पढ़ता है, इरशाद फरमाता है "यह आधी मेरे लिए और आधी मेरे बन्दे के लिए है" जब अख़ीर की तीन आयतें पढ़ता है, इरशाद फरमाता है "यह मेरे बन्दे के लिए है। और मेरे बन्दे के लिए है वह जो उसने मांगा" यह इसलिए इरशाद हुआ कि पहली तीन आयतों में मालिके यौमिद्दीन तक मौला अज़्ज़ा व जल्ल की ख़ालिस हम्द व सना है। और पिछली इहदिना से आख़िर सूरः तक अपने लिए दुआ है। और बीच की आयत में ज़िक्रे इबादत और इस्तिआनत है। इबादत मौला तआला के लिए और इस्तिआनत बन्दा का नफ़ा।

रुकूअ़ और पारों की तक़सीम

इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने किताबुल–इत्तेक़ान में जिस क़द्र अहादीस व रिवायात व अक़्वाल, कुरआने अज़ीम के ऐसे उमूर के मुतअल्लिक़ हैं जमा फरमा दिए हैं, इसमें पारों का कहीं ज़िक्र नहीं, जिस से ज़ाहिर होता है कि उनके वक़्त तक यह तक़सीम न थी। हाँ रुकूअ़ जारी हुए आठ सौ बरस हुए, मशाइख़े किराम ने अल्हम्दु शरीफ़ के बाद पाँच सौ चालीस रुकूअ़ रखे कि तरावीह की हर रकअत में एक रुकूअ़ पढ़े तो सत्ताईसवीं शब में शबे क़द्र है ख़त्म हो।

कुरआने करीम में अहज़ाब व अअ़्शार

अहज़ाब व अअ़्शार ज़माना मुबारक से हैं। अअ़्शार दस–दस आयतों के मज्मूआ का नाम था, यानी सहाब–ए–किराम एक उश्र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पढ़ते और उसके मुतअल्लिक़ उलूम व मआरिफ़ जो उनके लाइक़ होते उन सबको हासिल करने के बाद दूसरा उश्र शुरू करते।

★ सैय्यदना फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने आठ बरस में सूरः बक़रः शरीफ़ ख़त्म फरमाई और बाद इख़्तिताम एक ऊंट क़ुरबानी फरमाया।

★ सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने सूरः बक़रः शरीफ़ बारह बरस में पढ़ी। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल : स0 91.92)

सूरः इख़्लास का सवाब व मक़ाम

सहीह हदीस में आया कि सूरः इख़्लास सुलुसे क़ुरआन है तो तीन बार पढ़ने में पूरे क़ुरआने अज़ीम के सवाब के मिलने की उम्मीद है। (बुख़ारी, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम : स0 74)

बन्दर ने कुरआन शरीफ़ का एहतराम किया

कुरआने करीम ऐसी बा–अज़मत किताब है कि इंसानों के साथ जानवर भी इसका एहतराम करते हैं, जो लोग अज़मते कुरआन के मुंकिर हैं उनकी अक्लें बन्दर की अक्ल से भी बदतर हैं। बन्दर के क़ल्ब में भी कुरआने अज़ीम की अज़मत है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक चश्मदीद वाक़या बयान फरमाते हैं कि –

एक मरतबा नन्हें मियाँ (बिरादर ख़ुर्द आला हज़रत क़िब्ला कुद्दिसा सिर्रुहुल–अज़ीज़) अपनी छत पर कुरआने अज़ीम पढ़ रहे थे, सामने दूर एक बन्दर बैठा था यह किसी काम को उठ कर गये बन्दर दौड़ता हुआ सामने दीवार पर गुज़रा और उस पर जाना चाहता था जैसे ही कुरआने अज़ीम के महाज़ात पर आया, कुरआने अज़ीम को सज्दा किया और अपनी राह चला गया।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम : स0 40)

तौरेत से अशिया की तफ़्सील उड़ गई

मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब तौरेत लेकर आए यहाँ देखा कि लोग गऊ साला के आगे सज्दा करते और उसकी परस्तिश करते हैं आपकी शाने जलाल की यह हालत थी कि जिस वक़्त जलाल तारी होता आध गज़ आग का शोअ्ला कुलाहे मुबारक से ऊपर को उठता, जलाल में आ कर अल्वाहे तौरेत फेंक दीं वह टूट गईं।

इमाम मुजाहिद तलमीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का क़ौल है वह फरमाते हैं कि "तफ़्सीलु कुल्ले शैइन" उड़ गई, सिर्फ़ अहकाम बाक़ी रह गये।

शाने अब्दीयत और है और शाने महबूबियत और

तौरेत का कलामे ख़ुदा है तो उसकी अल्वाह के साथ यह बर्ताव ?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू इस एतराज़ का इल्ज़ामी जवाब देते हुए इरशाद फरमाते हैं :

★ हज़रत हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम नबी हैं और आपके बड़े भाई और नबी की ताज़ीम फ़र्ज़ है, उनके साथ तो आपने जलाल के वक़्त यह किया, उनका सर और दाढ़ी पकड़ कर खींचने लगे।

★ जाने दीजिए यह तो आपके बड़े भाई थे, शबे मेराज हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि कोई शख़्स रब अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर बुलन्द आवाज़ से कलाम कर रहा है, इरशाद फरमाया ऐ जिब्रील यह कौन शख़्स हैं अर्ज़ की मूसा हैं, फरमाया क्या अपने रब पर तेज़ी करते हैं, अर्ज़ किया उनका रब जानता है कि उनका मिज़ाज तेज़ है।

★ ख़ैर इसको भी जाने दीजिए। वह जो रब अज़्ज़ा व जल्ल से अर्ज़ की है, यह सब तेरे ही फ़ित्ने हैं, यहाँ क्या कहिएगा?

★ उम्मुल–मुमिनी सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा जो अल्फ़ाज़ शाने जलाल में इरशाद कर गई हैं, दूसरा कहे तो गर्दन मारी जाए।

अन्धों ने सिर्फ़ शाने अब्दीयत देखी, शाने महबूबियत से आंखें फूट गईं।

(अल–मल्फ़ूज़ सोम : स0 6.7)

कुरआन शरीफ़ की छोटी तक़्तीअ्

कुरआने अज़ीम छोटी तक़्तीअ् पर लिखना, हमाइल बनाना शरअ़न मकरूह व नापसन्द है।

★ अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक शख़्स के पास कुरआन

मजीद बारीक लिखा हुआ देखा उसे मक्रूह रखा। और उस शख़्स को मारा और फरमाया, किताबुल्लाह की अज़्मत करो।

★ अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम मुस्हफ़ को छोटा बनाना मक्रूह रखते।

★ इसी तरह इब्राहीम नख़ई ने उसे मक्रूह फरमाया।

★ इसी तरह फ़िक़्ह की बाज़ किताबों में भी है कि कुरआने अज़ीम को छोटा बनाना कि मआज़ल्लाह एक खेल और तमाशा हो। मक्रूह नापसन्द है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द दोम : स0 161)

दर व दीवार पर आयाते कुरआनिया लिखने का हुक्म

दीवारों पर किताबत से उलमा ने मना फरमाया है, उस से एहतराज़ ही असलम है अगर छूट कर न भी गिरें तो बारिश में पानी उन पर गुज़र कर ज़मीन पर आएगा और पामाल होगा, ग़रज़ मुफ़्सिदा का एहतमाल है और मस्लेहत कुछ भी नहीं। लिहाज़ा इज्तिनाब ही चाहिए।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 403)

कुरआन अल्लाह की दावत है

सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की आदते करीमा थी जब किसी मज्लिस में जमा होते किसी से कुछ आयाते कलाम मजीद पढ़ कर सुनते।

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं बेशक यह कुरआन अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ़ से तुम्हारी दावत हैं तो जहाँ तक हो सके उसकी दावत क़बूल करो। (हाकिम)

दूसरी हदीस में है हर दावत करने वाला दोस्त रखता है कि लोग उसकी दावत में आएं और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का ख़्वाने नेमत कुरआन है तो उसे न छोड़ो।

(बैहक़ी, फतावा रज़्वीया: जिल्द 9, स0 74)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की दावत क़बूल करना और उसके ख़्वाने नेमत से बहरामन्द होना हर हाल में जाइज़ है ख़्वाह शादी हो या ग़मी। (मुरत्तिब)

हिफ़्ज़े कुरआन की फ़ज़ीलत व बरकत

हिफ़्ज़े कुरआन फ़र्ज़ कफ़ाया है और सहाबा व ताबईन व उलमाए दीन मतीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत है और तमाम मुस्तहब्बात में अफ़्ज़ल, तमाम क़ुर्बत व नेकी की बातों में उम्दा है, उसके मुनाफ़े व फ़ज़ाइल हस्र व शुमार से बाहर हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कुरआन वाला क़्यामत के रोज़ आएगा पस कुरआन अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे उसे ख़िलअत अता फरमा। तो उस शख़्स को ताजे करामत अता फरमाया जाएगा फिर अर्ज़ करेगा एक रब मेरे और ज़्यादा कर। तो उसे हुल्लए बुज़ुर्गी पहनाया जाएगा, फिर अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे इस से राज़ी हो जा। तो अल्लाह जल्ला जलालुहू उस से राज़ी हो जाएगा, फिर उस से कहा जाएगा पढ़ और चढ़ और हर आयत पर एक नेकी ज़ाइद की जाएगी। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

हदीस : साहिबे क़ुरआन को हुक्म होगा कि पढ़ और चढ़ और ठहर–ठहर कर पढ़ जैसे तू इसे दुनिया में ठहर–ठहर कर पढ़ता था कि तेरा मक़ाम इस पिछली आयत के नज़्दीक है जिसे तू पढ़ेगा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हासिल यह कि हर आयत पर एक–एक दरजा उसका जन्नत में बुलन्द करते जाएंगे जिसके पास जिस क़द्र आयतें होंगी उसी क़द्र दरजे उसे मिलेंगे। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हदीस : हाफ़िज़े कुरआन अगर शब को तिलावत करे तो उसकी मिसाल उस तोशादान की है जिसमें मुश्क भरा हो और उसकी ख़ुशबू तमाम मकानों में महके और जो शब को सो रहे और कुरआन उसके सीने में हो तो उसकी कहावत उस तोशादान की मानिन्द है कि जिस में मुश्क है और उसका मुँह बांध दिया जाए। (इब्ने माजा, निसई)

हदीस : तमु में बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाए। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हदीस : जब फ़रिश्तों ने कुरआन सुना बोले ख़ुशी हो उस उम्मत के लिए जिस पर यह नाज़िल हुआ और ख़ुशी हो उन सीनों के लिए जो इसे उठाएंगे और याद करेंगे और ख़ुशी हो उन ज़बानों के लिए जो इसे पढ़ेंगी और तिलावत करेंगी। (दारमी)

जाबजा अल्लाह जल्ला जलालुहू और उसके रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हिफ़्ज़े कुरआन की तरग़ीब व तहरीस फरमाई। रब तबारक व तआला फरमाता है।

और बेशक हमने आसान कर दिया कुरआन को याद करने के लिए। तो है कोई याद करने वाला। (अल–क़मर : 17)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं निगाह रखो कुरआन को और उसे याद करते रहो। तो क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़ा में मेरी जान है अल्बत्ता कुरआन ज़्यादा छूटने पर आमदा है उन ऊंटों से जो अपनी रस्सियों में बंधे हों। (बुख़ारी व मुस्लिम)

यानी जिस तरह बंधे हुए ऊंट छूटना चाहते हैं और अगर उनकी मुहाफ़िज़त व एहतियात न की जाए तो रिहा हो जाएं, उस से ज़्यादा कुरआन की कैफ़ियत है अगर उसे याद न करते रहोगे तो वह तुम्हारे सीनों से निकल जाएगा पस तुम्हें चाहिए कि हर वक़्त इसका ख़्याल रखो और याद करते रहो, इस दौलते बेबहा को हाथ से न जाने दो।

हदीस : "जिसे कुछ कुरआन याद नहीं वह वीराने घर की मानिन्द है जैसे घरों की ज़ीनत उनके रहने वालों और उम्दा आराइशों से होती है उसी तरह ख़ान–ए–दिल की ज़ीनत कुरआन मजीद है जिसे कुरआन याद है उसका दिल आबाद है वरना वीराना व बरबाद।" (तिर्मिज़ी)

हदीस : "ऐ कुरआन वालो! कुरआन को तकिया न बना लो कि पढ़ के याद करके रख छोड़ा। फिर निगाह उठा कर न देखा बल्कि उसे पढ़ते रहो दिन रात की घड़ियों में जैसे उसके पढ़ने का हक़ है और उसे इफ़्शा करो कि ख़ुद पढ़ो लोगों को पढ़ाओ, याद कराओ, उसके पढ़ने, याद करने की तरग़ीब दो।" (बैहक़ी, तबरानी)

न यह कि जो पढ़े और ख़ुदा उसे हिफ़्ज़ की तौफ़ीक़ दे उसको रोको और मना करो, उस से ज़्यादा नादान कौन है जिसे अल्लाह तआला ऐसी हिम्मत बख़्शे और वह उसे अपने हाथ से खो दे। अगर उसकी क़द्र जानता और जो सवाब व दरजात उस पर मौऊद हैं उन से वाक़िफ़ होता है तो उसे जान व दिल से ज़्यादा अज़ीज़ रखता।

जिसे कुरआन मजीद में ज़्यादा दिक़्क़त व मशक़्क़त पड़ती है उसका अज्र अल्लाह के नज़्दीक दूना है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो शख़्स कुरआने अज़ीम में महारत रखता है वह नेकों और बुज़ुर्गों और वह्य और किताबत या लौहे महफ़ूज़ के लिखने वालों यानी अंबिया व मलाइका अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के साथ है और जो कुरआन को बज़ोर पढ़ता है और वह उस पर शाक़ है उसके लिए दो अज्र हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

जो कुरआने करीम याद करके भूल जाए उसके लिए सख़्त वईदें वारिद हुई हैं।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"जो मेरे ज़िक्र यानी कुरआन से मुँह फेरेगा तो उसके लिए तंग ऐश है और हम क़यामत के दिन उसे अन्धा उठायेंगे, कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो अंखियारा था, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमायेगा। यूंही आई थीं तेरे पास हमारी आयतें तो तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तू भुला दिया जाएगा, कोई तेरी ख़बर न लेगा।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो शख़्स कुरआन पढ़ कर भूल जाएगा क़यामत के दिन कोढ़ी हो कर रहेगा। (अबू दाऊद, दारमी)

और फरमाते हैं : सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मेरी उम्मत के गुनाह मेरे हुज़ूर पेश किए गये तो मैंने इस से बड़ा गुनाह न देखा कि किसी शख़्स को कुरआन की एक सूरः या एक आयत याद हो फिर वह उसे भुला दे। (तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स० 104.105)

कुरआन में तहरीफ़ मुम्किन नहीं

कुरआने अज़ीम ख़ुदा की किताब है इसकी हिफ़ाज़त व सियानत का बार उसने अपने ज़िम्म-ए-करम पर रखा है वह ख़ुद फरमाता है कि हमने कुरआन उतारा, हम ही इसकी हिफ़ाज़त करेंगे और यह कि उसके आगे पीछे बातिल दम नहीं मार सकता। जब तक ज़मीन व आसमान और चाँद व सूरज बाक़ी रहेंगे कुरआन का एक-एक हर्फ़ अपनी असली हालत के साथ मौजूद रहेगा उसमें किसी क़िस्म की कोई तहरीफ़ व तरमीम नहीं हो सकती चुनांचे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

अल्हम्दुलिल्लाह कुरआने अज़ीम बहिफ़्ज़े इलाही अब्दुल-आबाद तक महफ़ूज़ है तहरीफ़ व तब्दील करने वाले और इसमें हीला करने वालों को उसके सर पर्द-ए-इज़्ज़त के गर्द बार मुम्किन नहीं। हम्द उसके वजहे करीम को जिसने कुरआन उतारा और उसका हिफ़्ज़ अपने ज़िम्म-ए-कुदरत पर रखा।

तौरेत व इंजील कुछ तो मलऊन अहबारों ने अपने अग़राज़े मलऊना से रुपए लेकर अपने मज़्हबे नापाक के तअस्सुब से क़स्दन बदलीं और कुछ तरजमा करने वालों ने उसमें ख़लत व ख़बत की बुनियादें डालीं मुरूरे ज़मान के बाद वह असल व ज़्यादत मिल मिला कर सब एक हो गई कलामे इलाही व कलामे बशर का इख़्तिलात हो कर तमीज़ न रही।

अल्हम्दु लिल्लाह नफ़्से कुरआन में तहरीफ़ मुहाल है तमाम जहान अगर इकट्ठा हो कर इसका एक नुक़्ता कम बेश करना चाहे हरगिज़ कुदरत न पाए। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 165)

जमा कुरआन

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है जब जंगे यमामा में बहुत सहाबा हामिलाने कुरआन शहीद हुए अमीरुल-मुमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जनाब सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ की यमामा में बहुत हुफ़्फ़ाज़े कुरआन शहीद हुए और मैं डरता हूँ कि अगर हामिलाने कुरआन तेज़ी से शहीद होते गये तो कुरआन का एक बड़ा हिस्सा ख़त्म हो जाएगा, मेरी राय है कि आप कुरआन मजीद के जमा करने और एक जगह लिखने का हुक्म दें। सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तो यह काम किया ही नहीं तुम क्योंकर करोगे, फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया अगरचे हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने न किया मगर ख़ुदा की क़सम काम तो ख़ैर है। सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं फिर उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुझ से इस मुआमला में बहस करते रहे यहाँ तक

कि ख़ुदाए तआला ने मेरा सीना इस अम्र के लिए खोल दिया और मेरी राय उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की राय से मुवाफ़िक़ हो गई।

फिर सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जनाब ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर जमा कुरआन का हुक्म दिया उन्हें भी वही शुबह गुज़रा और अर्ज़ की भला आप ऐसी बात क्यों करते हैं जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने न की। सिद्दीक़े अकबर ने वही जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम बात तो भलाई की है, फिर दोनों साहिबों में बहस होती रही। यहाँ तक कि उनकी राय भी शैख़ैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की राय के साथ मुवाफ़िक़ हुई और उन्होंने कुरआने अज़ीम जमा किया।

(बुख़ारी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 84)

एराबे कुरआन

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कुरआने अज़ीम की इबारते करीमा नाज़िल हुई, इबारत में एराब नहीं लगाए जाते। हुज़ूर के हुक्म से सहाबा किराम मिस्ल अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी व हज़रत ज़ैद बिन साबित व अमीर मुआविया वग़ैरहुम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम उसे लिखते, उनकी तहरीर में भी एराब न थे यह ताबईन के ज़माने से राइज हुए।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 12, स0 260)

मशहूर यह है कि हज्जाज बिन यूसुफ़ के हुक्म से कुरआने हकीम में एराब लगाये गए।

(मुरत्तिब)

तिलावते कुरआन के फ़ज़ाइल व आदाब

तिलावते कुरआन की अहादीसे मुबारका में मुतअद्दद फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं एक हदीस में है कि कुरआने अज़ीम के एक हर्फ़ की तिलावत से दस नेकियाँ हासिल होती हैं, अगर कोई अलिफ़ लाम मीम की तिलावत करे तो उसको तीस नेकियाँ मिलेंगी। कुरआने अज़ीम एक मुतबर्रक आसमानी किताब है, कुरआन पाक की तिलावत करना गोया कि ख़ुदा से राज़ व नियाज़ कहना है, जब बन्दा कुरआन मुक़द्दस पढ़ता है तो फ़रिश्ते उसके मुँह में अपना मुँह डाल देते हैं यह जो कुछ पढ़ता है वह उसके मुँह से निकल कर फ़रिश्ते के मुँह में दाख़िल हो जाता है। (मुरत्तिब)

एक हदीस पाक में है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है, जिसे कुरआने अज़ीम मेरे ज़िक्र व दुआ से रोके, यानी बजाए ज़िक्र व दुआ कुरआने अज़ीम ही में मशग़ूल रहे उसे माँगने वालों से बेहतर अता करूं, और कलामुल्लाह का फ़ज़्ल सब कलामों पर ऐसा है जैसा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का फ़ज़्ल अपनी मख़्लूक़ पर।

(तिर्मिज़ी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द सोम, स0 487)

बेवुज़ू कुरआन छूना मना है

कुरआने अज़ीम की तिलावत या उसको छूने या किसी आयत को छूने के लिए तहारत ज़रूरी है, बेवुज़ू शख़्स कुरआन को हाथ लगाए बग़ैर इसकी तिलावत कर सकता है लेकिन जुनुब या हाइज़ या नुफ़सा को पढ़ना और छूना दोनों हराम हैं आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

बेवुज़ू शख़्स को कुरआने अज़ीम छूना मुतलक़न हराम है, ख़्वाह इसमें सिर्फ़ नज़्म कुरआने

अज़ीम मक्तूब हो या उसके साथ तरजमा व तफ़सीर व रस्म ख़त वग़ैरहा भी कि उनके लिखने से नाम मुस्हफ़ ज़ाइल न होगा, आख़िर उसे कुरआन मजीद ही कहा जाएगा, तरजमा या तफ़सीर या और कोई नाम न रखा जाएगा। यह ज़वाइद, कुरआने अज़ीम के तवाबे हैं और मुस्हफ़ शरीफ़ से जुदा नहीं। इसलिए हाशिया मुस्हफ़ की बयाज़ सादा को छूना भी नाजाइज़ हुआ, बल्कि पुट्ठों को भी, बल्कि चोली पर से भी, बल्कि तरजमा का छूना ख़ुद ही मम्नूअ़ है अगरचे कुरआन मजीद से जुदा लिखा हो उसे भी बेवुज़ू छूना मना है। हाँ कुरआने अज़ीम जुज़्दान में हो तो बेवुज़ू शख़्स जुज़्दान को हाथ लगा सकता है।

कुतुबे तफ़सीर वग़ैरह छूने का हुक्म

कुतुबे तफ़सीर व हदीस व फ़िक़्ह में जहाँ आयत लिखी हो ख़ास उस जगह बेवुज़ू हाथ लगाना हराम है, बाक़ी इबारत में अफ़ज़ल यह है कि बा–वुज़ू हो।

जुनुब व हाइज़ के कुरआन पढ़ने का हुक्म

किसी आयत का इतना टुक्ड़ा कि एक छोटी आयत के बराबर हो बनीयत कुरआन पढ़ना जुनुब व हाइज़ को बिल–इत्तिफ़ाक़ मम्नूअ़ है।

जो आयत बल्कि पूरी सूरत ख़ालिस दुआ व सना हो, जुनुब व हाइज़ बेनीयत कुरआन सिर्फ़ दुआ व सना की नीयत से उसे पढ़ सकते हैं, जैसे अल्हम्द व आयतल–कुर्सी।

हाँ आयतल–कुर्सी या सूरः फातिहा और उनके मिस्ल ऐसी क़िरअत, कि सुनने वाला जिसे कुरआन समझे, उन अवाम के सामने जिनको उसका जुनुब होना मालूम हो बआवाज़ बनीयत दुआ व सना भी पढ़ना मुनासिब नहीं कि कहीं वह बहाले जनाबत तिलावत जाइज़ न समझ लें, या उसका अदमे जवाज़ जानते हों तो उस पर गुनाह की तोहमत न रखें।

अहादीस से यही साबित है कि जुनुब व हाइज़ कुरआन में से कुछ न पढ़ें।

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू इरशाद फरमाते हैं कि कुरआन पढ़ो जब तक तुम्हें नहाने की हाजत न हो और जब हाजते ग़ुस्ल हो तो कुरआन का एक हर्फ़ भी न पढ़ो। (दारे कुतनी)

जुनुब व हाइज़ को तालीम की नीयत से भी कुरआने अज़ीम पढ़ना जाइज़ नहीं, सिर्फ़ इतनी नीयत जुनुब व हाइज़ को काफी नहीं हाँ वह एक–एक हर्फ़ को अलग–अलग करके पढ़ सकते हैं मगर इसमें भी यही शर्त है कि कुरआन पढ़ने की नीयत न हो वरना यह भी मक्रूह है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जुनुब व हाइज़ कुरआन की तिलावत न करे न कुरआन में से कुछ पढ़े। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

शरअ़ मुतह्हर ने लिहाज़ फरमाया कि मुसलमान हर वक़्त, हर हाल में अपने रब जल्ला व उला के ज़िक्र व सना और उस से सवाल व दुआ का मुहताज है, कुरआने अज़ीम ने जो दुआएं तालीम फरमाईं बन्दा उनकी मिस्ल कहाँ से ला सकता है, रहमते शरीअत ने न चाहा कि बन्दा उन ख़ज़ाइन बेमिसाल से रोका जाए। अलल–ख़ुसूस हैज़ व निफ़ास वालियाँ, जिनकी तिहाई उम्र इन्हीं अवारिज़ में गुज़रती है, लिहाज़ा यहाँ नीयत की तब्दीली के साथ इजाज़त अता फरमाई, और शरीअ़ते मुतह्हरा ने उन्हें महरूम न रखा बल्कि वह भी यह दुआएं हर वक़्त और हर हाल में पढ़ सकती हैं।

ख़ुलासा यह है कि जुनुब व हाइज़ और नुफ़सा को बनीयत कुरआन एक हर्फ़ भी पढ़ना जाइज़ नहीं, और जो अल्फाज़ अपने कलाम में ज़बान पर आ जाएं और बेक़स्द मुवाफ़िक़त इत्तिफ़ाक़न कलिमाते कुरआनिया से मुत्तफ़िक़ हो जाएं तो वह इस हुक्म के तहत दाख़िल नहीं।

और कुरआने अज़ीम का ख़्याल करके बेनीयत कुरआन अदा करना चाहे तो सिर्फ़ दो सूरतों में इजाज़त है।

एक यह कि आयात दुआ व सना पढ़े।

दूसरे यह कि बहाजते तालीम एक-एक कलिमा मसलन इस नीयत से कि यह ज़बान अरब के अल्फ़ाज़ मुफ़रेदा हैं कहता जाए और हर दो लफ़्ज़ में फ़स्ल करे, मुतावातिर न कहे कि इबारत मुन्तज़िम हो जाए।

★ जुनुब को वह आयाते सना बनीयते सना भी पढ़ना हराम है जिन में रब अज़्ज़ा व जल्ल ने अपने लिए मुतकल्लिम की ज़मीरें ज़िक्र फरमाईं।

★ जिन आयात दुआ व सना के अव्वल में "कुल" है उन में जुनुब यह लफ़्ज़ छोड़ कर बनीयते दुआ पढ़े वरना जाइज़ नहीं।

★ उसे हुरूफ़े मुक़त्तआत वाली दुआ की भी इजाज़त नहीं।

★ जिन आयात में ख़ालिस दुआ व सना नहीं उन्हें जुनुब या हाइज़ बनीयत अमल भी नहीं पढ़ सकते।

★ सिर्फ़ अमल में लाने की नीयत से जुनुब व हाइज़ ख़ालिस आयात दुआ व सना भी नहीं पढ़ सकते।

★ दम करने के लिए भी जुनुब वही ख़ालिस आयात दुआ व सना बेनीयत कुरआन, ख़ास बनीयत दुआ व सना ही पढ़ सकता है। फ़क़त शिफ़ा लेने की नीयत, कुरआन मजीद को कुरआनियत से ख़ारिज नहीं कर सकती।

★ लिखे हुए कुरआन को जुनुब अपनी नीयत से नहीं बदल सकता, मसलन सूरः फातिहा तन्हा कहीं लिखी है उसमें यह नीयत कर ले कि यह एक दुआ है और उसे हाथ लगाए यह जाइज़ नहीं।

नजासत के पास तिलावत की कराहत

जहाँ कोई नजासत पड़ी हो वहाँ पर कुरआन पाक की तिलावत मक्रूह है।

यही वजह है कि मैयत को जब तक ग़ुस्ल न दे लें, अगर उसका सारा बदन कपड़े से ढका हुआ न हो तो उसके पास कुरआन मजीद की तिलावत आम मशाइख़ के नज़्दीक मना है, अगर तिलावत चाहें तो उसका सारा जिस्म चादर से ढांक दें।

कुरआन से शिफ़ायाबी

हदीस में है कोई आसेबज़दह या मजनू था हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसके कान में "अफ़हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्नाकुम" अल-आयह आयात पढ़ीं वह फौरन अच्छा हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से दरयाफ़्त फरमाया, तुमने उसके कान में क्या पढ़ा, उन्होंने अर्ज़ किया यह आयात पढ़ीं, फरमाया क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है कि सच्चे यक़ीन वाला अगर इन आयतों को पहाड़ पर पढ़े तो उसे जगह से हटा देगा। (नवादिरुल-उसूल, अबू यअ़्ला)

कुछ सहाब-ए-किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम क़बीला बनू सलीम में तशरीफ़ ले गये वहाँ पर एक आदमी को साँप ने डस लिया जिसका इलाज होता नज़र न आया, यह वाक़या जब सहाबा को मालूम हुआ तो बाज़ सहाबा ने कहा कि हम इसे अच्छा कर देंगे मगर शर्त यह है कि हम इसके बदले में एक बकरी लेंगे, वह लोग बकरी देने पर राज़ी हो गये बाज़ सहाबा ने उस शख़्स पर सूरः फातिहा पढ़ कर दम करना शुरू किया यहाँ तक कि वह थोड़ी देर के बाद सेहतयाब हो गया, वह बकरी लेकर अपने असहाब के पास आए तो उन लोगों ने उसको मक्रूह जाना और कहा कि तुमने कुरआन पर उजरत ली है, यहाँ तक कि जब मदीना मुनव्वरह आए तो अर्ज़ की या रसूलल्लाह इसने किताबुल्लाह पढ़ने के एवज़ उजरत ली है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिन कामों पर तुम उजरत लिया करते हो, कुरआन का हक़ उन से ज़्यादा है।(त, बुख़ारी)

तिलावते कुरआन पर उजरत लेने की मुमानेअत

क़ब्र वग़ैरह पर कुरआन मजीद पढ़ने की उजरत लेनी मना है, लोग जो मुक़र्रर करते हैं और उजरत का नाम दर्मियान में नहीं आता, बाद को लेते देते हैं, यह भी उजरत ही है कि आदतन मालूम है कि वह लेने ही को पढ़ते हैं और यह पढ़ने ही पर देते हैं। हाँ अगर साफ़ कह दें कि दिया कुछ न जाएगा फ़िर दें तो हरज नहीं, कि तस्रीह नफ़ी, इस आदत की दलालत पर मुक़द्दम है। क्योंकि शरअ् में दलालत भी मिस्ल सरीह है मगर जब सरीह उसके ख़िलाफ़ होतो दलालत मोतबर नहीं।

कुरआने अज़ीम की तिलावत पर उजरत लेना देना दोनों हराम हैं, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि कुरआन पढ़ो और उसे ख़ुर्दनी का ज़रिया न बनाओ।

हाँ जबकि ख़ास तिलावत पर मुआहेदा न हुआ हो, मसलन एक हाफ़िज़ को मुलाज़िम रखा और उसके मुतअल्लिक़ फिर यह काम भी कर दिया तो अब उसे तन्ख़्वाह लेना जाइज़ है कि वह तिलावत कुरआन की उजरत नहीं, बल्कि उसके वक़्त की उजरत है। और तालीम बख़ौफ़ ज़हाबे कुरआन पर जवाज़े उजरत का फतवा मुतअख़्ख़ेरीन ने दे दिया है। अगर यह सूरत हो तो भी जाइज़ है और महज़ तिलावत पर उजरत का वही हुक्म है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल : स0 11)

बलाओं से हिफ़ाज़त की दुआ

सुबह व शाम की दुआओं में आयतल–कुर्सी के साथ सूरः ग़ाफ़िर का आग़ाज़ : (स0 826) तक पढ़ने को हदीस में इरशाद हुआ है कि जो सुबह पढ़े शाम तक हर बला से महफ़ूज़ रहे और शाम को पढ़े तो सुबह तक महफ़ूज़ रहे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 222 ता 233 व 663ए 788 मुलख़्ख़सन)

हज़रत उमर का हुज़ूर की ज़बाने मुबारक से कुरआन सुनना

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इस्लाम लाने के वाक़या में है कि वह फरमाते हैं मैं आहिस्ता–आहिस्ता चलने लगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ में खड़े हो कर कुरआन पढ़ रहे थे कि मैं जानिबे क़िब्ला उनकी तरफ़ मुँह करके इस तरह खड़ा हुआ कि मेरे और उनके दर्मियान सिर्फ़ ग़िलाफ़े काबा था, हज़रत उमर ने फरमाया कि जब मैंने कुरआन सुना तो मेरे दिल में रिक़्क़त पैदा हो गई। (सीरत इब्ने इसहाक़)

दूसरी रिवायत में है हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं इस्लाम लाने से क़ब्ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को छेड़ने के लिए निकला तो देखा कि वह मुझ से पहले मस्जिद जा चुके हैं, मैं उनके पीछे खड़ा हो गया, उन्होंने सूरः अल–हाक़्क़ह शुरू की। तो मैं तालीफ़े कुरआन के हुस्न व ख़ूबी से मुतअज्जिब हो गया मैंने अपने दिल में कहा कि वह शाइर हैं जैसा कि कुरैश ने कहा, तो हुज़ूर ने तिलावत की कि बेशक यह कुरआन एक करम वाले रसूल से बातें हैं, और वह किसी शाइर की बात नहीं। कितना कम यक़ीन रखते हो, मैंने कहा यह काहिन हैं, मेरे दिल की बात जान ली, तो फिर तिलावत की कि और न किसी काहिन की बात। कितना कम ध्यान करते हो, आख़िर सूरः तक पढ़ा तो मेरे दिल में इस्लाम पूरा–पूरा उतर गया।

(मुसनद संजर, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 181ए 182)

नमाज़े अस्र के बाद तिलावत का हुक्म

बाद नमाज़ अस्र तिलावत कुरआने अज़ीम जाइज़ है, देख कर हो ख़्वाह याद पर, मगर जब आफताब क़रीब ग़ुरूब पहुँचे और वक़्त कराहत आए उस वक़्त तिलावत मुल्तवी की जाए और अज़्कारे इलाहिया किए जाएं कि आफताब निकलते और डूबते और ठीक दोपहर के वक़्त नमाज़ नाजाइज़ और तिलावत मक्रूह है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 359)

शैतान की मायूसी

तरावीह में ख़त्म के रोज़ मुफ़्लेहून तक पढ़ना सुन्नत है, हदीस में ऐसा करने वाले को हाल मुरतहिल फरमाया है यानी मंज़िल पर पहुँच कर कूच कर देने वाला।

जब एक पारह पढ़ चुकता है शैतान कहता है अब शायद रुक जाए न पढ़े, जब दूसरा पारा ख़त्म करता है कहता है अब शायद न पढ़े, इसी तरह हर पारह पर कहता है। यहाँ तक कि जब तीसों पारे ख़त्म हो जाते हैं कहता है अब न पढ़ेगा, अब तो ख़त्म कर चुका। फिर जब मुफ़्लेहून तक पढ़ता है कहता है यह न मानेगा पढ़ता ही रहेगा, मायूसी हो जाता है, उसकी उम्मीद टूट जाती है।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 73)

ख़ुश इल्हानी से कुरआन पढ़ना

कुरआने अज़ीम ख़ुश इल्हानी से पढ़ना जिस में लहजा ख़ुश नुमा, दिल्कश, पसन्दीदह, दिल आवेज़, ग़ाफ़िल दिलों पर असर डालने वाला हो, और मआज़ल्लाह औज़ाने मौसीक़ी की रिआयत से नज़्मे कुरआनी की हैयात को न बदला जाए, मम्दूद का मक़्सूर, मक़्सूर का मम्दूद न बनाया जाए, हुरूफ़ मद को ज़्यादा खींच कर तान न दिया जाए, ज़मज़मा पैदा करने के लिए बेमहल ग़ुन्ना व नून न बढ़ाया जाए, ग़रज़ तर्ज़े अदा में तब्दील व तहरीफ़ राह न पाए बेशक जाइज़ व मरग़ूब, बल्कि शरअन महबूब व मन्दूब, बल्कि हुस्ने सौत की इंतिहाई ताकीद की गई है, ज़मानाए सहाबा व ताबईन व अइम्म–ए–दीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से आज तक उसके जवाज़ व इस्तेहसान पर उलमा का इज्मा है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तबारक व तआला किसी चीज़ को ऐसी तवज्जोह व रज़ा के साथ नहीं सुनता जैसा किसी ख़ुश आवाज़ नबी के पढ़ने को जो ख़ुश इल्हानी से कलामे इलाही की तिलावत बआवाज़ करता है। (बुख़ारी, इब्ने माजा)

हदीस : जिस शौक़ व रग़बत से गाने का शौक़ीन अपनी गाइन कनीज़ का गाना सुनता है बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उस से ज़्यादा पसन्द व रज़ा व इकराम के साथ अपने बन्दे का कुरआन सुनता है जो उसे ख़ुश आवाज़ी से जहर के साथ पढ़े। (इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान)

हदीस : कुरआन मजीद सीखो और उसकी निगहदाश्त रखो उसे अच्छे लहजे पसन्दीदह इल्हान से पढ़ो।

हदीस : कुरआन को अपनी आवाज़ों से ज़ीनत दो कि ख़ुश आवाज़ी कुरआन का हुस्न बढ़ा देती है। (सुनने दारमी)

हदीस : हमारे तरीक़े पर नहीं जो कुरआन ख़ुश इल्हानी से आवाज़ बना कर न पढ़े। (बुख़ारी)

हदीस : बेशक यह कुरआन ग़म व हुज़्न के साथ उतरा जब इसे पढ़ो गिरया करो, अगर रोना न आए, बतकल्लुफ़ रोओ और कुरआन को ख़ुश इल्हानी से पढ़ो जो उसे इल्हान से न पढ़े वह हमारे तरीक़े पर नहीं। (इब्ने माजा)

हदीस : कुरआन मजीद अरब के लहनों में पढ़ो और यहूद व नसारा अह्ले फ़िस्क़ के लहनों से बचो कि मेरे बाद कुछ लोग आने वाले हैं जो कुरआन आ आ करके पढ़ेंगे जैसे गाने की तानें और राहिबों और मर्सिया ख़्वानों की उतार चढ़ाव, कुरआन उनके गलों से नीचे न उतरेगा यानी उनके दिलों पर कुछ असर न करेगा, फ़ितने में होंगे उनके दिल और जिन्हें उनकी यह हरकत पसन्द आएगी उनके दिल। (तबरानी औसत, शअ़बुल–ईमान)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कुरआने अज़ीम इंतिहाई ख़ुश आवाज़ी से पढ़ते थे, एक दिन उन से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ अबू

मूसा तुम्हें हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की ख़ुश इल्हानी दी गई है। मैं रात को तुम्हारी क़िरअत सुन रहा था, उस पर हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर मुझे मालूम होता कि आप मेरी क़िरअत सुन रहे हैं तो मैं और भी अच्छी आवाज़ में पढ़ता। (त, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 170ए 171)

ख़त्मे कुरआन

कुरआन मजीद को ठहर–ठहर कर समझ कर पढ़ने का हुक्म है जो इसके मआनी जानता और समझता है वह अल्फ़ाज़ की तिलावत के साथ उनके मआनी पर भी ग़ौर व तअम्मुल करे इस से सवाब ज़्यादा मिलेगा एक सवाब अल्फ़ाज़ की तिलावत का और दूसरा सवाब उनके मआनी समझने का। लेकिन अगर कोई जल्दी पढ़े और मआनी भी समझ ले तो जल्दी पढ़ने में उसके लिए कोई हरज नहीं जैसे बाज़ अइम्मा से साबित है और अगर कोई मआनी को न सझमे तो उसके लिए जल्दी–जल्दी पढ़ना ही बेहतर है ताकि वह ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत कर सके और उसे कसरते तिलावत का सवाब मिले। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में इरशाद फरमाते हैं।

★ उलमा–ए–किराम ने फरमाया है सलफ़े सालेहीन में बाज़ अकाबिर दिन रात में दो ख़त्म फ़रमाते। बाज़ चार, बाज़ आठ ख़त्म करते।

★ इमामुल–अइम्मा सैय्यदना इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने तीस बरस कामिल हर रात एक रकअत में कुरआन मजीद ख़त्म किया है।

★ मीज़ानुश्शरीआ में है, सैय्यदी अली मुरसफ़ी कुद्दिसा सिर्रुहू एक रात दिन में तीन लाख साठ हज़ार ख़त्म फरमाते।

★ अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम बायाँ पाँव रकाब में रख कर कुरआन मजीद शुरू फरमाते और दाहिना पाँव रकाब तक न पहुँचता कि कलाम शरीफ़ ख़त्म हो जाता।

बल्कि ख़ुद हदीस में इरशाद है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने घोड़े को ज़ीन करने का हुक्म फरमाते और इतनी देर से कम में ज़बूर या तौरात मुक़द्दस ख़त्म फरमा लेते। तौरात शरीफ़ कुरआने अज़ीम से अज्म में कई हिस्से ज़ाइद हैं। (बुख़ारी, मुसनद अहमद)

एक हदीस में है कि जिसने तीन रात से कम में कुरआन मजीद ख़त्म किया उसने समझ कर न पढ़ा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

यह वजह सिर्फ़ नफ़ी अफ़्ज़लीयत करती है जिस से कराहत भी साबित नहीं होती।

फिर यह भी उनके लिए है जो तफ़क्कुर मआनी करें, यहाँ के आम लोग कि कितनी ही देर में पढ़े तफ़क्कुर से महरूम हैं, उनके लिए देर बेसूद है; इसी लिए उनके लिए जल्दी ही का अफ़्ज़ल होना चाहिए कि जिस क़द्र जल्द पढ़ेंगे क़िरअत ज़ाइद होगी। और कुरआने करीम के हर हर्फ़ पर दस नेकियाँ हैं, सौ की जगह पाँच सौ हर्फ़ पढ़े तो हज़ार की जगह पाँच हज़ार नेकियाँ मिलीं।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसने कुरआने करीम का एक हर्फ़ पढ़ा उसके लिए एक नेकी है और हर नेकी दस नेकियाँ, मैं नहीं फरमाता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ है और लाम एक हर्फ़ है और मीम एक हर्फ़ है। (तिर्मिज़ी, दारमी)

और हर सवाब सिर्फ़ समझने पर ही मौक़ूफ़ नहीं बल्कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल जिसे चाहता है बेहिसाब अता फरमाता है।

इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने रब अज़्ज़ा व जल्ल (के जल्वा) को ख़्वाब में देखा

अर्ज़ की ऐ मेरे रब! क्या चीज़ तेरे बन्दों को तेरे अज़ाब से नजात देने वाली है फ़रमाया मेरी किताब, अर्ज़ की ऐ मेरे रब समझ कर या बेसमझ भी, फरमाया समझ कर और बेसमझे।

कुरआन में इंहिमाक का फाइदा

अगर कोई ज़िक्र व दुआ छोड़ कर सिर्फ़ कुरआने अज़ीम ही की तिलावत करे तो उसे उन चीज़ों से ज़्यादा दिया जाता है जितना दुआ से मिलता इसी तरह ज़िक्रुल्लाह और दरूद शरीफ़ में मश्गूल रहने वाले को दुआ से ज़्यादा मिलता है। रब तआला उस पर ख़ुद बख़ुद नवाज़िशात की बारिश बरसाता है। (मुरत्तिब)

एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं:

अगरचे कुरआने अज़ीम व तहलील व तक्बीर व तस्बीह व ज़िक्र शरीफ़ हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सब ज़िक्रे इलाही हैं मगर कुरआने अज़ीम आज़मे तुर्क़ अज़्कारे इलाहिया है।

हदीस कुदसी में है सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है जिसे कुरआने अज़ीम मेरे ज़िक्र व दुआ से रोके यानी बजाए ज़िक्र व दुआ कुरआने अज़ीम ही में मशग़ूल रहे उसे माँगने वालों से बेहतर अता करूं, और कलामुल्लाह का फ़ज़्ल सब कलामों पर ऐसा है जैसा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का फ़ज़्ल अपनी मख़्लूक़ पर।

(तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 485ए 487 मुलख़्ख़सन)

कुरआन में दुल्हन

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हर शय की जिन्स में एक दुल्हन होती है और कुरआने अज़ीम में सूरः रहमान दुल्हन है।

(शअ़बुल–ईमान, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 201)

रसूले मोहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तौक़ीर

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत व ताज़ीम ही, मदारे ईमान व इस्लाम है अगर दिल में अज़मते रसूल नहीं तो कोई इबादत मक़्बूल नहीं, बन्दगाने ख़ुदा को हर हाल में मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तक्रीम का ख़्याल रखना ज़रूरी है वरना नजात मुम्किन नहीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ताज़ीमे रसूल से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं :

कुरआने अज़ीम में नबी की ताज़ीम को अपनी इबादत से मुक़द्दम रखा।

अल्लाह तआला फरमाता है : ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह व रसूल पर और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह शाम अल्लाह की पाकी बोलो यानी नमाज़ पढ़ो।

तो सब में मुक़द्दम ईमान है कि बे उसके ताज़ीमे रसूल मक़्बूल नहीं, उसके बाद ताज़ीमे रसूल है कि बे उसके नमाज़ और कोई इबादत मक़्बूल नहीं, यूं तो अब्दुल्लाह तमाम जहान है मगर सच्चा अब्दुल्लाह वह है जो अब्दे मुस्तफ़ा है वरना अब्दे शैतान होगा। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 67)

मीलाद में क़याम करना ताज़ीम है

सीरते नब्वीया में इरशाद फरमाते हैं कि : आदत जारी हो गई है कि लोग जब ज़िक्रे विलादत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सुनते हैं, तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम के लिए खड़े हो जाते हैं, और क़याम बहुत बेहतर और मुस्तहसन है क्योंकि उसमें नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम है और बेशक उम्मत के बड़े–बड़े उलमा ने ऐसा किया जिनकी पैरवी की जाती है। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 56)

शमअ़ न बुझ सकी

जिस शय से ताज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो हरगिज़ मम्नूअ़ नहीं हो सकती।

इमाम ग़ज़ाली ने अहयाउल उलूम शरीफ़ में सैय्यद अबू अली रूद बारी रहमतुल्लाह तआला अलैह से नक़्ल किया कि एक बन्दा सालेह ने मज्लिस ज़िक्र शरीफ़ तरतीब दी और उसमें एक हज़ार शमएँ रौशन कीं, एक शख़्स ज़ाहिर बीं पहुँचे और यह कैफ़ियत देख कर वापस जाने लगे, बानी मज्लिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर ले जा कर फरमाया कि जो शमअ़ मैंने ग़ैर ख़ुदा के लिए रौशन की हो वह बुझा दीजिए, कोशिशें की जाती थीं और कोई शमअ़ ठण्डी न हुई।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 117)

ताज़ीम की बातें जाइज़ हैं

★ कुरआने अज़ीम में है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

ऐ नबी हम ने तुम्हें भेजा गवाह और ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला ताकि ऐ लोगो तुम ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम करो। (अल–फ़तह, 8ए 9)

★ और फरमाता है :

जो ख़ुदा के शिआ़रों की ताज़ीम करे तो वह बेशक दिलों की परहेज़गारी से है।

(अल–हज : 32)

★ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और फरमाता है :

जो ताज़ीम करे ख़ुदा की हुरमतों की तो यह बेहतर है उसके लिए उसके रब के यहाँ।

(अल–हज : 30)

इन आयात से मालूम हुआ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम जिस तरीक़े से की जाएगी हसन व महमूद रहेगी, और ख़ास–ख़ास तरीक़ों के लिए सुबूत जुदागाना दरकार न होगा। हाँ अगर किसी ख़ास तरीक़ा की बुराई ख़ास तौर से शरअ़ से साबित हो जाएगी तो वह बेशक मम्नूअ़ होगा, जैसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सज्दा करना, या जानवरों को ज़िबह करते वक़्त बजाए तक्बीर हुज़ूर का नाम लेना।

इसी लिए अल्लामा इब्ने हजर मक्की फरमाते हैं : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम तमाम अक़्साम ताज़ीम के साथ जिन में अल्लाह तआला के साथ उलूहियत में शरीक करना न हो हर तरह अमरे मुस्तहसन है उनके नज़्दीक जिनकी आंखों को अल्लाह ने नूर बख़्शा है।

(जौहर मुनज़्ज़म, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 77ए 78)

ज़िक्रे नबी के वक़्त तरीक़ा ताज़ीम

इमाम अबू इब्राहीम तहजीबी रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं : हर मुसलमान पर वाजिब है जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को याद करे, या उसके सामने हुज़ूर का ज़िक्र आए ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ बजा लाए और बावक़ार हो जाए और आज़ा को हरकत से बाज़ रखे और हुज़ूर के लिए इस हैबत व ताज़ीम की हालत पर हो जाए जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रू–ब–रू उस पर तारी होती और अदब करे जिस तरह ख़ुदा तआला ने हमें उनका अदब सिखाया है।

नसीमुर्रियाज़ में है : यानी यादे हुज़ूर के वक़्त यह क़रार दे कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रू–ब–रू हाज़िर हूं और हुज़ूर का ख़्याल करे और सूरते अक़्दस का तसव्वुर बांधे गोया हुज़ूर के सामने हाज़िर है।

हमारे सल्फ़े सालेह व अइम्मा साबेक़ीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का यही अदब व तरीक़ा था।

इमाम मालिक रहमतुल्लाह तआला अलैह जब हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़िक्र करते रंग उनका बदल जाता और झुक जाते। यह झुक जाना शिद्दते ख़ुशूअ़ के सबब था। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स० 535)

हदीसे रसूल की ताज़ीम

शिफ़ा शरीफ़ में है : जब लोग इमाम मालिक बिन अनस के पास इल्म हासिल करने आते एक कनीज़ आ कर पूछती शैख़ तुम से फरमाते हैं तुम हदीस सीखने आए हो या फ़िक़्ह व मसाइल, अगर उन्होंने जवाब दिया फ़िक़्ह व मसाइल, जब तो आप तशरीफ़ लाते, और अगर कहा कि हदीस सीखने आए हैं, तो पहले ग़ुस्ल फरमाते, ख़ुशबू लगाते, नए कपड़े पहनते, तीलसान ओढ़ते, और अमामा बांधते, चादर सरे मुबारक पर रखते, उनके लिए एक तख़्त मिस्ल तख़्त उरूस बिछाया जाता, उस वक़्त बाहर तशरीफ़ लाते और बनिहायत ख़ुशूअ़ उस पर जुलूस फरमाते और जब तक हदीस बयान करते थे, अगरबत्ती सुलगाते और उस तख़्त पर उसी वक़्त बैठते थे जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीस बयान करना होती।

हज़रत से इसका सबब पूछा फरमाया मैं दोस्त रखता हूँ कि हदीसे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम करूं, और मैं हदीस बयान नहीं करता, जब तक वुज़ू करके ख़ूब सुकून व वक़ार के साथ न बैठूं। (शिफ़ा शरीफ़)

सर ज़मीने मदीना का अदब

इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यबा में सवारी पर सवार न होते और फ़रमाते थे मुझे शर्म आती है ख़ुदाए तआला से कि जिस ज़मीन में हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जल्वा फ़रमा हों उसे जानवर के सुम से रौंदूं। (शिफ़ा शरीफ़)

कमान का अदब

शिफ़ा शरीफ़ में है : इमाम अब्दुर्रहमान सलमी अहमद बिन फ़ज़्लवीया ज़ाहिदी ग़ाज़ी तीर अंदाज़ से नक़्ल करते हैं कि मैंने कभी कमान बेवुज़ू हाथ से न छूई जब से सुना कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कमान दस्ते अक़्दस में ली है। (शिफ़ा शरीफ़)

शहरे रसूल का अदब

बाज़ सालेहीन ज़्यारते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए हाज़िर हुए तो शहर में न गये बल्कि बाहर से ज़्यारत कर ली। और यह अदब था उस मरहूम का अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ, इस पर किसी ने कहा अन्दर नहीं चलते कहा क्या मुझ सा दाख़िल हो सैय्यदुल–कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शहर में, मैं अपने में इतनी क़ुदरत नहीं पाता हूँ। (मदख़ल)

मस्जिदे नब्वी में खड़े रहे

अबू मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फरमाया मैं जब मस्जिद मदीना तैय्यबा में दाख़िल हुआ जब तक रहा मस्जिद शरीफ़ में क़अ़दा नमाज़ के सिवा न बैठा और बराबर हुज़ूर में खड़ा रहा जब तक क़ाफ़िला ने कूच किया। (मदख़ल)

सिर्फ़ हुज़ूर की ज़्यारत

अबू मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं : मैं हुज़ूरी छोड़ कर न बक़ीअ़ को गया न कहीं और गया, न हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सिवा किसी की ज़्यारत की, और एक दफ़ा मेरे दिल में आया था कि ज़्यारत बक़ीअ़ को जाऊं फिर मैंने कहा कहाँ जाऊंगा, यह है अल्लाह का दरवाज़ा खुला हुआ साइलों और माँगने वालों और दिल शिकस्तों और बेचारों और मिस्कीनों के लिए, और वहाँ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सिवा कौन है जिसका क़स्द किया जाए। (मदख़ल, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 88 ता 90)

मुहम्मद नाम रखने के फ़ज़ाइल व बरकात

जब इंसान पैदा होता है तो उसका नाम आसमान से नाज़िल होता है, उसके लिए जो नाम आसमान से उतरता है वही उसका नाम होता है, बाज़ लोगों के नाम ग़ैर इस्लामी व ग़ैर मुहज़्ज़ब होते हैं तो इस क़िस्म के नाम आसमान से नहीं उतरते, बाबरकत व मुक़द्दस और मुहज़्ज़ब नाम ही आसमानी होते हैं, लेकिन तमाम नामों में मुहम्मद व अहमद नाम के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं अहादीस की रौशनी में उन्हें मुलाहिज़ा फरमाएं। (मुरत्तिब)

एक हदीस में है : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो मेरी मुहब्बत की वजह से अपने लड़के का नाम मुहम्मद या अहमद रखेगा अल्लाह तआला बाप और बेटे दोनों को बख़्शेगा।

एक रिवायत में है : क़्यामत के दिन मलाइका कहेंगे जिनका नाम मुहम्मद या अहमद है जन्नत में चले जाओ। (कंज़ुल–उम्माल)

एक रिवायत में है : मलाइका उस घर की ज़्यारत को आते हैं जिसमें किसी का नाम मुहम्मद या अहमद है। (कंज़ुल–उम्माल)

एक रिवायत में है : जिस मशवरे में इस नाम का आदमी शरीक हो उसमें बरकत रखी जाती है। (कंज़ुल–उम्माल)

एक रिवायत में है : तुम्हारा क्या नुक़्सान है कि तुम्हारे घरों में दो या तीन मुहम्मद हों।

(कंज़ुल–उम्माल, अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 21ए 22)

मुहम्मद नाम रखने की ताकीद पर अहादीस

महबूबाने ख़ुदा अंबिया व औलिया अलैहिमुस्सलातु वस्सना के अस्माए तैयबा पर नाम रखना मुस्तहब है जबकि उनके मख़्सूसात से न हो, और मुहम्मद व अहमद नामों के फ़ज़ाइल में तो अहादीसे जलीला वारिद हैं।

हदीस 1 : अंबिया के नामों पर नाम रखो। (अबू दाऊद, निसाई)

हदीस 2 : मेरे नाम पर नाम रखो और मेरी कुन्नियत पर अपनी कुन्नियत न रखो।

(त, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

(हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की कुन्नियत अबुल–क़ासिम है। मुरत्तिब)

हदीस 3 : रोज़े क़्यामत दो शख़्स हज़रत इज़्ज़त के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे हुक्म होगा इन्हें ले जाओ अर्ज़ करेंगे इलाही हम किस अमल पर जन्नत के क़ाबिल हुए हमने कोई काम जन्नत का न किया, रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाएगा जन्नत में जाओ कि मैंने हल्फ़ फरमाया है कि जिसका नाम अहमद या मुहम्मद हो दोज़ख़ में न जाएगा। (हाफ़िज़ अबू ताहिर सल्फ़ी, हाफ़िज़ इब्ने बकर)

यानी जबकि मोमिन हो और मोमिन उर्फ़ कुरआन व हदीस व सहाबा में उसी को कहते हैं जो सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा हो। वरना बदमज़हबों के लिए हदीसें यह इरशाद फरमाती हैं कि वह जहन्नम के कुत्ते हैं उनका कोई अमल क़बूल नहीं, बद मज़हब अगर हजरे असवद व मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान मज़्लूम क़त्ल किया जाए और अपने इस मारे जाने पर साबिर व तालिबे सवाब रहे जब भी किसी बात पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल नज़र न फरमाए और उन्हें जहन्नम में डाले।

हदीस 4 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : रब अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझ से फरमाया मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम जिसका नाम तुम्हारे नाम पर होगा उसे दोज़ख़ का अज़ाब न दूँगा। (अबू नईम हुलयतुल–औलिया)

हदीस 5 : जिस दस्तरख़्वान पर लोग खाना बैठ कर खाएं और उनमें कोई मुहम्मद या अहमद नाम हो वह लोग हर रोज़ दो बार मुक़द्दस किए जाते हैं। (मुसनदुल–फ़िरदौस, इब्ने अदी)

हासिल यह कि जिस घर में उन पाक नामों का कोई शख़्स हो दिन में दो बार उस मकान में रहमते इलाही का नुज़ूल हो।

हदीस 6 : जिसके तीन बेटे पैदा हों और उन में से किसी का नाम मुहम्मद न रखे जाहिल है। (तबरानी कबीर)

हदीस 7 : जब लड़के का नाम मुहम्मद रखो तो उसकी इज़्ज़त करो और मज्लिस में उसके लिए जगह कुशादा करो और उसे बुराई की तरफ़ निस्बत न करो या उस पर बुराई की दुआ न करो। (मुसनदुल–फ़िरदौस, हाकिम)

हदीस 8 : जब लड़के का नाम मुहम्मद रखो तो उसे न मारो न महरूम रखो। (मुसनद बज़्ज़ार)

सैय्यदना इमाम मालिक फरमाते हैं : जिस घर वालों में कोई मुहम्मद नाम का होता है उस घर की बरकत ज़्यादा होती है। (मुनादी)

लड़का पैदा होगा

फ़तावा इमाम शम्सुदीन सख़ावी में है :

जो चाहे कि उसकी औरत के हमल में लड़का हो उसे चाहिए अपना हाथ औरत के पेट पर रख कर कहे :

इन काना ज़करन फ़क़द सम्मय्यतुहू मुहम्मदन।

अगर लड़का है तो मैंने इसका नाम मुहम्मद ही रखा इन्शाअल्लाहुल–अज़ीज़ लड़का ही होगा।

कुछ मम्नूअ़ नाम

जहाँ मुहम्मद नाम की बेशुमार फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं वहीं कुछ नाम ऐसे हैं जिनका रखना जाइज़ नहीं, ऐसा नाम रखना जिस में शरई क़बाहत व बुराई हो वह हराम है और ऐसा नाम जिस से अपनी अज़मत व बड़ाई ज़ाहिर हो वह भी मुनासिब नहीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ऐसे नामों को बदल दिया है जिसके असल मानी में कोई बुराई थी। (मुरत्तिब)

★ मुहम्मद नबी, अहमद नबी, नबी अहमद, यह अल्फ़ाज़े करीमा हुज़ूर ही पर सादिक़ और हुज़ूर ही को ज़ेबा हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, दूसरे के यह नाम रखना हराम है, कि उनमें हक़ीक़तन इद्दआए नुबुव्वत न होना मुसल्लम वरना ख़ालिस कुफ़्र होता, मगर सूरत और इद्दुआ ज़रूर है और वह भी यक़ीनन हराम है।

★ नबी जान, नाम रखना ना मुनासिब है।

★ यासीन व ताहा, नाम रखना मना है कि वह अस्माए इलाहिया व अस्माए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ऐसे नाम हैं जिनके मानी मालूम नहीं क्या अजब कि उनके वह मानी हों जो ग़ैरे ख़ुदा और रसूल में सादिक़ न आ सकें तो उन से एहतराज़ लाज़िम है।

★ ग़फ़ूरुद्दीन, भी सख़्त क़बीह व शुनीअ़ है, ग़फ़ूर के मानी मिटाने वाला, छुपाने वाला, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ग़फ़ूर जुनूब है यानी अपनी रहमत से अपने बन्दों के जुनूब मिटाता, उयूब छुपाता है, तो ग़फ़ूरुद्दीन के मानी हुए दीन का मिटाने वाला, यह ऐसा हुआ जैसे शैतान नाम रखना।

नामों की तब्दीली

अहादीसे सहीहा से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बकसरत अस्मा जिनके मानी असली के लिहाज़ से कोई बुराई थी तब्दील फरमा दिए।

दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी कि बुरे नाम को बदल देते। (तिर्मिज़ी)

चुनांचे आसिया, अज़ीज़, अतला, शैतान, हकम, ग़ुराब, हुबाब, शहाब, नाम हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तब्दील फरमा दिए। (अबू दाऊद)

★ अहरम का नाम बदल कर ज़रआ रखा।

★ आसिया का नाम जमीला रखा।

★ बर्रा का नाम ज़ैनब रखा, और फरमाया अपनी जानों को आप अच्छा न बनाओ ख़ुदा ख़ूब जानता है कि तुम में नेकोंकार कौन है, बर्रा के मानी थे ज़न नेकोंकार उसे ख़ुद सताई बता कर तब्दील फरमा दिया। (मुस्लिम)

इसी लिए हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक तुम क़यामत के दिन अपने और अपने माँ–बाप के नाम से पुकारे जाओगे तो अपने नाम अच्छे रखो।

(अबू दाऊद, मुसनद अहमद, फतावा रज़वीया जिल्द 9, स0 201ए 203)

नाम पाक सुन कर अंगूठे चूमना

हुज़ूर पुर नूर शफ़ीअ़ यौमुन्नुशूर साहबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक अज़ान में सुनते वक़्त अंगूठे या अंगुश्तान शहादत चूम कर आंखों से लगाना क़तअ़न जाइज़, जिसके जवाज़ पर मक़ामे तबर्रुअ़ में दलाइले कसीरा क़ाइम, और ख़ुद अगर कोई दलीले ख़ास न होती तो मना पर शरअ़ से दलील न होना ही जवाज़ के लिए दलील काफ़ी था जो नाजाइज़ बताए सुबूत देना उसके ज़िम्मा है कि क़ाइले जवाज़, मुतमस्सिक बअसल है और मुतमस्सिक बअसल मुहताजे दलील नहीं, फिर यहाँ तो हदीस व फ़िक़्ह, इरशादे उलमा व अमल क़दीम सल्फ़ उलमा सब कुछ मौजूद, उलमाए मुहद्दीसीन ने इस बाब में हज़रत ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर व हज़रत रेहानए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सैय्यदना इमाम हसन व हुसैन, व हज़रत नक़ीब औलियाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सैय्यदना अबुल–अब्बास ख़िज़्र अलल–हबीब अल–करीम व अलैहिम जमीआ़ अस्सलातु वस्सलाम वग़ैरहुम अकाबिरे दीन से हदीसें रिवायत फरमाई, जिसकी क़द्रे तफ़्सील इमाम अल्लामा शम्सुद्दीन सख़ावी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने किताब मुस्तताब मक़ासिदे हसना में ज़िक्र फरमाई, और फ़िक़्ह की अक्सर किताबों में इस फेअ़ल के इस्तेहबाब व इस्तेहसान की साफ़ तस्रीह आई।

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम अक़्दस अज़ान में सुन कर अंगूठे चूमना मुस्तहब है जब कि कोई मुमानेअत शरई न हो, मसलन हालत ख़ुतबा में या जिस वक़्त कुरआन मजीद सुन रहा है, या नमाज़ पढ़ रहा है, ऐसी हालतों में इजाज़त नहीं बाक़ी सब औक़ात में जाइज़ बल्कि मुस्तहब है जबकि बनीयत मुहब्बत व ताज़ीम हो, मगर ज़ाहिर यही है कि नामे अक़्दस सुन कर अंगूठे चूमना, आंखों से लगाना उरफ़न दलीले ताज़ीम व मुहब्बत है।

मौलाना जमाल बिन अब्दुल्लाह उमर मक्की रहमतुल्लाह तआला अलैह अपने फतावे में फरमाते हैं :

मुझ से सवाल हुआ कि अज़ान में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़िक्र शरीफ़ सुन कर अंगूठे चूमना और आंखों पर रखना जाइज़ है या नहीं?

मैंने इन लफ़्ज़ों से जवाब दिया कि हाँ अज़ान में हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक सुन कर अंगूठे चूमना, आंखों पर रखना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है। हमारे मशाइख़े मज़हब ने मुतअद्दद किताबों में इसके मुस्तहब होने की तस्रीह फरमाई।

अंगूठे चूमना सुन्नते सिद्दीक़ी

इमाम सख़ावी "अल–मक़ासिदुल–हसनते फ़िल–अहादीसे अद्दाइरते अला अल–सिनते।" में फरमाते हैं:

मुअज़्ज़िन से अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह। सुन कर अंगुश्ताने शहादत के पोरे जानिब बातिन से चूम कर आंखों पर मलना।

इस हदीस को दैलमी ने मुसनदुल–फ़िरदौस में हदीस सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया कि जब उस जनाब ने मुअज़्ज़िन को अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह कहते सुना यह दुआ पढ़ी और दोनों कलिमे की उंगलियों के पोरे जानिब ज़ेरीं से चूम कर आंखों से लगाए, इस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो ऐसा करे जो मेरे प्यारे ने किया उस पर मेरी शफ़ाअत हलाल हो जाए।

(मुसनदुल–फिरदौस, मक़ासिदे हसना)

आँखें कभी न दुखें

★ इमाम सख़ावी फरमाते हैं : हज़रत सैय्यदना ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम इरशाद फरमाते हैं : जो शख़्स मुअज़्ज़िन से अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह, सुन कर "मरहबन बेहबीबी व क़ुर्रते ऐनी मुहम्मदिन इब्ने अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम" कहे फिर दोनों अंगूठे चूम कर आँखों पर रखे उसकी आँखें कभी न दुखें। (मक़ासिदे हसना)

★ इमाम सख़ावी ने फरमाया : शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन सालेह मदनी मस्जिद मदीना तैयबा के इमाम व ख़तीब ने अपनी तारीख़ में मज्द मिस्री से कि सल्फ़े सालेह में थे नक़ल किया कि मैंने उन्हें फरमाते सुना, जो शख़्स नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र पाक अज़ान में सुन कर कलिमा की उंगली और अंगूठा मिलाए और उन्हें बोसा देकर आंखों से लगाए उसकी आंखें कभी न दुखीं।

(मक़ासिदे हसना)

★ इमाम सख़ावी ने फरमाया : इब्ने सालेह फरमाते हैं : मैंने यह अम्र फ़क़ीह मुहम्मद ज़रिन्दी से भी सुना कि बाज़ मशाइख़े इराक़ या अजम से रावी थे, और उनकी रिवायत में यूं है कि आँखों पर मस करते वक़्त यह दरूद अर्ज़ करे।

और दोनों साहिबों यानी शैख़ मुजद्दिद व फ़क़ीह मुहम्मद ने मुझ से बयान किया कि जब से हम यह अमल करते हैं हमारी आंखें न दुखीं। (मक़ासिदे हसना)

★ इमाम सख़ावी फरमाते हैं : इमाम इब्ने सालेह मम्दूह ने फरमाया अल्लाह के लिए हम्द व शुक्र है जब से मैंने यह अमल उन दोनों साहिबों से सुना अपने अमल में रखा, आज तक मेरी आँखें न दुखीं और उम्मीद करता हूँ कि हमेशा अच्छी रहेंगी और मैं कभी अन्धा न हूँगा। इन्शाअल्लाह तआला।

(मक़ासिदे हसना)

इमाम सख़ावी ने फरमाया : यही इमाम मदनी फरमाते हैं फ़क़ीह मुहम्मद बिन सईद ख़ौलानी से मरवी हुआ कि उन्होंने फरमाया मुझे फ़क़ीह आलम अबुल–हसन अली बिन मुहम्मद बिन हदीद हुसैनी ने ख़बर दी कि मुझे फ़क़ीह ज़ाहिद बिलाली ने हज़रत इमाम हसन अली जद्दहुल–करीम व

अलैहिस्सलातु वस्सलाम से ख़बर दी कि हज़रत इमाम ने फरमाया कि जो शख़्स मुअज्जिन को अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह, कहते सुन कर यह दुआ पढ़े।

और अपने अंगूठे चूम कर आँखों पर रखे न कभी अन्धा हो न आँखें दुखें। (मक़ासिदे हसना)

अन्धा न हो

इमाम सख़ावी फरमाते हैं : ताऊसी फरमाते हैं : उन्होंने ख़्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अबी नस्र बुख़ारी से यह हदीस सुनी कि जो शख़्स मुअज्जिन से कलिम-ए-शहादत सुन कर अंगूठों के नाख़ुन चूमे और आँखों से मले और यह दुआ पढ़े अन्धा न हो।

हुज़ूर की क़यादत नसीब होगी

शरह नक़ाया में है :

ख़बरदार हो बेशक मुस्तहब है कि जब अज़ान में पहली बार अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह, सुने, सल्लल्लाहु अलैका या रसूलल्लाहे। कहे, और दूसरी बार क़ुर्रतु ऐनी बेका या रसूलल्लाह। फिर अंगूठे के नाख़ुन आँखों पर रख कर कहे, अल्लाहुम्मा मुत्तअ़नी बिस्सम्ओ़ वलबसरे।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने पीछे-पीछे उसे जन्नत में ले जाएंगे।

(शरह नक़ाया)

आँख की कंकरी निकल गई

इमाम सख़ावी फरमाते हैं : यानी फिर ऐसी सनद के साथ जिसके बाज़ रुवात को मैं नहीं पहचानता फ़क़ीह इब्ने लुबाबा के भाई से रिवायत की कि वह अपना हाल बयान करते थे :

एक बार हवा चली एक कंकरी उनकी आँख में पड़ गई, निकालते थक गये हरगिज़ न निकली और निहायत सख़्त दर्द पहुँचाया, उन्होंने मुअज्जिन को अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह, कहते हुए सुन कर यही कहा फौरन वह कंकरी निकल गई।

रुवाद रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं : मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल के हुज़ूर, इतनी बात क्या चीज़ है।(मक़ासिदे हसना, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 425 ता 430)

बनी इसराईल के एक गुनहगार की मग़्फ़िरत

बनी इसराईल में एक शख़्स दो सौ बरस तक फ़िस्क़ व फुजूर में मुब्तला रहा और बाद इंतिक़ाल उसकी मग़्फ़िरत फरमा दी गई इस वजह से कि उसने तौरेत शरीफ़ में नाम पाक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का देख कर चूम लिया था, उनका नाम मुस्तह था।

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं कि :

उसके करम की कोई इंतिहा नहीं, उसकी रहमत चाहे तो करोड़ों बरस के गुनाह धो दे, ग़ुलामी होना चाहिए सरकार की, एक नेकी से मुआफ़ फरमा दे बल्कि उन गुनाहों को नेकी से बदल दे और अगर अदल फरमाए तो करोड़ों बरस की नेकियाँ एक सग़ीरह के एवज़ रद्द फरमा दे।

हदीस में इरशाद हुआ कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रहमत के अपने आमाल से जन्नत में नहीं जा सकता सहाबा ने अर्ज़ की आप भी नहीं या रसूलल्लाह, इरशाद फ़रमाया और मैं भी जब तक कि मेरा रब रहमत न फरमाए। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

गुनाह न सही, इस्तेहक़ाक़ किस बात का है, दुनिया ही का क़ायदा देखिए अगर अजीर है मज़्दूरी करेगा उजरत पाएगा और अगर अब्द है, मम्लूक है, कितनी ही ख़िदमत करेगा कुछ न पाएगा, हम सब तो उसी की मख़्लूक़ व मम्लूक हैं, उसकी रहमत ही रहमत है। आप ही बन्दों को तौफ़ीक़ दी, आप ही उनको असबाब दिए, आप ही आसान फरमाया और फरमाता है : बदला है उनके नेक अमलों का। (अल-मल्फ़ूज़ सोम, स0 74)

आसार व तबर्रुकाते शरीफ़ा

जो चीज़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आसार व तबर्रुकात में से है या उसे हुज़ूर से किसी तरह की कोई निस्बत है ज़माना क़दीम से सल्फ़ सालेहीन उसकी ताज़ीम व तक्रीम करते आए और उन से मरज़ वग़ैरह से शिफ़ा चाहते रहे, अहले इस्लाम के लिए यह इश्क़ व अक़ीदत ही की बात है कि वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मन्सूब चीज़ों के अदब व एहतराम को ज़िन्दगी की सआदत और ज़रिया नजात समझते हैं दीन व शरीअ़त में उसकी कहीं पर कोई मुमानेअ़त वारिद नहीं है बल्कि आसारे शरीफ़ा से बरकत हासिल करने के दलाइल व शवाहिद मौजूद हैं। (मुरत्तिब)

हुज़ूर से मुतअल्लिक़ अशिया क़ाबिले ताज़ीम हैं

आसारे मुक़द्दसा से बरकत व फ़ैज़ हासिल करने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं।

शिफ़ा शरीफ़ में है हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ताज़ीम में से यह है कि आपके तमाम अस्बाब, तमाम मुशाहिद मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में आपके तमाम मकानात मुतअल्लेक़ा अशिया और जिन चीज़ों को आपने मस फरमाया जो आप से मारूफ़ हैं उन सबकी ताज़ीम व तक्रीम बजा लाना है। (त)

शिफ़ा शरीफ़ के एक और मक़ाम पर है।

जिन मक़ामात की मिट्टी हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के जस्दे पाक को लगी है, उन रास्तों, मुशाहिद और मवाक़िफ़ के मैदानों की ताज़ीम, फ़िज़ाओं की तक्रीम, टीलों और दीवारों को बोसा देना मुनासिब है। (त, रिसाला अबरुल–मक़ाल)

नअ्ल मुबारक

हुज़ूरे अक़्दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नअ्ल मुक़द्दस की ताज़ीम व तक्रीम भी ईमान व मुहब्बत की दलील है। क्योंकि अहले दिल व अहले ईमान की नज़र में महबूब की हर चीज़ वाजिबुल–एहतराम व क़ाबिले बरकत होती है। (मुरत्तिब)

नअ्ले मुबारक के बारे में अमल यह है कि तब्क़ा दर तब्क़ा, शर्क़ ग़र्ब, अजम व अरब में उलमाए दीन व अइम्मा मोतमदीन नअ्ल मुतह्हर व रौज़–ए–मुअत्तर हुज़ूर सैय्यदुल–बशर अलैह अफ़्ज़लुस्सलात व अक्मलुस्सलाम के नक़्शे काग़ज़ों पर बनाते, किताबों में तहरीर फरमाते आए और उन्हें बोसा देने और आँखों से लगाने सर पर रखने का हुक्म फरमाते रहे। (रिसाला अबरुल–मक़ाल मुलख़्ख़सन)

नअ्ल शरीफ़ की तारीफ़ व तौसीफ़ में उलमाए किराम व अइम्मा आलाम ने जांफ़ज़ा कलिमात कहे हैं और बड़ी–बड़ी नज़्में तस्नीफ़ की हैं बाज़ उलमा के कलाम का सिर्फ़ तरजमा इख़्तिसार के साथ पेश कर रहा हूँ। (मुरत्तिब)

1. ऐ अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नक़्श नअ्ले मुबारक देखने वाले इस नक़्शा को बोसा दे बेतकब्बुर के।

2. नक़्शा नअ्ले ताहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मस करने वाले को क़यामत में ख़ैरे कसीर मिलेगी और दुनिया में यक़ीनन निहायत अच्छे ऐश व इज़्ज़त व सुरूर में रहेगा तो रोज़े क़यामत मुराद लेने की नीयत से जल्द इस असरे करीम को बोसा दे।

3. ऐ सैय्यदुल–अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नअ़्ल मुबारक तेरे नक़्शा में वह असरार हैं जिनकी अजीब बरकतें हम ने मुशाहिदा कीं जो इज़्हारे इज्ज़ व नियाज़ के साथ अपना रुख़्सार उस पर रगड़े वह बाज़ हक़ उस नक़्शा मुक़द्दसा के जो उस पर वाजिब हैं अदा करे।

4. यह नक़्शा उस नअ़्ले मुबारक का जो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़दम से हुमायूं हुए तू उसके बोसा देने को तज़ल्लुल के साथ हाथ बढ़ा और ज़बान से उसके वजूब व तौक़ीर का इक़रार और दिल से एतक़ाद करता हुआ उसे आँखों पर रख और बोसा दे और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर बएलान दरूद भेज और कोशिश के साथ उसे बार–बार बजा ला।

5. मुस्तफ़ा अशरफ़ुल–ख़ल्क़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नक़्शा नअ़्ले अक़्दस में वह मक़ामे हुज़ूर है जिस से तू रुजूअ़ न चाहे तो उसे यक़ीन और सच्ची नीयत के साथ चेहरा से लगा दिल की मुराद पाएगा।

6. ऐ मेरे मुँह इसे बोसा दे यह नअ़्ले क़रीम का नक़्शा है इसके बोसा से शिफ़ा तलब कर मरज़ दूर होता है।

7. किस क़द्र मुअज़्ज़ज़ है उनकी नअ़्ल मुक़द्दस का नक़्शा जो अपने शर्फ़े अज़ीम में तमाम आलम से बाला हैं ख़ुशी हो उसे जो इसे बोसा दे अपनी रासिख़ मुहब्बत ज़ाहिर करता हुआ।

8. नअ़्ले मुबारक की ख़ाक पर बोसा दे कि इसके नक़्शे ही का बोसा देना तुझे नसीब हो तो क्या ख़ूब बात है।

9. मैं अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नअ़्लैन मुबारक को दोस्त रखता हूँ और रात दिन उसे बोसा देता हूँ।

10. इस नअ़्ल मुबारक के जलाले अनवर से हमने उसके लिए ख़ुज़ूअ़ किया और जब तक हम उसके हुज़ूर झुकेंगे बुलन्द रहेंगे तू इसे बालाए सर रख कि हक़ीक़त में ताज और सूरत में नअ़्ल है।

11. अगर हो सके तो उस ख़ाक को बोसा दे जिसे नअ़्ल मुबारक के असर से नम हासिल हुए वरना उसके नक़्शा ही को बोसा दे।

अल्लामा ताजुद्दीन फाकेहानी रौज़ा मुक़द्दसा और नअ़्ल मुबारक के नक़्शा से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं :

इस नक़्शा के लिखने में एक फाइदा यह है कि जिसे असल रौज़–ए–आलिया की ज़्यारत न मिली वह उसकी ज़्यारत कर ले और शौक़ से उसे बोसा दे कि यह मिसाल उस असल के क़ाइम मक़ाम है, जैसे नअ़्ल मुक़द्दस का नक़्शा मुनाफ़े व ख़्वास में यक़ीनन यह उसका क़ाइम मक़ाम हुआ जिस पर तजरबा सहीहा गवाह है इसलिए उलमाए दीन ने नक़्शा का एज़ाज़ व एहतराम वही रखा है जो असल का रखते हैं।

किताब "अल–फज़रुल–मुनीर" में लिखा है कि उसके फ़वाइद में से यह भी है कि जिसको असल रौज़–ए–पाक की ज़्यारत नसीब न हो तो वह नक़्श नअ़्ल की ज़्यारत करे और बोसा दे और ख़ूब मुहब्बत का मुज़ाहरा करे उलमा ने नअ़्ल के नक़्शा को नअ़्ल के क़ाइम मक़ाम क़रार देकर उसके लिए वही इक्राम व एहतराम क़रार दिया जो असल नअ़्ल शरीफ़ के लिए है और उसके ख़्वास व बरकात वह हैं जिनका तजरबा हो चुका है। (त, रिसाला अबरुल–मक़ाल)

नक़्शा नअ़्ले मुबारक की बरकात

उलमाए किराम ने नक़्शा नअ़्ल मुबारक के बहुत सारे फ़वाइद व बरकात तहरीर फरमाई हैं बाज़ बरकात आज़माई हुई हैं कि –

अ जो शख़्स बनीयत तबर्रुक उसे अपने पास रखे ज़ालिमों के ज़ुल्म और दुश्मनों के ग़लबा से

अमान पाए।

★ वह नक़्शा मुबारक हर शैतान सरकश और हर हासिद के चश्म ज़ख़्म से उसकी पनाह हो जाए।

★ ज़न हामिला शिद्दत दर्दज़ह में अगर उसे अपने दाहिने हाथ में ले बइनायते इलाही उसका काम आसान हो। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 151)

★ जो हमेशा पास रखे निगाहे ख़ल्क़ में मुअज़्ज़ज़ हो।

★ ज़्यारते रौज़ा मुक़द्दस नसीब हो।

★ या ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हो।

★ जिस लश्कर में हो न भागे।

★ जिस क़ाफ़िला में हो न लुटे।

★ जिस कश्ती में हो न डूबे।

★ जिस माल में हो न चुरे।

★ जिस हाजत में उस से तवस्सुल किया जाए पूरी हो।

★ जिस मुराद की नीयत से पास रखें हासिल हो।

★ मौज़ा दर्द व मरज़ पर उसे रख कर शिफ़ाएं मिली हैं। (बदरुल–अनवार)

हुज़ूर का आबे वुज़ू

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक़्दस से जो चीज़ छू जाए वह बा-बरकत हो जाती है और उस पर जहन्नम की आग हराम हो जाती है यही वजह है कि जब हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वुज़ू फ़रमाते तो वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरता सहाबा किराम उसे हाथों में ले लेते और अपने जिस्मों पर मल लेते थे। (मुरत्तिब)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह कुतुबे हदीस में है कि जब उरवा बिन मस्ऊद सक़फ़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु साले हुदैबिया कुरैश की तरफ़ से ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर पुरनूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह में हाज़िर हुए सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को देखा कि जब हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वुज़ू फ़रमाते हैं, हुज़ूर के आबे वुज़ू पर बेताबाना दौड़ते हैं क़रीब है कि आपस में कट मरें और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लुआबे देहन मुबारक डालते, या खिखारते हैं उसे हाथों में ले लेते और अपने चेहरों और बदनों पर मलते हैं।

(बुख़ारी, रिसाला अबरुल–मक़ाल)

मूए मुबारक से तबर्रुक

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब मूए मुबारक तरशवाते तो सहाबा किराम उन बालों को लेकर महफ़ूज़ रखते, हुज्जतुल–विदा के मौक़ा पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सर मुंडवाए तो मूए मुबारक हज़रत अबू तलहा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को देकर फ़रमाया कि इन्हें लोगों में तक़्सीम कर दो, हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नाख़ुन के तराशे और कुछ मूए मुबारक थे उन्होंने वसीयत की थी कि मेरे मरने के बाद इन तबर्रुकात को मेरे सीने के ऊपर कफ़न के अन्दर रख दिया जाए। उम्मुल–मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के पास हुज़ूर के कुछ मूए मुबारक महफ़ूज़ थे उन्हें धो कर मरीज़ को पिलाया जाता जिस से शिफ़ा हासिल होती थी। (मुरत्तिब)

एक हदीस में है उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब फ़रमाते हैं मैं हज़रत उम्मुल–मुमिनीन उम्मे

सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मूए मुबारक निकाले मेंहदी और कुतुम से रंगे हुए थे, यह मूए मुबारक उनके पास तबर्रुकाते शरीफ़ा में रखे थे जिस बीमार को उसका पानी धो कर पिलातीं फ़ौरन शिफ़ा पाता था। (बुख़ारी, इब्ने माजा, मुसनद अहमद, फ़तावा रज़वीया जिल्द 9, स० 32)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज्जाम को बुला कर सरे मुबारक के दाहिनी जानिब के बाल मूंडने का हुक्म फ़रमाया फिर अबू तलहा अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर वह सब बाल उन्हें अता फ़रमा दिए फिर बाएं जानिब के बालों को हुक्म फ़रमाया और वह अबू तलहा को दिए कि इन्हें लोगों में तक़्सीम कर दो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ालिद बिन वलीद की टोपी

शिफ़ा शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम का एक जुज़्या भी है कि जिस चीज़ को हुज़ूर से कुछ इलाक़ा हो, हुज़ूर की तरफ़ मन्सूब हो, हुज़ूर ने उसे छुआ हो, या हुज़ूर के नाम पाक से पहचानी जाती हो उस सबकी ताज़ीम की जाए।

(त, शिफ़ा शरीफ़)

ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की टोपी में चन्द मूए मुबारक थे किसी लड़ाई में वह टोपी गिर गई ख़ालिद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसके लिए ऐसा शदीद हमला फ़रमाया जिस पर और सहाबा किराम ने इंकार किया इसलिए कि इस शदीद व सख़्त हमला में बहुत मुसलमान काम आए, ख़ालिद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मेरा यह हमला टोपी के लिए न था बल्कि मूए मुबारक के लिए था कि मुबादा उसकी बरकत मेरे पास न रहे और वह काफ़िरों के हाथ लगीं। (त, शिफ़ा शरीफ़)

जुब्बा मुक़द्दस से तबर्रुक

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मूए मुबारक के मिस्ल हुज़ूर के लिबास से भी सहाब–ए–किराम तबर्रुक व शिफ़ा हासिल करते थे हुज़ूर के लिबास को भी महफ़ूज़ रखा गया था। (मुरत्तिब)

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है उन्होंने एक ऊनी जुब्बा कसरवानी साख़्त निकाला उसकी प्लेट रेशमीन थी और दोनों चाकों पर रेशम का काम था और कहा यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का जुब्बा है, उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा के पास था उनके इंतिक़ाल के बाद मैंने ले लिया, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इसे पहना करते थे तो हम इसे धो–धो कर मरीज़ों को पिलाते और इस से शिफ़ा चाहते। (मुस्लिम)

इसी तरह हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के पास हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तहबन्द अक़्दस वग़ैरह भी थे जिन्हें उन्होंने महफ़ूज़ रखा था। (मुरत्तिब)

अबू बुर्दा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने एक रज़ाई या कम्बल और एक मोटा तहबन्द निकाल कर हमें दिखाया और फ़रमाया कि वक़्ते वेसाले अक़्दस हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के यह दो कपड़े थे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

बा–बरकत पानी

हुज़ूरे अक़्दस सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुतअल्लिक़ हर चीज़

मुतबर्रक है ख़्वाह वह खाने पीने वाली चीज़ हो या ख़ार्जी तौर पर इस्तेमाल करने वाली अह्ले ईमान की नज़र में वह तमाम चीज़ें बरकत वाली हैं जो हुज़ूर से मुतअल्लिक़ हुईं। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि एक मरतबा हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वुज़ू का बचा हुआ पानी लेकर बाहर निकले लोगों ने उस पानी को लिया और किसी ने उस पानी को छिड़क लिया। (त, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है मदीने के ख़ुद्दाम पानी से भरे हुए अपने–अपने बर्तन लेकर आते हुज़ूर हर बर्तन में अपना हाथ डिबो देते। (त, मुस्लिम)

बाज़ रिवायत में है कि सख़्त सर्दी के मौसम में भी लोग बारगाहे रिसालत में पानी लेकर आते तो हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपना दस्ते अक़्दस पानी में डिबो देते और इंकार न फरमाते। (मुरत्तिब)

एक हदीस में है कि तलक़ बिन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बक़िया आबे वुज़ूए हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हुज़ूर से माँग कर अपने मुल्क को ले गये। (निसई)

इस हदीस में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वुज़ू से बचा हुआ पानी और दीगर पस्मांदा अशिया का मुतबर्रक होना और उनको दूसरे बईद शहरों में मुन्तक़िल करने की नज़ीर आबे ज़मज़म शरीफ़ है, जब आप मदीने में थे तो आप हाकिमे मक्का से आबे ज़मज़म तलब फरमाते और मुतबर्रक बनाते। (त, मिर्क़ात शरह मिश्कात)

हुज़ूर का बरकत हासिल करना

हुज़ूर पुर–नूर सैय्यद यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आसारे मुस्लेमीन से तबर्रुक फरमाते थे।

हज़रत सैय्यदना व इब्ने सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुसलमानों की तहारत गाहों मिस्ल हौज़ वग़ैरह से जहाँ अह्ले इस्लाम वुज़ू किया करते पानी मंगा कर नोश फरमाते और उस से मुसलमानों के हाथों की बरकत लेना चाहते। (तबरानी औसत, अबू नईम हुलिया)

अल्लामा मुहम्मद हफ़्नी फरमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बक़िया आबे वुज़ूए मुस्लेमीन में इस वजह से उम्मीदे बरकत रखते कि वह महबूबाने ख़ुदा हैं, कुरआन में फरमाया बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है तहारत वालों को। (तअ़लीक़ात अलल–जामेअ़)

अल्लाहु अकबर! यह हुज़ूर पुर–नूर सैय्यदुल–मुबारेकीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं जिनकी ख़ाक नअ़लैन पाक तमाम जहान के लिए तबर्रुक दिल व जान व सर व चश्म दीन व ईमान है वह उस पानी को जिस में मुसलमानों के हाथ धुले तबर्रुक ठहराएं और उसे मंगा कर बग़र्ज़ हुसूले बरकत नोश फरमाएं, हालांकि वल्लाह मुसलमानों के दस्त व ज़बान व दिल व जान में जो बरकतें हैं सब उन्हीं न अता फरमाईं, उन्हीं की नअ़लैन पाक के सदक़े में हाथ आईं।

यह सब तालीम उम्मत व तंबीह मश्ग़ूलाने ख़्वाबे ग़फ़्लत के लिए था कि यूं न समझें तो अपने आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फ़ेअ़ल सुन कर बेदार और बरकत आसारे औलिया व उलमा के तलबगार हों। (रिसाला बदरुल–अनवार)

रौज़–ए–अक़्दस का नक़्शा बनाना रखना

दीगर आसारे मुबारका के मिस्ल रौज़ा अतहर का नक़्शा भी मुतबर्रक व मुअज़्ज़म है बनज़रे ताज़ीम व अदब उसकी ज़्यारत भी जाइज़ व दुरुस्त है और उसे बना कर रखना, उस से बरकत हासिल करना वग़ैरह भी जाइज़ है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्देसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं।

रौज़–ए–मुनव्वरह हुज़ूर पुर–नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नक़्ल सहीह बिला शुबह मुअज़्ज़माते दीनीया से है, उसकी ताज़ीम व तक्रीम बर वजहे शरई हर मुसलमान सहीहु–ईमान का मुक़्तज़ाए ईमान है। उसकी ज़्यारत बआदाबे शरीअत और उस वक़्त दरूद शरीफ़ की कसरत हर मोमिन की शहादत क़ल्ब व हिदायत अक़्ले मुस्तहब व मत्लूब है।

अल्लामा ताज फ़ाकेहानी फरमाते हैं :

रौज़–ए–मुबारक सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नक़्ल में एक फ़ाइदा यह है कि जिसे असल रौज़–ए–अक़्दस की ज़्यारत न मिले वह उसकी ज़्यारत करे और शौक़े दिल के साथ उसे बोसा दे कि यह नक़्ल उसी असल के क़ाइम मक़ाम है जैसे नअ्ले मुबारक का नक़्शा मुनाफ़े व ख़्वास में यक़ीनन ख़ुद उसका क़ाइम मक़ाम है जिस पर सही तजरबा गवाह है, इसलिए उलमाए दीन ने उसकी नक़्ल का एज़ाज़ व इकराम वही रखा जो असल का रखते हैं।

(रिसाला बदरुल–अनवार)

ख़ुशबू या ज़्यारते आसार के वक़्त दरूद पढ़ना

बाज़ लोग नक़्ल रौज़ा मुबारक की ज़्यारत और ख़ुशबू सूँघते वक़्त दरूद शरीफ़ पढ़ने को मना करते हैं उसका जवाब देते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी मज्मउल–बहहार से नक़्ल फरमाते हैं कि–

जो ख़ुशबू वाले के पास ख़ुशबू देख कर मुतवज्जेह हुआ और उसे सूँघा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ख़ुशबू को पसन्द फरमाते थे तो उस वक़्त दरूद शरीफ़ पढ़ा इसलिए कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की जलालते शान का दिल में वक़ार पाया और तमाम उम्मत पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इस्तिहक़ाक़ जानते हुए कि आपके आसारे मुबारका को देखते हुए उनकी ताज़ीम व एहतमाम को मल्हूज़ रखें तो ख़ुशबू सूंघने पर दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले ने उस पर कामिल और भारी सवाब पाया, जबकि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आसार को देखने वाले के लिए उलमा–ए–किराम ने उसको मुस्तहब क़रार दिया है और कोई शक नहीं कि ख़ुशबू सूँघने पर मज़्कूरा उमूर को मुस्तहज़र करने वाले ने गोया हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आसारे शरीफ़ा को मानन देखा तो उस वक़्त सिर्फ़ दरूद शरीफ़ की कसरत ही उसको मुनासिब है। (मज्मउल–बहहार)

इसी इरशादे जमील में साफ़ तस्रीहे जलील है कि तमाम उम्मत पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हक़ है कि जब हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आसारे शरीफ़ा से कोई चीज़ देखें या वह शय देखें जो हुज़ूर के आसारे शरीफ़ा से किसी चीज़ पर दलालत करती हो तो उस वक़्त कमाले अदब व ताज़ीम के साथ हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तसव्वुर लाएं और दरूद व सलाम की कसरत करें लिहाज़ा जो ख़ुशबू लेते या सूँघते वक़्त याद करे कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसे दोस्त रखते थे वह भी गोया मानन आसारे शरीफ़ा की ज़्यारत कर रहा है उसे उस वक़्त दरूद पढ़ने की कसरते मस्नून होनी चाहिए।

तो नक़्ल रौज़–ए–मुबारका कि साफ़–साफ़ इसी ज़ुमरे में दाख़िल है उसकी ज़्यारत के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तक्रीम और हुज़ूर पुर–नूर पर दरूद व तस्लीम क्यों न मुस्तहब होगी। (मज्मउल–बहहार, रिसाला बदरुल–अनवार)

मक़ामे इब्राहीम एक अज़ीम निशानी

वह मुक़द्दस पत्थर जिस पर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने खड़े हो

कर खाना काबा की तामीर फरमाई वह उनकी एक अज़ीम व जलील निशानी और बड़ा मोजज़ा है जिसे सदहा साल से बाक़ी रखा गया और आज भी महफ़ूज़ व बाक़ी है खान–ए–काबा में जिस जगह वह पत्थर है उसी को मक़ामे इब्राहीम कहते हैं। (मुरत्तिब)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

बेशक सब में पहला घर कि लोगों के लिए मुक़र्रर फरमाया गया वह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान को राह दिखाता उसमें खुली निशानियाँ हैं इब्राहीम के खड़े होने का पत्थर। (आले इमरान : 96)

जिस पर खड़े होकर उन्होंने काबा मुअज़्ज़मा बनाया उनके क़दमे पाक का निशान उसमें बन गया।

इमाम मुजाहिद इस आयते करीमा की तफ़्सीर में फरमाते हैं :

सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दोनों क़दम पाक का उस पत्थर में निशान हो जाना यह खुली निशानी है जिसे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल आयाते बैयेनात फरमा रहा है।

तफ़्सीर कबीर में है।

काबा मुअज़्ज़मा की एक फ़ज़ीलत मक़ामे इब्राहीम है, यह वह पत्थर है जिस पर इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपना क़दमे मुबारक रखा तो जितना टुक्ड़ा उनके ज़ेरे क़दम आया तर मिट्टी की तरह नर्म हो गया यहाँ तक कि इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का क़दमे मुबारक उस में पैर गया और यह ख़ास क़ुदरते इलाहिया व मोजज़ा अंबिया है। फिर जब इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने क़दम उठाया अल्लाह तआला ने दोबारा उस टुक्ड़े में पत्थर की सख़्ती पैदा कर दी कि वह निशाने क़दम महफ़ूज़ रह गया, फिर उसे हक़ सुब्हानुहू तआला ने मुद्दतहा मुद्दत बाक़ी रखा, तो यह अक़्साम अक़्साम के अजीब व ग़रीब मोजज़े हैं कि अल्लाह तआला ने उस पत्थर में ज़ाहिर फरमाए।

इरशाद अल–अक़्लुस्सलीम में है।

उसी एक पत्थर को मौला तआला ने मुतअद्दद आयात फरमाया इसलिए कि उसमें इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का निशाने क़दम हो जाना, और उनके क़दमों का गुट्टों तक पैर जाना, और पत्थर का एक टुक्ड़ा नर्म हो जाना बाक़ी का अपने हाल पर रहना, और मोजज़ाते अंबिया साबेक़ीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम में इस मोजज़े का बाक़ी रखना, और बावस्फ़ कसरते आदा हज़ारों बरस उसका महफ़ूज़ रहना, यह हर एक बजाए ख़ुद एक आयत व मोजज़ा है।

(रिसाला बदरुल–अनवार)

ताबूते सकीना

इस ताबूत में दो पैग़म्बराने जलील के आसार व तबर्रुकात थे बनी इस्राईल उसके तवस्सुत से जो दुआएँ करते वह क़बूल होतीं और जिस जंग में उसे आगे करते फतह नसीब होती। (मुरत्तिब)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है।

बनी इस्राईल के नबी शमवील अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन से फरमाया कि सलतनते तालूत की निशानी यह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सकीना है और मूसा व हारून अलैहिमस्सलातु वस्सलाम के छोड़े हुए तबर्रुकात हैं, फ़रिश्ते उसे उठा कर लाएं बेशक उसमें तुम्हारे लिए अज़ीम निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। (अल–बक़रह : 248)

वह तबर्रुकात क्या थे मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का असा और उनकी नअ़लैन मुबारक और हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अमामा मुक़द्दसा वग़ैरहा उनकी बरकात थीं कि बनी इस्राईल उस ताबूत को जिस लड़ाई में आगे करते फतह पाते और जिस मुराद में उस से तवस्सुल करते इजाबत देखते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं ताबूते सकीना में तबर्रुकात मौसवीया से उनका असा था और तख़्तियों की कुरचों। (इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम)

उन्हीं से रिवायत है कि ताबूत में मूसा व हारून अलैहिमस्सलातु वस्सलाम के असा और दोनों हज़रात के मल्बूस और तौरेत की दो तख़्तियाँ और क़द्रे मन कि बनी इस्राईल पर उतरा और यह दुआए कशाइश।

इस दुआए कशाइश को पढ़ने से हर मुआमले में आसानी, रिज़्क़ में फराख़ी और अमन व आफ़ियत नसीब होगी। (मुरत्तिब)

मआलिमुत्तंज़ील में है :

ताबूत में मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का असा और उनकी नअ्लैन और हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अमामा व असा था। (रिसाला बदरुल–अनवार)

ग़ौसे आज़म की टोपी

अह्ले इस्लाम में यह तरीक़ा राइज रहा कि अंबिया व औलिया के आसार व तबर्रुकात की ताज़ीम व तक्रीम करते आए। (मुरत्तिब)

अंफ़ासुल–आरेफ़ीन में है :

हरमैन शरीफ़ैन में एक ऐसा शख़्स मुक़ीम था जिसे हज़रत ग़ौसे आज़म महबूबे सुबहानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की कुलाहे मुबारक तबर्रुकन सिलसिलावार अपने आबा व अज्दाद से मिली हुई थी जिसकी बरकत से वह शख़्स हरमैन शरीफ़ैन के नवाह में इज़्ज़त व एहतराम की निगाह से देखा जाता था और शोहरत की बुलन्दियों पर फ़ाइज़ था।

एक रात हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को (कश्फ़ में) अपने सामने मौजूद पाया जो फरमा रहे थे कि यह कुलाह अबुल–क़ासिम अकबराबादी तक पहुँचा दो, हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का यह फरमान सुन कर उस शख़्स के दिल में आया कि उस बुज़ुर्ग की तख़्सीस लाज़िमन कोई सबब रखती है, चुनांचे इम्तिहान की नीयत से कुलाहे मुबारक के साथ एक क़ीमती जुब्बा भी शामिल कर लिया और पूछ गछ करते हज़रत ख़लीफ़ा की ख़िदमत में जा पहुँचा और उन से कहा कि यह दोनों तबर्रुक हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हैं और उन्होंने मुझे ख़्वाब में हुक्म दिया है कि यह तबर्रुकात अबुल–क़ासिम अकबराबादी को दे दो, यह कह कर तबर्रुकात उनके सामने रख दिए ख़लीफ़ा अबुल–क़ासिम ने तबर्रुकात क़बूल फरमा कर इंतिहाई मुसर्रत का इज़्हार किया, उस शख़्स ने कहा यह तबर्रुक एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग की तरफ़ से अता हुए, लिहाज़ा इस शुक्रिये में एक बड़ी दावत का इंतिज़ाम करके रुउसाए शहर को मदऊ कीजिए, हज़रत ख़लीफ़ा ने फरमाया कल तशरीफ़ लाना हम काफ़ी सारा तआम तैयार करायेंगे आप जिस–जिस को चाहें बुला लीजिए। दूसरे रोज़ अलस्सबाह वह दुर्वेश रुउसाए शहर के साथ आया दावत तनावुल की और फातिहा पढ़ी, फ़रागत के बाद लोगों ने पूछा कि आप तो मुतवक्किल हैं ज़ाहिरी सामान कुछ भी नहीं रखते इस क़द्र तआम कहाँ से मुहैया फरमाया है? फरमाया कि इस क़ीमती जुब्बे को बेच कर ज़रूरी अशिया ख़रीदी हैं, यह सुन कर वह शख़्स चीख़ उठा कि मैंने उस फ़क़ीर को अह्लुल्लाह समझा था मगर यह तो मक्कार साबित हुआ, ऐसे तबर्रुकात की क़द्र उसने न पहचानी, आपने फरमाया चुप रहो जो चीज़ तबर्रुक थी वह मैंने महफ़ूज़ कर ली है और जो सामाने इम्तिहान था हमने उसे बेच कर दावते शुक्राना का इंतिज़ाम कर डाला यह सुन कर वह शख़्स मुतनब्बेह हो गया और उसने तमाम अह्ले मज्लिस पर हक़ीक़ते हाल ख़ोल दी जिस पर सबने कहा कि अल्हम्दुलिल्लाह तबर्रुक अपने मुस्तहिक़ तक पहुँच गया। (त, अंफ़ासुल–आरेफ़ीन)

तबर्रुकात के लिए सनद की हाजत नहीं

तवातुर से साबित है कि जिस चीज़ को किसी तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कोई इलाक़ा बदने अक़्दस से छूने का होता, सहाबा व ताबईन व अइम्म–ए–दीन हमेशा उसकी ताज़ीम व हुर्मत और उस से तलबे बरकत फरमाते आए। और दीने हक़ के मुअज़्ज़म इमामों ने तस्रीह फरमाई कि उसके लिए किसी सनद की भी हाजत नहीं बल्कि वह चीज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नाम पाक से मशहूर हो उसकी ताज़ीम शआइरे दीन से है। शिफ़ा शरीफ़ व मवाहिबे लदुनिया व मदारिज शरीफ़ वग़ैरहा में है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम में से है उन तमाम अशिया की ताज़ीम जिसको नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कुछ इलाक़ा हो और जिसे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने छुआ हो या जो हुज़ूर के नाम पाक से मशहूर हो।

यहाँ तक कि बराबर अइम्म–ए–दीन व उलमाए मोअ़तमदीन नअ़्ले अक़्दस की शबीह व तिम्साल की ताज़ीम फरमाते रहे और उस से सदहा अजीब मददें पाईं और उसके बाब में मुस्तक़िल किताबें तस्नीफ़ फरमाईं। जब नक़्शे की यह बरकत व अज़मत है तो ख़ुद नअ़्ले अक़्दस की बरकत व अज़मत को ख़्याल कीजिए, फिर रिदाए अक़्दस, जुब्बा मुक़द्दसा, व अमामा मुकर्रमा पर नज़र कीजिए। फिर उन तमाम आसार व तबर्रुकाते शरीफ़ा से हज़ारों दर्जे आज़म व आला व अकरम व औला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नाख़ुन पाक का तराशा है, कि यह सब मल्बूसात थे और वह जुज़ व बदन वाला है और उस से अजल व आज़म व अरफ़अ़ व अकरम पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रेशे मुबारक का मूए मुतह्हर है।

मुसलमान का ईमान गवाह है कि हफ़्त आसमान व ज़मीन हरगिज़ उस एक मूए मुबारक की अज़मत को नहीं पहुँचते और अभी तस्रीहाते अइम्मा से मालूम हो लिया कि ताज़ीम के लिए न यक़ीन दरकार है न कोई ख़ास सनद, बल्कि सिर्फ़ नाम पाक से उस शय का इश्तिहार काफी है, ऐसी जगह बेइदराक सनदे ताज़ीम से बाज़ न रहेगा मगर बीमार दिल, पुर आज़ार दिल, जिस में न अज़मते शाने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बरवजह काफी, न ईमान कामिल।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

अगर यह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उस पर, और अगर सच्चा है तो तुम्हें पहुँच जाएंगे बाज़ वह अज़ाब जिनका वह तुम्हें वादा देता है। (ग़ाफ़िर : 28)

और ख़ुसूसन जहाँ सनद भी मौजूद हो फिर तो ताज़ीम व एज़ाज़ व तक्रीम से बाज़ नहीं रह सकता मगर कोई खुला काफिर छुपा मुनाफ़िक़। वल–अयाज़ बिल्लाहे तआला।

और यह कहना कि आजकल अक्सर लोग मस्नूई तबर्रुकात लिए फिरते हैं मगर यूंहीं मुज्मल बिला तअय्युन शख़्स हो यानी किसी शख़्से मुऐयन पर उसकी वजह से इल्ज़ाम या बदगुमानी मक़्सूद न हो तो इसमें कुछ गुनाह नहीं और बिला सुबूते शरई किसी ख़ास शख़्स की निस्बत हुक्म लगा देना कि यह उन्हीं में से है जो मस्नूई तबर्रुकात लिए फिरते हैं ज़रूर नाजाइज़ व गुनाह व हराम है कि उसका मन्शा सिर्फ़ बदगुमानी है और बदगुमानी से बढ़ कर कोई झूठी बात नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बदगुमानी से बचो कि बदगुमानी से बढ़ कर झूठी बात नहीं। (बुख़ारी)

अइम्म–ए–दीन फरमाते हैं ख़बीस गुमान ख़बीस ही दिल से पैदा होता है। (फ़ैज़ुल–क़दीर)

तबर्रुकात की ज़्यारत पर उजरत लेने और देने का हुक्म

तबर्रुकाते शरीफ़ा जिंस के पास हों उनकी ज़्यारत करने पर लोगों से उसका कुछ माँगना सख़्त शुनीअ् और बुरा है, जो तन्दरुस्त हो, आज़ा सहीह रखता हो, नौकरी ख़्वाह मज़्दूरी अगरचे डलिया ढोने के ज़रिया से रोटी कमा सकता हो उसे सवाल करना हराम है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ग़नी या सकत वाले तन्दुरुस्त के लिए सदक़ा हलाल नहीं। (मुसनद अहमद)

उलमा फरमाते हैं साइल जो कुछ माँग कर जमा करता है वह ख़बीस है।

उस पर एक तो शुनाअत यह हुई, दूसरी शुनाअत सख़्त तर यह है कि दीन के नाम से दुनिया कमाता है और –

यश्तरूना बेआयाती समनन क़लीलन।

मेरी आयात के ज़रिया क़लील रक़म हासिल करते हैं।

के क़बील में दाख़िल होता है। तबर्रुकाते शरीफ़ा भी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की निशानियों से उम्दा निशानियाँ हैं उनके ज़रिया से दुनिया की ज़लील क़लील पूंजी हासिल करने वाला दुनिया के बदले दीन बेचने वाला है।

शुनाअत सख़्त तर यह है कि अपने इस मक़सदे फ़ासिद के लिए तबर्रुकाते शरीफ़ा को शहर बशहर दर बदर लिए फिरते हैं और कस व नाकस के पास ले जाते हैं, यह आसारे शरीफ़ा की तौहीन है।

ख़लीफ़ा हारून रशीद रहमतुल्लाह तआला अलैह ने आलिम दारुल–हिजरत सैय्यदना इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दर्ख़्वास्त की थी कि उनके यहाँ जा कर ख़लीफ़ाज़ादों को पढ़ा दिया करें, फरमाया मैं इल्म को ज़लील न करूंगा उन्हें पढ़ना है तो ख़ुद हाज़िर हुआ करें, अर्ज़ की वहीं हाज़िर होंगे मगर और तलबा पर उनको तक़्दीम दी जाए फरमाया यह भी न होगा सब यक्सां रखे जाएंगे, आख़िर ख़लीफ़ा को यही मन्ज़ूर करना पड़ा।

यूंही इमाम नख़ई से ख़लीफ़–ए–वक़्त ने चाहा था कि उनके घर जा कर शहज़ादों को पढ़ा दिया करें, इंकार किया, कहा आप अमीरुल–मुमिनीन का हुक्म मानना नहीं चाहते, फरमाया यह नहीं बल्कि इल्म को ज़लील नहीं करना चाहता।

रहा यह कि बे उसके माँगे ज़ाइरीन कुछ उसे दें और यह ले इसमें तफ़्सील है।

शरअ् मुतह्हर का क़ाइदा कुल्लिया यह है कि उरफ़न मुक़र्ररह चीज़ लफ़्ज़न मशरूत की तरह है।

यह लोग तबर्रुकाते शरीफ़ा शहर बशहर लिए फिरते हैं, उनकी नीयत व आदत क़तअ़न मालूम कि उसके एवज़ तहसीले ज़र व जमा माल चाहते हैं, यह क़स्द न हो तो क्यों दूर दराज़ सफर की मशक़्क़त उठाएं, रेलों के किराये दें, अगर कोई उन में ज़बानी कहे भी कि हमारी नीयत फ़क़त मुसलमानों को ज़्यारत से बहरामन्द करना है तो उनका हाल उनके क़ाल की सरीह तक्ज़ीब कर रहा है, उनमें अलल–उमूम वह लोग हैं जो ज़रूरी ज़रूरी तहारत व सलात से भी आगाह नहीं, इस फ़र्ज़े क़तई के हासिल करने को कभी दस पाँच कोस या शहर ही के किसी आलिम के पास घर से आध मील जाना पसन्द न किया, मुसलमानों को ज़्यारत कराने के लिए हज़ारों कोस सफर करते हैं, फिर जहाँ ज़्यारतें हों और लोग न दें वहाँ उन साहिबों के ग़ुस्से देखिए पहला हुक्म यह लगाया जाता है कि तुम लोगों को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से कुछ मुहब्बत नहीं गोया उनके नज़्दीक मुहब्बते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और ईमान इसी में मुंहसिर है कि हराम तौर पर कुछ उनकी नज़र कर दिया जाए, फिर जहाँ कहीं से मिले भी मगर उनके ख़्याल से

थोड़ा हो उनकी सख़्त शिकायतें और गज़गतें उन से सुन लीजिए, अगरचे वह देने वाले सुलहा व उलमा हों और माले हलाल से दिया हो और जहाँ पेट भर के मिल गया वहाँ की लम्बी चौड़ी तारीफ़ें ले लीजिए अगरचे वह देने वाले फ़ुस्साक़ फ़ुज्जार बल्कि बदमज़हब हों और माले हराम से दिया हो, तो क़तअन मालूम कि वह ज़्यारत नहीं कराते बल्कि लेने के लिए, और ज़्यारत करने वाले भी जानते हैं कि ज़रूर कुछ देना पड़ेगा, तो अब सिर्फ़ यह सवाल ही न हुआ बल्कि बहस्बे उर्फ़ ज़्यारते शरीफ़ा पर इजारा हो गया और वह बचन्द वजूह हराम है।

अव्वलन : ज़्यारत आसारे शरीफ़ा कोई ऐसी चीज़ नहीं जो ज़ेरे इजारा दाख़िल हो सके। रद्दुल–महतार वग़ैरह में है।

बैतुल–मक़्दिस की ज़्यारत के एवज़ ईसाइयों से वसूली हराम है, यह दारुल–हरब जैसे रूस वग़ैरह के कुफ़्फ़ार से वसूली हराम है तो मुसलमानों से क्योंकर हराम न होगी। (त)

सानियन : उजरत मुक़र्रर नहीं हुई क्या दिया जाएगा और जो इजारे शरअन जाइज़ हैं उन में भी उजरत मज्हूल रखी जाना उसे हराम कर देता है न कि जो सिरे से हराम है कि हराम दर हराम हुआ। और यह हुक्म जिस तरह गश्ती साहिबों को शामिल है मक़ामी हज़रात भी उस से महफ़ूज़ नहीं जबकि इसी नीयत से ज़्यारत कराते हों और उनका यह तरीक़ा मालूम व मारूफ़ हो।

हाँ अगर बन्द–ए–ख़ुदा के पास कुछ आसारे शरीफ़ा हों और वह उन्हें बताज़ीम अपने मकान में रखे और जो मुसलमान उसकी दर्ख़्वास्त करे महज़ लेवज्हिल्लाह उसकी ज़्यारत करा दिया करे कभी किसी मुआवज़ा नज़राना की तमन्ना न रखे फिर अगर वह आसूदा हाल नहीं और मुसलमान बतौर ख़ुद क़लील या कसीर बनज़रे एआनत उसे कुछ दे तो उसके लिए लेने में उसको कुछ हरज नहीं।

बाक़ी गश्ती साहिबों को उमूमन और मक़ामी साहिबों में ख़ास उनको जो इस अम्र पर अख़ज़े नुज़ूर के साथ मारूफ़ व मशहूर हैं शरअन जवाज़ की कोई सूरत नहीं हो सकती मगर एक वह कि ख़ुदाए तआला उनको तौफ़ीक़ दे नीयत अपनी दुरुस्त करें और इस शर्त उर्फ़ी के रद के लिए सराहतन एलान के साथ हर जल्से में कह दिया करें कि मुसलमानो! यह आसारे शरीफ़ा तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या फ़ुलां वली मुअज़्ज़ज़ व मुकर्रम के हैं कि महज़ ख़ालिसन लेवज्हिल्लाह तुम्हें उनकी ज़्यारत कराई जाती है हरगिज़–हरगिज़ कोई बदला या मुआवज़ा मतलूब नहीं, इसके बाद अगर मुसलमान कुछ नज़्र करें तो उसे क़बूल करने में कुछ हरज न होगा, और उसकी सेहते नीयत पर दलील यह होगी कि कम पर नाराज़ न हो बल्कि अगर जल्से गुज़र जाएं लोग फ़ौज–फ़ौज ज़्यारत करके यूँ ही चले जाएं और कोई पैसा न दें जब भी असलन दिल तंग न हो और उसी ख़ुशी व शादमानी के साथ मुसलमानों को ज़्यारत कराया करें, इस सूरत में यह लेना देना दोनों जाइज़ व हलाल होंगे और ज़ाइरीन व मज़्दूर दोनों एआनते मुस्लेमीन का सवाब पाएंगे उसने सआदत व बरकत देकर उनकी मदद की, उन्होंने दुनिया की मताअ़ क़लील से फ़ाइदा पहुँचाया।

रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : कि तुम में से जिस से हो सके कि अपने मुसलमान भाई को नफ़अ़ पहुँचाए तो नफ़अ़ पहुँचाए। (मुस्लिम)

और फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अल्लाह अपने बन्दा की मदद में है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अलल–ख़ुसूस जब यह तबर्रुकात वाले हज़रात सादाते किराम हों तो अब उनकी ख़िदमत आला दरजा की बरकत व सआदत है।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जो शख़्स औलाद

अब्दुल–मुत्तलिब में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करे और उसका सिला दुनिया में न पाए मैं बनफ़्से नफ़ीस रोज़े क़यामत उसका सिला अता फरमाऊंगा।

और अगर ज़्यारत कराने वाले को उसकी तौफ़ीक़ न हो तो ज़्यारत करने वाले को चाहिए खुद उन से साफ़ सराहतन कह दें कि नज़्र कुछ नहीं दी जाएगी, ख़ालिसन लिवज्हिल्लाह अगर आप ज़्यारत कराते हैं कराइए इस पर अगर वह साहब न मानें हरगिज़ ज़्यारत न करे कि ज़्यारत एक मुस्तहब है और यह लेन देन हराम, किसी मुस्तहब शय के हासिल करने के वास्ते हराम को इख़्तियार नहीं कर सकते।

दुर्रे मुख़्तार में है कि जो तन्दरुस्त हो और कसब पर क़ादिर हो उसे देना हराम है कि देने वाले इस सवाले हराम पर उसकी एआनत करते हैं, अगर न दें तो ख़्वाही नख़्वाही आजिज़ हो और कसब करें और उसकी ग़र्ज़ ज़्यारत, करने वाले साहब ने क़बूल कर ली तो अब सवाल व उजरत का क़दम दर्मियान से उठ गया, बेतकल्लुफ़ ज़्यारत करें दोनों के लिए अज्र है, इसके बाद हस्बे इस्तिताअत उनकी नज़्र कर दें, यह लेना देना दोनों के लिए हलाल और दोनों के लिए अज्र है।

(रिसाला बदरुल–अनवार फ़ी आदाबिल–आसार)

क़मीस मुबारक व नाख़ुन और मूए मुक़द्दस से तबर्रुक

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त वसीयत में फरमाया, मैं सोहबते हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से शर्फ़याब हुआ एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हाजत के लिए तशरीफ़ फरमा हुए हैं, मैं लोटा लेकर हमराह रकाब सआदत मआब हुआ हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने जोड़े से कुर्ता कि बदने अक़्दस के मुत्तसिल था मुझे इंआम फरमाया वह कुर्ता मैंने आज के लिए छुपा रखा था। और एक रोज़ हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नाख़ुन व मूए मुबारक तराशे वह मैंने लेकर इस दिन के लिए लेकर उठा रखे, जब मैं मर जाऊं तो क़मीस सरापा तक़्दीस को मेरे कफन के नीचे बदन के मुत्तसिल रखना और मूए मुबारक और नाख़ुन हाए मुक़द्दसा को मेरे मुँह में और आँखों और पेशानी वग़ैरह मवाज़े सुजूद पर रख देना।

(किताबुल–इस्तीआब फ़ी मअ़रिफ़तिल–असबाब)

साबित बनानी फरमाते हैं मुझ से अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यह मूए मुबारक सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का है इसे मेरी ज़बान के नीचे रख दो मैंने रख दिया वह यूं ही दफन किए गये कि मूए मुबारक उनकी ज़बान के नीचे था। (इब्नुस्सकन)

असाए मुबारक से तबर्रुक

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रिवायत करते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक छड़ी थी वह उनके सीने पर क़मीस के नीचे उनके साथ दफन की गई। (बैहक़ी, इब्ने असाकिर)

मुश्क से तबर्रुक

अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम फरमाते हैं कि उनके पास मुश्क था वसीयत फरमाई कि मेरे हुनूत में यह मुश्क इस्तेमाल किया जाए और फरमाया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुनूत का बचा हुआ है। यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तज्हीज़ व तक्फीन के वक़्त जो ख़ुशबू लगाई गई उसका कुछ हिस्सा बचा हुआ था जिसे हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने आख़िरी वक़्त के लिए महफ़ूज़ रखा था और वसीयत फरमाई थी।(हाकिमे मुस्तदरिक, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 131)

अह्ले बैत व सादात के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला ने इंसानों में शुऊब व क़बाइल बनाए, इंसानों में क़ौम व खानदान को इम्तियाज़ बख़्शा दुनिया के तमाम खानदानों में वह खानदान सबसे अफ़ज़ल व बेहतर क़रार पाया जिस में ताजदारे अरब व अजम जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए हुज़ूर के वास्ते से हुज़ूर के घर वाले, हुज़ूर के खानदान हुज़ूर की औलाद, दुर्रे औलाद को शर्फ़े इम्तियाज़ हासिल हुआ, और अल्लाह तआला ने हुज़ूर को यह ख़ुसूसियत अता फरमाई कि हज़रत बुतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की औलाद से नसबे पाक का सिलसिला क़ाइम हुआ, दुनिया में नस्ल का एतबार बाप से होता है मगर बुतूल ज़हरा को यह इम्तियाज़ अता हुआ कि उनकी औलाद उन्हीं की तरफ़ मन्सूब हुई और उन्हीं की औलाद को सादात होने का फ़ख़ और खानदानी शराफ़त का तम्ग़ा–ए–कमाल हासिल हुआ। (मुरत्तिब)

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की औलाद अम्जाद और भी हैं क़ुरैशी, हाशमी, अलवी होने से उनका दामाने फ़ज़ाइल माला माल है कि यह शर्फ़े आज़म कि हज़रात सादाते किराम को है उनके लिए नहीं, यह शर्फ़ हज़रत बुतूल ज़हरा की तरफ़ से है कि "फ़ातिमा मेरा टुक्ड़ा है"। (मुस्लिम)

"सबकी औलादें अपने बाप की तरफ़ निस्बत की जाती हैं सिवा औलादे फ़ातिमा के कि मैं उनका बाप हूँ।" (कंज़ुल–उम्माल)

सादात पर अज़ाब न होगा

सादाते किराम जो वाक़ई इल्मे इलाही में सादात हों उनके बारे में रब अज़्ज़ा व जल्ल से उम्मीदे वासिक़ यही है कि आख़िरत में उनको किसी गुनाह पर अज़ाब न दिया जाएगा।

हदीस में है उनका फ़ातिमा इसलिए नाम हुआ कि अल्लाह तआला ने उनको और उनकी तमाम ज़ुर्रियत को नार पर हराम फरमा दिया। (कंज़ुल–उम्माल)

दूसरी हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बुतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से फरमया ऐ फ़ातिमा अल्लाह न तुझे अज़ाब करेगा न तेरी औलाद में किसी को। (कंज़ुल–उम्माल, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 12, स० 207)

एहतरामे सादात

सादाते किराम की ताज़ीम व तक्रीम से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

यह फ़क़ीर ज़लील बेहम्देही तआला हज़राते सादाते किराम का अदना ग़ुलाम व खाकपा है, उनकी मुहब्बत व अज़मत ज़रिया नजात व शफ़ाअत जानता है अपनी किताबों में छाप चुका है कि सैयद अगर बद–मज़्हब भी हो जाए उसकी ताज़ीम नहीं जाती जब तक बदमज़्हबी हद्दे कुफ़्र तक न पहुँचे, हाँ बाद कुफ़्रे सियादत ही नहीं रहती फिर उसकी ताज़ीम हराम हो जाती है।

और यह भी फ़क़ीर बारहा फतवा दे चुका है कि किसी को सैय्यद समझने और उसकी ताज़ीम करने के लिए हमें अपने ज़ाती इल्म से उसे सैयद जानना ज़रूरी नहीं। जो लोग सैयद कहलाए जाते हैं हम उनकी ताज़ीम करेंगे, हमें तहक़ीक़ात की हाजत नहीं, न सियादत की सनद माँगने का हम को हुक्म दिया गया है, और ख़्वाही नख़्वाही सनद दिखाने पर मज्बूर करना और न दिखाएं तो बुरा कहना, मत्ऊन करना हरगिज़ जाइज़ नहीं, लोग अपने नसब पर अमीन हैं।

हाँ जिसकी निस्बत हमें ख़ूब तहक़ीक़ मालूम हो कि यह सैयद नहीं और वह सैयद बने उसकी

हम ताज़ीम न करेंगे न उसे सैयद कहेंगे और मुनासिब होगा कि नावाक़िफ़ों को उसके फ़रेब से मुब्तला कर दिया जाए, मेरे ख़्याल में एक हिकायत है जिस पर मेरा अमल है कि :

एक इबरत अंगेज़ हिकायत

एक शख़्स किसी सैयद से उल्झा, उन्होंने फरमाया मैं सैयद हूँ, कहा क्या सनद है तुम्हारे सैयद होने की, रात को ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुआ मअ़रका हश्र है, यह शफ़ाअत ख़्वाह हुआ, एराज़ फरमाया, उसने अर्ज़ की मैं हुज़ूर का उम्मती हूँ, फरमाया क्या सनद है तेरे उम्मती होने की।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 12, स0 125)

अह्ले बैत की तौक़ीर

मुतअद्दद अहादीस में अह्ले बैत की इज़्ज़त व तक्रीम का हुक्म आया है और उनकी पैरवी का भी हुक्म दिया गया है मुसलमान का ईमानी तक़ाज़ा यह है कि वह अह्ले बैत का हक़ पहचाने और उनकी ईज़ा रसानियों से दूर रहे। (मुरत्तिब)

हदीस में है सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मेरी औलाद व अंसार और अरब का हक़ न पहचाने वह तीन वजह में से एक है, या तो वह मुनाफ़िक़ है, या वल्दुज़्ज़ना, या हैज़ी बच्चा। (त, दैलमी)

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से रिवायत है सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मेरे किसी मुतअल्लिक़ व रिश्तेदार को ईज़ा दे बेशक उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को ईज़ा दी।

(त, इब्ने असाकिर, अबू नईम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 22)

बराय तादीबे उस्ताद का मारना

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से एक शख़्स ने पूछा कि सैयद के लड़के को उसका उस्ताद तादीबन मार सकता है या नहीं? उस पर आपने फरमाया :

क़ाज़ी जो हुदूदे इलाहिया क़ाइम करने पर मज्बूबर है उसके सामने अगर किसी सैयद पर हद साबित हुई तो बावजूद यह कि उस पर हद लगाना फ़र्ज़ हे और वह हद लगाएगा लेकिन उसको हुक्म है कि सज़ा देने की नीयत न करे बल्कि दिल में यह नीयत रखे कि शहज़ादे के पैर में कीचड़ लग गई उसे साफ़ कर रहा हूँ, तो क़ाज़ी जिस पर सज़ा देना फर्ज़ है उसको तो यह हुक्म है, ताबा मुअल्लिम चेह रस्द। (अल–मल्फ़ूज़ सोम : स0 56)

सैयद की तौहीन हराम है

सुन्नी सैयद की बेतौक़ीरी सख़्त हराम है।

सही हदीस में है छेः शख़्स हैं जिन पर मैंने लानत की अल्लाह उन पर लानत करे और हर नबी की दुआ क़बूल है।

★ उन में से एक वह जो किताबुल्लाह में अपनी तरफ़ से कुछ बढ़ाए।

★ और वह जो ख़ैर व शर सब कुछ अल्लाह की तक़्दीर से होने का इंकार करे।

★ और वह जो मेरी औलाद से उस चीज़ को हलाल रखे जो अल्लाह ने हराम किया।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 395)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर यूं है :

सादाते किराम की ताज़ीम फ़र्ज़ है और उनकी तौहीन हराम, बल्कि उलमाए किराम ने इरशाद फरमाया जो किसी आलिम को मौलवी या किसी सैयद को मिरवा, बर वजहे तहक़ीर कहे काफ़िर है।

सादाते किराम की ताज़ीम हमेशा जब तक उनकी बद–मज़्हबी हद्दे कुफ़्र को न पहुँचे कि उसके बाद वह सैयद ही नहीं नसब मुन्क़तअ़ है।

अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मुख़ातब करते हुए उनके बेटे के बारे में इरशाद फरमाया कि : (त)

वह तुम्हारे अह्ल में से नहीं है उसने नेक अमल न किया। (त, हूद, 46)

जैसे नेचरी, क़ादयानी, वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद, देवबन्दी अगरचे सैयद मशहूर हों न सैयद हैं न उनकी ताज़ीम हलाल, बल्कि तौहीन व तक्फ़ीर फर्ज़, और रवाफ़िज़ के यहाँ तो सियादत बहुत आसान है, किसी क़ौम का राफ़ज़ी हो जाए दो दिन बाद मीर साहब हो जाएगा, उनका भी वही हाल है कि उन फ़िर्क़ों की तरह तबर्राइयाने ज़माना भी उमूमन मुरतदीन हैं।

आले अत्हार की मुहब्बत बेहम्दिल्लाहे तआला मुसलमान का दीन है और उस से महरूम नासबी ख़ार्जी जहन्नमी है। सच्चे मुहिब्बाने अह्ले बैते किराम के लिए रोज़े क़यामत नेमतें, बरकतें, राहतें हैं।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हम अह्ले बैत की मुहब्बत लाज़िम पकड़ो कि जो अल्लाह से हमारी दोस्ती के साथ मिलेगा वह हमारी शफ़ाअत से जन्नत में जाएगा क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है कि किसी को उसका अमल नफ़अ़ न देगा जब तक हमारा हक़ न पहचाने। (तबरानी कबीर, फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 430)

सैयद पर तन्क़ीद दुरुस्त नहीं

सैयद की ताज़ीम व तक्रीम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जुज़ईयत होने के सबब से है हुज़ूर से कितने ही वास्ता पर हो वह भी सैयद है और सैयद पर तन्क़ीद व एतराज़ दुरुस्त नहीं बल्कि उनकी ग़लतियों को दरगुज़र करना चाहिए। (मुरत्तिब)

इमाम इब्ने हजर मक्की सवाइक़े मुहरिक़ा में फरमाते हैं :

सैयदों की तन्क़ीद से चश्म पोशी करना चाहिए क्योंकि अह्ले बैत के फासिक़ों का फ़ेअ़्ल नापसन्दीदा है उनकी ज़ात नापसन्दीदह नहीं क्योंकि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्म का टुकड़ा हैं अगरचे उनमें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में कितने ही वास्ते हों।

औलादे फातिमा को ईज़ा देना ख़तरनाक है

इमाम अबू सईद ने किताब शरफुन्नुबुव्वह में यह रिवायत नक़्ल की :

ऐ फातिमा तेरी नाराज़ी से अल्लाह तआला नाराज़ होता है और तेरी रज़ा से ख़ुदा राज़ी होता है तो जो उनकी औलाद में से किसी को अज़ीयत दे तो उसने बड़ी ख़तरनाक बात मोल ली क्योंकि उनकी अज़ीयत हज़रत फातिमा को ज़रूर दुख पहुँचाएगी, और जिसने उन से मुहब्बत की तो जनाब ज़हरा की रज़ामन्दी का हक़्दार हुआ। (शरफुन्नुबुव्वह)

उलमा तशरीह फ़रमाते हैं कि मदीना के बाशिन्दों की ताज़ीम करो अगर चे उन से बिदअत वग़ैरह का सुदूर हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पासदारी ज़रूरी है, तो तुम्हारा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की औलाद के बारे में क्या ख़्याल है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 11, स0 26ए 27)

अह्ले बैत से हुस्ने सुलूक का फाइदा

हदीस में है जो मेरी अह्ले बैत में किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं रोज़े क़यामत उसका सिला उसे अता फ़रमाऊंगा। (इब्ने असाकिर)

दूसरी हदीस में है जो शख़्स औलाद अब्दुल–मुत्तलिब में किसी के साथ दुनिया में नेकी करे

उसका सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वह रोज़े क़यामत मुझ से मिलेगा। (ख़तीबे बगदादी)

अल्लाहु अकबर क़यामत का दिन, वह क़यामत का दिन, वह सख़्त ज़रूरत, सख़्त हाजत का दिन और हम जैसे मुहताज और सिला अता फरमाने को मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सा साहिबे अत्ताज, ख़ुदा जाने क्या कुछ दें और क्या कुछ निहाल फरमा दें, एक निगाहे लुत्फ़ उनकी जुमला मुश्किलाते दोजहाँ को बस है बल्कि ख़ुद यही सिला करोड़ों सिले से आला व अफ़ज़ल है। बेहम्देलिल्लाहे तआला यह कलिमा मुबारक रोज़े क़यामत वाद-ए-वेसाल व दीदारे महबूब जुल-जलाल का मुज़्दा सुनाता है, मुसलमानो और क्या दरकार है दौड़ो और इस दौलत व सआदत को लो। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 394)

मदीना मुनव्वरह की फ़ज़ीलत

मदीना मुनव्वरह शहर ख़ूबां है, मदीना तैयबा ताजदारे अरब व अजम इंसाने कामिल जनाब मुहम्मद रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आख़िरी आरामगाह है अगरचे हुज़ूर की विलादते तैय्यबा मक्का मुअज़्ज़मा में हुई मगर आपने मदीना तैय्यबा को पसन्द फरमाया। अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शहरे मुक़द्दस की क़सम याद फरमाई उस से मुराद अगरचे मुकर्रमा है मगर एक रिवायत के मुताबिक़ इस से मुराद मदीना तैय्यबा है। (मुरत्तिब)

मदीना अफ़्ज़ल है या मक्का मुकर्रमा

अइम्मा सल्फ़ में बाज़ हज़रात मक्का की अफ़्ज़लीयत के क़ाइल हैं और बाज़ लोग मदीना तैय्यबा को अफ़्ज़ल कहते हैं इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद मुलाहिज़ा फरमाएं :

जम्हूर हन्फ़ीया का मसलक यह है कि मक्का मुअज़्ज़मा अफ़्ज़ल है और इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक मदीना तैय्यबा अफ़्ज़ल है और यही मज़्हब अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का है।

एक सहाबी ने कहा मक्का मुअज़्ज़मा अफ़्ज़ल है, फरमाया क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीना से अफ़्ज़ल है, उन्होंने कहा वल्लाह बैतुल्लाह व हरमुल्लाह, फरमाया मैं बैतुल्लाह और हरमुल्लाह में कुछ नहीं कहता। क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीना से अफ़्ज़ल है? उन्होंने कहा बख़ुदा खाना ख़ुदा व हरमुल्लाह, फरमाया मैं खाना ख़ुदा व हरम में कुछ नहीं कहता। क्या तुम कहते हो मक्का, मदीना से अफ़्ज़ल है। वह वही कहते रहे और अमीरुल-मुमिनीन यही फरमाते रहे। और यही मेरा मसलक है।

सही हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मदीना उनके लिए बेहतर है अगर वह जानें। (बुख़ारी)

दूसरी हदीस में नस्से सरीह है कि फरमाया मदीना, मक्का से अफ़्ज़ल है।

(कन्ज़ुल-उम्माल; अल-मल्फ़ूज़ दोम, स0 53)

एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू मजीद तहरीर फरमाते हैं:

तुर्बते अतहर यानी वह ज़मीन कि जिस्मे अनवर से मुत्तसिल है काबा मुअज़्ज़मा बल्कि अर्श से भी अफ़ज़ल है, बाक़ी मज़ार शरीफ़ का बालाई हिस्सा उसमें दाख़िल नहीं काबा मुअज़्ज़मा मदीना तैय्यबा से अफ़ज़ल है। हाँ इसमें इख़्तिलाफ़ है कि मदीना तैय्यबा सिवाए मौज़ा तुर्बते अतहर और मक्का मुअज़्ज़मा सिवाए काबा मुकर्रमा इन दोनों में कौन अफ़ज़ल है? अक्सर जानिब सानी हैं और अपना मसलक अव्वल और यही मज़्हब फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु है एक हदीस में तस्रीह है कि मदीना तैय्यबा मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 687)

मक्का व मदीना में तफ़ावुते सवाब की मिसाल

और तफ़ावुते सवाब का जवाब बासवाब शैख़ मुहक़्क़िक़ अब्दुल-हक़ देहलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने क्या ख़ूब दिया कि मक्का में कमीयत ज़्यादा है, और मदीना में कैफ़ियत, यानी वहाँ मिक़्दार ज़्यादा है और यहाँ क़द्रे अफ़्ज़ूं, जिसे यूं समझिए कि लाख रुपया ज़्यादा कि पचास हज़ार अशर्फ़ियाँ, गिनती में वह दूने हैं और मालियत में यह दस गुनी। मक्का मुअज़्ज़मा में जिस तरह एक नेकी लाख नेकियाँ हैं यूं ही एक गुनाह लाख गुनाह है और वहाँ गुनाह के इरादे पर भी गिरिफ़्त है जिस तरह नेकी के इरादे पर सवाब, मदीना तैय्यबा में नेकी के इरादे पर सवाब और गुनाह के इरादे पर कुछ नहीं और गुनाह करे तो एक ही गुनाह और नेकी करे तो पचास हज़ार नेकियाँ, अजीब नहीं कि हदीस का इशारा इसी तरफ़ हो कि उनके हक़ में मदीना ही बेहतर है।

(अल-मल्फ़ूज़ दोम, स0 53, 54)

मदीना की पुर बहार रात

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अपने मुशाहिदे की रौशनी में इरशाद फ़रमाते हैं :

दूसरी बार की हाज़िरी में मुझे जेठ का पूरा महीना मदीना तैय्यबा में गुज़रा, दिन में तो कुछ ख़फ़ीफ़ गर्मी होती थी रात को अगर नमाज़ इशा पढ़ कर सोए तो सिवाए मुअज़्ज़िन की आवाज़ के और कोई जगाने वाला नहीं न गर्मी, न पिस्सू, न खटमल, न मच्छर।

हदीस में इरशाद हुआ मदीना की रात में न गर्मी है, न सर्दी, न ख़ौफ़, न मलाल।

मिना में तीन दिन कि करोड़ों जानवर ज़िबह होते हैं न मक्खी नज़र आती है, न कौआ, न चील।

अगर कोई कहे वहाँ मक्खी होती ही न हो तो मक्का मुअज़्ज़मा में शब के वक़्त देखा गया कि अगर सोते में हाथ उठ गया तो मक्खियों का डंगारा उड़ गया। (अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 7)

अरब की मुहब्बत दलीले ईमान है

अरब के साथ मुहब्बत रखने का हुक्म है।

हदीस में है जिसने अरब से मुहब्बत की उसने मुझ से मुहब्बत की और जिसने अरब से बुग़्ज़ रखा उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा। (त, कंज़ुल-उम्माल)

दूसरी हदीस में है कि अरब की मुहब्बत ईमान है और उसका बुग़्ज़ निफ़ाक़। (त, कंज़ुल-उम्माल)

एक और हदीस में है कि तीन वजूह की बिना पर अरब से मुहब्बत रखो।

1. मैं अरबी हूँ।
2. क़ुरआन अरबी में है।
3. अहले जन्नत की ज़बाने अरबी है। (त, कंज़ुल-उम्माल, अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 14)

मदीना को यसरिब कहने की मुमानेअत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हिजरत से पहले मदीना का नाम यसरिब

था यसरिब के मानी हैं फ़साद व हलाकत, मगर जब हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तशरीफ़ आवरी हुई तो हुज़ूर ने उसका नाम मदीना रखा और यसरिब कहने से मना फरमाया। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं कि

मदीना तैय्यबा को यसरिब कहना नाजाइज़ व मम्नूअ़ व गुनाह है और कहने वाला गुनहगार।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो मदीना को यसरिब कहे उस पर तौबा वाजिब है मदीना ताबा है, मदीना ताबा है। (मुसनद अहमद)

इस हदीस से मालूम हुआ कि मदीना तैय्यबा का यसरिब नाम रखना हराम है कि यसरिब कहने से इस्तिग़फ़ार का हुक्म फरमाया और इस्तिग़फ़ार गुनाह ही से होती है।

कुरआने अज़ीम में लफ़्ज़ यस्रिब आया वह रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला व उला ने मुनाफ़िक़ीन का क़ौल नक़ल फरमाया है।

यस्रिब का लफ़्ज़ फसाद व मलामत से ख़बर देता है, वह नापाक उसी तरफ़ इशारा करके यस्रिब कहते। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने उन पर रद्द के लिए मदीना तैय्यबा का ताबा नाम रखा।

हुज़ूरे अक़्दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : वह उसे यस्रिब कहते हैं और वह तो मदीना है। (मुख़ारी, मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने मदीना का नाम ताबा रखा। (मुस्लिम, निसाई)

बाज़ अकाबिर के अश्आर में यह लफ़्ज़ वाक़ेअ़ हुआ, उनकी तरफ़ से उज़्र यही है कि उस वक़्त उस हदीस व हुक्म पर इत्तिला न पाई थी, जो मुत्तलअ़ हो कर कहे उसके लिए उज़्र नहीं।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 61)

शैतान की मायूसी

अह्ले अरब के लिए ख़ास मुज़्दह इरशाद हुआ है कि वह हरगिज़ शैतानी परस्तिश में मुब्तला न होंगे।

हदीस : सैय्यद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक शैतान उस से ना-उम्मीद हो गया है कि जज़ीर-ए-अरब के नमाज़ी उसे पूजें हाँ उनमें झगड़े उठाने की तमअ़ रखता है। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हदीस : शैतान यह उम्मीद नहीं रखता कि अब ज़मीने अरब में बुत पूजे जाएं मगर वह उस से कम दरजा गुनाह तुम से करा देने को ग़नीमत जानेगा जो हक़ीर व आसान समझे जाते हैं।

(मुसनद अबू यअ़ला)

हदीस : शैतान को यह उम्मीद नहीं कि अब तुम्हारें जज़ीरे में उसकी इबादत होगी हाँ उन आमाल में उसकी इताअत करोगे जिन्हें तुम हक़ीर जानोगे वह इसी क़द्र को ग़नीमत समझता है। (बैहक़ी)

हदीस : बेशक शैतान उस से मायूस है कि जज़ीर-ए-अरब में उसकी परस्तिश हो।

(मुसनद अहमद)

फिर ख़ित्त-ए-मुबारक हिजाज़ यानी हरमैन तैय्येबैन और उनके मुज़ाफ़ात के लिए उस से अज़ीम बशारत आई।

हुज़ूर पुर-नूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक दीन हिजाज़ की तरफ़ ऐसा सिमटेगा जैसे साँप अपनी बांबी (सूराख़) की तरफ़, और बेशक दीन हरमैन तैय्येबैन को ऐसा मसकन व मामन बनाएगा, जैसे पहाड़ी की बकरी पहाड़ की चोटी को। (तिर्मिज़ी)

फिर मदीना अमीना का कहना ही क्या है कि वह तो ख़ासों का ख़ास और दीने मतीन का अव्वल व आख़िर मल्जा व मावा है उसकी निस्बत बित्तख़्सीस इरशाद हुआ :

"बेशक ईमान मदीने की तरफ़ यूं सिमटेगा जैसे साँप अपनी बांबी की तरफ़।"

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स० 289)

अह्ले अरब की बुतपरस्ती से शैतान मायूस व ना–उम्मीद हो चुका है लिहाज़ा अब ज़मान–ए–जाहलीयत की तरह वहाँ पर दोबारा बुत परस्ती का रिवाज न होगा इसी लिए अरब की फ़ज़ीलत वारिद हुई है, यहाँ तक कि अरब से मुहब्बत करना ईमान की अलामत और अरब से बुग़्ज़ रखने को निफ़ाक़ की निशानी क़रार दिया गया है, अह्ले अरब की ताज़ीम व तौक़ीर का हुक्म है इसलिए उन्हें गाली देना या बुरा भला कहना शिर्क की पहचान है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अह्ले अरब को सब्बो सतम करें वह ख़ास मुश्रिक हैं। (शअ़बुल–ईमान)

मदीना के बदख़्वाह पर वईद

मदीना तैय्यबा को जज़ीर–ए–अरब पर जिस क़द्र फ़ज़ीलत है उसी क़द्र उनकी अदावत व बदख़्वाही को अह्ले मदीना के साथ ज़्यादत है।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कोई शख़्स अह्ले मदीना के साथ बद अन्देशा न करेगा मगर यह कि ऐसा गल जाएगा जैसे नमक पानी में।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो अह्ले मदीना के साथ किसी तरह का बुरा इरादा करे अल्लाह तआला उसे ऐसा गला दे जैसे नमक पानी में गल जाता है।

(मुस्लिम, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है जो मदीना वालों को ईज़ा दे अल्लाह उसे मुसीबत में डाले और उस पर ख़ुदा फ़रिश्तों और आदमियों सब की लानत है अल्लाह तआला न उसका नफ़्ल क़बूल करे न फ़र्ज़।

(तबरानी कबीर, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स० 297)

मक्का मुकर्रमा की अज़मत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि मक्का मुकर्रमा के अलावा कोई शहर ऐसा नहीं जिसमें गुनाह करने से पहले सिर्फ़ अज़्मे गुनाह पर मुवाख़ज़ा हो। (त)

हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जो शख़्स मदीना तैय्यबा से हुसूले इल्म के लिए मक्का मुकर्रमा आए तो उसे चाहिए कि वह मदीना मुनव्वरह लौट जाए कि हम ने सुना है कि मक्का मुअज़्ज़मा का बाशिन्दा नहीं मरेगा यहाँ तक कि हरम उनके नज़्दीक हल के मिस्ल हो जाएगा कि वह हरम को हल तसव्वुर करेगा यानी हरम का एहतराम बाक़ी नहीं रहेगा। (त)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मुझ पर मक्का का एक गुनाह ज़्यादा भारी है दूसरी जगह के सत्तर गुनाहों से। (त, फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 678)

ज़मज़म शरीफ़

अल्लाह तआला ने काइनात में खाने–पीने वग़ैरह की बेशुमार नेमतें पैदा फरमाईं हैं हर नेमत में जो उसकी हिक्मत पिन्हाँ है उसे वही बेहतर जानता है। पानियों में ज़मज़म शरीफ़ ऐसा मुबारक व मुक़द्दस पानी है जिसके औसाफ़ बयान से बाहर हैं वह खाने का भी काम करता है और पानी का भी, दुनिया के किसी आम पानी में यह तासीर नहीं ऐसा क्यों न हो कि वह अल्लाह के मुक़द्दस नबी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अज़ीम मोजज़ा है, ज़मज़म इंतिहाई मुतबर्रक व मुफ़ीद पानी है इसके मुतफ़र्रिक़ फ़वाइद मन्कूल व मालूम हैं। (मुरत्तिब)

ज़मज़म शरीफ़ और आला हज़रत का तजरबा

एक मरतबा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने इरशाद फरमाया :

★ आज चौथा रोज़ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का बैय्यिन मोजज़ा ज़ाहिर हुआ। गाय का गोश्त खाने से मुझे मअ़न ज़रर होता है, एक साहब ने मेरे यहाँ नियाज़ का खाना भेजा और साथ एक रुक़्आ में लिख दिया कि इसमें से थोड़ा सा चख लें, शोरबे में मिर्च ज़्यादा थी और मैं मिर्च का आदी नहीं, मैंने एक बोटी साफ़ करके खाई बहुत अच्छा पका था मैंने एक बोटी और माँगी उस वक़्त मालूम हुआ कि गाय का गोश्त है, दिल में घबराहट पैदा हुई। सैय्यद महमूद अली साहब का ख़ुदा भला करे ज़मज़म शरीफ़ बहुत सा उन्होंने भेज दिया है मैंने जिस वक़्त इब्तिहाल हुआ फौरन ज़मज़म शरीफ़ पिया सुबह तक पीता रहा कुछ भी न हुआ।

ज़मज़म शरीफ़ में यह बरकत है कि दो महीने का ज़मज़म शरीफ़ था उस से यह नफ़ा हुआ हालांकि बासी पानी से फौरन मुझे नुक़्सान होता है।

★ पहली बार की हाज़िरी में मेरी बाईस बरस की उम्र थी मैंने दोनों वक़्त की रोटी छोड़ दी थी सिर्फ़ गोश्त पर इक्तिफ़ा करता और गोश्त भी दुंबे का जो सुना चरे हुए होते हैं, कुछ रोज़ के बाद पेट में ख़लिश मालूम हुई हरम शरीफ़ में जा कर क़दह भर कर ज़मज़म शरीफ़ पिया फौरन ख़लिश जाती रही।

★ खाने–पीने की चीज़ों में मुझे ज़मज़म शरीफ़ से ज़्यादा कोई चीज़ मरग़ूब नहीं यहाँ क्या ज़रिया, वहाँ सुबह, दोपहर, शाम हर वक़्त पीता, सुबह आँख खुली तो पहला काम यह कि ज़मज़म शरीफ़ पीता, पाँचों नमाज़ों के बाद पहला काम यही था।

ज़मज़म की एक ख़ासियत

ज़मज़म शरीफ़ की एक ख़ासियत यह भी है कि हर वक़्त मज़ा बदलता रहता है किसी वक़्त कुछ खारा पन, किसी वक़्त निहायत शीरीं, और रात के दो बजे अगर पिया जाए तो ताज़ा दूहा हुआ गाय का ख़ालिस दूध मालूम होता है।

दवा की दवा, ग़िज़ा की ग़िज़ा

ज़मज़म शरीफ़ जिसके पास काफी मिक़्दार से हो उसे न किसी ग़िज़ा की ज़रूरत न दवा की। हदीस शरीफ़ में फरमाया ज़मज़म खाने की जगह खाना है और दवा की जगह दवा।

अबू ज़र गेफ़ारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जब ज़ुअ्फ़े इस्लाम था सहाबा चालीस तक न पहुँचे थे उस ज़माना में मक्का मुअज़्ज़मा आए वहाँ न किसी से शनासाई न किसी से मुलाक़ात, एक महीना कामिल वही ज़मज़म शरीफ़ पिया हालत यह हुई कि पेट की बेल्टें उलट पड़ीं, इस क़द्र तवानाई आ गई।

मोमिन व मुनाफ़िक़ की जाँच

यह जाँच है मोमिन और मुनाफ़िक़ की, मुनाफ़िक़ कभी पेट भर कर नहीं पी सकता, और मैं तो बहम्दुलिल्लाह तआला इस क़द्र दूध नहीं पी सकता हूँ, जिस क़द्र ज़मज़म शरीफ़ पी लेता था, एक बादिया जिस में दो सेर पानी आता था कभी निस्फ़ और कभी निस्फ़ से ज़्यादा पी लेता था बाक़ी जो बचता मुँह और सर पर डाल लेता। (अल–मल्फूज़ चहारुम : स0 4ए 5)

ज़मज़म की अज़मत

ज़मज़म शरीफ़ एक मुतबर्रक पानी है इसलिए उस से इस्तिंजा करना मना है। ज़मज़म का पीना आला दरजा की सुन्नत बल्कि कोख भर कर पीना ईमाने ख़ालिस की अलामत है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हम में और मुनाफ़िक़ों में फ़र्क़ की निशानी यह है कि वह कोख भर कर आबे ज़मज़म नहीं पीते।

(इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 133)

मस्जिद के आदाब व अहकाम

शरीअ़ते मुतह्हरा ने अह्ले इस्लाम को मस्जिद के आदाब व एहतराम का हुक्म फरमाया, मस्जिद चूंकि खान–ए–ख़ुदा और इबादत की ख़ास जगह है इसलिए आम मकानों पर उसका क़यास नहीं किया जा सकता यही वजह है कि घर की बनिस्बत मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का सवाब ज़्यादा है लिहाज़ा मस्जिद का एहतराम करना मुसलमान का ईमानी तक़ाज़ा है। (मुरत्तिब)

हालते जनाबत में मस्जिद में जाना

हालते नापाकी में मस्जिद में जाना हराम है मगर बज़रूरते शदीदह।

★ कि नहाने की ज़रूरत है और डोल रस्सी अन्दर रखा है और यह उसके सिवा कोई सामान कर नहीं सकता न कोई अन्दर से ला देने वाला है।

★ या किसी दुश्मन से ख़ाइफ़ है और मस्जिद के सिवा जाए पनाह नहीं और नहाने की मोहलत नहीं, ऐसी हालतों में तयम्मुम करके जा सकता है।

सूरते औला में सिर्फ़ इतनी देर के लिए डोल रस्सी ले आए।

और सूरते सानिया में जब तक वह ख़ौफ़ बाक़ी रहे। बल्कि सूरते सानिया में अगर दुश्मन सर पर आ गया, तयम्मुम की भी मोहलत नहीं तो बे–तयम्मुम चला जाए और केवाड़ बन्द करने के बाद तयम्मुम कर ले।

★ सिर्फ़ इस ज़रूरत के लिए कि गर्म पानी सिक़ाए में है और सिक़ाया मस्जिद के अन्दर है, बाहर ताज़ा पानी मौजूद है गर्म पानी लेने को बेग़ुस्ल मस्जिद में जाना जाइज़ नहीं।

★ मगर वही ज़रूरत की हालत में कि अगर ताज़ा पानी से नहाएगा तो सही तजरबे या तबीबे हाज़िक़ मुस्लिम ग़ैर फासिक़ के बताने से मालूम है कि बीमार हो जाएगा या मरज़ बढ़ जाएगा और बाहर कहीं गर्म पानी का सामान नहीं कर सकता न अन्दर से कोई ला देने वाला है तयम्मुम करके अन्दर जा कर ला सकता है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 221)

वुज़ू का पानी मस्जिद में डालना

वुज़ू या ग़ुस्ल का पानी मस्जिद में डालना, छिड़कना हराम है, और गुलाब से वुज़ू किया तो वुज़ू न हुआ और वह गुलाब मस्जिद में छिड़क सकते हैं।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 240)

वीरान मस्जिद का सामान क्या करे

जो मस्जिद वीरान हो और उसकी आबादी की कोई सूरत न हो और उसके आलात की हिफ़ाज़त न हो सके तो अब फतवा उस पर है कि उसके कड़ी तख़्ते वग़ैरह दूसरी मस्जिद में दिए जा सकते हैं। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 393)

मस्जिद के पानी का हुक्म

★ मसाजिद, मदारिस, वक़्फ़ी, सिक़ायों, हौज़ों में जो पानी ज़रे वक़्फ़ से भरा गया वह हुक्मे वक़्फ़ में है उसके कोई मालिक नहीं और वाक़िफ़ ने जिस ग़रज़ के लिए रखा है उसके ग़ैर में सर्फ़ नहीं हो सकता।

यानी मस्जिद के हौज़ या सिक़ाए जो नमाज़याने मस्जिद के वुज़ू को भरे जाते हैं उनका पानी घरों में ले जाना हराम है अगरचे वुज़ू को, मगर बइजाज़त मालिक अगर किसी ने अपनी मिल्क से भरवए, या अव्वल रोज़ से इजाज़त वाक़िफ़ हो अगर ज़रे वक़्फ़ से भरे गये।

★ इसी तरह आदमी अपनी मिल्क से जो सबील लगाए उसका पानी उसी की मिल्क रहता है हाँ लोगों को उसका सर्फ़ करना मुबाह है वह भी इसी तौर पर जो मालिक ने रखा या उसकी इजाज़त से दूसरे कामों में। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 419)

★ जाड़ों में मस्जिद के सिक़ाए गर्म किए जाते हैं बाज़ लोग पानी घरों को ले जाते हैं यह बिला इजाज़त मज़्कूरा हराम है इसमें बहुत एहतियात चाहिए।

★ हाँ पीने की सबील से अगर औरतों के पीने को घरों में ले जाने की इजाज़त है तो जाइज है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 420)

अन्धेरी में मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत

अन्धेरी में मस्जिद को जाना बड़ी फ़ज़ीलत रखता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अन्धेरियों में हाज़िरी मस्जिद के आदी हैं उन्हें रोज़े क़्यामत नूरे कामिल की बशारत दो।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 633)

मस्जिद में एहतलाम हो तो क्या करे?

मस्जिद में सोता था एहतलाम हो गया तो हुक्म है कि उसके लिए बहुत जल्द तयम्मुम कर ले, जो सूरत जल्द से जल्द तयम्मुम हो जाने की हो उसका बजा लाना वाजिब और अदना ताख़ीर नाजाइज़ कि बज़रूरत उतनी ही देर उसे तवक़्क़ुफ़ की इजाज़त हुई है जिसमें तयम्मुम कर सके, एक लहज़ा भी तयम्मुम करने में ताख़ीर रवा नहीं, कि इतनी देर बिला ज़रूरत बहालते जनाबत मस्जिद में ठहरना होगा और यह हराम है, लिहाज़ा अगर उसके हाथ के पास मसलन कोई मिट्टी का बर्तन रखा है और दीवार क़द आदम भर दूर है, तो वाजिब कि उसी बर्तन से फौरन तयम्मुम कर ले, और अगर दीवार क़रीब, और बर्तन दूर है, या है ही नहीं, तो अगर मस्जिद में जहाँ यह बैठा है फ़र्श नहीं, तो ज़मीन मस्जिद व दीवार में निस्बत देखी जाएगी, अगर दीवार से मुत्तसिल है कि सिर्फ़ हाथ बढ़ाना होगा तो इख़्तियार है दीवार से तयम्मुम कर ले, या ज़मीन से, और अगर दीवार तक कुछ

सरकना होगा तो ख़ास ज़मीने मस्जिद से तयम्मुम करे, दीवार तक न जाए, और अगर मस्जिद में फ़र्श है तो दीवार तक पहुँचना, या उस फ़र्श का हटाना जो जल्द हो सके वह करे।

यह तयम्मुम मस्जिद से निकल जाने के लिए था कि बहालते जनाबत जिस तरह मस्जिद में ठहरना हराम है, यूंहीं हमारे नज़्दीक उसमें चलना भी हराम है, अब कि तयम्मुम कर चुका फ़ौरन निकल जाए, और अगर मस्जिद में चन्द दरवाज़े हैं तो वह दरवाज़ा इख़्तियार करे जो क़रीब तर हो, इसलिए ग़ैर मोअ्तकिफ़ को मस्जिद में सोना मना है।

एक शख़्स के मकान का दरवाज़ा मस्जिद में है कि आते-जाते मस्जिद में गुज़रना पड़ता है, और न दूसरी तरफ़ दरवाज़ा फेर सकता है, न और मकान रहने को पाता है, उसे भी बाहलते जनाबत मस्जिद में गुज़रना जाइज़ नहीं, अगर पानी न पाए तो आने जाने के लिए तयम्मुम ज़रूरी है।

मस्जिद में वुज़ू और ग़ुस्ल करना

मस्जिद में ग़ुस्ल करना हराम है मगर तीन सूरतों में।

★ एक तो यह कि बानी मस्जिद ने मस्जिद कर देने से पहले वहाँ कोई जगह ग़ुस्ल के लिए बना दी हो तो उस में नहा सकता है।

★ दूसरे किसी ऐसे बड़े बर्तन में कि सब पानी उसी के अन्दर गिरे कोई छींट उड़कर मस्जिद में न जाए।

★ तीसरे लिहाफ़ तोशक वग़ैरह बहुत भारी रूई के कपड़े बिछा कर उन पर इस तरह नहाना कि न कोई छींट बाहर जाए, न पानी कपड़ों को तोड़ कर मस्जिद की ज़मीन तक पहुँचे।

मस्जिद में वुज़ू भी हराम है और उसके जवाज़ की भी वही तीन सूरतें हैं जो ऊपर गुज़रीं।

जुमा के दिन ख़ुतबा सुन रहा था कि वुज़ू जाता रहा, अगर निकलने का रास्ता पाए तो निकल जाए और वुज़ू करके फिर हाज़िर हो और अगर रास्ता न मिले तो लोगों की गर्दनें फलांगते हुए जाने की इजाज़त नहीं, अगर मस्जिद में पानी मिले और कोई कपड़ा ऐसा हो कि पानी जज़्ब कर लेगा, और उस से छन कर कोई बूंद मस्जिद में न जाएगी तो उसे बिछा कर वुज़ू कर ले।

(आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि) मेरे साथ एक मरतबा ऐसा ही वाक़या दर पेश हुआ कि मैं मस्जिद में सर्दी के मौसम में मोअ्तकिफ़ था, मैंने वुज़ू करने का इरादा किया, उस वक़्त बहुत तेज़ बारिश हो रही थी, इस हालत में मैंने अपने लिहाफ़ पर वुज़ू किया और मस्जिद में पानी का एक क़तरा भी नहीं गिरा।

हाँ बर्तन अगर ऐसा छोटा हो कि छींटें ज़रूर मस्जिद में पड़ेंगी जब तो मोअ्तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं हो सकती और अगर इतना बड़ा है कि यक़ीनन कोई छींट बाहर नहीं जा सकती तो ग़ैर मोअ्तकिफ़ को भी इजाज़त है और अगर हालत ऐसी है कि छींट बाहर न जाने का ज़न ग़ालिब है तो मोअ्तकिफ़ को जाइज़। ग़ैर मोअ्तकिफ़ न करे।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 636 ता 639)

मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना वाजिब है अगरचे पाक हो, जैसे लुआबे दहन, आब बीनी, आबे वुज़ू।

बाज़ लोग कि वुज़ू के बाद अपने मुँह और हाथों से पानी पूंछ कर मस्जिद में हाथ झाड़ते हैं महज़ हराम और नाजाइज़ है। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 733)

इसी तरह मुँह में बदबू हो तो जब तक साफ़ न कर लें मस्जिद में जाना या नमाज़ पढ़ना मना है।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 55)

मस्जिद की गर्द व ग़ुबार

गर्द, ग़ुबार वग़ैरह कि हवा बाहर से लाकर मस्जिद में डाले, अज्ज़ाए मस्जिद से न हो जाएगा उसे साफ़ करने का हुक्म है, वरना मस्जिद से गर्द व ग़ुबार साफ़ करना मना हो कि अज्ज़ाए मस्जिद का उस से छुड़ाना और दूर करना है।

उलमा–ए–किराम तस्रीह फरमाते हैं कि ज़मीन मस्जिद पर जो मिट्टी फैली हुई है कीचड़ के सने पाँव उस से पोछना मक्रूह है कि यह ज़मीने मस्जिद ही से पोछना होगा, फैला हुआ ग़ुबार हाइल न समझा जाएगा, और अगर गर्द झाड़ कर मस्जिद के किसी गोशे में जमा कर दी है तो उस से पोछने में हरज नहीं।

मस्जिद का चिराग़

मस्जिद में नमाज़ियों के लिए चिराग़ रौशन है, उस से किताब देखना, पढ़ना, पढ़ाना सब रवा है, और अगर नमाज़ी नमाज़ पढ़ गये, जब भी तिहाई रात तक उस से काम ले सकता है कि इतने तक मस्जिद ही के लिए चिराग़ रौशन रहना होगा, उसके बाद जाइज़ नहीं कि मस्जिद का तेल, बत्ती अपने काम में सर्फ़ करना होगा।

(आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं कि) यह वहाँ है कि उस से ज़्यादा वक़्त तक मस्जिद में रौशनी की आदत न हो और अगर सारी रात रौशनी रहती है जैसे तीनों मस्जिदे करीम (मस्जिदे हराम, मस्जिदे नब्वी, मस्जिदे अक़्सा) में तो रात भर उसकी रौशनी से फाइदा ले सकता है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 743)

गुमशुदा शय की तलाश

शरह मुतह्हर ने मस्जिद को हर ऐसी आवाज़ से बचाने का हुक्म फरमाया जिसके लिए मसाजिद की बिना न हो।

सही मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो गुमी हुई चीज़ को मस्जिद में दरयाफ़्त करे उस से कहो अल्लाह तेरी गुमी चीज़ तुझे न मिलाए, मस्जिदें इसलिए नहीं बनीं। (मुस्लिम)

हदीस में हुक्मे आम है और फ़िक़्ह ने भी आम रखा है, तो अगर किसी का मुस्हफ़ शरीफ़ गुम गया और वह तिलावत के लिए ढूँढता और मस्जिद में पूछता है उसे भी यही जवाब होगा कि मस्जिदें इसलिए नहीं बनीं। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 2, स0 415)

मस्जिद में खाने पीने और सोने के लिए ऐतकाफ़ का हुक्म

ऐतकाफ़ सिर्फ़ ज़िक्रे इलाही के लिए किया जाए, बित्तबअ़ उसके मुनाफ़े और हो सकते हैं, इस तरह ऐतकाफ़ अल्लाह तआला के लिए होगा और खाने–पीने का जवाज़ नफ़अ़ बित्तबअ़, क्योंकि ग़ैर मोअ़तकिफ़ को मस्जिद में खाना पीना जाइज़ नहीं।

आलमगीरी वग़ैरहा में है अगर मस्जिद में सोना चाहे ऐतकाफ़ की नीयत कर ले। कुछ देर ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रहे फिर जो चाहे करे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 33)

मस्जिद की चीज़ चुराने की सज़ा

मस्जिद की कोई शय लाख रुपए की चुरा ले शरीअ़त हाथ न काटेगी बल्कि सज़ाए ताज़ियाना का हुक्म है।

एक साल सुल्तान की तरफ़ से काबा मुअज़्ज़मा में निहायत बेश क़ीमत सोने की क़नादील लगाने के लिए आईं उन में से एक क़िन्दील ग़ायब हो गई, शरीफ़े मक्का ने तहक़ीक़ात कीं पता चला

कि ख़ुद्दामे काबा के सरदार ने ली है, शरीफ़ के सामने पेशी हुई उन से पूछा गया, वह साहब बोले काबा ग़नी है उसे हाजत नहीं मुझे हाजत थी मैंने ले ली, शरीफ़ ने दर गुज़र फरमाई।

(अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 73)

आदाबे मस्जिद से मुतअल्लिक़ चन्द मसाइल

1. जब मस्जिद में क़दम रखो तो पहले सीधा फिर उलटा और वापसी पर उसका अक्स।

2. मस्जिद में आते वक़्त ऐतकाफ़ की नीयत "बिस्मिल्लाहे दख़ल्तु व अलैहि तवक्कल्तु व नवैतु सुन्नतल–ऐतकाफ़े" कर लो कि इस इबादत का सवाब भी मिलेगा और इसके लिए रोज़ा शर्त नहीं, न किसी मुअय्यन वक़्त बैठना लाज़िम, जब तक ठहरोगे मोअ्तकिफ़ रहोगे, जब बाहर आए ऐतकाफ़ ख़त्म हो गया और उसके सबब मस्जिद में पानी पीना या मसलन पान खाना भी जाइज़ हो जाएगा।

3. बग़ैर नीयते ऐतकाफ़ किसी चीज़ के खाने की इजाज़त नहीं। बहुत मसाजिद में दस्तूर है कि माहे रमज़ान मुबारक में लोग नमाज़ियों के लिए इफ़्तारी भेजते हैं वह बिला नीयते ऐतकाफ़ वहीं बेतकल्लुफ़ खाते–पीते और फ़र्श ख़राब करते हैं यह नाजाइज़ है।

4. मस्जिद के एक दरजे से दूसरे दरजे के दाख़िले के वक़्त सीधा क़दम बढ़ाया जाए हत्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी सीधा क़दम रखो और जब वहाँ से हटो तब भी सीधा क़दम फ़र्श मस्जिद पर रखो, या ख़तीब जब मिंबर पर जाने का इरादा करे पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो सीधा क़दम उतारे।

5. वुज़ू करने के बाद आज़ाए वुज़ू से एक छींट पानी की फ़र्श मस्जिद पर न गिरे।

6. मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना जिस से धमक पैदा हो मना है।

7. मस्जिद में अगर छींक आए तो कोशिश करो कि आहिस्ता आवाज़ निकले इसी तरह खांसी। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में ज़ोर की छींक को नापसन्द फरमाते। इसी तरह डकार को ज़ब्त करना चाहिए और न हो तो हत्तल–इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगरचे ग़ैर मस्जिद में हो, ख़ुसूसन मज्लिस में या किसी मोअ्ज़्ज़म के सामने कि बेतहज़ीबी है। हदीस में है एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस में डकार ली फरमाया हम से अपनी डकार दूर रख कि दुनिया में जो ज़्यादा मुद्दत तक पेट भरे थे वह क़यामत के दिन ज़्यादा मुद्दत तक भूखे रहेंगे। (कंज़ुल–उम्माल)

और जमाही में आवाज़ निकलना तो कहीं न चाहिए अगरचे ग़ैर मस्जिद में तन्हा हो कि वह शैतान का क़हक़हा है।

8. मस्जिद में दुनिया की कोई बात न की जाए हाँ अगर कोई दीनी बात किसी से कहना हो तो क़रीब जा कर आहिस्ता से कहना चाहिए न यह कि एक साहब मस्जिद में खड़े हुए दूसरे राहगीर से जो सड़क पर खड़ा हुआ है चिल्ला कर बातें कर रहे हैं या कोई बाहर से पुकार रहा है और यह उसका जवाब बुलन्द आवाज़ से दे रहे हैं।

9. तमस्ख़ुर वैसे ही मम्नूअ् और मस्जिद में सख़्त नाजाइज़, या हंसना मना है। क़ब्र में तारीकी लाता है हाँ मौक़ा से तबस्सुम में हरज नहीं।

10. फ़र्श मस्जिद पर कोई शय फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दे, मौसमे गरमा में लोग पंखा झलते–झलते फेंक देते हैं या लकड़ी छतरी वग़ैरह रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं उसकी मुमानेअत है ग़रज़ मस्जिद का एहतराम हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

11. मस्जिद में हदस मना है ज़रूरत हो तो बाहर चला जाए। लिहाज़ा मोअ्तकिफ़ को चाहिए कि अय्यामे ऐतकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हल्का रखे कि क़ज़ाए हाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़राजे रीह की हाजत न हो वह उसके लिए बाहर न जा सकेगा।

12. क़िब्ला की तरफ़ पाँव फैलाना तो हर जगह मना है मस्जिद में किसी तरफ़ न फैलाए कि ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है।

हज़रत इब्राहीम अदहम कुद्दिसा सिर्रुहू मस्जिद में तन्हा बैठे थे पाँव फैला लिया गोश–ए–मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी इब्राहीम बादशाहों के हुज़ूर में यूं हीं बैठते हैं, मअ़न पाँव समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्त इंतिक़ाल ही फैले।

13. इस्तेमाली जूता अगर पास हो मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बेअदबी है। अदब व तौहीन का राज़ उर्फ़ व आदत पर है हाँ बिल्कुल नया जूता पहन सकता है और उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना अफ़्ज़ल है जबकि पंजा इतना सख़्त न हो कि सज्दे में उंगलियों का पेट ज़मीन पर न बिछने दे।

बह्रुर्राइक़ में है : अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहुल–करीम जूते के दो जोड़े रखते इस्तेमाली पहन कर दरवाज़ा मस्जिद तक जाते दूसरा ग़ैर इस्तेमाली पहन कर मस्जिद में क़दम रखते।

14. मस्जिद में यहाँ के किसी काफिर को आने देना सख़्त नाजाइज़ और मस्जिद की बेहुर्मती है, फ़िक़्ह में जवाज़ है तो ज़िम्मी के लिए और यहाँ के काफिर ज़िम्मी नहीं।

कैसा शदीद ज़ुल्म है वह तुमको भंगी की तरह समझें जिस चीज़ को तुम्हारा हाथ लग जाए उसे नापाक जानें, सौदा दें तो दूर से डाल दें, पैसे लें तो अलग रखवा लें, हालांकि उनकी नजासत पर क़ुरआने करीम शाहिद है, तुम उन नजिसों को मस्जिद में आने की इजाज़त दो कि अपने नापाक पाँव तुम्हारे माथा रखने की जगह रखें, अपने गन्दे बदनों से तुम्हारे रब के दरबार में आएं। अल्लाह हिदायत फरमाए।

15. मस्जिद में बदबूदार तेल के जलाने की इजाज़त नहीं न कि मिट्टी का तेल हाँ अगर उसकी बदबू किसी मसालहा से दूर कर दी जाए तो जुर्म नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 118ए 120)

चर्बी मिली हुई मोम बत्ती

अगर ऐसी मोम बत्ती मुसलमान की बनाई हुई है तो उसे मस्जिद में जलाना जाइज़ है वरना मस्जिद ही में नहीं वैसे भी जलाना न चाहिए।

यह जो जर्मन वग़ैरह ग़ैर वेलायतों से आती हैं उनका भी वही हुक्म है इस वास्ते की चर्बी और गोश्त का एक हुक्म है अगरचे गाय हो या बकरी, किसी मुसलमान से कोई हिन्दू या नसरानी चर्बी ले गया और थोड़ी देर में वापस लाए और कहे कि यह वही चर्बी है जो अभी–अभी तुम से ले गया हूं उसका लेना हराम है; बख़िलाफ़ यहूदियों के कि उनके यहाँ अब तक ज़िबह करने का एहतमाम है।

फतावा क़ाज़ी खान में है, नसरानी व यहूदी काफिर दोनों हैं कि एक महबूबाने ख़ुदा की मुहब्बत में और दूसरे अदावत में काफिर हुए, क़ुरआने अज़ीम में यहूदियों को मग़ज़ूबे अलैहिम, और नसारा को ज़ाल्लीन फरमाया। यही वजह है कि आज रूए ज़मीन पर कोई यहूदी एक गाँव का भी हाकिम नहीं, बख़िलाफ़े नसारा के कि उनकी सलतनत ज़ाहिर है। और बेऐनेही यही मिसाल रवाफ़िज़ व वहाबिया की है कि रवाफ़िज़ मिस्ल नसारा के मुहब्बत में काफिर हुए और वहाबिया मिस्ल यहूद के अदावत में। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 13, 14)

औरतों को मस्जिद में आने की मुमानेअ़त

ज़ईफ़ा हों या क़वीया औरतों को मस्जिद में जाना ही मना है।

हदीस में इरशाद फरमाया औरत की नमाज़ अपने तहखाना में बेहतर है कोठरी में नमाज़ पढ़ने से, और उसकी कोठरी में नमाज़ बेहतर है दालाने में नमाज़ पढ़ने से, और उसकी नमाज़ दालान में बेहतर है सहन में नमाज़ पढ़ने से, और उसकी अपने सहन में नमाज़ बेहतर है मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से। (कंज़ुल–उम्माल)

मस्जिद और जमाअत की हाज़िरी औरतों को मुआफ़ है बल्कि मम्नूअ् है।

(अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स0 27)

मस्जिद में पेड़ बोना

उलमा इरशाद फरमाते हैं कि मस्जिद में पेड़ बोना मम्नूअ् है कि इस से नमाज़ की जगह रुकेगी मगर जबकि उस में मस्जिद की मन्फ़अ़त हो इस तरह कि ज़मीने मस्जिद इस क़द्र गिल हो कि सुतून बवज्हे शिद्दत रुतूबत न ठहरते हों तो तरी को जज़्ब करने के लिए पेड़ बोए जाएं कि जड़ें फैल कर ज़मीन की नम खींच लें। यह हुक्म मस्जिद का है अगर मस्जिद से बाहर फनाए मस्जिद में वुज़ू ख़ाना वग़ैरह के आसपास फूल वग़ैरह के पेड़ लगाए जाएं जिन से मस्जिद में कुछ कमी व नुक़्सान न हो तो हरज नहीं। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 579)

मस्जिद से किस को रोका जाए

★ जो शख़्स मूज़ी हो कि नमाज़ियों को तक्लीफ़ देता है, बुरा भला कहता है, शरीर है, उस से अन्देशा रहता है ऐसे शख़्स को मस्जिद में आने से मना करना जाइज़ है।

★ और अगर बद मज़्हब गुम्राह मसलन वहाबी, या राफ़्ज़ी, या ग़ैर मुक़ल्लिद, या नेचरी, या नदवी, या तफ़्ज़ीली वग़ैरहा है और मस्जिद में आ कर नमाज़ियों को बहकाता है, अपने मज़्हबे नापाक की तरफ़ बुलाता है तो उसे मना करना और मस्जिद में न आने देना ज़रूर वाजिब है।

यूंहीं जिस के बदन में बदबू हो कि उस से नमाज़ियों को ईज़ा हो मसलन मआज़ल्लाह गन्दा दहन, या गन्दा बग़ल, या जिसने ख़ारिश वग़ैरह के बाइस गन्धक मिली हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।

और बिला वजहे शरई अपनी किसी रंजिशे दुनियवी के बाइस मस्जिद से किसी मुसलमान को रोकना सख़्त गुनाह है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 582)

मस्जिद में मुसाफ़िर का क़याम कैसा है?

ऐसा मुसाफिर जिसका शहर में कोई शनासा न हो वह नमाज़ वग़ैरह की सहूलत के लिए अगर मस्जिद में ठहरना चाहे तो ऐसे मुसाफ़िर को मस्जिद में ठहरना बेशक जाइज़ है, ख़ुद मस्जिदे अक़्दस में हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अह्दे अक़्दस में हुक्मे अनवर से असहाबे सुफ़्फ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम क़याम पज़ीर थे, हाँ नज़र बहालते ज़माना बाज़ मसाजिद में अजनबी ग़ैर मारूफ़ का क़याम ना–मुनासिब व वजह–ए–अन्देशा होता है, जैसे सदहा साल से मस्जिद मदीना तैय्यबा के दरवाज़े बाद इशा बन्द कर देते हैं और सिवा ख़ुद्दाम के सब लोग बाहर कर दिए जाते हैं।

मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाने का हुक्म

मसाजिद को पाक व साफ़ रखने का हुक्म है हर गन्दी व बदबूदार चीज़ से मस्जिदों को महफ़ूज़ रखना इस्लामी तक़ाज़ा है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मिट्टी के तेल में सख़्त बदबू है और मस्जिद में बदबू का ले जाना किसी तरह जाइज़ नहीं। हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो बदबूदार दरख़्त यानी प्याज़, लहसुन वग़ैरह से खाए वह हमारी मस्जिद में न आए क्योंकि फरिश्तों को भी उन चीज़ों से ईज़ा होती है जिन से इंसान ईज़ा पाते हैं। (त, बुख़ारी)

हाँ मिट्टी के तेल में बाज़ अंग्रेज़ी इत्र जिनको लवन्डर कहते हैं मिलाने से उसकी बदबू बिल्कुल जाती रहती है इस सूरत में जाइज़ हो जाएगा बशर्तेकि इस लवन्डर में स्प्रिट वग़ैरह कोई नापाक शय

न हो वरना नापाक तेल का भी मस्जिद में जलाना जाइज़ नहीं।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 597)

मसाजिद की ज़ीनत व आराईश

मसाजिद में ज़ीनत ज़ाहिरी ज़माना सल्फ़े सालेहीन में फ़ुज़ूल व नापसन्द थी कि उनके क़ुलूब शिआरिल्लाह की ताज़ीम से भरे हुए थे, इसलिए हदीस में मसाजिद की ज़ेब व ज़ीनत को क़यामत की निशानियों से शुमार फरमाया।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि मस्जिदें इस तरह आरास्ता की जाएंगी जिस तरह यहूद व नसारा ने अपने इबादत खानों को आरास्ता व मुज़ैयन किया।

मगर ज़माने के इंक़लाब व तब्दीली से उलमा ने मसाजिद को आरास्ता करने की इजाज़त फरमाई कि अब ज़ाहिरी ताज़ीम आँखों में अज़मत और दिलों में वक़अत पैदा करने की बाइस होती है। मगर अब भी दीवार क़िब्ला को उमूमन और मेहराब को ख़ुसूसन दिल बटने वाली चीज़ों से बचाने का हुक्म है बल्कि औला यह है कि दाएं बाएं की दीवार भी दिल बटने वाली चीज़ों से ख़ाली रहे कि उसके पास जो मुसल्ली हो उसकी नज़र को परेशान न करे, हाँ गुंबदों, मीनारों, छत और दीवारों की वह सतह कि नमाज़ियों के पीछे रहेगी उनमें मुज़ाइक़ा नहीं अगरचे सोने के पानी से नक़्श व निगार हों, बशर्तेकि अपने माल हलाल से हों, मस्जिद का माल उसमें सर्फ़ न किया जाए मगर जबकि असल बानी मस्जिद ने नक़्श व निगार किए हों, या वाक़िफ़ ने उसकी इजाज़त दी हो, या मस्जिद का माल फ़ाज़िल बचा हो और अगर सर्फ़ न किया जाएगा तो ज़ालिमों के ख़ुर्द बुर्द में जाएगा फिर जहाँ–जहाँ नक़्श व निगार अपने माल से कर सकता है उसमें भी सादगी व म्याना रवी का पहलू मल्हूज़ रहे। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 599)

मस्जिद में कुर्सी पर वअ्ज़ करना

वाइज़ का कुर्सी पर मस्जिद में बैठना जाइज़ है जबकि नमाज़ और नमाज़ियों का हरज न हो, एक आध बार हदीस से यह साबित है, मगर एक आध बार से फ़ेअ्ल, सुन्नत नहीं हो जाता।

मस्जिद में जूता रखना

मस्जिद को हर क़िस्म की गन्दगी व आलाईश से बचाने और उसे साफ़ सुथरा रखने की ताकीद आई है। इसलिए जूतों के बारे में हुक्म यह है कि – (मुरत्तिब)

अगर मस्जिद से बाहर कोई जगह जूता रखने की हो तो वहीं रखे जाएं मस्जिद में न रखें और अगर बाहर कोई जगह नहीं तो बाहर झाड़ कर तले मिला कर ऐसी जगह रखें कि नमाज़ में न अपने सज्दे के सामने हो, न दूसरे नमाज़ी के, अपने दाहिने हाथ को हों, न दूसरे नमाज़ी के, न उन से क़तअ् सफ़ हो। और उन सब पर क़ादिर न हो तो सामने रख कर रूमाल (या कपड़ा) डाल दें।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में कोई नमाज़ पढ़े तो अपने जूतों को दाएं बाएं न रखे क्योंकि अगर इस तरह रखेगा तो दूसरे के दाएं या बाएं होंगे, उसे चाहिए कि वह अपने जूतों को अपने पैरों के दर्मियान रखे। (त, बुख़ारी)

मस्जिद में थूकना कैसा है?

हालते नमाज़ में अगर थूक का ग़लबा हो तो अपनी बाईं जानिब या क़दम के नीचे थूक सकता है। यह बात उस वक़्त आसान है जबकि मस्जिद का फ़र्श पुख़्ता न हो या चटाई या मुसल्ला ऐसा हो जिसे बाआसानी हटा सके मगर अक्सर मसाजिद में आजकल यह बात मुश्किल है लिहाज़ा उसके

लिए हुक्म यह है कि रूमाल या किसी कपड़े में थूक कर तह कर दे। एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने रूमाल में थूक कर उसे तह कर दिया।

(बुख़ारी, मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में कोई नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह अपने रब से मुनाजाता करता है और रब तआला उसके और दीवार क़िब्ला के दर्मियान होता है तो चाहिए कि वह क़िब्ला की तरफ़ न थूके हाँ बाईं तरफ़ या क़दम के नीचे थूक सकता है। (त, बुख़ारी)

दूसरी हदीस में है कि दाहिने तरफ़ न थूके क्योंकि उस तरफ़ फ़रिश्ता होता है, हाँ बाईं तरफ़ या क़दम के नीचे थूक कर उसे दफन करे दे। (त, बुख़ारी)

मस्जिद में बुरी बातें करने की बुराई

मस्जिदें, इबादात व बन्दगी, ज़िक्र व अज़्कार, और तिलावते कुरआन वग़ैरह नेक कामों के लिए हैं, इसलिए दुनिया की बातों के लिए मस्जिद में जाकर बैठना हराम है। (मुरत्तिब)

(फ़िक़्ह की किताबों में है) मस्जिद में दुनिया का कलाम नेकियों को ऐसा खा जाता है जैसे आग लकड़ी को।

यह मुबाह बातों का हुक्म है फिर अगर बातें ख़ुद बुरी हुईं तो उसका क्या ज़िक्र है, दोनों सख़्त हराम दर हराम मूजिबे अज़ाब शदीद है। और नमाज़ के लिए जाकर दुनियवी तज़्किरा मस्जिद में मक्रूह है।

मस्जिद में क़ब्र हो तो क्या करे

बाज़ मसाजिद में क़ब्रें होती हैं लोग उन पर चलते फिरते, उनकी तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं हालांकि ऐसा करना नाजाइज़ व हराम है, इसी बात से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

मुसलमाल की क़ब्र को बराबर कर देना कि लोग उस पर चलें फिरें, उठें, बैठें, नमाज़ पढ़ें महज़ हराम है, फिर उस बराबर करने से नमाज़ का भी कुछ आराम नहीं बल्कि नुक़्सान है कि क़ब्र पर नमाज़ पढ़ना हराम और क़ब्र की तरफ़ बेहाइल, नमाज़ पढ़ना भी मस्जिद सग़ीर में मुतलक़न हराम, और मस्जिद कबीर में इतने फासिले तक हराम कि जब नमाज़ ख़ाशेईन की पढ़ी और क़्याम में मौज़ा सुजूद पर नज़र जमाए तो क़ब्र तक निगाह पहुंचे, और आम मसाजिद सग़ीर हैं, मस्जिदे कबीर ऐसी है जैसे जामे ख़्वारिज़्म कि सोला हज़ार सुतून पर है।

और क़ब्र उस जगह का नाम है जहाँ मैय्यित दफ़न है, ऊपर का बुलन्द निशान हक़ीक़ते क़ब्र में दाख़िल नहीं, तो उसके बराबर कर देने से क़ब्र–क़ब्र ही रहेगी ग़ैर क़ब्र न हो जाएगी।

क़ब्र के ऊपर नमाज़ मक्रूह है हदीस में इसकी मुमानेअत वारिद हुई है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत करे कि उन्होंने अंबिया की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया। (त, बुख़ारी)

मस्जिद में अगर क़ब्र हो और उस से सफ़ या नमाज़ पढ़ने में ख़लल हो तो उसका तरीक़ा यह है कि क़ब्र को फ़र्श के बराबर करें और अगर फ़र्श ऊंचा हो क़र आएगा तो क़ब्र जिस क़द्र नीची हो, नीची रहने दें और उसके इर्द गिर्द एक–एक बालिश्त के फासिले से एक चार दीवारी उठाएं कि

सतह क़ब्र से पाँव गज़ या ज़्यादा ऊंची हो, उन दीवारों पर पत्थर डाल दें, या लकड़ियाँ चुन कर पाट दें कि छत हो जाए अब यह एक मकान हो गया जिसके अन्दर क़ब्र है, अब उसकी छत पर और उसकी दीवार की तरफ़ हर तरह नमाज़ जाइज़ हो गई कि यह नमाज़े क़ब्र पर, क़ब्र की तरफ़ न रही बल्कि एक मकान की छत पर या उसकी दीवार की जानिब हुई और इसमें हरज नहीं।

मस्जिद में तद्रीस व तालीम

आजकल मसाजिद में तालीम व तद्रीस का आम रिवाज है अक्सर मक़ामात पर उनके तन्ख़्वाहदार इमाम ही मुअल्लिम होते हैं, मस्जिदों में इस तरह से बच्चों को दीनी तालीम देना जाइज़ व दुरुस्त है या नहीं? इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फ़रमाते हैं :

मस्जिद में चन्द शराइत से तालीम जाइज़ है।

1. तालीमे दीन हो।

2. मुअल्लिम सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा हो, न वहाबी वग़ैरह बद–दीन कि वह तालीमे कुफ़्र व ज़लाल करेगा।

3. मुअल्लिम बिला उजरत तालीम करे कि उजरत से कारे दुनिया हो जाएगी।

4. ना समझ बच्चे न हों कि मस्जिद की बेअदबी करें, मसाजिद को बच्चों और पागलों से बचाने का हुक्म है।

5. जमाअत पर जगह तंग न हो कि असल मक़्सदे मस्जिद जमाअत है।

6. शोर व ग़ुल से नमाज़ी को ईज़ा न पहुँचे।

7. मुअल्लिम ख़्वाह तालिबे इल्म किसी के बैठने से क़तअ़ सफ़ न हो।

गर्मी की शिद्दत वग़ैरह के वक़्त जबकि और जगह न हो बज़रूरत उजरत के मुअल्लिम को इजाज़त है मगर मुतलक़न नहीं, यूंहीं सिलाई पर सीने वाला दर्ज़ी अगर मस्जिद की हिफ़ाज़त और उसमें बच्चों को न आने देने के लिए मस्जिद में बैठे और अपना सीता भी रहे तो इजाज़त दी है, यूंही ग़ैर नमाज़ के वक़्त मुतअल्लिमाने इल्मे दीन को तक्रारे इल्म में आवाज़ बुलन्द करने की इजाज़त है। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 600 ता 605 मुलख़्ख़सन)

मस्जिद में झाड़ू देने का सवाब

एक बीबी, मस्जिद में झाड़ू दिया करती थीं, उनका इंतिक़ाल हो गया, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को किसी ने ख़बर न दी, हुज़ूर उनकी क़ब्र पर गुज़रे, दरयाफ़्त फ़रमाया यह क़ब्र कैसी है? लोगों ने अर्ज़ की उम्मे महजिन की, फ़रमाया वही जो मस्जिद में झाड़ू दिया करती थी, अर्ज़ की हाँ, हुज़ूर ने सफ़ बाँध कर नमाज़ पढ़ाई फिर उन बीबी की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया तूने कौन सा अमल अफ़्ज़ल पाया सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या वह सुनती है? फ़रमाया कुछ तुम उस से ज़्यादा नहीं सुनते, फिर फ़रमाया उसने जवाब दिया कि मस्जिद में झाड़ू देने का अमल सबसे अफ़्ज़ल पाया। (बुख़ारी, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 268)

मसाजिद में मीनारे बनाना

कुछ लोग कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहद में मस्जिदों के ऊपर मीनार और बुर्ज नहीं थे अब क्यों कर बनाए जाते हैं? इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी तहरीर फ़रमाते हैं :

वाक़ई ज़माना अक़्दस हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में मसाजिद के लिए बुर्ज, कंगरे और इस तरह के मिनारे जिनको लोग मीनार कहते हैं हरगिज़ न थे, ज़मान–ए–अक़्दस

में न पक्के सुतून, न पक्की छत, न पक्का फ़र्श, न गचकारी, यह उमूर बिल्कुल न थे। बल्कि हदीस में है मस्जिदें बनाओ और उन्हें बेकंगरा रखो।

(सुनने बैहक़ी, अबू बकर बिन अबी शैबा)

दूसरी हदीस में है अपनी मस्जिदें मुंडी बनाओ और अपने शहर कंगरहदार। (इब्ने अबी शैबा) मगर तग़ैय्युरे ज़माना से जबकि अवाम के दिल, ताज़ीमे बातिन पर तंबीह के लिए ताज़ीमे जाहिर के मुहताज हो गये इस क़िस्म के उमूर व आम्मा मुस्लेमीन ने मुस्तहसन रखे।

इसी क़बील से है कुरआने अज़ीम पर सोना चढ़ाना कि सद्रे अव्वल में न था और अब कुरआने अज़ीम के एहतराम व ताज़ीम की नीयत से मुस्तहब है, यूंहीं मस्जिद में गचकारी और सोने का काम।

★ उनमें एक मन्फ़अ़त यह भी है कि मुसाफ़िर या नावाक़िफ़ मीनारे, कंगरे दूर से देख कर पहचान लेगा कि यहाँ मस्जिद है तो उस में मस्जिद की तरफ़ मुसलमानों को इरशाद व हिदायत और अम्रे दीन में उनकी इम्दाद व एआनत है।

★ और एक मन्फ़अ़ते जलीला यह है कि यहाँ कुफ़्फ़ार की कसरत है अगर मस्जिदें सादी घरों की तरह हों तो मुम्किन है कि हम्साया के हुनूद बाज़ मसाजिद पर घर और मम्लूक होने का दावा कर दें और झूठी गवाहियों से जीत लें, बख़िलाफ़ इस सूरत के कि यह हैयात ख़ुद बताएगी कि यह मस्जिद है तो इसमें मस्जिद की हिफ़ाज़त और दुश्मनों से उसकी सियानत है।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 395)

मस्जिद में दुनिया की बातें करने की मुमानेअ़त व क़बाहत

★ मस्जिद में दुनिया की मुबाह बातें करने को बैठना नेकियों को ऐसा खाता है, जैसे आग लकड़ी को।

★ मस्जिद में दुनिया की बात नेकियों को इस तरह खाती है जैसे चौपाया घास को, जो मस्जिद में दुनिया की बात करे अल्लाह तआला उसके चालीस बरस के अमल अकारत फरमा दे। (ग़म्ज़ल-उयून)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे कि मस्जिद में दुनिया की बातें करेंगे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को उन लोगों से कुछ काम नहीं। (सहीह इब्ने हिब्बान)

हदीस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला उसके साथ भलाई का इरादा न करेगा और वह नामुराद व महरूम व ज़ियाँकार और एहानत व ज़िल्लत के सज़ावार हैं। यानी दुनिया की बात जबकि फ़ी नफ़्सेही मुबाह और सच्ची हो मस्जिद में बिला ज़रूरत करनी हराम है, ज़रूरत ऐसी जैसे मोअ़तकिफ़ अपने हवाइजे ज़रूरिया के लिए बात करे।

★ और मरवी हुआ कि एक मस्जिद अपने रब के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुनिया की बातें करते हैं मलाइका उसे आते मिले और बोले हम उनके हलाक करने को भेजे गये हैं। (हदीक़ा नुदिया)

★ और रिवायत किया गया कि जो लोग ग़ीबत करते हैं (जो सख़्त हराम और ज़िना से भी अशद है) और जो लोग मस्जिद में दुनिया की बातें करते हैं उनके मुँह से वह गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़रिश्ते अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर उनकी शिकायत करते हैं। (हदीक़ा नुदिया)

सुब्हानल्लाह! जब मुबाह व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरईया करने को मस्जिद में बैठने पर यह आफ़तें हैं तो हराम व नाजाइज़ काम करने का क्या हाल होगा?

मस्जिद में ख़रीद व फरोख़्त की मुमानेअत

मस्जिद में किसी चीज़ का मोल लेना, बेचना, ख़रीद व फ़रोख़्त की गुफ़्तगू करना नाजाइज़ है मगर मोअ्तकिफ़ को अपनी ज़रूरत की चीज़ मोल लेनी जाइज़ है जबकि वह भी मबीअ् यानी चीज़ मस्जिद से बाहर ही रहे, मगर ऐसी ख़फ़ीफ़ व क़लील और नज़ीफ़ व सुथरी शय जिसके सबब न मस्जिद में जगह रुके न उसके अदब के ख़िलाफ़ हो, और तिजारत के लिए ख़रीद व फ़रोख़्त की मोअ्तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं।

हदीस में है रसूलुल्लह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अपनी मस्जिदों को बचाओ अपने नासमझ बच्चों और मज्नूनों के जाने, ख़रीद व फ़रोख़्त, झगड़ों और आवाज़ बुलन्द करने से। (इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब तुम किसी को मस्जिद में कुछ बेचते या मोल लेते देखो तो उस से कहो अल्लाह तेरी तिजारत में नफ़अ् न दे और जब किसी को देखो कि अपनी कोई गुम्शुदा चीज़ मस्जिद में लोगों से पूछता है तो उस से कहो अल्लाह तुझे तेरी चीज़ न मिलाए। (तिर्मिज़ी)

दूसरी सही रिवायत में इरशाद फरमाया उस से कहो अल्लाह तेरी गुम्शुदा चीज़ तुझे न मिलाए मस्जिदें इसलिए नहीं बनी हैं कि उन में आकर गुम्शुदा चीज़ों की तफ़्तीश करो।

(मुस्लिम, फतावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 403)

तामीरे मस्जिद का सवाब

मस्जिद की तामीर करना बड़ा सवाब और नेक काम है उसके लिए जन्नत में घर होने की बशारत व ख़ुशख़बरी दी गई है, मस्जिद अल्लाह का घर है उसकी तामीर व तरक़्क़ी से अल्लाह तआला ख़ुश होता और उस बन्दे पर रहमत नाज़िल फरमाता है। (मुरत्तिब)

हदीस सही में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए मस्जिद बनाए अगरचे एक छोटी सी चिड़िया के घोंसले के बराबर, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसके लिए जन्नत में मोती और याक़ूत का महल तैयार फरमाएगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

उसमें हर वह शख़्स दाख़िल है जो किसी क़द्र चन्दा वग़ैरह से शरीक हुआ, सारी मस्जिद बनाने पर यह सवाब मौक़ूफ़ नहीं।

★ मदीना तैय्यबा में ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बनाई।

★ फिर अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसमें ज़्यादत फरमाई।

★ फिर अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसकी तामीर में इज़ाफ़ा फरमाया उस पर यही हदीस रिवायत की।

मस्जिद के लिए ग़ैर मुस्लिम से चन्दा लेना

मस्जिद के नाम पर काफिर के ज़मीन हिबा करने, उन से रुपया और सामान लेने से मुतअल्लिक एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

★ काफिर अगर ज़मीन अपनी मिल्क रख कर मुसलमानों को उस पर मस्जिद बनाने की इजाज़त दे तो वह मस्जिद मस्जिद ही न होगी क्योंकि काफ़िर मस्जिद के लिए वक़्फ़ करने का अहल नहीं। हाँ अगर काफिर किसी मुसलमान को अपनी ज़मीन हिबा करके क़ब्ज़ा दे दे कि मुसलमान मालिक हो जाए और वह मुसलमान अपनी तरफ़ से उसे मस्जिद करे तो सही है।

★ सामान अगर काफिर ने ऐसा दिया कि बेऐनेही मस्जिद में लगाया जाएगा जैसे कड़ियाँ, या

ईंटें तो जाइज़ नहीं कि वह मस्जिद के लिए वक़्फ़ का अह्ल नहीं वह माल उसी की मिल्क रहेगा और मस्जिद में मिल्क गै़र का ख़तल सही नहीं। हाँ यहाँ भी अगर मुसलमान को तम्लीक कर दे और मुसलमान अपनी तरफ़ से लगाए तो हरज नहीं।

★ मस्जिद में लगाने को रुपया अगर इस तौर पर देता है कि मस्जिद या मुसलमानों पर एहसान रखता है, या उसके सबब मस्जिद में उसकी कोई मुदाख़लत रहेगी तो लेना जाइज़ नहीं, और अगर नियाज़मन्दाना तौर पर पेश करता है तो हरज नहीं जबकि उसके एवज कोई चीज़ काफ़िर की तरफ़ से ख़रीद कर मस्जिद में न लगाई जाए। बल्कि मुसलमान बतौर ख़ुद ख़रीदें, या राजों मज़दूरों की उजरत में दें, और उस में भी असलम वही तरीक़ा है कि काफ़िर मुसलमान को हिबा कर दे मुसलमान अपनी तरफ़ से लगाए। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 484)

मस्जिद के लिए हिन्दू और मुरतद का वक़्फ़

★ मस्जिद के लिए हिन्दू का वक़्फ़ बातिल है अगर यूंहीं मस्जिद बना लेंगे उसमें नमाज़ हो जाएगी और जुमा भी हो जाएगा अगर शहर या फ़नाए शहर में हो मगर मस्जिद में पढ़ने का सवाब न मिलेगा। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 334)

★ मस्जिद में सिर्फ़ अह्ले सुन्नत का पैसा लिया जाए काफ़िरों या मुर्तदों का नापाक माल न लिया जाए, राफ़ज़ी जो ऐसा ही मज़्हब रखता है जैसा आजकल के राफ़ज़ियों का है अगर उसने मस्जिद बनाई और मर गया तो उस मस्जिद की ज़मीन और अमला बेच कर दूसरी मस्जिद में लगा सकते हैं जबकि फसाद का अन्देशा न हो। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 479)

जन्नत की क्यारी और जन्नत का ख़ित्ता

सूरे इस्राफ़ील से हर चीज़ तबाह व हलाक हो जाएगी मगर काबा मुक़द्दसा और रूए ज़मीन की तमाम मस्जिदों को उठा लिया जाएगा और उन्हें जन्नत का एक हिस्सा कर दिया जाएगा। (मुरत्तिब)

मस्जिद की निस्बत एक हदीस रिवायत की जाती है रोज़े क़यामत तमाम मसाजिद की ज़मीन जमा करके दाख़िले जन्नत की जाएगी यानी तमाम ज़मीन ख़त्म हो जाएगी मस्जिदें बाक़ी रहेंगी उन्हें जमा करके जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। यानी मस्जिदें जन्नत का एक हिस्सा हो जाएंगी। (कंज़ुल–उम्माल)

सहीह हदीस में इरशाद हुआ कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम जन्नत की क्यारियों पर गुज़रो तो उन में चरो, उनका मेवा खाओ, अर्ज़ की गई या रसूलल्लाह जन्नत की क्यारियाँ क्या हैं? फरमाया मस्जिदें, अर्ज़ की गई वह चरना क्या है फरमाया यह कहना :

सुब्हानल्लाहे वल्हम्दुलिल्लाहे वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर।

(तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया : जिल्द 6, स0 440, 441)

खाने पीने के आदाब व सुनन

इंसानी ज़िन्दगी के हर शोअ्बे के लिए इस्लामी तालीमात मौजूद हैं ख़्वाह वह मुआशर्ती आदाब व उसूल हों या ज़ाती अफ़आल व किरदार, या खाने पीने और रहन सहन के तरीक़े हों हर तौर में इस्लाम ने हमारी रहबरी की और हमारे लिए ज़ाब्ता मुतअय्यन फरमाया इस्लामी अहकाम पर अमल करना ही इंसानी फौज़ व फलाह और नजात का ज़ामिन है। (मुरत्तिब)

खाने के लिए हाथ धोना कुल्ली करना

खाने से पहले कलाइयों तक हाथ तीन बार धोना, तीन कुल्लियाँ करना सुन्नत है अगरचे वुज़ू हो। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स० 238)

खाने के बाद उंगलियाँ और बर्तन चाटना

खाना खा कर बर्तन को चाट कर साफ़ करना मस्नून है।

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उंगलियाँ और रकाबी चाटने का हुक्म फरमाते और इरशाद करते तुम्हें क्या मालूम खाने के किस हिस्सा में बरकत है, यानी शायद उसी हिस्सा में हो जो उंगलियों या बर्तन में लगा रह गया है। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमें खाना खा कर प्याला ख़ूब साफ़ कर देने का हुक्म फरमाया कि तुम क्या जानो तुम्हारे कौन से खाने में बर्कत है। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

नब्शतुल–ख़ैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो किसी प्याले में खा कर ज़बान से उसे साफ़ कर दे वह प्याला उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करे। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

यही मज़्मून हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी कि फरमाया और वह बर्तन उस पर दरूद भेजे। (नवादिरुल–उसूल)

दैलमी की रिवायत में है कि फरमाया वह प्याला यूं कहे इलाही इसे आतिशे दोज़ख़ से बचा जिस तरह इसने मुझे शैतान से बचाया, यानी बर्तन सना हुआ छोड़ दें तो शैतान उसे चाटता है। (दैलमी)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया खाना खा कर बर्तन न उठाए जब तक उसे ख़ुद न चाट ले या (मसलन किसी बच्चे या ख़ादिम को) चटा दे कि खाने के पिछले हिस्सा में बरकत है।

(हाकिम, इब्ने हिब्बान, बैहक़ी)

वालिद राइता रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया प्याला चाट लेना मुझे इस से ज़्यादा महबूब है कि उस प्याले भर खाना तसद्दुक करूं, यानी चाटने में जो तवाज़ु है उसका सवाब उस तसद्दुक़ के सवाब से ज़्यादा है।

(मुसनद हसन बिन सुफ़ियान)

अरबाज़ बिन सारिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो रकाबी और अपनी उंगलियाँ चाटे अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में उसका पेट भरे, यानी दुनिया में फ़क्र व फ़ाक़ा से बचे, क़यामत की भूख से महफ़ूज़ रहे, दोज़ख़ से पनाह दिया जाए कि दोज़ख़ में किसी का पेट न भरेगा, उसमें वह खाना है कि न फरबही लाए न भूख में कुछ काम आए। (तबरानी कबीर, फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स० 243)

खाने के बाद हाथ साफ करना

★ अपने दामन या आँचल से बदन पोंछना शरअ़न मना नहीं मगर उस से हाथ मुँह पोंछने से अह्ले तजरबा मना फरमाते हैं कि इस से भूल पैदा होती है।

★ खाने के बाद अपने अमामा वग़ैरह लिबास से हाथ पोंछना मना है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि यह मुमानेअ़त उस वक़्त है कि अभी हाथ न धोए हों या धोने के बाद भी चिकनाई या बू बाक़ी हो जिस से कपड़ा ख़राब हो।

★ खाने के बाद काग़ज़ से हाथ पोंछना न चाहिए। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 30)

खाने के बर्तन

खाने पीने के बर्तन मिट्टी के होना अफ़्ज़ल है कि उसमें न असराफ़ है न इतराना और हदीस में है जो अपने घर के बर्तन मिट्टी के रखे फ़रिश्ते उसकी ज़्यारत करें और तांबे और रांग के बर्तन भी जाइज़ हैं, हाँ क़लई के बाद चाहिए बेक़लई बर्तन में खाना पीना मक्रूह है कि जिस्मानी ज़रर का बाइस है और मिट्टी का बर्तन तांबे से अफ़्ज़ल है। उलमा ने वुज़ू के आदाब व मुस्तहब्बात से शुमार फरमाया कि मिट्टी के बर्तन से हो और उसमें खाना पीना भी तवाज़ु से क़रीब तर है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 31)

काफ़िरों के खाने और उनके बर्तन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जहाँ तक बने, नसारा के बर्तनों से दूर रहो और बर्तन न मिलें तो पहले उन्हें धोकर पाक कर लो उसके बाद इस्तेमाल में लाओ।

अबू सअ़लबा ख़ुशनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह हम दुश्मन के मुल्क में जिहाद को जाते हैं उनके बर्तनों की हाजत पड़ती है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जहाँ तक बन पड़े उन बर्तनों से दूर रहो और अगर और बर्तन न मिले तो उन्हें धो कर पाक कर लो उसके बाद उन में खाओ पियो। (बुख़ारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नसरानी के यहाँ का खाना खाने से मुमानेअ़त फरमाई।

हदीस में हल्ब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि तआ़मे नसरानी से नही फरमाई और इरशाद किया ज़ंहार तेरे सीने में वह खाना जुंबिश न करे जिस में नसरानियत का मेल हो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

यहाँ नसारा के खाने पानी से बनिस्बत हुनूद के बहुत ज़्यादा बचने का हुक्म है।

एक मस्अला यह है कि शराब ख़ोर की मोंछें बड़ी हों, उनको शराब लग गई जब तक मोंछें पाक न हो जाएं जो पानी पिएगा पानी और बर्तन दोनों नापाक हो जाएंगे।

काफ़िरों के बारे में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : इन्नमल–मुश्रिकूना नजसुन। काफिर निरे नापाक हैं।

यह नापाकी उनके बातिन की है फिर अगर शराब वग़ैरह नजासतों का असर उनके मुँह में बाक़ी हो तो नापाकी ज़ाहिरी भी हुई, इस वक़्त उनका जूठा ऐसा ही नापाक है जैसा कुत्ते का बल्कि उस से भी बदतर, और जिस चीज़ को उनका लुआ़ब लग जाएगा ज़रूर नापाक हो जाएगी, शराब पीने वाले का जूठा फौरी शराब पीने के बाद और बिल्ली का जूठा फौरी चूहा खाने के बाद नापाक है।

हुनूद व नसारा वग़ैरहुम अक्सर शराब ख़ोर होते हैं और मोंछें बढ़ाना उनका शिआ़र, और शराब ख़ोर की मोंछें बड़ी–बड़ी हों कि शराब मोंछ को लग गई तो जब तक मोंछ धुल न जाएगी पानी वग़ैरह जिस चीज़ को लगेगी नापाक कर देगी, और अगर ज़ाहिरी नजासतों से बिल्कुल जुदा हो

जिसकी उम्मीद काफ़िरों में बहुत कम है तो उसके जूठे को अगरचे कुत्ते के जूठे की तरह सरीह नापाक न कहा जाए।

(आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं) मगर हर चीज़ नापाक न हो, तैय्यिब व बेदग़दग़ा होना ज़रूरी नहीं, रींठ भी तो नापाक नहीं फिर कौन आक़िल उसे अपने लब व ज़बान से लगाना गवारा करेगा, काफ़िर के जूठे से भी बहम्दुलिल्लाहे तआला मुसलमानों को ऐसी ही नफ़रत है और यह नफ़रत उनके ईमान से नाशी है।

लिहाज़ा जो शख़्स दानिस्ता उसका जूठा खाए, पिए मुसलमान उस से भी नफ़रत करते हैं, वह मत्ऊन होता है उस पर मुहब्बत कुफ़्फ़ार का गुमान होता है।

• और हदीस में है जो अल्लाह तआला और क़यामत पर ईमान रखता हो तोहमत की जगह खड़ा न हो। (मराक़ियुल–फ़लाह, फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 232, 233)

पानी पिलाने से गुनाह झड़ते हैं

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जब तेरे गुनाह कसीर हो जाएं तो बकसरत पानी पिला, गुनाह ऐसे झड़ जाएंगे जैसे सख़्त आंधी में पेड़ के पत्ते। (ख़तीब, फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 246)

दाने–दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम

ज़रक़ानी शरीफ़ में रिवायत है कि हर दाने पर क़लम क़ुदरत से इतनी इबारत लिखी जाती है।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बाद यह दाना फ़ुलां बिन फ़ुलां का रिज़्क़ है।

वह दाना उसके सिवा किसी दूसरे के पेट में नहीं जा सकता, फ़क़ीर (इमाम अहमद रज़ा बरैलवी) कहता है बहुत दाने ऐसे होते होंगे कि आटा पिस कर उसके कुछ अजज़ा एक रोटी में गये कि ज़ैद ने खाई, कुछ दूसरी में कि अमर ने, तो ऐसे दाने के उस हिस्से पर ज़ैद का नाम मअ़ वल्दियत लिखा होगा और उस हिस्से पर अमर का, यूंहीं अगर वह दाना चार शख़्सों में मुन्क़सिम हुआ तो चारों हिस्सों पर चारों नाम दर्ज होंगे, और बाज़ दाने यूंहीं ज़ाया हो जाते हैं उन पर किसी का नाम न होगा। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 486)

हालते जनाबत में खाना पीना

हज़रत मालिक बिन उबादह ग़ाफ़िक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि हाजते ग़ुस्ल में खाना तनावुल फ़रमाया, उन्होंने फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सामने उसका ज़िक्र किया, फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ऐतबार न आया, उन्हें खींचते हुए बारगाहे अनवर में हाज़िर लाए और अर्ज़ की या रसूलल्लाह यह कहते हैं कि हुज़ूर ने बहाले जनाबत खाना तनावुल किया, फ़रमाया हाँ जब मैं वुज़ू फ़रमा लूँ तो खाता पीता हूँ मगर नमाज़ व क़ुरआन बे नहाए नहीं पढ़ता।

(शरह मआनियुल–आसार, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 220)

मेहमान खाने पीने की तफ़्तीश न करे

मेहमान के सामने जब खाने पीने की कोई चीज़ पेश की जाए तो वह उसके बारे में यह न पूछे कि यह चीज़ कैसी है, या कहाँ से आई है? हदीस में इस से मुमानेअ़त आई है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जब तुम में कोई अपने भाई मुसलमान के यहाँ जाए और तुम्हें अपने खाने पीने में से खिलाए तो खा ले और कुछ न पूछे और अपने पीने की चीज़ से पिलाए तो पी ले और कुछ दरयाफ़्त न करे।

(हाकिम मुस्तदरक, तबरानी औसत)

अमीरुल–मुमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक हौज़ पर गुज़रे, अम्र बिन आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु साथ थे हौज़ वाले से पूछने लगे क्या तेरे हौज़ में दरिन्दे भी पानी पीते हैं? अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया ऐ हौज़ वाले हमें न बता।

(मुअत्ता इमाम मालिक, फतावा रज़्वीया : जिल्द 2, स0 107)

मुस्लिम धोबी और फ़ाहिशा के यहाँ का खाना

धोबी के यहाँ खाने में कोई हरज नहीं यह जो जाहिलों में मशहूर है कि धोबी के यहाँ का खाना नापाक है महज़ बातिल है, हाँ फ़ाहिशा के यहाँ खाना जाइज़ नहीं, इसी तरह वह किसी चीज़ की उजरत या तन्ख़्वाह उस नापाक आमदनी से दे तो वह भी हराम क़तई, और अगर उसके हाथ कोई चीज़ बेची हो और वह अपने इसी माल से उसकी क़ीमत दे, उसका लेना क़तई हराम, अल्बत्ता अगर क़र्ज़ लेकर क़ीमत दे तो जाइज़ है। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 11)

गाये का गोश्त

गाय का गोश्त क़तअ़न हलाल और निहायत ग़रीब परवर गोश्त और बाज़ मिजाज़ वालों में गोश्त बुज़ से नाफ़ेअ़ तर है, बहुतेरे गोश्त के शौक़ीन उसे पसन्द करते और बकरी के गोश्त को बीमार की ख़ूराकी कहते हैं।

उसकी कुरबानी का तो ख़ास कुरआने अज़ीम में इरशाद है और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसकी कुरबानी अज़्वाजे मुतह्हरात की तरफ़ से फरमाई, हिन्दुस्तान में ख़ास शआइर इस्लाम से है और इसका बाक़ी रखना वाजिब हाँ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उसका गोश्त तनावुल फरमाना साबित नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 15,16)

पानी एक बड़ी नेमत है

पानी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है जिस से कुरआने अज़ीम में जाबजा बन्दों पर मन्नत रखी और एक जगह ख़ास उस पर शुक्र की हिदायत फरमाई।

क्या तुमने देखा यह पानी जो पीते हो क्या तुमने इसे बादलों से उतारा या हम हैं उतारने वाले (बल्कि तू ही ऐ रब हमारे) हम चाहें तो उसे सख़्त खारी कर दें फिर क्यों नहीं शुक्र करते (तेरे वजहे करीम के लिए हमेशा हम्द है ऐ रब हमारे) (अल–वाक़ेआ : 68ए69ए70)

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कभी खाने–पीने, पहनने की कोई चीज़ किसी से तलब न फरमाई, मगर ठंडा पानी दोबार तलब फरमाया, एक बार फरमाईश फरमाई रात का बासी पानी पिलाओ।

मदीना तैयबा का पानी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मैंने मदीना तैय्यबा से बेहतर पानी कहीं न पाया ख़ुद्दामे किराम हाज़िरीने बारगाह के लिए ज़ोरक़ों में पानी भर कर रखते हैं, गर्मी के मौसम में उस शहरे करीम की ठंडी नसीमें इतना सर्द कर देती हैं कि बिल्कुल बर्फ़ मालूम होता है।

उम्दा पानी की तीन क़िस्में हैं और वह तीनों उस में आला दरजा पर हैं।

★ एक सिफ़त यह कि हल्का हो, और वह पानी इस क़द्र हल्का है कि पीते वक़्त हलक़ में उसकी ठंडक तो महसूस होती है और कुछ नहीं, अगर खुनकी न हो तो उसका उतरना बिल्कुल मालूम न हो।

★ दूसरी सिफ़त शीरीनी, वह पानी आला दरजा का शीरीं है, ऐसा शीरीं मैंने कहीं नहीं पाया।

★ तीसरी खुनकी, यह भी उस में आला दरजा पर है, मेरी आदत है कि खाना खाते में पानी पीता हूँ, खाना मकान पर खाया जाए और वह जांफ़ज़ा पानी मस्जिद करीम में, लिहाज़ा खाना खाते में पानी न पीता, खाने के बाद मस्जिद करीम में बनीयत ऐतकाफ़ हाज़िर होता और इस अतीया सरकारी से दिल व जाँ सैराब करता। ऐतकाफ़ तो हर मस्जिद की हाज़िरी में हमेशा होता ही है सिर्फ़ पानी के लिए ऐतकाफ़ न होता था, बल्कि उसकी मन्फ़अ़त यह है कि ग़ैर मोअ़तकिफ़ को मस्जिद में खाना पीना जाइज़ नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 32, 33)

बाद ज़ुफ़ाफ़ वलीमा करना सुन्नते मुस्तहब्बा है

वलीमा का खाना सुन्नत है, और वलीमा बादे ज़ुफ़ाफ़ सुन्नत है और उसमें सेग़–ए–अम्र भी वारिद है।

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फरमाया, वलीमा करो अगरचे एक ही दुंबा, या अगरचे एक दुंबा, दोनों मानी का एहतमाल है और पहला मानी ज़्यादा ज़ाहिर है।

जिस शहर के लोगों में से एक भी वलीमा न करता हो बल्कि निकाह से पहले अव्वल रोज़ जैसा रिवाज है खाना खिला देता हो तो सब लोग तारिकाने सुन्नत हैं, मगर यह सुनने मुस्तहब्बा है तारिके गुनहगार न होगा अगर उसे हक़ जाने। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 44)

खाना खाने का मस्नून तरीक़ा

दाहिना पाँव खड़ा हो और बायाँ बिछा, और रोटी बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथ से तोड़ना चाहिए एक हाथ से तोड़ कर खाना और दूसरा हाथ न लगाना आदते मुतकब्बेरीन है।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 91)

लिखे हुए दस्तर्ख़्वान व बर्तन का हुक्म

दस्तर्ख़्वान पर अगर अश्आर वग़ैरह लिखे हों तो उस पर खाना जाइज़ नहीं, इसी तरह बर्तन में अगर आयात वग़ैरह लिखी हों तो अगर शिफ़ा हासिल करने की ग़रज़ से है तो हरज नहीं, लेकिन बावुज़ू हो वरना इजाज़त नहीं। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 53)

खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना

जो खाना बग़ैर बिस्मिल्लाह के शुरू किया जाए शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है।

★ रब्बुल–इज़्ज़त ने उस से फरमाया था, माल व औलाद में उनका शरीक हो।

(अल–असरार : 64)

★ जो बग़ैर बिस्मिल्लाह खाए पिए उसके खाने पीने में शैतान शरीक होता है, और बग़ैर बिस्मिल्लाह औरत के पास जाए उसकी औलाद में शैतान का साझा होता है, हदीस में ऐसों को मुग़र्रेबीन फरमाया जो इंसान व शैतान के मज्मूई नुत्फ़े से बनते हैं।

★ अगर खाने की इब्तिदा में भूल जाए और दर्मियान में याद आ जाए फौरन "बिस्मिल्लाहे अला अव्वलेही व आख़ेरही।" पढ़ ले कि शैतान उसी वक़्त क़य कर देता है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी फरमाते हैं :

और बफ़ज़्लेही मैं भूखा ही मारता हूँ यहाँ तक कि पान खाते वक़्त बिस्मिल्लाह और जब छालिया मुँह में डाली तो बिस्मिल्लाह शरीफ़, हाँ हुक़्क़ा पीते वक़्त नहीं पढ़ता, तहतावी में उस से मुमानेअ़त लिखी है वह ख़बीस अगर उसमें शरीक होता हो तो ज़रर ही पाता होगा कि उम्र भर का भूखा प्यासा, उस पर धुएं से कलेजा जलना, भूख प्यास में हुक़्क़ा बहुत बुरा मालूम होता है।

मुसलमानो! शैतान हर वक़्त तुम्हारी घात में है उस से ग़ाफ़िल किसी वक़्त न हो।

(अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 101)

पानी की अहमीयत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के सामने एक साहब ने पानी पी कर बचा हुआ फेंक दिया उस पर आपने इरशाद फरमाया :

फेंकना न चाहिए किसी बर्तन में डाल देते, इस वक़्त तो पानी इफ़रात से है इस एक घूँट पानी की क़द्र नहीं, जंगल में जहाँ पानी न हो वहाँ उसकी क़द्र मालूम हो सकती है कि अगर एक घूँट पानी मिल जाए तो एक इंसान की जान बच जाए।

एक हकीमाना मौएज़त

हज़रत ख़लीफ़ा हारून रशीद रहमतुल्लाह तआला अलैह उलमा दोस्त थे, दरबार में उलमा का मज्मा हर वक़्त रहता था, एक मरतबा पानी पीने के वास्ते मंगाया, मुँह तक ले गये थे, पीना चाहते थे कि एक आलिम साहब ने फरमाया : अमीरुल–मुमिनीन ज़रा ठहरिए, मैं एक बात पूछना चाहता हूँ फ़ौरन ख़लीफ़ा ने हाथ रोक लिया, उन्होंने फरमाया अगर आप जंगल में हों और पानी मयस्सर न हो, और प्यास की शिद्दत हो, इतना पानी किस क़द्र क़ीमत देकर ख़रीदेंगे फरमाया वल्लाह! आधी सलतनत देकर, फरमाया बस पी लीजिए जब ख़लीफ़ा ने पी लिया, उन्होंने फरमाया अब अगर यह निकलना चाहे और न निकल सके तो किस क़द्र क़ीमत देकर उसका निकलना मोल लेंगे? कहा वल्लाह! पूरी सलतनत देकर, इरशाद फरमाया बस आपकी सलतनत की यह हक़ीक़त है कि एक मरतबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए और दूसरी बार पूरी, इस पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिए। (अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स0 41)

खाना खाते वक़्त बोलना

खाना खाते वक़्त इल्तिज़ाम कर लेना न बोलने का यह आदत है मजूस की और मक्रूह है और लग़्व बातें हर वक़्त मक्रूह और ज़िक्रे ख़ैर करना यह जाइज़ है।(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 15)

जुज़ामी के साथ खाना कैसा है?

हर चन्द जुज़ामी के साथ खाना शरअ़न जाइज़ है बल्कि ख़ुद नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मज्ज़ूम को अपने साथ खिलाया और फरमाया : मेरे साथ बिस्मिल्लाह कह कर खाओ अल्लाह ही पर तवक्कुल व वसूक़ रखो। (त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

यहाँ तक कि अगर बक़स्द तवाज़ु व तवक्कुल व इत्तिबा हो तो सवाब पाएगा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि बला रसीदा के साथ तवाज़ु और अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल पर ईमान के साथ खाओ। (तहावी)

मगर ख़्वाही नख़्वाही उसके साथ खाना ज़रूरी भी नहीं। बल्कि जिसकी नज़र अस्बाब पर मुक़्तसिर हो और ख़ुदा पर सच्चा तवक्कुल न रखता हो उसके हक़ में बचना ही मुनासिब है, न यह समझ कर कि बीमारी उड़ कर लग जाती है कि यह ख़्याल तो बातिल महज़ है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सही हदीसों में इसे रद्द फरमाया, बल्कि इस नज़र से कि शायद क़ज़ाए इलाही के मुताबिक़ कुछ वाक़े हुआ और उस वक़्त शैतान के बहकाने से यह समझ में आया कि फुलां फेअल से ऐसा हो गया वरना न होता तो उस में दीन का नुक़्सान होगा। ग़रज़ क़वीयुल–ईमान को तवक्कुलन अलल्लाह उस से मुख़ालितत में कुछ नुक़्सान नहीं और ज़ईफ़ुल–ऐतक़ाद के हक़ में अपने दीन की एहतियात को एहतराज़ बेहतर, इसलिए।

सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मज्ज़ूम से ऐसा भागो जैसे शेर से।

दूसरी हदीस में है जुज़ामी से इस तरह बचो जिस तरह दरिन्दे से बचते हो जब वह एक वादी से उतरे तो तुम दूसरी वादी से उतरो। (त, तब्क़ात इब्ने सअ़द)

एक और हदीस में है कि जुज़ामी से बात करो तो तुम्हारे और उसके दर्मियान एक नेज़ा या दो नेज़े का फ़ासिला हो। (त, इब्ने अस्सुन्नी, अबू नईम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 5)

सबील लगाना लंगर बांटना

पानी या शर्बत की सबील लगाना जबकि बनीयत महमूद ख़ालिसन लेवज्हिल्लाह सवाब रसानी अरवाहे तैय्यबा अइम्मा अत्हार मक़्सूद हो बिला शुबह बेहतर व मुस्तहब व कारे सवाब है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब तेरे गुनाह ज़्यादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला गुनाह झड़ जाएंगे जैसे सख़्त आँधी में पेड़ के पत्ते। (ख़तीब)

इसी तरह खाना खिलाना, लंगर बांटना भी मन्दूब व बाइसे अज्र है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला अपने उन बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं फ़रिश्तों के साथ मुबाहात फरमाता है, कि देखो यह कैसा अच्छा काम कर रहे हैं। (अबुश्शैख़)

निछावर से मना फरमाया गया

लंगर लुटाना जिसे कहते हैं कि लोग छतों पर बैठ कर रोटियाँ फेंकते हैं, कुछ हाथों में जाती हैं, कुछ ज़मीन पर गिरती हैं, पाँव के नीचे आती हैं यह मना है कि इसमें रिज़्क़े इलाही की बेताज़ीमी है बहुत उलमा ने तो रुपयों पैसों का लुटाना जिस तरह दूल्हा दुल्हन की निछावर में मामूल है मना फरमाया कि रुपया पैसा को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने ख़ल्क़ की हाजत रवाई के लिए बनाया है तो उसे फेंकना न चाहिए फिर रोटी का फेंकना तो सख़्त बेहूदा है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 88)

दस्तर्ख़्वान बिछा कर खाना

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आदते करीमा ज़मीन पर दस्तर्ख़्वान बिछा कर खाना तनावुल फरमाना था और यही अफ़्ज़ल है।

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास जब खाना आता तो उसे ज़मीन पर रखा जाता। (त, अहमद)

एक और हदीस में है कि मैं वैसा ही खाता हूँ जैसा बन्दा खाता है, मैं वैसा ही पीता हूँ जैसा बन्दा पीता है। (त, दैलमी मुसनदुल–फ़िर्दौस)

(हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह तवाज़ु व इंकिसारी के तौर पर फरमाया। मुरत्तिब)

दूसरी हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जब खाना रखा जाए तो अपने जूते उतार लो यह तुम्हारे पैरों के लिए राहत बख़्श है। (त, दारमी, हाकिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 138)

मेहमान को खिलाने की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मेहमान अपना रिज़्क़ लेकर आता है और खिलाने वाले के गुनाह लेकर जाता है उनके गुनाह मिटा देता है। (अबू अश्शैख़)

अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं : बेशक यह बात कि मैं अपने भाई से एक गरोह को जमा करके दो एक साअ् खाना खिलाऊं मुझे उस से ज़्यादा पसन्द है कि तुम्हारे बाज़ार में जाऊं और एक गुलाम ख़रीद कर आज़ाद करूं।

(अबू अश्शैख़, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 176)

ईसाइयों के साथ खाना खाने से एहतराज़ लाज़िम

यहाँ ईसाइयों ख़ुसूसन अंग्रेज़ों के साथ खाना–खाना जाइज़ नहीं।

हदीस में है न उनके साथ खाना खाओ न उनके साथ पानी पियो। उनके वर्तन नजासत से ख़ाली नहीं होते। (इसलिए एहतराज़ लाज़िम है। मुरत्तिब) (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 9, स० 379)

खाने में ऐब निकालना ना पसन्दीदा

खाने में ऐब निकालना अपने घर पर भी न चाहिए मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है, आदते करीमा यह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया वरना नहीं, और पराए घर ऐब निकालना तो मुसलमानों की दिल शिक्नी है और कमाले हिर्स बे बेमुरव्वती पर दलील है।

नंगे सर खाना ख़िलाफ़े सुन्नत

जो बिस्मिल्लाह कह कर खाता है, शैतान उसके साथ नहीं खा सकता और जो बग़ैर बिस्मिल्लाह के खाए शैतान उसके साथ खाएगा अगरचे सर पर सौ कपड़े हों, नंगे सर खाना हुनूद की रस्म और ख़िलाफ़े सुन्नत है हाँ कोई उज़्र हो तो हरज नहीं।

बग़ैर दावत के किसी के खाने में शरीक होने का हुक्म

बिला दावत जो दावत में जाए उसे सही हदीस में फ़रमाया चोर बन कर गया और लुटेरा हो कर निकला, ख़ुसूसन जबकि दावते आम न हो तो मअ्हूद व मारूफ़ से ज़ाइद आदमी ले जाना सख़्त नाजाइज़ है, मसलन जो लोग आदी हैं कि बेआदमी के साथ लिए हुए कहीं नहीं जाते उनकी जो दावत करेगा आप जानेगा कि साथ आदमी होगा, हाँ अगर किसी बेतकल्लुफ़ी वाले ने दावत की और कुछ हाजतमन्द हैं कि यह उनको साथ ले गया और उनका बार उस पर न पड़ेगा ख़्वाह यूं कि दस्तर्ख़्वान वसीअ् है और दिल फ़राख़, या यूं कि उनकी किफ़ालत यह ख़ुद करेगा और उसे नागवार न होगा तो हरज नहीं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने ग़ज़वए ख़न्दक़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और सैयद सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की दावत की और दो साहिबों के क़ाबिल खाना पकाया, जब यह दावत को अर्ज़ करने गये हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बआवाज़ बुलन्द इरशाद फ़रमाया कि अहले ख़न्दक़, जाबिर तुम्हारी ज़्याफ़त करता है वह एक हज़ार सहाबा किराम थे रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम, और जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया जब तक हम तशरीफ़ न लायें खाना न उतारा जाए। जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु घबराए हुए अपने घर तशरीफ़ लाए और अपनी ज़ौजा मुक़द्दसा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से हाल बयान किया कि यहाँ दो ही आदमियों के क़ाबिल खाना है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मअ् एक हज़ार सहाबा के तशरीफ़ लाते हैं, उन बीबी ने कहा आपको इसकी फ़िक्र क्या है जो लाते हैं वही सामान फ़रमाने वाले हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हुए, आटे और हाँडी में लुआबे देहन अक़्दस डाला और इरशाद फ़रमाया कि रोटी पकाने वाली बुला लो और हाँडी चूल्हे पर रहने दो, इस क़लील आटे और गोश्त से एक हज़ार सहाबा को पेट भर कर खिला दिया और हांडी वैसा ही जोश मारती रही और आटा ज़रा कम न हुआ। (बुख़ारी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 380)

दावते वलीमा क़बूल करना सुन्नते मुअक्केदा

दावते वलीमा क़बूल करना सुन्नते मुअक्केदा है जब कि वहाँ कोई मासियत मिस्ल मज़ामीर वग़ैरहा न हो न और कोई माने शरई हो और उसका क़बूल वहाँ जाने में है, खाने न खाने का

इख़्तियार है, बाक़ी आम दावतों का क़बूल अफ़ज़ल है जबकि न कोई माने हो न कोई उस से ज़्यादा अहम काम हो और ख़ास उसकी कोई दावत करे तो क़बूल करने न करने का उसे मुतलक़न इख़्तियार है। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 9, स० 385)

खाना ज़्यादा खाना बेबरकती का सबब

ज़रूरत से ज़्यादा खाना नहूसत की दलील है कम खाना नूरानियत की बात है इसलिए कहा जाता है कि पेट का एक हिस्सा खाने से भरे, दूसरा हिस्सा पानी से और तीसरा हिस्सा साँस के लिए ख़ाली रखे। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक मक़ाम पर सोने और खाने के मुतअल्लिक़ तहरीर फरमाते हैं :

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं आदमी ने कोई बर्तन पेट से बदतर न भरा आदमी को बहुत हैं चन्द लुक़्मे जो उसकी पीठ सीधी रखें और अगर यूं न गुज़रे तो तिहाई पेट खाने के लिए, तिहाई पानी, तिहाई साँस को। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

जो बहुत खायेगा बहुत पियेगा, जो बहुत पियेगा बहुत सोयेगा, जो बहुत सोयेगा आप ही यह ख़ैरात व बरकात खोयेगा।.

दूसरी हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया बेशक बहुत खाना मन्हूस है। (बैहक़ी शुअ़बुल–ईमान, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 331)

खाना खिलाने के फ़वाइद पर अहादीस

भूखों को खाना खिलाना बहुत बड़ी नेकी है जो किसी के पेट भरने का सामान मुहैया करे अल्लाह तआला उसकी मग़्फ़िरत फरमा देता है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुतअद्दद अहादीस में खाना खिलाने की ताकीद फरमाई है, चन्द अहादीसे करीमा मुलाहिज़ा फरमाएं। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : सबसे अफ़ज़ल काम मुसलमानों का जी ख़ुश करना है कि तू उसका बदन ढांके या भूख में पेट भरे या उसका कोई काम पूरा करे। (तबरानी औसत)

हदीस 2 : जिस मुसलमान का जी किसी खाने पीने या किसी क़िस्म की हलाल चीज़ को चाहता हो इत्तिफ़ाक़ से दूसरा उसके लिए वही शय मुहैया कर दे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसके लिए मग़्फ़िरत फरमा दे। (बज़्ज़ार, तबरानी)

हदीस 3 : जो अपने भाई मुसलमान को उसकी चाहत की चीज़ खिलाए अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ पर हराम कर दे। (बैहक़ी)

हदीस 4 : रहमते इलाही वाजिब को कर देने वाली चीज़ों में है ग़रीब मुसलमानों को खाना खिलाना। (बैहक़ी)

हदीस 5 : यानी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के यहाँ दरजा बुलन्द करने वाले हैं सलाम का फ़ैलाना और हर तरह के लोगों को खाना खिलाना और रात को लोगों के सोते में नमाज़ पढ़ना। (तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद)

हदीस 6 : गुनाह मिटाने वाले हैं खाना खिलाना और सलाम ज़ाहिर करना और शब को लोगों के सोते में नमाज़ पढ़ना। (हाकिम)

हदीस 7 : जो अपने मुसलमान भाई को पेट भर कर खाना खिलाए, प्यास भर पानी पिलाए, अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ से सात खाइयाँ दूर कर दे, हर खाई से दूसरी तक पाँच सौ बरस की राह है। (तबरानी)

हदीस 8 : अल्लाह तआला अपने बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं अपने फ़रिश्तों के साथ मुबाहात फरमाता है। (कि देखो यह कैसे अच्छे काम करते हैं। (अबू अश्शैख़)

हदीस 9 : ख़ैर व बरकत उस घर की तरफ़ जिस में लोगों को खाना खिलाया जाए उस से भी ज़्यादा जल्द पहुँचती है जितनी जल्द छुरी कोहान शुतुर की तरफ़, कि ऊंट ज़िबह करके सबसे पहले उसका कोहान तराश्ते हैं। (इब्ने माजा, इब्ने अबी अद्दुनिया)

हदीस 10 : जब तक तुम में से किसी का दस्तर्ख़्वान बिछा है उतनी देर फ़रिश्ते उस पर दरूद भेजते रहते हैं। (अस्बहानी)

हदीस 11 : मेहमान अपना रिज़्क़ लेकर आता है और खिलाने वालों के गुनाह लेकर जाता है उनके गुनाह मिटा देता है। (अबू अश्शैख़)

हदीस 12 : सैय्यदना इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं बेशक मेरा अपने किसी दीनी भाई को एक नेवाला खिलाना मुझे इस से ज़्यादा पसन्द है कि मिस्कीन को एक रुपया दूं, और अपने दीनी भाई को एक रुपया देना मुझे उस से ज़्यादा प्यारा है कि मिस्कीन पर सौ रुपया ख़ैरात करूं। (अबू अश्शैख़ किताबुस्सवाब)

जमाअत के साथ खाना

जमाअत पर अल्लाह का दस्ते कुदरत है जिस काम में लोगों का इज्तिमा होता है उस में बरकत होती है ख़ुसूसन जिस खाने पर ज़्यादा लोग जमा हों उसमें बरकत का नुज़ूल होता है । (मुरत्तिब)

हदीस में है सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह हम खाते हैं और सैर नहीं होते फ़रमाया इकट्ठे हो कर खाते हो या अलग–अलग, अर्ज़ की अलग–अलग, फरमाया:

जमा हो कर खाओ और अल्लाह तआला का नाम लो तुम्हारे लिए इसी में बरकत रखी जाएगी। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

हदीस : मिल कर खाओ और जुदा न हो कि बरकत जमाअत के साथ है। (इब्ने माजा)

हदीस : बरकत तीन चीज़ों में है मुसलमानों के इज्तिमा और तआमे सरीद और तआमे सहरी में। (तबरानी शुअ़बुल–ईमान)

हदीस : एक आदमी की ख़ूराक दो को किफ़ायत करती है और दो की ख़ूराक चार को, अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर है। (मुसनद बज़्ज़ार)

हदीस : बेशक सब खानों में ज़्यादा प्यारा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को वह खाना है जिस पर बहुत से हाथ हों, यानी जितने आदमी मिल कर खाएंगे उतना ही अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द होगा। (मुसनद अबी यअ़ला, तबरानी, रिसाला राद्दुल–क़हत वल–वबा)

झींगा मछली हलाल या हराम

झींगा मछ्ली खाने के बारे में अइम्मा के दर्मियान इख़्तिलाफ़ है किसी के नज़्दीक जाइज़ है, और किसी के नज़्दीक हराम है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

हमारे मज़हब में मछली के सिवा तमाम दरियाई जानवर मुतलक़न हराम हैं, तो जिन बाज़ के ख़्याल में झींगा मछली की क़िस्म से नहीं उनके नज़्दीक हराम होना ही चाहिए, कुतुबे लुग़त वग़ैरह में तस्रीह है कि वह मछली है।

झींगे की सूरत आम मछलियों से बिल्कुल जुदा और कंगचे वग़ैरह कीड़ों से बहुत मुशाबेह है। और लफ़्ज़ माही ग़ैर सुमुक पर भी बोला जाता है, जैसे माही सक़्नक़ूर, हालांकि वह नाके का बच्चा है कि सवाहिल नील में ख़ुशकी में पैदा होता है, और हमारे अइम्मा से झींगे की हिल्लत में कोई नस्स मालूम नहीं। और मछली भी है तो यहाँ के झींगे बहुत ही छोटे हैं, बहरहाल ऐसे शुबह व इख़्तिलाफ़ से बेज़रूरत बचना ही औला है।

ऐसी छोटी मछलियाँ जिनका पेट चाक नहीं किया जाता और आलाईश निकाले बग़ैर भून लेते हैं इमाम शाफ़ई के सिवा सब अइम्मा के नज़्दीक हलाल हैं। (अहकामे शरीअ़त अव्वल, स0 11)

रोज़े क़्यामत और क़ुर्बे क़्यामत की निशानियाँ

क़्यामत हक़ है इस पर हर मुसलमान को ईमान व यक़ीन रखना लाज़िम है, बन्दों के जज़ा व सज़ा का यही दिन है नेकों को उनके आमाल का बदला मिलेगा, बुरों को उनके आमाले बद की सज़ा मिलेगी, नेकोंकारों का ठिकाना जन्नत और बदकारों का ठिकाना जहन्नम होगा। (मुरत्तिब)

क़ुर्बे क़्यामत की अलामते क़ुबरा

अहादीस व आसार में क़ुर्बे क़्यामत की अलामत मरवी हैं उनमें से बाज़ निशानियाँ क़ुर्बे क़्यामत की यह हैं।

★ दज्जाल का ख़ुरूज।
★ इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़ुहूर।
★ हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नुज़ूल।
★ आफ़ताब का मग़्रिब से तुलूअ़।
★ यह सब अहादीसे मुतवातेरा से साबित हैं।

दाब्बतुल–अर्ज़

जिस रोज़ आफ़ताब मग़्रिब से निकलेगा वही वक़्त दरे तौबा बन्द होने का होगा, उन्हीं अय्याम में दाब्बतुल–अर्ज़ काबा मुअज़्ज़मा के क़ुर्ब में ज़मीन से निकलेगा और घोड़े की फ़रेरी लेकर ग़ायब हो जाएगा, फिर दोबारा निकलेगा और इसी तरह फरेरी लेकर ग़ायब हो जाएगा, तीसरी मतरबा जब निकलेगा तो दाहिने हाथ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का असा होगा और बाएं हाथ में सैय्यदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अंगुश्तरी होगी। जो इल्मे इलाही में मुसलमान होगा उसकी पेशानी पर असा से नूरानी निशान कर देगा और जो काफिर होगा अंगुश्तरी से काला दाग़ देगा।

हदीस शरीफ़ में आया है एक दस्तर्ख़्वान पर चन्द आदमी बैठे हुए खाना खाते होंगे यह कहेगा कि वह काफिर है, वह कहेगा कि यह मुसलमान, फिर न कोई मुसलमान काफिर हो सकेगा और न काफिर मुसलमान।

तीन क़िस्म की क़यामत

क़यामत तीन क़िस्म की है :

1. क़यामते सुग़रा, यह मौत है जो मर गया उसकी क़यामत हो गई।

2. क़यामते वुस्ता, वह यह कि एक क़र्न के तमाम लोग फना हो जाएं और दूसरे क़र्न के नए लोग पैदा हो जाएं।

3. क़यामते कुबरा, वह यह कि आसमान व ज़मीन सब फना हो जाएंगे।

(अल–मल्फूज़ सोयम : स0 48ए 49)

रोज़े क़यामत ज़मीन और आफ़ताब का हाल

रोज़े क़यामत इन ज़मीन व आसमान को दूसरे ज़मीन व आसमान से बदल दिया जाएगा।

कुरआने अज़ीम में इरशाद होता है, जिस दिन बदल जाएगी यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से और आसमान भी, और खुल जाएंगे (क़बरों से लोग) अल्लाह वाहिदे क़ह्हार के लिए। (इब्राहीम : 48)

मगर आसमान के लिए यह नहीं मालूम कि वह आसमान काहे का होगा, हाँ ज़मीन के बारे में सही हदीस आई है जिसमें है कि आफ़ताब क़यामत के दिन सवा मील पर आ जाएगा।

सहाबी जो इसके रावी हैं फरमाते हैं मुझे नहीं मालूम कि मील से मुराद मीले मुसाफ़त है या मीले सुर्मा, अगर मीले मुसाफ़त ही मुराद है तो भी कितना फासिला है, आफ़ताब चार हज़ार बरस के फ़ासिला पर है और फिर उस तरफ़ पीठ किए है उस रोज़ कि सवा मील पर होगा और उस तरफ़ मुँह किए होगा उस रोज़ की गर्मी का क्या पूछना।

इसी हदीस में है कि ज़मीन लोहे की कर दी जाएगी, और जन्नत में चाँदी की ज़मीन होगी, और यह ज़मीन वुस्अत क्या रखती है उन तमाम इंसानों, जानवरों के लिए जो रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक पैदा हुए होंगे।

हदीस में है कि रहमान बढ़ाएगा ज़मीन को जिस तरह रोटी बढ़ाई जाती है। (मिश्कात)

इस वक़्त कुरवी शक्ल पर है इसलिए इसकी गोलाई, उधर की अशिया को हाइल है और उस वक़्त ऐसी हम्वार कर दी जाएगी कि अगर एक दाना ख़शख़ाश का इस किनारा पर पड़ा हो इस किनार–ए–ज़मीन से दिखाई देगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

हदीस में है देखने वाला उन सबको देखेगा और सुनाने वाला उन सबको सुनाएगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

महशर के अरसात में गर्मी की शिद्दत होगी प्यास बहुत होगी और दिन तवील है भूख की तक्लीफ़ भी होगी इसलिए मुसलमान के लिए ज़मीन मिस्ल रोटी के हो जाएगी कि अपने पाँव के नीचे से तोड़ेगा और खाएगा। (अल–मल्फूज़ चहारुम : स0 75)

क़यामत और ज़ुहूरे मेहदी के वक़्त का तअय्युन?

क़यामत कब होगी इसे अल्लाह जानता है और उसके बताए से उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

क़यामत का ज़िक्र करके अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :

अल्लाह ग़ैब का जानने वाला है वह अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं फरमाता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के। (अल–जिन्न : स0 26ए 27)

इमाम क़स्तलानी वग़ैरह ने तस्रीह फरमाई कि इस ग़ैब से मुराद क़यामत है जिसका ऊपर की मुत्तसिल आयत में ज़िक्र है।

अल्लामा सुयूती का हिसाब

इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह तआला अलैह से पहले बाज़ उलमाए किराम ने बमुलाहिज़ा अहादीस हिसाब लगाया कि यह उम्मत सन हज़ार हिजरी से आगे न बढ़ेगी, इमाम सुयूती ने इसके इंकार में एक रिसाला (अल–कश्फ़ु अन तजावुज़े हाज़ेहिल–उम्मतिल–अल्फ़ा) लिखा, उसमें साबित किया कि यह उम्मत 1000 हिजरी से ज़रूर आगे बढ़ेगी, इमाम जलालुद्दीन की वफ़ात शरीफ़ 911 हिजरी में है। और अपने हिसाब से यह ख़्याल फरमाया कि 1300 हिजरी में ख़ात्मा होगा। बहम्दुलिल्लाहे तआला उसे भी 26 बरस गुज़र गये और हुनूज़े क़यामत तो क़यामत अशराते कुबरा में से कुछ न आया।

इमाम मेहदी के बारे में अहदीस बकसरत और मुतवातिर हैं मगर उन में किसी वक़्त का तअय्युन नहीं।

इमाम अहमद रज़ा बरैलवी का हिसाब

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि –

बाज़ उलूम के जरिया से मुझे ख़्याल गुज़रता है कि शायद 1837 हिजरी में कोई सलतनते इस्लामी बाक़ी न रहे और 1900 हिजरी में इमाम मेहदी ज़ुहूर फरमाएं।

मैंने यह दोनों वक़्त (1837 हिजरी में सलतनते इस्लामी का बढ़ना और 1900 हिजरी में इमाम मेहदी का ज़ुहूर फरमाना) सैय्यदुल–मुकाशिफ़ीन हज़रत शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन बिन अरबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के कलाम से अख़ज़ किए हैं, उनका कश्फ़ बड़ा ही ज़बरदस्त था।

हदीस में है दुनिया की उम्र सात दिन है मैं इसके पिछले दिन में मब्ऊस हुआ।

दूसरी हदीस में है मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी उम्मत को ख़ुदाए ताआल निस्फ़ दिन और इनायत फरमाए। (मिश्कात)

इन हदीसों से उम्मत की उम्र पन्द्रह सौ बरस साबित हुई।

कुरआने अज़ीम फरमाता है :

तेरे रब के यहाँ एक दिन तुम्हारी गिनती के हज़ार बरस के बराबर है।

(अल–हज, 47, अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 103ए 104)

इमाम मेहदी और इज्तिहाद

इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुज्तहिद हैं मगर शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन बिन अरबी फरमाते हैं कि उन्हें इज्तिहाद की इजाज़त न होगी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तुल्क़ी जुमला अहकाम करेंगे और उन पर अमल फरमाएंगे।

इमाम मेहदी के तरीक़–ए–नमाज़ वग़ैरह से मसलके हन्फ़ी की तस्वीब

इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तरीक़ा हन्फ़ीया के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ेंगे, न यूं कि मुक़ल्लिद होंगे बल्कि यूं कि सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इसी तरह फरमाएंगे, उस दिन खुल जाएगा कि अल्लाह व रसूल को सबसे ज़्यादा पसन्द मज़हबे हन्फ़ी है, अगर वह मुज्तहिद हैं तो जुमला मसाइल में उनका इज्तिहाद, वरना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद मुताबिक़ मज़हब इमाम आज़म होगा, इसी ख़्याल से बाज़ अकाबिर के क़लम से निकला कि वह हन्फ़ीयुल–मज़हब होंगे बल्कि यही लफ़्ज़ मआज़ल्लाह सैय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु

वस्सलाम की निस्बत सादिर हो गया, हाशा कि नबी अल्लाह किसी इमाम की तक़्लीद फरमाए बल्कि वही है कि उनके अमल मुताबिक़ अमल मज़्हबे हन्फ़ी होंगे, जिस से मज़्हबे हन्फ़ी की सबसे कामिल तर तस्वीब साबित होगी। ग़रज़ उनके ज़माने में तमाम मज़ाहिब मुन्क़तअ़ हो जाएंगे और सिर्फ़ मसाइल मज़्हबे हन्फ़ी बाक़ी रहेंगे।

नहर मसलके हन्फ़ी का अख़ीर तक जारी रहना

अकाबिर अइम्मा कश्फ़ ने फरमाया है कि चश्म–ए–शरीअ़ते कुबरा से बहुत नहरें निकलीं और थोड़ी–थोड़ी दूर जाकर ख़ुश्क हो गईं, मगर मज़ाहिबे अरबा की चारों नहरें, जोश व आब व ताब के साथ बहुत दूर तक बहीं, आख़िर में जा कर वह तीनों नहरें भी थम गईं, और सिर्फ़ मज़्हबे हन्फ़ी की नहर अख़ीर तक जारी रही। यह कश्फ़ अकाबिर अइम्मा शाफ़ईया का बयान है, रहमतुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 68ए 69)

फ़ितन–ए–ख़ुरूज दज्जाल व क़्याम ईसा अलैहिस्सलाम

क़्यामत की निशानियों में से दज्जाल का निकलना भी है वह निकल कर लोगों को गुम्राह और हलाक करेगा और लोगों को ख़ुद अपने ऊपर ईमान लाने की दावत देगा उसके एक हाथ में जन्नत और दूसरे हाथ में दोज़ख़ होगा, जो उस पर ईमान लाएगा उसे वह अपनी जन्नत में डालेगा, वह दरहक़ीक़त दोज़ख़ में जाएगा और जो उस पर ईमान नहीं लाएगा उसे वह अपने दोज़ख़ में डालेगा मगर दरहक़ीक़त वह जन्नत में जाएगा, उसकी पेशानी पर काफिर लिखा होगा जिसे अह्ले ईमान पढ़ सकेंगे, फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दज्जाल को हलाक फरमाएंगे। (मुरत्तिब)

हुज़ूर पुर–नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दज्जाल निकल कर चालीस (रावी ने कहा मुझे मालूम नहीं कि चालीस दिन फरमाया या महीने या बरस। और दूसरी हदीस में चालीस दिन की तस्रीह है पहला दिन साल भर का, दूसरा एक महीना का, तीसरा एक हफ़्ता का, बाक़ी दिन आम दिनों की तरह) तक ठहरेगा फिर अल्लाह तआला ईसा इब्ने मरयम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को भेजेगा वह उसे हलाक करेंगे फिर सात बरस तक लोगों में इस तरह तशरीफ़ रखेंगे कि कोई दो दिल आपस में अदावत न रखते होंगे, इसके बाद अल्लाह तआला शाम की तरफ़ से एक ठन्डी हवा भेजेगा कि रूए ज़मीन पर जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी यहाँ तक कि अगर तुम में कोई पहाड़ के जिगर में चला जाएगा तो वह हवा वहाँ जा कर भी उसकी जान निकाल लेगी, अब बदतरीन ख़ल्क़ बाक़ी रह जाएंगे, फ़िस्क़ व शहवत में परिन्दों की तरह हल्के सुबुक, और ज़ुल्म व शिद्दत में दरिन्दों की तरह गिराँ व सख़्त, जो असलन न कभी भलाई से आगाह होंगे, न किसी बदी पर इन्कार करेंगे, शैतान उनके पास आदमी की शक्ल बन कर आएगा और कहेगा तुम्हें शर्म नहीं आती, यह कहेंगे फिर तू हमें क्या हुक्म करता है वह उन्हें बुत परस्ती का हुक्म देगा उसके बाद नफ़ख़े सूर होगा।

हदीस में जिस ज़माने की ख़बर दी है वह बाद, ख़ुरूज व हलाक दज्जाल व इंतिक़ाल ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आएगा उस वक़्त के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रू–ए–ज़मीन पर कोई मुसलमान न रहेगा।

हदीस में है क़्यामत न आएगी जब तक कि ज़मीन में कोई अल्लाह–अल्लाह कहने वाला न रहे। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 287)

एक और हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं दज्जाल के माँ–बाप तीस साल तक ठहरे रहेंगे उनके कोई औलाद न होगी फिर एक काना लड़का पैदा होगा जिसका नुक़्सान व ज़रर ज़्यादा और नफ़ा कम होगा, उसकी आंखें सोएंगी दिल नहीं सोएगा।

(त, तिर्मिज़ी)

यानी दज्जाल का दिल उसके अफ़कारे फ़ासिदा, कसरते वसाविस व ख़्यालात और मुतवातिर इल्क़ाए शैतानी के सबब से नहीं सोएगा। (त, फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 1, स० 91)

चाँद का बड़ा निकलना

बहुत लोग चाँद को बड़ा देख कर कहने लगते हैं कि कल का है, या आज 29 न थी, 30 थी कि 29 का चाँद इतना बड़ा नहीं होता। यह उनकी ख़ाम ख़्याली है।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कुर्बे क़यामत का एक असर यह है कि हिलाल बड़े नज़र आएंगे। (तबरानी कबीर)

दूसरी हदीस में फरमाया कि कुर्बे क़यामत की एक अलामत यह है कि हिलाल सामने नज़र पड़ेगा देखने वाला कहेगा कि दो रात का है। (तबरानी औसत)

सही मुस्लिम शरीफ़ में अबुल–बख़्तरी से मरवी है कि हम उमरे को निकले बतने नख़्ला में हिलाल देखा किसी ने कहा तीन रात का है, किसी ने कहा दो रात का है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से हाल अर्ज़ किया फरमाया तुम ने किस रात देखा, हमने कहा फुलां रात, कहा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह तआला ने उसे रूयत पर मौक़ूफ़ फरमाया है तो जिस रात तुमने देखा उसी रात का है। (मुस्लिम)

बहुत लोग चाँद ऊंचा देख कर भी ऐसी ही अटकलें दौड़ाते हैं, बाज़ कहते हैं अगर 29 का होता तो इतना न ठहरता। यह सब भी वैसे ही औहाम हैं जिन पर शरअ् में इल्तिफ़ात नहीं।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 578)

जिन्नात और उसकी नेमतें

इंसान को अहकामे इलाहिया का पाबन्द बनाया गया और इंसान ही के लिए जज़ा व सज़ा भी रखी गई, जो बन्द–ए–ख़ुदा दुनिया में अहकामे ख़ुदावन्दी का पाबन्द व मुहाफ़िज़ रहा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमते कामिला से आख़िरत में जन्नत अता फरमाएगा, बन्दों को जन्नत अता फरमाना रब तआला का फ़ज़्ल ही फ़ज़्ल है। (मुरत्तिब)

जन्नत की वुस्अत और मुस्तहक़ीन

जन्नत बहुत वसीअ् मकान है सातों आसमान और सातों ज़मीन उसकी चौड़ान में आ जाएं उसकी वुस्अत अल्लाह व रसूल ही जानते हैं उसमें पहले अरबाबे इस्तिहक़ाक़ भेजे जाएंगे जिन्होंने आमाले सालेहा किए और अपनी हसनात के सबब मुस्तहिक़े जन्नत हुए, यानी इस्तेहक़ाक़ तफ़ज़्ज़ुली न वजूदी कि किसी को नहीं, मौला तआला अपने बन्दों को आमाले सालेहा की तौफ़ीक़ देता है, फिर उन में आमाले सालेहा पैदा फरमाता है, अपने करम से उन्हें क़बूल फरमाता है, फिर अपनी रहमत से उनके एवज़ जन्नत देगा, यह सब उसका फ़ज़्ल ही फ़ज़्ल है।

फ़क़त ईमान पर जन्नत का दाख़िला

जब यह लोग अपने महलों में आराम कर लेंगे, जन्नत बहुत ज़्यादा ख़ाली रहेगी तो बे–इस्तेहक़ाक़ वालों को महज़ अपने करम से उसमें भरेगा यह जन्नत की भरती है और अब भी बहुत जगह ख़ाली रहेगी तो रब अज़्ज़ा व जल्ल उन रूहों को कि दुनिया में न भेजी गईं जिस्म अता फरमा कर उन

मकानों में बसाएगा। यह बहुत आराम से रहे न दुनिया की सूरत देखी, न कोई तक्लीफ़ सही, न मौत चखी, न कोई अमल किया, फ़क़त अल्लाह व रसूल पर ईमान और हमेशा के लिए दारुल–जनान। फ़सुब्हान वासेइर्रहमते। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम : स0 84)

चार सौ साला आबिद और अल्लाह की एक नेमत

इबादत महज़ लेवज्हिल्लाह होना चाहिए, कभी अपने आमाल पर नाज़ाँ न हो कि किसी के उम्र भर के आमाले हसना उसकी किसी एक नेमत का जो उसने अपनी रहमत से अता फरमाई हैं बदला नहीं हो सकते।

अगली उम्मतों में एक बन्द–ए–ख़ुदा बीच समुन्द्र में एक पहाड़ पर जहाँ इंसान का गुज़र न था रात दिन इबादते इलाही में मशग़ूल रहते, रब अज़्ज़ा व जल्ल ने उस पहाड़ पर उनके लिए अनार का एक दरख़्त उगाया और एक शीरीं चश्मा निकाला, अनार खाते और वह पानी पीते और इबादत करते, चार सौ बरस इसी तरह गुज़ारे।

ज़ाहिर है कि जब इंसान बिल्कुल तन्हा ज़िन्दगी बसर करे और कोई दूसरा न हो तो न झूठ बोल सकता है न किसी की ग़ीबत कर सकता है, न चोरी, न और कोई क़ुसूर कर सकता है जिसका तअल्लुक़ दूसरे से हो, और अक्सर गुनाह वही हैं।

ग़रज़ जब उनके नज़अ का वक़्त आया हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए उन्होंने कहा इतनी इजाज़त दीजिए कि मैं वुज़ू ताज़ा करके दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं, जब दूसरी रकअत के दूसरे सज्दा में जाऊं क़ब्ज़ रूह कर लेना, उन्होंने फरमाया मैं तुम्हारे लिए इतनी इजाज़त लाया हूँ, उन्होंने वुज़ू किया दो रकअत नमाज़ पढ़ी, दूसरी रकअत के सज्दा में इंतिक़ाल हुआ, बदन उनका सलामत है अब तक वैसे ही सज्दा में हैं। जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की हम जब आसमान से उतरते या आसमान को जाते हैं उन्हें इसी तरह सर बसुजूद देखते हैं।

यह बन्दा जब क़यामत के रोज़ हाज़िर होंगे इबादत के सिवा नाम–ए–आमाल में कोई गुनाह तो होगा ही नहीं हिसाब व मीज़ान की क्या हाजत, रब्बुल–इज़्ज़त इरशाद फरमाएगा मेरे बन्दे को मेरी जन्नत में मेरी रहमत से ले जाओ, उनके मुँह से निकलेगा "ऐ रब मेरे बल्कि मेरे अमल से" यानी मैंने अमल ही ऐसे किए हैं जिन से मुस्तहिक़्क़े जन्नत हूं, इरशाद होगा लौटाओ और मीज़ान खड़ी करो, इसकी चार सौ बरस की इबादत एक पल्ले में और हमारी नेमतों से जो हमने इसे चार सौ बरस में दीं सिर्फ़ आँख की नेमत दूसरे में रखो, वज़न किया जाएगा उनके चार सौ बरस के आमाल से एक यह नेमत कहीं ज़्यादा होगी, इरशाद होगा मेरे बन्दे को मेरे जहन्नम में ले जाओ मेरे अद्ल से, उस पर घबरा कर अर्ज़ करेंगे नहीं ऐ रब मेरे बल्कि तेरी रहमत से। इरशाद होगा मेरे बन्दे को मेरी जन्नत में मेरी रहमत से ले जाओ। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

गुनाहों के बदले नेकियाँ

एक बन्दा हाज़िर होगा रब्बुल–इज़्ज़त का हुक्म होगा, इसका नाम–ए–आमाल उसे दिया जाएगा वह तूमार हद्दे निगाह तक तवील और सरापा गुनाहों से भरा होगा, अपना नाम–ए–आमाल ख़ुद वह पढ़ेगा, उसमें सग़ाइर व कबाइर सब लिखे होंगे, यह छोटे–छोटे गुनाह ज़ाहिर करेगा और कबाइर को छोड़ता जाएगा। रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाएगा पढ़ लिया, कहेगा हाँ सब पढ़ लिया, फरमाएगा ऐ मेरे फ़रिश्तो इसके हर गुनाह के बदले एक नेकी लिखो, उस वक़्त चिल्ला उठेगा कि इलाही मेरे बड़े गुनाह तो रह ही गये मैंने तो सिर्फ़ सग़ाइर पढ़े, यह सब सदक़ा है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का। (मिश्कात)

ख़ुदा के दो बन्दे

क़यामत के रोज़ दो बन्दे दोज़ख़ से निकाले जाएंगे, रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाएगा जो कुछ तुम्हें पहुँचा तुम्हारे आमाल का बदला था, मैं किसी पर ज़ुल्म नहीं करता तुम फिर जहन्नम में चले जाओ, उन में से एक दौड़ता हुआ जहन्नम की तरफ़ जाएगा और दूसरा आहिस्ता, हुक्म होगा वापस लाओ, इस शताबी और आहिस्तगी का सबब पूछो, जल्दी करने वाला अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे नाफ़रमानी के सबब यह कुछ देख चुका था क्या अब भी नाफ़रमानी करता, दूसरा अर्ज़ करेगा इलाही मुझे उम्मीद न थी कि जहन्नम से निकाल कर मुझे फिर उस में भेजेगा, हुक्म होगा दोनों को जन्नत में ले जाओ। (मिश्कात, अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 92 ता 94)

रोज़े क़यामत जानवरों का हाल

जो हैवानात मूज़ी हैं वह दोज़ख़ में काफ़िरों को अज़ाब देने के लिए जाएंगे, उनको ख़ुद ही तक्लीफ़ न होगी, जिस तरह फ़रिश्तगाने अज़ाब को ख़ुद कोई तक्लीफ़ न होगी।

★ अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता बलअ़म बाऊर की शक्ल में जन्नत में जाएगा और बलअम उस कुत्ते की शक्ल हो कर जहन्नम में जाएगा।

★ और नाक़–ए–सालेह अलैहिस्सलातु वस्सलाम और नाक़–ए–उज़बा जन्नत में जाएंगे।

★ बाक़ी हैवानात मिट्टी कर दिए जाएंगे, उनको मिट्टी होता देख कर कुफ़्फ़ार कहेंगे, काश मैं भी (उन्हीं की मानिन्द) मिट्टी हो जाता।

क्या जिन्नात, जन्नत में जाएंगे

एक क़ौल यह है कि जिन्नात, जन्नत के आस–पास मकानों में रहेंगे, जन्नत में सैर को आया करेंगे, जन्नत तो जागीर है आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उनकी औलाद में तक़्सीम होगी।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम : स0 80)

मौत का मेंढा

मौत और हयात दोनों वजूदी हैं।

क़ुरआने अज़ीम फ़रमाता है : उस ने मौत व हयात को पैदा किया ताकि देखे कि तुम में कौन अच्छे अमल करता है।

मौत एक मेंढे की शक्ल पर है इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़ब्ज़े में, जिस के पास से वह हो कर निकलती है वह मर जाता है और हयात एक घोड़ी की शक्ल पर है जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सवारी में, जिस बेजान के पास से हो कर निकलती है वह ज़िन्दा हो जाता है।

अल्लाहु अकबर! यह मौत ऐसी चीज़ है कि सिवा ज़ात बारी अज़्ज़ा जलालुहू के कोई उस से न बचेगा।

जब आयत नाज़िल हुई।

जितने ज़मीन पर हैं सब फ़ना होने वाले हैं और बाक़ी रहेगा वज्हे करीम रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू का।

फ़रिश्ते बोले हम बचे कि हम ज़मीन पर नहीं, फिर आयत नाज़िल हुई। कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल–मौत, हर जानदार मौत को चखने वाला है। फ़रिश्तों ने कहा अब हम भी गये।

जब आसमान व ज़मीन सब फ़ना हो जाएंगे और सिर्फ़ मलाइका मुक़र्रेबीन में जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और चार फ़रिश्ते हमल–ए–अर्श (अर्श के उठाने वाले) रह जाएंगे, इरशाद फ़रमाएगा और वह ख़ूब जानने वाला है, इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे कि बाक़ी हैं तेरे बन्दे जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और चार फ़रिश्ते अर्श के उठाने वाले, और यह भी फ़ना हो

जाएंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा रहेगा, इरशाद फ़रमाएगा जिब्रील की रूह क़ब्ज़ कर, जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की रूह क़ब्ज़ करेंगे वह एक अज़ीम पहाड़ की तरह सज्दा में रब्बुल-इज़्ज़त की तस्बीह व तक़्दीस करते हुए गिर पड़ेंगे।

★ फिर फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे वन्दे मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और अर्श के उठाने वाले और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह कभी फ़ना न होगा, फ़रमाएगा मीकाईल की रूह क़ब्ज़ कर, मीकाईल अलैहिस्सलाम भी एक अज़ीम पहाड़ की मानिन्द सज्दे में तस्बीह करते हुए गिर पड़ेंगे।

★ फिर इरशाद फ़रमागए इज़्राईल अब कौन बाक़ी है, अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे बन्दे इस्राफ़ील, इज़्राईल और हमला अर्श और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा रहेगा इरशाद फ़रमाएगा इस्राफ़ील की रूह क़ब्ज़ कर, इस्राफ़ील अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी एक अज़ीम पहाड़ की तरह सज्दा में तस्बीह व तक़्दीस करते हुए गिर पड़ेंगे।

★ और फिर इरशाद फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे बन्दे हमला अर्श और बाक़ी है तेरा बन्दा इज़्राईल और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा बाक़ी रहेगा। फ़रमाएगा हमला अर्श की रूह क़ब्ज़ कर वह सब भी इसी तरह मर जाएंगे।

★ फिर इरशाद फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी है तेरा बन्दा इज़्राईल और यह भी फ़ना होगा और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह कभी फ़ना न होगा, इरशाद फ़रमाएगा मर जा, इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्साम भी एक अज़ीम पहाड़ की मानिन्द रब्बुल-इज़्ज़त के हुज़ूर सज्दे में तस्बीह करते हुए गिर पड़ेंगे और रूह निकल जाएगी, उस वक़्त सिवा रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के कोई न होगा, उस वक़्त इरशाद होगा आज किस के लिए बादशाहत है? कोई हो तो जवाब दे। ख़ुद रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू जवाब फ़रमाए अल्लाह वाहिद क़ह्हार के लिए है। जब तक चाहेगा यही हालत रहेगी।

★ फिर जब चाहेगा इस्राफ़ील अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमाएगा वह सूर फूंकेंगे, क़यामत क़ाइम होगी, हिसाब होगा, जन्नती जन्नत में और अबदी दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे और गुनहगार मुसलमान जहन्नम से नजात पा जाएंगे कि मुनादी जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान जन्नत व दोज़ख़ वालों को निदा करेगा, जहन्नमी निहायत ख़ुशी के साथ झांकने लगेंगे कि शायद नजात के लिए हमको निदा दी गई है और जन्नत वाले निहातय ख़ौफ़ के साथ झिझकते डरते गुरफ़ाते जन्नत से झांकेंगे कि कहीं फिर हम से कोई ख़ता हो गई है जिस से दोज़ख़ में भेज दिए जाएं।

★ फिर मौत का मेंढा लाया जाएगा जन्नतियों से पूछा जाएगा तुम इसको पहचानते हो सब कहेंगे हाँ यह मौत है फिर जहन्नमियों की तरफ़ मुँह करके पूछा जाएगा तुम इसको पहचानते हो सब कहेंगे हाँ हम पहचानते हैं यह मौत है, फिर जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान यहिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने हाथ से उसको ज़िबह फ़रमाएंगे फिर जहन्नमियों से कहा जाएगा अब तुम हमेशा जहन्नम में रहो कभी मरना नहीं, बिल्कुल मायूस हो कर पलटेंगे ऐसा रंज उनको कभी न हुआ होगा, फिर जन्नतियों से कहा जाएगा अब तुम जन्नत में हमेशा रहो अब कभी मरना नहीं वह ख़ुश हो कर पलटेंगे ऐसी ख़ुशी उनको कभी न हुई होगी। (अल-मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 71 ता 73)

जिब्रीले अमीन का मुआयन-ए-जन्नत

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने जन्नत बनाई जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम को हुक्म फ़रमाया कि उसे जाकर

देख जिब्रील ने उसे और जो कुछ मौला तआला ने उस में अह्ले जन्नत के लिए तैयार फरमाया है देखा फिर हाज़िर हो कर अर्ज़ की ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम उसे तो जो कोई सुनेगा उसमें ही जाए न रहेगा फिर रब अज़्ज़ा व जल्ल ने उसे उन बातों से घेर दिया जो नफ़्स को नागवार हैं फिर जिब्रील को हुक्म फरमाया कि अब जाकर देख, जिब्रील ने देखा फिर हाज़िर हो कर अर्ज़ की ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम मुझे डर है कि अब तो शायद इसमें कोई भी न जा सके, फिर जब मौला तबारक व तआला ने दोज़ख़ पैदा की जिब्रील से फरमाया उसे जा कर देख जिब्रील ने देखा फिर आ कर अर्ज़ की ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम उस का हाल सुन कर कोई भी उस में न जाएगा, मौला तआला ने उसे नफ़्स की ख़्वाहिशों से ढाँक दिया फिर जिब्रील को उसके देखने का हुक्म फरमाया जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे देख कर अर्ज़ की ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम मुझे डर है कि अब तो शायद ही कोई उस में जाने से बचे। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

दूसरी हदीस में है कि जन्नत उन चीज़ों से घेर दी गई है जो नफ़्स को नागवार हैं और दोज़ख़ उन चीज़ों से ढाँप दी है जो नफ़्स को पसन्द हैं।

(तारीख़ बुख़ारी, फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 358)

जन्नत में रब का कलाम

जन्नत में ऐसी नेमतें हैं जिन का तसव्वुर व ख़्याल भी नहीं किया जा सकता मगर उन सब नेमतों में सबसे ज़्यादा लज़्ज़त रब तआला के दीदार और उस से हमकलामी में होगी उस से बढ़ कर जन्नत में कोई नेमत व लज़्ज़त नहीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक अल्लाह तआला जन्नतियों से फरमाएगा ऐ जन्नत वालो, अर्ज़ करेंगे ऐ रब हमारे हम तेरी ख़िदमत में हाज़िर हैं तेरे दोनों हाथों में भलाई है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

इसी तरह मक़ामे महमूद की तफ़्सीर में एक रिवायत यूं आई है।

अल्लाह तआला रोज़े क़्यामत लोगों को एक मैदान में जमा फरमाएगा तो कोई कलाम न करेगा सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को निदा होगी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अर्ज़ करेंगे इलाही मैं हाज़िर हूँ, मैं ख़िदमती हूँ, तेरे दोनों हाथों में भलाई है। (निसई, हाकिम, रिसाला सफ़ाइहुल–हजीन)

इस हदीस से मालूम हुआ कि वक़्त हिसाब व दुख़ूले जन्नत से पहले सिर्फ़ हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से रब तबारक व तआला कलाम फरमाएगा, और दुख़ूले जन्नत के बाद अह्ले जन्नत से भी। (मुरत्तिब)

हौज़े कौसर

अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को दुनिया व आख़िरत में बेशुमार नेमतें अता फरमाईं और हुज़ूर को तमाम जहान में अपना मुक़र्रब बनाया, काइनात और उसकी नेमतों को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ही के लिए पैदा किया गया है, हुज़ूर नेमते इलाहिया हैं सारी नेमतें हुज़ूर ही के दस्ते रहमत से मिलती हैं और मिलेंगी, आख़िरत की नेमतों में हौज़े कौसर एक अज़ीम नेमत है जो उसका पानी एक बार पी लेगा वह कभी प्यासा न होगा। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मेरा हौज़ एक महीने की राह तक है, उसका पानी दूध से ज़्यादा सपेद (और दूसरी रिवायत में फरमाया) चाँदी से बढ़ कर उजला, और उसकी ख़ुशबू मुश्क से बेहतर। (बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 548)

आबे कौसर अफ़्ज़ल है या ज़मज़म

कौसर व ज़मज़म दोनों में कौन अफ़्ज़ल है?

शैख़ुल–इस्लाम सराजुद्दीन बिल–क़ीनी शाफ़ई ने इस सवाल के जवाब में फरमाया कि ज़मज़म अफ़्ज़ल है, कि शब असरा मलाइका ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दिले मुबारक उस से धोया, हालाँकि वह आबे कौसर ला सकते थे, और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने ऐसे मक़ाम पर अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए इख़्तियार न फरमाया मगर अफ़्ज़ल।

इस पर ऐतराज़ हुआ कि ज़मज़म तो सैय्यदना इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अता हुआ और कौसर हमारे हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को, तो लाज़िम कि कौसर ही अफ़्ज़ल हो।

इमाम इब्ने हजर मक्की ने जवाब दिया कि कलाम दुनिया में है, आख़िरत में बेशक कौसर अफ़्ज़ल है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि मेरी नज़र में भी कौसर ही की तफ़्ज़ील है।

अफ़्ज़लीयते कौसर के दलाइल

1. आख़िरत में वही अफ़्ज़ल है जो इन्दल्लाह अफ़्ज़ल है और जो इन्दल्लाह अफ़्ज़ल है, फ़ी नफ़्सेही अफ़्ज़ल है, जहाँ हो अफ़्ज़ल है, तो जो आख़िरत में अफ़्ज़ल है, वही दुनिया में अफ़्ज़ल है, और शक नहीं कि आख़िरत में कौसर अफ़्ज़ल है। तो अब भी कौसर, ज़मज़म से अफ़्ज़ल है।

2. ज़मज़म दुनिया का पानी है और कौसर आख़िरत का।

और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है बेशक आख़िरत दरजों में बड़ी है और फ़ज़ीलत में ज़ाइद। (अल–आला : स0 17)

3. कौसर का पानी जन्नत से है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कौसर में जन्नत से दो परनाले गिर रहे हैं, एक सोने का एक चाँदी का। (मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सुन लो अल्लाह का माल बेश बहा है, अल्लाह का माल जन्नत है।

4. कौसर का पानी उम्मते मरहूमा के लिए ज़्यादा नाफ़े है, एक क़तरा जिसके हलक़ में जाएगा अबदल–आबाद तक कभी प्यासा न होगा, न कभी उसके चेहरे पर सियाही आए।

5. अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अताए कौसर से अपने हबीब अफ़्ज़लुर्रुसल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर एहसाने अज़ीम रखा कि "इन्ना आतैनाकल–कौसर" बेशक हमने कि अज़मत वाले हैं तुमको कि बेमिस्ल व यक्ता हो कौसर अता फरमाया।

तो कौसर की अज़ामत का क्या अन्दाज़ा हो सकता है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल हम फ़ुक़राए बेक़द्र को भी अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कफ़े करम से उस में से पीना नसीब फरमाए। आमीन (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 551ए 552)

मुतलक़न सबसे आला सबसे अफ़्ज़ल पानी

दोनों जहान के सब पानियों से अफ़्ज़ल, ज़मज़म से अफ़्ज़ल, कौसर से अफ़्ज़ल, वह मुबारक पानी है कि बारहा बराहे एजाज़ हुज़ूरे अनवर सैय्यदे अतहर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की अंगुश्ताने मुबारक से दरिया की तरह बहा और हज़ारों को सैराब व ताहिर किया, हज़ारों ने पिया और वुज़ू किया।

उलमा तस्रीह फरमाते हैं कि वह पानी ज़मज़म व कौसर सबसे अफ़्ज़ल है, मगर अब वह कहाँ नसीब! (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 408)

दोज़ख़ और उसका अज़ाब

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर अहकाम व क़वानीन फर्ज़ फरमाए और उन्हें अपने अहकाम का पाबन्द बनाया, जो उसके हुक्म से सरताबी करे और फरमूदाते इलाहिया पर अमल न करे तो उसके लिए जहन्नम की आग और दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है, अगर लोगों को मालूम हो जाए कि जहन्नम की गर्मी और उसका अज़ाब कैसा ख़तरनाक है तो कोई शख़्स उसका नाफरमान न होता, जहन्नम की आग अंधेरी रात की तरह काली है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं क्या तुम उसे अपनी उस आग की तरह सुर्ख़ समझते हो, बेशक वह तो क़ीर से बढ़ कर सियाह है। (बैहक़ी)

एक और हदीस में है, जहन्नम की आग सख़्त अन्धेरी रात की तरह काली तारीक अन्धेरी है उसकी लपट में बिल्कुल रौशनी नहीं।

(बज़्ज़ार, हाकिम, फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 549, 450)

अबू जहल वग़ैरह कुफ़्फ़ार पर अज़ाब का हाल

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिसे मुबारक में एक मरतबा अबू जहल शक़ी का ज़िक्र आया तो उस पर आपने फरमाया :

यह उन बारह लईनों से था जो सबके सब तबाह व बरबाद हो गये किसी के सर पर बिजली गिरी, किसी पर पत्थर बरसे, ग़रज़ तरह–तरह के अज़ाबे इलाही उन ख़ुबसा पर नाज़िल हुए।

एक मरतबा आस सफर को गया थकान के बाइस एक दरख़्त से तकिया लगा कर बैठ गया, जिब्रीले अमीन बहुक्मे रब्बुल–आलमीन तशरीफ़ लाए उसका सर पकड़ कर दरख़्त से टकराना शुरू किया, वह चिल्लाता था कि अरे कौन मेरे सर को दरख़्त से टकरा रहा है, उसके साथी कहते थे कि हमें कोई नज़र नहीं आता यहाँ तक कि जहन्नम वासिल हुआ।

क़यामत के दिन उस जहन्नमी की सबसे जुदा हालत होगी, यह अपने आपको मआज़ल्लाह अज़ीज़ व करीम, कहा करता यानी इज़्ज़त वाला करम वाला, दारोग़ा दोज़ख़ को हुक्म होगा कि इसके सर पर गुर्ज़ मारो जिसके लगते ही एक बड़ा ख़ला सर पर हो जाएगा और जिसकी वुस्अत इतनी न होगी जितनी तुम ख़्याल करते हो बल्कि जिसकी एक दाढ़ कोहे उहद के बराबर होगी, उसके सर फटने से जो ख़ला होगा वह किस क़द्र वसीअ़ होगा, ग़रज़ उस ख़ला में जहन्नम का खौलता हुआ पानी भरा जाएगा और उस से कहा जाएगा, चख तू इज़्ज़त व करम वाला है।

और हर काफिर को यही पानी पिलाया जाएगा कि जब मुँह के क़रीब आएगा, मुँह उस में गल कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा आँतों के टुक्ड़े कर देगा और उस पानी को ऐसा पिएंगे जैसे तोंस के मारे ऊंट, भूख से बेताब होंगे तो ख़ार दार थूहड़ खौलता हुआ चर्ख़ दिए हुए तांबे की तरह उबलता हुआ खिलाएंगे जो पेट में जा कर खौलते हुए पानी की तरह जोश मारेगा और भूख को कुछ फ़ाइदा न देगा, अनवा–अनवा के अज़ाब होंगे हर तरफ़ से मौत आएगी और मरेंगे कभी नहीं न कभी उनके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, तफ़्सीर बग़वी)

यही हाल तमाम राफ़ज़ियों, वहाबियों, क़ादियानियों, नेचरियों, और तमाम मुरतदीन का है जिसने किसी दूसरे के बहकाने से कुफ़्र किया होगा, वह बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में अर्ज़ करेगा उसने मुझे बहकाया उस पर दूना अज़ाब कर, रब्बुल–इज़्ज़त फरमाएगा सब पर दूना है मगर तुम जानते नहीं और नारियों के जिस्म ऐसे बड़े होंगे जिनकी एक दाढ़ मिस्ल कोहे उहद के।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 90)

कुफ़्फ़ारे मक्का की जिहालत व इस्तिहज़ा

फ़रिश्तों के तज़्किरे के सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि :

जब फरमाया गया दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुवक्किल फरमाए उस पर कुफ़्फ़ार ने इस्तिहज़ा किया।

रब अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया यह इस वास्ते तादाद फरमाई गई ताकि यक़ीन करें वह लोग जिन्हें किताब मिली और ज़्यादा हो ईमान वालों का ईमान और शुक्र करें अह्ले किताब और मुमिनीन। (अल–मुदस्सिर : 31)

अबू जहल लईन ने कहा था दोज़ख़ में सिर्फ़ उन्नीस फरिश्ते हैं दस से मैं निबट लूँगा, नौ से तुम निबट लेना, एक और ख़बीस ने कहा, नौ को अपने हाथों पर उठा लूँगा और आठ को अपनी पीठ पर लाद लूँगा, दो रह गये उन से तुम निबट लेना, मआज़ल्लाह (यही वजह है कि क़यामत के दिन अबू जहल वग़ैरह कुफ़्फ़ार पर सख़्त व शदीद अज़ाब होगा। मुरत्तिब)

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम : स० ७)

अज़ाबे क़ब्र की हौलनाकियाँ

इंसान के मरने के बाद उसके आमाले बद की उसे सज़ा मिलनी है, क़ब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है अगर क़ब्र में इंसान महफ़ूज़ रहे तो इन्शाअल्लाह तआला आख़िरत में भी अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहेगा, अज़ाबे क़ब्र हक़ है इस पर ईमान व यक़ीन रखना लाज़िम है। (मुरत्तिब)

रूह व जिस्म पर अज़ाब होने की मिसाल

रूह व जिस्म दोनों पर अज़ाब होता है यूंहीं सवाब भी दोनों पर होता है।

हदीस में है एक लुंझा किसी बाग़ के सामने पड़ा था और मेवे देख रहा था मगर उस तक जा न सकता था, इत्तिफ़ाक़न एक अन्धे का उस तरफ़ से गुज़र हुआ कि बाग़ में जा सकता था मगर मेवे उसे नज़र न आते, लुंझे ने अन्धे से कहा तू मुझे बाग़ में ले चल वहाँ जाकर हम और तुम दोनों मेवे खाएं, अन्धा उसको अपनी गर्दन पर सवार करके बाग़ में ले गया, लुंझे ने मेवे तोड़े और दोनों ने खाए।

इस सूरत में कौन मुजरिम होगा दोनों ही मुजरिम हैं, अन्धा जिस्म है और लुंझा रूह।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 83)

सालेहीन की क़ब्रों के पास तदफ़ीन

एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा देखा कि गुलाब की दो शाखें उसके बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उसके नथुनों पर रखे हैं। उसके अज़ीज़ों ने इस ख़्याल से कि यहाँ क़ब्र पानी के सदमा से खुल गई दूसरी जगह क़ब्र खोद कर उस में रखें, अब जो देखें तो दो अज़्दहे उसके बदन से लिपटे अपने फनों से उसका मुँह भमोड़ रहे हैं, हैरान हुए, किसी साहिबे दिल से यह वाक़या बयान किया, उन्होंने फरमाया वहाँ भी यह अज़्दह ही थे मगर एक वली अल्लाह के मज़ार का कुर्ब था उसकी बरकत से वह अज़ाब रहमत हो गया था, वह अज़्दहे दरख़्त गुल की शक्ल हो गये थे और उनके फन गुलाब के फूल, उसकी ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफन कर दो, वहीं लेजा कर रखा फिर वही दरख़्त गुल थे और वही गुलाब के फूल।

अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफन करो कि उनकी बरकत के सबब उन पर अज़ाब नहीं किया जाता। यह वह लोग हैं कि उनके सबब उनका हम नशीं भी बदबख़्त नहीं होता, इसलिए हदीस में फरमाया अपने मुर्दों को नेकों के दर्मियान दफन करो।

औलिया की शफ़ाअत व इनायत सबबे नजात व रहमत

एक बार हज़रत सैयदी इस्माईल हिज़रमी क़ुद्दिसा सिर्रहुल–अज़ीज़ कि अजिल्ला औलिया–ए–किराम से हैं एक क़ब्रिस्तान से गुज़रे, इमाम मुहिब्बुद्दीन तबरी कि अकाबिर मुहद्देसीन से हैं हम्राह रकाब थे, हज़रत सैयदी इस्माईल ने उन से फरमाया क्या इस पर आप ईमान लाते हैं कि मुर्दे ज़िन्दों से कलाम करते हैं अर्ज़ की हाँ फरमाया उस क़ब्र वाला मुझ से कह रहा है मैं जन्नत की भरती में से हूँ।

आगे चले वहाँ चालीस क़ब्रें थीं आप बहुत देर तक रोते रहे यहाँ तक कि धूप चढ़ गई इसके बाद आप हंसे और फरमाया तू भी उन्हीं में से है, लोगों ने यह कैफ़ियत देख कर अर्ज़ की हज़रत यह क्या राज़ है हमारी समझ में कुछ न आया, फरमाया इन क़ुबूर पर अज़ाब हो रहा था जिसे देख कर मैं रोता रहा और हज़रत इज़्ज़त में मैंने इनकी शफ़ाअत की। मौला तआला ने मेरी शफ़ाअत क़बूल फरमाई और उन से अज़ाब उठा लिया, एक क़ब्र गोशे में थी जिसकी तरफ़ मेरा ख़्याल न गया था उसमें से आवाज़ आई ऐ मेरे आक़ा मैं भी तो उन्हीं में हूँ, मैं फलां डोमनी हूँ, मुझे उसके कहने पर हँसी

आ गई और मैंने कहा तू भी उन्हीं में है, उस पर से भी अज़ाब उठा लिया गया। तो यह हज़रत सरापा रहमत में जिस तरफ गुज़र हो रहमत साथ है। (अल–मल्फ़ूज़, स० 81ए 82)

हम्ज़ाद हर एक के साथ है

मुसलमान का हम्ज़ाद मुक़ैयद कर लिया जाता है और काफिर का भूत हो जाता है, जब काम के वास्ते लोग दुनिया में भेजे जाते हैं उन के साथ किरामन कातेबीन और श्यातीन होते हैं।

किरामन कातेबीन का अमल

जब इंसान मर जाता है किरामन कातेबीन अर्ज़ करते हैं ऐ रब हमारा काम ख़त्म हो गया, वह शख़्स दारे आमाल से निकल गया इजाज़त दे कि हम आसमान पर आएं और तेरी इबादत करें, रब अज़्ज़ा व जल्ल इरशाद फरमाता है कि मेरे आसमान भरे हैं इबादत करने वालों से। कुछ हाजत तुम्हारी नहीं। अर्ज़ करते हैं इलाही हमें ज़मीन में जगह दे इरशाद होता है मेरी ज़मीनें भरी हैं इबादत करने वालों से। तुम्हारी कुछ हाजत नहीं। अर्ज़ करते हैं इलाही फिर हम क्या करें इरशाद होता है मेरे बन्दे की क़ब्र के सरहाने क़यामत तक खड़े रहो और तस्बीह व तक़्दीस करते रहो उसका सवाब मेरे बन्दे को बख़्शते रहो। (अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स० 31)

दफ़न के बाद क़ब्र को खोलना

मैयत को दफन करके जब मिट्टी दे दी गई तो वह अमानत हो जाता है अल्लाह की, उसका कश्फ़ जाइज़ नहीं। दो हाल से ख़ाली नहीं, मुअ़ज़्ज़िब है या मुन्इम अलैह, अगर मुअ़ज़्ज़िब है तो देखने वाला देखेगा उसे जिस से उसे रंज पहुँचेगा और कर कुछ नहीं सकता। और अगर मुन्इम अलैह है तो उस में उसकी नागवारी है।

जामेअ़ मल्फ़ूज़ात हुज़ूर मुफ़्ती आज़मे हिन्द मौलाना अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा खान नूरी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं :

अगर सूरत मआ़ज़ल्लाह सूरते औला है तो नागवारी और ज़्यादा होनी चाहिए, और बेवजह नाहक़ ईज़ाए मुस्लिम हराम ख़ुसूसन ईज़ाए मैयत। नीज़ हदीस के इरशाद से साबित है कि मुर्दे को क़ब्र से तकिया लगाने से भी अज़ीयत होती है तो मआ़ज़ल्लाह महज़ अपनी ख़्वाहिश के लिए न ज़रूरत व हाजत के लिए उस पर कुदाल चलाना और क़ब्र को खोद डालना किस क़द्र सख़्त ईज़ा का बाइस होगा।

एक आलिम की क़ब्र खोल कर देखने का वबाल

अल्लामा ताश कुबरा ज़ादा रहमतुल्लाह तआला अलैह ने यह हदीस देखी कि उलमाए दीन के बदन को मिट्टी नहीं खाई, बदन उनका सलामत रहता है, शैतान ने उनके दिल में वसवसा डाला हमारे उस्ताज़ बहुत बड़े आलिम हैं उनकी क़ब्र खोल कर देखूं कि उनका बदन किस हाल पर है उस वसवसा ने उन पर ऐसा ग़लबा किया कि एक शब में जा कर क़ब्र खोली देखा कफन भी मैला न था, जब देख चुके क़ब्र से आवाज़ आई देख चुका। अल्लाह तुझे अन्धा करे। उसी वक़्त दोनों आंखें बह गईं।

एक मैयत के अताब का मुशाहिदा

इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह तआला अलैह ने शरहुस्सुदूर में लिखा है कि :

एक औरत का इंतिक़ाल हुआ दफन कर दी गई उसके शौहर को बहुत मुहब्बत थी, मुहब्बत ने मज्बूर किया कि उसकी क़ब्र खोल कर देखे क्या हाल है। एक आलिम साहब से यह इरादा ज़ाहिर किया उन्होंने मना किया न माना और उनको क़ब्रिस्तान तक साथ ले गया आलिम ने हर चन्द मना

किया लेकिन उसने क़ब्र खोली, आलिम साहब क़ब्र के किनारे बैठे रहे वह नीचे उतरा देखा कि उसी औरत के दोनों पाँव पीछे से लेजा कर उसकी चोटी से बांध दिए गये हैं उस ने चाहा कि खोल दूँ हर चन्द ताक़त की मगर न खोल सका, अल्लाह की लगाई हुई गिरह कौन खोल सके, उन आलिम साहब ने मना फरमाया न माना दोबारा फिर ज़ोर किया आलिम साहब ने फिर मना किया कि देख इसी में ख़ैरियत है उसे ऐसे ही रहने दे उसने कहा एक बार तो और ज़ोर कर लूं फिर जो होगा देखा जाएगा ज़ोर कर ही रहा था कि बिल–आख़िर ज़मीन धंसी और वह मर्द व औरत दोनों ज़मीन में चले गये। (शरहुस्सुदूर, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 59ए 60)

मैयत पर चिल्ला कर रोना बाइसे अज़ाब है

चिल्ला कर रोने से मुर्दे को तक्लीफ़ होती है, अह्ले सुन्नत के मज़्हब में मौत से रूह नहीं मरती, न उसका इल्म व समअ् व बसर ज़ाइल होता है बल्कि तरक़्क़ी पाता है, जनाज़ा रखा होता है लोग जो कुछ कहते करते हैं मुर्दा सब देखता सुनता है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं चिल्ला कर रोने से अपने मुर्दों को ईज़ा न दो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक जनाज़े में कुछ औरतें देखीं फरमाया, पलट जाओ वबाल से भरी सवाब से बरी, तुम ज़िन्दों को फ़ित्नों में डालती और मुर्दों को इज़ा देती हो।

इमाम बकर बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी ताबई, हदीस के हवाले से फरमाते हैं कि जो मरता है उसकी रूह मलकुल–मौत के हाथ में होती है, लोग उसे ग़ुस्ल व कफन देते हैं और वह देखता है जो कुछ उसके घर वाले करते हैं उन से बात नहीं कर सकता कि उन्हें शोर व फरियाद से मना करे।

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं माँ–बाप पर उनकी मौत के बाद आदमी के आमाल पेश होते हैं नेकियों पर शाद होते हैं और उनके मुँह और ज़्यादा चमकने लगते हैं।

एक और हदीस में है कि मुर्दे पर जो उसके घर वाले रोते हैं उस से उसे अज़ाब व अलम होता है।

नौहा करने की मुमानेअत

मैयत पर चिल्ला कर रोना, जज़अ् व फ़ज़अ् करना हराम व सख़्त हराम है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं लोगों में दो बातें कुफ़्र हैं।

★ किसी के नसब पर तअ्न करना।

★ और मैयत पर नौहा। (मुस्लिम)

★ यानी ज़माना जाहलीयत में एक दूसरे के नसब पर तअ्न करते और मैयत पर नौहा करते थे हुज़ूर ने इन बातों से मना फरमाया लिहाज़ा बचना लाज़िम है।

दो आवाज़ों पर दुनिया व आख़िरत में लानत है।

★ नेमत के वक़्त बाजा।

★ और मुसीबत के वक़्त चिल्लाना।

चिल्ला कर रोने वाली जब अपनी मौत से पहले तौबा न करे तो क़्यामत के दिन खड़ी की जाएगी यूं कि उसके बदन पर गन्धक का कुरता होगा और खुजली का दोपट्टा। (मुस्लिम)

एक रिवायत में है अल्लाह तआला उसे गन्धक के कपड़े पहनाएगा और ऊपर से दोज़ख़ की लपट का दोपट्टा ओढ़ाएगा। (इब्ने माजा)

एक हदीस में है यह नौहा करने वालियाँ क़यामत के दिन दोज़ख़ में दो सफ़ें की जाएंगी दोज़ख़ियों के दाहिने बाएं वहाँ ऐसे भोंकेंगी जैसे कुतिया भोंकती हैं। (तबरानी औसत)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अरे सुनते नहीं हो बेशक अल्लाह न आंसुओं से रोने पर अज़ाब करे, न दिल के ग़म पर (और ज़ुबान की तरफ़ इशारा करके फरमाया) हाँ इस पर अज़ाब फरमाता है, या रहम फरमाए और बेशक मुर्दे पर अज़ाब होता है उसके घर वालों के उस पर नौहा करने से। (बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 142)

जुमा तक क़ब्र पर बैठने का मैयत के लिए नफ़ा

दफन के बाद कुछ देर बैठने, ईसाले सवाब करने से मुर्दे को राहत मिलती है और बाज़ रिवायत में है कि जुमा या शबे जुमा के सिवा किसी और दिन मुसलमान का इंतिक़ाल हो तो जुमा तक उसकी क़ब्र पर बैठने से अज़ाबे क़ब्र नहीं होता। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

बाद दफन इतनी देर बैठना कि एक ऊंट ज़िबह किया जाए और उसका गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए, मस्नून है। और ज़्यादा देर, या ज़्यादा दिनों तक बैठना भी मम्नूअ़ नहीं। बल्कि वहाँ लग़्व व बेहूदा बातें करने हँसने वग़ैरह ग़फ़लत की हरकात से बचें और तिलावत व दरूद ख़्वानी और आमाले हसना में मशग़ूल रहें कि यह उमूर मौजिबे नुज़ूले रहमत होते हैं और ज़िन्दों के पास होने से मुर्दे का दिल बहलता है।

बाज़ किताब में जुमा तक बैठने की रिवायत मज़्कूर है कि मआज़ल्लाह मुसलमान पर अगर अज़ाबे क़ब्र होता है तो सिर्फ़ जुमा तक होता है शबे जुमा आते ही उठा लिया जाता है, फिर औद नहीं करता। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 14)

क़ब्रों पर चलने की मुमानेअत

मुसलमान का एहतराम जिस तरह उसकी ज़िन्दगी में है इसी तरह मरने के बाद भी वह क़ाबिले इज़्ज़त है और यह कि जिन बातों से ज़िन्दगी में तक्लीफ़ व ईज़ा पहुँचती है उन्हीं बातों से मौत के बाद भी तक्लीफ़ होती है इसी लिए अहादीस वग़ैरह में क़ब्रों पर चलने की मुमानेअत आई है।

(मुरत्तिब)

क़ब्रों पर पाँव रखना

हदीस में फरमाया तल्वार की धार पर पाँव रखना मुझे इस से आसान है कि मुसलमान की क़ब्र पर पाँव रखूं। (इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में फरमाया अगर मैं अंगारे पर पाँव रखूं यहाँ तक कि वह जूते का तला तोड़ कर मेरे तल्वे तक पहुँच जाए तो यह मुझे उस से ज़्यादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाँव रखूं। (मुस्लिम)

यह वह फरमा रहे हैं कि वल्लाह अगर मुसलमान के सर और सीने और आंखों पर क़दमे अक़्दस रख दें तो उसे दोनों जहान का चैन बख़्श दें। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

क़ब्रिस्तान की बेहुर्मती पर जामेअ़ मल्फ़ूज़ात की तंबीह

जामेअ़ मल्फ़ूज़ात हुज़ूर मुफ़्ती आज़म मौलाना अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ नूरी क़ुद्दिसा सिर्रुहू दर्द भरे अंदाज़ में फरमाते हैं :

आह! मुसलमानों के क़ब्रिस्तान की आज जो रद्दी हालत है उस पर जिस क़द्र रोया जाए कम है, क़ब्र पर लोग बैठ–बैठ कर हुक़्क़े पीते हैं, ख़ुराफ़ात करते, लग्व बातें बनाते, गालियाँ बकते, क़हक़हे उड़ाते हैं। ग़ैर क़ौम ही के लोगों पर बस नहीं ख़ुद मुसलमान भी यह नाशाइस्ता बेहूदा हरकतें करते हैं। बच्चे क़ुबूर पर खेलते कूदते फिरते हैं बल्कि गधे उन पर लोटते, लीद करते हैं, बकरियाँ बैठतीं मेंगनियाँ करती हैं। वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।

मुसलमानो! ख़ुदा के लिए आँखें खोलो एक दिन तुम्हें भी जाना है उन मुर्दों की ख़ातिर कुछ इंतिज़ाम नहीं करते अपने ही लिए करो। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम : स0 59)

क़ब्रिस्तान में रास्ता

फ़त्हुल–क़दीर वग़ैरह फ़िक़्ह की किताबों में है :

क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता निकला हो उस में चलना हराम है कि वह ज़रूर क़ब्रों पर होगा, बख़िलाफ़ राहे क़दीम के कि क़ब्रें उसे छोड़ कर बनाई जाती हैं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक साहब क़ब्रिस्तान में जूता पहने निकले फरमाया ऐ बाल साफ किए हुए जूते वाले अपने जूते को फेंक, न तू साहिबे क़ब्र को सता न वह तुझे सताए। (अबू दाऊद)

एक शख़्स को दफन करके लोग चले गये मुंकिर नकीर ने सवाल शुरू किया, एक शख़्स जूता पहने उस तरफ़ से निकला उसके जूते की आवाज़ सुन कर मुर्दा उस तरफ़ मुतवज्जह हुआ और क़रीब था कि जो सवाल मुन्कर नकीर कर रहे थे उसके जवाब से क़ासिर रहता।

(अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 78 ता 81)

क़ब्र की तरफ़ नमाज़ पढ़ने की कराहत

क़ब्र को सामने करके नमाज़ पढ़ना मक्रूह है हाँ अगर क़ब्र दाएं या बाएं हो तो कोई कराहत नहीं।

अमीरुल–मुमीनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को क़ब्र की तरफ़ नमाज़ पढ़ते देखा फरमाया क़ब्र क़ब्र, वह नमाज़ ही में आगे बढ़ गये। (बुख़ारी)

हाँ अगर मज़ाराते औलिया–ए–किराम हों और उनकी अरवाहे तैयबा से इस्तिम्दाद के लिए उनकी क़ुबूरे करीमा के पास दाहिने या बाएं नमाज़ पढ़े तो और ज़्यादा मूजिबे बरकत है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द दोम, स0 375, 376)

ज़्यारते कुबूर

बुज़ुर्गाने दीन व औलिया–ए–किराम के मज़ारात हों या आम मुमिनीन की क़ब्रें उनकी ज़्यारत व ईसाले सवाब के लिए जाना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ेअ्ल से साबित है हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर साल शुहदाए उहद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते और उनके लिए दुआए मग़्फ़िरत फरमाते थे। अह्ले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक ज़्यारते कुबूर जाइज़ है इसके मुनाफ़े वाज़ेह हैं। अगर किसी वली का मज़ार है तो उनकी रूह पर फ़ुतूह से फ़्यूज़ व बरकात हासिल होंगे, और अगर किसी आम मोमिन की क़ब्र है तो ज़ाइर के ईसाले सवाब वग़ैरह से उसे फ़ाइदा पहुँचेगा और मुर्दे को उन्सियत हासिल होगी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने शुरू ज़माना इस्लाम में किसी मस्लहत के बाइस ज़्यारते कुबूर से मना फरमाया था मगर बाद में उसकी इजाज़त अता फरमाई इसलिए ज़्यारते कुबूर अह्ले सुन्नत के मामूलात में से है। (मुरत्तिब)

क़ब्रिस्तान में जाने का तरीक़ा

सबसे पहले क़ब्रिस्तान की पाइंती जानिब से आए और उसी पाइंती किनारे पर खड़ा हो कर सलाम कहे और जो कुछ चाहे आम ईसाले सवाब करे किसी को सर उठाने की हाजत न होगी और अगर किसी ख़ास के पास जाना है तो ऐसे रास्ता से जाए जो उसकी क़ब्र की पाइंती जानिब को आया हो बशर्तेकि कोई क़ब्र दर्मियान में न पड़े वरना नाजाइज़ होगा। फ़ुक़हाए किराम फरमाते हैं ज़्यारत के वास्ते क़ब्रों को फाँद कर जाना हराम है। (अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स0 53)

मज़ार पे फातिहा का अदब

शैख़ की वफ़ात के बाद मुरीद चार हाथ के फासिला से खड़ा हो कर फातिहा पढ़े और उसकी हयात में जैसा अदब करता था अब भी वही अदब मल्हूज़ रखे, सामने से हाज़िर हो कि बालीं (सरहाने) से हाज़िर होने में मुड़ कर देखना पड़ता है और उसमें तक्लीफ़ होती है।

मुर्दा पुराना और कफन नया

एक बीबी ने मरने के बाद ख़्वाब में अपने लड़के से फरमाया मेरा कफन ऐसा ख़राब है कि मुझे अपने साथियों में जाते शर्म आती है, परसों फलां शख़्स आने वाला है उसके कफन में अच्छे कपड़े का कफन रख देना सुबह को साहबज़ादे ने उठ कर उस शख़्स को दरयाफ़्त किया मालूम हुआ कि वह बिल्कुल तन्दरुस्त है और कोई मरज़ नहीं तीसरे रोज़ ख़बर मिली उसका इंतिक़ाल हो गया है, लड़के ने निहायत उम्दा कफन सिलवा कर उसके कफन में रख दिया और कहा यह मेरी माँ को पहुँचा देना, रात को वह सालेहा ख़्वाब में तशरीफ़ लाईं और बेटे से कहा ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुमने बहुत अच्छा कफन भेजा।

ज़ाइद तहबन्द वापस आ गया

अहबान बिन सैफ़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सहाबी हैं उनके कफन में एक तहबन्द ज़ाइद चला गया शब को अपने साहबज़ादे की ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फरमाया यह तहबन्द लो और अल्गनी पर डाल दिया सुबह उनकी आँख खुली तो वहीं रखा मिला।

एक बीबी के पास से आग दूर हो गई

एक शख़्स क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास बैठ गया और थोड़ी देर में ग़ाफ़िल हो गया ख़्वाब में देखता है कि एक बीबी उस क़ब्र में फरमाती हैं ऐ ख़ुदा के बन्दे उस बला को मेरे पास से दूर कर जो

थोड़ी देर में आने वाली है, उसकी फौरन आँख खुल गई देखा कि एक क़ब्र वहीं खुद रही है और सामने से एक जनाज़ा जो किसी रईस का था चला आ रहा है उसने सब को मना किया कि यह जगह ठीक नहीं है ख़राब है, ऐसी है, वैसी है ग़रज़ वह लोग बाज़ रहे और दूसरी जगह उस मैयत को ले गये, शब को उस शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि वह बीबी फरमाती हैं कि खुदा तुझे जज़ाए ख़ैर दे कि तूने आग को मेरे पास से दूर किया। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 97¸98)

मज़ारात पर औरतों का जाना

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू से किसी ने सवाल किया कि हुज़ूर अजमेर शरीफ़ में ख़्वाजा साहब के मज़ार पर औरतों को जाना जाइज़ है या नहीं? उस पर आपने इरशाद फरमाया :

गुन्नियह में है यह न पूछो कि औरतों का मज़ारात पर जाना जाइज़ है या नहीं बल्कि यह पूछो कि उस औरत पर किस क़द्र लानत होती है अल्लाह की तरफ़ से और किस क़द्र साहिबे क़ब्र की जानिब से, जिस वक़्त वह घर से इरादा करती है लानत शुरू हो जाती है और जब तक वापस आती है मलाइका लानत करते रहते हैं।

रौज़–ए–अनवर की ज़्यारत की इजाज़त क्यों ?

सिवाए रौज़–ए–अनवर के किसी मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं, वहाँ की हाज़िरी अल्बत्ता सुन्नते जलीला अज़ीमा क़रीब बवाजिबात है, कुरआने अज़ीम ने उसे मग़्फ़िरत ज़ुनूब का तिरयाक़ बताया।

अगर वह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनके लिए माफ़ी मांगे तो ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएंगे। (अन्निसा : 64)

ख़ुद हदीस में इरशाद हुआ जो मेरे मज़ारे करीम की ज़्यारत को हाज़िर हुआ उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। (कंज़ुल–उम्माल)

दूसरी हदीस में है जिस ने हज किया और मेरी ज़्यारत को न आया बेशक उसने मुझ पर जफ़ा की।

★ एक तो यह अदाए वाजिब।

★ दूसरे क़बूले तौबा।

★ तीसरे दौलते शफ़ाअत हासिल होना।

★ चौथे सरकार के साथ मआज़ल्लाह जफ़ा से बचना।

यह अज़ीम अहम उमूर ऐसे हैं जिन्होंने सब सरकारी ग़ुलामों और सरकारी कनीज़ों पर ख़ाकबोसी आस्तान अर्शे निशान लाज़िम कर दी, बख़िलाफ़ दीगर क़ुबूर व मज़ारात, कि वहाँ ऐसी ताकीदें मफ़्क़ूद और एहतमाले मुफ़्सिदा मौजूद।

★ अगर अज़ीज़ों की क़ब्रें हैं बेसबरी करेगी।

★ औलिया के मज़ार हैं तो मुहतमिल कि बेतमीज़ी से बेअदबी करे या जिहालत से ताज़ीम में इफ़्रात।

जैसा कि मालूम व मुशाहिद है लिहाज़ा उनके लिए तरीक़–ए–असलम एहतराज़ ही है। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 117)

मरवान को एक सहाबी का जवाब

मरवान ने एक साहब को देखा कि मज़ारे आतर सैयदे अतहर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से लिपटे हुए हैं क़ब्र शरीफ़ पर अपना मुँह रखे हैं मरवान ने उनकी गर्दन पकड़ कर कहा जानते हो यह तुम क्या कह रहे हो उन्होंने उसकी तरफ़ मुँह किया और फरमाया हाँ मैं संगदिल के पास न आया मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुज़ूर हाज़िर हुआ हूँ मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना, दीन पर न रो जब उसका वाली उसका अह्ल हो वहाँ दीन पर रो जब ना अह्ल उसका वाली हो। (शिफ़ाउस सिक़ाम)

हज़रत बिलाल का रौज़–ए–रसूल पर रोना

बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शाम को चले गये थे एक रात ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन से फरमाते हैं यह क्या जफ़ा है क्या वह वक़्त न आया कि तू हमारी ज़्यारत को हाज़िर हो बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ग़मगीन और डरते हुए जागे और बक़स्द ज़्यारते अक़्दस सवार हुए मज़ारे अनवर पर हाज़िर हो कर रोना शुरू किया और अपना मुँह क़ब्र शरीफ़ पर मलते थे। (इब्ने असाकिर)

मज़ारे अक़्दस से तहसीले शिफ़ा

इब्नुल–मुकन्दिर ताबई को एक मरज़ लाहिक़ होता कि कलाम दुश्वार हो जाता वह खड़े होते और अपना रुख़्सार क़ब्रे अनवर सैय्यदे अतहर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर रखते किसी ने उस पर एतराज़ किया फरमाया मैं नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मज़ारे अक़्दस से शिफ़ा हासिल करता हूँ। (इस्माईल तैमी)

फ़ाइदा जलीला

अल्लामा शैख़ अब्दुल–क़ादिर फाकेही रहमतुल्लाह तआला अलैह किताब "हुस्नुत्तवस्सुल फ़ी ज़्यादते अफ़ज़लुर्रसूल" में फरमाते हैं :

ख़ल्वत में जहाँ इसका अन्देशा न हो कि किसी जाहिल का वहम उसके सबब किसी नाजाइज़ शरई की तरफ़ जाएगा ऐसे वक़्त बारगाहे अक़्दस की मिट्टी और आस्ताने पर अपना मुँह और रुख़्सारा और दाढ़ी रगड़ना मुस्तहब व मुस्तहसन है जिस में कोई हरज मालूम नहीं। मगर उसके लिए जिसकी नीयत अच्छी हो और इफ़राते शौक़ और ग़लबा मुहब्बत उसे उस पर बाइस हो।

ख़तीब बिन हमला ने ज़िक्र किया कि बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने क़ब्रे अनवर पर अपने दोनों रुख़्सारे रखे और इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा अपना दाहिना हाथ उस पर रखते, फिर कहा शक नहीं कि मुहब्बत में इस्तिग़राक़ उसमें इज़्न व इजाज़त पर बाइस होता है और इस से मक़्सूद ताज़ीम है और लोगों के मरतबे मुख़्तलिफ़ हैं जैसे ज़िन्दगी में, तो कोई बेइख़्तियाराना उसकी तरफ़ सबक़त करता है और किसी में तहम्मुल है वह पीछे रहता है।

अहमद बिन हंबल के साहबज़ादे फरमाते हैं मैंने अपने बाप से पूछा कि कोई शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मिंबर को छुए और बोसा दे। और सवाबे इलाही की उम्मीद पर ऐसा ही क़ब्र शरीफ़ के साथ करे फरमाया इसमें कोई हरज नहीं।

बिल–जुम्ला यह कोई अम्र ऐसा नहीं जिस पर इंकार वाजिब हो जबकि अकाबिरे सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम और अजल–ए–अइम्मा रहमहुमुल्लाहु तआला से साबित है तो इस पर शोरिश की कोई वजह नहीं अगरचे हमारे नज़्दीक अवाम को इस से बचने ही में एहतियात है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 349ए 350)

ज़्यारते क़ुबूर सुन्नत है

वहाबिया ने अक्सर मरासिमे अह्ले सुन्नत व जमाअत पर शिर्क व बिदअत का हुक्म लगाया है या तो यह उनका इस्लाम दुश्मनी का जज़्बा है या उन्होंने इब्लीस की शागिर्दी कर ली है वरना क्या वजह है कि वह ऐन सुन्नत को बिदअत कहते हैं, अगर एक या दो मस्अले हों तो उनका तस्फ़िया कर लिया जाए उन्हें हर बात में बिदअत ही नज़र आती है हदीस में ज़्यारते क़ुबूर का हुक्म है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ेअ्ल से भी यह साबित है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

ज़्यारते क़ुबूर सुन्नत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं, सुन लो क़ब्र की ज़्यारत करो कि वह तुम्हें दुनिया में बेरग़बत करेगी और आख़िरत याद दिलाएगी।

ख़ुसूसन ज़्यारत मज़ाराते औलिया–ए–किराम मूजिब हज़ारों हज़ार बरकत व सआदत है, इसे बिदअत न कहेगा मगर वहाबी नाबकार, इब्ने तैमिया का फ़ुज़्ला ख़्वार, वहाँ जाहिलों ने जो बिदअत मिस्ल रक़्स व मज़ामीर ईजाद कर लिए हैं वह ज़रूर ना जाइज़ हैं, मगर उन से ज़्यारत कि सुन्नत है बिदअत न हो जाएगी। जैसे नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ ग़लत पढ़ना, रुकूअ् व सुजूद सही न करना, तहारत ठीक न होना आम अवाम में जारी व सारी है। उस से नमाज़ बरी न हो जाएगी।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 11, स० 97)

एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू मज़ीद तहरीर फरमाते हैं :

क़ुबूर मुस्लेमीन की ज़्यारत सुन्नत और मज़ाराते औलिया–ए–किराम व शुहदा रहमतुल्लाह तआला अलैहिम की हाज़िरी सआदत बर सआदत और उन्हें सवाब पहुँचाना मन्दूब व हसन है।

फ़ासिद एतक़ाद से बचना लाज़िम

मालीदा और शीरीनी वग़ैरह पर फातिहा देना जाइज़ है यह सब ख़ुसूसियत उर्फ़िया हैं उन्हें अगर वाजिब न जाने तो हरज नहीं, और क़ब्र के पास उन चीज़ों को न ले जाने की ज़रूरत न ले जाने में गुनाह है। हाँ उसे शरअन लाज़िम जाने या बग़ैर उसके फातिहा का क़बूल न समझे तो यह एतक़ाद फासिद है, इस एतक़ाद से एहतराज़ लाज़िम है।

क़ब्र पर फूल रखना जाइज़, शीरीनी मम्नूअ्

क़ुबूरे मुस्लेमीन ख़ुसूसन क़ुबूरे औलिया पर फूल चढ़ाना हसन है, फतावा की किताबों में इसकी तस्रीह फरमाई, मगर शीरीनी वग़ैरह जो इस क़िस्म की चीज़ें ले जाए उनको क़ब्र पर न रखे यह मम्नूअ् है।

जिस क़ब्र का यह भी हाल मालूम न हो कि यह मुसलमान की है या काफ़िर की उसकी ज़्यारत करनी फ़ातिहा देनी हरगिज़ जाइज़ नहीं कि क़ब्र मुसलमान की ज़्यारत सुन्नत है और फातिहा मुस्तहब, और क़ब्र काफिर की ज़्यारत हराम है और उसे ईसाले सवाब का क़स्द कुफ़्र है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 140)

क़ब्र पर फूल रखने से मुतअल्लिक़ एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

क़ब्र मुसलमान पर फूल रखना मुस्तहब है, अइम्म–ए–दीन फरमाते हैं वह जब तक तर है तस्बीहे इलाही करेगा, उस से मुर्दे का दिल बहलेगा, उसे बिदअत कहना भी आज कल वहाबियों ही की बिदअत है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 11, स० 97)

फ़ातिहा व ज़्यारत का तरीक़ा

मज़ाराते शरीफ़ा पर हाज़िर होने में पाइंती की तरफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिला पर मवाजेह में खड़ा हो, और मुतवस्सित आवाज़ बाअदब सलाम अर्ज़ करे।

★ फिर दरूदे ग़ौसिया तीन बार।

★ अल्हम्दु शरीफ़ एक बार।

★ आयतल–कुर्सी एक बार।

★ सूरः इख़्लास सात बार।

★ फिर दरूदे ग़ौसिया सात बार।

★ और वक़्त फ़ुर्सत दे तो सूरः यासीन और सू: मुल्क भी पढ़ कर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ करे।

कि इलाही मुझे इस क़िरअत पर इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न इतना जो मेरे अमल के क़ाबिल है और इसे मेरी तरफ़ से इस बन्दा मक़्बूल को नज़्र पहुँचा, फिर अपना जो मतलब जाइज़े शरई हो उसके लिए दुआ करे और साहिबे मज़ार की रूह को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर इसी तरह सलाम करके वापस आए, मज़ार को न हाथ लगाए न बोसा दे और तवाफ़ बिल–इत्तिफ़ाक़ नाजाइज़ है और सज्दा हराम है।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 212)

तरीक़ा ज़्यारत से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

क़ब्रों का बोसा लेना न चाहिए, ज़्यारते क़ब्र मैयत के मवाजेह में खड़े हो कर हो और उसकी पाइंती की तरफ़ से जाए कि उसकी निगाह के सामने हो, सरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े। सलाम व ईसाले सवाब के लिए अगर देर करना चाहता है तो क़ब्र की तरफ़ रुख़ करके बैठ जाए और पढ़ता रहे, या वली का मज़ार है तो उस से फ़ैज़ ले।

(फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 163)

तवस्सुल व वसीला

एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

अगर साहिबे मज़ार उन लोगों में है जिन से उम्मीद बरकत की जाती है तो उसे अल्लाह तआला की तरफ़ वसीला करे, पहले हुज़ूरे अक़्दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तवस्सुल करे कि हुज़ूर ही तवस्सुल में उम्दा और इन सब बातों में असल और तवस्सुल के मशरूअ़ फरमाने वाले हैं, फिर सालेहीन अह्ले क़ुबूर से अपनी हाजत रवाई व बख़्शिश गुनाह में तवस्सुल और उसकी तकरार व कसरत करे कि अल्लाह तआला ने उन्हें चुना और फ़ज़ीलत व करामत बख़्शी तो जिस तरह दुनिया में उन की ज़ात से नफ़ा पहुँचा या यूंहीं बाद इंतिक़ाल उस से ज़्यादा पहुँचाएगा तो जिसे कोई हाजत मन्ज़ूर हो उनके मज़ारात पर हाज़िर हो और उन से तवस्सुल करे कि यही वास्ता हैं अल्लाह तआला और उसकी मख़्लूक़ में। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 291)

तवाफ़ व बोसा क़ब्र और आस्ताना बोसी

तरीक़–ए–ज़्यारत व बोसा क़ब्र व आस्ताना बोसी और तवाफ़े क़ब्र की मुमानेअत से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू मज़ीद तहरीर फरमाते हैं :

★ मज़ार का तवाफ़ कि महज़ बनीयत ताज़ीम किया जाए नाजाइज है कि तवाफ़ के साथ ताज़ीम ख़ान–ए–काबा के साथ मख़्सूस है।

मज़ार को बोसा देना न चाहिए, उलमा इसमें मुख़्तलिफ़ हैं और वेहतर बचना और इसी में अदब ज़्यादा है।

★ आस्ताना बोसी में हरज नहीं और आँखों से लगाना भी जाइज़ कि उस से शरअ़ में मुमानेअ़त न आई और जिस चीज़ का शरअ़ ने मना न फरमाया मना नहीं हो सकती।

★ हाथ बांधे उलटे पांव वापस आना एक तर्ज़े अदब है और जिस अदब से शरअ़ ने मना न फरमाया उस में हरज नहीं, हाँ अगर उसमें अपनी या दूसरे की ईज़ा का अन्देशा हो तो उस से एहतराज़ किया जाए। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 8)

क़ब्रों पर शमअ़ रौशन करना

क़ब्रों पर रौशनी करने और शमअ़ जलाने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फ़िक़्ह व फतावा की किताबों के हवाले से तहरीर फरमाते हैं कि

क़ब्रों की तरफ़ शम्एं ले जाना बिदअत और माल का ज़ाए करना है। यह सब इस सूरत में है कि बिल्कुल फाइदा से ख़ाली हो, और अगर शम्एँ रौशन करने में फाइदा हो कि मौज़ा क़ुबूर में मस्जिद है या क़ुबूर सरे राह हैं, या वहाँ कोई शख़्स बैठा है या मज़ार किसी वली अल्लाह या उलमा में से किसी आलिम का है वहाँ शम्एँ रौशन करें उनकी रूहे मुबारक की ताज़ीम के लिए जो अपने बदन की ख़ाक पर ऐसी तजल्ली डाल रही है जैसे आफ़ताब ज़मीन पर, ताकि उस रौशनी करने से लोग जानें कि यह वली का मज़ारे पाक है ताकि उस से तबर्रुक करें और वहाँ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ माँगें कि उनकी दुआ मक़्बूल हो तो यह अम्र जाइज़ है इस से असलन मुमानेअत नहीं और आमाल का मदार नीयतों पर है।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़्यारते क़ुबूर करने वाली औरतों, क़ब्रों पर मसाजिद बनाने और शम्एँ रौशन करने वालों पर लानत फरमाई है।

(त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

इस से भी मुराद वही सूरत है कि महज़ अबस बिला फाइदा, क़ुबूर पर शम्एँ रौशन करें वरना मुमानेअत नहीं।

रौशनी से फाइदे ?

मक़ाबिर में शम्एँ रौशन करना जब किसी फाइदा के लिए हो हरगिज़ मना नहीं, फाइदा की मुतअद्दद मिसालें हैं।

1. वहाँ कोई मस्जिद हो कि नमाज़ियों को भी आराम होगा और मस्जिद में भी रौशनी होगी।

2. मक़ाबिर बर सरे राह हों रौशनी करने से राहगीरों को नफ़ा पहुँचेगा और अम्वात को भी कि मुसलमान मक़ाबिरे मुस्लेमीन को देख कर सलाम करेंगे, फातिहा पढ़ेंगे, दुआ करेंगे, सवाब पहुँचाएंगे, गुज़रने वालों की क़ुव्वत ज़ाइदा है तो अम्वात बरकत लेंगे, और अगर अम्वात की क़ुव्वत ज़ाइद है तो गुज़रने वाले फ़ैज़ हासिल करेंगे।

3. मक़ाबिर में अगर कोई बैठा हो कि ज़्यारत या ईसाले सवाब या इफ़ादा या इस्तिफ़ादा के लिए आया है तो उसे रौशनी से आराम मिलेगा, क़ुरआने अज़ीम देख कर पढ़ना चाहे तो पढ़ सकेगा।

बाज़ लोग यह सवाल करते हैं कि बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर रौशनी क्यों करते हैं किसी फासिक़ व फाजिर की क़ब्र पर क्यों नहीं करते?

उसका जवाब यह दिया जाता है कि रौशनी करके बुज़ुर्गों की रूह की ताज़ीम की जाती है और

लोगों को दिखाया जाता है कि यह मज़ार महबूब का है इससे तबर्रुक व तवस्सुल करो कि तुम्हारी दुआ मस्तजाब हो। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 145ए 147)

ज़्यारते क़ब्र का सुबूत

क़ुबूरे मुस्लेमीन की ज़्यारत जाइज़ व मुबाह है बल्कि क़ब्रों की ज़्यारत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नते करीमा से साबित है हुज़ूर शुहदाए उहुद और अह्ले बक़ीअ़ की ज़्यारत के लिए तशरीफ़ ले जाते और उनके लिए दुआ व इस्तिग़फ़ार फरमाते। (मुरत्तिब)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं अह्ले बक़ीअ़ की तरफ़ भेजा गया कि उन पर दुआ व इस्तिग़फ़ार करूं।

(निसई, मुअत्ता इमाम मालिक)

दूसरी हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिब्रील मेरे पास आए मुझे हुक्म फरमाया कि बक़ीअ़ जा कर अह्ले बक़ीअ़ के लिए दुआए मग़्फ़िरत करूं। उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा फरमाती हैं मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह किस तरह कहूँ हुज़ूर ने ज़्यारते क़ुबूर की दुआ तालीम फरमाई। (निसई)

एक और हदीस में है कि हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने शुहदा-ए-उहद के लिए ऐसी दुआ फरमाई जैसी मुर्दे पर की जाती है।

(त, बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 40)

इन रिवायात से मालूम हुआ कि ज़्यारते क़ुबूर सुन्नत है जैसा कि इस से पहले उसका बयान गुज़रा है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर शुहदाए उहद की क़ब्रों पर

मुतअद्दिद रिवायात में है कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़्यारत शुहदाए उहद को तशरीफ़ ले गये और अर्ज़ की इलाही तेरा बन्दा और तेरा नबी गवाही देता है कि यह शहीद हैं और क़यामत तक जो उनकी ज़्यारत को आएगा और उन पर सलाम करेगा यह जवाब देंगे। (हाकिम मुस्दरक, बैहक़ी, दलाइलुन्नुबुव्वह, फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 264)

उमर फारूक़ की अह्ले बक़ीअ़ से हम कलामी

एक बार अमीरुल-मुमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बक़ीअ़ पर गुज़रे अह्ले क़ुबूर पर सलाम करके फरमाया, हमारे पास की ख़बरें यह हैं कि तुम्हारी औरतों ने निकाह कर लिए और तुम्हारे घरों में और लोग बसे, तुम्हारे माल तक़्सीम हो गये, उस पर किसी ने जवाब दिया ऐ उमर बिन ख़त्ताब हमारे पास की ख़बरें यह हैं कि हमने जो आमाल किए थे यहाँ पाए, और जो राहे ख़ुदा में दिया था उसका नफ़ा उठाया और जो पीछे छोड़ा वह टूटे में गया।

(इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल-क़ुबूर)

अली मुर्तज़ा की अह्ले बक़ीअ़ से हमकलामी

हज़रत सईद बिन अल-मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि हम मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम के हम रेकाब मक़ाबिरे मदीना में दाख़िल हुए, हज़रत मौला ने अह्ले क़ब्र पर सलाम करके फरमाया : तुम अपनी ख़बरें बताओगे या यह चाहते हो कि हम तुम्हें ख़बर दें, सईद बिन मुसैय्यिब फरमाते हैं मैंने आवाज़ सुनी किसी ने हज़रत मौला को जवाब सलाम देकर अर्ज़ की या अमीरुल-मुमिनीन आप बताइए हमारे बाद क्या गुज़री। अमीरुल-मुमिनीन कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने फरमाया तुम्हारी औरतों ने तो निकाह कर लिए और तुम्हारे माल सो वह बट गये और औलाद यतीमों के गरोह में उठी और वह तामीर जिसका तुमने इस्तेहकाम किया

पत्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब हो जाते, मैं 6 मील तक अपनी माँ को अपनी गर्दन पर सवार करके ले गया हूँ क्या मैं उसके हक़ से अदा हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तेरे पैदा होने में जिस क़द्र दर्दों के झटके उसने उठाए हैं शायद उन में एक झटके का बदला हो सके। (तबरानी औसत, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 192 ता 195)

बेटे का माल बाप का माल

औलाद को हुकूके पिदरी का ख़्याल न करना उसके साथ सरकशी व मुख़ालिफ़त से पेश आना अपने लिए दोज़ख़ का अज़ाबे शदीद और रब्बे क़हहार का ग़ज़ब वाजिब करता है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने कुरआने अज़ीम में फर्ज़ किया कि –

★ वालिदैन के साथ एहसान करो। (सूरः निसा : 36)

★ उन्हें हूँ न कहो। (सूरः असरा : 23)

★ उन से एज़ाज़ व इकराम का कलाम करो। (सूरः असरा : 23)

★ उनके लिए ख़ास मुहब्बत से तज़ल्लुल का बाज़ू बिछाओ। (सूरः असरा : 24)

★ उनके लिए दुआ करो कि इलाही उन पर रहम फरमा जैसा उन्होंने मुझे बचपन में पाला। (सूरः असरा : 28)

माल के लिए माँ–बाप से मुख़ासिमत व झगड़ा बेहयाई व बेबाकी और नेमत की नाशुक्री है।

हदीस में है रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ख़बरदार माँ–बाप की नाफरमानी न कर अगरचे वह तुझे हुक्म दें कि अपने जोरु, बच्चों, माले मताअ् सबसे निकल जा।

(मुसनद अहमद, तबरानी कबीर)

दूसरी रिवायत में है अपने माँ–बाप का हुक्म मान अगरचे वह तुझे तेरे माल और तेरी सब चीज़ों से तुझे बाहर कर दें। (तबरानी औसत)

इसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू बेटे को तंबीह करते हुए फरमाते हैं।

ओ नाशुक्र, ख़ुदा नातरस, माल लाया कहाँ से, तेरा गोश्त, पोस्त, इस्तिख़्वां सब तेरे माँ–बाप का है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तू और तेरा माल सब तेरे बाप का।

यह उस वक़्त इरशाद हुआ कि एक साहब हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलल्लाह माल व अयाल रखता हूँ और मेरे बाप मेरा सब माल ले लेना चाहते हैं यानी फिर मैं और मेरे बाल बच्चे क्या खायेंगे फरमाया तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है तुझे उससे इंकार नहीं पहुँचता।

(तबरानी कबीर)

इससे मालूम हुआ कि बाप अगर बेटे के माल से कुछ ले ले तो उसे रवा है और बेटे को एतराज़ का हक़ हासिल नहीं।

एक बूढ़े बाप के कुछ दर्द अंगेज़ अश्आर

हदीस में है एक शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हो कर अर्ज़ रसां हुए या रसूलल्लाह मेरे बाप मेरा माल ले लेना चाहते हैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया उन्हें हमारे हुज़ूर में हाज़िर लाओ जब हाज़िर हुए उन से इरशाद हुआ तुम्हारा बेटा कहता है तुम उसका माल ले लेना चाहते हो, अर्ज़ की हुज़ूर इससे पूछ देखें कि मैं वह माल लेकर क्या करता हूँ यही उसकी मेहमानी और उसकी क़राबती में या मेरा और मेरे बाल बच्चों का ख़र्च।

तलबे शफ़ाअत की तक्रार

फिर कहे या रसूलल्लाह! मैं हुज़ूर से शफ़ाअत माँगता हूँ, या रसूलल्लाह! मैं हुज़ूर से शफ़ाअत माँगता हूँ, या रसूलल्लाह! मैं हुज़ूर से शफ़ाअत माँगता हूँ, तीन वार इसलिए कहे कि यह दुआ व सवाल में हुसूले मक़्सूद के वास्ते अदना मरतबा अल्हाज का है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 536)

ज़्यारते रौज़ा में सहाबा का अदब व अक़ीदत

सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन रौज़–ए–अनवर की ज़्यारत में इंतिहाई अक़ीदत व एहतराम का मुज़ाहरा फरमाते मज़ारे करीम पर हाज़िर हो कर सलाम करते और मिंबरे अतहर वग़ैरह को छूते और चूमते थे। (मुरत्तिब)

सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से मरवी कि ज़मान–ए–मिंबर आतर को जो मज़ारे अक़्दस व अज़हर पर है यानी उसके बाज़ू पर जो गोल शक्ल का एक कंगरा सा बना देते उसे दाहिने हाथ से मस करके दुआ माँगा करते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की हदीस में है कि उन्होंने मिंबरे अनवर व सरवरे अतहर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मौज़ा जुलूसे अक़्दस को मस करके अपने चेहरे से लगाया। (तब्क़ात इब्ने सअद)

शिफ़ा शरीफ़ में है हज़रत नाफ़ेअ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हुमा जब हुजर–ए–पाक की क़ब्रों को सलाम करते हाज़िर हो कर सौ से ज़ाइद मरतबा कहते, हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर सलाम, हज़रत अबू रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर सलाम, फिर पलटे हुए मिंबर शरीफ़ पर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बैठने की जगह को हाथ से मस करके अपने चेहरे पर लगाते। (शिफ़ा शरीफ़)

इब्ने क़सीत और अतबी से मरवी है कि सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम जब मस्जिदे नब्वी से निकलते तो क़ब्रे अनवर के किनारों को अपने दाहिने हाथ से मस करते और फिर क़िब्ला रू हो कर दुआ करते। (शिफ़ा शरीफ़, रिसाला इब्रुल–मक़ाल)

तुर्बते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ की ज़्यारत

बाद ज़्यारत सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हाथ भर हट सरे अक़्दस सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबिल हो और बाद सलाम अर्ज़ करे।

आपको अल्लाह तआला हम से जज़ा व एवज नेक दे बेहतर उस एवज़ का जो किसी इमाम को उसके नबी की उम्मत से अता फरमाया हो बेशक आपने बेहतरीन ख़िलाफ़त से नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नियाबत की और बेहतरीन रविश से हुज़ूर की राह व तरीक़ा पर चले, आपने अह्ले इर्तिदाद व बिदअत से क़िताल किया, आपने इस्लाम को आरास्तगी दी, आपने सिला रहमी फरमाया, आप हमेशा हक़ गो और अह्ले हक़ के नासिर रहे यहाँ तक कि आपको मौत आई।

फिर हट कर क़ब्रे मुबारक हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के महाज़ी हो और बाद सलाम अर्ज़ करे।

अल्लाह तआला आपको बेहतर बदला दे और उन से राज़ी हो जिन्होंने आपको ख़लीफ़ा किया (यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को) कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी और मौत दोनों हाल में इस्लाम व मुस्लेमीन की रिआयत फरमाई, आपने यतीमों की किफ़ालत और रहम का सिला किया, इस्लाम ने आपसे क़ुव्वत पाई, आप मुसलमानों के पसन्दीदा पेशवा और रहनुमाए राहयाब हुए, आपने उनका जत्था बांधा और उनके मुहताजों को ग़नी कर दिया और उनकी शिकस्ता दिली दूर फरमाई। (मुंसिक मुतवस्सित व मसलक मुतक़स्सित, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 293)

हदीस में है कि एक आदमी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आ कर जिहाद की इजाज़त मांगी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हारे वालिदैन ज़िन्दा हैं उसने अर्ज़ की हाँ ज़िन्दा हैं तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि जाओ और उन्हीं के हुक़ूक़ अदा करने की कोशिश करो। (त, बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं आपसे हिजरत व जिहाद पर बैअत करता हूँ कि अल्लाह तआला से सवाब का तालिब हूँ हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हारे वालिदैन में से कोई एक ज़िन्दा है? उस शख़्स ने अर्ज़ किया हाँ बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या तुम अल्लाह तआला से अज्र व सवाब चाहते हो? उसने कहा हाँ मैं सवाब का तालिब हूँ हुज़ूर ने फ़रमाया अपने वालिदैन के पास वापस जाओ और उन से हुस्ने सुलूक करो। (त, मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में अर्ज़ की मैं इसलिए आया हूँ कि आप से हिजरत पर बैअत करूं और मैं वालिदैन को रोते हुए छोड़ आया हूं, हुज़ूर ने फ़रमाया उनके पास वापस जाओ फिर उन्हें उस तरह हंसाओ जिस तरह तुम ने उन्हें रुलाया है। (त, अबू दाऊद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि यमन का एक आदमी हिजरत करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते शरीफ़ा में आया हुज़ूर ने फ़रमाया क्या यमन में तुम्हारा कोई है उसने कहा कि मेरे वालिदैन हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया उन दोनों ने तुमको इजाज़त दे दी है उसने अर्ज़ किया नहीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम वालिदैन के पास जा कर इजाज़त मांगो अगर वह इजाज़त दे दें तो जिहाद करो वरना उनके साथ नेकी और भलाई करो। (त, अबू दाऊद)

एक रिवायत में है कि जाहिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुक़द्दसा में आ कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं जिहाद का इरादा रखता हूँ और आपके हुज़ूर मशवरा के लिए हाज़िर हुआ हूँ तो हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है उन्होंने अर्ज़ किया हाँ मेरी माँ मौजूद है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनकी ख़िदमत लाज़िम कर लो क्योंकि जन्नत उनके क़दमों के नीचे है।
(त, निसई, इब्ने माजा, हाकिम)

वालिदैन के क़दमों की बरकत

ख़िदमते वालिदैन का सवाब जिहाद के बराबर और ख़ुदा के नज़्दीक उम्दा अमल है। रब तआला ने जन्नत पाने के लिए बेशुमार ज़राए मुक़र्रर फ़रमाए हैं कि आदमी अगर इन बातों पर अमल करे तो जन्नत का हक़्दार होगा, वालिदैन की ख़िदमत और उनके साथ हुस्ने सुलूक ऐसी नेकी है कि आदमी इसके एवज भी जन्नत का मुस्तहिक़ क़रार पाता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है जाहिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इसलिए आया कि जिहाद के बारे में मशवरा करूं तो हुज़ूर

मुर्दे भी मिलते हैं? कहा हाँ मुसलमानों की रूहें तो जन्नत में होती हैं उन्हें इख़्तियार होता है जहाँ चाहें जाएं। (इब्ने अबी अद्दुनिया, बैहक़ी)

4. हज़रत सलमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है बेशक मुसलमानों की रूहें ज़मीन के बरज़ख़ में हैं जहाँ चाहती हैं जाती हैं और काफ़िर की रूह सिज्जीईन में मुक़ैयद है।

(इब्ने मुबारक किताबुज़्ज़ुहद)

5. हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह तआला अलैह रिवायत करते हैं मुझे हदीस पहुँची है कि मुसलमानों की रूहें आज़ाद हैं जहाँ चाहें जाती हैं। (इब्ने अबी अद्दुनिया)

6. इमाम अबू उमर बिन अब्दुल–बर्र ने फरमाया राजेह यह है कि शहीदों की रूहें जन्नत में हैं और मुसलमानों की फनाए क़ुबूर पर, जहाँ चाहे आती जाती हैं। (इब्ने अब्दुल–बर्र)

7. शरह जामेअ सग़ीर में है, जब रूह इस क़ालिब से जुदा और मौत के बाइस क़ैदों से रिहा होती है जहाँ चाहती है जौलान करती है। (मुनादी तैसीर शरह जामे सग़ीर)

8. तज़्किरतुल–मौता में है, औलियाए किराम क़द्दा सत असरारुहुम की रूहें आसमान व ज़मीन और बहिश्त में जिस जगह चाहें जाती हैं। (त)

रूहों का घरों में आना और अज़ीज़ों से मुतालबा करना

अह्ले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है कि मुमिनीन की रूहें कुछ मख़्सूस दिनों में अपने घरों को आती हैं और घर वालों से दुआए ख़ैर की तालिब होती हैं। (मुरत्तिब)

बाज़ उलमा मुहक़्क़ेक़ीन से मरवी है कि रूहें शबे जुमा छुट्टी पातीं और फ़ैलती हैं, पहले अपनी क़ब्रों पर आती हैं फिर अपने घरों में।

फतावा इमाम नसफ़ी में है, मुसलमानों की रूहें हर रोज़ व शबे जुमा अपने घर आती और दरवाज़े के पास खड़ी हो कर दर्दनाक आवाज़ से पुकारती हैं कि ऐ मेरे घर वालो! ऐ मेरे बच्चो! ऐ मेरे फ़रज़न्दो! ऐ मेरे अज़ीज़ो! हम पर सदक़ा से महर करो, हमें याद करो भूल न जाओ, हमारी ग़रीबी में हम पर तरस खाओ।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है जब ईद, या जुमा, या आशूरे का दिन, या शबे बरात होती है अमवात की रूहें आकर अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़ी होती और कहती हैं, है कोई क़ि हमें याद करे, है कोई कि हम पर तरस खाए, है कोई कि हमारी ग़ुर्बत की याद दिलाए। (ख़ज़ानतुर्रिवायात, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 232ए 233)

दुनिया से मुसलमान के जाने की मिसाल

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया दुनिया से मुसलमान का जाना ऐसा है जैसे बच्चे का माँ के पेट से निकलना, इस दम घुटने और अंधेरी की जगह से इस फ़िज़ाए वसीअ़ दुनिया में आना। (नवादिरुल–उसूल)

इसीलिए उलमा फरमाते हैं दुनिया को बरज़ख़ से वही निस्बत है जो रहमे मादर को दुनिया से, फिर बरज़ख़ को आख़िरत से यही निस्बत है जो दुनिया को बरज़ख़ से।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 254)

मुर्दे की पुकार

अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है, सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब जनाज़ा रखा जाता है और मर्द उसे अपनी गर्दनों पर उठाते हैं अगर

नेक होता है कहता है मुझे आगे बढ़ाओ, और अगर बद होता है कहता है हाए ख़राबी उसकी कहाँ लिए जाते हो, हर शय उसकी आवाज़ सुनती है मगर आदमी कि वह सुने तो बेहोश हो जाए।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक मुर्दा पहचानता है उसे जो उसको ग़ुस्ल दे और जो उठाए और जो कफन पहनाए और जो क़ब्र में उतारे।

(मुसनद अहमद, इब्ने मुन्दह)

सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुर्दा अपने नहलाने वाले को पहचानता और उठाने वाले को क़समें देता है अगर उसे आसाइश और फूलों और आराम के बाग़ का मुज़्दह मिला तो क़सम देता है मुझे जल्द ले चल और अगर आबे गर्म की मेहमानी और भड़कती आग में जाने की ख़बर मिलती है क़सम देता है मुझे रोक रख। (अबुल-हसन बिन अल-बरा किताबुर्रौज़ा)

पाँच जाते हैं चार फिरते हैं

अमीरुल-मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब मुर्दे को जनाज़े पर रख कर तीन क़दम ले चलते हैं एक कलाम करता है जिसे सब सुनते हैं जिन्हें ख़ुदा चाहे, सिवा जिन्न व इन्स के। कहता है ऐ भाईयो! ऐ नअ़श उठाने वालो, तुम्हें दुनिया फ़रेब न दे जैसा मुझे दिया और तुम से न खेले जैसा मुझ से खेली। अपना तरेका तो मैं वारिसों के लिए छोड़ चला और बदला देने वाला क़्यामत में मुझ से झगड़ेगा और हिसाब लेगा। तुम मेरे साथ चल रहे हो और अकेला छोड़ आओगे।

(इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल-क़ुबूर)

शहीद की बीबी

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया शहीद के लिए एक जिस्म निहायत ख़ूबसूरत यानी अज्सामे मिसालिया उतरता है और उसकी रूह को कहते हैं इस में दाख़िल हो, पस वह अपने पहले बदन को देखता है कि लोग उसके साथ क्या करते हैं और कलाम करता है और अपने ज़हन में समझता है कि लोग उसकी बातें सुन रहे हैं और अब जो उन्हें देखता है तो यह गुमान करता है कि लोग भी उसे कुछ देख रहे हैं यहाँ तक कि हूरे ईन से उसकी बीवियाँ आकर उसे ले जाती हैं। (इब्ने मुन्दह, इब्ने हिब्बान, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 255, 256)

मुर्दे का ज़िन्दों को देखना साबित है

हदीस में है जब मुर्दा मरता है एक फ़रिश्ता उसकी रूह हाथ में लिए रहता है, नहलाते उठाते वक़्त जो कुछ होता है वह सब देखता जाता है यहाँ तक कि फ़रिश्ता उसे क़ब्र तक पहुँचा देता है।

(इब्ने अबी अद्दुनिया)

दूसरी हदीस में है हर मुर्दा जानता है कि इसके बाद उसके घर वालों में क्या हो रहा है लोग उसे नहलाते हैं, कफनाते हैं और वह उन्हें देखता जाता है। (इब्ने अबी अद्दुनिया)

एक रिवायत में है जो शख़्स मरता है उसकी रूह मलिकुल-मौत के हाथ में होती है, लोग उसे ग़ुस्ल व कफन देते हैं और वह देखता है कि उसके घर वाले क्या करते हैं, वह उन से बोल नहीं सकता कि उन्हें शोर व फरियाद से मना करे। (इब्ने अबी अद्दुनिया)

एक और हदीस में है कि जो मुर्दा मरता है उसकी रूह एक फरिश्ता के हाथ में होती है कि अपने बदन को देखती है क्योंकर नहलाया जाता है, क्योंकर कफन पहनाया जाता है, क्योंकि क़ब्र की तरफ़ लेकर चलते हैं। (इब्ने अबी अद्दुनिया, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 257ए 285)

मुर्दे का अपने अहवाल को सुनना

हदीस में है हर मुर्दे की रूह एक फरिश्ता के हाथ में होती है कि अपने बदन को देखती जाती है क्योंकर गुस्ल देते हैं, किस तरह कफन पहनाते हैं, कैसे लेकर चलते हैं और वह जनाज़े पर होता है कि फ़रिश्ता उस से कहता है सुन तेरे हक़ में भला या बुरा क्या कहते हैं। (अबू नईम)

दूसरी हदीस में है मुर्दा हर चीज़ को पहचानता है यहाँ तक कि अपने नहलाने वाले को ख़ुदा की क़सम देता है कि आसानी से नहलाना, और यह भी फरमाया कि उस जनाज़े पर कहा जाता है कि सुन लोग तेरे बारे में क्या कहते हैं। (इब्ने अबी अद्दुनिया)

एक रिवायत में है रूह एक फ़रिश्ते के हाथ में होती है कि उसे जनाज़ा के साथ लेकर चलता और उस से कहता है सुन तेरे हक़ में क्या कहा जाता है।

(इब्ने अबी अद्दुनिया, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 257ए 258)

क़ब्रिस्तान में रफ़अ़् हाजत की शुनाअत

मुर्दे चूंकि ज़िन्दों को देखते भी हैं और उनकी बातचीत और उनकी पुकार को सुनते भी हैं इसलिए क़ब्रिस्तान में क़ज़ाए हाजत करना ऐसा है जैसा ज़िन्दों के सामने करना लिहाज़ा जिस तरह ज़िन्दों से शर्म व हया दामनगीर होती है इसी तरह का ख़्याल मुर्दों के बारे में भी होना चाहिए कि वह देखते हैं और सुनते भी हैं। (मुरत्तिब)

हज़रत उक़्बा बिन आमिर सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं एक सा जानता हूँ कि क़ब्रिस्तान में क़ज़ाए हाजत को बैठूं या बीच बाज़ार में कि लोग देखते जाएं, यानी जिस तरह बाज़ार में बैठने से लोग देखेंगे इसी तरह क़ब्रिस्तान में भी मुर्दे देखेंगे। (इब्ने अबी शैबा, हाकिम)

ज़िन्दों से मुर्दे का जी बहलना

ज़िन्दों के आने, पास बैठने, बात करने से मुर्दों के जी बहलते हैं, ज़ाहिर है कि अगर मुर्दे देखते सुनते नहीं तो इन उमूर से जी बहलना कैसा।

हदीस में है हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं क़ब्र में मुर्दे का ज़्यादा जी बहलने का वक़्त वह होता है जब उसका कोई प्यारा ज़्यारत को आता है।

(शरहुस्सुदूर, शिफ़ाउस्सिक़ाम)

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है हुज़ूर पुर नूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ज़्यारते क़ब्र को जाता और वहाँ बैठता है मैयत का दिल उस से बहलता है और जब तक वहाँ से उठे मुर्दा उसका जवाब देता है। (इब्ने अबी अद्दुनिया किताबुल–क़ुबूर)

सही मुस्लिम शरीफ़ में है अम्र बिन–अल–आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने साहबज़ादे अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से कि वह भी सहाबी हैं नज़अ़् में फरमाया, जब मुझे दफन कर चुको मुझ पर थम–थम कर, आहिस्ता–आहिस्ता मिट्टी डालना, फिर मेरी क़ब्र के गिर्द इतनी देर ठहरे रहना कि एक ऊंट ज़िबह किया जाए और उसका गोश्त तक़सीम हो यहाँ तक कि मैं तुम से उन्स हासिल करूं और जान लूं कि अपने रब के रसूलों को क्या जवाब देता हूँ। (मुस्लिम)

क़ब्र पर बैठने की मुमानिअत

बाज़ जगह लोग क़ब्रों पर बैठते हैं, तकिया लगाते हैं, ताश और जुआ खेलते हैं, जानवर बांधते हैं, और क़ब्रिस्तान में खेल तमाशा या काम काज करते हैं और मुसलमानों की क़ब्रों का कुछ अदब व एहतराम नहीं करते हालांकि इन हरकात से मुर्दों को तक्लीफ़ होती है वह ईज़ा पाते हैं, इन चीज़ों से हदीस में सख़्त ताकीद के साथ मना फरमाया है। (मुरत्तिब)

1. अम्मारह बिन हज़्म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे एक क़ब्र से तकिया लगाए देखा फरमाया इस क़बर वाले को ईज़ा न दे। (मुसनद अहमद)

2. दूसरी रिवायत में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे एक क़ब्र पर बैठे देखा फरमाया ओ क़ब्र वाले क़ब्र से उतर आ, न तू साहिबे क़ब्र को ईज़ा दे, न वह तुझे।

(हाकिम, तबरानी)

3. अबू क़लाबा बसरी रिवायत करते हैं कि मैं मुल्क शाम से बसरा को जाता था रात को खन्दक़ में उतरा, वुज़ू किया, दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर एक क़ब्र पर सर रख कर सो गया, जब जागा तो साहिबे क़ब्र को देखा कि मुझ से गिला करता है और कहता है ऐ शख़्स तूने मुझे रात भर ईज़ा दी।

(इब्ने अबी अद्दुनिया)

4. इब्ने मीना ताबई रिवायत करते हैं मैं मक़्बरे में गया दो रकअत पढ़ कर लेट रहा, ख़ुदा की क़सम मैं ख़ूब जाग रहा था कि सुना कोई शख़्स क़ब्र में से कहता है उठ कि तूने मुझे अज़ीयत दी। फिर कहा कि तुम अमल करते हो और हम नहीं करते, ख़ुदा की क़सम अगर तेरी तरह दो रकअत मैं भी पढ़ सकता मुझे तमाम दुनिया से ज़्यादा अज़ीज़ होता। (दलाइलुन्नुबुव्वह)

5. इब्ने मख़्मीरह रिवायत करते हैं अगर मैं तपाई हुई भाल पर पाँव रखूं कि मेरे क़दम से पार हो जाए तो यह मुझे ज़्यादा पसन्द है उस से कि किसी क़ब्र पर पाँव रखूं, फिर फरमाया एक शख़्स ने क़ब्र पर पाँव रखा जागते में सुना कि कहता है ऐ शख़्स अलग हट मुझे ईज़ा न दे। (इब्ने मुन्दह)

6. उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुर्दे की हड्डी तोड़नी और उसे ईज़ा देनी ऐसी है जैसी ज़िन्दा की हड्डी तोड़नी, यानी दर्द पहुँचने में ज़िन्दा व मुर्दा दोनों बराबर हैं।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, मुसनद अहमद)

7. सैयदना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मुसलमान को बाद मौत ईज़ा देनी ऐसी है जैसे ज़िन्दगी में उसे तक्लीफ़ पहुँचानी। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा)

8. सईद बिन मन्सूर अपने सुनन में रावी, किसी ने उस जनाब से क़ब्र पर पाँव रखने का मस्अला पूछा फरमाया मुझे जिस तरह मुसलमान ज़िन्दा की ईज़ा नापसन्द है यूंहीं मुर्दा की।

(सुनन सईद बिन मन्सूर, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 259, 260, 261)

मुर्दों पर आवाज़ के साथ रोना

ज़िन्दों के चिल्लाने से मुर्दे को सदमा होता है, चिल्ला कर रोने की अहादीस में मुमानेअत आई है। (मुरत्तिब)

अबू अर्रबीअ् रिवायत करते हैं मैं अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के साथ एक जनाज़ा में था किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनी, आदमी भेज कर उसे ख़ामोश करा दिया, मैंने अर्ज़ की ऐ अबू अब्दुर्रहमान आपने उसे क्यों चुपाया, फरमाया इस से मुर्दे को ईज़ा होती है यहाँ तक कि क़ब्र में जाए। (मुसनद अहमद)

सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हदीस मशहूर में फरमाया कि ज़िन्दों के रोने से मुर्दे पर अज़ाब होता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने एक जनाज़े में कुछ औरतें देखीं, इरशाद फरमाया पलट जाओ गुनाह से बोझल, सवाब से ओझल, तुम ज़िन्दों को फ़ितने में डालती और मुर्दों को अज़ीयत देती हो। (सुनन सईद बिन मन्सूर)

उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि कफ़न अच्छा दो और चिल्ला कर रोने, या उसकी वसीयत में देर लगाने, या क़तअ् रहम करने से अपनी मैयत को ईज़ा न पहुँचा और उसका क़र्ज़ जल्द अदा करो और उसे बुरे हम्साया से अलग रखो, यानी कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन और अह्ले बिदअत व फ़िस्क़ की क़ब्रों के पास दफ़न न करो।

(दैलमी इब्ने मुन्दह, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 260ए 261)

मुर्दों का सुनना पहचानना, सलाम का जवाब देना

मुर्दे अपने ज़ाइरीन को पहचानते और उनका सलाम सुनते और उन्हें जवाब देते हैं।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की क़ब्र पर गुज़रता और सलाम करता है अगर वह उसे दुनिया में पहचानता था अब भी पहचानता और जवाब सलाम देता है। (इब्ने अब्दुल–बर्र)

हदीस : जब आदमी ऐसी क़ब्र पर गुज़रता है जिस से दुनिया में शनासाई थी और उसे सलाम करता है मैयत जवाब सलाम देता और उसे पहचानता है और जब ऐसी क़ब्र पर गुज़रता है जिस से जान पहचान न थी और सलाम करता है मैयत उसे जवाब सलाम देता है।

(इब्ने अबी अद्दुनिया, बैहक़ी, ख़तीब)

यानी मुर्दे ऐसा जवाब नहीं देते जो ज़िन्दे सुन लें वरना वह ऐसा जवाब तो देते हैं जो हमारे सुनने में नहीं आता।

हदीस : हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुस्अब बिन उमैर और उनके साथियों की क़ुबूर पर ठहरे और फ़रमाया क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है क़्यामत तक जो उन पर सलाम करेगा जवाब देंगे। (तबरानी औसत, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 262ए 263)

मुर्दे का ज़ाइर को पहचानना

मौत के बाद इंसान की समाअत व बसारत बढ़ जाती है वह अपने ज़ाइर को देखता और पहचानता है। (मुरत्तिब)

अताफ़ मख़्ज़ूमी की ख़ाला रिवायत करती हैं, एक दिन मैंने क़ब्र सैयदना हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास नमाज़ पढ़ी, उस वक़्त जंगल भर में किसी आदमी का नाम व निशान न था, बाद नमाज़ मज़ार मुतह्हर पर सलाम किया जवाब आया, और उसके साथ यह फ़रमाया जो मेरी क़ब्र के नीचे से गुज़रता है मैं उसे ऐसा पहचानता हूँ जैसा यह पहचानता हूँ कि अल्लाह तआला ने मुझे पैदा किया और जिस तरह रात और दिन को पहचानता हूँ।

(इब्ने अबी अद्दुनिया, बैहक़ी दलाइल)

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ् रिवायत करते हैं कि मुर्दे अपने ज़ाइरों को जानते हैं जुमा के दिन और एक दिन इस से पहले और एक दिन उस से बाद। (शअ्बुल–ईमान)

यानी बरकत जुमा के सबब उन तीन दिनों में उनके इल्म व इद्राक को ज़्यादा वुस्अत देते हैं जो मारिफ़त व शनासाई, उन्हें उन रोज़ों में होती है और दिनों से ज़्यादा है, न यह कि सिर्फ़ यही तीन दिन इल्म व इद्राक के हों।

मुर्दों का आवाज़ सुनना

मुर्दे जिस तरह ज़िन्दों का सलाम सुनते और जवाब देते हैं इसी तरह दूसरे कलाम और आवाज़ों को भी सुनते हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर पुर नूर सैयदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं मुर्दा जब क़ब्र में रखा जाता है और लोग दफन करके पलटते हैं बेशक वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुनता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हदीस : मुर्दा जूतियों की पहचल सुनता है जब लोग उसे पीठ देकर फिरते हैं। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद)

हदीस : जब मुर्दा दफन होता है और लोग वापस आते हैं वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुनता है। (तबरानी)

हदीस : हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है जब मुर्दा क़ब्र में रखा जाता है वह लोगों के जूतों की आवाज़ सुनता है जब उसके पास से पलटते हैं। (शरहुस्सुन्नह, किताबुज़्ज़ुहुद हिनाद)

हदीस : मुर्दा यक़ीनन तुम्हारे जूतों की पहचल और हाथ झाड़ने की आवाज़ सुनता है जब तुम उसकी तरफ़ पीठ फेर कर चलते हो। (तफ़्सीर जौहर)

हदीस : अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हम एक जनाज़ा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हमराहे रेकाब हाज़िर थे जब उसके दफन से फ़ारिग़ हुए और लोग पलटे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया अब वह तुम्हारी जूतियों की आवाज़ सुन रहा है।

(तबरानी, इब्ने मरदवीया, फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 264ए 265)

कुफ़्फ़ारे बद्र के मक़्तूलीन से हुज़ूर का ख़िताब

मुसलमान मुर्दे तो ज़िन्दों की आवाज़ और सलाम व कलाम सुनते ही हैं काफिर मुर्दे को भी सुनने की कुव्वत व सलाहियत दी जाती है। (मुरत्तिब)

सही मुस्लिम शरीफ़ में अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हमें कुफ़्फ़ारे बद्र की क़त्ल गाहें दिखाते थे कि यहाँ फलां काफिर क़त्ल होगा और यहाँ फलाँ, जहाँ–जहाँ हुज़ूर ने बताया था वहीं–वहीं उनकी लाशें गिरीं, फिर बहुक्म हुज़ूर वह जीफे एक कुएँ में भर दिए गये, सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वहाँ तशरीफ़ ले गये और नाम बनाम उन कुफ़्फ़ार लेआम को उनका और उनके बाप का नाम लेकर पुकारा और फरमाया, तुमने भी पाया जो सच्चा वादा ख़ुदा व रसूल ने तुम्हें दिया था कि मैंने तो पा लिया जो हक़ वादा अल्लाह तआला ने मुझे दिया था, अमीरुल–मुमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह हुज़ूर उन जिस्मों से क्यों कर कलाम करते हैं जिनमें रूहें नहीं, फरमाया जो मैं कह रहा हूँ उसे कुछ तुम उन से ज़्यादा नहीं सुनते मगर उन्हें यह ताक़त नहीं कि मुझे लौट कर जवाब दें। (मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम चाहे बदर पर तशरीफ़ ले गये जिसमें कुफ़्फ़ार की लाशें पड़ी थीं, फिर फरमाया तुमने पाया जो तुम्हारे रब ने तुम्हें सच्चा वादा दिया था यानी अज़ाब, किसी ने अर्ज़ की हुज़ूर मुर्दों को पुकारते हैं इरशाद फरमाया तुम कुछ उन से ज़्यादा सुनने वाले नहीं पर वह जवाब नहीं देते। (बुख़ारी)

एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तीन दिन बाद उस कुएँ पर तशरीफ़ ले गये और उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के जवाब में फरमाया क़सम उसकी

जिसके दस्त कुदरत में मेरी जान है मैं जो फरमा रहा हूँ उसके सुनने में तुम और वह बराबर हो मगर वह जवाब देने की ताक़त नहीं रखते। (मुस्लिम)

एक रिवायत में यह फरमाया कि जैसा तुम सुनते हो वैसा ही वह भी सुनते हैं मगर जवाब नहीं देते। (तबरानी, फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 267ए 268)

एक पारसा जवान का क़िस्सा

अह्दे फारूक़ी में एक जवान आबिद था, अमीरुल–मुमिनीन उस से बहुत ख़ुश थे, दिन भर मस्जिद में रहता, बाद इशा बाप के पास जाता, राह में एक औरत का मकान था वह उस पर आशिक़ हो गई हमेशा अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करना चाहती जवान नज़र न फरमाता, एक शब क़दम ने लग़िज़श की। साथ हो लिया दरवाज़े तक गया, जब अन्दर जाना चाहा ख़ुदा याद आया और बेसाख़्ता यह आयते करीमा ज़ुबान से निकली।

डर वालों को जब कोई झपट शैतान की पहुँचती है ख़ुदा को याद करते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं।

आयत पढ़ते ही ग़श खा कर गिरा, औरत ने अपनी कनीज़ के साथ उठा कर उसके दरवाज़े पर डाल दिया, बाप मुंतज़िर था आने में देर हुई, देखने निकला, दरवाज़े पर बेहोश पड़ा पाया, घर वालों को बुला कर अन्दर उठवाया, रात गये होश आया, बाप ने हाल पूछा, कहा ख़ैर है, कहा बता दे, नाचार क़िस्सा कहा, बाप बोला जाने पिदर, वह आयत कौन सी है जवान ने फिर पढ़ी पढ़ते ही ग़श आया, जुंबिश दी मुर्दा पाया, राह ही को नहला कर कफ़ना कर दफ़न कर दिया, सुबह को अमीरुल–मुमिनीन ने ख़बर पाई बाप से ताज़ियत और ख़बर न देने की शिकायत की, अर्ज़ की या अमीरुल–मुमिनीन रात थी, फिर अमीरुल–मुमिनीन हम्राहियों को लेकर क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये और जवान का नाम लेकर फरमाया ऐ फलां जो अपने रब के पास खड़े होने का डर करे उसके लिए दो बाग़ हैं, जवान ने क़ब्र में से आवाज़ दी ऐ उमर मुझे मेरे रब ने यह दौलते उज़्मा जन्नत में दोबारा अता फरमाई। (इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स० 272)

उर्स व फातिहा

उर्स व फातिहा का एहतमाम बुज़ुर्गाने दीन के अरवाह को ईसाले सवाब का एक ज़रिया है और आम्म–ए–मुमिनीन की रूहों को भी कुरआन पाक वग़ैरह पढ़ कर सवाब पहुँचाया जाता है। अहले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक यह बिला शुबह जाइज़ व मुस्तहसन है, यह उर्स व फातिहा सिर्फ़ ईसाले सवाब ही नहीं बल्कि बज़ुर्गाने दीन की अरवाह तैयबात से फ़्यूज़ व बरकात हासिल करने का एक ज़रिया है, फातिहा का एहतमाम व इंसराम अपने घर पर किया जाए या बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुक़द्दसा के पास, दोनों सूरतें जाइज़ हैं, जिसकी रूह को ईसाले सवाब किया जाए वह अगर बाकमाल हस्ती है तो उसके दरजात बुलन्द होते हैं और अगर वह बाकमाल नहीं बल्कि आम मोमिन या गुनहगार है, तो इस से उसके अज़ाब व अताब में तख़्फ़ीफ़ व कमी होती है। इन्शाअल्लाह तआला। (मुरत्तिब)

फातिहा का सुबूत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू जवाज़े फातिहा के सुबूत से मुतअल्लिक़ तहरीर फरमाते हैं :

फातिहा दिलाना शरीअत में जाइज़ है। जिस तरह मदारिस, ख़ानक़ाहें और मुसाफ़िर खाने बनाए जाते हैं और सब मुसलमान उनको फ़ेअ्ले सवाब समझते हैं, क्या कोई सुबूत दे सकता है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस तरह बनाए या बनवाए थे? या कोई सुबूत दे सकता है कि फातिहा जिस तरह अब दी जाती है जिस में कुरआन मजीद और खाने दोनों का सवाब मैयत को पहुँचाते हैं, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस से मना फरमाया और जब मुमानेअत का सुबूत नहीं दे सकता और बेशक हरगिज़ नहीं दे सकता तो जिस चीज़ से अल्लाह व रसूल ने मना न फरमाया दूसरा जो मना करेगा अपने दिल से शरीअत गढ़ेगा।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 226)

एक और मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

सही हदीसों से साबित है कि नेक आमाल का मुर्दा को सवाब पहुँचता है और यह भी हदीसों में आया है कि वह सवाब पाकर ख़ुश होता है और सवाब पहुँचने का मुन्तज़िर रहता है तो कुरआन शरीफ़ और कलिमा तैयबा पढ़ कर सवाब पहुँचाना अच्छी बात है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 193)

खाने या पीने की चीज़ रख कर उस पर कुरआन वग़ैरह पढ़ कर भी सवाब पहुँचाया जा सकता है यह बात हदीस से साबित है। (मुरत्तिब)

सैयदना सअद बिन उबादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की या रसूलल्लाह मेरी माँ ने इंतिक़ाल किया तो कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है फरमाया पानी, उन्होंने कुवाँ खोद कर कहा यह मादरे सअद के लिए है। (अबू दाऊद)

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि कुवाँ तैयार हो जाने पर हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने यह अल्फाज़ कहे। (लिहाज़ा खाना वग़ैरह सामने रख कर फातिहा देना जाइज़ है। मुरत्तिब) (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 194)

फातिहा का सवाब हक़ है

हर वह बात जिस में महबूबाने ख़ुदा की ताज़ीम व तक्रीम हो या वह बात जो मैयते मुस्लिम के हक़ में फाइदा से मुतअल्लिक़ हो वहाबिया व देवबन्दिया उस पर शिर्क व बिदअत के फतवे दाग़ते हैं

ख़्वाह वह अइम्म–ए–किराम व अक़्वाले सल्फ़ से साबित हो या हदीस ही में क्यों न हो। अह्ले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है कि कुरआन वग़ैरह पढ़ कर अगर मुर्दों को ईसाले सवाब किया जाए या आदमी अपनी ज़िन्दगी ही में कुरआन पढ़वा ले तो उसका सवाब अरवाहे मैयत को पहुँचता है इमामे आज़म वग़ैरह का मज़हब व मसलक यही है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू इंतिहाई पुर जलाल अंदाज़ में फरमाते हैं:

बेशक ज़िन्दों का मुर्दों के लिए दुआ करना और उनकी तरफ़ से सदक़ा देना मुर्दों को नफ़ा देता है। मोअ्तज़ेला गुम्राह फ़िरक़ा इसमें मुख़ालिफ़ है। और असल इसमें यह है कि अह्ले सुन्नत के नज़्दीक आदमी अपने हर अमल का सवाब दूसरे को पहुँचा सकता है, नमाज़ हो या रोज़ा, या हज या सदक़ा या कुछ, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और उनके असहाब के नज़्दीक यह सब जाइज़ है और मैयत को उसका सवाब पहुँचता है।

यह मज़्हब है इमामे आज़म का, अगर इसमें कोई सुबूत दे दे कि इमाम ने कुरआन मजीद और खाने का सवाब पहुँचाना जाइज़ तो फरमाया लेकिन खाना आगे रखने को मना फरमाया है, मैयत के लिए दुआ तो जाइज़ फरमाई है लेकिन उसमें हाथ उठाना मना फरमाया है तो उसे दो सौ रुपये इंआम दिए जाएंगे।

नीज़ देवबन्द वग़ैरह वहाबी मदारिस में जो निसाबे तालीम है और सालाना जल्से तरज़े मालूम के लिए इम्तिहान, और उनके नम्बर और रुदादें छापना और किताबें छाप कर बेचना, और उन पर कमीशन काटना अगर कोई आलिम इसका सुबूत दे कि इमाम आज़म ने इन बातों का हुक्म दिया है तो सौ रुपया इंआम पाएगा। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 11, स0 77)

एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

अम्वातुल–मुस्लेमीन के नाम पर खाना पका कर ईसाले सवाब के लिए तसद्दुक़ करना बिला शुबह जाइज़ व मुस्तहसन है और उस पर फातिहा से ईसाले सवाब दूसरा मुस्तहसन है और दो चीज़ों का जमा करना ज़्यादते ख़ैर है। और पानी से भी ईसाले सवाब कर सकते हैं बल्कि हदीस में है :

"सब से बेहतर सदक़ा पानी है।"

पानी पिलाने का सवाब

एक हदीस में है जहाँ पानी न मिलता हो किसी को पानी पिलाना एक जान को ज़िन्दा करने की मिस्ल है, और जहाँ पानी मिलता हो वहाँ पानी पिलाना ग़ुलाम आज़ाद करने की मिस्ल है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 214)

ईसाले सवाब का अफ़्ज़ल तरीक़ा

एक आयत या कलिमा तैयबा का सवाब चन्द अम्वात को बख़्शने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के करमे अमीम व फ़ज़्ले अज़ीम से उम्मीद है कि सबको पूरा–पूरा सवाब मिलेगा अगरचे एक आयत या दरूद या कलिमा तैयबा का सवाब आदम अलैहिस्सलाम से क़यामत तक के तमाम मुमिनीन व मुमिनात अहया व अम्वात के लिए हदिया करे, उलमाए अह्ले सुन्नत से एक जमाअत ने इसी पर फतावा दिया।

इमाम इब्ने हजर मक्की फरमाते हैं कि वुस्अत फ़ज़्ले इलाही के लाइक़ यही है, और हर शख़्स को अफ़्ज़ल यही कि जो अमले सालेह करे उसका सवाब अव्वलीन व आख़िरीन, अहया व अमवात तमाम मुमिनीन व मुमिनात के लिए हदिया भेजे सबको सवाब पहुँचेगा और उसे उन सबके बराबर अज्र मिलेगा।

अमीरुल–मुमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से मरवी है हुज़ूर पुर नूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मक़ाबिर पर गुज़रे और कुल हुवल्लाह ग्यारह बार पढ़ कर उसका सवाब अमवात को बख़्शे तमाम अमवात के अदद के बराबर सवाब पाए। (दारे कुतनी, तबरानी, दैलमी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स० 198)

तारीख़े एरास की तायीन में मसलहत?

बुज़ुर्गाने दीन के एरास की तारीख़ मुतअय्यन करने में मस्लेहत यह है कि औलियाए किराम की अरवाहे तैयबा को उनके वेसाल शरीफ़ के दिन क़ुबूर की तरफ़ तवज्जुह ज़्यादा होती है, चुनांचे वह वक़्त जो ख़ास वेसाल का है अख़ज़े बरकात के लिए ज़्यादा मुनासिब होता है।

(अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स० 46)

अपने लिए अपनी ज़िन्दगी में सवाब का काम

आदमी अपनी ज़िन्दगी में ईसाले सवाब कर सकता है, मुहताजों को छुपा कर दे, यह जो आम रिवाज है कि खाना पकाया जाता है और तमाम अग़्निया व बिरादरी की दावत होती है, ऐसा न करना चाहिए।

छुपा कर देना मुहताजों को आला व अफ़्ज़ल है।

हदीस में इरशाद फरमाया छुपा कर सदक़ा देना बुरी मौत से बचाता है और रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के ग़ज़ब को ठण्डा करता है। (कंज़ुल–उम्माल)

ज़िन्दगी में अपने वास्ते सदक़ा करना बाद मौत के सदक़ा से अफ़्ज़ल है।

हदीस में इरशाद फरमाया अफ़्ज़ल सदक़ा यह है कि तसद्दुक़ करे इस हाल में कि तू तन्दरुस्त हो और माल पर हरीस, ख़्वाहिशमन्द से दौलत की तमन्ना रखता हो और मुहताजी से डरता हो यह न हो कि जब दम गले में अटके उस वक़्त कहे कि फलां को इतना, फलां को इतना, कि अब तो फलां के लिए हो ही चुका। (बुख़ारी, अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स० 52)

"तबारक" की मिक़्दार, और उस से मक़्सूद

तबारक से मक़्सूद ईसाले सवाब है और शरीअत में इसकी कोई मिक़्दार मुक़र्रर नहीं जितना हो और जब हो, पाक माल और ख़ालिस नीयत से अल्लाह के लिए हो, मरने के बाद हो या ज़िन्दगी में, हर साल करें, या एक ही साल कोई हरज नहीं बल्कि मुक़र्रर करके मौक़ूफ़ करना नहीं चाहिए।

तबारक के फाइदे

इसके फाइदे बेशुमार हैं, उसमें सूरः तबारक शरीफ़ पढ़ी जाती है, इस सूरः करीमा की बराबर अज़ाबे क़ब्र से बचाने वाली और राहत पहुँचाने वाली कोई चीज़ नहीं, अगर इसके पढ़ने वाले के पास मलाइका अज़ाब आना चाहते हैं तो उनको रोकती है, वह दूसरी तरफ़ से आना चाहते हैं तो उधर हाइल होती है और फरमाती है कि इसके पास न आओ यह मुझे पढ़ता था, फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं हम उसके हुक्म से आए हैं जिसका तू कलाम है। तो फरमाती है कि ठहर जाओ जब तक मैं वापस न आऊं इसके पास न आना और बारगाहे इलाही में हाज़िर हो कर अपने पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत के लिए ऐसा झगड़ती है कि मख़्लूक़ का ऐसा झगड़ने की ताक़त नहीं इन्तिहा यह कि अगर मग़्फ़िरत में ताख़ीर होती है अर्ज़ करती है वह मुझे पढ़ता था और तूने इसे न बख़्शा अगर मैं तेरा कलाम नहीं तो मुझे अपनी किताब से छील दे। उस पर इरशाद बारी होता है जा हमने उसे बख़्शा। वह फौरन जन्नत में जाती है और वहाँ से रेशमी कपड़े और आराम तकिए और फूल और ख़ुशबुएँ लेकर क़ब्र में आती है और फरमाती है मुझे आने में देर हुई तो घबराया तो न था, फिर बिच्छौने बिछाती और तकिया लगाती है फ़रिश्ते बहुक्मे रब्बुल–आलमीन वापस जाते हैं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 81, 82)

तबारक किस चीज़ पर हो और उसकी असल क्या है?

तबारक की असल ईसाले सवाब है जिसका हुक्म अहादीसे कसीरा में है और ख़ास सूरः तबारकल्लज़ी की तख़्सीस इसलिए है कि सही हदीसों में इसे अज़ाबे क़ब्र से बचाने वाली, नजात देने वाली फरमाया, जिस शय पर करने में मुहताज की हाजत रवाई ज़्यादा हो उस में सवाब ज़्यादा है, अय्यामे क़हत में खाने पर होना ज़्यादा मुनासिब है। फ़क़ीर (इमाम अहमद रज़ा बरैलवी) के यहाँ खाने पर होती है। कपड़े के जोड़ों, कभी रूपों पर मुवाफ़िक़ हालत बिरादराने मसाकीन मुस्लेमीन के जो मुनासिब समझा गया, किया जाता है, खाना हो या कपड़े या दाम देना, सबसे पहले अपने अज़ीज़ों, क़रीबों का हक़ है जो हाजतमन्द हों फिर हम्सायों, फिर यतीम, बेवह, मसाकीन, मुसलमानाने अह्ले शहर का। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 208)

मैयत के यहाँ का खाना

तआमे मैयत से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं:

मैयत के यहाँ जो लोग जमा होते हैं और उनकी दावत की जाती है उस खाने की तो हर तरह मुमानेअत है। और बग़ैर दावत के जुमेरातों, चालीसवीं, छे माही, बरसी में जो भाजी की तरह अग़्निया को बांटा जाता है वह भी अगरचे बेमानी है मगर उसका खाना मना नहीं। बेहतर यह है कि ग़नी न खाए और फ़क़ीर को तो कुछ मुज़ाइक़ा नहीं कि वही उसके मुस्तहिक़ हैं, और इन सब अहकाम में वह जिसने अपनी मौत अपनी हयात में कर दी और जिसने न की सब बराबर हैं। और अपने यहाँ मौत हो जाए तो अपना खाना खाने की किसी को मुमानेअत नहीं अल्लाह के लिए फ़क़ीरों को, जब और जो कुछ दिया जाए सवाब है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 177)

मैयत के यहाँ खाने से मुतअल्लिक़ एक और सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

तआम की तीन क़िस्म है।

★ एक वह कि अवाम अय्यामे मौत में बतौर दावत करते हैं यह नाजाइज़ व मम्नूअ़ है, अग़्निया को उसका खाना जाइज़ नहीं।

★ दूसरे वह तआम कि अपने अमवात को ईसाले सवाब के लिए बनीयते तसद्दुक़ किया जाता है, फ़ुक़रा उसके लिए ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं मालदारों को न चाहिए।

नियाज़ का खाना

★ तीसरे वह तआम कि हज़राते अंबिया व औलिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की अरवाहे तैयबात के नज़्र किया जाता है और फ़ुक़रा व अग़्निया सबको बतौर तबर्रुक दिया जाता है यह सबको बिला तकल्लुफ़ रवा है और वह ज़रूर बाइसे बरकत है, बरकत वालों की तरफ़ जो चीज़ निस्बत की जाती है उसमें बरकत आ जाती है जो मुसलमान इस खाने की ताज़ीम करते हैं वह इसमें दुरुस्तगी पर हैं।

अइम्म-ए-दीन ने बसनद सही रिवायत फरमाया कि सूफ़ियाए किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की एक मज्लिसे समाअ़ में हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला तआला अन्हु की नज़्र का एक प्याला चावल रखा हुआ था, हालते वज्द में एक साहब का पाँव उस से लग गया फ़ौरन रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला व उला ने उनका हाले विलायत सल्ब फरमा लिया।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स० 214)

तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ के चने

तीजा दसवाँ और चालीसवाँ वग़ैरह के चने से मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाते हैं :

यह चीज़ ग़नी न ले फ़क़ीर ले और वह जो उनका मुंतज़िर रहता है, उनके न मिलने से नाख़ुश होता है उसका क़ल्ब सियाह होता है, मुश्रिक या चमार को उसका देना गुनाह है, फ़क़ीर लेकर ख़ुद खाए और ग़नी ले ही नहीं और ले लिए हों तो मुसलमान फ़क़ीर को दे दे, यह हुक्मे आम फातिहा का है, नियाज़ औलिया-ए-किराम, तआमे मौत नहीं वह तबर्रुक है फ़क़ीर व ग़नी सब लें।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 225)

शबे बराअत की फातिहा

बुज़ुर्गाने दीन की अरवाह को ईसाले सवाब करना जाइज़ है ख़्वाह तारीख़ व दिन की ताईन के साथ हो या बग़ैर ताईन के, दोनों सूरतें जाइज़ हैं इसी तरह शबे बराअत की फातिहा जाइज़ है चाहे उसी रात को या उसके बाद, दिन और तारीख़ को इसलिए मुतअय्यन किया जाता है ताकि लोगों को याद रहे मगर कुछ मुन्केरीन ताईन तारीख़ के साथ फातिहा और ईसाले सवाब को मना करते हैं और कहते हैं कि यह बिदअत है हालांकि उर्फ़ व रिवाज के हिसाब से तारीख़ का तअय्युन किया जाता है इस पर शरीअते मुतह्हरा में कोई मुमानेअत नहीं आई है किसी चीज़ का शरीअत में मना न होना उसके जाइज़ होने की दलील है लिहाज़ा शबे बराअत में हलवा या दूसरी शीरीनी पर फातिहा देना बिला शुबह जाइज़ है असल मक़्सूद उस से ईसाले सवाब है। (मुरत्तिब)

शबे बराअत की फातिहा से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

शरीअते इस्लामिया में, ईसाले सवाब की असल है और सदक़ाते मालिया का सवाब बइज्मा अह्ले सुन्नत पहुँचता है और उर्फ़ी तौर पर दिन और तारीख़ की तख़्सीस को हदीस ने जाइज़ फरमाया है। मना करने वाले इसे बेदलील शरई मना करते हैं, उन से पूछिए तुम जो मना करते हो आया अल्लाह व रसूल ने मना किया है या अपनी तरफ़ से कहते हो और अल्लाह व रसूल ने मना फरमाया है तो दिखाओ कौन सी आयत व हदीस में है कि हलवा मम्नूअ् है, या शबे बराअत में मम्नूअ् है, या हज़रत सैयदुश्शोहदा हमज़ा, या हज़रत ख़ैरुत्ताबेईन ओवेस क़रनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को उसका सवाब पहुँचाना मम्नूअ् है, या अइज़्ज़ा व अहिब्बा में इसका तक़्सीम करना मम्नूअ् है। और जब नहीं दिखा सकते तो जो बात अल्लाह व रसूल ने फरमाई तुम उसके मना करने वाले कौन। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 391)

शबे बराअत के हल्वा वग़ैरह से मुतअल्लिक़ एक और सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

हल्वा वग़ैरह पकाना, फ़ुक़रा पर तक़्सीम करना, अहबाब को भेजना जाइज़ है, अल्लाह के फ़ज़्ल व नेमत पर ख़ुशी करने का कुरआन मजीद में हुक्म है, जाइज़ ख़ुशी नाजाइज़ नहीं। आतिश बाज़ी असराफ़ व गुनाह है, दिन की ताईन में जुर्म नहीं जबकि किसी ग़ैर वाजिब शरई को वाजिबे शरई न जाने, बिदअत कहने वाले ख़ुद बिदअत में हैं, कुरआन व हदीस से साबित है कि जो कुछ कुरआन व हदीस ने मना न फरमाया उस से मना करने वाला बिदअती है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 330)

फातिहा रज़्वीया

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक जगह फरमाते हैं कि :

फातिहा ईसाले सवाब का नाम है जो कुछ कुरआन मजीद व दरूद व शरीफ़ से हो सके पढ़ कर सवाब नज़्र करे, हमारे खानदान का मामूल यह है कि –

★ सात बार दरूदे ग़ौसिया।

- ★ फिर एक–एक बार अल्हम्दु शरीफ़ व आयतल–कुर्सी।
- ★ फिर सात बार सूरः इख़्लास।
- ★ फिर तीन बार दरूदे ग़ौसिया।

दरूदे ग़ौसिया यह है

अल्लाहुम म सल्लि अला सय्यदिना व मौलाना मुहम मदिन मअ्दिनिल जूदि वल करमि व अला आलिही व बारक वसल्लम।

और फ़क़ीर (आला हज़रत) इतना ज़ाइद करता है।

व अला आलिहिल किरामि वबनिहिल करीमि व उम्मातिहिल करी मति व बारका वसल्लम।

"फातिहा" और "नज्र व नियाज़"

मुसलमानों को दुनिया से जाने के बाद जो सवाब कुरआन मजीद का तन्हा या खाने वग़ैरह के साथ पहुँचाते हैं उर्फ़ में उसे फातिहा कहते हैं कि इसमें सूरः फातिहा पढ़ी जाती है। औलिया–ए–किराम को जो ईसाले सवाब करते हैं उसे ताज़ीमन नज़्र व नियाज़ कहते हैं।

फातिहा में सवाब पहुँचाने का तरीक़ा

सूरः फातिहा आयतल–कुर्सी एक–एक बार, सूरः इख़्लास तीन बार, या सात बार, या ग्यारह बार, अव्वल आख़िर 3.3 बार या ज़ाइद बार दरूद शरीफ़ पढ़ें।

इसके बाद दोनों हाथ उठा कर अर्ज़ करे कि इलाही मेरे इस पढ़ने (और अगर खाना कपड़ा वग़ैरह भी हों तो उनका नाम भी शामिल करे और इस पढ़ने और इन चीज़ों के देने) पर जो सवाब मुझे अता हुआ है इसे मेरे अमल के लाइक़ न दे, अपने करम के लाइक़ अता फरमा, और इसे मेरी तरफ़ से फलां वली अल्लाह मसलन हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में नज़्र पहुँचा, और उनके आबा–ए–किराम, मशाइख़े एज़ाम, औलाद अम्जाद, मुरीदीन व मुहिब्बीन और मेरे माँ–बाप और फलां–फलां और सैयदना आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से रोज़े क़्यामत तक जितने मुसलमान हो गुज़रे या मौजूद हैं या क़्यामत तक होंगे सबको अता फरमा।

(अहकामे शरीअ़त अव्वल, स0 121)

"बारहवीं शरीफ़" और ग्यारहवीं शरीफ़

हुज़ूरे अक़्दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की विलादते तैयबा के हसीन व जमील मौक़ा पर बारहवीं शरीफ़ के नाम से और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नाम पर ग्यारहवीं शरीफ़ की फातिहा का एहतमाम व इंएक़ाद करना बिला शुबह जाइज़ व मुस्तहब है, इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन व औलिया–ए–किराम के नाम पर ईसाले सवाब करना जाइज़ व दुरुस्त है और बाइसे बरकत व सआदत है। (मुरत्तिब)

ग्यारहवीं शरीफ़ से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

ग्यारहवीं शरीफ़ अपने मरतबा फ़र्दीयत में मुस्तहब है और मरतब–ए–इतलाक़ में कि ईसाले सवाब है सुन्नत है और सुन्नत से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, और यह सुन्नते क़ौलीया मुस्तहब्बा है, और यहाँ ग्यारहवीं शरीफ़ को मना करने वाले नहीं मगर वहाबी या राफ़ज़ी।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 224)

ज़िक्रे मीलाद और क़्याम व सलाम

जो चीज़ शरीअत में मना नहीं वह किसी के कहने से मना नहीं हो सकती बल्कि शरीअत में किसी चीज़ का मना न होना उसके जाइज़ होने की दलील है, ज़िक्रे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उस वक़्त क़्याम व सलाम सब जाइज़ व मुस्तहसन है, इन बातों से शरीअत में कहीं पर मना वारिद नहीं। इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू की ईमान अफ़रोज़ तहरीर मुलाहिज़ा फरमाएं।

विलादते अक़्दस पर ख़ुशी मनाने का हुक्मे कुरआनी

मुसलमानों को जमा करके ज़िक्रे विलादते अक़्दस व फ़ज़ाइले आलिया हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सुनाना, विलादते अक़्दस की ख़ुशी करनी, उसमें हाज़िरीन को खाना या शीरीनी तक़्सीम करनी बिला शुबह जाइज़ व मुस्तहब है, मीलाद मुबारक की ख़ुशी में मकान वग़ैरह को सजाना जाइज़ है क्योंकि जाइज़ ज़ीनत फ़ी नफ़्सेही जाइज़ है और विलादते शरीफ़ा की फरहत व शादमानी की नीयत से ज़िक्रे अनवर की ताज़ीम क़तअन मुस्तहब है।

अल्लाह तआला फरमाता है :

"आप फरमाओ कि : अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर ख़ुशी की जाए।"

(सूरः यूनुस : 58)

और फरमाता है :

"अपने रब की नेमतों का चरचा करो।" (सूर : अज़्ज़ुहा : आ० 11)

"लोगों को अल्लाह के दिन याद दिलाओ।"

(इब्राहीम, 5, फतावा रज़्वीया : जिल्द 12, स० 264)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू इन आयात को पेश करने के बाद एक दूसरे मक़ाम पर फरमाते हैं :

अल्लाह का कौन सा फ़ज़्ल व रहमत, कौन सी नेमत इस हबीबे करीम अलैहि व अला आलेही अफ़्ज़लुस्सलात वत्तस्लीम की विलादत से ज़ाइद है? तमाम नेमतें, तमाम रहमतें, तमाम बरकतें उसी के सदक़े में अता हुईं अल्लाह का कौन सा दिन उस नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़ुहूर पुर नूर के दिन से बड़ा है। तो बिला शुबह क़ुरआने करीम हमें हुक्म देता है कि विलादते अक़्दस पर ख़ुशी करो, मुसलमानों के सामने उसी का चर्चा ख़ूब ज़ोर शोर से करो उसी का नाम मज्लिसे मीलाद है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स० 68)

जशने विलादते तय्यबा मुस्तहब और मातमे वफ़ात मम्नूअ्

इस्लाम में किसी ग़म की यादगार मनाना जाइज़ नहीं क्योंकि ग़म की यादगार मनाने में कोई भलाई और ख़ूबी नहीं है, इसमें कोई ख़ूबी होती तो हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ाते अक़्दस की ग़म परवरी सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी होती, देखो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का माहे विलादत व माहे वफ़ात वही माहे मुबारक रबीउल–अव्वल शरीफ़ है, फिर उलमा–ए–उम्मत व हामियाने सुन्नत ने उसे मातमे वफ़ात न ठहराया बल्कि मौसमे शादी विलादते अक़्दस बनाया। हालांकि हुज़ूर की हयात भी हमारे लिए ख़ैर और हुज़ूर की वफ़ात भी हमारे लिए ख़ैर।

मज्मा बहारुल–अनवार में है :

माहे मुबारक रबीउल–अव्वल ख़ुशी व शादमानी और सर चश्म–ए–अनवार व रहमत सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम का ज़माने ज़ुहूर है, हमें हुक्म है कि हर साल इसमें ख़ुशी ज़ाहिर करें तो हम उसे वफ़ात के नाम से मुकद्दर न करेंगे कि यह तज्दीदे मातम के मुशावेह है और बेशक उलमा ने तस्रीह की हर साल जो सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मातम किया जाता है, मक्रूह है और ख़ास इस्लामी शहरों में इसकी असल नहीं, और औलिया–ए–किराम के उर्सों में नामे मातम से एहतराज़ करते हैं तो हुज़ूर पुर नूर सैयदुल–अस्फ़िया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुआमले में इसे क्यों कर पसन्द कर सकते हैं। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 63)

बाज़ महाफ़िले मौलूद में हुज़ूर का जल्वा अफरोज़ होना

★ इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं :

मुझे सिक़ाह सालेहीन ने ख़बर दी कि उन्होंने बारहा हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मज्लिसे मीलाद शरीफ़ व जल्सा ख़त्मे कुरआन अज़ीम व बाज़ अहादीस में मुशाहिदा किया।

★ नीज़ इमाम मम्दूह फ़रमाते हैं :

बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को इजाज़त है कि आसमान व ज़मीन की सलतनते इलाही में तसर्रुफ़ फरमाने के लिए अपने मज़ाराते तय्यबा से बाहर तशरीफ़ ले जाएं।

★ इमाम इब्ने हजर मक्की फरमाते हैं :

हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रूहे अक़्दस बारहा सत्तर हज़ार सूरतों में जल्वागर होती है हुज़ूर ऐने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस तो बुलन्द व बाला है।

★ मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रूहे अक़्दस हर मुसलमान के घर में तशरीफ़ फरमा है।

यह कहना कि मज्लिसे मुबारक में तजल्ली ख़ास फरमाते हैं यह उनके करम पर है हर जगह ज़रूर नहीं, और जिस ज़लील से ज़लील बन्दे को नवाज़ें कुछ दूर नहीं।

एक हदीस में है हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब मुसलमान का इंतिक़ाल होता है उसकी राह खोल दी जाती है जहाँ चाहे जाता है। (मुसनद अहमद, हाकिम मुस्दरक, फतावा रज़्वीया जिल्द 11, स0 82)

जब एक आम मुसलमान को इंतिक़ाल के बाद आज़ादी मिलती है तो अंबिया–ए–किराम और सैयदुल–अंबिया जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात का अंदाज़ा कौन कर सकता है, उन्हें मज़ाराते तय्यबा से बाहर तशरीफ़ ले जाने की इजाज़त दी गई है। (मुरत्तिब)

ज़िक्रे रसूल, ज़िक्रे ख़ुदा

मज्लिसे मीलाद से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

मज्लिसे मीलादे मुबारक कि रिवायाते सहीहा से हो और जो अश्आर पढ़े मुताबिक़े शरअ़ हों और इल्हान से पढ़ने वाले मर्द ग़ैर अमरद हों मस्जिद में भी जाइज़ है कि मसाजिद ज़िक्रे इलाही के लिए बनीं और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़िक्र भी ज़िक्रे इलाही है।

हदीस में है रब अज़्ज़ा व जल्ल आयते करीमा वरफ़अ्ना लका जिकरक के नुज़ूल के बाद, कि हमने बुलन्द किया तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र, जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़िदमते अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में भेज कर इरशाद फरमाया :

जानते हो मैंने तुम्हारा ज़िक्र तुम्हारे लिए क्योंकर बुलन्द फरमाया :

हुज़ूर ने अर्ज़ की तू ख़ूब जानता है।

फरमाया मैंने तुम्हें अपने ज़िक्र में से एक ज़िक्र बनाया तो जिसने तुम्हारा ज़िक्र किया उसने मेरा ज़िक्र किया। (अश्शिफ़ा, फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स0 608)

मज्लिसे मीलाद में जानवर का ताज़ीम बजा लाना

बाज़ लोग मज्लिसे मीलाद और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम व तक्रीम से जलते हैं और सहीहुल–अक़ीदा मुसलमानों को ज़िक्रे अक़्दस से रोकते हैं हालांकि जिसके दिल में हुज़ूर की ताज़ीम व तौक़ीर होगी वह इन बातों से ख़ुश होगा, जलेगा वह जिसके दिल में हुज़ूर से अदावत व नफ़रत और निफ़ाक़ है। इंसान तो इन बातों को समझ ही सकता है क्योंकि वह अक़्ल व शुऊर और इल्म व इद्राक का मालिक है मगर जानवर जिन्हें अक़्ल व इल्म का हिस्सा न मिला वह भी हुज़ूर की ताज़ीम करते हैं। इस सिलसिले में दो वाक़ए मुलाहिज़ा फरमायें। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

बन्दर ने क़ुरआन शरीफ़ की ताज़ीम की

वहाबिया की तरफ़ इशारा करके आला हज़रत ने फरमाया :

उनकी अक़्लें बन्दर की अक़्ल से भी बदतर हैं, बन्दर के क़ल्ब में अज़मत है क़ुरआने अज़ीम की।

एक मरतबा नन्हें मियाँ (बिरादरे ख़ुर्द आला हज़रत क़िब्ला क़ुद्दिसा सिर्रुहुल–अज़ीज़) अपनी छत पर क़ुरआने अज़ीम पढ़ रहे थे सामने दूर पर एक बन्दर बैठा था, यह किसी काम को उठ कर गये बन्दर दौड़ता हुआ सामने दीवार पर गुज़रा और उस पार जाना चाहता था जैसे ही क़ुरआने अज़ीम के मुक़ाबिल पर आया तो क़ुरआने अज़ीम को सज्दा किया और अपनी राह चला गया।

वक़्ते क़्याम बन्दर ने क़्याम किया

फिर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने यह फरमाया :

मैंने बन्दर को क़्याम करते देखा मैं अपने पुराने मकान में जिस में मेरे मंझले भाई मरहूम रहा करते थे मज्लिसे मीलाद पढ़ रहा था एक बन्दर सामने दीवार पर चिपका मुअद्दब बैठा सुन रहा था जब क़्याम का वक़्त आया मुअद्दब खड़ा हो गया, फिर जब बैठे वह भी बैठ गया, वह बन्दर था वहाबी न था।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कोई शय ऐसी नहीं जो मुझे अल्लाह का रसूल न जानती हो सिवाए सरकश जिन्न और आदमियों के। (कंज़ुल–उम्माल)

साँप ने ज़िक्रे मीलाद सुना

फिर फरमाते हैं कि :

मिर्ज़ा ज़ाकिर बेग साहब ने मुझ से इस क़िस्म के साँप का वाक़या बयान किया कि उन्होंने मज्लिसे मीलाद शरीफ़ की थी जब ख़ूब मज्मा हो गया एक साँप तेज़ी से आया और मिंबर के नीचे बैठ गया जब तक मज्लिस शरीफ़ होती रही बैठा सुनता रहा। ख़त्म के बाद चला गया न आते किसी को आज़ार पहुँचाया, न जाते, लोगों ने बहुत चाहा कि उसे मार दें, मिर्ज़ा साहब फरमाते हैं : मैंने सबको बाज़ रखा कि यह सरकारी मेहमान की हैसियत से है मैं हरगिज़ न मारने दूँगा।

(अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा चहारुम, स0 40)

क़याम ज़िक्रे मीलाद पर उलमा के अक़्वाल व अफ़आल

ज़िक्रे मीलादे मुबारक के वक़्त क़याम करना जाइज़ व मुस्तहसन है उलमाए इस्लाम का यह मामूल रहा और शरीअते मुतह्हरा में इस से कोई मुमानेअत नहीं है जिस चीज़ से शरअ़ ने मना न फ़रमाया व मना नहीं हो सकती। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने ज़िक्रे मीलाद के वक़्त क़याम के इस्तेहबाब व इस्तेहसान पर मुतअद्दद अइम्मा व उलमा के अक़्वाल नक़्ल फरमाए और बाज़ के मामूलात पर भी रौशनी डाली है, आप फरमाते हैं :

ज़िक्रे विलादत हुज़ूर ख़ैरुल–अनाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़याम सदहा साल से दारुल–इस्लाम के शहरों में राइज व मामूल और बड़े–बड़े अइम्मा उलमा में मुक़र्रर व मक़्बूल है, शरीअत में इस से मना वारिद नहीं और बग़ैर मुमानेअत शरई के मना मरदूद व बातिल है। ख़ुसूसन हरमैन तैयबैन मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरह जो दीन व ईमान के मरजा व मब्दा हैं वहाँ के बड़े–बड़े उलमा और चारों मज़ाहिब के मुफ़्तियाने किराम मुद्दतहा मुद्दत से इस फ़ेअ़्ल को करते, उस पर अमल पैरा, इसके क़ाइल और इसे क़बूल करते हैं अइम्मा मोतमदीन ने इसे हराम न फरमाया बल्कि बिला शुबह मुस्तहब व मुस्तहसन ठहराया।

इमाम तक़ीयुद्दीन सुबकी का अमल

अल्लामा बुरहानुद्दीन फरमाते हैं :

बेशक ज़िक्र नाम पाक हुज़ूर सैय्यदुल–अनाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़याम करना इमाम तक़ीयुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाह अलैह से पाया गया जो इस उम्मते मरहूमा के आलिम और दीन व तक़्वा में इमामों के इमाम हैं। और इस क़याम पर उनके मुआसेरीन व हम ज़माना अइम्मा किराम व मशाइख़ुल–इस्लाम ने उनकी मुताबेअ़त व पैरवी की।

इमाम सुबकी के साहबज़ादे इमाम अबू नस्र अब्दुल–वहाब ने तब्क़ाते कुबरा में नक़्ल फरमाया कि :

इमाम सुबकी के हुज़ूर एक जमाअ़ते कसीर उस ज़माना के मुज्तमा हुई, उस मज्लिस में किसी ने इमाम सरसरी के यह अश्आर नअ़्त हुज़ूर सैयदुल–अबरार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में पढ़े, जिनका ख़ुलासा यह है कि मदहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए यह भी थोड़ा है कि सबसे अच्छा ख़ुश नवेस हो उसके हाथ से चाँदी के पत्तर पर सोने के पानी से लिखी जाए, और जो लोग शरफ़े दीनी रखते हैं वह उनकी नअ़्त सुन कर सफ बांध कर सर व क़द या घुटनों के बल खड़े हो जाएं।

इन अश्आर के सुनते ही हज़रत इमाम सुबकी व जुमला उलमाए किराम हाज़िरीने मज्लिस मुबारक ने क़याम फरमाया और इसकी वजह से उस मज्लिस में निहायत उन्स हासिल हुआ।

(इंसानुल–उयून)

आरिफ़ बिल्लाह सैयद जाफर बर ज़ंजी का क़ौल

बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़याम करना उन इमामों ने मुस्तहसन समझा है जो साहिबे रिवायत व दिरायत थे तो शादमानी उसके लिए जिसकी निहायत मुराद व मक़्सूद नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम है।

(अक़्दुल–जौहर फी मूलिदुन्नबीयुल–अज़हर)

मौलाना उस्मान बिन हसन दुम्याती का क़ौल

मौलूद शरीफ़ पढ़ने में ज़िक्रे विलादत हुज़ूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम को क़्याम करना बेशक मुस्तहब व मुस्तहसन है जिसके करने वाले को सवाबे कसीर और फ़ज़्ले कबीर हासिल होगा कि यह ताज़ीम है और कैसी है ताज़ीम उन नबी करीम साहिबे ख़ुल्के अज़ीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की जिनकी बरकत से अल्लाह सुबहानहू तआला हमें ज़ुल्माते कुफ़्र से नूरे ईमान की तरफ़ लाया और उनके सबब हमें दोज़ख़े जहल से बचा कर बहिश्ते मारिफ़त व यक़ीन में दाख़िल फरमाया, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम में ख़ुशनूदी, रब्बुल–आलमीन की तरफ़ दौड़ना है और क़वी तरीन शआइर दीन का आश्कार होना और जो ताज़ीम करे शआइर ख़ुदा की तो वह दिलों की परहेज़गारी से है और जो ताज़ीम करे ख़ुदा के हुर्मतों की तो वह उसके लिए उसके रब के यहाँ बेहतर है। (रिसाला इस्बाते क़्याम)

इस्तेहबाबे क़्याम

फिर दलाइल नक़्ल करने के बाद फरमाया :

यानी इन सब दलाइल से साबित हुआ कि ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त क़्याम मुस्तहब है कि इस में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम है। कोई यह न कहे कि क़्याम तो बिदअत है इसलिए कि हम कहते हैं कि हर बिदअत बुरी नहीं होती जैसा कि इमाम मुहक़्क़िक़ अबू ज़रआ इराक़ी ने यही जवाब दिया जब उन से मीलाद को पूछा था कि मुस्तहब है या मक्रूह और इस में कुछ वारिद हुआ है या किसी पेशवा ने की है तो जवाब में फरमाया : वलीमा और खाना खिलाना हर वक़्त मुस्तहब है, फिर इस सूरत का क्या पूछना जब उसके साथ माहे मुबारका में ज़ुहूरे नबुव्वत की ख़ुशी मिल जाए। और हमें यह अमरे सल्फ़ से मालूम नहीं, न बिदअत होने से कराहत लाज़िम, कि बहुत सारी बिदअतें मुस्तहब बल्कि वाजिब होती हैं जब उनके साथ कोई ख़राबी शामिल न हो, और अल्लाह तआला तौफ़ीक़ देने वाला है।

फिर इरशाद फरमाते हैं :

बेशक उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अह्ले सुन्नत व जमाअत का इज्मा व इत्तिफ़ाक़ है कि यह क़्याम मुस्तहसन है और बेशक नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मेरी उम्मत गुम्राही पर जमा नहीं होती। (रिसाला अस्बाते क़्याम)

अल्लामा मदालक़ी का क़ौल

आप फरमाते हैं : क़ौम की आदत जारी है कि जब मदह ख़्वाँ ज़िक्रे मीलाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक पहुँचता है तो लोग खड़े हो जाते हैं और यह बिदअते मुस्तहब्बा है कि इसमें नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पैदाइश पर ख़ुशी और हुज़ूर की ताज़ीम का इज़्हार है। (दुमयाती)

अल्लामा अबू ज़ैद का क़ौल

ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़्याम मुस्तहसन है। (रिसाला मीलाद)

मौलाना सैयद अहमद ज़ैन दहलान मक्की का क़ौल :

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम से हुज़ूर की शबे विलादत की ख़ुशी करना और मूलिद शरीफ़ पढ़ना और ज़िक्रे विलादते अक़्दस के वक़्त खड़ा होना और मज्लिस शरीफ़ में हाज़िरीन को खाना देना इनके सिवा और नेकी की बातें कि मुसलमानों में राइज हैं कि यह

तब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम से हैं। और यह मस्अला मज्लिसे मीलाद और उसके मुतअल्लिक़ात का ऐसा है जिसमें मुस्तक़िल किताबें तस्नीफ़ हुई और बकसरत उलमाए दीन ने उसका एहतमाम फरमाया और दलाइल व बराहीन से भरी हुई किताबें उसमें तालीफ़ फरमाई, तो हमें इस मस्अला में कलाम तवील करने की हाजत नहीं।

(अद्दुररुस्सुन्नीया फिर्रद्दे अलल–वहाबिया)

अल्लामा जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की का क़ौल

ज़िक्रे मूलिद आतर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़्याम को एक जमाअत सलफ़ ने मुस्तहसन कहा तो वह दिअते हसना है। (फतावा जमाल बिन अब्दुल्लाह)

अल्लामा अंबारी का क़ौल

फिर अल्लामा अंबारी से नक़्ल फरमाते हैं :

इमाम सुबकी और तमाम हाज़िरीने मज्लिस ने क़्याम किया और इस क़द्र इक़्तिदा के लिए बस है। (मौरिदुज़्ज़मान)

मौलाना हुसैन मक्की का क़ौल

ज़िक्रे विलादत के वक़्त क़्याम को बहुत उलमा ने मुस्तहसन रखा और वह हसन है कि हम पर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम वाजिब है।

मौलाना मुहम्मद बिन यहया हंबली का क़ौल

हाँ ज़िक्रे विलादत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़्याम ज़रूर है कि रूहे अक़्दस हुज़ूरे मुअल्ला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जल्वा फरमा होती है। तो उस वक़्त ताज़ीम व क़्याम ज़रूर हुआ।

इमाम अब्दुल्लाह सिराज मक्की का क़ौल

यह क़्याम मशहूर बराबर इमामों में मुतवारिस चला आता है और इसे अइम्मा व हुक्काम ने बरक़रार रखा और किसी ने रद व इंकार न किया लिहाज़ा यह मुस्तहब ठहरा और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सिवा और कौन मुस्तहिक़े ताज़ीम है।

असल दलील

सैयदना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस काफी है कि जिस चीज़ को अहले इस्लाम नेक समझें वह अल्लाह तआला के नज़्दीक भी नेक है।

मौलाना मुहम्मद बिन सुलेमान का क़ौल

आप लिखते हैं, हाँ असल ज़िक्रे मूलिद शरीफ़ और उसका सुनना सुन्नत है। और इस कैफ़ियते मज्मूई के साथ जिसमें क़्याम वग़ैरह होता है, बिदअते हसना मुस्तहब्बा और बड़ी फ़ज़ीलत पसन्दीद–ए–ख़ुदा है कि हदीस अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में वारिद।

जिसे मुसलमान नेक समझें वह ख़ुदा के नज़्दीक नेक है।

और मुसलमान सल्फ़ से आज तक उलमा औलिया सब इसे मुस्तहसन समझते आए तो इस से मना व इंकार न करेगा मगर वह कि ख़ैर और भलाई से रोकने वाला होगा और यह काम शैतान का होगा।

मौलाना अहमद जलीस का क़ौल

विलादत व मोजज़ात व हुलिया शरीफ़ा नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ज़िक्र

करना और उसके सुनने को हाज़िर होना और मकान सजाना और गुलाब छिड़कना और अगरबत्ती सुलगाना और दिन मुक़र्रर करना और ज़िक्रे विलादते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़याम करना, खाना खिलाना, ख़ुरमे बांटना और कुरआन मजीद की चन्द आयतें पढ़ना सब बिला शक व शुबह मुस्तहब है।

मौलाना मुहम्मद सालेह का क़ौल

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की उम्मत अरब व मिस्र व शाम व रूम व अन्दलुस व तमाम बिलादे इस्लाम से इसके इस्तेहबाब व इस्तेहसान पर इज्मा व इत्तिफ़ाक़ किए हुए है।

मौलाना अब्दुर्रहमान बिन अली हिज़रमी का क़ौल

उलमा ने वक़्त ज़िक्रे विलादत नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हुज़ूर की ताज़ीम के लिए क़याम मुस्तहसन समझा और जो चीज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम ठहरी तो उसका अदा करना और बजा लाना हम पर वाजिब हो गया और उसका इंकार न करेगा मगर बिदअती मुख़ालिफ़ तरीक़ा अह्ले सुन्नत व जमाअत जिसकी बात न सुनने के क़ाबिल न तवज्जोह के लाइक़, और हाकिमे इस्लाम पर उसकी ताज़ीर व सज़ा वाजिब है।

आठ उलमा मदीना मुनव्वरह का फतवा

ख़ुलासा मक़्सूद यह है कि मीलाद शरीफ़ में वलीमे करना और हाले विलादत मुसलमानों को सुनाना और ख़ैरात व नेकियाँ बजा लाना और ज़िक्रे विलादत रसूले अमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वक़्त क़याम करना और गुलाब छिड़कना और ख़ुशबुएँ सुलगाना और मकान आरास्ता करना और कुछ कुरआन पढ़ना और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजना और फरहत व सुरूर का ज़ाहिर करना बेशक बिदअते हसना मुस्तहब्बा, फ़ज़ीलते शरीफ़ा मुस्तहसिना है कि हर बिदअत हराम नहीं होती। बल्कि कभी वाजिब होती है। जैसे गुम्राह फ़िरक़ों के रद के लिए दलाइल क़ायम करना और नह्व वग़ैरह वह उलूम सीखना जिनकी मदद से कुरआन व हदीस बख़ूबी समझ में आ सकें।

★ और कभी मुस्तहब होती है, जैसे सरायं और मदरसे बनाना।

★ कभी मुबाह जैसे लज़ीज़ खाने पीने और कपड़ों में वुस्अत करना, तो इन उमूर का इंकार वही करेगा जो बिदअती होगा, उसकी बात सुनना न चाहिए बल्कि हाकिमे इस्लाम पर वाजिब है कि उसे सज़ा दे।

इस फतवा पर तीस उलमा की मुहरें हैं।

ज़िक्रे मीलाद व क़याम का मुंकिर बिदअती है :

उलमाए मक्का मुअज़्ज़मा के फतवा में मीलाद व क़याम का इस्तेहबाब मन्क़ूल है मज़ीद उसमें यह है कि मज्लिस व क़याम का मुंकिर बिदअती है और उस मुंकिर की बिदअते सैयआ व मज़्मूमा कि उसने ऐसी चीज़ पर इंकार किया जो ख़ुदा व रसूल और अह्ले इस्लाम के नज़्दीक नेक थी, जैसा कि हदीस में इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में आया है कि –

जिस चीज़ को मुसलमान नेक एतक़ाद करें वह ख़ुदा के नज़्दीक नेक है।

और यहाँ मुसलमानों से कामिल मुसलमान मुराद हैं, जैसे उलमा–ए–बाअमल और इस मज्लिस व क़याम को अरब व मिस्र व शाम व रूम व उन्दलुस के तमाम उलमाए सल्फ़ ने आज तक मुस्तहसन जाना तो इज्मा हो गया और जो अम्रे इज्मा उम्मत से साबित हो वह हक़ है। गुम्राही नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मेरी उम्मत गुम्राही पर इज्तेमा नहीं करती। (इब्ने माजा)

पस हाकिम शरअ पर लाज़िम है कि मुंकिर को सज़ा दे।"

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 12, स0 61 ता 71)

मौलाना नक़ी अली ख़ाँ बरैलवी का क़ौल

ताजुल–उलमा हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ाँ साहब बरैलवी (वालिदे माजिद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहुमा) फरमाते हैं :

यह क़याम, ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त क्यों है? इसकी वजह निहायत रौशन।

अव्वलन : सदहा साल से उलमा–ए–किराम व बिलादे दारुल–इस्लाम में यूं ही मामूल है।

सानियन : अइम्म–ए–दीन तस्रीह फरमाते हैं कि ज़िक्रे पाक साहबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम मिस्ल ज़ाते अक़्दस के है और ताज़ीम की सूरतों से एक सूरत क़याम भी है और यह सूरत वक़्ते क़ुदूमे मुअ़ज़्ज़म बजा लाई जाती है और ज़िक्रे विलादत शरीफ़, हुज़ूर सैयदुल–मुअज़्ज़मीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आलमे दुनिया में तशरीफ़ आवरी का ज़िक्र है। तो यह ताज़ीम उसी ज़िक्र के साथ मुनासिब हुई।

(इज़ाक़तुल–इसाम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 12, स0 73)

आला हज़रत इमाम रज़ा बरैलवी का क़ौल

ताज़ीम ज़िक्रे अक़्दस मिस्ले ताज़ीम ज़ाते अनवर है, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, ताज़ीमे ज़ात बइख़्तिलाफ़े हालात मुख़्तलिफ़ होती है। मुअ़ज़्ज़म के क़ुदूम के वक़्त क़याम किया जाता है और उसके हुज़ूर के वक़्त बा–अदब उसके सामने बैठना ताज़ीम है, ज़िक्रे शरीफ़ में भी ज़िक्रे क़ुदूम की ताज़ीम क़याम से है और बाक़ी वक़्त की ताज़ीम बा–अदब क़ुऊद से।

(अहकामे शरीअत दोयम, स0 163)

फ़िर्क़हा-ए-बातिला और उनका रद्दो इब्ताल

अहले सुन्नत व जमाअत के अलावा जितने फ़िर्के हैं वह बद–दीन व गुम्राह हैं, बाज़ फ़िर्के काफ़िर महज़ हैं और बाज़ अपने अक़ाइदे बातिला के सबब से अरब व अजम के उलमा–ए–किराम के फ़तावे की रौशनी में काफिर व मुरतद और इस्लाम से ख़ारिज हैं, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने दलाइले शरईया से अक्सर बातिल फ़िर्क़ों का बलीग़ रद्दो इब्ताल फरमाया है और अपनी तसानीफ़ में जगह–जगह उन फ़िर्क़ों की निशानदेही की है ताकि सुन्नी सहीहुल–अक़ीदा और ख़ुश अक़ीदा मुसलमान उनके धोखे और फ़रेब में न आएं गोया सही अक़ाइद की निशान देही और बातिल अक़ाइद के भर पूर रद व इंकार ही का नाम मसलके आला हज़रत है यह बहैसियत अज़ीमुल–मक़ाम मुजद्दिद, आप का तुर्र–ए–इम्तियाज़ है। आपने बातिल फ़िर्क़ों का जगह–जगह जो रद फरमाया है उस.में से कुछ बातों को यक्जा करने की मैंने कोशिश की है। ज़ैल में मुलाहिज़ा हों। एक मक़ाम पर फरमाते हैं। (मुरत्तिब)

हर काफिर हर मुरतद जाहिल बिल्लाह है

मुसलमानों के सिवा अल्लाह तआला को कोई नहीं जानता, कलिमा गो मुरतद अगरचे नमाज़ें पढ़ें, क़ालल्लाहु, क़ालर्रसूल कहें, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को हरगिज़ नहीं जानते।

तमाम काफिर अगरचे बज़ाहिर कलिमा गो, नमाज़ गुज़ार हों जैसे वहाबिया वग़ैरहुम यह सब अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से महज़ जाहिल हैं, जो अल्लाह है उसे जानते नहीं और जिसे अपने ज़ुअम में अल्लाह कह रहे हैं, वह अल्लाह नहीं, क्योंकि कुफ़्र कहते ही जहल बिल्लाह को हैं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 662ए 735)

जितने लोग कलिमा इस्लाम पढ़ते और फिर ज़रूरियाते दीन से किसी शय का इंकार करते हैं, उनका हुक्म मिस्ल काफिर हरबी है कि वह मुर्तद हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 421)

मुनाफ़िक़ीन को मस्जिदे नब्वी से निकाल दिया गया

शुरू इस्लाम में मुनाफ़िक़ लोग मुसलमानों में घुले मिले रहते थे, नमाज़ें साथ पढ़ते, मजालिस में पास बैठते, शरीक रहते, मगर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने साफ इरशाद फरमा दिया था कि यह घाल मेल जो हो रहा है अल्लाह तआला तुम्हें यूं रहने न देगा ज़रूर ख़बीसों को तय्यबों से अलग कर देगा।

उसके बाद भरी मस्जिद में ख़ास जुमा के दिन बरसरे मज्लिस हुज़ूरे अक़्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नाम बनाम एक–एक को फरमाया, ऐ फलां निकल जा तू मुनाफ़िक़ है, नमाज़ से पहले सबको निकाल दिया।

अल्लाह तआला अपने रसूल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मुख़ातिब करके इरशाद फरमाता है :

ऐ नबी जिहाद कर काफिरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर शिद्दत व सख़्ती कर।

(सूरः अत्तरहीम : स0 9)

मुख़ालिफ़ीने दीन के साथ यह बर्ताव उनका है जिन्हें रब्बुल–इज़्ज़त अज़्ज़ा जलालुहू रहमतुल–लिल–आलमीन फरमाता है जिनकी रहमत, रहमते इलाहिया के बाद तमाम जहाँ की रहमत से ज़्यादा है, यह उन्हें हुक्म देता है जिनकी निस्बत फरमाता है बेशक तू बड़े ख़ुल्क़ पर है। तो मालूम हुआ कि मुख़ालिफ़ाने दीन पर शिद्दत व ग़ल्ज़त मनाफ़ी–ए–अख़्लाक़ नहीं बल्कि यही ख़ुल्के हुस्न है।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 46)

फाजिर व फासिक़ की बुराइयाँ बयान करना

फ़ासिक़ व फाजिर और बद-मज़हब की बुराइयाँ लोगों से बयान करना ग़ीबत नहीं बल्कि उनकी बुराइयाँ बयान करने का हुक्म है ताकि लोग उन से बचें। (गुररिव)

हदीस में फरमाया : क्या फाजिर को बुरा कहने से परहेज़ करते हो लोग उसे कब पहचानेंगे, फ़ाजिर की बुराइयाँ बयान करो कि लोग उस से बचें। (अबू बकर बिन अबी अद्दुनिया ज़म्मुल-ग़ीबते, नवादिरुल-उसूल, अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 50)

हज़रत उमर ने एक मुसाफ़िर को निकाल दिया

अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़माना ख़िलाफ़त है, आप मस्जिदे नब्वी से नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ लिए जाते हैं एक मुसाफिर ने खाना माँगा, अमीरुल-मुमिनीन उसे हमराह ले आए, ख़ादिम बहुक्मे अमीरुल-मुमिनीन खाना हाज़िर करता है, इत्तिफ़ाक़न खाते-खाते उसकी ज़ुबान से एक बद मज़हबी का फ़िक़रा निकल जाता है जिस पर हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फौरन उसके सामने से खाना उठवा लेते हैं और ख़ादिम को हुक्म देते हैं कि इसे निकाल दे। (अल-मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 110)

दुश्मन तीन हैं

अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं : दुश्मन तीन हैं।

★ एक तेरा दुश्मन।
★ एक तेरे दोस्त का दुश्मन।
★ और एक तेरे दुश्मन का दोस्त।

यूं ही अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के दुश्मन तीनों क़िस्म हैं।

★ एक तो इब्तिदाअन उसके दुश्मन, वह काफिरान असली हैं।
★ दूसरे वह कि महबूबाने ख़ुदा के दुश्मन हैं, जैसे देवबन्दिया, मिर्ज़ाइया, वहाबिया, रवाफ़िज़।
★ तीसरे वह कि उन दुश्मनों में किसी के दोस्त हैं, यह सब आदाइल्लाह हैं।

हर मुसलमान पर फर्ज़े आज़म है कि अल्लाह के सब दोस्तों से मुहब्बत रखे और उसके सब दुश्मनों से अदावत रखे यह हमारा ऐने ईमान है।

दुश्मने ख़ुदा से इमाम अहमद रज़ा की नफ़रत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि :

बहम्दुलिल्लाह तआला मैंने जब से होश संभाला अल्लाह के सब दुश्मनों से दिल में सख़्त नफ़रत ही पाई, एक बार अपने दिहात को गया था, कोई देही मुक़दमा पेश आया जिस में चौपाल के तमाम मुलाज़िमों को बदायूं जाना पड़ा मैं तन्हा रहा। उस ज़माना में मआज़ल्लाह दर्दे क़ौलन्ज के दौरे हुआ करते थे, उस दिन ज़ुहर के वक़्त से दर्द शुरू हुआ उसी हालत में जिस तरह बना वुज़ू किया, अब नमाज़ को नहीं खड़ा हुआ जाता रब अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ की और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मदद माँगी, मौला अज़्ज़ा व जल्ल मुज़्तर की पुकार सुनता है मैंने सुन्नतों की नीयत बांधी दर्द दर्द बिल्कुल न था, जब सलाम फेरा उसी शिद्दत से था फ़ौरन उठ कर फ़र्ज़ों की नीयत बांधी दर्द जाता रहा जब सलाम फेरा वही हालत थी, बाद की सुन्नतें पढ़ीं दर्द मौक़ूफ़, और सलाम के बाद फिर बदस्तूर, मैंने कहा अब अस्र तक होता रह, पलंग पर लेटा करवटें ले रहा था कि दर्द से किसी पहलू क़रार न था, इतने में सामने से उसी गाँव का एक बरहमन (कि ख़बीस बज़ुअम ख़ुद क़रीब-क़रीब तौहीद का क़ाइल और बराहे मक्र व फ़रेब मेरे ख़ुश करने के लिए मुसलमानों की तरफ़ माइल बनता था) गुज़रा फाटक खुला हुआ था, मुझे देख कर अन्दर आया और मेरे पेट पर

हाथ रख कर पूछा क्या यहाँ दर्द है? मुझे उसका नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफ़रत पैदा हुई कि दर्द को भूल गया और यह तक्लीफ़ उस से बढ़ कर मालूम हुई कि एक काफिर का हाथ मेरे पेट पर है, ऐसी अदावत रखना चाहिए।

बद मज़हबों की हम नशीनी सख़्त मुज़िर और दोस्ताना ज़हरे क़ातिल

अक्सर लोग बद मज़्हबों के पास जान बूझ कर बैठते हैं यह हराम है और बद मज़्हब हो जाने का अन्देशा–ए–कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिए ज़हरे क़ातिल।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं उन्हें अपने से दूर करो और उन से दूर भागो वह तुम्हें गुम्राह न कर दें, कहीं वह तुम्हें फित्ने में न डाल दें। (मुस्लिम)

और अपने नफ़्स पर एतमाद करने वाला बड़े कज़्ज़ाब पर एतमाद करता है, नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बढ़ कर झूठा है न कि जब ख़ाली वादा करे।

सही हदीस में फरमाया : जब दज्जाल निकलेगा कुछ उसे तमाशा के तौर पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तक़ीम हैं हमें उस से क्या नुक़्सान होगा वहाँ जाकर वैसे ही हो जाएंगे।

आदमी उसी के साथ होगा जिस से मुहब्बत करता था

हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं हलफ़ से कहता हूँ कि जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उसका हश्र उसी के साथ होगा। (तिर्मिज़ी)

सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद हमारा ईमान और फिर हुज़ूर का हलफ़ से फरमाना।

दूसरी हदीस में है जो काफिरों से मुहब्बत रखेगा वह उन्हीं में से है।

(इब्ने माजा, अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 87ए 88)

बद मज़हब का रद फ़र्ज़ है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने बद मज़्हबों ख़ुसूसन वहाबिया, देवबन्दिया, ग़ैर मुक़ल्लेदीन वग़ैरह के रद व इब्ताल में ज़ोरे क़लम सर्फ़ किया और एक अहम दीनी फरीज़ा अंजाम दिया, आप फरमाते हैं कि : (मुरत्तिब)

पहले तल्वार थी रद की हाजत न थी, तल्वार के ज़रिया से सारा इंतिज़ाम हो सकता था, अब कि हमारे पास सिवाए रद के कोई इलाज नहीं रद करना फ़र्ज़ है।

हदीस में इरशाद होता है जब फ़ित्ने या बद मज़्हबियाँ ज़ाहिर हों और आलिम अपना इल्म ज़ाहिर न करे तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत, अल्लाह न उसका फ़र्ज़ क़बूल करे न नफ़्ल।

बद मज़्हबों की किताबें देखने का हुक्म

जहाँ बद मज़्हबों का रद करना ज़रूरी है वहीं आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने यह भी फरमाया है कि बेज़रूरत बद मज़्हबों की किताबें देखना जाइज़ नहीं। (मुरत्तिब)

आप फरमाते हैं :

नाक़िस बल्कि कामिल को भी बिला ज़रूरत बद मज़्हबों की किताबें देखना नाजाइज़ है कि इंसान है मुम्किन है कोई बात मआज़ल्लाह दिल में जा जाए और हलाक हो जाए।

★ इमामं हारिस मुहासबी ने बद मज़्हबों के रद में एक किताब तस्नीफ़ की और वह बद मज़्हबों के रद में पहली तस्नीफ़ थी, इमाम अहमद रहमतुल्लाह तआला अलैह ने उन से कलाम करना छोड़ दिया, कहा मुझ से क्या ख़ता हुई मैंने उनका रद ही तो किया है, फरमाया क्या मुम्किन नहीं है कि तुमने जो कलाम बद मज़्हबों का नक़्ल किया है किसी के दिल में जम जाए और वह गुम्राह हो जाए।

★ इमाम सईद बिन जुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रास्ता में तशरीफ़ लिए जाते थे एक बद मज़हब मिला, इमाम से कहा मैं कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ, फरमाया मैं सुनना नहीं चाहता, उसने कहा सिर्फ़ एक बात, आपने छंगुलिया के पहले पोरे पर अंगूठा रख कर फरमाया : आधी बात भी नहीं सुनूंगा। लोगों ने सबब पूछा फरमाया यह उन्हीं में से है।

अकाबिर की तो यह हालत और अब यह हालत के जाहिल सा जाहिल जुटा पड़ता है आरियों से, वहाबियों से और कुछ ख़ौफ़ नहीं करता, जो तमाम फ़ुनून का माहिर हो, तमाम पेंच जानता हो, पूरी ताक़त रखता हो, तमाम हथियार पास हों, उसको भी क्या ज़रूर कि ख़्वाह मख़्वाह भेड़ियों के जंगल में जाए हाँ अगर ज़रूरत ही आ पड़े तो मज्बूरी है, अल्लाह पर तवक्कुल करके उन हथियारों से काम ले। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 4)

इसी मज़्मून को दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी यूं तहरीर फरमाते हैं:

एतराज़ की नज़र से ख़ुबसा की किताबें देखने में सिर्फ़ मुतसल्लिब होना काफ़ी नहीं बल्कि आलिम हो, पूरा माहिर हो, वसीअ़ नज़र हो, उसके साथ मुतसल्लिब सुन्नी भी हो। क्या एतमाद रखता है अपने नफ़्स पर? और जो अपने नफ़्स पर एतमाद करे उसने बड़े कज़्ज़ाब पर एतमाद किया।

हदीस में है : इंसान के दिल रहमान के दस्ते क़ुदरत की दो उंगलियों में हैं फेरता है उनको जिस तरफ़ चाहता है। (तिर्मिज़ी, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 21)

मुनाज़रा में ग़ालिब का मज़्हब इख़्तियार करने की शर्त

मुनाज़रा में यह शर्त करना कि जो मग़लूब हो वह ग़ालिब का मज़्हब इख़्तियार कर ले यह हराम है और अगर दिल में यह है कि दूसरा ग़ालिब होगा तो वह शख़्स अपने मज़्हब को छोड़ देगा तो यह कुफ़्र है।

अइम्म–ए–किराम की तस्रीह है कि जो शख़्स कुफ़्र का इरादा करे मुज़ाफ़न या मुअल्लक़न अभी काफिर हो गया।

★मुज़ाफ़न यह कि मसलन इरादा करे बीस बरस बाद कुफ़्र करेगा तो अभी काफिर हो गया कि कुफ़्र पर राज़ी हुआ।

★ और मुअल्लक़ की शक्ल यह है कि अगर वह काम हो जाए या न हो तो वह शख़्स कुफ़्र करेगा।

हाँ अगर दिल में यह है कि यक़ीनन मैं ही ग़ालिब आऊंगा तो कुफ़्र नहीं।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 19)

मुरतद के यहाँ खाना पीना उस से मेल जोल सब हराम

ज़ानी, शराबी, सूद ख़ोर के यहाँ खाना ख़िलाफ़े औला है (जबकि सूद के अलावा कोई दूसरी आमदनी हो) मगर वह काफिर नहीं और यहूद व नसारा काफिर हैं, फिर यहूद व नसारा बावस्फ़ कुफ़्र के काफिर असली हैं मुरतद नहीं। और राफ़ज़ी, वहाबी, क़ादयानी, नेचरी, चकड़ालवी, मुरतद हैं और अहकामे दुनिया में मुरतद सब काफिरों से बदतर है। और काफिरों को बादशाहे इस्लाम जिज़या लेकर अपने मुल्क में रखेगा, बशर्ते जिज़या उनके जान व माल की हिफ़ाज़त करेगा। लेकिन मुर्तद को तीन दिन से ज़्यादा ज़िन्दा न रखेगा। तीन दिन में मुसलमान हो गया तो बेहतर वरना सुल्ताने इस्लाम उसे क़त्ल कर देगा। मुरतद के यहाँ खाना खाने जाना, उस से मेल जोल सब हराम है।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 9, स0 356)

बिदअती के लिए वईदें

आजकल के वहाबिया, देवबन्दिया, ग़ैर मुक़ल्लिद, राफ़ज़ी वग़ैरह मुब्तदेईन व मुरतदीन हैं। बिदअतियों की ताज़ीम व तौक़ीर हराम है यह मख़्लूक़ में बदतरीन लोग हैं, यह अल्लाह की रहमत से दूर और अज़ाब से क़रीब हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बिदअती लोग तमाम जहान से बदतर हैं। (अबू नईम)

एक हदीस में है : अह्ले बिदअत दोज़ख़ियों के कुत्ते हैं। (दारु कुतनी, ख़ुज़ाई)

हदीस : अल्लाह तआला किसी बद मज़हब की नमाज़ क़बूल करे, न रोज़ा, न ज़कात, न हज, न जिहाद, न फर्ज़, न नफ़्ल, बद मज़हब इस्लाम से यूं निकल जाता है जैसे आटे से बाल। (बैहक़ी)

हदीस : जो किसी बिदअती की तौक़ीर करे उस ने दीन इस्लाम के ढाने पर मदद दी।

(शुअबुल–ईमान)

हदीस : क़द्रियों के पास न बैठो, न उन से सलाम कलाम की इब्तिदा करो।

(अबू दाऊद, मुसनद अहमद)

हदीस : बेशक अल्लाह तआला ने मुझे पसन्द फरमाया और मेरे लिए असहाब व असहार चुने लिए और क़रीब एक क़ौम आएगी कि उन्हें बुरा कहेगी और उनकी शान घटाएगी तुम उनके पास न बैठना, न उनके साथ पानी पीना, न खाना खाना, न शादी ब्याह करना। (अक़ीली, इब्ने हिब्बान)

हदीस : न उनके साथ खाना खाओ न पानी पियो न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो। (इब्ने हिब्बान)

अह्ले बिदअत और फ़ुस्साक़ में फ़र्क़

हदीस में है अल्लाह तआला की तरफ़ तक़र्रुब करो फासिक़ों के बुग़्ज़ से और उन से तुर्श होकर मिलो और अल्लाह की रज़ामन्दी उनकी ख़फ़्गी में ढूढो और अल्लाह की नज़्दीकी उनकी दूरी से चाहो। (इब्ने शाहीन किताबुल–अफ़राद)

जब फ़ुस्साक़ की निस्बत यह अहकाम हैं तो मुब्तदेईन का क्या पूछना है कि यह तो फ़ुस्साक़ से हज़ार दरजा बदतर हैं।

★ फ़ुस्साक़ की नाफरमानी फ़रोअ़ में है।

★ मुब्तदेईन की उसूल में।

★ फ़ुस्साक़ गुनाह करते और उसे बुरा जानते हैं।

★ यह उस से अशद व आज़म में मुब्तला और उसे ऐने हक़ व हुदा जानते हैं।

★ फ़ुस्साक़ तो कभी–कभी नादिम होते और तौबा व इस्तिग़फार करते हैं।

★ मुब्तदेईन तो कभी–कभी इसरार व तकब्बुर करते हैं।

★ फ़ुस्साक़ जब अपने दिल की तरफ़ रुजूअ़ लाते हैं अपने आपको हक़ीर व बदकार और सुलहा को अज़ीज़ व मुक़र्रबे दरबार बताते हैं।

★ यह इतना ग़ुलू करते हैं कि अपने नफ़्स मग़रूर को आला व बाला और अह्ले हक़ व हिदायत को ज़लील व पुर ख़ता ठहराते हैं।

इसलिए हदीस में अह्ले बिदअत की निस्बत बदतरीन ख़ल्क़ वारिद हुआ।

मुनाफ़िक़ व बिदअती को सैयद व सरदार कहना मम्नूअ् है

मुनाफ़िक़ीने जहन्नम के निचले तब्क़े में होंगे और अह्ले बिदअत व अह्ले हवा मख़्लूक़ात में सबसे बदतरीन व ज़लील लोग हैं शरअ् ने उन्हें सैयद या सरदार कह कर पुकारने और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर से मना फ़रमाया है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ व बिदअती को सैयद व सरदार कहना मना है यह कहने में उसकी ताज़ीम है और मुनाफ़िक़ की ताज़ीम व तक्रीम हराम व मम्नूअ् है।

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं मुनाफ़िक़ को ऐ सरदार कह कर न पुकारो कि अगर वह तुम्हारा सरदार हुआ तो बेशक तुमने अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल को नाराज़ किया। (अबू दाऊद, निसाई)

दूसरी हदीस में है जब मुनाफ़िक़ को कोई शख़्स ऐ सरदार कह कर पुकारे तो बेशक वह अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल को ग़ज़ब में लाया।

(हाकिम, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 3, स० 292ए 293ए 294ए मुल्तक़िज़न)

बद मज़्हबों से मेल जोल की मुमानेअत

बद मज़्हबों की सोहबत ज़हरे क़ातिल है उनकी हम नशीनी, उनकी रिफ़ाक़त, उन से दोस्ती, उनके साथ खाना पीना, शादी ब्याह करना नाजाइज़ व हराम है इस सिलसिले में चन्द अहादीसे करीमा मुलाहिज़ा हों। (मुरत्तिब)

हदीस : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उन से अलग रहो उन्हें अपने से दूर रखो कहीं वह तुम्हें बहका न दें, वह तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें। (मुस्लिम)

हदीस : वह बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, मर जाएं तो जनाज़े पर हाज़िर न हो, जब उन्हें मिलो तो सलाम न करो। (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

हदीस : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं उन से बेज़ार हूँ वह मुझ से बेइलाक़ा हैं, उन पर जिहाद ऐसा है कि काफ़िराने तुर्क व दैलम पर। (दैलमी)

हदीस : जब किसी बद मज़्हब को देखो तो उसके रूबरू उस से तुर्श रूई करो इसलिए कि अल्लाह तआला हर बद मज़्हब को दुश्मन रखता है उनमें कोई पुल सिरात पर गुज़र न पाएगा बल्कि टुक्ड़े–टुक्ड़े हो कर आग में गिर पड़ेंगे जैसे टेड़ी और मक्खियाँ गिरती हैं। (इब्ने असाकिर)

हदीस : जो किसी बद मज़्हब की तरफ़ उसकी तौक़ीर करने को चले उसने इस्लाम के ढाने में इआनत की। (तबरानी)

उलमा फ़रमाते हैं कि बद मज़्हब का हुक्म उस से बुग़्ज़ रखना, उसे ज़िल्लत देना, उसका रद करना, उसे दूर हाँकना है।

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया : जो किसी बद मज़्हब से मुहब्बत रखे उसके अमल हब्त हो जाएंगे और ईमान का नूर उसके दिल से निकल जाएगा। और जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे को जाने कि वह बद मज़्हब से बुग़्ज़ रखता है तो मुझे उम्मीद है कि मौला सुब्हानहू व तआला उसके गुनाह बख़्श दे अगरचे उसके अमल थोड़े हों। जो किसी बद मज़्हब को राह में आता देखो तो तुम दूसरी राह लो। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 6, स० 103ए 104)

वहाबी कौन?

इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी के मुत्तबेअ् और उसके मानने वालों को वहाबी कहते हैं। (मुरत्तिब)

यह शक़ी गरोह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर नबुव्वत ख़त्म होने का साफ़ मुन्किर है, ख़ातमुन्नबीयीन के मानी में तहरीफ़ करता है और बमानी आख़िरुन्नबीयीन लेने

को ख़याल जुह्हाल बताता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के छे: या सात मिस्ल मौजूद मानता है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 191)

वहाबिया की इज्माली शिनाख़्त

वहाबी एक बेदीन फिर्क़ा है जो महबूबाने ख़ुदा की ताज़ीम से जलता है और तरह–तरह के हीलों से उनके ज़िक्र व ताज़ीम को मिटाना चाहता है। इब्तिदा उसकी इब्लीसे लईन से है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने ताज़ीम सैयदना आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का हुक्म दिया और उस मल्ऊन ने न माना। और ज़माना इस्लाम में उसका हादी ज़ुल–ख़ुवैसरा तमीमी हुआ जिसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने रू–ब–रू हुज़ूर की शाने अरफ़ा में कलिमए तौहीन कहा।

उसके बाद एक पूरा गरोह ख़्वारिज का उस तरीक़ पर चला जिनको अमीरुल–मुमिनीन मौला अली ने क़त्ल किया, लोगों ने कहा हम्द अल्लाह को जिसने उनकी नजासतों से ज़मीन को पाक किया, अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया यह मुन्क़ता नहीं हुए, अभी उन में के माओं के पेटों में हैं, बापों की पीठों में हैं, जब–जब उन में एक संगत काट दी जाएगी दूसरी सर उठाएगी यहाँ तक कि उनका पिछला गरोह दज्जाल के साथ निकलेगा। (बुख़ारी)

इस हदीस के मुताबिक़ हर ज़माना में यह लोग नए नाम से ज़ाहिर होते रहे यहाँ तक कि बारहवीं सदी के आख़िर में इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी उस फ़िर्क़ा का सरग़ना हुआ और उसने किताबुत–तौहीद लिखी और तौहीदे इलाही अज़्ज़ा व जल्ल के पर्दे में अंबिया व औलिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सैयदुल–अनाम अलैहि अफ़ज़लुस्सलातु वस्सलाम की तौहीन दिल खोल कर की, उसकी तरफ़ निस्बत करके उस गरोह का नाम नज्दी वहाबी हुआ।

बानी फ़ित्ना वहाबियत, हिन्दुस्तान में इस्माईल देहलवी

हिन्दुस्तान में इस फ़ित्ना मल्ऊना को इस्माईल देहलवी ने फैलाया, किताबुत–तौहीद का तरजमा किया उसका नाम तक़्वियतुल–ईमान रखा, दिली अक़ीदा वह है जो तक़्वियतुल–ईमान में कई जगह साफ़ लफ़्ज़ों में लिख दिया कि "अल्लाह के सिवा किसी को न मान औरों का मानना महज़ ख़ब्त है" उसके मुत्तबईन जो गरोह हैं अक़ाइद में सब एक हैं मगर आमाल में यूं मुतफ़र्रिक़ हुए कि –

एक फ़िर्क़ा ने तक़्लीद को भी तर्क किया और ख़ुद अह्ले हदीस बने यह ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी हैं, इनका सर गरोह नज़ीर हुसैन देहलवी और कुछ पंजाबी बांगली थे और हैं।

और मुक़ल्लिद वहाबियों के सर गरोह रशीद अहमद गंगोही और क़ासिम नानौतवी और अब अशरफ़ अली थानवी।

जो इन लोगों को अच्छा जाने या तक़्वियतुल–ईमान वग़ैरा उनकी किताबों को माने या उनके गुम्राह बद–दीन होने में शक करे वह वहाबी है।

वहाबी की अलामत हदीस में इरशाद हुई कि जाहिरन शरीअत के बड़े पाबन्द बनेंगे, तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के आगे हक़ीर जानोगे और अपने रोज़ों को उनके रोज़ों के आगे और अपने आमाल को उनके आमाल के आगे, क़ुरआन पढ़ेंगे मगर उनके गले से नीचे न उतरेगा यानी दिल में उसका कुछ असर न होगा, बातें बज़ाहिर अच्छी करेंगे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

और एक रिवायत में है हदीस, हदीस बहुत पुकारेंगे, बईं हमा हाल यह होगा निकल जाएंगे दीन से ऐसे जैसे तीर निकल जाता है निशाना से, फिर लौट कर दीन में न आएंगे, उनकी अलामत सर मुंडाना होगी, तहबन्द या पाइजामे बहुत ऊंचे।

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 11, स0 37ए 38)

नज्दियों का ख़ुरूज और उनका ज़ुल्म व सरकशी

एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू वहाबिया की शिनाख़्त और उनके ज़ुल्म व तअद्दी से मुतअल्लिक़ मजीद फरमाते हैं :

पैरूवाने इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी वह हैं जिन्होंने नज्द से ख़ुरूज करके हरमैन मोहतरमैन पर ग़लबा हासिल किया और वह अपने आपको कहते तो हंबली थे मगर उनका यह अक़ीदा था कि बस वही मुसलमान और जो उनके मज़्हब पर नहीं वह सब मुश्रिक हैं, इस वजह से उन्होंने अह्ले सुन्नत व उलमाए अह्ले सुन्नत का क़त्ल मुबाह ठहरा लिया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनकी शौकत तोड़ दी और उनके शहर वीरान किए और लश्कर मुस्लेमीन को उन पर फतह बख़्शी 1233 हिजरी में।

यह फित्ना शुनीआ वहाँ से धुतकारा गया और ख़ुदा व रसूल के पाक शहरों से निकाला हो कर अपने लिए जगह ढूँढता ही था कि नज्द के टीलों से दारुल–फ़ितन हिन्दुस्तान की नर्म ज़मीन उसे नज़र पड़ी, आते ही यहाँ अपने क़दम जमाए, बानी फित्ना ने कि उस मज़्हब ना मुहज़्ज़ब का मुअल्लिम सानी हुआ, वही रंग आहंग कुफ़्र व शिर्क पकड़ा कि उन मादूदे चन्द के सिवा तमाम मुसलमान मुश्रिक, यहाँ यह ताइफ़ा ख़ुद मुतफ़र्रिक़ हो गया, एक फ़िर्क़ा बज़ाहिर मसाइले शरईया में तक़्लीदे अइम्मा का नाम लेता रहा, दूसरे ने उसे भी बालाए ताक़ रख दिया।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ख़्वारिज़ को बदतरीन ख़ल्कुल्लाह जानते कि उन्होंने वह आयतें जो काफिरों के हक़ में उतरीं उठा कर मुसलमानों पर रख दीं, बेऐनेही यही हालत वहाबिया की है कि हमेशा यह बेबाक लोग अह्ले सुन्नत व अइम्मा अह्ले सुन्नत को उसका मिस्दाक़ बताते हैं।

इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का यह क़ौल भी मन्कूल है कि उन ख़ार्जीयों से बदतर वह लोग हैं कि अशरार यहूद के हक़ में जो आयतें उतरीं, उन्हें उम्मते महफ़ूज़ा मरहूमा के उलमा पर ढालते हैं अल्लाह तआला ज़मीन को उनकी ख़बासत से पाक करे।

गरोहे वहाबिया की असल

असल इस गरोह नाहक़ पज़ह की नज्द से निकली सही बुख़ारी शरीफ़ में है।

यानी हुज़ूर पुर–नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई :

★ इलाही हमारे लिए बरकत दे हमारे शाम में।

★ इलाही हमारे लिए बरकत दे हमारे यमन में।

सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह और हमारे नज्द में।

हुज़ूर ने दोबारा वही दुआ की।

★ इलाही हमारे लिए बरकत कर हमारे शाम में।

★ इलाही हमारे लिए बरकत बख़्श हमारे यमन में।

सहाबा ने फिर अर्ज़ की या रसूलल्लाह, और हमारे नज्द में।

उस पर हुज़ूर ने नज्द की निस्बत फरमाया वहाँ ज़लज़ले और फित्ने हैं और वहीं से निकलेगी संगत शैतान की।" (बुख़ारी)

इस ख़बरे सादिक़ मुख़्बिर सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुताबिक़ अब्दुल वहाब नज्दी के पेसर व इत्तिबा ने तेरहवीं सदी में हरमैन तैयबैन पर ख़ुरूज किया और नाकरदनी कामों, नागुफ़्तनी बातों से कोई दक़ीक़ा ज़लज़ला व फ़ित्ना का उठा न रखा।

अक़ाइदे वहाबिया का हासिल

उनके अक़ाइदे बातिला ज़ाइग़ा का हासिल यह था कि आलम में वही मुश्त ज़लील यानी मुट्ठी भर मुसलमान हैं बाक़ी तमाम मुमिनीन मआज़ल्लाह मुश्रिक, उसी पर उन्होंने हरमे ख़ुदा व हरीमे मुस्तफ़ा अलैहि अफ़ज़लुस्सलात वस्सना को अयाज़ बिल्लाह दारुल–हरब, और वहाँ के मुकर्रम बाशिन्दे, हमसाइगाने ख़ुदा वह रसूल को काफ़िर व मुश्रिक ठहराया, और बनामे जिहाद ख़ुरूज करके लवाए फ़ित्ना उज़्मा पर शैतनते कुबरा का परचम उड़ाया।

(फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स० 285)

वहाबी किसे कहते हैं ?

वहाबिया से मुतअल्लिक़ एक और सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

इन दयार में वहाबी उन लोगों को कहते हैं जो इस्माईल देहलवी के पैरू और उसकी किताब तक़्वियतुल–ईमान के मोतक़िद हैं, यह लोग मिस्ल शीआ ख़ार्जी मोतज़ेला वग़ैरहुम अह्ले सुन्नत व जमाअत के मुख़ालिफ़ मज़्हब हैं उन में से जिस शख़्स की बिदअत हद्दे कुफ़्र तक न हो, यह उस वक़्त था। अब क़ुबराए वहाबिया ने खुले–खुले ज़रूरियाते दीन का इंकार किया और तमाम वहाबिया उस में उनके मुवाफ़िक़ या कम अज़ कम उनके हामी या उन्हें मुसलमान जानने वाले हैं और यह सब सरीह कुफ़्र हैं तो अब वहाबिया में कोई ऐसा न रहा जिसकी बिदअत कुफ़्र से गिरी हुई हो ख़्वाह ग़ैर मुक़ल्लिद हो या बज़ाहिर मुक़ल्लिद, नमाज़ उसके पीछे मक्रूहे तहरीमी है और जो इस हद तक पहुँच गई तो इक़्तिदा उसकी असलन सही नहीं। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 3, स० 169)

वहाबिया के बाज़ अक़ाइदे बातिला

वहाबिया के बाज़ ख़ुराफ़ात व अक़ाइद और उन पर हुक्म कुफ़्र व इर्तिदाद से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक मक़ाम पर तहरीर फरमाते हैं :

वह वहाबी कि हुज़ूर पुर नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मिस्ल सात या छे: या दो या एक ख़ातमन्नबीयीन किसी तब्क़ा ज़मीन में कभी मौजूद माने, या हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद किसी और को नबुव्वत मिलनी जाइज़ माने और उसे आयते करीमा व ख़ातमन्नबीयीन के मुख़ालिफ़ न समझे, या नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन शाने अक़्दस के लिए हुज़ूर को बड़ा भाई, अपने आपको छोटा भाई कहे, या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की निस्बत यह नापाक कलिमा लिखे कि मर कर मिट्टी में मिल गये।

इसी तरह जो बद मज़्हब ज़रूरियाते दीने इस्लाम में से किसी अक़ीदा का मुंकिर हो या उस में शक करे, या तावीलें गढ़े, ब–इजमाअ तमाम उलमाए इस्लाम वह सब के सब काफ़िर व मुरतद हैं। अगरचे लोगों के सामने कलिमा नमाज़, कुरआन पढ़ते, रोज़ा रखते, अपने आपको सच्चा पक्का मुसलमान जताते हों, कि जब वह ज़रूरियाते इस्लाम के मुंकिर हुए तो उन्होंने ख़ुदा व रसूल व कुरआन को साफ़–साफ़ झुठलाया फिर यह झूठे तौर पर कलिमा वग़ैरह क्या नफ़ा दे सकता है। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माना में भी मुनाफ़िक़ लोग कलिमा व नमाज़ पढ़ते और अपने आपको क़समें खा–खा कर मुसलमान बताते थे, अल्लाह तआला ने उनकी एक न सुनी और साफ–साफ फरमा दिया।

अल्लाह गवाही देता है कि यह लोग झूठा दावा इस्लाम करते हैं।

(अल–मुनाफ़िक़ून, 1, फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स० 330)

सबसे पहला बेअदब व मग़रूर वहाबी

एक रोज़ बारगाहे रिसालत में सहाबा किराम हाज़िर हैं एक शख़्स आया और किनारा मज्लिसे अक़्दस पर खड़े हो कर मस्जिद में चला गया इरशाद फरमाया कि कौन है जो उसे क़त्ल करे, सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उठे और जाकर देखा वह निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ रहा है, सिद्दीक़ अकबर का हाथ न उठा कि ऐसे नमाज़ की हालत में क़त्ल करें वापस हाज़िर हुए और सब माजरा अर्ज़ किया।

इरशाद फरमाया : कौन है कि उसे क़त्ल करे फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उठे और उन्हें भी वही वाक़या पेश आया।

हुज़ूर ने फिर इरशाद फरमाया कौन है कि उसे क़त्ल करे मौला अली उठे और अर्ज़ की कि या रसूलल्लाह मैं, फरमाया हाँ तुम, अगर तुम्हें मिले, मगर तुम उसे न पाओगे यही हुआ, मौला अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जब तक जाएं वह नमाज़ पढ़ कर चलता हुआ।

इरशाद फरमाया अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो उम्मत पर से बड़ा फ़ित्ना उठ जाता। (अल–ख़साइसुल–कुबरा)

यह था वहाबिया का बाप जिसकी ज़ाहिरी व मानवी नस्ल आज दुनिया को गन्दा कर रही है, उसने मज्लिसे अक़्दस के किनारे पर खड़े हो कर एक निगाह सब पर की और दिल में यह कहता हुआ चला गया था कि मुझ जैसा उन में एक भी नहीं, यह ग़ुरूर था उस ख़बीस को अपनी नमाज़ व तक़्दुस पर, और न जाना कि नमाज़ हो या कोई अमले सालेह वह सब उस सरकार की ग़ुलामी व बन्दगी की फरअ़ है, जब तक उनका ग़ुलाम न हो ले कोई बन्दगी काम नहीं दे सकती, इसलिए कुरआने अज़ीम में उनकी ताज़ीम को अपनी इबादत से मुक़द्दम रखा कि फरमाया :

ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह व रसूल पर और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो यानी नमाज़ पढ़ो।

तो सब में मुक़द्दम ईमान है कि बे उसके ताज़ीमे रसूल, मक़्बूल नहीं, उसके बाद ताज़ीमे रसूल है कि बे उसके नमाज़ और कोई इबादत मक़्बूल नहीं।

एक बेअदब की अद्ले नब्वी पर गुस्ताख़ाना तन्क़ीद

ग़ज़्व–ए–हुनैन में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जो ग़नाइम तक़्सीम फरमाए उस पर एक वहाबी ने कहा कि मैं इस तक़्सीम में अद्ल नहीं पाता क्योंकि किसी को ज़्यादा किसी को कम अता फरमाया, उस पर फारूक़े आज़म ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह इजाज़त दीजिए कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ, फरमाया कि उसे रहने दे कि उसकी नस्ल से ऐसे–ऐसे लोग पैदा होने वाले हैं (वहाबिया की तरफ़ इशारा फरमाया) उस से फरमाया अफसोस अगर मैं तुझ पर अद्ल न करूं तो कौन अद्ल करेगा। और फरमाया अल्लाह रहम फरमाए मेरे भाई मूसा पर कि उस से ज़ाइद ईज़ा दिए गये।

उलमा फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक उस दिन की अता सख़ी बादशाहों की उम्र भर की दाद व दहिश से ज़ाइद थी, जंगल ग़नाइम से भरे हुए हैं और हुज़ूर अता फरमा रहे हैं और माँगने वाले हुजूम करते चले आते हैं और हुज़ूर पीछे हटते जाते हैं, यहाँ तक कि जब अमवाल सब तक़्सीम हो लिए एक आराबी ने रिदाए मुबारक बदन अक़्दस पर से खींच ली कि शाना व पुश्त मुबारक पर उसका निशान बन गया, उस पर इतना फरमाया ऐ लोगो जल्दी न करो, वल्लाह कि तुम मुझ को किसी वक़्त बख़ील न पाओगे। (बुख़ारी)

हक़ है ऐ मालिक अर्श के नाइबे अकबर, क़सम है उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा कि दोनों जहान की नेमतें हुज़ूर ही की अता हैं, दोनों जहाँ हुज़ूर की अता से एक हिस्सा हैं।

इमाम बौसेरी रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं :

बेशक दुनिया व आख़िरत हुज़ूर की बख़्शिश से एक हिस्सा हैं और लौह व क़लम के तमाम उलूम मा काना व वमा यकूनु हुज़ूर के उलूम से एक टुकड़ा। सल्लल्लाहु तआला अलैका व सल्लमा व अला आलिका व सहबिका व बारका व करमा। (क़सीदा बुर्दा)

हज़रत अली का वहाबिया के क़त्ल का हुक्म देना

वहाबिया वह फ़िर्क़ा है जिसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम से फ़हमाइश की इजाज़त चाही थी और बहुक्म अमीरुल–मुमिनीन तशरीफ़ ले गये और उन से पूछा क्या बात अमीरुल–मुमिनीन की तुम को नापसन्द आई, उन्होंने कहा वाक़या सिफ़्फ़ीन में अबू मूसा अशअरी को हकम बनाया यह शिर्क हुआ कि अल्लाह तआला फरमाता है :

हुक्म नहीं मगर अल्लाह के लिए।

इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया : इसी क़ुरआने करीम में यह आयत भी तो है। (सूरः निसा : 35)

ज़न व शौहर में ख़सूमत हो एक हकम उसकी तरफ़ से भेजो, एक हकम उसकी तरफ़ से अगर वह दोनों इस्लाह चाहें तो अल्लाह उन में मेल कर देगा।

देखो वही तरीक़–ए–इस्तिदलाल है जो वहाबिया का होता है कि इल्मे ग़ैब व इम्दाद व ग़ैरहा में ज़ाती व अताई के फ़र्क़ से आँख बन्द और नफ़ी की आयतों पर दावे ईमान और इस्बात की आयतों से कुफ़्र।

इस जवाब को सुन कर उन में से पाँच हज़ार ताइब हुए और पाँच हज़ार के सर पर मौत सवार थी वह अपनी शैनत पर क़ाइम रहे, अमीरुल–मुमिनीन ने उनके क़त्ल का हुक्म फरमाया।

(अल–ख़साइसुल–कुबरा)

मौला अली का इल्म बिल–मुग़ीब

इमाम हसन व इमाम हुसैन और दीगर अकाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को उनके क़त्ल में तअम्मुल हुआ कि यह क़ौम रात भर तहज्जुद और दिन भर तिलावत में बसर करती है हम क्यों कर उन पर तल्वार उठाएं, मगर अमीरुल–मुमिनीन को तो आलिमे मा काना वमा यकून सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़बर दे दी थी कि नमाज़ रोज़ा वग़ैरह ज़ाहिरी आमाल के बशिद्दत पाबन्द होंगे बईं हमा दीन से ऐसा निकल जाएंगे जैसे तीर निशाना से, क़ुरआन पढ़ेंगे मगर उनके गलों से नीचे नहीं उतरेगा, अमीरुल–मुमिनीन के हुक्म से लश्कर उनके क़त्ल पर मज्बूर हुआ ऐन मारका में ख़बर आई कि वह नहर के उस पार उतर गये, अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया वल्लाह उस में से दस उस पार न जाने पाएंगे सब उसी तरफ़ क़त्ल होंगे, जब सब क़त्ल हो चुके अमीरुल–मुमिनीन ने लोगों के दिलों से उनके तक़्वा व तहारत व तहज्जुद व तिलावत का वह ख़दशा दफ़ा करने के लिए फरमाया : तलाश करो अगर उन में ज़ुस्सदिया पाया जाए तो तुमने बदतरीन अह्ले ज़मीन को क़त्ल किया, तलाश किया गया लाशों के नीचे निकला जिसका एक हाथ पिस्तान ज़न के मुशाबेह था अमीरुल–मुमिनीन ने तक्बीर कही और हम्दे इलाही बजा लाए और लश्कर के दिल का शुबह उस ग़ैब की ख़बर बताने और मुताबिक़ आने से ज़ाइल हो गया।

किसी ने कहा हम्द है उसे जिसने उनकी नजासत से ज़मीन को पाक किया, अमीरुल–मुमिनीन ने फ़रमाया क्या समझते हो कि यह लोग ख़त्म हो गये हरगिज़ नहीं, उन में से कुछ माँ के पेट में हैं, कुछ बाप की पीठ में, जब उन में से एक गरोह हलाक होगा दूसरा सर उठाएगा यहाँ तक कि उनका पिछला गरोह दज्जाल के साथ निकलेगा।

वहाबिया की निशानियाँ

यही वह फ़िर्क़ा है कि हर ज़माना में नए रंग, नए नाम से ज़ाहिर होता रहा और अब अख़ीर वक़्त में वहाबिया के नाम से पैदा हुआ, उनकी जो जो अलामतें सही हदीसों में इरशाद फरमाई हैं सब उन में मौजूद हैं।

★ "तुम उनकी नमाज़ के आगे अपनी नमाज़ को हक़ीर जानोगे उनके रोज़ों के आगे अपने रोज़ों को।

★ उनके आमाल के आगे अपने आमाल को, कुरआन पढ़ेंगे उनके गलों से नीचे न उतरेगा।

★ बज़ाहिर वह बात कहेंगे कि सबकी बातों से अच्छी मालूम हो।

★ या बात–बात पर हदीस का नाम लेंगे और हाल यह होगा कि दीन से निकल जाएंगे जैसे तीर निशाना से।

★ उनकी अलामत यह है कि उन में से अक्सर सर मुंडे, घटनी इज़ारों वाले।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

उनके पेशवा इब्ने अब्दुल–वहाब नज्दी को सर मुंडाने में यहाँ तक ग़ुलू था कि औरत उसके दीने नापाक में दाख़िल होती उसका सर भी मुंडा देता कि ज़माना कुफ़्र के बाल हैं उन्हें दूर कर, यहाँ तक कि एक औरत ने कहा जो मर्द तुम्हारे दीन में आते हैं उनकी दाढ़ियाँ मुंडवाया करो कि वह भी तो ज़माना कुफ़्र के बाल हैं उस वक़्त से बाज़ आया। और अब वहाबिया को देखिए उन में अक्सर वही सर मुंडाने और घुटने पाइंचे वाले हैं। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स० 63 ता 67)

इस्माईल देहलवी की वहाबियत नज्दीयत

हिन्दुस्तान में वहाबियत को फ़रोग़ देने वाला यही शख़्स इस्माईल देहलवी है उसने इब्ने अब्दुल–वहाब नज्दी की "किताबुत्तौहीद" का "तक्वियतुल–ईमान" के नाम से उर्दू में तरजमा किया, इस्माईल देहलवी की नापाक कोशिश और इस बदनाम ज़माना किताब से मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ व इंतिशार पैदा हुआ और मुसलमान फ़िर्क़ों में बट गये। (मुरत्तिब)

इस्माईल देहलवी के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं : मेरा मसलक यह है कि वह यज़ीद की तरह है अगर कोई काफिर कहे हम मना न करेंगे और ख़ुद कहेंगे नहीं, अल्बत्ता ग़ुलाम अहमद, सैयद अहमद, ख़लील अहमद, रशीद अहमद, अशरफ़ अली के कुफ़्र में जो शक करे वह ख़ुद काफ़िर है।

इस्माईल देहलवी की मक्कारी का एक क़िस्सा

एक मरतबा मौलाना फ़ज़्ले रसूल रहमतुल्लाह तआला अलैह जो मेरे पीर व मुर्शिद (सैयद आले रसूल मियाँ) रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के साथ हज़रत मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह (जो मौलाना बहरुल–उलूम मलिकुल उलमा के शागिर्द थे) से पढ़ते थे दिल्ली में थे, जल्स–ए–वहाबिया में तशरीफ़ ले गये वहाँ हाज़िरीन पर काक (रोटी) और छोहारे बरसा करते थे चुनांचे हस्बे दस्तूर आपके सामने भी बौछार हुई, एक काक और एक छोहारा आपको भी मिला, आपने छोहारा तोड़ा तो उस में से कीड़ा निकला और काक का किनारा जला हुआ, यह देख कर तबस्सुम किया और बआवाज़ बुलन्द कहा साहिबो! आज तक तो सुना करते थे कि फ़रिश्ते भूलते

नहीं, यह कैसा भूल गये कि रोटी भी जला दी, और सुनते थे कि जन्नत का मेवह सड़ता गलता नहीं, तअज्जुब है कि छोहारों में कीड़े पड़ गये, उस पर बहुत शोर व ग़ुल हुआ आपको ग़ुस्सा आया पर्दा को हटाया जिसके पीछे से यह बारिश हो रही थी। देखा तो इस्माईल देहलवी का एक ग़ुलाम जिसका नाम अब्दुल्लतीफ़ था एक झोली में काक और एक में छोहारे लिए बैठा है; पर्दा हटते ही पर्दा फ़ाश हो गया।

जल्स–ए–वहाबिया की शिर्कत से उस्ताज़ नाराज़

उसके बाद हज़रत मौलाना फ़ज़्ले रसूल साहब दिल्ली से लखनऊ हज़रत मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अन्दर से ख़बर आई कि आने की मुमानेअत है आप चौखट पर बैठ गये और रोने लगे और अर्ज़ की कि मेरी क्या ख़ता है मालूम हो कि वह क़ाबिले मुआफ़ी भी है या नहीं? जब बहुत देर गुज़र गई तो मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह बाहर तशरीफ़ लाए और फरमाया तुम्हें मैंने इसीलिए पढ़ाया था कि वहाबियों के जल्सों में जाओ। आपने अर्ज़ की कि इतना तो मालूम हो गया कि मेरी ख़ता क़ाबिले मुआफ़ी है, और फिर आपने सारा वाक़या इस्माईल देहलवी के मक्र व फरेब का अर्ज़ किया और कहा मैं उसका सिर्फ़ पर्दा फ़ाश करने को गया था कि न मालूम कितने बन्दगाने ख़ुदा उसकी अय्यारी से गुम्राह हो रहे थे, आप सुन कर ख़ुश हुए और राज़ी हो गये। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 93ए 94)

मुनाज़रा के बारे में इमाम अहमद रज़ा का इरशाद

आरिया के मुनाज़िर राम चन्द्र की चर्ब ज़ुबानी और बेहयाई का आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की मज्लिस में ज़िक्र हो रहा था कि बात समझने की लियाक़त नहीं रखता बेहयाई से कुछ न कुछ कहे ज़रूर जाता है उस पर आपने इरशाद फरमाया :

सख़्त ग़लती है कि ऐसों से ज़ुबानी बात चीत हो, उसका हासिल यही होता है कि वह कुछ न कुछ बके जाएगा जिस से लोग जानें कि बड़ा मुक़र्रिर है, बराबर जवाब दे रहा है इंसान में यह क़ुव्वत नहीं कि ज़ुबान बन्द कर दे। बेहया कुफ़्फ़ार अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर न चूकेंगे वहाँ भी ज़ुबान चल ही जाएगी यहाँ तक कि मुँह पर मुहर फरमाई जाएगी और आज़ा को हुक्म होगा बोल चलो, आज हम उनके मुँह पर मुहर रख देंगे और उनके हाथों को बोलने की क़ुव्वत देंगे और उनके पैर गवाही देंगे जो वह करते थे।

तो ऐसों से हमेशा तहरीरी गुफ़्तगू होना चाहिए कि मुकरने, बदलने, बिचलने की गली न रहे, बहुत धोखा होता है कि वहाबिया वग़ैरह से फ़ुरुई मसाइल में गुफ़्तगू कर बैठते हैं। वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद, क़ादयानी वग़ैरह तो चाहते ही यह हैं कि उसूल छोड़ कर फ़ुरुई मसाइल में गुफ़्तगू हो, उन्हें हरगिज़ यह मौक़ा न दिया जाए उन से यही कहा जाए कि पहले तुम इस्लाम के दाइरे में आओ, अपना मुसलमान होना साबित कर लो फिर फरई मसाइल में गुफ़्तगू का हक़ होगा।

(अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 78)

वहाबिया के लिए दुआए हिदायत फ़ुज़ूल है

वहाबिया के लिए दुआ फ़ुज़ूल है, उनके लिए आ चुका है वहाबी कभी लौट कर न आएगा, और जो हिदायत पा जाए वह वहाबी न था, हो चला था, कुफ़्फ़ार वहाँ जा कर कहेंगे हमें वापस दुनिया में भेज कि तुझ पर ईमान लाएं, फरमाया है अगर उन्हें फिर भेजा जाए तो वही करेंगे जिस से पहले मना किया गया था।

(अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स0 39)

वहाबिया से शादी ब्याह की हुर्मत व मुमानेअत

वहाबी या ग़ैर मुक़ल्लिद से मेल जोल मुतलक़न हराम है और उसके साथ शादी ब्याह ख़ालिस ज़िना।

हदीस में फरमाया न उनके साथ खाना खाओ, न उनके साथ पानी पियो, न उनके साथ बैठो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो न उनके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ो। (अक़ीली, इब्ने हिब्बान)

तमाम मुरतदीन का यही हुक्म है कि उनके साथ निकाह वग़ैरह हराम है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 533)

देवबन्दी फ़िर्क़ा

यह फ़िर्क़ा दारुल–उलूम देवबन्द की तरफ़ मन्सूब है और इस्माईल देहलवी के पैरू होने का दावेदार है, इस्माईल देहलवी की किताब तक़्वियतुल–ईमान के जुमला मुन्दरजात को, उसके हर ख़ुश्क व तर को हक़ व सही मानता है। उसकी हर–हर बात का क़ाबिल व क़ाइल और उस पर आमिल है। (मुरत्तिब)

देवबन्दिया पर उलमा का फतवा

देव बन्दिया की निस्बत उलमाए किराम हरमैन शरीफ़ैन ने बिल–इत्तिफ़ाक़ फरमाया है कि वह मुरतद हैं और शिफ़ाए इमाम क़ाज़ी अयाज़ वग़ैरह के हवाले से फरमाया जो उनके अक़्वाल पर मुत्तला हो कर उनके कुफ़्र में शक करे वह भी काफिर, और उनकी हालते कुफ़्र व ज़लालत और उनके कुफ़्री व मल्ऊन अक़्वाल तश्त अज़्बाम हो गये हर वह शख़्स कि निरा जंगली न हो उनकी हालत से आगाह है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 265)

यही मज़्मून दूसरे मक़ाम पर इस तरह है :

देवबन्दी अक़ीदा वालों की निस्बत उलमाए किराम हरमैन शरीफ़ैन ने बिल–इत्तिफ़ाक़ तहरीर फरमाया है कि यह लोग इस्लाम से ख़ारिज हैं और फरमाया है जो उनके काफिर होने में शक करे वह भी काफिर है। उनकी कोई बात न सुनी जाए, न उनकी किसी बात पर अमल किया जाए जब तक अपने उलमा से तहक़ीक़ न कर लें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : उन से दूर भागो और उन्हें अपने से दूर करो कहीं वह तुम को गुम्राह न कर दें, कहीं वह तुम को फित्ना में न डाल दें।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

देवबन्दी से बैअत होने का हुक्म

किसी देवबन्दी और अशरफ़ अली थानवी से बैअत होने से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

अशरफ़ अली के हाथ पर बैअत हराम क़तई है, रू–ब–रू हो ख़्वाह बज़रिया तहरीर, बल्कि बैअत दर कनार उलमाए हरमैन ने बिल–इत्तिफ़ाक़ तहरीर फरमाया है, जो उसके अक़्वाल पर मुत्तला हो कर उसके कुफ़्र में शक करे वह ख़ुद काफिर, अशरफ़ अली और तमाम देवबन्दी अक़ीदे वालों की किताबें कुतुबे मन्तिक़ बल्कि फल्सफ़ा बल्कि हुनूद की पोथियों से बदतर हैं कि उन्हें देख कर मुसलमान के बिगड़ने की इतनी तवक़्क़ु नहीं जो इन किताबों से है, उनका देखना बेशक हराम है। मगर उनके वरक़ों से इस्तिंजा किया जाए, यह ज़्यादती है और बाज़ फ़ुक़हा का वह लिख देना मक़्बूल नहीं, हुरूफ़ की ताज़ीम लाज़िम है, न कि उनकी किताबें, कि उनकी किताबों में क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल भी है जिस से वह अवाम को धोखा देते हैं।

हुरूफ़ भी क़ाबिले ताज़ीम

एक इमाम का बाज़ नौजवानों पर गुज़र हुआ जिन्होंने निशाना पर अबू जहल का नाम लिख कर लगाया और उस पर तीर अन्दाज़ी कर रहे थे, इमाम ने उन्हें मना फ़रमाया। जब उधर से वापस तशरीफ़ लाए मुलाहिज़ा फ़रमाया कि उन्होंने नाम अबू जहल के हुरूफ़ मुतफ़र्रिक़ कर दिए। अब उन पर तीर लगा रहे हैं, फ़रमाया मैंने तुम्हें नाम अबू जहल की ताज़ीम को न कहा था बल्कि हुरूफ़ की ताज़ीम को। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 152)

देवबन्दी से मेल जोल की मुमानेअत

देवबन्दी, वहाबियों की अख़्बस शाख़ है उसका वअज़ सुनना हराम है, उस से फ़तवा लेना हराम है, उस से मेल जोल सख़्त हराम, बल्कि उसे मुसलमान जान कर हो तो कुफ़्र है, उलमाए हरमैन शरीफ़ैन ने बिल–इत्तिफ़ाक़ तहरीर फ़रमाया है कि जो उनके काफ़िर होने में शक करे वह भी काफ़िर है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 533)

देवबन्दी से मस्अला पूछना हराम

और उनका बताया हुआ कोई मस्अला अगर सही भी निकले तो उस से यह न समझा जाए कि यह आलिम है, या उनके और मसाइल भी सही होंगे। दुनिया में कोई ऐसा फ़िर्क़ा नहीं जिसकी कोई न कोई बात सही न हो, मसलन यहूद व नसारा की यह बात सही है कि मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम नबी हैं, क्या इस से यहूदी और नसरानी सच्चे हो सकते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : बड़ा झूठा भी कभी सच बोलता है (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द 4, स0 222)

ग़ैर मुक़ल्लिद

यह फ़िर्क़ा इस्माईल देहलवी का मुत्तबेअ है, उसके अक़ाइद वही हैं जो वहाबिया और देवबन्दिया के अक़ाइद हैं। (मुरत्तिब)

ग़ैर मुक़ल्लिद, देव बन्दिया का हमनवा

यह गरोह उन मल्ऊन इर्तिदादों को दफ़ा तो नहीं कर सकता बल्कि ख़ूब जानता है कि उन से दफ़ा इर्तिदाद ना मुम्किन है। मगर उन मुर्तदों को पेशवा व मम्दूह दीनी मानने से भी बाज़ नहीं आता, अल्लाह व रसूल के मुक़ाबिल उनकी हिमायत पर तुला हुआ है, अल्लाह व रसूल को गालियाँ देना बहुत हल्का जानता है, मगर उन दुश्नाम दहिन्दों का हुक्मे शरई बयान करने को गालियाँ देना कहता और बहुत सख़्त बुरा मानता है। (फ़तावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 191)

तर्के तक़्लीद दीन में बड़ा फ़ित्ना है

यह गरोह तक़्लीद अइम्मा या तक़्लीदे शख़्सी का मुंकिर है हालांकि तक़्लीदे शख़्सी वाजिब है, और यह बात कि जिस मस्अला में जिस मज़्हब पर चाहो अमल करो बातिल है, अकाबिरे अइम्मा ने उसके बातिल होने की तस्रीह फ़रमाई, इसके सबब ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबियों का दीन में एक बड़ा फ़ित्ना पैदा हुआ। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 401)

इंकारे इज्मा व क़्यास कुफ़्र है

ग़ैर मुक़ल्लेदीन से हमारे इख़्तिलाफ़ के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं :

ग़ैर मुक़ल्लेदीन का हम से इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ फ़ुरूई नहीं बल्कि बकसरत उसूले दीन में हमारा और उनका इख़्तिलाफ़ है, हमारी तमाम कुतुबे उसूल, माला माल हैं कि हमारे और जुमला अइम्मा किराम अह्ले सुन्नत के नज़्दीक उसूले शरअ़ चार हैं :

किताब, सुन्नत, इज्मा उम्मत, क़्यास।

ला मज़्हबों ने इज्मा व क़्यास को बिल्कुल उड़ा दिया।

उनका पेशवा सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखता है : क़्यास बातिल और इज्मा बेअसर है।

उनकी तमाम किताबें इस से पुर हैं कि वह सिवा कुरआन व हदीस किसी का ऐतबार नहीं करते और इज्मा व क़्यास के सख़्त मुंकिर हैं। और हमारे अइम्मा ने इज्मा व क़्यास के मानने को ज़रूरियाते दीन में से गिना है और इसके मुंकिर को ज़रूरियाते दीन का मुंकिर कहा है और ज़रूरियाते दीन का मुंकिर काफ़िर है, फिर हमारा उनका इख़्तिलाफ़ फ़ुरूई कैसे हो सकता है।

उसूल व अक़ाइद की किताबों से साबित है कि

★ इज्मा का हुज्जत क़तई होना ज़रूरियाते दीन से है।

★ बेशक तवातुर से साबित है कि सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम क़्यास पर अमल फरमाते थे और यह उन में मारूफ़ व मशहूर था जिस पर किसी को एतराज़ व इंकार न था।

★ जो शख़्स कहे कि अबू हनीफ़ा का क़्यास हक़ नहीं है वह काफ़िर हो जाएगा।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 11, स० 202)

ग़ैर मुक़ल्लिद फ़िक़्ह के मुंकिर हैं

अइम्म–ए–मुज्तहेदीन ने कुरआन व हदीस और आसारे सहाबा से इस्तिदलाल करके मसाइले शरईया का इस्तिख़राज व इस्तिंबात किया। अल्लाह तआला ने उन्हें यह सलाहियत अता फरमाई थी वरना यह हर इंसान के बस की बात नहीं कि वह कुरआन व हदीस से बराहे रास्त मसाइल अख़ज़ कर सके। कुरआन व हदीस के ज़ाहिर पर अमल करना दुश्वार है क्योंकि हर चीज़ का हुक्म वज़ाहत व सराहत से मौजूद नहीं ऐसी सूरत में एक आम आदमी के लिए यह फ़ैसला करना मुश्किल हो जाएगा कि फलां चीज़ हलाल है या हराम, जाइज़ है या नाजाइज़। इसलिए हमें हर क़दम पर अइम्म–ए–किराम के सहारे की ज़रूरत है इसके बग़ैर शरीअ़त पर अमल मुम्किन नहीं अगर कोई सिर्फ़ क़ुरआन या सिर्फ़ हदीस पर अमल करने का दावा करे वह झूठा है उसका दावा बातिल है।

(मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

फ़िक़्ह का न मानने वाला शैतान है, अइम्मा का दामन जो न थामे वह क़यामत तक कोई इख़्तिलाफ़ी मस्अला हदीस से साबित नहीं कर सकता जिसे दावा हो सामने आए और ज़्यादा नहीं इसी का सुबूत दे कि कुत्ता खाना हलाल है या हराम? कौन सी हदीस में आया है कि कुत्ता खाना हराम है।

आयत ने तो खाने की हराम चीज़ों को सिर्फ़ चार में हस्र फरमाया है।

(1) मुरदार (2) रगों का ख़ून (3) ख़िंज़ीर का गोश्त (4) और वह जो ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़िबह किया जाए।

तो कुत्ता दर कनार सुव्वर की चर्बी और गुर्दे और ओझड़ी कहाँ से हराम हो गई, किसी हदीस में उनकी तहरीम नहीं, और आयत में लहम (गोश्त) फरमाया है जो उनको शामिल नहीं।

ग़रज़ यह लोग श्यातीन हैं उनकी बात सुनना जाइज़ नहीं।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 11, स० 106)

क़ादयानी

यह फ़िर्क़ा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी की तरफ़ मन्सूब है जिस ने नबुव्वत का दावा किया और अपने आपको मसीह मौऊद कहा, उसके मानने वाले और उसकी पैरवी करने वाले क़ादयानी कहलाते हैं। (मुरत्तिब)

क़ादयानी वह जो अपने आपको नबी व रसूल कहता, अपने कलाम को कलामे इलाही बताता, सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को गालियाँ देता, चार सौ अंबिया की पेशीन गोई झूटी बताता, ख़ातमन्नबीयीन में इस्तिस्ना की पचर लगाता। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स० 191)

ख़त्मे नबुव्वत का मुंकिर मुरतद है

क़ादयानी ने दीगर कुफ़्रियात के साथ ख़त्मे नबुव्वत का इंकार भी किया और ख़ुद मसीह मौऊद होने का दावा किया उलमाए हरमैन तैयबैन ने उस पर कुफ़्र व इर्तिदाद का फतवा सादिर फरमाया। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद किसी को नबुव्वत मिलने का जो क़ाइल हो वह तो मुतलक़ काफिर मुर्तद है अगरचे किसी वली या सहाबी के लिए माने। लेकिन क़ादयानी तो ऐसा मुर्तद है जिसकी निस्बत तमाम उलमाए किराम हरमैन शरीफ़ैन ने बिल–इत्तिफ़ाक़ तहरीर फरमाया है कि उसे मआज़ल्लाह मसीह मौऊद या मुजद्दिद या अदना दरजा का एक मुसलमान जानना दरकनार जो उसके अक़्वाले मल्ऊना पर मुत्तला हो कर उसके काफिर होने में अदना शक करे वह ख़ुद काफिर मुरतद है।

क़ादयानी अक़ीदे वाले या क़ादयानी को काफिर मुरतद न मानने वाले मर्द ख़्वाह औरत का निकाह बिल्कुल किसी से नहीं हो सकता न मुसलमान से, न काफिर से, न मुरतद से, न उसके हम अक़ीदा वग़ैरह से, अगर होगा तो ज़नाए ख़ालिस होगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स० 576)

क़ादयानी के बाज़ कलिमाते कुफ़्रिया

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी ने नबी होने का दावा किया और अपनी किताबों में कलिमाते कुफ़्रिया और मुग़ल्लज़ात लिखे जिसके नतीजे में हरमैन तैयबैन के उलमा व मुफ़्तियाने किराम ने उस पर कुफ़्र का फतवा सादिर फरमाया, नमूने के तौर पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने उसके चन्द कलिमाते कुफ़्रिया नक़्ल फरमाए हैं मुलाहिज़ा हों। फरमाते हैं :

अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तौहीनें, ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को गालियाँ, उनकी माँ तैयबा ताहिरा पर तअन, और कहना कि यहूदी के जो एतराज़ ईसा और उनकी माँ पर हैं, उनका जवाब नहीं, और यह कि नबुव्वते ईसा पर कोई दलील क़ाइम नहीं। बल्कि अदमे नबुव्वत पर दलील क़ाइम है। यह मानना कि क़ुरआन ने उनको अंबिया में गिना है और फिर साफ़ कह देना कि वह नबी नहीं हो सकते, मोजज़ाते ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सराहतन इंकार, और यह कहना कि वह मिसमेरिज़्म से यह कुछ किया करते थे, और यह कि मैं इन बातों को मक्रूह न जानता तो आज ईसा से कम न होता। तो वह रौशन मोजज़े जिनको क़ुरआन मजीद आयात बैयनात फरमा रहा है यह उनको मिसमेरिज़्म व मक्रूह मानता है, अपने आपको अगले अंबिया से अफ़ज़ल बताना, और यह कहना कि –

इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो
उस से बेहतर ग़ुलाम अहमद है

और यह कहना कि अगले चार सौ अंबिया की पेशीनगोई ग़लत हुई और वह झूठे, और यह कहना कि ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की चार दादियाँ, नानियाँ मआज़ल्लाह ज़ानिया थीं, और

यह कि उसी ख़ून से ईसा की पैदाइश है, अपने आपको नबी कहना, अपनी तरफ़ वह्य इलाही आने का इद्दआ करना, अपनी बनाई हुई किताब को कलामे इलाही कहना, और यह कि आयते करीमा : मुबश्शिरन बेरसूलिन याती मिन बअ्दी इस्मुहू अहमदु से मैं मुराद हूँ, और यह कि मुझ पर उतरा है कि इन्ना अन्ज़लनाहु बिल–क़ादियाने व बिल–हक़्क़े नज़ला।

क़ादयानी ख़बीस का किज़्ब रौशन

उस ख़बीस ने जो पेशीन गोई की वह झूठी साबित हुई और वह तो बहुत चमकते रौशन हरफ़ों से लिखने के क़ाबिल है, इसके दो वाक़ए हैं।

★ एक उसके बेटे का जिसकी निस्बत कहा था कि अंबिया का चाँद पैदा होगा और बादशाह उसके कपड़ों से बरकत लेंगे। मगर शाने इलाही कि बेटी पैदा हुई उसके ऊपर कहा कि वही के समझने में ग़लती हुई, अब की जो होगा वह अंबिया का चाँद होगा, बेटी, बेटे हमेशा पैदा होते हैं। अब की हुआ बेटा मगर चन्द रोज़ जी कर मर गया, बादशाह क्या किसी मुहताज ने भी उसके कपड़ों से बरकत न ली।

★ दूसरी बड़ी भारी पेशीन गोई आसमानी जोरु की, अपनी चचा ज़ाद बहन अहमदी को लिख कर भेजा कि अपनी बेटी मुहम्मदी को मेरे निकाह में दे दे, उस ने साफ़ इंकार कर दिया, उस पर पहले तमअ् दिलाई, फिर धमकियाँ दीं, फिर कहा कि वही आ गई कि हमने तेरा निकाह उस से कर दिया। और यह कि उसका निकाह अगर तू दूसरी जगह करेगी, तो ढाई या तीन बरस के अन्दर उसका शौहर मर जाएगा मगर उस ख़ुदा की बन्दी ने एक नहीं सुनी, सुल्तान मुहम्मद ख़ाँ से निकाह कर दिया, वह आसमानी निकाह धरा ही रहा, न वह शौहर मरा, कितने बच्चे उस से हो चुके और यह चल दिया।

सरीह कुफ़्र के सामने फ़ुरूई बहस क्यों?

ग़रज़ उसके कुफ़्र व किज़्ब हद्दे शुमार से बाहर हैं कहाँ तक गिने जाएं, और उसके हवा ख़्वाह इन बातों को टालते हैं, और बहस करेंगे तो काहे में कि ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इंतिक़ाल फ़रमाया, मआ जिस्म उठा लिए गये या सिर्फ़ रूह, महदी व ईसा एक हैं या मुतअद्दद, यह उनकी अय्यारी होती है, उन कुफ़्रों के सामने उन मबाहिस का क्या ज़िक्र। फ़र्ज़ कीजिए कि ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़िन्दा नहीं, फ़र्ज़ कीजिए कि वह मअ जिस्म नहीं उठाए गये, फ़र्ज़ कीजिए कि महदी व ईसा एक हैं, फिर उस से वह तेरे कुफ़्र क्यों कर कट गये? कलाम तो इस में है कि तू कहता है मैं नबी हूँ, हम कहते हैं तू काफ़िर, इसका फ़ैसला होना चाहिए।

अंबिया की तौहीनें, अंबिया की तक्ज़ीबें, मोजज़ात का मज़ाक़, नबुव्वत का इद्दआ, और फिर दूसरे दरजा में अंबिया के चाँद वाला बेटा, आसमानी जोरु, यह तेरी तक्फ़ीर, तक्ज़ीब को काफ़ी है। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 31)

बाज़ कुफ़्रियाते क़ादयानी की निशानदेही

मिर्ज़ा क़ादयानी के बाज़ खुले कुफ़्रों को गिनाते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक जगह कि तफ़्सील व वज़ाहत के साथ तहरीर फ़रमाते हैं :

कुफ़्रे अव्वल : मिर्ज़ा का एक रिसाला है जिसका नाम "एक ग़लती का इज़ाला" है उसके स0 673 पर लिखता है मैं अहमद हूँ जो आयत मुबश्शिरन बेरसूलिन याती मिन बअ्दी इस्मुहू अहमदु में मुराद है।

आयते करीमा का मतलब यह है कि सैयदना मसीह रब्बानी ईसा बिन मरयम रूहुल्लाह अलैहिमस्सलातु वस्सलाम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया कि मुझे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने तुम्हारी

तरफ़ रसूल बना कर भेजा है। तौरेत की तस्दीक़ करता और रसूल की ख़ुशख़बरी सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लाने वाला है जिसका नाम पाक अहमद है। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

"इज़ाला" के क़ौल मज़्कूर में इद्दआ हुआ कि वह रसूले पाक जिनकी जल्वा अफरोज़ी का मुज़्दा हज़रत मसीह लाए मआज़ल्लाह मिर्ज़ा क़ादयानी है।

कुफ़्र दोम : "तौज़ीह मराम" तबअ् सानी स0 9 पर लिखता है कि मैं मुहद्दिस हूँ और मुहद्दिस भी एक मानी से नबी होता है।

कुफ़्र सोम : "दाफ़ेउल–बला" मत्बूआ रियाज़े हिन्द स0 9 पर लिखता है : सच्चा ख़ुदा वही है जिसने क़ादयान में अपना रसूल भेजा।

कुफ़्र चहारुम : मुजीब पंजुम ने नक़्ल किया और नीज़ कहता है कि ख़ुदाए तआला ने बराहीने अहमदीया में इस आजिज़ का नाम उम्मती भी रखा है और नबी भी।

अव्वलन : इन अक़्वाले ख़बीसा में क़लामे इलाही के मानी में सरीह तहरीफ़ की कि मआज़ल्लाह आयते करीमा में यह शख़्स मुराद है, न हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

सानियन : नबी अल्लाह व रसूलुल्लाह व कलिमतुल्लाह ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर इफ़्तरा किया कि वह उसकी बशारत देने को तशरीफ़ लाना बयान फरमाते थे।

सालिसन : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल पर इफ़्तरा किया कि उस ने ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को उस शख़्स की बशारत देने के लिए भेजा। और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"बेशक जो लोग अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल पर झूठ बुहतान उठाते हैं फलाह न पाएंगे।"

(सूरः यूनुस स0 69)

और फरमाता है :

"ऐसे इफ़्तरा वही बांधते हैं जो बेईमान काफिर हैं।" (सूरः नहलस0 105)

राबेअन : अपनी गढ़ी हुई किताब "बराहीने ग़ुलामिया" को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का कलाम ठहराया कि ख़ुदाए तआला ने बराहीने अहमदीया में यूं फरमाया है।

और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"ख़राबी है उनके लिए जो अपने हाथों किताब लिखें फिर कह दें यह अल्लाह के पास से है ताकि उसके बदले कुछ ज़लील क़ीमत हासिल करें सो ख़राबी है उनके लिए उनके लिखे हाथों से और ख़राबी है उनके लिए उस कमाई से है।" (सूरः बक़रह : 79)

इन सबसे क़तअ् नज़र इन कलिमाते मल्ऊना में सराहतन अपने लिए नबुव्वत व रिसालत का इद्दआए क़बीहा है और वह बइज्मा क़तई, कुफ़्रे सरीह है।

कुफ़्र पंजुम : दाफ़ेउल–बला स0 10 पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से अपनी बरतरी का इज़्हार किया।

कुफ़्रे शशुम : उसी रिसाला के स0 17 पर लिखा है :

इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो

उस से बेहतर ग़ुलाम अहमद है

कुफ़्र हफ़्तुम : इश्तिहार मेअ्यारुल–अख़ियार में लिखा है : मैं बाज़ नबियों से भी अफ़्ज़ल हूँ। यह इद्दआ भी बइज्मा क़तई, कुफ़्र व इर्तिदादे यक़ीनी हैं।

कुतुबे कसीरा से साबित है कि बइज्मा मुस्लेमीन कोई वली, कोई ग़ौस, कोई सिद्दीक़, भी किसी नबी से अफ़्ज़ल नहीं हो सकता जो ऐसा कहे क़तअन इज्माअन काफिर मुल्हिद है।

शरह सही बुख़ारी शरीफ़ में है : हर नबी हर वली से अफ़्ज़ल है और यह अम्र यक़ीनी है और उसके ख़िलाफ़ कहने वाला काफिर है कि यह ज़रूरियाते दीन से है।

कुफ़्र हश्तुम : "इज़ाला" स0 309 पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मोजज़ात को जिनका ज़िक्र ख़ुदावन्दे तआला बतौर एहसान फरमाता है मिसमेरिज़्म लिख कर कहता है "अगर मैं इस क़िस्म के मोजज़ात को मक्रूह न जानता तो इब्ने मरयम से कम न रहता।"

यह कुफ़्र मुतअद्दिद कुफ़्रों का ख़मीरा है, मोजज़ात को मिसमेरिज़्म कहना एक कुफ़्र कि इस सूरत में वह मोजज़ा न हुए बल्कि मआज़ल्लाह एक कसबी करिशमे ठहरे, अगले काफिरों ने भी ऐसा ही कहा था।

हक़ अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

"जब फरमाया अल्लाह सुब्हानहू ने ऐ मरयम के बेटे याद कर मेरी नेमतें अपने ऊपर और अपनी माँ पर जब मैंने पाक रूह से तुझे कुव्वत बख़्शी लोगों से बातें करता पालने में और पक्की उम्र का हो कर, और जब मैंने तुझे सिखाया लिखना और इल्म की तहक़ीक़ बातें और तौरेत व इंजील और जब तू बनाता मिट्टी से परिन्द की सी शक्ल मेरी परवानगी से। फिर तू उस में फूंकता तो वह परिन्द हो जाती मेरे हुक्म से और तू चंगा करता मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरी इजाज़त से और जब तू क़ब्रों से जीता निकालता मुर्दों को मेरे इज़्न से और जब मैंने यहूद को तुझ से रोका, जब तू उनके पास यह रौशन मोजज़े लेकर आया तो उनमें के काफिर बोले यह तो नहीं मगर खुला जादू।" (सूरः माइदा : स0 110)

क़ादयानी ने मिसमेरिज़्म बताया या जादू कहा बात एक ही हुई यानी इलाही मोजज़े नहीं। कसबी ढकोसले हैं।

ऐसे ही मुंकिरों के ख़्याले ज़लाल को हज़रत मसीह कलिमतुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अला सैयदहू व अलैहि व सल्लम ने बार–बार बताकीद रद फरमा दिया था, अपने मोजज़ात मज़्कूरा इरशाद करने से पहले फरमाया :

"मैं तुम्हारे पास रब की तरफ़ से मोजज़े लाया कि मैं मिट्टी से परिन्द बनाता और फूंक मार कर उसे जिलाता और अन्धे और बदन बिगड़े को शिफ़ा देता और ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे जिलाता और जो घर से खा कर आओ और जो कुछ घर में उठा रखो वह सब तुम्हें बताता हूँ, बेशक उन में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान लाओ।" (सूरः आले इमरान : स0 49)

कुफ़्र नहुम : "इज़ाला" स0 161 पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत लिखा, बवजहे मिसमेरिज़्म के अमल करने के, तन्वीर बातिन और तौहीद और दीनी इस्तिक़ामत में कम दर्जे पर बल्कि क़रीब नाकाम रहे।

हर नबी की तहक़ीर मुतलक़न कुफ़्र क़तई है जिसकी तफ़्सील से तसानीफ़े अइम्मा किराम के दफ़्तर गूंज रहे हैं।

कुफ़्र दहुम : इज़ाला स0 629 पर लिखता है : एक ज़माने में चार सौ नबियों की पेशीन गोई ग़लत हुई और वह झूठे।

यह सराहतन अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तक्ज़ीब है।

अइम्मा–ए–किराम फरमाते हैं : जो नबी पर उसकी लाई हुई बात में किज़्ब जाइज़ ही माने अगरचे वकूअ़ न जाने बइज्मा कुफ़्र है न कि मआज़ल्लाह चार सौ अंबिया का अपने अख़्बार बिल–ग़ैब में कि वह ज़रूर अल्लाह ही की तरफ़ से होता है वाक़े में झूठा हो जाना।

शिफ़ा शरीफ़ में है : जो अल्लाह तआला की वहदानियत, नबुव्वत की हक़्क़ानियत, हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नबुव्वत का एतक़ाद रखता हो, बईं हमा अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पर उनकी बातों में किज़्ब जाइज़ माने ख़्वाह ब–ज़ुअमे ख़ुद उसमें किसी मस्लेहत का इद्दआ करे या न करे हर तरह बिल–इत्तिफ़ाक़ काफिर है।

एक नबी की तक्ज़ीब सबकी तक्ज़ीब को मुस्तल्ज़िम

ज़ालिम (क़ादयानी) ने चार सौ कह कर गुमान किया कि उस ने बाक़ी अंबियाए किराम अलैहिम अफ़ज़लुस्सलातु वस्सलाम को तक्ज़ीब से बचा लिया, हालाँकि बहुत सी आयाते कुरआनिया शहादत दे रही हैं कि उस ने आदम नबी अल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह तक तमाम अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को काज़िब कह दिया कि एक रसूल की तक्ज़ीब तमाम मुरसलीन की तक्ज़ीब है।

देखो क़ौमे नूह व हूद व सालेह व लूत व शुऐब अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने अपने एक ही एक नबी की तक्ज़ीब की थी मगर कुरआन ने फरमाया :

★ क़ौमे नूह ने सब रसूलों की तक्ज़ीब की।
★ आद ने कुल पैग़म्बरों को झुठलाया।
★ समूद ने तमाम अंबिया को काज़िब कहा।
★ क़ौमे लूत ने तमाम रुसुल को झूठा बताया।
★ ऐका वालों ने सारे नबियों को दरोग़ गो कहा।

यूं ही वल्लाह उस क़ाइल ने न सिर्फ़ चार सौ बल्कि जुम्ला अंबिया व मुरसलीन को कज़्ज़ाब माना।

झूठे मुद्दई नबुव्वत पर इंसान व मलाइका और आसमान व ज़मीन की लानत है, हुज़ूरे अक़दस जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़ुद मुसैलमा कज़्ज़ाब पर लानत फरमाई, और उसे झूठा कहा जिस ने ज़मान–ए–अक़दस में इद्दआए नबुव्वत किया था।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक मैं तमाम दुनिया के ज़र्रा–ए–ख़ाक की बराबर गवाहियाँ देता हूँ कि मुसैलमा कज़्ज़ाब है।

(तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 299 ता 305)

राफ़ज़ी ?

राफ़ज़ी वह लोग जिन्होंने अक्सर सहाबा को छोड़ दिया, इमामत शैख़ैन और मसह अलल–खुफ़्फ़ैन का इंकार किया, हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और उनके आवान व मददगार को बुरा भला कहा, और हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू की मुहब्बत में उन लोगों ने ग़ुलू किया। (मुरत्तिब)

यह मुलाइना सराहतन कुरआने अज़ीम को नाक़िस बताते और मौला अली व अइम्मा अतहार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को अंबिया साबेक़ीन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से अफ़ज़ल ठहराते हैं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 191)

राफ़ज़ियों के कुफ़्री अक़ीदे

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू राफ़ज़ियों के कुफ़्री अक़ाइद से मुतअल्लिक एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

आजकल के राफ़ज़ी, तबर्रई अलल–उमूम काफिर मुर्तद हैं, शायद उन में गिनती के ऐसे निकलें जो इस्लाम से कुछ हिस्सा रखते हों, उनका आम अक़ीदा यह है कि –

यह कुरआन शरीफ़ जो बहम्दुलिल्लाह तआला हमारे हाथों में मौजूद है यह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद पूरा न रहा, इस में से कुछ पारे, या सूरतें, या आयतें, सहाबा किराम या और अह्ले सुन्नत ने मआज़ल्लाह कम कर दीं।

और यह भी उनके छोटे बड़े सब मानते हैं कि हज़रत मौला अली व दीगर अइम्मा अत्हार कर्रमल्लाहु तआला वजूहहुम अगले अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से अफ़्ज़ल थे।

यह दोनों अक़ीदे ख़ालिस कुफ़्र हैं। जो शख़्स कुरआन मजीद से एक हरफ़, एक नुक़्ता की निस्बत अदना एहतमाल के तौर पर कहे कि शायद किसी ने घटा दिया, या बढ़ा दिया, या बदल दिया, वह काफिर है और कुरआने अज़ीम का मुंकिर, यूंहीं जो किसी नबी से ग़ैर नबी को अफ़्ज़ल बताए वह भी काफिर। (फतावा रज़्वीया : जिल्द 8, स0 329)

राफ़ज़ी के यहाँ खाना पीना न चाहिए

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू राफ़ज़ी के घर के खाने पीने से मुतअल्लिक़ फरमाते हैं कि :

राफ़ज़ी के यहाँ कुछ खाना पीना न चाहिए, वह अह्ले सुन्नत को क़स्दन नजासत खिलाने की कोशिश करते हैं, सुन्नियों में के कोई भी अगर जाएगा तो पाखाना न हो तो पेशाब कर ही देगा, लिहाज़ा एहतराज़ ज़रूर है। (फतावा रज़्वीया : जिल्द अव्वल, स0 574)

रवाफ़िज़ से रिश्ता नाता की मुमानेअत

हदीस में है : एक क़ौम आने वाली है उनका एक बद लक़ब होगा उन्हें राफ़ज़ी कहा जाएगा, न जुमा में आएंगे न जमाअत में और सलफ़े सालेह को बुरा कहेंगे, तुम उनके पास न बैठना, न उनके साथ खाना पीना न शादी बियाहित करना, बीमार पड़ें तो पूछने न जाना मर जाएं तो जनाज़े पर न जाना।

शिकारी ख़ुद शिकार हो गया

इमरान बिन हत्तान रुक़ाशी अकाबिर उलमा मुहद्देसीन से था उसकी एक चचा ज़ाद बहन ख़ार्जीया थी उस से निकाह कर लिया, उलमा–ए–किराम ने सुन कर तअ्ना ज़नी की कहा मैंने तो इसलिए निकाह कर लिया है कि उसको अपने मज़्हब पर ले आऊंगा एक साल न गुज़रा था कि ख़ुद ख़ार्जी हो गया –

शिकार करने चले थे शिकार हो बैठे

यह सब इस सूरत में है कि वह राफ़ज़ी या राफ़ज़ीया जिस से शादी की जाए बाज़ अगले रवाफ़िज़ की तरह सिर्फ़ बद मज़्हब हो, दाइर–ए–इस्लाम से ख़ारिज न हो, आजकल के रवाफ़िज़ तो उमूमन ज़रूरियाते दीन के मुंकिर और क़तअन मुर्तद हैं, उनके मर्द या औरत का किसी से निकाह हो सकता ही नहीं, ऐसे ही वहाबी, क़ादयानी, देवबन्दी, नेचरी, चकड़ालवी जुमला मुर्तदीन हैं कि उनके मर्द या औरत का तमाम जहान में से जिस से निकाह होगा मुस्लिम हो या काफिर असली या मुर्तद महज़ बातिल और ज़िना ख़ालिस होगा और औलाद वलदुज़्ज़ना।

आलमगीरीया में है : राफ़ज़ियों के अहकाम वही हैं जो मुर्तदीन के अहकाम हैं यानी किसी से उनका निकाह नहीं हो सकता। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 106)

रवाफ़िज़ के पास बैठने का बुरा नतीजा

इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह शरहुस्सुदूर में नक़्ल फरमाते हैं :

एक शख़्स रवाफ़िज़ के पास बैठा करता था जब उसकी लड़ाई का वक़्त आया लोगों ने हस्बे मामूल उसे कलिमा तैयबा की तल्क़ीन की, कहा नहीं कहा जाता, पूछा क्यों, कहा यह दो शख़्स खड़े कह रहे हैं तू उनके पास बैठा करता था जो अबू बकर व उमर को बुरा कहते थे, अब यह चाहता है कि कलिमा पढ़ कर उठे हरगिज़ न पढ़ने देंगे।

यह नतीजा है बदमज़्हबों के पास बैठने का जब सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के बद गोयों से मेल जोल की यह शामत है तो क़ादयानियों, वहाबियों और देवबन्दियों के पास नशिस्त बर्ख़ास्त की आफत किस क़द्र शदीद हागी, उनकी बदगोई सहाबा तक है, इनकी अंबिया और सैयदुल–अंबिया और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल तक। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 88)

रवाफ़िज़ की अज़ान

राफ़ज़ियों की अज़ान का तज़्किरा हुआ तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने फरमाया :

अज़ान में अश्हदु अन्ना अलीयन वलीयुल्लाह। उनका इल्हाद है और ख़ुद उनकी मोतबर किताबों में तस्रीह है कि अली ज़रूर वली अल्लाह हैं मगर अज़ान में यह मुस्तज़ाद है, नीज़ तस्रीह है कि हय्या अला ख़ैरिल–अमले, मुफ़व्वेज़हू लअ़नहुमुल्लाह की ईजाद है, यह सब उनकी कुतुब मोतबरा में है न कि तबर्रा, कि बाज़ मलाइना इज़ाफ़ा करते हैं।

एक अजीब हिकायत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने इसी तज़्किरा में फरमाया :

यहाँ एक अजीब हिकायत सुनी गई राफ़ज़ीयों में एक मुअज़्ज़िन अन्धेरे से जा कर अज़ान कहता, और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़े अकबर व उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की शान में गुस्ताख़ी किया करता, मुहल्ला में कुछ ग़रीब सुन्नी रहते थे कि ख़ूने जिगर पीते और कुछ बस न चलता, एक रोज़ चार जवान हरचेह बादा बाद कह कर मस्जिद के अन्दर पहले से जा बैठे, हस्बे दस्तूर वह ख़बीस अपने वक़्त पर आया और अज़ान में सिद्दीक़े अकबर की निस्बत कुछ बकना शुरू किया कि इन चारों में से एक साहब बरामद हुए और मार कर गिरा दिया कि ख़बीस तो हमें बुरा कहता है, उसने घबरा कर कहा हज़रत मैं तो उमर को कहता था, दूसरे जवान बरामद हुए और मार कर बेदम कर दिया कि मरदूद तू मुझे बुरा कहेगा। उसने सरासीमा हो कर कहा, हज़रत मैं तो उस्मान को कहता था, तीसरे साहब तशरीफ़ लाए और जितना मारा गया मारा कि नापाक तू मुझे बुरा कहेगा। आख़िर जब बुड्ढे ख़बीस को कुछ न बनी चिल्लाया कि मौला मदद कीजिए दुश्मन मुझे मारे डालते हैं, उस पर चौथे साहब हाथ में उस्तुरा लिए बरामद हुए और जड़ से उसकी नाक पोंछ ली कि शैतान तू हमारे अकाबिर को बुरा कहेगा।

अब यह चारों साहब तो चल दिए मुज्तहिद साहब दर्द के मारे नाक पर रूमाल रखे मस्जिद के एक अन्दरूनी गोशा में जा छुपे, जब वक़्त ज़्यादा हुआ और रवाफ़िज़ नमाज़ के लिए आए, एक दूसरे से कहता है आज जनाब क़िब्ला तशरीफ़ नहीं लाए, आज अज़ान नहीं फरमाई, जब कुछ रौशनी हुई देखा जनाब क़िब्ला एक गोशा में सिमटे पड़े हैं। कहा हज़रत ख़ैर है! क़िब्ला ख़ैर है? कहा ख़ैर है आज वह दुश्मन आ पड़े और मारते–मारते मोंझ कर दिया, कहा फिर आपने हज़रत मौला को याद न किया वह चुप हो रहा जब बार–बार यही कहे गये उसने झुंझला कर नाक पर से रूमाल फेंक दिया कि वह तीनों दुश्मन तो मार ही कर छोड़ गये थे, मौला ने आकर जड़ से पोंछ ली।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 69ए 70)

मौलाना नूर साहब फ़िरंगी महल्ली और एक राफ़ज़ी की हिकायत

मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह एक रोज़ रास्ते में तशरीफ़ लिए जा रहे थे सामने से अली बख़्श वज़ीर बादशाह अवध जो उसकी नाक का बाल हो रहा था हाथी पर चला आ रहा था, उसने हज़रत को देख कर इतना अदब किया कि हाथी को बिठा दिया और उतर कर क़रीब हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया, आपने उसकी तरफ़ से मुँह फेर लिया और सलाम न लिया कि वह

राफ़ज़ी था और दाढ़ी मुंडी हुई थी, समझा कि शायद मुझे देखा नहीं दूसरी तरफ़ जा कर सलाम अर्ज़ किया, आपने उधर से मुँह फेर लिया और सलाम क़बूल न फरमाया, तीसरी दफा उसने फिर सलाम किया आपने जवाब न दिया, उस ख़बीस को ग़ुस्सा आया और हाथी पर चढ़ कर यह कहता हुआ चला गया कि फिरंगी महल के मर्दों की दाढ़ी और औरतों का सर न मुंडवाया तो अली बख़्श नाम नहीं।

आप जब मकान में तशरीफ़ ले गये तो एक तालिबे इल्म ने अली बख़्श का वह फ़िक़रा अर्ज़ किया, आप फौरन बाहर तशरीफ़ लाए आस्ताने पर उस वक़्त मेरे पीर व मुर्शिद (सैयद आले रसूल मारेहरवी) रहमतुल्लाह तआला अलैह और मौलाना फ़ज़्ले रसूल साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह हाज़िर थे, अर्ज़ किया हुज़ूर कहाँ का क़स्द फरमाते हैं : फरमाया बच्चू नूरा की हिमाक़ते तो है (आपकी ज़ुबान पूर्बी थी) राफ़ज़ी आया था, सलाम किया था जवाब दे दिया होता, अब किसी की दाढ़ी मूंड़े है, किसी का मूंड़ मूंड़े है, नूरा की हिमाक़त तो है और आप सीधे बादशाह के महल को तशरीफ़ ले चले कि इस से पेश्तर कभी न गये थे पीछे–पीछे यह दोनों हज़रात भी हो लिए, उस दिन नौ रोज़ का दिन था उसके महल में जश्न हो रहा था शराब व कबाब और गाने बजाने के सामान मौजूद थे, जब दरबान ने आपको तशरीफ़ लाते देखा घबरा कर दौड़ता हुआ गया और बादशाह को ख़बर दी, बादशाह सुन कर घबरा गया और हुक्म दिया कि फौरन तमाम मुनहियाते शरअ् उठा दिए जाएं और ख़ुद दरवाज़ा तक इस्तिक़बाल करके हज़रत को अन्दर ले गया और बएज़ाज़े तमाम बिठाया, अली बख़्श खड़ा हुआ यह वाक़या देख रहा है, काटो तो बदन में ख़ून नहीं, समझ रहा है कि अब यह शिकायत फरमाएंगे और ख़ुदा जाने बादशाह क्या कुछ करेगा। मगर यह वसीअ् ज़र्फ़ उस हल्के के क़्यास से वरा हैं, यह शिकायत फरमाने तशरीफ़ न ले गये बल्कि उसे अपनी अज़मत दिखाने को गये थे कि वह ईज़ा रसानी के ख़्याल से बाज़ रहे।

बादशाह ने अर्ज़ की हज़रत कैसी तक्लीफ़ फरमाई, फरमाया तेरी ज़मीन में रहत हैं हम ने कहा हो आएं, बादशाह ने वह शीरीनी जो नौ रोज़ के लिए आई थीं पेश की फरमाया हमारे दो बच्चे भी बाहर हैं चुनांचे उन हज़रात को भी बुलाया गया थोड़ी देर तशरीफ़ रख कर वापस तशरीफ़ लाए।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं : कि यह दोनों हिकायतें मुझ से हज़रत मौलाना अब्दुल–क़ादिर साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह ने लखनऊ में बयान फरमाईं, जब मैं और वह 1309 हिज में कुछ किताबें देखने लखनऊ गये थे। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 94ए 95)

हर बद मज़्हब की मुहब्बत आग और सोहबत नाग

खुले हुए काफिर से दुनियावी मुआमला तो हुदूदे शरअ् में रह कर किया जा सकता है मगर जो लोग मुर्तद हैं उनके साथ किसी तरह का कोई मुआमला लेन देन वग़ैरह करना मना है। (मुरत्तिब)

राफ़ज़ी वग़ैरह बद मज़्हबों में जिसकी बिदअत हदे कुफ़्र तक पहुँची हो वह मुर्तद है, उसके साथ कोई मुआमला मुसलमान बल्कि काफिर ज़िम्मी के मानिन्द भी बरतना जाइज़ नहीं। मुसलमानों पर लाज़िम है कि उठने, बैठने, खाने, पीने वग़ैरहा तमाम मुआमलात में उसे बेऐनेही मिस्ल सुअर के समझें। और जिसकी बिदअत इस हद तक न हो उस से भी दोस्ती, मुहब्बत तो मुतलक़न न करें। और बेज़रूरत व मज्बूरी महज़ के ख़ाली मेल जोल भी न रखें कि बद मज़्हब की मुहब्बत आग है और सोहबत नाग और दोनों को दीन से पूरी लाग।

जाहिल को उनकी सोहबत से यूं इज्तिनाब ज़रूर है कि उस पर असर बद का ज़्यादा अन्देशा है और आलिमे मुक़्तदा यूं बचे कि जुह्हाल उसे देख कर ख़ुद भी उस बला में न पड़ें बल्कि अजब नहीं कि उसे उन से मिलता देख कर उनके मज़्हब की शुनाअत उनकी नज़र में हल्की हो जाए।

हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने मुझे चुन लिया और मेरे लिए यार और ख़ुसराल के रिश्तेदार पसन्द फरमाए और अन्क़रीब कुछ लोग आएंगे कि उन्हें बुरा कहेंगे और उनकी शान घटाएंगे तुम उनके पास न बैठना न उनके साथ पानी पीना, न खाना खाना, न शादी बियाहित करना।

(अक़ीली, इब्ने हिब्बान, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 89)

हक़्क़ इमामत व ख़िलाफ़त में राफ़ज़ी का एतक़ाद

अह्ले सुन्नत के मज़्हब में इमामते हक़ खानदानी नहीं कि यह राफ़ज़ियों में भी जाहिल राफ़ज़ियों का ख़्याल है इसी बिना पर उनके नज़्दीक इमामत हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हक़ अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम थीं, शैख़ैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को मआज़ल्लाह नाहक़ पहुँची कि मौला अली हुज़ूर के खानदाने अक़्दस में थे, न शैख़ैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन आज तक उनके जुह्हाल अवाम को यही बहकाते हैं कि खानदान की चीज़ खानदान से बाहर नहीं जा सकती, सिद्दीक़ व फ़ारूक़ क्यों कर उसके मुस्तहिक़ हो गये और अह्ले सुन्नत यही जवाब देते हैं कि यह दुनियवी वरासत नहीं दीनी मन्सब है इस में वही मुस्तहिक़ मुक़द्दम रहेगा जो अफ़्ज़ल हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 205)

राफ़ज़ी की नमाज़े जनाज़ा

आजकल के आम राफ़ज़ी मुर्तद हैं तो उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़नी क़तई हराम और शदीद गुनाह का काम है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

अगर राफ़ज़ी ज़रूरियाते दीन का मुंकिर है, मसलन कुरआने अज़ीम में कुछ सूरतें, या आयतें, या कोई हर्फ़ अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ज़ुन्नूरैन ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु या और सहाबा ख़्वाह किसी शख़्स का घटाया हुआ मानता है, या मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम, ख़्वाह दीगर अंबियाए अत्हार को अंबियाए साबेक़ीन अलैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम में किसी से अफ़्ज़ल जानता है। और आजकल यहाँ के राफ़ज़ी तबर्रई उमूमन ऐसे ही हैं उन में शायद एक शख़्स भी ऐसा न निकले जो उन अक़ाइदे कुफ़्रिया का मोतक़िद न हो जब तो वह काफिर मुर्तद है और उसके जनाज़ा की नमाज़ हरामे क़तई व गुनाहे शदीद है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

कभी नमाज़ न पढ़ उनके किसी मुर्दे पर न उसकी क़ब्र पर खड़ा हो उन्होंने अल्लाह व रसूल के साथ कुफ़्र किया और मरते दम तक बेहुक्म रहे। (सूरः तौबा : 84)

और अगर ज़रूरियाते दीन का मुंकिर नहीं मगर तबर्रई है तो जम्हूर अइम्म–ए–किराम व फ़ुक़हाए एज़ाम के नज़्दीक उसका भी वही हुक्म है।

और अगर सिर्फ़ तफ़्ज़ीलीया है तो उसके जनाज़ा की नमाज़ भी न चाहिए।

मुतअद्दद हदीसों में बद मज़्हबों की निस्बत इरशाद हुआ :

वह मरें तो उनके जनाज़ा पर न जाएं, उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें।

(अक़ीली, इब्ने हिब्बान, फ़तावा रज़्वीया जिल्दइ 4, स0 53)

नेचरी कौन ?

यह फ़िर्क़ा सैयद अहमद खान बिन मुहम्मद तक़ी खान की तरफ़ मन्सूब है। (मुरत्तिब)

यह बातिल गरोह ज़रूरियाते दीन का मुंकिर है, कुरआने अज़ीम के मआनी क़तईया ज़रूरिया में दर पर्दा तावील व तहरीफ़ और तब्दील करता है, वजूदे मलाइका व आसमान व जिन्न व शैतान व

हश्र अबदान व नार व जिनान व मोजज़ात अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से उन्हीं मल्ऊन तावीलों की आड़ में इंकार रखता है। (फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 191)

नेचरी के नज़्दीक कलिमा तैयबा का जुज़ अव्वल ही नजात के लिए काफी

नेचरी इस पर बहुत ज़ोर देते हैं और डिपटी नज़ीर अहमद ने तो साफ़ लिख दिया है कि नजात के लिए सिर्फ़ ला–इलाहा इल्लल्लाह काफी है मुहम्मद रसूलुल्लाह की कुछ हाजत नहीं, और उस पर हदीस मन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाह दख़लल–जन्नता से सनद लाते हैं।

इसके जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

हदीस हक़ है, और ज़ुअम ख़बीस कुफ़्र, ला–इलाहा–इल्लल्लाह कलिमा तैयबा का इल्म है। जिस से पूरा कलिमा मुराद है अगर कहिए अल्हम्दु सात बार कहो, या क़ुल हुवल्लाह ग्यारह बार कहो, इस से सिर्फ़ लफ़्ज़ अल्हम्दु या लफ़्ज़ क़ुल हुवल्लाह, मुराद होंगी? हरगिज़ नहीं, बल्कि पूरी सूरतें कि इख़्तिसारन जिनके यह नाम हैं। कलिमा तैयबा का इख़्तिसार ला इलाहा नहीं हो सकता था कि नफ़ी महज़ बिला इस्तिस्ना तो मआज़ल्लाह कलिमा कुफ़्र है, ला जुर्म निस्फ़ कलिमा उसका इख़्तिसार हुआ, यह एक ज़ाहिर जवाब है।

और मेरे नज़्दीक तो हक़ीक़त अम्र यह है कि बेशक सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह नजात का ज़ामिन है और इसी से वह मल्ऊन क़ौल कि मुहम्मद रसूलुल्लाह की मआज़ल्लाह हाजत नहीं कुफ़्र ख़ालिस है।

ला इलाहा इल्लल्लाह से फ़क़त अल्फ़ाज़ मुराद नहीं बल्कि उसके मानी की तस्दीक़ सच्चे दिल से ईमान लाना कि जिस ज़ात जामेअ़ जमीअ़ कमालात मुनज़्ज़ह अज़ जमीअ़ उयूब व नक़ाइस का इल्मे पाक वाक़े में अल्लाह है, जिसने सच्ची किताबें उतारीं, सच्चे रसूल भेजे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अफ़्ज़लुर्रसूल व ख़ातमन्नबीयीन किया, वह जिसके कलाम पाक का एक–एक हर्फ़ यक़ीनी क़तई हक़ है, जिसमें किज़्ब या सह्व या ख़ता का असलन किसी तरह इम्कान नहीं, जिसने अल्लाह को इस तरह पहचाना उसी ने अल्लाह को जाना, उसी ने ला इलाहा इल्लल्लाह माना, और जिसे ज़रूरियाते दीन से किसी बात में शक या शुबह है उस ने न हरगिज़ अल्लाह को जाना, न ला इलाहा इल्लल्लाह माना।

मसलन जो शख़्स ला इलाहा इल्लल्लाह पर ईमान का दावा रखे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को न माने वह ऐसे की तौहीद की गवाही देता है, ऐसे को अल्लाह समझा है, जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को न भेजा, और वह हरगिज़ अल्लाह नहीं, उसने अपने ख़्याल में एक बातिल तसव्वुर जमा कर उसका नाम अल्लाह रख लिया है, यह अल्लाह पर मोमिन नहीं बल्कि अल्लाह के साथ मुश्रिक है।

अल्लाह यक़ीनन वह है जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा तो अल्लाह पर ईमान वही लाएगा जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता है। उस पर तमाम ज़रूरियाते दीन पर क़्यास कर लो। मसलन जो अल्लाह का मुक़र और क़्यामत का मुंकिर है यक़ीनन अल्लाह का मुंकिर और इस इक़रार में मुश्रिक है तो ऐसे को अल्लाह ठहराया जो क़्यामत न लाएगा, हालांकि अल्लाह वह है कि क़्यामत जिसका सच्चा वादा है, व अला हाज़ल–क़्यास, अब बफ़ज़्लेही तआला मानी बेतकल्लुफ़ सही हो गये। लिहाज़ा अपने रिसाला बाबुल–अक़ाइद वल–कलाम में साबित किया है कि कुफ़्र सिर्फ़ जेहल बिल्लाह का नाम है, जो अल्लाह को सही तौर पर जानता मानता काफिर हो सकता है और जो काफिर है अल्लाह को हरगिज़ नहीं जान सकता अगरचे कितना ही बड़ा दावा इल्म व मारिफ़त का करे, जैसे देवबन्दीया वहाबिया व मिर्ज़ाइया वग़ैरहुम ख़ज़िल्लहुमुल्लाहु तआला। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स0 85)

नेचरियों के ग़ैर इस्लामी और बातिल नज़्रियात :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू नेचरियों के बाज़ इज्माली अक़ाइद और मुल्हिदाना नज़्रियात की झलक दिखाते हुए तहरीर फरमाते हैं :

वजूदे मलाइका, वजूदे जिन्न, वजूदे शैतान, वजूदे आसमान, व सेहत मोजज़ात अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम, हश्र व नश्र, जन्नत व नार, बतौरे अक़ाइद वग़ैरहा बहुत ज़रूरियाते दीनीया से मुंकिर हैं।

तमाम उलमाए इस्लाम के इज्मा व इत्तिफ़ाक़ से वह सब के सब काफिर व मुर्तद हैं।

(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 8, स0 330)

चकड़ालवी कौन ? यह फ़िर्क़ा अब्दुल्लाह चकड़ालवी की तरफ़ मन्सूब है। (मुरत्तिब)

यह एक नया गरोह पैदा हुआ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पैरवी से मुंकिर है, तमाम अहादीस मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बातिल व नाक़ाबिल बताता और सिर्फ़ कुरआने अज़ीम के इत्तिबा का इद्दआ रखता है और हक़ीक़तन ख़ुद कुरआने अज़ीम का मुंकिर व मब्तल है, इन ख़बीसों ने अपनी नमाज़ भी जुदा गढ़ी है जिसमें हर वक़्त की सिर्फ़ दो ही रकाअतें हैं। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 191)

यह फ़िर्क़ा कैसे को ख़ुदा कहता है

(1) चकड़ालवी ऐसे को ख़ुदा कहता है जिसके रसूल की क़द्र एक डाकिए से ज़्यादा नहीं, जिसने अपने नबी का इत्तिबा कुछ न रखा।

(2) चकड़ालवी ऐसे को ख़ुदा कहता है जिसने कहा तो यह कि "मेरी किताब में हर शय का रौशन बयान है "हर चीज़ की पूरी तफ़्सील है।" हम ने इसमें कोई बात उठा न रखी।"और हालत यह कि नमाज़ फ़र्ज़ की, और यह भी न बताया कि कई वक़्त की, यह भी न बताया कि हर वक़्त में कई रकाअतें, यह भी न बताया कि उसके पढ़ने की तरकीब किया है। इसक अरकान क्या हैं। अगर रुकूअ़, सुजूद, क़याम, क़िरात उसके रुक्न माने भी जाएं, अगरचे उसने कहीं उसका इज़हार न किया। तो उन में आगे क्या हो, पीछे क्या हो, उसके मुफ़्सिदात क्या क्या हैं? क्यों कर जाती है? क्यों कर होती है? सबसे बड़ा फ़र्ज़ ईमान उसमें तो यह गोल मुज्मल है, बेसूद बयान जिस से कुछ पता ही न चले और दावे वह लम्बे कि अशिया का रौशन बयान। वग़ैरह वग़ैरह ख़ुराफ़ाते मल्ऊना, क्या उसने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल–अर्शे अम्मा यसिफून।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 742)

यहूद कैसे को ख़ुदा कहते हैं ?

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं। "जो आसमान व ज़मीन बना कर इतना थका कि अर्श पर जा कर पाँव पर पाँव रख कर चित लेट गया।"

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, "जो इन में बाज़ के नज़्दीक उज़ैर का बाप है।"

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं," जो एक हुक्म देकर उसका पाबन्द हो जाता है, ज़माना व मसालेह कितने ही बदलें उसके बदले दूसरा हुक्म नहीं भेज सकता।" इसलिए वह नस्ख़ के मुंकिर हैं, और शरीअते मूसवी को अबदी कहते और इस सरीह किज़्ब का इफ़्तरा अपने माबूद के सर धरते हैं।

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जिसने आप ही क़ौमे नूह पर तूफ़ान भेजा फिर अपनी इस हरकत पर ऐसा नादिम हुआ, इतना रोया कि आंखें दुख आईं। यहूदा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं जिसने यहूदी के लिए उसकी सगी बहन हलाल की और तौरात में उसकी हुर्मत ग़लत लिख दी।" इसलिए कि शरीअते आदम में यक़ीनन हिल्लत थी अब हराम करे तो मन्सूख़ी–ए–हुक्म से पछताना ठहरे।

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, "जिसने ख़लील व इस्माईल अलैहिमस्सलातु वस्सलाम की दुआ क़बूल की और उन से कहा कि मैंने इस्माईल व औलादे इस्माईल को बरकत दी और तमाम ख़ैर व ख़ूबी उन में रखी, अन्क़रीब तमाम उम्मतों पर उन्हें ग़ालिब करूंगा और उन में उन्हीं में से अपना रसूल अपने कलाम के साथ भेजूँगा, फिर किया कुछ नहीं," बल्कि उनका अक्स किया जैसा यहूद बकते हैं।

★ यहूद ऐसे को ख़ुदा कहते हैं कि "न तौरात उसकी किताब, न मूसा से उसका कलाम, यह सारे करिश्मे एक फ़रिश्ते के हैं।" क्या उन्होंने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल–अर्शे अम्मा यसिफ़ून। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 740)

नसारा कैसे को ख़ुदा कहते हैं ?

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, "जो मसीह का बाप है और मज़ा यह कि उसके भाईयों का भी बाप है, उसके शागिर्दों का बाप है, उसके छोटे झुण्ड का बाप है, हर ईसाई का बाप है, फिर हर मुसलेह का बाप है, ख़ुद आदमियों के बाप आदम का बाप है, तो हर बशर का बाप है, यहाँ तक कि हुक्म है कि ज़मीन पर किसी को अपना बाप मत कहो, क्योंकि तुम्हारा एक ही बाप है जो आसमान पर है।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, "जो अपने इक्लौते को सूली से न बचा सका।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जो रोटी और गोश्त खाता है, और सफर से आकर अपने पाँव धुलवा कर दरख़्त के नीचे आराम करता है, दरख़्त ऊंचा और वह नीचा है।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जो फ़क़त ज़िन्दों का ख़ुदा है मुर्दों का नहीं, जो जो मरते जाते हैं उसकी ख़ुदाई से निक़लते जाते हैं।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जो अपने एक बन्दे से रात को सुबह होने तक कुश्ती लड़ा और उसे गिरा न सका जब देखा कि मैं इस पर ग़ालिब नहीं आता उसके पाँव की नस चढ़ा कर कमज़ोर किया।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जिसने बांदी, ग़ुलाम बनाना जाइज़ रख कर नसारा के धर्म में हद दरजा की नापाक, ज़ालिमाना, वहशियाना, हरकत की, और फिर ख़ाली काम ख़िदमत ही के लिए नहीं बल्कि मूसा को हुक्म दिया कि मुख़ालिफ़ों की औरतें पकड़ कर हरम बनाओ, उन से हम बिस्तरी करो।

★ नसारा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, जिसकी शरीअत महज़ बातिल है, उस से रास्तबाज़ी नहीं आती, उसे ईमान से कुछ इलाक़ा नहीं, जो उसकी शरीअत पर अमल करे मल्ऊन है, वग़ैरह वग़ैरह ख़ुराफ़ाते मल्ऊना, क्या उन्होंने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल–अर्शे अम्मा यसिफ़ूना। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 740ए 741)

मज़हबे नसारा में नजासत नजासत नहीं

नसारा के मज़्हब में ख़ूने हैज़ के सिवा शराब, पेशाब, पाखाना ग़र्ज़ कोई असलन नापाक नहीं, वह उन चीज़ों से बचने पर हँसते हैं और अपनी साख़्ता तहज़ीब के ख़िलाफ़ समझते हैं तो उनका ज़ाहिर हाल नजासत से मुतलव्विस व आलूदा है। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 126)

नसारा के यहाँ का खाना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नसरानी के खाने से मुमानेअत फरमाई। मुसनद इमाम अहमद में हल्ब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि तआम नसरानी से नही फरमाई और इरशाद किया ज़िन्हार तेरे सीने में वह खाना जुंबिश न करे जिस में नसरानियत का मैल है। (इमाम सुयूती जामे कबीर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जहाँ तक बने नसारा के बर्तनों से दूर रहो, और बर्तन न मिलें तो पहले उन्हें धो कर पाक कर लो उसके बाद इस्तेमाल में लाओ।

अबू सालबा ख़ुशनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैंने अर्ज की या रसूलल्लाह हम दुश्मन के मुल्क में जिहाद को जाते हैं, उनके बर्तनो की हाजत पड़ती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जहाँ तक बन पड़े उन बर्तनों से दूर रहो और अगर दूसरा बर्तन न मिले तो उन्हें धोकर पाक कर लो उसके बाद उन में खाओ पियो। (बुख़ारी)

यहाँ बनिस्बत हुनूद के नसारा के खाने पानी से बहुत ज़्यादा बचने का हुक्म है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 332ए 333)

मजूस कैसे को ख़ुदा कहते हैं

(1) मजूस ऐसे को ख़ुदा कहते हैं जिसके बराबर की चोट का दूसरा ख़ालिक़ शैतान है।

(2) मजूस ऐसे को ख़ुदा कहते हैं जिसे बैठे बिठाए एक दिन फ़िक्र हुई कि अगर कोई मेरा मुख़ालिफ़ हो तो कैसा हो? इस ख़्याले फासिद से एक धुवाँ उठा जो शैतान बना और उसने क़ुव्वत पकड़ी यहाँ तक कि लश्कर जोड़ कर यज़्दाँ के मुक़ाबिल हुआ, मजूस का यज़्दाँ उसके मुक़ाबला की ताब न लाकर भागा और जन्नत में क़िला बन्द हुआ, अहरमन तीन हज़ार बरस जन्नत का मुहासरा किए रहा, यज़्दाँ उसका कुछ बिगाड़ न सका, आख़िर फ़रिश्तों ने बीच बचाव करके तस्फ़िया करा दिया कि सात हज़ार बरस दुनिया में शैतान सलतनत करे, फिर मुल्क यज़्दाँ को सौंप दे, मजूस का यज़्दाँ तूल मुहासरा से आजिज़ आ चुका था, जबरन क़हरन क़बूल किया। और अब उस से दुआ फ़ुज़ूल कि वह दुनिया की सलतनत से माज़ूल।

(3) मजूस ऐसे को ख़ुदा कहते हैं जिसने बेटे के लिए माँ–बाप के लिए बेटी जैसी बेहाइयाँ हलाल की हैं, क्या उन्होंने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल–अर्शे अम्मा यसिफ़ून।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 739)

फ़लासफ़ा कौन ?

फलासफ़ा ऐसे को ख़ुदा कहते हैं, "जो सिर्फ़ एक "अक़्ले अव्वल" का ख़ालिक़ है, दूसरी चीज़ बना ही नहीं सकता, तमाम जुज़इयाते आलम से जाहिल है, अपने अफ़आल में मुख़्तार नहीं, अज्साम को मअ्दूम करके फिर नहीं बना सकता, इसलिए वह हश्र अज्साद के मुंकिर हैं। आसमान उसने न बनाए बल्कि अक़्ले अव्वल ने और ऐसे मज़्बूत गढ़े कि फ़ल्सफ़ी ख़ुदा उन्हें शक़ नहीं कर सकता, इसलिए क़यामत के मुंकिर हैं, वग़ैरह वग़ैरह ख़ुराफ़ाते मल्ऊना, क्या उन्होंने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल–अर्शे अम्मा यसिफ़ून।

(फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 738)

आरिया कैसे को ईश्वर मानते हैं ?

(1) आरिया ऐसे को ईश्वर कहते हैं "जिसके बराबर के हम उम्र दो वाजिबुल–वजूद और हैं, रूह और माद्दह, ईश्वर न उनका ख़ालिक़, न उनका मालिक, और नाहक़, नारवा उन्हें दबा बैठा उन पर ज़ालिमाना हुक्म चला रहा है।"

(2) आरिया ऐसे को ख़ुदा कहते हैं जिसका असलन कोई सुबूत ही नहीं, आरिया ने ज़बरदस्ती मान रखा है।

(3) आरिया ऐसे को ख़ुदा या ईश्वर कहते हैं जो माँ रखता है और वह उसकी जान की हिफ़ाज़त करती है। तो बाप भी ज़रूर होगा। ख़ुद आरिया विलादत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर कहते हैं कि बे बाप विलादत निरा मुज़्हका है, जब ईश्वर के होते हुए बे बाप विलादत नहीं हो सकती, तो

जब ईश्वर भी न थे उनकी माता आप से आप कैसे गर्भ कर लाती। और ख़ाकी अन्डा हो भी, तो गन्दा।
(4) आरिया ऐसे को ईश्वर कहते हैं जो बिस्तर पर बीमार पड़ा और अपनी माँ को दवा के लिए पुकार रहा है, वेद आते और उसका तंगहाल देख कर सख़्त कुढ़ते और सर हिलाते हैं।
(5) आरिया ऐसे को ईश्वर कहते हैं जिस से ज़्यादा इल्म व अक़्ल वाले मौजूद हैं, वग़ैरह वग़ैरह ख़ुराफ़ाते मल्ऊना, क्या उन्होंने ख़ुदा को जाना? हरगिज़ नहीं। सुब्हाना रब्बिल-अर्शे अम्मा यसिफ़ून।
(फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 738)

आरिया और दीगर बद अक़ीदों का बयान सुनने की मुमानेअत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने हर क़दम पर मुसलमानों की रहनुमाई फ़रमाई, उनकी सलाह व फलाह, और उनकी इस्लाहे अक़ाइद के लिए हर मुम्किन सई व कोशिश फ़रमाई, तसानीफ़ का तवील सिलसिला इसी दर्द का नतीजा है, यहाँ पर इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने जो दर्द भरा पैग़ाम क़ौम के हवाले किया है जिस से क़ौम मुस्लिम की इस्लाह के लिए उनके कर्ब व बेचैनी का अन्दाज़ा होता है। यहाँ पर अगरचे आरिया के बारे में कहा गया है, कि उनके लेक्चर, उनके बयानात मुसलमान न सुनें मगर तमाम बद मज़हब व बद अक़ीदों के बयानात सुनने का यही हुक्म है।

चूंकि जिस ज़माने में यह तहरीर लिखी गई उस वक़्त आरियों का ज़ोर था, उन्हीं के बयानात ज़्यादा हो रहे थे, इसलिए ख़ास तौर से आरिया के लेक्चर वग़ैरह का ज़िक्र किया गया है हम उस पैग़ाम को यहाँ पर इस जज़्बे से पेश कर रहे हैं ताकि मुसलमान फ़िर्क़हाए बातिला के बयानात सुनने, उनकी मजालिस में जाने, उनके पास उठने बैठने और उनकी किताबें पढ़ने से परहेज़ व इज्तिनाब करें, इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू का पैग़ाम मुलाहिज़ा फ़रमाएं। (मुरत्तिब)

आजकल हमारे अवाम भाईयों की सख़्त जेहालत यह है कि किसी आरिया ने इश्तिहार दिया कि इस्लाम के फलां मज़्मून के रद में, फलां वक़्त लेक्चर दिया जाएगा, यह सुनने के लिए दौड़े जाते हैं।

किसी पादरी ने ऐलान किया कि नसरानियत के फलाँ मज़्मून के सुबूत में, फ़लाँ वक़्त निदा होगी, यह सुनने के लिए दौड़े जाते हैं।

भाईयो! तुम अपने नफ़ा नुक़्सान को ज़्यादा जानते हो या तुम्हारा रब अज़्ज़ा व जल्ल, तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, उनका हुक्म तो यह है कि शैतान तुम्हारे पास वसवसा डालने आए तो सीधा जवाब यह दे दो कि तू झूठा है, न यह कि आप दौड़-दौड़ के उनके पास जाओ और अपने रब, अपने कुरआन, अपने नबी की शान में कलिमाते मल्ऊना सुनो।

देखो कुरआने अज़ीम तुम्हारी इस हरकत की कैसी-कैसी शुनाअतें बताता और उन नापाक लेक्चरों, निदाओं की निस्बत तुम्हें क्या हिदायत फरमाता है इरशाद होता है :

व लौ शाआ रब्बुका मा फ़अ़लूहो फ़ज़रहुम वमा यफ़्तरून। (सूरः इन्आम, आ0 112)

और तेरा रब चाहता तो वह यह धोखे, बनावट की बातें न बनाते फिरते, तो तू उन्हें और उनके बुहतानों को यक्लख़्त छोड़ दे।"

देखो उन्हें और उनकी बातों को छोड़ने का हुक्म फरमाया, या उनके पास सुनने के लिए दौड़ने का?

और सुनिए इसके बाद की आयत में फरमाता है :

"और इसलिए कि उनके दिल उसकी तरफ़ कान लगाएं जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और जो कुछ नापाकियाँ वह कर रहे हैं यह भी करने लगें।"

देखो उनकी बातों की तरफ़ कान लगाना, उनका काम बताया जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उसका नतीजा यह फ़रमाया कि यह मल्ऊन बातें उन पर असर कर जाएं और यह भी उन जैसे हो जाएं। वल–अयाज़ बिल्लाह तआला।

लोग अपनी जिहालत से गुमान करते हैं कि हम अपने दिल से मुसलमान हैं, हम पर उनका क्या असर होगा?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : जो दज्जाल की ख़बर सुने उस पर वाजिब है कि उस से दूर भागे कि ख़ुदा की क़सम आदमी उसके पास जाएगा और यह ख़्याल करेगा कि मैं मुसलमान हूँ, यानी मुझे उस से क्या नुक़्सान पहुँचेगा, वहाँ उसके धोखों में पड़ कर उसका पैरू हो जाएगा। (अबू दाऊद)

क्या दज्जाल एक उसी दज्जाल अख़्बस को समझते हो जो आने वाला है, हरगिज़ नहीं बल्कि तमाम गुम्राहों के दाई, मुनादी सब दज्जाल हैं और सब से दूर भागने ही का हुक्म फ़रमाया और उसमें यही अन्देशा बताया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : आख़िर ज़माने में दज्जाल कज़्ज़ाब लोग होंगे कि वह बातें तुम्हारे पास लाएंगे जो तुमने सुनीं, न तुम्हारे बाप दादा ने, तो उन से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो, कहीं वह तुम्हें गुम्राह न कर दें, कहीं वह तुम्हें फ़ित्ना में न डाल दें। (मुस्लिम)

और सुनिए उसके बाद की आयात में फ़रमाता है :

"तो क्या अल्लाह के सिवा और कोई फ़ैसला करने वाला ढूँढूं हालांकि उसने मुफ़स्सल किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी, और अह्ले किताब ख़ूब जानते हैं कि वह तेरे रब के पास से हक़ के साथ उतरी, तो ख़बरदार तू शक न करना, और तेरे रब की बात सच और इंसाफ़ में कामिल है, कोई उसकी बातों का बदलने वाला नहीं और वह शुनवा व दाना है और ज़मीन वालों में ज़्यादा वह हैं कि तू उनकी पैरवी करे तो वह तुझे ख़ुदा की राह से बहका दें, वह तो गुमान के पैरू हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं, बेशक तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह से बहकेगा और वह ख़ूब जानता है हिदायत पाने वालों को।

ख़ुलासा मतलब

यह तमाम आयाते करीमा उन्हीं मतालिब के सिलसिल–ए–बयान में हैं, गोया इरशाद होता है, तुम जो इन शैतान आदमियों की बातें सुनने जाओ क्या तुम्हें यह तलाश है कि देखें इस मज़्हबी इख़्तिलाफ़ में यह लेक्चरार, या यह मुनादी क्या फ़ैसला करता है? अरे ख़ुदा से बेहतर फ़ैसला किसका, उस ने मुफ़स्सल किताब कुरआने अज़ीम तुम्हें अता फ़रमा दी, उसके बाद तुमको किसी लेक्चर, निदा की क्या हाजत है। लेक्चर वाले जो किसी किताबे दीनी का नाम नहीं लेते। किस गिनती शुमार में हैं, यह किताब वाले दिल में ख़ूब जानते हैं कि कुरआन हक़ है, तअस्सुब की पट्टी आंखों पर बंधी है कि हट धर्मी से मुकरे जाते हैं। तो तुझे क्यों शक पैदा हो कि उनकी सुनना चाहिए, तेरे रब का कलाम सिद्क़ व अद्ल में भर पूर है। कल तक जो उस पर तुझे कामिल यक़ीन था, आज क्या उसमें फ़र्क़ आया कि उस पर एतराज़ सुनना चाहता है? क्या ख़ुदा की बातें कोई बदल सकता है? यह न समझना कि मेरा कोई मक़ाल, कोई ख़्याल ख़ुदा से छुप रहेगा वह सुनता जानता है।

तंबीह व नसीहत

देखा अगर तूने उनकी सुनी तो वह तुझे ख़ुदा की राह से बहका देंगे, क्या यह ख़्याल करता है कि उनका इल्म देखूं कहाँ तक है? यह क्या कहते हैं? अरे उनके पास इल्म कहाँ, वह तो अपने

औहाम के पीछे लगे हुए हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं, जिनका थल न बेड़ा, जब अल्लाह वाहिदे क़ह्हार की गवाही है कि उनके पास निरी मुहमल अटकलों के सिवा कुछ नहीं, तो उनके सुनने के क्या मानी, सुनने से पहले वही कह दे जो तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तालीम फ़रमाया कि शैतान तू झूठा है, और इस घमण्ड में न रहना कि मुझ को क्या गुम्राह करेंगे मैं तो राह पर हूँ। तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके राह से बहकेगा और कौन राह पर है, तू पूरा राह पर होता तो बेराहों की सुनने ही क्यों जाता, हालांकि तेरा रब फरमा चुका छोड़ दे उन्हें और उनके बुहतानों को। तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमा चुके, उन से दूर रहो और उनको अपने से दूर करो। कहीं वह तुमको बहका न दें, कहीं वह तुम को फितने में न डाल दें।

सीधी सहल ग़ौर तलब बात

भाईयो! एक सहल सी बात है उसे ग़ौर फरमा लो, तुम अपने रब, अपने कुरआन, अपने नबी पर सच्चा ईमान रखते हो या मआज़ल्लाह कुछ शक है? जिसे शक हो उसे इस्लाम से क्या इलाक़ा, वह नाहक़ अपने आपको मुसलमान कह कर मुसलमानों को क्यों बदनाम करे, और अगर सच्चा ईमान है तो अब यह फरमाइए कि उनके लेक्चरों, निदाओं में आपके रब व कुरआन व नबी व ईमान की तारीफ़ होगी या मज़म्मत, ज़ाहिर है कि दूसरी ही सूरत होगी और इसीलिए तुमको बुलाते हैं कि तुम्हारे मुँह पर तुम्हारे ख़ुदा व नबी व कुरआन व दीन की तौहीन व तक्ज़ीब करें।

तम्सीले हुस्न के साथ तफ़्हीमे हक़

अब ज़रा ग़ौर कर लीजिए एक शरीर ने ज़ैद के नाम इश्तिहार दिया कि फलां वक़्त, फ़लां मक़ाम पर मैं बयान करूंगा कि तेरा बाप वलदुल–हराम और तेरी माँ ज़ानिया थी, ख़ुदा रा इंसाफ़! क्या कोई ग़ैरत वाला, हमीयत वाला, इंसानियत वाला, जबकि उसे इस बयान से रोक देने, बाज़ रखने पर क़ादिर न हो, उसे सुनने जाएगा? हरगिज़ नहीं, किसी भंगी, चमार से भी यह न हो सकेगा।

इफ़्तरा सुनने वाला, मुफ़्तरी का शरीक है

फिर ईमान के दिल पर हाथ रख देखो कि अल्लाह व रसूल व कुरआने अज़ीम की तौहीन, तक्ज़ीब, मज़म्मत सख़्त तर है, या माँ–बाप की गाली? ईमान रखते हो तो उसे उस से कुछ निस्बत न जानोगे। फिर कौन से कलेजे से उन जिगर शिगाफ़, नापाक, मल्ऊन, बुहतानों, इफ़्तराओं, शैतानी अटकलों, ढकोसलों को सुनने जाते हो बल्कि हक़ीक़तन इंसाफ़न वह जो कुछ बकते और अल्लाह व रसूल व कुरआने अज़ीम की तहक़ीर करते हैं, इस सबके बाइस यह सुनने वाले हैं, अगर मुसलमान अपना ईमान संभालें, अपने रब व कुरआन व रसूल की इज़्ज़त, अज़मत पेशे नज़र रखें, और ऐका कर लें कि वह ख़बीस लेक्चर, गन्दी निदाएं सुनने कोई न जाएगा जो वहाँ मौजूद हो वह भी फौरन वही मुबारक इरशाद का कलिमा कह कर कि तू झूठा है चला जाएगा तो क्या वह दीवारों, पत्थरों से अपना सर फोड़ेंगे, तो तुम सुन–सुन कर कहलवाते हो, न तुम सुनो न वह कहें, फिर इंसाफ़ कीजिए कि उसके कहने का वबाल किस पर हुआ?

गुनाह के काम में तआवुन भी गुनाह

उलमा फरमाते हैं : हट्टे–कट्टे जवान तन्दुरुस्त जो भीख माँगने के आदी होते और इसी को अपना पेशा कर लेते हैं उन्हें देना नाजाइज़ है कि उसमें गुनाह पर शह देनी है, लोग न दें तो झक मारें और मेहनत मज़्दूरी करें।

भाईयो! जब इसमें गुनाह की इम्दाद है तो उसमें तो कुफ़्र की मदद है, वल–अयाज़ बिल्लाह तआला। कुरआने अज़ीम की नस्से क़तई ने ऐसी जगह से फौरन हट जाना फ़र्ज़ कर दिया और वहाँ ठहरना फ़क़त हराम ही न फरमाया बल्कि सुनो तो क्या क्या इरशाद किया। रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

यानी बेशक अल्लाह तुम पर कुरआन में हुक्म उतार चुका कि जब तुम सुनो ख़ुदा की आयतों से इनकार होता और उनकी हंसी की जाती है तो उन लोगों के पास न बैठो जब तक वह और बातों में मशग़ूल न हों और तुमने न माना और जिस वक़्त वह आयातुल्लाह पर एतराज़ कर रहे हैं वहाँ बैठे तो जब तो तुम भी उन्हीं जैसे हो, बेशक अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सबको जहन्नम में इकट्ठा करेगा।

आह आह! हराम तो हर गुनाह है। यहाँ तो अल्लाह वाहिद क़हहार यह फ़रमा रहा है कि वहाँ ठहरे तो तुम भी उन्हीं जैसे हो।

हासिल नसीहत

इलाही इस्लामी कलिमा पढ़ने वालों की आँखें खोल, ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल–अलीईल–अज़ीम। मुसलमान अगर कुरआने अज़ीम की इस नसीहत पर अमल करें तो अभी–अभी देखें कि आदा अल्लाह के सब बाज़ार ठण्डे हुए जाते हैं। मुल्क में उनके शोर व शर का निशान न रहेगा। जहन्नम के कुन्दे, शैतान के बन्दे आपस ही में टकरा–टकरा कर सर फोड़ेंगे, अल्लाह व रसूल व कुरआने अज़ीम की तौहीनों से मुसलमानों का कलेजा पकाना छोड़ेंगे और अपने घर बैठ कर बके भी तो मुसलमान के कान तो ठन्डे रहेंगे। ऐ रब मेरे तौफ़ीक़ दे।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 215 ता 218)

शरीअत व तरीक़त

शरीअत अल्लाह तआला का वह बयान किया हुआ क़ानून है जिस पर बन्दा अपने इख़्तियार से चल कर ख़ैर बिज़्ज़ात की बारगाह तक रसाई हासिल करता है और यह अल्लाह तआला का पसन्दीदा रास्ता है।

शरीअत व तरीक़त दो जुदा–जुदा राहें नहीं बल्कि दोनों एक हैं दोनों का मंबअ् व सरचश्मा ज़ाते अक़्दस जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम है यही वजह है कि अक़्वाले रसूल को शरीअत और अफ़्आले रसूल को तरीक़त कहते हैं।

बाज़ लोग यह कहते हैं कि शरीअत अलग रास्ता है और तरीक़त जुदा रास्ता, और यह कहते कि शरीअत चन्द फराइज़ व अहकाम का नाम है और तरीक़त वसूल इलल्लाह का।

हालांकि शरीअत असल है और तरीक़त उसकी फ़रअ्, अगर शरीअत को तरीक़त से जुदा कर दिया जाए तो तरीक़त की नहर बिल्कुल ख़ुश्क और मादूम हो जाए। (मुरत्तिब)

शरीअत व तरीक़त के हक़ाइक़ व मआरिफ़ से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फ़ाज़िलाना अंदाज़ में तहरीर फ़रमाते हैं :

शरीअत तमाम अहकाम जिस्म व जान व रूह व क़ल्ब व जुमला उलूमे इलाहिया व मआरिफ़े ना मुतनाहिया को जामेअ है जिन में से एक–एक टुकड़े का नाम तरीक़त व मारिफ़त है, लिहाज़ा बइज्मा क़तई जुमला औलिया किराम, तमाम हक़ाइक़ को शरीअते मुतह्हरा पर अर्ज़ करना फ़र्ज़ है, अगर शरीअत के मुताबिक़ हों हक़ व मक़्बूल हैं वरना मरदूद व बातिल, तो यक़ीनन क़तअन शरीअत ही का असले कार है, शरीअत ही मुनात व मदार है, शरीअत ही महक (कसौटी) और मेअ्यार है।

शरीअत राह को कहते हैं, और शरीअते मुहम्मदीया अला साहिबहा अफ़्ज़लुस्सलाते वत्तहीयत का तरजमा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की राह, यह क़तअन आम व मुतलक़ है न कि सिर्फ़ चन्द अहकामे जिस्मानी से ख़ास, यही वह राह है कि पाँचों वक़्त हर नमाज़

बल्कि हर रकाअत में उसका माँगना और उस पर सबात व इस्तिक़ामत की दुआ करना हर मुसलमान पर वाजिब फरमाया है कि इहदिनस्सिरातल–मुस्तक़ीम हम को मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की राह चला, उनकी शरीअत पर साबित क़दम रख।

यही वह राह है जिसका मुन्तहा अल्लाह है।

क़ुरआने अज़ीम में फरमाया :

"उस सीधी राह पर मेरा रब मिलता है।" (सूरः हूद 56)

क़ुरआने अज़ीम ने फरमाया :

"ऐ महबूब तुम फरमा दो कि यह शरीअत मेरी सीधी राह है तो उसकी पैरवी करो और उसके सिवा और रास्तों के पीछे न जाओ कि वह तुम्हें उसकी ताकीद फरमाता है ताकि तुम परहेज़गारी करो।" (सूरः इन्आम : 153)

देखो क़ुरआन मजीद ने साफ़ फरमा दिया कि शरीअत सिर्फ़ वह राह है जिस से वसूल इलल्लाह है और उसके सिवा आदमी जो राह चलेगा अल्लाह की राह से दूर पड़ेगा।

शरीअत असल है तरीक़त उसकी फरअ्

यह कहना कि तरीक़त नाम है वसूल इलल्लाह का, महज़ जुनून व जिहालत है, हर दो हरफ़ पढ़ा हुआ जानता है, कि तरीक़, तरीक़ा, तरीक़त राह को कहते हैं न कि पहुँच जाने को, तो यक़ीनन तरीक़त भी राह ही का नाम है, अब अगर वह शरीअत से जुदा हो तो ब–शहादत क़ुरआने अज़ीम ख़ुदा तक न पहुँचाएगी बल्कि शैतान तक, जन्नत में न ले जाएगी बल्कि जहन्नम में कि शरीअत के सिवा सब राहों को क़ुरआने अज़ीम बातिल व मरदूद फरमा चुका, लामुहाला ज़रूर हुआ कि तरीक़त ही शरीअत है कि उसी राहे रौशन का टुकड़ा है उसका उस से जुदा होना मुहाल व ना सज़ा है जो उसे शरीअत से जुदा जानता है उसे राहे ख़ुदा से तोड़ कर इब्लीस मानता है मगर हरगिज़ तरीक़त हक़्क़ा, राहे इब्लीस नहीं क़तअन राहे ख़ुदा है तो यक़ीनन वह शरीअते मुतह्हरा ही का टुकड़ा है।

मरातिबे शरीअत व तरीक़त की तअय्युन बित्तम्सील

शरीअत को क़तरा तरीक़त को दरिया कहना किसी मजनून पक्के पागल का काम है, क्योंकि शरीअत मंबअ् है और तरीक़त उसमें से निकला हुआ एक दरिया, बल्कि शरीअत इस मिसाल से भी मुतआली व बुलन्द व बाला है, मंबअ् से पानी निकल कर दरिया बन कर जिन ज़मीनों पर गुज़रे उन्हें सैराब करने में उसे मंबअ् की एहतियाज नहीं, न उस से नफ़ा लेने वालों को असल मंबअ् की उस वक़्त हाजत, मगर शरीअत वह मंबअ् है कि उस से निकले हुए दरिया यानी तरीक़त को हर आन उसकी एहतियाज है, मंबअ् से उसका तअल्लकु टूटे तो यही नहीं कि सिर्फ़ आइन्दा के लिए मदद मौक़ूफ़ हो जाए फिलहाल जितना पानी आ चुका है चन्द रोज़ तक पीने, नहाने, खेतियाँ, बाग़ात सींचने का काम दे, नहीं नहीं मंबअ् से उसका तअल्लुक़ टूटते ही यह दरिया फौरन फना हो जाएगा, बूँद तो बूँद नम का नाम नज़र न आएगा।

एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

शरीअते मुतह्हरा एक रब्बानी नूर का फानूस है कि दीनी आलिम में उसके सिवा कोई रौशनी नहीं, उसकी रौशनी बढ़ते–बढ़ते सुबह और फिर आफताब और फिर उस से भी ग़ैर मुतनाही दर्जों ज़्यादा तक तरक़्क़ी करती है, जिससे हक़ाइक़े अशिया का इंकिशाफ़ होता और नूरे हक़ तजल्ली फरमाता है यह मरतबा इल्म में मारिफ़त और मरतबा तहक़ीक़ में हक़ीक़त है तो हक़ीक़त में वही एक शरीअत है कि बइख़्तिलाफ़ मरातिब, उसके मुख़्तलिफ़ नाम रखे जाते हैं।

हासिल यह कि शरीअत की हाजत हर मुसलमान को एक–एक साँस, एक–एक पल, एक–एक लम्हा पर मरते दम तक है और तरीक़त में क़दम रखने वालों को और ज़्यादा, कि राह जितनी बारीक उस क़द्र हादी की ज़्यादा हाजत, इसलिए हदीस में आया है।

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बग़ैर फ़िक़्ह के इबादत में पड़ने वाला ऐसा है जैसा कि चक्की खींचने वाला गधा कि मशक़्क़त झेले और नफ़ा कुछ नहीं। (अबू नईम हुलिया)

यानी इबादत की सेहत के लिए इल्म की ज़रूरत है, इल्म के बग़ैर शरीअत की बारीकियों पर इत्तिला मुम्किन नहीं।

अमीरुल–मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं :

दो शख़्सों ने मेरी पीठ तोड़ दी (यानी वह बलाए बेदरमां हैं) जाहिल, आबिद और आलिम जो एलानिया बेबाकाना गुनाहों का इर्तिकाब करे।

ऐ अज़ीज़! शरीअत इमारत है उसका एतक़ाद बुनियाद, और अमल चुनाई, फिर आमाल ज़ाहिर वह दीवार हैं कि इस बुनियाद पर हवा में चुने गये, और जब तामीर ऊपर बढ़ कर आसमानों तक पहुँची वह तरीक़त है, दीवार जितनी ऊंची होगी नेयो की ज़्यादा मोहताज होगी, और न सिर्फ़ नीव की बल्कि आला हिस्सा असफ़ल का भी मोहताज है, अगर दीवार नीचे से ख़ाली कर दी जाए ऊपर से भी गिर पड़ेगी।

जाहिल सूफ़ी, मसख़र–ए–शैतान

अहमक़ वह जिस पर शैतान ने नज़र बन्दी करके उसकी चुनाई आसमानों तक दिखाई और दिल में डाला कि अब हम तो ज़मीन के दाइरे से ऊंचे गुज़र गये हमें उस से तअल्लुक़ की क्या हाजत है, नीव से दीवार जुदा कर ली और नतीजा वह हुआ जो कुरआन मजीद ने फरमाया कि उसको इमारत उसे लेकर जहन्नम में ढह पड़ी।

इसीलिए औलिया–ए–किराम फरमाते हैं : सूफ़ी जाहिल शैतान का मसख़रा है।

हदीस में आया हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक फ़क़ीह, शैतान पर हज़ार आबिद से ज़्यादा भारी है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

मतलब यह है कि बेइल्म मुजाहिदा वालों को शैतान उंगलियों पर नचाता है, मुँह में लगाम, नाक में नकील डाल कर जिधर चाहे खींचे फिरता है, और वह अपने जी में समझते हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं। (रिसाला मक़ाले उरफ़ा)

"औलिया–ए–किराम व अह्ले तरीक़त और सूफ़िया–ए–एज़ाम को शरई क़वानीन व अहकाम और उनकी बारीकियों का इस क़द्र लिहाज़ व पास था कि उनका कोई क़दम दाइर–ए–शरीअत से बाहर नहीं जाता उनके अक़्वाल व अफ़्आल में शरीअत के तक़ाज़े मौजूद हैं, वह कभी भी किसी हाल में तरीक़त को शरीअत से जुदा नहीं समझते न वह अपने को शरई क़वानीन से मुस्तसना जानते थे उनका किरदार, उनकी गुफ़्तार शरीअते इस्लामिया के सांचे में ढली हुई होती थी, उनके अक़्वाल व अफ़्आल अह्ले इस्लाम के लिए आईना अमल और नजात का ज़ामिन हैं, शरीअत की पासदारी से मुतअल्लिक़ बाज़ औलिया व अइम्मा के अक़्वाल मुलाहिज़ा फरमाएं।" (मुरत्तिब)

सरकारे ग़ौसे आज़म के अक़्वाल गिरांमाया

1. हुज़ूर सैयदुल–अफराद क़ुतुबुल–इरशाद ग़ौसे आज़म क़ुतुबे आलम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

ग़ैरे ख़ुदा को मौजूद न देखना उसके साथ हो तो उसकी बांधी हुई हदों से कभी जुदा न हो, और उसके हर अम्र व नह्य की हिफ़ाज़त करे अगर हुदूदे शरीअत से किसी हद में ख़लल आया तो जान ले कि तू फ़ित्ना में पड़ा हुआ है बेशक शैतान तेरे साथ खेल रहा है तो फ़ौरन हुक्मे शरीअत की तरफ़ पलट आ और उस से लिपट जा, और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी छोड़ इसलिए कि जिस हक़ीक़त की शरीअत तस्दीक़ न फरमाए वह हक़ीक़त बातिल है।

सआदत मन्द के लिए हुज़ूर सैयदुल–औलिया ग़ौसुल–उरफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का यही इरशाद काफी है कि उसमें सब कुछ जमा फरमा दिया है।

2. हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन ग़यासुल–कौनैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

जब तू अपने दिल में किसी की दुश्मनी या मुहब्बत पाए तो उसके कामों को क़ुरआन व हदीस पर पेश कर, उन में पसन्दीदा हों तो उस से मुहब्बत रख और अगर नापसन्द हो तो कराहत, ताकि अपनी ख़्वाहिश से न कोई दोस्त रखे न दुश्मन, अल्लाह तआला फरमाता है : ख़्वाहिश की पैरवी न कर कि तुझे ख़ुदा की राह से बहका देगी।

3. हुज़ूर ग़ौसुल–अग़वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

विलायत परतवे नबुव्वत है और नबुव्वत परतवे उलूहीयत, और वली की करामत यह है कि उसका फ़ेअ्ल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़ौल के क़ानून पर ठीक उतरे।

4. हुज़ूर सैयदना महबूबे सुब्हानी मुहीयुद्दीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

शरअ् वह है जिसके सौलते क़हर की तल्वार अपने मुख़ालिफ़ व मुक़ाबिल को मिटा देती है और इस्लाम की मज़्बूत रस्सियाँ उसकी हिमायत की डोरी पकड़े हुए हैं, दो जहाँ के काम का मदार फ़क़त शरीअत पर है और उसकी डोरियों से दोनों आलम की मंज़िलें वाबस्ता हैं।

5. हुज़ूर सैयदना बाज़ अशहब शैख़ अब्दुल–क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

शरीअत पाकीज़ा मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दरख़्त दीने इस्लाम का फल है, शरीअत वह आफ़ताब है जिसकी चमक से तमाम जहान की अन्धेरियाँ जगमगा उठीं, शरअ् की पैरवी दोनों जहान की सआदत बख़्शती है, ख़बरदार उसके दाइरा से बाहर न जाना, ख़बरदार अहले शरीअत की जमाअत से जुदा न होना।

6. हुज़ूर सैय्यदुल–औलिया क़ुतबुल–कौनैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तरफ़ से सबसे ज़्यादा क़रीब रास्ता क़ानूने बन्दगी को लाज़िम पकड़ना और शरीअत की गिरह को थामे रहना है।

7. हुज़ूर सैयदना वारिसुल–मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ग़ौसुल–औलिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

फ़िक़्ह हासिल कर उसके बाद ख़ल्वत नशीं हो, जो बग़ैर इल्म के ख़ुदा की इबादत करे वह जितना संवारेगा उस से ज़्यादा बिगाड़ेगा, अपने साथ शरीअते इस्लामिया की शमअ ले ले।

हज़रत सिर्री सक़्ती की दुआ

हज़रत सैयदना जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मेरे पीर हज़रत सिर्री सक़्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने मुझे दुआ दी।

"अल्लाह तआला तुम्हें हदीसदाँ करके सूफ़ी बनाए और हदीस दाँ होने से पहले तुम्हें सूफ़ी न करे।"

हज़रत इमाम ग़ज़ाली के अक़्वाल

इमाम हुज्जतुल–इस्लाम मुहम्मद ग़ज़ाली कुद्दिसा सिर्रुहुल–आली इस दुआए हज़रत सिर्री सक़्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शरह फरमाते हैं :

हज़रत सिर्री सक़्ती रहमतुल्लाह तआला अलैह ने इस तरफ़ इशारा फरमाया कि जिसने पहले हदीस व इल्म हासिल करके तसव्वुफ़ में क़दम रखा वह फलाह को पहुँचा, और जिसने इल्म हासिल करने से पहले सूफ़ी बनना चाहा उसने अपने आपको हलाकत में डाला।

हज़रत सैयदना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली कुद्दिसा सिर्रुहुल–आली फरमाते हैं :

एक गरोह मारिफ़त व वसूल का दावा रखता है हालांकि मारिफ़त व वसूल का नाम ही नाम जानता है और गुमान करता है कि यह सब अगले पिछलों के इल्म से आला है तो वह फ़क़ीहों, मुफ़स्सिरों, मुहद्दिसों, सबको हिक़ारत की निगाह से देखता है और तमाम मुसलमानों और उलमा को हक़ीर जानता है, अपने वासिल बख़ुदा होने का इद्दआ करता है, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक फाजिरों, और मुनाफ़िक़ों में से है।

हज़रत जुनैद बग़दादी के अक़्वाल

हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ की गई कुछ लोग ज़ुअम करते हैं कि अहकामे शरीअत तो वसूल का वसीला थे और हम वासिल हो गये, अब हमें शरीअत की क्या हाजत।

आपने फरमाया :

(1) सच कहते हैं वासिल ज़रूर हुए कहाँ तक जहन्नम तक, चोर और ज़ानी ऐसे अक़ीदे वालों से बेहतर हैं, मैं अगर हज़ार बरस जियूं तो फरांइज़ व वाजिबात तो बड़ी चीज़ हैं, जो नवाफ़िल व मुस्तहब्बात मुक़र्रर कर लिए हैं बेउज़्र शरई उन में से कुछ कम न करूं।

(2) हज़रत सैयदी अबुल–क़ासिम जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

जिसने न कुरआन याद किया न हदीस लिखी यानी जो इल्मे शरीअत से आगाह नहीं दरबारे तरीक़त उसकी इक़्तिदा न करें, उसे अपना पीर न बनाएं कि हमारा यह इल्मे तरीक़त बिल्कुल किताब व सुन्नत का पाबन्द है।

(3) नीज़ फरमाते हैं :

ख़ल्क़ पर तमाम रास्ते बन्द हैं मगर वह जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के निशाने क़दम की पैरवी करे।

खिलाफ़े पयम्बर कसे राहे गुज़ीद
कि हरगिज़ बमंज़िल नख़्वाहद रसीद

जिसने पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ रास्ता इख़्तियार किया वह हरगिज़ मंज़िले मक़्सूद पर न पहुँचेगा। (त)

सरकार बायज़ीद बुस्तामी के अक़्वाल

(1) हज़रत सैयदना अबू यज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने अमी बुस्तामी के वालिद से फरमाया : चलो उस शख़्स को देखें जिसने अपने आपको बनामे विलायत मशहूर किया है वह शख़्स मरजा नास और ज़ुहद व तक़्वा में मशहूर था जब वहाँ तशरीफ़ ले गये इत्तिफ़ाक़न उसने क़िब्ला की तरफ़ थूका। हज़रत अबू यज़ीद बुस्तामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फौरन वापस आए और उस से अस्सलामु अलैका न की और फरमाया :

यह शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आदाब से एक अदब पर तो

अमीन है नहीं, जिस चीज़ का एआदा रखता है उस पर क्या अमीन होगा।

और दूसरी रिवायत में है, फरमाया :

यह शख़्स शरीअत के एक अदब पर तो अमीन है नहीं असरारे इलाहिया पर क्यों कर अमीन होगा।

(2) नीज़ हज़रत बुस्तामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

अगर तुम किसी शख़्स को देखो ऐसी करामत दिया गया कि हवा पर चार ज़ानों बैठ सके तो उस से फ़रेब न खाना जब तक यह न देखो कि फर्ज़, वाजिब, मक्रूह व हराम व मुहाफ़िज़ते हुदूद व आदाबे शरीअत में उसका हाल कैसा है।

हज़रत अबू सईद ख़राज़ का क़ौल

हज़रत अबू सईद ख़राज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जो कि हज़रत ज़ुन्नून मिस्री, सिर्री सक़्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के असहाब और सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हम ज़मान हैं, फरमाते हैं :

"जो बातिन कि ज़ाहिर उसकी मुख़ालिफ़त करे वह बातिन नहीं बातिल है।"

क़ौल मज़्कूर की शरह नाबलुसी

अल्लामा आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल–ग़नी नाबलुसी क़ुद्दिसा सिर्रुहुल–क़ुदसी इस क़ौल मुबारक की शरह में फरमाते हैं ।

इसलिए कि जब उसने ज़ाहिर की मुख़ालिफ़त की तो वह शैतानी वसवसा और नफ़्स की बनावट है।

हज़रत हारिस मुहासबी का क़ौल

हज़रत सैयदना हारिस मुहासबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि अकाबिर औलिया व अइम्मा में से हैं फरमाते हैं :

जो अपने बातिन को मुराक़बा और इख़्लास से सही कर लेगा। लाज़िम है कि अल्लाह तआला उसके ज़ाहिर को मुजाहिदा व पैरवी सुन्नत से आरास्ता फरमा देगा।

इस क़ौल की शरह रज़वी

शैख़ुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इस क़ौल की शरह में फरमाते हैं :

यानी जिस का ज़ाहिर ज़ेवर शरअ़ से आरास्ता नहीं वह बातिन में भी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के साथ इख़्लास नहीं रखता।

अबू उसमान हीरी के अक़्वाल

हज़रत सैयदना अबू उसमान हीरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने वक़्ते इंतिक़ाल अपने साहबज़ादा अबू बकर रहमतुल्लाह तआला अलैह से फरमाया :

"ऐ मेरे बेटे! ज़ाहिर में सुन्नत का ख़िलाफ़ उसकी अलामत है कि बातिन में रियाकारी है।"

नीज़ फरमाते हैं :

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ ज़िन्दगानी का तरीक़ा यह है कि सुन्नत की पैरवी करे और इल्मे ज़ाहिर को लाज़िम पकड़े।"

हज़रत अबुल–हुसैन अहमद का क़ौल

हज़रत सैयद अबुल–हुसैन अहमद बिन अबिल–हवारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिनको सैय्यदुत्ताइफ़ा रैहानतुश्शाम यानी मुल्के शाम का फूल कहते थे फरमाते हैं :

"जो किसी क़िस्म का कोई अमल बेइत्तिबा सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम करे वह अमले बातिल है।"

हज़रत अबू हफ़्स हद्दाद का क़ौल

हज़रत सैयदी अबू हफ़्स उमर हद्दाद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

जो हर वक़्त अपने तमाम काम व अहवाल को कुरआन व हदीस की मीज़ान में न तौले और अपने वारदाते क़ल्ब पर एतमाद कर ले उसे मर्दों के दफ़्तर में न गिन।

हज़रत अबुल–हुसैन अहमद नूरी का क़ौल

हज़रत सैयदना अबुल–हुसैन अहमद नूरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

"तू जिसे देखे कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के साथ ऐसे हाल का इद्दआ करता है जो उसे इल्मे शरीअत की हद से बाहर करे उसके पास न फटक।"

हज़रत अबुल–अब्बास अहमद का क़ौल

हज़रत सैयदी अबुल–अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अल–औला रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

जो अपने ऊपर आदाबे शरीअत लाज़िम करे अल्लाह तआला उसके दिल को नूरे मारिफ़त से रौशन कर देगा और कोई मक़ाम उस से बढ़ कर मुअज़्ज़म नहीं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहकाम, अफ़आल आदात सब में हुज़ूर की पैरवी की जाए।

हज़रत सिर्री सक़्ती का क़ौल

हज़रत सैयदना सिर्री सक़्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

तसव्वुफ़ तीन वस्फ़ों का नाम है।

★ एक यह कि उसका नूरे मारिफ़त उसके नूरे वरअ् को न बुझाए।

★ दूसरे यह कि बातिन से किसी ऐसे इल्म में बात न करे कि ज़ाहिरे कुरआन या ज़ाहिरे सुन्नत के ख़िलाफ़ हो।

★ तीसरे यह कि करामतें उसे उन चीज़ों की पर्दादरी पर न लाएं जो अल्लाह तआला ने हराम फरमाएं।

हज़रत अबू सुलेमान दारानी का क़ौल

हज़रत सैयदी अबू सुलेमान दारानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

बारहा मेरे दिल में तसव्वुफ़ का कोई नुक्ता मुद्दतों आता है जब तक कुरआन व हदीस दो गवाह आदिल उसकी तस्दीक़ नहीं करते मैं क़बूल नहीं करता।

दूसरी रिवायत में है, फरमाया :

बारहा नुक्त–ए–हक़ीक़त मेरे दिल में चालीस–चालीस दिन खटकता रहता है जब तक किताब व सुन्नत के दो गवाह उसके साथ न हों मैं अपने दिल में दाख़िल होने का उसे इज़्न नहीं देता।

हज़रत अबू अली रूदबारी का क़ौल

हज़रत आली मंज़िलत इमाम तरीक़त सैयदना अबू अली रूदबारी बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु (कि अजिल्ल–ए–ख़ुलफ़ाए हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से

हैं हज़रत आरिफ़ बिल्लाह सैयदना उस्ताज़ अबुल–क़ासिम क़ुशैरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : मशाइख़ में उनके बराबर इल्मे तरीक़त किसी को न था)

उस जनाब से सवाल हुआ कि एक शख़्स मज़ामीर सुनता है और कहता है यह मेरे लिए हलाल हैं इसलिए कि मैं ऐसे दर्जे तक पहुँच गया हूँ कि अहवाल के इख़्तिलाफ़ का मुझ पर कुछ असर नहीं होता, फरमाया :

"हाँ, पहुँचा तो ज़रूर है, मगर जहन्नम तक," वल–अयाज़ बिल्लाह तआला।

हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद का क़ौल

हज़रत सैयदी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़फ़ीफ़ ज़बी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि :

तसव्वुफ़ उसका नाम है कि दिल साफ़ किया जाए और शरीअत में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पैरवी हो।

हज़रत अबुल–क़ासिम नस्र आबादी का क़ौल

हज़रत सैयदी अबुल–क़ासिम नस्र आबादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि हज़रत सैयदना अबू बकर शिबली व हज़रत सैयदना अबू अली रूदबारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के अजिल्ला असहाब से हैं फरमाते हैं :

"तसव्वुफ़ की जड़ यह है कि किताब व सुन्नत को लाज़िम पकड़े रहे।"

हज़रत जाफर बिन मुहम्मद ख़्वास का क़ौल

हज़रत सैयदी जाफर बिन मुहम्मद ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुरीद व ख़लीफ़ा सैय्यदुत्ताइफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

मैं कोई चीज़ मारिफ़ते इलाही व इल्म अहकामे इलाही से बेहतर नहीं जानता, आमाल बेइल्म के पाक नहीं होते, बेइल्म के सब अमल बर्बाद हैं, इल्म ही से अल्लाह की मारिफ़त इताअत हुई, इल्म को वही नापसन्द रखेगा जो कम बख़्त हो।

हज़रत शहाबुद्दीन सुहरवर्दी के अक़्वाल

★ हज़रत सैयदना शैख़श्शुयूख़ शहाबुल–हक़ वद्दीन सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इमाम सिलसिला आलिया सुहरवर्दीया फरमाते हैं :

कुछ फ़ित्ना के मारे हुवों ने सूफ़िया का लिबास पहन लिया है कि सूफ़ी कहलाएं हालांकि उनको सूफ़िया से कुछ इलाक़ा नहीं बल्कि वह धोखे में हैं, बकते हैं कि "उनके दिल ख़ालिस ख़ुदा की तरफ़ हो गये हैं और यही मुराद को पहुँच जाना है और सौम शरीअत की पाबन्दी अवाम का मरतबा है" उनका यह ख़ालिस इल्हाद व ज़िन्दक़ा अल्लाह की बारगाह से दूर किया जाना है इसलिए कि जिस हक़ीक़त को शरीअत रद फरमाए वह हक़ीक़त नहीं बेदीनी है।

फिर जुनैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद नक़्ल फरमाया है कि जो चोरी और ज़िना करे वह उन लोगों से बेहतर है।

★ नीज़ हज़रत शैख़श्शुयूख़ सुहरवर्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु "आलामुल–हुदा" में करामते औलिया बयान करके फरमाते हैं :

हमारा अक़ीदा है कि जिसके लिए और जिसके हाथ पर ख़्वारिक़े आदात ज़ाहिर हों और वह अहकामे शरीअत का पूरा पाबन्द न हो वह शख़्स ज़िन्दीक़ है और जो ख़्वारिक़े कि उसके हाथ पर ज़ाहिर हों मक्र व इस्तिद्राज है।

हज़रत जामी का क़ौल

हज़रत मौलाना नूरुद्दीन जामी कुद्दिसा सिर्रहू अस्सामी फरमाते हैं :

अगर लाख ख़ारिक़े आदात ज़ाहिर हों जब तक ज़ाहिर व बातिन शरीअत व आदाबे तरीक़त के मुवाफ़िक़ न हों तो वह मक्र व इस्तिद्राज होगा, विलायत व करामत का न होगा।

हज़रत मख़्दूम अशरफ़ का क़ौल

हज़रत क़ुतुबे रब्बानी महबूब यज़्दानी मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर चिश्ती सिम्नानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सरदार चिश्तीया अशरफ़िया फरमाते हैं :

"अगर औसाफ़े विलायत वाले वली से ख़िर्क़े आदत ज़ाहिर हो तो वह करामत है और अगर मुख़ालिफ़ शरीअत से सादिर हो तो इस्तिद्राज है, अल्लाह तआला हमें और आपको महफ़ूज़ फरमाए।"

हज़रत सैयदना मुहीयुद्दीन अरबी के अक़्वाल

(1) हज़रत सैयदना शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन मुहम्मद बिन अल–अरबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़ुतूहाते मक्कीया में फरमाते हैं :

"ख़बरदार इल्मे ज़ाहिर में जो शरअ् की मीज़ान है उसे हाथ से न फेंकना बल्कि जो कुछ उसका हुक्म है फौरन उस पर अमल कर, और अगर आम उलमा के ख़िलाफ़ तेरी समझ में उस से कोई चीज़ आए जो ज़ाहिरे शरअ् का हुक्म नाफ़िज़ करने से तुझे रोकना चाहे तो उस पर एतमाद न करना वह इल्मे इलाही की सूरत में एक मक्र है जिसकी तुझे ख़बर नहीं।"

(2) नीज़ हज़रत सैयद मुहीयुद्दीन बिन अरबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़ुतूहात में फरमाते हैं :

"यक़ीन जान कि मीज़ाने शरअ् जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने ज़मीन में मुक़र्रर फरमाई है वह यही है जो उलमा–ए–शरीअत के हाथ में है, तो जब कभी कोई वली उस मीज़ाने शरअ् से बाहर निकले और उसकी अक़्ल बाक़ी हो जिस पर अहकामे शरीअत का मदार है तो उस पर इंकार वाजिब है।"

(3) नीज़ फरमाते हैं :

"यक़ीन जान कि औलिया मुर्शिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की मीज़ानें कभी शरीअत से ख़ता नहीं करतीं वह मुख़ालिफ़ते शरअ् से महफ़ूज़ हैं।"

(4) हज़रत सैयदना इब्ने अरबी फरमाते हैं :

यक़ीन जान कि शरीअत ही का चश्मा, हक़ीक़त का चश्मा है, इसलिए कि शरीअत के दो दाइरे हैं।

★ एक ऊपर।

★ और एक नीचे।

★ ऊपर का दाइरा अह्ले कश्फ़ के लिए है।

★ और नीचे का अह्ले फ़िक्र के लिए।

अह्ले फ़िक्र जब, अह्ले कश्फ़ के अक़्वाल को तलाश करते और अपने दाइरा फ़िक्र में नहीं पाते हैं तो कह देते हैं कि यह क़ौल शरीअत से बाहर है तो अह्ले फ़िक्र अह्ले कश्फ़ पर मोतरिज़ होते हैं, मगर अह्ले कश्फ़ अह्ले फ़िक्र पर इंकार नहीं रखते। जो कश्फ़ व फ़िक्र दोनों रखता है वह अपने वक़्त का हकीम है, पस जिस तरह उलूम अह्ले फ़िक्र शरीअत का एक हिस्सा हैं, यूंही उलूम अह्ले कश्फ़ भी, तो वह दोनों एक दूसरे को लाज़िम हैं और जबकि दोनों किनारों का जामे नादिर है। लिहाज़ा ज़ाहिर बीनों ने शरीअत व हक़ीक़त को जुदा समझा।

इस इबारत से यह भी ज़ाहिर हुआ कि अह्ले ज़ाहिर अगर शरीअत व हक़ीक़त को जुदा समझें तो उनकी ग़लती, मगर वह अपने इल्म में काज़िब नहीं, और मुद्दई तसव्वुफ़ अगर उन्हें जुदा बताए तो क़तअन झूठा और डींग हाँकने वाला है।

हज़रत अली ख़्वास के अक़्वाल

(1) आरिफ़ बिल्लाह हज़रत सैयदी अली ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पीर व मुर्शिद इमाम अब्दुल–वहाब शेअ़रानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अर्रब्बानी फरमाते हैं :

इल्मे कश्फ़ यह है कि अशिया जिस तरह वाक़े व हक़ीक़त में हैं इसी तरह उन से ख़बर दे उसे अगर तू तहक़ीक़ करे तो असलन किसी बात में शरीअत के ख़िलाफ़ न पाएगा बल्कि वह ऐन शरीअत है।

(2) नीज़ फरमाते हैं :

उलमा–ए–ज़ाहिर हों ख़्वाह उलमा–ए–बातिन सबके चिराग़ शरीअ़त ही के नूर से रौशन हैं। तो अइम्म–ए–मुज्तहेदीन और उनके मुक़ल्लेदीन किसी का कोई क़ौल ऐसा नहीं कि अह्ले हक़ीक़त के अक़्वाल उसके ताईद न करते हों, हमारे नज़्दीक उसमें कोई शक नहीं।

(3) सैयदी अली ख़्वास फरमाते हैं :

तमाम उलमा–ए–उम्मत के दिलों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़ल्बे अक़्दस से मदद पहुँचती है तो हर आम का चिराग़ हुज़ूर ही के नूर बातिन के शमअ़दाँ से रौशन है।

(4) नीज़ फरमाते हैं :

सच्चा इल्म कश्फ़ कभी नहीं आता मगर शरीअते मुतह्हरा के मुवाफ़िक़।

हज़रत अफ़्ज़लुद्दीन का क़ौल :

हज़रत सैयदी अफ़्ज़लुद्दीन कि अजल ख़ुलफ़ाए सैयदी अली ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा हैं फरमाते हैं :

हक़ीक़त ऐने शरीअत है और शरीअत ऐने हक़ीक़त।

इमाम अब्दुल–वहाब शेअ़रानी के अक़्वाल :

(1) इमाम अजल आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल–वहाब शेअ़रानी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अर्रबानी फरमाते हैं :

कभी विलायत की इंतिहा नुबुव्वत की इब्तिदा तक नहीं पहुँच सकती, और अगर कोई उस चश्मा तक बढ़े जिस से अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम फ़ैज़ लेते हैं तो वह वली जल जाए। औलिया की निहायत कार यह है कि शरीअते मुहम्मदीया अला साहिबहा अत्तहीयते वस्सना पर इबादत बजा लाते हैं ख़्वाह कश्फ़ हासिल हुआ हो या नहीं और जब कभी शरीअते मुहम्मदीया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से निकलेंगे हलाक हो जाएंगे और उनकी मदद क़तअ़ हो जाएगी तो उन्हें कभी मुम्किन नहीं कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से ख़ुद बिल–इस्तिक़्लाल ले सकें और हम ऊपर बयान कर आए कि तमाम अंबिया व औलिया अलैहिमुस्सलाते वस्सना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मदद लेते हैं।

(2) नीज़ इमाम शेअ़रानी फरमाते हैं :

★ तसव्वुफ़ क्या है, बस अहकामे शरीअत पर बन्दा के अमल का ख़ुलासा है।

★ तसव्वुफ़ चश्म–ए–शरीअत से निकली हुई झील है।

(3) नीज़ फरमाते हैं :

जो नज़र ग़ौर करे जान लेगा कि उलूमे औलिया से कोई चीज़ शरीअत से बाहर नहीं और क्यों कर उनके इल्मे शरीअत से बाहर हों हालांकि हर–हर लहज़ा शरीअत ही उनके वसूल बख़ुदा का ज़रीआ है।

(4) और फरमाते हैं :

तमाम औलिया–ए–किराम का इज्मा है कि तरीक़त में सदर बनने का लाइक़ नहीं मगर वह जो इल्मे शरीअत का दरिया हुआ, उनके मन्तूक़, मफ़्हूम, ख़ास, आम, नासिख़ मन्सूख़ से आगाह हो, ज़ुबाने अरब का कमाल माहिर हो, यहाँ तक कि उसके मजाज़ और इस्तिआरे वग़ैरह जानता हो तो हर सूफ़ी फ़क़ीह होता है और फ़क़ीह सूफ़ी नहीं।

(5) नीज़ आरिफ़ मारूफ़ क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

सच्चा कश्फ़े शरीअत के मुताबिक़ ही आता है जैसा कि इस फन के उलमा में मुक़र्रर हो चुका है।

अल्लामा अब्दुल–ग़नी नाबलुसी के अक़्वाल :

(1) हज़रत आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल–ग़नी नाबलुसी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अल–क़ुद्दुसी फरमाते हैं :

वह जो हमारे ज़माने के बाज़ सूफ़ी बनने वाले अदआ करते हैं कि ऐ इल्मे ज़ाहिर वालो! तुम अपने अहकाम किताब व सुन्नत से लेते हो और हम ख़ुद साहिबे क़ुरआन से लेते हैं यह बिल–इज्मा क़तअन बवज्हे कसीरा कुफ़्र है, अज़ाँ जुम्ला यह कि अक़्ल व बुलूग़ शराइत तक्लीफ़ होते हुए कह दिया कि हम ज़ेरे अहकामे शरीअत नहीं।

(2) उसके बाद आपने फरमाया :

अगर इल्मे ज़ाहिर छोड़ने से उसका न सीखना और उसका एहतमाम न करना मुराद ले इस ख़्याल से कि इल्मे ज़ाहिर की तरफ़ हाजत नहीं तो उसने कलामे इलाही को अहमक़ बताया और अंबिया को बेवक़ूफ़ ठहराया, रसूलों के भेजने किताबों के उतारने को अबस व बातिल की तरफ़ निस्बत किया तो कुछ शक नहीं कि वह काफिर है और उसका कुफ़्र सबसे सख़्त तर कुफ़्र।

(3) नीज़ आरिफ़ मम्दूह क़ुद्दिसा सिर्रुहू ताज़ीमे शरीअते मुतह्हरा के बारे में हज़राते आलिया सैय्यदुत्ताइफ़ा व सिर्री सक़्ती व अबू यज़ीद बुस्तामी व अबू सुलेमान दारानी व ज़ुन्नून मिसरी व बिश्र हाफ़ी व अबू सईद ख़राज़ वग़ैरेहिम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के अक़्वाले करीमा ज़िक्र करके फरामते हैं :

यानी ऐ आक़िल! ऐ हक़ के तालिब! देख कि उज़माए मशाइख़े तरीक़त, यह कुबराए अरबाबे हक़ीक़त सब के सब शरीअते मुतह्हरा की ताज़ीम कर रहे और क्यों न करें कि वह वासिल न हुए मगर इसी ताज़ीमे अक़्दस सीधी राहे शरीअत पर चलने के सबब या उन से या उनके सिवा और सरदार उन औलियाए कामिलैन किसी एक से भी मन्क़ूल नहीं कि उसने शरीअते मुतह्हरा के किसी हुक्म की तहक़ीर की या उसके क़ुबूल से बाज़ रहा हो बल्कि वह सब उसके हुज़ूर गर्दन रखे हुए हैं और अपने बातिनी उलूम की सीरते मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर बेना करते हैं, तो तुझे हरगिज़ धोखा में न डालें हद से गुज़री हुई बातें उन जाहिलों की कि सालिक बनते हैं, ख़ुद बिगड़े औरों को बिगाड़ते हैं, आप गुम्राह औरों को गुम्राह करते हैं, शरअ़ मुस्तक़ीम से कज हो कर जहन्नम की राह चलते हैं, उलमा–ए–शरीअत की राह से बाहर, मशाइख़े तरीक़त के मसलक से ख़ारिज, इसलिए कि आदाबे शरीअत इख़्तियार करने से रूगरदानी किए और उसके मुस्तहकम क़िलों में पनाह लेने को छोड़े बैठे हैं तो वह इंकारे शरीअत के सबब काफिर हैं और दावा यह कि उसके अनवार से रौशन हैं, मशाइख़े तरीक़त तो आदाबे शरीअत पर क़ाइम हैं, अहकामे इलाही की ताज़ीम के मोतक़िद हैं इसीलिए अल्लाह तआला ने उन्हें कमालाते अक़्दस को तोहफ़ा दिया और

यह अपनी ख़ुराफ़ात पर मग़रूर, यह आर का लिबास पहने हुए कि ज़ाहिर में मुसलमान और हक़ीक़त में काफिर हैं, यह हमेशा अपने औहाम के बुतों के आगे आसन मारे बैठे हैं, शैतान जो वसवसों से उनके अफ़्कार में डालता है उन्हीं पर मफ़्तून हुए हैं, तो ख़राबी पूरी ख़राबी उनके लिए और उनके लिए जो उनका पैरू हो या उनके काम को अच्छा जाने इसलिए कि वह राहे ख़ुदा के राहज़न हैं।

हज़रत अबुल–मकारिम रुक्नुद्दीन का क़ौल :

हज़रत सैयदी अबुल–मकारिम रुक्नुद्दीन ख़लीफ़ा सैयदी नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान असफराइनी ख़लीफ़ए वक़्त हज़रत सैयदी जमालुद्दीन अहमद जौज़क़ानी ख़लीफ़ा हज़रत सैयदी रज़ीयुद्दीन ला–ला ख़लीफ़ा हज़रत सैयदी नज्मुद्दीन कुबरा सरदार सिलसिला किबरवीया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अपने शैख़ व मुर्शिद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फरमाते हैं :

वली जब तक शरीअत को मुकम्मल तौर पर न अपनाए विलायत में क़दम रख नहीं सकता बल्कि अगर उसका इंकार करे तो काफिर है।

हज़रत अहमद नामक़ी जामी का क़ौल :

हज़रत सैयदी शैख़ुल–इस्लाम अहमद नामक़ी जामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सैयदी ख़्वाजा मौदूद चिश्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया :

"पहले इबादत का मुसल्ला ताक़ पर रख और जाकर इल्म हासिल कर क्योंकि जाहिल शैतान का मसख़रा होता है।"

एक दिल्चस्प हिकायत :

शैख़ुल–इस्लाम अहमद नामक़ी जामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इस क़ौल को नक़्ल करने के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुदिसा सिर्रुहू क़ौल मज़्कूर की शाने वरूद बयान करते हुए फरमाते हैं :

हज़रत मम्दूह सलाल–ए–खानदान औलिया–ए–किराम हैं उनके आबा–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजिल्ल–ए–अकाबिर महबूबाने ख़ुदा सरदाराने शरीअत व तरीक़त व असहाबे इल्म व करामत थे, और उनके बाद हज़रत ख़्वाजा मौदूद चिश्ती ने मुसनद आबाई पर जुलूस फरमाया, हज़ारों आदमी मुरीद हो गये, मगर साहबज़ादा वाला क़द्र अभी आलिम न हुए थे न राहे तरीक़त किसी मुर्शिदे कामिल की तालीम से चले थे, इनायत अज़ली ही उनके हाल शरीफ़ पर मुतवज्जेह थी, हज़रत शैख़ुल–इस्लाम क़ुतबुल–किराम सैयदी अहमद नामक़ी जामी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को उनकी तालीम व तफ़्हीम के लिए हेरात भेजा, यहाँ ख़्वास व आम उस जनाब की करामते आलिया देख कर मुरीद व मोतक़िद हुए और तमाम अतराफ़ में उनका शोहरा हुआ, साहबज़ाद–ए–ख़्वाजगान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को नागवार हुआ, क़स्द फरमाया कि हज़रते वाला को इस मुल्क से बाहर करें, लश्करे मुरीदाँ लेकर जुंबिश फरमाई, असहाब हज़रत शैख़ुल–इस्लाम को उसकी इत्तिला हुई, उन्होंने बराहे अदब उसे शैख़ुल–इस्लाम से छुपाया मगर हज़रत ख़ुद ही ख़ूब जानते थे। एक दिन जब सुबह का नाश्ता हाज़िर किया गया तो इरशाद फरमाया एक साअत सब्र करो कि कुछ क़ासिद आते हैं थोड़ी देर बाद क़ासिदाने साहबज़ादा हाज़िर हुए हज़रते वाला ने उन्हें खाना खिलाया फिर फरमाया, तुम कहोगे या मैं बताऊं कि किस लिए आए हो, अर्ज़ की हज़रत फरमाएं, फरमाया ख़्वाजा मौदूद ने तुम्हें भेजा है कि अहमद से कहो वह हमारी विलायत में क्यों आया सीधी तरह वापस जाता है तो जाए वरना जिस तरह चाहे निकाला जाएगा, क़ासिदों ने तस्दीक़ की कि हाँ हज़रत ख़्वाजा ने यही प्याम देकर हमें भेजा है हज़रते वाला ने फरमाया कि :

विलायत से यह दीहात मुराद हैं तो यह औरों की मुल्क हैं न कि ख़्वाजा मौदूद की। और अगर विलायत से यह लोग मुराद हैं तो यह बादशाह संजर की रईयत हैं, तो यूं बादशाह शैख़श्शुयूख़ ठेहरेगा, और अगर विलायत से मुराद वह है जो मैं जानता हूँ और जिसे औलिया अल्लाह जानते हैं तो कल हम उन्हें दिखा देंगे कि विलायत का काम क्या और कैसा होता है।

क़ासिदों को यह जवाब अता फरमाया और इधर अब्रे अज़ीम आया, और एक रात दिन अब्र बरसा, दम भर कर दम न लिया, दूसरे दिन सुबह को हज़रते वाला ने फरमाया घोड़े कसो कि ख़्वाजा मौदूद की तरफ़ चलें, असहाब ने अर्ज़ की नदी चढ़ गई, अब जब तक चन्द रोज़ बारिश मौक़ूफ़ न हो कोई मल्लाह कश्ती भी नहीं ले जा सकता, फरमाया कुछ मुश्किल नहीं आज हम मल्लाही करेंगे, जब सवार हो कर जंगल में पहुँचे मुलाहिज़ा फरमाया कि एक अंबोह मुसल्लह हज़रत के हम्राह है, फरमाया यह कौन लोग हैं अर्ज़ की हुज़ूर के मुरीद व मुहिब्ब हैं यह सुन कर एक जमाअत हुज़ूर के मुक़ाबले को आई है यह हुज़ूर के लिए हम्राह हो लिए हैं, फरमाया उन्हें वापस करो तीर व तल्वार तो संजर का काम है, औलिया के हथियार और ही हैं, ग़रज़ चन्द ख़ुद्दाम के साथ नदी किनारे पहुँचे, पानी तुग़यानी पर था, फरमाया आज यह ठहरी है कि हम मल्लाही करेंगे, मारिफ़ते इलाही में कलाम फरमाना शुरू किया तमाम हाज़िरीने ज़ौक़ से बेख़ुद हो गये, फरमाया आँखें बन्द कर लो और *बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* कह कर चलो लोगों ने ऐसा ही किया, जिसने आँख जल्दी खोल दी उसका जूता तर हुआ और जिसने ज़रा देर करके खोली उसका जूता भी ख़ुश्क रहा, और सबने अपने आपको दरिया के उस पार पाया।

क़ासिदों ने जो यह माजरा देखा जल्दी करके हज़रत साहबज़ादा ख़्वाजगान के हुज़ूर हाज़िर हुए और हाल अर्ज़ किया, किसी को यक़ीन न आया, साहबज़ादा दो हज़ार मुरीद मुसल्लह के साथ मुतवज्जह हुए और जैसे हज़रत शैख़ुल–इस्लाम से नज़र दो चार हुई साहबज़ादा बेइख़्तियार प्यादा हुए और हज़रते वाला के पाए मुबारक पर बोसा दिया, हज़रत उनकी पीठ ठोंकते और फरमाते थे, विलायत का काम देखा, तुम नहीं जानते मर्दाने ख़ुदा की फौज सलाह से नहीं, जाओ सवार हो अभी बच्चे हो, तुम्हें नहीं मालूम कि क्या करते हो।

जब बस्ती में आए हज़रत शैख़ुल–इस्लाम मआ अपने असहाब के एक मुहल्ला में उतरे और हज़रत साहबज़ादा मआ मुरीदान दूसरे मुहल्ला में, दूसरे दिन उन मुरीदीन साहबज़ादे ने कहा हम आए थे शैख़ अहमद को इस मुल्क से निकालने, और आज वह हमारे साथ एक ही गाँव में मुक़ीम हैं, कोई फ़िक्र उम्दा करनी चाहिए; हज़रत ख़्वाजा मौदूद ने फरमाया मेरी राय में सवाब यह है कि सुबह उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर उन से इजाज़त लें उनका काम हमारे बस का नहीं, मुरीदों ने कहा बल्कि राय सवाब यह है कि कोई काम पर जासूस मुक़र्रर कर लें जब उनके क़ैलूला यानी दोपहर को आराम का वक़्त आए और लोग उनके पास से चले जाएं वह तन्हा रहें, उस वक़्त हमारी एक जमाअत आपके साथ उनके पास जाए और सिमा शुरू करें और हाल लाएं इसी हालत में कोई हरबा उन पर मार दें, हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया ठीक नहीं, वह वली हैं साहिबे करामात हैं मगर मुरीदों ने न माना, जब दोपहर को हज़रत शैख़ुल–इस्लाम के आराम का वक़्त आया ख़ादिम ने चाहा कि बिछौना बिछाए फरमाया, एक साअत तवक़्क़ुफ़ करो कुछ (देर के बाद) आराम होगा एक काम दर पेश है, नागाह किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, ख़ादिम ने दरवाज़ा खोला, देखा कि हज़रत ख़्वाजा मौदूद एक अंबोह के साथ तशरीफ़ लाए, सलाम करके सिमा शुरू हुआ, साथ वाले नारे लगाने लगे, उन्होंने चाहा था कि अपना इरादा फासिदा पूरा करें कि हज़रत शैख़ुल–इस्लाम ने सर मुबारक उठा कर फरमाया "है सहला कजाई है" (ऐ सहला! तू कहाँ है)

सहला नाम एक साहब का शहर सर ख़स के साकिन, साहिबे करामात व आक़िल, मजनून नुमा थे, हमेशा हज़रत शैख़ुल–इस्लाम की ख़िदमत में रहते, हज़रत आवाज़ देते ही वह फ़ौरन हाज़िर हुए और एक नारा उन मुफ़्सिदों पर लगाया, वह सब के सब मअन जूतियाँ, पगड़ियाँ, छोड़ कर भाग गये सिर्फ़ साहबज़ादा ख़्वाजगान बाक़ी रहे, निहायत निदामत के साथ खड़े हुए और सर बरहना करके मआफ़ी माँगी और अर्ज़ की हुज़ूर को रौशन है कि इस दफ़ा मेरी मर्ज़ी न थी, फरमाया : तुम सच कहते हो मगर तुम उनके साथ क्यों आए, अर्ज़ की मैंने बुरा किया हज़रत माफ़ फरमाएं, फरमाया मैंने मुआफ़ किया जाओ और उन लोगों को वापस लाओ और दो ख़िदमतगार मुक़र्रर करो और तीन दिन ठहराओ, हज़रत ख़्वाजा मौदूद ने ऐसा ही किया।

बाद अज़ाँ हज़रत शैख़ुल–इस्लाम के पास आ कर गुज़ारिश की जो हुक्म हुआ था बजा लाया अब क्या फरमान है, फरमाया :

"सज्जादा ताक़ पर रखो और अव्वल जा कर इल्म पढ़ो कि ज़ाहिद बेइल्म मुसख़्ख़रा शैतान है।"

ख़्वाजा ने फरमाया मैंने क़ुबूल किया और क्या इरशाद है, फरमाया जब तहसीले इल्म से फारिग़ हो अपना ख़ानदान ज़िन्दा करो, तुम्हारे बाप दादा औलिया साहिबे करामात थे, ख़्वाजा मौदूद ने अर्ज़ की, खानदान ज़िन्दा करने को इरशाद होता है तो पहले तबर्रुकन हज़रते वाला मुझे मसनद पर बिठा दें, फरमाया आगे आओ, यह आगे गये, हज़रत ने हाथ पकड़ कर अपनी मसनद मुबारक के किनारे पर बिठाया और फरमाया बशर्ते इल्म, बशर्ते इल्म, बशर्ते इल्म, तीन बार फरमाया।

हज़रत ख़्वाजा तीन रोज़ और हाज़िरे ख़िदमत रहे, फाइदे लिए, नवाज़िशें पाईं, फिर तहसीले इल्म के लिए बल्ख़ बुख़ारा तशरीफ़ ले गये, चार साल में माहिरे कामिल हुए, हर शहर में हज़रत से करामात ज़ाहिर हुईं, फिर चिश्त को मुराजअत फरमाई, तर्बियते मुरीद उन में मश्ग़ूल हुए, अतराफ़ से तालिबाने ख़ुदा हाज़िरे ख़िदमत हुए और हज़रत की बरकते इंफ़ास से दौलते मारिफ़त व रुतबा विलायत को पहुँचे।

हज़रत ख़्वाजा शरीफ़ ज़िन्दनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि निहायत आली दरजा वली व आरिफ़ व वासिल हैं इसी जनाब के मुरीद व तर्बियत याफ़्ता हैं रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम अज्मईन।

मीर सैयद अब्दुल–वाहिद बिलग्रामी के अक़्वाल :

हज़रत मीर सैयद अब्दुल–वाहिद बिलग्रामी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अस्सामी सबए सनाबिल शरीफ़ में फरमाते हैं :

ऐ हक़ के तलब करने वाले, वह उलमा जो दीन के रास्तों पर चलते हैं कि वरसा अंबिया हैं उनके तीन गरोह हैं।

अव्वल : मुहद्देसीन।

दोयम : फ़ुक़हा।

सोयम : सूफ़िया।

देखो कैसी साफ तस्रीह है कि उलमाए ज़ाहिर व बातिन सब वारिसाने अंबिया किराम हैं अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम यही हज़रत मीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इसी सबए सनाबिल शरीफ़ में फरमाते हैं :

शरीअते मुहम्मदी व दीने अहमदी वह राहे सलीम व जाद–ए–मुस्तक़ीम है जिस पर ख़ातमुल–अंबिया अलैहि अफ़्ज़लुस्सलाते वत्तहीयते अपनी उम्मत के हज़ारहा औलिया व अस्फ़िया और सिद्दीक़ीन व शुहदा के जल्व में ग़ामज़न रहे और उसे हर क़िस्म के ख़स व ख़ाशाक और शुकूक

व शुबहात से पाक फरमाया, उसके मक़ामात व मनाज़िल मुतऐयन व रौशन फरमा दिए, क़दम–क़दम पर निशानात हैं और मंज़िल–मंज़िल बैयनात और हुज़नों से हिफ़ाज़त के लिए जगह–जगह रहनुमाई करने वाले मुक़र्रर हैं और औलियाए किराम व सूफ़ियाए इज़ाम के मसलक क़दीम के बर ख़िलाफ़ कोई और राह दिखाता है, किसी और तरीक़े की तरफ़ बुलाता है तो उसकी बात पर कान नहीं धरना चाहिए बल्कि हिमायत व नुसरते हक़ की नीयत से उसकी तर्दीद व तग़लीत को मिंजुमला फराइज़े दीनीया समझना चाहिए, अह्ले बिदअत व ज़लालत वही तो हैं और अज़ राहे फरेब वही लिबासे इस्लाम पहन कर (अवाम अह्ले इस्लाम में) आते और अपने अक़ाइदे फासिदा को पोशीदा रखते हैं, यही लोग आदाए दीन व इख़्वाने श्यातीन हैं, और चूंकि उलमाए दीन व मशाइख़े इस्लाम के इल्म के नूर से उनकी गुम्राही की तारीकियाँ छट जाती हैं, ला मुहाला यह लोग उलमाए शरीअत को दुश्मन समझने लगे हैं, उलमाए रब्बानी कि आसमाने इस्लाम के रौशन सितारे हैं, अवाम को उन शयातीनुन–इन्स के शर से महफ़ूज़ रखते हैं और अपने नूरानी इन्फास से शिहाबे साक़िब की मानिन्द हमेशा उन दीन के लुटेरों और चोरों को हर–हर तरफ़ से हंकाते और उन पर लानत वर्द के पत्थर मार–मार कर दुरदुराते रहते हैं। (रिसाला मक़ालुल–उरफ़ा बएज़ाज़ शरअ़ व उलमा)

शरीअत व तरीक़त के दर्मियान तख़ालिफ़ नहीं :

बाज़ लोग शरीअत व तरीक़त के दर्मियान फ़र्क़ के क़ाइल हैं, ऐसे लोगों की निस्बत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

शरीअत, तरीक़त, हक़ीक़त, मारिफ़त में बाहम असलन कोई तख़ालिफ़ नहीं, उसका मुद्दई अगर बेसमझे कहे तो निरा जाहिल है और समझ कर कहे तू गुम्राह, बद दीन।

★ शरीअत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अक़्वाल हैं।

★ तरीक़त हुज़ूर के अफ़्आल।

★ हक़ीक़त हुज़ूर के अहवाल।

और मारिफ़ते हुज़ूर के उलूमे बेमिसाल, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व अस्हाबेही व बारिक व सल्लिम। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 9, स0 60)

फराइज़ व अहकाम साक़ित नहीं होते :

कोई शख़्स ऐसे मक़ाम तक नहीं पहुँच सकता जिस से नमाज़ रोज़ा वग़ैरह अहकामे शरईया साक़ित हो जाएं, जब तक अक़्ल बाक़ी है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : मरते दम तक अपने रब की इबादत कर।

सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ की गई कुछ लोग पैदा हुए कि नमाज़ वग़ैरह इबादात छोड़ दी है और कहते हैं कि शरीअत तो रास्ता है हम पहुँच गये हमें राह की हाजत नहीं, फरमाया "वह सच कहते हैं ज़रूर पहुँच गये मगर कहाँ तक जहन्नम तक" फिर फरमाया : "अगर मुझे सदहा बरस की उम्र दी जाए तो फ़र्ज़ तो फ़र्ज़ जो नफ़्ल मुक़र्रर कर लिए हैं हरगिज़ न छोड़ूं।"

(फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 93)

पाकी और नापाकी

जहाँ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अपने बन्दों को इबादत व बन्दगी का हुक्म फरमाया है वहीं उस ने तहारत व पाकी का भी हुक्म दिया है बल्कि बग़ैर तहारत के बाज़ इबादात मन्कूल नहीं कि तहारत उनके लिए शर्त है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हर चीज़ की वज़ाहत फरमाई कि फलां चीज़ यूं पाक है और फलां नापाक है, अगर कोई पाक शय नापाक हो जाए तो उसके पाक करने का तरीक़ा क्या है ग़र्ज़ कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हर शोबा ज़िन्दगी के मसाइल व अहकामे उम्मते मरहूमा के लिए वज़ाहत व सराहत के साथ बयान फरमा दिए।

मज़हबे इस्लाम एक पाकीज़ा मज़हब है इस्लाम में सफ़ाई व नज़ाफ़त का बड़ा एहतमाम किया गया है बल्कि तहारत व सफ़ाई को जुज़ ईमान क़रार दिया गया है, इस्लामी तालीमात पर अमल करना ही मुसलमानों के लिए नजात का ज़ामिन है।

फ़िक़्ह व फतावे की किताबें पाकी और नापाकी के बयान व मसाइल से भरी हुई हैं हम यहाँ पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू के फतावा के हवाले से चन्द ख़ास–ख़ास बातें पेश कर रहे हैं। (मुरत्तिब)

पानी और मिट्टी से इस्तिंजा करना :

★ पेशाब और पाखाने के बाद पानी और मिट्टी दोनों से इस्तिंजा किया जा सकता है, सिर्फ़ पानी पर इक्तिफ़ा करे या सिर्फ़ मिट्टी पर, मगर दोनों को जमा करना महबूब व पसन्दीदा है।

★ और नजासत जब मख़रज बोल व बज़्ज़ार से दृहम की मिक़्दार से ज़्यादा तजावुज़ न करे तो ढीले काफी होते हैं उनके बाद पानी लेना सिर्फ़ सुन्नत है, और अगर नजासत मख़रज के अलावा क़द्रे दिरम से ज़्यादा हो तो उस वक़्त पानी से धोए बग़ैर तहारत नहीं होगी।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दोनों सूरतें साबित हैं।

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने रिवायत की कि सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पेशाब के बाद पानी से इस्तिंजा फरमाते। (तिर्मिज़ी, निसाई, मुसनद अहमद)

वही रिवायत फरमाती हैं कि एक बार हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पेशाब फरमाया अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए फरमाया क्या है अर्ज़ की इस्तिंजा के लिए पानी फरमाया मुझ पर वाजिब नहीं किया गया कि हर पेशाब के बाद पानी से तहारत करूं। (क्योंकि हुज़ूर ढेले से इस्तिंजा फरमा चुके थे) (अबू दाऊद, इब्ने माजा)

सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की आदत भी इस बाब में मुख़्तलिफ़ थी।

अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अक्सर मिट्टी से इस्तिंजा फरमाते और हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पानी से। (कश्फ़ुल–ग़िम्मा)

ख़ुलासा यह है कि ढेले और पानी दोनों से इस्तिंजा जाइज़ है जिस से करेगा काफी होगा और अफ़ज़ल यह है कि दोनों को जमा करे।

★ इस्तिंजा ख़ुश्क करने में, हर बेक़ीमत बेकार पाक चीज़ कि रतूबत को जज़्ब करके मौज़ा को साफ कर दे ढेला हो या पत्थर, मिट्टी हो या पुराना कपड़ा ज़मीन हो या दीवार सब बराबर है, हाँ हड्डी या कोइला, या पक्की ईंट या ठीकरी या चूना न हो।

हड्डी और गोबर से इस्तिंजा मना है :

क़ौम जिन के वफ़्द जो बारगाहे अक़्दस हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अपने जानवरों के लिए ख़ूराक तलब की, उन से इरशाद हुआ तुम्हारे लिए हर हड्डी है जिस पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का नाम पाक लिया जाए, यानी हलाल ज़बह किए हुए जानवर की हड्डी हो वह तुम्हारे हाथ में इस हाल पर होगी जैसी उस वक़्त थी जब उस पर गोश्त पूरा और कामिल था, यानी गोश्त छुड़ाई हुई हड्डी तुम्हें मआ गोश्त मिलेगी और हर मेंगनी तुम्हारे चौपाओं के लिए चारा है।

फिर इंसानों से इरशाद हुआ हड्डी और मेंगनी से इस्तिंजा न करो कि वह तुम्हारे भाईयों (यानी जुनूं) की ख़ूराक है। (मुस्लिम)

दाहिने हाथ से इस्तिंजा मम्नूअ़ है :

दाहिना, बाएं से अफ़्ज़ल है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हर काम में दाहिना महबूब था छोटे–छोटे कामों में भी दाहिने से आग़ाज़ फरमाते, कंघी करने और जूता पहनने में भी दाहिने की रिआयत फरमाते, मगर इस्तिंजा बाएं हाथ से करते और दाहिने हाथ से इस्तिंजा करने को मना भी फरमाया। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

दाहिने हाथ से इस्तिंजा मम्नूअ़ व गुनाह है, सही हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उस से नहीं फरमाई, हाँ अगर बाएं हाथ में कोई उज़्र हो तो दाहिने से करने में कुछ मुवाख़ज़ा नहीं। मगर हालते उज़्र हमेशा मुस्तसना होती है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 141ए 142ए 143ए 145, मुल्ख़िसन)

काग़ज़ से इस्तिंजा करना :

काग़ज़ से इस्तिंजा करना मक्रूह व मम्नूअ़ और नसारा का तरीक़ा है काग़ज़ की ताज़ीम का हुक्म है अगरचे सादा हो। और लिखा हुआ हो तो बदरज–ए–औला मम्नूअ़ है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 153)

पेशाब के बाद इस्तिबरा करना :

लोगों की हालतें मुख़्तलिफ़ हैं बाज़ लोगों को पेशाब के बाद क़तरा बिल्कुल नहीं आता न उसका अन्देशा रहता है, या जिन को क़तरा हरारत से आता और पानी से बन्द हो जाता हो उनके लिए इसी जल्सा में बग़ैर ढेले के सिर्फ़ पानी से इस्तिंजा करने में कोई हरज नहीं वरना नाजाइज़ है कि इस्तिबरा वाजिब है यानी वह फ़ेअ़्ल करना कि इत्मीनान हो जाए कि अब क़तरा न आएगा।

(मुरत्तिब)

एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

अगर पानी से इस्तिंजा करने पर क़तरा आता है तो सिर्फ ढेले से इस्तिंजा करे, अगर पेशाब रुपए भर से ज़ाइद जगह में न फैला हो तो ढेले ही से पाक हो जाएगा और अगर ढेले से इतिंजा पर क़तरा आता है और पानी से बन्द हो जाता है तो पानी से इस्तिंजा ज़रूर है, और अगर दोनों तरह आता है तो इतना इंतिज़ार करना और वह तदबीरें बजा लाना जिन से क़तरा रुके वाजिब है, और अगर किसी तरह न रुके और एक नमाज़ का वक़्त अव्वल से आख़िर तक गुज़र जाए कि वुज़ू करके फ़र्ज़ पढ़ने की मुहलत न पाए तो वह माज़ूर है, जब तक नमाज़ के हर वक़्त में कम अज़ कम एक बार आता रहेगा उसे वुज़ू ताज़ा कर लेना काफी होगा। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 159)

क़ज़ाए हाजत की सिम्त :

पेशाब पाखाना के वक़्त मुँह न क़िब्ला को होना जाइज़ है न पुश्त, मगर बाज़ लोग यह करते हैं कि मुँह तो क़िब्ला की तरफ़ नहीं करते, लेकिन क़िब्ला की तरफ़ पीठ करने में हरज नहीं समझते हालांकि दोनों बातें मम्नूअ् व नाजाइज़ हैं, यह क़िब्ला का एहतराम है, शुमाल व जुनूब की जानिब बैठे यही शरीअते इस्लामिया का हुक्म है। (मुरत्तिब)

हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तुम में कोई शख़्स पाखाने को जाए तो न क़िब्ला को मुँह करे न पीठ हाँ पूरब पश्चिम मुँह करो। (बुख़ारी)

मदीना का क़िब्ला जानिबे जुनूब है इसलिए पूरब पश्चिम की तरफ़ मुँह करना फरमाया हमारे शहरों में शुमाल व जुनूब की इजाज़त है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 32)

पाखाना में थूकना :

इस्लाम तहज़ीब व तमद्दुन का गहवारा और एक मज़हब मुहज़्ज़ब है उसने उठने, बैठने, चलने, फिरने, खाने, पीने, सोने, जागने, पेशाब पाखाना करने हर ज़रूरियाते ज़िन्दगी में सलीक़ा मन्दी की तालीम दी है। इस्लाम की पाकीज़गी ही उसके फरोग़ व इर्तिक़ा का सबब है।

आदमी जब थूकता है तो उसे इस बात का ख़्याल नहीं होता कि वह कहाँ और किस जगह पर थूक रहा है मगर इस्लाम ने मुसलमानों को पाबन्द बनाया कि जब तुम थूकने लगो तो देख लो कोई नजासत व गन्दगी तो नहीं है पाखाना चूंकि गन्दगी का मसकन है, इसलिए वहाँ पर थूकने से मना किया गया है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

पाखाने में थूकने की मुमानेअत है कि मुसलमान का मुँह कुरआने अज़ीम का रास्ता है, वह उस से ज़िक्रे इलाही करता है तो उसका लुआब नापाक जगह न चाहिए। अल्बत्ता वहाँ की दीवार वग़ैरह जहाँ नजासत न हो उस पर थूकने में हरज नहीं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 157)

खड़े हो कर पेशाब करना :

खड़े हो कर पेशाब करना मक्रूह और नसारा का तरीक़ा है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेअदबी व बद–तहज़ीबी है यह कि आदमी खड़े हो कर पेशाब करे। (बज़्ज़ार, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 153)

बाज़ लोग खड़े हो कर पेशाब करने को फ़ख़्र महसूस करते और उस में कुछ हरज नहीं समझते हैं, शरीअते इस्लामिया की रोशनी में खड़े हो कर पेशाब करने में चार हरज हैं। (मुरत्तिब)

अव्वल : बदन और कपड़ों पर छींटें पड़ना, जिस्म व लिबास बिला ज़रूरते शरईया नापाक करना, और यह हराम है।

दोम : इन छींटों के बाइस अज़ाबे क़ब्र का इस्तेहक़ाक़ अपने सर पर लेना।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : पेशाब से बहुत बचो कि अक्सर अज़ाबे क़ब्र इसी से है। (दारु क़ुतनी)

एक हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दो शख़्सों पर अज़ाबे क़ब्र होते देखा फरमाया :

एक तो अपने पेशाब से आड़ न करता था।

और दूसरा चुग़ुल–ख़ोरी करता। (सहाहे सित्ता)

सोम : रह गुज़र पर हो या जहाँ लोग मौजूद हों तो बाइस बेपर्दगी होगा, बैठने वालों में रानों, ज़ानुवों की आड़ हो जाती है और खड़े होने में बिल्कुल बेसतरी, और यह बाइसे लानत इलाही है।

हदीस में है जो देखे उस पर भी लानत और जो दिखाए उस पर भी लानत।

चहारुम : यह नसारा के तशब्बुह और उनके तरीक़ा मज़्मूमा में उनका इत्तिबा है, आजकल जिनको यहाँ यह शौक़ जागा है उसकी यही इल्लत है और यह मूजिबे अज़ाब व उक़ूबत है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

शैतान के क़दमों की पैरवी न करो। (सूरः बक़रा, 208)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो किसी क़ौम से मुशाबेहत इख़्तियार करे वह उन्हीं में है। (त, अबू दाऊद)

खड़े हो कर पेशाब करने की मुमानेअत और उसके बेअदबी व जफा और ख़िलाफ़े सुन्नत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम होने में कसीर अहादीसे सहीहा वारिद हैं।

हदीस : उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जो तुम से कहे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम खड़े हो कर पेशाब फरमाते उसे सच्चा न जानना, हुज़ूर पेशाब न फरमाते थे मगर बैठ कर। (तिर्मिज़ी, निसई, मुसनद अहमद)

हदीस 2 : जब से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कुरआन मजीद उतरा कभी खड़े हो कर पेशाब न फरमाया। (सही अबू उवाना, मुस्दरक हाकिम)

हदीस 3 : तीन बातें जफा व बेअदबी से हैं।

(1) यह कि आदमी खड़े हो कर पेशाब करे।

(2) यह कि नमाज़ में अपनी पेशानी से (मिट्टी या पसीना) पोंछे।

(3) यह कि सज्दा करते वक़्त (ज़मीन पर ग़ुबार वग़ैरह साफ़ करने को) फूंके। (मुसनद बज़्ज़ार)

हदीस 4 : अमीरुल–मुमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे खड़े हो कर पेशाब करते देखा फरमाया ऐ उमर! खड़े हो कर पेशाब न करो, उस दिन से मैंने कभी खड़े हो कर पेशाब न किया।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बैहक़ी)

हदीस 5 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने खड़े हो पेशाब करने से मना फरमाया। (इब्ने माजा, बैहक़ी)

इन अहादीस से मालूम हुआ कि खड़े हो कर पेशाब करना इरशादाते रसूल की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और हुक्मे शरअ् से मुँह मोड़ना है। (मुरत्तिब, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 146ए 147)

मनी पाक है या नापाक :

मनी मुतलक़ नापाक ही है सिवा उन पाक नुत्फ़ों के जिन से तख़्लीक़ हज़राते अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हुई और ख़ुद अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के नुत्फ़े कि उनका पेशाब भी पाक है, यूंही तमाम फ़ुज़ला। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 138)

जुनुब का पसीना :

जुनुब का पसीना उसके लुआबे दहन के मिस्ल पाक है वह कपड़ा वग़ैरह में लग जाए तो वह नापाक न होगा।

दुर्रे मुख़्तार में है : आदमी का जूठा मुतलक़न पाक है ख़्वाह वह जुनुब हो या काफिर, और पसीना का हुक्म जूठे के मिस्ल है यानी अगर जूठा पाक है तो पसीना भी पाक और अगर जूठा नापाक है तो पसीना भी नापाक। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 48)

जूते की नजासत :

जूते पर अगर पेशाब पड़ गया और उस पर खाक जम गई तो ऐसे मिलने से जिस से उसका असर ज़ाइल हो जाए पाक हो जाएगा वरना बग़ैर धोए पाक न होगा।

अगर नजासत जुर्म वाली हो तो उसे ज़मीन पर रगड़ देने से जूता पाक हो जाएगा।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 56)

चूहे की मेंगनियों का हुक्म :

चूहे की मेंगनी अगर चावल, खिचड़ी, रोटी वग़ैरह खाने की चीज़ों में निकले तो उसे फेंक कर वह अशिया खाली जाएं, बशर्तेकि उसका रंग, या बू, या मज़ा उन में न आ गया हो, और अगर चूने में निकले और वह चूना जमा हुआ है तो उसके क़रीब का फेंक कर बाक़ी खा लें और बहता हुआ है तो इस सबसे एहतराम करें। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 58)

हड्डियों का हुक्म :

हर जानवर की हड्डियाँ मुतलक़न पाक हैं यहाँ तक कि वह जानवर जिनका गोश्त नहीं खाया जाता, और वह जानवर जिन्हें ज़ब्ह न किया जाए उनकी भी हड्डियाँ पाक हैं, जब तक उन पर नापाक चिक्नाई न हो, सिवा ख़िंज़ीर के वह नजिसुल–ऐन है और उसका हर जुज़्व बदन ऐसा नापाक है कि बिल्कुल सलाहियत तहारत नहीं रखता। और चिक्नाई में नापाकी की क़ैद इस ग़रज़ से है कि जो जानवर बहने वाला ख़ून नहीं रखते उनकी हड्डियाँ बहरहाल पाक हैं अगरचे चिक्नाई आमेज़ हों, क्योंकि उनकी चिक्नाई ख़ून से इख़्तिलात न होने के सबब से ख़ुद पाक है तो उसकी आमेज़िश से हड्डियाँ क्योंकर नापाक हो सकती हैं।

मगर हलाल व जाइज़ुल–अकल सिर्फ़ उन जानवरों की हड्डियाँ हैं जो माकूलुल्लहम हैं और उन्हें शरई तौर पर ज़बह किया जाए, हराम जानवर और ऐसे ही जो बेज़बह शरई मर जाए या काटा जाए वह अपने तमाम अज्ज़ा के साथ हराम है अगरचे ताहिर हो कि तहारत मुस्तल्ज़िम हिल्लत नहीं।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 88, मफ़्हूमन)

कपड़ा पाक करने का तरीक़ा :

जो नजासत जुर्म वाली और नज़र आने वाली है वह अगर कपड़े में लग जाए तो उसके इज़ाला से कपड़ा पाक हो जाएगा जैसे गोबर, पाखाना वग़ैरह।

और जो नजासत नज़र नहीं आती जैसे पेशाब वग़ैरह उस से कपड़ा उस वक़्त पाक होगा जबकि तीन बार धोया जाए और हर बार ताक़त भर इस तरह निचोड़ा जाए कि क़तरा गिरना बन्द हो जाए। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी तहरीर फरमाते हैं :

जो कपड़े निचोड़ने में आ सकें जैसे हल्की तो शक रज़ाई वग़ैरह वह यूंहीं धोने से पाक हो जाएंगे, वरना बहते दरिया में रखें, या उन पर पानी बहाएं यहाँ तक कि नजासत बाक़ी न रहने पर ज़न हासिल हो, या तीन बार धोएं और हर बार इतना वक़्फ़ा करें कि पहला पानी निकल जाए। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 128)

उंगली की नजासत :

बाज़ वहाबिया ने लिखा है कि अगर उंगली में नजासत लग जाए और उंगली को चाट लिया जाए तो उंगली, पाक हो जाएगी और मुँह भी पाक रहेगा। (मुरत्तिब)

उस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

उंगली की नजासत चाट कर पाक करना किसी सख़्त गन्दी नापाक रूह का काम है और उसे जाइज़ जानना शरीअत पर इफ़्तरा व इस्तिहाग और हराम को हलाल करना और क़ाते इस्लाम है, और यह कहना महज़ झूठ है कि "मुँह भी पाक रहेगा" नजासत चाटने से क़तअन नापाक हो जाएगा। अगरचे बार–बार वह नजिस नापाक थूक यहाँ तक निकलने से कि नजासत का असर मुँह से धुल कर सब पेट में चला जाए पाक हो जाएगा। मगर उस चाटने, निगलने को वही जाइज़ रखेगा जो नजिस खाने वाला है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 134)

शीर ख़्वार बच्चा का पेशाब :

बाज़ जगह यह मशहूर है कि दूध पीते बच्चे का पेशाब नापाक नहीं है अगर वह ख़ूराक खाए तो नापाक है। यानी अगर लड़का है और वह दूध पीता है तो उसका पेशाब नापाक नहीं है लेकिन अगर लड़की है तो नापाक है। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

आदमी का बच्चा अगरचे एक दिन का हो उसका पेशाब नापाक है अगरचे लड़का हो।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 128)

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मिस्वाक करना महबूब था, हुज़ूर पाबन्दी से मिस्वाक करते और सहाबा को भी मिस्वाक करने की ताकीद फरमाते मिस्वाक से रब तआला ख़ुश होता है और फ़रिश्ते राहत पाते हैं। मुँह की सफ़ाई हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम और इस्लाम का पसन्दीदा अमल है। (मुरत्तिब)

हदीस शरीफ़ में है : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि जब तुम में से कोई रात को नमाज़ पढ़े तो वह मिस्वाक कर ले क्योंकि जब वह नमाज़ में क़िरअत करता है तो एक फ़रिश्ता उसके मुँह पर अपना मुँह रख देता है, यह जो कुछ पढ़ता है वह उसके मुँह से निकल कर फ़रिश्ता के मुँह में जाता है। (त, शुअ़बुल–ईमान, मुसनदुल–फिर्दोस)

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि बन्दा जब नमाज़ के लिए खड़ा होता है, उस वक़्त अगर खाने की कोई शय उसके दाँतों में होती है तो मलाइका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि किसी और शय से नहीं होती। (त, तबरानी)

इसीलिए नमाज़ में मुँह की सफ़ाई का कमाल लिहाज़ लाज़िम है वरना फ़रिश्ता को सख़्त ईज़ा होती है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 156)

मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लीया है :

हदीस में हैं हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : कि मिस्वाक करना सुन्नत है तो तुम लोग भी मिस्वाक किया करो, यानी जब वुज़ू का इरादा हो तो मिस्वाक करना सुन्नत है, मिस्वाक वुज़ू की सुन्नतों में से है। (दैलमी)

मिस्वाक हमारे नज़्दीक नमाज़ के लिए सुन्नत नहीं बल्कि वुज़ू के लिए सुन्नत है तो जो एक वुज़ू से चन्द नमाज़ें पढ़े हर नमाज़ के लिए उस से मिस्वाक का मुतालबा नहीं जब तक मुँह में कोई तग़ैयुर न आ गया हो हाँ अगर वुज़ू बेमिस्वाक कर लिया था तो अब वक़्त नमाज़ मिस्वाक कर ले।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिस्वाक करते थे और वुज़ू करते फिर नमाज़

अदा फरमाते। (त, मुस्लिम)

हुज़ूर अक़्दस संल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रात और दिन में जब भी इस्तेराहत फरमाते तो बेदार होने के बाद वुज़ू से पहले मिस्वाक फरमाते थे। (त, अबू दाऊद)

इमामुल–औलिया सैयदना अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि अल्लाहु तआला अ·हुमा ने फरमाया अगर किसी बस्ती के लोग सुन्नियत मिस्वाक के तर्क पर इत्तिफ़ाक़ करें तो हम उन पर इस तरह जिहाद करेंगे जैसा मुर्तदों पर करते हैं ताकि लोग उस सुन्नत के तर्क पर जुरअत न करें।

हुज़ूर पुर नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की उस पर मुवाज़िबत व मुदावमत गोया ज़रूरियात व बदीहीयात से है हर शख़्स कि अहवाले क़ुदसीया पर मुत्तला है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का उस पर मुदावमत फरमाना जानता है।

मिस्वाक का तरीक़ा मस्नूना :

मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लीया है हाँ सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जबकि मुँह में तग़ैय्युर हो। सुन्नत यह है कि मिस्वाक करने से पहले धो ली जाए और फराग़ के बाद धोकर रखी जाए। और कम अज़ कम ऊपर के दाँतों और नीचे दाँतों में तीन–तीन बार तीन पानियों से की जाए।

उसके साथ अगर मुँह में कोई तग़ैयुर राइह हुआ तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से उसका इज़ाला हो लाज़िम है, उसके लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ बेएहतियाती का हुक़्क़ा पीने वालों को उसका ख़्याल सख़्त ज़रूरी है, और उन से ज़्यादा सिग्रेट वाले कि उसकी बदबू मुरक्कब तम्बाकू से सख़्त तर और ज़्यादा देरपा है और उन सबसे ज़ाइद अशद ज़रूरत तम्बाकू खाने वालों को है जिनके मुँह में उसका जुर्म दबा रहता और मुँह को अपनी बदबू से बसा देता है, यह सब लोग वहाँ तक मिस्वाक और कुल्लियाँ करें कि मुँह बिल्कुल साफ़ हो जाए और बू का असलन निशान न रहे, और उसका इम्तिहान यूं है कि हाथ अपने मुँह के क़रीब लेजा कर मुँह खोल कर ज़ोर से दो तीन बार हलक़ से पूरी साँस हाथ पर लें और मअन सूंघे बग़ैर उसके अन्दर की बदबू खुद कम महसूस होती है और जब मुँह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना हराम, नमाज़ में दाख़िल होना मना। (फतावा रज़्वीया अव्वल, स0 146 ता 155, मुल्ख़िसन)

मिस्वाक न हो तो क्या करे :

मिस्वाक करना सुन्नत है बसा औक़ात अगर मिस्वाक न हो तो उंगलियाँ उसके क़ाइम मक़ाम हैं। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मिस्वाक न होने की सूरत में उंगलियाँ काफी हैं। यानी मिस्वाक न हो तो उंगलियों से दाँत साफ़ किए जाएं।

(त, अबू नईम, किताबुस्सिवाक)

मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दाँत मांजना अदाए सुन्नत व हुसूले सवाब के लिए काफी नहीं, हाँ मिस्वाक न हो तो उंगली या खुर खुरा कपड़ा अदाए सुन्नत कर देगा। और औरतों के लिए मिस्वाक मौजूद हो जब भी मस्सी काफी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब मिस्वाक न हो तो उंगलियाँ मिस्वाक की जगह काफी हैं। (त, बुख़ारी)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब वुज़ू फरमाते थे तो नाक में पानी चढ़ाते, कुल्ली करते और दहने मुबारक में अंगुश्त शरीफ़ दाख़िल फरमाते। (त, तबरानी)

अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जब वुज़ू फरमाते तो अपनी उंगली से मिस्वाक का काम लेते। (त, किताबुत्तुहूर)

अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू ने पानी का एक कूज़ा मंगा कर अपने चेहरा और हथेलियों को तीन–तीन बार धोया और तीन बार कुल्ली फरमाई फिर बाज़ उंगलियों को मुँह में डाला और आख़िर में फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का वुज़ू इसी तरह का था। (त, मुसनद अहमद)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है एक अन्सारी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह हुज़ूर ने मिस्वाक की तरफ़ हमें तरग़ीब फरमाई क्या उसके सिवा भी कोई सूरत है फरमाया वुज़ू के वक़्त तेरी उंगली मिस्वाक है कि अपने दाँतों पर फेरे, बेशक बेनीयत के कोई अमल नहीं और बेख़ौफ़े इलाही के सवाब नहीं। (सुनन बैहक़ी)

मिस्वाक, वुज़ू में दाख़िल नहीं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि : मिस्वाक निस्फ़ वुज़ू है और वुज़ू निस्फ़ ईमान। (त, इब्ने अबी शैबा)

यानी ईमान बेवुज़ू का कामिल नहीं होता और वुज़ू बेमिस्वाक। उस से मिस्वाक का दाख़िल वुज़ू होना साबित नहीं होता। जिस तरह वुज़ू दाख़िले ईमान नहीं, हाँ वज्हे तक्मील होना समझ में आता है वह हर सुन्नत के लिए हासिल है सुन्नते क़ब्लीया हो ख़्वाह बादीया, जिस तरह सुबह व ज़ुहर की सुन्नतें फ़र्ज़ों की तक्मील के लिए हैं।

मस्जिद में मिस्वाक करने की मुमानेअत :

मस्अला यह है कि मस्जिद में मिस्वाक करनी नहीं चाहिए। मस्जिद में कुल्ली करना हराम है मगर यह कि किसी बर्तन में हो या बानी मस्जिद ने वक़्त बनाए मस्जिद उस में कोई जगह ख़ास उस काम के लिए बना दी हो वरना इजाज़त नहीं।

हुज़ूर की अपनी उम्मत पर शफ़्क़त और मिस्वाक की अहमीयत :

बुख़ारी व मुस्लिम में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि : अगर मेरी उम्मत पर मुशक़्क़त व तक्लीफ़ का अन्देशा न होता हर वुज़ू के या हर नमाज़ के वक़्त उनको मिस्वाक का हुक्म देता।

(त, बुख़ारी व मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 146 ता 155, मुल्ख़िसन)

मिस्वाक और नमाज़ :

हदीस शरीफ़ में है रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मिस्वाक के साथ नमाज़ बेमिस्वाक की सत्तर नमाज़ों से बेहतर है।

(अबू नईम, किताबुस्सिवाक, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 447)

औरतों के लिए मिस्वाक या मस्सी :

औरतों के लिए उम्मुल–मुमिनीन सिदीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की सुन्नत है लेकिन अगर वह न करें तो हरज नहीं उनके दाँत और मसूढ़े बनिस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं, उन्हें मस्सी काफी है।

(अल–मल्फ़ूज़ सोयम, स0 25)

वुज़ू के फ़ज़ाइल व मसाइल

वुज़ू का हुक्म मज़हबे इस्लाम की नज़ाफ़त व पाकीज़गी बताता है कि जब बन्दा अपने रब की बारगाह में बदनी इबादत का नज़राना पेश करे तो दिल की सफ़ाई के साथ जिस्म की भी सफ़ाई करे फिर ख़ुदा वन्दा ज़ुल–जलाल की बारगाह में हाज़िर हो, इसीलिए जहाँ वुज़ू का हुक्म दिया गया है वहीं उसके फ़ज़ाइल भी इरशाद हुए हैं कि वुज़ू का पानी क़यामत के दिन तौला जाएगा, वुज़ू के पानी के साथ गुनाह धुलते हैं, वुज़ू के सबब से क़यामत के दिन उस उम्मत के आज़ाए वुज़ू चमकेंगे जो बावुज़ू सोने का आदी हो और इसी हाल पर मर जाए तो उसे शहीदों का सवाब मिलेगा वग़ैरह वग़ैरह। मालूम हुआ कि शरीअत में वुज़ू की बड़ी अहमीयत है, हमारे लिए शरीअत कि हर हुक्म पर अमल करना है चाहे उसकी हिक्मत हमारी समझ में आए न आए। (मुरत्तिब)

वुज़ू से गुनाहों का धुलना :

आदमी जब वुज़ू करता है तो आबे वुज़ू के साथ आज़ाए वुज़ू के गुनाह धुल जाते हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक बन्दा जब अपने पाँव धोता है उसके गुनाह दूर हो जाते हैं और जब मुँह धोता और कुल्ली करता, धोता, मांझता, पानी सूँघता, सर का मसह करता है, उसके कान आँख के गुनाह निकल जाते हैं और जब कलाइयाँ और पाँव धोता है ऐसा हो जाता है जैसा अपनी माँ से पैदा होते वक़्त था। (तबरानी औसत)

दूसरी रिवायत में है : जब आदमी नमाज़ के इरादे से वुज़ू को उठे फिर हाथ धोए तो हाथ के सब गुनाह पहले क़तरा के साथ निकल जाएं फिर जब कुल्ली करे और नाक में पानी डाले और साफ़ करे ज़ुबान व लब के सब गुनाह पहली बूँद के साथ टपक जाएं, फिर जब मुँह धोए आँख, कान के सब गुनाह पहले क़तरा के साथ उतर जाएं, फिर जब कुहनियों तक हाथ और गट्टों तक पाँव धोए सब गुनाहों से ऐसा ख़ालिस हो जाए जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था। (मुसनद अहमद)

उम्मते महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर रब अज़्ज़ा व जल्ल का अज़ीम फ़ज़्ल और नमाज़ियों के लिए कमाले तहनियत और बेनमाज़ों पर सख़्त हसरत है, इस बात पर और भी अहादीसे सहीहा वारिद हैं कि आज़ाए वुज़ू के गुनाह आबे वुज़ू के साथ धुल जाते हैं।

उलमा फरमाते हैं कि : यहाँ गुनाहों से सग़ाइर मुराद हैं, मगर तहक़ीक़ यह है कि कबाइर भी धुलते हैं अगरचे ज़ाइल न हों, यह सैयदना इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु वग़ैरह अकाबिर औलिया–ए–किराम का मुशाहिदा है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 152, 153, मुल्ख़िसन)

आज़ाए वुज़ू की ताबिश व चमक :

उम्मते मुहम्मदीया अला साहिबिहस्सलाते वस्सना के आज़ाए वुज़ू क़यामत के दिन चमकेंगे और वह दूर से पहचानी जाएगी, इसीलिए वुज़ू में आज़ा धोने की जो हद है उस से कुछ ज़्यादा धोना मुस्तहब है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : "मेरी उम्मत के चेहरे और चारों हाथ पाँव रोज़े क़यामत वुज़ू के नूर से रौशन व मुनव्वर होंगे तो तुम में जिस से हो सके उसे चाहे कि अपने इस नूर को ज़्यादा करे।" यानी चेहरा के अतराफ़ में जो हदें शरअन मुक़र्रर हैं उस से कुछ ज़्यादा धोए और हाथ निस्फ़ बाज़ू और पाँव नीम साक़ तक।

(बुख़ारी व मुस्लिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 159)

वुज़ू के बाद आज़ा को पोंछना :

वुज़ू के बाद आज़ाए वुज़ू पर पानी को बाक़ी रहने दे कि वह पानी क़यामत के दिन वज़न किया जाएगा। और अगर रूमाल या तौलिया वग़ैरह से ख़ुश्क करे तो भी कोई हरज नहीं बल्कि रूमाल से पानी को ख़ुश्क कर लेना मुस्तहब है। और अगर साफ़ न करने में ज़रर का अन्देशा हो तो ऐसी सूरत में पोंछना वाजिब है। लेकिन पानी को मुकम्मल तौर पर पोंछ लेने की आदत न बना ले कि यह नाज़ व नेअ़म और ख़ुशहाली व ऐश वालों का तरीक़ा है, तवाज़ु वालों का तरीक़ा यह है कि पोंछने की आदत न डाले ज़रूरत हो तो साफ़ कर ले जैसे सर्दी में, और अगर ज़रूरत व हरज नहीं तो उसे बाक़ी रहने दे। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि : "वुज़ू का पानी रोज़े क़यामत नेकियों के पलरे में रखा जाएगा।" (तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है कि : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जो वुज़ू करके पाकीज़ा कपड़े से बदन पोंछ ले तो कुछ हरज नहीं, और जो ऐसा न करे तो यह बेहतर है इसलिए कि क़यामत के दिन आबे वुज़ू भी सब आमाल के साथ तौला जाएगा।" (तमाम फ़वाइद, तारीख़ इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया, जिल्द अव्वल, स0 25)

रूमाल या तौलिया से वुज़ू का पानी साफ़ करने में कोई हरज नहीं उसे साफ़ करना भी जाइज़ है और बाक़ी रखना भी दुरुस्त, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से फ़ेअ़ल व तर्क दोनों बातें साबित हैं। (मुरत्तिब)

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक रूमाल रखते कि वुज़ू के बाद उस से आज़ाए मुनव्वर साफ़ फरमाए। (तिर्मिज़ी)

हज़रत सलमान फार्सी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि : "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वुज़ू फरमा कर ऊनी कुरता कि ज़ेब बदन अक़्दस था उलट कर उस से चेहर–ए–अनवर पोंछा।" (इब्ने माजा)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "वुज़ू के बाद रूमाल में कुछ हरज नहीं।" (इमाम अबुल–महासिन मुहम्मद बिन अली किताबुल–इल्माम फ़ी दुख़ूलिल–हम्माम)

उम्मुल–मुमिनीन मैमूना रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नहाए यह कपड़ा जिस्मे अक़्दस साफ़ करने को हाज़िर लाइं, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने न लिया और हाथ से पानी पोंछ–पोंछ कर झाड़ा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

इस हदीस से रूमाल से पानी पोंछने की कराहत साबित नहीं होती।

इसीलिए उलमा फरमाते हैं कि : वुज़ू या ग़ुस्ल में पानी से हाथ न झटकना बेहतर है मगर मना नहीं और इस बारे में जो हदीस आई कि वह शैतान का पंखा है वह ज़ईफ़ है।

इस तर्क रूमाल की तौजीह व तावील में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैली अलैहिर्रहमा मजीद फरमाते हैं :

★ मुम्किन है कि वह कपड़ा मैला था पसन्द न फरमाया।
★ मुम्किन है कि नमाज़ की जल्दी थी इसलिए न लिया।
★ मुम्किन है कि अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल के हुज़ूर तवाज़ु के लिए ऐसा किया।

यानी रूमालों से बदन साफ़ करना और अरबाबे नेमत की आदत है और हाथ से पानी पोंछ

डालना मसाकीन का तरीक़ा, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तवाज़ुअन तरीक़ा मसाकीन पर इक्तिफ़ा फ़रमाया।

★ मुम्किन है कि वक़्त गर्म था उस वक़्त बक़ाए तरी ही मत्लूब थी।

बल्कि उम्मुल–मुमिनीन का कपड़ा पेश करना ज़ाहिरन यही बता रहा है कि ऐसा होता था मगर उस वक़्त किसी वजहे ख़ास से क़ुबूल न फ़रमाया।

★ और हदीस की उम्दा तावील वह है कि सल्फ़ किराम कपड़े से पोंछने में हरज न जानते मगर उसकी आदत डालना पसन्द न फ़रमाते कि वह ख़ुश ऐश और नेमत वालों का तरीक़ा है।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 1, स० 25ए 26)

हर वक़्त बावुज़ू रहने की फ़ज़ीलत व बरकत :

इस बात पर इज्मा है कि हर वक़्त बावुज़ू रहना, हर हदीस के बाद फ़ौरन वुज़ू करना मुस्तहब है, और यह इस्लाम की सुन्नतों में से है।

इमाम फ़क़ीह अबुल्लैस फ़रमाते हैं कि हमको हदीस पहुँची अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया ऐ मूसा अगर बेवुज़ू होने की हालत में तुझे कोई मुसीबत पहुँचे तो ख़ुद अपने आपको मलामत करना। (मफ़ातीहुल–जनान)

सात बड़े फ़ाइदों का हुसूल :

बाज़ आरेफ़ीन ने फ़रमाया जो हमेशा बावुज़ू रहे अल्लाह तआला उसे सात फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए।

1. मलाइका उसकी सोहबत में रग़बत करें।
2. क़लम उसकी नेकियाँ लिखता रहे।
3. उसके आज़ा तस्बीह करें।
4. उस से तक्बीर–ए–औला फ़ौत न हो।
5. जब सोए अल्लाह तआला कुछ फ़रिश्ते भेजे कि जिन्न व इन्स के शर से उसकी हिफ़ाज़त करें।
6. सकरात मौत उस पर आसान हो।
7. जब तक बावुज़ू हो अमाने इलाही में रहे।

हदीसे क़ुदसी में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है : जिसे हदस हो और वुज़ू न करे उस ने मेरा कमाले अदब जैसा चाहे मल्हूज़ न रखा। (मफ़ातीहुल–जनान, फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स० 186)

वुज़ू पर वुज़ू नूर पर नूर :

वुज़ू होते हुए फिर दोबारा वुज़ू करना बाइसे फ़ज़ीलत और बरकत व तक़र्रुब है और उस से नेकियाँ ज़्यादा होती हैं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : वुज़ू पर वुज़ू नूर पर नूर है। (रज़ीन)

दूसरी हदीस में है जो बावुज़ू वुज़ू करे उसके लिए दस नेकियाँ लिखी जाएं।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 1, स० 186)

वुज़ू के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना :

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत तो मुसल्लम है अहादीस से यह साबित है कि जो वुज़ू के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़े उसका पूरा जिस्म पाक हो जाए और जो बिस्मिल्लाह कह कर वुज़ू न करे उसके सिर्फ़ आज़ाए वुज़ू पाक हों। (मुरत्तिब)

हदीस : जो बिस्मिलल्लाह कह कर वुज़ू करे उसका सारा बदन पाक हो जाए वरना सिर्फ़ आज़ाए वुज़ू पाक होंगे जिन पर पानी गुज़रा। (त, सुनन दारु कुतनी व बैहक़ी)

हदीस : जो वुज़ू करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़े तो उसका पूरा जिस्म पाक हो जाए और जो बिस्मिल्लाह कह कर वुज़ू न करे उसके सिर्फ़ आज़ाए वुज़ू पाक हों।

(त, अबुश्शैख़, दारु कुतनी, बैहक़ी)

(दीगर अहादीस में भी अल्फ़ाज़ की तब्दीली के साथ यही मज़्मून मौजूद हैं। मुरत्तिब)

(फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 254ए 255)

वुज़ू में इसराफ़ की मुमानेअत :

वुज़ू में पानी को ऐतदाल के साथ ख़र्च करे, न इतना कम हो कि आज़ाए ख़ुश्क रह जाएं न इतना ज़्यादा कि इसराफ़ व गुनाह हो जाए, यानी बेजा पानी ख़र्च करना ख़्वाह वुज़ू में हो या ग़ुस्ल में मम्नूअ् व गुनाह और इसराफ़ है। मुतअद्दद अहादीस में इसराफ़ की मुमानेअत इरशाद हुई है।

(मुरत्तिब)

हदीस 1 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक शख़्स को वुज़ू करते देखा फरमाया इसराफ़ न कर, इसराफ़ न कर। (इब्ने माजा)

हदीस 2 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक शख़्स को वुज़ू करते देखा फरमाया ऐ अल्लाह के बन्दे इसराफ़ न कर, उन्होंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! क्या वुज़ू में भी इसराफ़ है फरमाया हाँ, और हर शय में इसराफ़ को दख़ल है। (सुनने सईद बिन मन्सूर, हाकिम)

हदीस 3 : बेशक वुज़ू के लिए एक शैतान है जिसका नाम वल्हान है तो पानी के वसवास से बचो।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

यानी वसवसे में मुब्तला हो कर पानी ज़्यादा ख़र्च न करो।

हदीस 4 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सअद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर गुज़रे वह वुज़ू कर रहे थे इरशाद फरमाया यह इसराफ़ कैसा? अर्ज़ किया वुज़ू में इसराफ़ है फरमाया हाँ अगरचे तुम नहरे रवाँ पर हो। (अहमद इब्ने माजा)

हदीस 5 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : "बेशक मेरी उम्मत में वह लोग होंगे कि तहारत व दुआ में हद से बढ़ेंगे।" यानी वुज़ू वग़ैरह में बेजा पानी ख़र्च करेंगे और दुआ करेंगे जो उनके लाइक़ न होगी, फिर उम्मीदे क़ुबूलियत कैसी?

(अबू दाऊद, इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान)

और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

जो अल्लाह तआला की बांधी हदों से बढ़े बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।

(अत्तलाक़, 1)

हदीस 6 : वुज़ू में बहुत सा पानी भपकाने में कुछ ख़ैर नहीं और वह शैतान की तरफ़ से है।

(अबू नईम हुलिया)

हदीस 7 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं एक आराबी ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर वुज़ू को

पूछा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हें वुज़ू करके दिखाया, जिस में हर अज़्व तीन–तीन बार धोया फिर फरमाया :

"वुज़ू इस तरह है जिस ने उस पर बढ़ाया या घटाया उस ने बुरा किया और हद से बढ़ा और ज़ुल्म किया।" (अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 196ए 197)

इसराफ़ से बचने की तदाबीर :

1. वुज़ू देख–देख कर होशियारी व एहतियात के साथ करें, अवाम में जो यह मशहूर है कि वुज़ू बहुत जल्द करना चाहिए, और कहते हैं कि वुज़ू जवानों का सा और नमाज़ बूढ़ों की सी, यह ग़लत है। बल्कि वुज़ू में इत्मीनान व सुकून मतलूब व महमूद है।

2. बाज़ लोग चुल्लू लेने में पानी ऐसा डालते हैं कि उबल जाता है, हालांकि जो गिरा बेकार गया उस से एहतियात चाहिए।

3. हर चुल्लू भरा होना ज़रूर नहीं बल्कि जिस काम के लिए लें उसका अंदाज़ा रखें मसलन नाक में नर्म बांसे तक पानी चढ़ाने में पूरा चुल्लू किया ज़रूर, निस्फ़ भी काफी है, बल्कि भरा चुल्लू कुल्ली के लिए भी दरकार नहीं।

4. लोटे की टोंटी मुतवस्सित मोअ्तदिल चाहिए, न ऐसी तंग कि पानी बदेर दे, न फराख़ कि हाजत से ज़्यादा गिराए।

5. बहुत भारी बर्तन से वुज़ू न करे ख़ुसूसन कमज़ोर कि पूरा क़ाबू न होने के बाइस पानी बेएहतियात गिरेगा।

6. आज़ा धोने से पहले उन पर भीगा हाथ फेर ले कि पानी जल्द दौड़ता है और थोड़ा बहुत का काम देता है, ख़ुसूसन मौसमे सरमा में उसकी ज़्यादा हाजत है कि आज़ा में ख़ुशकी होती है, बहती धार बीच में जगह खाली छोड़ जाती है।

7. कलाइयों पर बाल हों तो तरशवा दें कि उनका होना पानी ज़्यादा चाहता है और मूंडने से सख़्त हो जाते हैं। और तराशना मशीन से बेहतर कि ख़ूब साफ कर देती है, और सब से अहसन व अफ़ज़ल नूरह है कि उन आज़ा में यही, सुन्नत से साबित है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब नूरा का इस्तेमाल फरमाते तो सत्तर मुक़द्दस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाक़ी बदन मुनव्वर पर अज़्वाजे मुतह्हरात लगा देतीं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (इब्ने माजा)

और ऐसा न करें तो धोने से पहले पानी से ख़ूब भिगो लें कि सब बाल बिछ जाएं वरना खड़े बाल की जड़ में पानी गुज़र गया और नोक से न बहा तो वुज़ू न होगा।

8. हाथ पाँव पर अगर लोटे से धार डालें तो नाख़ुनों से कुहनियों या गुटों के ऊपर तक अलल–इत्तिसाल उतार दें कि एक बार में हर जगह पर एक ही बार गिरे, पानी जबकि गिरा रहा है और हाथ की रवानी में देर होगी तो एक जगह पर मुकर्रर करेगा।

9. बाज़ लोग यूं करते हैं कि नाख़ुन से कुहनी या गुट्टे तक बहाते लाए फिर दोबारा सहबारा के लिए जो नाख़ुन की तरफ़ ले गये तो हाथ न रोका बल्कि धार जारी रखी, ऐसा न करें कि तीन बार के एवज़ पाँच बार हो जाएगा। बल्कि हर बार कुहनी या गट्टे तक लाकर धार रोक लें और रुका हुआ हाथ नाख़ुनों तक लेजा कर वहाँ से फिर जारी करें कि सुन्नत यही है कि नाख़ुन से कुहनियों या गुट्टों तक पानी बहे, न उसका अक्स।

10. क़ौल जामे यह है कि सलीक़ा से काम लें कि :

सैयदना इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि :

"सलीक़ा से उठाओ तो थोड़ा भी काफ़ी हो जाता है और बद सलीक़गी बरतो तो बहुत भी किफ़ायत नहीं करता।" (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 208 ता 210)

मक़ामाते एहतियात :

वुज़ू में कुछ ऐसे मक़ामात हैं जिनकी ख़ास एहतियात मर्द व औरत सब पर लाज़िम है और यह मर्द व औरत सबके लिए मुतलक़न ज़रूरियाते वुज़ू में से हैं।

1. पानी माँग यानी माथे के सिरे से पड़ना।

बहुत लोग लिप या चुल्लू में पानी लेकर नाक या अबरू या निस्फ़ माथे पर डालते हैं पानी तो बह कर नीचे आया, वह अपना चढ़ा कर ऊपर ले गये उस में सारा माथा न धुला, भीगा हाथ फिरा और वुज़ू न हुआ।

2. पट्टियाँ झुकी हों तो उन्हें हटा कर पानी डाले कि जो हिस्सा पेशानी का उनके नीचे है धुलने से न रहे जाए।

3. भवों के बाल छदरे हों कि नीचे की खाल चमकती हो तो खाल पर पानी बहना फ़र्ज़ है सिर्फ़ बालों पर काफ़ी नहीं।

4. आँखों के चारों कूए, आँखें ज़ोर से बन्द न करे, यहाँ कोई सख़्त चीज़ जमी हो तो छुड़ा ले।

5. पलक का हर बाल पूरा, बाज़ कीचड़ वग़ैरह सख़्त हो कर जम जाता है कि उसके नीचे पानी नहीं बहता, उसका छुड़ाना ज़रूरी है।

6. कान के पास तक कंपटी, ऐसा न हो कि माथे का पानी गाल पर उतर जाए और यहाँ सिर्फ़ भीगा हाथ फेरे।

7. नाक का सूराख़, अगर कोई गहना या तिन्का हो उसे फिरा फिरा कर पानी डाले वरना यूंहीं धार डाले, हाँ अगर बिल्कुल बन्द हो गया तो हाजत नहीं।

8. आदमी जब ख़ामोश बैठे तो दोनों लब मिल कर कुछ हिस्सा छुप जाता, कुछ ज़ाहिर रहता है, यह ज़ाहिर रहने वाला हिस्सा भी धुलना फ़र्ज़ है, अगर कुल्ली न की और मुँह धोने में लब समेट कर ज़ोर से बन्द कर लिए तो उस पर पानी न बहेगा।

9. ठोढ़ी की हड्डी उस जगह तक जहाँ नीचे के दाँत जमे हैं।

10. हाथों की आठों घाइयाँ।

11. उंगलियों की करवटें कि मिलने पर बन्द हो जाती हैं।

12. दसों नाख़ुनों के अन्दर जो जगह ख़ाली है, हाँ मेल का डर नहीं।

13. नाख़ुनों के सिरे से कुहनियों के ऊपर तक हाथ का हर पहलू, चुल्लू में पानी लेकर कलाई पर उलट लेना हरगिज़ काफ़ी नहीं।

14. कलाई का हर बाल जड़ से नोक तक, ऐसा न हो कि खड़े बालों की जड़ में पानी गुज़र जाए नोकें रह जाएं।

15. आरसी, छल्ले और कलाई के हर गहने के नीचे।

16. औरतों को फ़ंसी चूड़ियों का शौक़ होता है उन्हें हटा–हटा कर पानी बहाएं।

17. चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है, पोरों के सिरे गुज़ार देना अक्सर इस मिक़्दार को काफ़ी नहीं होता।

18. पाँव की आठों घाइयाँ।

19. यहाँ उंगलियों की करवटें ज़्यादा क़ाबिले लिहाज़ हैं कि क़ुदरती मिली हुई हैं।

20. नाख़ुनों के अन्दर कोई चीज़ न हो।
21. पाँव के छल्ले और जो गहना गट्टों पर या गट्टों से नीचे हो उसके नीचे सैलान शर्त है।
22. गट्टे।
23. तल्वे।
24. एड़ियाँ।
25. कूंचें।
मुन्दरजा ज़ैल मक़ामात मर्दों से ख़ास हैं :
26. मोंछें।
27. सही मज़्हब में सारी दाढ़ी धोना फर्ज़ है यानी जितने चेहरे की हद में है न लटकी हुई कि हाथ से गले की तरफ़ को दबाव तो ठोढी के उस हिस्से से निकल जाए जिस पर दाँत जमे हैं कि उसका सिर्फ़ मसह सुन्नत और धोना मुस्तहब है।
28. दाढ़ी, मोंछें छदरी हों कि नीचे की खाल नज़र आती हो तो खाल पर पानी बहना।
29. मोंछें बढ़ कर लबों को छुपा लें तो उन्हें हटा-हटा कर लबों की खाल धोनी, अगरचे मोंछें कैसी ही घनी हों।

इन बातों का लिहाज़ रखना ज़रूरी है अगर उन में से किसी भी एक जगह पानी न पहुँचे तो वुज़ू न होगा, यह वह एहतियाती मक़ामात में जिनका ख़्याल रख कर धोना लाज़िम है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 96, 97)

वुज़ू की चन्द ज़रूरी बातें :

वुज़ू से मुतअल्लिक़ फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल मतबा रज़ा अकेडमी मुम्बई के हवाले से चन्द ज़रूरी बातें हम तहरीर कर रहे हैं जिन में अवाम ग़लत फ़हमी या बेएहतियाती के शिकार हैं। उन में से बाज़ बातें वुज़ू टूटने या न टूटने से मुतअल्लिक़ हैं और बाज़ बातें वुज़ू के सुनन व मुस्तहिब्बात व आदाब से हैं। (मुरत्तिब)

★ ज़ुकाम कितना ही बहे उस से वुज़ू नहीं जाता।

खाने, पीने की क़य से वुज़ू टूट जाता है जबकि मुँह भर हो, बल्ग़म के क़य कितनी ही कसीर हो उस से वुज़ू न जाएगा।

★ आँखें दुखने, या ढलके में जो आंसू बहे या आँख कान, छाती, नाफ़ वग़ैरह से दाने, नासूर ख़्वाह किसी मरज़ के सबब पानी बहे वुज़ू जाता रहेगा। (स0 34)

घुटने, या और सतर खुलने या अपना पराया सतर देखने से वुज़ू नहीं जाता।

★ वुज़ू का अदब यह है कि नाफ़ से ज़ानों के नीचे तक सब सतर छुपा कर हो, बल्कि इस्तिंजे के बाद फौरन ही सतर हो लेना चाहिए कि बिला ज़रूरत बरहंगी मना है। (स0 66)

★ दौड़ने या कूदने से वुज़ू नहीं जाता।

★ कितनी ही बुलन्दी पर से गिर पड़े वुज़ू न जाएगा मगर यह कि ख़ून वग़ैरह कुछ ख़ारिज हो या बेहोश हो जाए।

★ जब तक होश बाक़ी हैं तबीअत किसी क़द्र, किसी काम में मश्ग़ूल हो वुज़ू न जाएगा, जैसे किताब का मुताला, यादे इलाही का मुराक़बा।

बोझ उठाने या गिर पड़ने या किसी वजह से मनी बेशहवत अपने महल से जुदा हो कर निकल गई वुज़ू वाजिब होगा। ग़ुस्ल नहीं। (स0 67)

★ वुज़ू की इब्तिदा में जो दोनों हाथ कलाइयों तक तीन बार धोए जाते हैं सुन्नत यह है कि मुँह धोने के बाद जो हाथ धोए उस में फिर दोनों हथेलियों को शामिल कर ले, सर नाख़ुन से कुहनियों के ऊपर तक तीन बार धोए। (स० 145)

★ अंगूठी ढीली हो तो वुज़ू में उसे फिरा कर पानी डालना सुन्नत है और अगर तंग हो कि बेजुंबिश दिए पानी न पहुँचे तो फ़र्ज़ है, यही हुक्म बाली वग़ैरह का है।

वुज़ू में मुँह पर ज़ोर से छुपा का मारना मक्रूह है बल्कि किसी अज़्व पर इस ज़ोर से न डाले कि छींटें उड़ कर बदन या कपड़ों पर जाएं।

★ आज़ा कामिल मिल कर धोना वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों में सुन्नत है।

★ वुज़ू में दाहिने से इब्तिदा करना सुन्नत है यानी पहले दाहिना हाथ धोए फिर बायाँ हाथ, यूंही पहले दाहिना पाँव, धोए फिर बायाँ, बहुत कुतुब में इस अमल को मुस्तहब लिखा है।

★ जहाँ और आज़ा में तरतीब सुन्नत है कि पहले मुँह धोए फिर हाथ, फिर सर का मसह, फिर पाँव धोना, यूंही कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में भी, यानी सुन्नत है कि पहले कुल्ली करे उसके बाद नाक में पानी डाले। (स० 172)

★ वुज़ू में कुल्ली करना या नाक में पानी डालने का तर्क मक्रूह है और उसकी आदत डाले तो गुनहगार होगा।

यह मस्अला वह लोग ख़ूब याद रखें जो कुल्लियाँ ऐसे नहीं करते कि हलक़ तक हर चीज़ को धोएं और वह कि पानी जिनकी नाक को छू जाता है सूँघ कर ऊपर नहीं चढ़ाते, यह सब लोग गुनहगार हैं, और ग़ुस्ल में ऐसा न हो तो सिरे से न ग़ुस्ल होगा न नमाज़। (स० 174)

★ वुज़ू में नीयत न करने की आदत से गुनहगार होगा कि उसमें नीयत सुन्नते मुअक्कदा है।

★ तहारत में हर अज़्व का पूरा तीन बार धोना सुन्नते मुअक्कदा है तर्क की आदत से गुनहगार होगा।

★ पानी डालने की गिनती मोतबर नहीं, जितना धोने का हुक्म है उस पर पूरा पानी बह जाना मोतबर है।

मसलन हाथ पर एक बार पानी डाला कि तिहाई कलाई पर बहा, बाक़ी पर भीगा हाथ फेरा, दोबारा दूसरी तिहाई धुली, सह बारा तीसरी, तो यह एक ही बार धोना हुआ। हर बार पूरे हाथ पर कुहनी समेत पानी ज़र्रा–ज़र्रा पर बहता तो तीन बार होता, इस तरह धोने की आदत से गुनहगार होगा और अगर सौ बार पानी डाला और एक ही जगह बहा, कुछ हिस्से पर किसी दफ़ा न बहा। अगरचे भीगा हाथ फेरा तो वुज़ू ही न होगा।

★ अगर पानी कम है, या सर्दी सख़्त है, या और किसी ज़रूरत के लिए पानी दरकार है इस वजह से आज़ा एक–एक बार धोए तो मुज़ाइक़ा नहीं। (स० 177)

★ सोते में दोनों सुरीन ज़मीन पर जमे हों तो वुज़ू नहीं जाता मगर आद–ए–वुज़ू मुस्तहब जब भी है।

★ बग़ल खुजाने से वुज़ू मुस्तहब है, जबकि उसमें बदबू हो।

★ जुज़ामी या बरस वाले से मस करने में भी तज्दीदे वुज़ू मुस्तहब है।

★ सलीब जिसे नसारा पूजते हैं और हुनूद के बुत वग़ैरह के छूने से भी नया वुज़ू चाहिए।

★ जिन बातों से एआद–ए–वुज़ू मुस्तहब है, जब वह वुज़ू करने में वाक़े हों तो मुस्तहब है कि फिर सिरे से वुज़ू शुरू करे। (स० 192, 193)

★ दाँतों में से ख़ून निकला अगर सुर्ख़ है वुज़ू जाता रहा और आबे दहन के ख़लत से ज़र्द है तो नहीं। (स० 522)

★ वर्ज़िश करने से वुज़ू नहीं जाता जब तक कोई नाक़िज़े वुज़ू न सादिर हो। (स10 583)

वुज़ू का मस्नून तरीक़ा :

वुज़ू के मस्नून तरीक़ा से मुतअल्लिक़ एक इस्तिफ़सार के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी इरशाद फरमाते हैं :

जो वुज़ू बिस्मिल्लाह से शुरू किया जाता है तमाम बदन को पाक कर देता है वरना जितने पर पानी गुज़रेगा उतना ही पाक होगा।

★ फिर दोनों हाथ पहुँचों तक तीन–तीन बार इस तरह धोए कि पहले सीधे हाथ को उलटे हाथ से पानी डाल कर तीन बार, फिर उलटे को सीधे हाथ से पानी डाल कर तीन बार, और उसका ख़्याल रहे कि उंगलियों की घाइयाँ पानी बहने से न रह जाएं।

★ फिर तीन बार कुल्ली ऐसी करे कि मुँह की तमाम जड़ों और दाँतों की सब खिड़कियों में पानी पहुँच जाए कि वुज़ू में इसी तरह कुल्ली करना सुन्नते मुअक्कदा और ग़ुस्ल में फर्ज़ है, अक्सर लोगों को देखा कि उन्होंने जल्दी–जल्दी तीन बार पच–पच कर लिया। या नाक की नोक पर तीन मरतबा पानी लगा लिया, ऐसा करने से वुज़ू में सुन्नत अदा नहीं होती, एक आध बार ऐसा करने से तारिके सुन्नत, और आदत डालने से गुनहगार व फासिक़ होता है और ग़ुसल में फर्ज़ रह जाता है तो ग़ुस्ल तो होता ही नहीं कि नर्म बांसे तक पानी चढ़ाना वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा और ग़ुस्ल में फर्ज़ है।

दाढ़ी अगर है तो ख़ूब तर कर ले कि अगर एक बाल की जड़ भी ख़ुश्क रही और पानी उस पर न बहा तो वुज़ू न होगा। और मुँह पर पानी लम्बाई में, पेशानी के बालों की जड़ों से ठोढ़ी के नीचे तक, और चौड़ाई में, कान क़ी एक लौ से दूसरी लौ तक पानी बहाएँ।

★ फिर दोनों हाथ कुहनियों तक इस तरह धोएं कि पानी की धार कुहनी तक बराबर पड़ती चली जाए, यह न हो कि पहुँचे से तीन बार पानी छोड़ दिया और वह कुहनी तक बहता चला गया, इस तरह कुहनी बल्कि कलाई की करवटों पर पानी न बहने का एहतमाल है, उसका लिहाज़ ज़रूरी है कि एक रोंगटा भी ख़ुश्क न रहे, अगर पानी किसी बाल की जड़ को तर करता हुआ बह गया और बालाई हिस्सा ख़ुश्क रह गया तो वुज़ू न होगा।

★ फिर सर के बालों का मसह करे, चहारुम सर का मसह करना फ़र्ज़ है, और पूरे सर का सुन्नत है, मसह का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथों का अंगूठा और कलिमा की उंगली छोड़ कर तीन–तीन उंगलियों और उन्हीं के मुक़ाबिल हथेली के हिस्सों से पेशानी की जानिब से गुद्दी तक खींचता हुआ ले जाए, फिर हथेलियों का बाक़ी हिस्सा गुद्दी से पेशानी तक लाए, और कलिमा की उंगलियों के पेट से कानों के पेट का मसह करे, और अंगूठों के पेट से, कानों की पुश्त का, और पुश्त दस्त से, गर्दन के पिछले हिस्से का, गले पर हाथ न लाए कि बिदअत है।

फिर दोनों के पाँव टखनों के ऊपर तक धोए, और हर अज़्व पहले दायाँ, फिर बायाँ धोए।

वुज़ू की दुआएँ :

कुल्ली करते वक़्त कहे :

इलाही मेरी मदद फरमा कुरआने अज़ीम की तिलावत और अपने ज़िक्र व शुक्र और अच्छी इबादत पर।

★ नाक में पानी डालते वक़्त कहे :

इलाही मुझे जन्नत की ख़ुशबू सुंघा और दोज़ख़ की बदबू न सुंघा।

★ मुँह धोते वक़्त कहे :

इलाही मेरा मुँह उजाला कर जिस दिन कुछ मुँह उजाले होंगे और कुछ काले।

★ दाहिना हाथ धोते वक़्त कहे :
इलाही मेरे नाम–ए–आमाल मेरे उलटे हाथ में न देना, न मेरी पीठ के पीछे से।
★ सर का मसह करते वक़्त कहे :
इलाही मुझे अपने अर्श के नीचे साया दे जिस दिन साया नहीं मगर तेरे अर्श का।
★ कानों का मसह करते वक़्त कहे :
इलाही मुझे उनमें कर जो कान लगा कर बात सुनते हैं फिर उस में बेहतर की पैरवी करते हैं।
★ गर्दन के मसह में कहे :
इलाही मेरी गर्दन दोज़ख़ से आज़ाद फरमा।
★ सीधा पाँव धोते वक़्त कहे :
इलाही मेरे पाँव सिरात पर जमा जिस दिन क़दम फ़िसलें।"
★ उलटा पाँव धोते वक़्त कहे :
"इलाही मेरा गुनाह माफ़ कर और मेरी कोशिश ठिकाने लगा और मेरी सौदागरी ज़ाए न कर।"
★ और हर अज़्व के धोने के बाद दरूद शरीफ़ पढ़े, ख़त्मे वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ मुँह उठा कर कलिमा शहादत पढ़े फिर कहे :
"इलाही मुझे बहुत तौबा करने वालों में से कर और मुझे सुथरा होने वालों में से कर।"
जन्नत के आठों दरवाज़े उसके लिए खोल दिए जाएंगे।

(अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा दोम, स0 97ए 98)

वुज़ू का बचा हुआ पानी बाज़ बातों में मिस्ल ज़मज़म :

वुज़ू के बाद जो पानी बचे वह ज़मज़म की तरह क़ाबिले ताज़ीम है जिस तरह ज़मज़म का पानी ताज़ीम के तौर पर खड़े हो कर पीते हैं इसी तरह वुज़ू का बक़िया पानी भी खड़े हो कर पीना चाहिए। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

बक़िय–ए–वुज़ू के लिए शरअन अज़्मत व एहतराम है और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से साबित कि हुज़ूर ने वुज़ू फरमा कर बक़िय–ए–आब को खड़े हो कर नोश फरमाया।

और एक हदीस में रिवायत किया गया कि उसका पीना सत्तर मरज़ से शिफ़ा है।

तो वह इन उमूर में आबे ज़मज़म से मुशाबेहत रखता है। वुज़ू का बचा हुआ पानी क़िब्ले का रुख कर के खड़े हो कर पीना आदाबे वुज़ू में से है।

सैयद अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से मरवी कि उन्होंने खड़े हो कर बक़िय–ए–वुज़ू पिया फिर फरमाया मैंने चाहा कि तुम्हें दिखा दूँ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तरीक़ा वुज़ू क्योंकर था। (तिर्मिज़ी)

सैयदी अब्दुलग़नी फरमाते हैं कि मैंने बारहा तजरबा किया है कि जब मुझे कोई मरज़ लाहिक़ होता, मैं हुसूले शिफ़ा की ग़रज़ से वुज़ू का बचा हुआ पानी पीता तो मुझे शिफ़ा हासिल होती, मेरा यह मामूल बन चुका है क्योंकि मुझे सादिक़ व मस्दूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फरमाने आलीशान पर पूरा–पूरा वसूक़ व एतमाद है, और यह बात सही तिब्बे नब्वी में से भी है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 141)

तांबे और मिट्टी के बर्तन से वुज़ू :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू मिट्टी और तांबे के बर्तन से वुज़ू करने से मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाते हैं :

तांबे के बर्तन से वुज़ू करना, उसमें खाना पीना सब बिला कराहत जाइज़ है, वुज़ू में कुछ नुक़्सान नहीं आता हाँ क़लई के बाद चाहिए, बेक़लई में खाना पीना मक्रूह है कि जिस्मानी ज़रर का बाइस होता है और मिट्टी का तांबे से अफ़्ज़ल है।

उलमा ने वुज़ू के आदाब व मुस्तहिब्बात से शुमार फ़रमाया कि मिट्टी के बर्तन से हो और उसमें खाना पीना भी तवाज़ु से क़रीब तर है। (अहकामे शरीअत अव्वल, स0 31)

तयम्मुम के अहकाम

तयम्मुम का हुक्म व इजाज़त रब तबारक व तआला की तरफ़ से बन्दों के लिए अज़ीम रहमत है हमारी शरीअते बैज़ा चूंकि इंसानों के लिए एक पैग़ामे रहमत है उस पर अमल करने वाले ख़ालिके काइनात के मक़्बूल बन्दे हैं, दीन में आसानियाँ करने का हुक्म दिया गया है और तयम्मुम एक ऐसा क़ानून है जिस में सहूलत व आसानी मौजूद है अगर कोई मरीज़ है, या पानी पर क़ादिर नहीं है, या और कोई शरई उज़्र है उसके लिए तयम्मुम की इजाज़त है बल्कि हुक्म है कि वह ऐसी सूरत में तयम्मुम करके इबादते इलाही बजा लाए।

पाक मिट्टी और जिन्स ज़मीन से जो चीज़ हो उस पर तयम्मुम हमारे इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक जाइज़ है। तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथ ज़मीन पर मार कर चेहरे पर फेरे, फिर दोबारा मार कर हाथों पर फेरे इस तरह से कोई हिस्सा हाथ गुज़रने से न रह जाए वरना तयम्मुम न होगा। (मुरत्तिब)

बन्दों पर शरीअत की शाने रहमत :

तयम्मुम के रहमत व रुख़सत होने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फ़रमाते हैं :

रहमतुल–लिल–आलमीन बिल–मुमिनीन रऊफ़ुर्रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शरीअते मुतह्हरा की रहमत देखिए हमारे सिर्फ़ मील भर चलने की मुशक़्क़त पर ऐसा लिहाज़ फ़रमाया कि उसके लिए वुज़ू बल्कि बहाल जनाबते ग़ुस्ल की हाजत न रखी, तयम्मुम जाइज़ फ़रमा दिया, अगरचे आदमी ख़ुद अपने शहर में हो, बल्कि सफ़र में जिस तरह जाना है उसी तरफ़ मील भर हो जब भी यहाँ तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ सकता है अगरचे यह मील ख़ुद ही तय करेगा, हाँ जिस तरफ़ जाता है उधर ही पानी है और जाने में वक़्ते कराहत न आ जाएगा तो मुस्तहब यह है कि वहाँ पहुँच कर पानी ही से तहारत करके नमाज़ पढ़े। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 611)

तयम्मुम के नेकी होने की तरफ़ इशारा करते हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : (मुरत्तिब)

"मिट्टी से मसह करो कि वह तुम्हारे लिए नेकी है।" (त, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 600)

तयम्मुम कितनी ज़र्बें ?

तयम्मुम दो ज़र्ब से किया जाता है।

एक हदीस में है हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं : कि जब तयम्मुम की रुख़्सत नाज़िल हुई तो मैं लोगों में बैठा था, फिर हमें दो ज़र्ब का हुक्म दिया गया एक

ज़र्ब चेहरा के लिए और दूसरी ज़र्ब कुहनियों समेत हाथों के लिए। (त, हाकिम, बज़्ज़ार, फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 598)

इससे मालूम हुआ कि तयम्मुम में यह दो चीज़ें और नीयत करनी फ़र्ज़ है, यानी वुज़ू में तो चार फर्ज़ हैं मगर तयम्मुम में सिर्फ़ तीन चीज़ें फ़र्ज़ हैं।

(1) नीयत व इरादा करना, (2) एक ज़र्ब चेहरा के लिए (3) दूसरी ज़र्ब हाथों के लिए (मुरत्तिब)

तयम्मुम की चन्द ज़रूरी बातें :

तयम्मुम से मुतअल्लिक़ बाज़ ज़रूरी मसाइल व अहकाम हम फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल मतबा रज़ा अकेडमी मुम्बई के हवाले से दर्ज कर रहे हैं जिनमें अवाम बेतवज्जही या बेइल्मी की वजह से ग़लती करते हैं, हर मुसलमान मर्द व औरत पर कम से कम इतना इल्मे दीन सीखना फ़र्ज़ है जिस से हर ज़रूरत के मसाइल से आगाही हो और वह हर शोब–ए–ज़िन्दगी में बआसानी अमल कर सकें, क़यामत के दिन ग़फ़लत व जिहालत काम न आएगी। हम तयम्मुम के जिन आदाब व मसाइल की तरफ़ तवज्जोह दिलाना चाहते हैं वह यह हैं। (मुरत्तिब)

★ तयम्मुम के लिए जिन्स ज़मीन पर हाथ मारते वक़्त तयम्मुम की नीयत होनी शर्त है अगर उस वक़्त नीयत न थी तो बाद को नीयत कर लेना काफी न होगा।

★ जिस तरह वुज़ू में हर अज़्व को तीन–तीन बार धोना सुन्नत है, तयम्मुम में तकरार सुन्नत नहीं बल्कि एक–एक बार मुँह और हाथों का मसह सुन्नत है।

★ जिन्स ज़मीन पर बनीयत तयम्मुम हाथ मारने ही से इतने हाथों की तहारत हो जाती है, हाथों पर मसह करने में इतने टुक्ड़े मसलन हथेलियाँ खाली छोड़ दे कि उनका एक बार मसह हो गया। (स0 603)

★ सुन्नत है कि जिन्स ज़मीन पर सिर्फ़ हथेलियों से ज़र्ब हो पुश्त दस्त से नहीं।

★ जितने मुँह और हाथों का वुज़ू में धोना फ़र्ज़ है तयम्मुम में दाँतों का मसह फर्ज़ है, अगर उनमें से कोई ज़र्रा मसह से रह जाएगा तयम्मुम न होगा, इसीलिए अगर सिर्फ़ कफ़े दस्त ज़मीन पर मारे और मसह करने में पुश्त दस्त पर हाथ न फेरा तयम्मुम न हुआ।

★ अगर ज़र्ब में पुश्त दस्त भी जिन्स ज़मीन पर मारे उसका भी मसह हो जाएगा और दोबारा उन्हें मसह न किया जाएगा।

★ जब हथेलियाँ तयम्मुम के लिए जिन्स अर्ज़ पर रखें अब दोबारा उन पर हाथ फेरना मक्रूह है।

★ जिस तरह बावुज़ू को दोबारा वुज़ू करना सवाब है, तयम्मुम होते हुए दोबारा तयम्मुम करना कुछ सवाब नहीं बल्कि अबस व मक्रूह है।

★ तयम्मुम में किसी अज़्व पर मुकर्रर मसह करना बिल–इज्मा मक्रूह है मगर जबकि इस्तीआब में शुबह हो तो मक्रूह नहीं।

★ तयम्मुम में हाथों के मसह का बेहतर तरीक़ा यह है कि बाएं हथेली अपने दाहिने पुश्त दस्त पर रखे और अंगूठा और कलिमे की उंगली छोड़ कर बाक़ी तीन उंगलियों से कलाई की पुश्त पर कुहनियों से ऊपर तक मसह करे, नीचे फिर उन दो उंगलियों से कलाई के पेट पर मसह करे, ऊपर से नीचे उतरता हुआ फिर यूंही बाएं हाथ पर करे।

★ हाथ जिन्स अर्ज़ से मारने से कुछ मिट्टी, गर्द व ग़ुबार अगर हाथ में लग जाए तो सुन्नत है कि मिलने से पहले उन्हें झाड़ दे।

★ ज़मीन पर बेनीयत तयम्मुम हाथ रखे थे और उन में इतनी मिट्टी लग गई कि तयम्मुम को काफी हो, अब तयम्मुम की नीयत की तो उन्हीं हाथों को मिल सकता है, इस बार ज़र्ब की हाजत नहीं।

★ अगर जिन्स ज़मीन पर हाथ मारने के बाद हदस हो गया वह ज़र्ब बातिल हो गई, उस से मसह नहीं कर सकता फिर ज़र्ब करे। (स० 604, 605)

★ तयम्मुम की ज़र्बों से सिर्फ़ इस क़द्र मुराद है कि हाथों से जिन्स अर्ज़ को मस करना, कुछ सख़्ती से मारना ही ज़रूर नहीं, हाँ औला है। (608)

★ जवाज़े तयम्मुम के लिए वुज़ू या ग़ुस्ल में पानी से नुक़्सान का नरा अन्देशा काफी नहीं, न किसी डॉक्टर, या फासिक़ या नाक़िस तबीब का कहना काफी, बल्कि तीन दलाइले शरईया से एक होना ज़रूर है।

(1) या ज़ाहिर, वाज़ेह, रौशन अलामत।

(2) या सही तजरबा।

(3) या तबीब हाज़िक़ मुसलमान ग़ैर फासिक़ का बयान।

अ कैसी ही सख़्त सर्दी हो उसके सबब वुज़ू की जगह तन्दुरुस्त को तयम्मुम जाइज़ नहीं, मगर जबकि उन्हें तीन दलाइले शरईया में किसी दलील से साबित हो कि वुज़ू किया तो बीमार हो जाएगा। (स० 613)

★ तयम्मुम वाले के पीछे पानी से तहारत वाला नमाज़ पढ़ सकता है मगर अफ़ज़ल उसका अक्स है जबकि वुज़ू वाला लाइक़े इमामत हो। (स० 654)

★ तयम्मुम अगर रफ़ा हदस व हुसूले तहारत के लिए किया तो यह निहायत काफी नीयत है इस तयम्मुम से नमाज़ वग़ैरह सब कुछ अदा कर सकता है।

★ पानी मौजूद नहीं और बेवुज़ू शख़्स कुरआन मजीद छूना, या जुनुब मस्जिद में जाना चाहता है तयम्मुम करें, मगर इस तयम्मुम से नमाज़ रवा नहीं। (स० 724)

★ लाज़िम है कि अंगूठी, छल्ले, उंगलियों, कलाइयों के हर गहने को उतार कर तयम्मुम किया जाए या उन्हें हटा–हटा कर मसह करें। (स० 724)

★ आदमी ने जहाँ से तयम्मुम किया अगर हज़ार बार वहीं से तयम्मुम करे, या जहाँ से एक शख़्स ने तयम्मुम किया अगर हज़ारों आदमी ख़ास उसी जगह से तयम्मुम करें कुछ हरज नहीं कि जिन्स अर्ज़ तयम्मुम से मुस्तामल नहीं होती। (स० 725)

★ नमाज़ जनाज़ा क़ाइम हुई बाज़ को वुज़ू नहीं, पानी मौजूद है तन्दुरुस्त हैं मगर वुज़ू करें तो नमाज़े जनाज़ा फौत हो, वह तयम्मुम करके शामिल हो सकते हैं। मगर इस तयम्मुम से न दूसरी नमाज़ पढ़ सकते हैं न कुरआन मजीद छू सकते हैं।

★ मरीज़ ने जिसे वुज़ू मुज़िर है, या तन्दुरुस्त ने जहाँ पानी नहीं, नमाज़े जनाज़ा के लिए तयम्मुम किया उस तयम्मुम से हर नमाज़ पढ़ सकता है जब तक पानी पर क़ुदरत न हो। (स० 582)

★ अगर वुज़ू करता नमाज़े जनाज़ा हो चुकती इस ज़रूरत से तयम्मुम करके पढ़ी, इतने में और जनाज़ा आ गया और उसमें इतनी मोहलत थी कि वुज़ू कर लेता मगर न किया और अब इतनी मोहलत न रही, तो उसके लिए दोबारा तयम्मुम करे पहला जाता रहा।

★ एक जनाज़ा तयम्मुम से पढ़ा था कि दूसरे की नमाज़ तैयार हो गई, दोनों नमाज़ों के बीच में वुज़ू कर लेने की मोहलत न थी तो पहला ही तयम्मुम बाक़ी है, इसी से दूसरा जनाज़ा भी पढ़े।

(स० 667)

ग़ुस्ल के अहकाम

इस्लाम की नज़र में ग़ुस्ल करना नज़ाफ़त व सफ़ाई की दलील है जब आदमी नापाक व जुनुब हो जाए तो उस पर पूरे बदन का धोना वाजिब है उसी का नाम ग़ुस्ल है, ग़ुस्ल वाजिब होने के बाद बग़ैर नहाए नमाज़ वग़ैरह इबादात दुरुस्त नहीं।

जनाबत व नापाकी लाहिक़ होने के बाद ग़ुस्ल वाजिब होता है और जुमा व ईदैन और वक़ूफ़े अरफ़ा के लिए ग़ुस्ल करना सुन्नत है, बाज़ ने अरफ़ा के दिन ग़ुस्ल को मुस्तहब कहा है, और दीगर मवाक़े पर भी ग़ुस्ल को मुस्तहब कहा गया है। (मुरत्तिब)

अगर ग़ुस्ल वाजिब हो जाए तो सारे बदन पर पानी बहने से ग़ुस्ल उतरता है, जिस में हलक़ तक मुँह और हड्डी के किनारों तक अन्दर से नाक का बांसा भी दाख़िल है, उसके बाद जैसे भी हो ग़ुस्ल उतर जाएगा।

ग़ुस्ल की नीयत :

ग़ुस्ल में नीयत सुन्नत है, अगर नीयत न की ग़ुस्ल जब भी हो जाएगा, और उसकी नीयत यह है कि : नापाकी दूर होने और नमाज़ जाइज़ होने की नीयत करता हूँ।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 18, 20)

ग़ुस्ले ईदैन व जुमा :

जुमा और ईदैन के दिन ग़ुस्ल करना सुन्नत है और अहादीस में उसकी फ़ज़ीलत भी इरशाद हुई है उन दिनों में बज़ाते ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे। (मुरत्तिब)

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ईदैन के दिन ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे। (त, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है कि अरफ़ा (जिस दिन हाजी लोग मैदाने अरफ़ात में होते हैं) और ईदुल–फ़ित्र व ईदुल–अज़हा के दिन हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे। (त, इब्ने माजा, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 11)

ग़ुस्ल के चन्द ज़रूरी मसाइल :

हर वह चीज़ जो जिस्म पर पानी पहुँचने से रोके ग़ुस्ल के वक़्त उसका छुड़ा लेना वाजिब है वरना ग़ुस्ल वाजिब अदा न होगा, ग़ुस्ल न होने की सूरत में नमाज़ वग़ैरह न होगी इसलिए इस बात का ख़ास तौर पर ख़्याल रखना ज़रूरी है कि बदन के हर हिस्से और तमाम अजज़ा में पानी पहुँच जाए, हम फ़तावा रज़्वीया जिल्द अव्वल मतबा रज़ा अकेडमी मुम्बई के हवाले से कुछ ज़रूरी मसाइल पेश कर रहे हैं जिन पर अवाम की नज़र व तवज्जोह कम रहती है। (मुरत्तिब)

★ औरत के हाथ पाँव पर मेंहदी का जुर्म लगा रह गया और ख़बर न हुई तो वुज़ू व ग़ुस्ल हो जाएगा, हाँ जब इत्तिला हो तो छुड़ा कर वहाँ पानी बहा दे।

★ सुर्मा आँख के कव्वे या पलक में रह गया और इत्तिला न हुई तो ज़ाहिरन हरज नहीं।

(स0 14)

दाँतों की जड़ या खिड़की में सख़्त चीज़ जमी हो तो छुड़ा कर कुल्ली करना लाज़िम है वरना ग़ुस्ल न होगा।

ग़ुस्ल उस वक़्त न होगा कि जनाबत के बाद यह चीज़ जमी, और अगर जनाबत से पहले से जमी हुई है अगर छुड़ाने में ज़रूर हरज है तो बग़ैर छुड़ाए ग़ुस्ल हो जाएगा वरना ज़रूर छुड़ाए।

★ मुँह के हर ज़र्रा पर हलक़ तक पानी बहा और दोनों नथुनों में नाक की हड्डी शुरू होने तक पानी चढ़ना ग़ुस्ल में फ़र्ज़ और वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा है।

★ वुज़ू व ग़ुस्ल में ग़र ग़रह करना सुन्नत है मगर रोज़ादार को मकरूह है। (स0 95)

★ नाक में कोई कसाफ़त जमी हो तो पहले उसका छुड़ा लेना ग़ुस्ल में फ़र्ज़ और वुज़ू में सुन्नत है। (स0 96)

ग़ुस्ल के बाज़ मक़ामात एहतियात :

ग़ुस्ल में मुन्दरजा ज़ेल मक़ामात का ख़ास तौर पर ख़्याल रखना ज़रूरी है अगर उन में से किसी एक जगह पानी नहीं पहुँचा तो ग़ुस्ल नहीं होगा। (मुरत्तिब)

1. सर के बाल कि गुंधे हुए हों तो हर बाल पर जड़ से नोक तक पानी बहना।
2. कानों में बाली, पत्ते वग़ैरह ज़ेवरों के सूराख़ का धोना।
3. भवों के नीचे की खाल, अगरचे बाल कैसे ही घने हों।
4. कान का हर पुरज़ा, उसके सूराख़ का मुँह।
5. कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाए।
6. दाढ़ों के नीचे।
7. ठोढ़ी और गले का जोड़ कि बेमुँह उठाए न धुलेगा।
8. बग़लें बे हाथ उठाए न धुलेंगी।
9. बाज़ू का हर पहलू।
10. पीठ का हर ज़र्रा।
11. पेट वग़ैरह की बेल्टें उठा कर धोयें।
12. नाफ़ उंगली डाल कर जबकि बग़ैर उसके पानी बहने में शक हो।
13. जिस्म का कोई रोंगटा खड़ा न रह जाए।
14. रान और पेड़ का जोड़ खोल कर धोएं।
15. दोनों सुरीन मिलने की जगह ख़ुसूसन जब खड़े हो कर नहाए।
16. रान और पिंडली का जोड़ जबकि बैठ कर नहाए।
17. रानों की गोलाई।
18. पिंडलियों की करवटें।
19. मर्द के बाल अगर गुंधे हों उन्हें खोल कर जड़ से नोक तक धोना।
20. औरत की गुंधी चोटी के हर बाल की जड़ तर करनी, चोटी खोलनी ज़रूरी नहीं, मगर जब ऐसी सख़्त गुंधी हो कि बेखोले जड़ें तर न होंगी तो खोलनी ज़रूरी।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 98)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ग़ुस्ल में सरे अनवर पर तीन बार पानी डालते और उसी का हुक्म मर्द व औरत सबको फरमाया। ख़ास औरतों के बाब में भी यही हुक्म बित्तस्रीह इरशाद हुआ है।

उम्मुल-मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं सर गुंधवाती हूँ क्या नहाते में खोल दिया करूं फरमाया : सर पर तीन लिप पानी डाल लिया करो यही काफी है। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

दूसरी हदीस में है : औरत को कुछ ज़रूरी नहीं कि अपना गुंधा सर खोले, बस तीन लिप पानी डाल ले।

उम्मुल-मुमिनीन आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं : मैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम एक बर्तन से नहाया करते और मैं अपने सर पर तीन ही बार पानी डालती, यानी जअद मुबारक न खोलतीं। (मुस्लिम, मुसनद अहमद)

एक और हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ का सा वुज़ू करके सरे अक़्दस पर तीन बार पानी बहाते थे और हम बीवियाँ सर गुंधे होने की वजह से अपने सरों पर पाँच बार बहा सकती है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 195)

दो वहमी शख़्सों का ग़ुस्ल :

वुज़ू और ग़ुस्ल में जहाँ अच्छी तरह तमाम आज़ा और पूरे बदन पर पानी बहाने का हुक्म है वहीं यह हुक्म भी है कि शैतानी वसवसा को अपने दिल में जगह न दे वरना कभी इत्मीनाने क़ल्ब हासिल न होगा। (मुरत्तिब)

उसे वसवसा वालों को नहाने की ज़रूरत हुई, दरियाए नील पर गये तुलूऐ सुबह के बाद पहुँचे एक ने दूसरे से कहा तवातुर को ग़ोते लगा, मैं गिनता जाऊंगा और तुझे बताऊंगा कि पानी तेरे सारे सर को पहुँचाया नहीं, वह उतरा और ग़ोते लगाना शुरू किए, और यह कह रहा है कि अभी थोड़ी सी जगह तेरे सर में बाक़ी है, वहाँ पानी न पहुँचा, एक सुबह से दोपहर हो गया आख़िर थक कर बाहर आया और दिल में शक रहा कि ग़ुस्ल उतराया नहीं।

फिर उसने उस दूसरे से कहा अब तवातुर मैं गिनूंगा, उसने डुबकियाँ लगाईं और यह कहता जाता है कि अभी सारे सर को पानी न पहुँचा, यहाँ तक कि दोपहर से शाम हो गई, मज्बूरन वह भी दरिया से निकल आया और दिल में शुबह का शुबह ही रहा, दिन भर की नमाज़ खोई और ग़ुस्ल उतरने पर यक़ीन न होता था न हुआ, यह वसवसा मानने का नतीजा था।

हदीस में है कि : शैतान जिसे देखता है कि मेरा वसवसा उसमें कारगर होता है सबसे ज़्यादा उसी के पीछे पड़ता है। (इब्ने अबी शैबा, फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 211)

नमाज़ के फ़ज़ायल व मसायल

नमाज़ अहमुल–फ़राइज़ है, तमाम इबादात में नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है, क़यामत के दिन सब से पहले नमाज़ ही की पुरसिश होगी दीगर इबादात के बारे में बाद में पूछा जाएगा, नमाज़ ऐसी इबादत है जो तमाम अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की उम्मतों में रही मगर उसकी शक्ल मुख़्तलिफ़ और तक़ाज़े अलग रहे और यह कि पाँचों नमाज़ें किसी उम्मते साबेक़ा में नहीं रहीं यह सिर्फ़ उम्मते मुहम्मदीया अला साहिबहस्सलातु वस्सना की ख़ुसूसियत है कि इस उम्मते मरहूमा को पाँचों नमाज़ों का मज्मूआ दिया गया, अगली उम्मतों में किसी पर दो वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ थी, किसी पर तीन वक़्त की, पाँचों नमाज़ें किसी उम्मत में नहीं थीं, अल्लाह तआला ने पाँच नमाज़ों की ख़ुसूसियत से इस उम्मत का एज़ाज़ व इकराम बढ़ाया।

नमाज़ के फ़ज़ाइल बयान से बाहर और हद्दे तसव्वुर से बाला हैं अहादीस व आसारे नमाज़ की फ़ज़ीलतों से गूंज रहे हैं, बन्दा मोमिन जब नमाज़ के लिए बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में तवाज़ु व इंकिसारी के साथ खड़ा होता है तो परवरदिगारे आलम उसकी इस अदा से फ़रिश्तों में मुबाहात व तज़्किरा फरमाता है कि देखो मेरा बन्दा कैसा अच्छा काम कर रहा है। एक नमाज़ी का वक़ार उस

से बढ़ कर क्या होगा कि ख़ालिके काइनात उसकी इस अदा का ज़िक्र फरमाता है : अल्लाह तबारक व तआला ने नमाज़ का तोहफ़ा अता फरमा कर हम पर बेपायाँ एहसान व इकराम फरमाया है।

(मुरत्तिब)

नमाज़ पंजगाना :

★ नमाज़ पंजगाना अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की वह नेमते उज़्मा है कि उसने अपने करमे अज़ीम से ख़ास हम को अता फरमाई हम से पहले किसी उम्मत को न मिली।

★ बनी इस्राईल पर दो ही वक़्त की फर्ज़ थी वह भी सिर्फ़ चार रकाअतें, दो सुबह, दो शाम, वह भी उन से न निभी।

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हदीसे मेअ्राज मुबारक में इरशाद फरमाते हैं :

यानी फिर पचास नमाज़ों की पाँच रहीं, मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अर्ज़ की कि हुज़ूर फिर जाएं और अपने रब से तख़्फ़ीफ़ चाहें कि उसने बनी इस्राईल पर दो नमाज़ें फर्ज़ फरमाई थीं वह उन्हें भी बजा न लाए। (निसई)

और उम्मतों का हाल ख़ुदा जाने मगर इतना ज़रूर है कि यह पाँचों उन में से किसी को न मिलें, उलमा ने बेख़िलाफ़ उसकी तस्रीह फरमाई।

मवाहिब शरीफ़ उम्मते मरहूमा के बयान ख़साइस में है कि

★ पाँचों नमाज़ों का मज्मूआ उस उम्मत की ख़ुसूसियत है उनके अलावा किसी में यह नमाज़ें जमा नहीं हुई। (त)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नमाज़े इशा की निस्बत फरमाया कि उस नमाज़ को देर करके पढ़ो कि तुम उस से तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दिए गये हो तुम से पहले किसी उम्मत ने यह नमाज़ न पढ़ी। (अबू दाऊद, सुनने बैहक़ी)

ज़ाहिर हुआ कि जब नमाज़े इशा हमारे लिए ख़ास है तो पाँचों का मज्मूआ भी हमारे सिवा किसी उम्मत को न मिला, हमारे नबी सैयदुल-अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सिवा किसी नबी को यह पाँचों न मिलना, उलमा इसकी भी तस्रीहें फरमाते हैं कि :

★ पाँचों नमाज़ों का मज्मूआ हुज़ूर की ख़ुसूसियत है किसी नबी के लिए यह नमाज़ें जमा नहीं हुई। (त)

★ यह पाँचों नमाज़ें और अंबिया में मुतफ़र्रिक़ थीं और इस उम्मत में जमा कर दी गईं। (त)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हदीसे मेअ्राज में रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़ास तौर से तीन चीज़ दी गईं।

1. पाँच नमाज़ें।
2. सूर: बक़रा की आख़िरी आयात।
3. उम्मत में से उनकी मग़्फ़िरत जिन्होंने ने शिर्क नहीं किया। (त, मुंस्लिम)

नमाज़ पंजगाना की फ़ज़ीलत पर एक रिवायत :

इमाम फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने हज़रत कअब अहबार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल किया कि उन्होंने फरमाया : मैंने तौरेत मुक़द्दस के किसी मक़ाम में पढ़ा।

★ ऐ मूसा फज्र की दो रकाअतें अहमद और उसकी उम्मत अदा करेगी जो उन्हें पढ़ेगा उस दिन रात के सारे गुनाह उसके बख़्श दूँगा और वह मेरे ज़िम्मा में होगा।

★ ऐ मूसा ज़ुहर की चार रकाअतें अहमद और उसकी उम्मत पढ़ेगी उन्हें पहली रकाअत के एवज़ बख़्श दूँगा और दूसरी के बदले उनका पल्ला भारी कर दूँगा और तीसरी के एवज़ फ़रिश्ते मुवक्किल कर दूँगा कि तस्बीह करेंगे और उनके लिए दुआए मग़्फ़िरत करते रहेंगे, और चौथी के बदले उनके लिए आसमान के दरवाज़े कुशादा कर दूँगा, बड़ी–बड़ी आँखों वाली (हूरें) उन पर मुश्ताक़ाना नज़र डालेंगी।

★ ऐ मूसा अस्र की चार रकाअतें अहमद और उनकी उम्मत अदा करेगी तो हफ़्त आसमान व ज़मीन में कोई फ़रिश्ता बाक़ी न बचेगा सब ही उनकी मग़्फ़िरत चाहेंगे और मलाइका जिसकी मग़्फ़िरत चाहें मैं उसे हरगिज़ अज़ाब न दूँगा।

ऐ मूसा मग़्रिब की तीन रकाअतें हैं इन्हें अहमद और उनकी उम्मत पढ़ेगी आसमान के सहारे दरवाज़े उनके लिए खोल दूँगा जिस हाजत का सवाल करेंगे उसे पूरा ही कर दूँगा।

★ ऐ मूसा शफ़क़ डूब जाने के वक़्त यानी इशा की चार रकाअतें हैं पढ़ेंगे इन्हें अहमद और उनकी उम्मत वह दुनिया व माफीहा से उनके लिए बेहतर है वह उन्हें गुनाहों से ऐसा निकाल देंगे जैसे अपनी माओं के पेट से पैदा हुए।

★ इसी रिवायत में वुज़ू और रोज़े वग़ैरह का ज़िक्र भी फरमाया गया है।

ऐ मूसा वुज़ू करेगा अहमद और उसकी उम्मत जैसा कि मेरा हुक्म है मैं उन्हें अता फरमाऊंगा हर क़तरे के एवज़ कि आसमान से टपके एक जन्नत, जिसका अर्ज़ आसमान व ज़मीन की चौड़ाई के बराबर होगा।

★ ऐ मूसा एक महीना के सालाना रोज़े रखेगा अहमद और उसकी उम्मत और वह माहे रमज़ान है अता फरमाऊंगा हर रोज़ उनके रोज़ों के एवज़ एक शहर जन्नत और अता करूंगा। उसमें नफ़्ल के बदले फ़र्ज़ का सवाब और उसमें लैलतुल–क़द्र करूंगा जो इस महीने में शर्मसारी व सिद्क़े क़ल्ब से एक बार इस्तिग़फ़ार करेगा अगर इसी शब या इस महीने भर में मर गया उसे तीस शहीदों का सवाब अता फरमाऊंगा।

★ ऐ मूसा उम्मते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) में कुछ ऐसे मर्द हैं कि हर शर्फ़ पर क़ाइम हैं, ला–इला–हा इल्लल्लाह की शहादत देते हैं तो उनकी जज़ा उसके एवज़ अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का सवाब है और मेरी रहमत उन पर वाजिब और मेरा ग़ज़ब उन से दूर और उन में से किसी पर बाबे तौबा बन्द न करूंगा जब तक वह ला–इला–हा इल्लल्लाह की गवाही देते रहेंगे। (तंबीहुल–ग़ालेबीन, फ़क़ीह अबुल्लैस, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 163 ता 167)

कौन सी नमाज़ किस नबी ने पहले पढ़ी :

यूं तो हर नबी और उसकी उम्मत में नमाज़ें रहीं मगर कौन सी नमाज़ किसी नबी ने सबसे पहले पढ़ी इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि :

इस में चार क़ौल हैं।

अव्वल : क़ौल इमाम उबैदुल्लाह बिन आइशा मम्दूह कि –

★ जब आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तौबा क़ुबूल हुई वह फज्र का वक़्त था उन्होंने दो रकाअतें पढ़ीं वह नमाज़े सुबह हुई।

★ इसहाक़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़िदिया (यह रिवायत मरजूह है। सही यह है कि फ़िदिया हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का आया था।) वक़्ते ज़ुहर आया इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने चार पढ़ीं वह ज़ुहर मुक़र्रर हुई।

उज़ैर अलैहिस्सलातु वस्सलाम सौ बरस के बाद ज़िन्दा किए गये उन्होंने चार पढ़ीं वह अस्र हुई।

★ दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलात की तौबा वक़्ते मग़िरब क़ुबूल हुई चार रकाअतें पढ़ने खड़े हुए थक कर तीसरी पर बैठ गये मग़िरब की तीन ही रहीं।
★ और इशा सबसे पहले हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पढ़ी। (तहावी)
दोम : क़ौल इमाम अबुल–फ़ज़ल।
★ सबसे पहले फज्र को दो रकाअतें हज़रत आदम।
★ ज़ुहर को चार रकाअतें हज़रत इब्राहीम।
★ अस्र हज़रत यूनुस।
★ मग़िरब हज़रत ईसा।
इशा हज़रत मूसा ने पढ़ी, अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम। (इमाम ज़न्दोस्ती किताबुरौंज़ा)
हर नमाज़ एक नबी ने पढ़ी है उसका ख़ुलासा यह है :
★ आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए दुनिया आँखों में तारीक थी और उधर रात की अंधेरी आई, उन्होंने रात कहाँ देखी थी बहुत ख़ाइफ़ हुए जब सुबह चमकी दो रकाअतें शुक्रे इलाही की पढ़ीं, एक उसका शुक्र कि तारीकी शब से नजात मिली, दूसरा उसका कि दिन की रोशनी पाई, उन्होंने नफ़्ल पढ़ी थीं हम पर फ़र्ज़ की गईं कि हम से गुनाहों की तारीकी दूर हो और इताअत का नूर हासिल हो।
★ ज़वाल के बाद सबसे पहले इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने चार रकाअतें पढ़ीं जबकि इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़िदिया उतरा है, पहली उसके शुक्र में कि बेटे का ग़म दूर हुआ, दूसरा फ़िदिया आने के सबब, तीसरी रज़ाए इलाही मौला सुब्हानहू तआला का शुक्र, चौथी उसके शुक्र में कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के हुक्म पर इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने गर्दन रख दी, यह उनके लिए नफ़्ल थीं हम पर फर्ज़ हुईं, कि मौला तआला हमें क़त्ले नफ़्स पर क़ुदरत दे जैसी उन्हें ज़बहे वल्द पर कुदरत दी और हमें भी ग़म से नजात दे और यहूद व नसारा को हमारा फ़िदिया करके नार से हमें बचा ले और हम से भी राज़ी हो।
★ नमाज़े अस्र सबसे पहले यूनुस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पढ़ी कि उस वक़्त मौला तआला ने उन्हें चार ज़ुल्मतों से नजात दी।
(1) ज़ुल्मते लग़िज़श (2) ज़ुल्मते ग़म (3) ज़ुल्मते दरिया (4) ज़ुल्मते शिकमे माही।
यह उनके लिए नफ़्ल थीं हम पर फ़र्ज़ हुईं, कि मौला तआला ज़ुल्मते गुनाह, व ज़ुल्मते क़ब्र, व ज़ुल्मते क़यामत, व ज़ुल्मते दोज़ख़ से पनाह दे।
★ मग़िरब सबसे पहले ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पढ़ी, पहली अपने नफ़्स से नफ़ी उलूहियत, दूसरी अपनी माँ से नफ़ी उलूहियत, तीसरी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए इस्बाते उलूहियत के लिए, यह उनके नफ़्ल हम पर फ़र्ज़ हुए कि रोज़े क़यामत हम पर हिसाब आसान हो, नार से नजात हो, इस बड़ी घबराहट से पनाह हो।
★ सबसे पहले इशा मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पढ़ी जब मदाइन से चल कर रास्ता भूल गये बीबी का ग़म, औलाद की फ़िक्र, भाई पर अन्देशा, फ़िरऔन से ख़ौफ़, जब वादिए ऐमन में रात के वक़्त मौला तआला ने उन्हें इन सब फ़िक्रों से नजात बख़्शी, चार नफ़्ल शुक्राने के पढ़े हम पर फ़र्ज़ हुईं कि अल्लाह तआला हमें भी राह दिखाए, हमारे भी काम बनाए, हमें अपने महबूबों से मिलाए, दुश्मनों पर फतह दे। आमीन।
सोम : क़ौल बाज़ उलमा।
★ फ़ज्र आदम अलैहिमस्सलाम।
★ ज़ुहर इब्राहीम अलैहिमस्सलाम।

★ अस्र सुलेमान अलैहिमस्सलाम।
★ मग़्रिब ईसा अलैहिमस्सलाम ने पढ़ी।
★ और इशा ख़ास उस उम्मत को मिली। (हुलिया)

चहारुम : वह हदीस कि इमाम राफ़ई ने शरह मुसनद में ज़िक्र फरमाई।

★ सुबह आदम अलैहिमस्सलाम।
★ ज़ुहर दाऊद अलैहिमस्सलाम।
★ अस्र सुलेमान अलैहिमस्सलाम।
★ मग़्रिब याकूब अलैहिमस्सलाम।

ईशा यूनुस अलैहिमस्सलातु वस्सलाम से है। (ज़रक़ानी शरहुल-मवाहिब)

इन अक़्वाल को पेश करके आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

इन सब अक़्वाल में कहीं न कहीं गिरिफ़्त ज़रूर है। फ़क़ीर की नज़र में ज़ाहिरन क़ौले अख़ीर को सब पर तरजीह है क्योंकि वह हदीस से साबित है या कम से कम सहाबी या ताबई की रिवायत है उलमाए माबाद के अक़्वाल पर हर तरह मुक़द्दम रहेगी ख़ुसूसन ऐसे मुआमले में जिस में राय व क़यास को दख़ल नहीं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 173 ता 175)

नमाज़ कब से मशरूअ् व मुक़र्रर हुई ?

नमाज़ शुरू रोज़ बेअ्सते शरीफ़ा से मुक़र्रर व मशरूअ् है।

★ हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर अव्वल बार जिस वक़्त वही उतरी और नुबुव्वते करीमा ज़ाहिर हुई उसी वक़्त हुज़ूर ने बतालीम जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम नमाज़ पढ़ी।

★ और उसी दिन बतालीमे अक़्दस हज़रत उम्मुल-मुमिनीन ख़दीजतुल-कुबरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने पढ़ी।

★ दूसरे दिन अमीरुल-मुमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने हुज़ूर के साथ पढ़ी कि अभी सूरः मुज़म्मिल नाज़िल भी न हुई थी। तो ईमान के बाद पहली शरीअत नमाज़ है।

(मुसनद अहमद, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 179)

मुहाफ़िज़त नमाज़ की फ़ज़ीलत :

नमाज़ के वक़्त पर मुहफ़िज़त लाज़िम है मुतअद्दद अहादीस में उसकी ताकीद व तरग़ीब और उसके तर्क पर तहदीद व वईद आई है। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि जो शख़्स इन पाँचों नमाज़ों की उनके रुकूअ् व सुजूद व औक़ात पर मुहाफ़िज़त करे और यक़ीन जाने कि वह अल्लाह जल्ला व उला की तरफ़ से हैं जन्नत में जाए फरमाया जन्नत उसके लिए वाजिब हो जाए या फरमाया दोज़ख़ पर हराम हो जाए। (मुसनद अहमद)

हदीस 2 : पाँच चीज़ें हैं कि जो उन्हें ईमान के साथ लाएगा जन्नत में जाएगा जो पंजगाना नमाज़ों की उनके वुज़ू उनके रुकूअ्, उनके औक़ात पर मुहाफ़िज़त करे और रोज़ा व हज व ज़कात व गुस्ले जनाबत बजा लाए। (अबू दाऊद, तबरानी)

हदीस 3 : पाँच नमाज़ें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ की हैं जो उनका वुज़ू अच्छी तरह करे और उन्हें उनके वक़्त पर पढ़े और उनका रुकूअ् पूरा करे उसके लिए अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल पर अहद है कि उसे बख़्श दे और जो ऐसा न करे तो इसके लिए अल्लाह तआला पर कुछ अहद नहीं चाहे बख़्शे चाहे अज़ाब करे। (अबू दाऊद, निसई)

हदीस 4 : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है : मैंने तेरी उम्मत पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं और अपने पास अहद मुक़र्रर कर लिया कि जो उनके वक़्तों पर उनकी मुहाफ़िज़त करता आएगा उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो मुहाफ़िज़त न करेगा उसके लिए मेरे पास कुछ अहद नहीं।

(अबू दाऊद व तरीक़ इब्नुल–आरावी)

हदीस 5 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने रब जल्ला व उला से रिवायत फरमाते हैं वह इरशाद करता है : जो नमाज़ उसके वक़्त में ठीक–ठीक अदा करे उसके लिए मुझ पर अहद है कि उसे जन्नत में दाख़िल फरमाऊं और जो वक़्त में न पढ़े और ठीक अदा न करे उसके लिए मेरे पास कोई अहद नहीं, चाहूँ उसे दोज़ख़ में ले जाऊं और चाहूँ तो जन्नत में। (दारमी)

हदीस 6 : एक दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से फरमाया : जानते हो तुम्हारा रब क्या फरमाता है? अर्ज़ की ख़ुदा व रसूल ख़ूब दाना हैं, फरमाया जानते हो तुम्हारा रब क्या फरमाता है : अर्ज़ की ख़ुदा व रसूल ख़ूदा दाना हैं, फरमाया जानते हो तुम्हारा रब क्या फरमाता है : अर्ज़ की ख़ुदा व रसूल ख़ूब दाना हैं फरमाया तुम्हारा रब जल्ला व उला फरमाता है :

मुझे अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम जो शख़्स नमाज़ वक़्त पर पढ़ेगा उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा। और जो उसके ग़ैर वक़्त में पढ़ेगा चाहूँ उस पर रहम करूं, चाहूँ अज़ाब। (तबरानी)

हदीस 7 : जो पाँचों नमाज़ें अपने–अपने वक़्त पर पढ़े उनका वुज़ू व क़्याम व ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ व सुजूद पूरा करे वह नमाज़ सफ़ेद रौशन हो कर यह कहती निकले कि अल्लाह तेरी निगहबानी फरमाए जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की, और जो ग़ैर वक़्त पर पढ़े और वुज़ू व ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ व सुजूद पूरा न करे वह नमाज़ सियाह तारीक हो कर यह कहती हुई निकले कि अल्लाह तुझे ज़ाए करे जिस तरह तूने मुझे ज़ाए किया, यहाँ तक कि जब उस मक़ाम पर पहुँचे जहाँ तक अल्लाह तआला चाहे पुराने चीथड़े की तरह लपेट कर उसके मुँह पर मारी जाए। (तबरानी)

हदीस 8 : हज़रत फ़ुज़ाला ज़हरानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मसाइले दीन तालीम फरमाए उनमें यह भी तालीम फरमाया कि नमाज़े पंजगाना की हिफ़ाज़त कर। (अबू दाऊद)

हदीस 9 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैंने सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा सब में ज़्यादा क्या अमल अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को प्यारा है फरमाया नमाज़ उसके वक़्त पर अदा करना। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 10 : एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या रसूलुल्लाह इस्लाम में सबसे ज़्यादा क्या चीज़ अल्लाह तआला को प्यारी है? फरमाया : नमाज़ वक़्त पर पढ़नी, जिसने नमाज़ छोड़ी उसके लिए दीन न रहा, नमाज़ दीन का सुतून है। (बैहक़ी, शुअबुल–ईमान)

हदीस 11 : तीन चीज़ें है जो उनकी हिफ़ाज़त करे वह सच्चा वली है और जो उन्हें ज़ाए करे वह पक्का दुश्मन, वह तीन चीज़ें यह हैं : नमाज़ और रोज़े और ग़ुस्ले जनाबत। (तबरानी औसत)

हदीस 12 : अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने आमिलों को फरमान भेजे कि तुम्हारे तमाम कामों में मुझे ज़्यादा फ़िक्र नमाज़ की है जो उसे हिफ़्ज़ और उस पर मुहाफ़िज़त करे उसने अपने दीन की हिफ़ाज़त कर ली और जिसने उसे ज़ाए किया वह और कामों को ज़्यादा तर ज़ाए करेगा।

(मुअत्ता इमाम मालिक, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 313, 316)

तर्के नमाज़ पर भयानक वईदें :

तर्के नमाज़ से मुतअल्लिक़ जो वईदें वारिद हुई हैं उन में से बाज़ रिवायात मुलाहिज़ा फ़रमाएं : (मुरत्तिब)

अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : असहाबे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ के सिवा किसी अमल के तर्क को कुफ़्र न जानते। (तिर्मिज़ी, हाकिम)

★ इसीलिए बहुत सहाबा व ताबईन तारिकुस्सलात को काफ़िर कहते।

सैयदना अमीरुल-मुमिनीन मौला अली मुश्किल कुशा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम फ़रमाते हैं : जो नमाज़ न पढ़े वह काफ़िर है। (इब्ने अबी शैबा)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं : जिसने नमाज़ छोड़ी वह काफ़िर हो गया। (इब्ने अब्दुलबर)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : जिसने नमाज़ तर्क की वह बेदीन है। (मुरव्वज़ी)

★ जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं : बेनमाज़ काफ़िर है। (अबू उमर)

अबू दाऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : बेनमाज़ के लिए ईमान नहीं। (इब्ने अब्दुलबर)

★ इमाम इस्हाक़ फ़रमाते हैं :

सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बसेहत साबित हुआ कि हुज़ूर ने तारिकुस्सलात को काफ़िर फ़रमाया, और ज़मान-ए-अक़्दस से उलमा की यही राय है कि जो शख़्स क़स्दन बेउज़्र नमाज़ तर्क करे यहाँ तक कि वक़्त निकल जाए वह काफ़िर है।

★ इमाम अय्यूब सख़्तियानी से मरवी हुआ तर्के नमाज़ बेख़िलाफ़ कुफ़्र है।

★ इब्ने हज़्म कहता है :

अमीरुल-मुमीनीन उमर फ़ारूके आज़म व हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ व हज़रत मआज़ बिन जबल व हज़रत अबू हुरैरह वग़ैरेहिम असहाब सैयदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व अलैहिम अजमईन से वारिद हुआ कि जो शख़्स एक नमाज़ फ़र्ज क़स्दन छोड़ दे यहाँ तक कि उसका वक़्त निकल जाए वह काफ़िर मुर्तद है।

तौजीह व तावीले हदीस :

इन रिवायात को पेश करने के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रहू फ़रमाते हैं कि :

बिल-जुम्ला इस क़ौल मज़ाहिबे अह्ले सुन्नत से किसी तरह ख़ारिज नहीं कह सकते बल्कि वह एक जम्मे ग़फ़ीर क़ुदमाए अह्ले सुन्नत सहाबा व ताबईन रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन का मज़्हब है और बिला शुबह वह उस वक़्त और हालत के लिहाज़ से एक बड़ा क़वी मज़्हब था।

सदरे अव्वल के बाद जब इस्लाम में ज़ुअफ़ आया और बाज़ अवाम के क़ल्ब में सुस्ती व कसल ने जगह पाई नमाज़ में कामिल चुस्ती व मुस्तएदी कि सदरे अव्वल में मुतलक़न हर मुसलमान का शिआर दाइम थी, अब बाज़ लोगों से छूट चली, नमाज़ जो कुफ़्र व इस्लाम के दर्मियान फ़र्क़ करने वाली मुतलक़न अलामत व निशानी थी वह अलामते फ़ारेक़ा होने की हालत न रही, लिहाज़ा जम्हूर अइम्मा ने काफ़िर न कहा बल्कि मुर्तकिब कबीरह और फ़ासिक़ फ़रमाया क्योंकि दलाइले शरईया से यह बात साबित हो चुकी है कि गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब काफ़िर नहीं।

हमारे अइम्मा हन्फ़ीया, व अइम्मा शाफ़ईया, व अइम्मा मालकीया और बाज़ अइम्मा हंबलीया वग़ैरेहिम जमाहीर उलमाए दीन व अइम्मा मोतमेदीन का यही मज़हब है कि अगरचे तारिके नमाज़ को सख़्त फाजिर जानते हैं मगर दाइर–ए–इस्लाम से ख़ारिज नहीं कहते।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 188ख 190)

फिर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तारिके नमाज़ पर हुक्मे शरअ़ बयान करते हुए मज़ीद तहरीर फरमाते हैं :

बिल–जुम्ला वह फ़ासिक़ हैं और सख़्त फासिक़ मगर काफ़िर नहीं, वह शरअन सख़्त सज़ाओं का मुस्तहिक़ है। अइम्मा सलासा मालिक व शाफ़ई व अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम फरमाते हैं : उसे क़त्ल किया जाए।

हमारे अइम्मा रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम के नज़्दीक फासिक़ फाजिर मुर्तकिबे कबीर है उसे दाइमी तौर पर क़ैद करें यहाँ तक कि तौबा कर ले या क़ैद में मर जाए।

इमाम महबूबी वग़ैरह मशाइख़े हन्फ़ीया फरमाते हैं कि : इतना मारें कि ख़ून बहा दें फिर क़ैद करें।

मगर यह सज़ाएं यहाँ जारी नहीं इसीलिए उसके साथ खाना, पीना, मेल जोल, सलाम कलाम, वग़ैरह मुआमलात ही तर्क करें कि यूंही रजज़ हो।

नमाज़ छोड़ने वाले के लिए अहादीस में जो वईदें वारिद हुई हैं उनकी तावील व तौजीह से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू निहायत वाज़ेह अंदाज़ में फरमाते हैं :

बिला शुबह हदीस में आया है कि : हम में और मुश्रिकों में फ़र्क़ नमाज़ का है, उसमें शक नहीं कि जो नमाज़ का तारिक है वह मुश्रिकों के फेअ़्ल में उनका शरीक है। फिर अगर वह दिल से भी नमाज़ को फर्ज़ न जाने या हल्का समझे जब तो सच्चा मुश्रिक पूरा काफिर है वरना उसका यह काम काफिरों मुश्रिकों का सा है अगरचे वह हक़ीक़तन काफिर मुश्रिक न ठहरे।

एक और सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

किसी वक़्त की नमाज़ क़स्दन तर्क करना सख़्त कबीरा शदीदह व जुर्मे अज़मी है जिस पर सख़्त हौलनाक, जांगुज़ा वईदें कुरआने अज़ीम व अहादीसे सहीहा में वारिद है, मगर बद मज़्हब अगरचे कैसा ही नमाज़ी हो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के नज़्दीक सुन्नी बेनमाज़ से बदरजा बुरा है कि फ़िस्क़ अक़ीदह फ़िस्क़ अमल से सख़्त तर है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 191 ता 193)

बिला उज़्र नमाज़ क़ज़ा करने वाले के लिए वईद वैल :

जो लोग वक़्त खो कर नमाज़ पढ़ते हैं उनके लिए वैल की वईद आई है, (वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है) नमाज़ भूल जाने वाले से मुराद वह लोग हैं जो वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ते हैं।

(मुरत्तिब)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा वह कौन लोग हैं जिन्हें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला कुरआने अज़ीम में फरमाता है : "ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं" फरमाया वह लोग जो वक़्त गुज़ार कर पढ़ें। (बज़्ज़ार, अबू याली, इब्ने जरीर)

एक रिवायत में यूं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इस आयत (हुम अन सलातेहिम साहून) के बारे में सवाल हुआ फरमाया उस से मुराद वक़्त खोना है।

(तफ़्सीर बग़वी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 222)

औक़ात नमाज़ की मुहाफ़िज़त का हुक्मे क़ुरआनी :

हर नमाज़ के लिए शरअ़ मुतह्हर ने जुदा वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया है कि न उस से पहले हो सके न उसे खो कर दूसरे वक़्त पर उठा रखी है बल्कि हर नमाज़ अपने ही वक़्त पर होनी चाहिए।

रब्बुल–इज़्ज़त तबारक व तआला ने मुहाफ़िज़त व इल्तिज़ाम औक़ात का हुक्म सात सूरतों में नाज़िल फ़रमाया। बक़रह, निसा, इंआम, मरयम, मुमिनून, मआरिज, माऊन।

आयत : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फ़रमाता है :

"बेशक नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है वक़्त बांधा हुआ।" (निसा : 103)

कि न वक़्त से पहले सही, न वक़्त के बाद ताख़ीर रवा, बल्कि फ़र्ज़ है कि हर नमाज़ अपने वक़्त पर अदा हो।

आयत 2 : अल्लाह तआला फ़रमाता है :

"मुहाफ़िज़त करो सब नमाज़ों और ख़ास बीच वाली नमाज़ की और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से।" (अल–बक़रह : 238)

मुहाफ़िज़त करो कि कोई नमाज़ अपने वक़्त से इधर उधर न होने पाए बीच वाली नमाज़, नमाज़ अस्र है उस वक़्त लोग बाज़ार वग़ैरह के कामों में ज़्यादा मसरूफ़ होते हैं और वक़्त भी थोड़ा है इसलिए कि उसकी ख़ास ताकीद फ़रमाई।

आयत 3 : रब तबारक व तआला फ़रमाता है :

"और वह लोग जो अपनी नमाज़ की निगाह दाश्त करते हैं कि उसे वक़्त से बेवक़्त नहीं होने देते हैं सच्चे वारिस हैं कि जन्नत की विरासत पाएंगे वह उस में हमेशा रहने वाले हैं।"

(अल–मुमिनून : 9, 12, 11)

आयत 4 : ख़ालिक़े काइनात फ़रमाता है :

"और वह लोग कि अपनी नमाज़ की मुहाफ़िज़त करते हैं हर नमाज़ उसके वक़्त में अदा करते हैं वह जन्नतों में इज़्ज़त किए जाएंगे।" (अल–मआरिज : 34, 35)

आयत 5 : परवरदिगारे आलम फ़रमाता है :

"और जिन्हें आख़िरत पर यक़ीन है वह क़ुरआन पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।" (सूरः इंआम : 92)

कि वक़्त से बाहर न हो जाए हर नमाज़ अपने ही वक़्त पर हो।

आयत 6 : रब्बुल–इज़्ज़त तआला फ़रमाता है :

"फिर आए उनके बाद वह बुरे पस्मांदा जिन्होंने नमाज़ें ज़ाए कीं।" (सूरः मरयम : 59)

यह लोग जिनकी मुज़म्मत इस आयते करीमा में फ़रमाई गई वह हैं जो नमाज़ों को उनके वक़्त से हटाते और ग़ैर वक़्त पर पढ़ते हैं।

नमाज़ का ज़ाए करना यह है कि ज़ुहर न पढ़ी यहाँ तक कि अस्र का वक़्त आ गया।

आयत 7 : अल्लाह सुब्हानहू तआला फ़रमाता है :

"ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ों से ग़ाफ़िल हैं।" कि वक़्त निकाल कर पढ़ते हैं। (अल–माऊन : 4, फ़तावा रज़वीया : जिल्द 2, 310ए 311ए 312)

तऐयुने औक़ात के लिए जिब्रील की आमद :

जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सुबह बाद फ़र्ज़ियते नमाज़ औक़ात नमाज़ मुऐयन करने और उनका अव्वल व आख़िर बताने के लिए दो रोज़ हुज़ूरे अक़्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम की इमामत की, पहले दिन ज़ुहर से फज्र तक पाँचों नमाज़ें अव्वले वक़्त और दूसरे दिन हर नमाज़ आख़िर वक़्त, उसके बाद गुज़ारिश की, वक़्त उन दोनों वक़्तों के बीच में है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

एक साइल के लिए औक़ात की तऐयुन :

साइल ने जो ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर औक़ाते नमाज़ पूछे और हुज़ूरे वाला ने इरशाद फरमाया है कि : दो दिन हाज़िर रह कर हमारे पीछे नमाज़ पढ़, पहले दिन अपने अव्वले वक़्त और दूसरे दिन हर नमाज़ आख़िर वक़्त पढ़ा कर इरशाद हुआ है, वक़्त उन दोनों वक़्तों के दर्मियान है।

(निसई, तहावी, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 284ए 286)

औक़ाते नमाज़ की इब्तिदा व इंतिहा :

साहिबे शरअ़ की तरफ़ से हर नमाज़ के वक़्त की इब्तिदा व इंतिहा मुतऐयन कर दी गई है, इब्तिदाए वक़्त से पहले पढ़े तो नमाज़ नहीं होगी और इंतिहाए वक़्त के बाद पढ़े तो क़ज़ा होगी।

(मुरत्तिब)

वक़्ते फ़ज्र :

नमाज़े फ़ज्र का वक़्त तुलूअ़ सुबह सादिक़ से है और उसकी इंतिहा सूरज की पहली किरन चमकने तक है, हमारे उलमा के नज़्दीक मर्दों को हमेशा हर जगह जब सुबह ख़ूब रौशन हो जाए नमाज़ पढ़ना सुन्नत है।

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : सुबह को ख़ूब रौशन करो कि उजाले में अज्र ज़्यादा है। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, निसई)

दूसरी रिवायत में है कि जिस क़द्र इस्फ़ार में मुबालग़ा करोगे सवाब ज़्यादा पाओगे। (तबरानी)

एक और हदीस में है कि जिस क़द्र इस्फ़ार में मुबालग़ा करोगे सवाब ज़्यादा पाओगे। (तबरानी)

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बिलाल से इरशाद फरमाया ऐ बिलाल फज्र की अज़ान उस वक़्त दिया करो जब लोग अपने तीर गिरने की जगहें देख लें। बसबब रोशनी के। (तबरानी, इब्ने अदी)

ज़ाहिर है कि यह बात उस वक़्त हासिल होगी जब सुबह ख़ूब रौशन हो जाएगी और जब अज़ान ऐसे वक़्त होगी तो नमाज़ तो उस से भी ज़्यादा रोशनी में होगी।

(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 36, मुलख़्ख़सन)

और अफ़्ज़ल यह है कि ऐसे वक़्त में 40 से 60 आयतों तक पढ़ी जाए कि अगर फसादे नमाज़ साबित हो तो फिर तुलूअ़ से पहले यूंहीं एआदा हो सके, उसका लिहाज़ रख कर जितनी भी ताख़ीर की जाए। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 351)

हद्दे तुलूअ़ व ग़ुरूब :

जब उफ़ुक़ साफ़ नज़र आता है और बीच में दरख़्त वग़ैरह कुछ हाइल नहीं तो तुलूअ़ यह है कि आफ़ताब की पहली किरन चमके, और ग़ुरूब यह कि पिछली किरन निगाह से ग़ायब हो जाए।

वक़्ते ज़ुहर :

ज़ुहर का अव्वले वक़्त आफ़ताब निस्फ़ुन्नहार से ढलते ही शुरू होता है।

हज़रत सैयदना इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक जब साया, ज़िल्ले असली के अलावा दो मिस्ल न हो जाए वक़्ते अस्र नहीं आता, और साहिबैन के नज़दीक एक ही मिस्ल के बाद आ जाता है, (वक़्ते अस्र शुरू होने से पहले तक ज़ुहर का वक़्त रहता है।

(मुरत्तिब) (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 210, 352)

वक़्ते अस्र :

नमाज़े अस्र में अब्र के दिन तो जल्दी चाहिए न इतनी कि वक़्त से पेश्तर हो जाए बाक़ी हमेशा उस में ताख़ीर मुस्तहब है, इसी वास्ते उसका नाम अस्र रखा गया यानी वह निचोड़ के वक़्त पढ़ी जाती है।

ज़्याद बिन अब्दुल्लाह नख़ई रिवायत करते हैं कि "हम अमीरुल–मुमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू के साथ जामा मस्जिद में बैठे थे मुअज़्ज़िन ने आकर अर्ज़ की या अमीरुल–मुमिनीन नमाज़, अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया : बैठ, वह बैठ गया, देर के बाद फिर हाज़िर हुआ और नमाज़ के लिए अर्ज़ की अमीरुल–मुमिनीन ने फरमाया : यह कुत्ता हमें सुन्नत सिखाता है फिर उठ कर हमें नमाज़े अस्र पढ़ाई, जब हम नमाज़ पढ़ कर वहाँ आए जहाँ मस्जिद में पहले बैठे थे हम ज़ानुओं पर खड़े हो कर सूरज को देखने लगे कि वह ग़ुरूब के लिए नीचे उतर गया था" यानी दीवारें उस ज़माने में नीची–नीची होतीं आफ़ताब ढलक गया था बैठे से नज़र न आया दीवार के नीचे उतर चुका था घुटनों पर खड़े होने से नज़र आया। (हाकिम, दारु क़ुतनी)

मगर हरगिज़–हरगिज़ इतनी ताख़ीर जाइज़ नहीं कि आफ़ताब का क़र्स मुतग़ैयर हो जाए, उस पर बेतकल्लुफ़ निगाह ठेहरने लगे। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 213)

शुरू वक़्ते मग़्रिब व इफ़्तार :

ग़ुरूब का जिस वक़्त यक़ीन हो जाए वही वक़्ते मग़्रिब है, अज़ान व इफ़्तार में बिल्कुल देर न की जाए। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 352)

शुरू वक़्ते इशा :

जब मग़्रिब का वक़्त ख़त्म हो जाए वही वक़्ते इशा की इब्तिदा है, वक़्ते मग़्रिब की इंतिहा यह है कि उफ़ुक़ ग़रबी से, सुर्ख़ी क बाद की सपेदी ग़ायब जो जाए। यह वक़्त मौसम और जगह के एतबार से कम ज़्यादा होता रहता है कम से कम एक घन्टा 14 ता 19 मिनट और ज़्यादा से ज़्यादा एक घन्टा 35 ता 48 मिनट है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ज़ुहर का वक़्त जब तक है कि अस्र का वक़्त न आए और मग़्रिब का वक़्त जब तक है कि शफ़क़ न डूबे। (मुस्लिम, अबू दाऊद, निसई)

हदीस : बेशक नमाज़ के लिए अव्वल व आख़िर है और बेशक आग़ाज़ वक़्ते ज़ुहर का सूरज ढले से और ख़त्मे वक़्ते ज़ुहर का वक़्ते अस्र आने पर है और बेशक इब्तिदा वक़्त मग़्रिब की सूरज छुपे है और इंतिहा उसके वक़्त की शफ़क़ डूबे। (तिर्मिज़ी, तहावी)

हदीस : सोते में कुछ तक़्सीर नहीं। तक़्सीर तो जागते में है कि तू एक नमाज़ को इतना पीछे हटाए कि दूसरी नमाज़ का वक़्त आ जाए। (मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

यह हदीस इस बात पर वाज़ेह नस है कि एक नमाज़ की यहाँ तक ताख़ीरा करनी कि दूसरी का वक़्त आ जाए तक़्सीर व गुनाह है।

हदीस : हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा वह कौन लोग हैं जिन्हें अल्लाह अज़्ज़ा व

जल्ला कुरआन मजीद में फरमाता है : ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं, इरशाद फरमाया वह लोग जो नमाज़ को उसके वक़्त से हटा कर पढ़ें। (मुसनद बज़्ज़ार)

हदीस : ज़ुहर का वक़्त अस्र तक है और अस्र का वक़्त मग़्रिब तक और मग़्रिब का इशा और इशा का फज्र तक। (इब्ने हिब्बान)

हदीस : "नमाज़ फौत नहीं होती जब तक दूसरी का वक़्त न आ जाए" यानी जब दूसरी का वक़्त आया पहली क़ज़ा होगी। (शरह मआनियुल–आसार, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 319ए 320)

बेवक़्त नमाज़ पढ़ने वाले उमरा की इक़्तिदा :

परवरदिगारे आलम ने नमाज़ के लिए औक़ात मुक़र्रर फरमाए नमाज़ की फ़ज़ीलत वक़्त के अन्दर ही पढ़ने की है ग़ैर वक़्त पर पढ़ना क़ज़ा हो जाने की दलील है और नमाज़ को क़स्दन क़ज़ा करना काफिरों जैसा काम करना है जिसके लिए कुरआन व हदीस में बहुत सारी वईदें वारिद हुई हैं मुतअद्दद अहादीस में भी यह ख़बर दी गई है कि आख़िर ज़माने में कुछ उमरा व हुक्काम ऐसे होंगे जो ग़ैर वक़्त पर नमाज़ पढ़ेंगे मगर ऐ लोगो तुम वक़्त पर पढ़ लेना यानी इस मुआमले में उनकी इताअत व पैरवी न करना। (मुरत्तिब)

हज़रत अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं हुज़ूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मेरी रान पर हाथ मार कर फरमाया तेरा क्या हाल होगा जब तू ऐसे लोगों में रह जाएगा जो नमाज़ को उसके वक़्त से ताख़ीर करेंगे। मैंने अर्ज़ की : हुज़ूर मुझे क्या हुक्म देते हैं। फरमाया : तो वक़्त पर पढ़ लेना। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मेरे बाद तुम पर कुछ हाकिम होंगे कि उनके काम वक़्त पर उन्हें नमाज़ से रोकेंगे यहाँ तक कि वक़्त निकल जाएगा। तुम वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। (अहमद, इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं मुझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोगों का क्या हाल होगा जब तुम पर वह हुक्काम आएंगे कि ग़ैर वक़्त पर नमाज़ पढ़ेंगे मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह जब मैं ऐसा वक़्त पाऊं तो हुज़ूर मुझे क्या हुक्म देते हैं, फरमाया : नमाज़ वक़्त पर पढ़ और उनके साथ नफ़्ल की नीयत से शरीक हो जा। (अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 318)

वक़्ते ज़वाल :

बाज़ अवाम यह कहते हैं कि ज़वाल के वक़्त नमाज़ मम्नूअ् व मक्रूह है हालांकि औक़ाते मक्रूहा सिर्फ़ तीन हैं।

1. तुलूए आफ़ताब और उसके बाद बीस मिनट तक का वक़्त मक्रूह कहलाता है।
2. निस्फ़ुन्नहार का वक़्त जब सूरज ठीक बीच आसमान में होता है यह वक़्त भी मक्रूह है।
3. ग़ुरूबे आफ़ताब से बीस मिटन पहले तक वक़्त मक्रूह रहता है।

यही तीन औक़ात, औक़ाते मक्रूह कहलाते हैं उनमें नमाज़ वग़ैरह पढ़ने की इजाज़त नहीं और मालूम हो कि दोपहर के वक़्त मक्रूह को अवाम जो लफ़्ज़ ज़वाल से ताबीर करते हैं वह ग़लत है, ऐसे अवाम की इस्लाह करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

ज़वाल तो सूरज ढलने को कहते हैं। यह वक़्त वह है कि मुमानेअत का वक़्त निकल गया। और जवाज़ का आया। तो वक़्ते मुमानेअत को ज़वाल कहना सरीह मुसामेहत व ग़लती है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 206)

गर्मी में ज़ुहर का इस्तेहबाब :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जहाँ औक़ात की इब्तिदा व इंतिहा मुतऐयन फरमाई वहीं हुज़ूर ने यह भी बयान फरमा दिया कि फलां मौसम फलां वक़्त में ताख़ीर की जाए और फलां वक़्त में ताजील, आक़ाए रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत की सहूलत व आसानी के लिए हर चीज़ वाज़ेह अंदाज़ में बयान फरमा दी है। (मुरत्तिब)

गर्मियों में नमाज़े ज़ुहर से मुतअल्लिक़ हदीस पाक में है हज़रत अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया :

हम एक सफर में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हम्राह रुकाबे अक़्दस थे मुअज़्ज़िन ने अज़ाने ज़ुहर देनी चाही फरमाया ठण्डा कर, देर के बाद फिर मुअज़्ज़िन ने अज़ान देनी चाही फरमाया वक़्त ठण्डा कर, देर के बाद मुअज़्ज़िन ने सेह बारा अज़ान का इरादा किया फरमाया वक़्त ठण्डा कर, और यूंहीं ताख़ीर का हुक्म फरमाते रहे यहाँ तक कि साया टीलों के बराबर हो गया, उस वक़्त अज़ान की इजाज़त फरमाई और इरशाद फरमाया गर्मी की शिद्दत जहन्नम की सांस से है, तो जब गर्मी सख़्त हो ज़ुहर ठण्डे वक़्त पढ़ो। (बुख़ारी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 211)

एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मौसमे गरमा में ज़ुहर को ठण्डा करके पढ़ना मुस्तहब है, तमाम कुतुबे हन्फ़ीया में यह मानी मिसरह है और अव्वले वक़्त पढ़ना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्मे अक़्दस से अदूल है हुज़ूर फरमाते हैं :

जब गर्मी सख़्त हो तो ज़ुहर को ठण्डा करो कि शिद्दते गर्मी उस्अत दमे दोज़ख़ से है। (निसई)

दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब गर्मी होती नमाज़ ठण्डी करते और जब सर्दी होती ताजील फरमाते।

(बुख़ारी, निसई, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 367)

नमाज़ों के लिए वक़्त मुतऐयन करना :

नमाज़ों के लिए अगर घन्टे घड़ी के हिसाब से कोई वक़्त मुतऐयन कर लिया जाए जिस से लोगों को ज़्यादा इंतिज़ार करना न पड़े और वक़्ते मुऐयन पर जल्द जमा हो जाएं तो उसमें कोई हरज नहीं जबकि ज़ईफ़ों और मरीज़ों पर तक्लीफ़ और जमाअत की तफ़्रीक़ न हो।

हदीस में सुन्नते अक़्दस यूं मरवी है कि जब लोग जल्द हाज़िर हो जाते हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ जल्द पढ़ लेते। और हाज़िरी में देर मुलाहिज़ा फरमाते तो ताख़ीर फरमाते और कभी सब लोग हाज़िर हो जाते और ताख़ीर फरमाते यहाँ तक कि एक बार नमाज़े इशा में तशरीफ़ आवरी का बहुत इंतिज़ार तवील सहाबा किराम ने किया बहुत देर के बाद मज्बूर हो कर अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने दुरे अक़्दस पर अर्ज़ की कि औरतें और बच्चे सो गये उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बरामद हुए और फरमाया रूए ज़मीन पर तुम्हारे सिवा कोई नहीं जो इस नमाज़ का इंतिज़ार करता हो और तुम नमाज़ ही में हो जब तक नमाज़ के इंतिज़ार में रहो।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 354)

हुक्मे जमाअत :

नमाज़ पंजगाना के साथ जमाअत भी मशरूअ् हुई है, जब नमाज़ का हुक्म नाज़िल हुआ तो उसके साथ जमाअत की भी तालीम दी गई हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमेशा फर्ज़ नमाज़ें बाजमाअत ही अदा फरमाएं सहाबा किराम और अपनी उम्मत को बाजमाअत

नमाज़ फर्ज़ अदा करने की तल्क़ीन फरमाई, बग़ैर उज़्र शरई के बाजमाअत न पढ़ने वालों के लिए वईद शदीद वारिद हुई। (मुरत्तिब)

शारेअ़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जमाअत की इस दरजा ताकीद फरमाई है कि एक नाबीना ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए कि या रसूलुल्लाह मेरे पास कोई ऐसा नहीं कि मुझे हाथ पकड़ कर मस्जिद में ले आया करे, मुझे घर में नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त अता हो, इजाज़त फरमाई, जब वह चले फिर बुलाया और इरशाद फरमाया अजान की आवाज़ तुम्हें पहुँचती है अर्ज़ की हाँ, फरमाया तो हाज़िर हो। (मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की यह भी आँखों से माज़ूर थे हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मदीना तैयबा में साँप, बिच्छू, भेड़िए बहुत हैं क्या मुझे इजाज़त है कि घर में पढ़ लिया करूं? फरमाया क्या तुम्हें हैय्या अलस्सलाह, हैय्या अलल–फ़लाह की आवाज़ पहुँचती है अर्ज़ की हाँ, फरमाया तो हाज़िर हो। (अबू दाऊद, निसई)

नाबीना की अंटकल न रखता हो, न कोई ले जाने वाला, ख़ुसूसन जब साँप भेड़ियों का अन्देशा हो तो ज़रूरत रुख़्सत है मगर हुज़ूर ने उन्हें अफ़ज़ल पर अमल करने की हिदायत फरमाई कि और लोग सबक़ लें जो बिला उज़्र घर में पढ़ते और मस्जिद में हाज़िर न हो कर ज़लालत व गुम्राही में पढ़ते हैं।

तर्के जमाअत के एज़ार :

अहकामे इलाहिया बजा लाने में क़लील मुशक़्क़त कभी उज़्र नहीं हो सकती मशक़्क़त शदीद उज़्र है जमाअत में हाज़िर होने का हुक्म तो इंतिहाई शदीद व मुअक्कद है लेकिन अगर रात इतनी अन्धेरी है कि मस्जिद तक रास्ता नज़र नहीं आता, या सुबह को सियाह बदली मुहीत होने से, या किसी वक़्त सियाह आंधी चल चुकने से ऐसी तारीकी है तो यह जमाअत में हाज़िर न होने का उज़्र है।

मगर अन्धेरी में मस्जिद को जाना बड़ी फ़ज़ीलत रखता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

जो अन्धेरियों में हाज़िरी मस्जिद के आदी हैं उन्हें रोज़े क़यामत नूर कामिल की बशारत दो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

इसी तरह तड़ाके की धूप नाक़ाबिले बर्दाश्त और ऐसी ही शिद्दत की ठिठुर, या हौलनाक आंधी, ज़लज़ला, बिजलियाँ तड़प कर गिरना, कसरत का ओला, बशिद्दत कीचड़, ईंधन यह चीज़ें जुमा व जमाअत में उज़्र हैं।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 632 633, 634)

क़लील जमाअत देख कर हुज़ूर का ग़ज़ब व जलाल :

सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम काशानए अतहर से मस्जिदे अनवर में क़रीब इमामत जल्वा फरमा होते, एक दिन नमाज़े इशा को तशरीफ़ लाए जमाअत में क़िल्लत देखी कुछ लोग हाज़िर न पाए निहायत शदीद ग़ज़ब व जलाल महबूब ज़िल–जलाल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चेहर–ए–अक़्दस से ज़ाहिर हुआ इरशाद फरमाया ख़ुदा की क़सम मेरे जी में आता है कि मुअज़्ज़िन को तक्बीर का हुक्म दूँ, फिर किसी को इमामत के लिए फरमाऊं, फिर भड़कती हुई मुशअलें ले जाऊं और उन लोगों पर उन लोगों के घर फूंक दूँ जिन्हें यह अज़ान सुने यह वक़्त हो गया, अब तक घरों से नमाज़ नहीं को निकलते।

(बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 336)

फ़ारूक़े आज़म की बाज़ पुर्स :

एक बार का वाक़या है कि अमीरुल–मुमिनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अबू हसमा और उनके साहबज़ादा सुलेमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को जमाअत सुबह में न देखा उनकी ज़ौजा और उनकी वालिदा शिफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से सबब पूछा कहा नमाज़े शब के सबब नींद ने ग़लबा किया नमाज़ सुबह पढ़ कर सो रहे, फरमाया मुझे जमाअते सुबह में हाज़िर होना नमाज़ तमाम शब से महबूब तर है।

(मुअत्ता इमाम मालिक, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 329)

औरतों की नमाज़ बा–जमाअत :

ज़माना रिसालत, ख़ैरुल–कुरून का ज़माना था, उसमें मर्द, औरत, बच्चे बूढ़े सब लोग मस्जिद में जाकर बा–जमाअत नमाज़ अदा किया करते थे, वह मुआशरा सालेह व नेक था लोग खुदा तरस और पाकबाज़ थे, मगर बाद में औरतों को जमाअत वग़ैरह में शरीक होने से मना कर दिया गया यहाँ तक कि अमीरुल–मुमीनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने औरतों को मसाजिद में आने से मना फरमा दिया। फिर ताबईन के ज़माने तक हुक्मे मुमानेअत आम हो गया। वह उमर फारूक़ कि ज़मीन व आसमान जिन के अद्ल व इंसाफ़ के शाहिद व गवाह हैं। उन्होंने अज़राहे हक़ व हिदायत औरतों पर जमाअत वग़ैरह में हाज़िर होने से मुमानेअत फरमाई, जो दौर ख़ैरुल–कुरून कहलाता है जब इस दौर में पाबन्दी नाफ़िज़ की जा सकती है तो इस दौरे इंहितात में मसाजिद में आने से औरतों पर पाबन्दी क्यों न होगी जबकि आज़ादी और बेहयाइयों का दौर दौर है हर तरह सामान तअयुश है, लोगों के मज़ाज में इशरत पसन्दी आ गई, मिज़ाज आवरा हो चुका है, ज़हन व फ़िक्र में हिजानी इंक़लाब बरपा हो गया है, इस दौर में अगर कोई औरतों के मसाजिद में आने और उन्हें बाजमाअत नमाज़ पढ़ने की बात करे या इस बात को उनका इस्लामी हक़ क़रार दे, तो फ़िल्न ख़ुदा की वह औरतों का ख़ैर ख़्वाह नहीं हो सकता, वह या तो औरतों का दुश्मन होगा, या उनका दिल्दादह, या फिर यह कि वह इस्लामी तालीमात से ना–आशना व बेख़बर है कि किन तक़ाज़ों और हालात की बुनियाद पर उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने औरतों पर पाबन्दी लगाई थी। औरतों को आज़ादी और मसावियाना हुक़ूक़ देने वाले अगर तारीख़ व अहादीस से सही वाक़फ़ीयत रखते और ज़माना शनास व सलीमुल–अक़्ल होते तो वह ऐसी जुरअत का मुज़ाहरा न करते। तमाशा दुनिया को न दिखाते।

बाज़ अहादीस में अगरचे औरतों को मसाजिद में आने की इजाज़त मरवी है मगर बाद के हालात और सहाबा के अमल ने बता दिया कि वह इजाज़त वक़्ती और महदूद मुद्दत के लिए थी वरना उमर फ़ारूक़ ख़िलाफ़े हदीस पर अमल के मुर्तकिब न होते और न औरतों से उनका हक़ छीनने की कोशिश करते। (मुरत्तिब)

इजाज़त वाली अहादीस में है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि :

जब तुम से किसी से उसकी बीवी मस्जिद में आने की इजाज़त मांगे तो उसे न रोके।

(त, बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको।

(अहमद व मुस्लिम)

जुमा व ईदैन और दीगर दुआओं के मवाक़े पर भी औरतें हाज़िरे जमाअत हुआ करती थीं, हदीस में है :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुक्म फरमाया कि ईदैन के दिन हैज़ वालियाँ और पर्दा नशीं कुंवारियाँ भी मुसलमानों की जमाअत और मजालिस की दुआ में हाज़िर हों हाँ वह ईदगाह से अलग बैठें, एक औरत ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हम में से बाज़ को चादर नहीं फरमाया साथ वाली उसे अपनी चादर में ले ले। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

"मगर ज़माना रिसालत के बाद औरतों के हालात और उनके ज़ेब व ज़ीनत की तरफ़ इशारा करते हुए हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि :

अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम औरतों की यह बातें मुलाहिज़ा फरमाते जो हम देख रहे हैं तो ज़रूर उन्हें मसाजिद से रोक देते जिस तरह बनी इस्राईल की औरतों को मसाजिद में आने से रोक दिया गया। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

यानी औरतें बनाव सिंगार करके मसाजिद को हाज़िर होतीं जिस से फ़ित्ना व फ़साद का एहतमाल था इसी बात को हज़रत आइशा ने यूं बयान फरमाया कि अगर हुज़ूर इन पुर–कशिशस और ख़तरनाक बातों का मुलाहिज़ा फरमाते तो ज़रूर औरतों को मना फ़रमा देते। (मुरत्तिब)

हासिल यह कि औरतों का जमाअत व जुमा व ईदैन में हाज़िर होना कि ज़माना रिसालत में हुक्म था और अदब मुतलक़न मना है।

रात हो या दिन, औरत जवान हो या बूढ़ी, जुमा हो या ईदैन या जमाअत पंजगाना, या मज्लिसे वअज़, मुतलक़न औरतों का जाना मना है।

उन्हीं वजूह से सही व मुअक्कद अहादीस का ख़िलाफ़ किया जाता है और वह दर हक़ीक़त ख़िलाफ़ नहीं होता। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 386, मुलख़्ख़सन)

औरतों के जमाअत में न आने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक और मक़ाम पर तहरीर फरमाते हैं :

उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का इरशाद है अगर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुलाहिज़ा फरमाते जो बातें औरतों ने अब पैदा की हैं तो ज़रूर उन्हें मस्जिद से मना फरमा देते जैसे बनी इस्राईल की औरतें मना कर दी गईं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

यह इरशादे मुबारक नक़ल करके आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

ताबईन ही के ज़माना के अइम्मा ने मुमानेअत शुरू फरमा दी पहले जवान औरतों को, फिर बूढ़ियों को भी, पहले, दिन में फिर रात को भी, यहाँ तक कि हुक्मे मुमानेअत आम हो गया।

क्या उस ज़माने की औरतें गरबे वालियों की तरह गाने नाचने वालियाँ या फाहिशा दलाला थीं, अब सालेहात हैं? या जब फ़ाहिशात ज़ाइद थीं अब सालेहात ज़्यादा हैं? या जब फ़्यूज़ व बरकात न थे अब हैं? या जब कम थे अब ज़ाइद हैं? हरगिज़ नहीं बल्कि अब मुआमला उसका उलटा है। अब अगर एक सालेहा है तो जब हज़ार थीं, जब अगर एक फासिक़ा थी अब हज़ार हैं, अब अगर एक हिस्सा फ़ैज़ है जब हज़ार हिस्से था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो ज़माना भी आता है उसका बाद वाला ज़्यादा बुरा और शर अंगेज़ होता है। (त)

एक रिवायत में है कि अमीरुल–मुमिनीन फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने औरतों को मस्जिद से मना फरमाया, औरतें उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के पास शिकायत ले गईं फरमाया अगर ज़माना अक़्दस में हालत यह होती हुज़ूर औरतों को मस्जिद में आने की इजाज़त न देते। (इनायह इमाम अकमलुद्दीन बा बरक़ी)

★ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते : औरत सरापा शर्म की चीज़ है सबसे ज़्यादा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से क़रीब अपने घर की तह में होती है और जब बाहर निकले शैतान उस पर निगाह डालता है। (इनायह)

★ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा जुमा के दिन खड़े हो कर कंकरियाँ मार कर औरतों को मस्जिद से निकालते। (इनायह)

★ इमाम इब्राहीम नख़ई उस्ताज़ुल-उस्ताज़ इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपनी मस्तूरात को जुमा व जमाअत में न जाने देते। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 170)

एक बीबी का वाक़या :

हज़रत सैयदना ज़ुबैर बिन-अव्वाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़ौजा मुक़द्दसा सालेहा, आबिदा, ज़ाहिदा हज़रत आतिका रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को हाज़िरी मस्जिद करीम मदीना तैयबा से बाज़ रखा, उन पाक बीबी को मस्जिद करीम से इश्क़ था। पहले अमीरुल-मुमिनीन उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में आएं। क़ब्ले निकाह अमीरुल-मुमिनीन से शर्त करा ली कि मुझे मस्जिद से न रोकें, अमीरुल-मुमिनीन ने उनकी शर्त क़ुबूल फरमा ली फिर भी चाहते यही थे कि यह मस्जिद न जाएं, यह कहतीं आप मना फरमा दें मैं न जाऊंगी, अमीरुल-मुमिनीन शर्त की पाबन्दी के सबब मना न फरमाते।

अमीरुल-मुमिनीन के बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से निकाह हुआ मना फरमाते वह न मानतीं, एक रोज़ उन्होंने यह तदबीर की कि इशा के वक़्त अन्धेरी रात में उनके जाने से पहले राह में किसी दरवाज़े में छुप रहे, जब यह आईं उस दरवाज़े से आगे बढ़ीं थीं कि उन्होंने निकल कर पीछे से उनके संर मुबारक पर हाथ मारा और छुप रहे। हज़रत आतिका ने कहा : इन्ना लिल्लाहे फ़सदन्नासु, हम अल्लाह के लिए हैं लोगों में फसाद आ गया। यह फरमा कर मकान को वापस आईं और फिर जनाज़ा ही निकाला।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें यह तंबीह फरमाई कि औरत कैसी ही सालेहा हो उसकी तरफ़ से अन्देशा न सही फासिक़ मर्दों की तरफ़ से उस पर ख़ौफ़ का क्या इलाज?

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 173, मुल्तक़िज़न)

औरत की इमामत :

औरत, मर्द इमाम के पीछे नमाज़ न पढ़े, न मर्द, औरत इमाम की इक़्तिदा में, औरत तो मर्दों की इमाम बन ही नहीं सकती क्योंकि इमाम बनना यह मर्द का ख़ासा है, मर्द व औरत अगर एक दूसरे की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ें तो नमाज़ नहीं होगी। (मुरत्तिब)

औरतों की जमाअत मक्रूह है और अगर जमाअत करना चाहें तो इमाम बीच में खड़ी हो।

हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा माहे रमज़ान में औरतों की इमामत करतीं तो वस्त में खड़ी होती थीं। (त, किताबुल-आसार इमाम मुहम्मद)

दूसरी रिवायत में है कि हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने एक फ़र्ज़ नमाज़ में औरतों की इमामत की तो वस्त में खड़ी हुईं।

(त, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, दारु क़ुतनी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 47)

तक्मीले सुफ़ूफ़ से मुतअल्लिक़ तीन बातें :

सुफ़ूफ़ के मुआमले में शरअन तीन बातों का ताकीदी हुक्म दिया गया है और तीनों आजकल जैसे छूट रही हैं, यही वजह है कि मुसलमानों में नाइत्तिफ़ाक़ी फैली हुई है। ख़ैरुल-क़ुरून में यह बातें न थीं, इसलिए इनमें इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और रेगांगत व भाई चार्गी बदरजा अतम्म मौजूद थी, वह तीन बातें यह हैं। (मुरत्तिब)

अव्वल : तस्विया, कि सफ़ बराबर हो, ख़म न हो, कज न हो, मुक़्तदी आगे पीछे न हों, सबकी गर्दनें शाने, टखने आपस में महाज़ी एक ख़त मुस्तक़ीम पर वाक़े हों जो इस ख़त पर कि हमारे सीनों से निकल कर क़िब्ला मुअज़्ज़मा पर गुज़रा है, अमूद हो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अल्लाह के बन्दो ज़रूर या तो तुम अपनी सफ़ें सीधी करोगे, या अल्लाह तुम्हारे आपस में इख़्तिलाफ़ डाल देगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सफ़ में एक शख़्स का सीना औरों से आगे निकला हुआ मुलाहिज़ा किया उस पर यह इरशाद फरमाया : (मुस्लिम)

दूसरी सही हदीस में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी सफ़ें ख़ूब घनी और पास-पास करो और गर्दनें एक सीध में रखो कि क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है मैं शयातीन को देखता हूँ कि रख़ना सफ़ से दाख़िल होते हैं जैसे भीड़ के बच्चे। (निसई)

तीसरी हदीस सही में है फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सफ़ें सीधी करो कि तुम्हें तो मलाइका की सफ़बन्दी चाहिए और शाने एक दूसरे के मुक़ाबिल रखो।

(मुसनद अहमद, अबू दाऊद)

दोम : इतमाम, कि जब तक एक सफ़ पूरी न हो दूसरी न करें, उसका शरअ़ मुतह्हर को वह एहतमाम है कि अगर कोई सफ़ नाक़िस छोड़े मसलन एक आदमी की जगह उस में कहीं बाक़ी थी उसे बग़ैर पूरा किए पीछे और सफ़ बाँध लें बाद को एक शख़्स आया उसने अगली सफ़ में नुक़्सान पाया तो उसे हुक्म है कि इन सब सफ़ों को चीरता हुआ जा कर वहाँ खड़ा हुआ और इस नुक़्सान को पूरा करे कि उन्होंने मुख़ालिफ़त हुक्म शरअ करके ख़ुद अपनी हुर्मत साक़ित की, जो इस तरह सफ़ पूरी करेगा अल्लाह तआला उसके लिए मग़्फ़िरत फरमाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया सफ़ क्यों नहीं बाँधते जैसी मलाइका अपने रब के हुज़ूर बाँधते हैं, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मलाइका कैसी सफ़ बाँधते हैं फरमाया अगली सफ़ पूरी करते और सफ़ में ख़ूब मिल कर खड़े होते हैं।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, निसई, इब्ने माजा)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पहली सफ़ पूरी करो फिर जो उसके क़रीब है कि जो कमी हो तो सब में पिछली सफ़ में हो। (अबू दाऊद, निसई, मुसनद अहमद)

हदीस : जो किसी सफ़ को मिलाए अल्लाह उसे मिलाए और जो किसी सफ़ को क़तअ़ करे अल्लाह उसे क़तअ़ कर दे। (निसई, हाकिम)

हदीस : जो किसी सफ़ में ख़लल देखे वह ख़ुद उसे बन्द कर दे और अगर उसने न किया और दूसरा आया तो उसे चाहिए कि वह उसकी गर्दन पर पाँव रख कर उस ख़लल की बन्दिश को जाए कि उसके लिए कोई हुर्मत नहीं। (मुसनद, अल-फिर्दौस)

हदीस : बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं उन लोगों पर जो सफ़ों को वसल करते हैं और जो सफ़ का फरजा बन्द करे अल्लाह तआला उसके सबब जन्नत में उसका दरजा बुलन्द फरमाए। (अहमद, इब्ने माजा)

सोम : तरास, यानी ख़ूब मिल कर खड़ा होना कि शाना से शाना छूले।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है :

ऐसी सफ़ कि गोया वह दीवार है रांगा पिलाई हुई। (अस्सफ़, 4)

रांग पिघला कर डाल दें तो सब दरज़ें भर जाती हैं कहीं रख़ना, फरजा नहीं रहता ऐसी सफ़ बाँधने वालों को मौला सुब्हानहू तआला दोस्त रखता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अपनी सफ़ें सीधी और ख़ूब घनी करो कि मैं तुम्हें अपनी पीठ के पीछे से देखता हूँ।

(बुख़ारी, निसाई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 285, 386)

यही वजह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक्मीले सफ़ का निहायत एहतमाम फरमाते और उस में किसी जगह फरजा छोड़ने को सख़्त नापसन्द फरमाते।

सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन को इरशाद होता सफ़ फ़ुर्जा न रखो कि शैतान भीड़ के बच्चे की वज़अ् पर उस छूटी हुई जगह में दाख़िल होता है। (मुसनद अहमद)

एक रिवायत में है कि सफ़ें ख़ूब घनी रखो, जैसे रांग से दरज़ें भर देते हैं कि फरजा रहता है तो उसमें शैतान खड़ा होता है। (मुसनद अहमद)

एक और हदीस में इस ताकीद शदीद से इरशाद फरमाया कि सफ़ें दुरुस्त करो कि तुम्हें तो मलाइका की सी सफ़बन्दी चाहिए और अपने शाने सब एक सीध में रखो और सफ़ के रख़ने बन्द करो और मुसलमानों के हाथों में नर्म हो जाओ और सफ़ में शैतान के लिए खिड़कियाँ न छोड़ो और जो सफ़ को वस्ल करे अल्लाह उसे वस्ल करे और जो सफ़ क़तअ् करे अल्लाह उसे क़तअ् करे।

(मुसनद अहमद, अबू दाऊद, तबरानी कबीर)

मुसलमानों के हाथों में नर्म हो जाना यह कि अगर अगली सफ़ में कुछ फरजा रह गया और नीयतें बाँध लें अब कोई मुसलमान आया वह इस फरजा में खड़ा होना चाहता है, मुक़्तदियों पर हाथ रख कर इशारा करे तो उन्हें हुक्म है कि दब जाएं और जगह दे दें ताकि सफ़ भर जाए।

फाइदा :

यह जो हदीस में आया कि "सफ़ में शैतान दाख़िल होता है गोया वह भेड़ के बच्चे हैं ज़्यादा बकरियाँ हैं भकसे रंग की" तो इसका मतलब यह है कि भेड़ बकरी के छोटे–छोटे बच्चों को अक्सर देखा है कि जहाँ चन्द आदमी खड़े देखे और दो शख़्सों के बीच में कुछ फासिला पाया वह उस फरजा में दाख़िल हो कर इधर से उधर निकलते हैं, यूंहीं शैतान जब सफ़ में जगह ख़ाली पाता है दिलों में वसवसा डालने को आ घुसता है, और भकसे रंग की तख़्सीस शायद इसलिए है कि हिजाज़ की बकरियाँ अक्सर इसी रंग की हैं या शयातीन उस वक़्त इसी शक्ल पर मुतशक्किल हुए।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 315)

सफ़े अव्वल का सवाब :

उम्मते मरहूमा के लिए पूरी रू–ए–ज़मीन मस्जिद कर दी गई यह जहाँ नमाज़ पढ़े हो जाएगी मगर मस्जिद में सवाब ज़्यादा है फिर सफ़े अव्वल में और ज़्यादा है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू एक इस्तिफ़सार के जवाब में इरशाद फरमाते हैं :

हदीस में फरमाया अगर लोगों को मालूम होता कि सफ़े अव्वल में नमाज़ पढ़ने का इस क़द्र सवाब है तो ज़रूर उस पर क़ुरआ अन्दाज़ी करते यानी हर एक सफ़े अव्वल में खड़ा होना चाहता और जगह की तंगी के सबब क़ुरआ अन्दाज़ी पर फ़ैसला होता। (बुख़ारी)

सबसे पहले इमाम पर रहमते इलाही नाज़िल होती है, फिर सफ़े अव्वल में जो उसके महाज़ी खड़ा हो उस महाज़ी के दाहिनी जानिब, फिर बाएं, इसी तरह दूसरी सफ़ में पहले महाज़ी इमाम पर, फिर दाहिने, फिर बाएं पर, यूं ही आख़िर सुफ़ूफ़ तक। (अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा अव्वल, स0 99)

सुन्नतों का घर में अदा करना :

तरावीह व तहीयतुल–मस्जिद के सिवा तमाम नवाफ़िल, सुनने रातिबा हों, या गै़र रातिबा, मुअक्कदा हों, या गै़र मुअक्कदा, घर में पढ़ना अफ़्ज़ल और बाइसे सवाब अक्मल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम पर लाज़िम है घरों में नमाज़ पढ़ना कि बेहतर नमाज़ मर्द के लिए उसके घर में है सिवा फ़र्ज़ के। (बुखा़री, मुस्लिम)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ मर्द की अपने घर में मेरी इस मस्जिद में उसकी नमाज़ से बेहतर है मगर फराइज़। (अबू दाऊद)

और ख़ुद आदाते करीमा सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इसी तरह थी, अहादीसे सहीहा से हुज़ूरे वाला का तमाम सुनन काशानए फलक आस्ताना में पढ़ना साबित है।

हज़रत उम्मुल–मुमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम घर में चार रकाअत ज़ुहर से पहले पढ़ते, फिर बाहर तशरीफ़ ले जाते और लोगों को नमाज़ पढ़ाते, फिर घर में रौनक़ अफ़रोज़ हो कर दो रकाअतें पढ़ते और मग़्रिब की नमाज़ पढ़ कर घर में जल्वा फरमा होते और दो रकाअतें पढ़ते और मग़्रिब की नमाज़ पढ़ कर घर में जल्वा फरमा होते और दो रकाअतें पढ़ते और इशा की इमामत करके घर में आते और दो रकाअतें पढ़ते, जब सुबह चमकती दो रकाअतें पढ़ कर बाहर तशरीफ़ ले जाते और नमाज़े फज्र पढ़ाते। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

इसी तरह सुनने जुमा का मकान जन्नत निशान में पढ़ना सहीहैन में मरवी है।

ज़माना सैयदना उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में लोग मग़्रिब के फ़र्ज़ पढ़ कर घरों को लौट जाते यहाँ तक कि मस्जिद में कोई शख़्स न रहता गोया वह बाद मग़्रिब कुछ पढ़ते ही नहीं।

सैयदुल–आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लोगों को देखा कि मग़्रिब के फ़र्ज़ पढ़ कर मस्जिद में सुन्नतें पढ़ने लगे इरशाद फरमाया यह नमाज़ घर में पढ़ा करो।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, निसई)

बिल–जुम्ला असल हुक्मे इस्तेहबाबी यही है कि सुनने क़िब्लीया यानी जो सुन्नतें फ़र्ज़ से पहले हैं जैसे फ़ज्र से पहले दो रकाअतें, ज़ुहर व अस्र व इशा से पहले चार रकाअतें मुतलक़न घर में पढ़ कर मस्जिद को जाएं कि सवाब ज़्यादा पाएं। और सुनन बाद यह यानी फ़र्ज़ के बाद की सुन्नतें, जैसे ज़ुहर व मग़्रिब व इशा के बाद की दो दो रकाअतें, जिसे अपने नफ़्स पर इत्मीनान कामिल हासिल हो कि घर जा कर किसी ऐसे काम में जो उसे अदाए सुनन से बाज़ रखे मशग़ूल न होगा वह मस्जिद से फ़र्ज़ पढ़ कर पलट आए और सुन्नतें घर ही में पढ़े तो बेहतर उस से एक एक ज़्यादते सवाब यह हासिल होगी कि जितने क़दम अदाए सुनन के इरादे से घर तक आएगा वह सब हसनात में लिखे जाएंगे। और जिसे यह वसूक़ न हो वह मस्जिद में पढ़ ले कि लिहाज़े अफ़्ज़लीयत में असल नमाज़ फौत न हो।

मगर अब अह्ले इस्लाम का आम अमल सुनन के मसाजिद ही में पढ़ने पर है, और इस में मस्लेहतें भी हैं कि उनमें वह इत्मीनान कम होता है जो मसाजिद में होता है। लिहाज़ा अब हालात के एतबार से मसाजिद में सुनन का पढ़ना ही राजेह है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 457ए 458ए मुल्खि़सन)

खड़े हो कर नफ़्ल का सवाब :

नवाफ़िल का खड़े होकर पढ़ना अफ़्ज़ल है, बैठ कर पढ़ने में आधा सवाब है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : नवाफ़िल अगर खड़े हो कर पढ़े तो अफ़ज़ल है और जो बैठ कर पढ़े उसके लिए खड़े हो कर पढ़ने वाले से निस्फ़ सवाब है। (बुख़ारी)

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वित्र के बाद की दो रकाअतें बैठ कर भी पढ़ी हैं, और कभी उनमें क़ुऊद व क़याम को जमा फरमाया है कि बैठ कर पढ़ते रहे जब रुकूअ़ का वक़्त आया खड़े हो कर रुकूअ़ फरमाया।" मगर बैठ कर पढ़ना हमेशा न था बल्कि इस बात के बयान के लिए कि बैठ कर पढ़ना भी जाइज़ है, जैसा कि ख़ुद इन नफ़्लों का पढ़ना भी इस बयान के वास्ते था कि वित्र के बाद नवाफ़िल जाइज़ हैं। अगरचे औला यह है कि जितने नवाफ़िल पढ़ने हों सब पढ़ कर आख़िर में वित्र पढ़े। (इब्ने माजा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अपनी नमाज़ शब में सबसे आख़िर वित्र रखो। (मुस्लिम)

बल्कि अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हमेशा यह नफ़्ल बैठ कर पढ़ते जब भी हमारे लिए खड़े हो कर पढ़ना ही अफ़ज़ल होता कि यह हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का अपने लिए फ़ेअ़ल होता, और हमारे लिए साफ वह इरशाद क़ौली है कि खड़े हो कर पढ़ना अफ़ज़ल है और बैठे का सवाब आधा है। और उसूल का क़ाइदा है कि क़ौल व फ़ेअ़ल में तरजीहं क़ौल को है कि फ़ेअ़ल में एहतमाले ख़ुसूसियत है।

सही मुस्लिम शरीफ़ में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है मुझे हदीस पहुँचती थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बैठे कि नमाज़ आधी है, मैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ तो ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बैठ कर नमाज़ पढ़ते पाया मैंने सरे अनवर पर हाथ रखा (यानी यह ख़्याल गुज़रा कि शायद बुख़ार वग़ैरह के सबब बैठ कर पढ़ रहे हों) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर क्या है मैंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैंने सुना था कि हुज़ूर ने फरमाया बैठे की नमाज़ आधी है और हुज़ूर ख़ुद बैठ कर पढ़ रहे हैं फरमाया हाँ बात वही है कि बैठे का सवाब आधा है मगर मैं तुम्हारे मिस्ल नहीं, मेरे लिए हर तरह पूरा कामिले अकमल सवाब है, यह मेरे लिए ख़ुसूसियत व फ़ज़्ल रब्बुल–अरबाब है।

(मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 467ए 468)

नमाज़ी के आगे से गुज़रने की मुमानेअत :

नमाज़ की अहमीयत व ताज़ीम यह है कि शरअ़ ने नमाज़ी के आगे से गुज़रना मम्नूअ़ क़रार दिया और उसके लिए अहादीस में सख़्त हुक्म वारिद हुआ है, लेकिन नमाज़ी के आगे से अगर कोई गुज़र जाए तो उस से नमाज़ में कोई ख़लल नहीं आता निकलने वाला गुनहगार होता है। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

नमाज़ अगर मकान या छोटी मस्जिद में पढ़ता हो तो दीवारे क़िब्ला तक निकलना जाइज़ नहीं जब तक बीच में आड़ न हो, और सहरा या बड़ी मस्जिद में पढ़ता हो तो सिर्फ़ मौज़ा सुजूद तक निकलने की इजाज़त नहीं उस से बाहर निकल सकता है।

मौज़ा सुजूद के यह मानी के आदमी जब क़याम में अह्ले ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की तरह अपनी निगाह ख़ास जाए सुजूद पर जमाए यानी सज्दे में उसकी पेशानी होगी तो निगाह का क़ाइदा है कि जब सामने रोक न हो तो जहाँ जमाए वहाँ से कुछ आगे बढ़ती है, जहाँ तक आगे बढ़ कर जाए वह सब मौज़ा सुजूद में है उसके अन्दर निकलना हराम है और उस से बाहर जाइज़।

मस्जिदे कबीर सिर्फ़ वह है जिस में मिस्ल सहरा इत्तिसाले सुफ़ूफ़ शर्त है जैसे मस्जिदे ख़्वारिज़्म कि सोला हज़ार सुतून पर है। बाक़ी आम मसाजिद अगरचे दस हज़ार गज़ मुक्सर हों मस्जिद सग़ीर हैं और उनमें दीवार क़िब्ला तक बिला हाइल गुज़रना जाइज़ है।

(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 401)

नमाज़ी के सामने से गुज़रने की बाज़ हदीसों में सख़्त व शदीद मुमानेअत व नही वारिद हुई है। (मुरत्तिब)

सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अगर नमाज़ी के सामने गुज़रने वाला जानता कि उस पर कितना गुनाह है तो चालीस बरस खड़ा रहना गुज़र जाने से उसके हक़ में बेहतर था। (सहाहे सित्ता, मुसनद अहमद)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अगर मालूम हो जाता कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने में क्या वईद व गुनाह है तो उसके लिए गुज़रने से सौ बरस खड़ा रहना बेहतर था।

(त, इब्ने माजा, मुसनद अहमद)

इस हदीस में सौ बरस खड़ा रहना एक गाम रखने से बेहतर फरमाया :

इमाम तहावी फरमाते हैं पहले चालीस इरशाद हुए थे फिर ज़्यादा ताज़ीम के लिए सो फरमाए गये।

तीसरी हदीस में है अगर नमाज़ी के आगे गुज़रने वाला दानिश रखता तो चाहता उसकी रान टूट जाए मगर नमाज़ी के सामने से न गुज़रे। (इब्ने अबी शैबा)

एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया जब तुम में से कोई सत्तरह की तरफ़ नमाज़ पढ़ता हो और कोई सामने से गुज़रना चाहे तो उसे दफ़ा करे, अगर न माने तो उस से क़िताल करे कि वह शैतान है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, निसई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 317)

अत्तहीयात में उंगली का इशारा :

नमाज़ के हर फ़ेअ्ल में कोई न कोई हिक्मत ज़रूर है बाज़ हिक्मतें मालूम हैं, बाज़ का हमें इल्म नहीं, अत्तहीयात में उंगली का इशारा तो अहादीस से साबित है और इसमें जो हिक्मत है वह भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बयान फरमा दी है कि वह शैतान को दूर करने वाला और शैतान के दिल में रुअब व ख़ौफ़ डालने वाला है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपना दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखा और सब उंगलियाँ बन्द करके अंगूठे के पास की उंगली से इशारा फरमाया। (मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उंगली से इशारा करना शैतान पर धार दार हथियार से ज़्यादा सख़्त है। (सही इब्ने सकन)

एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि उंगली से इशारा करना शैतान के दिल में ख़ौफ़ डालने वाला है।

(सही इब्ने सकन, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 48)

रफ़ा यदैन का मस्अला :

तकबीरे तहरीमा वग़ैरह के लिए दोनों हाथ उठाने को रफ़ा यदैन कहते हैं इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक तकबीरे तहरीमा के अलावा रुकूअ़ व सुजूद में जाते और उठते वक़्त रफ़अ़ यदैन नहीं है, इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक हर एक में रफ़अ़ यदैन है, इमाम आज़म यह फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमेशा रफ़अ़ यदैन नहीं फरमाया बल्कि कुछ दिनों फरमाया फिर तर्क फरमा दिया। (मुरत्तिब)

रफ़अ् यदैन के मस्अले से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हरगिज़ किसी हदीस से साबित नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमेशा रफ़अ् यदैन फरमाया बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उसका ख़िलाफ़ साबित है, न अहादीस में उसकी मुद्दत मज़्कूर हाँ हदीसें उसके फ़ेअ्ल व तर्क दोनों में वारिद हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया क्या मैं तुम्हें ख़बर न दूँ कि हुज़ूर पर नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ किस तरह पढ़ते थे यह कह कर नमाज़ को खड़े हुए तो सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ उठाए फिर न उठाए। (अबू दाऊद, निसई, तिर्मिज़ी)

दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सिर्फ़ नमाज़ के शुरू में रफ़अ् यदैन फरमाते फिर किसी जगह हाथ न उठाते। (मुसनद इमाम आज़म)

मुग़ीरह कहते हैं मैंने इमाम इब्राहीम नख़ई से हदीस वाइल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की निस्बत दरयाफ़्त किया कि उन्होंने हुज़ूर पुरनूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि हुज़ूर ने नमाज़ शुरू करते और रुकूअ् में जाते और रुकूअ् से सर उठाते वक़्त रफ़अ् यदैन फरमाया, इब्राहीम ने फरमाया वाइल ने अगर एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को रफ़अ् यदैन करते देखा तो अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पचास बार देखा कि हुज़ूर ने रफ़अ् यदैन न किया। (शरह मआनियुल–आसार)

सही मुस्लिम शरीफ़ में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या हुआ कि मैं तुम्हें रफ़अ् यदैन करते देखता हूँ गोया तुम्हारे हाथ चंचल घोड़ों की दुमें हैं। क़रार से रहो नमाज़ में। (मुस्लिम)

बाज़ अहादीस में है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने रफ़अ् यदैन फरमाया, और बाज़ में है कि हुज़ूर ने रफ़अ् यदैन नहीं फरमाया। (मुरत्तिब)

★ हमारे अइम्म–ए–किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन ने अहादीस तर्क पर अमल फरमाया हन्फ़ीया को उनकी तक़्लीद चाहिए।

शाफ़ईया वग़ैरेहिम अपने अइम्मा रहमहुमुल्लाह तआला की पैरवी करें, कोई महल्ले निज़ा नहीं। हाँ वह हज़रात कि तक़्लीद अइम्म–ए–दीन को शिर्क व हराम जानते हैं हालांकि उलमाए मुक़ल्लेदीन का कलाम समझने की लियाक़त नहीं रखते, वह तक़्लीद के इंकार से मुसलमानों में इंतिशार व इख़्तिलाफ़ और फ़ित्ना व फसाद चाहते बल्कि उसी को शोहरत व नामवरी का ज़रीआ समझते हैं, उनके रास्ते से मुसलमानों को बहुत दूर रहना चाहिए।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स० 49ए 50)

सूरत मिलाने में बिस्मिल्लाह पढ़ना :

सूरः–ए–फातिहा के बाद जो सूरत मिलाई जाती है उसके शुरू में भी बिस्मिल्लाह पढ़ना मुस्तहब है, इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

हमारे उलमा–ए–मुहक़्क़ेक़ीन कुतुबे मोतमेदा में रौशन तस्रीहें फरमा रहे हैं कि इब्तिदाए सूरत पर भी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़नी मुतलक़न मुस्तहब व मुस्तहसन है ख़्वाह नमाज़े सिर्रीया हो, या जेहरीया हो, और साफ़ इरशाद फरमाते हैं कि उसका नाजाइज़ होना दरकनार अइम्मा मज़्हब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम में कोई उसकी कराहत का भी क़ाइल नहीं, बल्कि सब अइम्मा किराम

बिल–इत्तिफ़ाक़ उसे ख़ूब व बेहतर जानते हैं इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ सुन्नियत में है कि जिस तरह सूरः फातिहा के शुरू में बिस्मिल्लाह शरीफ़ बिला शुबह सुन्नत है यूहीं हर सूरत के शुरू में भी सुन्नत है या मुस्तहब?

इमाम मुहम्मद के नज़्दीक सरया में सुन्नत है, और इमाम आज़म के मज़हब पर सुन्नियत की नफ़ी है और इसी पर फतवा है। बहरहाल उसकी ख़ूबी व हुस्न पर हमारे सब अइम्मा का इत्तिफ़ाक़ है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 53, मुल्ख़िसन)

रेल वग़ैरह पर नमाज़ का हुक्म :

फ़र्ज़ और वाजिब यानी वित्र और नज़्र, इसी तरह सुन्नत फज्र, यह सब नमाज़ें चलती रेल में नहीं हो सकतीं अगर रेल न ठहरे और वक़्त निकलता देखे पढ़ ले, फिर ठहरने के बाद एआदा करे।

तहक़ीक़ यह है कि इन नमाज़ों के सही होने के लिए इस्तिक़रार बिल–कुल्लीया शर्त है ख़्वाह ज़मीन पर ठहराव हो, या ताबे ज़मीन पर हो कि ज़मीन से मुत्तसिल क़रार के साथ हो, लेकिन अगर कोई मज्बूरी है तो यह सूरत मुस्तसना है।

लिहाज़ा जानवर पर बिला उज़्र नमाज़ जाइज़ नहीं अगरचे खड़ा हो कि जानवर ताबे ज़मीन नहीं इसी लिए उस गाड़ी पर नमाज़ जाइज़ नहीं जिसका जुवा बेलों पर रखा है और गाड़ी ठहरी हुई है कि बिल्कुल्लीया ज़मीन पर इस्तिक़रार न हुआ, एक हिस्सा ऐसी चीज़ पर है जो ज़मीन की ताबे नहीं।

चलती कश्ती से अगर ज़मीन पर उतरना आसान हो, कश्ती में पढ़ना जाइज़ नहीं, बल्कि तहक़ीक़ यह है कि अगरचे कश्ती किनारे पर ठहरी हो मगर पानी पर हो, ज़मीन तक न पहुँची हो और यह किनारे पर उतर सकता है कश्ती में नमाज़ न होगी, कि उसका इस्तिक़रार पानी पर है और पानी ज़मीन से मुत्तसिल बइत्तिसाल क़रार नहीं।

जब इस्तिक़रार की हालतों में नमाज़ें जाइज़ नहीं होतीं, जब तक ज़मीन पर बिल–कुल्लीया इस्तिक़रार न हो तो चलने की हालत में कैसे जाइज़ हो सकती हैं कि नफ़्स इस्तिक़रार ही नहीं।

बख़िलाफ़ जारी कश्ती जिस से उतरना आसान न हो कि उसे अगर रोकेंगे भी तो इस्तिक़रार पानी पर होगा ज़मीन पर नहीं, तो ऐसी सूरत में चलना और ठहरना दोनों बराबर हैं यानी नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी। लेकिन अगर रेल रोक ली जाए तो ज़मीन ही पर ठेहरेगी और तख़्त के मिस्ल हो जाएगी।

अंग्रेज़ों के खाने वग़ैरह के लिए रेल रोकी जा सकती है और नमाज़ के लिए नहीं, तो यह मना बन्दों की तरफ़ से हुआ, और ऐसे मना की हालत में हुक्म वही है कि नमाज़ पढ़ ले और माने ज़ाइल होने के बाद एआदा करे। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 44, मुल्ख़िसन)

हासिल यह कि चलती रेल पर फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नते फज्र जैसी नमाज़ें नहीं होंगी।

कश्ती अगर किनारे से दूर है और उतरना आसान भी नहीं है तो उस पर नमाज़ हो जाएगी ख़्वाह कश्ती रवाँ हो या ठहरी हो, अगर किनारे के क़रीब खड़ी है, उतरना भी आसान है तो उस पर नमाज़ नहीं होगी।

रेल की तरह दीगर सवारियों मसलन बस, ट्रक, जेब, ट्रम वग़ैरह का भी वही हुक्म है जो रेल का हुक्म है। (मुरत्तिब)

नमाज़ में बेएहतियाती बाइसे नुक़्सान है :

नमाज़ के तमाम अफ़आल को मुकम्मल तौर पर अदा करना लाज़िम है उनमें अगर नुक़्सान व कमी हो तो नमाज़ में ख़लल होगा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू बाज़ अवाम की बेएतदालियों का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं :

नमाज़ में सज्दा करते हैं कि पाँव की उंगलियों के सिरे ज़मीन पर लगते हैं हालांकि हुक्म है कि पेट लगे एक उंगली का पेट लगना फ़र्ज़ और सबका सुन्नत है, फिर सिर्फ़ नाक की नोक पर सज्दा करते हैं हालाँकि हुक्म है कि जहाँ तक हड्डी का सख़्त हिस्सा है लगना चाहिए, उमूमन देखा जाता है कि रुकूअ़ से ज़रा सर उठाया और सज्दा की तरफ़ चले गये, सज्दा से एक बालिश्त सर उठाया, या बहुत हुआ ज़रा उठा लिया और वहीं दूसरा सज्दा हो गया हालाँकि पूरा सीधा खड़ा होना और बैठना चाहिए, इस तरह अगर साठ बरस नमाज़ पढ़ेगा क़ुबूल न होगी।

एक शख़्स मस्जिदे अक़्दस में हाज़िर हुआ और बहुत तेज़ी से जल्दी–जल्दी नमाज़ पढ़ी, बाद नमाज़ हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ किया फ़रमाया व अलैकस्सलामु, वापस जा फिर पढ़ कि तूने नमाज़ न पढ़ी, उन्होंने दोबारा वैसे ही पढ़ी, फिर यही इरशाद हुआ, आख़िर में उन्होंने अर्ज़ की क़सम उसकी जिसने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा मुझे ऐसी ही आती है हुज़ूर फ़रमाएं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया रुकूअ़ व सुजूद बइत्मीनान कर और रुकूअ़ से सीधा खड़ा हो और दोनों सज्दों के दर्मियान सीधा बैठ। (निसई, अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 99)

नमाज़ मआफ़ नहीं :

तमाम इबादात में नमाज़ सबसे अहम है अक्सर इबादात उज़्र के सबब मआफ़ हो सकती हैं मगर नमाज़ माफ़ नहीं होती, जब तक बन्दा मुकल्लफ़ है उसे हर हाल में बजा लाना होगा। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू नमाज़ की अहमीयत को वाज़ेह करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं :

नमाज़ जब तक अक़्ल बाक़ी है किसी वक़्त में माफ़ नहीं, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हालते सफ़र में, या मरज़ में कि रोज़ा रखने की ताक़त नहीं इजाज़त है कि क़ज़ा करे, इसी तरह ज़कात साहिबे निसाब पर और हज साहिबे इस्तिताअत पर फ़र्ज़ है, लेकिन नमाज़ सब पर बहरहाल फ़र्ज़ है, यहाँ तक कि किसी हामिला औरत के निस्फ़ बच्चा पैदा हो लिया है और नमाज़ का वक़्त आ गया तो अभी नुफ़सा नहीं, हुक्म है कि गड्ढा खोदे या देग पर बैठे और इस तरह नमाज़ पढ़े कि बच्चे को तक्लीफ़ न हो, या बीमार है खड़े होने की ताक़त नहीं दीवार, या असा, या किसी शख़्स के सहारे खड़े हो कर नमाज़ अदा कर ले, और अगर इतनी देर खड़ा नहीं रह सकता तो जितनी देर मुम्किन हो क़याम फ़र्ज़ है, अगरचे इसी क़द्र कि तक्बीरे तहरीमा खड़े हो कर कह ले और बैठ जाए, अगर बैठ भी न हो सके तो लेटे–लेटे इशारों से पढ़े।

कसरते नमाज़ से हुज़ूर का शुक्र बजा लाना :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ की कसरत फ़रमाते यहाँ तक कि पाँव मुबारक सूज जाते सहाब–ए–किराम अर्ज़ करते हुज़ूर इस क़द्र क्यों तक्लीफ़ गवारा फ़रमाते हैं मौला तआला ने हुज़ूर को हर तरह की मुआफ़ी अता फ़रमाई है; फ़रमाते तो क्या मैं कामिल शुक्र गुज़ार बन्दा न हूँ, यहाँ तक कि रब अज़्ज़ा व जल्ला ने ख़ुद ही बकमाले मुहब्बत इरशाद फ़रमायाः ऐ चौदहवीं रात के चाँद हम ने तुम पर क़ुरआन इसलिए न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो।

ग़रज़ नमाज़ मरते वक़्त तक माफ़ नहीं।

रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है :

ऐ बन्दे अपने रब की इबादत किए जा यहाँ तक कि तुझे मौत आए। (सूरः हुजर : 9)

मज्नून से नमाज़ की मुआफ़ी :

एक साहब सालेहीन से थे बहुत ज़ईफ़ हुए, पंजगाना मस्जिद की हाज़िरी न छोड़ते एक शब इशा की हाज़िरी में गिर पड़े चोट आई, बाद नमाज़ अर्ज़ की इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ़ हुआ, बादशाह अपने बूढ़े गुलामों को ख़िदमत से आज़ाद कर देते हैं मुझे आज़ाद फ़रमा, उनकी दुआ क़ुबूल हुई मगर यूं कि सुबह उठे तो मज्नून थे।

यानी जब तक अक़्ल तक्लीफ़ी बाक़ी है नमाज़ माफ़ नहीं, सच्चे मजाज़ीब भी नमाज़ नहीं छोड़ते अगरचे लोग उन्हें पढ़ते न देखें।

एक मज्ज़ूब के लिए ग़ौस पाक का इरशाद :

किसी ने हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत सैयदी क़ुज़ैबुल–बान मूसली क़ुद्दिसा सिर्रुहू की शिकायत की उनको कभी नमाज़ पढ़ते न देखा, इरशाद फ़रमाया उस से कुछ न कहो उसका सर हर वक़्त खाना काबा में सुजूद में है।

(अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा दोम, स0 90ए 91)

नमाज़ के लिए मुँह की सफ़ाई :

नमाज़ में मुँह की कमाल सफ़ाई का लिहाज़ा लाज़िम है वरना फ़रिश्तों को सख़्त ईज़ा होती है, इसीलिए बदबूदार चीज़ें खा कर नमाज़ शुरू करना मना है बल्कि हुक्म तो यह है कि कच्ची प्याज़, लहसुन, गन्दना और इस क़िस्म की बू वाली चीज़ें खा कर जब तक मुँह में उनकी बदबू बाक़ी रहे मस्जिद में आना मना है, उन चीज़ों की बू से फ़रिश्तों को सख़्त तक्लीफ़ होती है। (मुरत्तिब)

मुतअद्दद अहादीस में इरशाद हुआ है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़रिश्ता अपना मुँह उसके मुँह पर रखता है यह जो कुछ पढ़ता है उसके मुँह से निकल कर फ़रिश्ता के मुँह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शय उसके दाँतों में होती है मलाइका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शय से नहीं होती।

एक और हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : जब तुम में कोई रात को नमाज़ का इरादा करे तो वह मिस्वाक कर ले क्योंकि जब कोई नमाज़ में कुरआन पढ़ता है तो फ़रिश्ता उसके मुँह पर अपना मुँह रखता है यह जो कुछ पढ़ता है उसके मुँह से निकल कर फ़रिश्ता के मुँह में जाता है। (त, मुसनदुल–फ़िर्दौस, शुअबुल–ईमान)

दूसरी हदीस में है कि यह बात फ़रिश्तों के लिए सख़्त ईज़ा वाली है कि बन्दा नमाज़ पढ़ रहा हो और उसके दाँतों में खाने की कोई शय हो।

(त, तबरानी कबीर, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 156)

दाग़े जबीं या निशाने सज्दा :

बाज़ लोगों की पेशानी पर घटे पड़ जाते हैं जिन से यह ज़ाहिर होता है कि यह बड़ा नमाज़ी और परहेज़गार है मगर उसका मुआमला आख़िर क्या है?

उलमा फ़रमाते हैं कि यह दाग़ रिया और दिखावा भी हो सकता है और क़्यामत के दिन नूर व रोशनी भी।

यानी अगर इस ग़रज़ से दाग़ बनने दिया कि उसे देख कर लोग मुझे नमाज़ी समझें तो यह रियाकारी और दिखावा है उसके लिए हदीस में आया है कि यह एक दाग़ है ऐसे दाग़ से अपनी सूरतों को बदनुमा न करो।

और अगर आदमी नहीं चाहता कि उसकी पेशानी पर कोई निशान बने इसके बावजूद अगर कोई निशानी ज़ाहिर हो जाए और न उसमें रिया का दख़ल है तो उसके लिए हदीस में आया है कि यह निशानी क़यामत के दिन रौशनी की शक्ल में नमूदार होगी।

हासिल यह है कि उसका दारो मदार नीयत पर है अगर रिया की नीयत है तो बुरा है वरना महमूद, मगर आख़िर ज़माने में ऐसे दागे जबीं को वहाबिया की अलामत क़रार दिया गया है, मुशाहिदा यह बताता है कि यह वही ज़माना है जिसकी अहादीस में ख़बर दी गई है और यह बात भी तजरबा से साबित है कि वहाबिया ही की पेशानियों पर घटे बकसरत हैं, हक़ फरमाया है सादिक़, व मस्दूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने। (मुरत्तिब)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल, सहाबा किराम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तारीफ़ में फरमाता है : (अल–फ़तह, 29)

उनकी निशानी उनके चेहरों में है सज्दे के असर से।

सहाबा व ताबईन से उस निशानी की तफ़्सीर में चार क़ौल मासूर व मरवी हैं।

अव्वल : वह नूर कि रोज़े क़यामत उनके चेहरों पर बरकत सज्दा से होगा।

यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद, इमाम हसन बसरी, अतीया ऊनी, ख़ालिद हन्फ़ी व मक़ातिल बिन हयान से है।

दोम : ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ व रविश नेक जिस के आसार सालेहीन के चेहरों पर दुनिया ही में बे तसन्नो ज़ाहिर होते हैं।

यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास व इमाम मुजाहिद से है।

सोम : चेहरे की ज़र्दी कि क़याम लैल व शब बेदारी में पैदा होती है।

यह इमाम हसन बसरी, ज़ह्हाक, इकरमा व शिम्र बिन अतीया से है।

चहार : वुज़ू की तरी और ख़ाक का असर कि ज़मीन पर सज्दा करने से माथे और नाक पर मिट्टी लग जाती हैं।

यह इमाम सईद बिन जुबैर व इकरमा से है।

उन में पहले दो क़ौल ज़्यादा क़वी व मुक़द्दम हैं कि दोनों ख़ुद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीस से मरवी हैं।

और सबसे क़वी व मुक़द्दम पहला क़ौल है कि वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बसनद हसन साबित है।

अबी बिन कअब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उस निशान सुजूद की तफ़्सीर में फरमाया कि क़यामत के दिन उनके चेहरों का नूर मुराद है। (तबरानी औसत)

यह सियाह धब्बा कि बाज़ के माथे पर कसरते सुजूद से पड़ता है तफ़ासीरे मासूरह में उसका पता नहीं, बल्कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास व साइब बिन यज़ीद इमाम मुजाहिद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से उसका इंकार मरवी।

हमीद बिन अब्दुर्रहमान रिवायत करते हैं कि मैं साइब बिन यज़ीद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के पास हाज़िर था इतने में एक शख़्स आया जिसके चेहरे पर सज्दा का दाग़ था, साइब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया बेशक उस शख़्स ने अपना चेहरा बिगाड़ लिया सुनते हो ख़ुदा कि क़सम यह वह निशानी नहीं जिसका ज़िक्र कुरआन में है, मैं अस्सी (80) बरस से नमाज़ पढ़ता हूँ मेरे माथे पर दाग़ न हुआ। (तबरानी कबीर, बैहक़ी)

मन्सूर बिन अल–उमर कहते हैं इमाम मुजाहिद ने फ़रमाया इस निशानी से ख़ुशूअ़ मुराद है मैंने कहा बल्कि दाग़ जो सज्दे से पड़ता है, फ़रमाया एक के माथे पर इतना बड़ा दाग़ होता है जैसे बकरी का घुटना और बातिन में वैसा है जैसी उसके लिए ख़ुदा की मशीयत हुई यानी यह धब्बा तो मुनाफ़िक़ भी डाल सकता है। (सुनन सईद बिन मन्सूर, इब्ने जरीर)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि ख़बरदार यह वह नहीं जो तुम लोग समझते हो बल्कि यह इस्लाम का नूर, उसकी ख़सलत, उसकी रविश, उसका ख़ुशूअ़ है। (इब्ने जरीर)

फ़ुतूहाते सुलैमानिया में है : यह निशान सज्दा जो बाज़ रिया कार अपने माथे पर बना लेते हैं यह इस निशानी से नहीं, यह ख़ार्जीयों की निशानी है।

इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत मरफ़ू आई कि मैं आदमी को दुशमन व मक्रूह रखता हूँ जबकि उसके माथे पर सज्दा का असर देखता हूँ।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने एक शख़्स को देखा कि उसके चेहरे (यानी नाक) पर सज्दे का निशान हो गया था, उस से फ़रमाया तेरी नाक और मुँह तेरी सूरत हैं तो अपना चेहरा दाग़ी न करो और अपनी सूरत ग़ैबी न बना। (तफ़्सीर कशाफ़)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अपनी सूरतें दाग़ी न क़रो। (तफ़्सीर कशाफ़)

यह इस सूरत पर महमूल है कि दिखावे के लिए क़स्दन घटे डाले और वह सफ़ा व नूरानियत की अलामत भी हो सकती है।

इन मुतअद्दद रिवायात व आसार को पेश करने के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं :

★ इस बारे में तहक़ीक़ हुक्म यह है कि दिखावे के लिए क़स्दन यह निशान पैदा करना हराम क़तई व गुनाहे कबीरा है और वह निशान मआज़ल्लाह उसके इस्तेहक़ाक़ जहन्नम का निशान है जब तक तौबा न करे।

★ और अगर यह निशान कसरते सुजूद से ख़ुद पड़ गया तो वह सज्दे अगर दिखावे के थे तो ऐसा करने वाला जहन्नमी, और यह निशान अगरचे ख़ुद जुर्म नहीं मगर जुर्म से पैदा हुआ लिहाज़ा इसी नारियत की निशानी।

★ और अगर वह सज्दे ख़ालिसन लेवज्हिल्लाह थे मगर यह इस निशान पड़ने से ख़ुश हुआ कि लोग मुझे आबिद साजिद जानेंगे तो अब रिया आ गया और यह निशान उसके हक़ में मज़्मूम हो गया।

★ और अगर उसे उसकी तरफ़ कुछ इल्तिफ़ात नहीं तो यह निशान, निशाने महमूद है।

★ एक जमाअत के नज़दीक आयते करीमा में उसकी तारीफ़ मौजूद है, उम्मीद है कि क़ब्र में मलाइका के लिए उसके ईमान व नमाज़ की निशानी हो और रोज़े क़यामत यह निशान आफ़ताब से ज़्यादा नूरानी हो, जबकि अक़ीदा मुताबिक़ अह्ले सुन्नत व जमाअत सही व हक़्क़ानी हो वरना बद दीन गुमराह की किसी इबादत पर नज़र नहीं होती।

जैसा कि इब्ने माजा वग़ैरह की अहादीस में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से है, यही वह धब्बा है जिसे ख़ार्जियों की अलामत कहा गया।

★ बिल–जुम्ला बद मज़्हब का धब्बा मज़्मूम और सुन्नी में दोनों एहतमाल हैं, रिया हो तो मज़्मूम वरना महमूद। (फ़तावा अफ़्रीक़ा सवाल नम्बर 53)

पेशानी पर लगी मिट्टी वग़ैरह और उस दाग़ के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

सज्दा में माथे पर लगी हुई मिट्टी अगर ईज़ा दे मसलन उस में बारीक कंकरियाँ हों या कसीर हो कि आँखों, पल्कों पर झड़ती हैं जब तो मुतलक़न उन्हें पोंछने में हरज नहीं, वरना अख़ीर अत्तहीयात के ख़त्म से पहले मक्रूह है और उसके बाद सलाम से पहले हरज नहीं, और सलाम के बाद उसे साफ़ कर देना तो मुस्तहब है बल्कि अगर रिया का ख़्याल हो कि लोग टीका देख कर नमाज़ी समझें जब तो उस का बाक़ी रखना हराम होगा।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 202)

उंगलियाँ चटकाना :

नमाज़ में उंगलियाँ चटकाना गुनाह नाजाइज़ है, यूंहीं अगर नमाज़ के इंतज़ार में बैठा है, या नमाज़ के लिए जा रहा है और उनके सिवा अगर हाजत हो मसलन उंगलियों में बुख़ारात के सबब कसल पैदा हुआ तो ख़ालिस इबाहत है और बेहाजत ख़िलाफ़े औला व तर्के अदब है।

यही सब अहकाम अपने एक हाथ की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालने के हैं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स0 205)

बग़ैर वुज़ू की नमाज़ :

नमाज़ के लिए वुज़ू शर्त है अगर पानी पर क़ादिर न हो तो तयम्मुम करे, तयम्मुम वुज़ू का बदल व ख़लीफ़ा है लेकिन अगर ऐसी सूरत दर पेश हो कि न पानी हो न तयम्मुम के लिए मिट्टी तो किया करे? (मुरत्तिब)

इसी मस्अला से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

जो ऐसी जगह हो जहाँ न पानी हो न पाक मिट्टी, वह नमाज़ों के वक़्त नमाज़ की सूरत अदा करे हक़ीक़तन नमाज़ की नीयत न हो, फिर कुदरत पाने पर उन नमाज़ों की क़ज़ा पढ़े।

अल्लाहु अकबर! नमाज़ का मुआमला कितना अज़ीम है कि शरई उज़्रों के अलावा किसी हालत में माफ़ नहीं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 702)

तहीयतुल–वुज़ू की फ़ज़ीलत :

वुज़ू का पानी ख़ुश्क होने से पहले दो रकाअत नमाज़ पढ़ने को तहीयतुल–वुज़ू कहते हैं उसका बहुत ज़्यादा सवाब है और उसकी फ़ज़ीलत यह है कि – (मुरत्तिब)

एक बार हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फरमाया ऐ बिलाल क्या सबब है कि मैं जन्नत में तशरीफ़ ले गया तो तुमको आगे–आगे जाते देखा, अर्ज़ की या रसूलुल्लाह जब मैं वुज़ू करता हूँ दो रकाअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ लेता हूँ, फरमाया यही सबब है, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

क़ज़ाए उमरी का आसान तरीक़ा :

जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते या जिन से ग़फ़्लत व सुस्ती में नमाज़ें क़ज़ा हो जाती हैं, वक़्त पर अदा नहीं करते वह तमाम नमाज़ें उनके ज़िम्मा बाक़ी रहती हैं, दीगर इबादात का भी यही हाल है कि फर्ज़ होने के बाद बन्दा जब तक अदा न कर ले उसके ज़िम्मा में फ़र्ज़ बाक़ी रहेगा। जिसकी उमर भर की या कई बरसों की नमाज़ें क़ज़ा हों उन्हें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम है कि मौत का वक़्त मालूम नहीं। (मुरत्तिब)

क़ज़ाए उमरी अदा करने का आसान तरीक़ा बयान करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

क़ज़ा हर रोज़ की नमाज़ की फ़क़त बीस रकाअतों की होती है दो फ़र्ज़ फज्र के, चार ज़ुहर, चार अस्र, तीन मग़्रिब, चार इशा के तीन वित्र।

और क़ज़ा में यूं नीयत करनी ज़रूर है, कि नीयत की मैंने पहली फज्र जो मुझ से क़ज़ा हुइ, या पहली ज़ुहर जो मुझ से क़ज़ा हुई, इसी तरह हमेशा हर नमाज़ में किया करे।

अ और जिस पर क़ज़ा नमाज़ें बहुत कसरत से हैं वह आसानी के लिए अगर यूं भी अदा करे तो जाइज़ है कि हर रुकूअ़ और हर सज़्दा में तीन–तीन बार सुब्हाना रब्बियल–अज़ीम, सुब्हाना रब्बिलयल–आलाम। कि जगह सिर्फ़ एक बार कहे। मगर यह हमेशा हर तरह की नमाज़ में याद रखना चाहिए कि जब आदमी रुकूअ़ में पूरा पहुँच जाए उस वक़्त सुब्हान, का सीन शुरू करे, और जब अज़ीम, का मीम ख़त्म करे उस वक़्त रुकूअ़ से सर उठाए, इसी तरह जब सज्दों में पूरा पहुँच ले उस वक़्त तस्बीह शुरू करे और जब पूरी तस्बीह ख़त्म कर ले उस वक़्त सज्दा से सर उठाए। बहुत से लोग जो रुकूअ़, सज्दा में आते जाते यह तस्बीह़ पढ़ते हैं बहुत ग़लती करते हैं एक तख़्फ़ीफ़, कसरते क़ज़ा वालों की यह हो सकती है।

दूसरी तख़्फ़ीफ़ यह कि फ़ज़ों की तीसरी और चौथी रकाअत में अल्हम्दु शरीफ़ की जगह फ़क़त सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह, तीन बार कह कर रुकूअ़ में चले जाएं, मगर वही ख़्याल यहाँ भी ज़रूर है कि सीधे खड़े हो कर सुब्हानल्लाह, शुरू करें और सुब्हानल्लाह, पूरा खड़े–खड़े कह कर रुकूअ़ के लिए सर झुकाएं, यह तख़्फ़ीफ़ सिर्फ़ फ़ज़ों की तीसरी, चौथी रकाअत में है। वित्रों की तीनों रकाअतों में अल्हम्दु और सूरत दोनों ज़रूर पढ़ी जायें।

अ तीसरी तख़्फ़ीफ़ पिछली अत्तहीयात के बाद दरूदों की और दुआ की जगह सिर्फ़ अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व आलेही कह कर सलाम फेर दें।

अ चौथी तख़्फ़ीफ़ वित्रों की तीसरी रकाअत में दुआए कुनूत की जगह अल्लाहु अकबर कह कर सिर्फ़ एक या तीन बार रब्बिग़ फ़िरली कहे। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 621)

क़ज़ाए उमरी से मुतअल्लिक़ दीगर इरशादात :

क़ज़ाए उमरी अदा करने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक इस्तिफ़्सार के जवाब में इरशाद फरमाते हैं :

क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम हैं नमालूम किस वक़्त मौत आ जाए, क्या मुश्किल है एक दिन की बीस रकाअत होती हैं यानी फज्र के फ़ज़ों के दो रकाअत, और ज़ुहर की चार, अस्र की चार, मग़्रिब की तीन, और इशा की सात रकाअत यानी चार फर्ज़ तीन वित्र, इन नमाज़ों को सिवाए तुलूअ़ व ग़ुरूब व ज़वाल के कि उस वक़्त सज्दा हराम है, हर वक़्त अदा कर सकता है, और अख़्तियार है कि पहले फज्र की सब नमाज़ें अदा कर ले, फिर ज़ुहर, फिर अस्र, फिर मग़्रिब, फिर इशा की, या सब नमाज़ें साथ–साथ अदा करता जाए। और उनका ऐसा हिसाब लगाए कि तख़्मीना में बाक़ी न रह जाएं, ज़्यादा हो जाएं तो हरज नहीं। और वह सब बक़द्र ताक़त रफ़्ता–रफ़्ता अदा कर ले काहिली न कर ले। जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मा पर बाक़ी रहता है कोई नफ़्ल क़ुबूल नहीं किया जाता।

नीयत उन नमाज़ों की इस तरह हो मसलन सौ बार की फज्र क़ज़ा है तो हर बार यूं कहे कि सबसे पहले जो फज्र मुझ से क़ज़ा हुई हर दफ़ा यही कहे। यानी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो सबसे पहली है इसी तरह ज़ुहर वग़ैरह हर नमाज़ में नीयत करे।

जिस पर बहुत सी नमाज़ें क़ज़ा हों उसके लिए सूरत तख़्फ़ीफ़ और जल्द अदा होने की यह है कि

ख़ाली रकाअतों में बजाए। अल्हम्दु शरीफ़ के तीन बार सुब्हानल्लाह कहे, अगर एक बार भी कह लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, नीज़ तस्बीहात रुकूअ् व सुजूद में सिर्फ़ एक-एक बार सुब्हाना रब्बियल-अज़ीम और सुब्हाना रब्बियल-आला पढ़ कर काफी है, तशह्हुद के बाद दोनों दरूद शरीफ़ की बजाए अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यिदना मुहम्मदिन व आलेही, वित्रों में बजाए दुआए कुनूत रब्बिग़-फ़िर्ली कहना काफी है।

तुलूअ् आफ़ताब के बीस मिनट बाद और ग़ुरूबे आफ़ताब से बीस मिनट क़ब्ल नमाज़ अदा कर सकता है उस से पहले या उसक बाद नाजाइज़ है। हर ऐसा शख़्स जिसके ज़िम्मा नमाज़ें बाक़ी हैं छुप कर पढ़े कि गुनाह का एलान जाइज़ नहीं।

इसी सिलसिला में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी ने इरशाद फरमाया :

अगर किसी शख़्स क ज़िम्मे तीस या चालीस साल की नमाज़ें वाजिबुल-अदा हैं उसने अपने उन ज़रूरी कामों के अलावा जिनके बग़ैर गुज़र नहीं कारोबार तर्क करके पढ़ना शुरू किया और पक्का इरादा कर लिया कि कल नमाज़ें अदा करके आराम लूँगा, और फ़र्ज़ कीजिए इसी हालत में एक महीना या एक ही दिन के बाद उसका इंतिक़ाल हो जाए तो अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से उसकी सब नमाज़ें अदा कर देगा।

अल्लाह तआला फरमाता है :

जो अपने घर से अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता हुआ निकले फिर उसे रास्ता में मौत आ जाए तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मा करम पर साबित हो चुका। (सूरः निसा, स0 100)

यहाँ मुतलक़ फरमाया घर से अगर एक ही क़दम निकाला और मौत ने आ लिया तो पूरा काम उसके नाम-ए-आमाल में लिखा जाएगा और कामिल सवाब पाएगा, वहाँ नीयत देखते हैं, सारा दारो मदार हुसने नीयत पर है। (अल-मल्फ़ूज़ हिस्सा अव्वल, स0 69, 70)

नमाज़े तहज्जुद :

शक नहीं कि तहज्जुद इब्तिदाए अम्र में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर और हुज़ूर की उम्मत सब पर फर्ज़ था फिर बाद में उम्मत से उसकी फ़र्ज़ियत मन्सूख़ हो गई और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर बाक़ी रही।

तमाम नवाफ़िल में सबसे ज़्यादा नमाज़ तहज्जुद का है,

नमाज़ इशा के बाद सो कर उठने के बाद तहज्जुद का वक़्त है इससे पहले नमाज़े तहज्जुद न होगी उसके लिए सोना ज़रूरी है ख़्वाह जल्द जागे या देर से तुलूअ् फज्र से पहले उस नमाज़ को पढ़ सकता है, बग़ैर सोए यह नमाज़ तहज्जुद नहीं कहलाएगी उसके लिए सोना शर्त है। (मुरत्तिब)

नमाज़े तहज्जुद की सुन्नियत व इस्तेहबाब से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुदिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

तहज्जुद सुन्नते मुस्तहिब्बा है तमाम मुस्तहब नमाज़ों से आज़म व अहम है कुरआने अज़ीम व अहादीस हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसकी तरग़ीब से माला माल हैं, उसका छोड़ने वाला अगरचे फ़ज़्ले कबीर व ख़ैरे कसीर से महरूम है मगर गुनहगार नहीं।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन चीज़ें मुझ पर फ़र्ज़ और तुम्हारे लिए सुन्नत हैं।

(1) वित्र (2) मिस्वाक (3) क़यामे शब यानी नमाज़े तहज्जुद। (तबरानी, बैहक़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क़यामे शब का हुक्म था, हुज़ूर पर फ़र्ज़ था उम्मत पर नहीं। (अबू जाफर तबरी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 455)

बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और नमाज़ गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी है।
(मुरत्तिब)

हदीस में है सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : तहज्जुद की मुलाज़िमत करो कि वह अगले नेकों की आदत है और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से नज़्दीक करने वाला और गुनाह से रोकने वाला और बुराइयों का कफ़्फ़ारा और बदन से बीमारी दूर करने वाला।
(तिर्मिज़ी, इब्ने अबिद्दुनिया)

बाद नमाज़े इशा ज़रा सोने के बाद शब में किसी वक़्त पढ़नी अगरचे आधी रात से पहले अदाए तहज्जुद को बस हैं मसलन नौ बजे इशा पढ़ कर सो रहा, दस बजे उठ कर दो रकाअतें पढ़ लें तहज्जुद हो गया।

हदीस में है हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम में किसी का यह गुमान है कि रात को उठ कर सुबह तक नमाज़ पढ़े जभी तहज्जुद हो, तहज्जुद सिर्फ़ उसका नाम है कि आदमी ज़रा सो कर नमाज़ पढ़े। (तबरानी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 330ए 332)

सिद्दीक़ व फ़ारूक़ और बिलाल की क़िराअत :

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी कि कभी शब में अपने असहाबे किराम का तफ़क्कुद (तफ़्तीश) अहवाल फरमाते मसलन एक शब नमाज़े तहज्जुद में सिद्दीक़ अकबर पर गुज़र फरमाया, सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि बहुत आहिस्ता पढ़ रहे हैं, फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ तशरीफ़ ले गये, उन्हें देखा कि जाबजा से मुतफ़र्रिक़ आयतें पढ़ रहे हैं। सुबह हर एक से इस तरीक़े का सबब दरयाफ़्त फरमाया।

★ सिद्दीक़ ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं जिस से मुनाजात करता हूँ उसे सुना लेता हूँ, यानी औरों से क्या काम आवाज़ बुलन्द करूं।

फ़ारूक़ ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं शैतान को भगाता और सूतों को जगाता हूँ, यानी जहाँ तक आवाज़ पहुँचेगी भागेगा और तहज्जुद वालों में जिसकी आँख न खुली वह जाग कर पढ़ेगा इसलिए इस क़द्र ज़ोर से पढ़ता हूँ।

बिलाल ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह पाकीज़ा कलाम है कि अल्लाह उसके बाज़ को बाज़ से मिलाता है।

उसका मतलब फ़क़ीर (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी) की समझ में यह है गोया अर्ज़ करते हैं कि कुरआने अज़ीम एक लहलहाता बाग़ है जिस में रंग–रंग के फूल, क़िस्म–क़िस्म के मेवे दुर्रे मन्सूर की तरह मुतफ़र्रिक़ फैले हुए, कहीं हम्द है, कहीं सना, कहीं ज़िक्र, कहीं दुआ, कहीं ख़ौफ़, कहीं रजा, कहीं नअत हबीबे खुदा, वग़ैरहा मतालिब जुदा–जुदा, जानिबे इलाही से जिस वक़्त जिस तरह की तजल्ली वारिद होती हैं उसी के मुनासिब आयात मुतफ़र्रिक़ मक़ामात से जमा करके पढ़ता हूँ।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम सब ठीक पर हो।

★ मगर ऐ सिद्दीक़ तुम क़द्रे आवाज़ बुलन्द करो।

★ और ऐ फारूक़ तुम क़द्रे पस्त।

★ और ऐ बिलाल तुम सूरत ख़त्म करके दूसरी सूरत की तरफ़ चलो। (अबू दाऊद)

अबू मूसा अश्अरी की ख़ुश आवाज़ी :

इसी तरह एक शब तहज्जुद में अबू मूसा अश्अरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का पढ़ना सुना, उनकी आवाज़ निहायत दिलकश, उनका लेहजा कमाल दिलकुशा था, इरशाद हुआ उन्हें दाऊद

अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्हानों से एक इल्हान मिला है, सुबह उनके पढ़ने की तारीफ़ फरमाई उन्होंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह अगर मुझे मालूम होता कि आप सुन रहे हैं तो और ज़्यादा बना कर पढ़ता। (मुस्लिम, अल–मल्फ़ूज़ हिस्सा दोम, स0 49ए 50)

नमाज़े जुमा और उसकी शराइत :

नमाज़ पंजगाना के मिस्ल जुमा भी फ़र्ज़ है मगर उसका हुक्म कुछ मुख़्तलिफ़ है, नमाज़े पंजगाना तो हर जगह, हर मक़ाम पर हो जाएगी उनके लिए ताईने मक़ाम की शर्त नहीं मगर जुमा के लिए कुछ शराइत हैं उनके बग़ैर नमाज़े जुमा दुरुस्त न होगी, बाज़ शराइत ऐन नमाज़ में हैं और बाज़ ख़ारिज नमाज़ में मगर ज़रूरी सब हैं, हम यहाँ पर बाज़ शराइत नक़्ल कर रहे हैं। (मुरत्तिब)

नमाज़े जुमा की फ़र्ज़ियत व सेहत वग़ैरह से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

फ़र्ज़ियत व सेहत व जवाज़ जुमा के लिए इस्लामी शहर होना शर्त है, जो जगह बस्ती नहीं जैसे बन, समुन्द्र, पहाड़, या बस्ती है मगर शहर नहीं जैसे दीहात, या शहर है मगर इस्लामी नहीं जैसे रूस व फ़्रांस के शहर, उनमें न जुमा फ़र्ज़ है, न सही, न जाइज़, बल्कि मम्नूअ् व बातिल व गुनाह है, उसके पढ़ने से फ़र्ज़ ज़ुहर ज़िम्मा से साक़ित न होगा।

शहर होने के लिए यह चाहिए कि उसमें मुतअद्दद कूचे, मुतअद्दद दाइमी बाज़ार हों, वह परगना हो कि उसके मुतअल्लिक़ दीहात गिने जाते हों कि मौज़ा फ़लां, व फ़लां व फ़लां, परगना शहर फ़लां और उसमें कोई हाकिम हो कि फ़ैसला मुक़द्दमात का अख़्तियार सलतनत की जानिब से रखता हो, सिर्फ़ थाना या डाकखाना या शिफ़ाखाना होना शहर के लिए काफ़ी नहीं कि यह फ़सल मुक़द्दमात के लिए नहीं होते। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 715)

शराइते जुमा से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मज़्हबे हन्फ़ी में फ़र्ज़ियते जुमा व सेहते जुमा व जवाज़े जुमा सबके लिए मिस्र शर्त है। दीहात में न जुमा फ़र्ज़, न वहाँ उसकी अदा जाइज़, न सही, अगर पढ़ेंगे एक नफ़्ल नमाज़ होगी, ज़ुहर का फ़र्ज़ सर से न उतरेगा, पढ़ने वाले मुतअद्दद गुनाहों के मुर्तकिब होंगे।

और ज़ाहिर है कि मानी मुतआरफ़ में शहर, मिस्र, मदीना, इसी आबादी को कहते हैं जिसमें मुतअद्दद कूचे, मुहल्ले मुतअद्दद, व दाइमी बाज़ार होते हैं वह परगना होता है, उसके मुतअल्लिक़ दीहात गिने जाते हैं, आदतन उसमें कोई हाकिम मुक़र्रर होता है कि फ़ैसला मुक़द्दमात करे, अपनी शौकत के सबब मज़्लूम का इंसाफ़ ज़ालिम से ले सके, और जो बस्तियाँ ऐसी नहीं वह क़रिया, वह मौज़ा और गाँव कहलाती हैं, शरअन भी यही मानी मुतआरेफ़ा मुराद और अहकामे जुमा वग़ैरहा का मदार हैं इसलिए हमारे इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने शहर की यही तारीफ़ इरशाद फरमाई। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 710)

दीहात में अगरचे जुमा जाइज़ नहीं मगर अवाम को मना न करने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

जुमा व ईदैन दीहात में नाजाइज़ है और उनका पढ़ना गुनाह मगर जाहिल अवाम अगर पढ़ते हों तो उनको मना करने की ज़रूरत नहीं कि अवाम जिस तरह अल्लाह व रसूल का नाम ले लें ग़नीमत है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 719)

ख़ुतबा के आदाब :

जुमा का ख़ुतबा हमातन गोश हो कर सुनना फ़र्ज़ है बात चीत, सलाम व कलाम और नमाज़

वग़ैरह दौराने ख़ुतबा में जाइज़ नहीं हर तरह का अदब मल्हूज़ रखना ज़रूरी है यहाँ तक कि अगर कोई आदाबे ख़ुतबा के मनाफ़ी कुछ काम करे और यह उसे मना करे तो यह भी लग़्व और ख़िलाफ़े अदब है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब रोज़ जुमा ख़ुतबा इमाम के वक़्त तो दूसरे से कहे चुप तो तूने ख़ुद लग़्व किया। (सहाहे सित्ता)

दूसरी हदीस में है कि जो जुमा के दिन अपने साथी से चुप कहे उसने लग़्व किया और जिसने लग़्व किया उसके लिए उस जुमा में कुछ अज्र नहीं। (मुसनद अहमद, अबू दाऊद)

एक और हदीस में है कि जुमा के दिन जब इमाम ख़ुतबा में हो बोलने वाला ऐसा है जैसा गधा जिस पर किताबें लदी हों और जो उस से चुप कहे उसका जुमा नहीं।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 697)

ग़ैर अरबी में ख़ुत्बा पढ़ना :

ख़ुत्बा ख़ुद वअ़ज़ व पन्द है मगर उसमें ग़ैर ज़ुबान अरबी का ख़लत मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत मुतवारेसा है अगरचे नफ़्स फ़र्ज़ ख़ुत्बा ख़ालिस दूसरी ज़ुबान से भी अदा हो जाएगा, सहाबा किराम ने अजम के हज़ारों शहर फतह फरमाए और उनमें मिंबर नसब किए और ख़ुत्बे पढ़े और उनकी ज़ुबानें जानते थे। उन से गुफ़्तगू करते थे मगर कभी मन्क़ूल नहीं कि अरबी के सिवा और ज़ुबान में ख़ुत्बा फरमाया या ग़ैर ज़ुबान को मिलाया।

हाँ अगर इस्नाए ख़ुत्बा में मसलन किसी हिन्दी को कोई फ़ेअ़्ल नाजाइज़ करते देखा, जैसे ख़ुत्बा होने की हालत में चलना, या पंखा झलना और वह अरबी नहीं समझता उर्दू में उसे मना करे कि यह हाजत यूंहीं रफ़ा होगी।

अज़ान ख़ुत्बा का जवाब देना ?

अज़ाने ख़ुत्बा के जवाब और उसके बाद दुआ में इमामे आज़म व साहिबीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का इख़्तिलाफ़ है बचना औला करें तो हरज नहीं, यूंहीं अज़ाने ख़ुत्बा में नाम पाक पर अंगूठे चूमना उसका भी यही हुक्म है, लेकिन ख़ुत्बा में महज़ सुकूत व सुकून का हुक्म है। ख़ुत्बा में नाम पाक सुन कर सिर्फ़ दिल में दरूद शरीफ़ पढ़ें और कुछ न करें, ज़ुबान को जुंबिश भी न दें।

(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 758, 759)

जुमा का दिन और नमाज़ी :

तमाम दिनों में जुमा के दिन को फ़ज़ीलत हासिल है उसको तमाम दिनों का सरदार कहा गया है और जो लोग नमाज़े जुमा के पाबन्द हैं उन पर भी रब तआला की ख़ुसूसी रहमत व इनायत होती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला क़्यामत के दिन सब दिनों को उनकी शक्ल पर उठाएगा और जुमा को चमकता रोशनी देता, जुमा पढ़ने वाले, उसके गिर्द झुर्मट किए हुए जैसे नई दुल्हन को उसके गिरामी शौहर के यहाँ रुख़्सत करके ले जाते हैं।

(इब्ने ख़ुज़ैमा, सुनन बैहक़ी, हाकिम मुस्तदरक, फतावा रज़्वीया, जिल्द 6, स0 201)

एहतियाती ज़ुहर का मस्अला :

जहाँ पर जुमा दुरुस्त होने में शुबह हो वहाँ पर ख़्वास के लिए हुक्म है कि वह बतौर एहतियात के ज़ुहर की चार रकाअत फ़र्ज़ पढ़ लें अगर जुमा सही हो गया तो यह नफ़्ल हो जाएगी वरना फ़र्ज़ ज़ुहर अदा हो जाएगा। (मुरत्तिब)

एहतियाती ज़ुहर से मुतअल्लिक़ इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

वह शहर क़स्बात जिन में शराइते जुमा के इज्तिमा में शुबह वाके़ हो, या जुमा मुतअद्द जगह होता हो और आजकल हिन्दुस्तान के आम शहर ऐसे ही हैं, ऐसी जगह हमारे उलमा ने हुक्म दिया कि बाद जुमा चार रकाअत फ़र्ज़ एहतियाती इस नीयत से अदा करे कि पिछली वह ज़ुहर जिसका वक़्त मैंने पाया और अब तक अदा न की।

यह रकाअतें चारों सुन्नत बाद यह जुमा के बाद पढ़े और जिस पर ज़ुहर की क़ज़ाए उमरी न हो वह चारों में सूरत भी मिलाए, फिर जुमा की दो सुन्नतें उन रकाअतों के बाद बनीयत सुन्नत वक़्त अदा करे।

जुमा पढ़ते वक़्त नीयत सही व साबित रखे, जुमा को सही समझ कर ख़ास कर फ़र्ज़े जुमा की नीयत करे, अगर बनीयत फ़र्ज़ न अदा किया तो जुमा यक़ीनन न होगा और अब यह चार रकाअतें नरी एहतियाती न रहेंगी बल्कि ज़ुहर पढ़नी फ़र्ज़ हो जाएगी और जब यूं नीयते सहीहा से अदा कर चुका तो उन चार रकाअतों में यह नीयत न करे कि आज की ज़ुहर पढ़ता हों बल्कि वही गोल नीयत रखे कि जो पिछली ज़ुहर मैंने पाई और अदा न की उसे अदा करता हूँ ख़्वाह वह किसी दिन की हो उस से ज़्यादा ख़्यालात परेशान न करे।

यूं पढ़ने में यह नफ़ा पाएगा कि अगर शायद इल्मे इलाही में बवज्हे फौत बाज़ शराइत, जुमा सही न हुआ होगा तो यह रकाअतें आज ही की ज़ुहर हो जाएंगी कि इस सूरत में यही ज़ुहर वह पिछली है जिसका वक़्त उसे मिला और अभी ज़िम्मा से साक़ित न हुई और अगर जुमा सही वाके़ हुआ तो आज से पहले की जो ज़ुहर उसके ज़िम्मा रहेगी (ख़्वाह यूं कि सिरे से पढ़ी ही न थी या किसी वजह से फासिद हो गई) वह अदा हो जाएगी, और अगर कोई ज़ुहर न रही होगी तो यह रकाअतें नफ़्ल हो जाएंगी इसी लिहाज़ से जिस पर क़ज़ा उमरी ज़ुहर की न हो यह चारों रकाअतें भरी पढ़ें कि अगर नफ़्ल हुई और सूरत न मिलाई तो वाजिब छूट कर नमाज़ मक्रूहे तहरीमी होगी हाँ जिस पर क़ज़ाए उमरी है उसे पिछली दो में सूरत मिलाने की हाजत नहीं कि उसके हर तरह फ़र्ज़ ही अदा होंगे। जुमा न हुआ तो आज का फ़र्ज़, और हुआ तो आज से पहले का फ़र्ज़ अदा होगा।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स० 680)

नमाज़े ईदैन और ईदगाह :

ईदैन की नमाज़ वाजिब है उसके लिए वही शराइत हैं जो नमाज़े जुमा के लिए हैं, उसमें एक बात यह है कि ईदैन की नमाज़ शहर से बाहर ईदगाह में होना बेहतर है अगरचे ज़माना रिसालत में ईदगाह के नाम पर कोई इमारत बनी हुई न थी वह सिर्फ़ एक मैदान था उसी में ईदैन की नमाज़ होती थी, इसीलिए ईदगाह में कोई इमारत होना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है। (मुरत्तिब)

ज़मान–ए–अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में मुसल्लाए ईद कफ़े दस्त मैदान था जिसमें असलन किसी इमारत का नाम न था, जब हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़े ईद को तशरीफ़ ले जाते मवाजा अक़्दस में सतरह के लिए एक नेज़ा नसब कर दिया जाता, ज़माना ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम में भी यूं ही रहा, उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नमाज़ पढ़ने के सब मवाज़े में तबर्रुक के लिए मस्जिदें बना दीं, ज़ाहिरन उन्हीं के वक़्त में मुसल्लाए ईद में भी इमारत बनी।

हदीस में है कि ईदुल–फ़ित्र और ईदुल–अज़्हा के दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने नेज़ह गाड़ दिया जाता और हुज़ूर उसकी तरफ़ रुख़े अनवर करके नमाज़ पढ़ाते। (त, बुख़ारी)

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ईद के दिन ईदगाह को तशरीफ़ के सामने नेज़ह गाड़ दिया जाता और हुज़ूर उसकी तरफ़ रुख़े अनवर करके नमाज़ पढ़ाते। (त, बुख़ारी)

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ईद के दिन ईदगाह को तशरीफ़ ले जाते और नेज़ह हुज़ूर के सामने उठाया जाता जब ईदगाह पहुँच जाते तो नेज़ह सामने गाड़ दिया जाता क्योंकि ईदगाह मैदान में थी किसी चीज़ का सतरा नहीं होता।

(त, इब्ने माजा सही इब्ने ख़ुज़ैमा, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 15ए 16)

नमाज़े ईद और ईदगाह से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

नमाज़े ईद एक शहर में मुतअद्दद जगह अगरचे बिल–इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है मगर एक शहर के लिए दो ईदगाह बैरूने शहर मुक़र्रर करना ज़मान बरकत निशान हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अब तक मअ्हूद नहीं, न उसमें शरअ् मुतह्हर की कोई मस्लेहत है।

(फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 80)

ईदैन के दिन खाना :

ईदुल–फ़ित्र के दिन कुछ खा कर ईदगाह जाना और ईदुल–अज़्हा के दिन नमाज़ के बाद क़ुरबानी का गोश्त पहले खाना मुस्तहब है। (मुरत्तिब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ईदे क़ुरबां में नमाज़ से पहले कुछ न खाते बाद नमाज़ गोश्त क़ुरबानी से तनावल फरमाते, और ईदुल–फ़ित्र में बग़ैर तनावल फरमाए ईदगाह को तशरीफ़ न ले जाते। (त, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 811)

नमाज़े इस्तिस्क़ा :

बारिश तलब करने को इस्तिस्क़ा कहते हैं, इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक यह दुआ व इस्तिग़फ़ार है यानी बारिश के लिए दुआ माँगी जाए उसके लिए उनके नज़्दीक नमाज़ नहीं है, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के नज़्दीक इस्तिस्क़ा में नमाज़ पढ़नी सुन्नत है। नमाज़े इस्तिस्क़ा उस वक़्त पढ़ी जाए जबकि ज़रूरत शदीद हो और बारिश की उम्मीद ख़त्म हो चुकी हो वरना दुआ पर इक्तिफ़ा करना चाहिए। (मुरत्तिब)

इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

नमाज़े इस्तिस्क़ा साहिबैन के नज़्दीक सुन्नत है और उसी पर अमल है और उस वक़्त होना चाहिए जबकि हाजत शदीद हो और उम्मीद मुन्क़ता हो चुकी है और लोग उसके आदाब के तौर पर उसे बजा लाएं। ख़शीयत व ख़ुशूअ् उसकी असल है और वह आजकल अक्सर क़ुलूब से मुरतफ़ा है, इस मुल्क में हम्साया कुफ़्फ़ार हैं, हम न दुआ के तौर पर दुआ करते, न नमाज़ के तौर पर नमाज़ पढ़ते हैं ऐसी सूरत में हमारी बेतूरियों के बाइस अगर इजाबत न फरमाई जाए तो कुफ़्फ़ार के मज़्हेका का अन्देशा है, इसलिए यहाँ की हालत के मुनासिब तर वही अमल है जो क़ुरआने अज़ीम में नुज़ूल बाराने रहमत के लिए इरशाद हुआ यानी तौबा व इस्तिग़फ़ार की कसरत हो और अब ज़ुल–जलाल की तरफ़ ख़ुलूस दिल से तवज्जोह हो। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 815)

नमाज़े कुसूफ़ व ख़ुसूफ़ :

चाँद या सूरज में गहन लगने से जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसको नमाज़े कुसूफ़ या ख़ुसूफ़ कहते हैं जब ऐसा हादसा दर पेश हो तो ख़ुशूअ् व ख़ुज़ूअ् और निहायत तज़्लील व आजिज़ी के साथ मैदान या ईदगाह में जाकर दो रकाअत नमाज़ अदा की जाए और उसे इतनी तवील की जाए कि

गहन छूट जाए और चाँद या सूरज साफ़ हो जाए हदीस में है कि गहन लगना अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है जिसके ज़रिया से अल्लाह तआला बन्दों को ख़ौफ़ दिलाता है ऐसे वक़्त में नमाज़ की तरफ़ रुजूअ् किया जाए। (मुरत्तिब)

हुक्मे शरअ् यह है कि मआज़ल्लाह जो बात हौलनाक हो जैसे सख़्त आंधी, कड़क, ज़लज़ला, मीना, बर्फ़ बारी, दिन को अन्धेरी, रात को ख़ौफ़नाक रौशनी, इन सब में मुस्तहब है कि मुसलमान नफ़्ल नमाज़ से अपने रब की तरफ़ रुजूअ् करें।

★ सूरज गहन की नमाज़ में मुनासिब यह है कि ईदगाह में पढ़ें या मस्जिद जुमा में।

★ सूरज गहन की नमाज़ में जमाअत ज़रूरी नहीं सिर्फ़ मुस्तहब है जब कि इमाम जुमा हाज़िर हो, यह भी जाइज़ कि हर शख़्स अपने घर या मस्जिद में तन्हा पढ़े।

सूरज गहन की नमाज़ दोबारा सेह बारा बल्कि सौ बार हो सकती है।

★ गहन छूट जाए तो उसके बाद गहन की नमाज़ नहीं।

★ सूरज गहन में भी सिर्फ़ जुमा का इमाम मुऐयन ही इमामत कर सकता है।

★ चाँद गहन की नमाज़ सिर्फ़ मुस्तहब है और सूरज गनह की सुन्नते मुअक्कदह क़रीब बवाजिब है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 1, स0 618, 621, 622)

सलातुत्तस्बीह :

उस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत और बड़ा सवाब और उसमें बड़ी माफ़ी की उम्मीद है, वह चार रकाअत नफ़्ल है कि ग़ैर वक़्त मक्रूह में अदा की जाए, यानी सुबह सादिक़ के तुलूअ् होने से आफ़ताब निकल कर बुलन्द होने तक जाइज़ नहीं, और ठीक दोपहर को जाइज़ नहीं, और जब आफ़ताब डूबने के क़रीब आए कि उस पर निगाह बेतकल्लुफ़ ठहरने लगे उस वक़्त जाइज़ नहीं, नमाज़े अस्र के फ़र्ज़ पढ़ने के बाद शाम तक जाइज़ नहीं, जिस वक़्त इमाम ख़ुतबा पढ़ रहा हो उस वक़्त जाइज़ नहीं, ग़रज़ जितने वक़्त नफ़्ल नमाज़ की कराहत के हैं उन औक़ात से बच कर जिस वक़्त चाहे पढ़े और बेहतर यह है कि ज़ुहर से पहले पढ़े, और अफ़्ज़ल दिन जुमा का है।

उसका मुनासिब तरीक़ा यह है जो हमारे अइम्मा किराम के मज़हब से मुवाफ़िक़ है कि - सुब्हानका अल्लाहुम्मा पढ़कर पन्द्रह बार सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहे वलाइलाहा इल्लल्लाह वल्लाह अकबर । (15)

★ फिर अल्हम्दु व सूरत पढ़ कर यही कलिमा दस बार। (10)

★ फिर रुकूअ् में तस्बीहाते रुकूअ् के बाद दस बार। (10)

★ फिर रुकूअ् से खड़े हो कर रब्बना वलकल—हम्दु के बाद दस बार। (10)

★ फिर सज्दा में तस्बीहों के बाद दस बार। (10)

★ फिर सज्दे से सर उठा कर दस बार। (10)

★ फिर दूसरे सज्दा में इसी तरह दस बार। (10)

★ यह एक रकाअत में पचहत्तर बार हुआ। (75)

★ फिर दूसरी रकाअत को खड़ा हो कर अल्हम्दु से पहले पन्द्रह बार।

★ फिर अल्हम्दु व सूरत के बाद दस बार।

★ फिर रुकूअ् में बदस्तूर कि यह भी पच्हत्तर हुए।

इसी तरह बाक़ी दोनों रकाअतों में भी कि यह सब मिल कर तीन सौ बार हो जाएंगे।

सूरत का इख़्तियार है जो चाहे पढ़े और बेहतर यह है कि पहली रकाअत में अल्हाकुमुत्तकासुर दूसरी में वल—अस्र तीसरी में कुल या ऐयुहल—काफ़िरून चौथी में कुल हुवल्लाहु।

यह नमाज़ हर रोज़ पढ़े, वरना हर जुमा, वरना हर महीने, वरना साल में एक बार तो हो जाया

करे और न हो तो उम्र भर में तो एक बार हो जाए कि उसमें बड़ी दौलत है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 469)

नमाज़े ग़ौसिया :

फिल-वाक़े यह मुबारक नमाज़ हज़राते आलिया मशाइख़े किराम की मामूल और क़ज़ाए हाजात व हुसूल मुरादात के लिए उम्दा व बेहतर तरीक़ा जो पसन्दीदह व मक़्बूल है, हुज़ूर ग़ौसुल-कौनैन ग़्यासुस्सक़लैन सवालातुल्लाहे तआला व सलामुहू अला जद्देहिल-करीम व अलैह से मरवी व मन्क़ूल है, जलीलुल-क़द्र बड़े-बड़े उलमा व अकाबिर ने उसे अपनी तसानीफ़े जलीला में रिवायत किया और हमेशा उसे मक़्बूल व मुक़र्रर और मुसल्लम मोतबर रखते आए।

उसका तरीक़ा यह है कि जो बाद मग़्रिब दो रकाअत नमाज़ पढ़े, हर रकाअत में बाद फातिहा सूरः इख़्लास ग्यारह बार, फिर बाद सलाम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर सलात व सलाम अर्ज़ करे, फिर इराक़ शरीफ़ की तरफ़ ग्यारह क़दम चले और मेरा नाम याद और अपनी हाजत ज़िक्र करे, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से उसकी मुराद पूरी हो।

अह्ले तजरबा ने उसके बहुत सारे फ़वाइद ज़िक्र किए और क़ज़ाए हाजात में उसे तीर बहदफ़ क़रार दिया और उलमा व अस्फ़िया ने ताकीद व शिद्दत के साथ उसकी तरग़ीब व तल्क़ीन फरमाई।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 3, स0 522)

दो नमाज़ों को मिला कर पढ़ना :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने अपने नबी करीम अलैहि अफ़ज़लुस्सलात वत्तस्लीम के इरशादात से हर नमाज़ फ़र्ज़ का एक ख़ास वक़्त जुदागाना मुक़र्रर फरमाया है कि न उससे पहले नमाज़ की सेहत, न उसयके बाद ताख़ीर की इजाज़त, अरफ़ा की ज़ुहर व अस्र और मुज़्दलिफ़ा की मग़्रिब व इशा के सिवा दो नमाज़ों का क़स्दन एक वक़्त में जमा करना सफ़र व हज़र में हरगिज़ किसी तरह जाइज़ नहीं, क़ुरआने अज़ीम व अहादीस सेहाहे सैयदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसकी मुमानेअत पर शाहिद आदिल हैं। सहाबा व ताबईन, अइम्मा किराम व उलमाए कामिलैन और सलफ़ व ख़लफ़ का यही मज़्हब है।

जमा बैनस्सलातैन यानी दो नमाज़ें मिला कर पढ़ना दो क़िस्म है।

★ जमा फ़ेअ्ली : जिसे जमा सूरी भी कहते हैं कि दरहक़ीक़त हर नमाज़ अपने वक़्त में वाक़े हो मगर अदा में मिल जाएं, जैसे ज़ुहर अपने वक़्त में पढ़ी कि उसके ख़त्म पर वक़्त अस्र आ गया फौरन अब अस्र अव्वले वक़्त पढ़ ली, हुईं तो दोनों अपने-अपने वक़्त में, फ़ेअ्ल व सूरत के ऐतबार से मिल गईं। इसी तरह मग़्रिब में देर की यहाँ तक कि शफ़क़ डूबने पर आई, उस वक़्त पढ़ी, उधर फारिग़ हुए कि शफ़क़ डूब गई, इशा का वक़्त हो गया वह पढ़ ली।

दो नमाज़ों को ऐसा मिलाना मर्ज़ और ज़रूरते सफ़र के उज़्र से बिला शुबह जाइज़ है हमारे उलमाए किराम भी उसकी रुख़्सत देते हैं।

★ जमा वक़्ती : जिसे जमा हक़ीक़ी भी कहते हैं।

इस जमा के यह मानी हैं कि एक नमाज़ दूसरी के वक़्त में पढ़ी जाए।

जिसकी दो सूरतें हैं।

जमा तक़्दीम : वक़्त की नमाज़ के साथ बग़ैर फसल के पिछले वक़्त की नमाज़ पेशगी पढ़ लें, मसलन वक़्ते ज़ुहर में नमाज़े ज़ुहर के साथ नमाज़े अस्र पढ़ लेना, या वक़्ते मग़्रिब के साथ इशा की नमाज़ पढ़ लेना।

जमा ताख़ीर : पहली नमाज़ को क़स्दन उठा रखें कि जब उसका वक़्त निकल जाएगा पिछली नमाज़ के वक़्त में उसको अदा करेंगे, जैसे नमाज़े ज़ुहर को वक़्त अस्र के लिए मुअख़्ख़र करे फिर

अस्र के वक़्त में ज़ुहर व अस्र दोनों को एक साथ पढ़े, मग़्रिब को वक़्त इशा तक मुअख़्ख़र करे फिर इशा के वक़्त में दोनों को एक साथ मिला कर या जुदा करके अदा करे।

यह दोनों सूरतें बहालते इख़्तियार सिर्फ़ हुज्जाज को, सिर्फ़ हज में, सिर्फ़ अस्र अरफ़ा व मग़्रिब मुज़्दलिफ़ा में जाइज़ हैं, ज़ुहर व अस्र में जमा तक़्दीम है और मग़्रिब व इशा में जमा ताख़ीर।

उनके सिवा कभी किसी शख़्स को किसी हालत में, किसी सूरत में जमा वक़्ती की बिल्कुल इजाज़त नहीं, अगर जमा तक़्दीम करेगा नमाज़ अख़ीर महज़ बातिल व ज़ाए व नाकारा जाएगी, जब उसका वक़्त आए फ़र्ज़ होगी, न पढ़ेगा ज़िम्मे पर रहेगी, और जमा ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा, क़स्दन नमाज़ क़ज़ा कर देने वाला ठहरेगा अगरचे दूसरे वक़्त में पढ़ने से फ़र्ज़ सर से उतर जाएगा।

यह मज़हब मुहज़्ज़ब की तफ़्सील है और उसी पर कुरआन व हदीस के दलाइले नातिक़ हैं बल्कि औक़ाते नमाज़ का मस्अला मुत्तफ़क़ अलैहा है, हर मुसलमान जानता है कि नमाज़ को दानिस्ता क़ज़ा कर देना बिला शुबह हराम है, तो जिस तरह सुबह या इशा क़स्दन न पढ़नी कि ज़ुहर या फ़ज्र के वक़्त पढ़ लेंगे हराम क़तई है। यूंहीं ज़ुहर या मग़्रिब अमदन न पढ़नी कि अस्र या इशा के वक़्त अदा कर लेंगे हराम होना लाज़िम है। और वक़्त से पहले तो हुर्मत दरकनार नमाज़ ही बेकार होगी जैसे कोई आधी रात से सुबह की नमाज़, या पहर दिन चढ़े से ज़ुहर पढ़ रखे क़तअन न होगी। यूंहीं जो ज़ुहर के वक़्त अस्र या मग़्रिब के वक़्त इशा निबटा ले उसका भी न होना वाजिब, जिन अहादीस में हुज़ूर पुर–नूर सलवातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह से दो नमाज़ों को मिला कर पढ़ना मन्क़ूल व मरवी है उनमें सराहतन वही जमा सूरी मुराद व मज़्कूर है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरह में ज़ुहर व अस्र को बग़ैर ख़ौफ़ व सफर के जमा फरमाया। (त, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

अबू अज़्ज़ुबैर कहते हैं मैंने सईद से पूछा कि हुज़ूर ने ऐसा क्यों किया, उन्होंने कहा मैंने यही सवाल इब्ने अब्बास से किया था तो उन्होंने फरमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ऐसा इसलिए किया ताकि हुज़ूर की उम्मत हरज में न पड़ जाए। यानी हुज़ूर ने उम्मत की आसानी व सहूलत के लिए ऐसा किया। (त, अबू अज़्ज़ुबैर)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर व अस्र और मग़्रिब व इशा को मदीने में जमा फरमाया उसमें न किसी दुश्मन वग़ैरह का ख़ौफ़ था न बारिश की शिद्दत थी। (त, तिर्मिज़ी)

और एक रिवायत में है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने चार नमाज़ों को जमा फरमाया वह जमा सूरी थी कि हर नमाज़ अपने–अपने वक़्त में हुई यानी ज़ुहर आख़िरे वक़्त में और अस्र इब्तिदाए वक़्त में, इसी तरह मग़्रिब को आख़िर वक़्त में और इशा को अव्वले वक़्त में अदा फरमाया। (मुरत्तिब)

"बाज़ सहाबा से भी जमा सूरी के तौर पर नमाज़ें अदा करना मरवी है।" (मुरत्तिब)

नाफ़े फरमाते हैं अब्दुल्लाह बिन उमर अपनी एक ज़मीन को तशरीफ़ लिए जाते थे किसी ने आ कर कहा आपकी ज़ौजा सफ़ीया बिन्ते अबी उबैद अपने हाल में मश्ग़ूल हैं शायद ही आप उन्हें

ज़िन्दा पाएँ, यह सुन कर बसुरअत चले और उनके साथ एक मर्द कुरैशी था, सूरज डूब गया और नमाज़ न पढ़ी और मैंने हमेशा उनकी आदत यही पाई थी कि नमाज़ की मुहाफ़िज़त फरमाते थे, जब देर लगाई मैंने कहा नमाज़, ख़ुदा आप पर रहम फरमाए मेरी तरफ़ फिर करो देखा और आगे रवाना हुए, जब शफ़क़ का आख़िर हिस्सा रहा उतर कर मग़्रिब पढ़ी फिर इशा की तक्बीर इस हाल में कही कि शफ़क़ डूब चुकी थी, उस वक़्त इशा पढ़ी फिर हमारी तरफ़ मुँह करके कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को जब सफर में जल्दी होती ऐसा ही करते। (निसई)

इमाम नाफ़े फरमाते हैं राहे मक्का में इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने जब शफ़क़ डूबने के क़रीब हुई उतर कर मग़्रिब पढ़ी और शफ़क़ डूब गई अब इशा पढ़ी फिर हमारी तरफ़ मुँह करके कहा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ ऐसा ही करते थे जब चलने में जल्दी या कोशिश होती थी।

(निसई, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 232 ता 234, 239, 257)

दो नमाज़ों को जमा करने का गुनाह :

अमीरुल–मुमिनीन इमामुल–आदिलीन उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम आफ़ाक़ में फरमान वाजिबुल–अज़आन नाफ़िज़ फरमाए कि कोई शख़्स दो नमाज़ें जमा करने न पाए, और उनमें इरशाद फरमा दिया कि एक वक़्त में दो नमाज़ें मिलाना गुनाहे कबीरह है।

(मुअत्ता इमाम मुहम्मद)

हज़रत अबू क़तादा अदवी रज़ि अल्लाहु आला अन्हु फरमाते हैं मैंने अमीरुल–मुमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु का शिक़्क़ा व फरमान सुना कि तीन बातें कबीरह गुनाहों से हैं।

1. दो नमाज़ें जमा करना।
2. जिहाद में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागना।
3. और किसी का माल लूट लेना।

(किताबुल–आसार इमाम मुहम्मद, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 327, 328)

अज़ान व इक़ामत के अहकाम

औक़ाते नमाज़ की मालूमात के लिए अज़ान मुक़र्रर की गई उसके ज़रिया लोगों को नमाज़ की इत्तिला होती है अज़ान जहाँ एक एलान है वहीं ज़िक्रे इलाही भी है, अहादीस में अज़ान की फ़ज़ीलत इरशाद हुई और उस पर सवाबे अज़ीम की बशारत व ख़ुशख़बरी दी गई है। (मुरत्तिब)

अज़ान से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

★ मस्जिद में पाँचों वक़्त जमाअत से पहले अज़ान सुन्नते मुअक्कदा क़रीब बवाजिब है और उसका तर्क बहुत बुरा, यहाँ तक कि हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फरमाया अगर किसी शहर के लोग अज़ान देना छोड़ दें तो मैं उन पर जिहाद करूंगा।

★ शहर में अगर कुछ लोग मकान या दुकान या मैदान में अज़ान न कहीं तो हरज नहीं। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया मुहल्ला की अज़ान हमें किफ़ायत करती है, यूंही मुसाफ़िर को तर्के अज़ान की इजाज़त है लेकिन अगर इक़ामत भी तर्क करेगा तो मक्रूह है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 424)

मुअज़्ज़िन के लिए दुआए मग़्फ़िरत :

मुअज़्ज़िन को जो फ़ज़्ल व शर्फ़ हासिल है वह फ़ज़ीलत अज़ान के सबब से है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : अज़ान की आवाज़ जहाँ तक जाती है मुअज़्ज़िन के लिए इतनी ही वसी मग़्फ़िरत आती है और जिस तर व ख़ुश्क चीज़ को उसकी आवाज़ पहुँचती है अज़ान देने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करती है। (मुसनद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि अज़ान बाइसे मग़्फ़िरत है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 551)

अज़ान दाफ़े अज़ाब है :

अज़ान के सबब से अज़ाबे इलाही टल जाता है और रहमते इलाहिया का नुज़ूल होता है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब किसी गाँव में या जहाँ कहीं अज़ान कही जाती है वह जगह उस दिन अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ हो जाती है और वह जगह उसके मुशाहिद–ए–क़ुर्बत में होती है।

(त, तबरानी मआजीमे सलासा, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 552)

अज़ान दाफ़ेअ् वहशत व ग़म है :

अज़ान दाफ़े वहशत व बाइसे इत्मीनाने क़ल्ब है कि वह ज़िक्रे ख़ुदा है, ज़िक्रे ख़ुदा से दिल चैन पाते हैं।

हदीस में है हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जन्नत से हिन्दुस्तान में उतरे उन्हें घबराहट हुई तो जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उतर कर अज़ान दी। (अबू नईम, इब्ने असाकिर)

अमीरुल–मुमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम फरमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ग़मगीन देखा इरशाद फरमाया ऐ अली मैं तुझे ग़मगीन पाता हूँ, अपने किसी घर वाले से कह कि तेरे कान में अज़ान कहे, अज़ाने ग़म व परेशान की दाफ़े है। (मुसनदुल–फिर्दौस)

मौला अली और मौला अली तक जिस क़द्र इस हदीस के रावी हैं सबने फरमाया हमने उसे तजरबा किया तो ऐसा ही पाया। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 553)

मस्जिद में तलबे बाराँ वग़ैरह के लिए अज़ान कैसी है :

अज़ान चूंकि नमाज़ के लिए ऐलान है इसलिए मस्जिद के अन्दर वक़्ती अज़ान कहना मक्रूह है मगर जो अज़ान तलबे बारिश, या दाफ़े वबा की ग़रज़ से होती है वह जाइज़ है क्योंकि वह अज़ान बनीयत एलान व अज़ान और लोगों को बुलाने की नीयत से नहीं होती बल्कि वह बनीयत ज़िक्र होती है और ज़िक्र मस्जिद में जाइज़ है फिर भी औला यह है कि बैरूने मस्जिद फ़सील वग़ैरह पर हो। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 386)

अज़ाने ख़ुत्बा :

ख़ुत्बा जुमा के वक़्त जो अज़ान सानी ख़तीब के सामने होती है वह मस्जिद के अन्दर न दी जाए कि मस्जिद के अन्दर अज़ान देना मक्रूह है, ख़तीब के सामने तो हो मगर मस्जिद के अन्दर न हो बल्कि ख़ारिज मस्जिद में हो, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और ख़ुलफ़ा व सहाबा रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम का यही तरीक़ा रहा। सलफ़े सालेहीन और अइम्म–ए–किराम का इसी पर अमल रहा जो उसका ख़िलाफ़ करे वह अह्ले हक़ की पैरवी से मुँह मोड़ता है।(मुरत्तिब)

ख़ुतब–ए–जुमा के वक़्त अज़ान सानी से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माना अक़्दस में यह अज़ान मस्जिद से बाहर दरवाज़े पर होती थी।

हदीस में है जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जुमा के दिन मिंबर पर तशरीफ़ रखते तो हुज़ूर के सामने मस्जिद के दरवाज़े पर अज़ान होती और ऐसा ही अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के ज़माने में। (अबू दाऊद)

और कभी मन्क़ूल नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या ख़ुलफ़ाए राशिदीन ने मस्जिद के अन्दर अज़ान दिलवाई हो, अगर उसकी इजाज़त होती तो बयाने जवाज़ के लिए कभी ऐसा ज़रूर फरमाते।

हदीस में लफ़्ज़ "बैय्यिन यदैहि" आया है जिसके मानी यह हैं कि ख़तीब के सामने अज़ान होती थी। बाज़ लोग उस से यह समझते हैं कि मस्जिद के अन्दर ख़तीब के सामने अज़ान होती थी।

उस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं कि :

★ उस से मस्जिद के अन्दर अज़ान होना समझ लेना ग़लत है, क्योंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के चेहर–ए–अनवर के मुक़ाबिल मस्जिद के दरवाज़े पर होती थी, बस इसी क़द्र "बैना यदैहे" के लिए दरकार है। फ़िक़्हे हन्फ़ी की मोतमद व मशहूर किताबों में मस्जिद के अन्दर अज़ान को मना फरमाया और मक्रूह लिखा है।

★ बाज़ किताब में तस्रीह है कि अज़ाने सानी जुमा भी मस्जिद के बाहर ही होना मुताबिक़ सुन्नत है, तो बिला शुबह मस्जिद के अन्दर होना ख़िलाफ़े सुन्नत है।

मक्का मुअज़्ज़मा में यह अज़ान किनार–ए–मताफ़ पर होती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माना अक़्दस में मस्जिदुल–हराम शरीफ़ मताफ़ ही तक थी। तो किनार–ए–मताफ़ बैरून मस्जिद व महल अज़ान था। और जब मस्जिद बढ़ा ली जाए तो पहले जो जगह अज़ान या वुज़ू के लिए मुक़र्रर थी बदस्तूर मुस्तसना रहेगी, इसलिए अगर मस्जिद बढ़ा कर

कुवाँ अन्दर कर लिया वह बन्द न किया जाएगा जैसे ज़मज़म शरीफ़, हालाँकि मस्जिद के अन्दर बनाना हरगिज़ जाइज़ नहीं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 404ए 405)

अह्दे रिसालत में अज़ाने ख़ुतबा :

अज़ाने ख़ुतबा के मस्अला को एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू क़द्रे तफ़सील से यूं बयान फरमाते हैं :

ज़माना अक़्दस हुज़ूरे सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में सिर्फ़ एक अज़ान होती थी, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो हुज़ूर के सामने मवाजेह अक़्दस में मस्जिद करीम के दरवाज़ा पर।

ज़माना अक़्दस में मस्जिद शरीफ़ के तीन दरवाज़े थे।

★ एक मश्रिक़ को जो हुजरा शरीफ़ा के मुत्तसिल था जिसमें से हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाते, उसके सिम्त पर अब बाबे जिब्रील है।

दूसरा मग़्रिब में जिसकी सिम्त पर अब बाबुर्रहमत है।

★ तीसरा शुमाल में जो ख़ास महाज़ी मिंबर अतहर था, उस दरवाज़े पर अज़ाने जुमा होती थी कि मिंबर सामने भी हुई और मस्जिद से बाहर भी।

अज़ान सानी की इब्तिदा :

ज़माना सिद्दीक़े अकबर व उमर फारूक़ व इब्तिदाए ख़िलाफ़त उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम में यही एक अज़ान होती रही, जब लोगों की कसरत हुई और शताबी हाज़िरी में क़द्रे कुसल वाक़े हुआ अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने एक अज़ान शुरू ख़ुतबा से पहले बाज़ार में दिलवानी शुरू की।

मस्जिद के अन्दर अज़ान देने का हुक्म :

मस्जिद के अन्दर अज़ान का होना अइम्मा ने मना फरमाया और मक्रूह लिखा है और ख़िलाफ़े सुन्नत है, यह न ज़माना अक़्दस में था, न ज़माना ख़ुलफ़ाए राशिदीन में, न किसी सहाबी की ख़िलाफ़त में, न तहक़ीक़ मालूम कि यह बिदअत कब से ईजाद हुई, न हमारे ज़िम्मा उसका जानना ज़रूर। बाज़ कहते हैं कि हिशाम बिन अब्दुल–मलिक मरवानी बादशाह ज़ालिम की ईजाद है, अल्लाह बेहतर जानता है।

बहरहाल जबकि ज़माना रिसालत व ख़िलाफ़तेहा–ए–राशिदा में न थी और हमारे अइम्मा की तस्रीह है कि मस्जिद में अज़ान न हो, मस्जिद में अज़ान मक्रूह है, तो हमें सुन्नत इख़्तियार करना चाहिए, बिदअत से बचना चाहिए, उस तहक़ीक़ात से क्या काम कि सुन्नत पहले किस ने बदली। अल्लाह तआला हमारे भाईयों को तौफ़ीक़ दे कि अपने नबी करीम अलैहि अफ़ज़लुस्सलाते वत्तस्लीम की सुन्नत और अपने फ़ुक़हाए किराम के अह्काम पर आमिल हों और उनक सामने रिवाज की आड़ न लें। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स० 409)

मस्जिद के अन्दर अज़ान होना साबित नहीं :

अज़ाने ख़ुतबा से मुतअल्लिक़ एक सवाल के जवाब में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी फरमाते हैं :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम से मस्जिद के अन्दर अज़ान दिलवाना कभी एक बार का भी साबित नहीं, जो लोग उसका दावा करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम पर इफ़्तरा करते हैं।

हिशाम से भी उस अज़ान का मस्जिद के अन्दर दिलवाना हरगिज़ साबित नहीं, अल्बत्ता पहली अज़ान की निस्बत बाज़ ने लिखा है कि उसे हिशाम मस्जिद की तरफ़ मुन्तक़िल कर लाया, और उसके भी यह मानी नहीं कि मस्जिद के अन्दर दिलवाई, बल्कि अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बाज़ार में पहली अज़ान दिलवाते थे, हिशाम ने मस्जिद के मनारा पर दिल्वाई, रही यह दूसरी अज़ान ख़ुतबा, उसकी निस्बत तस्रीह है कि हिशाम ने उसमें कुछ तग़ैयुर न किया, इसी हालत पर बाक़ी रखी जैसे ज़माना रिसालत व ज़माना ख़िलाफ़त में थी।

फ़ासिक़ व ज़ालिम का क़ौल व फ़ेअ्ले हुज्जत नहीं :

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल–बाक़ी ज़रक़ानी शरह मवाहिब शरीफ़ में फरमाते हैं :

जब उस्मान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हुए अज़ान ख़ुतबा से पहले एक अज़ान बाज़ार में एक मकान की छत पर दिलवाई फिर इस पहली अज़ान को हिशाम मस्जिद की तरफ़ मुन्तक़िल कर लाया, उसके मस्जिद में होने का हुक्म दिया, और दूसरी कि ख़तीब के मिंबर पर बैठने के वक़्त होती है वह ख़तीब के मवाजा में की, यानी जहाँ हुआ करती थी वहीं बाक़ी रखी, इस अज़ान सानी में हिशाम ने कोई तब्दीली न की, बख़िलाफ़ बाज़ार वाली अज़ान अव्वल के कि उसे मस्जिद की तरफ़ मनारा पर ले आया।

फिर उस से क्या हुआ, ग़रज़ हिशाम बेचारे से भी हरगिज़ उसका सुबूत नहीं कि उसने अज़ान ख़ुतबा मस्जिद के अन्दर मिंबर के बराबर कहलवाई हो, जैसे अब कही जाने लगी उसका कुछ पता नहीं कि किस ने यह ईजाद निकाली, और अगर हिशाम से सुबूत होता भी तो उसका क़ौल व फ़ेअ्ल किया हुज्जत था वह एक मरवानी ज़ालिम बादशाह है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बेटे, इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पोते, इमाम ज़ैनुल–आबेदीन के साहबज़ादे, इमाम बाक़र के भाई सैयदना इमाम ज़ैद बिन अली बिन हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को शहीद कराया, सूली दिलवाई और उस पर यह शदीद ज़ुल्म कि नअ्शे मुबारक को दफ़न न होने दिया, बरसों सूली ही पर ही, जब हिशाम मर गया तो नअ्श मुबारक दफन हुई। उन बरसों में बदन मुबारक के कपड़े गल गये थे क़रीब था कि बेसतरी हो, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने मकड़ी को हुक्म फरमाया कि उसने जिस्मे मुबारक पर ऐसा जाला तान दिया कि बजाए तहबन्द हो गया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बाज़ सालेहीन ने देखा कि इमाम मज़्लूम ज़ैद शहीद रज़ि अल्लाह तआला अन्हु की सूली से पुश्ते अक़्दस लगाए खड़े हैं और फरमाते हैं यह कुछ किया जाता है मेरे बेटों के साथ, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत के ख़िलाफ़ ऐसे ज़ालिम की सुन्नत पेश करना और फिर इमाम आज़म वग़ैरह अइम्मा पर उसकी तोहमत धरना कि उन इमामों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत छोड़ कर ज़ालिम बादशाह की सुन्नत क़बूल कर ली, कैसा सरीह ज़ुल्म और अइम्मा किराम की शान में कैसी बड़ी गुस्ताख़ी है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला पनाह दे।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 413,414)

अज़ान ख़ुतबा बुलन्द आवाज़ से कहना :

आजकल कुछ लोगों में यह राइज है कि जुमा की अज़ान अव्वल बुलन्द आवाज़ से कहते हैं और अज़ान सानी पस्त आवाज़ से, हालाँकि दोनों अज़ानों को बुलन्द आवाज़ ही से कहना चाहिए।

(मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में तहरीर फरमाते हैं :

दोनों अज़ानें पूरी आवाज़ से ख़ूब बुलन्द कही जाएं जिस तरह अज़ान में सुन्नत है, आजकल जो अवाम दूसरी अज़ान को कि ख़ुतबा के वक़्त होती है पस्त आवाज़ से मिस्ल तक्बीर के कह लेते हैं महज़ जिहालत है उस से सुन्नत अदा नहीं होती।

असल अज़ान ज़माने–ए–अक़्दस हुज़ूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व ज़माना सिद्दीक़े अकबर व फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा में यही थी। पहली अज़ान अमीरुल–मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ाइद फरमाई।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 389)

अज़ान का जवाब देना :

जब अज़ान की आवाज़ आए तो उसे बग़ौर सुने और उसका जवाब दे, उसके जवाब में उन्हें कलिमात अज़ान को दुहराए। (मुरत्तिब)

हय्या अलस सला हय्या अलल फ़लाह लाहोला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि दोनों के जवाब में लाहोला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि कहना चाहिये और बाज़ अव्वल के जवाब में यही लाहोला और दोम के जवाब में माशाअल्लाह काना वमा लम यशावलकुम यकुम कहते हैं। और अफ़ज़ल यह है कि हय्या अलस सलाह के जवाब में कहे हय्या अलससलाति लाहोला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह और हय्या अललफ़लाह के जवाब में कहे हय्या अललफ़लाहि लाहोला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला माशाअल्लाहु काना वमा लम यशालम यकुम।

अज़ान के बाद दुआ :

अज़ान व इक़ामत के बीच में जो दुआ की जाए वह कुबूल होती है इसलिए अज़ान के बाद दुआ पढ़ने का हुक्म आया है, वह दुआ यह है :

अल्लाहुम्मा रब्बा हारिहिज़ दावते दावतित तामते वस्सलाते क़यामति आति मुहम्मदनी वसीलता वल फ़दीलता वद दराजता वफ़ीअता वबअसहो मक़ामम महमूदनिल लज़ी वअतहु इन्नाका लातुख़ लेफ़ुल मिआद।

अज़ान के बाद सलात कहना :

सलात कहना अज़ान के बाद नमाज़ का एक ऐलान है उलमाए मुतअख़्ख़ेरीन ने उसे जाइज़ क़रार दिया चूंकि लोगों से दीन के मुआमले में ग़फ़लत व सुस्ती होने लगी इसलिए बरवक़्त उन्हें जमाअत की इत्तिला के लिए उसे राइज किया गया। जहाँ पर लोग सलात सुन कर आने के आदी हैं वहाँ ज़रूर कही जाए और जहाँ लोग अज़ान ही के बाद जमा हो जाते हैं वहाँ पर न उसे कहने की हाजत है न उसे रिवाज देने की ज़रूरत उर्फ़ व मामूल के मुताबिक़ सलात के लिए जो अल्फ़ाज़ मुक़र्रर हो जाएं वह दुरुस्त हैं। (मुरत्तिब)

जवाज़े सलात के सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

सलात कहने को फ़िक़्ह में तस्वीब कहते हैं, यानी मुसलमानों को नमाज़ की इत्तिला अज़ान से देकर फिर दोबारा इत्तिला देना, और वह शहरों के उर्फ़ पर है, जहाँ जिस तरह इत्तिला मुक़र्रर राइज हो वही तस्वीब है ख़्वाह आम तौर पर हो जैसे सलात कही जाती है, या ख़ास तरीक़ा पर मसलन किसी से कहना अज़ान हो गई, या जमाअत खड़ी होती है, या इमाम आ गये, या कोई फ़ेअ़्ल, या क़ौल ऐसा जिस में दोबारा इत्तिला देना हो, वह सब तस्वीब है और उसका और सलात का एक हुक्म

है यानी जाइज़ है। जिसकी इजाज़त से कुतुब मज़हब माला माल हैं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 379)

तस्वीब (सलात) से मुतअल्लिक़ एक मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मुतअख़्ख़िरीन उलमा ने तस्वीब को जाइज़ कहा है और तहक़ीक़ यह है कि वहाँ के नमाज़ियों की हालत व मस्लेहत पर नज़र की जाए अगर वह लोग अज़ान सुन कर ख़ुद जमा हो जाते हैं तो तस्वीब हरगिज़ न कही जाए कि उन से यह आदते हसना छुड़ा कर इंतिज़ार तस्वीब का ख़ूगर कर देना होगा और जहाँ ऐसा नहीं बल्कि उसकी हाजत और उसके फ़ेअ्ल में मस्लेहत है वहाँ कही जाए। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 390)

ईदैन में अस्सलातु जामेअतुन कहना :

ईदैन में सलात कहने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

ईदैन में अस्सलातु जामेअतुन बआवाज़ बुलन्द दोबारा पुकारना मुस्तहब है। इसी तरह सिवाए मग़्रिब के हर नमाज़ में सलात पुकारना यानी दोबारा एलान करना अइम्मा मुतअख़्ख़ेरीन ने मुस्तहब रखा है। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 394)

इक़ामत के मसाइल :

जो अज़ान के कलिमात हैं वही इक़ामत के कलिमात हैं हाँ इक़ामत में हैया अलल–फ़लाह के बाद क़द क़ामतिस्सलात दो बार कहें, अज़ान व इक़ामत में फ़र्क़ यह है कि अज़ान के कलिमात ठहर–ठहर कर कहते हैं और तकबीर के कलिमात जल्दी–जल्दी, अगर उसके ख़िलाफ़ होगा तो दोनों की सुन्नत अदा न होगी। अज़ान व इक़ामत के दर्मियान कुछ फ़ासिला व वक़्फ़ा होना चाहिए। (मुरत्तिब)

अज़ान कहते ही फ़ौरन इक़ामत कह देना मुतलक़न सब नमाज़ों में मक्रूह है।

हदीस में है हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया : अज़ान ठहर–ठहर कर कहा करो और तकबीर जल्द–जल्द और दोनों में इतना फासिला रख कि खाने वाला खाने और पीने वाला पीने और ज़रूरत वाला क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हो जाए। (तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 463)

इक़ामत के वक़्त खड़ा रहने की कराहत :

खड़े हो कर तकबीर सुनना मक्रूह है यहाँ तक कि उलमा हुक्म फरमाते हैं कि जो शख़्स मस्जिद में आया और तक्बीर हो रही है वह उसके तमाम तक खड़ा न रहे बल्कि बैठ जाए यहाँ तक कि मुकब्बिर हय्या अलल–फ़लाह तक पहुँचे उस वक़्त खड़ा हो।

यह इस सूरत में है कि इमाम भी वक़्ते तक्बीर मस्जिद में हो और अगर वह हाज़िर नहीं तो मुअज़्ज़िन जब तक उसे आता न देखे तक्बीर न कहे, न उस वक़्त तक कोई खड़ा हो, उसकी दलील यह हदीस है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि तुम लोग खड़े न हो यहाँ तक कि मुझे देख लो। (त, बुख़ारी व मुस्लिम)

फिर जब इमाम आए और तक्बीर शुरू हो, उस वक़्त दो सूरतें हैं :

1. अगर इमाम सफ़ों की तरफ़ से दाख़िल मस्जिद हो तो जिस सफ़ से गुज़रता जाए वही सफ़ खड़ी होती जाए।

2. और अगर सामने से आए तो देखते ही सब खड़े हो जाएं।

और अगर ख़ुद इमाम ही तक्बीर कहे तो जब तक पूरी तक्बीर से फ़ारिग़ न हो ले मुक़्तदी बिल्कुल न खड़े हों बल्कि अगर उसने तक्बीर मस्जिद से बाहर कही तो फ़राग़ पर भी खड़े न हों, जब वह मस्जिद में क़दम रखे उस वक़्त क़्याम करें। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 391)

तक्बीर से पहले दरूद पढ़ना :

अज़ान व इक़ामत से पहले दरूद पढ़ने में हरज नहीं बशर्तेकि मुत्तसिलन न हो और दरूद ख़्वानी की, आवाज़, इक़ामत की आवाज़ से ख़ूब मुम्ताज़, मिली जुली बिल्कुल न हो। (मुरत्तिब)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

दरूद शरीफ़ इक़ामत से पहले पढ़ने में हरज नहीं मगर इक़ामत से फ़स्ल चाहिए या दरूद शरीफ़ की आवाज़, आवाज़ इक़ामत से ऐसी जुदा हो कि इम्तियाज़ है और अवाम को दरूद शरीफ़ जुज़्ए इक़ामत न मालूम हो। (फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 395)

ग़ैर मुअज़्ज़िन का तक्बीर कहना :

मुअज़्ज़िन के अलावा दूसरा शख़्स अगर तक्बीर कहे तो नाजाइज़ नहीं हाँ अगर मुअज़्ज़िन हाज़िर हुआ और उसे गिरां गुज़रे तो ख़िलाफ़े औला है वरना इतना भी नहीं।

हदीस में है ज़्याद बिन हारिस सदाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी, मैंने अज़ान कही थी, बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने तक्बीर कहनी चाही फरमाया : क़बीला सदा का भाई इक़ामत कहेगा कि जो अज़ान दे वही तक्बीर कहे।

(शरह मआनियुल–आसार, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 383)

मुख़्लिस मुअज़्ज़िन का मक़ाम :

सवाब की ख़ातिर इख़्लास के साथ अज़ान देने वाला क़्यामत के दिन शहीदों की जमाअत में होगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सवाब समझ कर अज़ान देने वाला उस शहीद की तरह है जो अपने ख़ून में लथड़ा हो और जब वह मर जाता है तो अपनी क़बर में नहीं घूमता, बल्कि जन्नत में जहाँ चाहता है जाता है। (त, तबरानी)

दूसरी हदीस में है कि क़्यामत के दिन मुअज़्ज़िनों की गर्दनें लम्बी होंगी और वह अपनी क़बरों में नहीं घूमेंगे। यानी उनको जन्नत में हर जगह जाने की आज़ादी होगी।

(त, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 135)

अज़ाने क़ब्र के फ़वाइद व दलाइल :

मैयत को दफन करने के बाद क़ब्र पर अज़ान कहना जाइज़ व दुरुस्त है शरह मुतह्हर में उसकी कहीं पर कोई मुमानेअत वारिद नहीं हुई, अज़ाने क़ब्र से मुर्दे को सवालात क़ब्र के जवाब याद आते हैं और अगर अज़ाब हो तो अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ व कमी होती है, बल्कि उलमा ने उसको सुन्नत कहा है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने जिन दलाइल व बराहीन से क़ब्र पर अज़ान देने के मस्अला को मुदल्लल व मबरहन किया है उन से अह्ले इंकार ख़ामोश हो गये और उनका मुँह बन्द हो गया। उनके पेशकर्दा बाज़ दलाइल का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है। (मुरत्तिब)

उलमा–ए–दीन ने मैयत को क़ब्र में उतारते वक़्त अज़ान कहने को सुन्नत फरमाया, हक़ यह है कि उस अज़ान का जवाज़ यक़ीनी है हरगिज़ शरअ़ मुतह्हर से उसकी मुमानिअत पर कोई दलील नहीं और जिस अम्र से शरअ़ मना न फरमाए असलन मम्नूअ़ नहीं हो सकता। जाइज़ कहने वालों के लिए इसी क़द्र काफ़ी है, जो मुमानेअत का मुद्दई हो दलाइले शरईया से अपना दावा साबित करे।

पहली दलील :

वारिद है कि जब बन्दा क़ब्र में रखा जाता और सवाले नकीरैन होता है शैताने रजीम (कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला सदक़ा अपने महबूब करीम अलैहि अफ़्ज़लुस्सलात वत्तस्लीम का हर मुसलमान मर्द व ज़न को हयात व ममात में उसके शर से महफ़ूज़ रखे) वहाँ भी ख़लल अन्दाज़ होता और जवाब में बहकाता है।

एक रिवायत में है जब मुर्दे से सवाल होता है कि तेरा रब कौन है? शैतान उस पर ज़ाहिर होता और अपनी तरफ़ इशारा करता है कि मैं तेरा रब हूँ, इसलिए हुक्म आया कि मैयत के लिए जवाब में साबित क़दम रहने की दुआ करें। (नवादिरुल–उसूल)

वह हदीसें उसकी मुवेद हैं जिन में वारिद कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैयत को दफन करते वक़्त दुआ फरमाते, इलाही उसे शैतान से बचा, अगर वहाँ शैतान का कुछ दख़ल न होता तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यह दुआ क्यों फरमाते।

और सही हदीसों से साबित कि अज़ान शैतान को दफ़ा करती है।

★ जब मुअज़्ज़िन कहता है शैतान पीठ फेर कर गूज़ ज़िना भागता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

★ हदीस जाबिर से वाज़ेह कि छत्तीस मील तक भाग जाता है। (मुस्लिम)

और यह भी हुक्म आया है कि जब शैतान का खटका हो फौरन अज़ान कहो कि वह दफ़ा हो जाएगा। (तबरानी)

दूसरी दलील :

जब सअद बिन मआज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु दफन हो चुके और क़ब्र दुरुस्त कर दी गई, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम देर तक सुब्हानल्लाह फरमाते रहे और सहाबा किराम भी हुज़ूर के साथ कहते रहे, फिर हुज़ूर अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर फरमाते रहे और सहाबा भी हुज़ूर के साथ कहा किए, फिर सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! हुज़ूरे अव्वल तस्बीह, फिर तक्बीर क्यों फरमाते रहे, इरशाद फरमाया उस नेक मर्द पर उसकी क़ब्र तंग हुई थी यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने वह तक्लीफ़ उस से दूर की और क़ब्र कुशादा फरमा दी।

(मुसनद अहमद, तबरानी, बैहक़ी)

इस हदीस से साबित हुआ कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मैयत पर आसानी के लिए बाद दफन के क़ब्र पर अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर बार–बार फरमाया है, और यही कलिमा मुबारका अज़ान में छेः बार है तो क़ब्र पर अज़ान देना ऐन सुन्नत हुआ।

तीसरी दलील :

बिल–इत्तिफ़ाक़ सुन्नत और हदीसों से साबित और फ़िक़्ह में मुस्बत कि मैयत के पास हालते निज़अ् में कलिमा तैयबा ला इलाहा इल्लल्लाह कहते रहें कि उसे सुन कर याद हो।

हदीसे मुतवातिर में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अपने मर्दों को ला इलाहा इल्लल्लाह सिखाओ। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

अब जो निज़अ् में है वह मजाज़न मुर्दा है और उसे कलिम–ए–इस्लाम सिखाने की हाजत, कि ख़ात्मा उसी पाक कलिमे पर हो और शैताने लईन के भुलाने में न आए।

और जो दफन हो चुका हक़ीक़तन मुर्दा है और उसे भी कलिमा पाक सिखाने की हाजत, कि जवाब याद हो जाए और शैताने रजीम के बहकाने में न आए।

और बेशक अज़ान में यही कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह तीन जगह मौजूद, बल्कि उसके तमाम कलिमात जवाब नकीरैन बताते हैं।

उनके सवाल तीन हैं :

1. *मन रब्बुका।*

तेरा रब कौन है?

2. *मा दीनुका।*

तेरा दीन क्या है।

3. *मा कुन्ता तकूलु फ़ी हाज़र्रजुले।*

तो उस मर्द यानी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बारे में क्या एतक़ाद रखता था।

अब अज़ान की इब्तिदा में, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अश्हदु अन ला–इलाहा इल्लल्लाह, अश्हदु अन ला–इलाहा इल्लल्लाह, और आख़िर में, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला–इलाहा इल्लल्लाह, सवाल नम्बर एक मन रब्बुका का जवाब सिखाएंगे, उनके सुनने से याद आएगा कि मेरा रब अल्लाह है।

और अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, सवाल नम्बर तीन मा कुन्ता तकूलु फी हाज़र्रजुले, का जवाब तालीम करेंगे कि मैं उन्हें अल्लाह का रसूल जानता था।

और हैया अलस्सलाते, हैया अलल–फ़लाह सवाल नम्बर 2 के जवाब की तरफ़ इशारा करेंगे कि मेरा दीन वह था जिस में नमाज़ रुक्न व सुतून है।

तो बाद दफन अज़ान देना उस इरशाद की तामील है जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हदीस सही में फरमाया।

चौथी दलील :

हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जब आग देखो अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की बकसरत तकरार करो वह आग को बुझा देता है।

(इब्नुस्सुन्नी, इब्ने असाकिर)

दूसरी हदीस में है आग को तक्बीर से बुझा दो। (मुसनद अबू याला)

मुल्ला अली क़ारी उस हदीस की शरह में कि "हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़ब्र के पास देर तक अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर फरमाते रहे।" लिखते हैं :

अब यह अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहना ग़ज़बे इलाही के बुझाने को है इसलिए आग लगी देख कर देर तक तक्बीर मुस्तहब ठहरी।

वसीलतुन्नजात में मन्क़ूल है कि अह्ले क़ब्रिस्तान पर उस तक्बीर में हिक्मत यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि जब किसी जगह आग लगी देखो और वह तुम्हारे हाथ से बुझ न सके तो तक्बीर कहो कि इस तक्बीर की बरकत से आग बुझ जाएगी, जब अज़ाबे क़ब्र भी आग से है और तुम्हारे हाथ की रसाई वहाँ नहीं है तो तक्बीर कहना चाहिए ताकि मुर्दे दोज़ख़ की आग से छुटकारा पाएं।

पाँचवीं दलील :

हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के साथ एक जनाज़ा में हाज़िर हुआ, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जब उसे लहद में रखा कहा।

बिस्मिल्लाहे व फ़ी सबिलिल्लाह।

जब लहद बराबर करने लगे कहा।

इलाही उसे शैतान से बचा और अज़ाबे क़ब्र से अमान दे।

फिर फरमाया मैंने उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना।

(इब्ने माजा, बैहक़ी)

सहाबा किराम या ताबईने इज़ाम मुस्तहब जानते थे कि जब मैयत लहद में रखा जाए तो दुआ करे इलाही उसे शैताने रजीम से पनाह दे। अह्ले इल्म मुस्तहब जानते थे कि जब मैयत को दफन करें यूं कहें अल्लाह के नाम से और अल्लाह की राह में, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मिल्लत पर, इलाही उसे अज़ाबे क़ब्र, व अज़ाबे दोज़ख़ और शैताने मल्ऊन के शर से पनाह बख़्श।

इन हदीसों से जिस तरह यह साबित हुआ कि उस वक़्त शैताने रजीम का दख़ल होता है, यूं ही यह भी वोज़ह हुआ कि अज़ान दफ़ा शैतान की एक उम्दा तदबीर है, और यह भी साबित हुआ कि उसके दफ़अ़ की तदबीर सुन्नत है। कि दुआ नहीं मगर एक तदबीर।

छठी दलील :

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब दफन मैयत से फारिग़ होते क़ब्र पर वक़ूफ़ फरमाते और इरशाद करते अपने भाई के लिए इस्तिग़फ़ार करो और उसके लिए जवाबे नकीरैन में साबित क़दम रहने की दुआ मांगो कि अब उस से सवाल होगा।

(अबू दाऊद, हाकिम, बैहक़ी)

दूसरी रिवायत में है कि जब मुर्दा दफन हो कर क़ब्र दुरुस्त हो जाती, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़ब्र पर खड़े हो दुआ करते, इलाही हमारा साथी तेरा मेहमान हुआ और दुनिया अपने पसे पुश्त छोड़ आया, इलाही सवाल के वक़्त उसकी ज़ुबान दुरुस्त रख और क़ब्र में उस पर वह बला न डाल जिसकी उसे ताक़त न हो। (सुनन सईद बिन मन्सूर)

इन अहादीस और दलील पंजुम वग़ैरह से साबित कि दफन के बाद दुआ सुन्नत है।

सातवीं दलील :

किताबुल–अज़्कार में है, मुस्तहब है कि दफन से फारिग़ हो कर एक साअत क़ब्र के पास बैठें इतनी देर कि एक ऊंट ज़बह किया जाए और उसका गोश्त तक़्सीम हो और बैठने वाले कुरआन मजीद की तिलावत और मैयत के लिए दुआ और वअ़ज़ व नसीहत और नेक बन्दों के ज़िक्र व हिकायत में मशग़ूल रहें।

उसकी वजह सिर्फ़ यही है कि मैयत को नुज़ूले रहमत की हाजत है और इन उमूर में नुज़ूले रहमत है तो अज़ान बहुक्मे अहादीस मूजिब नुज़ूले रहमत व दफ़अ़ अज़ाब है क्योंकर जाइज़ व मुस्तहब न होगी।

(उनके अलावा और भी दलाइल हैं जिन्हें आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के ख़ालिस इल्मी अन्दाज़ में पेश फरमाया है जो अह्ले इल्म हज़रात पर मख़्फ़ी नहीं। (मुरत्तिब)

मैयत के लिए अज़ाने क़ब्र के फवाइद व बरकात :

अज़ान से मैयत को यह सात फाइदे हासिल होते हैं :

1. शैताने रजीम के शर से पनाह।
2. तकबीर की बदौलत अज़ाबे नार से अमान।
3. जवाब सवालात का याद आ जाना।
4. ज़िक्र अज़ान के बाइस अज़ाबे क़ब्र से नजात पाना।
5. ज़िक्रे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरकत से नुज़ूले रहमत।
6. अज़ान की बदौलत दफ़अ़ वहशत।

7. ज़वाले ग़म व हुसूले सुरूर व फ़रहत।

ज़िन्दों के लिए मुनाफ़े :

ज़िन्दों के लिए अज़ान में पन्द्रह मुनाफ़े हैं। सात तो वही जो मज़्कूर हुए और बाक़ी यह हैं :

8. मैयत के लिए दफ़ा शैतान की तदबीर से इत्तिबा सुन्नत।

9. आसानी जवाब की तदबीर से इत्तिबा सुन्नत।

10. क़ब्र के पास की दुआ से इत्तिबा सुन्नत।

11. नफ़अ़ मैयत के क़स्द से क़ब्र के पास तक्बीरें कह कर इत्तिबा सुन्नत।

12. मुतलक़ ज़िक्र के फवाइद मिलना, जिन से क़ुरआन व हदीस मालामाल हैं।

13. ज़िक्रे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सबब रहमतें पाना।

14. मुतलक़ दुआ के फ़ज़ाइल हाथ आना, जिसे हदीस में मग़्ज़े इबादत फरमाया :

15. मुतलक़ अज़ान के बरकात मिलना, जिन में मुन्तहाए आवाज़ तक मग़्फ़िरत और हर ख़ुश्क व तर के इस्तिग़फ़ार व शहादत और दिलों को सब्र व सुकून व राहत है।

एक अहमक़ाना सवाल का जवाब :

जुह्हाले मुन्केरीन यानी वह लोग जो अज़ाने क़ब्र के मुन्किर हैं यहाँ एतराज़ करते हैं कि अज़ान तो आलामे नमाज़ के लिए है, यहाँ कौन सी नमाज़ होगी जिसके लिए अज़ान कही जाती है? मगर यह उनकी जिहालत उन्हीं को ज़ेब देती है, वह नहीं जानते कि अज़ान में क्या क्या अग़राज़ व मनाफ़े हैं और शरअ़ मुतह्हर ने नमाज़ के सिवा किन–किन मक़ामात में अज़ान मुस्तहब फरमाई है।

अज़ान ग़म व फ़िक्र को दूर करने के लिए भी होती है।

वहशत व ख़ौफ़ ज़ाइल व दफ़ा करने के लिए।

★ बच्चे के कान में अज़ान दी जाती है।

★ तेज़ आंधी या ख़ौफ़नाक बारिश वग़ैरह हो।

उनके सिवा और भी दीगर मवाक़े पर अज़ानें दी जाती हैं।

बाज़ अहमक़ जाहिल बच्चे के कान की अज़ान से यह जवाब देते हैं कि उस अज़ान की नमाज़ तो बच्चा की मौत के बाद होती है। यानी नमाज़ जनाज़ा, यह अज़ान जो क़ब्र पर कहोगे। उसकी नमाज़ कहाँ है? बच्चा के कान की अज़ान को नमाज़े जनाज़ा की अज़ान बताना जैसी जिहालत फाहिशा है ख़ुद ज़ाहिर है, मगर उनका जवाब तुर्की–ब–तुर्की यह है कि नमाज़ जिस तरह सिर्फ़ क़याम से होती है जो अदना अफ़्आल नमाज़ है, एक नमाज़ रोज़े महशर सिर्फ़ सुजूद से होगी जो आला अफ़्आल नमाज़ है जिस दिन कश्फ़ साक़ होगा और मुसलमान सज्दे में गिरेंगे, मुनाफ़िक़ सज्दा न कर सकेंगे, क़ब्र की अज़ान उस नमाज़ की अज़ान है।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 2, स0 545 ता 558)

तज्हीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा

जब कोई मुसलमान नेज़अ् में मुब्तला हो उसे इस्लामी तरीक़ा पर कलिमा तैयबा की तल्क़ीन की जाए, रूह निकलने के बाद तज्हीज़ व तक्फ़ीन का इंतिज़ाम हो, सुन्नत के मुताबिक़ तमाम उमूर अंजाम दिए जाएं फिर नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़न कर दिया जाए। मौत के बाद उस पर नौहा करना, चिल्ला कर रोना, कपड़े फाड़ना, चेहरा नोचना यह सब जाहलियत की बातें हैं इस्लाम ने इन क़बीह हरकात से मना फरमाया है हाँ बग़ैर आवाज़ के रोने और उसमें आंसू निकलने में कोई क़बाहत नहीं है। (मुरत्तिब)

नेज़अ् के वक़्त कलिमा तैयबा की तल्क़ीन :

जब आदमी नेज़अ् में मुब्तला हो तो उसे ला–इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन की जाए यानी उस में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी मिलाया जाए क्योंकि ला–इलाहा इल्लल्लाह से मुराद पूरा कलिमा तैयबा है। (मुरत्तिब)

तल्क़ीन और उसके तरीक़ा से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

दमे निज़अ् दो शैतान आदमी के दोनों पहलू पर आकर बैठते हैं, एक उसके बाप की शक्ल बन कर, दूसरा, माँ की, एक कहता है वह शख़्स यहूदी हो कर मरा, तू यहूदी हो जा कि यहूद वहाँ बड़े चैन से हैं, दूसरा कहता है वह शख़्स नसरानी गया, तू नसरानी हो जा कि नसारा वहाँ बड़े आराम से हैं।

उलमा फरमाते हैं : कि शैतान के इग़वा से बचाने के लिए निज़अ् वाले को तल्क़ीन का हुक्म हुआ।

तल्क़ीन का सबब यह है कि उस वक़्त शैतान आदमी का ईमान बिगाड़ने आता है, ला–इलाहा इल्लल्लाह से पूरा कलिमा तैयबा मुराद है।

फ़त्हुल–क़दीर में है कि : तल्क़ीन से मक़्सूद तअर्रुज़े शैतान के वक़्त ईमान का याद दिलाना है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपने अम्वात को ला–इलाहा इल्लल्लाह की शहादत याद दिलाए, और उस याद दिलाने की सूरत यह है कि उसकी निज़अ् में उसके पास ऐसी आवाज़ से कि वह सुने अश्हदु अन्ना ला इलाहा इल्लल्लाह व अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह पढ़ें।

मज्मउल–अनहर में है :

मैयत को शहादत सिखाएं, उसके अज़ीज़ों, दोस्तों पर लाज़िम है कि दोनों शहादतें उसके पास पढ़ें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसका अख़ीर कलाम ला–इलाहा इल्लल्लाह हो वह जन्नत में जाए। (मिश्कात)

★ बहरुर्राइक़ में है :

मैयत को शहादत की तल्क़ीन करें यूं कि उसके पास ला–इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह पढ़ें।

★ काफी शरह वाफी में है :

शहादत की तल्क़ीन करें और शहादत यह है कि अश्हदु अन्ना ला–इलाहा इल्लल्लाह व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मैयत को तल्क़ीने शहादत का हुक्म फरमाया है।

तल्क़ीन का एक तरीक़ा यह भी है कि ख़ुद उसके पास पूरा कलिमा पढ़ें कि वह सुन कर पढ़े, और यूं न कहें कि कह, और जब वह दोनों जुज़ कलिमा तैयबा के कह ले तो उस से दोबारा कहने का इसरार न करें कि कहीं उक्ता न जाए, हाँ अगर कलिमा पढ़ने के बाद कोई और बात उसने की तो फिर तल्क़ीन करें कि आख़िर कलाम ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हो।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 1,2)

गुस्ल मैयत का एक मस्अला :

लोगों में मशहूर यह है कि ज़ौजैन में से किसी एक का इंतिक़ाल हो जाए तो दोनों एक दूसरे के लिए अजनबी महज़ हो जाते हैं, मर्द, न औरत को देख सकता है, न छू सकता है, न जनाज़े को कन्धा दे सकता है, इसी तरह औरत भी मर्द को न देख सकती है, न छू सकती है वग़ैरह वग़ैरह।

(मुरत्तिब)

इस मस्अले की वज़ाहत करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रहू फरमाते हैं :

मर्द के बारे में यह मस्अला सही है कि वह औरत की वफ़ात के बाद उसे ग़ुस्ल न दे सकता, न उसके बदन को हाथ लगा सकता है कि मौत के सबब से औरत बिल्कुल महल्ले निकाह न रही, छूने का जवाज़ सिर्फ़ निकाह की बिना पर था, वरना ज़न व शौहर असल में महज़ अजनबी होते हैं, अब कि निकाह ज़ाइल हो गया छूने का जवाज़ भी जाता रहा, यानी ज़ौजा के इंतिक़ाल के बाद शौहर को उसका मुँह या बदन देखना जाइज़ है, क़ब्र में उतारना जाइज़ है, और जनाज़ा तो महज़ अजनबी तक उठाते हैं लिहाज़ा शौहर भी उठा सकता है, हाँ बग़ैर हाइल के उसके बदन को हाथ लगाना शौहर को नाजाइज़ होता है।

मर्द की वफ़ात के बाद औरत जब तक इद्दत में रहती है तो एक तरह से उसके निकाह में रहती है, इसलिए औरत को जब तक इद्दत में रहे शौहर मुर्दा का बदन छूना बल्कि उसे ग़ुस्ल देना भी जाइज़ रहता है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 16ए 96)

मर्द के लिए कफ़न सुन्नत :

मर्द के लिए तीन कपड़े सुन्नत हैं :

1. एक तहबन्द कि सर से पाँव तक हो।
2. कफ़्नी गर्दन की जड़ से पाँव तक।
3. और चादर कि उसके क़द से सर और पाँव दोनों तरफ़ इतनी ज़्यादा हो जिसे लपेट कर बांध सकें।

पहले चादर बिछाएं उस पर तहबन्द, फिर मैयत मस्नून का बदन एक कपड़े से साफ़ करें, फिर उस पर रख कर कफ़्नी, पहना कर तहबन्द लपेटें, पहले बाएं तरफ़, फिर दाहिनी तरफ़ लपेटें ताकि दाहिना हिस्सा बाएं के ऊपर रहे, फिर इसी तरह चादर लपेट कर ऊपर नीचे दोनों जानिब से बांध दें।

औरत के लिए कफ़न सुन्नत :

और औरत के लिए पाँच कपड़े सुन्नत हैं।

★ तीन यही।

मगर मर्द और औरत के लिए कफ़्नी में इतना फ़र्क़ है, कि मर्द की क़मीस अर्ज़ में मूंढों की तरफ़

चीरना चाहिए और औरत का तूल में सीने की जानिब।

★ चौथे ओढ़नी, जिसका तूल डेढ़ गज़ यानी तीन हाथ हो।

★ पाँचवाँ सीना बन्द, कि पिस्तान से नाफ़ बल्कि अफ़ज़ल यह है कि रानों तक हो।

पहले चादर और उस पर तहबन्द बदस्तूर बिछा कर कफ़्नी पहना कर तहबन्द पर लिटाएं, और उसके बाल दो हिस्से करके बालाए सीना कफ़्नी के ऊपर ला कर रखें, उसके ऊपर ओढ़नी सर से ओढ़ा कर बग़ैर लपेटे मुँह पर डाल दें, फिर तहबन्द और उस पर चादर बदस्तूर लपेटें और चादर इसी तरह दोनों सिम्त बांध दें, इन सबके ऊपर सीना बन्द बालाए पिस्तान से नाफ़ या रान तक बांधें, यह कफ़न सुन्नत है।

मर्द व औरत के लिए कफ़न किफ़ायत :

और कफन काफी इस क़द्र है।

★ कि मर्द के लिए दो कपड़े हों।

तहबन्द और चादर।

★ औरत के लिए तीन।

कफ़्नी व चादर, या तहबन्द और तीसरे ओढ़नी।

उसे कफन किफायत कहते हैं।

अगर मैयत का माल ज़ाइद और वारिस कम हों तो कफन सुन्नत अफ़ज़ल है और अक्स हो तो कफ़न किफ़ायत औला, और उस से कमी बहालत इख़्तियार जाइज़ नहीं, हाँ वक़्ते ज़रूरत जो मयस्सर आए, सिर्फ़ एक ही कपड़ा कि सर से पाँव तक हो मर्द व औरत दोनों के लिए बस है।

कफ़न के लिए सवाल करना :

जाहिल मुहताज जब उनका मूरिस मुहताज मरता है लोगों से पूरे कफन का सवाल करते हैं, यह हिमाक़त है, ज़रूरत से ज़्यादा सवाल हराम, और ज़रूरत के वक़्त कफ़न में एक कपड़ा काफी, बस इसी क़द्र माँगें, उस से ज़ाइद माँगना जाइज़ नहीं, हाँ उनको बे माँगे जो मुसलमान बनीयत सवाब पूरा कफन मुहताज के लिए देगा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला से पूरा सवाब पाएगा।

नाबालिग़ बच्चे का कफन :

नाबालिग़ अगर हद्दे शहवत को पुहँच गया है जब तो उनका कफन जवान मर्द व औरत की मिस्ल है।

और यह हुक्म यानी हद्दे शहवत को पहुँचना लड़के में बारह और लड़की मे नौ बरस की उम्र के बाद नहीं रुकता।

जो बच्चे इस उम्र व हालत को न पहुँचें उनमें अगर लड़के को एक और लड़की को दो कपड़ों में कफन दे दें तो कोई हरज नहीं, और लड़के को दो, लड़की को तीन दें तो अच्छा है। और दोनों को पूरा कफन मर्द व औरत का दें तो सबसे बेहतर है।

और जो बच्चा मुर्दा पैदा हुआ या कच्चा गिर गया उसे बहर तौर एक ही कपड़े में लपेट कर दफन कर देना चाहिए, कफन न दें। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स० 10)

कफ़न पर फूल डालना :

कफन के ऊपर फूलों की चादर डालने में शरअन बिल्कुल हरज नहीं, बल्कि नीयते हसन से हसन है, जैसे कुबूर पर फूल डालना कि वह जब तक तर हैं तस्बीह करते हैं उससे मैयत का दिल बहलता है और रहमत उतरती है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स० 12)

कफ़न पर अहद नामा वग़ैरह लिखना जाइज़ व नाफ़े :

★ हमारे उलमा–ए–किराम ने फरमाया कि मैयत की पेशानी या कफन पर अहदनामा लिखने से उसके लिए उम्मीद मग़्फ़िरत है।

★ इमाम ताऊस ताबई ने अपने कफन में अहदनामा लिखे जाने की वसीयत फरमाई और हस्बे वसीयत उनके कफन में लिखा गया।

★ हज़रत कसीर बिन अब्बास बिन अब्दुल–मुत्तलिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा के बेटे और सहाबी हैं ख़ुद अपने कफन पर कलिमा शहादत लिखा।

★ और ख़ुद हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो यह दुआ किसी परचा पर लिख कर मैयत के सीना पर कफ़न के नीचे रख दे उसे अज़ाबे क़ब्र न हो, न मुंकिर नकीर नज़र आएं। और वह दुआ यह है :

★ एक रिवायत में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो हर नमाज़ में सलाम के बाद यह दुआ पढ़े फ़रिश्ता उसे लिख कर मुहर लगा कर क़यामत के लिए उठा रखे, जब अल्लाह तआला उस बन्दे को क़ब्र से उठाए, फ़रिश्ता वह नविश्ता साथ लाए और निदा की जाए अहद वाले कहाँ हैं, उन्हें वह अहदनामा दे दिया जाए।

★ इमाम फ़क़ीह इब्ने अजील ने इसी दुआए अहदनामा की निस्बत फरमाया : जब यह लिख कर मैयत के साथ क़बर में रख दें तो अल्लाह तआला उसे सवाल नकीरीन व अज़ाबे क़बर से अमान दे।

★ यही इमाम फरमाते हैं जो यह दुआ मैयत के कफन में लिखे अल्लाह तआला क़यामत तक उस से अज़ाब उठा ले।

★ इमाम इब्ने हजर मक्की ने एक तस्बीह की निस्बत जिसे कहा जाता है कि उसका फ़ज़्ल, उसकी बरकत, मशहूर व मारूफ़ है, बाज़ उलमा–ए–दीन से नक़्ल किया कि उसे लिख कर मैयत के सीना और कफन के बीच में रख दे उसे अज़ाबे क़ब्र न हो, न मुंकिर नकीर उस तक पहुँचें और उस दुआ की शरह बहुत अज़्मत वाली है और वह चैन व राहत की दुआ है।

★ हज़रत बतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने इंतिक़ाल के क़रीब अमीरुल–मुमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से अपने ग़ुस्ल के लिए पानी रखवाया, फिर नहाएं, और कफन मंगा कर पहना और हुनूत की ख़ुशबू लगाई, फिर मौला अली को वसीयत फरमाई कि मेरे इंतिक़ाल के बाद कोई मुझे न खोले और इसी कफन में दफन फरमा दी जाएं, मैंने पूछा किसी और ने भी ऐसा किया, कहा हाँ कसीर बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने और उन्होंने अपने कफन के किनारों पर लिखा था "कसीर बिन अब्बास गवाही देता है कि ला–इलाहा इल्लल्लाह। यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि ला–इलाहा इल्लल्लाह, लिखा जाना अहदनामा की एक सूरत है। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, तबरानी, अबू नईम अलैह)

★ इमाम सफ़ार ने ज़िक्र फरमाया कि अगर मैयत की पेशानी, या अमामा, या कफन पर अहदनामा लिख दिया जाए तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे बख़्श दे और अज़ाबे क़ब्र से मामून करे।

★ दुर्रे मुख़्तार में है :

मुर्दे की पेशानी, या अमामा, या कफन पर अहदनामा लिखने से उसके लिए बख़्शिश की उम्मीद है, किसी साहब ने वसीयत की थी कि उनकी पेशानी और सीने पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिख दें, लिख दी गई, फिर ख़्वाब में नज़र आए, हाल पूछने पर फरमाया जब मैं क़ब्र में रखा गया, अज़ाब के फ़रिश्ते आए, जब मेरी पेशानी पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखी देखी, कहा तुझे अज़ाबे इलाही से अमान है। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 127 ता 129)

सअद बिन अबी वक़ास का कफ़न :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कि जिस्मे अक़्दस से जो कपड़ा मस हो जाए वह बाबरकत और मुअज़्ज़म हो जाता है और यह कि उस कपड़े को आग नहीं जला सकती जैसा कि एक दस्तर्ख़्वान का वाक़या मशहूर है, इसी वजह से बाज़ सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मस शुदह कपड़े में कफ़न देने को पसन्द फ़रमाया और बाज़ ने वसीयत भी की और बाज़ ने हुज़ूर से कफ़न के लिए कपड़ा माँग लिया। (मुरत्तिब)

इस क़िस्म के बाज़ वाक़ेआत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की तहरीर में मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

एक बीबी ने बहुत मेहनत से एक ख़ूबसूरत तहबन्द बन कर ख़िदमते अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में नज़्र किया हज़रत सैयदना सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उसे माँगा हालांकि ख़ुद हुज़ूर को उसकी ज़रूरत थी, हुज़ूर अज्वदुल-अज्वदैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अता फ़रमाया : सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने उन्हें मलामत की कि इस वक़्त इस इज़ार शरीफ़ के सिवा हुज़ूरे अक़्दस सल्वातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह के पास और तहबन्द न था और आप जानते हैं कि हुज़ूरे अकरमुल-करमा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कभी साइल को रद्द नहीं फ़रमाते, फिर आपने क्यों माँग लिया, उन्होंने कहा वल्लाह मैंने इस्तेमाल को न लिया, बल्कि इसलिए कि उसमें कफ़न दिया जाऊं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनकी इस नीयत पर इंकार न फ़रमाया, आख़िर उसी में कफ़न दिए गये।

(बुख़ारी, फ़तावा रज़्वीया, जिल्द 4, स० 129)

दुख़्तरे रसूल का कफ़न :

हुज़ूर पुर-नूर सल्वातुल्लाहे तआला व सलामुहू अलैह ने अपनी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब या हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के कफ़न में अपना तहबन्दे अक़्दस अता किया और ग़ुस्ल देने वाली बीवियों को हुक्म दिया कि उसे उनके बदन के मुत्तसिल रखें।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

उम्मे अतीया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि : जब हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की लड़की को ग़ुस्ल दे रहे थे हुज़ूर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तीन या पाँच बार ग़ुस्ल दो और पानी बेरी के पत्तों से जोश दिया हुआ हो, और आख़िर में कुछ काफ़ूर लगा देना, और जब ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हो जाओ तो मुझे बताना, हम फ़राग़त के बाद हुज़ूर को बताने लगे तो हुज़ूर ने अपना तहबन्द हम पर डाल कर फ़रमाया कि उसे उसके बदन से मिला कर रखो।

(त, बुख़ारी, मुस्लिम)

उलमा फ़रमाते हैं : यह हदीस मुरीदों को पीरों के लिबास में कफ़न देने की असल है।

फ़ातिमा बिन्ते असद का कफ़न :

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद वालिद-ए-माजिदा अमीरुल-मुमिनीन मौला अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को अपनी क़मीस अतहर में कफ़न दिया और इरशाद फ़रमाया कि मैंने उन्हें अपनी क़मीस मुबारक इसलिए पहनाई कि यह जन्नत के लिबास पहनें। (अबू नईम, दैलमी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं : कि जब वालिद-ए-अमीरुल-मुमिनीन अली हज़रत फातिमा बिन्ते असद का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपनी क़मीस मुबारक पहनाई और उनकी क़ब्र में लेटे, जब क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर दी गई तो बाज़ लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह हमने आपको वह बात करते हुए देखा जो आपने किसी के साथ न किया, हुज़ूर ने फरमाया कि मैंने उन्हें अपनी क़मीस इसलिए पहनाई ताकि यह जन्नत के लिबास पहनें और मैं उनकी क़ब्र में उनके साथ लेटा ताकि क़ब्र की तंगी उन पर कम हो जाए, अबू तालिब के बाद यही मुझ पर हुस्ने सुलूक करने वाली ख़ातून थीं। (त, अबू नईम मअ़रिफ़तुस्साहाब, मुसनदुल-फ़िर्दौस)

अमीर मुआविया का कफ़न :

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त वसीयत में फरमाया, मैं सोहबते हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से शर्फ़याब हुआ, हुज़ूर पुर-नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हाजत के लिए तशरीफ़ फरमा हुए हैं मैं लोटा लेकर हम्राह रुकाब सआदत मआब हुआ, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने जोड़े से कर ताकि बदने अक़्दस के मुत्तसिल था मुझे इंआम फरमाया, वह करता मैंने आज के लिए छुपा रखा था।

और एक रोज़ हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नाख़ुन व मूए मुबारक तराशे वह मैंने लेकर उस दिन के लिए उठा रखे।

यह कह कर हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जब मैं मर जाऊं तो क़मीस सरापा तक़्दीस को मेरे कफ़न के नीचे बदन के मुत्तसिल रखना, और मूए मुबारक व नाख़ुन हाए मुक़द्दसा को मेरे मुँह में और आँखों और पेशानी वग़ैरह मवाज़े सुजूद पर दुख देना।

(अल-इस्तीआब फ़ी मारिफ़तिल-अस्बाब, फतावा रज़वीया, जिल्द 4, स० 129 ता 131)

दफ़्न में उज्लत करना चाहिए :

क़ब्र वग़ैरह तैयार हो जाने के बाद मुर्दे को जल्द दफन कर देना चाहिए बिला ज़रूरते शरईया ताख़ीर मुनासिब नहीं। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम में कोई मरे तो उसे न रोको और जल्द दफन को ले जाओ। (तबरानी)

दूसरी हदीस में है : जल्दी करो कि मुसलमान मुर्दे को रोकना न चाहिए। (अबू दाऊद)

इसी तरह नमाज़े जनाज़ा में भी जल्दी करना बेहतर और शरअ़ को महबूब व मत्लूब है।

हदीस में है : तीन चीज़ों में देर न करो।

(1) नमाज़ जब उसका वक़्त आ जाए।

(2) जनाज़ा जिस वक़्त हाज़िर हो।

(3) और ज़न बेशौहर जब उसका कुफ़्व मिले। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मुसनद अहमद)

एक हदीस में यह है कि : जनाज़ा में जल्दी करो। (सहाहे सित्ता)

इसीलिए उलमा फरमाते हैं : अगर रोज़े जुमा पेश अज़ जुमा जनाज़ा तैयार हो गया जमाअते कसीरह के इंतिज़ार देर न करें पहले ही दफन कर दें।

इस मस्अला का बहुत लिहाज़ रखना चाहिए कि आजकल अवाम में उसके ख़िलाफ़ राइज है, जिन्हें कुछ समझ है वह तो इसी जमाअते कसीरह के इंतिज़ार में रोके रखते हैं, और नरे जुहहाल ने अपने जी से और बातें तराशी हैं कोई कहता है मैयत भी जुमा की नमाज़ में शरीक हो जाए, कोई

कहता है नमाज़ के बाद दफन करेंगे तो मैयत को हमेशा जुमा मिलता रहेगा, यह सब बेअसल व मक़्सद शरअ् के ख़िलाफ़ हैं। (फतावा रज़्वीया, जिल्द 4, स0 50)

शबे जुमा की मौत :

शबे जुमा व रोज़े जुमा और रमज़ान मुबारक में हर रोज़ के वास्ते यह हुक्म है कि जो मुसलमान उन में मरेगा सवाले नकीरैन व अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रहेगा, अल्लाह उस से ज़्यादा करीम है कि एक शय को माफ़ फरमा कर फिर उस पर मुवाख़ज़ा करे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 124)

क़बर की शरई सूरत :

क़ब्र बनाने में लोगों में बेहद इख़्तिलाफ़ है बाज़ लोग काफी ऊंची और चौकोर बनाते हैं, बाज़ लोग ज़मीन के बराबर कर देते हैं सिर्फ़ एक हिस्सा ऊंचा रहता है, वग़ैरह वग़ैरह। (मुरत्तिब)

क़ब्र बनाने के मुआमले में शरई हुक्म यह है कि क़ब्र पुख़्ता न करना बेहतर है और करें तो अन्दर से कड़ा कचा रहे, ऊपर से पुख़्ता कर सकते हैं, लम्बाई व चौड़ाई मैयत के मुवाफ़िक़ हो, और बुलन्दी एक बालिश्त से ज़्यादा न हो, सूरत ढल्वान बेहतर है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 101)

मरे पर रोना :

किसी की मौत पर जब उसके अज़ीज़ व अक़ारिब रोते हैं तो उसके सबब से मुर्दे पर अज़ाब होता है और वह भी रोने लगता है, हदीस में यही है कि ज़िन्दों के रोने से मुर्दे को अज़ाब दिया जाता है। (मुरत्तिब)

इस हदीस के मानी उलमा की एक जमाअत से यह मन्कूल हैं कि लोग मुर्दे पर जो रोते हैं मुर्दे को उनका रोना सुन कर सदमा होता है और उनके लिए उसका दिल कुढ़ता है।

एक हदीस में यह है कि एक बीबी अपने बेटे पर रो रही थीं नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हें मना किया, और फरमाया : जब तुम में कोई रोता है तो उसके रोने पर मुर्दे के भी आंसू निकल आते हैं तो ऐ ख़ुदा के बन्दो अपने मुसलमान भाईयों को तक्लीफ़ न दो।

(उम्दतुल–क़ारी शरह बुख़ारी)

एक और हदीस में आया है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जब तुम में कोई रोता है तो उसका साथी वह मुर्दा भी रोने लगता है।

दूसरी रिवायत में है : वह बीबी यानी हज़रत क़ीला बिन्ते मुख़रेमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर थीं, अपने एक बेटे को याद करके रोईं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह क्या तरीक़ा है कि दुनिया में ज़िन्दगी तक तो अपने साथी से अच्छा सुलूक करो और मेरे पीछे ईज़ा दो, क़सम उसकी जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जाने पाक है कि तुम्हारे रोने पर तुम्हारा मुर्दा रोने लगता है तो ऐ ख़ुदा के बन्दो अपनी अम्वात को अज़ाब न दो।

(अबू बकर बिन अबी शैबा, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 347)

ईज़ाए मैयत की मुमानेअत :

मुर्दे को किसी तरह की कोई तक्लीफ़ देना मना है मसलन बालों को खींचना यहाँ तक कि कंघा करना भी मना है। उसकी किसी हड्डी को तोड़ना ऐसा है जैसे ज़िन्दा इंसान की हड्डी को तोड़ना, बल्कि अगर मुर्दे को बुराई से याद किया जाए या उसे बुरा कहा जाए तो यह बातें भी मुर्दे को तक्लीफ़ देने वाली हैं अहादीस में उन सबसे मुमानेअत आई है। (मुरत्तिब)

हदीस में है : उम्मुल–मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने मैयत के कंघी करने से मना फरमाया कि उसे तक्लीफ़ होगी और फरमाया काहे पर अपने मुर्दे के मूए पेशानी खींचते हो।

(किताबुल–आसार इमाम मुहम्मद)

एक हदीस में है कि मुर्दा मुसलमान की हड्डी तोड़नी ऐसी ही है जैसे ज़िन्दा मुसलमान की हड्डी तोड़नी। (सहाहे सित्ता)

मौत के बाद बुरा भला कहने से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया कि मुर्दों को बुरा मत कहो कि वह अपने किए को पहुँच चुके। (बुख़ारी, निसई)

फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने मुर्दों को याद न करो मगर भलाई के साथ कि अगर वह जनती हैं तो बुरा कहने में तुम गुनहगार होगे और अगर दोज़ख़ी हैं तो उन्हें वह अज़ाब ही बहुत है जिसमें वह हैं। (निसई)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुर्दों को बुरा न कहो कि उसके बाइस ज़िन्दों को ईज़ा दो। (अहमद, तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है कि जब तुम्हारा साथी मर जाए तो उसे माफ़ रखो और उस पर तअन न करो। (अबू दाऊद)

अमर बिन हज़्म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक क़ब्र से तकिया लगाए देखा फरमाया मुर्दे को ईज़ा न दे।

(मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 33ए 34)

ताज़ियत को जाना :

उर्फ़ व रिवाज में ताज़ियत का जो तरीक़ा राइज है कि मैयत के घर वालों के पास जाकर लोग उन्हें सब्र व शुक्र की तल्क़ीन करते हैं यह जाइज़ व महमूद है और ताज़ियत में अफ़्ज़ल यह है कि बाद दफन क़ब्र से पलट कर हो और क़ब्ल दफन भी बिला कराहत जाइज़ है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बज़ाते ख़ुद ताज़ियत फरमाई और उसके फ़ज़ाइल व फ़वाइद इरशाद फरमाए। (मुरत्तिब)

एक हदीस में फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिसे किसी जनाज़ा की ख़बर मिले वह अह्ले मैयत के पास जा कर उनकी ताज़ियत करे अल्लाह तआला उसके लिए एक क़ीरात सवाब लिखे, फिर अगर जनाज़ा के साथ जाए तो अल्लाह तआला दो क़ीरात अज्र लिखे, फिर उस पर नमाज़ पढ़े तो तीन क़ीरात, फिर दफन में हाज़िर हो तो चार, और हर क़ीरात कोहे उहुद के बराबर है। (सहीह इब्ने सकन)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो किसी मुसीबत ज़दह की ताज़ियत करे उसके लिए साहिबे मुसीबत की तरह अज्र व सवाब है। (त, तिर्मिज़ी)

हदीस : जो किसी तक्लीफ़ वाले की ताज़ियत करे उसे जन्नत में चादर पहनाया जाएगा।

(त, तिर्मिज़ी)

हदीस : जो अपने भाई की मुसीबत के वक़्त में ताज़ियत करे अल्लाह तआला उसे क़्यामत के दिन जन्नती ज़ोड़ा पहनाएगा। (त, इब्ने माजा, बैहक़ी)

हदीस : हज़रत बतूल ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ फातिमा तुम्हारे घर से बाहर आने का सबब क्या है अर्ज़ की हम उस मैयत के घर वालों के पास आए थे मैंने उनके लिए दुआए रहमत की और उनके मुर्दा की उन से ताज़ियत की। (त, अबू दाऊद, निसई)

और ताज़ियत के लिए औलिए मैयत के मकान पर जाना भी सुन्नत से साबित है।

बारगाहे रिसालत में सहाबा किराम बैठा करते थे, एक सहाबी का एक छोटा बच्चा था अपने साथ वह अपने बच्चे को भी लाया करते थे, कई दिन तक वह सहाबी बारगाहे नब्वी में हाज़िर न हुए तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पूछा क्या सबब है कि फलां नज़र नहीं आता है, सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह उनका वह लड़का जिसे आपने देखा था वह हलाक हो गया है, यह सुन कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन सहाबी रज़ि अल्लाहु अन्हु के यहाँ तशरीफ़ लाए और उनके बेटे के बारे में पूछा, हुज़ूर को बताया गया कि उसकी मौत हो गई है फ़िर हुज़ूर ने उसकी ताज़ियत फरमाई। (मुरत्तिब, निसई)

तीन रोज़ तक औलिया–ए–मैयत को भी रुख़्सत व इजाज़त है कि मुंकिरात के इर्तिकाब व रुसूम कुफ़्फ़ार के इत्तिबा के बग़ैर अपने मकान में ताज़ियत के लिए बैठें ताकि लोग उनके पास आएं और रस्मे ताज़ियत बजा लाएं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मरवी है कि ज़ैद व जाफर व इब्ने रवाहा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की ख़बर शहादत सुन कर मग़मूम व महज़ून मस्जिद में तशरीफ़ रखी, सहाबा हाज़िर होते और ताज़ियत करते जाते। (बुख़ारी, मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब एक सहाबी को दफन करके पलटे और सहाबा किराम हाज़िर रुकाबे सआदत थे, मैयत मरहूम की ज़ौजा मुतह्हरा का भेजा हुआ आदमी मिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गये, यानी हुज़ूर ने ताज़ियत फरमाई।

(अबू दाऊद, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 177 ता 179)

तरीक़–ए–तल्क़ीने क़ब्र :

जिस तरह निज़ा के वक़्त तल्क़ीन की जाती है इसी तरह तदफ़ीन के बाद क़ब्र पर तल्क़ीन करे।

(मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तुम्हारा कोई भाई मुसलमान मरे और उसकी क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुको तो तुम में एक शख़्स उसकी क़ब्र के सरहाने खड़े हो कर कहे।

★ या फ़ुलां बिन फ़ुलाना।

कि वह सुनेगा और जवाब न देगा।

★ फिर कहे, या फ़ुलां बिन फ़ुलाना।

वह सीधा हो कर बैठ जाएगा।

★ फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना।

वह कहेगा हमें इरशाद कर, अल्लाह तआला तुझ पर रहम फरमाएगा मगर तुम्हें उसके कहने की ख़बर नहीं होती।

नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उसके पास क्या बैठें जिसे लोग उसकी हुज्जत सिखा चुके, उस पर किसी ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! अगर उसकी माँ का नाम मालूम न हो फरमाया तो हव्वा की तरफ़ निस्बत करे।

एक रिवायत में है कि जब क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुकें और लोग वापस जाएं तो मुस्तहब समझा जाता है कि मैयत से उसकी क़ब्र के पास खड़े हो कर तीन बार कहा जाए।

★ या फ़ुलानु क़ुल ला इलाहा इल्लल्लाह।

★ फिर कहा जाए, कह मेरा रब अल्लाह है और मेरा दीन इस्लाम और मेरा नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। (तबरानी, इब्ने शाहीन, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 95)

नमाज़े जनाज़ा की फ़ज़ीलत :

नमाज़े जनाज़ा मुसलमान का हक़ और फ़र्ज़े किफ़ाया है, आबादी का एक आदमी भी अगर मैयत पर नमाज़ पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा अगर किसी ने भी न पढ़ी और यूं ही दफन कर दिया तो उस आबादी के सब लोग गुनहगार होंगे। अहादीस में नमाज़े जनाज़ा की अज़ीम फ़ज़ीलत इरशाद हुई है कि मुसलमान किसी मोमिन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ें तो उसकी मग़्फ़िरत हो जाएगी, और उनकी शफ़ाअत उसके हक़ में क़ुबूल होगी और पहाड़ के बराबर सवाब मिलेगा। (मुरत्तिब)

हदीस : जिस मुसलमान के जनाज़े पर चालीस मुसलमान नमाज़ में खड़े हों अल्लाह तआला उसके हक़ में उनकी शफ़ाअत क़ुबूल फरमाए। (मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

हदीस : जिस मैयत पर सौ मुसलमान नमाज़े जनाज़ा में शफ़ीअ् हों उनकी शफ़ाअत उसके हक़ में क़ुबूल हो।

मालिके शफ़ाअत सिर्फ़ हुज़ूर शफ़ीअ यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं और जो कोई शफ़ाअत करे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नियाबत से करेगा। (मुस्लिम, निसई, मुसनद अहमद)

हदीस : जिस मुसलमान के जनाज़े पर मुसलमानों का एक गरोह कि तीन सफ़ क़ी मिक़्दार को पहुँचता हो नमाज़ पढ़े उसकी मग़्फ़िरत हो जाए। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हदीस : जिस पर सौ मुसलमान नमाज़ पढ़ें बख़्शा जाए। (इब्ने माजा)

हदीस : जिस मुर्दे पर मुसलमान का एक गरोह नमाज़ पढ़े, उनकी शफ़ाअत उसके हक़ में क़ुबूल हो। (निसई)

हदीस : जिस मुसलमान पर सौ आदमी नमाज़ पढ़ें, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसकी मग़्फ़िरत फरमा दे। (तबरानी कबीर)

शरीअते मुतह्हरा इंसानों के लिए पैग़ामे रहमत है उसने सिर्फ़ फ़र्ज़ियते किफ़ाया पर इक्तिफ़ा न फरमाया, बल्कि नमाज़े जनाज़ा में नमाज़ियों के लिए अज़ीम व आज़म अफ़्ज़ाले इलाहिया के वादे दिए कि लोग अगर नफ़्अ़ मैयत के ख़्याल से जमा न होंगे अपने फाइदे के लिए दौड़ेंगे। इस मतलब की चन्द अहादीसे करीमा यह हैं :

हदीस : जो नमाज़ होने तक जनाज़ा में हाज़िर रहे उसके लिए एक दांगे सवाब है, और दफन तक हाज़िर रहे तो दो दांग जैसे बड़े दो पहाड़ उनमें का छोटा कोहे उहुद के बराबर।

(सहाहे सित्ता)

हदीस : जो किसी जनाज़ा के साथ रहे यहाँ तक कि दफन हो चुके उसके लिए तीन क़ीराते अज्र लिखा जाए, हर क़ीरात कोहे उहुद से बड़ा। (तबरानी औसत)

हदीस : जो किसी जनाज़ा में अह्ले जनाज़ा के पास तक जाए उसके लिए एक क़ीरात है, फिर अगर जनाज़ा के साथ तक चले तो एक क़ीरात और मिले और नमाज़ पर तीसरा और दफन पर इंतिज़ार तक चौथा क़ीरात पाए। (बज़्ज़ार)

हदीस : जो किसी मैयत को नहलाए, कफन पहनाए, ख़ुशबू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाए जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था। (इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 44ए 50ए 51)

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले मुमिनीन के लिए अव्वलीन तोहफ़ा

नमाज़े जनाज़ा मुमिनों का पहला तोहफ़ा है उसकी बरकत यह है कि नमाज़ पढ़ने वालों की मग़्फ़िरत हो जाती है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि मुमिनों का पहला तोहफ़ा यह है कि उसकी मग़्फ़िरत हो जाती है जिसने मैयत पर नमाज़ पढ़ी। (त. नवादिरुल-उसूल)

हदीस : मोमिन का पहला तोहफ़ा यह है कि जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो उस पर नमाज़ पढ़ने वालों की मग़्फ़िरत हो जाती है। (त. दारु क़ुतनी)

हदीस : उसकी मौत के बाद मुसलमानों का सबसे पहला बदला यह है कि जो उसके जनाज़े के पीछे चले उन सबकी बख़्शिश हो जाती है। (त. शुअ़बुल-ईमान, बज़्ज़ार)

हदीस : मुसलमान का पहला तोहफ़ा यह है कि जो उसके जनाज़ा में निकले उसकी मग़्फ़िरत हो जाती है। (त. ख़तीब)

हदीस : जब कोई जन्नती शख़्स मरता है तो अल्लाह तआला उसके उठाने वाले, उसके पीछे चलने वाले, और उस पर नमाज़ पढ़ने वालों को अज़ाब देने से हया फरमाता है।

(त. मुसनदुल-फ़िर्दौस)

हदीस : मोमिन को जब सबसे पहली बशारत दी जाती है वह यह है कि उसे उसकी मर्ज़ी से वली अल्लाह बशीर कहा जाता है, और जन्नत उसका ख़ैर मक़्दम व इस्तिक़्बाल करती है, जो तेरे साथ चले अल्लाह तआला उसे बख़्श देता है और जो इस्तिग़फ़ार करता है उसे क़ुबूल फरमाता है।

(त. इब्ने हिब्बान किताबुस्सवाब, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 42)

तीन सफ़ की फ़ज़ीलत :

जिस की नमाज़े जनाज़ा में लोग तीन सफ़ हों उसके लिए उम्मीदे मग़्फ़िरत है, उसमें तीन सफ़ की बड़ी अहमीयत है। (मुरत्तिब)

हदीस में है जिस पर तीन सफ़ें नमाज़ पढ़ें उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। (त)

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक जनाज़ा पर नमाज़ पढ़ी, सिर्फ़ सात आदमी थे तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पहली सफ़ तीन आदमियों की की, दूसरी दो की, और तीसरी सफ़ एक शख़्स की।

(मुसनद इमाम आज़म, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 78)

इससे मालूम हुआ कि तीसरी सफ़ अगर तन्हा एक ही शख़्स की हो तो कोई क़बाहत नहीं है। हदीस में है कि तन्हा औरत एक सफ़ होती है। यह हुक्म दुनिया में तो है ही आख़िरत में भी जब फ़रिश्तों की सफ़ें होंगी तो एक फ़रिश्ता की तन्हा एक सफ़ होगी। (मुरत्तिब)

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है :

जिस दिन खड़े होंगे रूह और मलाइका सफ़ हो कर। (सूरः निसा : 38)

इस आयत की तफ़्सीर में है कि यह रूह आसमान हफ़्तुम में है वह आसमानों और पहाड़ों और सब फ़रिश्तों से आज़म है, वह रोज़ाना बारह हज़ार तस्बीहें करता है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता बनाता है, यह रूह रोज़े क़्यामत अकेला एक सफ़ होगा।

(तफ़्सीर इब्ने जरीर)

दूसरी रिवायत में है : रूह एक फ़रिश्ता है अल्लाह तआला ने कोई मख़्लूक़ जिस्म में उस से बड़ी न बनाई, जब क़्यामत का दिन होगा वह अकेला एक सफ़ हो कर खड़ा होगा और तमाम फ़रिश्ते मिल कर एक सफ़ तो उसकी जसामत उन सबके बराबर होगी। (मआलिमुत्तन्ज़ील)

सलाते मुतलेक़ा यानी रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में सबसे अफ़ज़ल सफ़े अव्वल है और नमाज़े जनाज़ा में सबसे अफ़ज़ल सफ़ अख़ीर है। सलाते मुतलेक़ा में जब तक पहली सफ़ पूरी न हो जाए दूसरी सफ़ हरगिज़ न की जाएगी। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 80)

दफ़न के बाद नमाज़े जनाज़ा :

दफ़न से पहले अगर किसी मैयत पर नमाज़े जनाज़ा नहीं हुई तो दफ़न के बाद पढ़ी जाएगी। कितने दिन तक पढ़ी जाएगी?

इस मसअले से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं: जब तक मैयत का बदन सालिम होने का गुमान हो तब तक पढ़ी जाएगी और यह मुआमला इख़्तिलाफ़े मौसम, ज़मीन के हाल और मैयत के हाल से जल्दी व देर में मुख़्तलिफ़ हो जाता है।

★ गर्मी में जल्द बिगड़ जाता है।

★ सर्दी में देर से।

★ खारी या नम्नाक ज़मीन में जल्द बिगड़ता है और उसके अलावा दूसरी ज़मीन में देर से।

★ मोटा ताज़ा आदमी जल्द बिगड़ता है और दुबतला पतला देर से।

लिहाज़ा उसके लिए मुद्दत मुऐयन नहीं कर सकते। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 31)

दोबारा नमाज़े जनाज़ा पढ़ना :

मज़हबे हन्फ़ी में जबकिं वली नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुका या उसके इज़्न से एक बार नमाज़ हो चुकी अगरचे यूंही कि दूसरे ने शुरू की, वली शरीक हो गया, तो अब दूसरों को नमाज़ मुतलक़न जाइज़ नहीं, न उनको दोबारा पढ़ना जाइज़ जो पढ़ चुके, न उनको जाइज़ जो बाक़ी रहे। अइम्मा हन्फ़ीया का उस पर इज्मा है जो उसका ख़िलाफ़ करे मज़हबे हन्फ़ी का मुख़ालिफ़ है तमाम कुतुब मज़्हब उसकी तस्रीहात से गूंज रही हैं।

मुतअद्दद कुतुबे फ़िक़्ह की इबारात ख़ुलासा यह है :

★ नमाज़े जनाज़ा दोबारा रवा नहीं। (दुर्रे मुख़्तार)

★ नमाज़े जनाज़ा की तक्रार जाइज़ नहीं। (दुर्रे मुख़्तार)

★ एक मैयत पर दोबारा नमाज़ नाजाइज़ है। (ग़नीया शरह मनीयह)

★ नमाज़े जनाज़ा की तक्रार जाइज़ होना सिर्फ़ इमाम शाफ़ई का क़ौल है, हमारे नज़्दीक नहीं। (मन्ज़ूमा मुबारका)

★ किसी मैयत पर एक बार से ज़्यादा नमाज़ न पढ़ी जाए। (फ़तावा आलमगीरी)

★ नमाज़े जनाज़ा का फ़र्ज़ एक बार के पढ़ने से साक़ित हो जाता है, अब अगर पढ़ें तो मुकर्रर हो जाएगी और वह मुकर्रर मशरुअ़ नहीं। (तहतावी)

★ किसी मैयत पर दो दफ़ा नमाज़ न हो हाँ अगर वली आए तो हक़ उसका है और दूसरा उसका हक़ साक़ित नहीं कर सकता। (मब्सूत सरख़सी, निहायह)

★ जब ख़ुद वली या उसके इज़्न से दूसरा नमाज़ पढ़ावे, या वली ख़ुद ही तन्हा पढ़ ले तो अब किसी को नमाज़े जनाज़ा की इजाज़त नहीं।

(कन्ज़ुद्दक़ाइक़, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 59ए 60)

जनाज़ा ग़ाइब पर नमाज़ पढ़ना :

मज़हबे हन्फ़ी में जनाज़ा ग़ाइब पर भी नमाज़ महज़ नाजाइज़ है, अइम्मा हन्फ़ीया का उसके अदमे जवाज़ पर भी इज्मा है, ज़ाहिर है कि इस्लामी शहरों में जहाँ मुसलमान इंतिक़ाल करे नमाज़ ज़रूरी होगी और दूसरी जगह ख़बर के बाद ही पहुँचेगी।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 67 मुल्ख़िसन)

कुतुबे फ़िक़्ह में उस मस्अला की सराहत मौजूद है कि जनाज़-ए-ग़ाइब पर नमाज़ नाजाइज़ है, इस मस्अला से मुतअल्लिक़ चन्द कुतुबे फ़िक़्ह की इबारत का ख़ुलासा यह है : (मुरत्तिब)

सेहत नमाज़े जनाज़ा की शर्त यह है कि मैयत मुसलमान हो, ताहिर हो, जनाज़ा नमाज़ी के आगे ज़मीन पर रखा हो, इसी शर्त के सबब किसी ग़ाइब की नमाज़े जनाज़ा जाइज़ नहीं।

(फ़त्हुल-क़दीर, बहरुर्राइक़)

★ नमाज़े जनाज़ा सही होने के शराइत से है जनाज़ा का मुसल्ली के आगे रखा होना, इसी लिए हमारे उलमा ने फ़रमाया कि मुतलक़न किसी ग़ाइब पर नमाज़ जाइज़ नहीं। (हुलिया)

★ जनाज़ा का नमाज़ी के सामने हाज़िर होना नमाज़े जनाज़ा की शर्त है।

(मतन तनवीरुल-अबसार)

★ जनाज़ा का हाज़िर होना शर्त नमाज़ है, लिहाज़ा किसी ग़ायब पर नमाज़े जनाज़ा सही नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार)

★ सेहत नमाज़े जनाज़ा की शर्तों से है मैयत का मुसलमान होना और नमाज़ियों के सामने हाज़िर होना। (मतन नूरुल-ईज़ाह)

★ मैयत का कोई अज़्व किसी जगह मिले तो उस पर नमाज़ जाइज़ नहीं, न किसी ग़ाइब पर नमाज़ जाइज़ है। (मतन मुतक़ियुल-अबहर)

★ इमाम शाफ़ई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इस मस्अला में हम से ख़िलाफ़ भी इस सूरत में है कि मैयत दूसरे, शहर में हो, और अगर इसी शहर में हो तो नमाज़े ग़ायब इमाम शाफ़ई के नज़्दीक भी जाइज़ नहीं कि अब हाज़िर होने में मशक़्क़त नहीं। हमारे नज़्दीक किसी मैयत ग़ायब पर नमाज़ न पढ़ी जाए। (शरह मज्मा, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 67, 68)

बेनमाज़ की नमाज़े जनाज़ा :

मुसमलान के जनाज़ा की नमाज़ फ़र्ज़ है अगरचे वह नमाज़ न पढ़ता हो, उसमें हुक्मे तहदीदी सिर्फ़ इतना है कि उलमा व सुलहा जिनके पढ़ने से उम्मीद बरकत होती है बेनमाज़ का जनाज़ा ख़ुद न पढ़ें, अवाम से पढ़वा दें। लेकिन यह कि कोई न पढ़े और उसे बेनमाज़ दफ़न कर दें यह जाइज़ नहीं, ऐसा करेंगे तो जितनों को इत्तिला होगी सब गुनहगार होंगे आलिम हों ख़्वाह जाहिल और उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़नी वाजिब होगी जब तक उसका बदन सलामत रहने का गुमान हो।

(फ़तावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 199)

मक़ामे इबरत :

जो बेनमाज़ हैं वह उस से इबरत हासिल करें कि उलमा व सुलहा के लिए हुक्म है कि वह बेनमाज़ की नमाज़ न पढ़ें जबकि उनका नमाज़ पढ़ना बाइसे बरकत व रहमत है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि तुम पर मेरी नमाज़ रहमत व मग़्फ़िरत है। (हाशिया बुख़ारी)

दूसरी हदीस में है कि क़बरें अन्धेरियों से भरी हुई हैं मैं अपनी नमाज़ से उन्हें रौशन व मुनव्वर कर देता हूँ। (हाशिया बुख़ारी)

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की नमाज़ रौशनी व नूर है मुसलमान को उसका फाइदा पहुँचता है, जब उलमा व सुलहा, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वारेसीन व नाइबीन हैं तो उनकी नमाज़ में भी कुछ न कुछ ख़ैर व बरकत है जिसकी यह नमाज़ पढ़ेंगे उन्हें यह बरकत व सआदत तो मिलेगी मगर बेनमाज़ उस से महरूम है। (मुरत्तिब)

जनाज़ा से मुतअल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें :

बाज़ बातें ऐसी हैं जिन पर लोग कम तवज्जोह देते हैं यह वह ग़लत तौर पर मशहूर हैं हम बग़र्ज़ इस्लाह उन्हें यहाँ पर दर्ज कर रहे हैं मुलाहिज़ा फरमाएं : (मुरत्तिब)

★ नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में मुतलक़न मक्रूह है, हाँ हद्दे मस्जिद से बाहर फनाए मस्जिद में जाइज़ है।

★ मैयत अगर ताबूत के अन्दर हो नमाज़ उस पर इसी तरह जाइज़ है खोलने की हाजत नहीं।

★ क़ब्र जिस क़द्र मैयत से मुत्तसिल होती है उस अन्दरूनी हिस्सा को पुख़्ता करना मम्नूअ़ है और बाहर से पुख़्ता करने में हरज नहीं।

★ लाश का एक मुल्क से दूसरे मुल्क को ले जाना तो बड़ी बात है दूसरे शहर को ले जाना भी मम्नूअ़ है, मील दो मील तक ले जाने में हरज नहीं।

★ ताबूत में दफन करना मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है मगर इस हालत में कि वहाँ ज़मीन बहुत नर्म हो तो हिफ़ाज़त के लिए हरज नहीं।

बेहतर यह है कि क़ब्र में ताक़ खोद कर उस में शजरह रखा जाए, और तबर्रुकात अगर सीना पर रखें तो उसकी मुमानेअत भी साबित नहीं।

★ कफन पहले से तैयार रखने में हरज नहीं और क़ब्र पहले से बनाना न चाहिए।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 82)

★ नमाज़े जनाज़ा तक्बीरों पर ख़त्म हो जाती है उसके बाद नहीं मिल सकती अगरचे अभी सलाम न हुआ हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स० 618)

★ बच्चे ने जब तक बात न की हो उसे मर्द औरत सब बेपरवाह नहला सकते हैं, यही वह उम्र है जिस तक सतर औरत की असलन हाजत नहीं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 1, स० 656)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम की नमाज़े जनाज़ा :

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जनाज़–ए–अक़्दस पर बा–जमाअत नमाज़ न हुई, जनाज़ा अतहर का कोई इमाम न था, बाज़ उलमा फरमाते हैं कि हुज़ूर के जनाज़–ए–मुक़द्दस पर दरूद व दुआ हुई, नमाज़ न हुई इसलिए कि हुज़ूर सैयदे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़िन्दा हैं, सिर्फ़ एक आन को वाद–ए–इलाहिया के लिए मौत तारी हुई फिर इसी आन के बाद ज़िन्दा हो गये, लोग गरोह–दर–गरोह आते और दरूद व सलाम अर्ज़ करते उनका कोई इमाम न था। (मुरत्तिब)

अमीरुल–मुमिनीन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है :

जब हुज़ूर पुर–नूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ग़ुस्ल देकर सरीर मिंबर पर लिटाया, हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने फरमाया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आगे कोई इमाम बन कर न खड़ा हो कि वह तुम्हारे इमाम हैं अपनी ज़िन्दगी दुनिया में और बाद वेसाल भी, पस लोग गरोह–दर–गरोह आते और परे के परे हुज़ूर पर सलात करते कोई उनका इमाम न था, अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने खड़े अर्ज़ करते थे :

"सलाम हुज़ूर पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, इलाही हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर ने पहुँचा दिया जो कुछ उनकी तरफ़ उतारा गया, और हर बात में अपनी उम्मत की भलाई की और राहे ख़ुदा में जिहाद फरमाया, यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़ा ने अपने दीन को ग़ालिब किया और अल्लाह का क़ौल पूरा हुआ, इलाही तू हम को उन पर उतारी हुई किताब के पैरूओं से कर और उनके दीन पर क़ाइम रख और रोज़ क़यामत हमें उन से मिला।"

मौला अली यह दुआ करते और हाज़िरीन आमीन कहते हैं, यहाँ तक कि उन पर मर्दों, फिर औरतों, फिर लड़कों ने सलात की। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

(तब्क़ात इब्ने सअद, बैहक़ी)

इब्ने सअद व बैहक़ी की रिवायत में है।

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को कफन देकर सरीर मुबारक पर आराम दिया सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की सलाम हुज़ूर पर ऐ नबी और अल्लाह की महर और उसकी अफ़्ज़ूनियाँ, और दोनों हज़रात के साथ एक गरोह मुहाजिरीन और अन्सार का था जिस क़द्र इस हुजर–ए–पाक में समा जाता, उन सबने यूं ही सलाम अर्ज़ किया और सिद्दीक़ व फ़ारूक़ पहली सफ़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने खड़े यह दुआ करते कि इलाही मैं गवाही देता हूँ कि जो कुछ तूने अपने नबी पर उतारा हुज़ूर ने उम्मत को पहुँचाया और उसकी ख़ैरख़्वाही में रहे और राहे ख़ुदा में जिहाद फरमाया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने अपने दीन को ग़लबा दिया और अल्लाह की बातें पूरी हुईं, मैं एक अल्लाह पर ईमान लाता हूँ उसका कोई शरीक नहीं, तो ऐ माबूद हमारे हमें उनकी किताब के पैरूओं में कर जो उनके साथ उतरी और हमें उन से मिला कि हम उन्हें पहचानें और तू हमारी पहचान इन्हीं से करा दे कि वह मुसलमानों पर मेहरबान रहम दिल थे, हम न ईमान किसी चीज़ से बदलना चाहें, न उसके एवज़ कुछ क़ीमत लेना, लोग इस दुआ पर आमीन आमीन कहते, फिर बाहर जाते और आते यहाँ तक कि मर्दों फिर औरतों फिर बच्चों ने हुज़ूर पर सलात की।

(तब्क़ात इब्ने सअद, बैहक़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब मेरे ग़ुस्ल व कफन मुबारक से फारिग़ हो मुझे नअ़श मुबारक पर रख कर बाहर चले जाओ सब में पहले जिब्रील मुझ पर सलात करेंगे, फिर मीकाईल, फिर इस्राफील, फिर मलिकुल–मौत अपने सारे लश्करों के साथ, फिर गरोह–दर–गरोह मेरे पास हाज़िर हो कर मुझ पर दरूद व सलाम अर्ज़ करते जाओ।

(बज़्ज़ार)

इस हदीस से भी ज़ाहिर कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अपने जनाज़ा अक़्दस की निस्बत इसी क़द्र तालीम फरमाई कि गरोह–दर–गरोह हाज़िर हो कर दरूद व सलाम पढ़ते जाना।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 40ए 41)

रोज़ा के फ़ज़ाइल व मसाइल

रोज़ा ऐसी इबादत है जिस से इंसान का नफ़्स अम्मारह कम्ज़ोर होता और जज़्ब-ए-ईमानी क़वी होता है और उस से इंसान के गुनाह जल जाते हैं यही वजह है कि माहे रमज़ान में रोज़ों की बरकतों से हर नेक अमल का सवाब कई गुना हो जाता है। (मुरत्तिब)

रमज़ानुल-मुबारक में हर अमल नेक का सवाब बाक़ी महीनों के अमल से अक्सर ओफर है, रमज़ान का नफ़्ल और महीनों के फ़र्ज़ और उसका फ़र्ज़ और महीनों के सत्तर फ़र्ज़ की बराबर है और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का फ़ज़्ल औसा व अकबर है।

हज़रत सलमान फार्सी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने माहे मुबारक की निस्बत फरमाया जिसने उसमें नेकी का कोई काम किया वह उस शख़्स के मिस्ल है जिसने ग़ैर रमज़ान में कोई फ़र्ज़ अदा किया और जिसने इसे महीने में कोई फरीज़ा अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर फर्ज़ अदा किए।

(इब्ने ख़ुज़ैमा, बैहक़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 520)

बिला वजह रोज़ा न रखने का वबाल :

रोज़ा एक हुक्मे इलाही है जो रोज़ा नहीं रखता उसके लिए अहादीस में ख़ौफ़नाक वईदें वारिद हुई हैं और मुख़्तलिफ़ तरीक़े से तंबीह की गई है। (मुरत्तिब)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दीन इस्लाम की बुनियाद तीन चीज़ों पर है जो उन में से एक को छोड़ दे वह मुबाहुल-क़त्ल काफिर है वह तीन चीज़ें यह हैं।

★ ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देना।

★ फ़र्ज़ नमाज़ें।

★ और रमज़ान के रोज़े। (त, मुसनद अबू याला)

और एक रिवायत में यह है कि जो उन में से एक को छोड़ दे वह अल्लाह का मुंकिर है न उसका फ़र्ज़ क़ुबूल होगा न नफ़्ल बल्कि उसके जान व माल हलाल हैं यानी जो राइज़ का इंकार करे वह काफिर है। (त, अबू याला)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने बग़ैर उज़्र के रमज़ान का एक रोज़ा छोड़ दिया फिर अगर वह ज़िन्दगी भर रोज़ा रखे तो यह तमाम रोज़े उस एक रोज़ा का नुक़्सान पूरा नहीं कर सकते।

(त, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, निसई, इब्ने माजा)

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि हम एक दिन ख़्वाब में थे कि दो आदमी आए और मेरे बाज़ू पकड़ कर एक ख़ौफ़नाक पहाड़ पर ले गये,

यहाँ तक फरमाया कि एक ऐसी क़ौम के पास ले गये जो लोग मुँह के बल लटके हुए थे उनके जबड़े फटे हुए थे उन से ख़ून निकल रहा था मैंने कहा यह कौन लोग हैं उन्होंने अर्ज़ किया यह वह लौग हैं जो रमज़ान में वक़्त से पहले रोज़े का अफ़्तार करते थे।

(त, सही इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने हिब्बान, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 514ए 515)

आशूरह का रोज़ा :

सब दिनों से अफ़्ज़ल रोज़ आशूरह यानी दसवीं मुहर्रम का रोज़ा है उसमें एक साल गुज़िश्ता के गुनाहों की मग़्फ़िरत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : मुहर्रम के हर दिन का रोज़ा एक महीना के रोज़ों के बराबर है। (तबरानी कबीर)

27 रजब का रोज़ा और शब की नमाज़ :

रजब में एक दिन और रात है जो उस दिन का रोज़ा रखे और वह रात नवाफ़िल में गुज़ारे सौ बरस के रोज़ों और सौ बरस की शब बेदारी के बराबर हो और वह 27 रजब है उसी तारीख़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मब्ऊस फरमाया।

(मुसनदुल–फ़िर्दौस, शुअ़बुल–ईमान)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है रजब में एक रात है कि उसमें अमल नेक करने वाले को सौ बरस की नेकियों का सवाब है और वह रजब की सत्ताईसवीं शब है जो इसमें बारह रकाअत पढ़े, हर रकाअत में सूरः फातिहा और एक सूरत और हर दो रकाअत पर अत्तहीयात और आख़िर में बाद सलाम सुब्हानल्लाह वल्हम्दुलिल्लाह वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर सौ बार, इस्तिग़फ़ार सौ बार, दरूद सौ बार और अपनी दुनिया व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ माँगे और सुबह को रोज़ा रखे तो अल्लाह तआला उसकी सब दुआएँ क़ुबूल फरमाए सिवाए उस दुआ के जो गुनाह के लिए हो। (शुअ़बुल–ईमान)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : 27 रजब को मुझे नुबुव्वत अता हुई जो उस दिन का रोज़ा रखे और इफ़्तार के वक़्त दुआ करे दस बरस के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो। (फ़वाइदे निहाद)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है जो रजब की सत्ताईसवीं का रोज़ा रखे अल्लाह तआला उसके लिए साठ महीने के रोज़ों का सवाब लिखे और वह वह दिन है जिसमें जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए पैग़म्बरी लेकर नाज़िल हुए। (जज़ाबी मुआज़ मुरव्वज़ी)

एक और हदीस में है जो 27 रजब का रोज़ा रखे अल्लाह तआला उसके लिए पाँच बरस के रोज़ों का सवाब लिखे।

शाबान का रोज़ा :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रमज़ानुल–मुबारक के बाद सबसे ज़्यादा शाबान के रोज़े रखा करते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ुद ही इरशाद फरमाते हैं रमज़ान के बाद सबसे अफ़ज़ल शाबान के रोज़े हैं ताज़ीम रमज़ान के लिए, यानी शाबान के रोज़ों में रमज़ान की ताज़ीम व इज़्ज़त है इसलिए इस महीना में रोज़ों की कसरत की जाए। (तिर्मिज़ी, शुअ़बुल–ईमान)

अशर–ए–ज़िल–हिज्जा का रोज़ा :

रोज़ा वग़ैरह आमाले सालेहा के लिए बाद रमज़ान मुबारक सब दिनों से अफ़ज़ल अशर–ए–ज़िल–हिज्जा है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं इन दस दिनों से ज़्यादा किसी दिन का अमले सालेह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला को महबूब नहीं सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह और न राहे ख़ुदा में जिहाद फरमाया और न राहे ख़ुदा में जिहाद, मगर वह कि अपनी जान व माल लेकर निकले फ़िर उन में से कुछ वापस न लाए। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला को अशर–ए–ज़िल–हिज्जा से ज़्यादा किसी दिन की

इबादत पसन्दीदह नहीं, उनके हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़याम शबे क़द्र के बराबर है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बैहक़ी)

ख़ुसूसन रोज़े अरफ़ा के साल का अफ़्ज़ल अय्याम है उसका रोज़ा सहीह हदीस से हज़ारों रोज़ों के बराबर है और दो साल कामिल के गुनाहों की माफ़ी, एक साल गुज़िश्ता और एक साल आइन्दा। (सहाहे सित्ता)

दो शम्बा और जुमा वग़ैरह के रोज़े :

रजब, शाबान, ज़िल–हिज्जा वग़ैरह के रोज़ों के अलावा अहादीस में और भी बहुत रोज़ों के फ़ज़ाइल आए हैं जैसे :

★ माहे ईद के छेः रोज़े अय्यामे बैज़ यानी हर माह के 13,14,15 तारीख़ के रोज़े के दोनों में हर एक साल भर के रोज़ों का सवाब लाता है दोशंबा व पंजशंबा और चहार शंबा व पंजशंबा के रोज़े के दोज़ख़ से आज़ाद हैं। चहार शंबा व पंजशंबा और जुमा के रोज़े कि जन्नत में गौहर व याक़ूत और ज़बरजद का घर बनाते हैं।

★ बल्कि जुमा का रोज़ा यानी जब उसके साथ पंजशंबा या शंबा भी शामिल हो मरवी हुआ कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है। (बैहक़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 658 ता 660)

इफ़्तार का वक़्त कब :

जब मश्रिक़ से सियाही बुलन्द हो और मग़्रिब में दिन छुपे और आफताब डूबने पर यक़ीन यानी पूरा ज़न ग़ालिब हो जाए उस वक़्त इफ़्तार किया जाए उसके बाद देर लगाना न चाहिए यही अलामात हदीस में इरशाद हुई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब उधर से रात आए और उधर से दिन पीठ दिखाए और सूरज पूरा डूब जाए तो रोज़ादार का रोज़ा पूरा हो चुका।
(बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स० 218)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आदते करीमा थी कि क़रीब ग़ुरूब किसी को हुक्म फरमाते कि बुलन्दी पर जा कर आफ़ताब को देखता रहे वह नज़र करता होता और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसकी ख़बर के मुंतज़िर होते उधर उसने अर्ज़ की कि सूरज डूबा उधर हुज़ूरे वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़ुरमा वग़ैरह तनावल फरमाया। (हाकिम, तबरानी)

अबू दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में है कि क़रीब ग़ुरूब किसी को हुक्म फरमाते कि बुलन्दी पर खड़ा हो कर आफताब को देखता रहे जब वह अर्ज़ करता कि सूरज डूब गया तो हुज़ूर तनावल फरमाते। (त, हाकिम)

हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हालते रोज़ा में देखा कि छोहारा लेकर ग़ुरूबे शम्स का इंतिज़ार फरमाते जब सूरज डूब जाता तो छोहारा तनावल फरमा लेते। (त, कश्फ़ुल–ग़िम्मा)

ग़ुरूबे आफ़ताब का यक़ीन हो जाने के बाद जल्दी इफ़्तार करना मुस्तहब है। (मुरत्तिब)

एक हदीसे क़ुदसी में रब्बुल–इज़्ज़त तबारक व तआला फरमाता है मुझे अपने बन्दों में वह ज़्यादा प्यारा है जो उनमें सबसे ज़्यादा जल्द इफ़्तार करता है।
(तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 654)

इफ़्तार में सुन्नत ?

खुजूर, छुहारा या पानी से रोज़ा इफ़्तार करना सुन्नत है यानी अगर खुजूर या छुहारा दस्तियाब है तो उसी से वरना पानी से सुन्नत है। (मुरत्तिब)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़ से क़ब्ल खुजूरों से इफ़्तार फरमाते थे अगर खुजूरें न होतीं तो छुहारों से अगर यह भी न होते तो पानी के चन्द घूँट नोश फरमाते।

(त, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 651)

रोज़ादार को इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत :

रोज़ादार को इफ़्तार कराना बहुत बड़ा सवाब है उस से उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं और दोज़ख़ से आज़ादी लिख दी जाती है। (मुरत्तिब)

हज़रत सलमान फार्सी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने माहे रमज़ान के फ़ज़ाइल में फरमाया कि जो रमज़ान में रोज़ादार को इफ़्तार कराए तो गुनाहों से उसकी मग़्फ़िरत और दोज़ख़ से आज़ादी हो जाएगी और उसको भी उतना ही सवाब होगा बग़ैर किसी नुक़्सान के जितना उसको होगा सहाबा ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हम में से हर एक के पास इतना नहीं है कि रोज़ादार को इफ़्तार कराए। हुज़ूर ने फरमाया एक मुट्ठी खाना ही सही, मैंने अर्ज़ की अगर उसके पास रोटी का लुक़्मा भी न हो हुज़ूर ने फरमाया कि पानी मिला हुआ दूध ही सही, फिर मैंने अर्ज़ की अगर वह भी न हो तो फरमाया कि पानी का एक घूँट ही पिला देना। (त, इब्ने ख़ुज़ैमा)

एक रिवायत में है हुज़ूर पूर–नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सअद बिन उबाद के यहाँ तशरीफ़ लाए उन्होंने रोटी और ज़ैतून पेश किया हुज़ूर ने तनावल फरमाने के बाद फरमाया तुम्हारे पास रोज़ादारों ने इफ़्तार किया और तुम्हारा खाना नेकों ने खाया और मलाइका ने तुमको दुआए रहमत व मग़्फ़िरत दी। (त, अबू दाऊद)

दूसरी रिवायत में यूं है कि हमने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हम्राह इफ़्तार किया जिसमें ज़ैतून पेश किया गया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तनावल फरमाने के बाद फरमाया कि तुम्हारा खाना नेकों ने खाया, फ़रिश्तों ने दुआए मग़्फ़िरत की और रोज़हदारों ने अफ़्तार किया।

(त, अबू दाऊद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स० 656, 657)

दुआए इफ़्तार :

इफ़्तार करते वक़्त दुआ पढ़ी जाए और यह दुआ कुछ खाने के बाद पढ़ी जाए और अहादीसे मुबारका से यही साबित है। (मुरत्तिब)

★ हुज़ूरे सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इफ़्तार के वक़्त यह दुआ पढ़े :

अल्ला हुम्मा लका सुम्तो व अला रिज़्क़ेका अफ़तरतु

तरजमा : इलाही मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे ही रिज़्क़ से इफ़्तार किया। (त, अबू दाऊद)

★ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वक़्ते अफ़्तार फरमाते थे।

तरजमा : अल्लाह का शुक्र है कि इसी ने मेरी एआनत फरमाई तो मैंने रोज़ा रखा और मुझे रिज़्क़ अता फरमाया तो मैंने इफ़्तार किया। (त, अमलुल–यौम, शुअ़बुल–ईमान)

★ वक़्ते अफ़्तार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते :

तरजमा : इलाही मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे ही रिज़्क़ से इफ़्तार किया तो तू क़ुबूल फरमा कि तू सुनता जानता है। (त, दारुक़ुतनी

★ एक रिवायत में इफ़्तार के वक़्त यह फरमाना मरवी है।

तरजमा : प्यास ख़त्म हो गई, रगें तर हो गईं और अज्र साबित हो गया इन्शाअल्लाह तआला। (त, अबू दाऊद, निसई)

★ हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से किसी के सामने इफ़्तार के वक़्त खाना पेश किया जाए और वह रोज़ादार हो तो यह कहे। (त)

★ एक रिवायत में इस तरह मरवी है।

सहरी में ताख़ीर सुन्नत है :

सहरी खाना बाइस बरकत और मुस्तहब है मगर उसे अख़ीर वक़्त में खाना सुन्नत है। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं हमेशा मेरी उम्मत ख़ैर से रहेगी जब तक इफ़्तार में जल्दी और सहरी देर करें।

मगर इतनी जल्दी जाइज़ नहीं कि ग़ुरूब मश्कूक हो और इफ़्तार कर ले या सहरी में इतनी देर लगाये कि सुबह का शक पड़ जाए। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 649)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हज़रत अनस कहते हैं हम ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ सहरी खाई फिर नमाज़ फज्र के लिए खड़े हो गये मैंने पूछा बीच में कितना फासिला दिया कहा पचास आयत पढ़ने का। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसई)

हज़रत क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने सहरी तनावल फरमाई जब खाने से फारिग़ हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नमाज़े सुबह के लिए खड़े हो गये नमाज़ पढ़ ली मैंने अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से पूछा सहरी से फारिग़ और नमाज़ में दाख़िल होने में कितना फ़सल हुआ कहा इस क़द्र कि आदमी पचास आयतें पढ़ ले। (बुख़ारी, निसई)

यह अन्दाज़ा वह है कि आम उम्मत को उसे इख़्तियार करना जाइज़ नहीं सैयदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसे इसलिए इख़्तियार फरमाया, कि रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला व उला ने हुज़ूर को वक़्ते हक़ीक़ी पर इत्तिला फरमाई थी और हुज़ूर पुर-नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दीन में ख़ता से मासूम थे। (फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 299)

हालते नापाकी में रोज़े का हुक्म :

रोज़ा की हालत में अगर जनाबत लाहिक़ हो जाए तो उस से रोज़ा में ख़लल नहीं आता इसी तरह अगर जनाबत हो और रोज़ा रहे तो भी उस से रोज़ा में कोई नुक़्स लाज़िम नहीं आएगा हाँ अगर जनाबत के सबब से नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो सख़्त गुनाहे कबीरह का मुर्तकिब और अज़ाबे जहन्नम का मुस्तहिक़ होगा। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अज़्वाजे मुतह्हरात से क़ुर्बत फरमाते और सुबह हो जाती जब तक न नहाते उसके बाद ग़ुस्ल फरमाते और रोज़ा रखते। (बुख़ारी, मुस्लिम)

उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर पुर-नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने दरवाज़-ए-अक़्दस के पास खड़े थे एक शख़्स ने हुज़ूर से अर्ज़ की और मैं सुन रही थी कि या रसूलुल्लाह मैं सुबह को जुनुब उठता हूँ और नीयत रोज़े की होती है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मैं ख़ुद ऐसा

करता हू, उसने अर्ज़ की हुज़ूर की हमारी क्या बराबरी, हुज़ूर को तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने पूरी माफ़ी अता फरमा दी है उस पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ग़ज़बनाक हुए और फरमाया बेशक मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे तुम सबसे ज़्यादा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का ख़ौफ़ है और मैं तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ जिन–जिन बातों से मुझे बचना चाहिए।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, निसई)

इस हदीस ने ख़ूब वाज़ेह फरमा दिया कि उस से रोज़ा में कोई नुक़्स नहीं आता।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 615)

ऐतकाफ़ :

20 रमज़ानुल–मुबारक से 30 रमज़ान तक का ऐतकाफ़ सुन्नते मुअक्कदा वज्हुल–किफ़ाया है जिस पर हुज़ूर पुर–नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मवाज़िबत व मुदावमत फरमाई। पूरे अशर–ए–अख़ीरह का ऐतकाफ़ है एक रोज़ भी कम हो तो सुन्नत अदा न होगी हाँ ऐतकाफ़ नफ़्ल के लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं एक साअत का भी हो सकता है अगरचे बेरोज़ा हो, इसलिए हमेशा चाहिए कि जब नमाज़ को मस्जिद में आए ऐतकाफ़ की नीयत कर ले कि यह दूसरी इबादत मुफ़्त हासिल हो जाएगी। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 661)

ज़कात की अहमीयत व हैसियत

ज़काते आज़म फ़ुरूज़े दीन व अहम अरकान इस्लाम से है इसलिए क़ुरआने अज़ीम में 32 जगह नमाज़ के साथ उसका ज़िक्र फरमाया और तरह–तरह से बन्दों को इस फ़र्ज़ अहम की तरफ़ बुलाया। साफ़ फरमा दिया कि हरगिज़ न समझना कि ज़कात दी तो माल में से इतना कम हो गया बल्कि उस से माल बढ़ता है, क़ुरआने अज़ीम में है कि अल्लाह तआला सूद को मिटाता और सदक़ा को बढ़ाता है।

बाज़ दरख़्तों के कुछ अज्ज़ाए फासिदा इस क़िस्म के पैदा हो जाते हैं कि पेड़ की उठान की रोक देते हैं अहमक़ नादान उन्हें ने तराशेगा कि मेरे पेड़ से इतना कम हो जाएगा लेकिन आक़िल होशमन्द तू जानता है कि उनके छांटने से यह नौनिहाल लहलहा कर दरख़्त बनेगा वरना यूं ही मुरझा कर रह जाएगा, यही हिसाब ज़काती माल का है। (कि अगर ज़कात अदा की जाए तो माल बढ़ेगा तो उसमें बरकत होगी वरना उसमें बेबरकती हो जाएगी और उसके हक़ में मुफ़ीद न होगा।

(मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं तुम्हारे इस्लाम को पूरा होना यह है कि अपने मालों की ज़कात अदा करो। (मुसनद बज़्ज़ार)

एक हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर ईमान लाता हो उसे लाज़िम है कि वह अपने माल की ज़कात अदा करे। यानी ईमान का तक़ाज़ा यही कि ज़कात अदा की जाए। (तबरानी कबीर)

एक और हदीस में है जिसने अपने माल ज़कात अदा कर दी बेशक अल्लाह ने उस माल का शर उस से दूर फरमा दिया। (सही इब्ने ख़ुज़ैमा, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 433)

ज़कात न देने की वईद पर अहादीस

अहादीसे करीमा में ज़कात न देने वालों के लिए काफी वईदें वारिद हुई हैं कि ज़कात अदा न करने से माल तबाह व बरबाद हो जाएगा, क़यामत के दिन दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा, उसके बेज़काती माल अज़्दहा बन कर उसे डसेगा। उस माल से उसके बदन को दाग़ा जाएगा वग़ैरह वग़ैरह। (मुरत्तिब)

हदीस : ज़कात का माल जिस माल में मिला होगा उसे तबाह व बर्बाद कर देगा। (बज़्ज़ार, बैहक़ी)

हदीस : ख़ुश्की व तरी में जो माल तल्फ़ होता है वह ज़कात न देने ही से तल्फ़ होता है। (तबरानी)

हदीस : अपने मालों को मज़्बूत क़िलों में कर लो ज़कात दे कर और अपने बीमारों का इलाज करो ख़ैरात से। (मरासील, अबू दाऊद)

हदीस : जिसके पास सोना या चाँदी हो और उसकी ज़कात न दे क़यामत के दिन उस ज़र व सीम की तख़्तियाँ बना कर जहन्नम की आग में तपाएंगे फिर उन से उस शख़्स की पेशानी और करवट और पीठ पर दाग़ देंगे, जब वह तख़्तियाँ ठण्डी हो जाएंगी फिर उन्हें तपा कर दाग़ेंगे क़यामत के दिन कि पचास हज़ार बरस का है यूंही करते रहेंगे यहाँ तक कि तमाम मख़्लूक़ का हिसाब हो चुके। (बुख़ारी, मुस्लिम)

कुरआने अज़ीम में अल्लाह तआला फरमाता है।

और जो लोग जोड़ते हैं सोना, चाँदी और उसे ख़ुदा की राह में नहीं उठाते यानी ज़कात अदा नहीं करते उन्हें बशारत दे दुख की मार की जिस दिन तपाया जाएगा वह सोना, चाँदी जहन्नम की आग से, पस दाग़ी जाएंगी उस से उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें, यह है जो तुमने अपने लिए जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का। (सूरः तौबा : 34ए 35)

फिर उस दाग़ देने को भी न समझिए कि कोई चकहा लगा दिया जाएगा या पेशानी व पहलू और पुश्त की चर्बी निकल कर बस होगी बल्कि उसका हाल भी हदीस से सुन लीजिए।

हदीस : सैयदना अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया उनके सर पिस्तान पर वह जहन्नम का गर्म पत्थर रखेंगे। कि सीना तोड़ कर शाना से निकल जाएगा और शाना की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियाँ तोड़ता सीना से निकलेगा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस : और फरमाया मैंने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना कि पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा और गुद्दी तोड़ कर पेशानी से। (मुस्लिम)

हदीस : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कोई रुपया दूसरे रुपया पर न रखा जाए न कोई अशरफ़ी से छू जाएगी बल्कि ज़कात न देने वाले का जिस्म इतना बढ़ा दिया जाएगा कि लाखों करोड़ों जोड़े हों तो हर रुपया जुदा दाग़ देगा। (तबरानी)

इस हदीस को बयान फरमा कर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी दर्द भरे अन्दाज़ में फरमाते हैं।

ऐ अज़ीज़ क्या ख़ुदा और रसूल के फरमान को यूं ही हंसी ठट्ठा समझता है या पचास हज़ार बरस की मुद्दत में यह जानकाह मुसीबतें झेलनी सहल जानता है, ज़रा यहीं की आग में एक आध रुपया गर्म करके बदन पर रख देख फिर कहाँ यह ख़फ़ीफ़ गर्मी कहाँ वह क़हर आग, कहाँ यह एक ही रुपया कहाँ वह सारी उम्र का जोड़ा हुआ माल, कहाँ यह मिनट भर की देर कहाँ वह हज़ारों बरस की आफ़त, कहाँ यह हल्का सा चहका कहाँ वह हड्डियाँ तोड़ कर पार होने वाला ग़ज़ब, अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत बख़्शे आमीन।

हदीस : मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो शख़्स अपने माल की ज़कात न देगा वह माल रोज़े क़्यामत गंजे अज़्दहे की शक्ल बनेगा और उसके गले में तौक़ हो कर पड़ेगा, फिर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने किताबुल्लाह से उसकी तस्दीक़ पढ़ी कि रब अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है जिस चीज़ में बुख़्ल कर रहे हैं क़रीब है कि तौक़ बना कर उनके गले में डाली जाए क़्यामत के दिन। (इब्ने माजा, निसई)

हदीस : वह अज़्दहा मुँह खोल कर उसके पीछे दौड़ेगा यह भागेगा उस से फरमाया जाएगा ले अपना वह ख़ज़ाना कि छुपा कर रखा था कि मैं उस से ग़नी हूँ, जब देखेगा कि उस अज़्दहा से कहीं मुफ़िर नहीं नाचार अपना हाथ उसके मुँह में दे देगा वह ऐसा चबाएगा जैसे नरावन्ट चबाता है।

(मुस्लिम)

हदीस : जब वह अज़्दहा उस पर दौड़ेगा यह पूछेगा तू कौन है कहेगा मैं तेरा वह बेज़काती माल हूँ जो छोड़ मरा था, जब यह देखेगा कि वह पीछा किए ही जा रहा है हाथ उसके मुँह में दे देगा वह चबाएगा फिर उसका सारा बदन चबा डालेगा। (बज़्ज़ार, तबरानी)

हदीस : वह अज़्दहा उसका मुँह अपने फन में लेकर कहेगा मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ।

हदीस : फ़क़ीर हरगिज़ नंगे भूखे होने की तक्लीफ़ न उठाएंगे मगर अग़्निया के हाथों, सुन लो ऐसे तोंगरों से अल्लाह तआला सख़्त हिसाब लेगा और उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। (तबरानी)

हदीस : अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं : ज़कात न देने वाला मल्ऊन है ज़ुबान पाक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर।

(इब्ने ख़ुज़ैमा, अबू याला, मुसनद अहमद)

हदीस : मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू फरमाते हैं रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सूद खाने वाले और खिलाने वाले और उस पर गवाही करने वाले और उसका काग़ज़ लिखने वाले, ज़कात न देने वाले उन सबको क़्यामत के दिन मल्ऊन बताया। (अल–अस्बहानी)

हदीस : क़्यामत के दिन तोंगरों के लिए मुहताजों के हाथ से ख़राबी है, मुहताज अर्ज़ करेंगे ऐ रब हमारे उन्होंने हमारे वह हुक़ूक़ जो तूने हमारे लिए उन पर फ़र्ज़ किए थे ज़ुल्मन न दिए, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फरमाएगा मुझे क़सम है अपने इज़्ज़त व जलाल की तुम्हें अपना क़ुर्ब अता करूंगा और उन्हें दूर रखूंगा। (तबरानी, अबुश्शैख़)

हदीस : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कुछ लोग देखे जिनके आगे पीछे ग़र्क़ी लंगोटियों की तरह कुछ चीथड़े थे और जहन्नम की गर्म आग पत्थर और थूहर और सख़्त कड़वी जलती बदबू घास चौपायों की तरह चरते फिरते थे, जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा यह कौन लोग हैं अर्ज़ की यह ज़कात न देने वाले हैं और अल्लाह तआला ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं फरमाता। (मुसनद बज़्ज़ार)

हदीस : दो औरतें ख़िदमते वाला में सोने के कंगन पहने हाज़िर हुईं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया उनकी ज़कात दोगी अर्ज़ की न, फरमाया क्या चाहती हो कि अल्लाह तआला तुम्हें आग के कंगन पहनाए अर्ज़ की न, फरमाया तो ज़कात दो।

(तिर्मिज़ी, दारु क़ुतनी)

हदीस : एक बीबी चाँदी के छल्ले पहने थीं फरमाया उनकी ज़कात दो गी उन्होंने कुछ इंकार सा किया फरमाया तो यह ही तुझे जहन्नम में ले जाने को बहुत हैं। (अबू दाऊद, दारु क़ुतनी)

हदीस : ज़कात देने वाला क़्यामत के दिन दोज़ख़ में होगा। (तबरानी)

हदीस : दोज़ख़ में सबसे पहले तीन शख़्स जाएंगे उन में एक वह तोंगर कि अपने माल में अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का हक़ नहीं अदा करता। (सही इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने हिब्बान)

ग़रज़ ज़कात न देने की जान का यह आफ़तें वह नहीं जिनकी ताब आ सके, न देने वाले को हज़ारहा साल उन सख़्त अज़ाबों में गिरफ़्तारी की उम्मीद रखनी चाहिए कि ज़ईफ़ुल–बनियान इंसान की क्या जान अगर पहाड़ों पर डाली जाएं सुर्मा हो कर ख़ाक में मिल जाएं।

अदाए नफ़्ल, बे अदाए फ़र्ज़ मक़्बूल नहीं :

वह बहुत बड़ा नादान है कि अपना माल झूठे सच्चे नाम की ख़ैरात में सर्फ़ करे और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का फ़र्ज़ और उस बादशाह क़हहार का वह भारी क़र्ज़ गर्दन पर रहने दे, यह शैतान का बड़ा धोका है कि आदमी को नेकी के पर्दे में हलाक करता है, नादान समझता ही नहीं, गुमान यह है कि नेक काम कर रहा हूँ और न जाना कि नफ़्ल बेफ़र्ज़ धोखे के की टट्टी है उसके क़ुबूल की उम्मीद तो मफ़्क़ूद और उसके तर्क के अज़ाब गर्दन पर मौजूद।

ऐ अज़ीज़ फ़र्ज़े ख़ास सुल्तानी क़र्ज़ है और नफ़्ल गोया तोहफ़ा व नज़्राना, क़र्ज़ न दीजिए और बालाई बेकार तोहफ़े भेजिए वह क़ाबिले क़ुबूल होंगे? ख़ुसूसन उस शहनशाह ग़नी की बारगाह में जो तमाम जहान व जहानियाँ से बेनियाज़ है, यूं यक़ीन न आए तो दुनिया के झूठे हाकिमों ही को आज़मा ले, कोई ज़मींदार माल गुज़ारी तो बन्द कर ले और तोहफ़ा में डालियाँ भेजा करे देखो तो सरकारी मुज्रिम ठहरता है या उसकी डालियाँ कुछ बहबूद का फल लाती हैं? ज़रा आदमी अपने ही गरीबान में मुँह डाले, फ़र्ज़ कीजिए आसामियों से किसी खण्ड सारी का रस बंधा हुआ है, जब देने का वक़्त आए वह रस तो हरगिज़ न दें मगर तोहफ़ा में आम ख़रबूज़े भेजें, क्या यह शख़्स उन आसामियों से राज़ी होगा या आते हुए उसकी नादहिन्दगी पर जो आज़ार उन्हें पहुँचा सकता है उन आम ख़रबूज़े के बदले उस से बाज़ आएगा?

सुब्हानल्लाह! जब एक खण्ड सारी के मुतालबा का यह हाल है तो मलिकुल–मौत अहकमुल–हाकेमीन जल्ला व उला के क़र्ज़ का क्या पूछना।

जब ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सैयदना सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़अ़ का वक़्त हुआ अमीरुल–मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर फरमाया ऐ उमर अल्लाह से डरना और जान लो कि अल्लाह के कुछ काम दिन में हैं कि उन्हें रात को करो तो क़ुबूल न फरमाएगा और कुछ काम रात में कि उन्हें दिन में करो तो मक़्बूल न होंगे और ख़बरदार हो कि कोई नफ़्ल क़ुबूल नहीं होता जब तक फ़र्ज़ न अदा कर लिया जाए। (अबू नईम हुलिया, जुज़्व इमला)

हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब "फ़ुतूहुल–ग़ैब शरीफ़" में क्या क्या जिगर शिगाफ़ मिसालें ऐसे शख़्स के लिए इरशाद फरमाई हैं जो फ़र्ज़ छोड़ कर नफ़्ल बजा लाए।

फरमाते हैं कि उसकी कहावत ऐसी है, जैसे किसी शख़्स को बादशाह अपनी ख़िदमत के लिए बुलाए यह वहाँ तो हाज़िर न हुआ और उसके ग़ुलाम की ख़िदमतगारी में मौजूद रहे।

फिर हज़रत अमीरुल–मुमिनीन सैयदना मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से उसकी मिसाल नक़ल फरमाई कि जनाब इरशाद फरमाते हैं :

ऐसे शख़्स का हाल उस औरत की तरह है जिसे हमल रहा जब बच्चा होने के दिन क़रीब आए इस्क़ात हो गया अब न वह हामिला है न बच्चा वाली, यानी जब पूरे दिनों पर अगर इस्क़ात हुआ तो मेहनत तो पूरी उठाई और नतीजा ख़ाक नहीं कि अगर बच्चा होता तो समरा ख़ुद मौजूद था, हमल बाक़ी रहता तो आगे उम्मीद लगी थी, अब न हमल, न बच्चा, न समरा और तक्लीफ़ वही झेली जो बच्चा वाली को होती। (फ़ुतूहुल–ग़ैब)

ऐसे ही उस नफ़्ल ख़ैरात देने वाले के पास से रुपया तो उठा मगर जबकि फ़र्ज़ छोड़ा यह नफ़्ल

भी क़ुबूल न हुआ तो ख़र्च का ख़र्च हुआ और हासिल कुछ नहीं।

इसी किताबे मुबारक फ़ुतूहुल–ग़ैब शरीफ़ में है :

हुज़ूर मौला रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया है कि जो फ़र्ज़ छोड़ कर सुन्नत व नफ़्ल में मश्ग़ूल होगा यह क़ुबूल न होंगे और ख़्वार किया जाएगा।

शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़ुतूहुल–ग़ैब की शरह में फरमाते हैं :

जो चीज़ लाज़िम व ज़रूरी है उसे छोड़ देना और ज़रूरी नहीं उसका एहतमाम करना यह फ़ाइदा से ख़ाली और अक़्ल व ख़िरद से दूर व बेगाना बात है क्योंकि अक़्लमन्दों के नज़्दीक नफ़ा हासिल करने से ज़्यादा अहम ज़रर व नुक़्सान को दूर करना है बल्कि हक़ीक़त यह है कि फ़र्ज़ छोड़ कर नफ़्ल में मश्ग़ूल होने में कोई नफ़ा नहीं है। (त)

हज़रत शैख़ अश्शुयूख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अवारिफ़ शरीफ़ में हज़रत ख़्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से नक़्ल फरमाते हैं :

हमें ख़बर पहुँची कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल कोई नफ़्ल क़ुबूल नहीं फरमाता यहाँ तक कि फ़र्ज़ अदा किया जाए अल्लाह तआला ऐसे लोगों से फरमाता है कहावत तुम्हारी उस बद बन्दा की मानिन्द है जो क़र्ज़ अदा करने से पहले तोहफ़ा पेश करे।

हदीस में है हुज़ूर पुर–नूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं चार चीज़ें अल्लाह तआला ने इस्लाम में फ़र्ज़ की हैं कि जो उन में से तीन अदा करे वह उसे कुछ काम न दें जब तक पूरी चारों बजा न लाए नमाज़, ज़कात, रोज़ा, रमज़ान, हक काबा।

(मुसनद अहमद)

सैयदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ क़ुबूल नहीं। (तबरानी कबीर)

सुब्हानल्लाह जब ज़कात न देने वाले की नमाज़, रोज़े, हज तक मक़्बूल नहीं तो उस नफ़्ल ख़ैरात नाम की काइनात से क्या उम्मीद है।

एक रिवायत में यूं आया कि जो नमाज़ अदा करे और ज़कात न दे वह मुसलमान नहीं कि उसे उसका अमल काम आए। (अल–अस्बहानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 433 ता 438)

सोने चाँदी की निसाब :

सोने की निसाब साढ़े सात तोले और चाँदी की साढ़े बावन तोले है, उनमें से जो उसके पास हो और साल पूरा उस पर गुज़र जाए और खाने पहनने मकान वग़ैरह ज़रूरियात से बचे और क़र्ज़ उसे निसाब से कम न कर दे तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है अगरचे पहनने का ज़ेवर हो, ज़ेवर पहनना कोई हाजते अस्लीया नहीं, घर में जो आदमी खाने वाले हों उसका लिहाज़ शरीअते मुतह्हरा ने पहले ही फरमा लिया, साले के खाने पीने पहनने तमाम मसारिफ़ से जो बचा और साल भर रहा उसी का तो चालीसवाँ हिस्सा फ़र्ज़ हुआ है और वह भी इसलिए कि तुम्हें आख़िरत में भी अज़ाब से नजात मिले जिस से आदमी तमाह जहाँ देकर छूटने को ग़नीमत समझे और दुनिया में तुम्हारे माल में तरक़्क़ी हो बरकत हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 407)

यही मज़्मून कुछ इख़्तिसार के साथ दूसरे मक़ाम पर इस तरह है :

शरीअते मुतह्हरा ने सोने, चाँदी की निसाब पर कि हवाइजे अस्लीया से फ़ारिग़ हो ख़्वाह वह रुपया, अशरफ़ी हो, या गहना, या बर्तन, या वर्क़, या कोई शय, हौलाने हौल क़मरी के बाद चालीसवाँ हिस्सा ज़कात में मुक़र्रर फरमाया है। सोने की निसाब साढ़े सात तोले है और चाँदी की साढ़े बावन तोले। फिर निसाब के बाद जो कुछ निसाब मज़्कूर के पाँचवें हिस्सा तक न पहुँचे माफ़ है

उस पर कुछ वाजिब नहीं। जब ख़ुम्स कामिल हो जाए उस पर फिर उस ख़ुम्स का चालीसवाँ हिस्सा फ़र्ज़ होगा, यूं ही एक ख़ुम्स से दूसरे तक माफ़ और हर ख़ुम्स कामिल पर उसका रुबअ् अशर।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 386)

आज के ज़माने में नोटों पर ज़कात का हिसाब यह है कि नोट साढ़े सात तोले सोने या कम से कम साढ़े बावन तोले चाँदी की क़ीमत को पहुँच जाए तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है। (मुरत्तिब)

इंतिबाह :

यह ख़्याल करना ज़कात से माल घटेगा नरा ज़ुअ्फ़े ईमान है, मौला तआला कुरआने अज़ीम में इरशाद फरमाता है कि वह ज़कात को तरक़्क़ी व अफ़्ज़ूनी देता है, जिसे वह बढ़ाए वह क्योंकर घट सकता है।

यह ख़्याल कि उस वक़्त अगर सौ रुपया में से ढाई रुपया हुक्म मानने में उठा देंगे तो आइन्दा बाल बच्चे क्या खाएंगे महज़ शैतानी वसवसा है, ज़कात से अगर बरकत भी मिलती तो ढाई रुपया सौ में से कम हो जाता रिज़्क़ न छिनता आइन्दा साल अगर माल बढ़ गया कि साल भर का बाल बच्चों का ख़र्च हुआ और वह रुपया बदस्तूर रखे रहे जब तो उस वसवसा का एलानिया झूठ होना हो जाएगा और अगर उन में से खाने पीने की हाजत पड़ी यहाँ तक कि निसाब से कम रह गया तो अब आप से कोई ज़कात न मांगेगा, मगर बाल बच्चों की फ़िक्र अगले साल के लिए क्या होगी वह जो जमा थे खाने पीने में उठ गये और अब ज़कात भी नहीं जिस सर इल्ज़ाम धरो, आगे क्योंकर जियोगे? ऐसी कमज़ोरियाँ शैतान सिखाता है। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 407)

सादात व बनी हाशिम को ज़कात देना :

सादाते किराम व बनी हाशिम को ज़कात की रक़म देने से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी तहरीर फरमाते हैं :

बनी हाशिम को ज़कात व सदक़ात वाजिबात देना हरगिज़ जाइज़ नहीं न उन्हें लेना हलाल, सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुतवातिर हदीसें उसकी तहरीम में आएं और इल्लते तहरीम उनकी इज़्ज़त व करामत है कि ज़कात माल का मेल है और तमाम सदक़ात वाजिबा के मिस्ल गुनाहों का धोने वाला तो उनका हाल मा मुस्तामल के मिस्ल है जो गुनाहों की नजासात और हदस की गन्दगियाँ धो कर लाया, उन पाक लतीफ़ सुथरे नज़ीफ़ अहले बैत तैयब व तहारत की शान उस से बस अरफ़ा व आला है कि ऐसी चीज़ों से आलूदगी करें ख़ुद अहादीसे सहीहा में उस इल्लत की तसरीह फरमाई।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि सदक़ा मुहम्मद और आल मुहम्मद के लिए हलाल नहीं है क्योंकि यह लोगों के माल का मील है। (त, मुस्लिम)

हदीस : अह्ले बैत के लिए सदक़ा की कोई चीज़ हलाल नहीं है क्योंकि यह हाथों का धोवन है।

(त, तबरानी)

हदीस : अमीरुल–मुमिनी अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि आप हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मेरे लिए पूछें कि हुज़ूर मुझे तहसील सदक़ात पर आमिल बना दें हज़रत अब्बास ने सवाल किया तो हुज़ूर ने फरमाया कि मैं तुम्हें लोगों के गुनाहों के धोवन पर आमिल नहीं बनाऊंगा।

(त, तहावी)

अल्लाह तआला ने अह्ले बैत अत्हार के लिए सदक़ात को हराम फरमाया मगर ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा उनके लिए हलाल फरमाया।

एक रिवायत में बेऐनिही यह है कि आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) के लिए सदक़ात हलाल नहीं लेकिन उनके लिए ग़नीमत का पाँचवां हिस्सा जाइज़ क़रार दिया गया है।

(त, इब्ने अबी शैबा, तबरानी, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 478)

इसी मज़्मून से मुतअल्लिक़ एक दूसरे मक़ाम पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं :

ज़कात सादाते किराम और तमाम बनी हाशिम पर हराम क़तई है जिसकी हुर्मत पर हमारे अइम्मा सलासा बल्कि अइम्मा मज़ाहिबे अरबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का इज्मा क़ाइम।

इमाम शेअ़रानी रहमतुल्लाह तआला अलैह मीज़ान में फ़रमाते हैं :

अइम्मा अरबा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि सदक़ाते मफ़रूज़ा बनी हाशिम व बनी अब्दुल–मुत्तलिब पर हराम हैं और वह पाँच क़बीले हैं।

आले अली, आले अब्बास, आले जाफ़र, आले अक़ील, आले हारिस बिन अब्दुल–मुत्तलिब।

(त, मीज़ान अश्शरीअतुल–कुबरा, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 391)

एक और सवाल के जवाब में फ़रमाते हैं :

सैयद को ज़कात लेना देना हराम है और उसे देने से ज़कात अदा नहीं होती। और फ़ाक़ों पर नौबत अगर इस बिना पर हो कि नौकरी या मज़्दूरी पर क़ुदरत है और नहीं करना चाहता तो यह फ़ाक़ा भी उज़्र नहीं हो सकता कि यह अपने हाथ का है क्यों नहीं कसबे हलाल करता और अगर वाक़ई कसब पर क़ादिर नहीं तो मुसलमानों पर फ़र्ज़ है कि उसकी एआनत करें और अगर लोग बेपरवाही करें और उसे कोई ज़रीआ रिज़्क़ का सेवा ज़कात लेने के न हो तो बक़द्र ज़रूरत ले और क़द्र ज़रूरत में सर्फ़ करे। (फ़तावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 476)

मुहताज रिश्तादार को ज़कात देना :

ज़कात और सब सदक़ात अपने अज़ीज़ों क़रीबों को देना अफ़्ज़ल और दो चन्द अज्र का बाइस है।

ज़ैनब सक़िफ़या ज़ौजा अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद और एक बीबी अन्सारिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम दरे अक़्दस पर हाज़िर हुईं और हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ुबानी अर्ज़ करा भेजा कि हम अपने सदक़ात अपने अक़ारिब को दें हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उनके लिए दो सवाब होंगे एक सवाब क़राबत दूसरा तसद्दुक़ का।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

और फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिस्कीन को देना अकहरा सदक़ा है और रिश्तादार को देना दुहरा एक तसद्दुक़ और एक सिला रहम। (निसई, तिर्मिज़ी)

एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं ऐ उम्मते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) क़सम उसकी जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा अल्लाह तआला उसका सदक़ा क़ुबूल नहीं फ़रमाता जिसके रिश्तेदार उसके सुलूक की हाजत रखें और वह उन्हें छोड़ कर औरों पर तसद्दुक़ करे क़सम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है अल्लाह तआला रोज़े क़्यामत उस पर नज़र न फ़रमाएगा। (तबरानी)

मगर यह इसी सूरत में है कि वह सदक़ा उसके क़रीबों को जाइज़ हो, ज़कात के लिए शरीअते मुतह्हरा ने मसारिफ़ मुऐयन फ़रमा दिए हैं और जिनको देना जाइज़ है साफ़ बता दिए, उसके रिश्तेदारों में वह लोग जिन्हें देने से मुमानेअत है (यानी उसूल व फ़ुरूअ़, जैसे माँ–बाप और औलाद

को देने की मुमानेअत है) हरगिज़ इस्तेहक़ाक़ नहीं रखते, न उनके दिए ज़कात अदा हो जैसे अपने ग़नी भाई या फ़क़ीर बेटे को देना यूंहीं अपना क़रीब हाशगी कि शरीअते मुतहहरा ने बनी हाशिम को सराहतन मुस्तसना फरमा लिया है। उन्हें भी देना जाइज़ नहीं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 485)

बैंक या बीमा की रक़म पर ज़कात :

बैंक या बीमा कम्पनी में जो रुपया मुऐयना मुद्दत के लिए जमा किया जाता है वह जब तक बैंक या बीमा में है अपने क़ब्ज़ा में समझा जाएगा और हर साल उस पर ज़कात वाजिब होगी ख़्वाह साल बसाल अदा करता रहे या वसूल होने के बाद अदा करे और जितने बरस रहा सब बरसों की ज़कात वाजिब होगी, हाँ हर साल अगले बरसों की ज़कात की क़द्र उस पर दीन समझ कर इतना ज़कात से जुदा रहेगा, मसलन दो सौ रुपया जमा हैं तो पहले साल दो सौ पर पाँच रुपया तक़रीबन वाजिब हुए, दूसरे साल पाँच रुपया साल गुज़िश्ता की ज़कात के उस पर वाजिब हैं लिहाज़ा इस साल एक सौ पचानवे रुपये पर ज़कात वाजिब होगी तक़रीबन चार रुपये चौदह आने, तीसरे साल उस पर दो साल की ज़कात के नव रुपये चौदह आने फ़र्ज़ हैं यह मुस्तस्ना हो कर एक सौ नौवे रुपये दो आना पर ज़कात वाजिब होगी। व अला हाज़ल-क़्यास।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 416)

जिस रुपया पर अपना क़ब्ज़ा हो उस पर साल तमाम होने पर पूरी ज़कात अदा करे, हाँ अव्वलीयत चाहे तो साल तमाम होने से पहले पेशगी अदा करे उसके लिए बेहतर माहे मुबारक रमज़ान है जिस में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ों के बराबर और फ़र्ज़ का सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 439)

ज़मीन की पैदावार पर ज़कात या अश्र :

खेत की पैदावार पर ज़कात नहीं बल्कि अश्र है उसके सिवा साल पूरा होने पर और कोई ज़कात नहीं आती, ज़कात सिर्फ़ तीन मालों पर है।

1. सोना चाँदी।
2. वह माल जो तिजारत की नीयत से ख़रीदा।
3. जंगल में चरते हुए जानवर।

साहिबैन का मज़्हब यह है कि अश्र सिर्फ़ काश्त कार पर है उस पर फतावा देने में कोई हरज नहीं बल्कि उन मुल्कों जहाँ उजरत में नक़्दी ठहरी होती है वहाँ उसी पर फतवा होना चाहिए और बटाई में इमाम आज़म के क़ौल के मुताबिक़ अश्र सिर्फ़ ज़मींदार पर है।

★ जिसे बारिश या नहर या तालाब का पानी दिया गया उस में दसवां हिस्सा है।

और जिसे चरसे से या ढकली से पानी दिया गया उस में बीसवाँ हिस्सा और जिसे मोल का पानी दिया गया उस में भी बीसवाँ हिस्सा चाहिए। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 450)

फ़क़ीर को कपड़ा देना या खाना खिलाना :

कपड़ा बना कर फ़ुक़रा व मसाकीन को देकर मालिक कर देना, खाना पका कर उनके घर को भेज कर क़ब्ज़ा में देकर मालिक कर देना। तो हालत मौजूदा पर यह सिला हुआ कपड़ा हुआ खाना बाज़ार के भाव से जितने का है इस क़द्र ज़कात में मुजरा होगा, सिलाई पकवाई वग़ैरह मुजराना मिलेगी और अगर अपने यहाँ पका कर दस्तर्ख़्वान पर बिठा कर खिला दिया जिस तरह दावतों में होता है तो वह ज़कात नहीं हो सकता। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 472)

सदक़ा फ़ित्र की चीज़ें :

शरअ़ मुतह्हर ने सदक़ा फ़ित्र सिर्फ़ चार चीज़ों से मुक़र्रर फरमाया है।

(1) गेहूँ (2) जौ (3) ख़ुरमा (4) ज़बीब

उनके सिवा पाँचवें कोई चीज़ चावल हो या धान या कपड़ा वह उन्हें में एक की क़ीमत के एतबार से जाइज़ है वरना नहीं। गेहूँ से नीम साअ़ वाजिब है और जौ से उसका दूना।

गेहूँ या जौ का वहाँ कम पैदा होना, या ग़िज़ा में मुस्तामल न होना, या दिहात में न मिलना चावल को बेलिहाज़ क़ीमत सिर्फ़ साअ़ या नीम साअ़ दे देने के क़ाबिल नहीं कर सकता बल्कि वाजिब है कि अपने ज़िला में गेहूँ नीम साअ़, या जौ एक साअ़ की जो क़ीमत हो इस क़द्र दाम या इतने दाम के चावल, या और चीज़ अदा करें। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 493)

एक मुंकिरे ज़कात का अंजाम :

ज़मान–ए–रिसालत में एक शख़्स था जिसका नाम सालबा बिन अबी हातिब था उसने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे लिए दुआ फरमा दीजिए कि मैं मालदार हो जाऊं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ सअ़्लबा तुम्हारे लिए ग़रीबी बेहतर है। सअ़्लबा ने बार बार यही अर्ज़ की अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरी मालदारी की दुआ फरमा दीं हुज़ूर ने भी यही फरमाया कि तुम्हारे लिए ग़रीबी ही बेहतर है मगर उसके इसरार पर हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसकी मालदारी के लिए दुआ फरमा दी, जिसका नतीजा यह हुआ कि उसकी बकरियाँ इतनी बढ़ीं कि उन्हीं पहाड़ों की चोटियों पे बसेरा करना पड़ा और वह बकरियों की ख़ातिर मदीने से बाहर ही रहने लगा पहले तो हर जमाअत में हाज़िर होता रहा फिर कुछ दिनों के बाद सिर्फ़ जुमा को हाज़िर होने लगा यहाँ तक कि जुमा भी तर्क हो गया।

एक अरसा के बाद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ज़कात वसूल करने वाले को उसके पास भेजा ताकि उसकी बकरियों की ज़कात बारगाहे रिसालत में लाए मगर उसने ज़कात के मुहसिल को यह जवाब दिया कि यह तो एक क़िस्म का टेक्स है हम इस सिलसिले में ग़ौर करेंगे कि हम को क्या करना है। इसी सोच व फ़िक्र में सअ़्लबा एक दिन अपनी बकरियों की ज़कात लेकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुआ, मगर हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बहुक्म ख़ुदावन्दी सअ़्लबा की ज़कात क़ुबूल नहीं फरमाई। (मुरत्तिब)

अल्लाह तआला ने सअ़्लबा के बारे में आयत नाज़िल फरमाई : व मिन्हुम मन आहदल्लाह, अल–आयह।

और उन में कोई वह हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे। (सूरः तौबा : 75)

जब यह आयत नाज़िल हुई उस वक़्त सअ़्लबा के रिश्तेदार का एक आदमी बारगाहे रिसालत में बैठा हुआ था उसने जब यह आयत सुनी तो सअ़्लबा के पास आया और कहा कि तुम्हारे लिए ख़राबी है ऐ सअ़्लबा बेशक अल्लाह तआला ने तेरे बारे में ऐसी आयत नाज़िल फरमाई है तो सअ़्लबा ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत मुबारका में आकर सदक़ा क़ुबूल करने की दर्ख़्वास्त की हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तेरा सदक़ा क़ुबूल करने से अल्लाह तआला ने मुमानेअत कर दी है। यह सुन कर सअ़्लबा वापस चला गया फिर वही सदक़ा सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त में लाया और कहा कि मेरा सदक़ा क़ुबूल कीजिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने फरमाया कि रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तेरी ज़कात क़ुबूल न फरमाई और मैं क़ुबूल कर लूँ हरगिज़ न होगा। फिर ख़िलाफ़त फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में हाज़िर लाया अर्ज़ की अमीरुल–मुमिनीन

मेरा सदक़ा क़ुबूल कर लीजिए फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़ुबूल न फरमाएं और मैं ले लूँ यह कभी न होगा। फिर ख़िलाफ़ते ज़ुन्नूरैन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु में हाज़िर लाया और क़ुबूल करने की गुज़ारिश की फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व सिद्दीक़ व फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने क़ुबूल न फमराई मैं भी न लूँगा। उसके बाद सअ्लबा उन्हीं की ख़िलाफ़त में हलाक हो गया। (त, तफ़सीर इब्ने जरीर व सअ्लबी, फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 34)

सदक़ा व ख़ैरात की फ़ज़ीलत

सदक़ा एक बेहतरीन नेकी और हुस्ने सुलूक का ज़रिया है सदक़ा से गुनाह मिटते और बलाएं दूर होती हैं सदक़ा करने से माल बढ़ता है और यह कि सदक़ा व मसारिफ़े ख़ैर में ऐतदाल चाहिए या अपना कुल माल यकलख़्त राहे ख़ुदा में दे देने की भी इजाज़त है? इस सिलसिले में दो वाक़ये मुलाहिज़ा फरमाएं, एक वाक़या में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पूरा माल राहे ख़ुदा मैं देने से मना फरमाया, और दूसरे वाक़या में यह है कि हुज़ूर ने उसे जाइज़ रखा। (मुरत्तिब)

इंफ़ाक़ में ऐतदाल की नज़ीर :

एक वाक़या यह है कि एक साहब अन्डे बराबर सोना लेकर हाज़िर हुए कि या रसूलुल्लाह यह मैंने एक कान में से पाया, मैं उसे तसद्दुक़ करता हूँ, उसके सिवा मेरी मिल्क में कुछ नहीं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ऐराज़ फरमाया, उन्होंने फिर अर्ज़ की, फिर ऐराज़ फरमाया, फिर अर्ज़ की, फिर ऐराज़ फरमाया, फिर अर्ज़ की, हुज़ूर ने वह सोना उन से लेकर ऐसा फेंका कि उनके लगता तो दर्द पहुँचाता, या ज़ख़्मी करता, और फरमाया तुम में एक अपना पूरा माल लाता है कि यह सदक़ा है, फिर बैठा लोगों से भीख माँगने लगे, बेहतर सदक़ा वह है जिसके बाद आदमी मुहताज न हो जाए। (अबू दाऊद)

पूरा माल सर्फ़ करने की नज़ीर :

दूसरा वाक़या यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तसद्दुक़ का हुक्म फरमाया, फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ख़ुश हुए कि अगर मैं कभी अबू बकर सिद्दीक़ पर सबक़त ले जाऊंगा, तो वह यही बार है कि मेरे पास माल बिस्यार है, अपने जुम्ला अमवाल से निस्फ़ हाज़िर ख़िदमते अक़्दस लाए, हुज़ूर ने फरमाया अहल व अयाल के लिए क्या रखा है? अर्ज़ की इतना ही, इतने में सिद्दीक़ अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए और अपना कुल माल हाज़िर हुए, घर में कुछ न छोड़ा, इरशाद हुआ अहल व अयाल के लिए क्या रखा? अर्ज़ की अल्लाह और अल्लाह का रसूल, जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम। उस पर हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम दोनों में वही फ़र्क़ है जो तुम्हारे इन जवाबों में।

और तहक़ीक़ यह है कि आम के लिए वही हुक्म म्याना रवी है और सिद्क़ तवक्कुल व कमाल तबत्तुल वालों की शान बड़ी है। (सहाह)

रिश्तेदार को सदक़ा देना :

मुहताज रिश्तेदार व अक़रेबा को सदक़ा देने में ज़्यादा सवाब है एक तो सदक़ा देने का और दूसरा सिलह रहमी का, क्योंकि जिसके अज़ीज़ मुहताज हों उसे मना है कि उन्हें छोड़ कर ग़ैरों को अपने सदक़ात दे। (मुरत्तिब)

हदीस में है हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ऐ उम्मते मुहम्मद क़सम उसकी जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है कि अल्लाह तआला ऐसे शख़्स का सदक़ा क़ुबूल नहीं फरमाता जिसके रिश्तेदार व अज़ीज़ उसकी सिलह रहमी के मुहताज हों और वह उन्हें छोड़ कर ग़ैरों को देता हो, और उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़–ए–कुदरत में मेरी जान है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ़ नज़र नहीं फरमाएगा। (त, तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द अव्वल, स0 181)

ग़ैर ज़िम्मी काफिर पर तस्दीक़ जाइज़ नहीं :

बहरुर्राइक़ वग़ैरह में तस्रीह है कि काफिर हरबी पर कुछ तसद्दुक़ करना असलन जाइज़ नहीं।

फ़ुक़हा–ए–किराम फरमाते हैं अगर आदमी के पास एक प्यास का पानी हो और जंगल में एक कुत्ता और एक काफिर शिद्दत तिश्नगी से जां बल्ब हो तो कुत्ते को पिला दे और काफिर को न दे।

हदीस शरीफ़ में है क़यामत के दिन एक शख़्स हिसाब के लिए बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में लाया जाएगा, उस से सवाल होगा क्या लाया, वह कहेगा मैंने इतनी नमाज़ें पढ़ीं अलावा फ़र्ज़ के, इतने रोज़े रखे अलावा माहे रमज़ान के, इस क़द्र ख़ैरात के अलावा ज़कात के, और इस क़द्र हज किए अलावा हज फ़र्ज़ के, वग़ैरा ज़ालिक, इरशादे बारी होगा कभी मेरे महबूबों से मुहब्बत और मेरे दुश्मनों से अदावत भी रखी?

तो उम्र भर की इबादत एक तरफ़ और ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत एक तरफ़, अगर मुहब्बत नहीं सब इबादात व रियाज़त बेकार।

बरके काटने से एक ज़रा सी आपको तक्लीफ़ होती है अगर कहीं उसे ज़मीन पर पड़ा देखें कि उसका एक पाँव या पर बेकार हो गया है और उसमें ताक़त परवाज़ नहीं है तो उस पर रहम किया जाता है कि पैर से मसल देते हैं? तो ख़ुदा व रसूल अज़्ज़ा जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियाँ करें और उन दुश्मनी व अदावत रखें वह क़ाबिले रहम हैं? हरगिज़ उन्हें अवाम की यह हालत है कि ज़रा किसी को नंगा, मुहताज देखा समझे कि क़ाबिले रहम है ख़्वाह ख़ुदा व रसूल का दुश्मन ही क्यों न हो।

एआनत काफिर का वबाल :

हज़रत सैयदी अब्दुल–अज़ीज़ दबाग़ कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि ज़रा सी एआनत काफिर की करना हत्ता कि अगर वह रास्ता पूछे और कोई मुसलमान बता दे, इतनी बात अल्लाह तआला से उसका इलाक़ा मक़्बूलियत क़तअ् कर देती है। हाँ ज़िम्मी मस्तामिन काफिरों के लिए शरअ् में रिआयत के ख़ास अहकाम हैं, यह इसलिए कि इस्लाम अपने ज़िम्मा का पूरा है और अपने अहद का सच्चा। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 107)

अपनी ज़िन्दगी में और छुपा कर सदक़ा की फ़ज़ीलत :

आदमी अपनी ज़िन्दगी में अपने लिए सदक़ा और ईसाले सवाब कर सकता है, मगर मुहताजों को छुपा कर दे यह जो आम रिवाज है कि खाना पकाया जाता है और तमाम अग़्निया व बरादरी की दावत होती है ऐसा न करना चाहिए, छुपा कर देना मुहताजों को आला व अफ़्ज़ल है।

हदीस में इरशाद फरमाया छुपा कर सदक़ा देना बुरी मौत से बचाता है और रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के ग़ज़ब को ठण्डा करता है। (कंज़ुल–उम्माल)

ज़िन्दगी में अपने वास्ते सदक़ा करना बाद मौत के सदक़ा से अफ़ज़ल है।

हदीस में इरशाद फरमाया अफ़ज़ल सदक़ा यह है कि तू तसद्दुक़ करे इस हाल में तू तन्दरुस्त हो और माल पर हरीस, ख़्वाहिशमन्द से दौलत की तमन्ना रखता हो और मुहताजी से डरता हो, यह न हो कि जब दम गले में अटके उस वक़्त कहे कि फलां को इतना फलां को इतना कि अब तो फलां के लिए हो ही चुका। (बुख़ारी, अल–मल्फ़ूज़ सोम, स० 52)

हराम माल का सदक़ा मक़्बूल नहीं :

ज़ंहार माल हराम क़ाबिले क़ुबूल नहीं न उसे राहे ख़ुदा में सर्फ़ करना रवा, न उस पर सवाब है बल्कि नरा वबाल है।

अ अल्लाह तआला फरमाता है : ऐ ईमान वालो अपनी कमाई में से पाकीज़ा चीज़ें हमारी राह में ख़र्च करो। (सूरः बक़रह : स० 267)

अ फिर फरमाता है : और ख़बीस चीज़ का क़स्द न करो कि उसमें से हमारी राह में उठाओ। (सूरः बक़रह : 267)

अ और फरमाता है : ख़ुदा क़ुबूल नहीं करता मगर परहेज़गारों से। (सूरः माइदा स० 27)

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं बेशक अल्लाह पाक है पाक ही को क़ुबूल फरमाता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

जो एक खुजूर की बराबर पाक कमाई से तसद्दुक़ करे और अल्लाह तआला नहीं क़ुबूल फरमाता मगर पाक को तो हक़ जल्ला व उला उसे अपने यमीन क़ुदरत से क़ुबूल फरमाता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : यह न होगा कि बन्दा हराम कमा कर उस से तसद्दुक़ करे और वह क़ुबूल कर लिया जाए और न यह कि उसे अपने सर्फ़ में लाए तो उसके लिए उसमें बरकत दें और न उसे अपने पीछे छोड़ जाएगा मगर यह कि वह उसका तोशा होगा जहन्नम की तरफ़, बेशक अल्लाह तआला बुराई से बुराई को नहीं मिटाता हाँ भलाई से बुराई को मिटाता है, बेशक ख़बीस, ख़बीस को न मिटाएगा। (मुसनद अहमद)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम : जो ग़ैर हलाल से माल जमा करे उस पर कोई रश्क न ली जाए कि अगर वह उस से ख़ैरात करेगा तो क़ुबूल न होगी और जो बच रहेगा वह उसका तोशा होगा जहन्नम की तरफ़। (हाकिम)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो हराम माल जमा करे फिर उसे ख़ैरात में दे उसके लिए सवाब कुछ न हो और उसका वबाल उस पर हो। (सही इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने हिब्बान)

जो हराम माल कमाए फिर उस में से ग़ुलाम आज़ाद करे और सिलह रहम करे तो यह भी उस पर वबाल ठहरे। (तबरानी)

जो गुनाह की वजह से माल कमा कर उस से सिलह रहम या तसद्दुक़ या राहे ख़ुदा में ख़र्च करे यह सब जमा करके उसे जहन्नम में फेंक दिया जाए। (मरासील अबू दाऊद)

और उलमा फरमाते हैं : जो हराम माल से तसद्दुक़ करके उस पर सवाब की उम्मीद रखे काफिर हो जाए। (फतावा रज़वीया जिल्द 9, स० 18)

एक हाजतमन्द के लिए हुज़ूर ने माली इम्दाद का हुक्म दिया :

सहीहैन में जरीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से है कुछ बरहना पा, बरहना बदन सिर्फ़ एक कमली कफ़नी की तरह चीर कर गले में डाले ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए, हुज़ूर पुर–नूर रहमते आलमसल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनकी मुहताजी देखी चेहर–ए–अनवर का रंग बदल गया, बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को अज़ान का हुक्म दिया बाद नमाज़ ख़ुतबा फरमाया बाद तिलावत आयात इरशाद किया कोई शख़्स अपनी अशरफ़ी से सदक़ा करे, कोई रुपये से, कोई कपड़े से, कोई अपने क़लील गेहूँ से, कोई अपने थोड़े छोहारों से, यहाँ तक फरमाया अगरचे आधा छोहारा, इस इरशाद को सुन कर एक अन्सारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रुपयों का थैला उठा लाए जिसके उठाने में उनके हाथ थक गये, फिर लोग पय दर पय सदक़ात लाने लगे यहाँ तक कि दो अंबार खाने और कपड़े के हो गये, यहाँ तक कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का चेहर–ए–अनवर ख़ुशी के बाइस कुन्दन की तरह दमकने लगा, और इरशाद फरमाया :

जो शख़्स इस्लाम में कोई अच्छी राह निकाले उसके लिए उसका सवाब है और उसके बाद जितने लोग उस पर राह पर अमल करेंगे सबका सवाब उसके लिए है बग़ैर उसके कि उनके सवाबों कुछ कमी हो। (बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 185)

सदक़े के मुनाफ़े व बरकात :

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

बेशक सदक़ा और सिलह रहम उन दोनों से अल्लाह तआला उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़ा फरमाता है और मक्रूह अन्देशा को दूर करता है।

(मुसनद अबू याला, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 176)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : सदक़े से अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की रज़ा मतलूब होती है और हदिए से नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रज़ा और अपनी हाजत रवाई मन्ज़ूर होती है। (तबरानी, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 210)

औरतों को सदक़े का हुक्म :

साहिबे निसाब मर्द व औरत सब पर ज़कात फ़र्ज़ है औरतों का ज़ेवर अगर निसाब की मिक़्दार है तो उस पर भी ज़कात फ़र्ज़ है। (मुरत्तिब)

एक मरतबा हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नमाज़ ईद पढ़ी फिर बअ्दहू ख़ुतबा फरमाया, फिर बाद अज़ां औरतों की सुफ़ूफ़ में तशरीफ़ ला कर उन्हें वअ्ज़ व इरशाद किया और सदक़ा का हुक्म दिया, मैंने देखा कि बीबियाँ अपने हाथों से गहना उतार उतार कर बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के कपड़े में डालती थीं। फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु काशानए नुबुव्वत को तशरीफ़ फरमा हुए।

(बुख़ारी, फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 791)

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और बनी हाशिम पर ज़कात व सदक़ात का खाना हराम है, हुज़ूर की बारगाह में ज़कात व सदक़ात का जो माल आता था हुज़ूर उसे मुसलमानों की ज़रूरियात और ग़ुरबा व फ़ुक़रा पर ख़र्च फरमाया करते थे। (मुरत्तिब)

ख़ैरात व सदक़ात के बारे में अहादीस :

हुज़ूर पुर–नूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सदक़ा के बेशुमार फ़वाइद इरशाद फरमाए कि सदक़ा बुरी मौत को टालता है, बलाओं को दूर करता है, उमर में

ज़्यादती होती है, जहन्नम से बचाता है वग़ैरह वग़ैरह।

उन में से चन्द अहादीसे मुबारका मुलाहिज़ा हों। (मुरत्तिब)

हदीस 1 : बेशक सदक़ा रब अज़्ज़ा व जल्ला के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़ा करता है। (तिर्मिज़ी)

हदीस 2 : दोज़ख़ से बचो अगरचे आधा छोहारा देकर कि यह कजी को सीधा और बुरी मौत को दूर करता है। (बज़्ज़ार, अबू याला)

हदीस 3 : बेशक मुसलमान का सदक़ा उम्र को बढ़ाता है और बुरी मौत को रोकता है। (तबरानी)

हदीस 4 : सदक़ा गुनाह को बुझाता है और बुरी मौत से बचाता है। (तबरानी)

हदीस 5 : बेशक रब अज़्ज़ा व जल्ला सदक़ा के सबब से सत्तर दरवाज़े बुरी मौत के दफ़ा फरमाता है। (किताबुल–बिर्र)

हदीस 6 : सदक़ा सत्तर दरवाज़े बुराई के बन्द करता है। (तबरानी)

हदीस 7 : सदक़ा सत्तर बला को रोकता है जिनकी आसान तर बदन बिगड़ना और सपेद दाग़ हैं। (ख़तीब)

हदीस 8 : सुबह तड़के सदक़ा दो कि बला, सदक़ा से आगे क़दम नहीं बढ़ाती। (तबरानी)

हदीस 9 : सुबह के सदक़े आफतों को दफ़ा कर देते हैं। (दैलमी)

हदीस 10 : सदक़ा बुरी क़ज़ा को टाल देता है। (इब्ने असाकिर)

हदीस 11 : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के साथ अपनी निस्बत करो उसकी याद की कसरत और ख़ुफ़िया व ज़ाहिर सदक़ा की तक्सीर से कि ऐसा करोगे तो रोज़ी और मदद दिए जाओगे तुम्हारी शिकस्तगियाँ दुरुस्त की जाएंगी। (इब्ने माजा)

हदीस 12 : सदक़ा गुनाह को बुझा देता है जैसे पानी आग को। (तिर्मिज़ी)

हदीस 13 : बेशक सदक़ा और सिलहर रहम उन दोनों से अल्लाह तआला उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़ा करता है और मक्रूह और अन्देशा को दूर करता है।

(मुसनद अबू याला, रिसाला रादुल–क़हत वल–वबा)

सदक़े का सवाब :

अल्लाह तआला सदक़े को बढ़ाता और बा यानी सूद को मिटाता है, यह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की बेपायाँ रहमत है कि वह ज़र्रे को पहाड़ बना देता है और क़तरा को दरिया कर देता है, सवाब की ज़्यादती से मुतअल्लिक़ हदीस में है। (मुरत्तिब)

हुज़ूर सैयदुल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुसलमान जो एक छोहारा या एक निवाला अल्लाह की राह में दे अल्लाह तआला उसे ऐसा बढ़ाता और पालता है जैसे आदमी अपने बिछड़े या बोले को परवरिश करे यहाँ तक कि बढ़ कर कोहे उहुद के बराबर हो जाता है। (सही इब्ने हिब्बान, सफ़ाइहुल–हजीन)

सदक़े का सवाब उस वक़्त हासिल हागा जब कि वह पाक माल से हो वरना अपने ऊपर वबाल हो जाएगा पाक कमाई का सदक़ा बारगाहे इज़्ज़त जल्ला जलालुहू में क़ुबूल होता है और उसी के सवाब में इज़ाफ़ा होता है। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो एक छोहारे बराबर पाक माल से ख़ैरात करे और अल्लाह तआला क़ुबूल नहीं करता मगर पाक को, तो रब अज़्ज़ा व जल्ला उसे अपने दाहिने दस्त क़ुदरत से क़ुबूल फरमाता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, सफ़ाइहुल–हजीन)

वालिदैन की तरफ़ से सदक़े का सवाब :

आदमी जब सदक़ा करे तो अपने वालिदैन की तरफ़ से सदक़े की नीयत कर ले, हदीस में है। (मुरत्तिब)

जब तुम में कोई शख़्स किसी सदक़ा नाफ़िला का इरादा करे तो उसका क्या हरज है कि वह सदक़ा अपने माँ–बाप की नीयत से दे कि उन्हें उसका सवाब पहुँचेगा और उसे उन दोनों के अज्रों के बराबर मिलेगा बग़ैर उसके कि उनके सवाबों में कुछ कमी हो।

(तबरानी औसत, इब्ने असाकिर, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 200)

सदक़ा का इतलाक़ दीगर नेक कामों पर :

हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करना, बेबस व मज्बूर की मदद करना, मोमिन को फाइदा पहुँचाना सब सदक़ा है। (मुरत्तिब)

हदीस : किसी मोमिन से मुलाक़ात होने पर उसे सलाम करना सदक़ा है। (त. अबू दाऊद)

हदीस : किसी मोमिन से कुशादा पेशानी से बात करना और मुस्कुराहट ज़ाहिर करना सदक़ा है। (त, तिर्मिज़ी)

हदीस : भटके हुए को रास्ता बताना सदक़ा है। (त, बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस : बहरे को बात सुनाना सदक़ा है। (त, ख़तीब)

हदीस : जिसकी जमाअत फौत हो जाए उसकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ना ताकि उसे जमाअत का सवाब मिले यह भी सदक़ा है। (त, अबू दाऊद, मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 201)

सदक़–ए–जारिया :

सदक़ा जारिया वह सदक़ा है जिसका सवाब आदमी को मरने के बाद भी पहुँचता रहे और यह उन चीज़ों में होगा जो आदमी के मरने के बाद भी बाक़ी रहे मसलन मस्जिद व मदरसा बनवाना सराय व सबील लगवाना या ऐसा कोई काम करना जो देरपा और मज़्बूत हो ऐसे कामों का सवाब सदक़–ए–जारिया है। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि इंसान जब मर जाता है उसका अमल मुन्क़तअ़ हो जाता है मगर तीन चीज़ों का सवाब उसे पहुँचता रहता है।

1. सदक़ा जारिया।
2. नफ़अ़ बख़्शिश इल्म यानी दीनी इल्म।
3. नेक औलाद जो उसके लिए दुआए ख़ैर करे।

(त, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फतावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 330)

सूद की हुर्मत व वईद

शरीअते मुतह्हरा ने हर क़दम पर मुसलमानों की रहनुमाई फरमाई इबादात व बन्दगी, सन्अत व हिर्फ़त, ख़रीद व फरोख़्त, तिजारत व लेन देन इंसानी ज़रूरियात के हर मुआमले में एक क़ानून व ज़ाब्ता और नसबुल–ऐन मुक़र्रर है हर शुअ्‌ब–ए–ज़िन्दगी को वज़ाहत के साथ बयान फरमा दिया गया है कि फ़लां चीज़ हलाल है और फलां चीज़ हराम।

मसलन रिबा और सूद का मुआमला ऐसा है जिसे लोग अपना दुनियावी फाइदा समझ कर लेते और बज़ाहिर अपना माल बढ़ाते हैं हालांकि सूद से माल बढ़ता नहीं बल्कि उससे माल घटता है उसके लिए कुरआन व हदीस में काफी वईदें वारिद हुई हैं। (मुरत्तिब)

रोज़े क़यामत सूद ख़्वार का हाल :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुदिसा सिर्रुहू सूद की वईद बयान करते हुए फरमाते हैं :

क़यामत के रोज़ सूद ख़्वार का यह हाल होगा कि उनके पेट ऐसे होंगे, जैसे बड़े–बड़े मकान और शीशे की तरह चमकेंगे कि लोगों को उनकी हालत नज़र आए, उनमें साँप और बिच्छू भरे होंगे।

हदीस में है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फरमाई सूद खाने वाले, सूद लेने वाले और उसका काग़ज़ लिखने वाले और उस पर गवाहियाँ करने वालों पर, और फरमाया वह सब बराबर हैं, सब एक रस्सी में बंधे हुए हैं।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

लोग समझते हैं कि उस से रुपया बढ़ता है मगर यह ख़्याल बातिल है उसमें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला बरकत नहीं रखता।

अल्लाह तआला फरमाता है :

अल्लाह मिटाता है सूद को और बढ़ाता है ज़कात को।

जिसे अल्लाह मिटाए वह क्यों कर बढ़ सकता है। (अल–मल्फ़ूज़ दोयम, स० 112)

सूद की हुर्मत व नुहूसत से मुतअल्लिक़ चन्द अहादीस :

सूद खाना अपनी माँ के साथ ज़िना करने से बदतर है और सूद का एक रुपया लेना इतनी–इतनी बार ज़िना करने से सख़्त तर है, यह मज़्मून मुतअद्दद अहादीस में इरशाद हुआ है, इख़्तिसार के साथ चन्द रिवायात मुलाहिज़ा फरमाएं। (मुरत्तिब)

हदीस : एक दिरम सूद का खाना 33 बार ज़िना के बराबर है और जिसका गोश्त हराम से बढ़े तो नारे जहन्नम उसकी ज़्यादा मुस्तहिक़ है। (तबरानी इब्ने असाकिर)

हदीस : एक दिरम कि आदमी सूद से पाए अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के नज़्दीक सख़्त तर है 33 ज़िना से कि आदमी इस्लाम में करे। (तबरानी कबीर)

हदीस : सूद का एक दिरम कि आदमी दानिस्ता खाए और अल्लाह तआला के नज़्दीक 36 ज़िना से सख़्त तर है। (मुसनद अहमद)

हदीस : एक दिरम कि आदमी सूद से पाए अल्लाह तआला के नज़्दीक मर्द के 36 बार ज़िना करने से गुनाह में ज़्यादा है। (इब्ने अबी अद्दुनिया, ज़म्मुल–ग़ीबते)

हदीस : सूद का एक दिरम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के यहाँ 37 ज़िना से बढ़ कर जुर्म है।

(हाकिम किताबुल–कुनी)

हदीस : सूद सत्तर गुनाह है जिन में सबसे आसान तर उस शख़्स की तरह है जो अपनी माँ पर पड़े। (इब्ने माजा, इब्ने अबी अद्दुनिया उम्मुल–ग़ीयह)

हदीस : रिबा के कई दरवाज़े हैं उन में एक दरवाज़ा बराबर सत्तर गुनाह के है जिनमें सबसे हल्का गुनाह ऐसा है जैसे अपनी माँ के साथ हम बिस्तर होना। (इब्ने मुन्दा, अबू नईम)

हदीस : सूद 71 दरवाज़े है या फरमाया 73 गुनाह है जिनमें सबसे हल्का ऐसा जैसे आदमी का अपनी माँ से जिमा करना। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हदीस : सूद के 72 दरवाज़े हैं उनमें सबसे कम ऐसा है जैसे अपनी माँ से सोहबत करना। (तबरानी)

हदीस : सूद के दरवाज़े 72 गुनाह हैं सबमें कम्तर ऐसा है जैसे इस्लाम में अपनी माँ से ज़िना करना। (तबरानी कबीर)

हदीस : सूद के 73 दरवाज़े हैं सबमें हल्का अपनी माँ से ज़िना के मिस्ल है। (हाकिम)

हदीस : सूद के कुछ ऊपर सत्तर दरवाज़े हैं उन सब में हल्का ऐसा है कि मुसलमान हो कर अपनी माँ से ज़िना करना और सूद का एक दिरम 35 ज़िना से सख़्त तर है। (बैहक़ी)

हदीस : सूद 70 दरवाज़े हैं उनमें आसान तर अपनी माँ से ज़िना के मिस्ल है। (इब्ने असाकिर)

हदीस : सूद 72 गुनाह है सब में छोटा बहालते इस्लाम अपनी माँ से ज़िना की तरह है, और सूद का एक दिरम कई ऊपर 30 ज़िना से सख़्त तर है। (इब्ने अबी अद्दुनिया, बग़वी)

हदीस : सूद में 73 गुनाह हैं सब में कम ऐसा जैसे इस्लाम में अपनी माँ से ज़िना करना और सूद का एक दिरम चन्द ऊपर 30 ज़िना की मानिन्द है। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हदीस : कअ़ब अहबार फरमाते हैं : बेशक मुझे अपना 33 बार ज़िना करना उस से ज़्यादा पसन्द है कि सूद का एक दिरम खाऊं जिसे अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला जाने कि मैंने सूद खाया है। (मुसनद अहमद, फतावा रज़्वीया जिल्द 7, स0 80ए 81)

घटिया चीज़ को देकर बदले में उम्दा लेना ?

एक ही जिन्स की ख़राब चीज़ देकर अच्छी चीज़ को ज़ाइद लेना सूद है मसलन एक मन ख़राब गेहूँ के बदले आधा मन उम्दा गेहूँ लेना नाजाइज़ और सूद है हदीस में उसकी भी मुमानेअत आई है। (मुरत्तिब)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक साहब को ख़ैबर पर आमिल बना कर भेजा वह उम्दा ख़ुर्मे वहाँ से लाए फरमाया क्या ख़ैबर के सब ख़ुर्मे ऐसे ही हैं अर्ज़ की नहीं या रसूलुल्लाह, वल्लाह कि हम छेः सैर ख़ुर्मों के बदले यह ख़ुर्मे तीन सैर, और नौ सेर देकर उसके छेः सेर ख़रीदते हैं, फरमाया ऐसा न कर बल्कि नाक़िस या ख़राब ख़ुर्मे पहले रुपयों के एवज़ बेचो फिर उन रुपयों से यह उम्दा ख़ुर्मे ख़रीदो, और हर मौज़ूनी चीज़ के बारे में यही हुक्म फरमाया। (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक और रिवायत में है : बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बरनी छोहारे कि उम्दा क़िस्म हैं ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर लाए फरमाया यह कहाँ से आए अर्ज़ की हमारे पास नाक़िस छोहारे थे उनके छेः सेर देकर यह तीन सेर लिए, फरमाया उफ़ ख़ास सूद है, ऐसा न करो वहाँ जब बदलना चाहो तो अपने छोहारे और हर चीज़ से पहले बेच कर फिर उस से अच्छे छोहारे मोल ले लो। (बुख़ारी, मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 446)

माल हराम पर ज़कात नहीं :

माल हराम पर ज़कात से मुतअल्लिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

सूद व रिश्वत और इसी क़िस्म के हराम व ख़बीस माल पर ज़कात नहीं, कि जिन-जिन से लिया है अगर वह लोग मालूम हैं तो उन्हें वापस देना वाजिब है और अगर मालूम न रहे तो कल का तसद्दुक़ करना वाजिब है। चालीसवाँ हिस्सा देने से वह माल क्या पाक हो सकता है जिसके बाक़ी उन्तालीस हिस्से भी नापाक हैं, और ऐसे माल से बुज़ुर्गों की नियाज़ करना भी जाइज़ नहीं, न हरगिज़ उस से कुछ हासिल कि नियाज़ का मतलब ईसाले सवाब है और सवाब समर-ए-क़ुबूल है और क़ुबूल पाकी से मशरूत है।

हदीस में है : अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला पाक है पाक ही चीज़ को क़ुबूल फरमाता है।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ुद कुरआने अज़ीम में इरशाद हुआ क़स्द न करो ख़बीस का कि उस से अल्लाह की राह में ख़र्च करो। (सूरः बक़रह : 267)

उलमा फरमाते हैं : जो हराम माल फ़क़ीर को देकर सवाब की उम्मीद रखे उस पर कुफ़्र आइद हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 236)

मुफ़्लिस क़र्ज़दार का बदला :

आजकल क़र्ज़ के लेन देन में सूद का बाज़ार गर्म है बग़ैर सूद के क़र्ज़ मिलता नज़र नहीं आता, हालाँकि क़र्ज़ देकर सूद लेना हराम है, यूं ही क़र्ज़ लेकर सूद देना भी हराम है हाँ अगर कोई मुहताज व मुफ़्लिस है सूदी क़र्ज़ लेकर अपनी या अपने घर वालों की जान बचाएगा या और कोई सख़्त मज्बूरी है तो उसके लिए सूद पर क़र्ज़ लेना जाइज़ है जब कि उसे क़र्ज़ ख़्वाह की तरफ़ से किसी ज़रर नुक़्सान का अन्देशा है वरना उस मुफ़्लिस के लिए भी सूद पर क़र्ज़ लेना जाइज़ नहीं। क़र्ज़ ख़्वाह पर वाजिब है कि वह क़र्ज़दार को मोहलत दे जब तक उसे इस्तिताअत न हो उस पर ज़ुल्म व ज़्यादती न करे, और क़र्ज़दार को शरीअत हुक्म देती है कि हत्तल-इम्कान अदा में कोशिश करे और हर वक़्त सच्चे दिल से अदा की नीयत रखे मुफ़्लिसी को परवान-ए-माफ़ी न ठेहरा ले कि अब हम से कोई क्या लेगा, जब ऐसी सच्ची नीयत रखेगा और ख़ुद फ़िक्र अदा में शरई तौर पर कुछ कमी नहीं करेगा तो उससे ज़्यादा शरअ़ उसे तक्लीफ़ नहीं देती। फिर अगर उसी हाल पर मर गया, और अदा न हो सका तो उम्मीद क़वी है कि अर्रहमुर्राहेमीन जल्ला जलालुहू दरगुज़र फरमा कर क़र्ज़ ख़्वाह के मुतालिबा से नजात बख़्शेगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूर सैयदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो लोगों के माल बनीयत अदा ले अल्लाह तआला उसकी तरफ़ से अदा फरमा दे और जो तल्फ़ कर देने के इरादे से ले अल्लाह तआला उसे हिला कर दे।

(बुख़ारी, इब्ने माजा)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो कोई दैन ले कि उसके अदा की नीयत रखता हो अल्लाह तआला रोज़े क़यामत उसकी तरफ़ से अदा फरमा देगा।

(तबरानी कबीर)

और फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मेरा जो उम्मती किसी दीन का बार उठाए फिर उसके अदा में कोशिश करे फिर बे अदा किए मर जाए तो मैं उसका वली व कफ़ील कार हूँ।

(मुसनद अहमद, अबू याला)

एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो किसी दीन का मुआमला करे और दिल में उसके अदा का इरादा रखे फिर मर जाए तो अल्लाह तआला उस से दर गुज़र फरमाए और उसके क़र्ज़ ख़्वाह को जैसे चाहे राज़ी कर दे।

(हाकिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 7, स0 93)

हज व उमरह के अहकाम व आदाब

हज एक ऐसी इबादत है जिसके अदा करने के बाद आदमी गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाता है और हज इस्लाम का ऐसा हुक्म है जिस में इस्लामी मसावात का मुज़ाहरा भी होता है और अहकामे ख़ुदावन्दी की अहमीयत व उक़्अत का एहसास भी, हज के कुछ अहकाम व आदाब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू की तहरीर में मुलाहिज़ा फरमाएँ :

हज की फ़र्ज़ियत में औरत मर्द का एक हुक्म है जो राह की ताक़त रखता हो उस पर फ़र्ज़ है, मर्द हो या औरत जो अदा न करेगा अज़ाबे जहन्नम का मुस्तहिक़ होगा। औरत में इतनी बात ज़्यादा है कि उसे बग़ैर शौहर या मुहरिम के साथ लिए सफर को जाना हराम है, उसमें कुछ हज की ख़ुसूसियत नहीं कहीं एक दिन के रास्ता पर बेशौहर या महरिम के लिए जाएगी तो गुनहगार होगी। हाँ जब फ़र्ज़ अदा हो जाए तो बार-बार सफर करना औरत को मुनासिब नहीं कि वह जिस क़द्र पर्दा के अन्दर रहे इस क़द्र बेहतर है।

हदीस में इस क़द्र है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उम्महातुल-मुमिनीन को हज करा कर फरमाया : यह एक हज हो गया उसके बाद घर की चटाइयाँ, यानी अब घर पर ही रहना बेहतर है।

यह अफ्ज़लीयत ऊलूहियत का इरशाद है, न कि औरत को दूसरा हज नाजाइज़ है, उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने उसके बाद फिर हज किया।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 661)

कौन सा हज, हज्जे मब्रूर? और कैसा हाजी मग़फ़ूर ?

जिस हज के बाद हाजी गुनाह न करे वह हज्जे मब्रूर कहलाता है, ऐसे ही हाजी की हदीस पाक में फ़ज़ीलत इरशाद हुई है। (मुरत्तिब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जब तू हाजी से मिले उसे सलाम कर और मुसाफ़हा कर और क़ब्ल उसके कि वह अपने घर में दाख़िल हो उस से अपने लिए इस्तिग़फ़ार करा कि वह मग़फ़ूर है। (मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिहाद करो ग़नीमत पाओगे, रोज़ा रखो तन्दरुस्त हो जाओगे और हज करो ग़नी हो जाओगे।

(तबरानी औसत, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 540ए 551)

वालिदैन या और किसी मैयत की तरफ़ से हज्जे बदल :

मर्दों को ज़िन्दों के अमल सालेह का सवाब पहुँचता है, मैयत की तरफ़ से अगर उसका बेटा वग़ैरह हज करे तो उसे पूरे हज का सवाब मिलता है। (मुरत्तिब)

हुज़ूरे सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : जो अपने माँ-बाप की तरफ़ से उनकी वफ़ात के बाद हज करे अल्लाह तआला उसके लिए दोज़ख़ से आज़ादी लिखे, और

उन दोनों के लिए पूरे हज का अज्र हो, बग़ैर उसके कि उनके सवाबों में कुछ कमी हो। (बैहक़ी शुअ़बुल–ईमान, अस्बहानी किताबुत्तरग़ीब)

हदीस : फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम "जब आदमी अपने वालिदैन की तरफ़ से हक करे वह उस हज करने वाले और माँ–बाप तीनों की तरफ़ से क़ुबूल किया जाए, और उनकी रूहें ख़ुश हों, और यह अल्लाह तआला के नज़्दीक माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करने वाला नेकोकार लिखा जाए।" (दारु क़ुतनी)

हदीस : एक रिवायत में यह है "जिसके माँ–बाप बे हज किए मर गये हों वह उनकी तरफ़ से हज करे वह उन दोनों का हज हो जाए और उनकी रूहों को आसमान में ख़ुशख़बरी दी जाए और यह शख़्स अल्लाह के नज़्दीक माँ–बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला लिखा जाए।"

(फवाइदे सक़्फ़ियात)

हदीस : "जो मुर्दे की जानिब से हज करे तो उसको मुर्दे मुर्दे के बराबर सवाब मिले।"

(त, तबरानी औसत)

हदीस : "जब आदमी अपने वालिदैन की तरफ़ से हज करे तो उसे दोनों की जानिब से क़ुबूल किया जाए।" क़ुबूल का मतलब यही है कि दोनों को बराबर सवाब दिया जाता है। (त, दारु क़ुतनी)

हदीस : "जो अपने बाप या माँ की तरफ़ से हज करे तो उसका हज अदा हो जाए और वह दस हज की फ़ज़ीलत पाए।" (त, दारु क़ुतनी, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 199 ता 203)

बाद तवाफ़, दोगाना तवाफ़ और ज़मज़म पीने की फ़ज़ीलत :

तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम में नमाज़ पढ़ना फिर ज़मज़म शरीफ़ पीना फ़ज़ीलत की बात है।

(मुरत्तिब)

हदीस में है जो सात फेरे तवाफ़ करके मक़ामे इब्राहीम में दो रकाअत नमाज़ पढ़े फिर ज़मज़म शरीफ़ पर जा कर उसका पानी पिए अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला उसे गुनाहों से ऐसा पाक कर दे जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था।

(मुसनदुल–फ़िर्दौस, तफ़्सीर वाहिदी, फतावा रज़्वीया जिल्द 2, स0 525)

रमज़ान में तवाफ़ व उमरा का सवाब ज़ाइद तर :

हरम मोहतरम के आमाल का सवाब उस ज़मीन पाक के एतबार से है, न ज़मान हज की ख़ुसूसियत से, एक नेकी पर लाख का सवाब जैसे ज़मान–ए–हज में होगा वैसे ही दीगर औक़ात में, और तवाफ़े काबा मुअज़्ज़मा जो हज में किया जाएगा अगर वह तवाफ़ फ़र्ज़ है जब तो ज़ाहिर है कि फ़र्ज़ के सवाब को दूसरी चीज़ नहीं पहुँच सकती, और अगर वह तवाफ़े उमरह है तो रमज़ान मुबारक में उसका तवाफ़ ज़िल–हिज्जा से बहुत ज़्यादा।

हदीस में है हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : रमज़ान मुबारक में एक उमरा मेरे साथ हज के बराबर है।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 670)

हाजी से जुम्ला हुक़ूक़ शरअ़ की मुआफ़ी का क्या मतलब ?

हज से हर गुनाह माफ़ हो जाता है हज करने के बाद अगर हाजी आइन्दा गुनाह न करे तो यही हज्जे मब्रूर कहलाता है। अल्लाह तआला ऐसे ही हाजी के तमाम हुक़ूक़ अपने ज़िम्मा करम पर लेकर माफ़ फरमा देता है ख़्वाह वह हुक़ूक़ुल्लाह हों या हुक़ूक़ुल–इबाद उसे हर तरह की माफ़ी मिल जाती है, इसी क़िस्म के मज़्मून की वज़ाहत करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू तहरीर फरमाते हैं :

जो हाजी पाक माल, पाक कमाई, पाक नीयत से हज करे और उसमें लड़ाई झगड़े और औरतों के सामने तज़्किर–ए–जिमा और हर क़िस्म के गुनाह व नाफरमानी से बचे उस वक़्त तक जितने गुनाह किए थे बशर्त कुबूल सब माफ़ हो जाते हैं, फिर अगर हज के बाद फौरन मर गया इतनी मोहलत न मिली कि जो हुकूकुल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल, या बन्दों के उसके ज़िम्मा थे उन्हें अदा या अदा की फ़िक्र करता तो उम्मीदे वासिक़ है कि मौला तआला अपने तमाम हुकूक़ से दर गुज़र फरमाए। यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात वगैरहा फराइज़ को बजा न लाया था, उनके मुतालबा पर भी क़लम अफ़्वे इलाही फिर जाए, और हुकूकुल–इबाद व दीवान व मज़ालिम मसलन किसी का क़र्ज़ आता हो, माल छीना हो, बुरा कहा हो इन सबको मौला तआला अपने ज़िम्मा करम पर ले ले, अस्हाबे हुकूक़ को रोज़े क़्यामत राज़ी फरमा कर मुतालबा व ख़ुसूसियत से नजात बख़्शे, यूं ही अगर बाद को ज़िन्दा रहा और बक़द्र कुदरत हुकूक़ का तदारुक कर लिया यानी ज़कात दे दी, नमाज़, रोज़ा की क़ज़ा अदा की जिसका जो मुतालबा आता था दे दिया, जिसे आज़ार पहुँचा था माफ़ करा लिया, जिस मुतालबा का लेने वाला न रहा, या मालूम नहीं, उसकी तरफ़ से तसद्दुक़ कर दिया बवजहे क़िल्लत मुहलत जो हक़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला या बन्दा का अदा करते–क़रते वह गया उसकी निस्बत अपने माल में वसीयत कर दी। ग़रज़ जहाँ तक बराअत के तरीक़े पर कुदरत मिली कमी न तो उसके लिए उम्मीद और ज़्यादा क़वी कि असल हुकूक़ की यह तदबीर हो गई और मक़्बूलियते हज से गुनाह धुल गया, हाँ अगर हज के बाद बावस्फ़ कुदरत इन उमूर में क़ासिर रहा तो यह सब गुनाह अज़सरे नौ उसके सर होंगे कि हुकूक़ तो ख़ुब बाक़ी ही थे उनकी अदा में फिरता ख़ैर व कमी गुनाह ताज़ा हुए और वह हज उनके इज़ाला को काफी न होगा कि हज गुज़रे गुनाहों को धोता है आइन्दा के लिए परवान–ए–बेक़ैदी नहीं होता, बल्कि हज्जे मब्रूर की निशानी ही यह है कि पहले से अच्छा हो कर पलटे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 50)

मुक़द्दमाते हज और आदाबे सफर :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने हज के मसाइल व अहकाम और उसके आदाब व उसूल को निहायत जामे और हसीन अन्दाज़ में बयान फरमाया है शायद यह अन्दाज़े बयान उसके ग़ैर में न मिले, मैं यहाँ पर कुछ ख़ास–ख़ास बातें पेश करता हूँ, आप तहरीर फरमाते हैं :

1. जिसका क़र्ज़ आता हो, या अमानत पास हो अदा कर दे। जिनके माल नाहक़ लिए हों वापस दे दे या माफ़ करा ले पता न चले तो इतना माल फ़क़ीर को दे दे।

2. नमाज़, रोज़ा, ज़कात जितनी इबादात ज़िम्मा पर हों अदा करे तो ताइब हो।

3. जिसके बेइजाज़त सफर मक्रूह है जैसे माँ–बाप शौहर उसे रज़ा मन्द करे जिसका उस पर क़र्ज़ आता है उस वक़्त न दे सके तो उस भी इजाज़त ले, फिर भी किसी की इजाज़त न देने से हज रुक नहीं सकता, इजाज़त में कोशिश करे न मिले जब भी चला जाए।

4. इस सफर से मक़्सूद सिर्फ़ अल्लाह व रसूल हों।

5. औरत के साथ जब तक शौहर या महरमि बालिग़ क़ाबिले इत्मीनान न हो जिस से निकाह हमेशा को हराम है सफर हराम है अगर करेगी हज हो जाए मगर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा।

6. तोशा माल हलाल से हो वरना कुबूले हज की उम्मीद नहीं अगरचे फ़र्ज़ उतर जाएगा।

7. हाजत से ज़्यादा तोशा लेकर रफ़ीक़ों की मदद और फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करता चले, यह हज्जे मब्रूर की निशानी है।

8. बक़द्र किफ़ायत फ़िक़ह की आम कुतुब साथ ले वरना किसी आलिम के साथ जाए, यह भी न मिले तो कम अज़ कम "अनवारुल–बशारह" साथ हो।

9. आईना, सुर्मा, कंघा, मिस्वाक, साथ रखे कि सुन्नत है।

10. अकेला सफर न करे कि मना है, रफ़ीक़ दीनदार हो कि बद दीन की हम्राही से अकेला बेहतर है।

11. हदीस में है जब तीन आदमी सफर को जाएं अपने में एक को सरदार बना लें उसमें कामों का इंतिज़ाम रहता है। (मिश्कात)

सरदार उसे बनाएं जो ख़ुश ख़ल्क़ आक़िल, दीनदार हो, सरदार को चाहिए रफ़ीक़ों के आराम को अपनी आसाइश पर मुक़द्दम रखे।

12. चलते वक़्त अपने दोस्तों, अज़ीज़ों से मिले और अपने क़ुसूर माफ़ कराए और अब उन पर लाज़िम है कि दिल से माफ़ कर दें।

हदीस में है कि जिसके पास उसका मुसलमान भाई माज़रत लाए वाजिब है कि क़ुबूल कर ले वरना हौज़े कौसर पर आना न मिलेगा।

13. वक़्त रुख़्सत सब से दुआ ले कि बरकत पाएगा।

14. उन सबके दीन, जान, माल, औलाद, तन्दरुस्ती, आफ़ियत ख़ुदा को सौंपे।

15. लिबासे सफ़र पहन कर घर में चार रकाअत नफ़्ल अल्हम्दु व क़ुल से पढ़ कर बाहर निकले, वह रकाअतें वापस आने तक उसके अह्ल व माल की निगहबानी करेंगी।

16. जिधर सफर को जाए जुमेरात, या हफ़्ता, या पीर का दिन हो और सुबह का वक़्त मुबारक है और अह्ले जुमा को रोज़ जुमा क़ब्ल जुमा सफर अच्छा नहीं।

17. दरवाज़े से बाहर निकलते ही कहे और दरूद शरीफ़ की कसरत करे।

अल्लाह के नाम और अल्लाह की मदद से और मैंने अल्लाह पर भरोसा किया और न गुनाहों से फिरना न ताअत की ताक़त मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से, इलाही हम तेरी पनाह चाहते हैं उस से कि ख़ुद लग़्ज़िश करें या दूसरा हमें लग़्ज़िश दे या ख़ुद बहकें या दूसरा बहकाए या ज़ुल्म करें, या हम पर ज़ुल्म हो, या जुहल करें या हम पर कोई जुहल करें।

18. सबसे रुख़्सत के बाद अपनी मस्जिद से रुख़्सत हो, वक़्त कराहत न हो तो उसमें दो रकाअत नफ़्ल पढ़े।

19. जिस शहर में जाए वहाँ के सुन्नी आलिमों और बाशिरअ् फ़क़ीरों के पास अदब से हाज़िर हो, मज़ारात की ज़्यारत करे, फ़ुज़ूल सेर तमाशे में वक़्त न खोए।

20. ज़िक्रे ख़ुदा से दिल बहलाए कि फ़रिश्ता साथ रहेगा न कि शेअ्र व लुग्वियात से कि शैतान साथ होगा, रात को ज़्यादा चले कि सफर जल्द तय होता है।

21. मंज़िल में मुतफ़र्रिक़ हो कर न उतरें, एक जगह उतरें।

22. हर सफर ख़ुसूसन सफर हज में अपने और अपने अज़ीज़ों दोस्तों के लिए दुआ है ग़ाफ़िल न रहे कि मुसाफ़िर की दुआ क़ुबूल है।

23. बद्दुओं और सब अरबों से बहुत नर्मी के साथ पेश आए अगर वह सख़्ती करें अदब से तहम्मुल करे उस पर शफ़ाअत नसीब होने का वादा फरमाया है, ख़ुसूसन अह्ले हरमैन ख़ुसूसन अह्ले मदीना, अह्ले अरब के अफ़आल पर ऐतराज़ न करे, न दिल में कदूरत लाए इसमें दोनों जहान की सआदत है।

24. मकान पर अपने आने की तारीख़ व वक़्त की इत्तिला पहले से दे दे, बेइत्तिला हरगिज़ न जाए।

25. सबसे पहले अपनी मस्जिद से दो रकाअत नफ़्ल के साथ मिले।

26. दो रकाअत घर में आ कर पढ़े फिर सबसे बकुशादा पेशानी मिले।

27. दोस्तों के लिए कुछ न कुछ तोहफ़ा ज़रूर लाए और हाजी का तोहफ़ा तबर्रुकात हरमैन शरीफ़ैन से ज़्यादा किया है और दूसरा तोहफ़ा दुआ कि मकान में पहुँचने से पहले इस्तिक़्बाल करने वालों और सब मुसलमानों के लिए करे कि क़ुबूल है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द 4, स0 691 ता 694, मुल्तक़िज़न)

एहराम और हरम के आदाब व अहकाम :

1. एहराम बांधने से पहले ख़ूब मल कर नहाएं, वुज़ू करें और नहा सकें तो सिर्फ़ वुज़ू कर लें।

2. चाहें तो मर्द सर मुंडा लें कि एहराम में बालों की हिफ़ाज़त से नजात मिलेगी वरना कंघी करके ख़ुशबूदार तेल डालें।

3. नाख़ुन कतरें, ख़त बनवाएं, मूए बग़ल व ज़ेरे नाफ़ दूर करें।

4. ख़ुशबू लगाएं कि सुन्नत है।

5. मर्द सिले हुए कपड़े उतारें एक चादर नई या धुली हुई ओढ़ें और ऐसा ही एक तहबन्द बांधें, यह कपड़े सफ़ेद बेहतर हैं।

6. एहराम बांधने से पहले दो रकाअत नमाज़ बनीयत एहराम पढ़ें।

7. अब हज तीन तरह का होता है :

हज्जे अफ़्राद :

एक यह कि नरा हज करे उसे अफ़्राद कहते हैं उसमें बाद सलाम यूं कहे :

अल्लाहुम्मा इन्नी ओरिदुल हज्जा फ़यस्सिरहू ली व तक़ब्बुलहु मिन्नी नवेतुल हज्जा मुख़लेसन लिल्लाहि तआला।

हज्जे तमत्तुअ़ :

दूसरा यह कि यहाँ से नरे उमरे की नीयत करे, मक्का मुअज़्ज़मा में हज का एहराम बांधे उसे तमत्तअ़ कहते हैं, उसमें बाद सलाम यूं कहे।

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल उमारता फ़यस्सिर हाली व तक़ब्बहा मिन्नी नवेतुल उमरता मुख़लेसन लिल्लाहि तआला।

हज्जे क़िरान :

तीसरा यह कि हज उमरा दोनों की यहीं से नीयत करे और यह सबसे अफ़्ज़ल है उसे क़िरान कहते हैं उसमें बाद सलाम यूं कहे।

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल हज्जा वल उमरता फ़यस्सिर हुमलि वतक़ब्बल वमा मिन्नी नवेतुल हज्जा बल उमरता लिल्लाहि तआला।

और तीनों सूरतों में इस नीयत के बाद लब्बैक बआवाज़ बुलन्द कहे, लब्बैक यह है :

लब्बैका अल्लाह हुम्मा लब्बैका ला शरीका लका लब्बैका इन्नल मुहम्म्दा वन नेमअता लका व मुल्का लाशरीका लका।

8. वक़्त एहराम से रमी जुमरा तक अक्सर औक़ात लब्बैक की बेशुमार कसरत रखे ख़ुसूसन चढ़ाई पर चढ़ते उतरते, दो क़ाफ़िलों के मिलते, सुबह शाम, पिछली रात, पाँचों नमाज़ों के बाद मर्द बआवाज़ कहीं मगर इतनी बुलन्द कि अपने आप या दूसरे को तक्लीफ़ न हो।

9. जो बातें एहराम में नाजाइज़ हैं वह अगर किसी उज़्र से या भूल कर हों तो गुनाह नहीं मगर उन पर जो जुर्माना मुक़र्रर है हर तरह देना आएगा अगरचे बक़स्द हो सहवन या जबरन सोते में।

10. जब हरम के मुत्तसिल पहुँचे सर झुकाए, आँखें शर्म गुनाह से नीची किए, खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से दाख़िल हो और हो सके तो प्यादा नंगे पाँच और लब्बैक व दुआ की कसरत रखे, और बेहतर यह कि दिन को नहा कर दाख़िल हो।

11. जब रब्बुल–आलमीन जल्ला जलालुहू का शहर नज़र पड़े ठहर कर दुआ मांगे और दरूद शरीफ़ की कसरत करे और अफ़ज़ल यह है कि नहा धो कर दाख़िल हो और मदफ़ूनीन जन्नतुल–मुअ़ल्ला के लिए फातिहा पढ़े।

12. जब मुद्दई में पहुँचे जहाँ से कहाबा मुअज़्ज़मा नज़र आए, अल्लाहु अकबर, यह अज़ीम क़ुबूल व इजाबत का वक़्त है सिद्क़ दिल से अपने और तमाम अज़ीज़ों दोस्तों मुसलमानों के लिए मग़्फ़िरत मांगे।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि :

दरूद शरीफ़ की कसरत करें यह एक जामे दुआ है इसके बाद किसी दुआ की हाजत नहीं।

13. यूं ही ज़िक्रे ख़ुदा और रसूल और अपने और तमाम मुसलमानों के लिए दुआए फलाहे दारैन करता हुआ बाबुस्सलाम तक पहुँचे और इस आस्तान–ए–पाक को बोसा देकर दाहिना पाँव पहले रख कर दाख़िल हो और कहे :

तवाफ़ व सई और सफ़ा व मरवा के आदाब :

1. शुरू तवाफ़ से पहले मर्द इज़्तिबाअ़ कर ले यानी चादर की सीधी जानिब दहनी बग़ल के नीचे से निकाले कि सीधा शाना खुला रहे और दोनों आंचल बाएं कन्धे पर डाल ले।

2. अब रु बा काबा, हजरे असवद की दाहिनी तरफ़, रुक्ने यमानी की जानिब, संगे अस्वद के क़रीब यूं खड़े हो कि तमाम पत्थर अपने सीधे हाथ को रहे फिर तवाफ़ की नीयत करो।

3. इस नीयत के बाद काबा को मुँह किए अपनी दाहिनी सिम्त चलो जब संगे अस्वद के मुक़ाबिल हो कानों तक हाथ में इस तरह उठाओ कि हथेलियाँ हजरे अस्वद की तरफ़ रहें और कहो :

4. मयस्सर हो सके तो हजरे अस्वद पर दोनों हथेलियाँ और उनके बीच में मुँह रख कर यूं बोसा दो कि आवाज़ न पैदा हो सके तीन बार ऐसा ही करो, यह नसीब हों तो कमाले सआदत है। यक़ीनन तुम्हारे महबूब व मौला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसे बोसा दिया और रूए अक़्दस उस पर रखा है, ज़हे ख़ुश नसीबी कि तुम्हारा मुँह वहाँ तक पहुँचे और हुजूम के सबब न हो सके तो न औरों को ईज़ा दो न आप दबो कुचलो बल्कि उसके एवज़ हाथ से और हाथ न पहुँचे तो लकड़ी से संगे अस्वद मुबारक छू कर उसे चूम लो, यह भी न बन पड़े तो हाथों से उसकी तरफ़ इशारा कर ले, उसे बोसा दे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या क़म है।

5. अल्लाहुम्मा ईमानन बिका व इत्तिबाअन लेसुन्नते नबीयेका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कहते हुए दरे काबा तक बढ़ो जब हजरे मुबारक के सामने से गुज़र जाए सीधे हो लो, खान–ए–काबा को अपने बाएं हाथ पर ले कर यूं चलो कि किसी को इज़ा न दो।

6. मर्द रमल करता चले यानी जल्द छोटे–छोटे क़दम रखता शाने हिलाता जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं, न कूदता न दौड़ता, जहाँ हुजूम हो जाए और रमल में अपनी या ग़ैर की ईज़ा हो इतनी देर रमल तर्क करो।

7. तवाफ़ में दुआ दरूद के लिए रुको नहीं बल्कि चलते में पढ़ो, दुआ दरूद चिल्ला कर न पढ़ो।

8. जब रुक्ने यमानी के पास आओ तो उसे दोनों हाथ से या दाहिने हाथ से छुओ और चाहो तो उसे बोसा भी दो और न हो सके तो यहाँ लकड़ी से छूना या इशारा करके हाथ चूमना नहीं।

9. अब जो दोबारा हजर तक आए यह एक फेरा हुआ, यूं ही सात फेरे करो मगर बाक़ी फ़ेरों में वह नीयत करना नहीं कि नीयत तो इब्तिदा में हो चुकी और रमल सिर्फ़ अगले तीन फेरों में है और बाक़ी चार में आहिस्ता, शाना हिलाए बग़ैर मामूली चाल से हो।

10. तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम में तवाफ़ की दो रकाअत पढ़ो कि वाजिब हैं।

11. फिर मुल्तज़िम पर जाओ और क़रीब हजर उस से लिपटो और अपना सीना और पेट और कभी अपना रुख़सार उस पर रखो और दोनों हाथ सर से ऊंचे करके दीवार पर फैलाओ और दाहिना हाथ दरवाज़े और बायाँ संगे अस्वद की तरफ़। यहाँ की दुआ यह है :

हदीस में फरमाया मैं जब चाहता हूँ जिब्रील को देखता हूँ कि मुल्तज़िम से लिपटे हुए यह दुआ कर रहे हैं।

12. फिर ज़मज़म पर आओ और हो सके तो ख़ुद एक डोल खींचो वरना भरने वालों से ले लो और काबा को मुँह करके तीन सांसों में पेट भर के जितना पिया जाए पियो, बाक़ी बदन पर डाल लो और पीते वक़्त दुआ करो कि कुबूल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : ज़मज़म जिस मुराद के लिए पिया जाए उसी के लिए है। (इब्ने माजा)

मक्का मुअज़्ज़मा की हाज़िरी तक पीना तो बारहा नसीब होगा, क़्यामत की प्यास से बचने के लिए पियो, कभी अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ी को, कभी मुहब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बढ़ने को, कभी उस्अत रिज़्क़, कभी शिफ़ाए अमराज़, कभी हुसूले इल्म वग़ैरहा ख़ास–ख़ास मुरादों के लिए पियो।

13. चाहे ज़मज़म के अन्दर भी नज़र करो, हदीस में आया है कि उस से निफ़ाक़ दूर होता है।

14. सफ़ा मरवह में सई के लिए हजरे असवद के पास आओ उसे चूम कर जानिबे सफ़ा रवाना हो।

15. ज़िक्र व दरूद में मशग़ूल रह कर सफ़ा की सीढ़ियों पर इतना चढ़ो कि काबा मुअज़्ज़मा नज़र आए फिर काबा रुख़ हो कर दोनों हाथ दुआ की तरह पहले शानों तक उठाओ और देर तक तस्बीह व तहलील व दरूद व दुआ करो कि क़बूलियत की जगह है, फिर उतर कर ज़िक्र व दरूद में मश्ग़ूल मरवह को चलो।

16. फिर सफ़ा को जाओ, फिर आओ यहाँ तक सातवाँ फेरा मरवा पर ख़त्म हो, हर फेरे में इसी तरह करें, उसी का नाम सई है।

17. अब ख़्वाह मिना से वापसी पर, जब कभी रात में जितनी बार काबा पर नज़र पड़े ला–इलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अक्बर तीन बार कहें और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजें दुआ करें कि वक़्ते कुबूल है।

18. तवाफ़ की तरह सई भी बिला ज़रूरत सवार हो कर या बैठ कर करना नाजाइज़ व गुनाह है।

19. तवाफ़ व सई के सब मसाइल मज़्कूरा में औरतें भी शरीक हैं मगर इज़्तिबा, रमल, सई में दौड़ना उनके लिए नहीं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 699 ता 705)

मिना की रवानगी और अरफ़ा का वक़ूफ़ :

1. यौमुत्तरविया कि आठ तारीख़ का नाम है जिसने एहराम न बांधा हो बांध ले और एक नफ़्ल तवाफ़ में रमल व सई करे।

2. जब आफ़ताब निकल आए मिना को चलो और हो सके तो प्यादा चलो कि जब तक मक्का मुअज़्ज़मा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात सौ नेकियाँ लिखी जाएंगी।

3. रास्ते भर लब्बैक व दुआ और दरूद व सना की कसरत करो।

4. जब मिना नज़र आए कहो :

5. यहाँ रात को ठहरो, आज ज़ुहर से नवीं की सुबह तक पाँच नमाज़ें मस्जिदे ख़फ़ीफ़ में पढ़ो।

6. शबे अरफ़ा मिना में ज़िक्र व इबादत से जाग कर सुबह करो, सोने के बहुत दिन पड़े हैं और बावुज़ू सोओ कि रूह अर्श तक बुलन्द होगी।

7. सुबह वक़्त मुस्तहब नमाज़ पढ़ कर लब्बैक व ज़िक्र व दरूद में मश्ग़ूल रहो यहाँ तक कि आफ़ताब चमके, अब अरफ़ात को चलो, दिल को ख़्याले ग़ैर से पाक करने में कोशिश करो कि आज वह दिन है कि कुछ का हज क़ुबूल करेंगे और कुछ उनके सद्क़े में बख़्श देंगे, महरूम वह जो आज मरूहम रहा।

8. जब निगाह जबले रहमत पर पड़े ज़िक्र व दरूद और लब्बैक बकसरत करने की कोशिश करो कि इन्शाअल्लाह तआला वक़्ते क़ुबूल है।

9. अरफ़ात में जबले रहमत के पास या जहाँ जगह मिले आम रास्ते से बच कर निकलो।

10. जब दोपहर क़रीब आए नहाओ कि सुन्नते मुअक्कदह है और न हो सके तो सिर्फ़ वुज़ू करो।

11. ज़ुहर व अस्र पढ़ कर ग़ुरूबे आफ़ताब तक दुआ में मश्ग़ूल रहो।

12. नमाज़ पढ़ कर फ़ौरन मूक़िफ़ को रवाना हो जाओ और मुम्किन हो तो ऊंट पर कि सुन्नत भी है और हुजूम में दबने कुचलने से मुहाफ़िज़त भी।

13. अब जो लोग मूक़िफ़ में हैं और जो डेरों में हैं सब हमा तन सिद्क़ दिल से अपने करीम मेहरबान रब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ और मैदाने क़यामत में हिसाबे आमाल के लिए उसके हुज़ूर हाज़िरी का तसव्वुर करो, निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ लरज़ते काँपते डरते उम्मीद करते, आँखें बन्द किए गर्दन झुकाए दस्ते दुआ आसमान की तरफ़ सर से ऊंचे फैलाओ, तक्बीर, तहलील, तस्बीह, लब्बैक, हम्द, जिक्र, दुआ, तौबा, इस्तिग़फ़ार में डूब जाओ, कोशिश करो कि एक क़तरा आंसुओं का टपके कि दलीले इजाबत व सआदत है वरना रोने का सामना बनाओ कि अच्छों की सूरत भी अच्छी, इस्नाए दुआ व ज़िक्र में लब्बैक की बार–बार तक्रार करो।

14. एक अदब याद रखने के क़ाबिल उस रोज़ का यह है कि अल्लाह तआला के सच्चे वादों पर भरोसा करके यक़ीन करे कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था, अब कोशिश करूं कि आइन्दा गुनाह न हों और जो दाग़ अल्लाह तआला ने ख़ालिस रहमत के सबब मेरी पेशानी से धो दिया है फिर न लगे।.

15. यहाँ यह बातें मकरूह हैं :

(1) ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले वक़ूफ़ छोड़ कर रवानग़ी जबकि ग़ुरूब तक हुदूदे अरफ़ात से बाहर न हो जाए वरना हराम है।

(2) नमाज़े ज़ुहर व अस्र को मिलाने के बाद मूक़िफ़ को जाने में देर।

(3) उस वक़्त से ग़ुरूब तक खाने पीने।

(4) या तवज्जुह बख़ुदा के सिवा किसी काम में मश्ग़ूल होना।

(5) कोई दुनयवी बात करना।

(6) ग़ुरूब पर यक़ीन हो जाने के बाद रवानगी में ताख़ीर करना।

(7) मग़्रिब या इशा अरफ़ात में पढ़ना।

आला हज़रत का एक ख़ास नासेहाना अहम इंतिबाह :

बद–निगाही हमेशा हराम है, न कि एहराम में, न कि मूक़िफ़ में, या मस्जिदुल–हराम में, न कि काबा के काबा, न कि तवाफ़ बैतुल–हराम में, यह तुम्हारे बहुत इम्तिहान का मौक़ा है। औरतों को हुक्म दिया गया है कि यहाँ मुँह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उनकी तरफ़ निगाह न करो।

यक़ीन जानो कि यह बड़े इज़्ज़त वाले बादशाह की बांदियाँ हैं और उस वक़्त तुम और वह सब ख़ास दरबार में हाज़िर हो, बिला तशबीह शेर का बच्चा उसकी बग़ल में हो उस वक़्त कौन उसकी तरफ़ निगाह उठा सकता है तो अल्लाह वाहिदे क़ह्हार की कनीज़ें कि उसके ख़ास दरबार में हाज़िर हैं उन पर बदनिगाही किस क़द्र सख़्त होगी।

हाँ–हाँ होशियार, ईमान बचाए हुए, क़ल्ब व निगाह संभाले हुए, हरम वह जगह है जहाँ गुनाह के इरादे पर पकड़ा जाता है और एक गुनाह लाख गुनाह के बराबर ठहरता है, इलाही ख़ैर की तौफ़ीक़ दे। आमीन (फतावा रज़वीया जिल्द 4, स0 705 ता 709, मुल्तक़िज़न)

मिना व मुज़्दलिफ़ा और बाक़ी अफ़आले हज :

1. जब ग़ुरूबे आफ़ताब का यक़ीन हो जाए फौरन मुज़्दलिफ़ा को चलो।

2. रास्ते भर ज़िक्र व दुआ व लब्बैक व ज़ारी व बुका में मसरूफ़ रहो।

3. रास्ता में जहाँ गुन्जाइश पाओ और अपनी या दूसरे की ईज़ा का एहतमाल न हो इतनी देर इतनी दूर तेज़ चलो प्यादा हो ख़्वाह सवार।

4. जब मुज़्दलिफ़ा नज़र आए बशर्ते क़ुदरत प्यादा हो लेना बेहतर है और नहा कर दाख़िल होना अफ़ज़ल है।

6. वहाँ पहुँच कर हत्तल–इम्कान जबले क़ुज़ह के पास रास्ते से बच कर उतरो, वरना जहाँ जगह मिले।

7. बाक़ी रात ज़िक्र लब्बैक, दरूद व दुआ में गुज़ारो कि यह बहुत अफ़ज़ल जगह है और बहुत अफ़ज़ल रात है, ज़िन्दगी हो तो और सोने की बहुत सी रातें मिलेंगी और यहाँ यह रात ख़ुदा जाने दोबारा किसे मिले और न हो सके तो बातहारत सो रहो कि फ़ुज़ूल बातों से सोना बेहतर है। और इतने पहले उठो कि सुबह चमकने से पहले ज़रूरियात व तहारत से फारिग़ हो लो आज नमाज़ सुबह बहुत अन्धेरे से पढ़ी जाएगी।

8. जब तुलूअ् आफ़ताब में दो रकाअत पढ़ने का वक़्त रह जाए मिना को चलो और यहाँ से सात छोटी–छोटी कंकरियाँ दाना ख़ुरमा के बराबर पाक जगह से उठा कर तीन बार धो लो किसी पत्थर को तोड़ कर कंकरियाँ न बनाओ।

9. रास्ते भर बदस्तूर ज़िक्र व दुआ व दरूद और बकसरत लब्बैक में मश्ग़ूल रहो।

10. जब मिना नज़र आए यह दुआ पढ़ो :

11. जब मिना पहुँचो सब कामों से पहले जुम्रतुल–उक़्बा को जाओ जो उधर से पिछला जुमरह है और मक्का मुअज़्ज़मा से पहले नाले के वस्त में सवारी पर जुमरे से पाँच हाथ हटे हुए यूं खड़े हो कि मिना दाहिने हाथ पर और काबा बाएं को और जुमरा की तरफ़ मुँह हो। सात कंकरियाँ जुदा–जुदा सीधा हाथ ख़ूब उठा कर कि सपेदी बग़ल ज़ाहिर हो, हर एक पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कह कर मारो, बेहतर यह है कि कंकरियाँ जुमरा तक पहुँचें वरना तीन हाथ के फासिला पर गिरें उस से ज़्यादा फासिला पर गिरी तो वह कंकरी शुमार में न आएगी, पहली कंकरी से लब्बैक मौक़ूफ़ करो।

12. जब सात पूरी हो जाएं वहाँ न ठेहरो फौरन ज़िक्र व दुआ करते पलट आओ।

13. अब क़ुरबानी में मश्ग़ूल हो यह वह क़ुरबानी नहीं जो ईद में होती है कि वह तो मुसाफ़िर पर बिल्कुल नहीं और मुक़ीम मालदार पर वाजिब है अगरचे हज में हो। यह हज का शुक्राना है, क़िरान व तमत्तुअ् करने वाले पर वाजिब है, अगरचे फ़क़ीर हो, और सिर्फ़ हज करने वाले के लिए मुस्तहब है अगर ग़नी हो।

14. यह कुरबानी करके अपने और तमाम मुसलमानों के हज व कुरबानी क़ुबूल होने की दुआ करो।

15. कुरबानी के बाद क़िब्लारू बैठ कर मर्द हलक़ करें यानी सारा सर मुंडाएं कि अफ़्ज़ल है या बाल कतरवाएं कि रुख़्सत है, औरतों को हलक़ हराम है, एक पूरा बराबर बाल कतरवा दें।

16. यहाँ हलक़ या तक़्सीर से पहले नाख़ुन न कतरवाओ, ख़त न बनवाओ।

17. अब औरत से सोहबत करने, शहवत से हाथ लगाने गले लगाने, बोसा लेने देखने के सिवा जो कुछ एहराम ने हराम किया था सब हलाल हो गया।

18. अफ़्ज़ल यह है कि आज दसवीं ही तारीख़ फ़र्ज़े तवाफ़ के लिए जिसे तवाफ़ुज़्ज़ियादह कहते हैं मक्का मुअज़्ज़मा जाओ, इस तवाफ़ में इज़्तिबा नहीं।

19. कमज़ोर और औरतें अगर भीड़ के सबब दसवीं को न जाएं तो उसके बाद ग्यारहवीं को अफ़्ज़ल है।

20. जो ग्यारहवीं को न जाए बारहवीं को कर ले, उसके बाद बिला उज़्र ताख़ीर गुनाह है, जुर्माना में एक क़ुरबानी होगी।

21. बहरहाल तवाफ़ के बाद दो रकाअत ज़रूर पढ़ें, इस तवाफ़ से भी औरतें भी हलाल हो जाएंगी हज पूरा हो गया कि उसका दूसरा, रुक्न यह तवाफ़ था।

22. दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं रातें मिना ही में बसर करना सुन्नत है न मुज़्दलिफ़ा में न मक्का न राह में, तो जो दस या ग्यारह को तवाफ़ के लिए गया वापस आ कर रात मिना ही में गुज़ारे।

23. ग्यारहवीं तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर रमी को चलो, उन अय्याम में रमी जुमर–ए–ऊला से शुरू करो जो मस्जिदे ख़ीफ़ से क़रीब मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ है उसकी रमी को राहे मक्का की तरफ़ से आ कर चढ़ाई पर चढ़ो यहाँ सात कंकरियाँ काबा की तरफ़ रुख़ करके मार कर जुमरा से कुछ आगे बढ़ जाओ।

24. फिर जुमर–ए–वुस्ता पर जाकर ऐसा ही करो।

25. फिर जुमर–ए–उक़्बा पर मगर यहाँ रमी करके न ठहरो मअन पलट आओ पलटने में दुआ करो।

26. बारहवीं की रमी करके ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले इख़्तियार है कि मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो जाओ, मगर बाद ग़ुरूब चला जाना मायूब है, अब एक दिन और ठहरना और तेरहवीं को बदस्तूर दोपहर ढले रमी करके मक्का जाना होगा और यही अफ़्ज़ल है।

27. हलक़ यानी सर मुंडाना रमी से पहले जाइज़ नहीं।

28. ग्यारहवीं बारहवीं की रमी दोपहर से पहले असलन सही नहीं।

29. अख़ीर दिन यानी बारहवीं ख़्वाह तेरहवीं को जब मिना से रुख़्सत हो कर मक्का मुअज़्ज़मा चलो तो वादी मुहसिब में कि जन्नतुल–मुअल्ला के क़रीब है सवारी से उतर लो या बे उतरे कुछ देर ठहर कर मश्ग़ूले दुआ हो और अफ़्ज़ल तो यह है कि इशा तक नमाज़ें यहीं पढ़ो कि एक नींद लेकर दाख़िल मक्का मुअज़्ज़मा हो।

30. जब अज़्मे रुख़्सत हो तवाफ़े वेदाअ़ बेरमल व सई व इज़्तिबाअ़ बजा लाओ कि बाहर वालों पर वाजिब है फिर दो रकाअत मक़ामे इब्राहीम में पढ़ो।

31. फिर ज़मज़म पर आकर पानी पियो बदन पर डालो।

32. फिर दरवाज़–ए–काबा के पास खड़े हो कर आस्तान–ए–पाक को बोसा दो और क़ुबूल व बार–बार हाज़िरी की दुआ मांगो।

33. फिर मुल्तज़िम पर आ कर ग़िलाफ़े काबा थाम कर उसी तरह चिमटो, ज़िक्र करो और दरूद व दुआ की कसरत करो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 709 ता 714)

मदीना तैयबा की हाज़िरी :

1. ज़्यारते अक़्दस क़रीब बवाजिब है, बहुत लोग दोस्त बन कर तरह–तरह डराते हैं। राह में ख़तरा है, वहाँ बीमारी है, ख़बरदार किसी की न सुनो और हरगिज़ महरूमी का दाग़ लेकर न पलटो, जान एक दिन जाती ज़रूर है इस से क्या बेहतर कि उनकी राह में जाए, और तजरबा है कि जो उनका दामन थाम लेता है उसे अपने साया में बआराम् ले जाते हैं कील का खटका नहीं होता।

2. हाज़िरी में ख़ास ज़्यारते अक़्दस की नीयत करो, यहाँ तक कि इमाम इब्ने इल्हाम फरमाते हैं इस बार मस्जिद शरीफ़ की भी नीयत न करे।

3. रास्ता भर दरूद व ज़िक्र में डूब जाओ।

4. जब हरमे मदीना नज़र आए बेहतर यह कि प्यादा हो लो, रोते सर झुकाते, आँखें नीची किए और हो सके तो नंगे पाँव चलो।

5. जब क़ुब्ब–ए–अनवर पर निगाह पड़े दरूद व सलाम की कसरत करो।

6. जब शहरे अक़्दस तक पहुँचो जलाल व जमाल महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाओ।

7. हाज़िरी मस्जिद से पहले तमाम ज़रूरियात जिन का लगाव दिल बटने का बाइस हो निहायत जल्द फारिग़ हो उनके सिवा किसी बेकार बात में मश्ग़ूल न हो मअन वुज़ू और मिस्वाक करो, और ग़ुस्ल बेहतर, सफ़ेद व पाकीज़ा कपड़े पहनो, और नए बेहतर, सुर्मा व ख़ुशबू लगाओ और मुश्क अफ़्ज़ल है।

8. अब फौरन आस्ताना अक़्दस की तरफ़ निहायत ख़ुशूअ् व ख़ुज़ूअ् से मुतवज्जह हो, रोना न आए तो रोने का मुँह बनाओ और दिल को बज़ोर रोने पर लाओ और अपनी संगदिली से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ़ इल्तिजा करो।

9. जब दरे मस्जिद पर हाज़िर हो सलात व सलाम अर्ज़ करके थोड़ा ठहरो जैसे सरकार से इजाज़त माँगते हो, बिस्मिल्लाह कह कर सीधा पाँव पहले रख कर हमातन अदब हो कर दाख़िल हो।

10. उस वक़्त जो अदब व ताज़ीम फ़र्ज़ है हर मुसलमान का दिल जानता है आँखों, कान, ज़ुबान, हाथ, पाँव, दिल सब ख़्याल ग़ैर से पाक करो, मस्जिदे अक़्दस के नक़्श व निगार न देखो।

11. हरगिज़–हरगिज़ मस्जिदे अक़्दस में कोई हरफ़ चला कर न निकले।

12. अब कमाले अदब में डूबे हुए, गर्दन झुकाए, आँखें नीची किए, लरज़ते, काँपते, गुनाहों की नदामत से पसीना–पसीना होते हुज़ूर पुर–नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अफ़्व व करम की उम्मीद रखते हुज़ूरे वाला की पाएं यानी मश्रिक़ की तरफ़ से मवाजहे आलिया में हाज़िर हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मज़ारे अनवर में रू–बक़िब्ला जल्वा फरमा हैं, इस सिम्त से हाज़िर हो कि हुज़ूर की निगाह बेकस पनाह तुम्हारी तरफ़ होगी और यह बात तुम्हारे दोनों जहाँ में काफी है।

13. अब कमाले अदब व हैबत व ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ ज़ेरे क़िन्दील उस चाँदी की कील के पास जो हुजर–ए–मुतह्हरा की जुनूबी दीवार में चेहर–ए–अनवर के मुक़ाबिल लगी हो कम अज़ कम चार हाथ के फासिला से क़िब्ला को पीठ और मज़ारे अनवर को मुँह करके नमाज़ की तरह हाथ बांधे खड़े हो।

14. ख़बरदार जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़ अदब है बल्कि चार हाथ फासिला से ज़्यादा क़रीब न जाओ, यह उनकी रहमत क्या कम है कि तुम को अपने हुज़ूर बुलाया अपने मवाजहे अक़्दस में जगह बख़्शी, उनकी निगाहे करीम अगरचे हर जगह तुम्हारी तरफ़ थी अब ख़ुसूसियत और इस दरजा क़ुर्ब के साथ है।

15. जहाँ तक मुम्किन हो और ज़ुबान यारी दे और मलाल व कसल न हो सलात व सलाम की कसरत करो, हुज़ूर से अपने लिए और अपने माँ–बाप, पीर, उस्ताद, औलाद, अज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिए शफ़ाअत माँगो, बार–बार अर्ज़ करो :

अस्अलुकश्शफ़ाअ़तु या रसूलुल्लाह।

16. फिर अगर किसी ने अर्ज़ सलाम की वसीयत की उसे बजा लाओ।

17. फिर मश्रिक़ की तरफ़ थोड़ा हट कर हज़रत सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के रूबरू खड़े हो कर सलाम अर्ज़ करो।

18. यह सब हाज़िरियाँ महल्ले इजाबत हैं. दुआ में कोशिश करो, जामे दुआ करो, दरूद पर क़नाअत बेहतर।

19. फिर मिंबरे अतहर के क़रीब दुआ माँगो।

20. फिर रौज़–ए–जन्नत में (यानी जो जगह मिंबर व हुजर–ए–मुनव्वरह के दर्मियान है और उसे हदीस में जन्नत की क्यारी फरमाया) आकर दो रकाअत नफ़्ल ग़ैर वक़्त मक्रूह में पढ़ कर दुआ करो।

21. यूंहीं मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो और दुआ माँगो कि महल बरकात हैं।

22. जब तक मदीना तैयबा की हाज़िरी नसीब हो एक साँस बेकार न जाए दो ज़रूरियता के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा तहारत हाज़िर रहो, नमाज़ व तिलावत और दरूद में वक़्त गुज़ारो।

23. यहाँ हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है लिहाज़ा इबादत में ज़्यादा कोशिश करो खाने पीने की कमी ज़रूर करो।

24. रौज़–ए–अनवर पर नज़र भी इबादत है जैसे काबा मुअज़्ज़मा या क़ुरआन मजीद का देखना तो अदब के साथ उसकी कसरत करो और दरूद व सलाम अर्ज़ करो।

25. पंजगाना या कम अज़ कम सुबह व शाम मवाजेह शरीफ़ में अर्ज़ सलाम के लिए हाज़िर रहो।

26. शहर में या शहर से बाहर जहाँ कहीं गुंबद मुबारक पर नज़र पड़े फौरन दस्त बस्ता इधर मुँह करके सलात व सलाम अर्ज़ करो बेग़ैर उसके हरगिज़ न गुज़रो कि ख़िलाफ़े अदब है।

27. क़ब्र करीम को हरगिज़ पीठ न करो और हत्तल–इम्कान नमाज़ में भी ऐसी जगह खड़े हो कि पीठ करनी न पड़े।

28. बक़ीअ़ वाहिद व क़ुबा की ज़्यारत सुन्नत है। मस्जिदे क़ुबा की दो रकाअत का सवाब एक उमरे के बराबर है और चाहो तो यहीं हाज़िर रहो।

सैयदी इब्ने अीब जुमरा क़ुद्दिसा सिर्रुहू जब हाज़िर होते आठों पहर बराबर हुज़ूरी में खड़े रहते। एक दिन बक़ी वग़ैरह ज़्यारत का ख़्याल आया फिर फरमाया यह है अल्लाह का दरवाज़ा। भीख माँगने वालों के लिए खुला है। उसे छोड़ कर कहाँ जाऊं।

29. वक़्ते रुख़्सत मवाजहे अनवर में हाज़िर हो और हुज़ूर से बार–बार उस नेमत की अता का सवाल करो और सच्चे दिल से दुआ करो कि इलाही ईमान व सुन्नत पर मदीना तैयबा में मरना और बक़ी पाक में दफन होना नसीब हो। (फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 720 ता 724)

माल हराम से हज करना नाजाइज़ :

माले हराम से हज करना जाइज़ नहीं बल्कि उसे हुक्म तो यह था कि जिन से लिया उन्हें वापस दे, वह न मालूम हों तो तसद्दुक़ कर दे उसके सिवा जिस काम में सर्फ़ किया जाएगा, ख़िलाफ़े शरअ़ के मूजिबे गुनाह होगा हाँ यह दूसरी बात है कि हज कर लिया तो फ़र्ज़ ज़िम्मा से उतर गया, जैसे चोरी और ग़सब के कपड़े से नमाज़ पढ़ना, (फ़र्ज़ ज़िम्मा से उतर जाएगा मगर नमाज़ मक्रूह होगी।

(मुरत्तिब)

हदीस में है कि जो हराम माल से हज करेगा उस से कहा जाएगा न तेरे लब्बैक क़ुबूल, न ख़िदमत मक़बूल और तेरा हज तेरे मुँह पर मारा गया, यहाँ तक कि तू यह नापाक माल जो तेरे हाथ में है वापस दे।　　(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 237)

हाजी और काबा मुअज़्ज़मा :

काबा मुक़द्दसा, खाना ख़ुदा और हरमे ख़ुदा है वह इंतिहाई मुअज़्ज़म व मुक़द्दस है उसमें एक नेकी का सवाब एक लाख है वहाँ पर रब्बे काइनात की ख़ुसूसी रहमत व बरकत नाज़िल होती है यही वजह है कि काबा मुक़द्दसा को क़यामत के दिन उठा लिया जाएगा और उसे जन्नत का एक हिस्सा कर दिया जाएगा। (मुरत्तिब)

हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया बेशक काबा रोज़े क़यामत यूं उठाया जाएगा जैसे शबे ज़ुफ़ाफ़ व दुल्हन को दूल्हा की तरफ़ ले जाते हैं, तमाम अह्ले सुन्नत जिन्होंने हज्जे मक़बूल किया कि उसके पर्दे से लिपटे हुए उसके गर्द दौड़ते होंगे यहाँ तक कि काबा और उसके साथ यह सब दाख़िल जन्नत होंगे।

(अहयाउल–उलूम, क़ुव्वतुल–क़ुलूब, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स0 201)

क़ुरबानी के अहकाम व मसाइल

उमूरे इस्लाम में कुछ फराइज़ व वाजिबात हैं जिनका बजा लाना लाज़िम व ज़रूरी है, इन उमूर में से क़ुरबानी भी है जो वाजिब है जिनके पास अय्यामे क़ुरबानी में मिक़्दारे निसाब माल हो ख़्वाह वह माल रुपये व नक़्दी, सोना, चाँदी, या काश्त वग़ैरह की शक्ल में हो उन पर क़ुरबानी वाजिब है, अल्लाह तआला के नज़्दीक क़ुरबानी के दिनों में जानवर का ख़ून बहाने का अमल बहुत ज़्यादा महबूब व पसन्दीदा है, बारगाहे ख़ुदावन्दी में अगरचे क़ुरबानी का गोश्त पोस्त नहीं पहुँचता मगर उस से बन्दे को जो तक़्वा हासिल होता है वह तक़्वा पहुँचता है, बन्दे की यही सबसे बड़ी सआदत व फ़ीरोज़ बख़्ती है कि उसका कोई नेक काम ख़ुदा की बारगाह में पहुँचे और वह क़ुबूल हो जाए।

(मुरत्तिब)

हदीस में है ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलुल्लाह यह क़ुरबानियाँ क्या हैं? फरमाया तुम्हारे बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत, पूछा उसमें हमको क्या मिलेगा फरमाया उसके हर बाल के बराबर नेकी, लोगों ने अर्ज़ किया और उनके बारे में क्या इरशाद है फरमाया उसके भी हर बाल के बराबर नेकी मिलेगी।　　(मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

बाल से इशारा बकरी की तरफ़ था, तो लोगों ने ऊन कह कर मेंढे के बारे में पूछ लिया।

(मिर्क़ात, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 429)

उम्मत की तरफ़ से हुज़ूर की कुरबानी :

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक दुंबे की ज़बह में फरमाया बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर, इलाही यह मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और उनके अह्ले बैत की तरफ़ से है।

दूसरे की ज़बह में फरमाया बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर, यह उसकी तरफ़ से है जिसने मेरी उम्मत से कुरबानी न की। (अबू दाऊद)

मुसलमानो! अपने नबी रऊफ़ व रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रहमत देखो।

हदीस में इरशाद है : फरबा व ताज़ा कुरबानियाँ करो कि वह पुल सिरात पर तुम्हारी सवारियाँ होंगी।

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मालूम था कि मेरी उम्मत में करोड़ों वह होंगे जो कुरबानी से आजिज़ होंगे, या उन पर वाजिब न होने के सबब कुरबानी न करेंगे हुज़ूर ने न चाहा कि वह सिरात पर बेसवारी के रह जाएं उनकी तरफ़ से खुद कुरबानी फरमा दी, कि अगर वह अपनी जान भी कुरबान करते तो उनके दस्ते मुबारक की फ़ज़ीलत को न पहुँचते। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलेही व सहबेही व बारिक व सल्लम।

इस बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैवी कुद्दिसा सिर्रुहू का अमल मुलाहिज़ा हो, खुद इरशाद फरमाते हैं :

मैं हमेशा से रोज़े ईद एक आला दरजा का बेश कीमत मेंढा अपने सरकारे आलम मदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ़ से किया करता हूँ। और रोज़े वेसाल हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू से एक मेंढा उनकी तरफ़ से। और अब उस सुन्नते करीमा के इत्तिबा से यह नीयत कर ली है कि इन्शाअल्लाह तआला ताबका ज़िन्दगी अपने उन अह्ले सुन्नत भाईयों की तरफ़ से क्या करूंगा जिन्होंने कुरबानी न की ख़्वाह गुज़र गये हों, या मौजूद हों, या आइन्दा आएं।

(अल–मल्फ़ूज़ दोम, स० 120)

कुरबानी का तरीका :

सुन्नते मुतवारेसा यह है कि ज़बह करने वाले और जानवर दोनों का चेहरा किब्ला की तरफ़ हो, जानवर को बाएं पहलू पर लिटाया जाए और उसका सर जुनूब की जानिब हो और उसकी पीठ पूरब की तरफ़ ताकि चेहरा सही तौर से किब्ला की तरफ़ हो जाए, ज़बह करने वाला अपना दाहिना पैर जानवर की गर्दन के दाएं जानिब रख कर ज़बह करे, अगर किब्ला की तरफ़ जानवर का रुख़ न हो तो मकरूह है, और अगर उसे दाएं पहलू पर लिटाया जाए तो बाज़ अइम्मा के नज़्दीक हराम हो जाएगा उसका खाना जाइज़ नहीं। लिहाज़ा उस से बचना ही बेहतर व मुनासिब है।

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बकरईद के दिन दो मेंढे सींग वाले चित कबरे ख़सी किए हुए ज़बह फरमाए जब उनका मुँह किब्ला को किया तो यह पढ़ा।

दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दो मेंढे चित कबरे सींग वालों की कुरबानी की उन्हें अपने दस्ते मुबारक से ज़बह फरमाया और बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर. कहा। (त, बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने माजा)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को देखा कि हुज़ूर ने अपना पाँव उनके पहलू पर रखा और बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहा।

(बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने माजा, फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 316ए 317)

क़ुरबानी की ताकीद :

साहिबे इस्तिताअत यानी जो क़ुरबानी के दिनों में बक़द्र निसाब रुपया पैसा या जाइदाद वग़ैरह रखता हो उस पर क़ुरबानी वाजिब है जो उरअत के बावजूद क़ुरबानी न करे वह गुनहगार और तारिके वाजिब है।

हदीस में ऐसे शख़्स के बारे में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं : जिसका हाथ पहुँचता हो और क़ुरबानी न करे वह हरगिज़ हमारी मस्जिद या ईदगाह के पास न आए। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 6, स० 521)

क़ुरबानी का गोश्त :

क़ुरबानी के गोश्त को तीन हिस्सो में तक़्सीम किया जाए।

★ एक हिस्सा ग़ुरबा व फ़ुक़रा के लिए।

★ दूसरा हिस्सा अहबाब व रिश्तादारों के लिए।

★ तीसरा हिस्सा अपने खाने के लिए।

ऐसा भी हो सकता है कि पूरा गोश्त तक़्सीम कर दे और यह भी हो सकता है कि पूरा अपने सर्फ़ में लाए अगर ज़रूरत हो।

शुरू ज़माना इस्लाम में तीन दिन खाने भर का गोश्त निकाल कर पूरे का तक़्सीम कर देना ज़रूरी था क्योंकि हर आदमी के अन्दर क़ुरबानी करने की वुस्अत न थी यह हुक्म इसलिए दिया गया था ताकि आस पड़ोस वाले सब को गोश्त पहुँच जाए फिर जब लोगों में ख़ुशहाली आई और हर शख़्स क़ुरबानी करने लगा तो हुक्म हुआ कि चाहे पूरे गोश्त को खाओ, या जमा रखो, या सवाब के लिए तक़्सीम कर दो। (मुरत्तिब)

हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हम तुम को क़ुरबानी का गोश्त तीन दिन से ज़ाइद रोकने से मना करते थे उसका मक़्सद मिस्कीनों पर आसानी थी, अब अल्लाह तआला ने कुशादगी फ़रमा दी तो अब खाओ, जमा करो और कारे सवाब में सर्फ़ करो। सुनो यह दिन ही खाने पीने और ज़िक्रे इलाही के दिन हैं।

(अबू दाऊद, फ़तावा रज़्वीया जिल्द 8, स० 513)

क़ुरबानी से मुतअल्लिक़ चन्द और मसाइल :

फ़तावा रज़्वीया जिल्द हश्तुम मतबअ़ रज़ा अकेडमी मुम्बई के हवाले से चन्द ज़रूरी मुतफ़र्रिक़ मसाइल दर्ज ज़ेल हैं मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

★ दूध के जानवर या गाभिन की क़ुरबानी अगरचे सही है मगर नापसन्द है, हदीस में इससे मुमानेअत फ़रमाई। (स० 393)

★ शहर में नमाज़े ईद से पहले क़ुरबानी नाजाइज़ व नामोतबर है।

★ दिहात में दस ज़िल–हिज्जा को तुलूअ़ फ़ज्र के बाद क़ुरबानी जाइज़ है।

★ किसी उज़्र से अगर शहर में नमाज़े ईद न पढ़ें तो नमाज़े ईद का वक़्त निकलने से पहले क़ुरबानी जाइज़ नहीं बाद में जाइज़ है। (स० 397)

क़ुरबानी में शहर व दीहात बल्कि आबादी व जंगल सब बराबर हैं, जिन शराइत से शहर वालों पर वाजिब होती है उन्हीं शराइत से गाँव वालों पर, बल्कि जंगल के रहने वाले पर वाजिब है। फ़क़त मुक़ीम होना चाहिए कि सफ़र में न हो, मुसाफ़िर से भी उसका वजूब साक़ित है, न यह कि मुमानेअत हो अगर करेगा नफ़्ल होगा, सवाब पाएगा। (स० 398)

★ छः महीने तक का ऐसा फरबा मेंढा कि साल भर वालों के साथ हो तो दूर से तमीज़ न हो, उसकी कुरबानी जाइज़ है अगरचे ख़स्सी न हो, और बकरा साल भर से कम का जाइज़ नहीं अगरचे ख़स्सी हो, बकरा बकरी एक साल से कम का कुरबानी में हरगिज़ जाइज़ नहीं, न उस पर कुरबानी की नीयत सही।

★ ख़स्सी की कुरबानी अफ़ज़ल है और उसमें सवाब ज़्यादा है।

★ कुरबानी वाले को यह मुस्तहब है कि ईद के दिन कुरबानी से पहले कुछ न खाए, कुरबानी ही के गोश्त में से पहले खाए, मगर यह रोज़ा नहीं, न उसमें रोज़ा की नीयत जाइज़।

★ ईद के दिन और उसके बाद तीन दिन रोज़ा हराम है, हाँ पहली से नवीं तक के रोज़े बहुत अफ़ज़ल हैं उस पर कुरबानी हो या न हो और सब नफ़्ली रोज़ों में बेहतर रोज़ा अरफ़ा के दिन का है।
(स0 442)

★ जंगली जानवरों में से किसी जानवर की कुरबानी जाइज़ नहीं, अगरचे घर में पैदा हो और पाला गया हो, न किसी घरेलू जानवर की कुरबानी जाइज़ सिवाए चार के ऊंट, गाय, भेड़, बकरी।
(स0 460)

★ औलादे सिग़ार की तरफ़ से कुरबानी अपने माल से करना वाजिब नहीं हाँ मुस्तहब है। और कुरबानी जिस पर वाजिब है उस पर एक ही वाजिब है, ज़्यादा नफ़्ल है, चाहे हज़ार जानवर कुरबानी करेगा सवाब है, न करेगा कुछ मवाख़िज़ा नहीं। (स0 466)

कुरबानी का जानवर ऐबदार न हो यानी आँख, कान, हाथ, पाँव सब आज़ा सलामत होना ज़रूरी है, सींग टूटा होना मुज़ाइक़ा नहीं मगर जहाँ से सींग उगा है अगर वहाँ तक टूटा तो नाजाइज़ है।
(स0 469)

★ जिस जानवर की असल पैदाइश में कान, दुम या सींग न हों इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक उसकी कुरबानी जाइज़ है। (स0 470)

एक बड़ा अहम व ख़ास मस्अला :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के नाम को गाय की कुरबानी करने में शरीअते मुतह्हरा ने सात की हद कर दी, ज़्यादा शरीक नहीं हो सकते, अगर होंगे तो वह कुरबानी न रही खाने का गोश्त हो गया, लिहाज़ा सात से ज़्यादा न हों, फिर चाहे हिस्सा बराबर हों या कम व बेश सब शरीकों को कुरबानी का सवाब मिलेगा और अगर सात आदमी एक गाय की क़ीमत का चन्दा न कर सकें तो यह मुम्किन है कि सौ आदमियों से चन्दा लें, और वह चन्दा देने वाले, सिर्फ़ सात या कम आदमियों को उस चन्दे का मालिक कर दें, और यह लोग गाय ख़रीद कर अपनी तरफ़ से कुरबानी करें कि उन को ऐने कुरबानी का सवाब मिलेगा और उन चन्दा देने वालों को कुरबानी की मदद का, कि वह भी सवाब में कुरबानी के बराबर होगा। (फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 459)

इंतिबाह :

11 ज़िल–हिज्जा 1335 हिजरी को फतह पुर मुहल्ला ईरानियाँ से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू की बारगाह में गाय की कुरबानी से मुतअल्लिक़ सवाल पेश हुआ जिसका ख़ुलासा यह है कि आजकल अख़्बारों में उलमा ने शाए फरमाया है कि मस्लेहतन ज़रूरत है कि हिन्दुओं से इत्तिफ़ाक़ किया जाए और बजाए गाए की कुरबानी के भेड़, बकरी की कुरबानी की जाए, लिहाज़ा आज तक जो लोग गाय की कुरबानी करते रहे उनके लिए आजकल मस्लेहत से गाय की कुरबानी करना न करना क्या है? (मुरत्तिब)

आपने इस सवाल का जो जवाब मरहमत फरमाया वह क़ाबिले दीद है उसका माहसल मुलाहिज़ा फरमाएं।

"हिन्दुस्तान में गाय की कुरबानी क़ाइम व जारी रखना वाजिब है, और इस नापाक मस्लेहत के लिए उसका छोड़ना हराम, गाय की कुरबानी इस्लाम का शिआर है, और शिआर इस्लाम बन्द करने की वही कोशिश करेगा जो इस्लाम का बदख़्वाह है और हुनूद से जैसा इत्तिहाद मनाया जा रहा है हराम है हराम, क़तई हराम है, नुसूस कुरआने अज़ीम से हराम है, और उसके नताइज हो रहे हैं वह हर शख़्स पर ज़ाहिर हैं।

कुरआने अज़ीम में साफ़ इरशाद फरमाया कि तुम में जो उन से दोस्ती रखेगा वहसब उन्हीं में से है। (अल–माइदा, 51)

फिर क्योंकर मुम्किन था कि मुश्रिकों से इत्तिहाद करने वाले मुश्रिक न हो जाते, यह यहाँ है और अगर सच्चे दिल से ताइब हो कर बाज़ न आए तो सही हदीसों का इरशाद है कि उनका हश्र भी बुत परस्तों के साथ होगा, मौला अज़्ज़ा व जल्ल अपने ग़ज़ब से पनाह दे।

(फतावा रज़्वीया, जिल्द 8, स0 456, 458 मुल्ख़िसन)

कुरबानी की खाल का मसरिफ़ :

★ कुरबानी, ख़ुदा की रज़ा के लिए ख़ून बहाने का नाम है, वाजिब इस क़द्र से अदा हो जाता है, फिर उसके गोश्त पोस्त के लिए तीन सूरतें हैं।

1. बेऐनेही अपने सर्फ़ में लाया जाए।
2. या वक़्ते हाजत के लिए ज़ख़ीरा रखा जाए।
3. या उस से सवाब का काम किया जाए।

हदीस में है खाओ, जमा रखो और सवाब के कामों में ख़र्च करो। (अबू दाऊद)

अ कुरबानी की खाल को सवाब के कामों में दिया जा सकता है, अज्ज़ाए अज़्हिया से सिर्फ़ तिमोल मम्नूअ् है, कि उसके दाम करके अपने काम में लाए जाएं।

अ खाल की जिस तरह जा नमाज़, या किताबों की जिल्दें, या मशकीज़ह अपने लिए बनवा सकता है, यूं ही किसी ग़नी को भी हदिया दे सकता है अगरचे वह ग़नी इमाम हो जबकि उसको तन्ख़्वाह में न दी जाए, और अगर तन्ख़्वाह में दे तो इमाम अगर उसका नौकर है जिसकी तन्ख़्वाह उसे अपने माल से देनी होती है तो देना नाजाइज़, कि वही तिमोल हुआ, जो मम्नूअ् है, और अगर वह मस्जिद का नोकर है जिसकी तन्ख़्वाह मस्जिद देती है तो जाइज़ है कि यह मस्जिद में दे दे, और मस्जिद की तरफ़ से इमाम की तन्ख़्वाह में दी जाए, कुरबानी की खालों में इमाम का कोई हक़ नहीं।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 478ए 479)

अ जो मदरसा तालीमे उलूमे दीनिया के लिए चन्दा से मुक़र्रर हो उसमें कुरबानी की खाल ख़्वाह बेच कर उसकी क़ीमत भेजना कि मसारिफ़ मदरसा मिस्ल तंख़्वाह मुदर्रेसीन व ख़ूराक तलबा वग़ैरह में सर्फ़ की जाए, मज़हब सही पर जाइज़ है, कि ऐसे मदारिस की एआनत, कुर्बत है और कुर्बत में सर्फ़ करने के लिए गोश्त व पोस्त कुरबानी बेचने की मुतलक़न इजाज़त है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 487ए 479)

अ जो मदरसा तालीम उलूमे दीनिया के लिए चन्दा से मुक़र्रर हुआ उसमें कुरबानी की खाल ख़्वाह बेच कर उसकी क़ीमत भेजना कि मसारिफ़े मदरसा मिस्ल तन्ख़्वाह मुदर्रेसीन व ख़ूराक तलबा वग़ैरह में सर्फ़ की जाए, मज़्हब सही पर जाइज़ है, कि ऐसे मदारिस की एआनत, कुर्बत है और कुर्बत में सर्फ़ करने के लिए गोश्त व पोस्त कुरबानी बेचने की मुतलक़न इजाज़त है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 487)

कुरबानी की खाल सादाते किराम को देना जाइज़ है, अपने माँ–बाप औलाद को भी दे सकता है, शौहर ज़ौजा को, ज़ौजा शौहर को दे सकती है, यह सदका की नीयत से हो तो सदका नाफ़िला है वरना हदिया। (फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 471)

अक़ीका के अहकाम :

अक़ीका विलादत के सातवें रोज़ सुन्नत है और यही अफ़ज़ल है वरना चौदहवीं, वरना इक्कीसवें दिन, अक़ीका और कुरबानी में ख़स्सी अफ़ज़ल है। और अक़ीका का गोश्त बाप दादा भी खा सकते हैं, कुरबानी के मिस्ल उसमें भी तीन हिस्से करना मुस्तहब है, और उसकी हड्डी तोड़ने की मुमानेअत में उलमा नेक फाली के लिए न तोड़ना बेहतर जानते हैं। लड़के के अक़ीका में दो जानवर दरकार हैं (और लड़की के अक़ीका में एक जानवर, मर्द) और यही काफी है, अगरचे ख़स्सी न हो।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 542)

मौत के बाद अक़ीका नहीं है :

बच्चे की मौत के बाद अक़ीका नहीं कि वह शुक्र वेलादत है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 545)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुदिसा सिर्रुहू मौत के बाद अक़ीका से मुतअल्लिक एक और सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

जो मर जाए किसी उम्र का हो उसका अक़ीका नहीं हो सकता, बच्चा अगर सातवें दिन से पहले ही मर गया तो उसके अक़ीका न करने से कोई असर उसकी शफ़ाअत वग़ैरह पर नहीं, कि वह वक़्त अक़ीका आने से पहले ही गुज़र गया, अक़ीका का वक़्त शरीअत में सातवाँ दिन है, सात दिन से पहले मर जाना दरकनार, हदीस में है कि कच्चा हमल जो गिर जाता है वह रोज़े क़्यामत अपना नाल खींचता हुआ आएगा और अपने माँ–बाप के लिए (जबकि वह दुनिया से ईमान के साथ गये हों) मौला अज़्ज़ा व जल्ल से ऐसा झगड़ा करेगा जैसे क़र्ज़ख़्वाह अपने क़र्ज़दार से, यहाँ तक कि हुक्म होगा कि ओ कच्चे बच्चे अपने रब से झगड़ने वाले अपने माँ–बाप का हाथ पकड़ ले और जन्नत में ले जा।

हाँ जिस बच्चे ने अक़ीका का वक़्त पाया यानी सात दिन का हो गया और बिला उज़्र बावस्फ़ इस्तिताअत उसका अक़ीका न किया, उसके लिए यह आया है कि वह अपने माँ–बाप की शफ़ाअत न करने पाएगा।

हदीस में है "लड़का अपने अक़ीका में गिरवी है।" (इब्ने माजा)

जो बच्चा क़ब्ल बुलूग़ मर गया और उसका अक़ीका कर दिया था, या अक़ीका की इस्तिताअत न थी, या सातवें दिन से पहले मर गया, इन सब सूरतों में वह माँ–बाप की शफ़ाअत करेगा जबकि यह दुनिया से बईमान गये हों।

कुरबानी जो अपने नाबालिग़ बच्चा की तरफ़ से बाज़ के नज़्दीक वाजिब है वह उसकी ज़िन्दगी ही में है, मौत के बाद किसी कि नज़्दीक लाज़िम नहीं, हाँ उनकी तरफ़ से करे तो उनको सवाब पहुँचेगा, यूंही माँ–बाप की तरफ़ से बाद मौत कुरबानी करना अज्रे अज़ीम है उसके लिए भी और उसके वालिदैन के लिए भी। (फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 547)

अक़ीका की दुआ :

बाप अगर हाज़िर और ज़बह पर क़ादिर हो तो उसी का ज़बह करना बेहतर है कि यह शुक्रे नेमत है जिस पर नेमत हुई वही अपने हाथ से शुक्र अदा करे, वह न हो या ज़बह न कर सके तो दूसर को क़ाइम करे या किया जाए और जो ज़बह करे वही दुआ पढ़े, अक़ीका पिसर में कि बाप ज़बह करे यूं दुआ पढ़े।

फलां की जगह पिसर का जो नाम रखता हो, ले, दुख़्तर हो तो दोनों जगह "इब्नी" की जगह बिन्ती और पाँचों जगह "ह" की जगह ह कहे, और दूसरा शख़्स ज़बह करे तो दोनों जगह इब्ना फ़ुलां या बिन्ती फ़ुलानह की जगह फ़ुलां बिन फ़ुलां या फ़ुलानह बिन्ते फ़ुलां कहे, बच्चे को उसके बाप की तरफ़ निस्बत करे।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 8, स0 541)

औरादो वज़ाइफ़

औरादो व वज़ाइफ़ के फ़वाइद मुसल्लम हैं सूफ़ियाए किराम ने और औरादो व वज़ाइफ़ को अपनी ज़िन्दगी का जुज़्व ला यन्फ़क्का क़रार दिया, अहादीस में बाज़ मक़ामात पर उनकी तरग़ीब दी गई सहाबा किराम ने उस पर अमल भी किया है और यह चीज़ें बुज़ुर्गाने दीन के मामूलात में भी शामिल हैं।

छोटी बड़ी कई किताबों में कि बाज़ार में दस्तियाब हैं आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू से मन्सूब और औरादो व वज़ाइफ़ का अंबार मौजूद है, हम उन मज्मूओं से नहीं बल्कि ख़ुद तसानीफ़े आला हज़रत या अल–मल्फ़ूज़ से चन्द आमाल नक़्ल करते हैं ताकि बन्दगाने ख़ुदा उन से इस्तिफ़ादा कर सकें, उनमें से अक्सर आमाल की तासीर तीर बहदफ़ है। (मुरत्तिब)

सुबह व शाम की बाज़ दुआएँ :

★ आधी रात ढले से सूरज की किरन चमकने तक सुबह है, उस बीच में जिस वक़्त उन दुआओं को पढ़ लेगा सुबह में पढ़ना होगा।

★ यूंहीं दोपहर ढलने से ग़ुरूबे आफ़ताब तक शाम है।

1. तीनों कुल तीन–तीन बार, उन तीनों शजरों का फाइदा हर बला से महफ़ूज़ी है। सुबह पढ़े तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुबह तक।

2. उनका फाइदा सात चीज़ों से पनाह है। जलना, डूबना, चोरी, साँप, बिच्छू, शैतान, सुल्तान। सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक।

3. एक बार सुबह पढ़े तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करें और उस दिन मरे तो शहीद हो। और शाम को पढ़े तो सुबह तक यही हुक्म है।

सिर्फ़ सुबह की दुआएँ :

1. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल–अलीइल–अज़ीम। हर काम बने शैतान से महफ़ूज़ रहे।

2. सूरः इख़्लास ग्यारह बार। अगर शैतान मआ अपने लश्करों के कोशिश करे कि उस से कोई गुनाह कराए न करा सके जब तक यह ख़ुद न चाहे।

3. तिलावते क़ुरआने अज़ीम कम अज़ कम एक पारह, हत्तल–इम्कान तुलूअ़ शम्स से पहले हो और अगर आफ़ताब निकल आए तो ठहर जाए और ज़िक्र अज़्कार करे यहाँ तक कि आफ़ताब बुलन्द हो जाए कि जिन तीन वक़्तों में नमाज़ मक्रूह है, तिलावत भी मक्रूह है।

4. दलाइलुल–ख़ैरात शरीफ़,

एक हिज़्ब, शजरा मुबारका, क़ब्ल तुलूअ़ शम्स हों ख़्वाह बाद तुलूअ़।

सोते वक़्त की दुआएँ :

1. आयतुल–कुर्सी एक बार, जब तक सोए हिफ़ाज़ते इलाही में है, उसके घर और गिर्द के घरों में चोरी से पनाह हो। आसेब व जिन्न का दख़ल न हो।

2. तस्बीह हज़रत ज़हरा, सुबह नशात पर उठे, और फवाइद बेशुमार हैं।

3. अल्हम्दु और चारों क़ुल एक–एक बार।

बाद नमाज़ पंजगाना की दुआएँ :

1. आयतुल–कुर्सी एक–एक बार। मरते ही जन्नत में दाख़िल हो।

2. अस्तग़फ़िरुल्लाहा अल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुआ अल्हैयुल–कैयूम व अतूबु इलैहि।

तीन–तीन बार, गुनाह माफ़ हों अगरचे समुन्द्र के झागों के बराबर हों।

3. तस्बीह हज़रत फातिहा ज़हरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा यानी सुब्हानल्लाह 33 बार, वल–हम्दुलिल्लाह 33 बार, अल्लाहु अकबर 34 बार। अख़ीर में ला–इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल–मुल्कु वलहुल–हम्दु वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर। एक बार। उस दिन तमाम जहाँ में किसी का अमल उसके बराबर बुलन्द न किया जाए मगर जो उसके मिस्ल पढ़े।

4. माथे पर दाहिना हाथ रख कर।

हर ग़म व परेशानी से बचे।

नमाज़ सुबह के बाद :

एक–एक बार या तीन–तीन बार, हर मुश्किल आसान हो, सब परेशानियाँ दूर हों, ईमान सलामत रहे, अल्लाह तआला हर जगह मदद फरमाए, दुश्मन बरबाद हों, हासिद अपनी आग में जलें, नज़अ् में आसानी हो, क़ब्र में शादाँ हो, नेकियों का पल्ला भारी हो सिरात पर सहल जारी हो।

★ बाद नमाज़ सुबह बग़ैर पाँव बदले बैठा हुआ ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहे यहाँ तक कि आफ़ताब बुलन्द हो यानी तुलूअ् किनार–ए–शम्स को बीस मिनट गुज़र जाएं उस वक़्त दो रकाअत नफ़्ल पढ़े पूरे हज व उमरा का सवाब लेकर पलटे।

नमाज़ सुबह व अस्र के बाद :

1. हर बला व आफ़त व शैतान व मक्र व फ़रेब से बचे गुनाह माफ़ हो उसके बराबर किसी की नेकियाँ न निकलीं।

2. अल्लाहुम्मा अजिरनी मिनन्नार। सात–सात बार दोज़ख़ से दुआ करे इलाही उसे मुझ से बचा।

नमाज़े मग़्रिब के बाद :

ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद से शब में तुलूअ् सुबह तक जिस वक़्त हो।

1. सूरः मुल्क। अज़ाबे क़ब्र से नजात हो।

2. सूरः यासीन। मग़्फ़िरत है।

3. सूरः वाक़या। फाक़ा से अमान हो।

4. सूरः दुख़ान। सुबह इस हाल में उठे कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हों।

नमाज़े इशा के बाद :

सौ मरतबा पढ़ने से गुनाहों की मग़्फ़िरत, आफ़ात दुनियवी व उख़रवी से नजात और सफ़ाए क़ल्ब हासिल हो।

दरूदे जुमा :

बाद नमाज़े जुमा मज्मा के साथ मदीना तैयबा की तरफ़ मुँह करके दस्त बस्ता खड़े हो कर सौ बार पढ़ें, जहाँ जुमा न होता हो जुमा के दिन नमाज़ सुबह ख़्वाह ज़ुहर या अस्र के बाद पढ़ें, जो कहीं अकेला हो तन्हा पढ़े, यूंहीं औरतें अपने घरों में पढ़ें।

उसके चालीस फाइदे हैं जो सही और मोतबर हदीसों से साबित हैं। जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत रखेगा, जो उनकी अज़्मत तमाम जहान से ज़्यादा दिल में रखेगा, जो उनकी शान घटाने वालों, उनके ज़िक्र पाक मिटाने वालों से दूर रहेगा, दिल से बेज़ार होगा, ऐसा जो कोई मुसलमान उसे पढ़ेगा उसके लिए बेशुमार फाइदे हैं जिन में से बाज़ दर्ज किए जाते हैं।

1. पढ़ने वाले पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला अपनी तीन हज़ार रहमतें उतारेगा।
2. उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा।
3. पाँच हज़ार नेकियाँ उसके नाम-ए-आमाल में लिखेगा।
4. उसके पाँच हज़ार गुनाह माफ़ फरमाएगा।
5. उसके पाँच हज़ार दर्जे बुलन्द फरमाएगा।
6. उसके माथे पर लिख देगा कि यह मुनाफ़िक़ नहीं।
7. उसके माथे पर तहरीर फरमाएगा कि यह दोज़ख़ से आज़ाद है।
8. अल्लाह उसे क़्यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।
9. उसके माल में तरक़्क़ी देगा।
10. उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद में बरकत रखेगा।
11. दुश्मनों पर ग़लबा देगा।
12. दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा।
13. किसी दिन ख़्वाब में बरकत ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ होगा।
14. ईमान पर ख़ात्मा होगा।
15. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत उसके लिए वाजिब होगी।
16. क़्यामत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से मुसाफ़हा फरमाएंगे।
17. अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला उस से ऐसा राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने इस दरूद शरीफ़ की तमाम सुन्नियों को इजाज़त अता फरमाई, बशर्तेकि बद-मज़्हबों से बचें।

दीन व ईमान की हिफ़ाज़त का अमल :

तीन-तीन बार, सुबह व शाम पढ़ें दीन व ईमान जान व माल और बाल बच्चे सब महफ़ूज़ रहें।
(अल-वज़ीफ़तुल-करीमा)

ख़ैर व बरकत के लिए एक दुआए मासूर :

एक शख़्स ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू से अर्ज़ किया कि हुज़ूर बरकते रिज़्क़ के लिए कोई दुआ इरशाद फरमाएं उस पर आपने फरमाया :

एक सहाबी ख़िदमते अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अर्ज़ की दुनिया ने मुझ से पीठ फेर ली फरमाया क्या वह तस्बीह तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह है मलाइका की और जिसकी बरकत से रोज़ी दी जाती है ख़ल्क़े दुनिया आएगी तेरे पास ज़लील व ख़्वार हो कर, तुलूअ् फ़ज्र के साथ सौ बार कहा कर :

उन सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की हुज़ूर दुनिया मेरे पास इस कसरत से आई मैं हैरान हूँ कहाँ उठाऊं, कहाँ रखूं।

(बुख़ारी)

उस शख़्स से मुख़ातब हो कर आला हज़रत ने फ़रमाया : उस तस्बीह का आप भी विर्द रखें हत्तल–इम्कान तुलूअ़ सुबह सादिक़ के साथ हो वरना सुबह से पहले। जमाअत क़ाइम हो जाए तो उसमें शरीक हो कर बाद को अदद पूरा कीजिए और जिस दिन क़ब्ल नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूअ़ शम्स से पहले। (अल–मल्फ़ूज़ अव्वल, स0 72)

रिज़्क़ में बरकत का अमल :

रिज़्क़ में ख़ैर व बरकत और कारोबार में तरक़्क़ी के लिए या मुसब्बिबल–अस्बाब 500 बार अव्वल आख़िर ग्यारह–ग्यारह बार दरूद शरीफ़, बाद नमाज़ इशा क़िब्ला रू बावुज़ू नंगे सर ऐसी जगह कि जहाँ सर और आसमान के दर्मियान कोई चीज़ हाइल न हो यहाँ तक कि सर पर टोपी भी न हो, पढ़ा जाए। (अल–मल्फ़ूज़ दोम, स0 67)

ईमान पर ख़ात्मा का अमल :

एक रोज़ बाद फ़राग़ नमाज़ इशा लोग आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की दस्त बोसी कर रहे थे उस मज्मा से एक़ साहब ने ख़िदमत बाबरकत में अर्ज़ की, हुज़ूर मैं ज़िला होशिंगाबाद (एम.पी.) का रहने वाला हूँ मुझे हुज़ूर की जबलपुर तशरीफ़ आवरी की रेल में ख़बर मिली लिहाज़ा डाक से सिर्फ़ दुआ के वास्ते हाज़िर हुआ हूँ कि ख़ुदावन्दे करीम ईमान के साथ ख़ात्मा बिल–ख़ैर करे, हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया :

(1) इक्तालीस बार सुबह को या हय्यु या क़ैय्यूमु ला इलाहा इल्ला अन्ता, अव्वल व आख़िर दरूद शरीफ़, नीज़ सोते वक़्त अपने औराद के बाद सूरः काफ़िरून, रोज़ाना पढ़ लिया कीजिए इसके बाद कलाम वग़ैरह न कीजिए हाँ अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बाद फिर सूरः काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ात्मा उसी पर हो, इन्शाअल्लाह तआला ख़ात्मा ईमान पर होगा।

(2) और तीन बार सुबह और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखें :

दफ़ा बुख़ार का अमल :

सूरः मुजादिला शरीफ़ जो अट्ठाईस्वें पारह की पहली सूरः है बाद अस्र तीन मरतबा पढ़ कर पानी पर दम करके पिलाया जाए, बुख़ार जाता रहेगा। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 2)

आयात को मअ़कूस करके पढ़ना हराम है :

बाज़ वज़ाइफ़ में आयात और सूरतों का मअ़कूस करके पढ़ना लिखा है जो हराम और अशद हराम कबीरह और सख़्त कबीरह, क़रीब कुफ़्र है। यह तो दरकनार सूरतों की सिर्फ़ तरतीब बदल कर पढ़ना उसकी निस्बत तो अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

क्या ऐसा करने वाला डरता नहीं कि अल्लाह उसके क़ल्ब को उलट दे। न कि आयात को बिल्कुल मअ़कूस करके मुहमल बना देना। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 22)

सुब्हानल्लाह वग़ैरह के फ़वाइद :

सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला–इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। उनका उख़रवी नफ़अ़ तो यह है कि हर कलिमा से एक पेड़ जन्नत में लगाया जाता है, और फ़िलहाल उनका नफ़ा यह है कि वह कलिमात मुँह से निकल कर हवा में मुज्तमा रहते हैं क़यामत तक तस्बीह व तक़्दीस करेंगे और अपने क़ाइल के वास्ते मग़्फ़िरत मानेंगे।

इसी तरह कलिमाते कुफ़्र मुँह से निकल कर हवा में मुज्तमा रहते हैं क़्यामत तक तस्वीह व तक़्दीस करेंगे और अपने क़ाइल पर लानत करते रहेंगे। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 31)

बीनाई ज़्यादा होने के आमाल :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से एक शख़्स ने कहा कि हुज़ूर मेरी आँखों की रोशनी बहुत कम है, उस पर आपने फरमाया :

1. आयतुल–कुर्सी शरीफ़ याद कर लीजिए हर नमाज़ के बाद एक बार पढ़िए, नमाज़ पंजागना की पाबन्दी रखिए और औरतें कि जिन दिनों में उन्हें नमाज़ का हुक्म नहीं वह भी पाँचों वक़्त आयतुल–कुर्सी इस नीयत से कि अल्लाह की तारीफ़ है न इस नीयत से कि कलामुल्लाह है पढ़ लिया करें और जब उस कलिमा पर पहुँचें वला युअद्दुहू हिफ़्ज़ुहुमा, दोनों हाथों की उंगलियाँ आँखों पर रख कर उस कलिमा को ग्यारह बार कहें फिर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम करके आंखों पर फेर लें।

2. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

नूर, नूर, नूर, नूर, नूर।

सफ़ेद चीनी की तश्तरी पर उसे इसी तरह लिखें कि वाव और मीम के सर खुले रहें और आबे ज़मज़म शरीफ़ और न मिले तो आबे बाराँ और न मिले तो आबे जारी और न मिले तो आबे ताज़ा से धो कर 256 बार उस पर या नूर पढ़ कर दम करें, अव्वल व आख़िर तीन–तीन बार यह दरूद शरीफ़:

अल्हुम्मा या नूरू या नूरू अन्नूरे सल्ले अला अला नूरिका अल–मुनीर व आलेही व बारिक व सल्लिम। यह पानी आँखों पर लगाएं और बाक़ी पी लें।

3. ठलिया के तावीज़ों का चिल्ला करें।

यह अमल ऐसे क़वीयुत्तासीर हैं कि अगर सिद्क़ ऐतक़ाद हो तो इन्शाअल्लाह तआला गई हुई आँखें वापस आ जाएं। (अल–मल्फ़ूज़ सोम, स0 40ए 41)

क़र्ज़ अदा होने की पुर असर दुआ :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी से एक शख़्स ने अर्ज़ की हुज़ूर मैं आजकल बहुत परेशान हूँ गुज़र औक़ात-मुश्किल से होती है क़र्ज़दार बहुत हो गया हूँ, उस पर आपने इरशाद फ़रमाया :

हर नमाज़ के बाद 11.11 बार और सुबह व शाम 100.100 बार रोज़ाना, अव्वल व आख़िर दरूद शरीफ़।

इसी दुआ की निस्बत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल–करीम ने फरमाया कि अगर तुझ पर मिस्ल पहाड़ के भी क़र्ज़ होगा तो उसे अदा कर देगा।

(तिर्मिज़ी, अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 8)

ज़हरीले जानवर से हिफ़ाज़त की दुआ :

हदीस में है : अऊज़ुबे कलिमातिल्लाहे अत्ताम्माते मिन शर्रे मा ख़लक़। (तिर्मिज़ी)

जो सुबह को पढ़ लेगा तमाम दिन ज़हरीले जानवरों से महफ़ूज़ रहेगा और जो शाम को पढ़ ले तो सुबह तक। (अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 36)

ज़हर व ज़रर से हिफ़ाज़त की दुआ :

सुबह व शाम तीन–तीन बार पढ़ें। (अल–वज़ीफ़तुल–करीमह)

गला फूल जाए तो क्या करे :

अम अबरमू अमरन फ़इन्ना मुबरेमून।
लिख कर गले में डाल लिया जाए।

(अल–मल्फ़ूज़ चहारुम, स0 57)

बाज़ अमल नाजाइज़ :

★ अम्लियात व तावीज़ अस्माए इलाही व कलामे इलाही से ज़रूर जाइज़ हैं जबकि उनमें कोई तरीक़ा ख़िलाफ़े शिरअ् न हो मसलन कोई लफ़्ज़ल ऐसा हो जिसका मानी मालूम नहीं, जैसे "हफ़ीज़ी रमज़ाना कअ्स्लहून" और दुआए दफ़ा ताऊन में "तासूसा, जासूसा, मासूसा।

ऐसे अल्फ़ाज़ की इजाज़त नहीं जब तक हदीस या आसार या अक़्वाले मशाइख़ मोतमेदीन से साबित न हो, यूंहीं मिर्गी वग़ैरह दूर करने के तावीज़, कि मुर्ग़ के ख़ून से लिखते हैं यह भी नाजाइज़ है, इस एवज़ मुश्क से लिखें कि वह भी असल में ख़ून है।

यूंही हुब व तस्ख़ीर के लिए बाज़ तावीज़ात दरवाज़ा की चौखट में दफन करते हैं कि आते–जाते उस पर पाँव पड़ें यह भी मम्नूअ् व ख़िलाफ़े अदब है।

★ इसी तरह वह मक़्सूद जिसके लिए वह तावीज़ या अमल किया जाए अगर ख़िलाफ़े शरअ् होना जाइज़ होगा जैसे औरतें तस्ख़ीर शौहर के लिए तावीज़ कराती हैं, यह हुक्मे शरअ् का अक्स है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने शौहर को हाकिम बनाया है, उसे महकूम बनाना औरत पर हराम है।

यूंहीं तफ़रीक़ व अदावत के अमल व तावीज़ कि महारिम में किए जाएं, मसलन भाई को भाई से जुदा करना, यह क़तअ् रहम है और क़तअ् रहम हराम।

यूंहीं ज़न व शौहर में निफ़ाक़ डलवाना, हदीस में फरमाया जो किसी औरत को उसके शौहर से बिगाड़ दे वह हमारे गरोह से नहीं। बल्कि मुतलक़न दो मुसलमानों में तफ़रीक़ बिला ज़रूरत शरई नाजाइज़ है।

हदीस में फरमाया! आपस में बुग़्ज़ व अदावत न रखो, एक दूसरे को पीठ न दो, हसद न करो, अल्लाह के बन्दे हो, भाई–भाई हो जाओ। (त, बुख़ारी)

ग़रज़ नफ़्स अमल या तावीज़ में कोई अमर ख़िलाफ़े शरअ् हो या मक़्सूद में हो तो नाजाइज़ है वरना जाइज़ बल्कि नफ़अ् रसानी मुस्लिम की ग़रज़ से महमूद व मूजिबे अज्र।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : तुम में जिस से हो सके कि अपने भाई मुसलमान को कोई नफ़अ् पहुँचाए तो पहुँचाए।

(मुस्लिम, फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 331)

रब तआला की रज़ा हासिल हो :

तीन–तीन बार, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के करम पर हक़ है कि रोज़े क़यामत उसे राज़ी करे।

मक्र व बला से महफ़ूज़ी :

दस–दस बार, हदीस में सात बार फरमाया : हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दस बार आया, फ़क़ीर (आला हज़रत) का इसी पर अमल है उसे बेहम्देही तआला तमाम मक़ासिद के लिए काफी पाया, और उसमें हर बला व मक्र से महफ़ूज़ी भी है।

एक जामे दुआ :

एक–एक बार, जिस से किसी दिन सब वज़ाइफ़ रह जाएं तो यह तन्हा उन सबकी जगह काफी है। नीज़ रात के हर नुक़्सान की तलाफी है।

फ़ाक़ा और वहशत क़ब्र व हश्र से हिफ़ाज़त :

ला–इलाहा इल्लल–मलिकुल–हक़्क़ुल–मुबीन। सौ–सौ बार, सुबह व शाम, दुनिया में फ़ाक़ा न हो, क़बर में वहशत न हो, हश्र में घबराहट न हो। (अल–वज़ीफ़तुल–करीमह)

क़ज़ाए हाजात व हुसूल फ़ज़र व मग़लूबी दुश्मनां :

1. अल्लाहु रब्बी ला शरीका लहू, 874 बार, अव्वल आख़िर ग्यारह–ग्यारह मरतबा दरूद शरीफ़, इस क़द्र अदद मुऐयन बावुज़ू क़िबला रू दो ज़ानों बैठ कर रोज़ाना ता हुसूल मुराद पढ़ें, और इसी कलिमा को उठते बैठते चलते फिरते वुज़ू बेवुज़ू हर हाल में बेगिनती, बेशुमार ज़ुबान से जारी रखें।

2. हसबुनल्लाहु व नेअ्मल–वकील। 450 बार, रोज़ाना ताहुसूल मुराद, अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ ग्यारह–ग्यारह बार। जिस वक़्त घबराहट हो उसी कलिमा की बेशुमार तक्सीर करें।

3. बाद नमाज़े इशा एक सौ ग्यारह (111) बार "तुफ़ैल हज़रत दस्तगीर दुशमन हुए ज़ेर" अव्वल आख़िर ग्यारह–ग्यारह बार दरूद शरीफ़ ता हुसूल मुराद यह तीनों अमल, उमूर मज़्कूर के लिए निहायत मजर्रब व सहलुल–हुसूल हैं। उन सब में ग़फ़्लत न की जाए।

जब कोई हाजत पेश आए हर एक इतने–इतने आदादे मुऐयना पर पढ़ा जाए पहले और दूसरे के लिए कोई वक़्त मुऐयन नहीं जिस वक़्त चाहें पढ़ें और तीसरे का वक़्त बाद नमाज़े इशा है। जब तक मुराद बर आए तीनों उसी तरकीब से पढ़े जाएं। और जिस ज़माने में कोई हाजत दरपेश न हो तो पहले और दूसरे को सौ–सौ बार रोज़ पढ़ लिया करें और अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ तीन–तीन बार। (शजरह रज़्वीया मुबारका)

पंज गंज क़ादरी :

★ बाद नमाज़ सुबह या अज़ीज़ु या अल्लाह।

★ बाद नमाज़ ज़ुहर या करीमु या अल्लाह।

★ बाद नमाज़ अस्र या जब्बारू या अल्लाह।

★ बाद नमाज़ मग़्रिब या सत्तारू या अल्लाह।

★ बाद नमाज़ इशा या ग़फ़्फ़ारू या अल्लाह।

सब सौ–सौ बार, अव्वल आख़िर तीन–तीन बार दरूद शरीफ़। उसकी मुदावमत से बेशुमार बरकाते दीन व दुनिया ज़ाहिर होंगे। (शजरा रज़्वीया मुबारका)

शराइत वज़ाइफ़ और तरीक़–ए–ज़कात :

वज़ाइफ़ जो अहादीस में इरशाद हुए या मशाइख़े किराम ने बतौर ज़िक्रे इलाही बताए उन्हें बिला वुज़ू भी पढ़ सकते हैं और बावुज़ू बेहतर, इन सबमें हस्बे हाजत बात भी कर सकता है यानी नेक बात, मगर वह वज़ीफ़ा जिस में कलाम न करने की शर्त फरमा दी है जैसे सुबह व अस्र की नमाज़ के बाद बग़ैर पाँव बदले, बग़ैर बात किए दस बार पढ़ना, उसमें बात न की जाए।

और ज़ाकिर पर सलाम करना मुतलक़न मना है और अगर कोई करे तो ज़ाकिर को इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे, हाँ अगर किसी के सलाम या जाइज़ काम का जवाब न देना उसकी दिल–शिक्नी का मूजिब हो तो जवाब दे कि मुसलमान की दिलदारी वज़ीफ़ा में बात न करने से अहम व आज़म है।

यह वज़ाइफ़ अगर वक़्ते ख़ास से मुख़्तस हैं और वह वक़्त निकल गया तो उनकी क़ज़ा नहीं वरना दूसरे वक़्त पढ़ लिए जाएं कि सवाब मिले और आदत न छूटे। यह अहकाम वज़ाइफ़ व अज़्कार के थे।

रहे आमाल कि अरबाब अज़ाइम मुक़र्रर करते हैं उनकी ज़कात में तो रोज़ाना ग़ुस्ल शर्त है वह ग़ुस्ल पाक यानी बहालते तहारत नहाना, यहाँ तक कि अगर नहाने की हाजत हो जाए तो ग़ुस्ले जनाबत करके दोबारा फिर नहाए और उनके विर्द में कि अमल बजा रहने के लिए किया जाता है वुज़ू शर्त है बिला वुज़ू नहीं पढ़ सकता, न उनकी ज़कात में या विर्द में बात कर सकता है। मगर जो बात शरअन फिलहाल फ़र्ज़ हो उसके लिए बमज्बूरी क़तअ़ क़िराअत लाज़िम। मगर क़तअ़ करने की सूरत में जितना पढ़ लिया था न होगा बल्कि अज़सरे नवै पढ़े, आमाल में क़ज़ा भी नहीं अगर वक़्त ज़कात में कोई दिन नाग़ा गया तो ज़कात न हुई फिर अदा करे और किसी दिन का विर्द नाग़ा होने को हो तो उसकी नीयत से उस दिन एक बार सूरः फातिहा, एक बार आयतुल-कुर्सी पढ़ ले वह नाग़ा में न गिना जाएगा, न उसकी क़ज़ा होगी और अगर यह भी न किया तो अमल हाथ से निकल जाएगा फिर ज़कात दे। ग़रज़ अरबाबे अज़ाइम के यहाँ हर तरह तशद्दुद है और अल्लाह व रसूल के यहाँ आसानी। (फतावा रज़्वीया जिल्द 9, स0 475)

निस्यान का मुजर्रब इलाज :

(1) दफ़ा निस्यान को 17 बार सूरः अलम नशरह हर शब सोते वक़्त पढ़ कर सीना पर दम करना, और सुबह 17 बार पानी पर दम करके क़दरे पीना, और चीनी की रकाबी पर यह हुरूफ़ 1 हरफ़ ज़ म फ़ श ज़ लिख कर पिलाना नाफ़े है।

(2) और चालीस रोज़ सफ़ेद चीनी पर मुश्क व ज़ाफरान व गुलाब से लिख कर आब ताज़ा से महव करके पिएं।

(3) सफ़ेद चीनी की तश्तरी पर लिखे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अलिफ़ हे ज़ म फ़ श ज़।

और उसे ज़रा से पानी से धोकर उस पर 998 बार, और न हो सके तो 400 बार, या 100 ही बार या हफ़ीज़ु पढ़ कर दम कर ले और वह पानी पी ले, रोज़ ऐसा ही करे।

(4) और कलंग ज़बह करके ज़बह की गर्मी में उसका मग़ज़ निकाल कर 40 बार उस पर या हफ़ीज़ दम करके खा ले। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 298ए 299)

ला-इलाहा इल्लल्लाह का विर्द :

वज़ीफ़ा के लिए पूरा कलिमा तैयबा मुनासिब तर है मगर उसके साथ दरूद शरीफ़ लाना ज़रूर है यानी विर्द करे, ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

और सिर्फ़ जुज़्व सानी मआ दरूद का भी विर्द कर सकता है मगर मुब्तदी या तालिबे इल्म कि मुहतजा तस्फ़िया है उसे सिर्फ़ जुज़्व अव्वल का ज़िक्र व शुग़ल बताते हैं कि उसमें हरारत है और दूसरा जुज़ करीम ठण्डा लतीफ़, और तज़्किया गर्मी पहुँचाने का मुहताज, हाँ जुज़ अव्वल से हरारत हद से मुतजावज़ हो तो तअ़दील व बराबरी के लिए बताते हैं कि मसलन हर सौ बार ला-इलाहा इल्लल्लाह के बाद एक बार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, कह ले कि तस्कीन पाए। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 264)

इज़ाल–ए–वहम की दुआएँ :

(1) उन दुआओं को रोज़ाना एक बार या उस से ज़ाइद बार पढ़ने से वसवसा व वहम दूर हो जाएगा।

"हमें न पहुँचेगी मगर जो हमारे लिए अल्लाह ने लिख दी वह हमारा मौला और अल्लाह ही पर मुसलमानों को भरोसा करना लाज़िम।"

(2) हसबुनल्लाहु व नेअ्मल–वकील।

"अल्लाह हमें काफी है और क्या ही अच्छा काम बनाने वाला।"

तरजमा : "इलाही अच्छी बातें कोई नहीं लाता तेरे सिवा और बुरी बातें कोई दूर नहीं करता तेरे सिवा और कोई ज़ोर व ताक़त नहीं मगर तेरी तरफ़ से।"

(4) "इलाही तेरी ही फाल–फाल है, और तेरी ही ख़ैर ख़ैर, और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

तोश–ए–क़ादरीया :

तोशा सरकार ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बहुत अच्छी और मुफ़ीद चीज़ है और हाजतें बर लाने के लिए मुजर्रब, हमारे खानदान मशाइख़े किराम में उसकी तरकीब यूं है।

मेदह गन्दुम (5 किलो) शकर (5 किलो) घी (5 किलो) मग़्ज़ बादाम (एक किलो) पिस्ता (एक किलो) किशमिश (एक किलो) नारियल (एक किलो) लोंग, दार चीनी, छोटी इलाची हर एक सवा छटांक।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ देकर सालेहीन को खिलाए और अपने मतलब की दुआ कराए, असल वज़न यह हैं बक़द्रे क़ुदरत उन में कमी बेशी का इख़्तियार है। निस्फ़ चौथाई आठवाँ हिस्सा या जितना मक़्दूर हो करे वही असर देगा।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 267ए 268)

ग़ुस्सा दूर करने का अमल :

दफ़ा ग़ज़ब के लिए ला हौला शरीफ़ की कसरत करे और जिस वक़्त ग़ुस्सा आए दिल की तरफ़ मुतवज्जह हो कर तीन बार ला हौला पढ़े, तीन घूंट ठंडा पानी पी ले, खड़ा है तो बैठ जाए, बैठा है तो लेट जाए, लेटा है तो उठे नहीं।

घर वालों में बाहमी इत्तिफ़ाक़ का अमल :

सब घर वालों में इत्तिफ़ाक़ के लिए बाद नमाज़ जुमा लाहौरी नमक पर एक हज़ार एक बार या वदूदु पढ़ें, अव्वल आख़िर दस–दस बार दरूद शरीफ़, और उस वक़्त से उस नमक का बर्तन ज़मीन पर न रखें, वह नमक सात दिन घर की हांडी में डालें, सब खाएं, मौला तआला सब में इत्तिफ़ाक़ पैदा करेगा, हर जुमा को सात दिन के लिए पढ़ लिया करें।

चार सूरतें :

हदीस में शब के वक़्त चार सूरतें पढ़ने का इरशाद हुआ है :

1. यासीन शरीफ़, कि जो उसे रात में पढ़ेगा सुबह को बख़्शा हुआ उठेगा।

2. सूरः दुख़ान शरीफ़, कि जो उसे रात में पढ़ेगा सुबह इस हालत में उठेगा कि सत्तहर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते होंगे।

3. सूरः वाक़या शरीफ़, कि जो उसे हर रात पढ़ेगा मुहताजी उसके पास न आएगी।

4. सूरः तबारकल्लज़ी शरीफ़, कि जो उसे हर रात पढ़ेगा अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 3, स0 88)

अस्हाबे कहफ़ के नामों की बरकतें :

महबूबाने ख़ुदा के अस्मा गिरामी से तवस्सुल व तबर्रुक बिला शुबह महमूद व मन्दूब है :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि अस्हाबे कहफ़ के नाम नफ़ा हासिल करने, ज़रर नुक़्सान दूर करने और आग बुझाने के वास्ते हैं।

★ एक पार्चा में लिख कर बीच आग में डाल दें तो उस से आग बुझ जाएगी।

★ बच्चा रोता हो तो लिख कर गहवारे में उसके सर के नीचे रख दें।

★ खेती की हिफ़ाज़त के लिए काग़ज़ पर लिख कर बीच खेत में एक लकड़ी गाड़ कर उस पर बांध दें।

★ रगें तपकने, दर्द सर, हुसूले तोंगरी व वजाहत और सलातीन के पास जाने के लिए दाहिनी रान पर बांधें।

★ दुश्वारी विलादत के लिए औरत की बाएं रान पर बांधें।

हिफ़ाज़त माल, दरिया की सवारी और क़त्ल से नजात के लिए भी मुफ़ीद है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 4, स0 136)

फाइदा :

क़वी तरीन अक़्वाल यह है कि अस्हाबे कहफ़ सात हज़रात थे अगरचे उनके नामों में किसी क़द्र इख़्तिलाफ़ है लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है उनके नाम यह हैं।

(1) मक्सलमीना (2) यम्लीख़ा (3) मरतूनस (4) बैनूनस (5) सारीनोस (6) ज़ू नवास (7) कशफ़ीत (8) तनूनस।

उनके कुत्ते का नाम क़ितमीर है। (मुरत्तब, बहवाल–ए–ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान)

तजावीज़ व तदाबीर

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू इस्लाम के वतले जलील, नामवर मुहद्दिस व मुफ़्ती और एक अज़ीम मुफ़क्किर थे उनकी फ़िक्र रसा ने जो कहा वही हुआ और जो हुआ वही कहा, वह उक़ाबी निगाह और मुमिनाना फ़िरासत व बसीरत के मालिक थे उन्होंने मुस्तक़्बिल में पेश आने वाली जिन बातों की निशानदेही की वह हरफ़ बहरफ़ पूरी हुई वह एक सदी आगे देखने के आदी थे वह क़ब्ल अज़ वक़्त तदाबीर के क़ाइल थे, मुसलमानों की फलाह व वहबूद के लिए उन्होंने ने जो तजावीज़ व तदाबीर बताई हैं अगर आज भी उन पर अमल किया जाए तो मसलके हक़ का बोल बाला हो जाएगा और लोग सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न हो जाएंगे, अह्ले सुन्नत व जमाअत पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी का यह अज़ीम एहसान है कि उन्होंने फ़रज़न्दाने तौहीद की रहनुमाई की और उन्हें अक़ाइदे सहीहा से आगाह व रोशनास कराया, उनके दिलों में इश्क़े रिसालत की शमअ़ फ़िरोज़ाँ की। उन्होंने मुसलमानों को क़अ़रे मुज़िल्लत में गिरने से बचाने की हत्तल–वसअ़ जद्दो जहद की।

उस राह में उन्होंने तन मन धन की बाज़ी लगा दी और इशाअत दीन व मिल्लत को अपना नसबुल–ऐन क़रार दिया अपनी अमली इस्तिक़ामत से क़ौमे मुस्लिम के अन्दर ज़िन्दगी की रूह फूंकने की कोशिश की। चुनांचे आप मज़्हबे अह्ले सुन्नत व जमाअत के फ़रोग़ व इस्तिहकाम, उसकी इशाअत व इर्तिक़ा से मुतअल्लिक़ मुफ़ीद व मुअस्सिर तदाबीर तज्वीज़ फरमाते हैं : मुलाहिज़ा हो लिखते हैं : (मुरत्तिब)

फ़रोगे मज़हब के लिए दस नेकाती तजावीज़ :

बड़ी कमी उमरा की बेतवज्जही और रुपये की नादारी है। हदीस का इरशाद सादिक़ आया कि "वह ज़माना आने वाला है कि दीन का काम भी बे–रुपया के न चलेगा।"

कोई बाक़ायदा आलीशान मदरसा तो आपके हाथ में नहीं, कोई अख़्बार पर्चा आपके यहाँ नहीं, मुदर्रेसीन, वाइज़ीन, मुनाज़ेरीन, मुसन्नेफ़ीन की कसरत बक़द्र हाजत आपके पास नहीं, जो कुछ कर सकते हैं फ़ारिग़ुल–बाली नहीं, जो फ़ारिग़ुल–बाली हैं वह अह्ल नहीं, बाज़ ने ख़ूने जिगर खा कर तसानीफ़ कीं तो छपीं कहाँ से, किसी तरह से कुछ छपा तो इशाअत क्यों कर हो, दीवान नहीं, नाविल नहीं कि हमारे भाई दो आने चीज़ की एक रुपया देकर शौक़ से ख़रीदें, यहाँ तो सर चपेटना है, रुपया वाफ़र हो तो मुम्किन कि यह सब शिकायात रफ़ा हों।

1. अज़ीमुश्शान मदारिस खोले जाएं, बाक़ायदा तालीमें हों।

2. तलबा को वज़ाइफ़ मिलें कि ख़्वाही नख़्वाही गिरवीदह हों।

3. मुदर्रिसों की बेश क़रार तन्ख़्वाहें उनकी कार्रवाइयों पर दी जाएं कि लालच से जान तोड़ कर कोशिश करें।

4. तबाए तलबा की जाँच हो जो जिस काम के ज़्यादा मुनासिब देखा जाए मअ़कूल वज़ीफ़ा देकर उसमें लगाया जाए। यूं उनमें कुछ मुदर्रेसीन बनाए जाएं, कुछ वाइज़ीन, कुछ मुसन्नेफ़ीन, कुछ मुनाज़ेरीन, फिर तस्नीफ़ व मुनाज़रा में भी तौज़ीअ़ हो। कोइ किसी फन पर कोई किसी फन पर।

5. उन में जो तैयार होते जाएं, तन्ख़्वाहें देकर मुल्क में फ़ैलाए जाएं कि तहरीरन और तक़्रीरन वअ़ज़न व मुनाज़रतन इशाअते दीन व मज़्हब करें, जब आपके अह्ले इल्म यूं मुल्क में फैलें उस वक़्त कौन उनकी क़ुव्वत का सामना कर सकता है।

6. हिमायत मज़्हब व रददे बद मज़्हबाँ में मुफ़ीदे कुतुब व रसाइल, मुसन्निफ़ों को नज़ाने देकर तस्नीफ़ कराए जाएं।

7. तस्नीफ़ शुदह और नौ तस्नीफ़ रसाइल उम्दा और ख़ुश ख़त छाप कर मुल्क में मुफ़्त शाए किए जाएं।

8. शहरों–शहरों आपके सफ़ीर निगराँ रहें जहाँ जिस क़िस्म के वाइज़, मनाज़िर या तस्नीफ़ की हाजत हो आपको इत्तिला दें, आप सरकूबी आदा के लिए अपनी फौजें, मैगज़ीन, रिसाले, भेजते रहें।

9. जो हम में क़ाबिलकार, मौजूद और अपनी मआ़श में मश्ग़ूल हैं, वज़ाइफ़ मुक़र्रर कर के फ़ारिग़ुल– बाली बनाए जाएं, और जिस काम में उन्हें महारत हो, लगाए जाएं।

10. आपके मज़्हबी अख़्बार शाए हों और वक़्तन फ़वक़्तन हर क़िस्म के हिमायत मज़्हब में मज़्मीन तमाम मुल्क में बक़ीमत व बिला क़ीमत रोज़ाना या कम अज़ कम हफ़्तावार पहुँचाते रहें।

उसके बाद आप आगे फरमाते हैं :

मेरे ख़्याल में तो यह तदाबीर हैं, रुपया होने की सूरत में अपनी क़ुव्वत फैलाने के अलावा गुम्राहियों की ताक़तें तोड़ना भी इन्शाअल्लाहुल–अज़ीज़ आसान होगा। मैं देख रहा हूँ कि गुम्राहों के बहुत, सिर्फ़ तन्ख़्वाहों के लालच से ज़हर उगलते फ़िरते हैं, उनमें जिसे दस की जगह बारह दीजिए अब आपकी सी कहेगा, या कम अज़ कम बलुक़्मा दोख़्ता बह तो होगा।

देखिए हदीस का इरशाद सादिक़ है कि

"आख़िर ज़माना में दीन का काम भी दिरहम व दीनार से चलेगा।"

और क्यों न हो कि सादिक़ व मस्दूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का कलाम है, आलिम माकाना वमा यकूनु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़बर है।

(फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 133ए 134)

मईशत से मुतअल्लिक़ चार तदाबीर :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने जहाँ अक़ाइद व आमाल की इस्लाह के साथ मज़्हब अह्ले सुन्नत के फ़रोग़ व इर्तिक़ा की सूरतें बताएं वहीं उन्होंने मईशत से मुतअल्लिक़ भी चन्द तदाबीर बताईं हैं जो क़ाबिले अमल और मूजिबे फ़लाह व तरक़्क़ी है, यानी मुसलमान आपस में निज़ा व इख़्तिलाफ़ करके एक दूसरे के ख़िलाफ़ मुक़दमा दाइर करते फिर उसमें बेदरेग़ रुपया ख़र्च करते हैं अगर उन झगड़ों का तस्फ़िया आपस में कर लें तो रुपया बच जाएं माली ख़सारा न हो, सूदी कारोबार और लेन देन से इंसान की मईशत तबाह व बर्बाद हो जाती है, उस पर रोक लगाएं, अपनी तिजारत को आगे बढ़ाएं, मुसलमान सौदा सलफ़ मुसलमान से ख़रीदें उस से अपनी क़ौम को उरूज व तरक़्क़ी की मंज़िल मिलेगी, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू की नज़र मुआशरे के तमाम हालात पर रहती वह मुसलमानों की फ़लाह व बहबूद चाहते थे, वह मुसलमानों को ख़ुशहाल व ख़ुददार देखना चाहते थे इसलिए हर हाल में क़ौमे मुस्लिम की इस्लाह व तर्बियत में कोशाँ रहे। (मुरत्तिब)

मआ़श से मुतअल्लिक़ इन तदाबीर को मुलाहिज़ा फ़रमाएं आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं :

अव्वलन : बइस्तिस्ना इन मअ़दूद बातों के जिनमें हुकूमत की दस्त अन्दाज़ी हो अपने तमाम मुआमलात अपने हाथ में लें, अपने सब मुक़द्दमात अपने आप फ़ैसल करें, यह करोड़ों रुपये जो इस्टाम्प व वकालत में घुसे जाते और घर के घर तबाह हो गये और हुए जाते हैं महफ़ूज़ रहें।

सानियन : अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ न ख़रीदें, कि घर का नफ़अ़ घर ही में रहे, अपनी हिर्फ़त व तिजारत को तरक़्क़ी दें कि किसी चीज़ में किसी दूसरी क़ौम के मुहताज न रहें।

सालिसन : बम्बई, कलकत्ता, रंगून, मदारिस, हैदराबाद वग़ैरह के तोंगर मुसलमान अपने भाईयों के लिए बैंक खोलें, जाइज़ तरीक़ों पर नफ़अ् भी लें कि उन्हें भी फाइदा पहुँचे और उनके भाईयों की भी हाजत बर–आरी हो, आए दिन जो मुसलमानों की जाइदादें बनियों की नज़र होती चली जाती हैं, उन से महफ़ूज़ रहें, अगर मदयूनी की जाइदाद ही ले जाती तो मुसलमान ही के पास रहती, यह तो न होता कि मुसलमान नंगे और बनिए चंगे।

राबिअ़न : सबसे ज़्यादा अहम, सबकी जान, सबकी असल आज़म वह दीने मतीन है जिस की रस्सी मज़बूत था मुन्ने ने अगलों को उन मदारिजे आलिया पर पहुँचाया, चारदांगे आलम में उनकी हैबत का सिक्का बिठाया, नान शबीना के मुहताजों को बुलन्द ताजों का मालिक और उसी के छोड़ने ने पिछलों को यूं चाह ज़िल्लत में गिराया।

उसके बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं :

मुसलमान अगर यह बातें कर लें तो उनकी हालत संभली जाती है, मगर उन पर अमल की हालत की मुलाहिज़ा हो :

अव्वल : पर यह अमल है कि घर के फ़ैसला में अपने दावा से कुछ भी कमी हो तो मन्ज़ूर नहीं और कचेहरी जा कर अगरचे घर की भी जाए ठन्डे दिल से पसन्द, गिरह–गिरह भर ज़मीन पर तरफ़ैन से दो–दो हज़ार बिगड़ जाते हैं। क्या मुसलमानों की यह हालतें बदल सकती हैं ?

दोम : की यह कैफ़ियत कि अव्वल तो खानदानी लोग हिरफ़त व तिजारत को ऐब समझते हैं और ज़िल्लत की नोकरियाँ करने, ठोकरें खाने, हराम काम करने, हराम माल खाने को फ़ख़ व इज़्ज़त, और जो तिजारत करें भी तो ख़रीदारों को इतना हिस नहीं कि अपनी ही क़ौम से ख़रीदें अगरचे एक पैसा ज़ाइद सही कि नफ़अ् है तो अपने ही भाई का है, अह्ले यूरोप को देखा है कि देसी माल अगर विलायती के मिस्ल और उस से अरज़ाँ भी हो हरगिज़ न लेंगे और विलायती गिरां ख़रीदेंगे।

उधर बेचने वालों की हालत कि हिन्दुवाना रुपया नफ़ा ले तो मुसलमान साहब चूनी से कम पर राज़ी नहीं, फिर लुत्फ़ यह कि माल भी उस से हल्का बल्कि ख़राब, हिन्दू तिजारत के उसूल जानता है कि जितना थोड़ा नफ़ा रखिए उतना ही ज़्यादा मिलता है। और मुसलमान साहब चाहते हैं कि सारा नफ़ा एक ही ख़रीदार से वसूल कर लें, नाचार ख़रीदने वाले मज्बूर हो कर हिन्दू से ख़रीदते हैं, क्या मुसलमान यह आदतें छोड़ सकते हैं ?

सोम : कि यह हालत कि अक्सर उमरा को अपने नाजाइज़ ऐश से काम है नाच रंग वग़ैरह बेहयाई या बेहूदगी के कामों में हज़ारों लाखों उड़ा दें, वह नामवरी है, रियासत है, और मरते भाई की जान बचाने को एक ख़फ़ीफ़ रक़म देना नागवार, और जिन्होंने बनियों से सीख कर लेन देन शुरू किया वह जाइज़ नफ़अ् की तरफ़ तवज्जोह क्यों करें, दीन से क्या काम, अल्लाह व रसूल के अहकाम से क्या ग़रज़, ख़त्ना न उन्हें मुसलमान किया और गाय के गोश्त ने मुसलमानी क़ाइम रखी, उस से ज़ाइद क्या ज़रूरत है न उन्हें मरना है, न अल्लह वाहिद क़ह्हार के हुज़ूर जाना, न आमाल का हिसाब देना, फिर सूद भी लें तो बनिया अगर बारह आने मांगे, यह डेढ़ दो सौ से कम पर राज़ी न हों, नाचार हाजतमन्द बनियों के हत्थे चढ़ते और जाइदादें उनकी नज़्र कर बैठते हैं। (फतावा रज़्वीया जिल्द 12, स0 177ए 178)

पैग़ाम बराय अह्ले सुन्नत

मिन जानिब : नबीर–ए–आला हज़रत हज़रत मौलाना अल्हाज क़ारी मुहम्मद तस्लीम रज़ा खाँ क़ादरी बरैली शरीफ़।

इस दौरे इंहितात में इस्लाम व सुन्नियत पर क़ाइम रहना बहुत आसान भी है और मुश्किल भी.......जो हज़रत "मसलके आला हज़रत" पर क़ाइम व कारबन्द हैं उनके लिए सुन्नियत के तक़ाज़ों को पूरा करना आसान से आसान तर है और जो लोग मसलके आला हज़रत के हासिद व बदख़्वाह हैं उनके लिए निहायत मुश्किल।

(1) अह्ले सुन्नत नीज़ दारैन में सआदत व सुर ख़ुरूई के लिए वहाबियों, नज्दियों, राफ़ज़ियों और तमाम बद अक़ीदों से ख़ुद को दूर रखें और हर मौक़ा पर अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशादे जमील मद्दे नज़र रखें। "इय्याकुम व इय्याहुम ला युज़िल्लूनकुम वला यफ़्तनूनकुम" उन्हें ख़ुद से दूर रखो और ख़ुद को उन से दूर रखो। कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें गुम्राह कर दें और फ़ित्ने में डाल दें।

लिहाज़ा बद अक़ीदों की "सोहबते बद" अपने और अपने मज़हब के लिए ज़हर हिलाहिल समझें और किसी भी मौक़ा पर उन से इत्तिहाद व दाद न करें बल्कि —

दुशमने अहमद पे शिद्दत कीजिए
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिए
शिर्क ठहरे जिस में ताज़ीमे हबीब
इस बुरे मज़्हब पे लानत कीजिए

(2) फराइज़े इस्लाम की पाबन्दी हर मुसलमान सुन्नी सहीहुल-अक़ीदा के लिए अशद ज़रूरी है। नमाज़ को उसके वक़्तों पर पाबन्दी-ए-जमाअत के साथ अदा करने की आदत डालें। नमाज़ जन्नत की कुंजी, ईमान का नूर, मोमिन की अलामत, रूह की ग़िज़ा, क़ल्ब की ज़िया और कामयाबी की ज़मानत है। नमाज़ का तारिक ख़ुदा और रसूल को हरगिज़ पसन्द नहीं।

(3) "हुसूले तालीमे दीन" निहायत ही ज़रूरी है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इल्मे दीन का हासिल करना हर मुसलमान मर्द व ज़न पर फ़र्ज़ फरमाया है। इल्मे नूर है जिसकी रोशनी में हम हक़ व बातिल को पहचान सकते हैं। इल्म ज़ीनत है जिससे हम ख़ुद को संवार सकते हैं। इल्म इंसान को दोनों जहान में इज़्ज़त व सरबुलन्दी बख़्शा है। इल्म कामयाबियों की ज़मानत है। इल्म से इंसान मुम्ताज़ व मख़्सूस होता है। लिहाज़ा ख़ुद भी इल्म की तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह दें और अपने बच्चों को भी इल्म से आरास्ता करें फिर याद रखें कि कामयाबियाँ आपके क़दम चूमेंगी।

ख़ुदाए वहदहू क़ुद्दूस अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल मुझ हक़ीर और तमाम अह्ले सुन्नत को "मसलके आला हज़रत" का सच्चा पक्का आमिल व पाबन्द बनाए और हासिदीन आला हज़रत को हक़ सुनने, हक़ समझने और हक़ क़ुबूल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन या रब्बल-आलमीन बेजाहे सैय्यदुल-मुरसलीन अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम।

वसीयत आला हज़रत

ऐ लोगो! तुम प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की भूली भेड़ें हो, भेड़िये तुम्हारे चारों तरफ़ हैं, वह चाहते हैं कि तुम्हें बहकाएं, तुम्हें फ़ित्ना में डाल दें, तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जाएं, उन से बचो और दूर भागो, देवबन्दी, राफ़ज़ी, नेचरी, क़ादयानी, चक्ड़ालवी यह सब फ़िर्क़े भेड़िये हैं, तुम्हारे ईमान की ताक में हैं, उनके हमलों से ईमान को बचाओ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रब्बुल–इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के नूर हैं, हुज़ूर से सहाब–ए–किराम रौशन हुए, सहाब–ए–किराम से ताबईने इज़ाम रौशन हुए, ताबईन से तबअ् ताबईन रौशन हुए, उन से अइम्म–ए–मुज्तहेदीन रौशन हुए, उन से हम रौशन हुए। अब हम तुम से कहते हैं, यह नूर हम से ले लो। हमें उसकी ज़रूरत है कि तुम से रौशन हो। वह नूर यह है कि अल्लाह व रसूल की सच्ची मुहब्बत, उनकी ताज़ीम और उनके दोस्तों की ख़िदमत और उनकी तक्रीम और उनके दुश्मनों से सच्ची अदावत, जिस से अल्लाह व रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ, फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो, फ़ौरन उस से जुदा हो जाओ, जिसको बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो, फिर वह तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों न हो अपने अन्दर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो।

मैं पौने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और उस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ, अल्लाह तआला ज़रूर अपने दीन की हिमायत के लिए किसी बन्दे को खड़े कर देगा मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आए कैसा हो और तुम्हें क्या बताए? इसलिए इन बातों को ख़ूब सुन लो, हुज्जतुल्लाह क़ाइम हो चुकी। अब मैं क़ब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आऊंगा, जिसने उसे सुना और माना, क़्यामत के दिन उसके लिए नूर व नजात है और जिसने माना, उसके लिए ज़ुल्मत व हलाकत है।

हसनैन रज़ा ख़ाँ

मौलाना वसाया शरीफ़, मतबूआ लाहौर

أعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها

يا الله جل جلاله

قل هو الله أحد ○ الله الصمد ○ لم يلد ولم يولد ○ ولم يكن له كفوا أحد ○

الله ● الرحمن ● الرحيم ● الملك ● القدوس ● السلام ● المؤمن ● المهيمن ● العزيز
الجبار ● المتكبر ● الخالق ● البارئ ● المصور ● الغفار ● القهار ● الوهاب ● الرزاق
الفتاح ● العليم ● القابض ● الباسط ● الخافض ● الرافع ● المعز ● المذل ● السميع
البصير ● الحكم ● العدل ● اللطيف ● الخبير ● الحليم ● العظيم ● الغفور ● الشكور
العلي ● الكبير ● الحفيظ ● المقيت ● الحسيب ● الجليل ● الكريم ● الرقيب ● المجيب
الواسع ● الحكيم ● الودود ● المجيد ● الباعث ● الشهيد ● الحق ● الوكيل ● القوي
المتين ● الولي ● الحميد ● المحصي ● المبدئ ● المعيد ● المحيي ● المميت ● الحي
القيوم ● الواجد ● الماجد ● الواحد ● الصمد ● القادر ● المقتدر ● المقدم ● المؤخر
الأول ● الآخر ● الظاهر ● الباطن ● الوالي ● المتعالي ● البر ● التواب ● المنتقم
العفو ● الرؤوف ● مالك الملك ● ذو الجلال والإكرام ● المقسط ● الجامع ● الغني ● المغني ● المانع
الضار ● النافع ● النور ● الهادي ● البديع ● الباقي ● الوارث ● الرشيد ● الصبور

رضوی کتاب گھر دہلی

أعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

الصلوٰة والسلام عليك يا سيدي يا رسول الله

يا رسول الله

ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شيء عليما

محمد ● احمد ● حامد ● محمود ● قاسم ● عاقب ● فاتح ● خاتم ● حاشر
ماح ● داع ● سراج ● رشید ● منیر ● بشیر ● نذیر ● ہاد ● مہد
رسول ● نبی ● طٰہٰ ● یٰس ● مزمل ● مدثر ● شفیع ● خلیل ● کلیم
حبیب ● مصطفیٰ ● مرتضیٰ ● مجتبیٰ ● مختار ● ناصر ● منصور ● قائم ● حافظ
شہید ● عادل ● حکیم ● نور ● حجۃ ● برہان ● ابطحی ● مؤمن ● مطیع
واعظ ● امین ● صادق ● مصدق ● ناطق ● صاحب ● مکی ● مدنی ● عربی
ہاشمی ● قریشی ● امی ● عزیز ● رؤف ● رحیم ● یتیم ● غنی ● جواد
فتاح ● عالم ● طیب ● طاہر ● مطہر ● خطیب ● فصیح ● سید ● متقی
امام ● شاف ● متوسط ● سابق ● مقتصد ● مہدی ● حق ● مبین ● اول
حریص ● آخر ● ظاہر ● باطن ● رحمۃ ● محلل ● محرم ● آمر ● ناہ
شکور ● قریب ● منیب ● بار ● مبلغ ● طس ● حم ● خبیب ● مذکر

رضوی کتاب گھر دہلی